जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलालजी-महाराज-

विरचितया-पीयूषवर्षिण्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृतम्

हिन्दीगुर्जरभाषानुवादसहितम्

औपपातिक-सूत्रम् ।

AUPAPAATIKA SUTRA

नियोजक

संस्कृत-प्राकृतज्ञ-जैनागमनिष्णात-प्रियव्याख्यानि-

पण्डितमुनि-श्रीकन्हैयालालजी-महाराजः ।



प्रकाशक

अ. भा. श्वे. स्था. जैनशास्त्रोद्धार-समिति-प्रमुखः

श्रेष्ठि-श्रीशान्तिलाल-मङ्गलदासभाई-महोदयः

मु. राजकोट (सौराष्ट्र)

प्रथम आवृत्ति प्रति १०००

वीर संवत २४८५ विक्रम संवत २०१५

ईसवीसन् १९५९



मूल्यम्-रू १२-००

विषय | पृष्ठ

॥ इति समवसरण नामक पूर्वार्ध की विषयानुक्रमणिका ॥

॥ अथ उत्तरार्ध की विषयानुक्रमणि का ॥

कर वे देश, समाज सभीका कल्याण करते थे, और अपने इहलोक और परलोक की सिद्धिको भी प्राप्त करते थे।

द्वितीय भाग मे भगवान् गौतमस्वामी और भगवान् महावीरका प्रश्नोत्तर-रूप सवाद है। इस सवाद के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि किन कर्मों से जीव नरकगामी होते हैं, किन कर्मों से देवलोकगामी होते हैं, और कैसे सिद्धिगामी होते हैं।

इस प्रकार यह सूत्र परमोपादेय है। वर्णन की दृष्टि से यह तो समस्त जैनागमों का वर्णनकोश ही है। क्यों कि अन्य आगमों मे जहाँ कहीं भी नगर, चैत्य, राजा, रानी आदिका वर्णन आता है, वहाँ सक्षेप मे ही आता है, और वहाँ 'औपपातिक सूत्र' से ही वर्णनात्मक सन्दर्भ लेनेके लिये निर्देश किया जाता है। इस दृष्टि से भी इसकी अत्यन्त उपादेयता है। सभी जीव सर्वदा यही चाहते है कि 'सर्वदा मे सुख भूयाद् दुःख माऽस्तु कदा च न' अर्थात्–मुझे सर्वदा सुख मिले, दुख कभी भी नहीं मिले। सुख अहिंसादि सत्कर्म से या आत्यन्तिक कर्मविमोक्ष से ही मिलता है, और दुख हिंसादि असत्कर्मो से मिलता है। नरकादिक दुख जिन कर्मो से मिलते है तथा देवलोकादिक सुख जिन कर्मो से मिलते हैं उन कर्मोंका परिज्ञान इस शास्त्र के अध्ययन से होता है। ज्ञपरिज्ञा से सुखदायी और दुखदायी कर्मो को जानकर जीव प्रत्याख्यान-परिज्ञा से दुखदायी कर्मो को छोडकर, आसेवनपरिज्ञा से सुखदायी कर्मोंका आसेवन करता है, और क्रमिक आत्मविशुद्धि से सिद्धिगामी होता है। इस दृष्टि से तो इसकी उपयोगिता अद्वितीय ही है।

ऐसे अनुपम इस सूत्र की सर्वजनगम्य व्याख्या की नितान्त आवश्यकता थी। इस अभावको दूर करने के लिये पूज्य श्री १००८ घासीलालजी म सा ने इस सूत्रकी 'पीयूषवर्षिणी' नामक सरल सस्कृत व्याख्या रची है। जो साधारण सस्कृतज्ञों के लिये भी सुबोध है। हिन्दी और गुर्जर-भाषी जनताको इस सूत्रका अभिप्राय सरलतया ज्ञात हो, इसलिये इसका हिन्दी-गुर्जर अनुवाद भी किया गया है। इस प्रकार मूल, सस्कृत व्याख्या, हिन्दी और गुजराती अनुवाद-सहित यह 'औपपातिकसूत्र' मुद्रित हो कर आप शास्त्रप्रेमी महानुभावों के समक्ष प्रस्तुत है। आप इस के स्वाध्याय से अपने जीवन का चरम उत्कर्ष साधन कर इस दुर्लभ मानव जीवन को सफल करे, यही हमारी आन्तरिक भावना है। इति शम्।

अहमदाबाद
ता २४-१०-५८

–मुनि कन्हैयालाल

રૂા ૧૮,૦૦૦ આપનાર આદ્ય મુરબ્બીશ્રી.

સમિતિના પ્રમુખ; દાનવીર શેઠશ્રી



શેઠ શાતિલાલ મગળદાસભાઈ

અમદાવાદ

પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ-રચિત

સૂત્રોની ટીકા

શ્રી-વર્ધમાન-શ્રમણ-સંઘના આચાર્ય

પૂજ્યશ્રી આત્મારામજી મહારાજશ્રીએ

આપેલ

સમ્મતિ પત્ર



તેમજ

અન્ય મહાત્માઓ, મહાસતીજીઓ, અદ્યતન-પદ્ધતિવાળા કોલેજના પ્રોફેસરો

તેમજ

શાસ્ત્રજ્ઞ શ્રાવકોના અભિપ્રાયો.

ઠે ગ્રીન લોજ પાસે
ગરેડીયા કુવારોડ
રાજકોટ સૌરાષ્ટ્ર

શ્રી અખિલ ભારત શ્વે સ્થા જૈન-
શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ

(श्री दशवैकालिकसूत्रका सम्मतिपत्र.)

॥ श्रीवीरगौतमाय नम ॥



सम्मति-पत्रम्.

मए पंडियमुणि-हेमचंदेण य पडिय-मूलचन्दवास-द्वारा पत्ता पडियरयण-मुणि-घासीलालेण विरइया सक्कय-हिंदी-भासाहिं जुत्ता सिरि-दसवेयालिय-नाम-सुत्तस्स आयारमणिमंजूसा वित्ती अवलोइया, इमा मणोहरा अत्थि । एत्थ सद्दाण अइसयजुत्तो अत्थो वण्णिओ, विउजणाण पाययजणाण य परमोवयारिया इमा वित्ती दीसइ । आयारविसए वित्तीकत्तारेण अइसयपुव्व उल्लेहो कडो, तहा अहिंसाए सरूव जे जहा-तहा न जाणंति तेसिं इमाए वित्तीए परमलाहो भविस्सइ, कत्तुणा पत्तेयविसयाणं फुडरूवेण वण्णण कड, तहा मुणिणो अरहत्ता इमाए वित्तीए अव-लोयणाओ अइसयजुत्ता सिज्झइ । सक्कयछाया सुत्तपयाण पयच्छेओ य सुबोहदायगो अत्थि, पत्तेयजिण्णासुणो इमा वित्ती दट्ठव्वा । अम्हाण समाजे एरिसविज्ज-मुणिर-यणाण सब्भावो समाजस्स अहोभग्ग अत्थि । किं ?, उत्तविज्जमुणिरयणाण कारणाओ, जो अम्हाण समाजो सुत्तप्पाओ, अम्हकेर साहिच्च च लुत्तप्पाय अत्थि, तेसिं पुणोवि उदओ भविस्सइ, जस्स कारणाओ भवियप्पा मोक्खस्स जोग्गो भवित्ता पुणो निव्वाण पाविहिइ । अओह आयारमणि-मजूसाए कत्तुणो पुणो पुणो धन्नावाय देमि- ॥

वि स १९९० फाग्गुन-
सुक्कतेरसी-मङ्गले
(अलवर स्टेट)

इइ-
उवज्झाय-जइण-मुणी आयारामो
(पचनईओ)

जैनागमवेत्ता जैनधर्मदिवाकर उपाध्याय श्री १००८ श्री आत्मारामजी महाराज तथा न्याय व्याकरण के ज्ञाता परम-पण्डित मुनिश्री १००७ श्री हेमचन्द्रजी महाराज, इन दोनों महात्माओंका दिया हुआ श्री उपासकदशाङ्ग सूत्रका प्रमाणपत्र निम्न प्रकार है—

सम्मइवत्तं

सिरि-वीरनिव्वाण-संवच्छर २४५८ आसोई
(पुण्णमासी) १५ सुक्कवारो लुहियाणाओ।

मए मुणिहेमचंदेण य पंडियरयणमुणिसिरि-घासीलालविणिम्मिया सिरि—उवासगसुत्तस्स अगारधम्मसंजीवणी-नामिया वित्ती पडियमूलचन्द वासाओ अज्जोवंत सुयासमीईण, इय वित्ती जहा णाम तहा गुणेवि धारेइ, सच्चं, अगाराणं तु इमा जीवण (मज्जमजीवण) दाई एव अत्थि। वित्तिकत्तुणा मूलसुत्तस्स भावो उज्जुसेलीओ फुडीकओ, अहय उवासयस्स सामण्णविसेसधम्मो, णयसियवायवाओ, कम्मपुरिसट्ठवाओ, समणोवासयस्स धम्मदढत्ता य, इच्चाइविसया अंसि फुडरीइओ वण्णिया, जेण कत्तुणो पडिहाए सुट्ठुप्पयारेण परिचओ होइ, तह इइहासदिट्ठिओवि सिरिसमणस्स भगवओ महावीरस्स समए वट्टमाण—भरहवासस्स य कत्तुणा विसयप्पयारेण चित्तं चित्तिंत, पुणो सक्कयपाढीण, वट्टमाणकाले हिन्दीणामियाए भासाए भासीण य परमोवयारो कडो, इमेण कत्तुणो अरिहत्ता दीसइ, कत्तुणो एयं कज्जं परमप्पमसंणिज्जमत्थि। पत्तेयजणस्स मज्झत्थभावाओ अस्स सुत्तस्स अवलोयणमईव लाहप्पयं, अवि उ सावयस्स उ इमं सत्थं सव्वस्समेव अत्थि, अओ कत्तुणो अणेगकोडीसो धन्नवाओ अत्थि, जेहिं अच्चंतपरिस्समेण जइणजणतोवरि असीमोवयारो कडो, अह य सावयस्स वारसं नियमा उ पत्तेयजणस्स पढणिज्जा अत्थि, जेसिं पहावओ वा गहणाओ आया निव्वाणाहिगारी भवइ, तहा भवियव्वयाओ पुरिसक्कारपरक्कमवाओ य अवस्समेव दंसणिज्जो, किं बहुणा! इमीसे वित्तीए पत्तेयविसयस्स फुडसदेहिं वण्णणं कयं, जइ अन्नोवि एवं अम्हाणं पसुत्तप्पाए समाजे विज्ज भवेज्जा तया नाणस्स चरित्तस्स तहा संघस्स य खिप्पं उदओ भविस्सइ, एवं हं मन्ने॥

भवईओ—

उवज्झाय—जइणमुणि—आयाराम—पंचनईओ,

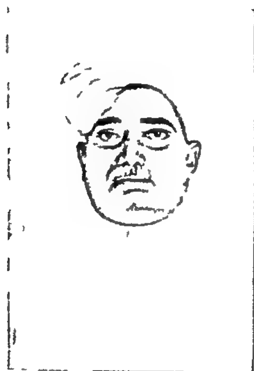
सम्मतिपत्र

(भाषान्तर)

श्रीवीरनिर्माण सं० २४५८ आसोज
शुक्ला (पूर्णिमा) १५ शुक्रवार लुधियाना

मैने और पंडितमुनि हेमचन्द्रजीने पंडितरत्नमुनिश्री घासीलालजीकी रची हुई उपासकदशाग सूत्रकी गृहस्थधर्मसजीवनी नामक टीका पडित मूलचन्द्रजी व्याससे आद्योपान्त सुनी है। यह वृत्ति यथानाम तथागुणवाली–अच्छी बनी है। सच यह गृहस्थोंके तो जीवनदात्री–सयमरूप जीवनको देनेवाली ही है। टीकाकार ने मूलसूत्र के भावका सरल रीतिसे वर्णन किया है, तथा श्रावकका सामान्य धर्म क्या है? और विशेष धर्म क्या है? इसका खुलासा इस टीकामें अच्छे ढगसे बतलाया है। स्याद्वादका स्वरूप कर्म–पुरुषार्थ–वाद और श्रावकको धर्मके अन्दर दृढ़ता किस प्रकार रखना, इत्यादि विषयोका निरूपण इसमे भलीभाँति किया है। इससे टीकाकारकी प्रतिभा खूब झलकती है। ऐतिहासिक दृष्टिसे श्रमण भगवान् महावीरके समय भारतवर्ष में जैनधर्म किस जाहोजलाली पर था? इस विषयका तो ठीक चित्र ही चित्रित कर दिया है। फिर सस्कृत जाननेवालोको तथा हिंदीभाषाके जाननेवालोको भी पूरा लाभ होगा, क्योंकि टीका सस्कृत है उसकी सरल हिन्दी करदी गई है। इसके पढनेसे कर्ताकी योग्यताका पता लगता है कि वृत्तिकारने समझानेका कैसा अच्छा प्रयत्न किया है। टीकाकारका यह कार्य परम प्रशसनीय है। इस सूत्रको मध्यस्थ–भावसे पढने वालोको परम लाभकी प्राप्ति होगी। क्या कहें श्रावकों (गृहस्थो) का तो यह सूत्र सर्वस्व ही है, अत टीकाकारको कोटिश धन्यवाद दिया जाता है, जिन्होंने अत्यन्त परिश्रमसे जैन–जनताके ऊपर असीम उपकार किया है। इसमे श्रावकके बारह नियम प्रत्येक स्त्री–पुरुषके पढने योग्य हैं, जिनके प्रभावसे अथवा यथायोग्य ग्रहण करनेसे आत्मा मोक्षका अधिकारी होता है। तथा भवितव्यतावाद और

રૂા ૬,૦૦૦ આપનાર આદ્ય મુરબ્બીશ્રી



(સ્વ) શેઠ હુકમચંદ કાલીદાસ વાડીયા

ભાણવડ

पुरुषकारपराक्रमवाद हर-एकको अवश्य देखना चाहिये। कहां तक कहें, इसटी कामे प्रत्येक विषय सम्यक् प्रकारसे बताये गये हैं। हमारी सुप्तप्राय (सोई हुईसी) समाजमे अगर आप जैसे योग्य विद्वान फिर भी कोई होंगे तो ज्ञान, चारित्रतथा श्रीसवका शीघ्र उदय होगा, ऐसा मैं मानता हूँ-

आपका

उपाध्याय जैनमुनि आत्माराम पंजाबी.



इसी प्रकार लाहोरमें विराजते हुए पण्डितवर्य विद्वान् मुनिश्री १००८ श्री भागचन्दजी महाराज तथा प. मुनिश्री त्रिलोकचन्दजी महाराजके दिये हुए, श्री उपासकदशाङ्ग सूत्रके प्रमाणपत्रका हिन्दी सारांश निम्न प्रकार है-

श्री श्री स्वामी घासीलालजी महाराज-कृत श्री उपासकदशाङ्ग सूत्रकी संस्कृत टीका व भाषाका अवलोकन किया, यह टीका अतिरमणीय व मनोरञ्जक है, इसे आपने बडे परिश्रम व पुरुषार्थसे तैयार किया है सो आप धन्यवादके पात्र हैं। आप जैसे व्यक्तियोंकी समाजमे पूर्ण आवश्यकता है। आपकी इस लेखनीसे समाजके विद्वान् साधुवर्ग पढकर पूर्ण लाभ उठायेंगे, टीकाके पढनेसे हमको अत्यानन्द हुवा, और मनमे ऐसे विचार उत्पन्न हुए कि हमारी समाजमें भी ऐसे २ सुयोग्य रत्न उत्पन्न होने लगे- यह एक हमारे लिये बडे गौरवकी बात है।

वि. स. १९८९ मा. आश्विन
कृष्णा १३ वार भौम लाहोर.

ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्र की 'अनगारधर्माऽमृतवर्षिणी' टीका पर,
जैनदिवाकर, साहित्यरत्न जैनागमरत्नाकर, परमपूज्य, श्रद्धेय
जैनाचार्य श्री आत्मारामजी महाराजका

सम्मतिपत्र

लुधियाना, ता. ४–८–५१.

मैने आचार्यश्री घासीलालजी म. द्वारा निर्मित 'अनगारधर्माऽमृत-वर्षिणी' टीका वाले श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्रका मुनि श्री रत्नचन्द्रजीसे आद्योपान्त श्रवण किया।

यह नि सन्देह कहना पडता है कि यह टीका आचार्यश्री घासीलालजी म ने बडे परिश्रम से लिखी है। इसमें प्रत्येक शब्दका प्रामाणिक अर्थ और कठिन स्थलों पर सार-पूर्ण विवेचन आदि कई एक विशेषतायें हे। मूल स्थलोंको सरल बनानेमे काफी प्रयत्न किया गया है, इससे साधारण तथा असाधारण सभी संस्कृतज्ञ पाठकों को लाभ होगा, ऐसा मेरा विचार है।

मै स्वाध्यायप्रेमी सज्जनों से यह आशा करूंगा कि वे वृत्तिकारके परिश्रम को सफल बनाकर शास्त्रमें दीगई अनमोल शिक्षाओं से अपने जीवनको शिक्षित करते हुए परमसाध्य मोक्षको प्राप्त करेंगे।

श्रीमानजी जयवीर

आपकी सेवामे पोष्ट-द्वारा पुस्तक भेज रहे हैं और इसपर आचार्यश्रीजी की जो सम्मति है वह इस पत्रके साथ भेज रहे है, पहुँचने पर समाचार देवे।

श्री आचार्यश्री आत्मारामजी म. ठाने ६ सुख शान्तिसे विराजते है। पूज्य श्री घासीलालजी म. सा. ठाने ४ को हमारी ओरसे वन्दना अर्जकर सुखशाता पूछे।

पूज्य श्री घासीलालजी म जी का लिखा हुआ विपाकसूत्र महाराजश्रीजी देखना चाहते है, इसलिये १ कापी आप भेजने की कृपा करें, फिर आपको वापिस भेज देवेगे। आपके पास नहीं हो तो जहा से मिले वहासे १ कापी जरूर भिजवाने का कष्ट करे, उत्तर जल्द देनेकी कृपा करें। योग्य सेवा लिखते रहें।

लुधियाना ता ४–८–५१

निवेदक
प्यारेलाल जैन

जैनागमवारिधि - जैनधर्मदिवाकर - उपाध्याय - पण्डित - मुनि श्रीआत्मारामजी महाराज (पंजाब)का आचाराङ्गसूत्र की आचारचिन्तामणि टीका पर

सम्मति-पत्र ।

मैने पूज्य आचार्यवर्य श्रीघासीलालजी (महाराज)की बनाई हुई श्रीमद् आचाराङ्गसूत्र के प्रथम अध्ययन की आचारचिन्तामणि टीका सम्पूर्ण उपयोग-पूर्वक सुनी।

यह टीका-न्याय सिद्धान्त से युक्त, व्याकरण के नियम से निबद्ध है। तथा इसमें प्रसंग २ पर क्रम से अन्य सिद्धान्त का संग्रह भी उचित रूप से मालूम होता है।

टीकाकारने अन्य सभी विषय सम्यक् प्रकार से स्पष्ट किये है, तथा प्रौढ विषयों का विशेषरूप से संस्कृत भाषा मे स्पष्टतापूर्वक प्रतिपादन अधिक मनोरंजक है, एतदर्थ आचार्य महोदय धन्यवाद के पात्र है।

मै आशा करता हूँ कि-जिज्ञासु महोदय इसका भलीभाँति पठन द्वारा जैनागम-सिद्धान्तरूप अमृत पी-पी कर मन को हर्षित करेंगे, और इसके मनन से दक्ष जन चार अनुयोगों का स्वरूपज्ञान पावेंगे। तथा आचार्यवर्य इसी प्रकार दूसरे भी जैनागमों के विशद विवेचन द्वारा श्वेताम्बर स्थानकवासी समाज पर महान उपकार कर यशस्वी बनेंगे।

वि स २००२ मृगशर सुदि १ }

जैनमुनि-उपाध्याय आत्माराम
लुधियाना (पंजाब)

शुभमस्तु।

— * —

बीकानेरवाला समाजभूषण शास्त्रज्ञ भेरुदानजी शेठिआका अभिप्राय

*

आप जो शास्त्रका कार्य कर रहे है यह बडा उपकारका कार्य है। इससे जैनजनता को काफी लाभ पहुँचेगा.

(ता २८-३-५६ का पत्र में से)

॥ श्री ॥

जैनागमवारिधि–जैनधर्मदिवाकर–जैनाचार्य–पूज्य–श्री आत्मारामजी–
महाराजाना पञ्चनद–(पंजाब)स्थानामनुत्तरोपपातिकसूत्राणा–
मर्थबोधिनीनामकटीकायामिदम्–

सम्मतिपत्रम्.

आचार्यवर्यैः श्री घासीलालमुनिभि सङ्कलिता अनुत्तरोपपातिकसूत्राणामर्थबोधिनी-नाम्नी संस्कृतवृत्तिरुपयोगपूर्वक सकलाऽपि स्वशिष्यमुखेनाऽश्रावि मया, इयं हि वृत्तिर्मुनिवरस्य वैदुष्य प्रकटयति। श्रीमद्भिर्मुनिभि सूत्राणामर्थान् स्पष्टयितु य प्रयत्नो व्यधायि तदर्थमनेकशो धन्यवादानर्हन्ति ते। यथा चेय वृत्ति सरला सुबोधिनी च तथा सारवत्यपि। अस्या स्वाध्यायेन निर्वाणपदमभीप्सुभिर्निर्वाणपदमनुसरद्भिर्ज्ञान–दर्शन–चारित्रेषु प्रयतमानैर्मुनिभि श्रावकैश्च ज्ञानदर्शनचारित्राणि सम्यक् सम्प्राप्याऽन्येऽप्यात्मानस्तत्र प्रवर्तयिष्यन्ते।

आशासे श्रीमदाशुकविर्मुनिवरो गीर्वाणवाणीजुषा विदुषा मनस्तोषाय जैनागमसूत्राणा सारावबोधाय च अन्येषामपि जैनागमानामित्थ सरला सुस्पष्टाश्च वृत्तीर्विधाय तास्तान् सूत्रग्रन्थान् देवगिरा सुस्पष्टयिष्यति।

अन्ते च "मुनिवरस्य परिश्रम सफलयितु सरला सुबोधिनीं चेमा सूत्रवृत्तिं स्वाध्यायेन सनाथयिष्यन्त्यवश्य सुयोग्या हंसनिभा पाठका।" इत्याशास्ते—

विक्रमाब्द २००२
श्रावणकृष्णा प्रतिपदा
लुधियाना.

उपाध्याय आत्मारामो जैनमुनि।

ऐसेही —

मध्यभारत सैलाना–निवासी श्रीमान् रतनलालजी डोसी श्रमणोपासक जैन लिखते हैं कि —

श्रीमान की की हुई टीकावाला उपासकदशाग सेवक के दृष्टिगत हुवा, सेवक अभी उसका मनन कर रहा है। यह ग्रन्थ सर्वांग–सुन्दर एवम् उच्चकोटि का उपकारक है।

निरयावलिकासूत्रका
आगमवारिधि-सर्वतन्त्रस्वतन्त्र-जैनाचार्य-पूज्यश्री
आत्मारामजी महाराजकी तरफ का आया हुवा

सम्मतिपत्र

लुधियाना ता ११ नवम्बर ४८

श्रीयुत गुलाबचन्दजी पानाचदजी ! सादर जय जिनेन्द्र ।

पत्र आपका मिला। निरयावलिका-विषय पूज्यश्रीजीका स्वास्थ्य ठीक न होने से उनके शिष्य प. श्री हेमचन्द्रजी महाराजने सम्मतिपत्र लिख दिया है, आपको भेज रहे हैं । कृपया एक कॉपी निरयावलिका की और भेज दीजिये और कोई योग्य सेवा-कार्य लिखते रहें ।

भवदीय,
गुजरमल-बलवतराय जैन

॥ सम्मतिः ॥

(लेखक जैनमुनि प श्री हेमचन्द्रजी महाराज)

सुन्दरबोधिनीटीकया समलङ्कृतं हिन्दी-गुर्जरभाषानुवादसहितं च श्रीनिरयावलिकासूत्र मेधाविनामल्पमेधसा चोपकारक भविष्यतीति सुदृढ मेऽभिमतम्, सस्कृतटीकेय सरला सुबोधा सुललिता चात एव अन्वर्थनाम्नी चाप्यस्ति। सुविशदत्वात् सुगमत्वात् प्रत्येकदुर्बोधपदव्याख्यायुतत्वाच्च टीकैषा सस्कृतसाधारणज्ञानवतामप्युपयोगिनी भाविनीत्यभिमैमि । हिन्दी-गुर्जरभाषानुवादावपि एतद्भाषाविज्ञाना महीयसे लाभाय भवेतामिति सम्यक् सभावयामि ।

जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलालजी-महाराजाना परिश्रमोऽय प्रशसनीयो, धन्यवादार्हाश्च ते मुनिसत्तमाः। एवमेव श्रीसमीरमल्लजी-श्रीकन्हैयालालजी-मुनिवरेण्ययोर्नियोजनकार्यमपि श्लाघ्य, तावपि च मुनिवरौ धन्यवादार्हौ स्तः ।

सुन्दरप्रस्तावनाविषयानुक्रमादिना समलङ्कृते सूत्ररत्नेऽस्मिन् यदि शब्दकोषोऽपि दत्तः स्यात्तर्हि वरतर स्यात् । यतोऽस्यावश्यकता सर्वेऽप्यन्वेषकविद्वासोऽनुभवन्ति ।

पाठकाः सूत्रस्यास्याध्ययनाध्यापनेन लेखकनियोजकमहोदयाना परिश्रम सफलयिष्यन्तीत्याशास्महे । इति।

श्री उपासकदशाङ्ग सूत्र पर जैनसमाज के अग्रगण्य जैनधर्मभूषण महान विद्वान संतो एवं विद्वान श्रावकोंने सम्मति भेजी है, उन के नाम निम्न लिखित हैं।

(१) लुधियाना–सम्वत् १९८९, आश्विन पूर्णिमा का पत्र, श्रुतज्ञान के भंडार आगमरत्नाकर जैनधर्मदिवाकर श्री १००८ श्री उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज, तथा न्यायव्याकरणवेत्ता श्री १००७ तच्छिष्य श्री मुनि हेमचन्द्रजी महाराज

(२) लाहौर–वि० स० १९८९ आश्विन वदि १२ का पत्र, पण्डित रत्न श्री १००८ श्री भागचन्दजी महाराज तथा तच्छिष्य पण्डितरत्न श्री १००७ श्री त्रिलोकचंदजी महाराज

(३) खीचन से ता ९–११–३६ का पत्र, क्रियापात्र स्थविर श्री १००८ श्री भारतरत्न श्री समरथमलजी महाराज

(४) बालाचोर–ता १४–११–३६ का पत्र, परम प्रसिद्ध भारतरत्न श्री १००८ श्री शतावधानीजी श्री रतनचन्दजी महाराज

(५) बम्बई–ता १६–११–३६ का पत्र, प्रसिद्ध कवीन्द्र श्री १००८ श्री कवि नानचन्द्रजी महाराज

(६) आगरा–ता १८–११–३६, जगद्–वल्लभ श्री १००८ श्री जैनदिवाकर श्री चौथमलजी महाराज, गुणवन्त गणीजी श्री १००७ श्री साहित्यप्रेमी प्यारचन्दजी महाराज

(७) हैद्राबाद (दक्षिण) ता २५–११–३६ का पत्र, स्थविरपदभूषित भाग्यवान पुरुष श्री ताराचन्दजी महाराज तथा प्रसिद्ध वक्ता श्री १००७ श्री सोभागमलजी महाराज

(८) जयपुर–ता २६–११–३६ का पत्र, संप्रदाय के गौरववर्धक शातस्वभावी श्री १००८ श्री पूज्य श्री खूबचन्दजी महाराज

(९) अम्बाला–ता २९–११–३६ का पत्र, परम प्रतापी पजाब केसरी श्री १००८ श्री पूज्य श्री काशीरामजी महाराज

(१०) सैलाना–ता २९–११–३६ का पत्र, शास्त्रों के ज्ञाता श्रीमान् रतनलालजी डोसी
(११) खीचन–ता ९–११–३६ का पत्र, पंडितरत्न न्यायतीर्थ सुश्रावक श्रीयुत् माधवलालजी

ता २५–११–३६

सादर जय जिनेन्द्र

आपका भेजा हुवा उपासकदशाग सूत्र तथा पत्र मिला। यहाँ विराजित प्रवर्तक वयोवृद्ध श्री १००८ श्री ताराचदजी महाराज पण्डित श्री किशनलालजी महाराज आदि ठाणा १४ सुखशाति मे विराजमान हैं। आपके वहा विराजित जैनशास्त्राचार्य पूज्यपाद श्री १००८ श्री घासीलालजी महाराज आदि ठाणा नव से हमारी वन्दना अर्ज कर सुखशाति पूछें। आपने उपासकदशाग सूत्र के विषय मे यहा विराजित मुनिवरों की सम्मति मगाई उसके विषय मे वक्ता श्री सौभागमलजी महाराज ने फरमाया है कि वर्तमान मे स्थानकवासी समाज में अनेकानेक विद्वान मुनि महाराज मौजूद हैं मगर जैनशास्त्र की वृत्ति रचने का साहस जैसा घासीलालजी महाराज ने किया है वैसा अन्य ने किया हो ऐसा नजर नहीं आता। दूसरा यह शास्त्र अत्यन्त उपयोगी तो यों है कि संस्कृत प्राकृत हिन्दी और गुजराती भाषा होने से चारों भाषा वाले एक ही पुस्तक से लाभ उठा सकते हैं। जैन–समाज मे ऐसे विद्वानों का गौरव बढे यही शुभकामना है। आशा है कि स्थानकवासी सघ विद्वानों की कदर करना सीखेगा।
योग्य लिखें, शेष शुभ।

भवदीय

जमनालाल रामलाल कीमती

*

आगरा से:—

श्री जैनदिवाकर प्रसिद्धवक्ता जगद्वल्लभ मुनि श्री चोथमलजी महाराज व पंडितरत्न सुव्याख्यानी गणीजी श्री प्यारचन्द जी महाराज ने इस पुस्तक को अतीव पसन्द की है।

श्रीमान् न्यायतीर्थ पण्डित

माधवलालजी खीचन से लिखते हैं कि:—

उन पंडितरत्न महाभाग्यवत पुरुषों के सामने उनकी अगाधतत्त्वगवेषणा के विषय में मैं नगण्य क्या सम्मति दे सकता हू।

परन्तु :—

मेरे दो मित्रों ने जिन्होंने इसको कुछ पढा है बहुत सराहना की है। वास्तव में ऐसे उत्तम व सबके समझाने योग्य ग्रन्थों की बहुत आवश्यकता है और इस समाज का तो ऐसे ग्रन्थ ही गौरव बढा सकते है—ये दोनों ग्रन्थ वास्तव में अनुपम हैं ऐसे ग्रन्थरत्नों के सुप्रकाश से यह समाज अमावास्या के घोर अन्धकार में दीपावली का अनुभव करती हुई महावीर के अमूल्य वचनों का पान करती हुई अपनी उन्नति में अग्रसर होती रहेगी।

—:*:—

ता २९-११-३६

अम्बाला (पंजाब)

पत्र आपका मिला। श्री श्री १००८ पंजाब केसरी पूज्य श्री काशीरामजी महाराज की सेवा में पढ कर सुना दिया। आपकी भेजी हुई उपासकदशाङ्ग सूत्र तथा गृहिधर्मकल्पतरु की एकएक प्रति भी प्राप्त हुई। दोनों पुस्तकें अति उपयोगी तथा अत्यधिक परिश्रम से लिखी हुई है, ऐसे ग्रन्थरत्नों के प्रकाशित करवाने की बडी आवश्यकता है। इन पुस्तकों से जैन तथा अजैन सबका उपकार हो सकता है। आपका यह पुरुषार्थ सराहनीय है।

आपका

शशिभूषण शास्त्री

अध्यापक, जैन हाई स्कूल

अम्बाला शहर.

રૂા ૫,૨૫૧ આપનાર આદ્ય મુરબ્બીશ્રી.



છગનલાલ શામળદાસ ભાવસાર

અમદાવાદ

शांतस्वभावी वैराग्यमूर्ति तत्त्ववारिधि धैर्यवान श्री जैनाचार्य पूज्यवर श्री श्री १००८ श्री खूबचन्दजी महाराज साहेबने सूत्र श्री उपासकदशाङ्गजी को देखा। आपने फरमाया कि पण्डित मुनि घासीलालजी महाराज ने उपासकदशाङ्ग सूत्रकी टीका लिखने में बड़ा ही परिश्रम किया है। इस समय इस प्रकार प्रत्येक सूत्रोंकी संशोधनपूर्वक सरल टीका और शुद्ध हिन्दी अनुवाद होने से भगवान निर्ग्रन्थों के प्रवचनों के अपूर्व रस का लाभ मिल सकता है



नालागढ़ से भारतरत्न शतावधानी पंडित मुनि श्री १००८ श्री रतनचन्दजी महाराज फरमाते हैं कि :—

उत्तरोत्तर जोता मूल सूत्रनी संस्कृत टीकाओ रचवामा टीकाकारे स्तुत्य प्रयास कर्यो छे, जे स्थानकवासी समाज माटे मगरूरी लेवा जेवु छे, वली कराचीना श्री सघे सारा कागलमा अने सारा टाइपमा पुस्तक छपावी प्रगट कर्युं छे, जे एक प्रकारनी साहित्यसेवा बजावी छे



बम्बई शहेर में विराजमान कवि मुनि श्री नानचन्दजी महाराजने फरमाया है कि पुस्तक सुन्दर हे, प्रयास अच्छा है।



खीचन से स्थविर क्रियापात्र मुनि श्री रतनचन्दजी महाराज और पंडितरत्न मुनि समरथमलजी महाराज फरमाते हैं कि—विद्वान महात्मा पुरुषोंका प्रयत्न सराहनीय है। जैनागम श्रीमद् उपासकदशाङ्ग सूत्र की टीका, एवं उसकी सरल सुबोधनी शुद्ध हिन्दी भाषा बड़ी ही सुन्दरता से लिखी है।



श्री वीतरागाय नमः ॥

श्री श्री श्री १००८ जैनधर्मदिवाकर जैनागमरत्नाकर श्रीमज्जैनाचार्य श्री पूज्य घासीलालजी महाराज चरणवंदन स्वीकार हो।

अपरञ्च–समाचार यह है कि आपके भेजे हुए ९ शास्त्र मास्टर शोभालालजी के द्वारा प्राप्त हुए, एतदर्थ धन्यवाद। आपश्रीजीने तो ऐसा कार्य किया है जो कि हजारों वर्षों से किसी भी स्थानकवासी जैनाचार्य ने नहीं किया।

आपने स्थानकवासी जैनसमाज के ऊपर जो उपकार किया है वह कदापि भुलाया नहीं जा सकता और नहीं भुलाया जा सकेगा।

हम तीनों मुनि भगवान महावीर से अथवा शासनदेव से प्रार्थना करते हैं कि आपकी इस वज्रमयी लेखनी को उत्तरोत्तर शक्ति प्रदान करें ता कि आप जैनसमाज के ऊपर और भी उपकार करते रहे, और आप चिरञ्जीव हो।

हम हैं आप के मुनि तीन

उदेपुर मुनि सत्येन्द्रदेव–मुनि लखपतराय–मुनि पद्मसेन

*

इतवारी बाजार

नागपुर ता १९–१२–५६

प्रखर विद्वान जैनाचार्य मुनिराज श्री घासीलालजी महाराज–द्वारा जो आगमोद्धार हुआ और हो रहा है सचमुच महाराजश्री का यह स्तुत्य कार्य है। हमने प्रचारकजी क द्वारा नौ सूत्रों का सेट देखा और कई मार्मिक स्थलोंको पढा, पढकर विद्वान मुनिराजश्री की शुद्ध श्रद्धा तथा लेखनीके प्रति हार्दिक प्रसन्नता फूट पडी।

वास्तव में मुनिराजश्री जैनसमाज पर ही नहीं, इतर समाज पर भी महा उपकार कर रहे हैं। ज्ञान किसी एक समाज का नहीं होता है, वह सभी समाज की अनमोल निधि है, जिसे कठिन परिश्रम से तैयार कर जनता के सम्मुख रक्खा जा रहा है, जिसका एक एक सेट हर शहर गाव और घरघर में होना आवश्यक है।

साहित्यरत्न

मोहनमुनि सोहनमुनि जैन

શ્રી દશવૈકાલિક સૂત્રનું સમ્મતિપત્ર.

શ્રમણસંઘના મહાન આચાર્ય આગમવારિધિ સર્વતન્ત્ર સ્વતંત્ર જૈનાચાર્ય પૂજ્યશ્રી આત્મારામજી મહારાજે આપેલા સમ્મતિપત્રનો ગુજરાતી અનુવાદ



મે તથા પંડિત મુનિ હેમચંદજીએ પંડિત મૂલચંદજી વ્યાસ—નાગોર મારવાડ વાળા દ્વારા મળેલી પંડિતરત્ન શ્રી ઘાસીલાલજીમુનિ વિરચિત સંસ્કૃત અને હિન્દી ભાષા સહિત શ્રી દશવૈકાલિક સૂત્રની આચારમણિમંજૂષા ટીકાનું અવલોકન કર્યું આ ટીકા સુંદર બની છે તેમા પ્રત્યેક શબ્દનો અર્થ સારી રીતે વિશેષ ભાવ લઈ ને સમજાવવામા આવેલ છે

તેથી વિદ્વાનો અને સાધારણ બુદ્ધિવાળાઓ માટે આ ટીકા પરમ ઉપકાર કરવાવાળી છે ટીકાકારે મુનિના આચાર વિષયનો સારો ઉલ્લેખ કરેલ છે. જે અહિંસાના સ્વરૂપને યથાર્થરૂપથી નથી જાણતા, તેમને માટે 'અહિંસા શુ વસ્તુ છે ?' તેનુ સારી રીતે પ્રતિપાદન કરેલ છે વૃત્તિકારે સૂત્રના પ્રત્યેક વિષયને સારી રીતે સમજાવેલ છે. આ વૃત્તિના અવલોકનથી વૃત્તિકારની અતિશય યોગ્યતા સિદ્ધ થાય છે

આ વૃત્તિમા એક બીજી વિશેષતા એ છે કે મૂલસૂત્રની સંસ્કૃતછાયા હોવાથી સૂત્ર, સૂત્રના પદ અને પદચ્છેદ સુબોધદાયક બનેલ છે

પ્રત્યેક જીજ્ઞાસુએ આ ટીકાનુ અવલોકન અવશ્ય કરવુ જોઈએ વધારે શુ કહેવુ ?. અમારા સમાજમા આવા પ્રકારના વિદ્વાન મુનિરત્નનુ હોવુ એ સમાજનુ અહોભાગ્ય છે અદ્યતન સુપ્તપ્રાય—સુતેલો સમાજ અને લુપ્તપ્રાય એટલે લોપ પામેલુ સાહિત્ય એ બન્નેનો આવા વિદ્વાન મુનિરત્નોના કારણે ફરીથી ઉદય થશે જેનાથી ભાવિતાત્મા મોક્ષને યોગ્ય બનશે અને નિર્વાણ પદને પામશે આ માટે અમો વૃત્તિકારને વાર વાર ધન્યવાદ આપીએ છીએ

વિક્રમ સંવત ૧૯૯૦ ફાલ્ગુન શુકલ તેરસ મંગળવાર (અલવર સ્ટેટ)	ઇતિ	ઉપાધ્યાય જૈનમુનિ આત્મારામ પંચનદીય

લીંબડી સંપ્રદાયના સદાનંદી મુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજનો અભિપ્રાય

શ્રીવીતરાગદેવે, જ્ઞાનપ્રચારને તીર્થંકરનામગોત્ર બાધવાનુ નિમિત્ત કહેલ છે જ્ઞાનપ્રચાર કરનાર, કરવામા સહાય કરનાર અને તેને અનુમોદન આપનાર જ્ઞાનાવરણીય કર્મને ક્ષય કરી, કેવળ જ્ઞાનને પ્રાપ્ત કરી પરમપદના અધિકારી બને છે શાસ્ત્રજ્ઞ, પરમશાન્ત અને અપ્રમાદી પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ પોતે અવિશ્રાન્તપણે જ્ઞાનની ઉપાસના અને તેની પ્રભાવના અનેક વિકટ પ્રસંગોમા પણ કરી રહ્યા છે તે માટે તેઓશ્રી અનેકશ ધન્યવાદના અધિકારી છે, વંદનીય છે તેમની જ્ઞાનપ્રભાવનાની ધગશ ઘણા પ્રમાદિઓને અનુકરણીય છે જેમ પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ પોતે જ્ઞાનપ્રચાર માટે અવિશ્રાન્ત પ્રયત્ન કરે છે તેમજ– શાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિના કાર્યવાહકો પણ એમા સહાય કરીને જે પવિત્ર સેવા કરી રહેલ છે તે પણ ખરેખર ધન્યવાદના પૂર્ણ અધિકારી છે

એ સમિતિના કાર્યકરોને મારી એક સૂચના છે કે –

શાસ્ત્રોદ્ધારક પ્રવર પંડિત અપ્રમાદી સંત ઘાસીલાલજી મહારાજ જે શાસ્ત્રોદ્ધારનુ કામ કરી રહેલ છે, તેમા સહાય કરવા માટે–પંડિતો વિગેરેના માટે જે ખર્ચો થઈ રહેલ છે તેને પહોચી વળવા માટે સારૂ–સરખુ ફંડ જોઈએ એના માટે મારી એ સૂચના છે કે – શાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિના મુખ્ય કાર્યવાહકો, જો બની શકે તો પ્રમુખ પોતે અને બીજા બે ત્રણ જણાએ, ગુજરાત, સૌરાષ્ટ્ર અને કચ્છમા પ્રવાસ કરી મેમ્બરો બનાવે અને આર્થિક સહાય મેળવે

જો કે અત્યારની પરિસ્થિતિ વિષમ છે વ્યાપારીઓ, ધંધાદારીઓને પોતાના વ્યવહાર સાચવવા પણ મુશ્કેલ બન્યા છે છતા જો સંભાવિત ગૃહસ્થો પ્રવાસે નીકળે તો જરૂર કાર્ય સફળ કરે એવી મને શ્રદ્ધા છે

આર્થિક અનુકૂળતા થવાથી શાસ્ત્રોદ્ધારનુ કામ પણ વધુ સરલતાથી થઈ શકે પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ જ્યા સુધી આ તરફ વિચરે છે ત્યા સુધીમા એમની જ્ઞાનશકિતનો જેટલો લાભ લેવાય તેટલો લઇ લેવો કદાચ સૌરાષ્ટ્રમા વધુ વખત રહેવાથી તેમને હવે બહાર વિહરવાની ઇચ્છા થતી હોય તો શાન્તિભાઈ શેઠ જેવાએ અમદાવાદ પધરાવવા માટે વિનંતી કરવી, અને ત્યા અનુકૂળતા મુજબ બે–ત્રણ વર્ષની સ્થિરતા કરાવીને તેમની પાસે શાસ્ત્રોદ્ધારનુ કામ પૂર્ણ કરાવી લેવુ જોઈએ

થોડા વખતમા જામજોધપુરમા શાસ્રોદ્ધાર કમિટી મળવાની છે તે વખતે ઉપરની સૂચના વિચારાય તો ઠીક

કરી શાસ્ત્રોદ્ધારક પૂજ્ય ઘાસીલાલજી મહારાજને એમની આ સેવા અને પરમ કલ્યાણકારક પ્રવૃત્તિને માટે વારંવાર અભિનંદન છે શાસનનાયક દેવ તેમના શરીરાદિને સશક્ત અને દીર્ઘાયુ રાખે જેથી તેઓ સમાજ ધર્મની વધુ ને વધુ સેવા કરી શકે ૐ અસ્તુ

ચાતુર્માસ સ્થળ લીંબડી } લિ
સં ૨૦૧૦ શ્રાવણ વદ ૧૩ ગુરુ } મહાનંદી જૈનમુનિ છોટાલાલજી

શ્રીવર્ધમાનસંપ્રદાયના પૂજ્યશ્રી પૂનમચંદ્રજી મહારાજનો અભિપ્રાય

શાસ્ત્રવિશારદ પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજશ્રીએ જૈન-આગમો ઉપર જે સંસ્કૃત ટીકા વગેરે રચેલ છે તે માટે તેઓશ્રી ધન્યવાદને પાત્ર છે તેમણે આગમો ઉપરની સ્વતંત્ર ટીકા રચીને સ્થાનકવાસી જૈનસમાજનું ગૌરવ વધાર્યું છે આગમો ઉપરની તેમની સંસ્કૃતટીકા, ભાષા અને ભાવની દૃષ્ટિએ ઘણીજ સુંદર છે સંસ્કૃતરચના માધુર્ય તેમજ અલંકાર વગેરે ગુણોથી યુક્ત છે. વિદ્વાનોએ તેમજ જૈનસમાજના આચાર્યો, ઉપાધ્યાયો વગેરેએ શાસ્ત્ર ઉપર રચેલી આ સંસ્કૃતરચનાની કદર કરવી જોઈએ, અને દરેક પ્રકારનો સહકાર આપવો જોઈએ

આવા મહાન કાર્યમાં પંડિતરત્ન પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ જે પ્રયત્ન કરી રહ્યા છે તે અલૌકિક છે તેમનું આગમ ઉપરની સંસ્કૃત ટીકા વગેરે રચવાનું ભગીરથ કાર્ય શીઘ્ર સફળ થાય એ શુભેચ્છા સાથે

અમદાવાદ
તા ૨૨-૪-૫૬ રવિવાર, } મુનિ પૂર્ણચંદ્રજી
મહાવીરજયંતી



ખંભાત સંપ્રદાયના મહાસતીજી શારદાબાઈ સ્વામીનો અભિપ્રાય

લખતર તા ૨૫-૪-૫૬

શ્રીમાન શેઠ શાંતીલાલભાઈ મંગળદાસભાઈ
પ્રમુખ સાહેબ, અખિલ ભારત શ્વે સ્થા જૈનશાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ
મુ અમદાવાદ

અમો અત્રે દેવગુરુની કૃપાએ સુખરૂપ છીએ વિ.મા આપની સમિતિ-દ્વારા પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ સાહેબ જે સૂત્રોનું કાર્ય કરે છે તે પૈકીના સૂત્રોમાથી ઉપાસકદશાંગ સૂત્ર, આચારાંગ સૂત્ર અનુત્તરોપપાતિક સૂત્ર,

દશવૈકાલિક સૂત્ર વિગેરે સૂત્રો જોયા તે સૂત્રો સસ્કૃત હિન્દી અને ગુજરાતી ભાષા ઓમા હોવાને કારણે વિદ્વાન અને સામાન્ય જનોને ઘણુ જ લાભદાયક છે તે વાચન ઘણુ જ સુદર અને મનોરજક છે આ કાર્યમા પૂજ્ય આચાર્યશ્રી જે અગાધ પુરુષાર્થથી કાર્ય કરે છે તે માટે વારવાર ધન્યવાદને પાત્ર છે આ સૂત્રો સમાજને ઘણુ લાભનુ કારણુ છે

હંસ-સમાન બુદ્ધિવાળા આત્માઓ સ્વપરના ભેદથી નિખાલસ ભાવનાએ અવલોકન કરશે તો આ સાહિત્ય સ્થાનકવાસી સમાજ માટે અપૂર્વ અને ગૌરવ લેવા જેવુ છે માટે દરેક ભવ્ય આત્માઓને સૂચન કરૂ છુ કે આ સૂત્રો પોતપોતાના ઘરમા વસાવવાની સુદર તકને ચૂકશો નહિ આવા શુદ્ધ પવિત્ર અને સ્વપરપન ને પુષ્ટીરૂપ સૂત્રો મળવા બહુ મુશ્કેલ છે આ કાર્યમા આપશ્રી તથા સમિતિના અન્ય કાર્યકરો જે શ્રમ લઇ રહ્યા છો તેમા મહાન નિર્જરાનુ કારણુ જોવામા આવે છે તે બદલ ધન્યવાદ. એજ

લી શારદાબાઈ સ્વામી
ખભાત સપ્રદાય



બરવાળા સપ્રદાયના વિદુષી મહાસતીજી મોઘીબાઈ સ્વામીનો અભિપ્રાય

ધધુકા તા ૨૭-૧-૫૯

શ્રીમાનશેઠ શાન્તીલાલ મગળદાસ
પ્રમુખ અ ભા શ્વે સ્થા જૈનશાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિ
મુ રાજકોટ

અત્રે બિરાજતા ગુ ગુના ભડાર મહાસતીજી વિદુષી મોઘીબાઈ સ્વામી તથા હીરાબાઈ આદિ ઠાણા બન્ને સુખશાતામા બિરાજે છે આપને સૂચન છે કે અપ્રમત્ત અવસ્થામા રહી નિવૃત્તિ ભાવને મેળવી ધર્મધ્યાન કરશોજી એજ આશા છે

વિશેષમા અમને પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજના રચેલા સૂત્રો ભાઇ પોપટલાલ ધનજીભાઈ તરફથી ભેટ તરીકે મળેલા તે સૂત્રો તમામ આદ્યોપાત વાચ્યા, મનન કર્યા અને વિચાર્યા છે ને સૂત્રો સ્થાનકવાસી સમાજને અને વીતરાગમાર્ગને ખૂબજ ઉન્નત બનાવનાર છે તેમા આપણી શ્રદ્ધા એટલી ન્યાયરૂપથી ભરેલી છે તે આપણા સમાજ માટે ગૌરવ લેવા જેવુ છે હસ સમાન

રૂા. ૫,૨૫૧ આપનાર આદ્ય મુરબ્બીશ્રી,



કોઠારી હરગોવીદભાઇ જેચંદ
ગજકોટ

આત્માઓ જ્ઞાનઝરણાઓથી આત્મરૂપ વાડીને વિકસિત કરશે ધન્ય છે આપને અને સમિતિના કાર્યકરોને જે સમાજ ઉત્થાન માટે કોઈની પણ પરવા કર્યા વગર જ્ઞાનનુ દાન ભવ્ય આત્માઓને આપવા નિમિત્તરૂપ થઇ રહ્યા છો આવા સમર્થ વિદ્વાન પાસેથી સંપૂર્ણ કાર્ય પુરૂ કરાવશો તેવી આશા છે

એજ લિ બરવાળા સંપ્રદાયના વિદુષી
મહાસતીજી મોંઘીબાઇ સ્વામી
ના ફરમાનથી લી ખોડીદાસ ગણેશભાઈ-ધંધુકા
સ્થાનકવાસી જૈન સંઘના પ્રમુખ

*

અદ્યતન પદ્ધતિને અપનાવનાર વડોદરા કોલેજના એક વિદ્વાન પ્રોફેસરનો અભિપ્રાય.

સ્થાનકવાસી સંપ્રદાયના મુનિશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ જૈનશાસ્ત્રોના સંસ્કૃત ટીકાબદ્ધ, ગુજરાતીમા અને હિન્દીમા ભાષાતર કરવાના ઘણા વિકટ કાર્યમા વ્યાપ્ત થયેલા છે શાસ્ત્રો પૈકી જે પ્રસિદ્ધ થયા છે તે હુ જોઈ શકયો છુ મુનિશ્રી પોતે સંસ્કૃત, અર્ધમાગધી, હિન્દી ભાષાઓના નિષ્ણાત છે, એ એમનો ટુંકો પરિચય કરતા સહજ જણાઇ આવે છે શાસ્ત્રોનુ સંપાદન કરવામા તેમને પોતાના શિષ્ય વર્ગનો અને વિશેષમા ત્રણ પંડિતોનો સહકાર મળ્યો છે, તે જોઈ મને આનંદ થયો સ્થાનકવાસી સંપ્રદાયના અગ્રેસરોએ પંડિતોનો સહકાર મેળવી આપી મુનિશ્રીના કાર્યને સરળ અને શિષ્ટ બનાવ્યુ છે સ્થાનકવાસી-સમાજમા વિદ્વત્તા ઘણી ઓછી છે તે દિગંબર, મૂર્તિપૂજક શ્વેતાંબર વગેરે જૈનદર્શનના પ્રતિનિધિઓના ઘણા સમયથી પરિચયમા આવતા હુ વિરોધના ભય વગર કહી શકુ પૂ મહારાજનો આ પ્રયાસ સ્થાનકવાસી સંપ્રદાયમા પ્રથમ છે એવી મારી માન્યતા છે સંસ્કૃત સ્પષ્ટીકરણો સારા આપવામા આવ્યા છે ભાષા શુદ્ધ છે એમ હુ ચોક્કસ કહી શકુ છુ ગુજરાતી ભાષાતરો પણ શુદ્ધ અને સરળ થયેલા છે મને વિશ્વાસ છે કે મહારાજ-શ્રીના આ સ્તુત્ય પ્રયાસને જૈનસમાજ ઉત્તેજન આપશે અને શાસ્ત્રોના ભાષાતરોને વાચનાલયમા અને કુટુંબોમા વસાવી શકાય તે પ્રમાણે વ્યવસ્થા કરશે

પ્રતાપગંજ, વડોદરા
તા ૨૭-૭-૧૯૫૬

કામદાર કેશવલાલ હિંમતરામ,
એમ એ



મુંબઈની બે કોલેજોના પ્રોફેસરોનો અભિપ્રાય

મુંબઈ તા ૩૧–૩–૫૬

શ્રીમાન શેઠ શાંતીલાલ મંગળદાસ
પ્રમુખ શ્રી અખિલ ભારત શ્વે સ્થા જૈનશાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ,
રાજકોટ

પૂજ્યાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજે તૈયાર કરેલા આચારાંગ, દશવૈકાલિક આવશ્યક, ઉપાસકદશાંગ વગેરે સૂત્રો અમે જોયા આ સૂત્રો ઉપર સંસ્કૃતમાં ટીકા આપવામાં આવી છે અને સાથે સાથે હિન્દી અને ગુજરાતી ભાષાંતરો પણ આપવામાં આવ્યા છે, સંસ્કૃત ટીકા અને ગુજરાતી તથા હિન્દી ભાષાંતરો જોતા આચાર્યશ્રીના આ ત્રણે ભાષા પરના એકસરખા અસાધારણ પ્રભુત્વની સચોટ અને સુરેખ છાપ પડે છે આ સૂત્ર–ગ્રંથોમાં પાને પાને પ્રગટ થતી આચાર્યશ્રીની અપ્રતિમ વિદ્વત્તા મુગ્ધ કરી દે તેવી છે ગુજરાતી તથા હિન્દીમાં થયેલા ભાષાંતરમાં ભાષાની શુદ્ધિ અને સરળતા નોંધપાત્ર છે એથી વિદ્વદ્જન અને સાધારણ માણસ ઉભયને સંતોષ આપે એવી એમની લેખિનીની પ્રતીતિ થાય છે ૩૨ સૂત્રોમાંથી હજુ ૧૩ સૂત્રો પ્રગટ થયા છે બીજા સાત સૂત્રો લખાઈને તૈયાર થઈ ગયા છે આ બધા જ સૂત્રો જ્યારે એમને હાથે તૈયાર થઇને પ્રગટ થશે ત્યારે જૈનસૂત્ર–સાહિત્યમાં અમૂલ્ય સંપત્તિરૂપ ગણાશે એમાં સંશય નથી આચાર્યશ્રીના આ મહાન કાર્યને જૈન સમાજનો–વિશેષત સ્થાનકવાસી સમાજનો સંપૂર્ણ સહકાર સાપડી રહેશે એવી અમે આશા રાખીએ છીએ

પ્રો રમણલાલ ચીમનલાલ શાહ
સેંટ ઝેવિયર્સ કોલેજ, મુંબઈ.
પ્રો તારા રમણલાલ શાહ.
સોફીયા કોલેજ, મુંબઈ.

રાજકોટની ધર્મેન્દ્રસિંહજી કોલેજના પ્રોફેસર સાહેબનો અભિપ્રાય

જયમહાલ
જાગનાથ પ્લોટ
રાજકોટ, તા ૧૮–૪–૫૬

પૂજ્યાચાર્ય પ મુનિ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ આજે જૈનસમાજ માટે એક એવા કાર્યમાં વ્યાપ્ત થયેલ છે કે જે સમાજ માટે બહુ ઉપયોગી થઈ પડશે મુનિશ્રીએ તૈયાર કરેલા આચારાંગ, દશવૈકાલિક, શ્રીવિપાકશ્રુત વિ મે જોયા

આ સૂત્રો જોતા પહેલીજ નજરે મહારાજશ્રીનો સસ્કૃત, અર્ધમાગધી, હિન્દી તથા ગુજરાતી ભાષાઓ ઉપરનો અસાધારણ કાબૂ જણાઇ આવે છે એક પણ ભાષા મહારાજશ્રીથી અજાણી નથી આપણે જાણીએ છીએ કે એ સૂત્રો ઉચ્ચ અને પ્રથમ કોટિના છે તેની વસ્તુ ગભીર, વ્યાપક અને જીવનને તલસ્પર્શી છે આટલા ગહન અને સર્વગ્રાહ્ય સૂત્રોનુ ભાષાતર પૂ ઘાસીલાલજી મહારાજ જેવા ઉચ્ચ કોટિના મુનિરાજને હાથે થાય છે તે આપણા અહોભાગ્ય છે યત્રવાદ અને ભૌતિકવાદના આ જમાનામા જ્યારે ધર્મભાવના ઓસરતી જાય છે એવે વખતે આવા તત્ત્વજ્ઞાન–આધ્યાત્મિકતાથી ભરેલા સૂત્રોનુ સરળ ભાષામા ભાષાતર દરેક જીજ્ઞાસુ, સુમુક્ષુ અને સાધકને માર્ગદર્શક થઈ પડે તેમ છે જૈન અને જૈનેતર, વિદ્વાન અને સાધારણ માણસ, સાધુ અને શ્રાવક દરેકને સમજણ પડે તેવી સ્પષ્ટ, સરળ અને શુદ્ધ ભાષામા સૂત્રો લખવામા આવ્યા છે મહારાજશ્રીને જ્યારે જોઈએ ત્યારે તેમના આ કાર્યમા મશગૂળાયેલા જોઇએ છીએ એ ઉપરથી મુનિશ્રીના પરિશ્રમ અને ધગશની કલ્પના કરી શકાય તેમ છે તેમનુ જીવન સૂત્રોમા વણાઈ ગયુ છે

મુનિશ્રીના આ અસાધારણ કાર્યમા પોતાના શિષ્યોનો તથા પડિતોનો સહકાર મળ્યો છે મને આશા છે કે જો દરેક સુમુક્ષુ આ પુસ્તકોને પોતાના ઘરમા વસાવશે અને પોતાના જીવનને સાચા સુખને માર્ગે વાળશે તો મહારાજશ્રીએ ઉઠાવેલો શ્રમ સપૂર્ણપણે સફળ થશે

પ્રો રસિકલાલ કસ્તુરચદ ગાધી
એમ એ એલ એલ બી
ધર્મેન્દ્રસિંહજી કોલેજ
રાજકોટ (સૌરાષ્ટ્ર)

મુબઇ અને ઘાટકોપરમા મળેલી સભાએ બીનાસર કોન્ફરન્સ તથા સાધુસમેલનમાં મોકલાવેલ ઠરાવ

હાલ જે વખતે શ્વેતાબરસ્થાનકવાસી જૈન સઘ માટે આગમ–સશોધન અને સ્વતત્ર ટીકાવાળા શાસ્ત્રોની અતિઆવશ્યકતા છે અને જે મહાનુભાવોએ આ વાત દીર્ઘદ્રષ્ટિથી પહેલી પોતાના મગજમા લઈ તે પાર પાડવા મહેનત લઇ રહ્યા છે તેવા મુનિ મહારાજ પંડિતરત્ન શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કે જેઓને સાદડી અધિવેશનમા સર્વાનુમતે સાહિત્યમત્રી નીમ્યા છે તેઓશ્રીની દેખરેખ નીચે અ ભા શ્વે સ્થા જૈનશાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ જે એક મોટી વગવાળી કમિટી છે તેની મારફતે કામ થઇ રહ્યુ છે જેને પ્રધાનાચાર્યશ્રી તથા પ્રચાર મત્રીશ્રી

તથા અનેક અનુભવી મહાનુભાવોએ પોતાની પસંદગીની મહોર છાપ આપી છે અને છેલ્લામા છેલ્લા વડોદરા યુનિવર્સીટીના પ્રોફેસર કેશવલાલ કામદાર (એમ એ) એ પોતાનુ સવિસ્તર પ્રમાણપત્ર આપ્યુ છે તે શાસ્ત્રોદ્ધારકમિટીના કામને આ સમેલન તથા કોન્ફરન્સ હાર્દિક અભિનંદન આપે છે અને તેમના કામને જ્યા જ્યા અને જે જે જરૂર પડે-પડિતની અને નાણાની પાસેના ફંડમાથી અને જાહેર જનતા પાસેથી મદદ મળે તેવી ઇચ્છા ધરાવે છે

આ શાસ્ત્રો અને ટીકાઓને જ્યારે આટલી બધી પ્રશંસાપૂર્વક પસંદગી મળી છે ત્યારે તે કામને મદદ કરવાની આ કોન્ફરન્સ પોતાની ફરજ માને છે અને જે કાઇ ત્રુટી હોય તે પ ૨ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજની સાનિધ્યમા જઇ બતાવીને સુધારવા પ્રયત્ન કરવો આ કામને ટલ્લે ચઢાવવા જેવુ કોઈ પણ સત્તા ઉપરના અધિકારીઓની વાણી કે વર્તનથી ન થાય તે જોવા પ્રમુખ સાહેબને ભલામણ કરે છે

(સ્થા જૈન પત્ર તા ૪-૫-૫૬)

*

સ્વતંત્રવિચારક અને નિડર લેખક 'જૈનસિદ્ધાંત'ના તંત્રીશ્રી શેઠ નગીનદાસ ગીરધરલાલનો અભિપ્રાય

શ્રી સ્થાનકવાસી શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ સ્થાપીને પૂ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજને સૌરાષ્ટ્રમા બોલાવી તેમની પાસે બત્રીસે સૂત્રો તૈયાર કરાવવાની હિલચાલ ચાલતી હતી ત્યારે તે હિલચાલ કરનાર શાસ્ત્રજ્ઞ શેઠ શ્રી દામોદરદાસભાઈ સાથે મારે પત્રવ્યવહાર ચાલતો ત્યારે શેઠ શ્રી દામોદરદાસભાઈએ તેમના એક પત્રમા મને લખેલુ કે—

> "આપણા સૂત્રોના મૂળ પાઠ તપાસી શુદ્ધ કરી સંસ્કૃત સાથે તૈયાર કરી શકે તેવા સ્થાનકવાસી સંપ્રદાયમા મુનિશ્રી ઘાસીલાલજી મ સિવાય મને કોઈ વિશેષ વિદ્વાન મુનિ જોવામા આવતા નથી લાબી તપાસને અંતે મે મુનિ શ્રી ઘાસીલાલજીને પસંદ કરેલા છે"

શેઠ શ્રી દામોદરદાસભાઈ પોતે વિદ્વાન હતા, શાસ્ત્રજ્ઞ હતા તેમ વિચારક પણ હતા શ્રાવકો તેમજ મુનિઓ પણ તેમની પાસેથી શિક્ષા વાચના લેતા, તેમ જ્ઞાનચર્ચા પણ કરતા એવા વિદ્વાન શેઠશ્રીની પસંદગી યથાર્થ જ હોય એમા

નવાઈ નથી અને પૂ શ્રી ઘાસીલાલજીના બનાવેલા સૂત્રો જોતા સૌ કોઈને ખાત્રી થાય તેમ છે કે દામોદરદાસભાઈએ તેમજ સ્થાનકવાસીસમાજે જેવી આશા શ્રી ઘાસીલાલજી મ. પાસેથી રાખેલી તે બરાબર ફળીભૂત થયેલ છે

શ્રીવર્ધમાન–શ્રમણસઘના આચાર્ય શ્રીઆત્મારામજી મહારાજે શ્રી ઘાસીલાલજી મ ના સૂત્રો માટે ખાસ પ્રશસા કરી અનુમતિ આપેલ છે તે ઉપરથી જ શ્રી ઘાસીલાલજી મ ના સૂત્રોની ઉપયોગિતાની ખાત્રી થશે

આ સૂત્રો વિદ્યાર્થીને, અભ્યાસીને તેમજ સામાન્ય વાચકને સર્વને એક સરખી રીતે ઉપયોગી થઈ પડે છે વિદ્યાર્થીને તેમજ અભ્યાસીને મૂળ તથા સસ્કૃત ટીકા વિશેષ કરીને ઉપયોગી થાય તેમ છે ત્યારે સામાન્ય હિન્દી વાચકને હિન્દી અનુવાદ અને ગુજરાતી વાચકને ગુજરાતી અનુવાદથી આખુ સૂત્ર સરળતાથી સમજાઈ જાય છે.

કેટલાકોને એવો ભ્રમ છે કે સૂત્રો વાચવાનુ આપણુ કામ નહિ, સૂત્રો આપણુને સમજાય નહિ આ ભ્રમ તદ્દન ખોટો છે બીજા કોઈપણ શાસ્ત્રીય પુસ્તક કરતાં સૂત્રો સામાન્ય વાચકને પણ ઘણી સરળતાથી સમજાઈ જાય છે સામાન્ય માણુસ પણ સમજી શકે તેટલા માટે જ ભ મહાવીરે તે વખતની લોકભાષામા (અર્ધમાગધી ભાષામા) સૂત્રો બનાવેલા છે. એટલે સૂત્રો વાચવામા તેમજ સમજવામા ઘણા સરળ છે.

માટે કોઈ પણ વાચકને એવો ભ્રમ હોય તો તે કાઢી નાખવો અને ધર્મનુ તેમજ ધર્મના સિદ્ધાતોનુ સાચુ જ્ઞાન મેળવવા માટે સૂત્રો વાચવાને ચૂકવું નહિ, એટલુ જ નહિ પણ જરૂરથી પહેલા સૂત્રોજ વાચવા.

સ્થાનકવાસીઓમા આ શ્રી સ્થા જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિએ જે કામ કર્યું છે અને કરી રહી છે તેવું કોઇ પણ સસ્થાએ આજ સુધી કર્યું નથી સ્થા જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિના છેલ્લા રિપોર્ટ પ્રમાણે બીજા ૪ સૂત્રો લખાયેલ પડયા છે, બે સૂત્રો–અનુયોગદ્વાર અને ઠાણાગ સૂત્રો–લખાય છે તે પણ થોડા વખતમા તૈયાર થઈ જશે તે પછી બાકીના સૂત્રો, હાથ ધરવામા આવશે

તૈયાર સૂત્રો જલ્દી છપાઇ જાય એમ ઇચ્છીએ છીએ અને સ્થા બધુઓ સમિતિને ઉત્તેજન અને સહાયતા આપીને તેમના સૂત્રો ઘરમા વસાવે એમ ઇચ્છીએ છીએ

'જૈન સિદ્ધાન્ત' –મે ૧૯૫૫

*

"જૈન સિદ્ધાંતના" તંત્રીશ્રીનો અભિપ્રાય.

સ્થાનકવાસીઓમાં પ્રમાણભૂત સૂત્રો બહાર પાડનારી આ એકની એક સંસ્થા છે. અને એના આ છેલ્લા રિપોર્ટ ઉપરથી જણાય છે કે તેણે ઘણી સારી પ્રગતિ કરી છે તે જોઈ આનંદ થાય છે

મૂળ પાઠ, ટીકા, હિન્દી તથા ગુજરાતી અનુવાદ સહિત સૂત્રો બહાર પાડવા એ કાંઇ સહેલું કામ નથી એ એક મહાભારત કામ છે. અને તે કામ આ શાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિ ઘણી સફળતાથી પાર પાડી રહી છે તે સ્થાનકવાસી સમાજ માટે ઘણા ગૌરવનો વિષય છે અને સમિતિ ધન્યવાદને પાત્ર છે

સમિતિ તરફથી નવ સૂત્રો બહાર પડી ચૂકયાં છે, હાલમા ત્રણ સૂત્રો છપાય છે નવ સૂત્રો લખાઈ ગયા છે અને જંબૂદ્વીપપ્રજ્ઞપ્તિ તથા નંદીસૂત્ર તૈયાર થઈ રહ્યા છે

હાલમા મંત્રી શ્રી સાકરચંદ ભાઇચંદ સમિતિના કામમા જ તેમનો આખો વખત ગાળે છે અને સમિતિના કામકાજને ઘણો વેગ આપી રહ્યા છે તેમની ખંત માટે ધન્યવાદ

અને આ મહાભારત કામના મુખ્ય કાર્યકર્તા તો છે વયોવૃદ્ધ પંડિત મુનિશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ મૂળ પાઠનું સંશોધન તથા સંસ્કૃત ટીકા તેઓશ્રી જ તૈયાર કરે છે મુનિશ્રીનો આ ઉપકાર આખાય સ્થા જૈન સમાજ ઉપર ઘણો મહાન છે એ ઉપકારનો બદલો તો વાળી શકાય તેમજ નથી

પરંતુ આ સમિતિના મેમ્બર બની, તેના બહાર પડેલા સૂત્રો ઘરમા વસાવી તેનું અધ્યયન કરવામા આવે તો જ મહારાજશ્રીનું થોડું ઋણ અદા કર્યું ગણાય

ભગવાને કહ્યું છે કે પઢમં ણાણં તઓ દયા-પહેલું જ્ઞાન પછી દયા, દયા ધર્મને યથાર્થ સમજવો હોય તો ભગવાનની વાણીરૂપ આપણા સૂત્રો વાચવાજ જોઇએ તેનું અધ્યયન કરવું જોઈએ અને તેનો ભાવાર્થ યથાર્થ સમજવો જોઇએ

એટલા માટે આ શાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિના સર્વ સૂત્રો દરેક સ્થા જૈને પોતાના ઘરમા વસાવવાજ જોઇએ સર્વધર્મજ્ઞાન આપણા સૂત્રોમાજ સમાયેલું છે, અને સૂત્રો સહેલાઇથી વાચીને સમજી શકાય છે, માટે દરેક સ્થા. જૈન આ સૂત્રો વાચે એ ખાસ જરૂરનું છે

"જૈન સિદ્ધાંત" ડીસેમ્બર—૫૬

રૂા. ૫,૦૦૧ આપનાર આદ્ય મુરબ્બીશ્રી,



(સ્વ) શેઠ ધારસીભાઈ જીવણભાઈ
સોલાપુર

શ્રી ઉપાસકદશાંગ સૂત્રને માટે અભિપ્રાય.

મૂળ સૂત્ર તથા પૂ મુનિશ્રી ઘાસીલાલજીએ બનાવેલ સંસ્કૃત છાયા તથા ટીકા અને હિંદી તથા ગુજરાતી-અનુવાદ સહિત

પ્રકાશક-અ. ભા શ્વે સ્થાનકવાસી જૈન શાસ્રોદ્ધાર સમિતિ, ગરેડીઆ કુવા રોડ, ગ્રીન લોજ પાસે, રાજકોટ (સૌરાષ્ટ્ર). પૃષ્ઠ ૬૧૬ બીજી આવૃત્તિ બેવડુ (મોટુ) કદ. પાકુ પુઠુ જેકેટ સાથે સને ૧૯૫૬ કિંમત ૮-૮-૦

આપણા મૂળ બાર અંગ સૂત્રોમાનુ ઉપાસકદશાગ એ સાતમુ અંગસૂત્ર છે, એમા ભગવાન મહાવીરના દશ ઉપાસકો-શ્રાવકોના જીવનચરિત્રો આપેલા છે, તેમા પહેલુ ચરિત્ર આનંદ શ્રાવકનુ આવે છે

આનંદ શ્રાવકે જૈનધર્મ અંગીકાર કર્યો અને બાર વ્રત ભગવાન મહાવીર પાસે અંગીકાર કરી પ્રતિજ્ઞા-પ્રત્યાખ્યાન લીધા તેનુ સવિસ્તર વર્ણન આવે છે તેના અંતર્ગત અનેક વિષયો જેવા કે, અભિગમ, લોકાલોકસ્વરૂપ, નવતત્ત્વ, નરક, દેવલોક વગેરેનું વર્ણન પણ આવે છે

આનંદ શ્રાવકે બાર વ્રત લીધા તે બારે વ્રતની વિગત, અતિચારની વિગત વગેરે બધુ આપેલુ છે તે જ પ્રમાણે બીજા નવ શ્રાવકોની પણ વિગત આપેલ છે

આનંદ શ્રાવકની પ્રતિજ્ઞામા अरिहतचेइयाइ શબ્દ આવે છે મૂર્તિપૂજકો મૂર્તિપૂજા સિદ્ધ કરવા માટે તેનો અર્થ અરિહતનુ ચૈત્ય (પ્રતિમા) એવો કરે છે પણ તે અર્થ તદ્દન ખોટો છે અને તે જગ્યાએ આગળ પાછળના સંબંધ પ્રમાણે તેનો એ ખોટો અર્થ બંધ બેસતો જ નથી તે મુનિશ્રી ઘાસીલાલજીએ તેમની ટીકામા અનેક રીતે પ્રમાણો આપી સાબિત કરેલ છે અને अरिहत चेइयाइ નો અર્થ સાધુ થાય છે તે બતાવી આપેલ છે

આ પ્રમાણે આ સૂત્રમાથી શ્રાવકના શુદ્ધ ધર્મની માહિતી મળે છે તે ઉપરાત તે શ્રાવકોની ઋદ્ધિ, રહેઠાણ, નગરી વગેરેના વર્ણનો ઉપરથી તે વખતની સામાજિક સ્થિતિ, રીતરિવાજ, રાજ્યવ્યવસ્થા વગેરે બાબતોની માહિતી મળે છે

એટલે આ સૂત્ર દરેક શ્રાવકે અવશ્ય વાચવુ જોઈએ, એટલુ જ નહિ, પણ વારવાર અધ્યયન કરવા માટે ઘરમા વસાવવુ જોઇએ

પુસ્તકની શરૂઆતમા વર્દ્ધમાન શ્રમણ સંઘના આચાર્યશ્રી આત્મારામજી મહારાજનુ સંમતિપત્ર તથા બીજા સાધુઓ તેમજ શ્રાવકોના સંમતિપત્રો આપેલા છે, તે સૂત્રની પ્રમાણભૂતતાની ખાત્રી આપે છે

"જૈન સિદ્ધાંત" જાન્યુઆરી, ૫૭

☆

સેંકડો સર્ટીફીકેટો ઉપરાંત હાલમા મળેલા કેટલાક તાજા અભિપ્રાયો

શાસ્ત્રોદ્ધારના કાર્યને વેગ આપો

તંત્રીસ્થાનેથી (જૈનજ્યોતિ) તા. ૧૫-૯-૫૭

પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ ઠાણા ૪ હાલમા અમદાવાદ મુકામે સરસપુરના સ્થા જૈન ઉપાશ્રયમા બિરાજમાન છે તેઓશ્રી શાસ્ત્રોદ્ધારનુ કાર્ય ખૂબ જ ખત અને ઉત્સાહથી વૃદ્ધવયે પણ કરી રહ્યા છે તેઓશ્રી વૃદ્ધ છે છતા પણ આખો દિવસ શાસ્ત્રની ટીકાઓ લખી રહ્યા છે આજ સુધીમા તેમણે લગભગ ૨૦ જેટલા શાસ્ત્રોની ટીકાઓ લખી નાખી છે અને બાકીના સૂત્રાની ટીકા જેમ બને તેમ જલદી પૂર્ણ કરવી એવા મનોરથ સેવી રહેલ છે, સ્થા. જૈન સમાજમા શાસ્ત્રો ઉપર સસ્કૃત ટીકા લખવાનો આ પ્રથમ જ પ્રયાસ છે અને તે પ્રયાસ સપૂર્ણ બને એવી અમે શાસનદેવ પ્રત્યે પ્રાર્થના કરીએ છીએ આજ સુધી ઘણા મુનિવરોએ શાસ્ત્રોનુ કામ શરૂ કરેલ છે પણ કોઈએ પૂર્ણ કરેલ નથી પૂજ્યશ્રી અમુલખઋષીજી મહારાજે બત્રીસે શાસ્ત્રો ઉપર હિન્દી અનુવાદ કરેલ અને સપૂર્ણ બનેલ ત્યારબાદ આચાર્ય શ્રી આત્મારામજી મહારાજશ્રીએ હિન્દી ટીકા કેટલાક શાસ્ત્રો ઉપર લખેલ પણ ઘણા શાસ્ત્રો બાકી રહી ગયા પૂજ્ય હસ્તિમલજી મહારાજે એક બે શાસ્ત્રો ઉપરની ટીકાઓના અનુવાદો કરેલ પૂજ્ય શ્રી જવાહિરલાલ મહારાજશ્રીએ સૂયગડાગસૂત્ર ટીકા સહિત હિન્દી અનુવાદ સાથે પ્રકાશિત કરેલ શ્રી સાભાગ્યમલજી મહારાજે આચારાગની હિન્દી ટીકા લખેલ પણ સપૂર્ણ શાસ્ત્રો ઉપર સસ્કૃત ટીકા હજી સુધી સ્થા જૈન સાધુઓ તરફથી થયેલ નથી જ્યારે પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજશ્રીએ ૨૦ શાસ્ત્રો ઉપર સસ્કૃત ટીકા તેનો હિન્દી ગુજરાતી અનુવાદ કરાવેલ છે આથી હવે આશા બધાય છે કે તેઓશ્રી બત્રીસે બત્રીસ શાસ્ત્રો ઉપર સસ્કૃત ટીકા લખવામા સફળ થશે અને શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિએ આજ સુધી ૧૦ થી ૧૨ શાસ્ત્રો છપાવી પણ દીધા છે અને હજી પણ તે શાસ્ત્રો વિશેષ જલદી છપાય તે માટે શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ સપૂર્ણ પ્રયત્ન કરી રહેલ છે તે ધન્યવાદને પાત્ર છે

જૈનશાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિના રૂ ૨૫૧ ભરીને લાઈફ મેમ્બર થનારને તમામ શાસ્ત્રો શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ તરફથી ભેટ મળે છે આ રીતે એક પથ અને દો કાજ બન્ને રીતે લાભ થાય તેમ છે રૂા ૨૫૧ થી ૫૦૦ રૂપિયાની કિમતના શાસ્ત્રો મળે એ પણ મોટો લાભ છે અને પ્રવચનની પ્રભાવના કરવાનો ધર્મલાભ પણ મળે છે

આ સાલે પૂજ્ય ઘાસીલાલજી મહારાજના સુશિષ્ય પ. મુનિશ્રી કન્હૈયાલાલજી મહારાજ મલાડ મુકામે ચાતુર્માસ બિરાજે છે અને તેઓશ્રી શાસ્ત્રોના મેમ્બરો કરવા માટે અથાગ પ્રયત્ન કરીને પ્રવચનની સેવા બજાવી રહ્યા છે અને અત્યાર સુધીમા મુંબઈ તેમજ પરાઓના લગભગ ૪૦ જેટલા ગૃહસ્થો લાઈફ મેમ્બર બની ગયા છે અને મુબઈમા લગભગ ૩૦૦ જેટલા મેમ્બરો થાય તે ઈચ્છવા યોગ્ય છે શ્રીમત ગૃહસ્થો હજારો રૂપિયા પોતાના ઘર ખર્ચમા તેમજ મોજશોખના કામોમા તેમજ વ્યાવહારિક કામોમા વાપરી રહ્યા છે તો આવા શાસ્ત્રોદ્ધાર જેવા પવિત્ર કાર્યમા રૂપિયા વાપરશે તો ધર્મની સેવા કરી ગણાશે અને બદલામા ઉત્તમ આગમસાહિત્યની એક લાયબ્રેરી મળી જશે જેનુ વાચન કરવાથી આત્માને શાતિ મળશે અને શાસ્ત્રઆજ્ઞા-પ્રમાણે વર્તવાથી જીવન સફળ થશે



શતાવધાની મુનિશ્રી જયંતીલાલજી મહારાજશ્રીનો અમદાવાદનો પત્ર "સ્થાનકવાસી જૈન" તા ૫-૯-૫૭ના અંકમાં છપાએલ છે જે નીચે મુજબ છે.

સૂત્રોના મૂળ પાઠોમા ફેરફાર હોઈ શકે ખરો ?

તા ૭-૮-૫૭ના રોજ અત્રે બિરાજતા શાસ્ત્રોદ્ધારક આચાર્ય મહારાજશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ પાસે, મારા ઉપર આવેલ એક પત્ર લઈને હુ ગયો હતો, તે સમયે મારે પૂ મ સા સાથે જે વાતચીત થઈ તે સમાજને જાણ કરવા સારૂ લખુ છુ

'શાસ્ત્રોનુ કામ એક ગહન વસ્તુ છે અપ્રમાદી થઈ તેમા અવિરત પ્રયત્નો કરવા જોઈએ, સંપૂર્ણ શાસ્ત્રોનુ જ્ઞાન તેમજ દરેક પ્રકારની ખાસ ભાષાઓનુ જ્ઞાન હોય તોજ આગમોદ્ધારનુ કાર્ય સફળતાથી થાય આ પ્રકારનો પ્રયત્ન હાલ અમદાવાદ ખાતે સરસપુર જૈન સ્થાનકમા બિરાજતા પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કરી રહ્યા છે શાસ્ત્ર-લેખનનુ આ કાર્ય થઈ રહ્યુ છે, તેમા અનેક વ્યક્તિઓને અનેક પ્રકારની શંકાઓ થાય છે તે પૈકી શાસ્ત્રોના મૂળ પાઠમા ફેરફાર થાય છે ? કરવામા આવે છે ? એવો પ્રશ્ન પણ કેટલાકને થાય છે અને તેવો પ્રશ્ન થાય તે સ્વાભાવિક છે, કેમકે અમુક મુનિરાજો તરફથી પ્રગટ થયેલ સૂત્રોના મૂળ પાઠમા ફેરફાર થયેલા છે જેથી આ કાર્યમા પણ સમાજને શંકા થાય

પણ ખરી રીતે જોતા, અત્યારે જે શાસ્ત્રોદ્ધારનુ કામ ચાલી રહ્યુ છે તે વિષે સમાજને ખાત્રી આપવામા આવે છે કે, શાસ્ત્રોદ્ધારસમિતિ તરફથી અત્યાર સુધીમા પ્રગટ થયેલા આગમોના મૂળ પાઠમા જરાપણ ફેરફાર કરવામા આવેલ નથી અને ભવિષ્યમા જે સૂત્રો પ્રગટ થશે તેમા ફેરફાર થશે નહિ તેની સમાજ નોંધ લ્યે

લી

શતાવધાની શ્રી જયંત મુનિ-અમદાવાદ

*

"શ્રી અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિનો ટુંક પરિચય"

સ્થાનકવાસી સમાજની આ એકની એક સંસ્થા છે કે જેણે અત્યાર સુધીમા તેર સૂત્રો છપાવી બહાર પાડી દીધા છે સાત સૂત્રો છપાય છે અને બીજા કેટલાક છાપવા માટે તૈયાર થઇ ચૂકયા છે.

આ પ્રમાણે આ સંસ્થાએ મહાન્ પ્રગતિ સાધી છે તેનો ટુંક પરિચય આ પત્રિકામા આપેલ છે તે વાચી જઈ સર્વ સ્થા જૈન ભાઈબહેનોએ આ સંસ્થા ને યથાશકિત મદદ કરી તેના કાર્ય ને હજુ વિશેષ વેગવાન બનાવવાની જરૂર છે

'ખાલી ઘડો વાગે ઘણો' એમ સ્થા કોન્ફરન્સ જેમ ખોટા બણુગા ફૂકનારી સંસ્થાની કોઈ કિંમત નથી, ત્યારે નક્કર કામ કરનારી આ શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિને દરેક પ્રકારે ઉત્તેજન આપવાની દરેક સ્થાકવાસી જૈનની અનિવાર્ય ફરજ છે

અને આ સર્વ સૂત્રો તૈયાર કરનાર પૂજ્ય મુનિશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજનો સ્થાનકવાસી સમાજ ઉપર ઘણો મહાન ઉપકાર છે વયોવૃદ્ધ હોવા છતા તેઓશ્રી જે મહેનત લઈ સૂત્રો તૈયાર કરાવે છે તેવુ કામ હજુ સુધી બીજા કોઈએ કર્યું નથી અને બીજુ કોઇ કરી શકશે કે નહિ તે પણ શંકાભર્યું છે પૂજ્ય મુનિશ્રીના આ મહાન્ ઉપકારનો કિંચિત બદલો સમાજે આ શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિને બની શકતી મહાય કરીને વાળવાનો છે સ્થાનકવાસી સમાજ જ્ઞાનની કદર કરવામા પાછો હઠે તેમ નથી એવી અમો આશા રાખીએ છીએ -

"જૈનસિદ્ધાત" પત્ર ઓકટોમ્બર ૧૯૫૭

*

શ્રી દશવૈકાલિક તથા ઉપાસકદશાંગ સૂત્રો

ગુજરાતી ભાષામા અનુવાદ થયેલા પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ વિરચિત ઉપરોક્ત બે સુત્રો જૈનધર્મ પાળતા દરેક ઘરમા હોવા જ જોઇએ તે વાચવાથી શ્રાવક ધર્મ અને શ્રમણુ ધર્મના આચારનુ જ્ઞાન પ્રાપ્ત થઇ શકે છે અને શ્રાવકો પોતાની નિરવદ્ય અને એષણીય સેવા શ્રમણુ પ્રત્યે બજાવી શકે છે વર્તમાનકાળે શ્રાવકોમા તે જ્ઞાન નહિ હોવાને લીધે અંધશ્રદ્ધાએ શ્રમણુવર્ગની વૈયાવચ્ચ તો કરી રહેલ છે પરતુ 'કલ્પ શુ અને અકલ્પ શુ' એનુ જ્ઞાન નહિ હોવાને લીધે પોતે સાવદ્ય સેવા અર્પી પોતાના સ્વાર્થને ખાતર શ્રમણુવર્ગને પોતાને સહાયક થવામા ઘસડી રહ્યા છે અને શ્રમણુવર્ગની પ્રાય કુસેવા કરી રહ્યા છે તેમાથી બચી લાભનુ કારણુ થાય અને શ્રમણુને યથાતથ્ય સેવા અર્પી તેમને પણુ જ્ઞાન-દર્શન-ચારિત્રની આરાધના કરવામા સહાયક થઈ પોતાના જ્ઞાન દર્શન-ચારિત્રની આરાધના કરી સુગતિ મેળવી શકે શ્રમણુની યથાતથ્ય સેવા કરવી તે અવશ્ય ગૃહસ્થની ફરજ છે

પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મ શાસ્ત્રોદ્ધારનો અનુવાદ ત્રણુ ભાષામા રૂડી રીતે કરી રહ્યા છે અને રૂપીયા ૨૫૧) ભરી મેમ્બર થનારને રૂ ૪૦૦-૫૦૦ લગભગ ની કીમતના બત્રીસે આગમો ફ્રી મળી શકે છે તો તે રૂ ૨૫૧) ભરી મેમ્બર થઇ બત્રીસે આગમો દરેક શ્રાવકઘરે મેળવવા જોઇએ બત્રીસે શાસ્ત્રોના લગભગ ૪૮ પુસ્તકો મળશે તો તે લાભ પોતાની નિર્જરા માટે, પુન્યાનુબંધી પુન્ય માટે જરૂર મેળવે ઉપરોક્ત બને સૂત્રોની કીમત સમિતિ કઇક ઓછી રાખે તો હરકોઇ ગામમા શ્રીમત હોય તે સૂત્રો લાવી અરધી કીમતે, મફત અથવા પૂરી કીમતે લેનારની સ્થિતિ જોઈ દરેક ઘરમા વસાવી શકે

—એક ગૃહસ્થ

નોંધ -ઉપરની સૂચનાને અમે આવકારીએ છીએ આવા સૂત્રો દરેક ઘરમા વસાવવા યોગ્ય તેમજ દરેક શ્રાવકે વાચવા યોગ્ય છે. **તત્રી—**

"રત્નજ્યોત" પત્ર

તા ૧-૧૦-૫૭

શ્રી સ્થા. જૈન શાસ્રોદ્ધાર સમિતિની કાર્યવાહક કમીટીનો અહેવાલ.

મે મહિનાની શરૂઆતમા શાસ્રોદ્ધારસમિતિની મીટીંગ અમદાવાદમા મળી હતી તેનો હેવાલ અમને મળેલો છે તેમા સમિતિએ સરસ કામ કર્યું છે

આ ઉપરથી સમજી શકાય છે કે સ્થાનકવાસી સમાજમાં આજ સુધી કોઈએ પણ નથી કરી શક્યુ એવુ મહાભારત કામ પૂ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ તથા શાસ્રોદ્ધારસમિતિ ઘણી સફળતાથી કરી રહી છે અને તેઓ થોડા વખતમા માથે લીધેલુ સર્વ કામ સંપૂર્ણ રીતે પાર ઉતારશે એવી અમને ખાત્રી છે

આવા ઉત્તમ કાર્ય માટે સમસ્ત સ્થાનકવાસી જૈનોએ શાસ્રોદ્ધારસમિતિને પોતાનાથી બની શકે તે રીતે સંપૂર્ણ ટેકો આપવો જોઈએ, તે તેમની ફરજ બની રહે છે જૈનો માટે સૂત્રો એ પહેલી ફરજીઆતની વસ્તુ છે સૂત્રના આધારે જ ધર્મજ્ઞાન મળે છે આજ સુધી જે આપણને અપ્રાપ્ય હતા તે આપણા જૈન-સૂત્રો પૂ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજે તથા શાસ્રોદ્ધારસમિતિએ સુલભ કરી આપ્યા છે

તો હવે સ્થાનકવાસી જૈનોએ શાસ્રોદ્ધારસમિતિના સભાસદ બની સમિતિનું કામ બનતી ઉતાવળે પૂરૂ થાય તેમ કરવાની ખાસ જરૂર છે વાચકોમાથી જેઓથી બની શકે તેમણે પહેલા વર્ગના શાસ્રોદ્ધારસમિતિના સભ્ય બની જવુ જોઇએ તેથી સમિતિના કામને ઉત્તેજન મળવા ઉપરાત સભ્યને સૂત્રોનો આખો સેટ મફત મેળવવાનો લાભ મળશે અને સૂત્રો વાચીને ધર્મારાધન કરવાનો જે લાભ મળશે તે તો અમૂલ્ય જ છે. માટે સમિતિના સભ્ય થઇ જવાની અમારી દરેક સ્થા જૈનને ખાસ ભલામણ છે

"જૈન સિદ્ધાંત" જુલાઇ-૧૯૫૮

શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિના આગમો અંગે અભિપ્રાય.

*

દક્ષિણ, ઉત્તરપ્રદેશ, દિલ્હી અને પંજાબમાં ઉગ્ર વિહાર કરીને હાલમાં ગુજરાત-સૌરાષ્ટ્રમાં વિચરી રહેલા ઉગ્ર વિહારી પૂ. મહાસતીજી શ્રી રંભાકુંવરજી તથા પ્રસિદ્ધ વ્યાખ્યાની વિવિધભાષાવિશારદા પૂ. મહાસતીજી શ્રી સુમતિકુંવરજીનો, પૂજ્ય શ્રી ૧૦૦૮ શ્રી ઘાસીલાલજી મ. સા. નિર્મિત જૈનાગમોની સંસ્કૃત ટીકા તથા હિન્દી-ગુજરાતીભાષાંતર પર અભિપ્રાય-

ૐ નમો સિદ્ધાણં

શાસ્ત્રવિશારદ શ્રદ્ધેય પંડિત રત્ન પૂજ્ય આચાર્ય મુનિશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ સાહેબ જૈનાગમોના એક વિદ્વાન, વૃદ્ધવિચારક અને ઉત્તમ લેખક છે.

સાહિત્યસર્જન એ તેમના જીવનનો એક ઉત્તમ સંકલ્પ છે. સામાજિક-પ્રપંચોથી દૂર રહી, અથાગ પરિશ્રમ દ્વારા વિરચિત, સંપાદિત અને અનુવાદિત તેમના અનેક ગ્રંથો પ્રકાશિત થયા છે, જે તમામ જૈનોને માટે ચિંતન, મનન અને અધ્યયન-અધ્યાપન માટે એક અપૂર્વ સાધનરૂપ છે. આવું ઉત્તમ સાહિત્ય તૈયાર કરીને તેઓશ્રીએ સાહિત્યનેતાના મહાન પદને દીપાવ્યું છે.

આગમના રહસ્યોથી અનભિજ્ઞ (અજાણ) આજની પ્રજામાં શ્રદ્ધેય શ્રી મહારાજ સાહેબનું સાહિત્ય અત્યંત ઉપયોગી છે, તેમ હું માનું છું.

અમદાવાદ તા. ૧-૫-૫૮ — આર્યા-સુમતિકુંવર

અલવરથી

શ્રી શ્રમણ સંઘના ઉપાધ્યાય કવિ મુનિશ્રી અમરચંદજી મહારાજનો

કલ્પસૂત્ર માટે આવેલ પત્ર

શ્રીયુત ભોગીલાલજી-અમદાવાદ.

જયવીર

આપને ત્યાં બીરાજમાન પરમ શ્રદ્ધેય શ્રી શ્રી ૧૦૦૮ શ્રી પૂજ્ય-પાદશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ આદિ બધા સંતોની સેવામાં વંદન સુખ-શાન્તિ નિવેદન છે

આપે મોકલેલ 'કલ્પસૂત્ર" મળતાંને શ્રદ્ધેય કવિજીએ પ્રસન્નતા પ્રગટ કરી છે અને સાદર યથાયોગ્ય અભિનંદનપૂર્વક લખાવ્યું છે કે "કલ્પસૂત્રનું પ્રકાશન બહુ જ ઉત્કૃષ્ટ કોટિનું છે તેની ટીકા સુંદર વિસ્તારપૂર્વક સારી રીતે લખેલ છે ટાઈમ મળતા અધ્યયન કરવા માટે પ્રયત્ન કરવામાં આવશે છાપવામાં આવેલ આવૃત્તિ માટે કોટિ કોટિ ધન્યવાદ આપવામાં આવે છે

કવિશ્રીજીનું સ્વાસ્થ્ય સારી રીતે ચાલે છે પહેલાની અપેક્ષાએ કંઈક સારૂં છે આ પત્ર વિલમ્બથી લખવામાં આવેલ છે તો ક્ષમા કરશો

અલવર (રાજસ્થાન)	ભવદીય રતનલાલ સંચેતી
તા ૯-૮-૧૯૫૮.	(હિન્દીનો ગુજરાતીમાં અનુવાદ)

શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિના આગમો અંગે અભિપ્રાય.

*

દક્ષિણ, ઉત્તરપ્રદેશ, દિલ્હી અને પંજાબમાં ઉગ્ર વિહાર કરીને હાલમાં ગુજરાત-સૌરાષ્ટ્રમાં વિચરી રહેલા ઉગ્ર વિહારી પૂ મહાસતીજી શ્રી રંભાકુંવરજી તથા પ્રસિદ્ધ વ્યાખ્યાની વિવિધભાષાવિશારદા પૂ મહાસતીજી શ્રી સુમતિકુંવરજીનો, પૂજ્ય શ્રી ૧૦૦૮ શ્રી ઘાસીલાલજી મ સા નિર્મિત જૈનાગમોની સંસ્કૃત ટીકા તથા હિન્દી-ગુજરાતીભાષાંતર પર અભિપ્રાય –

ૐ નમો સિદ્ધાણં

શાસ્ત્રવિશારદ શ્રદ્ધેય પંડિત રત્ન પૂજ્ય આચાર્ય મુનિશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ સાહેબ જૈનાગમોના એક વિદ્વાન, વૃદ્ધવિચારક અને ઉત્તમ લેખક છે

સાહિત્યસર્જન એ તેમના જીવનનો એક ઉત્તમ સંકલ્પ છે, સામાજિક પ્રપંચોથી દૂર રહી, અથાગ પરિશ્રમ દ્વારા વિરચિત, સંપાદિત અને અનુવાદિત તેમના અનેક ગ્રંથો પ્રકાશિત થયા છે, જે તમામ જૈનોને માટે ચિંતન, મનન અને અધ્યયન-અધ્યાપન માટે એક અપૂર્વ સાધનરૂપ છે આવું ઉત્તમ સાહિત્ય તૈયાર કરીને તેઓશ્રીએ સાહિત્યસેવીનાં મહાન પદને દીપાવ્યું છે

આગમના રહસ્યોથી અનભિજ્ઞ (અજાણ) આજની પ્રજામાં શ્રદ્ધેય શ્રી મહારાજ સાહેબનું સાહિત્ય અત્યંત ઉપયોગી છે, તેમ હું માનું છું

અમદાવાદ તા ૧-૫-૫૮ — આર્યા-સુમતિકુંવર

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

'जैनाचार्य'–'जैनधर्मदिवाकर'–पूज्य–श्री–घासीलालजीमहाराज–

विरचित–पीयूषवर्षिण्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृतम्

औपपातिकसूत्रम्.

(मङ्गलाचरणम्)

मालिनीछन्दः।

भविजनहितकारं ज्ञानचित्रैकसारं, कृतभवनिधिपारं नष्टकर्मारिभारम्।
अघहरणसमीरं दुःखदावाग्निनीरं, विमलगुणगभीरं नौमि वीरं सुधीरम् ॥ १ ॥

औपपातिकसूत्रकी पीयूषवर्षिणी टीका का हिन्दी–भाषानुवाद।

मङ्गलाचरण–

ज्ञानावरण आदि चार घातिया कर्मों के सर्वथा विनाश से उद्भूत केवल ज्ञानरूपी अनंत अचिन्त्य अन्तरंगविभूतिविशिष्ट, भव्यजीवों के अबाध आत्मकल्याण का उज्वल मार्गप्रदर्शन करनेसे सदा हितकारक, स्वयं संसाररूपी अपार पारावार से पार होकर अन्य जीवोंको भी वहांसे पार करनेवाले, तृणादिक को उडानेवाली वायुकी तरह पापपुंज को उडानेके लिये अबाधगतिवाले, आधि, व्याधि एवं उपाधिजन्य अनेक दुःखोंकी राशिरूपी प्रचण्ड अग्निकी ज्वालाको ध्वस्त करने के लिये निर्मल सलिल जैसे, ऐसे धीर वीर अन्तिम तीर्थंकर श्रीवीरप्रभुको—जो क्षायिकगुणों से सदा ओतप्रोत बने हुए हैं—मैं भक्तिपूर्वक नमन करता हूं ॥ १ ॥

ઔપપાતિકસૂત્રની પીયૂષવર્ષિણી ટીકાનો ગુજરાતી–અનુવાદ

મંગલાચરણ–

જ્ઞાનાવરણ આદિ ચાર ઘાતિયા કર્મોના સર્વથા વિનાશથી ઉત્પન્ન થયેલ કેવળજ્ઞાનરૂપી અનંત અચિંત્ય અંતરંગવિભૂતિરૂપ, ભવ્યજીવોના અબાધ આત્મકલ્યાણના ઉજ્જ્વલ માર્ગપ્રદર્શન કરવાથી સદા હિતકારક, પોતે સંસારરૂપી અપાર સમુદ્ર પાર કરીને બીજા જીવોને પણ તેમાંથી પાર કરવાવાળા, જેમ વાયુ તૃણને ઉડાડી નાખે તેમ પાપપુંજને ઉડાડવામાં અબાધ ગતિવાળા, આધિ વ્યાધિ તેમજ ઉપાધિજન્ય અનેક દુઃખોની રાશિરૂપી પ્રચંડ અગ્નિની જ્વાલાને શાંત કરવા નિર્મલ જળ જેવા, એવા ધીર વીર અંતિમ તીર્થંકર શ્રી વીરપ્રભુ કે જે નિર્મલ ક્ષાયિક ગુણોથી સદા ઓતપ્રોત બનેલા છે તેમને હું ભક્તિપૂર્વક નમન કરૂં છું (૧)

आर्या-गाथा।

जयणट्ट मुहपत्तिं, सदोरग बधए मुहे निच्चं।
जो-मुक्करागदोसो, वदे तं गुरुवरं सुद्धं ॥ ४ ॥

अनुष्टुप्।

जैनीं सरस्वतीं नत्वा, घासीलालेन तन्यते।
औपपातिकसूत्रस्य, वृत्तिः पीयूषवर्षिणी ॥ ५ ॥

अथौपपातिकसूत्रम्—औपपातिकमिति कः पदार्थः? इतिचेदुच्यते—देवजन्म नैरयिकजन्म सिद्धिगमनश्चेतित्रयम् उपपातः, तमुपपातमधिकृत्य कृतमध्ययनम् औपपातिकम्, एतत् औपपातिकमुपाङ्गम्, कस्मात्? अङ्गस्य=आचाराङ्गस्य समीपवर्तित्वात्, तत्र हि प्रथ-

---

मैं सदा उन गुरुदेव को नमस्कार करता हूँ कि जिन्होंने छहकाय के जीवों की यतनानिमित्त अपने मुख पर डोरासहित मुखपत्तिको सदा बांध रखा है। तथा जिनकी दृष्टि मे शत्रु और मित्र एवं निन्दक और वन्दक दोनों समान हैं। ऐसे रागद्वेष से सदा परे रहनेवाले शुद्ध गुरुदेव को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ ४ ॥

श्री जिनेन्द्र के मुखकमल से निर्गत द्वादशाङ्गीरूप वाणी को नमन कर मैं घासीलाल मुनि औपपातिकसूत्रकी पीयूषवर्षिणीनामक टीका रचता हूँ ॥ ५ ॥

प्र०— 'औपपातिक' इस पदका क्या अर्थ है?

उ०— देवोंका जन्म, नारकियोंका जन्म एवं सिद्धिगति मे गमन, ये तीन उपपात हैं। इनको लेकर रचे गये सूत्रका नाम औपपातिक है। यह अंग नहीं है उपाङ्ग है।

હું સદા તે ગુરૂદેવને નમસ્કાર કરૂં છું કે જેમણે છકાયના જીવોની યતનાનિમિત્ત પોતાના મુખપર દોરાસહિત મુખપત્તિને સદા બાંધી રાખી છે, તથા જેમની દૃષ્ટિમાં શત્રુ અને મિત્ર તેમજ નિંદક તથા પ્રશંસક બન્ને સમાન છે એવા રાગદ્વેષથી સદા પર રહેવાવાળા શુદ્ધ ગુરૂદેવને હું નમસ્કાર કરૂં છું (૪)

શ્રી જિનેન્દ્રના મુખકમલથી નીકળેલી દ્વાદશાંગીરૂપ વાણીને નમન કરીને હું ઘાસીલાલ મુનિ ઔપપાતિકસૂત્રની પીયૂષવર્ષિણી નામે ટીકા રચું છું (૫)

પ્ર૦— ઔપપાતિક એ પદનો શું અર્થ છે?

ઉ૦— દેવોના જન્મ, નારકિઓના જન્મ તેમજ સિદ્ધિગતિમાં ગમન એ ત્રણ ઉપપાત છે તેમને લઇને બનાવેલા સૂત્રનું નામ ઔપપાતિક છે આ અંગ નથી, ઉપાંગ છે તેને ઉપાંગ એ માટે કહે છે કે તે આચારાંગસૂત્રનું

वसन्ततिलका ।

आनन्तराऽऽगमसुधारसनिर्झरेण,
संसिच्य धर्मतरुसद्रुचिराऽऽलवालम् ।
स्वर्गाऽपवर्गसुखराशिफलं वितीर्य,
मोक्षे गतं तमिह गौतममानमामि ॥ २ ॥

द्रुतविलम्बितम् ।

कमलकोमलमञ्जुपदाम्बुजं,
विमलबोधिदबोधविबोधकम् ।
मुखसुशोभिसदोरकवस्त्रिकं,
गुरुवरं सदयं प्रणमाम्यहम् ॥ ३ ॥

अनन्तरागमरूपी निर्मल सुधारस के प्रवाह से धर्मरूपी वृक्षके सम्यग्दर्शनरूप आलवाल (क्यारी)को सींचकर जिन्होंने भव्यजनोंके लिये उसके फलस्वरूप स्वर्ग एव मोक्ष के सुखरूप फलों को वितरित कर (देकर) उन्हे कल्याणस्थानमे लगाया, ऐसे मोक्षप्राप्त उन गौतमस्वामी को मैं भक्तिपूर्वक नमन करता हू ॥ २ ॥

जिनके उभय सुन्दर चरणकमल कमल जैसे कोमल है । जो निर्मल बोधि अर्थात् सम्यक्त्वको तथा श्रुतचारित्ररूप बोधको देने वाले है । जिनके मुखके ऊपर दोरासहित मुखपत्ति छहकाय के जीवोंकी रक्षा के निमित्त सदा बंधी हुई रहती है, ऐसे दयालु गुरुवर को मैं भक्तिपूर्वक नमन करता हू ॥ ३ ॥

અનંતરાગમરૂપી નિર્મળ અમૃતના પ્રવાહથી ધર્મરૂપી વૃક્ષના સમ્યગ્દર્શનરૂપ આલવાલ (ક્યારી) ને સિંચન કરીને જેમણે ભવ્યજનો માટે તેના ફલસ્વરૂપ સ્વર્ગ તેમજ મોક્ષના સુખરૂપ ફલોનું વિતરણ કરી તેમને કલ્યાણ-સ્થાનમાં લગાડયા એવા મોક્ષપ્રાપ્ત તે ગૌતમસ્વામીને હું ભક્તિપૂર્વક નમન કરૂં છું (૨)

જેમના બંને સુંદર ચરણકમલ કમલ જેવા કોમળ છે, જે નિર્મલબોધિ એટલે સમ્યકત્વને તથા શ્રુતચારિત્રરૂપ બોધને આપવાવાળા છે, જેના મુખ ઉપર દોરાસહિત મુખપત્તિ છકાયના જીવોની રક્ષાના નિમિત્ત સદા બાંધેલી રહે છે એવા દયાળુ ગુરૂવરને હું ભક્તિપૂર્વક નમન કરૂં છું (૩)

होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धा पमुइयजणजाणवया आइण्ण-

तस्मिन् काले तस्मिन् समये अत्र समन्यर्थे तृतीया प्राकृतशैल्या कालसमययोर्लोके पर्यायत्वे कथं युगपन्निर्देशः ? कथं न वा पुनरुक्तिदोषः ? अत्र समाधानमाह–'काल' इति वर्तमानावसर्पिण्याश्चतुर्थारकलक्षणः, समयस्तु हीयमानलक्षणः । यत्र काले सा चम्पाऽभूत् स कोणिको राजा बभूव, श्रीवर्द्धमानस्वामी च भगवान् आसीत् । अथवा 'तेण' इति तृतीयैकवचनान्तः–तेन कालेन तेन समयेन हेतुभूतेन अवसर्पिणीचतुर्थाऽऽरकलक्षणेन उपलक्षिता चम्पानामिका नगरी आसीत् । ननु सा नगरी सम्प्रत्यपि वर्तते तर्हि औपपातिकसूत्रप्ररूपणाकालेऽपि 'आसीत्' इति 'अस्ति' इति वक्तव्यम्, तत्कथमुक्तम् 'आसीत्' ? इति चेत्, उच्यते–अवसर्पिणीत्वात्कालस्य प्रस्तुतोपाङ्गग्रन्थनकाले वर्णनीयचम्पानगरी तादृशी वक्ष्यमाणविशेषणविशिष्टा नाऽभूदिति 'अस्ति' इत्यनुक्त्वाऽऽसीदित्युक्तम् । चम्पापुरी वर्ण्यते–'रिद्ध–त्थिमिय–समिद्धा' ऋद्धस्तिमितसमृद्धा ऋद्धा–विभवभवनादिभिर्वृद्धिमुपगता, स्तिमिता–स्वपरचक्रभयरहिता, निर्भयेति यावत्, समृद्धा–धनधान्यसमेधिता एभिस्त्रिभिः पदैः कर्मधारयसमासः, ऋद्धा चासौ स्तिमिता चासौ समृद्धा चेति तथा, विभवविस्तीर्णा प्रशान्तिसम्पन्ना चेत्यर्थः, 'पमुइय–जण–जाणवया' प्रमुदितजनजानपदा, प्रमुदिता=प्रमोदप्राप्ता जना=नागरिका जानपदा=अशेषदेशवासिनो यस्यां सा तथा, हृष्टप्रभृत-

र्पिणी काल के चतुर्थ आरे में और हीयमान उस समय में चम्पा नाम की नगरी थी, उसमें कोणिक राजा राज्य करते थे, और भगवान विचर रहे थे । वह नगरी कैसी थी ? इसका वर्णन करते हैं–वह नगरी (रिद्ध–त्थिमिय–समिद्धा) ऋद्ध–विभव एवं भवनादिकों की विशिष्ट वृद्धि से संपन्न थी। स्तिमित–इसमें निवास करने वाले लोगों को स्वचक्र और परचक्र का भय बिल्कुल ही नहीं था। जनता यहा की सुख की नींद सोती और सुख की नींद से उठती थी। समृद्धा–यह नगरी अखंड धन एवं धान्य से सदा परिपूर्ण थी। (पमुइय–जण–जाणवया) इसीलिये यहा के समस्त नागरिक जन एवं अशेष देशनिवासी मानव सर्वदा आनन्द में मग्न

ચોથા આરામાં અને હીયમાન તે સમયમાં ચંપા નામે નગરી હતી, તેમાં કોણિક રાજા રાજ્ય કરતા હતા અને ભગવાન મહાવીર વિચરી રહ્યા હતા તે નગરી કેવી હતી ? તેનું વર્ણન કરવામાં આવે છે—તે નગરી (રિદ્ધ–ત્થિમિય–સમિદ્ધા) ઋદ્ધ–વિભવ તેમજ ભવનાદિની વિશિષ્ટ વૃદ્ધિથી તે નગરી સંપન્ન હતી સ્તિમિત–તેમાં નિવાસ કરવાવાળા લોકોને સ્વચક્ર તથા પરચક્રનો બિલકુલ ભય નહોતો. ત્યાંની પ્રજા સુખે નિદ્રા કરતી અને સુખે નિદ્રાથી ઉઠતી હતી સમૃદ્ધા આ નગરી અખંડ ધન ધાન્યથી સદા પરિપૂર્ણ હતી (પમુઇય–જણ–જાણવયા)

माध्ययनस्य प्रथमोद्देशके–'एवमेगेसिं णो णाय भवइ–अत्थि मे आया ओववाइए, नत्थि मे आया ओववाइए, के अहं आसी ? के वा इओ चुए इह पेच्चा भविस्सामि ?' इत्यादि, अत्राऽऽचाराङ्गसूत्रे यदात्मन औपपातिकत्वमुपात्तम् तदेवाऽत्र प्रतन्यते, तेन तदुपदिष्टार्थस्य सविस्तर पुष्टिकरणरूप सामीप्यमिह वर्तते, अत एवाचाराङ्गोपाङ्गता सिध्यति । अस्योपाङ्गस्य अयमुपोद्घात —

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी

टीका—'तेणं कालेण' इत्यादि। 'तेणं कालेण तेण समएण'

इसे उपाग इसलिये कहा है कि यह आचारागसूत्रका समीपवर्ती है, अर्थात् आचाराग सूत्र के प्रथम अध्ययन के प्रथम उद्देश मे "एवमेगेसिं णो णाय भवइ–अत्थि मे आया ओववाइए, नत्थि मे आया ओववाइए, के अहं आसी ? के वा इओ चुए इह पेच्चा भविस्सामि ?" अर्थात्–किन्ही किन्ही जीवों को यह ज्ञान नहीं होता कि मेरा आत्मा उत्पत्तिशील है या मेरा आत्मा उत्पत्तिशील नहीं है ? मै पहले कौन था और यहासे मरकर परलोक मे कौन होऊँगा ?, इत्यादि सूत्र जो कहा है, और इसमें आत्मा के जिस औपपातिकपने का कथन करने मे आया है इसीकी इस उपाग मे विस्तारके साथ पुष्टि करने में आई है, अत यह पुष्टिकरणरूप समीपता इसमें है, इसीलिये इसमें आचारागसूत्र की उपागता सिद्ध होती है। इस उपागका उपोद्घात इस प्रकार है–'तेण कालेण' इत्यादि।

(तेण कालेण तेण समएणं चपा नाम णयरी होत्था) उस अवस-

સમીપવર્તી છે એટલે આચારાગસૂત્રના પ્રથમ અધ્યયનના પ્રથમ ઉદ્દેશમા "एवमेगेसिं णो णायं भवइ–अत्थि मे आया ओववाइए, नत्थि मे आया ओववाइए, के अहं आसि ? के वा इओ चुए इह पेच्चा भविस्सामि ?" એટલે—કોઈ કોઈ જીવોને એ જ્ઞાન નથી હોતુ કે મારો આત્મા ઉત્પત્તિશીલ છે કે નથી, હુ પ્રથમ કોણ હતો અને અહિંથી મૃત્યુબાદ પરભવમા હુ કોણ થઈશ ઇત્યાદિ સૂત્ર જે કહેલુ છે, તથા એમા આત્માનુ જે ઔપપાતિકપણાનુ કથન કરવામા આવ્યુ છે તેની આ ઉપાગમા વિસ્તારસહિત પુષ્ટિ કરવામા આવી છે આમ આ પુષ્ટિકરણરૂપ સમીપતા આમા છે તે માટે આમા આચારાગસૂત્રની ઉપાગતા સિદ્ધ થાય છે ઉપાગનો ઉપોદ્ઘાત આ પ્રકારે છે —'तेणं कालेण' ઇત્યાદિ

(तेणं कालेण तेण समएण चंपा णाम णयरी होत्था) તે અવસર્પિણી કાલના

कुक्कुड-संडेय-गाम-पउरा उच्छु-जव-सालि-कलिया गो-महिस-गवेल-ग-प्पभूया आयारवंतचेइय-जुवइ-विविह-सण्णिविट्ठ-बहुला उक्कोडि-

'कुक्कुड-संडेय-गामपउरा' कुक्कुटषाण्डेयग्रामप्रचुरा-कुक्कुटाश्च षाण्डेया =क्षुद्रगोपतयश्च कुक्कुटषाण्डेया, तेषां ग्रामा =समूहा ते प्रचुरा =प्रभूता यस्यां सा तथा। 'उच्छु-जव-सालि-कलिया' इक्षुयवशालिकलिता-इक्षुभिर्यवैः शालिभिश्च कलिता=युक्ता, अनेन प्रजाया पोषणहेतुरभिहित। रिक्तोदरागां हि कार्यक्षमता न भवति। 'गो-महिस-गवेलग-प्पभूया' गोमहिषगवेलकप्रभूता-गावो, महिष्य, गवेलका =मेषा, ते प्रभूता यस्यां सा तथा। 'आयारवंतचेइय-जुवइ-विविह-सण्णिविट्ठ-बहुला' आकारवच्चैत्ययुवतिविविधसंनिविष्ट-बहुला-आकारवन्ति=सुन्दराकृतिकानि चैत्यानि=उद्यानानि तथा युवतीना विविधानि संनिविष्टानि=नर्तक्यादीनां संनिवेशनानि भवनानि बहुलानि यस्यां सा तथा,

है, अत सेतुसीमा की हुई थी। (कुक्कुड-संडेय-गामपउरा) इस नगरी में कुक्कट एव छोटे-छोटे सॉढ बहुत थे। (उच्छु-जव-सालि-कलिया) इक्षु, जव एव शाली का ढेर का ढेर यहां के खेतों में लगा रहता था इससे प्रजाजन के पोषण में किसी भी प्रकार की बाधा किसी भी समय उपस्थित नहीं होती थी। बात भी ठीक है-भूखे पेट कुछ भी नहीं हो सकता। (गो-महिस-गवेलग-प्पभूया) गाय और भैंसों की पंक्ति की पंक्ति इस नगरी में दृष्टिपथ होती थी, इससे दूध और घी का अभाव जनता में कभी भी दिखलाई नहीं पडता था। मेष भी यहाँ अधिक मात्रा में थे (आयार-वंतचेइय-जुवइ-विविह-सण्णिविट्ठ-बहुला) यहा बडे २ सुन्दर उद्यान थे, एव युवति नर्तकियों के अनेक भवन भी थे। (उक्कोडिय-गायगंठिभेयग-भड-तक्कर-खंडरक्ख-

પ્રકારના વિવાદ પેદા થાય છે એટલે મેતુસીમા કરવામા આવી હતી (कुक्कुड-संडेय-गामपउरा) આ નગરીમા મુર્ગા તેમજ નાના નાના સાંઢ ઘણા હતા (उच्छु-जव-सालि-कलिया) શેરડી, જવ તેમજ શાલીઓના ઢગલે ઢગલા અહી ના ખેતરોમા લાગેલા રહેતા હતા, તેથી પ્રજાજનના પોષણમા કોઈ પણ પ્રકારની બાધા કોઈપણ સમયે ઉપસ્થિત થતી નહોતી વાત પણ બરાબર છે-ભૂખ્યા પેટે કોઈથી કાંઈ થાય નહિ (गो-महिस-गवेलग-प्पभूया) ગાય અને ભેંસોની હારની હાર આ નગરીના નજરે જોવામા આવતી હતી તેથી દૂધ અને ઘીનો અભાવ જનતામા કદી પણ જોવામા આવતો ન હોતો ઘેટા પણ અહી વધારે પ્રમાણમા હતા (आयारवंतचेइय-जुवइ-विविह-सण्णिविट्ठ-बहुला) ત્યા મોટા મોટા સુંદર ઉદ્યાન (બાગ) હતા તેમજ યુવતી નર્તકીઓ (નાચ કરનારિઓ)ના અનેક ભવનો પણ હતા (उक्कोडिय-गायगंठिभेयग-भड-तक्कर-खंडरक्ख-रहिया) એમા

जण-मणुस्सा हलसयसहस्स-संकिट्ठ-विकिट्ठ-लट्ठ-पण्णत्त-सेउसीमा

वस्तुसौलभ्यात्प्रमोदमाननिखिलजनेति यावत् । 'आइण्णजण-मणुस्सा' आकीर्णजन-मनुष्या, सङ्ख्यातिरेकात् सकुलतया परस्परोपमर्घटितमनुष्यप्राणिपरिपूर्ण इत्यर्थ । अत्र जनेति जातसामान्यवाचित्वात्प्राणीति निर्वक्ति, ततो मनुष्यश्चासौ जनश्चेति कर्मधारये राजदन्तादीनामाकृतिगणत्वात् मनुष्यशब्दस्य परप्रयोग, तेन आकीर्णा=व्याप्ता-आकीर्णजनमनुष्या, आर्षत्वात्-आकीर्णशब्दस्य पूर्वप्रयोग, 'हलसयसहस्स-संकिट्ठ-विकिट्ठ-लट्ठ-पण्णत्त-सेउसीमा' हलशतसहस्रसंकृष्टविकृष्टलष्टप्रज्ञप्तसेतुसीमा, शतानि च सहस्राणि च शतसहस्राणि, हलाना शतसहस्राणि, अथवा शतमितानि सहस्राणि लक्षमिति यावत्, तैर्हलशतसहस्रै संकृष्टा विकृष्टा-द्विवार कृष्टा त्रिवार कृष्टा अत एव लष्टा=मृष्टा प्रतनूकृतलोष्टा मनोज्ञा प्रज्ञप्ता='इयमस्य कर्षकस्ये'-ति निर्दिष्टा सेतुसीमा=क्षेत्रपालीरूपा सीमा यस्या सा तथा, सेतुभङ्गे कृषीवलाना सीमाविवादो मा भूदिति सेतुसीमा प्रज्ञप्ता, इति भाव,

---

बने हुए थे। (आइण्ण-जण-मणुस्सा) यहा की मेदिनी (भूमि) सदा अधिक से अधिक मानवजनसख्या से आकीर्ण बनी रहती थी-मार्गों पर बडी भीड लगी रहती थी। (हलसयसहस्स-संकिट्ठ-विकिट्ठ-लट्ठ-पण्णत्त-सेउसीमा,) यहा की भूमि सैकडों अथवा हजारों अथवा लाखों हलो द्वारा जोती जाती थी, दो तीन बार जुतने से खेतों की मिट्टी बिलकुल पिस सी जाती थी, प्राय वह कंकर पत्थर रहित थी, इससे वह बहुत ही मनोज्ञ प्रतीत होती थी। 'यह इस कर्षक की भूमि है, यह इस कर्षक की भूमि है' इस प्रकार से वहा प्रत्येक किसान के खेतकी सीमा निर्धारित मेडद्वारा करने मे आई थी। खेत मे मेडद्वारा सीमा निर्धारित यदि न की जाय तो इससे किसानों मे अपने खेत की सीमा के बारे मे अनेक प्रकारसे विवाद उपस्थित हो जाता

આથી અહીં ના સમસ્ત નાગરિકજન તેમજ બાકીના બધા દેશનિવાસી મનુષ્યો સર્વદા આનંદમાં મગ્ન થયેલા હતા (आइण्णजण-मणुस्सा) અહીં ની ભૂમિ સદા વધારેને વધારે માનવજનસખ્યાથી ભરી રહેતી હતી (हलसय-सहस्स-संकिट्ठ-विकिट्ठ-लट्ठ-पण्णत्त-सेउसीमा) અહીં ની ભૂમિ સેંકડો કે હજારો અથવા લાખો હળોથી ખેડાતી હતી બે ત્રણ વાર ખેડવાથી ખેતરોની માટી બિલકુલ પીસાઈ જતી હતી મુખ્યત કાંકરા પત્થર રહિત હતી તેથી તે ઘણી જ મનોજ્ઞ પ્રતીત થતી હતી 'આ આ ખેડૂતની ભૂમિ છે, આ આ ખેડૂતની ભૂમિ છે' એ પ્રકારે ત્યાં પ્રત્યેક ખેડૂતના ખેતરની સીમા મેડ-સીમાચિહ્ન દ્વારા નક્કી કરવામા આવી હતી ખેતરમા મેડ-સીમાચિહ્ન દ્વારા જો નક્કી ન કરવામા આવે તો તેથી ખેડૂતોમા પોતપોતાના ખેતરની સીમાના અનેક

णड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-कहग-पवग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंववीणिय-अणेगतालायराणुचरिया आरा-

अनेककोटिकौटुम्बिकाकीर्णनिर्वृतसुखा, अनेककोटि-व्याप्त्यैः कौटुम्बिकैः=अनेक-पुत्रादि-परिवारवद्भिराकीर्णा=व्याप्ता चासौ निर्वृतसुखा=सम्पन्नसौख्या चेति तथा, जनताया बाहुल्येऽपि सुखसामग्री न तत्र दुर्लभेति भावः । 'णड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-कहग-पवग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंववीणिय-अणेगतालायराणुचरिया' नट-नर्तक-जल्ल-मल्ल-मौष्टिक-विडम्बक-कथक-प्लवक-लासक-चक्षक-लङ्ख-मङ्ख-तूणावत्तुम्बवीणिकानेकतालाचरानुचरिता, तत्र नटाः=नाटककारकाः, नर्तकाः=नैकविध-नृत्यनिष्णाताः, जल्लाः=रज्जूपरिक्रीडनशीलाः, मल्लाः=मल्लक्रीडाकारकाः, मौष्टिकाः=मुष्टि-

निश्चिन्तरीति से सुखकी निद्रा लिया करती थी। (अणेगकोडिकुडुंबियाइण्णणि व्वुयसुहा) करोडों कुटुम्बों से इस नगरी के व्याप्त होने पर भी उन्हे यहा किसी भी प्रकार के कष्टका अनुभव नहा होता था। उन्हे यहाँ प्रत्येक जीवनो-पयोगी सामग्री सुलभ थी। (णड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलवग-कहग-पवग-लासग - आइक्खग - लख-मख - तूणइल्ल-तुंववीणिय-अणेगतालायराणुचरिया) नट-नाटक करनेवालों से, नर्त्तक-अनेक प्रकारकी नृत्यक्रिया में निष्णात व्यक्तियों से, जल्ल-रस्सी पर चढकर विविध प्रकार के खेल तमासे दिखलाकर जनता का मनोरंजन करनेवाले नटोंसे, मल्ल-मल्लक्रीडा में निपुण पहलवानों से, मौष्टिक-मुष्टि से प्रहार करनेवाले मौष्टिकों से, विडम्बक-वेष एवं भाषा आदि द्वारा दूसरों की नकल करके स्वयं हसनेवाले तथा दूसरों को भी उनके चित्तको अनुरंजित करके हसानेवाले बहुरूपियों से, कथक-अनेक प्रकार की

નિશ્ચિત રીતે સુખની નિદ્રા લેતા હતા (अणेगकोडिकुडुंबियाइण्णणि व्वुयसुहा) કરોડો કુટુંબોથી આ નગરી વ્યાપ્ત હોવા છતાં પણ તેમને અહીં કોઈપણ પ્રકારના કષ્ટનો અનુભવ થતો નહિ તેમને અહીં પ્રત્યેક જીવન-ઉપયોગી ચીજ વસ્તુ સ્હેજે મળતી હતી (णड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेल-वग-कहग-पवग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंववीणिय-अणेगताला-यराणुचरिया) नट-નાટક કરવાવાળાઓથી नर्त्तक-અનેક પ્રકારની નૃત્યક્રિયાઓમા નિષ્ણાત એવા પાત્રોથી, जल्ल-દોરડા પર ચઢીને વિવિધ પ્રકારના ખેલ-તમાશા દેખાડીને જનતાને મનોરંજન કરવાવાળા નટોથી, मल्ल-મલ્લક્રીડામા નિપુણ પહેલ વાનોથી, मौष्टिक-મુષ્ટિથી પ્રહાર કરવાવાળા મૌષ્ટિકોથી, विडम्बक-વેષ તેમજ ભાષા (બોલી) દ્વારા બીજાઓની નકલ કરીને પોતે હસે તથા બીજાઓને પણ ખુશી

य-गायगंठिभेयग-भड-तक्कर-खंडरक्ख-रहिया खेमा णिरुवद्दवा सुभिक्खा वीसत्थसुहावासा अणेगकोडिकुडुंबियाइण्ण-णिव्वुय-सुहा

'उक्कोडिय-गायगंठिभेयग-भड-तक्कर-खंडरक्ख-रहिया' औत्कोटिकगात्रग्रन्थिभेदक-भट-तस्कर-खण्डरक्ष-रहिता, उत्कोटैरुत्कोचैर्व्यवहरन्ति ते औत्कोटिका=उत्कोचग्राहिण, गात्रात् कटिप्रदेशादे सकाशाद् ग्रन्थि भिन्दन्तीति गात्रग्रन्थिभेदका=गुप्तरीत्या ग्रन्थिहारिण, भटा=हठाल्लुण्टाका, तस्करा=चौरा खण्डरक्षा=शुल्कपाला, देशसीमाया स्थित्वा ये राजकर गृह्णन्ति ते, एतै रहिता=एतेषामुपद्रवैर्वर्जिता सर्वोपद्रवविरहितेत्यर्थ, अतएव 'खेमा' क्षेमा-कुशलस्वरूपा अशुभाभावात्, 'णिरुवद्दवा' निरुपद्रवा, स्वचक्रपरचक्रो-भयचक्रकृतोपद्रवविरहिता। 'सुभिक्खा' सुभिक्षा-सु=सुलभा भिक्षा भिक्षूणा यत्र सा तथा, 'वीसत्थसुहावासा' विश्वस्तसुखावासा-विश्वस्त=विश्वासमुपगत निश्चित सुख आवासे निवासस्थाने यस्या सा तथा, 'अणेगकोडिकुडुंबियाइण्ण-णिव्वुय-सुहा'

रहिया) इसमें किसी भी प्रकारका भय नहीं था, न तो लाच लेने वाले जन यहा थे और न गुप्तरीति से गाठ कतरनेवाले ग्रन्थिच्छेदक लुटेरे यहा थे। न यहा भट- जबरदस्ती लूटने वाले डाकू थे और न तस्कर-चोर ही थे। ऐसा भी कोई यहा नहीं था जो देशकी सीमा में खडा होकर राजा के टक्स को लोगों से जोर-जुल्म द्वारा अपहरण करनेवाला हो। तात्पर्य यह है कि यह नगरी समस्त प्रकार के उपद्रवों से रहित थी। इसीलिये यहा पर (खेमा णिरुवद्दवा सुभिक्खा वीसत्थसुहावासा) क्षेमा कुशलता बनी रहती थी, निरुपद्रवा-स्वचक्र और परचक्र का भय यहा नहीं था। सुभिक्षा-भिक्षुओको भिक्षा भी सदा सुलभ थी। विश्वस्तसुखावासा-यहा का निवास जनता को सुखकारक था। मकानका दरवाजा खोलकर भी रात्रि को जनता

કોઇ પણ પ્રકારનો ભય નહોતો નતો લાચ લેવા વાળા જનો અહીં હતા કે ન તો ખીસાકાતરૂ લુટારા અહીં હતા નહોતા અહીં ભટ-જબરદસ્તી લૂટવાવાળા ડાકુઓ કે નહોતા તસ્કર-ચોર લોકો એવા પણ કોઈ અહીં નહોતા કે જે દેશની હદમા ઉભા રહીને રાજાના કરને લોકો પાસેથી જોરજુલમથી પડાવી લેવાવાળા હોય તાત્પર્ય એ છે કે આ નગરી સમસ્ત પ્રકારના ઉપદ્રવોથી રહિત હતી એટલા માટે અહીં (खेमा णिरुवद्दवा सुभिक्खा वीसत्थसुहावासा) क्षेमा-કુશલતા કાયમ રહેતી હતી, निरुपद्रवा-સ્વચક્ર અને પરચક્રનો ભય અહીં નહોતો. सुभिक्षा-ભિક્ષુઓને ભિક્ષા પણ સદા સુલભ હતી विश्वस्तसुखावासा-અહીં નો નિવાસ જનતાને સુખકારક હતો મકાનના બારણા ઉઘાડા રાખીને પણ લોકો રાત્રિમા

भप्पगासा उव्विद्ध-विउल-गंभीर-खायफलिहा चक्क-गय-मु-

वप्पिणगणोपपेता, तत्र आरमन्ति=क्रीडन्ति यत्र ते आरामाः=माल्तीप्रभृतिलता-वाततरुसमूहसमेता प्रदेशा, उद्यानानि=कुसुमस्तबकाऽवनतलघुतरुपरिमण्डितानि स्थानानि, अवटाः=कूपा, तडागाः=जलाशयविशेषा, दीर्घिकाः=वाप्य वप्पिणाः=जलक्रीडा-स्थानानि क्षेत्राणि वा, 'वप्पिण' इति देशीय शब्द, एतेषा गणाः=समूहा, गुणा वा=रमणीयतादय, तै उपपेता=युक्ता सा, 'नंदणवणसन्निभप्पगासा' नन्दनवनसन्निभप्रकाशा-नन्दनवन-मेरोर्द्वितीयवन, तत्सन्निभप्रकाश तत्प्रकाशसदृश प्रकाशो यस्या सा तथा, नन्दनवनसदृश-सुखसम्पन्ना चम्पानगरी-इत्यर्थ। 'उव्विद्ध-विउल-गंभीर-खायफलिहा' उद्विद्ध-विपुलगम्भीरखातपरिखा-उद्विद्धम्-उत्=ऊर्ध्वेन विद्धम्=अधः खानितम् 'अतिउण्ड' इति भाषाप्रसिद्ध ' विपुल=विस्तृतम्, गम्भीरम्=अदृश्याधस्तलम्, खातम्=उपरिविशालम् सङ्कुचिताधस्तलम्, परिखा च=चतुर्दिक्षु गोलाकारखातरूपा 'खाई' इति भाषाप्रसिद्धा यस्या सा तथा, खातपरिखापरिवेष्टितेत्यर्थ। 'चक्क-गय-मुसुंढि-ओरोह-सयग्घि-जमलकवाडघणदुप्पवेसा' चक्रगदामुसुण्ढ्यवरोधशतघ्नीयमलकपाटघनदुष्प्रवेशा,

---

ववेया नंदणवणसन्निभप्पगासा) आरामों-माल्तीलता आदि के समूहों से एव वृक्षराजि से मंडित प्रदेशों-से, उद्यानों-पुष्पोंके गुच्छों के भारसे अवनत छोटे २ वृक्षों से परिमण्डित स्थानों-से, अवट-कूपों-से, तडाग-सरोवरों-से, दीर्घिका-वापियों से, वप्पिण-जलक्रीडा करनेके विशेष स्थानों से वह नगरी सुशोभित थी, इसलिये मेरु के नंदनवन जैसी वह शोभाका धाम बनी हुई थी। (उव्विद्ध-विउल-गंभीर-खायफलिहा, चक्क-गय-मुसुंढि-ओरोह-सयग्घि-जमलकवाडघणदुप्पवेसा) उव्विद्ध-इस नगरी के चारों ओर जो गोलाकार खाई थी वह बहुत ही गहरी थी, विपुल विस्तृत थी, गभीर-जिसका अधस्तल अदृश्य था ऐसी थी, एव खातपरिखा-ऊपर विस्तृत और नीचे सकुचित थी। इसका जो चारों ओर का

લતા આદિના સમૂહોથી તેમજ વૃક્ષરાજિથી શોભતા પ્રદેશોથી, ઉદ્યાનો-પુષ્પોના ગુચ્છોના ભારથી લચી પડેલા નાના નાના વૃક્ષોથી વીંટાએલા સ્થાનોથી, અવટ-કૂવાઓથી, તડાગ સરોવરોથી, દીર્ઘિકા વાવોથી વપ્પિણ-જલક્રીડા કરવાના સ્થાન વિશેષથી તે નગરી સુશોભિત હતી તેથી મેરૂના નંદનવન જેવી તે શોભાનુ ધામ બની ગઇ હતી (उव्विद्ध-विउल-गंभीर-खायफलिहा, चक्क-गय-मुसुंढि-ओ-रोह-सयग्घि-जमलकवाडघणदुप्पवेसा) આ નગરીની ચારે કોર જે ગોળાકાર ખાઈ હતી તે ઘણીજ ઊંડી હતી, વિસ્તારવાળી હતી, ગભીર-જેનુ તળિયુ અદૃશ્ય હતુ એવી હતી, તેમજ ઉપર પહોળી અને નીચે સંકુચિત

मुज्जाण-अगड-तलाग-दीहिय-वप्पिणगणोववेया नंदणवण-सन्नि-

प्रहरणशीला, विडम्बकाः=वेषभाषादिभि परानुकरणेन हसनहासनशीला, कथकाः= विविधकथाकारका गायका वा, प्लवकाः=उत्प्लवनशीला —नद्यादितरणशीला वा, लासकाः= रासक्रीडाकारिण, आचक्षकाः=शुभाशुभशकुनाभिधायका, लङ्खाः—दीर्घवंशशिखरमि क्रीडन-शीला, मङ्खाः=चित्रफलक दर्शयित्वा भिक्षाग्राहिण, तूणारन्तः=तूणाभिधानवाद्यवादकाः, तुम्बवीणिकाः—वीणावादका, अनेके च ते तालाचराः—काष्ठकरतालादिभिस्तालान् ददतो लोकानाऽऽचरन्ति=अनुरञ्जयन्ति ये ते तथा, एतैर्नटादितालाचरान्तैरनुचरिता=युक्ता या सा तथा। 'आरामुज्जाण-अगड-तलाग-दीहिय-वप्पिणगणोववेया' आरामोद्यानावटतडागदीर्घिका—

कथाकहानियों के कहने मे कुशलमतिवाले कथाकारकों से, अथवा विविध प्रकार की गानकला में निपुण सगीतविद्याके जाननेवालों से, प्लवक—कूदनेवालासे अथवा तैरने की कलामें पारगत अनेक तैराकोंसे, लासक-रास रचनेमे निपुण व्यक्तियों से, आचक्षक-शुभ और अशुभ शकुन को प्रकट करने मे विशेषदक्ष नैमित्तिकों से, लङ्ख-बडे बडे बासों के अग्रभाग पर चढकर वहा अनेक प्रकारकी क्रीडा करके दिखानेवाले नटों से, मङ्ख-सुन्दर चित्रों को दिखलाकर जनताने भिक्षा ग्रहण करनेवाले भिक्षुकोंसे, तूणइल्ल-तूणा नामके वाद्यविशेष को बजाने वाले बाजीगरों से, तुम्बवीणिक-वीणा के बजाने मे विशेष पटु वीणावादकों से, एव तालाचर-काष्ठ-करताल आदिद्वारा ताल देकर लोगोंको अनुरजित करनेवाले तालाचरों से अनुचरिता-वह नगरी कभी भी शून्य नहीं रहती थी। (आरामुज्जाण-अगड-तलाग-दीहिय-वप्पिणगणो—

करीने હસાવે એવા બહુરૂપીઓથી, कथक—અનેક પ્રકારની કથા—વાર્તા કહેવામા કુશલમતિવાળા કથાકારોથી, અથવા વિવિધ પ્રકારની ગાનકળામા નિપુણ એવા સ ગીતજ્ઞોથી, प्लवक—કુદવાની વિદ્યામા પૂર્ણ નિપુણતા પ્રાપ્ત કરેલી હોય તેવા કુદ-નારાઓથી, અથવા તરવાની કળામાપાર ગત અનેક તારૂઓથી, लासक-રાસ રચવામા નિપુણ વ્યક્તિઓથી, आचक्षक-શુભ અને અશુભ શકુન કહેવામા બહુજ દક્ષ એવા નૈમિત્તિકોથી, लङ्ख—મોટા મોટા વાસની ટોચ ઉપર ચઢીને ત્યા અનેક પ્રકારની ક્રીડા કરીને દેખાડવાવાળા નટોથી, मङ्ख—સુ દર સુ દર ચિત્રોને દેખાડીને લોકો પાસેથી ભિક્ષા ગ્રહણ કરવાવાળા ભિક્ષુઓથી, तूणइल्ल-તૂણા નામના વાદ્યવિશેષ બજા વવાવાળા બાજીગરોથી, तुम्बवीणिक-વીણા બજાવવામા વિશેષ પ્રવીણ એવા વીણાવાદ-કોથી, તેમજ तालाचर-કાષ્ઠકરતાલ આદિદ્વારા તાલ દઈ ને લોકોને ખુશી કરવાવાળા તાલાચરોથી अनुचरिता-તે નગરી કદી પણ શૂન્ય રહેતી નહોતી (आरामु—ज्जाण-अगड—तलाग—दीहिय—वप्पिण-गणोववेया नंदणवणसन्निभप्पगासा) આરામો—માલતી

भप्पगासा उव्विद्ध-विउल-गंभीर-खायफलिहा चक्क-गय-मु-

वप्पिणगणोपपेताः, तत्र आरमन्ति=क्रीडन्ति यत्र ते आरामाः=मालतीप्रभृतिलता-माततरुसमूहसमेता प्रदेशाः, उद्यानानि=कुसुमस्तबकाऽवनततरुतरुपरिमण्डितानि स्थानानि, अवटाः=कूपाः, तडागाः=जलाशयविशेषाः, दीर्घिकाः=वाप्यः वप्पिणाः=जलक्रीडा-स्थानानि क्षेत्राणि वा, 'वप्पिण' इति देशीय शब्दः, एतेषां गणाः=समूहाः, गुणा वा= रमणीयतादयः, तैः उपपेताः=युक्ता सा, 'नंदणवणसन्निभप्पगासा' नन्दनवनसन्निभप्रकाशा-नन्दनवनं-मेरोर्द्वितीयवनं तत्सन्निभप्रकाशः तत्प्रकाशसदृशः प्रकाशो यस्या सा तथा, नन्दनवनसदृश-सुखसम्पन्ना चम्पानगरी-इत्यर्थः । 'उव्विद्ध-विउल-गंभीर-खायफलिहा' उद्विद्ध-विपुलगम्भीरखातपरिखा-उद्विद्धम्-उत्=उत्कर्षेण विद्धम्=अधस्तात् खानितम् 'अतिउण्ड' इति भाषाप्रसिद्ध' विपुलं=विस्तृतम्, गम्भीरम्=अदृश्याधस्तलम्, खातम्= उपरिविशालम् सङ्कुचिताधस्तलम्, परिखा च=चतुर्दिक्षु गोलाकारखातरूपा 'खाई' इति भाषाप्रसिद्धा यस्याः सा तथा, खातपरिखापरिवेष्टितेत्यर्थः । 'चक्क-गय-मुसुंढि-ओरोह-सयग्घि-जमलकवाडघणदुप्पवेसा' चक्रगदामुसुण्ड्यवरोधशतघ्नीयमलकपाटघनदुष्प्रवेशा,

वप्पिणगणोपपेता नंदणवणसन्निभप्पगासा) आरामों-मालतीलता आदि के समूहों से एवं वृक्षराजि से मंडित प्रदेशों-से उद्यानों-पुष्पोंके गुच्छों के भारसे अवनत छोटे २ वृक्षों से परिमण्डित स्थानों-से, अवट-कूपों-से, तडाग-सरोवरों-से, दीर्घिका-वापियों से, वप्पिण-जलक्रीडा करनेके विशेष स्थानों से वह नगरी सुशोभित थी, इसलिये मेरु के नंदनवन जैसी वह शोभाका धाम बनी हुई थी। (उव्विद्ध-विउल-गंभीर-खायफलिहा, चक्क-गय-मुसुंढि-ओरोह-सयग्घि-जमलकवाडघणदुप्पवेसा) उद्विद्ध-इस नगरी के चारों ओर जो गोलाकार खाई थी वह बहुत ही गहरी थी, विपुल-विस्तृत थी, गंभीर-जिसका अधस्तल अदृश्य था ऐसी थी, एवं खातपरिखा-ऊपर विस्तृत और नीचे संकुचित थी। इसका जो चारों ओर का

લતા આદિના સમૂહોથી તેમજ વૃક્ષરાજિથી શોભતા પ્રદેશોથી, ઉદ્યાનો-પુષ્પોના ગુચ્છોના ભારથી લચી પડેલા નાના નાના વૃક્ષોથી વીંટાએલા સ્થાનોથી, અવટ-કૂવાઓથી, તડાગ સરોવરોથી, દીર્ઘિકા-વાવોથી વપ્પિણ-જલક્રીડા કરવાના સ્થાન વિશેષથી તે નગરી સુશોભિત હતી તેથી મેરૂના નંદનવન જેવી તે શોભાનું ધામ બની ગઇ હતી (उव्विद्ध-विउल-गंभीर-खायफलिहा, चक्क-गय-मुसुंढि-ओ-रोह-सयग्घि-जमलकवाडघणदुप्पवेसा) આ નગરીની ચારે કોર જે ગોળાકાર ખાઈ હતી તે ઘણીજ ઉંડી હતી, વિસ્તારવાળી હતી, ગંભીર-જેનું તળિયું અદૃશ્ય હતું એવી હતી, તેમજ ઉપર પહોળી અને નીચે સંકુચિત

सुंढि–ओरोह–सयग्घि-जमलकवाडघणदुप्पवेसा धणुकुडिल–वंक-पागार-परिक्खित्ता कविसीसगवट्टरइयसंठियविरायमाणा अट्टालय-

तत्र–चक्राणि=रथाङ्गानि, गदाः=शस्त्रविशेषा मुसुण्ढ्यः–शस्त्रविशेषा एव, अवरोध–रथ्याद्वारे प्रतिभित्ति, शतघ्न्यः–या उपरितनदेशान्निपातिता सत्य पुरुषशतानि घ्नन्ति ता, यमलकपाटानि=समभागद्वयोपेतानि कपाटानि, तान्येव घनानि=सान्द्राणि–दृढानि वा–"घन सान्द्रे दृढे दार्ढ्ये विस्तारे मुद्गरेऽम्बुदे।" इति हैमकोशात्। एतै परचक्रादीना दुष्प्रवेशा=दु खेन प्रवेष्टु योग्या परचक्रादिपराभवरहितेत्यर्थ, '**धणुकुडिलवंकपागारपरिक्खित्ता**' धनु कुटिलवक्रप्राकारपरिक्षिप्ता–कुटिल च तद्धनु –धनु कुटिलम्, आर्षत्वाद्विशेषणस्य परनिपात, कुटिलधनुषोऽपेक्षयाऽपि वक्रेण प्राकारेण परिक्षिप्ता युक्तेत्यर्थ, '**कविसीसगवट्टरइयसठिय-विरायमाणा**' कपिशीर्षकवृत्तरचितसंस्थितविराजमाना, तत्र–कपिशीर्षका =प्राकाराग्रभागा 'कगुरा' इति भाषाप्रसिद्धा वृत्तरचिता =गोलाकारेण निर्मिता संस्थिता =सुन्दरसंस्थानयुक्तास्तैर्विराजमाना–सुन्दरकपिशीर्षकतया शोभाशालिनीत्यर्थ, '**अट्टालय-चरिय-दार-गोपुर-तोरण–समुण्णय–सुविभत्त–रायमग्गा**' अट्टालकचरिकाद्वारगोपुरतोरणसमुन्नतसुविभक्तराजमार्गा,

कोट था वह चक्र, गदा, मुसुढी, और अवरोध-रथ्याद्वार के पासकी दोहरी भीत से, **शतघ्नी**-जिनके उपर से गिराने पर सैकडों व्यक्ति चूर्णित हो जाते है ऐसे अस्त्रविशेषों से या तोपों से, और **यमलकपाटघन**-मजबूत, सम युगल कपाटों से युक्त था, अत एव **दुष्प्रवेशा**-उस नगरी मे शत्रु प्रवेश नहीं कर सकते थे। (**धणुकुडिल–वक–पागार–परिक्खित्ता**) इस नगरी का प्राकार (किला) कि जिससे यह परिवेष्टित थी वह वक्र हुए धनुष मे भी अधिक वक्र था। (**कविसीसगवट्टरइयसठियविरायमाणा अट्टालय-चरिय दार-गोपुर-तोरण-समुण्णय-सुविभत्त-रायमग्गा**) कपिशीर्षक-कोट के कगूरे गोल आकार के थे एव रग–विरगे थे। इस कोट के

હતી તેની ચારે કોર જે કોટ હતો તે ચક્ર, ગદા, મુસુઢી, અને અવરોધ–દ્વારના પાસેની બેવડી ભીત–થી, શતઘ્ની–જેને ઉપરથી પાડી નાખવાથી સેકડો વ્યક્તિ ચુરેચુરા થઇ જાય છે એવા અસ્ત્રવિશેષથી, અથવા તોપોથી, અને મજબૂત સમ યુગલ કપાટોથી યુક્ત હતી આ કારણથી તે નગરીમા શત્રુ પ્રવેશ કરી શક્તા નહોતા (धणुकुडिल–वक-पागार–परिक्खित्ता) આ નગરીનો પ્રાકાર (કિલ્લો) કે જેનાથી તે ઘેરાયેલી હતી તે વાકા થયેલા ધનુષથી પણ વધારે વાકો હતો (कविसी सगवट्टरइयसठियविरायमाणा अट्टालय चरिय-दार-गोपुर तोरण-समुण्णय-सुविभत्त–राय-मग्गा) કોટના કાગરા ગોળ આકારના હતા તેમજ રગબેરગી હતા આ કોટની ઉપર અટ્ટાલિકાઓ (અગાસીઓ) બનાવેલી હતી કોટના મધ્યભાગમા જ્યા દરવાજા

चरिय-दार-गोपुर-तोरणसमुण्णयसुविभत्तरायमग्गा छेयायरिय-रइयदढफलिहइंदकीला विवणिवणिछेत्तसिप्पियाइण्णणिव्वुयसुहा

तत्र-अट्टालका-प्राकारोपरिवर्तिस्थानविशेषा, चरिका:=अष्टहस्तप्रमाणा वसति-दुर्गान्तरालवर्तिमार्गाः 'दार' द्वाराणि-प्रसिद्धानि, गोपुराणि-गोपुराणि हि नगरस्य सौन्दर्यार्थं प्रतिद्वाराग्रे निर्मितानि विचित्रशोभासम्पन्नानि प्रवेशद्वाराणि तोरणानि=प्रसिद्धानि, एतैरट्टालकादिभि:-उन्नता-दर्शनीयत्वादिगुणसम्पन्ना सुविभक्ता-तत्तत्स्थाने गमनाय विभागरूपेण रचिता राजमार्गा यस्या सा। 'छेयायरियरइयदढफलिहइदकीला' छेकाचार्यरचितदृढपरिघेन्द्रकीला-छेकाचार्येण निपुणशिल्पिना, रचित कृत, परिघ= अर्गला, इन्द्रकील=प्रयोजितकपाटद्वयदृढीकरणाय लोहमयकीलविशेष यद्वा-कपाटदृढी-करणाय लोहमयकण्टकविशेष, यस्या सा तथा, 'विवणिवणि-छेत्तसिप्पिया-इण्णणिव्वुयसुहा' विपणिवणिक्क्षेत्रशिल्प्याकीर्णनिर्वृतसुखा, तत्र-विपणीना=हट्टाना वणिजा च 'छेत्त' क्षेत्र-स्थानरूपा या सा, प्रचुरहट्टप्रचुरव्यापारिगणसम्पन्नेत्यर्थ, तथा-शिल्पिभि= कुम्भकारतन्तुवायादिभि-आकीर्णा=परिपूर्णा, अतएव जनाना प्रयोजनसिद्धया निर्वृत-

ऊपर अट्टालिकाएँ बनी हुई थीं, कोट के मध्यभाग मे जहा पर दरवाजे थे वहा आठ हाथ-प्रमाण चौडा मार्ग था। कोटमे प्रधान दरवाजे थे, जहा से नगरी मे प्रवेश किया जाता था। द्वारों पर तोरण बहुत उन्नत थे। भिन्न २ स्थानो पर पहुँचने के लिये अलग २ मार्ग बने हुए थे। (छेयायरियरइयदढफलिहइदकीला) निपुण शिल्पीके द्वारा रचित-कृत अर्गला से एव इन्द्रकीला-दोनों किवाडोंको परस्पर में दृढ करनेके लिये लगाये गये लोहनिर्मित कीलों से इस नगरीके द्वार युक्त थे। (विवणिवणिछेत्तसिप्पियाइण्णणिव्वुयसुहा) इसके बाजार अनेक दुकानों एव व्या-पारियोंसे आकीर्ण रहते थे। नगरीमें कुमार और तन्तुवाय-जुलाहे बहुत थे, इससे

હતા ત્યા આઠ હાથના માપના પહોળા રસ્તા હતા કોટમા મુખ્ય દરવાજા હતા જેમાથી નગરીમા પ્રવેશ કરાતો હતો દ્વારો ઉપર તોરણ ઘણા સરસ હતા, જુદા જુદા સ્થાનો પર પહોચવા માટે જુદા જુદા માર્ગ બનેલા હતા (छेयायरियरइयदढफलिहइदकीला) નિપુણ શિલ્પીથી બનાવેલ અર્ગલા (આગ-ળીયા)થી તેમજ ઇદ્રકીલા-બન્ને કમાડોને પરસ્પરમા દૃઢ કરવા માટે લગાડવામા આવેલ લોઢાના બનાવેલ કીલા (ભોગળ) થી આ નગરીના દ્વારો યુક્ત હતા (विवणिवणिछेत्तसिप्पियाइण्णणिव्वुयसुहा) એની બજાર અનેક દુકાનો તેમજ વ્યાપારીઓથી ભરચક રહેતી હતી નગરીમા કુભાર અને વણકર

प्रेक्षणीया, शोभासम्भारशालितया नगर्या पश्यद्भिर्निमेषा प्रायो न पात्यन्ते। 'पासाईया' प्रासादीया–प्रसादो मनःप्रसन्नता प्रयोजनं यस्याः सा प्रासादीया–हार्दिकोल्लासकारिणी-ति यावत् 'दरिसणिज्जा' दर्शनीया–रमणीयतया क्षणे क्षणे द्रष्टुं योग्या, 'अभिरूवा' अभिरूपा–अभिमतमनुकूलं रूपं यस्याः सा तथा, 'पडिरूवा' प्रतिरूपा–रूप्यते एषोऽयमिति निश्चीयतेऽनेनेति रूपमाकारः–अभिमतम् असाधारणं रूपं यस्याः सा अभिरूपा–सर्वथा दर्शकजननयनमनोहारिणीति निष्कर्षः ॥ सू० १ ॥

शोभा–अपलक–निर्निमेष दृष्टि से ही देखने योग्य थी–यह नगरी इतनी अधिक सुन्दर थी की जिसे निर्निमेष होकर लोग निहारा करते थे–फिर भी नहीं अघाते थे। (पासाईया) देखकर मनमे बडाही प्रसन्नता होती थी। (दरिसणिज्जा) प्रदर्शिनीकी वस्तु जैसी यह बनी हुई थी। अति रमणीय होनेकी वजहसे यह क्षण २ मे देखनेके काबिल थी। (अभिरूवा पडिरूवा) इसका रूप अनुकूल था–मनको रुचे ऐसा था। इसीलिये यह अभिरूप एवं प्रतिरूप था–दर्शकजनके मनको सब प्रकारसे आनंद प्रदान करनेवाली थी।

भावार्थ—अवसर्पिणी कालके चतुर्थ आरेमें चंपा नामकी नगरी थी। इसमे ऊंचे २ मकान थे। ऋद्धिसे यह मंडित थी। किसीभी प्रकारका यहां भय नहीं था। जनता हरएक प्रकारसे निर्भय होकर इसमे निर्विघ्न से रहा करती थी। नगरीमें ऐसा कोई भी स्थल नहीं था जो भाग्यशाली जनसमूह से आकीर्ण न हो। इसके

નગરીની શોભા નિર્નિમેષ દૃષ્ટિએ જ જોવા લાયક હતી (દેખાઈ આવતી હતી) આ નગરી એટલી તો વધારે સુંદર હતી કે લોકો આંખનું મટકું માર્યા વગર જોયા જ કરતા હતા છતાં થાકતા નહોતા (पासाईया) જોઇને મનમાં ખૂબજ પ્રસન્નતા થતી હતી (दरिसणिज्जा) પ્રદર્શનીની વસ્તુ જેવી એ બની ગઈ હતી અતિરમણીય હોવાને કારણે એ ક્ષણે ક્ષણે જોવા યોગ્ય હતી (अभिरूवा पडिरूवा) તેનું રૂપ અનુકૂળ હતું–મનને રૂચે એવું હતું, તેથી તો તે અભિરૂપ તેમજ પ્રતિરૂપ હતી જોનાર લોકોના મનને સર્વ પ્રકારથી આનંદ પ્રદાન કરાવે તેવી હતી

ભાવાર્થ—અવસર્પિણી કાલના ચોથા આરામાં ચંપા નામે નગરી હતી તેમાં ઉંચા ઉંચા મકાન હતા ઋદ્ધિથી તે શોભતી હતી કોઇ પણ પ્રકારનો અહીં ભય નહોતો લોકો હરેક પ્રકારથી નિર્ભય બનીને તેમાં નિર્વિઘ્ને રહેતા હતા. નગરીમાં એવું કોઈ પણ સ્થળ નહોતું કે જે ભાગ્યશાળી જનસમૂહથી

बाहिरकी जमीन हजारों हलोंसे जुता करती थी। प्रत्येक मौसमका धान्य इसमें होता था। गाय-भैसोंकी इसमें कमी नहीं थी। नगरीकी सीमामें गाव बहुत नजदीक बसे हुए थे। इक्षु आदिकी उपज इसमें अधिक मात्रामें होती थी। बडे सुन्दर एव विशाल बगीचे थे। इसमें जनताको कष्ट देनेवालोंका नामोनिशा तक भी नहीं था। न यहा लाँच लेने वाले थे, न ग्रन्थिच्छेदक थे, न उचक्के लुटेरे ही थे। इसमें नर्तकियोंके स्थान भी अनेक थे। भिक्षुओंको प्रत्येक समय यहा भिक्षा सुलभ थी। कुलपरम्परासे श्रीमत लोगोंका यहा अभाव नहीं था। मनोविनोद के साधन भी इस नगरीमें जगह२ पर थे। नट थे, नाटककार थे, मल्लयुद्ध करनेवाले थे, मुष्टियुद्ध करनेवाले थे। कथा-कहानी सुनाकर लोगोंमें सुप्त शुद्धपुरुषार्थको जगानेवाले जनभी यहा थे। रास रचा-कर मानवोंको आनदित करने वाले खिलाडी व्यक्तिभी यहा रहा करते थे। तात्पर्य यह कि प्रत्येक मनोविनोद की सामग्री यहा सतत प्रस्तुत रहा करती थी। नगरी के बाहिर-भीतर का प्रदेश आरामों, उद्यानों, कुवा, बावडी एव जलाशय-तालाब आदि से सुशोभित था।

भरेलु न होय तेनी બહારની ભૂમિ હજારો હળોથી ખેડાયા કરતી હતી પ્રત્યેક મોસમના ધાન્ય તેમા ઉત્પન્ન થતા હતાં ગાય-ભેસોની તેમા ખોટ નહોતી નગરીની સીમામા ગામડા બહુ નજીકમા વસેલા હતા શેરડી આદિની ઉપજ તેમા વધારે પ્રમાણમા થતી હતી મોટા સુદર તેમજ વિશાલ બગીચા હતા તેમા લોકોને કષ્ટ દેવાવાળાનુ નામનિશાન પણ નહોતુ ન તો અહીં લાચ લેવા વાળા હતા કે ન ખિસ્સાકાતરૂ હતા વળી લુટારા પણ નહોતા તેમા નાચનારીઓના સ્થાન પણ ઘણા હતા ભિક્ષુઓને પ્રત્યેક સમય અહી સ્હેજે ભિક્ષા મળી રહેતી હતી કુળપરપરાથી શ્રીમત લોકોનો અહી અભાવ નહોતો મનોવિનોદના સાધન પણ આ નગરીમા ઠેકઠેકાણે હતા નટ હતા, નાટયકાર હતા, મલ્લયુદ્ધ કરવાવાળા હતા, મુષ્ટિયુદ્ધ કરવા વાળા હતા, કથા-વારતા સભળાવી લોકોમા દબાઈ રહેલો શુદ્ધ-પુરૂષાર્થ જાગૃત કરાવવાવાળા લોકો પણ અહી હતા રાસ રચાવીને માનવોને આનદિત કરવાવાળા ખેલાડી વ્યક્તિઓ પણ અહી રહેતા હતા તાત્પર્ય એ કે પ્રત્યેક મનોવિનોદની સામગ્રી અહી સતત પ્રસ્તુત રહ્યા કરતી હતી નગરીની બહાર તેમજ અદરના પ્રદેશ આરામો ઉદ્યાનો કુવા વાવડી તેમજ જલાશયો-તળાવ આદિથી સુશોભિત હતા.

इस नगरी के बाहिर एक विशाल और बहुत गहरी खाई थी। नगरी का कोट वक्र धनुषकी अपेक्षा भी अधिक वक्र था, जिसमें प्रत्येक आत्मरक्षण के साधन थे। किले में बडे २ दरवाजे थे, दरवाजों मे वज्र जैसे मजबूत किवाड थे, किवाडों में नुकीले कीले लगे हुए थे। कोट के ऊपर जो अट्टालिकाएँ थीं उनमे अनेक प्रकार के अस्त्र और शस्त्रों का संग्रह किया गया था। वह वहा सदा सुरक्षित रहता था। नगरीमे विस्तृत बाजार थे, बाजारोंमें बडी २ दुकाने थीं, दुकानों म क्रय विक्रय की बहुमूल्य प्रत्येक आवश्यकीय वस्तुएँ संगृहीत थीं। नगरी के राजमार्ग हर समय अपार जनकी भीड से, हाथियों से, पालकियों से, रथों से, और तामजाम आदि से संकुलित बने रहा करते थे। यहा के मकान धवल चूनासे पुते हुए रहने के कारण बडे ही सुहावने मालूम होते थे, तात्पर्य यह है कि यह नगरी बहुत ही सुन्दर और चित्त को लुभानेवाली थी। सब प्रकार से यहा जनताको आराम था। किसी भी त्रिलोकगत वस्तु का यहा अभाव नहीं था। अमरावती जैसी यह भली मालूम होती थी।

આ નગરીની બહાર એક વિશાલ અને ઘણી ઊંડી ખાઈ હતી નગરીને ફરતો વાંકુ ધનુષ કરતા પણ વધારે વાંકો કોટ હતો જેમા દરેક આત્મરક્ષણના સાધન હતા કિલ્લામા મોટા મોટા દરવાજા હતા દરવાજામા વજ્ર જેવા મજબૂત કમાડ હતા કમાડમા આગળીઆ તથા ભોગળો લગાવેલા હતા કોટના ઉપર જે અટારિઓ હતી તેમા અનેક પ્રકારના અસ્ત્રો તથા શસ્ત્રો નો સંગ્રહ કરેલો હતો તે ત્યા સદા સુરક્ષિત રહેતો હતો નગરીમા વિસ્તૃત બજાર હતી બજારોમા મોટી મોટી દુકાનો હતી દુકાનોમા ક્રય-વિક્રયની બહુ-મૂલ્ય (કિમતી) પ્રત્યેક આવશ્યકીય વસ્તુઓ સંઘરેલી હતી નગરીના રાજમાર્ગ દરેક સમય અપાર માણસોની ભીડથી, હાથીઓથી, પાલખીઓથી, રથોથી અને તામજામ આદિથી ભરચક રહ્યા કરતા હતા અહીના મકાન સફેદ ચુનાથી પોતાયેલા રહેવાના કારણે ખૂબ જ રોનકદાર લાગતા હતા તાત્પર્ય એ કે આ નગરી બહુજ સુંદર અને ચિત્તને ખેંચવાવાળી હતી દરેક પ્રકારથી અહી લોકોને આરામ હતો કોઇ પણ ત્રિલોકગત (ત્રણ લોકમા થતી) વસ્તુનો અહી અભાવ નહોતો અમરાવતી જેવી આ સરસ લાગતી હતી

शंका—काल और समय तो एक ही अर्थ के वाचक है फिर सूत्र में " तेणं कालेणं तेणं समएणं " ऐसा प्रयोग सूत्रकार ने क्यों किया ? उत्तर यह है—'काल' शब्द से अवसर्पिणी कालके चतुर्थ आरे का ग्रहण होता है, और 'समय' शब्द से यहाँ हीयमान लिया जाता है, तथा घडी घटा पक्ष मास संवत्सर आदिरूप से परिवर्तित होने वाला परिणमन लिया जाता है, अथवा—जिस प्रकार संवत् और मिती खातों आदिमें लीखी जाती है, ठीक इसीप्रकार यहां पर भी समझना चाहिये । यह चंपा नगरी तो अब भी है फिर " अस्ति " ऐसा न कहकर सूत्रकार ' आसीत् ' इस भूतकालिक क्रिया का प्रयोग क्यों करते है ? अर्थात्— जिस समय औपपातिकसूत्रकी रचना हुई उस समय मेभी वह नगरी थी, फिर 'अस्ति' ऐसा न कहकर 'आसीत्' ऐसा क्यों कहा ? इसका उत्तर यह है कि जिस समय इस उपांग रूप आगम की वाचना हुई थी, उस समय यह नगरी सूत्र में कहे हुए विशेषणों से सर्वथा युक्त नहीं थी, न इस समय वैसी है, इसलिये 'अस्ति' क्रियापदका प्रयोग न करके सूत्रकार ने आसीत् इस भूतकालिक क्रियापदका प्रयोग किया है ॥ सू० १ ॥

શંકા—કાલ અને સમય તો એકજ અર્થના વાચક છે છતાં સૂત્રમાં " तेण कालेण तेण समएण " એવો પ્રયોગ સૂત્રકારે કેમ કર્યો છે ? ઉત્તર એ છે કે 'કાલ' શબ્દથી અવસર્પિણી કાલના ચોથા આરાનો અર્થ ગ્રહણ થાય છે, અને 'સમય' શબ્દથી અહીં હીયમાન લેવાય છે, તથા ઘડી કલાક પક્ષ માસ સંવત્સર આદિ રૂપથી પરિવર્તિત થનાર પરિણમન લેવાય છે અથવા જે પ્રકારે સંવત્ તથા મિતી ચોપડા આદિમાં લખવામાં આવે છે તેવી જ રીતે અહીંયાં પણ સમજવું જોઈએ આ ચંપા નગરી તો હજી પણ છે છતાં ' अस्ति ' એમ ન કહેતાં ' आसीत् ' એમ ભૂતકાલિક ક્રિયાનો પ્રયોગ કેમ કરે છે ? એટલે કે જે સમયે ઔપપાતિક—સૂત્રની રચના થઈ તે સમયમાં પણ તે નગરી હતી તો પણ अस्ति એમ ન કહેતાં आसीत् કેમ કહ્યું ? તેનો જવાબ એ છે કે, જે સમયે આ ઉપાંગરૂપ આગમની વાચના થઈ હતી તે સમયે આ નગરી સૂત્રમાં કહેલા વિશેષણોથી સર્વથા યુક્ત ન હતી અને આ સમયે પણ તેવી નથી રહી એ માટે अस्ति ક્રિયાપદનો પ્રયોગ ન કરતાં સૂત્રકારે आसीत् એવા ભૂતકાલિક ક્રિયાપદનો પ્રયોગ કર્યો છે (૧)

इस नगरी के बाहिर एक विशाल और बहुत गहरी खाई थी। नगरी का कोट वक्र धनुषकी अपेक्षा भी अधिक वक्र था, जिसमें प्रत्येक आत्मरक्षण के साधन थे। किले मे बडे २ दरवाजे थे, दरवाजों मे वज्र जैसे मजबूत किवाड थे, किवाडों में नुकीले कीले लगे हुए थे। कोट के ऊपर जो अट्टालिकाएँ थीं उनमे अनेक प्रकार के अस्त्र और शस्त्रों का सग्रह किया गया था। वह वहा सदा सुरक्षित रहता था। नगरीमे विस्तृत बाजार थे, बाजारोंमें बडी २ दुकाने थीं, दुकानों म क्रय विक्रय की बहुमूल्य प्रत्येक आवश्यकीय वस्तुएँ सगृहीत थीं। नगरी के राजमार्ग हर समय अपार जनकी भीड से, हाथियों से, पालकियों से, रथों से, और तामजाम आदि से सकुलित बने रहा करते थे। यहा के मकान धवल चूनासे पुते हुए रहने के कारण बडे ही सुहावने मालूम होते थे, तात्पर्य यह है कि यह नगरी बहुत ही सुन्दर और चित्त को लुभानेवाली थी। सब प्रकार से यहा जनताको आराम था। किसी भी त्रिलोकगत वस्तु का यहा अभाव नहीं था। अमरावती जैसी यह भली मालूम होती थी।

આ નગરીની બહાર એક વિશાલ અને ઘણી ઉડી ખાઈ હતી નગરીને ફરતો વાકુ ધનુષ કરતા પણ વધારે વાકો કોટ હતો જેમા દરેક આત્મરક્ષણના સાધન હતા કિલ્લામા મોટા મોટા દરવાજા હતા દરવાજામા વજ્ર જેવા મજબૂત કમાડ હતા કમાડમા આગળીઆ તથા ભોગળો લગાવેલા હતા કોટના ઉપર જે અટારિઓ હતી તેમા અનેક પ્રકારના અસ્રો તથા શસ્રો નો સગ્રહ કરેલો હતો તે ત્યા સદા સુરક્ષિત રહેતો હતો. નગરીમા વિસ્તૃત બજાર હતી બજારોમા મોટી મોટી દુકાનો હતી દુકાનોમા ક્રય-વિક્રયની બહુ-મૂલ્ય (કિમતી) પ્રત્યેક આવશ્યકીય વસ્તુઓ સઘરેલી હતી નગરીના રાજમાર્ગ દરેક સમય અપાર માણસોની ભીડથી, હાથીઓથી, પાલખીઓથી, રથોથી અને તામજામ આદિથી ભરચક રહ્યા કરતા હતા અહીના મકાન સફેદ ચુનાથી પોતાયેલા રહેવાના કારણે ખૂબ જ રોનકદાર લાગતા હતા તાત્પર્ય એ કે આ નગરી બહુજ સુદર અને ચિત્તને ખેચવાવાળી હતી દરેક પ્રકારથી અહી લોકોને આરામ હતો કોઇ પણ ત્રિલોકગત (ત્રણ લોકમા થતી) વસ્તુનો અહી અભાવ નહોતો અમરાવતી જેવી આ સરસ લાગતી હતી

सच्छत्ते सज्झए सघंटे सपडागे पडागाइपडागमंडिए सलोमहत्थे कयवेयद्दिए लाउल्लोइयमहिए गोसीससरसरत्तचंदणदद्दर-

त्रितम्। 'सच्छत्ते' सच्छत्रम्-छत्रमण्डितम्। 'सज्झए' सध्वज-ध्वजोच्छ्रायसश्रीकम्। 'सघंटे' सघण्टम्। 'सपडागे' सपताकम्। 'पडागाइपडागमंडिए' पताकाऽतिपताकामण्डितम्-पताका =लघुपताका अतिपताका =विशालपताका, ताभिर्मण्डितम्। 'सलोमहत्थे' सलोमहस्त-मृदुप्रमार्जनिकया सहितम्। 'कयवेयद्दिए' कृतवितर्दिकम् रचितवेदिकम्। 'लाउल्लोइयमहिए'-लापितोल्लोचितमहितम्, तत्र लापित-गोमयादिभिरङ्गणभित्त्यादेर्लेपनम्, उल्लोचितम्-खटिकाटिश्वैर्भित्त्यादीनां चाकचिक्ययुक्तकरणम्।

था, (कित्तिए) लोगों द्वारा भी तरह तरह की किंवदंतियों (दन्तकथाओं) से यह कीर्तित हो रहा था। (णाए) ऐसा कोई भी जन नहीं था जो उसके नामसे अपरिचित हो। सर्वत्र जनों में यह ख्यातिप्राप्त स्थान था। (सच्छत्ते) वह छत्रसहित था। (सज्झए) ध्वजाओं से युक्त था, (सघंटे) घंटाओं से विशिष्ट था (सपडागे) पताकाओं से उसकी शोभा अपूर्व बन रही थी। उसमें (पडागाइपडागमंडिए) कोई २ छोटी पताकाएं थीं और कोई २ विशाल पताकाएँ थीं, जिनसे वह मंडित था। (सलोमहत्थे) मृदुप्रमार्जनिका-मयूरपिच्छकी पाटी से ही उसकी सफाई होती थी, अत इतस्तत वे ही वहा रखी हुई रहती थीं, कठिन बुहारिया नहा। (कयवेयद्दिये) इसमें वेदिका बनी हुई थी (लाउल्लोइयमहिय) इसके आगन की जमीन लापित-गोमय से लिपी हुई रहती थी, उसकी भाते उल्लोचित-सफेद खड़िया से पुती

घणो पुराणो छे ए रूपथी प्रसिद्धि-कोटिमा आवी गयो हतो (कित्तिए) लोकोद्वारा पण जातजातनी किंवदंतिओथी-दंतकथाओथी ते कीर्तित (प्रख्यात) थई रह्यो हतो (णाए) एवो कोई पण माणस नहोतो के जे एना नामथी अपरिचित होय सर्वत्र लोकोमा आ ख्याति पामेलु स्थान हतु (सच्छत्ते) ते छत्रसहित हतु (सज्झए) ध्वजाओथी युक्त हतु (सघंटे) घंटाओथी विशिष्ट हतु (सपडागे) पताकाओथी तेनी शोभा अपूर्व थई रही हती तेमा (पडागाइपडागमंडिए) कोई कोई नानी पताकाओ हती अने कोई कोई विशाल पताकाओ हती जेथी ते शोभतु हतु (सलोमहत्थे) मृदुप्रमार्जनिका-मोरना पीछानी पीछीथी ज तेनी सफाई थती हती, आमी अही तही ते त्या राखवामा आवती हती, कठण सावरणी नहि (कयवेयद्दिए) तेमा वेदिका बनावेली हती (लाउल्लोइयमहिए) तेना आगणानी भूमि लापित-छाणथी लीपाएली रहेती हती तेनी भीतो उल्लोचित-सफेद

मूलम्—तीसे णं चंपाए णयरीए बहिया उत्तर-पुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं पुण्णभद्दे णामं चेइए होत्था, चिराईए पुव्वपुरिसपण्णत्ते पोराणे सद्दिए वित्तिए कित्तिए णाए

टीका-'तीसे ण' इत्यादि। 'तीसे ण चपाए णयरीए' तस्या खलु चम्पाया नगर्या -न करोऽष्टादशविधस्तन्निवासिना राज्ञे देयो यस्या सा नगरी, अत्र ककारस्य गकाररूपो वर्णविपर्यास पृषोदरादित्वात्, अष्टादशविध करोऽस्माभिरन्तकृद्दशाङ्गसूत्र प्रथमसूत्रस्य मुनिकुमुदचन्द्रिकाटीकायामुक्तस्ततो विज्ञेय। 'बहिया' बाह्ये, 'उत्तरपुरत्थिमे' उत्तरपौरस्त्ये-उत्तरस्या पूर्वस्या अन्तराले-ऐशान्ये कोण इति यावत्। 'दिसीभाए' दिग्भागे। 'पुण्णभद्दे णामं चेइए होत्था' पूर्णभद्र नाम चैत्य=व्यन्तरायतनमासीत्। तत् कीदृशम्? इत्याह-'चिराईए' चिरादिकम् चिरकालिकम् अतएव-'पुव्वपुरिसपण्णत्ते' पूर्वपुरुषप्रज्ञप्तम्, पूर्वपुरुषै प्राचीन-पुरुषै प्रज्ञप्तम्-कथित बहुकालत प्रसिद्धम् इत्यर्थ। यत पोराणे-पुरातनमति-प्राचीनम् 'सद्दिए' शब्दित-शब्द-प्रसिद्धि सञ्जातो यस्य तत्-शब्दितम्-प्रसिद्धिप्राप्तम्। 'वित्तिए' वित्तिकम्-वित्त-प्रसिद्धिरस्यास्तीति वित्तिकम् प्रसिद्ध-मित्यर्थ। 'कित्तिए' कीर्तितम्-प्रवर्णितम् 'णाए' प्रख्याततया ज्ञात-सकलजन-

'तीसे ण चपाए णयरीए०' इत्यादि।

(तीसे ण चपाए णयरीए) उस चपा नगरी के (बहिया) बाहिर (उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए) उत्तर और पूर्व दिशा के बीच ईशानकोणमें (पुण्णभद्दे णामं चेइए होत्था) पूर्णभद्र नाम का एक चैत्य-यक्षालय था। (चिराईए पुव्वपुरिसपण्णत्ते) वह बहुत प्राचीन था। बडे-बूढे पुराने पुरुष भी इसकी तारीफ करते आ रहे थे। इसलिये वह (पोराणे) बहुत पुराना था। (सद्दिए) इसी प्रकार से इसकी प्रसिद्धि भी चली आरही थी। और इसी कारण से वह (वित्तिए) बहुत पुराना है-इस रूपसे प्रसिद्धि-कोटि मे आ गया

तीसे णं चंपाए णयरीए० ઇત્યાદિ

(तीसे णं चंपाए णयरीए) તે ચ પા નગરીના (बहिया) બહાર (उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए) ઉત્તર અને પૂર્વ દિશાની વચ્ચે-ઇશાન કોણમા (पुण्णभद्दे णाम चेइए होत्था) પૂર્ણભદ્ર નામનો એક ચૈત્ય-યક્ષાલય હતો (चिराईए पुव्वपुरिसपण्णत्ते) એ ઘણો પ્રાચીન હતો ઘણા બુઢ્ઢા પુરાણા પુરૂષ પણ તેની પ્રશ સા કરતા આવતા હતા, તે માટે તે (पोराणे) ઘણો પુરાણો હતો (सद्दिए) એવી રીતે તેની પ્રસિદ્ધિ પણ ચાલી આવતી હતી અને એ કારણથી તે (वित्तिए)

दामकलावे पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए काला-
गुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवर-

कलाप =समूहो यत्र तत्, अर्थात्-उपर्यधोविस्तृतवर्तुलप्रलम्बमानकुसुममाल्य-कलापोपेतम्। 'पंचवण्णसरससुरहिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए' पञ्चवर्णसरस-सुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितम्-पञ्चवर्णानि कृष्णनीलपीतरक्तश्वेतकान्तियुक्तानि सरसानि सुरभीणि-सुगन्धीनि च तानि मुक्तानि-विकीर्णानि यानि पुष्पाणि तेषां पुञ्जैरुपचारः-रचनाविशेषः, तै कलितं युक्तं विविधवर्णकुसुमरचनासम्पन्नमित्यर्थः, 'कालागुरुपवर-कुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे' कालागुरुप्रवरकुन्दुरुष्कतुरुष्कधूपदह्य-मानातिशयगन्धोद्भूताऽभिरामम्-कालागुरु =कृष्णागुरु, प्रवरकुन्दुरुष्क =श्रेष्ठगन्धद्रव्यविशेषः, तुरुष्क =सिल्हक 'लोबान' इति भाषायाम्, धूप =गन्धद्रव्यसंयोगजन्य पदार्थः, एते दह्यमाना अग्नौ प्रक्षिप्यमाणास्तेषां 'मघमघंत' अतिशयितो यो गन्धः 'उद्धुय' उद्भूत =सर्वतः प्रसृतः, तेन अभिरामम्=मनोहरम्, 'सुगंधवरगंध-

मल्लदामकलावे) यक्षायतन मे भीतों के ऊपर और नीचे सर्वत्र विस्तीर्ण एवं गोलाकार लटकते हुए कुसुमकी मालाओं के कलाप की सजावट हो रही थी। (पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए) प्रतिस्थान पर यहां पंचवर्ण के सरस एवं सुगंधित पुष्पों के पुंजों से अनेक प्रकारकी रचना रचने में आई थी। (कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे) उस यक्षा-यतनमें कृष्णागुरु, प्रवरकुन्दुरुष्क-श्रेष्ठगन्धद्रव्यविशेष, तुरुष्क-सेल्हारस-लोबान और धूप ये सब सुगंधित पदार्थ अग्नि में समय २ पर प्रक्षिप्त हुआ करते थे, इसलिये वहां अद्भुत विशेष गंध भरी रहती थी, इसलिये वह सदा अतिशय

मल्लदामकलावे) यक्षायतनमां भींतोनी उपर तथा नीचे सर्वत्र विस्तीर्ण तेमज गोलाकार लटकावेली पुष्पोनी माळाओना कलापनी सजावट (शोभा) थई रही हती (पचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए) दरेक स्थान पर अहीं पंच वर्णना सरस तेमज सुगंधित पुष्पोना ढगलाथी अनेक प्रका-रनी रचना बनाववामां आवी हती (कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतमघमघंत गंधुद्धुयाभिरामे) ते यक्षायतनमां कृष्णागुरु, प्रवरकुन्दुरुष्क-श्रेष्ठ गंधद्रव्य विशेष, तुरुष्क-सेल्हारस-लोबान अने धूप, ए बधा सुगंधित पदार्थ अग्निमां वारवार नाखवामां आवता हता, तेथी त्यां बधु ज सुगंधभरी रहेती हती आथी ते सदा मघमघतु-बधी तरफथी सुगंधीथी सुशोभित बनी रहेतु

दिण्णपंचंगुलितले उवचियचंदणकलसे चंदणघडसुकय-तोरणपडिदुवारदेसभाए आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्ल-

ताभ्या महित-युक्तम् । 'गोसीससरसरत्तचदणदद्दर दिण्णपचगुलितले' गोशीर्षसरसरक्त-चन्दनप्रचुरदत्तपञ्चाङ्गुलितलम्, गोशीर्षं-गोरोचन सरस रक्तचन्दनम्, एतेन चन्दनस्य पीतवर्णता रक्तता च व्यज्यते, तेन पीतरक्तसरसचन्दनेन दर्दर-प्रचुर यथा स्यात्तथा दत्त पञ्चानामङ्गुलीना तल-आयतपञ्चाङ्गुलपाणितल चपेटारूपम् अङ्कन चिह्न यत्र तत् तथा । 'उवचियचदणकलसे' उपचितचन्दनकलशम्-मङ्गलार्थं न्यस्तचन्दन-लिप्तघटम् । 'चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभाए' चन्दनघटसुकृत-तोरणप्रतिद्वारदेशभागम्-चन्दनघटाश्च सुष्ठु कृततोरणानि च प्रतिद्वारदेशभागे यस्य तत्तथा, यत्र प्रतिद्वारे चन्दनलिप्तकलशा सुन्दरतोरणानि च सन्तीत्यर्थ, 'आसत्तोसत्त-विउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावे' आसक्तोत्सक्तविपुलवृत्तावतारितमाल्यदाम-कलापम्-आसक्तो-भूमिमसक्त उसक्त- उपरिमसक्त, विपुलो विस्तीर्ण, 'वट्टो' वृत्तो-वर्तुलो गोलाकार, उपरिदेशात्-अवतारित प्रलम्बमानीकृत,-'मल्लदामकलावे' माल्यानि-कुसुमानि, तेषा दामानि-माला पुष्पमाला, तेन माल्यदाम्ना

रहती थी। इस कारण खूब महित-चमकती रहती थी। (गोसीससरसरत्तचदणदद्दरदिण्ण-पचगुलितले) भित्तियों में जगह २ पर गोरोचन और सरस रक्तचदन के प्रचुरमात्रा मे हाथे लगाये हुए थे। (उवचियचदणकलसे) उस यक्षालयमे मगल के निमित्त चन्दन से लिप्त कलश स्थापित थे। (चदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभाए) प्रत्येक द्वारों पर चदन के घट रखे हुए थे, एव अच्छी तरह से बनाए गये सुन्दर तोरण दरवाजों के ऊपर सुशोभित हो रहे थे, अथवा चदन के छोटे २ कलशों से दरवाजों पर तोरणों की रचना करने में आई थी। (आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारिय-

ખડીથી પોતાએલી રહેતી હતી તે કારણે તેખૂબ મહિત-ચમકતી રહેતી હતી (गोसीस-सरसरत्तचदणदद्दरदिण्णपचगुलितले) ભીંતમા ઠેકઠેકાણે ગોરોચન અને સરસ રક્ત-ચદનના થાપા ખૂબ પ્રમાણમા લગાવેલા હતા (उवचियचदणकलसे) તે યક્ષાલયમા મગલના નિમિત્ત ચદન લગાડેલા કળશ સ્થાપિત હતા (चदणघड सुकयतोरणपडिदुवारदेसभाए) પ્રત્યેક દ્વારો ઉપર ચદનવાળા ઘટ રાખેલા હતા તેમજ સરસ રીતે બનાવેલા સુદર તોરણ દરવાજાની ઉપર સુશોભિત લટકી રહેલા હતા અથવા ચદન લગાવેલા નાના નાના કળશોથી દરવાજા પર તોરણોની રચના કરવામા આવી હતી (आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारिय-

आहुस्स आहुणिज्जे पाहुणिज्जे अच्चणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहियपाडिहेरे

विश्रुतकीर्तिकम्—बहुजनस्य=पौरस्य, जानपदस्य=जनपदजातस्य अर्थात्—नागरिकाणा देशगामिना च विश्रुतकीर्तिकम्—प्रसिद्धियुक्तम्, 'बहुजणस्स' बहुजनस्य, 'आहुस्स' आहोतु—दातु—दानशीलस्य बहुजनस्य, 'आहुणिज्जे' आहवनीयम् आहूयते—दीयते ऽस्मै इति आहवनीय—सम्प्रदानरूपम्, 'पाहुणिज्जे' प्राहवणीयम् — प्रकृष्टतया सम्प्रदानरूपम्, 'अच्चणिज्जे' अर्चनीयम्—आदरपात्रम्, 'वदणिज्जे' वन्दनीय—स्तुतियोग्यम्, 'नमंसणिज्जे' नमस्यनीयम्, 'पूयणिज्जे' पूजनीय—प्रणमनीयम्, 'सक्कारणिज्जे' सत्करणीयम्, 'सम्माणणिज्जे' सम्माननीयम्, 'कल्लाण' कल्याणम् 'मगलं' मङ्गलम् 'देवय' दैवतम्, 'चेइय' चैत्यम्, 'विणएण' विनयेन, 'पज्जुवासणिज्जे' पर्युपासनीयम्, 'दिव्वे' दिव्यम्, 'सच्चे' सत्य, 'सच्चोवाए' सत्यावपात—सफलसेवम्,

वयस्स विस्सुयकित्तिए) इस यक्षायतन की प्रसिद्धि अनेक पुरवासियों एव अनेक नगरनिवासियों तक थी। (बहुजणस्स आहुस्स आहुणिज्जे) बहुत लोग इस मे दान दिया करते थे। (वदणिज्जे णमसणिज्जे अच्चणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे) यहा के लोग इस यक्षको वन्दनीय, नमस्करणीय, अर्चनीय, पूजनीय, सत्करणीय, और सम्माननीय मानते थे। (कल्लाण मगल देवयं चेइय विणएण पज्जुवासणिज्जे दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहियपाडिहेरे जागसहस्स-भागपडिच्छए०) तथा कल्याण, मगल, दैवत मानते थे, और चैत्य अर्थात् लोगों की अभिलाषा को जानने वाले मानते थे, विनय से उपासना करने के योग्य मानते थे, दिव्य और सत्य मानते थे, सफल सेवा मानते थे, जगह २ इसके

वयस्स विस्सुयकित्तिए) આ યક્ષાયતનની પ્રસિદ્ધિ અનેક પુરવાસીઓ તેમજ અનેક નગરવાસીઓ સુધી પહોંચી હતી (बहुजणस्स आहुस्स आहुणिज्जे) ઘણા લોકો એમા દાન આપ્યા કરતા હતા (वदणिज्जे णमसणिज्जे अच्चणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे) અહીંના લોકો આ યક્ષને વદનીય, નમસ્કરણીય, અર્ચનીય, પૂજનીય, સત્કરણીય, અને સમ્માનનીય માનતા હતા (कल्लाण मगल देवय चेइय विणएण पज्जुवासणिज्जे दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहिय-पाडिहेरे जागसहस्सभागपडिच्छए) તથા કલ્યાણ, મગલ, દૈવત માનતા હતા અને ચૈત્ય અર્થાત્ લોકોની અભિલાષાને જાણવાવાળા માનતા હતા, વિનયથી ઉપાસના કરવા યોગ્ય માનતા હતા, દિવ્ય અને સત્ય માનતા હતા, સફલ

गंधगंधिए गंधवट्टिभूए णड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्टिय-वेलंबग-पवग-कहग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-भुयग-मागह-परिगए बहुजणजाणवयस्स विस्सुयकित्तिए बहुजणस्स

गंधिए' सुगन्धवरग-धगन्धितम्-नानाविधपुष्पसम्पादितगन्धद्रव्यै सुवासितम्। 'गंधवट्टिभूए' गन्धवर्तिभूत=गन्धद्रव्यगुटिकासदृशम्-सौरभ्यातिशयात् गन्धद्रव्यनिर्मितवद् भासमानम्। 'णटणट्टगे'-त्यादि, अत्रैव प्रथमसूत्रे व्याख्यातम्, नवरम्-'भुयगमागह-परिगए' भोजकमागधपरिगतम्, भोजका -सेवकाः मागधा स्तुतिपाठकाः, तै परिगत व्याप्तम्। 'बहुजणजाणवयस्स विस्सुयकित्तिए' बहुजनजानपदस्य

सुगंधि से सुशोभित बना रहता था। (सुगंधवरगंधिए) अनेक प्रकार के सुगंधित पुष्पों की गंध से भी वह सदा सुवासित होता रहता था (गंधवट्टिभूए) इसलिये यह गंधकी वत्ती जैसा हो रहा था। ऐसा ज्ञात होता था कि यह सुगंधित द्रव्यों के चूर्ण से ही मानो निरचित किया गया है। (णड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबय-इत्यादि) नृत्य करने वालों से, नाटक करने वालों से, डोरी पर नाचने वालों से, मुष्टियुद्ध करने वालों से, बंदर की तरह कूदने वालों से, भांड के जैसी नकल करने वालों से, तथा कहानी कहने वालों से, रास रचने वालों से, शुभा-शुभ प्रकट करने वालों से, बांसके अग्रभाग पर खेलने वालों से, चित्रपट दिखला कर आजीविका करने वालों से, वीणा बजाने वालों से, तुंबी बजाने वालों से, भोजकों-सेवकों-से, और मागधों-स्तुतिपाठकोंसे वह मंदिर सदा युक्त बना रहता था। (बहुजणजाण-

હતુ (સુગંધવરગંધિએ) અનેક પ્રકારના સુગંધિત પુષ્પોની ગંધથી પણ તે હંમેશ સુવાસિત થઇ રહેતુ હતુ (ગંધવટ્ટિભૂએ) એથી તે ગંધના વાતી જેવુ થઇ રહ્યુ હતુ એમજ લાગતુ હતુ કે એ સુગંધિત દ્રવ્યોના ચૂર્ણથી જ જાણે બનાવ્યુ છે (णड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबय-इत्यादि) નૃત્ય કરનારાઓથી, નાટયકારોથી, દોરા ઉપર નાચવાવાળાઓથી, મુષ્ટિયુદ્ધ કરનારાઓથી, વાંદરાની પેઠે કૂદવાવાળાઓથી, ભાંડ (ભવાયા) જેવી નકલ કરવાવાળાઓથી, તથા વાર્તા કહેવાવાળાઓથી, રાસ કરનારાઓથી, શુભાશુભ પ્રકટ કરનારાઓથી, વાંસની ટોચ પર રમનારાઓથી, ચિત્રપટ દેખાડીને આજીવિકા કરવાવાળાઓથી, વીણા વગાડનારાઓથી, તુણુંગ વગાડનારાઓથી, ભોજકો-સેવકોથી અને માગધો-સ્તુતિપાઠકોથી તે મંદિર સદા ભરચક રહેતુ હતુ (बहुजणजाण-

आहुस्स आहुणिज्जे पाहुणिज्जे अच्चणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहियपाडिहेरे

विश्रुतकीर्त्तिकम्-बहुजनस्य=पौरस्य, जानपदस्य=जनपदजातस्य अर्थात्-नागरिकाणां देशवासिना च विश्रुतकीर्त्तिकम्-प्रसिद्धियुक्तम्, 'बहुजणस्स' बहुजनस्य, 'आहुस्स' आहोतु-दातु-दानशीलस्य बहुजनस्य, 'आहुणिज्जे' आहवनीयम् आहूयते-दीयते ऽस्मै इति आहवनीय-सम्प्रदानरूपम्, 'पाहुणिज्जे' प्राहवणीयम् - प्रकृष्टतया सम्प्रदानरूपम्, 'अच्चणिज्जे' अर्चनीयम्-आदरपात्रम्, 'वंदणिज्जे' वन्दनीय-स्तुतियोग्यम्, 'नमंसणिज्जे' नमस्यनीयम्, 'पूयणिज्जे' -पूजनीय-प्रणमनीयम्, 'सक्कारणिज्जे' सत्करणीयम्, 'सम्माणणिज्जे' सम्माननीयम्, 'कल्लाण' कल्याणम 'मंगलं' मङ्गलम् 'देवयं' दैवतम्, 'चेइयं' चैत्यम्, 'विणएण' विनयेन, 'पज्जुवासणिज्जे' पर्युपासनीयम्, 'दिव्वे' दिव्यम्, 'सच्चे' सत्य, 'सच्चोवाए' सत्यावपात-सफलसेवम्,

---

वयस्स विस्सुयकित्तिए) इस यक्षायतन की प्रसिद्धि अनेक पुरवासियों एवं अनेक नगरनिवासियों तक थी। (बहुजणस्स आहुस्स आहुणिज्जे) बहुत लोग इस मे दान दिया करते थे। (वंदणिज्जे णमंसणिज्जे अच्चणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे) यहा के लोग इस यक्षको वन्दनीय, नमस्करणीय, अर्चनीय, पूजनीय, सत्करणीय, और सम्माननीय मानते थे। (कल्लाण मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहियपाडिहेरे जागसहस्स-भागपडिच्छए०) तथा कल्याण, मंगल, दैवत मानते थे, और चैत्य अर्थात् लोगों की अभिलाषा को जानने वाले मानते थे, विनय से उपासना करने के योग्य मानते थे, दिव्य और सत्य मानते थे, सफल सेवा मानते थे, जगह २ इसके

वयस्स विस्सुयकित्तिए) આ યક્ષાયતનની પ્રસિદ્ધિ અનેક પુરવાસીઓ તેમજ અનેક નગરવાસીઓ સુધી પહોંચી હતી (बहुजणस्स आहुस्स आहुणिज्जे) ઘણા લોકો એમાં દાન આપ્યા કરતા હતા (वंदणिज्जे णमंसणिज्जे अच्चणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे) અહીંના લોકો આ યક્ષને વંદનીય, નમસ્કરણીય, અર્ચનીય, પૂજનીય, સત્કરણીય, અને સન્માનનીય માનતા હતા (कल्लाण मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहिय-पाडिहेरे जागसहस्सभागपडिच्छए) તથા કલ્યાણ, મંગલ, દૈવત માનતા હતા અને ચૈત્ય અર્થાત્ લોકોની અભિલાષાને જાણવાવાળા માનતા હતા, વિનયથી ઉપાસના કરવા યોગ્ય માનતા હતા, દિવ્ય અને સત્ય માનતા હતા, સફલ

तिव्वच्छाए घणकडियकडिच्छाए रम्मे महामेहणिकुरंब-भूए ॥ सू. ३ ॥

'घणकडियकडिच्छाए' 'घनकटितकडिच्छायः'—परस्पर शाखानामनुप्रवेशाद् घन —सान्द्र , कटित —कटाच्छादित इव निबिड —बहुलनिरन्तरच्छाय इत्यर्थ । रम्य —रमणीयगुणयुक्त । 'महामेहणिकुरंबभूए' महामेघनिकुरम्बभूत —महान्त —विशाला , मेघाः—जलधरा , तेषा निकुरम्बम्—महामेघनिकुरम्बम् सजलजलदवृन्दम् तथाभूत -त सदृश —**महामेघनिकुरम्बभूतः**—महाजलदवृन्दोपम सश्रीक श्यामतमो वनषण्ड इति यावत् ॥ सू ३॥

पर इतनी चिकनी थी कि लोगों को इसकी प्रभा में भी चिकनाई लक्षित होती थी । वर्णादिक से यह तीव्र एव तीव्र छायावाला था । (**घणकडियकडिच्छाए रम्मे महामेहणिकुरवभूए**) यहा जितने भी वृक्ष थे उन सबकी शाखाएँ एक दूसरे वृक्षों की शाखाओं से परस्पर में मिल गई थीं, इससे यहा छाया की अत्यत सघनता रहा करती थी। यह वन बडा ही सुहावना लगता था। ऐसा मालूम पडता था कि मानो महामेघों का यह एक विशाल समुदाय ही है। अथवा (**किण्हे**) इत्यादि पदों की व्याख्या इस प्रकार भी हो सकती है—अत्यत सघन होने से इस वनखड मे सूर्य की किरणों का प्रवेश तक भी नहीं हो सकता था इसलिये इसमे चारों ओर अधकार छाया रहता था, अत यह काला जैसा प्रतीत होता था। जैसे मयूर का कठ नीला होता है यह भी उसी तरह नीला था । इसमे हरे२ पत्तों की प्रचुरता थी इसलिये इस वनकी काति भी तोते की पाखों-जैसी हरी ज्ञात होती थी। वन का

હતી કે લોકોને જેની પ્રભામા પણ ચિકાશ લાગતી હતી વર્ણાદિક(રૂપરગ)થી એ તીવ્ર તેમજ તીવ્રછાયાવાળો હતો (घणकडियकडिच्छाए रम्मे महामेहणिकुरवभूए) અહી જેટલા વૃક્ષો હતા તે બધાયની શાખાઓ એક બીજા વૃક્ષોની શાખાઓ સાથે પરસ્પર મળી ગઈ હતી આથી અહી છાયા બહુ જ ઘાટી થઇ રહી હતી આ વન ઘણુ જ શોભાયમાન લાગતુ હતુ એમ જણાતુ હતુ કે જાણે મહામેઘોનો એ એક મોટો સમુદાય જ છે અથવા (किण्हे) ઇત્યાદિ પદોની વ્યાખ્યા એમ પણ થઇ શકે છે કે અત્યત ઘાટુ હોવાથી આ વનખડમા સૂર્યના કિરણોનો પ્રવેશ માત્ર પણ થઈ શકતો નહિ એથી તેમા ચારે તરફ અધકાર છવાઈ રહેતો હતો તેથી તે કાળા જેવુ પ્રતીત થતુ હતુ જેમ મોરનો કઠ લીલો હોય છે તેમ આ પણ લીલુ હતુ એમા લીલાછમ પાદડા બહુ જ હતા, તેથી આ વનની કાતિ પણ પોપટની પાખો જેવી લીલી જણાતી હતી વનનો સ્પર્શ ઠડો એ કારણથી

मूलम्—ते णं पायवा मूलमंतो कंदमंतो खंधमंतो तयामंतो सालमंतो पवालमंतो पत्तमंतो पुप्फमंतो

टीका:—'ते ण पायवा' इत्यादि। 'ते' तत्सम्बन्धिन—तच्छन्दस्य लक्षणया तत्सम्बन्धिन इत्यर्थ, तच्छन्देन बुद्धिस्थविषयपरामर्शात् वनखण्डस्य परामर्श। वनखण्डसम्बन्धिन इत्यर्थ, पादपा वृक्षा, कीदृगास्ते वृक्षा? इत्यत्राऽऽह—'मूलमतो' मूलवन्त—मूलानि सन्ति एषाम् इति मूलवन्त मूलसम्बद्धा वृक्षा इत्यर्थ। 'कदमतो' कन्दवन्त—मूलानामुपरि ग्रन्थिरूपा कन्दा, ते सन्ति येषा ते तथा। 'खधमतो' स्कन्धवन्त—शाखाविभागस्थान स्कन्ध, ते स्कन्धा सन्त्येषा ते स्कन्धवन्त। 'तयामतो' त्वग्वन्त—त्वचो—वल्कलानि सन्त्येषामिति ते तथा। 'सालमतो' शालावन्त—शाला शाखा सन्त्येषामिति। 'पवालमतो' प्रवालवन्त—प्रवाला=बाल-

स्पर्श शीत इसलिये था कि यहा लताओं का कुज अधिक था। मक्खन के समान यह स्पर्श में चिकन था। प्रभा के प्रकर्ष से इसकी प्रभा भी तीव्र थी। कृष्ण एव कृष्णावभास इन दो विशेषणों से सूत्रकार का यह अभिप्राय है कि यहा पर जो कृष्णता थी वह गाढ थी। ॥सू० ३॥

'ते ण पायवा०' इत्यादि—

(ते ण पायवा मूलमतो) उस वनखड के ये वृक्ष जमीन के भीतर गहरी फैली हुई बडी २ जडों वाले थे। (कदमतो खधमतो तयामतो सालमतो पवालमतो पत्तमतो पुप्फमतो फलमंतो बीयमतो) कद—मूलों के ऊपर गाठ—वाले थे। स्कध—शाखाओं के रहने के स्थानवाले थे। त्वचा—छाल युक्त थे। शालाओं—शाखाओं से विशिष्ट थे। प्रवाल—कोंपल सहित थे। पत्रों से भरे हुए थे, पुष्पों से युक्त थे।

હતો કે અહીં લતાઓના કુંજ વધારે હતા માખણના જેવો તેનો સ્પર્શ ચિકણો હતો ઉજાસ વધારે હોવાથી તેનો ઉજાસ પણ તીવ્ર હતો કૃષ્ણ તેમજ કૃષ્ણાવભાસ એ બે વિશેષણોથી સૂત્રકારનો એ અભિપ્રાય છે કે અહીં જે કાળાશ હતી તે ઘેરી હતી (સૂ ૩)

'ते ण पायवा' ઈત્યાદિ,

(ते ण पायवा मूलमतो) એ વનખંડમા આ વૃક્ષો જમીનની અંદર ઉંડા ફેલાઈ ગયેલા મોટા મોટા મૂળવાળા હતા (कदमतो खधमतो तयामतो सालमतो पवालमतो पत्तमतो पुप्फमतो फलमंतो बीयमतो) કંદ-મૂળ ઉપર ગાઠ-વાળા હતા, સ્કંધ-શાખાઓને રહેવાના સ્થાનરૂપ હતા ત્વચા-છાલયુક્ત હતા, શાલાઓ-શાખાઓથી વિશિષ્ટ હતા, પ્રવાલ-કુંપળોવાળા હતા, પત્ર-પાદડાથી ભરેલા

तिव्वच्छाए घणकडियकडिच्छाए रम्मे महामेहणिकुरंव-भूए ॥ सू. ३ ॥

'घणकडियकडिच्छाए' 'घनकटितकडिच्छायः'—परस्पर शाखानामनुप्रवेशाद् घन —सान्द्र, कटित —कटाच्छादित इव निविड —बहुलनिरन्तरच्छाय इत्यर्थ । रम्यं —रमणीयगुणयुक्त । 'महामेहणिकुरंवभूए' महामेघनिकुरम्बभूत —महान्त —विशाला, मेघाः—जलधरा, तेषा निकुरम्बम्—महामेघनिकुरम्बम् सजलजलदवृन्दम् तथाभूत —तत्सदृश —महामेघनिकुरम्बभूतः—महाजलदवृन्दोपम सश्रीक श्यामतमो वनषण्ड इति यावत् ॥ सू ३॥

पर इतनी चिकनी थी कि लोगों को इसकी प्रभा में भी चिकनाई लक्षित होती थी। वर्णादिक से यह तीव्र एव तीव्र छायावाला था। (घणकडियकडिच्छाए रम्मे महामेहणिकुरवभूए) यहा जितने भी वृक्ष थे उन सबकी शाखाएँ एक दूसरे वृक्षों की शाखाओं से परस्पर मे मिल गई थीं, इससे यहां छाया की अत्यत सघनता रहा करती थी। यह वन बडा ही सुहावना लगता था। ऐसा मालूम पडता था कि मानो महामेघों का यह एक विशाल समुदाय ही है। अथवा (किण्हे) इत्यादि पदों की व्याख्या इस प्रकार भी हो सकती है—अत्यत सघन होने से इस वनखड मे सूर्य की किरणों का प्रवेश तक भी नहीं हो सकता था इसलिये इसमे चारों ओर अधकार छाया रहता था, अत यह काला जैसा प्रतीत होता था। जैसे मयूर का कठ नीला होता है यह भी उसी तरह नीला था। इसमे हरेर पत्तों की प्रचुरता थी इसलिये इस वनकी काति भी तोते की पाखों—जैसी हरी ज्ञात होती थी। वन का

हती के लोकोने जेनी प्रभामां पण चिकाश लागती हती वर्णादिक (रूपरंग)थी ए तीव्र तेमज तीव्रछायावाळो हतो (घणकडियकडिच्छाए रम्मे महा-मेहणिकुरवभूए) अही जेटला वृक्षो हता ते बधायनी शाखाओ एक बीजा वृक्षोनी शाखाओ साथे परस्पर मळी गई हती आथी अही छाया बहु ज घाटी थई रही हती आ वन घणु ज शोभायमान लागतु हतु एम जणातु हतु के जाणे महामेघोनो ए एक मोटो समुदाय ज छे अथवा (किण्हे) इत्यादि पदोनी व्याख्या एम पण थई शके छे के अत्यत घाटु होवाथी आ वनखडमा सूर्यना किरणोनो प्रवेश मात्र पण थई शकतो नहि एथी तेमा चारे तरफ अधकार छवाई रहेतो हतो तेथी ते काळा जेवु प्रतीत थतु हतुं जेम मोरनो कठ लीलो होय छे तेम आ पण लीलु हतुं एमा लीलाछम पादडा बहु ज हता, तेथी आ वननी काति पण पोपटनी पाखो जेवी लीली जणाती हती वननो स्पर्श ठंडो ए कारणथी

मूलम्—ते णं पायवा मूलमंतो कंदमंतो खंधमंतो तयामंतो सालमंतो पवालमंतो पत्तमंतो पुप्फमंतो

टीका:—'ते ण पायवा' इत्यादि। 'ते' तत्सम्बन्धिन—तच्छब्दस्य लक्षणया तत्सम्बन्धिन इत्यर्थ, तच्छब्देन बुद्धिस्थविषयपरामर्शात् वनखण्डस्य परामर्श। वनखण्डसम्बन्धिन इत्यर्थ, पादपा वृक्षा, कीदृशास्ते वृक्षाः? इत्यत्राऽऽह—'मूलमतो' मूलवन्त—मूलानि सन्ति एषाम् इति मूलवन्त मूलसम्बद्धा वृक्षा इत्यर्थ। 'कंदमतो' कन्दवन्त—मूलानामुपरि ग्रन्थिरूपा कन्दा, ते सन्ति येषा ते तथा। 'खंधमंतो' स्कन्धवन्त—शाखाविभागस्थान स्कन्ध, ते स्कन्धा सन्त्येषा ते स्कन्धवन्त। 'तयामतो' त्वग्वन्त—त्वचो—वल्कलानि सन्त्येषामिति ते तथा। 'सालमतो' शालावन्त—शाला शाखा सन्त्येषामिति। 'पवालमतो' प्रवालवन्त—प्रवाल=बाल-

स्पर्श शीत इसलिये था कि यहा लताओं का कुज अधिक था। मक्खन के समान यह स्पर्श में चिकन था। प्रभा के प्रकर्ष से इसकी प्रभा भी तीव्र थी। कृष्ण एव कृष्णावभास इन दो विशेषणों से सूत्रकार का यह अभिप्राय है कि यहा पर जो कृष्णता थी वह गाढ थी। ॥ सू० ३ ॥

'ते ण पायवा०' इत्यादि—

(ते ण पायवा मूलमतो) उस वनखड के ये वृक्ष जमीन के भीतर गहरी फैली हुई बडी २ जडों वाले थे। (कदमंतो खंधमतो तयामतो सालमतो पवालमंतो पत्तमंतो पुप्फमतो फलमतो बीयमतो) कद—मूलों के ऊपर गाठ—वाले थे। स्कंध—शाखाओं के रहने के स्थानवाले थे। त्वचा—छाल युक्त थे। शालाओं—शाखाओं से विशिष्ट थे। प्रवाल—कोंपल सहित थे। पत्रों से भरे हुए थे, पुष्पों से युक्त थे।

હતો કે અહીં લતાઓના કુંજ વધારે હતા માખણના જેવો તેનો સ્પર્શ ચિકણો હતો ઉજાસ વધારે હોવાથી તેનો ઉજાસ પણ તીવ્ર હતો કૃષ્ણ તેમજ કૃષ્ણાવભાસ એ બે વિશેષણોથી સૂત્રકારનો એ અભિપ્રાય છે કે અહીં જે કાળાશ હતી તે ઘેરી હતી (સૂ ૩)

'ते ण पायवा' ઈત્યાદિ,

(ते णं पायवा मूलमतो) એ વનખંડમાં આ વૃક્ષો જમીનની અંદર ઉંડા ફેલાઇ ગયેલા મોટા મોટા મૂળવાળા હતા (कदमतो खधमतो तयामंतो सालमतो पवालमतो पत्तमतो पुप्फमतो फलमतो बीयमतो) કંદ-મૂળ ઉપર ગાંઠ-વાળા હતા, સ્કંધ-શાખાઓને રહેવાના સ્થાનરૂપ હતા ત્વચા-છાલયુક્ત હતા, શાલાઓ-શાખાઓથી વિશિષ્ટ હતા, પ્રવાલ-કુંપળોવાળા હતા, પત્ર-પાંદડાથી ભરેલા

पत्त-पल्लव-कोमल-उज्जल-चलंत-किसलय-सुकुमाल-पवाल-सोहिय-वरंकुर-ग्गसिहरा णिच्चं कुसुमिया णिच्चं मउरिया णिच्चं पल्लविया

न्धकार-गम्भीर-दर्शनीया –नवेन हरितेन भासमानो–दीप्यमानो य पत्रभार –पत्रसमूह, तेन अन्धकारा =सान्धकारा, अतएव-गम्भीरदर्शनीया-गम्भीरम्-'इदमीदृग्'-इति विवेक्तुमशक्य यथा स्यात्तथा दृश्यन्ते इति गम्भीरदर्शनीया । **'उवणिग्गय-णव–तरुण-पत्त-पल्लव-कोमल-उज्जल-चलत्त-किसलय-सुकुमाल-पवाल-सोहिय-वरकुर-ग्गसिहरा'** उपनिर्गत-नवतरुण-पत्र-पल्लव-कोमलोज्ज्वल-चलत्किसलय-सुकुमार - प्रवाल - शोभित - वराऽङ्कुराऽग्रशिखरा – तत्र–उपनिर्गतानि–सद्य प्रकटितानि, नवतरुणानि–नवीनागततरुणतासम्पन्नानि पत्रपल्लवानि–पत्ररूपाणि गुच्छरूपाणि तै, तथा कोमलोज्ज्वलै –मृदुनिर्मलै, चलद्भि, किसलयै – सद्योजातै पत्रविशेषै सुकुमारप्रवालै - कोमलपल्लवै, शोभितवराऽङ्कुराणि=सुन्दराङ्कुर–युक्तानि अग्रशिखराणि–उपरितनभागा येषा ते तथा। अत्र विशेषणे अङ्कुरप्रवालपल्लव–किसलयपत्राणि स्वल्पबहुबहुतरादिकालकृतावस्थाभेदाद्भिन्नानीति भाव । **'णिच कुसुमिया'** नित्य कुसुमिता –सदा सर्वर्तुसजातकुसुमोपेता –न तु ऋतुभेद–

मल-उज्जल-चलत-किसलय-सुकुमाल-पवाल-सोहिय-वरकुर-ग्गसिहरा) इनके जो पत्र एव पल्लव थे वे नवीन निकलने की वजह से नवीनतरुणता–सपन्न थे, कुम्हलाये या मुर्झाये हुए नहीं थे। इन पर जो किसलय–कोंपले थीं वे कोमल थीं उज्जल थीं तथा मृदु पवन के झोके से हिलती रहती थीं । इनमें जो प्रवाल थे वे बहुत ही कोमल थे । इस प्रकार पत्रों से, पल्लवों से, कोंपलों से और प्रवालों से इनके उत्तम अकुर शोभित हो रहे थे, इन अकुरों से इन वृक्षों का अग्रभाग लहलहा रहा था। [णिच कुसुमिया] ये वृक्ष सदा सर्व ऋतुओं के पुष्पों से फूले रहते थे ।

અશક્ય હતું (उवणिग्गय-णव–तरुण पत्त–पल्लव-कोमल उज्जल चलत–किसलय–सुकुमाल-पवाल-सोहिय-वरकुर–ग्गसिहरा) એના જે પાન તેમજ પલ્લવ હતા તે નવીન ઉગવાના કારણથી નવીન તરૂણતા–સપન્ન હતા કરમાઇ ગયેલા કે ચીમડાઈ ગયેલા નહોતા તેના પર જે કિસલય–કુપળો હતા તે કોમળ હતા, ઉજ્જવળ હતા તથા મદ પવનની લહેરીથી હલતા હતા તેમા જે પ્રવાલ હતા તે બહુ જ કોમળ હતા આ પ્રકારે પત્રોથી, પલ્લવોથી, કુપળોથી અને પ્રવાલોથી તેમના ઉત્તમ અકુરો શોભી રહેતા હતા એ અકુરોથી એ વૃક્ષોનો આગળનો ભાગ સુશોભિત હતો (णिच्च कुसुमिया) એ વૃક્ષો હમેશા સર્વ ઋતુઓના પુષ્પોથી ખિલી રહેલા રહેતા હતા (णिच्च मऊरिया) સર્વદા એ

णिच्चं थवइया णिच्चं गुलइया णिच्चं गोच्छिया णिच्चं जमलिया णिच्चं जुवलिया णिच्चं विणमिया णिच्चं पणमिया णिच्चं कुसुमिय-

प्रतिबन्धितकुसुमा । 'णिच्च मऊरिया' नित्य मयूरिता—मयूरा सन्त्येषामिति मयूरिताः नित्य मयूरयुक्ता इत्यर्थ । 'णिच्च पल्लविया' नित्य पल्लविता—सर्वदा पल्लवसम्पन्ना । 'णिच्च थवइया' नित्य स्तबकिता—नित्य स्तबकवन्त, गुच्छवन्त इत्यर्थ । 'णिच्च गुलइया' नित्य गुल्मिता जातियूथिकानवमल्लिकाविल्लतावन्त, 'णिच्च गोच्छिया' नित्य गुच्छिता सदापुष्पगुच्छयुक्ता । 'णिच्च जमलिया' नित्य यमलिता समपङ्क्तितया स्थिता—अथवा यमला युग्मतया जाता, ते सन्ति येषा ते यमलिता । 'णिच्च जुवलिया' नित्य युगलिता—युगलतया स्थिता । 'णिच्च विणमिया' नित्य विनमिता—फलपुष्पादिभारेण नता । 'णिच्च पणमिया' नित्य प्रणमिता—केचित् प्रकर्षेण नम्रीभूता ।

[णिच्च मऊरिया] सर्वदा इन वृक्षों पर मोर रहते थे । (णिच्च पल्लविया) ये वृक्ष नित्यपल्लवित रहते थे, अकाल में पतझड इनमे नही होता था । (णिच्च थवइया) गुच्छों से ये हमेशा अन्वित बने हुए रहते थे [णिच्च गुलइया] इनपर सदा नवमल्लिका आदि लताए लिपटी रहती थीं । 'णिच्च गोच्छिया' ये हमेशा फूलों और फलों के गुच्छों से युक्त रहते थे । 'णिच्च जमलिया णिच्च जुवलिया' ये जितने भी वृक्ष यहा पर थे वे सब जोडे सहित एक सी कतार मे आजू-बाजू खडे हुए थे । 'णिच्च विणमिया' ऐसा कोई सा भी समय नहीं था कि जब ये फल एव पुष्पादिक के भार से झुके न रहते हों । 'णिच्च पणमिया' कोई २ वृक्ष तो ऐसे भी थे जो पुष्पादिकों के भार से बिलकुल जमीन तक भी झुके हुए थे । [णिच्च-कुस-

વૃક્ષો પર મોર રહેતા હતા (णिच्च पल्लविया) એ વૃક્ષો હમેશા પલ્લવિત રહ્યા કરતા હતા દુકાળમા પણ તેમના પાન ખરતા નહોતા (णिच्च थवइया) ગુચ્છોથી તે હમેશ સભર રહેતા હતા (णिच्चं गुलइया) તેમના પર સદા નવ-મલ્લિકા આદિ લતાઓ (વેલો) વીંટળાયેલી રહેતી હતી (णिच्च गोच्छिया) તે હમેશા ફૂલો અને ફળોના ગુચ્છાથી યુક્ત રહેતા હતા (णिच्चं जमलिया णिच्च जुवलिया) એ જેટલા વૃક્ષો અહીં હતા તે બધા જોડે જોડે એક જ હારમા આજુબાજુમા ઉભા હતા (णिच्चं विणमिया) એવો કોઇપણ સમય નહતો કે જ્યારે તેઓ ફલ તેમજ પુષ્પાદિકના ભારથી ઝુકેલા ન રહેતા હોય (णिच्च पणमिया) કોઇ કોઇ વૃક્ષ તો એવા પણ હતા કે જે પુષ્પાદિકના ભારથી બિલકુલ જમીન સુધી નમી ગયેલા હતા (णिच्च-कुसमिय-मऊरिय-

पत्त-पल्लव-कोमल-उज्जल-चलंत-किसलय-सुकुमाल-पवाल-सोहिय-वरंकुर-ग्गसिहरा णिच्चं कुसुमिया णिच्चं मऊरिया णिच्चं पल्लविया

न्धकार-गम्भीर-दर्शनीया —नवेन हरितेन भासमानो—दीप्यमानो य पत्रभार —पत्रसमूह, तेन अन्धकारा =सान्धकारा, अतएव-गम्भीरदर्शनीया-गम्भीरम्-'इदमीदृग्'-इति विवेक्तुमशक्य यथा स्यात्तथा दृश्यन्ते इति गम्भीरदर्शनीया । 'उवणिग्गय-णव-तरुण-पत्त-पल्लव-कोमल-उज्जल-चलत-किसलय-सुकुमाल-पवाल-सोहिय-वरकुर-ग्गसिहरा' उपनिर्गत-नवतरुण-पत्र-पल्लव-कोमलो-ज्ज्वल-चलत्किसलय-सुकुमार - प्रवाल - शोभित - वराऽङ्कुराऽग्रशिखरा —, तत्र—उपनिर्गतानि—सद्य प्रकटितानि, नवतरुणानि—नवीनागततरुणतासम्पन्नानि पत्रपल्लवानि—पत्ररूपाणि गुच्छरूपाणि तै, तथा कोमलोज्ज्वलै —मृदुनिर्मलै, चलद्भि, किसलयै —सद्योजातै पत्रविशेषै सुकुमारप्रवालै - कोमलपल्लवै, शोभितवराऽङ्कुराणि=सुन्दराङ्कुर—युक्तानि अग्रशिखराणि—उपरितनभागा येषा ते तथा। अत्र विशेषणे अङ्कुरप्रबालपल्लव—किसलयपत्राणि स्वल्पबहुबहुतरादिकालकृतावस्थाभेदाद्भिन्नानीति भाव । 'णिच्च कुसुमिया' नित्य कुसुमिता —सदा सर्वर्तुसजातकुसुमोपेता —न तु ऋतुभेद—

मल-उज्जल-चलत-किसलय-सुकुमाल-पवाल-सोहिय-वरकुर-ग्गसिहरा) इनके जो पत्र एव पल्लव थे वे नवीन निकलने की वजह से नवीनतरुणता—सपन्न थे, कुम्हलाये या मुर्झाये हुए नहीं थे। इन पर जो किसलय—कोंपले थीं वे कोमल थीं उज्वल थीं तथा मृदु पवन के झोके से हिलती रहती थीं । इनमे जो प्रवाल थे वे बहुत ही कोमल थे । इस प्रकार पत्रों से, पल्लवों से, कोंपलों से और प्रवालों से इनके उत्तम अकुर शोभित हो रहे थे, इन अकुरों से इन वृक्षों का अग्रभाग लहलहा रहा था। [णिच्च कुसुमिया] ये वृक्ष सदा सर्व ऋतुओं के पुष्पों से फूले रहते थे ।

અશક્ય હતુ (उवणिग्गय णव—तरुण पत्त—पल्लव-कोमल उज्जल-चलत—किसलय—सुकुमाल-पवाल—सोहिय—वरकुर—ग्गसिहरा) એના જે પાન તેમજ પલ્લવ હતા તે નવીન ઉગવાના કારણથી નવીન તરૂણતા—સપન્ન હતા કરમાઇ ગયેલા કે ચીમડાઈ ગયેલા નહોતા તેના પર જે કિસલય—કુપળો હતા તે કોમળ હતા, ઉજ્જવળ હતા તથા મદ પવનની લહેરીથી હલતા હતા તેમા જે પ્રવાલ હતા તે બહુ જ કોમળ હતા આ પ્રકારે પત્રોથી, પલ્લવોથી, કુપળોથી અને પ્રવાલોથી તેમના ઉત્તમ અકુરો શોભી રહેતા હતા એ અકુરોથી એ વૃક્ષોનો આગળનો ભાગ સુશોભિત હતો (णिच्च कुसुमिया) એ વૃક્ષો હમેશા સર્વ ઋતુઓના પુષ્પોથી ખિલી રહેલા રહેતા હતા (णिच्च मऊरिया) સર્વદા એ

णिच्चं थवइया णिच्चं गुलइया णिच्चं गोच्छिया णिच्चं जमलिया णिच्चं जुवलिया णिच्चं विणमिया णिच्चं पणमिया णिच्चं कुसुमिय-

प्रतिनन्धितकुसुमा । 'णिच्च मऊरिया' नित्य मयूरिता—मयूरा सन्त्येषामिति मयूरिताः नित्य मयूरयुक्ता इत्यर्थ । 'णिच्च पल्लविया' नित्य पल्लविता—सर्वदा पल्लवसम्पन्ना । 'णिच्च थवइया' नित्य स्तवकिता—नित्य स्तवकवन्त, गुच्छवन्त इत्यर्थ । 'णिच्च गुलइया' नित्य गुल्मिता जातियूथिकानवमल्लिकादिलतावन्त, 'णिच्च गोच्छिया' नित्य गुच्छिता महापुष्पगुच्छयुक्ता । 'णिच्च जमलिया' नित्य यमलिता समपङ्क्तितया स्थिता—अथवा यमला युग्मतया जाता, ते सन्ति येषा ते यमलिता । 'णिच्च जुवलिया' नित्य युगलिता—युगलतया स्थिता । 'णिच्च विणमिया' नित्य विनमिता—फलपुष्पादिभारेण नता । 'णिच्च पणमिया' नित्य प्रणमिता—केचित् प्रकर्षेण नम्रीभूता ।

[णिच्च मऊरिया] सर्वदा इन वृक्षों पर मोर रहते थे । (णिच्च पल्लविया) ये वृक्ष नित्यपल्लवित रहते थे, अकाल में पतझड इनमें नहीं होता था । (णिच्च थवइया) गुच्छों से ये हमेशा अन्वित बने हुए रहते थे [णिच्च गुलइया] इनपर सदा नवमल्लिका आदि लताए लिपटी रहती थीं । 'णिच्च गोच्छिया' ये हमेशा फूलों और फलों के गुच्छों से युक्त रहते थे । 'णिच्च जमलिया णिच्च जुवलिया' ये जितने भी वृक्ष यहा पर थे वे सब जोडे सहित एक सी कतार मे आजू—बाजू खडे हुए थे । 'णिच्च विणमिया' ऐसा कोई सा भी समय नहीं था कि जब ये फल एव पुष्पादिक के भार से झुके न रहते हों । 'णिच्च पणमिया' कोई २ वृक्ष तो ऐसे भी थे जो पुष्पादिकों के भार से बिलकुल जमीन तक भी झुके हुए थे । [णिच्च-कुसु-

વૃક્ષો પર મોર રહેતા હતા (णिच्च पल्लविया) એ વૃક્ષો હમેશા પલ્લવિત રહ્યા કરતા હતા દુકાળમા પણ તેમના પાન ખરતા નહોતા (णिच्च थवइया) ગુચ્છોથી તે હમેશ સભર રહેતા હતા (णिच्च गुलइया) તેમના પર સદા નવ-મલ્લિકા આદિ લતાઓ (વેલો) વીટળાયેલી રહેતી હતી (णिच्च गोच्छिया) તે હમેશા ફૂલો અને ફળોના ગુચ્છાથી યુક્ત રહેતા હતા (णिच्च जमलिया णिच्च जुवलिया) એ જેટલા વૃક્ષો અહી હતા તે બધા જોડે જોડે એક જ હારમા આજુબાજુમા ઉભા હતા (णिच्चं विणमिया) એવો કોઈપણ સમય નહતો કે જ્યારે તેઓ ફલ તેમજ પુષ્પાદિકના ભારથી ઝુકેલા ન રહેતા હોય (णिच्च पणमिया) કોઈ કોઈ વૃક્ષ તો એવા પણ હતા કે જે પુષ્પાદિકના ભારથી બિલકુલ જમીન સુધી નમી ગયેલા હતા (णिच्च-कुसमिय-मऊरिय-

पत्त-पल्लव-कोमल-उज्जल-चलंत-किसलय-सुकुमाल-पवाल-सोहिय-वरंकुर-ग्गसिहरा णिच्चं कुसुमिया णिच्चं मऊरिया णिच्चं पल्लविया

न्धकार-गम्भीर-दर्शनीया —नवेन हरितेन भासमानो—दीप्यमानो य पत्रभार —पत्रसमूह, तेन अन्धकारा =सान्धकारा, अतएव-गम्भीरदर्शनीया-गम्भीरम्-'इदमीदृग्'-इति विवेक्तुमशक्य यथा स्यात्तथा दृश्यन्ते इति गम्भीरदर्शनीया । 'उवणिग्गय-णव-तरुण-पत्त-पल्लव-कोमल-उज्जल-चलत-किसलय-सुकुमाल-पवाल-सोहिय-वरकुर-ग्गसिहरा ' उपनिर्गत-नवतरुण-पत्र-पल्लव-कोमलो-ज्ज्वल-चलत्किसलय-सुकुमार - प्रवाल - शोभित - वराऽङ्कुराऽग्रशिखरा — तत्र—उपनिर्गतानि—सद्य प्रकटितानि, नवतरुणानि—नवीनागततरुणतासम्पन्नानि पत्रपल्लवानि—पत्ररूपाणि गुच्छरूपाणि तै, तथा कोमलोज्ज्वलै —मृदुनिर्मलै, चलद्भि, किसलयै —सद्योजातै पत्रविशेषै सुकुमारप्रवालै - कोमलपल्लवै, शोभितवराऽङ्कुराणि=सुन्दराङ्कुर-युक्तानि अग्रशिखराणि—उपरितनभागा येषा ते तथा। अत्र विशेषणे अङ्कुरप्रवालपल्लव-किसलयपत्राणि स्वल्पबहुबहुतरादिकालकृतावस्थाभेदाद्भिन्नानीति भाव । '**णिच्च कुसुमिया**' नित्य कुसुमिता —सदा सर्वर्तुसजातकुसुमोपेता —न तु ऋतुभेद—

मल-उज्जल-चलत-किसलय-सुकुमाल-पवाल-सोहिय-वरकुर-ग्गसिहरा) इनके जो पत्र एव पल्लव ये वे नवीन निकलने की वजह से नवीनतरुणता—सपन्न थे, कुम्हलाये या मुर्झाये हुए नहीं थे। इन पर जो किसलय—कोंपले थीं वे कोमल थीं उज्जल थीं तथा मृदु पवन के झोके से हिलती रहती थीं । इनमे जो प्रवाल थे, वे बहुत, ही कोमल थे । इस प्रकार पत्रों से, पल्लवों से, कोंपलों से और प्रवालों से इनके उत्तम अकुर शोभित हो रहे थे, इन अकुरों से इन वृक्षों का अग्रभाग लहलहा रहा था। [**णिच्च कुसुमिया**] ये वृक्ष सदा सर्व ऋतुओं के पुष्पों से फूले रहते थे ।

અશક્ય હતુ (उवणिग्गय-णव-तरुण पत्त-पल्लव-कोमल उज्जल चलत-किसलय-सुकुमाल-पवाल-सोहिय-वरकुर-ग्गसिहरा) એના જે પાન તેમજ પલ્લવ હતા તે નવીન ઉગવાના કારણથી નવીન તરૂણતા-સપન્ન હતા કરમાઇ ગયેલા કે ચીમડાઈ ગયેલા નહોતા તેના પર જે કિસલય-કુપળો હતા તે કોમળ હતા, ઉજ્જ્વળ હતા તથા મદ પવનની લહેરીથી હલતા હતા તેમા જે પ્રવાલ હતા તે બહુ જ કોમળ હતા આ પ્રકારે પત્રોથી, પલ્લવોથી, કુપળોથી અને પ્રવા-લોથી તેમના ઉત્તમ અકુરો શોભી રહેતા હતા એ અકુરોથી એ વૃક્ષોનો આગળનો ભાગ સુશોભિત હતો (णिच्च कुसुमिया) એ વૃક્ષો હમેશા સર્વ ઋતુઓના પુષ્પોથી ખિલી રહેલા રહેતા હતા (णिच्चं मऊरिया) સર્વદા એ

सुरम्मा संपिंडिय-दरिय-भमर-महुयरि-पहकर-परिलिंत-मत्तछप्पय-कुसुमासव-लोल-महुर-गुमगुमंत-गुंजंत-देसभाया अब्भिंतर-पुप्फ-

शब्दोन्नत-मधुर-स्वरनादिता । तत्र-शुका =प्रसिद्धा , बर्हिण =मयूरा , मदनशाला -सारिकाविशेषा 'मैना' इति प्रसिद्धा , कोकिला -प्रसिद्धा , कोभगका -पक्षिविशेषा , भृङ्गारका -पक्षिविशेषा , कोण्डलका -पक्षिविशेषा , जीवञ्जीवका -चकोरपक्षिण , नन्दीमुखा -पक्षिविशेषा , कपिला =पक्षिविशेषा , पिङ्गलाक्षका -पक्षिविशेषा , कारण्डका -पक्षिविशेषा , चक्रवाका -चकवा इति प्रसिद्धा , कलहंसा , सारसा -प्रसिद्धा , शुकादि-सारसान्ता येऽनेके पक्षिगणास्तेषा मिथुनानि स्त्रीपुंसयुग्मानि, तैर्विरचिता =कृता शब्दोन्नता उन्नतशब्दाः-दीर्घशब्दा मधुरस्वरसहितैर्नादिता -विविधपक्षिकृतमधुरध्वनियुक्ता पादपा इत्यर्थ , '**सुरम्मा**' सुरम्या -अतीव रमणीया । '**संपिंडिय-दरिय-भमर-महुयरि-पहकर-परिलिंत-मत्तछप्पय-कुसुमासव-लोल-महुर-गुमगुमत-गुजत-देसभाया**' सम्पिण्डित-दृप्त-भ्रमर-मधुकरी-प्रकर-परिमिलन्मत्तषट्पद-कुसुमासव-लोल-मधुर-गुमगुमेति-गुञ्जद्देशभागा , तत्र-सम्पिण्डिता परस्परममिलिता , दृप्तानां=मदमत्तानां भ्रमरगणा मधुकरीणां=भ्रमरीणां प्रकरा =समूहास्तैः प्रकरैः परिमिलन्तो ये मत्तषट्पदा , त एव पुन कुसुमाऽऽसवलोलाश्च पुष्परसाऽऽस्वाद-

बर्हिण-मयूर, मदनशाल-मैना, कोकिल-कोयल, कोभगक-पक्षिविशेष, भृङ्गारक-पक्षिविशेष, कोंडलक-पक्षिविशेष, जीवजीव-चकोर, नंदीमुख-पक्षिविशेष, कपिल-तीतर, पिंगलाक्षक-बटेर, कारण्ड, चक्रवाक-चकवा, कलहंस-बतक, सारस-इत्यादि अनेक पक्षियोंके जोडों की उन्नत एवं मधुरस्वरवाली ध्वनियों से युक्त थे। [**सुरम्मा**) इसलिये बडे ही आनन्दप्रद थे, देखनेवालों को बहुत ही सुहावने लगते थे। (**संपिंडिय-दरिय-भमर-महुयरि-पहकर-परिलिंत-मत्तछप्पय-कुसुमासव-लोल-महुर-गुमगुमंत-गुंजंत-देसभाया**) मद से उन्मत्त भ्रमर और भ्रमरियों के समुदाय जो पुष्पों के रस के पान से उन्मत्त बने हुए थे, अथवा पुष्पों के रस को पान करने के लिये

णाइया)એ વૃક્ષો પોપટ બર્હિણ-મયૂર, મદનશાલ-મેના, કોકિલ-કોયલ, કોભગક-પક્ષિવિશેષ, ભૃંગારક-પક્ષિવિશેષ, કોંડલક-પક્ષિવિશેષ, જીવજીવ-ચકોર, નંદીમુખ-પક્ષિવિશેષ, કપિલ-તેતર, પિંગલાક્ષક-બટેર, કારંડક, ચક્રવાક-ચકવા, કલહંસ-વતક, સારસ ઈત્યાદિ અનેક પક્ષીઓના જોડાની ઉન્નત તેમજ મધુર સ્વરવાળી વાણીથી યુક્ત હતા (સુરમ્મા) તેથી ખૂબ જ આનંદમય હતા જોનારને બહુ જ સુંદર લાગતા હતા (संपिंडिय-दरिय-भमर-महुयरि-पहकर-परिलिंत मत्तछप्पय-कुसुमासव-लोल-महुर-गुमगुमंत-गुंजंत देस भाया) મદથી ઉન્મત્ત ભ્રમર અને ભમરીઓનો સમુદાય જે પુષ્પોના રસ પીને ઉન્મત્ત બન્યો હતો અથવા

मऊरिय-पल्लविय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय - जमलिय - जुवलिय-विणमिय-पणमिय-सुविभत्त-पिंड-मंजरी-वडिंसय-धरा सुय-वरहिण-मयणसाल - कोइल-कोभगक-भिंगारग—कोंडलग—जीवंजीवग-णंदीमुह—कविल—पिंगलक्खग—कारंड—चक्कवाय—कलहंस—सारस—अणेग-सउणगण-मिहुण-विरइय-सद्दुण्णइय - महुर - सर-णाइया

'णिच्च—कुसुमिय—मऊरिय—पल्लविय—थवइय—गुलइय—गोच्छिय—जमलिय—जुवलिय-विणमिय—पणमिय—सुविभत्त—पिंड—मजरी—वडिंसय—धरा' नि य—कुसुमित—मयूरित—पल्लवित—स्तनकित — गुल्मित—गुच्छित—यमलित—युगलित—विनमित—प्रणमित—सुविभक्त—पिण्ड-मञ्जर्यवतसकधरा, अत्र—कुसुमितादि—प्रणमितान्त प्रतिपद पूर्वं व्याख्यातम्, कुसुमितादय प्रणमितान्ता ये पादपास्ते कीदृशा इत्याह—सुविभत्त इत्यादि, सुविभक्ता—पृथक्—पृथक् स्थिता पिण्डा =पिण्डीभूता —घनीभूता या मञ्जर्यस्ता एवाऽवतसका—शिरोभूपणभूता इव तासा धरा —धारका इत्यर्थ ।

पुनस्ते पादपाः कीदृशाः ? इत्याह—' सुय—वरहिण—मयणसाल—कोइल—कोभगक—भिंगारग—कोंडलग— जीवजीवग—णंदीमुह—कविल—पिंगलक्खग-कारड—चक्कवाय—कलहस—सारस—अणेग—सउणगण—मिहुण—विरइय—सद्दुणइय—महुर-सर-णाइया ' शुक-बर्हि-मदनशाला-कोकिल-कोभगक-भृङ्गारक-कोण्डलक-जीवञ्जीवक-नन्दीमुख-कपिल पिङ्गलाक्षक-कारण्ड-चक्रवाक-कलहस-सारसाऽनेक-शकुनगण-मिथुन -विरचित-

मिय-मऊरिय-पल्लविय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय-जमलिय-जुवलिय-विणमिय—पणमिय सुविभत्त-पिंड-मजरी-वडिंसय-धरा] इस प्रकार ये सन के सब कुसुमित, मयूरित, पल्लवित, स्तबकित, गुल्मित, गुच्छित, यमलित, विनमित, युगलित और प्रणमित वृक्ष, पृथक् पृथक् घनीभूत मजरीरूप शिरोभूषणों से सदा युक्त बने हुए थे। (सुय-वरहिण-मयणसाल-कोइल-कोभगक-भिंगारग-कोडलग-जीवजीवग णदीमुह-कविल-पिंगलक्खग-कारड-चक्कवाय-कलहससारस अणेग-सउणगण-मिहुण-विरइय-सद्दुणइय-महुर-सर-णाइया) ये वृक्ष शुक-[तोता]

पल्लविय—थवइय—गुलइय—गोच्छिय—जमलिय जुवलिय विणमिय पणमिय सुविभत्त पिंड मजरी-वडिंसय—धरा) આ પ્રકારે તે તમામે તમામ વૃક્ષો કુસુમિત, મયૂરિત, પલ્લવિત સ્તબકિત, ગુલ્મિત, ગુચ્છિત, યમલિત, યુગલિત, વિનમિત અને પ્રણમિત થઈ જુદા જુદા ઘાટા મંજરીરૂપ શિરોભૂષણોથી સદા યુક્ત બનેલા હતા. (सुय वरहिण-मयणसाल-कोइल कोभगक-भिंगारग-कोडलग—जीवजीवग—णदीमुह—कविल पिंगलक्खग-कारड-चक्कवाय—कलहस—सारस अणेग—सउणगण मिहुण—विरइय-सद्दुणइय-महुर-सर

वेसिय-रम्म-जाल-हरया पिंडिमणीहारिमं सुगंधिं सुह-सुरभि-मणहरं च महयागंधद्धणिं मुयंता णाणाविह-गुच्छ-गुम्म-मंडवग-

विनिर्मितमण्डपैर्ये रम्या =रमणीया शोभिता = शोभासपन्नाश्च ते तथा । '**विचित्तसुहकेउभूया**' विचित्रसुखकेतुभूता –विचित्रसुखाना विविधसुखाना घ्राणनयनरमना–हृदयप्रमोदाना केतुभूता । '**वावी–पुक्खरिणी–दीहियासु य सुनिवेसिय–रम्म-जाल–हरया**' वापी-पुष्करिणी-दीर्घिकासु च सुनिवेशित–रम्य–जाल–गृहका, तत्र–वापीषु–चतुष्कोणरूपासु पुष्करिणीषु–गोलाकारासु कमलवतीषु वा, दीर्घिकासु आयामरूपासु '**सुनिवेसिय**' सुनिवेशिता –सुष्टुप्रकारेण रचिता, '**रम्मजालहरया**' रम्या –सुन्दरा जालगृहा –गवाक्षा 'जाली झरोखा' इति भाषाप्रसिद्धा यैस्ते तथा । '**पिंडिमणी-हारिम**' इत्यादि, पिण्डिमनिहारिमा–शुभपुद्गलसमूहरूपेण दूरदेशगामिनीम् । '**सुगंधि**' सुगन्धि–शोभनगन्धवतीम् । '**सुहसुरभिमणहर**' शुभसुरभिमनोहरा श्रेष्ठसुगन्धमनोहारिणीं

हो रही थी। (**विचित्तसुहकेउभूया**) विचित्र सुखों के केन्द्र बने हुए थे। (**वावी–पुक्खरिणी–दीहियासु य सुनिवेसिय–रम्म-जाल-हरया**) वनषण्ड में जितनी भी वापी–चारकोने वाली बावडिया एव पुष्करिणी–गोलाकार तथा कमलनियों से युक्त बावडिया तथा दीर्घिकायें–लम्बे आकारवाली बावडिया थीं, इन सब पर वृक्षों के यथायोग्य सनिवेशसे स्थान २ पर सुन्दर जाली–झरोखे बने हुए थे। अर्थात् बावडियों के ऊपर रहे हुए ये वृक्ष जाली–झरोखे के आकारवाले दीखते थे। इस वनखड में कितनेक ऐसे भी वृक्ष थे जो (**पिंडिमणीहारिम**) शुभ पुद्गलों के समूहरूप से दूर २ तक फैलनेवाली, (**सुगंधि**) तथा जिसमें अच्छी गन्ध आती थी–

તેમની શોભા અનોખી જ થઈ રહેતી હતી (विचित्तसुहकेउभूया) વિચિત્ર સુખોનુ કેન્દ્ર બની ગયા હતા (वावी पुक्खरिणी-दीहियासु य सुनिवेसिय-रम्म–जाल हरया) વનષડમા જેટલી એ વાવો–ચાર ખૂણાવાળી વાવડિઓ તેમજ પુષ્કરિણી–ગોલાકાર તથા કમલિનીઓથી યુક્ત વાવડિઓ તથા દીર્ઘિકાઓ–લાબા આકારવાળી વાવડિઓ હતી એ બધી ઉપર વૃક્ષોના યથાયોગ્ય સ નિવેશથી ઠેકઠેકાણે સુદર જાળી–ઝરોખા બનાવેલા હતા અર્થાત્ વાવડિઓની ઉપર ઝૂકી રહેલા એ વૃક્ષો જાળી ઝરોખાના આકારવાળા દેખાતા હતા આ વનખ ડમા કેટલાક એવા પણ વૃક્ષો હતાં કે જે (पिंडिमणीहारिम) શુભ પુદ્ગલોના સમૂહરૂપથી દૂર દૂર સુધી ફેલાઈ જનારી (सुगंधिं) તથા જેમા સારી સુગ ધ આવતી

फला वाहिरपत्तोच्छण्णा पत्तेहि य पुप्फेहि य ओच्छन्नवलिच्छत्ता साउफला निरोयया अकंटया णाणाविह-गुच्छ-गुम्म-मंडवग-रम्म-सोहिया विचित्तसुहकेउभूया वावीपुक्खरिणीदीहियासु य सुनि-

लोलुपा तेषा मधुर यथा तथा गुमगुमेत्यव्यक्तनादानुकरणे तैर्मधुरभृङ्गसङ्घैर्गुञ्जन् देशभागो येषा पादपाना ते तथा। '**अंभितरपुप्फफला**' अभ्यन्तरपुष्पफला -अभ्यन्तरे पुष्पफलसमृता। '**वाहिरपत्तोच्छण्णा**' वाह्यपत्रावच्छन्ना -वहि सञ्जातपत्रसमूह-प्रच्छन्ना। '**पत्तेहि य**' पत्रैश्च, '**पुप्फेहि य**' पुष्पैश्च, '**ओच्छन्नवलिच्छत्ते**' अवच्छन्न-प्रतिच्छन्न -सर्वथाऽऽच्छादित। '**साउफला**' स्वादुफला '**निरोयया**' नीरोगका शीतनिपादातपादिजनितोपघातरहिता। '**अकंटया**' अकण्टका -- कण्टकरहिता, '**णाणाविह-गुच्छ-गुम्म-मंडवग-रम्म-सोहिया**' नानाविध -- गुच्छ-गुल्म-मण्डपक-रम्य-शोभिता -नानाविधैर्बहुप्रकारैः गुच्छगुल्ममण्डपकै = पुष्पस्तनक-लताप्रतान-

लालायित हो रहे थे, उनके '**गुमगुम**' इस प्रकार के अव्यक्तनाद से गूँजते रहते थे। [**अंभितरपुप्फफला**] भीतर मे पुष्प एव फल से [**वाहिरपत्तोच्छण्णा**] तथा बाहिर में पत्तों से ये वृक्ष व्याप्त हो रहे थे। (**पत्तेहि य पुप्फेहि य ओच्छन्न-वलिच्छत्ते**) इसलिये देखनेवालों को ऐसा मालूम होता था कि ये पत्र और पुष्पों से ही आच्छादित हो रहे हैं। (**साउफला**) ये मीठे फलवाले थे, (**निरोयया**) नीरोग थे अर्थात् इनको न तो कभी विद्युत्पात का भय था और न कभी आतप-जनित पीडा का ही त्रास था। [**अकंटया**] कंटक-रहित थे। [**णाणाविह-गुच्छ-गुम्म-मंडवग-रम्म-सोहिया**] ये अनेक प्रकार के गुच्छगुल्मों-पुष्प स्तवकों से मंडित लताप्रतानों के निकुंजों से युक्त थे, इससे इनकी शोभा निराली

પીવાને માટે ઝંખી રહેતો હતો તેના ગણુગણાટના અવ્યક્ત નાદથી ગુંજીત હતા (अंभितरपुप्फफला) અંદરના ભાગમાં પુષ્પ તેમજ ફલથી (वाहिरपत्तोच्छण्णा) તથા બહારના ભાગમાં પાનથી આ વૃક્ષો વ્યાપ્ત બની રહેલા હતા (पत्तेहि य पुप्फेहि य ओच्छन्नवलिच्छत्ते) આથી જોનારાઓને એમ જણાતું હતું કે આ વૃક્ષો પાન અને પુષ્પોથી જ ઢંકાએલા રહે છે (साउफला) એ મીઠા ફળવાળા હતા, (निरोयया) નિરોગ હતા અર્થાત્ તેમને ન તો કદી વિજળી પડવાનો ભય હતો અને ન તો તડકાની પીડાનો ત્રાસ હતો (अकंटया) કાંટા રહિત હતા (णाणाविह-गुच्छ-गुम्म-मंडवग रम्म-सोहिया) એ અનેક પ્રકારના ગુચ્છ ગુલ્મો-પુષ્પ સ્તવકોથી શોભતા લતાપ્રતાનોના નિકુંજોથી યુક્ત હતા તેથી

यणा सुरम्मा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥सू०४॥

मूलम्—तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एक्के असोगवरपायवे पण्णत्ते, कुस-विकुस-विसुद्ध-रुक्खमूले

अभिरूपा—सुन्दराकृतिमन्तः, 'पडिरूवा' प्रतिरूपा—अभिमतरूपवन्तः=सकलजनचित्ताकर्षका वनषण्डस्य वृक्षाः सन्तीत्यर्थः ॥सू० ४॥

टीका—अशोकवृक्षवर्णनमाह— 'तस्स णं वणसंडस्स' इत्यादि । तस्य खलु वनषण्डस्य—पूर्ववर्णितवनषण्डस्य 'बहुमज्झदेसभाए' बहुमध्यदेशभागे—सर्वथा मध्यभागे इत्यर्थः, 'एत्थ णं' अत्र खलु—वनषण्डमध्यप्रदेशे 'महं' महान्—अतिशयसमुन्नत 'एक्के' एकः प्रधानः 'असोगवरपायवे' अशोकवरपादपः=अशोक-नामकः श्रेष्ठवृक्षः 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तः,—कीदृशः सः? इत्याह 'कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूले' कुश-विकुश-विशुद्धवृक्षमूलः—कुशाः दर्भाः, विकुशाः कुशभिन्नास्तत्सदृशास्तृणविशेषा एव, तैर्विशुद्ध—विरहित—तृणवर्जितमित्यर्थः, वृक्षमूल—वृक्षाधःस्थलं यस्य अशोकपादपस्य स तथा । पुनः कीदृशः सः? अत्राऽऽह—'मूलमंते' मूलवान्, 'कंदमंते' कन्दवान् 'जाव' यावच्छब्दात्—

हृदय—आह्लादक, दर्शनीय, सुन्दर आकृति से युक्त एवं यथेच्छरूपविशिष्ट प्रतिभासित होते थे ॥ सू० ४ ॥

'तस्स णं वणसंडस्स०' इत्यादि

[तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए] इस वनखंड के ठीक बीचोबीचवाले प्रदेश में (एत्थ णं) इसके सिवाय अन्यत्र नहीं (महं एक्के असोगवरपायवे पण्णत्ते) एक विस्तृत अशोक नामका श्रेष्ठ वृक्ष था। (कुस—विकुस—विसुद्ध-रुक्खमूले) इसका अधोभाग कुश एवं कुश—जैसे अन्य तृणादिकों से रहित था। (मूलमंते

હૃદયાહ્લાદક, દર્શનીય, સુંદર આકૃતિથી યુક્ત તેમજ યથેચ્છરૂપવિશિષ્ટ ભાસતા હતા (સૂ ૪)

तस्स णं वणसंडस्स ઇત્યાદિ,

(तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए) આ વનખંડના બરાબર વચ્ચોવચ્ચના ભાગમાં (एत्थ णं) તેના સિવાય બીજે નહિ (महं एक्के असोगवरपायवे पण्णत्ते) એક વિશાળ અશોક નામનું શ્રેષ્ઠ વૃક્ષ હતું (कुस—विकुस—विसुद्ध—रुक्खमूले) તેની નીચેનો ભાગ કુશ તેમજ કુશ જેવા અન્ય તૃણાદિકોથી રહિત હતો (मूलमंते कंदमंते जाव परिमोयणे) જે વૃક્ષોના વિષયનું વર્ણન ચોથા સૂત્રમાં

घरग-सुहसेउ-केउ-बहुला अणेग-रह-जाण-जुग्ग-सिविय - परिमो-

'महयागंधद्धणिं' महागन्धघ्राणिम्-गन्ध एव घ्राणि अर्थात् गन्धतृप्ति, महती चासौ गन्धघ्राणिस्ता 'मुयता' मुञ्चन्त, पुन कीदृशा वृक्षा? अत आह–'णाणाविह-गुच्छ-गुम्म-मंडवग-घरग-सुहसेउ-केउ-बहुला' नानाविध-गुच्छ-गुल्म-मण्डपक-गृहक-सुखसेतु-केतु-बहुला:-नानाविधगुच्छगुल्माना मण्डपका, गृहका, सुखा=सुखकारका सेतव=मार्गा केतवश्च पताका बहुला=प्रचुरा येषु ते तथा, 'अणेग-रह-जाण-जुग्ग-सिविय-परिमोयणा' अनेक-रथ-जान-युग्य-शिबिका-प्रविमोचना, अनेके रथा, यानानि=अश्वादीनि, युग्यानि शकटादीनि, शिबिका-पुरुषवाह्ययानविशेषा–'पालखी' इति प्रसिद्धा, तासा रथादिशिबिकान्ताना परिमोचन–स्थापन यत्र तादृशा, क्रीडाद्यर्थमागताना जनाना रथादयस्तत्र तिष्ठन्तीति भाव। 'सुरम्मा' सुरम्या–अतिशयरमणीया। 'पासाईया' प्रसादीया–हृदयप्रसादकारका, 'दरिसणिज्जा' दर्शनीया–द्रष्टु योग्या, 'अभिरूवा'

सुगधी से जो मडित थी, और इसीलिए (सुहसुरभिमणहर) जो अपनी इस शुभ-सुरभिसे मन को आनदित करती थी ऐसी (महयागधद्धणिं) विशिष्ट गधघ्राणि–सुगध की परम्परा को(मुयता) छोडते थे। (णाणाविह–गुच्छ–गुम्म–मडवग-घरग-सुहसेउ-केउ–बहुला) इस प्रकार ये वृक्ष गुच्छों और गुल्मों से बने हुए अनेक मडप, घर, सुन्दर मार्ग और पातकाओं से सदा सुशोभित थे ('अणेग–रह–जाण–जुग्ग–सिविय-परिमोयणा) इनके नीचे वनक्रीडा के निमित्त आये हुए व्यक्तियों के अनेक रथ, यान, युग्य–तागा–वगैरह, पालखी आदि सवारियों के साधन रखे जाते थे (सुरम्मा, पासाईया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा,) इसलिये ये वृक्ष बडे ही सुरम्य,

હતી સુગધથી જે ભરેલી હતી અને તેથી જ (सुहसुरभिमणहर) જે પોતાની આ શુભ સુવાસથી મનને આનદિત કરતી હતી એવી (महयागंधद्धणिं) વિશિષ્ટ ગધઘ્રાણિ–સુગધની પરપરાને (मुयता) છોડતા હતા (णाणाविह–गुच्छ–गुम्म–मडवग–घरग–सुहसेउ–केउ–बहुला) એ પ્રકારે એ વૃક્ષો ગુચ્છો અને ગુલ્મોથી બનેલા અનેક મડપ, ઘર, સુદર માર્ગ અને પતાકાઓથી સદા સુશોભિત રહેતા હતા (अणेग–रह–जाण–जुग्ग–सिविय–परिमोयणा) એમની નીચે વનક્રીડાને નિમિત્તે આવેલી વ્યક્તિઓના અનેક રથ–યાન, બગી, ટાગા વગેરે, પાલખી આદિ સવારિઓના સાધન રાખવામા આવતા હતા (सुरम्मा, पासाईया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा) એથી તે વૃક્ષો બહુજ સુરમ્ય,

धवेहि चंदणेहिं अज्जुणेहिं णीवेहिं कुडएहिं कलंवेहि सव्वेहिं फणसेहि दाडिमेहि सालेहि तालेहिं तमालेहि पियएहि पियंगूहिं पुरोवगेहि रायरुक्खेहिं नंदिरुक्खेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खत्ते ॥ सू०६ ॥

तिलकै 'लउलेहिं' नकुले 'लउएहिं' लकुचे विहारादिदेशेषु (बडहर) इति ख्याते—'छत्तोवेहिं' छत्रोपे—वृक्षविशेषे । 'सिरीसेहिं' शिरीषे प्रसिद्धे पुष्पवृक्षे । 'सत्तवण्णेहिं' सप्तपर्णे, 'दहिवण्णेहिं' दधिवर्णे—वृक्षविशेषे । 'लोद्धेहिं' लोध्रे—श्वेतरक्तकुसुमयुक्तैर्वृक्षविशेषे । 'धवेहिं' धवे प्रसिद्धे । 'चंदणेहिं' चन्दने 'अज्जुणेहिं' अर्जुने—वृक्षविशेषे । 'णीवेहिं' नीपे=कदम्बे । 'कुडएहिं'—कुटजे—गगनमल्लिकापर्याये । 'कलंवेहिं' कदम्बे । 'सव्वेहिं' सव्ये—रक्तपत्रैर्वृक्षविशेषे । 'फणसेहिं' पनसे । 'दाडिमेहिं' दाडिमे । 'सालेहिं' शाले । 'तालेहिं' ताले । 'तमालेहिं' तमाले । 'पिएहिं' प्रिये 'पियगूहिं' प्रियङ्गुभि—वृक्षविशेषे । 'पुरोवगेहिं' पुरोपगैर्वृक्षभेदे । 'रायरुक्खेहिं' राजवृक्षैरश्वत्थैः । 'णंदिरुक्खेहिं' नन्दिवृक्षे । 'सव्वओ' सर्वत—सर्वदिक्षु—'समंता' समन्तात् परित । 'संपरिक्खित्ते' सम्परिक्षिप्त—सम्यक् प्रकारेण वेष्टित ॥ सू० ६ ॥

दहिवण्णेहिं लोद्धेहिं धवेहिं) लकुच, (विहार आदि देशों में इसे "बडहर" कहते हैं) छत्रोप—वृक्षविशेष, शिरीष, सप्तपर्ण, दधिवर्ण, लोध्र, धव (चंदणेहिं अज्जुणेहिं, णीवेहिं, कुडएहिं, कलंवेहिं, सव्वेहिं, फणसेहिं, दाडिमेहिं) चंदन, अर्जुन, नीप, कुटज, कदम्ब, सव्य, पनस, दाडिम—अनार के वृक्ष, (सालेहिं तालेहिं तमालेहिं पिएहिं पियगूहिं पुरोवगेहिं रायरुक्खेहिं नंदिरुक्खेहिं) शाल, ताल, तमाल, प्रिय, प्रियगु, पुरोपग, पीपल और नंदिवृक्ष, इन वृक्षों से यह अशोक वृक्ष (सव्वओ

सत्तवण्णेहिं दहिवण्णेहिं, लोद्धेहिं धवेहिं) લકુચ, (બિહાર આદિ દેશોમા તેને બડહર કહે છે) છત્રોપ—વૃક્ષવિશેષ, શિરીષ, સપ્તપર્ણ, દધિવર્ણ, લોધ્ર, ધવ, (चन्दणेहिं, अज्जुणेहिं, णीवेहिं, कुडएहिं, कलंवेहिं, सव्वेहिं,फणसेहिं, दाडिमेहिं) ચંદન, અર્જુન, નીપ, કુટજ, કદમ્બ, સવ્ય, પનસ, દાડમ—અનારના વૃક્ષ, (सालेहिं तालेहिं तमालेहिं पिएहिं पियगूहिं, पुरोवगेहिं रायरुक्खेहिं नंदिरुक्खेहिं) શાલ, તાલ, તમાલ, પ્રિય, પ્રિયંગુ, પુરોપગ, પીપલ અને નંદિવૃક્ષ, એ વૃક્ષોથી તે અશોક વૃક્ષ (सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते) સર્વ દિશાઓમા ચારે

मूलमंते कंदमंते जाव परिमोयणे सुरम्मे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥ सू. ५ ॥

मूलम्—से णं असोगवरपायवे अण्णेहिं बहूहिं तिलएहिं वउलेहिं-लउएहिं छत्तोवेहिं सिरीसेहिं सत्तवण्णेहिं दहिवण्णेहिं लोद्धेहिं

स्कन्ध–त्वक्–शाला–प्रवाल–पत्र–पुष्प–फल–बीजानामपि ग्रहणम्, 'परिमोयणे' परिमोचनः–अनेकरथादिवाहनाना परिमोचन स्थापन यत्र स तथा, क्रीडार्थमागताना जनाना रथादयस्तत्र तिष्ठन्तीति भावः । 'सुरम्मे' सुरम्यः–अतिशय–रमणीयः । 'पासाईए' प्रासादीयः–प्रसादाय हितः प्रसादीयः स एव, मनः प्रसन्नताहेतुभूतः 'दरिसणिज्जे' दर्शनीयः–द्रष्टु योग्यः । 'अभिरूवे' अभिरूपः–अभिमत रूप यस्य स तथा । 'पडिरूवे' प्रतिरूप –प्रति=विशिष्टम्–असाधारण रूप यस्य स तथा ॥सू०५॥

टीका—'से ण असोगवरपायवे' इत्यादि। स खल्वशोकवरपादपः= पूर्ववर्णितः अशोकनामकः श्रेष्ठवृक्षः, अन्यैः बहुभिःबहुविधैर्वृक्षैर्वेष्टितः, तथाहि 'तिलएहिं'

कदमते जाव परिमोयणे) जो वृक्षों के विषयका वर्णन चतुर्थ सूत्रमें आया है, उस समस्त वर्णन से यह युक्त था। इसलिये यह भी [सुरम्मे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे) सुरम्य, चित्ताह्लादक, दर्शनीय, अभिरूप एव विशिष्ट आसाधारण शोभा–सपन्न था ॥ सू ५ ॥

'से ण असोगवरपायवे०' इत्यादि—

(से ण असोगवरपायवे) यह सुन्दर अशोक वृक्ष (अण्णेहिं बहूहिं) अन्य अनेक प्रकारके वृक्षों से परिवेष्टित था, उनमे से कितनेक वृक्षोंके नाम ये है– (तिलएहिं वउलेहिं) तिलक, वकुल (लउएहिं छत्तोवेहिं सिरीसेहिं सत्तवण्णेहिं

કરવામા આવેલુ છે એ સમસ્ત વર્ણનથી તે યુક્ત હતુ તેથી તે પણ (सुरम्मे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे) સુરમ્ય, ચિત્તાહ્લાદક, દર્શનીય, અભિરૂપ તેમજ વિશિષ્ટ અસાધારણ શોભા–સપન્ન હતુ (સૂ ૫)

'से ण असोगवरपायवे' ઇત્યાદિ

(से ण असोगवरपायवे) આ સુદર અશોક વૃક્ષ (अण्णेहिं बहूहिं) અન્ય અનેક પ્રકારના વૃક્ષોથી વીટળાએલુ હતુ તેમાથી કેટલાક વૃક્ષોના નામ આ પ્રમાણે છે (तिलएहिं वउलेहिं) તિલક, બકુલ (लउएहिं छत्तोवेहिं सिरीसेहिं

दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ सू० ७ ॥

मूलम्–ते णं तिलया जाव णंदिरुक्खा अण्णेहिं बहूहिं पउमलयाहिं णागलयाहिं असोगलयाहिं चंपगलयाहिं

ते तथा, क्रीडार्थमागतानां जनानां रथाद्यस्तत्र तिष्ठन्तीति भावः । 'सुरम्मा' सुरम्याः–अतीवरमणीयाः । 'पासाईया' प्रासादीयाः–हृदयोल्लासकाः, 'दरिसणिज्जा' दर्शनीयाः–द्रष्टुं योग्या 'अभिरूवा' अभिरूपाः–अभिमतसुन्दराकृतिमन्तः । 'पडिरूवा' प्रतिरूपाः–असाधारणसौन्दर्यवन्तः ॥ सू० ७ ॥

टीका—अयमत्र वक्तव्योऽर्थः–यथाऽशोकवरपादपो बहुविधैस्तिलकादिवृक्षैः परितो वेष्टितः, तथैव ते वेष्टकवृक्षा अपि अन्याभिर्वक्ष्यमाणाभिः बहुविधाभिर्लताभिः परिवेष्टिता अभूवन् । कास्ता परिवेष्टनसाधनीभूता लता इत्याह–'ते ण' ते खलु अशोकवरपादपस्य परिवेष्टका 'तिलया जाव णदिरुक्खा' तिलका यावन्नन्दिवृक्षाः पञ्चविंशतिजातीया इत्यर्थः, ते पुनः कीदृशाः? इत्याह–'अण्णेहिं बहूहिं' अन्याभिर्बह्वीभिः–

जिस प्रकार रथों से लेकर शिबिकापर्यन्त के वाहन रखे जाते थे वैसे ही ये सब वाहन इन वृक्षों के भी अधोभाग में रखे हुए रहते थे। (सुरम्मा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा) ये वृक्ष भी सुरम्य, प्रासादीय, दर्शनीय, अभिरूप एवं प्रतिरूप–असाधारण सौन्दर्यवाले थे ॥ सू ७ ॥

'ते ण तिलया जाव' इत्यादि,

जिस प्रकार अशोक वृक्ष अनेक प्रकारके तिलकादिक वृक्षों से चारों ओर से घिरा हुआ था उसी प्रकार ये तिलकवृक्ष से लेकर नंदिवृक्षतकके समस्त अशोकवृक्षको परिवेष्टित करनेवाले वृक्ष भी (अण्णेहिं बहूहिं पउमलयाहिं) अन्य अनेक

વાહન રાખવામા આવતા હતા, તે જ પ્રકારે તે બધા આ વૃક્ષોની નીચે પણ રાખવામા આવતા હતા (सुरम्मा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा) એ વૃક્ષો પણ સુરમ્ય, પ્રાસાદીય, દર્શનીય, અભિરૂપ તેમજ પ્રતિરૂપ–અસાધારણ સૌન્દર્યવાળા હતા (સૂ ૭)

'ते ण तिलया जाव' ઇત્યાદિ,

જે પ્રકારે અશોક વૃક્ષ અનેક પ્રકારના તિલકાદિક વૃક્ષોથી ચારે બાજૂથી ઘેરાએલુ હતુ તે જ પ્રકારે આ તિલક વૃક્ષથી માંડીને નંદિવૃક્ષ સુધીના સમસ્ત વૃક્ષો કે જે અશોક વૃક્ષને વીંટળાઈ ગયેલા હતા તે પણ (अण्णेहिं बहूहिं पउमलयाहिं)

मूलम्—ते णं तिलया बउला लउया जाव णंदिरुक्खा कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला मूलमंतो कंदमतो एएसिं वण्णओ भाणियव्वो जाव सिवियपडिमोयणा सुरम्मा पासाईया

टीका—तस्य पूर्ववर्णितस्याऽशोकवृक्षस्य परिवेष्टका तिलका पूर्ववर्णिताऽशोकवृक्षवद् वर्णनीयाः, तथा बकुला लकुचा यावत्—शब्दस्योपादानात् नन्दिवृक्षेभ्यः पूर्ववर्तिनः छत्रोपगिरीषसप्तपर्णादयो राजवृक्षान्ताः सर्वे वृक्षा ग्राह्या, नन्दिवृक्षाः, एते वृक्षाः कीदृशाः ? इत्याह—'कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला' कुश—विकुश विशुद्धवृक्षमूला—दर्भादितृणापनयनात् निर्मलतरुतलाः, एतेषा पदाना 'वण्णओ' वर्णक—वर्णनम्, 'भाणियव्वो' भणितव्यः चतुर्थसूत्रवत् कथनीय इति यावत्, 'जाव' यावत् 'सिवियपरिमोयणा' शिबिकापरिमोचनाः—रथादिशिबिकान्त—वाहनाना परिमोचन स्थापन यत्र

समता सपरिक्खित्ते) सब दिशाओं मे चारों ओर से अच्छी तरह घिरा हुआ था ॥ सू ६ ॥

'ते ण तिलया बउला' इत्यादि,

(ते ण तिलया बउला लउया जाव) यह सब तिलकबकुल लकुचवृक्ष से लगाकर नदिवृक्ष-पर्यन्त-वृक्षसमूह (कुस—विकुस—विसुद्ध-रुक्खमूला) अपने २ नीचे भाग मे कुस एव अन्य कुस जैसी घास आदि से रहित था (मूलमतो कदमतो एएसि वण्णओ भाणियव्वो जाव सिवियपरिमोयणा) पहिले ४ चतुर्थसूत्र मे जो "मूलमंत कदमत" इत्यादि पद वृक्षों के वर्णन करने मे कहे गये है उन सभी पदों का अध्याहार इन वृक्षोंके वर्णन करने मे भी कर लेना चाहिये। उन वृक्षों के नीचे

બાજુથી સારી રીતે ઘેરાયેલું હતું (સૂ ૬)

'ते ण तिलया बउला' ઈત્યાદિ,

(ते ण तिलया बउला लउया जाव) આ બધાં તિલકબકુલ લકુચવૃક્ષથી માંડીને નંદિવૃક્ષ સુધીનો વૃક્ષસમૂહ (कुस--विकुस--विसुद्ध रुक्खमूला) પોતપોતાના નીચેના-ભાગમાં કુસ તેમજ બીજાં કુસ જેવાં ઘાસ આદિથી રહિત હતાં. (मूलमतो कदमतो एएसिं वण्णओ भाणियव्वो जाव सिवियपरिमोयणा) ચોથા સૂત્રમાં "મૂલમંત કંદમંત" ઈત્યાદિ વૃક્ષોના વર્ણન કરવામાં જે પદો કહેલાં છે તે બધાં પદોનો અધ્યાહાર આ વૃક્ષના વર્ણનમાં પણ કરી લેવો જોઈએ તે વૃક્ષોની નીચે જે પ્રકારે રથોથી માંડીને શિબિકા (પાલખી) સુધીનાં

जाव वडिंसयधराओ पासाईयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ॥ सू. ९ ॥

मूलम्—तस्स णं असोगवरपायवस्स हेट्ठा ईसिं

कुसुमिता सदामञ्जातपुष्पा । 'जाव वडिंसयधराओ' यावदवतंसकधरा—शिरोभूषण—भूषिता इव दृश्यमाना, यावच्छब्दोपादानात्—'मऊरियपल्लवियथवइयगुलइय०' इत्यादि द्रष्टव्यम्, मयूरितपल्लवितस्तबकितगुल्मितादीनि विशेषणानि लतास्वपि योज्यानि, अतएव—तादृश्यो लता—'पासाईयाओ' प्रासादीया—चित्तप्रसन्नताकारिण्य । 'दरिसणिज्जाओ' दर्शनीया—द्रष्टुं योग्या । 'अभिरूवाओ' अभिरूपा,—अभिमत—रूपवत्य 'पडिरूवाओ' प्रतिरूपा—प्रतिविशिष्टरूपवत्य ॥ ९ ॥

टीका—'तस्स ण असोगवरपायवस्स' इत्यादि । तस्य अशोकवरपादपस्य 'ईसिं खधसमल्लीणे' ईषत स्कन्धसलीन—वृक्षस्कन्धसमीपवर्ती य 'हेट्ठा' अशोक-

---

युक्त थीं । (जाव वडिंसयधराओ) अतएव ऐसी ज्ञात होती थीं कि मानों इन्होंने शिरोभूषण ही धारण कर रक्खा है । यहां 'यावत्' शब्द से "मयूरित-पल्लवित-स्तबकित-गुल्मित" इत्यादि विशेषणोंका ग्रहण हुआ है । अतएव ये लताएँ भी (पासाईयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ) देखने वालेकि चित्तको प्रसन्न करनेवाले देखने योग्य, अभिरूप एव असाधारण शोभा से युक्त थीं ॥ सू ९ ॥

'तस्स णं असोगवरपायवस्स हेट्ठा' इत्यादि,

(तस्स ण असोगवरपायवस्स हेट्ठा) उस उत्तम अशोकवृक्षके नीचे (ईसिं खंधसमल्लीणे) स्कन्ध (पेड) से कुछ दूरी पर (एत्थ णं) किन्तु उसीके अब

મકુલિત પુષ્પોથી યુક્ત હતી (जाव वडिंसयधराओ) તેથી એમ લાગતુ હતુ કે જાણે તેઓએ શિરોભૂષણ (મુકુટ) જ ધારણ કરેલા છે અહી યાવત્ શબ્દથી 'मयूरित पल्लवित स्तबकित गुल्मित' ઇત્યાદિ વિશેષણો લીધેલા છે તેવી લતાઓ પણ (पासाईयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ) જોનારાઓના ચિત્તને પ્રસન્ન કરવાવાળી, જોવાયોગ્ય, અભિરૂપ, તેમજ અસાધારણ શોભાયુક્ત હતી (સૂ ૯)

"तस्स णं असोगवरपायवस्स हेट्ठा" ઇત્યાદિ,

(तस्स ण असोगवरपायवस्स हेट्ठा) તે ઉત્તમ અશોક વૃક્ષની નીચે (ईसिं खंध-समल्लीणे) સ્કન્ધ (વૃક્ષ) થી જરા દૂર (एत्थ ण) પણ તેના નીચેના

चूयलयाहिं वणलयाहिं वासंतियलयाहिं अइमुत्तयलयाहिं कुंद-लयाहिं सामलयाहि सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता ॥ सू ८॥

मूलम्--ताओ णं पउमलयाओ णिच्चं कुसुमियाओ

बहुविधाभि । 'पउमलयाहिं' पद्मलताभि । 'णागलयाहिं'--नागलताभि । 'असोगलयाहिं' अशोकलताभि ।'चपगलयाहिं' चम्पकलताभि, 'चूयलयाहिं' आम्रलताभि, 'वणलयाहिं' वनलताभि, 'वासंतियलयाहिं' वासन्तिकलताभि, 'अइमुत्तयलयाहिं' अतिमुक्तकलताभि 'कुंदलयाहिं' कुन्दलताभि । 'सामलयाहिं' श्यामलताभि, इमाभिर्द्विगजातीया भिर्लताभि, 'सव्वओ समता सपरिक्खित्ता' सर्वत समन्तात्सम्परिक्षिप्ता --सर्वदिक्षु परित सम्यक परिवेष्टिता ॥ सू० ८॥

'ताओ ण पउमलयाओ' ता खलु पद्मलता --याभिस्तिलकादिनन्दिवृक्षान्ता वृक्षा परितो वेष्टिता ता लता कीदृश्य ? अत्राह--' णिच्च कुसुमियाओ ' नित्य

प्रकारकी पद्मलताओं मे (णागलयाहिं) नागलताओ से, (चपगलयाहिं) चपक-लताओं से (चूयलयाहिं) आम्र--लताओं से, (वणलयाहिं) वनलताओं से (वासतियलयाहिं) वासतीलताओं से, (अइमुत्तयलयाहिं) अतिमुक्तलताओं से (कुदलयाहिं) कुन्दलताओं से और (सामलयाहिं) श्यामलताओं से (सव्वओ समता सपरिक्खित्ता) समस्त दिशाओंमे चारों ओर से घिरे हुए थे ॥ सू ८॥

'ताओ ण पउमलयाओ' इत्यादि,

ये पद्मलता आदि लताएँ कि जिनसे तिलकसे प्रारभकर नदिवृक्ष तकके समस्तवृक्ष परिवेष्टित बने हुए थे, वे (णिच्च कुसुमियाओ) नित्य प्रफुलित पुष्पों स

णीछ અનેક પ્રકારની પદ્મલતાઓથી (णागलयाहि) નાગલતાઓથી (चपगल-याहि) ચપકલતાઓથી (चूयलयाहि) આમ્રલતાઓથી (वणलयाहि) વન લતાઓથી (वासतियलयाहिं) વાસતીલતાઓથી (अइमुत्तयलयाहि) અતિ મુક્તક લતાઓથી (कुदलयाहि) કુદલતાઓથી અને (सामलयाहि) શ્યામ લતાઓથી (सव्वओ समता सपरिक्खित्ता) સમસ્ત દિશાઓમા ચારે તરફથી ઘેરાયેલા હતા (સૂ ૮)

"ताओ ण पउमलयाओ" ઈત્યાદિ,

આ પદ્મલતા આદિ લતાઓ કે જેનાવડે તિલકથી માંડીને નદિવૃક્ષ સુધીના સમસ્ત વૃક્ષો વીંટળાએલા હતા તે (णिच्चं कुसुमियाओ) નિત્ય

असणग-सणबंधन-णीलुप्पलपत्तनिकर-अयसिकुसुम-प्पगासे मरगयमसार-कलित्त-णयणकीय-रासिवण्णे णिद्धघणे अट्ठसिरे आयं-

अञ्जनकनामको वृक्षः। घनः-नीलजलधरः। कृपाणः-खड्गः, कुवलय-नीलकमलम्, हलधरकौशेय-बलभद्रकौशेय-बलदेववस्त्रम्। आकाश-दूरतया-नाऽऽभासम्। केशाः-तरुणसम्बद्धा एव तेषामतिकृष्णत्वात्। कज्जलाङ्गी-कज्जलगृहं यत्र पात्रे कज्जलं स्थाप्यते, कज्जलकूपिका इति यावत्। खञ्जन -खञ्जननामा कृष्णपक्षिविशेष। शृङ्गभेदः-महिषशृङ्गखण्डः। रिष्टक-नीलवर्णरत्न। जम्बूफलम्-अतिपक्वम्-जम्बूफलं नीलतमं भवति। 'असणग' असनकः-बीयकाभिधानो वृक्षविशेषः। 'सणबन्धन-शणकुसुमवृन्तम्। नीलोत्पलपत्रनिकरः-नीलकमलपत्रसमूहः। अतसीकुसुमम् 'अलसीफूल' इति भाषाप्रसिद्ध पुष्पम्। अत्र-अञ्जनाद्यतसीकुसुमान्तानां प्रकाश इव प्रकाशो यस्य स तथा, अञ्जनादिसदृशश्यामवर्णवान् पृथिवीशिलापट्टक इत्यर्थः। तथा-'मरगय-मसार-कलित्त-णयणकीय-रासिवण्णे' मरकत-मसार-कटित्र-नयनकनीनिका-राशिवर्णः। तत्र मरकत -नीलमणिः पन्ना इति भाषायाम्। मसारः-पाषाणस्य चिक्कणीकरणार्थं शिलाखण्ड एव अथवा-कषपट्टः-कसौटीति लोकेख्यातः, कटित्र-कृष्णचर्मण एव निर्मितम्। नयनकनीनिका-नेत्रकनीनिका-एतेषां राशिः= पुञ्जः, तस्य वर्ण इव वर्णो यस्य स तथा, णिद्धघण' स्निग्धघनः-सजलमेघ इव

बलदेवका वस्त्र, आकाश, केश-युवापुरुष के बाल, कज्जलाङ्गी-काजल रखने की डिबिया, खजनपक्षी, शृगभेद-महिष के शृग का टुकडा, रिष्टक-नीलवर्ण का रत्न, जम्बूफल-अतिशय पका हुआ जामुन, असनक-बीयक नामक वृक्षविशेष, सणबन्धन-सनके फूल का बेंट, नीलोत्पलपत्रनिकर-नीलकमल के पत्तों का समूह, और अतसीकुसुम-अलसी का पुष्प-इन सब के प्रकाश जैसा था। अर्थात् पृथिवीशिलापट्ट अञ्जन से लेकर अलसी के फूल के समान श्यामवर्ण था। [मरगय-मसार-कलित्त-णयणकीय-रासिवण्णे]

कृपाणु-तलवार, कुवलय-नीलकमल. હલધરકૌશેય-બલદેવનાવસ્ત્ર, આકાશ, કેશ-યુવાન પુરુષનાવાળ, કજ્જલાંગી-કાજળ રાખવાની ડબ્બી, ખંજન-ખંજનપક્ષી, શૃંગભેદ-ભેંસના શીંગના કટકા, રિષ્ટક-નીલવર્ણના રત્ન, જંબૂફલ-અતિશય પાકેલ જાંબુ, અસનક-બીયક નામે વૃક્ષવિશેષ, સનબન્ધન-સનના ફૂલોનો બેટ, નીલોત્પલપત્રનિકર-નીલ કમલના પાનનો સમૂહ અને અતસી-કુસુમ-અળસીના પુષ્પ એ બધાના પ્રકાશ જેવો હતો અર્થાત્ પૃથિવી-શિલાપટ્ટ અંજનથી માંડીને અળસીના ફૂલના જેવો શ્યામવર્ણનો હતો

खंधसमल्लीणे एत्थ णं महं एक्के पुढविसिलापट्टए पण्णत्ते विक्खं-भायामउस्सेहसुप्पमाणे किण्हे अंजण–घण–किवाण-कुवलय-हल-हर–कोसेज्जा-गास-केस-कज्जलंगी खंजण-सिंगभेद-रिट्ठय-जंबूफल-

वृक्षस्य अध प्रदेश, आसीदिति शेष ' **एत्थ ण मह एक्के पुढविसिलापट्टए पण्णत्ते** ' अत्र–अस्मिन्–अध प्रदेशे ' **मह** ' महान्, ' **एक्के** ' एक ' **पुढविसिलापट्टए** ' पृथ्वीशिलापट्टक –पृथ्वीशिलापीठ इत्यर्थ । ' **पण्णत्ते** ' प्रज्ञप्त कथित । स पृथ्वीशिलापीठ कीदृश ? इत्याऽऽह–'**विक्खभा-याम–उस्सेह–सुप्पमाणे**' विष्कम्भाऽऽयामोत्सेध-सुप्रमाण, विष्कम्भ –पृथुत्व–परितो विशालत्वम् । 'आयामो' दीर्घत्वम् । 'उत्सेध '–उच्चत्वम् । एतैर्विष्कम्भा-ऽऽयामोत्सेधै सु–सुष्ठुप्रमाण यस्य स विष्कम्भाऽऽयामोत्सेधसुप्रमाण, कस्यापि प्रमेयस्य त्रिधा परिमाण भवति, तेषु विष्कम्भ पृथुत्व–स्थूलत्व, आयामो दैर्घ्यम्, उत्सेध उच्चैस्त्वम्, एतैस्त्रिभि प्रमाणै सुष्ठु युक्त नातिन्यूननात्यधिकप्रमाणयुक्त इति भाव । तथा–'**किण्हे**' कृष्ण –कृष्णवर्ण नील इति यावत् । कीदृश कृष्ण ? अत्राह–' **अजण–घण–किवाण–कुवलय–हलहरकोसेज्जा–गास–केस–कज्जलंगी , खजण–सिंगभेद–रिट्ठय–जंबूफल–असणग–सणवधण– णीलुप्पलपत्तनिकर–अयसिकुसुम–प्पगासे** ' अञ्जन–घन–कृपाण–कुवलय–हलधरकौशेय–काश–केश–कज्जलाङ्गी खञ्जन–शृङ्गभेद–रिष्टक –जम्बूफला–सनक–शणबन्धन-नीलोत्पलपत्रनिकराऽ-तसी-कुसुम–प्रकाश:, तत्र–अञ्जन:–

प्रदेश मे (**मह**) विशाल (**एक्के पुढविसिलापट्टए पण्णत्ते**) एक पृथिवीशिलापट्ट था । (**विक्खभा–याम–उस्सेह–सुप्पमाणे**) यह लम्बाई, चौडाई, एव ऊचाई में बराबर प्रमाणवाला था, हीनाधिक–प्रमाणवाला नहीं था । (**किण्हे**) वर्ण इसका कृष्ण–श्याम था । (**अजण-धण-किवाण-कुवलय हलहरकोसेज्जा–गास-केस-कज्जलगी खजण-सिंगभेद-रिट्ठय–जबूफल–असणग–सणवधण–णीलुप्पलपत्तनिकर-अयसिकुसुम-प्पगासे**) अत इसका प्रकाश अजनवृक्ष, घन–नीलमेघ, कृपाण–तलवार, कुवलय–नीलकमल, हलधरकौशेय–

આગમા (महं) વિશાલ (एक्के पुढविसिलापट्टए पण्णत्ते) એક પૃથિવીશિલા-પટ્ટ હતો. (विक्खभा याम उस्सेह सुप्पमाणे) એ લબાઈ પહોળાઇ તેમજ ઉચા-ઇમા સરખા માપવાળો હતો ઓછા વધારે માપનો નહોતો (किण्हे) વર્ણ તેનો કૃષ્ણ-શ્યામ (કાળો) હતો (अजण घण किवाण कुवलय हलहरकोसे-ज्जा गास केस-कज्जलगी खजण सिंगभेद रिट्ठय-जबूफल-असणग-सणवधण णीलुप्पल पत्तनिकर अयसिकुसुम प्पगासे) આમ તેનો પ્રકાશ આજણ જેવો, નીલમેઘ,

णग-रूय-बूर-णवणीय-तूल-फरिसे सीहासणसंठिए पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥ सू. १० ॥

मूलम्—तत्थ णं चंपाए णयरीए कूणिए णामं राया परिवसइ

ईहामृगादिपद्मलतान्ताना भक्तयः—रचनाविशेषाश्चित्राणि, ताभिश्चित्रः सुन्दरः । 'आईणग-रुय-बूर-णवणीय-तूल-फरिसे' आजिनक-रूत-बूर-नवनीत-तूल-स्पर्शः । तत्र आजिनक-चर्ममयवस्त्रम्, रूत-मृदुकार्पासविशेषः, बूरो-वृक्षविशेषः, नवनीतम्—'मक्खन' इति प्रसिद्धम्, तूलम्—अर्कतूलम्, एतेषां स्पर्श इव स्पर्शो यस्य शिलापट्टकस्य स आजिनक-रूत-बूर—नवनीत—तूल—स्पर्शः—अत्यन्तकोमल इत्यर्थः, 'सीहासणसंठिए' सिंहासनसंस्थित सिंहासनाकारः । 'पासाईए' प्रासादीयः—हृदयहर्षकः । 'दरिसणिज्जे' दर्शनीयः—नेत्राह्लादजनकः 'अभिरूवे' अभिरूपः, 'पडिरूवे' प्रतिरूपः ॥ सू. १० ॥

टीका—'तत्थ णं चंपाए णयरीए' इत्यादि—तत्र खलु चम्पायां नगर्याम्,

---

चमर, कुञ्जर—हाथी, वनलता एवं पद्मलता इन सबके चित्रों से यह सुन्दर था । (आईणग—रुय—बूर—णवणीय—तूल—फरिसे) इसका स्पर्श आजिनक—चर्ममयवस्त्र, रूत—रुई, बूर—वृक्षविशेष, नवनीत—मक्खन और तूल—अर्कतूल इनके स्पर्श के समान था । तात्पर्य यह अत्यन्त कोमल स्पर्शवाला था । (सीहासनसंठिए) इसका आकार सिंहासन जैसा था । [पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे] हृदय को हर्ष देनेवाला, नेत्रोंको आह्लादित करनेवाला, एवं सुन्दर—आकृति संपन्न यह पृथिवीशिलापट्ट अपूर्व शोभा-संपन्न था ॥ सू० १० ॥

'तत्थ णं चंपाए णयरीए' इत्यादि,

(तत्थ णं चंपाए णयरीए] उस चंपानगरी में (कूणिए णाम राया)

હતો. (आईणग रुय—बूर—णवणीय-तूल-फरिसे) તેનો સ્પર્શ આજિનક—ચર્મમયવસ્ત્ર, રૂ—મૃદુકપાસ, બૂર—વૃક્ષવિશેષ, નવનીત—માખણ અને તૂલ—અર્કતૂલ (આકડાનુ રૂ) તેના જેવો હતો. મતલબ કે તે અત્યન્ત કોમળ સ્પર્શવાળો હતો. (सीहासनसंठिए) તેનો આકાર સિંહાસન જેવો હતો. (पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे) હૃદયને હર્ષ પમાડનાર, નેત્રોને આહ્લાદકારક તેમજ સુંદર આકૃતિસંપન્ન આ પૃથિવીશિલાપટ્ટ અપૂર્વ શોભાયુક્ત હતો. (સૂ ૧૦)

'तत्थ णं चंपाए णयरीए' ઇત્યાદિ,

(तत्थ णं चंपाए णयरीए) તે ચંપાનગરીમાં (कूणिए णाम राया) કૂણિક

सयतलोवमे सुरम्मे ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्ति-चित्ते आई-

श्यामः। आकारस्तस्य कीदृश इत्याह-'अट्ठसिरे' अष्टशिरस्कः-अष्टकोण इत्यर्थः। 'आयसयतलोवमे' आदर्शतलोपमः-आदर्शतलस्य=दर्पणतलस्योपमा यस्य स तथा। 'सुरम्मे' अतीवरमणीयः। 'ईहामिय-उसभ-तुरग नर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्ति-चित्ते' ईहामृग-वृषभ-तुरग-नर-मकर-विहग-व्यालक-किन्नर-रुरु-शरभ चमर-कुञ्जर-वनलता-पद्मलता-भक्ति-चित्रः। तत्र-ईहामृगाः-वृकाः 'भेडिया' इति भाषाप्रसिद्धा। वृषभाः-बलीवर्दाः, तुरगाः-अश्वाः, नराः-मनुष्याः, मकराः-ग्राहाः, विहगाः-पक्षिणः, व्यालकाः-सर्पाः, किन्नराः-व्यन्तरदेवाः, रुरवः-मृगाः शरभाः-अष्टापदाः, कुञ्जराः-हस्तिनः, वनलताः-प्रसिद्धा, पद्मलता-कमललताः,

मरकत-पन्ना, मसार-पत्थर को चिकना करने वाला पत्थर अथवा कसौटी, कटित्र-कृष्णचमडे की बनी हुई वस्तुविशेष और नयनकीका-नेत्र की कनीनिका-इनसब के पुंज जैसा इसका वर्ण था। (णिद्धघणे) वह सजल-मेघ के समान श्याम था। [अट्ठसिरे] आठ इसके कोन थे। [आयसयतलोवमे] इसका तलभाग आदर्श-काच-दर्पण जैसा चमकीला था। (सुरम्मे) इससे यह देखने मे विशेषकर रमणीय लगता था। (ईहामिय उसभ-तुरग-नर-मगर विहग-वालग किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्ति-चित्ते) ईहामृग-वृक-भेडिया, वृषभ-बलीवर्द,तुरग-अश्व, नर-मनुष्य, मकर-ग्राह, विहग-पक्षी, व्यालक-सर्प, किन्नर-व्यन्तरदेव, रुरु-मृग, सरभ-अष्टापद,

(मरगय मसार-कलित्त णयणकीय-रासि-वण्णे) મરકત-પન્ના, મસાર-પત્થરને ચિકણા કરવાવાળો પત્થર અથવા કસોટી, કટિત્ર-કૃષ્ણ ચામડાની બનાવેલી વસ્તુ-વિશેષ અને નયનકીકા-આંખની કનીનિકા-એ બધાના પુંજ જેવો તેનો વર્ણ હતો (णिद्धघणे) તે સજલ મેઘના જેવો શ્યામ હતો (अट्ठसिरे) આઠ તેના ખૂણા હતા (आयसयतलोवमे) એનો તળિયાનો ભાગ આદર્શ-કાચ-દર્પણ જેવો ચમકીલો હતો (सुरम्मे) તેથી તે જોવામા વિશેષ કરીને રમણીય લાગતો હતો. (ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर कुंजर - वणलय - पउमलय-भत्ति-चित्ते) ઈહામૃગ-વૃક, વૃષભ-બળદ, તુરગ-અશ્વ, નર-મનુષ્ય, મકર ગ્રાહ, વિહગ-પક્ષી, વ્યાલક-સર્પ, કિન્નર-વ્યન્તરદેવ, રુરુ-મૃગ, સરભ-અષ્ટાપદ, ચમર, કુંજર-હાથી,વનલતા તેમજ પદ્મલતા એ બધાના ચિત્રો વડે એ સુંદર

हिसित्ते माउपिउसुजाए दयपत्ते सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे मणुस्सिंदे जणवयपिया जणवयपाले जणवयपुरोहिए

नीतिदयादाक्षिण्यादिभि समृद्ध =सम्पन्न, 'मुइये' मुदित =प्रसन्न, अथवा 'मुइये' इति निर्दोषमातृकार्थो देशीशब्द। उक्त च 'मुइये जे होइ जोणिसुद्धे' इति। निर्दोषमातृक -निर्दोषाया मातुरपत्य पुमान्। 'खत्तिए' क्षत्रिय -शुद्धक्षत्रियगोत्रोत्पन्न। 'मुद्धाहिसित्ते' मूर्द्धाभिषिक्त -सर्वरपि प्रत्यन्तगजै प्रतापमसहमानैर्नान्यथा-ऽस्माक गतिरिति परिभाव्य मूर्द्धभिर्मस्तकैरभिषिक्त सम्मानितो मूर्द्धाभिषिक्त। 'माउपिउसुजाए' मातापितृसुजात - मातृभक्त पितृनिदेशकारको विनीतश्च 'दयपत्ते' दयाप्राप्त -निसर्गकारुणिक। 'सीमकरे' सीमाकर -सीमा कुलमर्यादा, तस्या कर =कारक। 'सीमंधरे' सीमाधर =कुलमर्यादाधारक 'खेमंकरे' क्षेमङ्कर = लब्धवस्तुपालनशील। 'खेमधरे' क्षेमधर -क्षेमस्य धारक, लब्धस्य परिपालन क्षेम -

चित्त रहा करते थे। अथवा निर्दोष माता के ये पुत्र थे। (खत्तिए) शुद्ध क्षत्रिय वश मे ये उत्पन्न हुए थे। (मुद्धाहिसित्ते) उनके प्रबल प्रताप को सहन करने म असमर्थ हो उनके राज्य की चतुर्दिग्वर्त्ती सीमाओं के राजा लोग उनके चरणों म अपना शिर नमाते थे। (माउपिउसुजाए) यह माताके भक्त एव पिता की आज्ञा के परमपालक थे। (दयपत्ते सीमकरे सीमधरे खेमकरे खेमधरे) ये स्वभाव से दयालु थे, यह कुलमर्यादा के कारक थे, तथा उसका आराधक भी थे, लब्ध वस्तु के पालक एव उसके धारक भी थे। अर्थात्-प्रजा-हित के योग्य वस्तुओं को प्राप्त करते थे, और प्राप्त वस्तुओं का रक्षण करते थे, उन पर स्वय

समृद्ध હતા (मुइये) ते सदा प्रसन्नचित्त रહ્યા કરતા હતા અથવા નિર્દોષ માતાના તે પુત્ર હતા (खत्तिए] શુદ્ધ ક્ષત્રિયવંશમાં તે ઉત્પન્ન થયા હતા (मुद्धाहिसित्ते) તેમના પ્રબલ પ્રતાપને સહન કરવામાં અસમર્થ, તેમના રાજ્યની ચારેબાજુની સીમાઓના રાજાલોકો તેમના ચરણોમાં પોતાના શિર નમાવતા હતા (माउपिउसुजाए) તે માતાના ભક્ત, તેમજ પિતાની આજ્ઞાના પરમ પાલક હતા (दयपत्ते सीमकरे सीमधरे खेमकरे खेमधरे) તેઓ સ્વભાવે દયાળુ હતા તેઓ કુળમર્યાદાનું પાલન કરતા કારવતા અને તેના આરાધક પણ હતા મેળવેલી વસ્તુના પાલક તેમજ તેના ધરાક પણ હતા અર્થાત્ પ્રજાહિતને યોગ્ય વસ્તુઓને પ્રાપ્ત કરતા હતા અને પ્રાપ્ત

महया - हिमवंत–महंतमलय–मंदर–महिंदसारे अच्चंतविसुद्ध–दीह–रायकुल–वंस–सुप्पसूए णिरंतरं रायलक्खण–विराइयंग-पच्चंगे बहुजणबहुमाणपूइए सव्वगुणसमिद्धे खत्तिए मुइए मुद्धा-

'**कूणिए णाम राया परिवसइ**' कूणिको नाम राजा परिवसति स्म, कूणिको भूप कीदृश ? इत्याह–'**महयाहिमवंत–महंतमलय–मंदर–महिंदसारे**' महाहिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्रसार –महाहिमवन्महामलय–मन्दर–महेन्द्राणाम् एतन्नामकशैलानां सार =शक्तिरिव सारो यस्य स तथा। '**अच्चंतविसुद्ध–दीह–रायकुल–वंस–सुप्पसूए**' अत्यन्तविशुद्ध–दीर्घ–राजकुल–वंश–सुप्रसूत अत्यन्तविशुद्धौ=सर्वातिशायिनिर्मलौ दीर्घौ–अतिपुरातनौ यौ राज्ञः कुलवंशौ=मातापितृवंशौ तत्र सु–सुष्ठु प्रसूत =प्रादुर्भूत –समुत्पन्न इति यावत्, '**णिरंतरं**' निरन्तरम्, '**रायलक्खण–विराइयंगपच्चंगे**' राजलक्षण–विराजिताङ्गप्रत्यङ्ग –राजलक्षणै = सामुद्रिकशास्त्रोक्तैर्विराजितमङ्गं=हस्तादिकं प्रत्यङ्गम्=अङ्गुल्यादिकं यस्य स तथा। '**बहुजणबहुमाणपूइए**' बहुजनबहुमानपूजित –बहुभिर्जनैर्बहुमानैरतिशयसत्कृत , '**सव्वगुणसमिद्धे**' सर्वगुणसमृद्ध –सर्वै =अशेषै गुणै =

कूणिक नाम के राजा [**परिवसइ**] राज्य करते थे। (**महया-हिमवंत-महंतमलय–मंदर–महिंदसारे**) यह महाहिमवंत पर्वत, महामलय पर्वत, मेरु पर्वत, और महेन्द्रपर्वत के तुल्य श्रेष्ठ थे। (**अच्चंतविसुद्ध-दीह-रायकुल-वंस-सुप्पसूए**) अत्यंत विशुद्ध एवं अति-प्राचीन मातापिता संबंधी कुल एवं वंशमें इनका जन्म हुआ था। (**णिरंतर-रायलक्खण-विराइयंगपच्चंगे**)अखंडित राजचिह्नों से इनके अंग एवं उपांग सुशोभित थे। (**बहुजणबहुमाणपूइए**) अनेकजनों द्वारा ये बहुमानपूर्वक सत्कृत होते रहते थे। (**सव्वगुणसमिद्धे**) अनेक नीति, दया एवं दाक्षिण्यादिक सद्गुणों से समृद्ध थे। (**मुइये**) ये सदा प्रसन्न-

નામે રાજા (परिवसइ) રાજ્ય કરતા હતા (महया-हिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंद-सारे) એ મહાહિમવંત પર્વત, મહામલય પર્વત, મેરૂ પર્વત, અને મહેન્દ્ર પર્વતના જેમ શ્રેષ્ઠ હતા (अच्चंत विसुद्ध दीह रायकुल वंस सुप्पसूए) અત્યંત વિશુદ્ધ તેમજ અતિ પ્રાચીન માતાપિતા સંબંધી કુળ તેમજ વંશમાં તેમનો જન્મ થયો હતો (णिरंतर-राय लक्खण विराइयंगपच्चंगे) અખંડિત રાજચિહ્નોથી તેમના અંગ તેમજ ઉપાંગ સુશોભિત હતા (बहुजण-बहुमाण-पूइए) અનેક લોકોદ્વારા તે બહુમાન પૂર્વક સત્કાર પામતા હતા (सव्वगुणसमिद्धे) અનેક નીતિ તેમજ દાક્ષિણ્ય આદિક સદ્ગુણોથી વધારે

चतुष्टयकारकेषु जनेषु परमार्थचिन्तकतयाऽग्रेसरः । 'पुरिससीहे' पुरुषसिंह, पुरुष सिंह इव, सिंह इव निर्भयो बलवांश्च इत्यर्थ, 'पुरिसवग्घे' पुरुषव्याघ्र –व्याघ्रसदृशशूर इत्यर्थ, 'पुरिसासीविसे' पुरुषाशीविष –अमोघकोपवाद भुजङ्गतुल्य । 'पुरिसपुंडरीए' पुरुषपुण्डरीक –पुरुष पुण्डरीकमिव=श्वेतकमलमिव मृदुहृदयवत्वात, जनाना सुखकरत्वाच्च। 'पुरिसवरगंधहत्थी' पुरुषवरगन्धहस्ती–विपक्षपक्षमर्दकतया राजा पुरुषवरगन्धहस्ती-त्युच्यते। 'अड्ढे' आढ्य –प्रचुरधनस्वामित्वात्, 'दित्ते' दृप्त –दर्पवान्–शत्रुविजयकारित्वात्, स्वदेशस्वधर्माभिमतत्वाच्च। 'वित्ते' वित्त –प्रख्यात, 'विच्छिण्ण–विउल–भवण–सयणा–सण–जाण–वाहणाइण्णे' विस्तीर्ण–विपुल-भवन-शयनाऽऽसन-यान-वाहनाकीर्ण,

मनुष्यों का ग्रहण हुआ है। उनमें श्रेष्ठ ये इसलिये थे कि ये कोश एव सैन्यबल आदि से समृद्ध थे। पुरुष शब्द से चारों पुरुषार्थों को साधन करनेवाले मनुष्य-विशेष का ग्रहण हुआ है, उनमें ये प्रधान इसलिये थे कि ये परमार्थ के चिन्तक थे। (**पुरिससीहे पुरिसवग्घे पुरिसासीविसे पुरिसपुडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिण्ण-विउल-भवण-सयणा-सण-जाण-वाहणा-इण्णे**) पुरुषसिंह ये इसलिये थे कि पुरुषों मे ये सिंह के समान निर्भय एव बलिष्ठ थे। पुरुषव्याघ्र ये इसलिये थे कि ये पुरुषों मे व्याघ्र के समान शूर थे। पुरुषाशीविष ये इसलिये थे कि ये पुरुषों में सर्प के समान अवध्यकोपवाले थे । पुरुषों में पुडरीक तुल्य ये

અને પુરૂષોમા પ્રધાન–મુખ્ય હતા 'નર' આ શબ્દથી અહી સાધારણ મનુષ્યોનો અર્થ લેવાય છે તેમનામા શ્રેષ્ઠ તેઓ એટલા માટે હતા કે તેઓ કોશ તેમજ સૈન્યબલ આદિથી સમૃદ્ધ હતા 'પુરૂષ' શબ્દથી ચારે પુરૂષાર્થોને સાધન કરવાવાળા મનુષ્ય વિશેષનો અર્થ ગ્રહણ કરાયો છે તેમનામા તેઓ પ્રધાન (મુખ્ય) એટલા માટે હતા કે તેઓ પરમાર્થના ચિન્તક હતા (पुरिससीहे पुरिसवग्घे पुरिसासीविसे पुरिसपुडरीए पुरिसवरगधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिण्ण विउल भवण सयणा सण-जाण वाहणा-इण्णे) પુરૂષસિંહ તેઓ એટલા માટે હતા કે પુરૂષોમા તેઓ સિંહના જેવા નિર્ભય તેમજ બલિષ્ઠ હતા પુરૂષવ્યાઘ્ર તેઓ એટલા માટે કહેવાતા કે તેઓ પુરૂષોમા વાઘના જેવા શૂરા હતા પુરૂષાશીવિષ એટલા માટે હતા કે પુરૂષોમા તેઓ સર્પના જેવા સફળ–કોપવાળા હતા પુરૂષોમા પુડરીક તુલ્ય તેઓ એ માટે હતા કે તેમનુ હૃદય ગરીબો પ્રતિ દયાર્દ્ર–કોમલ હતુ, તેમજ સાધા

सेउकरे केउकरे णरपवरे पुरिसवरे पुरिससीहे पुरिसवग्घे पुरिसासीविसे पुरिसपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिण्ण-

तस्य कारको धारकश्चेतिभाव । '**मणुस्सिंदे**' मनुष्येन्द्र—मनुष्येषु इन्द्र इव परमैश्वर्यवान् । '**जणवयपिया**' जनपदपिता—जनपदस्य—जनपदवासिना जनाना विनयशिक्षाप्रदानाद्रक्षणात् भरणपोषण—शीलतया च पितेव—पिता । '**जणवयपाले**' जनपदपाल—जनपदवासिजीवमात्रप्रतिपालक । '**जणवयपुरोहिए**' जनपदपुरोहित—जनपदस्य=जनपदवासिना जनाना शान्तिकारितया पुरोहित इव पुरोहित, '**सेउकरे**' सेतुकर—मार्गे सेतुः मर्यादाऽपि सेतु, तदुभयस्य कर कर्तेति यावत् । '**केउकरे**' केतुकर=चिह्नकारक, अद्भुतकार्यकरणात्, '**णरपवरे**' नरप्रवर—नरा साधारणा तेषु प्रवर=कोशसैन्यबलशालितया श्रेष्ठ, '**पुरिसवरे**' पुरुषवर—पुरुषेषु—पुरुषार्थ-

देख–रेख रखते थे । [**मणुस्सिंदे जणवयपिया जणवयपाले जणवयपुरोहिए**] मनुष्यों मे ये इन्द्र समान परमैश्वर्यशाली थे । जनपदनिवासियों को विनय सबधी शिक्षा के दाता होने से एव उनका अच्छी तरह से रक्षण करने से तथा भरण-पोषण करने से ये देश के पिता तुल्य थे । इसीलिये ये जनपदपालक ऐसा बिरुद धारण किये हुए थे । और इसीलिये ये प्रजाजन के लिये पुरोहित—सबसे पहिले हित में सावधान रहने वाले थे । [**सेउकरे**] ये उन्मार्गगामी मनुष्यों को मार्ग पर लाते थे और उन्हें मर्यादा मे स्थिर करते थे । [**केउकरे**] ये अक्षत कार्यों के करने वाले थे । [**णरपवरे**] ये मनुष्यों मे श्रेष्ठ थे, (**पुरिसवरे**) और पुरुषों मे प्रधान थे । "**नर**" इस शब्द से यहा साधारण

વસ્તુઓનુ રક્ષણ કરતા હતા તેમના પર જાતે દેખરેખ રાખતા હતા (मणुस्सिदे जणवयपिया जणवयपाले जणवयपुरोहिए) મનુષ્યોમા તે ઇન્દ્ર સમાન પરમ ઐશ્વર્યશાલી હતા જનપદ નિવાસીઓને વિનય સબધી શિક્ષા દેવાવાળા હોવાથી તેમજ તેમનુ સારી રીતે રક્ષણ કરવાથી તથા ભરણપોષણ કરવાથી તેઓ દેશના પિતા-તુલ્ય હતા તે માટે જ તેઓ જનપદપાલક એવુ બિરદ ધારણ કરતા હતા અને એટલા માટે જ પ્રજાજનને માટે પુરોહિત-સર્વથી પહેલા હિતમા સાવધાન રહેવાવાળા હતા (सेउकरे) તેઓ ઉન્માર્ગગામી મનુષ્યોને માર્ગ પર લાવતા હતા અને તેમને મર્યાદામા સ્થિર કરતા હતા (केउकरे) તેઓ અદ્ભુત કાર્યો કરનારા હતા (णरपवरे) તેઓ મનુષ્યોમા શ્રેષ્ઠ હતા (पुरिसवरे)

चतुष्टयकारकेषु जनेषु परमार्थचिन्तकतयाऽग्रेसर । 'पुरिससीहे' पुरुषसिंह, पुरुष सिंह इव, सिंह इव निर्भयो बल्वांश्च इत्यर्थ, 'पुरिसवग्घे' पुरुषव्याघ्र –व्याघ्रसदृशशूर इत्यर्थ, 'पुरिसासीविसे' पुरुषाशीविष –अवन्ध्यकोपवाद्भुजङ्गतुल्य । 'पुरिसपुंडरीए' पुरुषपुण्डरीक –पुरुष पुण्डरीकमिव=श्वेतकमलमिव मृदुहृदयवत्वात्, जनाना सुखकरत्वाच। 'पुरिसवरगंधहत्थी' पुरुषवरगन्धहस्ती–विपक्षपक्षमर्दकतया राजा पुरुषवरगन्धहस्ती त्युच्यते। 'अड्ढे' आढ्य –प्रचुरधनस्वामित्वात्, 'दित्ते' दृप्त –दर्पवान्–शत्रुविजयकारित्वात्, स्वदेशस्वधर्माभिमतत्वाच। 'वित्ते' वित्त –प्रख्यात, 'विच्छिण्ण–विउल–भवण–सयणा–सण–जाण–वाहणाइण्णे' विस्तीर्ण–विपुल-भवन-शयनाऽऽ-सन-यान-वाहनाकीर्ण,

मनुष्यों का ग्रहण हुआ है। उनमें श्रेष्ठ ये इसलिये थे कि ये कोश एव सैन्यबल आदि से समृद्ध थे। पुरुष शब्द से चारों पुरुषार्थों को साधन करनेवाले मनुष्य–विशेष का ग्रहण हुआ है, उनमें ये प्रधान इसलिये थे कि ये परमार्थ के चिन्तक थे। (पुरिससीहे पुरिसवग्घे पुरिसासीविसे पुरिसपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिण्ण-विउल-भवण-सयणा-सण-जाण-वाहणा-इण्णे) पुरुषसिंह ये इसलिये थे कि पुरुषों में ये सिंह के समान निर्भय एव बलिष्ठ थे। पुरुषव्याघ्र ये इसलिये थे कि ये पुरुषों में व्याघ्र के समान शूर थे। पुरुषाशीविष ये इसलिये थे कि ये पुरुषों में सर्प के समान अवन्ध्यकोपवाले थे । पुरुषों में पुंडरीक तुल्य ये

અને પુરૂષોમા પ્રધાન–મુખ્ય હતા 'નર' આ શબ્દથી અહીં સાધારણ મનુષ્યોનો અર્થ લેવાય છે તેમનામા શ્રેષ્ઠ તેઓ એટલા માટે હતા કે તેઓ કોશ તેમજ સૈન્યબલ આદિથી સમૃદ્ધ હતા 'પુરૂષ' શબ્દથી ચારે પુરૂષાર્થોને સાધન કરવાવાળા મનુષ્ય વિશેષનો અર્થ ગ્રહણ કરાયો છે તેમનામા તેઓ પ્રધાન (મુખ્ય) એટલા માટે હતા કે તેઓ પરમાર્થના ચિન્તક હતા (पुरिससीहे पुरिसवग्घे पुरिसासीविसे पुरिसपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिण्ण विउल-भवण-सयणा सण-जाण वाहणा इण्णे) પુરૂષસિંહ તેઓ એટલા માટે હતા કે પુરૂષોમા તેઓ સિંહના જેવા નિર્ભય તેમજ બલિષ્ઠ હતા પુરૂષવ્યાઘ્ર તેઓ એટલા માટે કહેવાતા કે તેઓ પુરૂષોમા વાઘના જેવા શૂરા હતા પુરૂષાશીવિષ એટલા માટે હતા કે પુરૂષોમા તેઓ સર્પના જેવા સફળ–કોપવાળા હતા પુરૂષોમા પુંડરીક તુલ્ય તેઓ એ માટે હતા કે તેમનુ હૃદય ગરીબો પ્રતિ દયાર્દ્ર–કોમલ હતુ, તેમજ સાધા

सेउकरे केउकरे णरपवरे पुरिसवरे पुरिससीहे पुरिसवग्घे पुरिसा-सीविसे पुरिसपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिण्ण-

तस्य कारको धारकश्चेतिभाव । '**मणुस्सिंदे**' मनुष्येन्द्र -मनुष्येषु इन्द्र इव परमैश्वर्यवान् । '**जणवयपिया**' जनपदपिता-जनपदस्य-जनपदवासिना जनाना विनय-शिक्षाप्रदानाद्रक्षणात् भरणपोषण-शीलतया च पितेव-पिता । '**जणवयपाले**' जन-पदपाल -जनपदवासिजीवमात्रप्रतिपालक । '**जणवयपुरोहिए**' जनपदपुरोहित -जनपदस्य=जनपदवासिना जनाना शान्तिकारितया पुरोहित इव पुरोहित, '**सेउकरे**' सेतुकर -मार्गे सेतुः मर्यादाऽपि सेतु, तदुभयस्य कर कर्तेति यावत् । '**केउकरे**' केतुकर =चिह्नकारक, अद्भुतकार्यकरणात्, '**णरपवरे**' नरप्रवर -नरा साधारणा तेषु प्रवर =कोशसैन्यबलशालितया श्रेष्ठ, '**पुरिसवरे**' पुरुषवर -पुरुषेषु-पुरुषार्थ-

देख-रेख रखते थे । [**मणुस्सिंदे जणवयपिया जणवयपाले जणवयपुरोहिए**] मनुष्यों मे ये इन्द्र समान परमैश्वर्यशाली थे । जनपदनिवासियों को विनय सबधी शिक्षा के दाता होने से एव उनका अच्छी तरह से रक्षण करने से तथा भरण-पोषण करने से ये देश के पिता तुल्य थे । इसीलिये ये जनपदपालक ऐसा विरुद धारण किये हुए थे । और इसीलिये ये प्रजाजन के लिये पुरोहित-सबसे पहिले हित मे सावधान रहने वाले थे । [**सेउकरे**] ये उन्मार्गगामी मनुष्यों को मार्ग पर लाते थे और उन्हे मर्यादा मे स्थिर करते थे । [**केउ-करे**] ये अक्षत कार्यों के करने वाले थे । [**णरपवरे**] ये मनुष्यों मे श्रेष्ठ थे (**पुरिसवरे**) और पुरुषों मे प्रधान थे । "**नर**" इस शब्द से यहा साधारण

વસ્તુઓનુ રક્ષણ કરતા હતા તેમના પર જાતે દેખરેખ રાખતા હતા (मणु-स्सिंदे जणवयपिया जणवयपाले जणवयपुरोहिए) મનુષ્યોમા તે ઇન્દ્ર સમાન પરમ ઐશ્વર્યશાલી હતા જનપદ નિવાસીઓને વિનય સબધી શિક્ષા દેવાવાળા હોવાથી તેમજ તેમનુ સારી રીતે રક્ષણ કરવાથી તથા ભરણપોષણ કરવાથી તેઓ દેશના પિતા-તુલ્ય હતા તે માટે જ તેઓ જનપદપાલક એવુ બિરદ ધારણ કરતા હતા અને એટલા માટે જ પ્રજાજનને માટે પુરોહિત-સર્વથી પહેલા હિતમા સાવધાન રહેવાવાળા હતા (सेउकरे) તેઓ ઉન્માર્ગગામી મનુષ્યોને માર્ગ પર લાવતા હતા અને તેમને મર્યાદામા સ્થિર કરતા હતા (केउकरे) તેઓ અદ્ભુત કાર્યો કરનારા હતા (णरपवरे) તેઓ મનુષ્યોમા શ્રેષ્ઠ હતા (पुरिसवरे)

वहु-दासी–दास–गो–महिस–गवेलगप्पभूए पडिपुण्ण-जंत-कोस-कोट्ठागारा--उधागारे वलवं दुव्वलपच्चामित्ते ओहयकंटयं निहय-

भत्तपाणे ' विच्छर्दितप्रचुरभक्तपान –विच्छर्दितं=दत्तं प्रचुरं=बहुल भक्तपानं=आहार-पानीयं येन स तथा, वितीर्णबहुतरान्नजल इत्यर्थ । ' वहु–दासी–दास–गो–महिस–गवेलगप्पभूए ' बहु–दासी–दास–गो–महिष–गवेलकप्रभूत –बहवो दास्यो दासा गावो महिष्यो गवेलका =मेषाश्च, तै प्रभूत =समृद्धिमुपगत । ' पडिपुण्ण–जंत–कोस–कोट्ठा-गारा–उधागारे' प्रतिपूर्ण–यन्त्र–कोश–कोष्ठागार–ऽऽयुधाऽऽगार , तत्र–यन्त्र–शिल्पादि-साधनरूप–जलयन्त्रादिक प्रस्तरप्रक्षेपणादिरूप च, कोशो–भाण्डार–रत्नादिभाण्डागारम् , कोष्ठागार–धान्यगृहम्, आयुधागार=विविधशस्त्रास्त्रगृह च प्रतिपूर्ण यस्य स तथा। 'वलवं' वलवान् – तनुवल–धनवल–सैन्यवलसम्पन्न । ' दुव्वलपच्चामित्ते ' दुर्वल-

इनके रसोई घर मे इतना भक्तपान बनता था, कि सबके भोजन कर लेने पर भी बहुतसा बच जाता था, जो गरीबों को दे दिया जाता था। (वहु–दासी–दास–गो-महिस–गवेलग–प्पभूए) इनकी सेवा के लिये बहुत से दासी दास इनके पास सर्वदा रहते थे। और इनकी पशुशाला में गाय, भैस तथा भेडोंका झुण्डका झुण्ड रहता था। (पडिपुण्ण-जंत-कोस-कोट्ठागारा-उधागारे) उनका यन्त्रागार यन्त्रों से–शिल्प के साधनों से, फुहारा के साधनों से, तथा पत्थर फेकने के साधनों से परिपूर्ण था, इनका कोश सुवर्णमुद्रा रत्न आदि से भरा रहता था, अनेक प्रकार के धान्यों से इनका कोष्ठागार परिपूर्ण था, तथा इनका शस्त्रागार अनेक प्रकारों के अस्त्रशस्त्रों से सदा भरा रहता था। (वलवं) ये राजा विशेष वलवान् थे, अर्थात् तनुवल

એટલી તો રસોઈ બનતી હતી કે બધા ભોજન કરી લીધા પછી પણ ઘણીએ રસોઈ વધી પડતી હતી કે જે ગરીબોને આપી દેવામા આવતી (वहु-दासी-दास-गो-महिस गवेलग-प्पभूए) તેમની સેવા માટે ઘણા દાસીદાસ તેમની પાસે સર્વદા રહ્યા કરતા હતા તેમની પશુશાલામા ગાય ભેંસ તથા ઘેટાના ટોળાના ટોળા રહેતા હતા (पडिपुण्ण-जंत-कोस कोष्ठागारा उधागारे) તેમના યંત્રા-ગાર યંત્રોથી–શિલ્પના સાધનોથી, ફુવારાના સાધનોથી, તથા પત્થર ફેંકવાના સાધનોથી પરિપૂર્ણ હતા તેમનો ખજાનો સોનાના સિક્કા રત્નો આદિથી ભરપૂર રહેતો હતો અનેક પ્રકારના ધાન્યોથી તેમનો કોઠાર પરિપૂર્ણ હતો તથા તેમનુ શસ્ત્રાગાર અનેક પ્રકારના અસ્ત્રશસ્ત્રોથી સદા ભરેલુ રહેતુ

विउल-भवण-सयणा-सण-जाण-वाहणाइण्णे वहुधण-बहु-जायरूवरयए आओगपओगसंपउत्ते विच्छड्डिय-पउरभत्तपाणे

विस्तीर्णानि=विस्तारमुपगतानि, विपुलानि=प्रचुराणि, भवनानि=गृहा, शयनानि=शय्या, आसनानि, यानानि=रथा, वाहनानि=अश्वाद्य, तैराकीर्ण=परिपूर्ण, 'बहुधण बहुजायरूवरयए' बहुधान्यबहुजातरूपरजत -बहूनि धान्यानि यस्य स बहुधान्य, बहूनि जातरूपरजतानि-जातरूपाणि=सुवर्णानि रजतानि=रूप्याणि च यस्य स बहुजातरूपरजत, बहुधान्यश्चासौ बहुजातरूपरजतश्चेति तथा, बहुधान्यबहुसुवर्णरजत-परिपूर्ण इत्यर्थ । 'आओग-पओग-सपउत्ते' आयोग-प्रयोगसम्प्रयुक्त -आयोगो=धनलाभ, तस्य प्रयोगो=व्यवहार, तत्र सम्प्रयुक्तो=व्यापृत -कृतोद्यम इत्यर्थ । 'विच्छड्डियपउर-

इसलिये थे कि इनका हृदय गरीबों के प्रति दयार्द्र-कोमल था, एव साधारण से भी साधारण मनुष्य के लिये ये सुखकारी थे। पुरुषों में उत्तम गधहस्ती के तुल्य ये इसलिये थे कि ये शत्रुओं के मर्दक थे। प्रचुर धनका स्वामी होने से ये आढ्य थे। शत्रुओं के जीतनेवाले होने से ये दृप्त थे। स्वदेश एव स्वधर्म का पालक होने से ये वित्त-प्रख्यात थे। इनके अनेक विस्तृत प्रासाद थे। बहुत अधिक अनेक प्रकार के शय्या, आसन, यान और वाहन इनके पास थे। [बहुधण्ण-बहुजायरूवरयए] इनका कोष्ठागार शालि गोधूमादि धान्यों से भरा रहता था। तथा-इनका भण्डार सोने चान्दी से सदा भरा रहता था। [आओगपओगसपउत्ते] धनके लाभके व्यवहार मे ये सदा उद्यमशील रहते थे। (विच्छड्डिय-पउर-भत्त-पाणे)

रणुमा पणु साधारणु मनुष्यने माटे तेओ सुखदाता हता पुरुषोमा उत्तम गधहस्तीना जेवा तेओ ए माटे हता के तेओ शत्रुओने मर्दन करनारा हता घणा धनना स्वामी होवाथी तेओ आढ्य हता शत्रुओने जीतवावाळा होवाथी तेओ दृप्त हता स्वदेश तेमज स्वधर्मना पालक होवाथी तेओ वित्त-प्रख्यात हता तेमना अनेक मोटा मोटा महेलो हता बहुज वधारे अनेक प्रकारनी शय्या, आसन, यान (रथ) अने वाहनो तेमनी पासे हता (बहुधण्ण-बहुजायरूव-रयए) तेमनो कोष्ठागार (कोठार) शालि गोधूम आदि धान्योथी भरेलो रहेतो हतो तथा तेमनो भडार सोना चादीथी सदा भरपूर रहेतो हतो (आओग-पओग-सपउत्ते) धनना लाभना व्यवहारमा तेओ हमेश उद्यमशील रहेता हता (विच्छड्डिय-पउर-भत्त-पाणे) तेमना रसोडामा

मलियसत्तुं उद्धियसत्तुं निज्जियसत्तुं पराइयसत्तुं ववगयदुब्भिक्खं मारिभयविप्पमुक्कं खेमं सिवं सुभिक्खं पसांतडिंवडमरं रज्जं पसासेमाणे विहरइ ॥ सू. ११ ॥

प्रबलप्रतापभयाद् अविद्यमाना कण्टका, यद्वा उपघात–निहनन–मल्लनोद्धारणक्रियाभिर्निर्मूलीकृता कण्टका यस्मिन् तत्तथा। 'ओहयसत्तु' उपहतशत्रु–उपहता =सम्पत्तिहरणादिभिरुपघातं प्राप्ताः शत्रवो यत्र तत् उपहतशत्रु राज्यं शासनं वा, 'निहयसत्तु' निहतशत्रु निहता =खड्गादिभिर्दण्डं प्राप्ताः शत्रवो यत्र तत्तथा, 'मलियसत्तु' मलितशत्रु–प्रहारादिभिर्मलिता =मथिता शत्रवो यत्र तत्तथा, 'उद्धियसत्तु' उद्धृतशत्रु–स्वदेशनिष्कृतशत्रु। 'निज्जियसत्तु' निर्जितशत्रु–स्वसैन्यमहारादिभिः परिभूतशत्रु। 'पराइयसत्तु' पराजितशत्रु–पराजिताः शत्रवो यत्र तत्तथा, वशीकृतशत्रु इत्यर्थः। 'ववगयदुब्भिक्ख' व्यपगतदुर्भिक्षम्–दुर्लभा भिक्षादुर्भिक्षा, व्यपगता–दुर्भिक्षा यस्मात् तद् व्यपगतदुर्भिक्षं भिक्षादौर्लभ्यरहितमित्यर्थः, 'मारिभयविप्पमुक्कं' मारीभयविप्रमुक्तम्=मरकीभयरहितम्। 'खेम' क्षेमम्–क्षेमयुक्तं सकुशलम्, 'सिव' शिव–निरुपद्रवम्। 'सुभिक्ख' सुभिक्ष–सुलभा भिक्षा यत्र तत्तथा। 'पसांतडिंवडमर' प्रशान्त-

---

इन उपायों द्वारा तस्कर आदि कांटों से रहित होकर सर्वथा अकंटक बना हुआ था। (ओहयसत्तु निहयसत्तु मलियसत्तु उद्धियसत्तु निज्जियसत्तु पराइयसत्तु) इसी प्रकार इनका राज्य उपहतशत्रु, निहतशत्रु, मथितशत्रु, उद्धृतशत्रु, निर्जितशत्रु एवं पराजितशत्रु था। [ववगयदुब्भिक्ख मारिभयविप्पमुक्क] इनके राज्य में भिक्षुकों को भिक्षा की दुर्लभता नहीं थी। मरकी का भयतक भी जनता को पीडित नहीं करता था। अतः राज्य में सर्वत्र (क्षेम) कुशलता का सद्भाव था। (सिव) यहां की जनता मे कुशलता छाने का एक कारण यह भी था कि यहां किसी भी

બન્યુ હતુ (ओहयसत्तु निहयसत्तु मलियसत्तु उद्धियसत्तुं निज्जियसत्तुं पराइयसत्तु) એ પ્રકારે જ તેનુ રાજ્ય ઉપહતશત્રુ, નિહતશત્રુ, મથિતશત્રુ, ઉદ્ધૃતશત્રુ, નિર્જિતશત્રુ તેમ જ પરાજિતશત્રુ હતુ (ववगयदुब्भिक्ख मारिभयविप्पमुक्क) તેના રાજ્યમા ભિક્ષુકોને ભિક્ષા મળવી દુર્લભ નહોતી મરકીનો ભય પણ પ્રજાને દુ ખ આપતો નહિ આમ રાજ્યમા સર્વત્ર (क्षेम) કુશળતાનો સદ્ભાવ હતો. (सिव) અહીની પ્રજામા કુશળતા છવાઈ જવાનુ એક કારણ એ પણ હતુ કે અહી કોઇપણ પ્રકારનો ઉપદ્રવ નહોતો ઉપદ્રવનો અભાવ

कंटयं मलियकंटयं उद्धियकंटयं अकंटयं ओहयसत्तुं निहयसत्तुं

प्रत्यमित्र —दुर्बला =बलहीना प्रत्यमित्रा =शत्रवो यस्य स दुर्बलप्रत्यमित्र । अत पर सर्वाणि विशेषणानि राज्यस्य, प्रशासदिति क्रियाया वा सन्ति, तस्माद् विशेषणाना नपुसकत्व द्वितीयैकवचनान्तत्व च। 'ओहयकटय' उपहतकण्टकम्—उपहता = सपत्तिहरणादिभि उपघात प्राप्ता कण्टका =कण्टकवत् अन्त प्रविष्टतया वेदनाप्रदा तस्करादयो यस्मिन् राज्ये, शासने वा, तत् तथा। 'निहयकटय' निहतकण्टकम्—निहता —बन्धनादिभिर्दण्ड प्राप्ता कण्टका यत्र तत् 'मलियकटय' मलितकण्टकम्—मलिता =प्रहारादिभिर्मथिता कण्टका यत्र तत्। 'उद्धियकटय' उद्धृतकण्टकम्—उद्धृता =निजजनपदाद्बहिष्कृता कण्टका यत्र तत् तथा। 'अकटय' अकण्टकम्—

धनबल एव सैन्यबल से सपन्न थे। (दुब्बलपच्चामित्ते) इनके जितने भी वैरी थे वे सब दुर्बल-बलहीन थे।राज्य भी इनका (ओहयकटय निहयकटय मलियकटय उद्धियकटय) उपहतकटक—भीतर प्रविष्ट होकर चुभनेवाले काटोंकी तरह प्रजाको पीडित करनेवाले तस्कर आदिकों से सर्वथा रहित था। निहतकटक इसलिये कि जितने भी राज्य में चोर आदि थे वे सब बधनद्वारा बद्धकर कारावास में बन्द कर दिये गये थे। मलितकटक इसलिये था कि राज्य मे जो भी चोर आदि थे वे सब प्रहारों द्वारा मथित कर दिये गये थे। उद्धृतकटक इसलिये था कि राज्य के समस्त चोर आदि अपने जनपद से बाहर कर दिये गये थे। इसप्रकार इनका राज्य (अकटय)

हतु (बलव) आ राजा विशेष બળવાન હતા અર્થાત્ તનુબલ (શારીરિક બળ) ધનબલ તેમજ સૈન્યબલથી સપન્ન હતા (दुब्बलपच्चामित्ते) તેમના જેટલા વેરી હતા તેઓ બધા દુર્બલ બલહીન હતા તેમનુ રાજ્ય પણ (ओहयकटयं निहयकटय मलियकंटय उद्धियकटय) ઉપહતકટક અદરમા જતો રહી દુખ્યા કરે તેવા કાટાના જેવા પ્રજાને દુખ-પીડા કરનાર તસ્કર આદિકોથી સર્વથા રહિત હતુ નિહતકટક—એટલા માટે કે રાજ્યમા જે કોઈ ચોર આદિ હતા તેઓ બધાને બધનથી બાધીને કારાવાસમા પુરી મુકેલા હતા મલિતકટક એટલા માટે હતુ કે રાજ્યમા જે કોઇ ચોર આદિ હતા તેઓ બધાને પ્રહારોથી મથિત કરવામા (મારવામા) આવ્યા હતા ઉદ્ધૃતકટક એટલા માટે હતુ કે રાજ્યના તમામ ચોર આદિને પોતાના દેશથી બહાર કરી દેવામા આવ્યા હતા આ પ્રકારે તેમનુ રાજ્ય (अकटय) એ ઉપાયો દ્વારા તસ્કર આદિ કાટાઓને કાઢીને સર્વથા નિષ્કટક

रीरा लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणु-म्माण--प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंग-सुंदरंगी ससि-सोमाकार-कंत-पिय-दंसणा सुरूवा

नातिपीनानि नातिकृशानि पञ्च इन्द्रियाणि यत्र तदहीनपरिपूर्णपञ्चेन्द्रिय, तादृश शरीर यस्या सा अहीनपरिपूर्णपञ्चेन्द्रियशरीरा—न्यूनाधिकवैकल्यादिदोषरहितलक्षणसहित—पञ्चेन्द्रियपूर्णसुन्दरशरीरा इति यावत्। 'लक्खण-वंजण-गुणोववेया' लक्षण—व्यञ्जन-गुणोपपेता, तत्र—लक्षणानि=चिह्नानि हस्तरेखादिरूपाणि स्वस्तिकादीनि, व्यञ्जनानि=मषतिलादीनि, तान्येव गुणा=प्रशस्तरूपा तैरुपपेता=सुसम्पन्ना। 'माणु-म्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण सुजाय सव्वग-सुदरगी' मानोन्मान-प्रमाण-प्रतिपूर्ण-सुजात-सर्वाङ्ग-सुन्दराङ्गी, मान=जलादिपरिपूर्णकुण्डादिप्रविष्टे पुरुषादौ यदा द्रोणपरिमित जलादि निस्सरति तदा स पुरुषादिर्मानवानुच्यते, तस्य शरीरावगाहनाविशेषो मानमत्र गृह्यते। उन्मानम्=ऊर्ध्वमान यत् तुलायामारोप्य तोलनेऽर्धभारप्रमाण भवति तत्। प्रमाण=निजाङ्गुलीभिरष्टोत्तरशताङ्गुलिपरिमितोच्छ्राय, मान च उन्मान च प्रमाण चेति मानोन्मानप्रमाणानि, तै प्रतिपूर्णानि=सम्पन्नानि, अत एव सुजातानि=यथोचितावयवसनिवेशयुक्तानि, सर्वाणि=समग्राणि, अङ्गानि=मस्तकादारभ्य चरणान्तानि यस्मिंस्तत् तादृशम्—अत एव सुन्दर-

दीर्घ और पाचों इन्द्रियों से परिपूर्ण था। (लक्खण—वंजण—गुणोववेया) लक्षण-हस्तरेखादिरूप एव व्यजन—मसतिल आदिरूप चिह्नों से यह सुसपन्न थी। (माणु-म्माण—प्पमाण—पडिपुण्ण—सुजाय—सव्वग—सुदरगी) मान, उन्मान एव प्रमाण से परिपूर्ण होने के कारण यथोचित अवयवों की रचना से इसके मस्तक से लेकर चरणतक के समस्त अग एव उपाग बडे ही सुहावने थे, अत इसका शरीर सर्वांग-सुन्दर था। (ससि—सोमाकार—कत—पियदसणा) चद्रमा के तुल्य इसका स्वरूप

કે લાબુ હતુ નહિ તેવુ અને પાચેય ઇન્દ્રિયોથી પરિપૂર્ણ હતુ (लक्खण-वजण-गुणोववेया) લક્ષણ—હસ્ત રેખાદિકરૂપ તેમ જ વ્યજન—મસા તલ આદિ રૂપ ચિહ્નોથી તે સુસપન્ન હતી (माणु-म्माण-प्पमाण पडिपुण्ण-सुजाय सव्वग-सुदरगी) માન, ઉન્માન તેમ જ પ્રમાણથી પરિપૂર્ણ હોવાના કારણે યથોચિત અવયવોની રચનાથી તેના માથાથી લઈને પગ સુધીના સમસ્ત અગ તેમ જ ઉપાગો ઘણા જ સુદર હતા તેથી તેનુ શરીર સર્વાગ—સુદર હતુ (ससि-सोमाकार-कत पियदसणा) ચદ્રમા સમાન તેનુ સ્વરૂપ હોવાથી તે

मूलम्---तस्स णं कोणियस्स रन्नो धारिणी णामं देवी होत्था, सुकुमालपाणिपाया अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियस-

डिम्बडमरम्--विघ्नकलहाभ्यां रहितम्, एव यथा स्यात्तथा, एवभूत वा 'रज्ज' राज्य--'पसासेमाणे' प्रशासत्--पालयन 'विहरइ' विहरति=तिष्ठति ॥ सू० ११ ॥

टीका---तस्स णं कोणियस्स रन्नो' तस्य खलु कोणिकस्य राज्ञ 'धारिणी णाम देवी होत्था' धारिणी नाम देवी=राज्ञी आसीत्, सा धारिणी राज्ञी कीदृशी? अत्रोच्यते--'सुकुमालपाणिपाया' सुकुमारपाणिपादा--पाणी च पादौ च पाणिपादम्, प्राण्यङ्गत्वादेकवद्भाव, तत सुकुमार=कोमल पाणिपाद यस्या सा तथा, सुकोमलकरचरणा। 'अहीण-पडिपुण्ण-पचिंदिय-सरीरा' अहीन परिपूर्ण-पञ्चेन्द्रिय-शरीरा-लक्षणतोऽहीनानि=सम्पूर्णलक्षणानि, स्वरूपत परिपूर्णानि=नातिहृस्वानि नातिदीर्घाणि

प्रकार का उपद्रव नहीं था। उपद्रव का अभाव भी इसलिये था कि (सुभिक्ख) इसमे लोगों को खाद्यसामग्री सुलभ थी। (पसातडिंवडमर) विघ्न और कलहका यहाँ नाम भी नहीं था। इस प्रकार, अथवा ऐसे [रज्ज पसासेमाणे विहरइ] राज्य का पालन करते हुए कोणिक राजा राज्य करते थे॥ सू० ११ ॥

'तस्स ण कोणियस्स रन्नो' इत्यादि,

(तस्स ण कोणियस्स रन्नो) उस कोणिक राजा की (धारिणी णाम) धारिणी नाम की (देवी) रानी (होत्था) थी। (सुकुमालपाणिपाया) इसके हाथ और पैर दोनों ही बडे सुकुमार थे। (अहीण-पडिपुण्ण-पचिंदिय-सरीरा) इसका शरीर लक्षणसे अहीन एव स्वरूप से परिपूर्ण--न अतिहृस्व और न अति-

પણ એટલા માટે હતા કે (सुभिक्ख) તેમા લોકોને ખાવાની સામગ્રી સુલભ હતી (पसातडिवडमरं) વિઘ્ન અને કલહ (કજીઆ)નુ નામ નિશાન જ નહોતુ આ પ્રકારે અથવા--એવા (रज्ज पसासेमाणे विहरइ) રાજ્યનુ પાલન કરતા થકા કોણિક રાજા રાજ્ય કરતા હતા (સૂ ૧૧)

"तस्स ण कोणियस्स रण्णो" ઇત્યાદિ

(तस्स ण कोणियस्स रण्णो) તે કોણિક રાજાની (धारिणी णाम) ધારિણીનામની (देवी) રાણી (होत्था) હતી (सुकुमाल-पाणि-पाया) તેના હાથ અને પગ બન્નેય બહુ સુકુમાર (કોમળ) હતા (अहीण-पडिपुण्ण-पचिंदिय-सरीरा) તેનુ શરીર લક્ષણોથી અહીન તેમ જ સ્વરૂપથી પરિપૂર્ણ--બહુ નાનુ નહિ તેમ બહુ મોટુ

रीरा लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणु-म्माण--प्पमाण--पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंग-सुंदरंगी ससि-सोमाकार-कंत-पिय-दंसणा सुरूवा

नातिपीनानि नातिकृशानि पञ्च इन्द्रियाणि यत्र तदहीनपरिपूर्णपञ्चेन्द्रियं, तादृशं शरीरं यस्या सा अहीनपरिपूर्णपञ्चेन्द्रियशरीरा--न्यूनाधिकत्वे कन्यादिदोषरहितलक्षणसहित--पञ्चेन्द्रियपूर्णसुन्दरशरीरा इति यावत्। 'लक्खण-वंजण-गुणोववेया' लक्षण--व्यञ्जन-गुणोपपेता, तत्र--लक्षणानि=चिह्नानि हस्तरेखादिरूपाणि स्वस्तिकादीनि, व्यञ्जनानि=मषतिलादीनि, तान्येव गुणा =प्रशस्तरूपा तैरुपेता=सुसम्पन्ना। 'माणु म्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण सुजाय सव्वंग-सुंदरंगी' मानोन्मान-प्रमाण-प्रतिपूर्ण-सुजात-सर्वाङ्ग-सुन्दराङ्गी, मान=जलादिपरिपूर्णकुण्डादिप्रविष्टे पुरुषादौ यदा द्रोणपरिमितं जलादि निस्सरति तदा स पुरुषादिर्मानवानुच्यते, तस्य शरीरावगाहनाविशेषो मानमत्र गृह्यते। उन्मानम्= ऊर्ध्वमानं यत् तुलायामारोप्य तोलनेऽर्धभारप्रमाणं भवति तत्। प्रमाण=निजाङ्गुलीभिरष्टोत्तरशताङ्गुलपरिमितोच्छ्राय, मानं च उन्मानं च प्रमाणं चेति मानोन्मानप्रमाणानि, तैः प्रतिपूर्णानि=सम्पन्नानि, अत एव सुजातानि=यथोचितावयवसन्निवेशयुक्तानि, सर्वाणि= समग्राणि, अङ्गानि=मस्तकादारभ्य चरणान्तानि यस्मिंस्तत् तादृशम्--अत एव सुन्दर-

दीर्घ और पांचों इन्द्रियों से परिपूर्ण था। (लक्खण--वंजण--गुणोववेया) लक्षण-हस्तरेखादिकरूप एवं व्यंजन--मसतिल आदिरूप चिह्नों से यह सुसपन्न थी। (माणु-म्माण--प्पमाण--पडिपुण्ण--सुजाय--सव्वंग--सुंदरंगी) मान, उन्मान एवं प्रमाण से परिपूर्ण होने के कारण यथोचित अवयवों की रचना से इसके मस्तक से लेकर चरणतक के समस्त अंग एवं उपांग बडे ही सुहावने थे, अतः इसका शरीर सर्वांग-सुन्दर था। (ससि--सोमाकार--कंत--पियदंसणा) चंद्रमा के तुल्य इसका स्वरूप

કે લાબુ ટુંકુ નહિ તેવુ અને પાંચેય ઇન્દ્રિયોથી પરિપૂર્ણ હતુ (लक्खण-वंजण-गुणोववेया) લક્ષણ-હસ્ત રેખાદિકરૂપ તેમ જ વ્યંજન--મસા તલ આદિ રૂપ ચિહ્નોથી તે સુસંપન્ન હતી (माणु-म्माण-प्पमाण पडिपुण्ण-सुजाय सव्वंग-सुंदरंगी) માન, ઉન્માન તેમ જ પ્રમાણથી પરિપૂર્ણ હોવાના કારણે યથોચિત અવયવોની રચનાથી તેના માથાથી લઈને પગ સુધીના સમસ્ત અંગ તેમ જ ઉપાંગો ઘણા જ સુંદર હતા તેથી તેનુ શરીર સર્વાંગ-સુંદર હતુ (ससि-सोमाकार-कंत पियदंसणा) ચંદ્રમા સમાન તેનુ સ્વરૂપ હોવાથી તે

करयल-परिमिय-पसत्थ-तिवली-वलियमज्झा कुंडलु-ल्लिहिय-गंड-लेहा कोमुइय-रयणियर-विमल-पडिपुण्ण-सोमवयणा सिंगारागार-

मङ्ग=वपुर्यस्या सा तथोक्ता 'ससि-सोमाकार-कंत-पिय-दसणा' शशि सौम्याकार-कान्त-प्रियदर्शना, शशीव=चन्द्र इव सौम्य=सुन्दर आकार=स्वरूप यस्या सा तथा, कान्ता=कमनीया-मनोहरा, प्रिय=हृदयाह्लादक दर्शन यस्या सा तथा । तत पदत्रयस्य कर्मधारय । 'सुरूवा' सुरूपा-शोभन रूप यस्या सा तथा । 'करयल-परिमिय-पसत्थ-तिवली-वलिय-मज्झा' करतल-परिमित-प्रशस्त-त्रिवली-वलित-मध्या-करतलेन परिमित=प्रमाणित-मुष्टिग्राह्य इत्यर्थ, स चासौ प्रशस्त=शुभ, त्रिवली-वलित=उदरोपरि वर्तमाना त्रिरेखा त्रिवलिस्तया वलितो=युक्तो मध्यो=मध्यभागा यस्या सा तथा । 'कुडलु-ल्लिहिय-गडलेहा' कुण्डलो-ल्लिखित-गण्डलेखा, कुण्डलाभ्यामुल्लिखिता=घृष्टा गण्डलेखा=कपोलमण्डले रचिता पत्रावली यस्या सा तथोक्ता, 'कोमुइय-रयणियर-विमल-पडिपुण्ण-सोमवयणा' कौमुदित-रजनीकर-विमल-परिपूर्ण-सौम्यवदना, कौमुदित शरच्चन्द्रिकासहितो यो रजनीकर=पूर्णचन्द्रस्तद्वद् विमल

होने से यह देखनेवालों के लिये बडी ही कान्त-मनोहर लगती थी, इसलिये इसका दर्शन हृदय का आह्लादक होता था। (सुरूवा) और यही कारण था कि जिसकी वजह से यह सुरूपा थी। (करयल-परिमिय-पसत्थ-तिवली-वलियमज्झा) इसका मध्यभाग-कटिप्रदेश करतलपरिमित अर्थात् मूठी में आसके इतना पतला था, प्रशस्त था, तथा इसका उदर त्रिवलीयुक्त था। (कुडलु-ल्लिहिय-गडलेहा कोमुइय-रयणियर-विमल-पडिपुण्ण-सोमवयणा)इसके कपोलमटल पर जो पत्रावली रचित थी वह कानों मे पहिरे हुए दोनों कुण्डलों से उल्लिखित-घृष्ट होती रहती थी। इसका जो सौम्यवदन-सुन्दर मुख था वह चन्द्रिका से समन्वित रजनीकर अर्थात्

જોનારાઓ માટે ઘણીજ કાંત મનોહર લાગતી હતી તેથી તેનું દર્શન હૃદયને આહ્લાદક થતું હતું (सुरूवा) અને એજ કારણથી તે સુરૂપા હતી (करयल परिमिय-पसत्थ तिवली-वलियमज्झा) તેનો મધ્યભાગ-કટિપ્રદેશ કરતલ-પરિમિત એટલે મુઠીમા સમાઇ શકે એવો પાતળો હતો, પ્રશસ્ત હતો તથા પેટ ત્રિવલી (ત્રણ વલી) વાળુ હતુ (कुडलु लिहिय गडलेहा कोमुइय रयणियर-विमल पडिपुण्ण सोमवयणा) તેના કપોલમડલ (બે ગાલ) પર જે પત્રાવલી (શોભા વધારવા બનાવેલ રચના) બનાવેલી હતી તે તેના કાનમા પહેરેલા બન્ને કુડલોથી ઘસાતી હતી તેનુ જે સૌમ્ય વદન-મુખ હતું તે ચદ્રિકાથી

चारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-सललिय-संलाव-णिउण-जुत्तोवयार-कुसला सुंदर-थण-जघण-वयण-कर-चरण-

परिपूर्णं सौम्य वदन मुखं यस्या सा तथा । 'सिंगारागारचारुवेसा' शृङ्गाराऽऽगार-चारुवेषा, शृङ्गारस्य=शृङ्गाररसस्य अगारमिव=गृहमिव चारु=शोभनो वेषो=नेपथ्य-वस्त्रादिरचना यस्याः सा तथा । 'संगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-सललिय-संलाव-णिउण-जुत्तोवयार-कुसला'-सङ्गत-गत-हसित-भणित-विहित-विलास-सललित-संलाप-निपुण-युक्तोपचार-कुशला, सङ्गतेषु=समुचितेषु गत-हसित-भणित-विहित-विलास-सललित-संलापेषु निपुणा, तत्र-गत=गमन गजहंसादिवत्, हसित=स्मित, भणित=वचन कोकिलवीणादिस्वरेण च युक्त, विहित=चेष्टित, विलासो=नेत्रचेष्टा, सललितसंलाप -वक्रोक्त्याद्यलङ्कारेण सहित परस्परभाषण, तेषु निपुणा=चतुरेत्यर्थः, तथा-युक्तोपचारेषु=सद्व्यवहारेषु कुशला=दक्षेत्यर्थः, ततः पदद्वय-

---

चन्द्रमा के समान बिलकुल विमल था। [सिंगारागारचारुवेसा] इसका नेपथ्य अर्थात् वेष शृङ्गार का घर था। [संगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-सललिय-संलाव-णिउण-जुत्तोवयार-कुसला] इसकी गति गज एवं हंसादिकों की गति जैसी मनोमुग्धकारी थी, इसका स्मित बहुत सुन्दर था, एवं इसका भाषण कोकिल और वीणा आदि के स्वर जैसा कर्णप्रिय था, इसकी चेष्टाएँ और विलास अति मनोहर थे, तथा सललितसंलाप-परस्परसंभाषण वक्रोक्ति आदि अलङ्कारों से युक्त था। मतलब कहने का यह है कि यह इन गमनादिक क्रियाओं मे विशेष चतुर थी। साथ २ योग्य सद्व्यवहारों में भी यह कुशल थी। [सुंदर-थण-जघण-वयण-

---

શોભતા ચન્દ્રમા સમાન બિલકુલ નિર્મળ હતુ [सिंगारागार-चारुवेसा] તેનો નેપથ્ય અર્થાત્ વેષ જાણે શણગારનુ ઘર હતુ (संगय गय हसिय भणिय विहिय विलास सललिय संलाव णिउण जुत्तोवयार - कुसला) તેની ચાલ ગજ (હાથી) તેમ જ હંસ આદિકોની ગતિ જેવી મનોમુગ્ધકારી હતી તેનુ સ્મિત (હસવું) અતિ સુન્દર હતું તેની બોલી કોયલ અને વીણા આદિના સ્વર જેવા કર્ણપ્રિય હતા તેની ચેષ્ટાઓ અને વિલાસ અતિ મનોહર હતા તથા સલલિતસંલાપ-પરસ્પર સંભાષણ-વક્રોક્તિ આદિ અલ-કારોવાળા હતા કહેવાનો મતલબ એ છે કે તે ગમન (ચાલ) આદિક ક્રિયા-ઓમા બહુ ચતુર હતી સાથે સાથે ઉચિત સદ્વ્યવહારોમા પણ તે કુશળ

नयण-लावण्ण-विलास-कलिया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, कोणिएणं रण्णा भंभसारपुत्तेण सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता, इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥ सू. १२ ॥

स्य कर्मधारय । 'सुंदर-थण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-विलास-कलिया' सुन्दर-स्तन-जघन-वदन-कर-चरण-नयन-लावण्य-विलास-कलिता 'पासाईया' प्रासादीया-'दरिसणिज्जा' दर्शनीया । 'अभिरूवा' अभिरूपा 'पडिरूवा' प्रतिरूपा, 'कोणिएण रण्णा भभसारपुत्तेण' कोणिकेन राज्ञा भभसारपुत्रेण 'सद्धिं' सार्द्ध-सह । 'अणुरत्ता' अनुरक्ता-अनुरागवती, 'अविरत्ता' अविरक्ता-पत्यौ प्रतिकूलेऽपि कोपरहिता, 'इट्ठे' इष्टान्-मनोऽनुकूलान्, 'सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे' शब्द-स्पर्श-रस-रूप-गन्धान्, 'पचविहे' पञ्चविधान्, 'माणुस्सए कामभोए' मानुष्यकान्=मनुष्यसम्बन्धिन कामभोगान्, 'पच्चणुभवमाणी' प्रत्यनुभवन्ती-भुञ्जाना 'विहरइ' विहरति स्म इति ॥ सू० १२ ॥

कर-चरण-नयण-लावण्ण-विलास-कलिया] इसके पयोधरयुगल पुष्ट, जघन कदलीस्तम्भ जैसे, वदन राकाशशि जैसा अर्थात् पूर्णिमा के चन्द्र जैसा था, कमल जैसे कोमल इसके कर चरण थे, नयनलावण्य अनुपम, एव विलास मनोहर था। [पासाईया] यह राजा के चित्त को प्रतिसमय प्रमुदित करती रहती थी। द्रष्टव्य वस्तुओं मे यह भी एक [दरिसणिज्जा] द्रष्टव्य वस्तु थी। [अभिरूवा पडिरूवा] अभिरूप एव प्रतिरूप थी। (कोणिएण रण्णा भभसारपुत्तेण सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ] यह रानी अपने प्रियपति कोणिक राजा के साथ,

હતી [सुदर-थण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण - विलास - कलिया] તેના બન્ને સ્તનો પુષ્ટ, જઘન કેળના સ્તભ જેવા, વદન-મુખ રાકાશશિ-અર્થાત્ પૂર્ણિમાના ચદ્ર જેવુ હતુ કમળ જેવા સુવાળા હાથ પગ હતા નેત્રનુ લાવણ્ય અનુપમ તેમ જ વિલાસ મનોહર હતુ (पासाईया) તે રાજાના ચિત્તને હરવખત ખુશી કરતી રહેતી હતી જોઈ શકાય તેવી વસ્તુઓમા તે પણ એક (दरिसणिज्जा) જોવાલાયક હતી [अभिरूवा पडिरूवा] અભિરૂપ તેમ જ પ્રતિરૂપ હતી (कोणिएण रण्णा भभसारपुत्तेण सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता

मूलम्—तस्स णं कोणियस्स रण्णो एक्के पुरिसे विउलकयवित्तिए भगवओ पवित्तिवाउए भगवओ तद्देवसियं पवित्तिं णिवेदेइ ॥ सू०१३ ॥

टीका—'तस्स ण कोणियस्स रण्णो' इत्यादि। तस्य खलु कोणिकस्य राज्ञ 'एक्के' एकः 'पुरिसे' पुरुष 'विउलकयवित्तिए' विपुलकृतवृत्तिकः—विपुला=अधिका कृता वृत्तिराजीविका यस्मै स विपुलकृतवृत्तिक—कृतप्रचुरजीविक, 'भगवओ' भगवत सर्वविधैश्वर्यवतो महावीरस्य 'पवित्तिवाउए' प्रवृत्तिव्यापृत=प्रवृत्ती—वार्तायां कदा कुतो विहृत्य क ग्रामे नगरे वा समवसृत ' एतद्रूपायाम्—व्यापृत नियुक्त 'भगवओ' भगवत—श्री महावीरस्य 'तद्देवसियं' तद्दैवसिकीं—तस्मिन् दिवसे भवा तद्दैवसिकी—ताम्, अर्थात् अस्मिन् दिवसेऽस्मान्नगराद् विहृत्याऽस्मिन्नगरे भगवान् विराजते, इत्येतद्रूपा दिवससम्बन्धिनीं 'पवित्तिं' प्रवृत्तिं वार्तां 'णिवेदेइ' निवेदयति—कथयतीति ॥ सू० १३ ॥

जो भभसार (श्रेणिक) का पुत्र था, अनुरक्त होती हुई, उसके क्रोधित होने पर भी प्रतिकूलता से विमुख थी, इच्छित शब्द, स्पर्श, रस, रूप एवं गन्धरूप पाचों इन्द्रियों के मानवोचित प्रधान कामभोगों का अनुभव करती हुई आनद से, अपना समय व्यतीत करती थी ॥ सू० १२ ॥

'तस्स ण कोणियस्स' इत्यादि,

[तस्स ण कोणियस्स रण्णो] उन कोणिक राजा के यहा [एक्के पुरिसे] एक ऐसा पुरुष नियुक्त था जिसे राजा की ओर से [विउलकयवित्तिए] बडी

इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए काममोए पच्चणुभवमाणी विहरइ) એ રાણી પોતાના પ્રિયપતિ કૌણિક રાજા કે જે ભભસાર (શ્રેણિક) નો પુત્ર હતો તેની સાથે અનુરક્ત (પ્રેમાળ) હતી રાજા ક્રોધિત થાય તો પણ તે પ્રતિકૂળતાથી વિમુખ હતી, એટલે અનુકૂળ હતી મનને ગમે તેવા શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ તેમ જ ગધરૂપ પાચ ઈંદ્રિઓના માનવોચિત મુખ્ય કામભોગોનો અનુભવ કરતી આનદથી પોતાનો સમય વ્યતીત કરતી હતી (સૂ ૧૨)

"तस्स ण कोणियस्स" ઇત્યાદિ

(तस्स ण कोणियस्स रण्णो) તે કોણિક રાજાને ત્યા [एक्के पुरिसे] એક

मूलम्—तस्स णं पुरिसस्स वहवे अण्णे पुरिसा दिण्ण-भइ-भत्त-वेयणा भगवओ पवित्तिवाउया भगवओ तद्देवसिअं पवित्तिं णिवेदेंति ॥ सू० १४ ॥

टीका—तस्स ण पुरिसस्स' इत्यादि, तस्य भगवद्वार्ताहरस्य पुरुषस्य भृत्यस्य 'वहवे अण्णे पुरिसा' वहवोऽन्ये पुरुषा—राजसेवका, ते कीदृशा ' इत्याह—'दिण्ण—भइ—भत्त—वेयणा' दत्त—भृति—भक्त—वेतना —भृति स्वर्णमुद्रादिरूपा, भक्तम्—

आजीविका मिलती थी। (भगवओ पवित्तिवाउए) "भगवान् कब कहा से विहार कर किस ग्राम में समवसृत हुए है" इस समाचार को जानने के लिये वह नियुक्त किया गया था। तथा [भगवओ तद्देवसिय पवित्तिं णिवेदेइ] भगवान् के दैनिक वृत्तान्त का भी—अर्थात्—आजदिन भगवान् इस नगर से विहार कर इस नगर मे विराज रहे हैं इस प्रकार की उनकी दैनिक विहारवार्ता का भी ध्यान रखता था। यह वृत्तान्त राजा के निकट निवेदन करता था॥ सू० १३ ॥

'तस्स णं पुरिसस्स वहवे' इत्यादि,

[तस्स णं पुरिसस्स वहवे अण्णे पुरिसा] इस पुरुष के हाथ के नीचे और भी बहुत से अनेक पुरुष कि जिन्हे (दिण्ण—भइ—भत्त—वेयणा) इसकी तरफ से सुवर्णमुद्रादिरूप भृति, एव अन्नादिरूप भक्त इस प्रकार दोनों तरह का

એવો પુરૂષ રાખેલો હતો કે જેને રાજા તરફથી (निउलकयवित्तिए) મોટી આજીવિકા મળતી હતી [भगवओ पवित्तिवाउए] "ભગવાન ક્યારે ક્યાંથી વિહાર કરી કયા ગામમા સમવસૃત થયા છે" એ સમાચાર જાણવાને માટે તેની નિમણુક કરેલી હતી તથા [भगवओ तद्देवसियं पवित्तिं णिवेदेइ] ભગવાનનો દૈનિક વૃત્તાન્ત=અર્થાત્-આજરોજ ભગવાન આ નગરથી વિહાર કરીને આ નગરમા બિરાજે છે એ પ્રકારની તેની દૈનિક (દિવસ સબધી) વિહારવાર્તા નુ પણ ધ્યાન રાખતો હતો આ વૃત્તાન્ત રાજાની પાસે નિવેદન કરતો હતો (સૂ ૧૩)

"तस्स ण पुरिसस्स वहवे' ઇત્યાદિ

(तस्स ण पुरिसस्स वहवे अण्णे पुरिसा) તે પુરુષના હાથ નીચે બીજા પણ ઘણા પુરૂષો હતા જેમને (दिण्ण—भइ—भत्त—वेयणा) તેના તરફથી સુવર્ણમુદ્રારૂપ ભૃતિ તેમજ અન્નાદિરૂપ ભક્ત—ખોરાક એમ બન્ને પ્રકારનુ વેતન

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं कोणिए राया भंभसारपुत्ते बाहिरियाए उवट्टाणसालाए अणेग-गणणायग-दंड-

अनुरूपम्–इत्र द्विविध वेतन–जीविका दत्त येभ्य, ते दत्तभृति–भक्तवेतना '**भगवओ पवित्तिवाउया**'–भगवत प्रवृत्तिव्यापृता –भगवद्विहारसमवसरणादिवृत्तान्त–निवेदन नियुक्ता, भगवतस्तद्दैवसिकीं प्रवृत्ति निवेदयन्ति–कथयन्तानि यावत्, नत्वेकेन भृत्येन तादृगप्रतिबन्धविहारिणो भगवत विहारसमवसरणवार्तानिवेदन सुलभम्–इति हेतोरत्र कार्ये बहवो नियुक्ता इति भाव ॥ सू० १४ ॥

टीका—'**तेण कालेण तेणं समएण**' इत्यादि, तस्मिन काले तस्मिन् समये '**कोणिए राया भभसारपुत्ते**' कोणिको राजा भभसारपुत्र –अय कोणिको नृपो भभसारस्य–श्रेणिकापरनामवतो नृपस्य पुत्र, '**बाहिरियाए उवट्टाणसालाए**' बाह्याया-मुपस्थानशालायाम–बाह्ये सभागृहे–'**अणेग-गणणायग-दडणायग-राई-सर-तलवर-माड-**

वेतन दिया जाता था। (**भगवओ**) वे भगवान् महावीर के (**पवित्तिवाउया**) विहार और समवसरण आदि वृत्तान्त का निवेदन करने के लिये नियुक्त थे, [**भगवओ तद्देवसिय पवित्तिं णिवेदेंति**] इसलिये वे भगवान् की विहारसबधी एव समवसरणसबधी वार्ता प्रतिदिन आकर के निवेदन करते थे ॥ सू० १४ ॥

'**तेण कालेण तेण समएण**' इत्यादि।

(**तेण कालेण तेण समएण**) उस काल उस समय (**कोणिए राया भभसारपुत्ते**) भभसार–श्रेणिक नृप के पुत्र कोणिक राजा (**बाहिरयाए उवट्टाणसालाए**) बाहर की उपस्थान शाला मे (**अणेग–गणणायग–दडणायग–**

(પગાર) આપવામા આવતુ (भगवओ) તેઓ ભગવાન મહાવીરના (पवित्ति-वाउया) વિહાર અને સમવસરણ આદિ વૃત્તાતનુ નિવેદન કરવા માટે રાખેલા હતા (भगवओ तद्देवसिय पवित्ति णिवेदेंति) તેથી તેઓ ભગવાનની વિહાર સબધી તેમજ સમવસરણ સબધી વાર્તા દરરોજ આવીને નિવેદન કરતા હતા (સૂ ૧૪)

" तेण कालेण तेण समएण " ઇત્યાદિ.

(तेण कालेण तेण समएण) તે કાલ તે સમયે (कोणिए राया भभसार-पुत्ते) ભભસાર–શ્રેણિક રાજાના પુત્ર કોણિક રાજા (बाहिरियाए उवट्टाणसालाए) બહારની ઉપસ્થાન શાલામા (अणेग–गणणायग–डडणायग–राई–सर–तलवर–माड-

णायग-राई-सर-तळवर-माडंबिय-कोडुंबिय-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नागर-नेगम-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवाल सद्धिं संपरिवुडे विहरइ ॥ सू० १५ ॥

बिय-कोडुंबिय-मत्ति-महामत्ति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नागर-नेगम-सेट्ठि-सेणावइ सत्थवाह-दूय-संधिवाल सद्धिं' अनेक-गणनायक-दण्डनायक-राजेश्वर-तलवर-माडम्बिक-कौटुम्बिक-मन्त्रि-महामन्त्रि-गणक-दौवारिका-ऽमात्य-चेट-पीठमर्द-नागर-नैगम-श्रेष्ठि-सेनापति-सार्थवाह-दूत-सन्धिपालै सार्धम्, तत्र-अनेके ये गणनायका =समुत्पन्ने प्रयोजने ये गण कुर्वन्ति ते गणनायका, गणप्रधाना इत्यर्थ, दण्डनायका-दण्डदातार, राजान -मण्डलाऽधिपा, ईश्वरा-ऐश्वर्यसम्पन्ना युवराजा, तलवरा -तल=सौवर्णपट्टबन्ध, परितुष्टनरपतिप्रदत्तेन तेन तलेन वरा, तलवरा -सन्तुष्टभूपप्रदत्तपट्टबन्धसुशोभितराजकल्पा इत्यर्थ, 'माडंबिय' माडम्बिका, ग्रामपञ्चशतीपतय इत्यर्थ, यद्वा-सार्धक्रोश-द्वयपरिमितप्रान्तरैर्विच्छिद्य विच्छिद्य स्थितानां ग्रामाणामधिपतय, कोडुंबिय-कौटुम्बिका -बहुकुटुम्बभरणतत्परा, मन्त्रिण -

राई-सर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-मति-महामति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नागर-नेगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवाल सद्धिं संपरिवुडे विहरइ) अनेक गणनायकों से-प्रयोजन उपस्थित होने पर जो गण तैयार करते थे ऐसे लोगों से, दण्डनायकों से, माण्डलिक राजाओं से, ईश्वरों से=युवराजों से, तलवरों से=राजाने सतुष्ट होकर जिन लोगों को सुवर्णका पट्टबन्ध दिया, उस पट्टबन्ध से सुशोभित राजातुल्य पुरुषों से, माडम्बिकों से=पाँच सौ ग्रामों के अधिपतियों से, अथवा-ढाई ढाई कोशका अन्तर जिन दो गामों के बीच मे होता है ऐसे अनेक गामों के अधिपतियों से, कौटुम्बिकों से=कुटुम्ब के भरण-पोषण मे तत्पर व्यक्तियों से

बिय-कोडुंबिय-मत्ति-महामत्ति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नागर-नेगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवाल सद्धिं संपरिवुडे विहरइ) અનેક ગણુનાયકોથી=પ્રયોજન ઉપસ્થિત થાય ત્યારે જે ગણ તૈયાર કરતા હતા તેવા લોકોથી, દંડનાયકોથી, માંડલિક રાજાઓથી, ઈશ્વરોથી=યુવરાજોથી, તલવરોથી=રાજાએ સંતુષ્ટ થઈને જે લોકોને સુવર્ણનો પટ્ટબન્ધ આપ્યો હોય તે પટ્ટબંધથી સુશોભિત રાજા જેવા પુરુષોથી, માડંબિકોથી=પાંચસો ગામના અધિપતિઓથી અથવા અઢી અઢી ગાઉનું અંતર જે બે ગામોની વચ્ચે હોય એવા અનેક ગામોના અધિપતિઓથી, કૌટુંબિકોથી=કુટુંબના ભરણ પોષણમાં તત્પર વ્યક્તિઓથી, મંત્રીઓથી,=કર્તવ્યની સમીક્ષા (निर्णय)

कर्तव्यालोचन मन्त्र, सोऽस्यास्तीति मन्त्री, बहुमत्यका मन्त्रिण, विचारकारका इत्यर्थ, महामन्त्रिण –मन्त्रिमण्डलप्रधाना –सूक्ष्मातिसूक्ष्मविचारका इत्यर्थ, गणग–गणका –ज्योतिषिका –शुभाशुभफलप्रदेशकाणि, 'दोवारिय' दौवारिका द्वारपाला, अमात्या –राज्यहितचिन्तका –अष्टादशाना प्रकृतीना–नागरिकश्रेणीना महत्तरा इति यावत्, चेटा दासा, पीठमर्दा –अङ्गमवाहका –आमनसमीपवर्तिन –सेवका, नागरा =नगरवासिनो नागरिका, नैगमा –पौरवणिज, श्रेष्ठिन –लक्ष्मीकृपासूचकपट्टालङ्कृतका प्रधानव्यवहारिण 'सेणावइ' सेनापतय –चतुरङ्गसेनायाश्चतुर्विधा अधिपा, सार्थवाहा –सार्थं समानव्यवसायिसमूह वाहयन्ति योगक्षेमाभ्या रक्षन्ति इति अथात्–समूहन दूरदेश गत्वा क्रयविक्रयकर्तार । दूता –सन्देशहग, सन्धिपाल –युध्यमानेन राज्ञा कृत सन्धि त पालयन्तीति सन्धिपाला । एतेषा द्वन्द्व विधाय तैर्गणनायकादिसन्धिपालाऽन्तै सार्द्धम्, अत्र आर्षत्वात् सन्धिपालशब्दोत्तरवर्तितृतीयाविभक्तेर्लोप, 'सपरिवुडे' सम्परिवृत –स–सम्यक्–समन्तादेष्टित 'विहरइ' विहरति–सुखेन काल नयति स्मेति भाव ॥ सू० १५ ॥

मन्त्रियों से=कर्तव्य की समीक्षा करनेवाले विचारवान पुरुषों से, महामन्त्रियों से=सूक्ष्मातिसूक्ष्मविचारशील मन्त्रिमण्डल के प्रधानों से, **गणकों** से=शुभ, अशुभ फल का निवेदन करनेवाले ज्योतिषियों से, **दौवारिकों** से=द्वारपालों से, अमात्यों से=राज्य के हित चिन्तकों से अर्थात् अठारह प्रकृतियों–ज्ञातियों के मुखियों से, **चेटों** से=दासों से, पीठमर्दकों से=अङ्गमर्दकों से अर्थात् समीप मे रहनेवाले सेवकों से, **नागरों** से=नागरिक पुरुषों से, **नैगमों** से=पौरवणिग्जनों से, **श्रेष्ठियों** से=लक्ष्मी की कृपा का सूचक पट्ट से सुशोभित मुख्य मुख्य सेठों से, **सेनापतियों** से=चतुरङ्गिणी सेना के नायकों से, **सार्थवाहों** से, दूतों से, तथा–**सन्धिपालों** से=शत्रु राजाओं के साथ सन्धि करने के लिये नियुक्त अधिकारी पुरुषों से परिवृत होकर बैठे हुए थे ॥ सू० १५ ॥

કરનારા વિચારવાન પુરૂષોથી, મહામંત્રિઓથી=સૂક્ષ્માતિસૂક્ષ્મ વિચારશીલ મંત્રિમંડલના પ્રધાનોથી, ગણકોથી=શુભ અશુભ ફલના નિવેદન કરવાવાળા જ્યોતિષિઓથી, દૌવારિકોથી=દ્વારપાળોથી, અમાત્યોથી,=રાજ્યહિતચિંતકોથી અર્થાત્ અઢાર પ્રકૃતિઓ–જ્ઞાતિઓના મુખિઓથી, ચેટોથી=દાસોથી, પીઠમર્દકોથી-અંગમર્દકોથી અર્થાત્ પાસે રહેવાવાળા (હજુરીઆ) સેવકોથી, નાગરોથી=નાગરિક પુરૂષોથી, નૈગમોથી=પૌર વણિક જનોથી, શ્રેષ્ઠિઓથી=લક્ષ્મીની કૃપાના સૂચક પટ્ટથી સુશોભિત મુખ્ય મુખ્ય શેઠોથી, સેનાપતિઓથી=ચતુરંગિણી સેનાના નાયકોથી, સાર્થવાહોથી, દૂતોથી તથા સંધિપાલોથી=શત્રુ રાજાઓની સાથે સંધિ કરવાને માટે નિમણુંક કરેલા અધિકારી પુરૂષોથી વીંટળાઇને બેઠા હતા (સૂ. ૧૫)

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महा-

टीका—'तेण कालेण' इत्यादि। अधुना चरमतीर्थङ्कर भगवन्त श्रीमहावीरस्वामिन वर्णयति- 'तेण' इति सूत्रेण। स खलु भगवान् वचनागोचरगुणनिकररुचिरो महावीरोऽप्रतिबन्धविहारक्रमेण पूर्णभद्रमुद्यान समवसर्तुकाम चम्पाया नगर्या समीप ग्राममुपागत इति वर्ण्यते 'तेण कालेण तेण समएण' इत्यादि। तस्मिन् खलु काले=चतुर्थारकलक्षणे तस्मिन् समये=कोणिकभूपशासनसमये, 'समणे' श्रमण—श्राम्यति—तीव्रतपसि यतते, इति श्रमण। 'भगव' भगवान्—समग्रैश्वर्यसम्पन्न, 'महावीरे' महावीर—महावीरनाम्ना प्रसिद्धश्चरमतीर्थकर, गुणनिष्पन्नमिद नाम, अधुना महावीरशब्द-व्युत्पत्तिमाह-विशेषन शिवपदमियर्ति—गच्छतीति वीर अथवा विदारयति

'तेण कालेण तेण समएण समणे भगवं महावीरे' इत्यादि,

अब चरमतीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का "तेण कालेण" इत्यादि १६ वे सूत्रद्वारा वर्णन किया जाता है। इसमे सर्वप्रथम वचन—अगोचर-प्रशस्त गुणों के समूह से विराजित वे प्रभु अप्रतिबध विहार करते हुए पूर्णभद्र नाम के उद्यान मे पधारने के निमित्त चपानगरी के समीपवर्ता ग्राम मे पधारे। (तेण कालेण तेण समएण) अवसर्पिणी कालके चतुर्थ आरे के उस समयमे कि जिस समय मे कोणिक राजा राज्य करते थे, (समणे) श्रमण—तीव्र तपस्या करनेवाले (भगव) भगवान—समग्र ऐश्वर्य सपन्न (महावीरे) महावीर—जो अपुन—रागमनरूप से शिवपद को प्राप्त करते हैं वे वीर है, कर्मशत्रुओं का जो विदारण

"तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे" ઈત્યાદિ.

હવે ચરમ તીર્થંકર ભગવાન મહાવીર સ્વામીનું વર્ણન "तेण कालेण" ઇત્યાદિ ૧૬મા સૂત્રદ્વારા કરવામા આવે છે તેમા સર્વથી પ્રથમ વચન અગોચર-પ્રશસ્ત ગુણોના સમૂહથી વિરાજમાન તે પ્રભુ અપ્રતિબન્ધ વિહાર કરતા કરતા પૂર્ણભદ્ર નામના ઉદ્યાનમા પધારવાના નિમિત્તે ચપા-નગરીના નજીકના ગામમા પધાર્યા (तेण कालेण तेण समएण) અવસર્પિણી કાલના ચોથા આરાના તે સમયે કે જે સમયમા કોણિક રાજા રાજ્ય કરતા હતા, (समणे) શ્રમણ—તીવ્ર તપસ્યા કરવાવાળા (भगव) ભગવાન—સમગ્ર ઐશ્વર્યસપન્ન (महावीरे) મહાવીર—જે અપુનરાગમન—રૂપથી શિવ પદને પ્રાપ્ત કરે છે તે વીર છે, કર્મશત્રુઓનો જે નાશ કરે છે તે વીર છે.

वीरे आइगरे तित्थगरे सयंसंबुद्धे पुरिसुत्तमे पुरिससीहे पुरिस-

रिपुमय मिति वीर । यद्वा—अनन्याऽनुभूतमहातप श्रिया विराजते इति वीर, यद्वा अन्तरङ्ग-मोहमहाबलनिर्दलनार्थमनन्ततपोवीर्यं व्यापारयति इति वीर सामान्यजिन, तदपेक्षया महाश्चासौ वीर महावीर । महत्त्वगुणयुक्तवीरत्वमस्य विविधपरिषहोपसर्गनिपातेऽपि निश्चलत्वात् जन्मसमये निजाङ्गुष्ठेन मेरोश्चालनाच। 'आइगरे' आदिकर -आदौ प्रथमत स्वशासनापेक्षया श्रुतचारित्रधर्म-लक्षण कार्यं करोति तच्छील आदिकर । '**तित्थगरे**' तीर्थकर —तीर्यते—पार्यते ससारमोहमहोद-

करते हैं—वे वीर हैं, जो अनन्य सदृश तपस्या की शोभा से विराजमान होते हैं वे वीर हैं, जिन्होंने अन्तरग—अन्त स्थित मोहके महाबल का नाश करने के लिये अपने अनन्त तप वीर्यका प्रयोग किया है—वे वीर हैं। इस प्रकार के वीरों—सामान्य जिनोंकी अपेक्षा भगवान महत्त्व गुणों से युक्त हैं, इसलिये वे **महावीर** हैं। अनेक परिषह उपसर्ग उपस्थित होने पर भी वे निश्चल थे, जन्म समय में अपने अगूठे से मेरु को हिलाया था यही इनका महत्त्व है। ऐसे अन्तिम तीर्थंकर महावीर प्रभु जो इन **निम्नलिखित** विशेषणों से सपन्न हैं वे चपानगरी के समीपस्थ ग्राममें पधारे, इस प्रकार इस सूत्रका सबन्ध लगाना चाहिये। वे महावीर प्रभु कैसे हैं ? इस बात को नीचे लिखे हुए विशेषणों द्वारा सूत्रकार स्पष्ट करते हैं। वे प्रभु (**आइ-गरे**) आदिकर—स्वशासन की अपेक्षा श्रुतचारित्ररूप धर्म की आदि करने वाले हैं, (**तित्थयरे**) तीर्थंकर हैं—जिसको प्राप्त कर जीव ससाररूपी महासमुद्र पार करते हैं

જે અનન્ય-સદૃશ તપસ્યાની શોભાવડે વિરાજમાન છે તે વીર છે જેઓએ અતરંગ-અંત સ્થિત મોહના મહાબલનો નાશ કરવાને માટે પોતાના અનંત તપવીર્ય (બલ)નો પ્રયોગ કર્યો છે તે વીર છે એ પ્રકારના વીરોની—સામાન્ય જિનોની અપેક્ષા ભગવાન મહત્ત્વ ગુણોથી યુક્ત છે, તેથી તેઓ મહાવીર છે અનેક પરીષહ ઉપસર્ગ ઉપસ્થિત થતા પણ તેઓ નિશ્ચળ રહેતા, જન્મ સમયે પોતાના અંગુઠાવડે મેરૂ પર્વતને હલાવ્યો હતો એજ તેમનુ મહત્ત્વ છે એવા અંતિમ તીર્થંકર મહાવીર પ્રભુ કે જે નિમ્ન લિખિત વિશેષણોથી સંપન્ન છે તે ચંપાનગરીના નજીકના ગામમા પધાર્યા એ પ્રકારે આ સૂત્રનો સંબંધ ઘટાવવો જોઈએ તે મહાવીર પ્રભુ કેવા છે તે વાતને નીચે લખેલા વિશેષણોદ્વારા સૂત્રકાર સ્પષ્ટ કરે છે તે પ્રભુ (आइगरे) આદિકર—સ્વશાસનની અપેક્ષા શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મને આદિ કરવાવાળા છે, (तित्थयरे) તીર્થ-

र्यिन तत् तीर्थम्—चतुर्विध सङ्घ, तत्करणशीलत्वात तीर्थकर । 'सयसबुद्धे' स्वयसम्बुद्ध – स्वय परोपदेशमन्तरेण सम्बुद्ध =सम्यक्तया बोध प्राप्त —स्वयसम्बुद्ध । 'पुरिसुत्तमे' पुरुषोत्तम —पुरुषेषु उत्तम —श्रेष्ठ —ज्ञानाद्यनन्तगुणवत्त्वात्पुरुषोत्तम । 'पुरिससीहे' पुरुषसिंह —पुरुषेषु सिंह —रागद्वेषादिशत्रुपराजये दृष्टाऽद्भुतपराक्रमत्वात् इति, यद्वा—पुरुष सिंह इव इति पुरुषसिंह । 'पुरिसवरपुंडरीए' पुरुषवरपुण्डरीकम्—पुण्डरीक—धवल-कमल, वरञ्च तत्पुण्डरीक वरपुण्डरीक=धवलकमलप्रधान, पुरुषो वरपुण्डरीकमिवेत्युपमि-तसमासे पुरुषवरपुण्डरीकम्, भगवतो 'वरपुण्डरीकोपमा च निर्निर्गताऽखिलाऽशुभमलीमस-त्वात् सर्वे शुभानुभावै परिशुद्धत्वाच, यद्वा यथा पुण्डरीक पङ्काज्जातमपि सलिले वर्द्धितमपि चोभयसम्बन्धमपहाय निर्लेप जलोपरि रमणीय सदृश्यते निजानुपमगुण-गणबलेन सुरासुर—नर—निकर—शिरोधारणीयतयाऽतिमहनीय परमसुखाऽऽस्पदञ्च भवति

ऐसे चतुर्विध सघरूप तीर्थ के कर्ता हैं (सयसबुद्धे) परोपदेश के विना स्वयमेव बोध को प्राप्त हुए हैं, इसलिये स्वयसबुद्ध हैं, (पुरिसुत्तमे) ज्ञानादिक अनन्तशुद्ध गुणों की जागृति—विशिष्ट होने से पुरुषों मे उत्तम हैं, (पुरिससीहे) रागद्वेषादिक शत्रुओं के पराजित करने मे अद्वितीय—पराक्रम प्रदर्शित करने के कारण पुरुषसिंह हैं। (पुरिसवरपुंडरीए) पुरुषवरपुडरीक—समस्त प्रकार की मलिनता के अभाव से पुरुषों में श्रेष्ठ शुभ्र कमल जैसे हैं। यहा भगवान् को जो वरपुडरीक की उपमा दी गई है उसका भाव यह है कि जिस प्रकार कमल कीचड से उद्भूत होने पर एव जल मे वर्द्धित होने पर भी इन दोनों (कीचड और जल) के सबध से रहित होकर निर्लेप होता है, जल से भिन्न होकर उसीमे रहता हुआ भी जैसे

કર છે જેને પ્રાપ્ત કરીને જીવ સસારરૂપી મહાસમુદ્ર પાર કરે છે એવા ચતુર્વિધ સઘરૂપ તીર્થના કર્તા છે (सयसबुद्धे) પરોપદેશના વગર પોતાની મેળેજ બોધને પ્રાપ્ત કર્યો છે તેથી સ્વયસબુદ્ધ છે (पुरिसुत्तमे) જ્ઞાનાદિક અનન્ત શુદ્ધ ગુણોની જાગૃતિ-વિશિષ્ટ હોવાથી પુરૂષોમા ઉત્તમ છે (पुरिससीहे) રાગ દ્વેષાદિક શત્રુઓને પરાજિત કરવામા અદ્વિતીય પરાક્રમ બતાવવાના કારણથી પુરૂષ-સિંહ છે (पुरिसवरपुडरीए) પુરૂષવરપુ ડરીક-સમસ્ત પ્રકારની મલિનતાના અભાવથી પુરૂષોમા શ્રેષ્ઠ શુભ્ર કમલ જેવા છે અહી ભગવાનને જે વરપુ ડરીકની ઉપમા આપેલી છે તેનો ભાવ એ છે કે જે પ્રકારે કમલ કીચડથી ઉત્પન્ન થાય છે તેમજ જલમા વધતુ જાય છે છતા પણ એ બન્ને (કીચડ અને જલ)ના સબધથી રહિત થઈને નિર્લેપ રહે છે જલથી જુદા

वरपुंडरीए पुरिसवरगधहत्थी लोगुत्तमे लोगनाहे लोगहिए लोग-

तथाऽयं भगवान् कर्मपङ्काज्जातो भोगाऽम्भोवर्द्धितः सन्नपि निर्लेपस्तदुभयमतिवर्तते, गुणसम्पदाऽऽस्पदतया च केवलादिगुणगणाढ्यत्वेन भव्यजनशिरोधार्योऽयं भवतीति। '**पुरिसवरगधहत्थी**' पुरुषवरगन्धहस्ती–गन्धयुक्तो हस्ती गन्धहस्ती वरश्चासौ गन्ध हस्ती वरगन्धहस्ती पुरुषो वरगन्धहस्तीव–पुरुषवरगन्धहस्ती, गन्धहस्तिलक्षणं यथा–

यस्य गन्धं समाघ्राय, पलायन्ते परे गजाः।
तं गन्धहस्तिनं विद्यान्नृपतेर्विजयावहम् ॥ इति ॥

अत एव यथा गन्धहस्तिगन्धमाघ्राय अन्ये गजा इतस्ततो द्रुतं पलाय्य क्वापि निलीयन्ते तद्वदचिन्त्यातिशयप्रभाववशाद् विहरणसमीरणगन्धसम्बन्धगन्धतोऽपि–ईति-

सुन्दर दिखता है और सुर, असुर एवं नरों द्वारा अपने २ शिरपर धारण किये जाने से अतिमहनीय एवं अत्यंत प्रशंसनीय होता है, उसीप्रकार प्रभु भी कर्मरूप पङ्क से उद्भूत होने पर एवं भोगरूप जल में वर्द्धित होने पर भी इन दोनों से निर्लिप्त ही हैं एवं ज्ञानादिकगुणरूपी सम्पत्ति के स्थान होने से अर्थात् केवलज्ञानादिक गुणों से विशिष्ट होने से समस्त भव्यजनों द्वारा शिरोधार्य है। (**पुरिसवर-गंधहत्थी**) भगवान् पुरुषों में गंधहस्ती जैसे हैं। जिसकी गंध से अन्य गज दूर भाग जावें उसका नाम गंधहस्ती है। यह हस्ती जिस राजा के पास होता है वह नियम से शत्रुओं के बीच में रहने पर भी विजयलक्ष्मी प्राप्त करता है। इसी प्रकार प्रभु के विहार की गंध से भी उस २ स्थान से डमर–मरकी आदि उपद्रव

રહીને પણ તેમાજ રહેતા છતા જેમ સુદર લાગે છે અને સુર, અસુર તેમજ મનુષ્યોદ્વારા પોતપોતાને માથે ધારણ કરવામા આવતા અતિમહનીય તેમજ અત્યત પ્રશસનીય બને છે, તેમ પ્રભુ પણ કર્મરૂપ પક (કીચડ) થી ઉત્પન્ન થયા છતા તેમજ ભોગરૂપ જલમા વૃદ્ધિ પામ્યા છતા પણ એ બન્નેથી નિર્લેપજ રહેલા છે તેમજ જ્ઞાનાદિક ગુણરૂપી સપત્તિનુ સ્થાન હોવાથી અર્થાત્ કેવલ જ્ઞાનાદિક ગુણોથી વિશિષ્ટ હોવાથી સમસ્ત ભવ્ય જીવો દ્વારા શિરોધાર્ય બનેલા છે (पुरिसवरगंधहत्थी) ભગવાન્ પુરૂષોમા ગધહસ્તી જેવા છે, જેની ગધથી બીજા હાથીઓ દૂર ભાગી જાય તેનુ નામ ગધહસ્તી છે આ હાથી જે રાજાની પાસે હોય છે તે નિયમથી શત્રુઓની વચમા રહેવા છતા પણ વિજયલક્ષ્મી પ્રાપ્ત કરે છે એવી જ રીતે પ્રભુના વિહારની ગધથી પણ

डमर–मरकादय उपद्रवा द्राग् दिक्षु प्रद्रवन्तीति, गन्धगजाश्रितराजवद् भगवदाश्रितो भव्यगण सर्वदा विजयवान् भवतीति भवयुभयोर्युक्त सादृश्यम्। 'लोगुत्तमे' लोकोत्तम –लोकेषु=भव्यसमाजेषु उत्तम =उत्कृष्टतम, चतुस्त्रिंशदतिशयपञ्चत्रिंशद्वाणीगुणोपेतत्वात्। 'लोगनाहे' लोकनाथ –लोकाना=भव्याना नाथ =नेता–योगक्षेमकरत्वात्। 'लोगहिए' लोकहित –लोक =एकेन्द्रियादि सर्वप्राणिगणस्तस्मै हित –तद्रक्षोपायप्रदर्शकत्वात्। 'लोगपईवे' लोकप्रदीप –लोकस्य=भव्यजनसमुदायस्य प्रदीप, तन्मनोऽभिनिविष्टानादिमिथ्यात्वतम पटलव्यपगमेन विशिष्टात्मतत्त्वप्रकाशकत्वात्, यथा प्रदीपस्य सकलजीवार्थं तुल्यप्रकाशकत्वेऽपि चक्षुष्मन्त एव तत्प्रकाशसुखभाजो भवन्ति न त्वन्धास्तथा भव्या एव भगवदनुभावसमुद्भूतपरमानन्दसन्दोहभाजो भवन्ति नाभव्या इति

भी इतस्तत भाग जाते हैं। एव भगवान का भक्तजन भी सर्वदा विजयशील रहा करते हैं। (**लोगुत्तमे**) चौतीस अतिशय और पैंतीस वाणीगुणों से युक्त होने के कारण भगवान भव्यरूपी लोक मे उत्कृष्टतम हैं। (**लोगनाहे**) लोकों के अर्थात् भव्यों के योगक्षेम करनेवाले होने से भगवान लोकनाथ हैं। (**लोगहिए**) सभी प्राणियों की रक्षा के उपाय दिखलाने के कारण भगवान् लोकों के अर्थात एकेन्द्रिय आदि सभी प्राणियों के हितकारक हैं। इसलिये वे लोकहित हैं। (**लोगपईवे**) भगवान् लोगों के=भव्यों के मन मे बसे हुए अनादिमिथ्यात्व पुञ्ज को दूर कर विशिष्ट आत्मतत्त्व प्रकाशित करने के कारण लोकप्रदीप हैं। जैसे–प्रदीप यद्यपि सभी जीवों के लिये तुल्यप्रकाश देने वाला है, तथापि नेत्रवान् मनुष्य ही उसके प्रकाश का आनन्द ले सकता है, उसी प्रकार भव्यलोग ही

તે તે સ્થાનમાથી ડમર, મરકી–આદિ ઉપદ્રવ પણ આમતેમ ભાગી જાય છે, તેમજ ભગવાનના ભક્તજનો પણ સર્વદા વિજયશીલ રહ્યા કરે છે (लोगुत्तमे) ચોત્રીસ અતિશયો અને પાત્રીસ વાણી ગુણોથી યુક્ત હોવાના કારણે ભગવાન ભવ્યરૂપી લોકમા ઉત્કૃષ્ટતમ છે, (लोगनाहे) લોકોના અર્થાત્ ભવ્યોના યોગક્ષેમ કરવાવાળા હોવાથી ભગવાન લોકનાથ છે (लोगहिए) તમામ પ્રાણીઓની રક્ષાના ઉપાય બતાવનાર હોવાના કારણે ભગવાન લોકોના અર્થાત્ એકેન્દ્રિય આદિ તમામ પ્રાણીઓના હિતકારક છે તે માટે લોકહિત છે (लोगपईवे) ભગવાન લોકોના–ભવ્ય જીવોના મનમા વસેલા અનાદિ મિથ્યાત્વપુંજને દૂર કરીને વિશિષ્ટ આત્મતત્ત્વ પ્રકાશિત કરનારા હોવાના કારણે લોકપ્રદીપ છે જેમકે પ્રદીપ જો કે બધા જીવોને માટે સમાન પ્રકાશ આપવાવાળો હોય છે, તોપણ

पईवे लोगपज्जोयगरे अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरण-

प्रतिबोधयितु प्रदीपदृष्टान्त अनएव लोकपदेन भव्याना ग्रहणम्। 'लोगपज्जोयगरे' लोकप्रद्योतकर—लोकशब्देनात्र लोक्यते=दृश्यते केवलालोकेन यथावस्थिततयेति व्युत्पत्त्या लोकालोकयोरुभयोर्ग्रहणम् तेन—लोकस्य—लोकालोकलक्षणस्य सकलपदार्थस्य प्रद्योत—लोकालोकप्रद्योतस्त करणशीलत्वेन शीले लोकालोकप्रद्योतकर सर्वलोकप्रकाशकरणशील । ताच्छील्ये कर्त्तरि ट प्रत्यय । 'अभयदये' अभयदय - न भयम्—अभयम्, भयानामभावो वा—अभयम्—अक्षोभलक्षण आत्मनोऽवस्थाविशेषो मोक्षसाधनभूतमुत्कृष्टधैर्यमिति यावत्, दयते—ददातीति त्यज अभयस्य दय अभयदय, यद्वा—अभया—भयरहिता—दया—सर्वजीवसङ्कटविमोचनस्वरूपाऽनुकम्पा यस्य सोऽभयदय । 'चक्खुदये' चक्षुर्दय —चक्षुर्ज्ञान—निखिलवस्तुतत्त्वाऽवभासकतया

भगवान के प्रभाव—जनित परमानन्द के भागी होते है, अभव्य नहा। (लोगपज्जोयगरे) भगवान् लोकालोकलक्षण सभी पदार्थों के प्रकाशक है, इसलिये वे लोकप्रद्योतकर है। (अभयदए) भगवान् अभयदय है—आत्माकी अक्षोभपरिणति का ना अभय है। दूसरे शब्द में इसे मोक्षका साधनभूत उत्कृष्ट धैर्य भी कहते है। प्रभुम इसे प्रदान करते है, अत वे अभयदय कह गये है। अथवा भयरहित दया जिनके पास है वे अभयदय ह। भगवान की दया समस्त जीवों को सकटो से छुडान वाली होती है, इसलिये प्रभु अभयदय है। (चक्खुदये) भगवान चक्षुर्दय है। जिस प्रकार हरिणादि जगली जानवरों से युक्त वन मे चोरो द्वारा लूटे गये और

નેત્રવાળો મનુષ્ય જ તેના પ્રકાશનો આનદ લઈ શકે છે, તે પ્રકારે જ ભવ્ય લોક જ ભગવાનના પ્રભાવજનિત પરમાનન્દના ભાગી થાય છે, અભવ્ય નહિ (लोगपज्जोयगरे) ભગવાન્ લોકાલોક લક્ષણ તમામ પદાર્થોના પ્રકાશક છે, તેથી તેઓ લોકપ્રદ્યોતકર છે (अभयदये) ભગવાન અભયદાતા છે આત્માના ક્ષોભરહિતપણાની પરિણતિનુ નામ અભય છે બીજા શબ્દમા તેને મોક્ષના સાધનભૂત ઉત્કૃષ્ટ ધૈર્ય પણ કહે છે પ્રભુ તેને પ્રદાન કરવાવાળા છે તેથી તેઓ અભયદય છે અથવા ભયરહિત દયા જેની પાસે છે તે અભયદય છે ભગવાનની દયા સમસ્ત જીવોને સકટોથી છોડાવવાવાળી હોય છે તે કારણથી પ્રભુ અભયદય છે (चक्खुदये) ભગવાન ચક્ષુર્દય છે જે પ્રકારે હરિણ આદિ જગલી જાનવરોથી યુક્ત વનમા ચોરોદ્વારા લૂટવામ

चक्षु सादृश्यात् तस्य दयो दायकश्चक्षुर्दय, यथा हरिणादिरण्येऽरण्ये लुण्टाक-लुण्टितेभ्य पट्टिकादिदानेन चक्षूंपि पिधाय हस्तपादादि बद्ध्वा तैर्गर्त्ते पातितेभ्य कश्चित्पट्टिकाऽपनोदेन चक्षुर्दत्वा मार्गं प्रदर्शयतीति तथा भगवानपि भवारण्ये रागद्वेपलुण्टाक-लुण्टिताऽऽत्मगुणधनेभ्यो दुराग्रहपट्टिकाऽऽच्छादितज्ञानचक्षुर्भ्यो मिथ्यात्वगर्ते पातितेभ्यस्त-दपनयनपूर्वक ज्ञानचक्षुर्दत्वा मोक्षमार्गं प्रदर्शयति । एतदेव प्रकारान्तरेणाऽऽह **' मग्गदए '** मार्गदय —सम्यग्रत्नत्रयलक्षण शिवपुरपथ, यद्वा—विशिष्टगुणस्थानप्रापक क्षयोपशमभावो

आखों के ऊपर पट्टी बाधकर एव हाथ पैर बाधकर खड्डे में पटके गये प्राणियों को कोई दयालु सज्जन उनकी आखों की पट्टी खोल कर एव उन्हें खड्डे से निकाल कर मार्ग दिखलाता है और इस अपेक्षा जैसे वह उन्हे व्यावहारिकरूप से चक्षु का दाता कहा जाता है उसी प्रकार भगवान् भी इस ससाररूप अरण्य में रागद्वेप आदि चोरों द्वारा जिनका आत्मगुणरूपी धन हरण किया जा चुका है एव दुराग्रहरूपी पट्टी द्वारा जिनके ज्ञानरूपी नेत्र ढके हुए है तथा जो मिथ्यात्वरूपी खड्डे में पडे है ऐसे प्राणियों को उस मिथ्यात्वरूपी खड्डे से निकालकर ज्ञानरूपी चक्षु देकर उन्हें मुक्तिमार्ग दिखलाते है, अत प्रभु **चक्षुर्दय** है। इसी बातको प्रकारान्तर से सूत्रकार पुन प्रदर्शित करते है—**(मग्गदए)** वे प्रभु मार्गदय हे—सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रय मुक्ति का मार्ग है, अथवा विशिष्ट गुणस्थानों का प्रापक क्षयोपशमभाव भी मार्ग है । प्रभु इसके दाता है। **(सरणदए)** कर्मरूपी शत्रुओं से वशीकृत होने के कारण

આવેલા અને આખોના ઉપર પટ્ટી બાધીને તેમજ હાથ પગ બાધીને ખાડામા નાખી દેવામા આવેલા પ્રાણિઓને કોઇ દયાળુ સજ્જન તેમની આખોની પટ્ટી ખોલીને તેમજ તેમને ખાડામાથી બહાર કાઢીને રસ્તો બતાવે છે અને તે અપેક્ષાએ તે જેમ તેના વ્યાવહારિકરૂપથી ચક્ષુનો દાતા કહેવાય છે, તેજ પ્રકારે ભગવાન પણ આ સસારરૂપ અરણ્યમા રાગદ્વેષ આદિ ચોરો દ્વારા જેના આત્મગુણરૂપી ધન હરણ કરવામા આવી ચુકેલુ છે તેમજ દુરાગ્રહરૂપી પટ્ટીદ્વારા જેના જ્ઞાનરૂપી નેત્ર ઢાકી દીધેલા છે તથા જે મિથ્યાત્વરૂપી ખાડામા પડયા છે તેવા પ્રાણિઓને તે મિથ્યાત્વરૂપી ખાડામાથી કાઢીને જ્ઞાનરૂપી ચક્ષુ આપીને તેમને મુક્તિમાર્ગ બતાવે છે તેથી પ્રભુ ચક્ષુર્દય છે આ વાતને પ્રકારાન્તરથી સૂત્રકાર ફરીને પ્રદર્શિત કરે છે, (मग्गदए) તેઓ (પ્રભુ) માર્ગ-દય છે—સમ્યગ્દર્શનાદિ રત્નત્રય મુક્તિનો માર્ગ છે અથવા વિશિષ્ટ ગુણસ્થાનોને પ્રાપ્ત કરાવનાર ક્ષયોપશમભાવ પણ માર્ગ છે પ્રભુ તેનો દાતા છે (सरण-

दए जीवदए बोहिदए धम्मदए धम्मदेसए धम्मनायए धम्म-

मार्ग, तस्य दय –दाता, 'सरणदए' शरणदय –शरण–परित्राण कर्मरिपुवशीकृततया व्याकुलाना प्राणिना रक्षणस्थान वा तस्य दय । 'जीवदए' जीवदय –जीवेषु–एकेन्द्रियादिसमस्तप्राणिषु दया–सङ्कटमोचनलक्षणा यस्येति, यद्वा–जीवन्ति मुनयो येन स जीव –सयमजीवित तस्य दय । 'बोहिदए' बोधिदय –बोधि –जिनप्रणीतधर्ममूलभूता तत्त्वार्थश्रद्धानलक्षणसम्यग्दर्शनरूपा तस्या दय । 'धम्मदए' धर्मदय –धर्म –दुर्गतिप्रपतज्जन्तुसरक्षणलक्षण श्रुतचारित्रात्मकस्तस्य दय । 'धम्मदेसए' धर्मदेशक – धर्म =प्राक्प्रतिपादितलक्षणस्तस्य देशक =उपदेशक । 'धम्मनायए' धर्मनायक –

व्याकुल हुए प्राणियों को प्रभु निर्भय स्थान के प्रदायक है, (जीवदए) भगवान् की दया केवल सज्ञी पचेन्द्रिय जीवों तक ही सीमित (व्याप्त) नहीं है किन्तु एकेन्द्रिय से लेकर समस्त सज्ञी असज्ञी पचेन्द्रिय प्राणियोंतक भी वह एकरस होकर वह रही है, इसलिये वे जीवदय है। अथवा–मुनिजन जिस जीवनसे जीते है ऐसा जो सयमरूप जीवित है उसके प्रदाता होने से प्रभुको जीवदय कहा गया है। (बोहिदए) भगवान समकितरूपी बोधको देने वाले है। (धम्मदए) दुर्गति में गिरते हुए प्राणियोंको जो धारण अर्थात् रक्षण करे वह श्रुतचारित्रात्मक धर्म ही धर्म है। भगवान उस धर्मके दाता है। (धम्मदेसए) भगवान् उक्तस्वरूप धर्मके उपदेशक है। (धम्मनायए) भगवान उस धर्मके नायक=नेता अर्थात् प्रभवस्थान है।

दए) કર્મરૂપી શત્રુઓથી વશ કરાએલા હોવાના કારણે વ્યાકુલ થએલા પ્રાણિઓને પ્રભુ નિર્ભય સ્થાનનો પ્રદાયક છે (જીવદયે) ભગવાનની દયા કેવલ સ જ્ઞી પચેન્દ્રિય જીવો સુધી જ વ્યાપ્ત (મર્યાદિત) નથી, પરંતુ એકેન્દ્રિયથી માંડીને સમસ્ત સંજ્ઞી અસંજ્ઞી પચેન્દ્રિય પ્રાણીઓ સુધી પણ તેઓ એકરસ થઈને વહે છે, તે માટે તેઓ જીવદય છે અથવા મુનિજન જેવુ જીવન જીવે છે તેવુ સયમરૂપ જીવન જે છે તેના પ્રદાતા હોવાથી પ્રભુને જીવદય કહેલા છે (બોહિદયે) ભગવાન્ સમકિતરૂપી બોધને દેવાવાળા છે (ધમ્મદએ) દુર્ગતિમા પડતા પ્રાણિઓનો ઉદ્ધાર અર્થાત્ રક્ષણ કરે તે શ્રુતચારિત્રાત્મક ધર્મ જ ધર્મ છે ભગવાન્ તે ધર્મના દાતા છે (ધમ્મદેસએ) ભગવાને ઉપર કહેલા સ્વરૂપ ધર્મના ઉપદેશક છે (ધમ્મનાયએ) ભગવાન તે ધર્મના નાયક=નેતા અર્થાત્ પ્રભવસ્થાન છે (ધમ્મસારહી) ભગવાન ધર્મરૂપ

सारही धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टी दीवो ताणं सरणगई पइट्ठा

धर्मस्य नायक=नेता प्रभव इति यावत्। 'धम्मसारही' धर्मसारथि—धर्मस्य सारथि, भगवति सारथित्वारोपेण धर्मे रथत्वारोपो व्यज्यत इति परम्परितरूपकालङ्कारस्तस्माद् यथा सारथी रथद्वारा तत्स्थमध्वनीन सुखपूर्वकमभीष्ट स्थान नयति उन्मार्गगमनादितश्च प्रतिरुणद्धि तथा भगवान धर्मद्वारा मोक्षस्थानमिति भाव। 'धम्मवर-चाउरत-चक्कवट्टी' धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्ती—दान—शील—तपो—भावै चतसृणा नरकादिगतीना चतुर्णां वा कषायाणामन्तो नाशो यस्मात्, अथवा—चतस्रो गतीश्चतुर कषायान् वाऽन्तयति नाशयतीति, यद्वा—चतुर्भिर्दानशीलतपोभावै कृत्वाऽन्तो रम्योऽथवा चत्वारो दानादयोऽन्ता—अवयवा

(धम्मसारही) भगवान् धर्मरूप रथका सचालन करनेवाले हैं। भगवानमे सारथिपका आरोप करनेसे धर्ममे रथत्वका आरोप व्यञ्जित होता है, इसलिये यहाँ परम्परितरूपक अलङ्कार समझना चाहिये। इसका अभिप्राय यह हे कि, जैसे सारथी रथद्वारा रथ पर बैठे हुए पथिकोंको सुखपूर्वक उनके अभीष्ट स्थानमे पहुँचाता है, उन्मार्गगमन आदिसे उनको रोकता है, उसी प्रकार भगवान भी धर्मरूप रथमें भव्य प्राणियोंको बैठाकर उसके द्वारा उन्हे उनका अभीष्ट मोक्ष स्थानतक सुखपूर्वक पहुँचा देते हैं और उन्हे उन्मार्गसे रोकते है। इसलिये भगवान् **धर्मसारथि** कहे गये है। (**धम्मवर-चाउरतचक्कवट्टी**) दान, शील, तप, एव भाव इन धर्मके जिन चार पायों द्वारा चार नरकादि गतियोका अथवा चार क्रोधादि कषायोंका नाश होता है, अथवा—चार गतियोंका एव चार कषायोका जो नाश करता है, अथवा दान, शील, तप एव

રથના સચાલન કરવાવાળા છે ભગવાનમા સારથિત્વનો આરોપ કરવાથી ધર્મમા રથત્વનો આરોપ વ્યજિત (પ્રગટ) થાય છે તેથી અહી પરપરિત-રૂપક અલકાર સમજવો જોઇએ તેનો અભિપ્રાય એ છે કે જેમ સારથી રથ દ્વારા રથ પર બેઠા બેઠા પથિકોને સુખપૂર્વક તેના અભીષ્ટ સ્થાને પહોચાડે છે, આડા—અવળા માર્ગથી તેને રોકે છે, તેજ પ્રકારે ભગવાન પણ ધર્મરૂપ રથમા ભવ્ય પ્રાણિઓને બેસાડીને તે દ્વારા તેમને તેમના અભીષ્ટ મોક્ષ સ્થાન-સુધી સુખપૂર્વક પહોચાડી દે છે અને તેમને ખોટા માર્ગથી રોકે છે આથી ભગવાન ધર્મસારથિ કહેવાય છે (धम्मवरचाउरतचक्कवट्टी) દાન, શીલ, તપ, તેમજ ભાવ એ ધર્મના જે ચાર પાયા છે તે વડે ચાર નરકાદિ ગતિઓનો અથવા ચાર કષાયોનો નાશ થાય છે અથવા ચાર ગતિઓનો તેમજ ચાર

यस्य, यद्वा-चत्वारि दानादीनि अन्तानि स्वरूपाणि यस्य, 'अन्तोऽवयवे स्वरूपे च'-इति हेमचन्द्रः । स चतुरन्त स एव स्वार्थिके प्रज्ञादित्वादणि चातुरन्तः, चातुरन्त एव चक्रं जन्मजरामरणोच्छेदकत्वेन चक्रतुल्यत्वात्, वरञ्च तत्-चातुरन्तचक्रं वरचातुरन्तचक्रम्, वरपदेन राजचक्रापेक्षयाऽस्य श्रेष्ठत्वं व्यज्यते लोकद्वयसाधकत्वात्, धर्म एव वरचातुरन्तचक्रं धर्मवरचातुरन्तचक्रं तादात्म्यं धर्माऽतिरिक्तस्यासम्भवात्। अतएव सौगतादि-धर्माभासनिरासः, तेषां तात्त्विकार्थप्रतिपादकत्वाभावेन श्रेष्ठत्वाभावात्, धर्मवरचातुरन्तचक्रेण वर्तितुं शील यस्येति धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्ती, चक्रवर्तिपदेन षट्खण्डाधिपति-सादृश्यं व्यज्यते, तथाहि-चत्वार -उत्तरदिशि हिमवान् शेषदिक्षु चोपाधिभेदेन समुद्रा अन्ता सीमानस्तेषु स्वामित्वेन भवश्चातुरन्त, चक्रेण-रत्नभूत-प्रहरणविशेषसदृशेन चारित्ररत्नेन वर्तितुं शील यस्य स चक्रवर्ती, चातुरन्तश्चासौ चक्रवर्ती च चातुरन्तचक्रवर्ती,

---

भाव इन चारको लेकर जो रम्य-श्रेष्ठ है, अथवा-दानादिक चार जिसके अवयव हैं, अथवा-दानादिक चार जिसके स्वरूप हैं, वह चतुरन्त है, चतुरन्त शब्दसे स्वार्थमें अण् प्रत्यय करने पर "चातुरन्त" बन जाता है, चातुरन्तही जन्म, जरा और मरणका उच्छेदक होनेसे एक चक्र है, इसे वर शब्दके साथ संबंधित करने पर "वरचातुरन्तचक्र" ऐसा पद बन जाता है, वर पद इस चातुरन्तचक्रको राज-चक्रकी अपेक्षा श्रेष्ठ प्रकट करनेके लिये दिया गया है । राजचक्र तो केवल इस लोककाही साधक होता है तब कि यह चातुरन्तचक्र इहलोक और परलोक इन दोनों लोकोंका साधक माना गया है । अब इस "वरचातुरन्तचक्र" पदको धर्मके साथ मिलाने पर "धर्मवरचातुरन्तचक्र" इस प्रकारका पद निष्पन्न हो जाता है,

---

કષાયોનો જે નાશ કરે છે અથવા દાન શીલ, તપ તેમજ ભાવ એ ચારને લઈને જે રમ્ય-શ્રેષ્ઠ છે અથવા દાનાદિક ચાર જેના અવયવો છે અથવા દાનાદિક ચાર જેનુ સ્વરૂપ છે તે ચતુરન્ત છે ચતુરન્ત શબ્દથી સ્વાર્થમા अण् પ્રત્યય કરવાથી ચાતુરન્ત બને છે ચાતુરન્ત જ જન્મ જરા અને મરણનો નાશ કરનાર હોવાથી ચક્ર છે, તેને વર શબ્દની સાથે જોડવાથી 'વરચાતુ-રન્તચક્ર' એવુ પદ બની જાય છે વર પદ આ ચાતુરન્તચક્રને રાજ-ચક્રની અપેક્ષાએ શ્રેષ્ઠ પ્રકટ કરવા માટે આપેલુ છે રાજ્યચક્ર તો કેવલ આજ લોકનો સાધક બને છે જ્યારે આ ચાતુરન્તચક્ર ઇહલોક અને પરલોક એ બન્ને લોકોનો સાધક માનવામા આવે છે હવે આ 'વરચાતુરન્તચક્ર' પદને ધર્મની સાથે જોડવાથી 'ધર્મવરચાતુરન્તચક્ર' આ પ્રકારનુ પદ

अप्पडिहय-वर-नाण-दंसण-धरे वियट्टच्छउमे जिणे जावए तिण्णे

धर्मेण—न्यायेन वरः श्रेष्ठ इतरतीर्थिकाऽपेक्षयेति धर्मवरः, धर्मा पुण्य—यम—न्याय स्वभावा-ऽऽचारसोमपा, इत्यमर, स चासौ चातुरन्तचक्रवर्ती च। यद्वा—चातुरन्त च तच्चक्र चातुरन्तचक्र, वरश्च तच्चातुरन्तचक्र वरचातुरन्तचक्र धर्मो वरचातुरन्तचक्रमिव धर्मवरचातुरन्त-चक्र, तेन वर्तितु वर्तयितु वा शील यस्य स तथा। 'दीवो' द्वीप —ससारसमुद्रे निमज्जता द्वीपतुल्यत्वात्। 'ताण' त्राण कर्मकदर्थिताना भव्याना रक्षणसमर्थ । अत एव तेषा 'सरणगई' शरणगति —आश्रयस्थानम्। 'पइट्ठा' प्रतिष्ठा—कालत्रयेऽप्यविनाशित्वेन स्थित । 'अप्पडिहय—वर—नाण—दसण—धरे' - अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनधर —प्रतिहत

जिसका अर्थ "धर्महीं वरचातुरन्तचक्र है" ऐसा होता है। अन्य सौगतादिक धर्म धर्मवरचातुरन्तचक्र नहीं है, क्योंकि उनमे तात्त्विकता का अभाव है। इसका भी कारण एक यही है कि वे यथावस्थित अर्थका यथार्थ प्रतिपादन नहीं करते हैं। इस धर्मवर-चातुरन्तचक्रके अनुसार जिसके वर्तन करनेका स्वभाव है वह धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्ती है, अत एव भगवान् धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्ता हैं। भगवान् ससार समुद्रमे डूबनेवाले प्राणियोंके द्वीपतुल्य है, इसलिये वे स्वय (दीवो) द्वीप हैं। (ताण) कर्मों से कदर्थित भव्योंके प्रभु रक्षक है इसलिये त्राता कहे गये हैं, और इसी कारण वे (सरणगई) भव्योंके लिये शरणस्वरूप हैं। (पइट्ठा) प्रभु स्वय प्रतिष्ठास्वरूप इसलिये हैं कि तीनों कालो म भी उनका कभी भी विनाश नहीं होता है। (अप्प-डिहय—वर—नाण—दसणधरे) प्रभुका अनतज्ञान एव अनत दर्शन अप्रतिहत—निरा-

નિષ્પન્ન થાય છે જેનો અર્થ 'ધર્મ જ વરચાતુરન્તચક્ર' છે એવો થાય છે બીજા સૌગત આદિ, ધર્મ ધર્મવરચાતુરન્તચક્ર નથી, કેમકે તેમા તાત્ત્વિકતાનો અભાવ છે તેનુ પણ કારણ એક તો એ છે કે તેઓ યથાવસ્થિત અર્થને યથાર્થ (બરાબર) પ્રતિપાદન કરતા નથી આ ધર્મવરચાતુરન્તચક્રને અનુસરીને જેનો વર્તન કરવાનો સ્વભાવ છે તે ધર્મવરચાતુરન્તચક્રવર્ત્તી છે એટલે જ ભગવાન ધર્મવરચાતુરન્તચક્રવર્ત્તી છે ભગવાન સસાર સમુદ્રમા ડૂબવાવાળા પ્રાણિઓના દ્વીપ જેવા છે તેથી તેઓ પોતે (दीवो) દ્વીપ છે (ताण) કર્મોથી કદર્થિત ભવ્યોના પ્રભુ રક્ષક છે તે માટે તેઓ ત્રાતા કહેવાય છે, અને તે જ કારણથી તેઓ (सरणगई) ભવ્યોને માટે શરણસ્વરૂપ છે (पइट्ठा) પ્રભુ પોતે પ્રતિષ્ઠા—સ્વરૂપ એટલા માટે છે કે ત્રણે કાળમા પણ તેમનો કદીએ વિનાશ થતો નથી (अप्पडिहय—वर—नाण—दसण—धरे) પ્રભુનુ

तारए बुद्धे बोहए मुत्ते मोयगे सव्वन्नू सव्वदरिसी सिव-मयल-

भित्ताद्यावरणस्खलित न प्रतिहतम्-अप्रतिहत, ज्ञानञ्च दर्शनञ्चेति ज्ञानदर्शने, वरे श्रेष्ठे च ते ज्ञानदर्शने-वरज्ञानदर्शने-केवलज्ञानकेवलदर्शने, अप्रतिहते वरज्ञानदर्शने-अप्रतिहतवरज्ञानदर्शने, धरतीति धर -अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनयोर्धर -अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनधर - आवरणरहितकेवलज्ञानकेवलदर्शनधारी। 'वियट्टच्छउमे' व्यावृत्तच्छद्मा-छाद्यते-आच्रियते केवलज्ञान-केवलदर्शनाद्यात्मनोऽनेनेति छद्म-घातिकर्मवृन्द-ज्ञानावरणीयादिरूप कर्मजालम्, व्यावृत्त-निवृत्त छद्म यस्मात् स व्यावृत्तच्छद्मा। 'जिणे' जिन - रागद्वेषशत्रुनिर्जेता। 'जावए' जापक -जापयति=रागद्वेषादिशत्रून् जयन्त भव्यजीवगण धर्मदेशनादिना प्रेरयतीति जापक। 'तिण्णे' तीर्ण -स्वय संसारौघ तीर्ण -उत्तीर्ण। 'तारए' तारक -तारयति-उत्तोऽन्यान भव्यजीवान् प्रेरयतीति तारक। 'बुद्धे' बुद्ध -स्वय

वरग एव वर=श्रेष्ठ हैं अर्थात् प्रभु आवरणरहित केवलज्ञान, केवलदर्शन के धारक हैं। (वियट्टच्छउमे) केवलज्ञान एव केवलदर्शनादिक जिसके द्वारा आवृत होते हैं वह यहा छद्म शब्दसे गृहीत हुआ है, अत इस दृष्टिसे 'छद्म' शब्दका अर्थ घातिक कर्म होता है, यह छद्म प्रभुकी आत्मासे सर्वथा निवृत्त हो चुका है, इसलिये प्रभु व्यावृत्तछद्म है। (जिणे) रागादिक अन्तरग शत्रुओं पर विजय पाने से प्रभु जिन हैं। (जावए) जीतनेवाले भव्यजीवों को प्रभु ने अपनी धर्मदेशना द्वारा आत्मकल्याण के मार्ग की ओर प्रेरित किया, इसलिये प्रभु जापक-जितानेवाले हैं। (तिण्णे) ससारसमुद्र से पार होने की वजह से प्रभु स्वय तीर्ण हैं। (तारए) भगवान ने ससारसमुद्र से पार होने के इच्छावाले जीवों को प्रेरित किया इसलिये

અનંતજ્ઞાન તેમજ અનંત દર્શન અપ્રતિહત-નિરાવરણ તેમજ વર=શ્રેષ્ઠ છે અર્થાત્ પ્રભુ આવરણરહિત કેવલજ્ઞાન અને કેવલ દર્શનના ધારક છે (वियट्टच्छउमे) કેવલજ્ઞાન તેમજ કેવલ દર્શનાદિક જેના દ્વારા ઢંકાઈ જાય છે તે અહીં છદ્મ શબ્દથી લેવામાં આવેલ છે આમ એ દૃષ્ટિથી છદ્મ શબ્દનો અર્થ ઘાતિકર્મ થાય છે આ છદ્મ પ્રભુના આત્માથી સર્વથા નિવૃત્ત થયેલો છે માટે પ્રભુ વ્યાવૃત્ત-છદ્મ છે (जिणे) રાગાદિક અંતરંગ શત્રુઓ પર વિજય મેળવવાથી પ્રભુ જિન છે (जावए) જીતવાવાળા ભવ્ય જીવોને પ્રભુએ પોતાની ધર્મદેશના દ્વારા આત્મકલ્યાણના માર્ગના તરફ પ્રેરિત કર્યા તે માટે પ્રભુ જાપક-જીતાવવાવાળા છે (तिण्णे) સંસાર સમુદ્રથી પાર થવાના કારણે પ્રભુ પોતે તીર્ણ છે (तारए) ભગવાને સંસાર સમુદ્રથી પાર થવાના ઈચ્છાવાળા જીવોને

बोध प्राप्त । 'बोहए' बोधक बुध्यमानान् अन्यान् भव्यजीवान् प्रेरयतीति बोधक 'मुत्ते' मुक्त–अमोचि स्वय कर्मपञ्जरादिति मुक्त । 'मोयए' मोचक–मुच्यमानानन्यान् भव्यजीवान् प्रेरयतीति मोचक । 'सव्वण्णू' सर्वज्ञ–सर्वं सकलद्रव्य–गुण–पर्यायलक्षण वस्तुजात याथातथ्येन जानातीति सर्वज्ञ । 'सव्वदरिसी' सर्वदर्शी–सर्वं–समस्त पदार्थस्वरूप सामान्येन द्रष्टु शीलमस्याऽसौ सर्वदर्शी। 'सिव' शिव निखिलोपद्रवरहितत्वाच्छिव–कल्याणमय, स्थानमित्यस्य विशेषणमिदम्। शिवादीना सर्वेषा द्वितीयान्तानामग्रेतनेन सपाविउकामे–इत्यनेन सम्बन्ध । 'अयल' अचल स्वाभाविकप्रायोगिकचलनक्रियाशून्यम्। 'अरुय' अरुजम्–अविद्यमाना रुजो यस्य

तारक है। (बुद्धे) स्वय बोध को प्राप्त होने के कारण भगवान् बुद्ध है, (बोहए) बुध्यमान अनेक भव्य जीवों को प्रेरित करने से वे बोधक है, (मुत्ते) भगवान ने स्वय कर्मरूपी पींजरे से मुक्ति प्राप्त की, इसलिये मुक्त हैं। (मोयगे) और कर्मरूपी पींजरे से मुक्त होने की इच्छावाले जीवों को उन्हों ने मुक्त किया इसलिये वे मोचक है। (सव्वण्णू) सकलद्रव्यों के समस्त गुण और पर्यायों को युगपत् हस्तामलकवत् यथार्थ जानने से प्रभु सर्वज्ञ हैं। (सव्वदरिसी) तथा सामान्यरूप से त्रिकालवर्ती समस्त द्रव्यों के द्रष्टा होने से प्रभु सर्वदर्शी है। (सिव–मयल–मरुय–मणत–मक्खय–मव्वाबाह–मपुणरावत्ति सिद्धिगइणामधेय ठाण सपाविउकामे) निखिल उपद्रव रहित होने से शिव=कल्याणमय, स्वाभाविक एव प्रायोगिक चलनक्रिया से शून्य होने के कारण अचल, शरीर तथा मन से

પ્રેરિત કર્યા તેથી તેઓ તારક છે (बुद्धे) પોતે બોધ પામેલા હોવાના કારણે ભગવાન બુદ્ધ છે (बोहए) બુધ્યમાન અનેક ભવ્ય જીવોને બોધ માટે પ્રેરિત કરવાથી તેઓ બોધક છે (मुत्ते) ભગવાને પોતે કર્મરૂપી પાંજરામાંથી મુક્તિ પ્રાપ્ત કરી તેથી તેઓ મુક્ત છે (मोयगे) અને કર્મ-રૂપી પીંજરામાંથી મુક્ત થવાના ઈચ્છાવાળા જીવોને તેઓએ મુક્ત કર્યા તેથી તેઓ મોચક છે (सव्वण्णू) સકલ દ્રવ્યો (પદાર્થોના) સમસ્ત ગુણ અને પર્યાયોને યુગપત્ હસ્તામલકવત્ યથાર્થરૂપે જાણવાથી પ્રભુ સર્વજ્ઞ છે (सव्वदरिसी) તથા સામાન્ય રૂપથી ત્રિકાલવર્તી સમસ્ત દ્રવ્યોના દ્રષ્ટા હોવાથી પ્રભુ સર્વદર્શી છે (सिव–मयल–मरुय–मणत–मक्खय–मव्वाबाह–मपुणरावत्ति सिद्धिगइणामधेय ठाण संपाविउकामे) સકળ ઉપદ્રવ રહિત હોવાથી શિવ=કલ્યાણ મય, સ્વાભાવિક તેમજ પ્રાયોગિક ચલન ક્રિયાથી શૂન્ય હોવાના કારણે અચલ,

मरुय-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइणामधेयं ठाणं संपाविउकामे अरहा जिणे केवली सत्तहत्थुस्सेहे समचउ-

तत्-अविद्यमानशरीरमनस्कत्वात्-आधिव्याधिरहितम् इत्यर्थः। 'अणंत' अनन्तम्-अविद्यमानोऽन्तो नाशो यस्य तत्। अत एव 'अक्खय' अक्षय-नास्ति केनापि क्षयो यस्य तत्-अविनाशीत्यर्थः। 'अव्वाबाह'-अव्याबाध न विद्यते व्याबाधा-पीडा द्रव्यतो भावतश्च यत्र तत्। 'अपुणरावित्ति' अपुनरावृत्ति-अविद्यमाना पुनरावृत्ति-संसारे पुनरागमनं यस्मात् तत्, यत्र गत्वा न कदाचिदप्यात्मा विनिवर्तते, समाम्नातमन्यत्राऽपि-न स पुनरावर्तते, न स पुनरावर्तते-इति। इत्थमुक्तविशेषणविशिष्ट-'सिद्धिगइनामधेय' सिद्धिगतिनामधेय-सिद्धिगतिरिति नामधेय=प्रशस्तं नाम यस्य तत्, 'ठाणं' स्थानम्-स्थीयतेऽस्मिन् इति स्थान-लोकाग्रलक्षणम्। 'संपाविउकामे' सम्प्राप्तुकामः सम्यक् प्राप्तुं प्रयतमानः इत्यर्थः। 'अरहा' अरहा-अविद्यमान रह-तिरोहितं वस्तुजातं यस्य सोऽरहा, 'अरहस्' इति सकारान्त शब्द, केवलज्ञानबलात् हस्तामलकीकृतलोकालोकवर्तिवस्तुकलाप इति यावत्। 'जिणे' जिन-रागद्वेषादिविजेता। 'केवली' केवली-केवलज्ञानसम्पन्न। 'सत्तहत्थुस्सेहे' सप्तहस्तोत्सेध-उत्सेध=उच्चैस्त्व

रहित होने के कारण अरुज-आधिव्याधिरहित, अनन्त-नाशरहित, अतएव अक्षय, अव्याबाध-द्रव्यपीडा एव भावपीडासे सर्वथा निर्मुक्त, अपुनरावृत्तिस्वरूप-जहा प्राप्त होने पर पुन संसार मे वापिस जीव का आना न हो ऐसे स्वरूपवाले, सिद्धिगति इस प्रशस्त नाम से प्रसिद्ध स्थान-लोकाग्रस्थान को प्राप्त करने वाले [अरहा] केवलज्ञान के बल मे लोकालोकवर्ति समस्त वस्तुजात को हस्तामलकवत जानने वाले वे प्रभु है, एव (जिणे) रागद्वेषादिके विजेता है [केवली] केवलज्ञानसपन्न है। [सत्त-

शरीर तथा मनथी रहित होवाना कारणे अरुज-आधि-व्याधि-रहित, अनंत-नाश रहित, अने तेटला माटे अक्षय, अव्याबाध-द्रव्यपीडा तेमज भावपीडाथी सर्वथा निर्मुक्त, अपुनरावृत्तिस्वरूप-ज्या पहोच्या पछी फरीथी संसारमां पाछा जीवनुं आववुं न थाय एवा स्वरूपवाळा सिद्धिगति ए प्रशस्त नामथी प्रसिद्ध स्थान-लोकाग्र स्थानने प्राप्त करवावाळा (अरहा) केवल ज्ञानना बळथी लोकालोकवर्ती समस्त वस्तुजातने हस्तामलकवत् जाणवावाळा ते प्रभु छे, तेमज (जिणे) रागद्वेष आदिना विजेता छे (केवली) केवलज्ञान-संपन्न छे (सत्तहत्थुस्सेहे) सात हाथ उंचा छे (सम-चउरस-सठाण-सठिए)

रंस-संठाण-संठिए वज्ज-रिसह-नाराय-संघयणे अणुलोमवाउवेगे कंकग्गहणी कवोयपरिणामे सउणिपोस-पिट्ठंतरोरुपरिणए पउमु-

सप्तहस्त उत्सेधो यस्य स सप्तहस्तोत्सेधः—सप्तहस्तोच्छ्रित इत्यर्थः । 'सम-चउ-रस-संठाण-संठिए' सम-चतुरस्र-संस्थान-संस्थित—समाः—तुल्या अन्यूनाधिकाः, चतस्रोऽस्रयः=हस्तपादोपर्यधोरूपाश्चत्वारोऽपि विभागाः [शुभलक्षणोपेताः] यस्य (संस्थानस्य) तत् समचतुरस्र—तुल्यारोहपरिणाहं तच्च संस्थानम्—आकारविशेषः इति समचतुरस्र-संस्थानं, तेन संस्थितः=युक्तः । 'वज्ज-रिसह-नाराय-संघयणे' वज्रर्षभनाराचसंहनन—वज्र=कीलिकाकारमस्थि, ऋषभः—तदुपरिवेष्टनपट्टाऽऽकृतिकोऽस्थिविशेषः, नाराचम्—उभयतोमर्कटबन्धः, तथा च द्वयोरस्थ्नोः परिवेष्टितयोरुपरि तदस्थित्रय पुनरपि दृढी-कर्तुं तत्र निखातं कीलिकाऽऽकारं वज्रनामकमस्थि यत्र भवति तद् वज्रऋषभनाराचं तत् संहननम्—संहन्यन्ते=दृढीक्रियन्ते शरीरपुद्गला येन तत्संहननम्—अस्थिनिचयो यस्य स वज्रऋषभनाराचसंहननः । 'अणुलोमवाउवेगे' अनुलोमवायुवेग—अनुलोमोऽनुकूलो वायुवेगः=शरीराऽन्तर्वर्ती वायुवेगो यस्य स तथा, वायुप्रकोपरहितदेह इत्यर्थः, 'कंकग्गहणी' कङ्कग्रहणी—कङ्कः पक्षिविशेषः, तस्य ग्रहणीव ग्रहणी यस्य स कङ्कग्रहणी—कङ्कगुदाशयवद् गुदाशयवान् । 'कवोयपरिणामे' कपोतपरिणाम—कपोतस्येव परिणामः आहारपरिपाको यस्य स तथा, यथा कपोतस्य जाठराऽनलः पाषाणकणानपि पाचयति तथा तस्यापि जाठरानलोऽन्तप्रान्तादिसर्वविधाऽऽहारपरिपाचकः । 'सउणि-

हत्थुस्सेहे] सात हाथ ऊँचे है। (समचउरस-संठाण-संठिए) समचतुरस्रसंस्थान-वाले [वज्ज-रिसह-नाराय-संघयणे] वज्र-ऋषभ-नाराच-संहनन से युक्त [अणु-लोमवाउवेगे] अनुकूल शरीरान्तर्वर्ती वायु के वेग से समन्वित, [कंकग्गहणी] कंकपक्षी के गुदाशय के समान गुदाशयवाले, [कवोयपरिणामे] कपोत की जठराग्नि जिस प्रकार कंकर पत्थर के कणों को भी पचा देती है उसी प्रकार प्रभु की जठराग्नि भी सब प्रकार के आहार को पचा देती है ऐसी जठराग्नि वाले,

સમચતુરસ્ર સંસ્થાનવાળા (वज्ज-रिसह-नाराय-संघयणे) વજ્ર-ઋષભ-નારાચ-સંહનનથી યુક્ત (अणुलोमवाउवेगे) અનુકૂલ શરીરાંતર્વર્તી વાયુના વેગથી સમન્વિત, (कंकग्गहणी) કંક પક્ષીના ગુદાશયના જેવા ગુદાશયવાળા (कवोयपरिणामे) કપોતની જઠરાગ્નિ જે પ્રકારે કાંકરા-પત્થરની કણીઓને પણ પચાવી દે છે તેજ પ્રકારે પ્રભુની જઠરાગ્નિ પણ અન્ત પ્રાન્તઆદિ સર્વ પ્રકા

प्पल-गंध-सरिस-निस्सास-सुरभि-वयणे छवी निरायंक-उत्तम-पस-

पोस-पिट्ठतरोरु-परिणए' शकुनि-पोस-पृष्ठान्तरोरुपरिणत -शकुने पक्षिण पोसवत् पुरीषसम्पर्करहितो निरुपलेप पोस -गुदाशयो यस्य स शकुनिपोस, पृष्ठश्च अन्तरे च- पृष्ठोदरयोरन्तरालवर्तिनी अङ्गे-पार्श्वाविति यावत्, ऊरू च जङ्घे एतेषा प्राण्यङ्गत्वात्समाहार- द्वन्द्वे-पृष्ठा-ऽन्तरोरु पृष्ठपार्श्वजङ्घम्-तत् परिणत-विशिष्टपरिणामवत्-सुजात यस्य स तथा, शकुनिपोसश्चासौ पृष्ठान्तरोरुपरिणतश्च स शकुनिपोसपृष्ठाऽन्तरो- रुपरिणत -निर्लेपमलद्वारसुन्दरपृष्टपार्श्वजङ्घावान्-इत्यर्थ । 'पउमु-प्पल-गंध- सरिस-निस्सास-सुरभि-वयणे' पद्मोपल-गन्ध-सदृश-नि श्वास-सुरभि-वदन -पद्म= कमलम्, उत्पल=नीलकमल तयोर्गन्ध, अथवा पद्म-पद्मकाभिधान गन्ध- द्रव्यम्, उपल च उपलकुष्ट तयोर्गन्ध, तेन सदृश -समो यो नि श्वास - श्वासोच्छ्वासपवन तेन सुरभि-सौरभमय वदन-मुख यस्य स तथा, परिमल- मयपदार्थसौरभसम्भारसम्भृतश्वासोच्छ्वासमुरभितमुख इति भाव । 'छवी' छवि -छविमान्-दीप्तिदेदीप्यमानशरीर इत्यर्थ । 'निरायक-उत्तम-पसत्थ-अइ- सेय-निरुवम-पले' निरातङ्कोत्तमप्रशस्ताऽतिश्वेतनिरुपमपल, तत्र-आतङ्को रोगो निर्गतो यस्मात् तन्निरातङ्क नीरोगम्, उत्तमम्-उत्कृष्टतमम् अत एव प्रशस्तम्, अतिश्वेतम्-

---

(सउणिपोस-पिट्ठतरोरु-परिणए) शकुनि-पक्षी के-गुदाशय की तरह पुरीष के उत्सर्ग के ससर्ग से रहित गुदाशयवाले, एव सुन्दर पृष्ठ, पार्श्व और जघावाले (पउमु-प्पल-निस्सास-सुरभिवयणे) पद्म-कमल एव उत्पल-नीलकमल अथवा पद्म-पद्मकनामक गध द्रव्य और उत्पल-उत्पलकुष्ठ-सुगन्धद्रव्य विशेष, इनकी सुगध के समान उच्छ्वासवायु से सुरभितमुखवाले [छवी] कान्तियुक्त शरीरवाले, [निरायक-उत्तम-पसत्थ-अइसेय-निरुवम-पले] रोगमुक्त, सर्वोत्तमगुणयुक्त,

---

રના આહારને પચાવી દે છે એવા જઠરાગ્નિવાળા છે (सउणि-पोस-पिट्ठतरोरु-परिणए) શકુનિ-પક્ષીના ગુદાશયની પેઠે મળના સંસર્ગથી રહિત ગુદાશયવાળા તેમજ સુંદર પૃષ્ઠ (પીઠ) પાર્શ્વ (પડખા) અને જંઘા વાળા (पउमु-प्पल-निस्सास-सुरभि-वयणे) પદ્મ-કમલ તેમજ ઉત્પલ-નીલકમલ, અથવા પદ્મ-પદ્મક નામક ગંધ દ્રવ્ય અને ઉત્પલ-ઉત્પલ કુષ્ઠ-સુગન્ધ દ્રવ્ય વિશેષ, એમની સુગંધના જેવા ઉચ્છ્વાસ વાયુથી સુરભિત-સુગંધિત મુખવાળા (छवी) કાંતિયુક્ત શરીરવાળા (निरायक-उत्तम-पसत्थ-अइसेय-निरुवम-पले) રોગમુક્ત,

रथ-अइसेय-निरुवम-पले जल्ल-मल्ल-कलंक-सेय-रय-दोस-वज्जियसरी-र-निरुवलेवे छाया-उज्जोइयग-पच्चंगे घण-निचिय-सुबद्ध-लक्खणु-ण्णय-कूडागारनिभपिंडिय-सिरए सामलिबोंड-घणनिचिय-च्छोडिय-

अतिशयशुभगुणयुक्त, निरुपमम्-अनुपम पल मांस यस्य स, रोगमुक्तमर्वोत्तम-गुणयुक्तश्वेतनिरुपम-मांसवान्-इत्यर्थ । **'जल्ल-मल्ल-कलङ्क-सेय-रय-दोस-वज्जिय-शरीर-निरुवलेवे'** जल्ल-मल्ल-कलङ्क-स्वेद-रजो-दोष-वर्जित-शरीर-निरुपलेप, तत्र-जल्ल-शरीरमल शुष्कस्वेदरूप, 'जल्ल' इति देशीय शब्द, मल्ल-शरीरगत प्रयत्नविशेषापनेय कठिनीभूत रज, कलङ्क-दुष्टमशतिलादिरूप, स्वेद-प्रस्वेद, रज-धूलि, तेषा यो दोष-मलिनीकरण तेन वर्जितम् अतएव निर्लेप-निर्मल शरीर यस्य स तथा, विविधमलकलङ्कस्वेदरेणुदोषरहिततया निर्लेपनिर्मल-शरीरवानित्यर्थ । **'छाया-उज्जोइय-गपच्चगे'** छायोद्योतिताङ्गप्रत्यङ्ग-छायया-कान्त्या उद्योतितानि-चाकचिक्ययुक्तानि अङ्गप्रत्यङ्गानि-अङ्गोपाङ्गानि यस्य स तथा, अनुपमकान्त्या देदीप्यमानाऽङ्गप्रत्यङ्ग इत्यर्थ । **'घण-निचिय-सुबद्ध-लक्खणु ण्णय-कूडागारनिभ-पिंडिय सिरए'** घन-निचित-सुबद्ध-लक्षणोन्नत-कूटाऽऽकारनिभ-पिण्डित-शिरस्क, तत्र-घनम्-अतिशयेन निचित घननिचितम्-अतिनिबिडम्, सुष्ठु-अतिशयेन

श्वेत एव निरुपम मांसवाले [**जल्ल-मल्ल-कलंक-सेय-रय-दोस-वज्जिय-सरीर-निरुवलेवे**] विविध प्रकार के मैल-शुष्कस्वेदरूप जल्ल, कठिनीभूत रज स्वरूप मल्ल, दुष्ट मस्सा तिल आदिरूप कलङ्क, स्वेद-प्रस्वेद रज-धूलि के दोष से वर्जित शरीर होने से निर्मल शरीरवाले, [**छायाउज्जोइयगपच्चगे**] कान्ति से चमकते हुए अंगोपांगवाले, (**घणनिचिय-सुबद्ध-लक्खणु-ण्णय-कूडागारनिभ-पिंडिय-सिरए**) अतिनिबिड, स्पष्टरीति से प्रकटित-शुभलक्षण-सम्पन्न, उन्नत कूटाकार तुल्य एव

सर्वोत्तमगुणयुक्त, श्वेत, तेमज निरुपम मांसवाळा (जल्ल-मल्ल-कलंक-सेय-रय-दोस-वज्जिय-सरीर-निरुवलेवे) विविध प्रकारना मेल-सुकायेला परसेवा रूप जल्ल, कठण बनेल रजस्वरूप मल्ल, दुष्ट मसा तल आदि रूप कलंक, तेमज स्वेद-प्रस्वेद रज-धूळना दोषथी वर्जित शरीर होवाथी निर्मळ शरीरवाळा (छाया-उज्जोइयगपच्चगे) कांतिथी चमकारा मारता अंग उपांगवाळा (घण-निचिय-सुबद्ध-लक्खणु-ण्णय-कूडागारनिभ-पिंडिय-सिरए) अतिनिबिड, स्पष्ट रीतथी प्रकटित शुभलक्षण-संपन्न, उन्नत कूटाकार तुल्य तेमज निर्माण नामना

मिउ-विसय-पसत्थ-सुहुम-लक्खण-सुगंधि-सुंदर-भुयमोयग-भिंग-
नेल-कज्जल-पहट्ठ-भमरगण-णिद्ध-निकुरुंब-निचिय-कुंचिय-पया-

बद्धानि—अवस्थितानि प्रकृततया विद्यमानानि लक्षणानि शिरःसम्बन्धिशुभलक्षणानि यत्र तत् सुबद्धलक्षणम्, उन्नतम्—मध्यभागे उच्चं यत् कूटं तस्य यः आकारस्तन्निभम्—उन्नतकूटाकारसदृशमिति भावः। पिण्डित—निर्माणकर्मणा संयोजितं शिरो यस्य स घन निचित—सुबद्ध—लक्षणोन्नत—कूटाकारनिभ-पिण्डित-शिरस्कः। 'सामलिबोंड-घणनिचिय-च्छोडिय-मिउ-विसय पसत्थ-सुहुम-लक्खण-सुगधि-सुंदर भुयमोयग-भिंग-नेल-कज्जल-पहट्ठ-भमरगण-णिद्ध-निकुरुंब-निचिय-कुंचिय-पयाहिणावत्त-मुद्ध-सिरए' शाल्मलि-बोण्ड-घननिचित-च्छोटित-मृदु विशद-प्रशस्त-सूक्ष्म-लक्षण-सुगन्धि-सुन्दर-भुजमोचक-भृङ्ग-नैल-कज्जल प्रहृष्ट-भ्रमरगण-स्निग्ध-निकुरम्ब-निचित-कुञ्चित-प्रदक्षिणावर्त-मूर्द्ध-शिरोजः—शाल्मलिः वृक्षविशेषः, तस्य बोण्डः=फलं, घननिचितम्—अतिनिबिडं, छोटित—स्फोटितं—तूल्याप्तं शाल्मलि—फलखण्डं तद्वत् मृदवः—मृदुलाः—इति शाल्मलिबोण्डघननिचितच्छोटितमृदवः, अयमर्थः शिरोभागे कठिन, उपरिभागे शाल्मलिफलखण्डगत—तूलवन्मृदुलाः केशाः इति भावः। तथा—विशदाः—निर्मलाः, प्रशस्ताः—उत्तमाः सूक्ष्माः—तनुतराः, लक्षणाः—सुलक्षणवन्तः, सुगन्धयः—शोभनगन्धयुक्ताः, सुन्दराः—मनोहराः, तथा भुजमोचकरत्न=नीलरत्नविशेष इव, भृङ्गवत्—भ्रमरवत्, एवं नैलवत्—नालीविकारवद्—

निर्माणनाम कर्म द्वारा सुरचित ऐसे मस्तकवाले, [सामलिबोंड—घणनिचिय—च्छोडिय—मिउ—विसय—पसत्थ—सुहुम—लक्खण—सुगंधि—सुंदर—भुयमोयग—भिंग—नेल-कज्जल—पहट्ठ—भमरगण—णिद्ध—निकुरुंब—निचिय—कुंचिय—पयाहिणावत्त—मुद्ध—सिरए] सेमरवृक्ष के फलान्तर्गत तूल के समान मृदुल विशद—निर्मल, प्रशस्त—उत्तम, सूक्ष्म—तनुतर (पतले), लक्षण—सुलक्षणयुक्त, सुगन्ध—शोभनगंध पन्न, सुन्दर—मनोहर तथा—नील रत्नविशेष की तरह लच्छेदार, नीलगुलिका की तरह नीले, कज्जल की

કર્મથી સુરચિત એવા મસ્તકવાળા (सामलिबोंड—घणनिचिय—च्छोडिय—मिउ-विसय—पसत्थ—सुहुम—लक्खण—सुगंधि सुंदर—भुयमोयग—भिंग—नेल—कज्जल—पहट्ठ भमर गण—निद्ध—निकुरुंब—निचिय—कुंचिय—पयाहिणावत्त—मुद्ध—सिरए) સેમર વૃક્ષના ફલની અંતર્ગત રૂના જેવા કોમળ, વિશદ—નિર્મળ, પ્રશસ્ત—ઉત્તમ, સૂક્ષ્મ હળવા પાતળા, લક્ષણ—સુલક્ષણયુક્ત, સુગંધ—શોભનગંધ પન્ન, સુંદર—મનોહર તથા નીલ રત્નવિશેષની પેઠે લછેદાર, નીલગુલિકાની જેમ લીલા, કાજળના

हिणावत्त-मुद्धसिरए दालिमपुप्फप्पगास-तवणिज्ज-सरिस-निम्मल-सुणिद्ध-केसंत-केसभूमी छत्तागारुत्तिमंगदेसे णिव्वण-सम-लट्ठ-मट्ठ-चंदद्ध-सम-णिडाले उडुवइ-पडिपुण्ण-सोम्मवयणे अल्लीण-

नीलीगुलिकावत्, कज्जलवत्-मषीवत्, प्रहृष्ट-भ्रमर-गणवत्-सोल्लास-भ्रमर-वृन्दवत् स्निग्ध=कान्तियुक्तम्-अतीवश्याममित्यर्थ, निकुरम्ब=समूहो येषा ते भुजमोचक-भृङ्ग-नैल-कज्जल-प्रहृष्ट-भ्रमर-गणस्निग्धनिकुरम्बा, ते च पुनर्निचिता=परस्पर श्लिष्टा कुञ्चिता= वक्रीभूता-कुण्डलवद्वर्तुलाकारा प्रदक्षिणाऽऽवर्त्ता-प्रदक्षिणम् आवर्तन्ते ते तथा मूर्द्धनि-मस्तके, शिरोजा-केशा यस्य स तथा-शाल्मलि-फलखण्डव कोमलातिश्यामल-कृष्णमणि-भ्रमरकज्जलवत्कृष्णतर-परस्परश्लिष्ट-प्रदक्षिणावर्त-कुञ्चित-मस्तककेशवानिति यावत्। केशोत्पत्तिस्थान वर्ण्यते-'दालिम-पुप्फ-प्पगास-तवणिज्ज-सरिस-निम्मल-सुणिद्ध-केसत-केसभूमी' दाडिम-पुष्प-प्रकाश-तपनीय-सदृश-निर्मल-सुस्निग्ध-केशान्त-केशभूमि, तत्र-दाडिम-पुष्प-प्रकाशा रक्तवर्णेत्यर्थ, तपनीयसदृशी-अग्निप्रतप्त सुवर्णसदृशवर्णा, तथा-निर्मला-उज्ज्वला, सुस्निग्धा-सुचिक्कणा, केशान्ते=केशसमीपे-केशमूले केशभूमि-केशोत्पत्तिस्थान-मस्तकत्वक् यस्य स तथा, पूर्वोक्तमेव-विशेषण प्रकारान्तरेणाह-'छत्तागारुत्तिमगदेसे' छत्राऽऽकारोत्तमाङ्गदेश-छत्राऽऽकार-वर्तुलोन्नत वस्तुयोगाच्छत्राऽऽकृति-उत्तमाङ्गदेश-मस्तकप्रदेशो यस्य स, अयुन्नतोत्तमाङ्गवान् इति

तरह काले, प्रहृष्टभ्रमरगण की तरह कान्तियुक्त, परस्पर मे सश्लिष्ट-विरले नहीं, टेढे कुण्डल की तरह वर्तुल आकारयुक्त दक्षिणावर्त केशों से युक्त थे, अर्थात्-घुॅघरवालवाले थे। [दालिमपुप्फ-प्पगास-तवणिज्जसरिस-निम्मल-सुणिद्ध-केसत-केस-भूमी] भगवान् के मस्तक की त्वचा दाडिम के पुष्प के समान लाल, तथा ताये हुए सुवर्ण के समान निर्मल एव स्निग्ध=चिकण थी। (छत्तागारुत्तिमगदेसे) भगवान का मस्तक छत्र समान गोलाकार था। (णिव्वण-सम-

જેવા કાળા, પ્રહૃષ્ટ ભ્રમરાની પેઠે કાંતિયુક્ત, પરસ્પરમાં સશ્લિષ્ટ, વિરલ નહિ, વાંકા કુંડલની પેઠે વર્તુળ આકારવાળા દક્ષિણાવર્ત કેશોથી યુક્ત ભગવાન હતા અર્થાત્ ઘુઘરવાળા વાળ વાળા હતા (दालिमपुप्फ-पगास तवणिज्ज सरिस निम्मल-सुणिद्ध-केसत केस भूमी) ભગવાનના મસ્તકની ત્વચા [ચામડી] દાડમના પુષ્પના જેવી લાલ, તથા તાવેલા સુવર્ણના જેવી નિર્મળ તેમજ સ્નિગ્ધ ચિકણી હતી, (छत्तागारुत्तिमगदेसे) ભગવાનનું મસ્તક છત્રની પેઠે ગોલાકાર

पमाणजुत्त-सवणे सुस्सवणे पीण-मंसल-कवोल-देसभाए आणा-
मिय-चाव-रुइल-किण्हब्भराइ-तणु-कसिण-णिद्ध-भमुहे अवदा-

भाव, 'णिव्वण-सम-लट्ठ-मट्ठ-चदद्ध-सम-णिडाले' निर्व्रण-सम-लष्ट- मृष्ट-चन्द्रार्द्ध-सम-ललाट तत्र-निर्व्रण-क्षतरहित तथा व्रणकिणरहित, सम-विषमतारहित, लष्ट-सुन्दर, मृष्ट-शुद्ध चन्द्राऽर्द्धसमम्-अष्टमी-चन्द्र-मण्डलाऽऽकारम्, ललाट-भालस्थल यस्य स, अष्टमी-चन्द्र-मण्डल-समानाकार-सुन्दर-ललाट इति भाव। 'उडुवइ-पडिपुण्ण-सोम्मवयणे' उडुपति-प्रतिपूर्ण-सौम्यवदन उडुपति-शारदीयपूर्णचन्द्रस्तद्वत् परिपूर्ण-प्रभासमूहसम्भृत, सौम्य-सुन्दर, वदन-मुख यस्य स तथा, शारदपूर्णचन्द्र-समान-सुन्दर-मुख इत्यर्थ। 'अल्लीण-पमाणजुत्त-सवणे' आलीन प्रमाणयुक्त-श्रवण -समुचितप्रमाणकर्णयुक्त, अत एव-'सुस्सवणे' सुश्रवण, शोभनकर्णवान् 'पीण-मसल-कवोल-देसभाए' पीन-मासल-कपोल-देशभाग -पीनौ-पुष्टौ, मासलौ मासपूर्णौ कपोलदेशभागौ-कपोलावयवौ यस्य स तथा-सुपुष्टकपोलयुक्त इति भाव। 'आणामिय-चाव-रुइल-किण्हब्भराइ-तणु-कसिण-णिद्ध-भमुहे' आनामित चाप-रुचिर-कृष्णाभ्रराजि-तनु-कृष्ण-स्निग्ध-भ्रू -आनामित-चाप -वक्रीकृतधनु, तद्वद्रुचिरे-सुन्दरे तथा कृष्णा-भ्रराजी इव श्याममेघपङ्क्ती इव तनू-सूक्ष्मे, कृष्णे-श्यामे, स्निग्धे-चिक्कणे- भ्रुवौ यस्य स तथा, वक्रकृष्णसूक्ष्मचिक्कण-

लट्ठ-मट्ठ-चदद्ध-सम-णिडाले) भगवान का भालस्थल व्रण के चिह्न से रहित, विषमता से वर्जित, सुन्दर, शुद्ध एव अष्टमी के चद्रमा के समान था। [उडु-वइ-पडिपुण्ण-सोम्मवयणे] प्रभु का मुख शरद ऋतु के पूर्णचन्द्रमण्डल समान सुन्दर और आह्लादक था। [अल्लीण-पमाण-जुत्त-सवणे] कान प्रमाणयुक्त थे। [सुस्सवणे] इसलिये भगवान सुन्दर कानवाले थे। (पीण-मसल-कवोल-देसभाए) भगवान के पुष्ट एव भरे हुए सुन्दर कपोल थे। (आणामिय-चाव-रुइल-किण्ह-ब्भराइ-तणु-कसिण-णिद्ध-भमुहे) वक्रित धनुष के समान रुचिर, तथा कृष्णमेघ

હતુ (णिव्वण-सम लट्ठ मट्ठ चदद्ध-सम-णिडाले) ભગવાનનુ લલાટ વ્રણના ચિહ્નથી રહિત, વિષમતાથી વર્જિત, સુદર, શુદ્ધ તેમજ અષ્ટમીના ચદ્રના જેવુ હતુ (उडुवइ-पडिपुण्ण-सोम्म-वयणे) પ્રભુનુ મુખ શરદઋતુના પૂર્ણચદ્રમડલ સમાન સુદર તથા આહ્લાદક હતુ (अल्लीण- पमाण-जुत्त-सवणे) કાન માપસર હતા (सुस्सवणे) તેથી ભગવાન સુદર કાનવાળા હતા (पीण-मसल कवोल-देसभाए) ભગવાનના પુષ્ટ તેમજ ભરેલા સુદર ગાલ હતા (आणामिय-चाव-रुइल-किण्हब्भराइ-तणु-कसिण-णिद्ध-भमुहे) વક્ર થયેલા ધનુષના જેમ રૂચિર, તથા કૃષ્ણમેઘ (કાળા વાદળા) ની હારના જેવી

लिय-पुंडरीय-णयणे कोआसिय-धवल-पत्तलच्छे गरुलायय-उज्जु तुंग-णासे उवचिय-सिलप्पवाल-बिंबफल-सण्णिभाहरोट्ठे पंडुर-ससि-सयल-विमल-णिम्मल-संख-गोक्खीर-फेण-कुंद-दगरय-मुणा-

भ्रूयुक्त इत्यर्थ । 'अवदालिय-पुंडरीय णयणे' अवदलित पुण्डरीक-नयन -अवदलिते-विकसिते, पुण्डरीके-श्वेतकमले इव नयने-नेत्रे यस्य स, विकसितश्वेतकमलसदृश-नेत्र इति भाव । 'कोआसिय-धवल-पत्तलच्छे' विकसित धवल-पत्रलाऽक्ष -कमलवद् विकसिते धवले-श्वेते, पत्रले-पक्ष्मयुक्ते, अक्षिणी नेत्रे यस्य स, विशालनयनानित्यर्थ । 'गरुला-यय-उज्जु-तुग-णासे' गरुडा-यत-र्जुतुङ्ग-नासिक -गरुडस्येव-गरुडपक्षिचञ्चुवद्-आयता-दीर्घा, ऋज्वी-सरला, तुङ्गा-उन्नता, नासिका यस्य स तथा, गरुडचञ्चु-वद्दीर्घसरलोन्नतनासिकावान् इत्यर्थ । 'उवचिय-सिलप्पवाल-बिंबफल-सण्णिभा-हरोट्ठे' उपचित शिलाप्रवाल बिम्बफल-सन्निभाऽधरोष्ठ -उपचित कृतसंस्कार यच्छिलाप्रवाल-विद्रुम, बिम्बफल-रक्तातिरक्त तयो सन्निभ -सदृशो रक्त अधरोष्ठो यस्य स, अतिरक्तोष्ठवान्-इत्यर्थ । 'पंडुर-ससि-सयल-विमल णिम्मल-संख-गोक्खीर-फेण-कुद-दगरय मुणा-लिया-धवल-दंतसेढी' पाण्डुर-शशि-शकल-विमल निर्मल-शङ्ख गोक्षीर-फेन-कुन्द-दक-

की पंक्ति के समान काली, पतली और चिकनी भगवान की भौंहें थीं। (अव-दालिय- पुंडरीय-णयणे) विकसित श्वेतकमल के समान नेत्र थे। (कोआसिय-धवल-पत्तलच्छे) वे नेत्र-विकसित, स्वच्छ एवं पक्ष्मल-सुन्दर पीपणी वाले थे। (गरुला-यय-उज्जु-तुग-णासे) गरुड पक्षी की चचु समान दीर्घ, सरल एव उन्नत नासिका थी। (उवचिय-सिलप्पवाल-बिंबफल-सण्णिभाहरोट्ठे) संस्कार-युक्त विद्रुम एव रक्तातिरक्त-अतिशय लाल कुन्दुरुफल के समान अधरोष्ठ था। (पंडुर-ससिसयल-विमल-णिम्मल-संख-गोक्खीर-फेण-कुंद-दगरय-मुणालिया-

કાળી, પાતળી અને ચિકણી ભમરે હતી (अवदालिय-पुंडरीय-णयणे) ખીલેલા શ્વેત કમળના જેવા નેત્ર હતા (कोआसिय-धवल-पत्तलच्छे) તે નેત્ર વિકસેલા સ્વચ્છ તેમજ પક્ષ્મલ (સુંદર પાંપણવાળા) હતા (गरुला-यय-उज्जु-तुग-णासे) ગરૂડ પક્ષીની ચાંચ સમાન લાંબા સરલ તેમજ ઉન્નત નાસિકા હતી (उवचिय-सिलप्पवाल-बिंबफल-सण्णिभा-हरोट्ठे) સંસ્કારયુક્ત વિદ્રુમ તેમજ રક્તાતિરક્ત-અતિશય લાલ કુંદુરૂ ફલના જેવો અધરોષ્ઠ (હોઠ) હતો (पंडुर-ससिसयल-विमल-णिम्मल-संख-गोक्खीर-फेण-कुंद-दग-

लिया-धवल-दंतसेढी अखंडदंते अप्फुडियदंते अविरलदंते सुणिद्धदंते सुजायदंते एगदंतसेढीविव अणेगदंते हुयवह-णिद्धंत-

रजो-मृणालिका धवल-दन्तश्रेणि -पाण्डुर-श्वेत यत्-शशिशकल-चन्द्रखण्ड , तद्वद् विमला, तथा निर्मल -अतिस्वच्छ , शङ्ख प्रसिद्ध , गोक्षीर-गोदुग्धम्,-फेन -जलोपरिवर्तमानो नवनीतसम , कुन्द-तन्नामक श्वेतकुसुमम्-दकरज -जलकण , मृणालिका-बिसिनी-तद्वद् धवला-महाश्वेता, दन्तश्रेणि -दन्तपङ्क्तिर्यस्य स तथा, शुभ्रातिशुभ्रदन्तपङ्क्तिमानित्यर्थ । 'अखडदंते' अखण्डदन्त -दन्तपङ्क्तौ दन्तैकस्याभावात्, 'अप्फुडियदंते' अस्फुटितदन्त दन्तपङ्क्तौ दन्ताना- देशतोऽपि भङ्गाभावात्, 'अविरलदंते' अविरलदन्त -अन्तरावकाशरहितदन्त 'सुणिद्धदंते' सुस्निग्धदन्त -चिक्कणदन्तवान्, 'सुजायदंते' सुजातदन्त -सुन्दरदन्तवान्-इत्यर्थ । 'एगदंतसेढीविव अणेगदंते' एकदन्तश्रेणीवाऽनेकदन्त , 'हुतवह-णिद्धत-धोय-तत्त-तवणिज्ज-रत्त-तल-तालुजीहे' हुतवह-निध्मात-धौत-तप्ततपनीय-रक्ततर-तालुजिह्व -हुतवहन-वह्निना पूर्वं निध्मात-निक्षेपेण संयोजित पश्चाज्जलादिना धौतम्, अत एव-तप्त-वह्नितापं प्राप्त-

धवल-दंतसेढी) श्वेत चन्द्रखडके के समान निर्मल, तथा निर्मल शख, गोक्षीर, फेन, श्वेतकुसुम, जलकण, एव मृणाल के समान धवल दन्तपक्तियाँ थीं। (अखडदंते) भगवान के दाँत अखण्ड थे, (अप्फुडियदंते) अत्रुटित थे, (अविरलदंते) अवकाश रहित थे। (सुणिद्धदंते) चिक्कण थे, (सुजायदंते) सुन्दर थे, ।(एगदंतसेढीविव अणेगदंते) एक दाँत की श्रेणी के समान सभी दाँत मालूम होते थे। (हुयवह-णिद्धत-धोय-तत्ततवणिज्ज-रत्ततल-तालुजीहे) पहले अग्नि मे तपाये गये पश्चात् जलादिक द्वारा धोये गये पुन अग्नि मे तपाये

रय-मुणालिया-धवल-दंत-सेढी) श्वेत चद्रखडना जेवी विमल, तथा निर्मळ शख, गायनु दूध, फीणु, श्वेतपुष्प, जलकण (पाणीना बुद) तेमज मृणाल ना जेवी सफेद दातनी हार हती (अखडदंते) भगवानना दात अखड हता (अप्फुडियदंते) तूटया वगरना दात हता (अविरलदंते) अवकाश (पोल) रहित हता, (सुणिद्धदंते) चिकणा हता, (सुजायदंते) सुदर हता, (एगदंतसेढी विव अणेगदंते) एक दातनी श्रेणी (हार) ना जेम बधा दात देखाता हता (हुतवह-णिद्धत-धोय-तत्त-तवणिज्ज-रत्तल तालुजीहे) पहेला अग्निमा तपावेला पाछलथी जळादिद्वारा

धोयतत्ततवणिज्ज-रत्ततल-तालुजीहे अवट्ठिय-सुविभत्त-चित्त-मंसू मंसल-संठिय-पसत्थ-सद्दूल-विउल-हणुए चउरंगुल-सुप्पमाण-कंबु-वर-सरिसग्गीवे वरमहिस-वराह-सीह-सद्दूल-उसभ--नागवर--पडि-

यत्तपनीय=सुवर्णं तद्वद् रक्ततरम्--अतीवरक्त, तालु च जिह्वा च यस्य स तथा, अतिरक्त-तालुजिह्वावान् इत्यर्थ । 'अवट्ठिय-सुविभत्त-चित्त-मसू' अवस्थित-सुविभक्त-चित्र-श्मश्रु --अवस्थितानि--अवर्द्धनशीलानि, सुविभक्तानि--द्विभागाभ्या विभक्ततया स्थितानि, चित्राणि--शोभासम्पन्नानि श्मश्रूणि--'दाढी मूछ'--इति भाषाप्रसिद्धानि यस्य स, अवर्धन-शील-सुविभक्त-सुशोभितश्मश्रुवान् इत्यर्थ । 'मंसल-संठिय-पसत्थ-सद्दूल-विउल-हणुए' मासल--सस्थित--प्रशस्त--शार्दूल--विपुल--हनु --तत्र-मासल -पुष्ट , सस्थित -सुन्दरा-ऽऽकार , प्रशस्त --अतिरमणीय ,शार्दूलस्येव व्याघ्रस्येव, विपुल -दीर्घ हनु =चिबुक यस्य स तथा-शार्दूल-वत्सुन्दर-सुविशालचिबुक इति भाव । 'चउरगुल--सुप्पमाण--कंबुवर-सरिस--ग्गीवे' चतुरङ्गुल-सुप्रमाण-कम्बुवरसदृश-ग्रीव'--भगवदङ्गुल्यपेक्षया चतुरङ्गुल-सुप्रमाणा कम्बुवरसदृशी--उन्नततया त्रिवलिसद्भावाच्च श्रेष्ठशङ्खसदृशी ग्रीवा यस्य सतथा, चतुरङ्गुलप्रमाणोपेतश्रेष्ठशङ्खसदृशग्रीवावान् इत्यर्थ । 'वर-महिस-वराह--सीह-सद्दूल-उसभ-नागवर-पडिपुण्ण-विउल-क्खंधे' वरमहिष-वराह सिंह-शार्दूल-वृषभ-नागवर-परिपूर्ण-

गये सोने के समान अयतरक्त तालु और जिह्वा थी। (अवट्ठिय--सुविभत्त--चित्त-मसू) अवर्द्धनशील एव दोभागों से विभक्त होकर अलग २ रही हुई दाढी एव मूछे थीं। (मसल--संठिय--पसत्थ--सद्दूल--विउल--हणुए) पुष्ट, सुन्दर आकार युक्त, एव अतिरमणीय सिंह जैसी विपुल दाढी थी। (चउरगुल--सुप्पमाण--कंबुवरसरिस--ग्गीवे) भगवान की अगुली की अपेक्षा चार अगुलप्रमाणवाली एव शख के समान त्रिवलीविशिष्ट ग्रीवा थी। वरमहिस--वराह--सीह--सद्दूल--उसभ--

धोओला सुवर्णनी पेठे अत्यत लाल तालवु अने जीभ हता (अवट्ठिय-सुवि-भत्त--चित्त--मसू) अवर्धनशील तेमज बे भागोथी विभक्त थईने अलग अलग रहेली दाढी तेमज मुछो हती [मसल--संट्ठिय--पसत्थ--सद्दूल--विउल--हणुए] पुष्ट, सुदर आकारवाळी तेमज अति रमणीय सिंह जेवी विपुल दाढी हती (चउरगुल--सुप्पमाण--कबुवरसरिस--ग्गीवे) भगवानना आगळानी अपेक्षाओ चार आगळाना मापवाळी तेमज शखनी पेठे त्रिवली (त्रण-रेखा) वाळी डोक (गरदन) हती [वरमहिस--वराह--सीह--सद्दूल--उसभ नाग-

पुण्ण-विउलक्खंधे जुगसन्निभ-पीण-रइय-पीवर-पउट्ट- सुसंठिय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-घण-थिर-सुबद्ध-संधि-पुरवर-फलिह-वट्टिय-भुए

विपुलस्कन्ध -श्रेष्ठमहिषवराह सिंहव्याघ्रवृष गजवराणामिव प्रतिपूर्णौ-प्रमाणयुक्तौ-विपुलौ=विस्तीर्णौ सामुद्रिकशास्त्रोक्तलक्षणयुक्तौ स्कन्धौ यस्य स तथा, 'सिंहव्याघ्रादिवत्सामुद्रिकोक्तलक्षणयुक्तप्रमाणसहितविशालस्कन्धवान्' इति भाव । '**जुगसन्निभ-पीण-रइय-पीवर-पउट्ठ-सुसंठिय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-घण-थिर-सुबद्ध-संधि-पुरवर-फलिह-वट्टियभुए**' युगसन्निभ-पीन-रतिद-पीवर-प्रकोष्ठ-सुसंस्थित सुश्लिष्ट-विशिष्ट-घन - स्थिर-सुबद्ध-सन्धि-पुरवर-परिघ-वर्तितभुज , युगेन=शकटाग्रायामस्थितकाष्ठेन सन्निभौ=तुल्यौ, पीनौ=पुष्टौ, रतिदौ=प्रीतिप्रदौ, पीवरप्रकोष्ठौ-कफोणे '**खूणी**' इति प्रसिद्धादधस्तान्मणिबन्धपर्यन्त प्रकोष्ठ, पीवरौ पुष्टौ प्रकोष्ठौ ययोर्भुजयोस्तौ, सुसंस्थितौ=सुन्दरसंस्थानवन्तौ, पुन कीदृशौ '-सुश्लिष्टा -संयुक्ता , विशिष्टा -प्रधाना ,घना -सघना , स्थिरा -दृढा -सुबद्धा =सुष्ठु बद्धा स्नायुभि सन्धय =सन्धिसंयोगस्थानानि ययोस्तौ-सुश्लिष्टविशिष्टघनस्थिरसुबद्धसन्धी, पुन -पुरवरपरिघवत्=नगरश्रेष्ठा-र्गलावत् वर्तितौ-वर्तुलौ बाहू=भुजौ यस्य स तथा, सुन्दरनगरार्गलावत् दृढदीर्घभुजवान् इति भाव । '**भुयगीसर-विउल-भोग-आयाण-पलिहउच्छूढ-दीह-बाहू-भुजगेश्वर - विपुल-भोगा -दान-पर्यवक्षिप्त-दीर्घ-**

नागवर-पडिपुण्ण-विउल-क्खंधे) श्रेष्ठ महिष, वराह, सिंह, शार्दूल, वृषभ, एव श्रेष्ठ हाथी के स्कध जैसे विपुल स्कन्ध थे, (**जुगसन्निभ-पीण-रइय-पीवर-पउट्ठ-सुसंठिय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-घण-थिर-सुबद्धसंधि-पुरवर-फलिह-वट्टियभुए**) गाडी के जुए के समान प्रीतिप्रद, पीवरप्रकोष्ठयुक्त-पुष्टपौंचावाली, सुन्दर आकृतिसपन्न ऐसे, एव सुश्लिष्ट-संयुक्त-मिली हुई, विशिष्ट-उत्तम, घन-गठीली, मजबूत, स्थिर-स्नायुओं से सुसबद्ध ऐसी संधियों वाली, तथा नगर की परिघा-भोगल-जैसी वर्तुल भुजायें थीं। (**भुयगीसर-विउलभोग-आयाण-पलिहउच्छूढ-दीह-बाहू**) वाञ्छित वस्तु

वर-पडिपुण्ण-विउल-क्खंधे] श्रेष्ठ पाडा, वराह, सिंह, शार्दूल, બળદ, તેમજ શ્રેષ્ઠ હાથીના ખાંધ જેવી વિપુલ ખાંધ હતી (जुगसन्निभ-पीण-रइय-पीवर-पउट्ट-सुसंठिय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-घण-थिर-सुबद्ध-संधि-पुरवर-फलिह-वट्टियभुए) ગાડાના ધોંસરા જેવી પુષ્ટ, પ્રીતિપ્રદ, પીવર પ્રકોષ્ઠ-પુષ્ટ કાંડા વાળી, સુંદર આકૃતિવાળી તેમજ સુશ્લિષ્ટ-સંયુક્ત-મિલિત, વિશિષ્ટ-ઉત્તમ, ઘન-ભરાઉ, સ્થિર-મજબૂત સ્નાયુઓથી સુસંબદ્ધ સંધિઓવાળી તથા નગરની ભોગળ જેમ ગોળાકાર ભુજાઓ હતી [भुयगी-सर-विउलभोग-आयाण-पलिहउच्छूढ-

भुयगीसर-विउल-भोग-आयाण-पलिहउच्छूढ-दीह-बाहू रत्ततलो-वइय-मउय-मंसल - सुजाय लक्खण-पसत्थ-अच्छिद्दजाल -पाणी पीवर-कोमल—वरंगुली आयंवतंब—तलिण-सुइ—रुइल-णिद्ध-णखे

बाहु, भुजगेश्वर -सर्पराज, तस्य विपुलभोग -विशालदेह, स च आदानाय-वाञ्छितवस्तुग्रहणाय 'पलिहउच्छूढ' पर्यवक्षिप्त प्रेरित -सर्वथा प्रसारित, तद्वत् दीर्घा=लम्बौ-विशालौ, बाहू=भुजौ यस्य स तथा, लम्बविशालबाहुमान्-इत्यर्थ । 'रत्ततलो-वइय-मउय-मसल-सुजाय-लक्खणपसत्थ-अच्छिद्द-जाल-पाणी' रक्ततलो पचित-मृदु-मासल-सुजात-लक्षणप्रशस्ता-च्छिद्रजाल पाणि, तत्र रक्ततलौ-रक्ते तले ययोस्तौ तथा, तलभागे रक्त-वर्णयुक्तौ इत्यर्थ, उपचितौ पृष्ठभागे उन्नतौ, मृदुकौ-कोमलौ, मासलौ-पुष्टौ, सुजातौ-सुन्दरौ प्रशस्तलक्षणौ-शुभचिह्नयुतौ, अच्छिद्रजालौ-च्छिद्रजालवर्जितौ, पाणी-हस्तौ यस्य स तथा, 'पीवर-कोमल-वर-गुली' पीवर-कोमल-वराङ्गुलि —पीवरा -पुष्टा, कोमला -मृदुला, वरा -श्रेष्ठा, अङ्गुलयो यस्य स तथा, 'आयव-तंव-तलिण-सुइ-रुइल-णिद्ध-णखे' आताम्र-ताम्र तलिन-शुचि रुचिर-स्निग्धनख -आताम्रताम्रा =ईषद्रक्ता, तलिना =प्रतला शुचय =शुद्धा, रुचिरा =मनोज्ञा, स्निग्धा =सरसा, नखा यस्य स तथा, 'चंदपाणि-लेहे' चन्द्रपाणिरेख -चन्द्राकारा पाणौ रेखा यस्य स, चन्द्ररेखाचिह्नितहस्तवानित्यर्थ,

को ग्रहण करने के लिये फैलाये हुए सर्पराज के शरीर समान दीर्घबाहु थे। (रत्ततलो-वइय-मउय-मसल-सुजाय-लक्खण-पसत्थ-अच्छिद्दजाल-पाणी) तलभाग में लाल, पृष्ठभाग में उन्नत, कोमल, पुष्ट, शुभचिह्नों से युक्त, एव छिद्रों से रहित हाथ थे। (पीवर-कोमल-वर-गुली) हाथों की अगुलियाँ पुष्ट, कोमल एव सुन्दर थी। (आयवतंव-तलिण-सुइ-रुइल-णिद्ध-णखे) ईषद्रक्त, पतले, शुद्ध, सुन्दर, एव चिकने नख थे। (चंदपाणिलेहे) हाथों मे चन्द्ररेखा थी।

दीह-बाहू] કોઈ ઇચ્છિત વસ્તુ લેવાને માટે ફેલાવેલા સર્પરાજના શરીર સમાન લાંબા બાહુ હતા (रत्ततलो-वइय-मउय-मसल-सुजाय-लक्खण-पसत्थ अच्छिद्द-जाल-पाणी] તળીયાના ભાગમા લાલ, પાછળના ભાગમા ઉન્નત, કોમળ, પુષ્ટ, શુભ ચિહ્નોથી યુક્ત તેમજ છિદ્રો વગરના હાથ હતા [पीवर-कोमल-वर-गुली] હાથોની આગળીઓ પુષ્ટ, કોમળ તેમજ સુંદર હતી [आयवतंव-तलिण-सुइ-रुइल-णिद्ध-णखे] ઈષદ્રક્ત પાતળા, શુદ્ધ, સુંદર તેમજ ચિકણા નખ હતા (चंदपाणिलेहे) હાથોમા ચન્દ્રરેખા હતી

चंदपाणिलेहे सूरपाणिलेहे संखपाणिलेहे चक्कपाणिलेहे दिसासोत्थियपाणिलेहे चंद–सूर-संख–चक्क–दिसासोत्थिय–पाणिलेहे कणग–सिलायलुज्जल – पसत्थ–समतल–उवचिय–विच्छिण्ण–पिहुलवच्छे सिरिवच्छंकियवच्छे अकरंडुय–कणग–रुयय-निम्मल-

'संखपाणिलेहे' शङ्खपाणिरेख -शङ्खरेखायुक्तहस्त इत्यर्थ, 'चक्कपाणिलेहे' चक्रपाणिरेख -चक्ररेखायुक्तहस्त, 'दिसासोत्थियपाणिलेहे' दिक्स्वस्तिकपाणिरेख – दक्षिणाऽऽवर्तस्वस्तिकाऽऽकार-रेखा–युक्त–हस्तवान् इति भाव । 'चंद-सूर-संख-चक्क-दिसासोत्थिय-पाणिलेहे' चन्द्रसूरशङ्खचक्रदिक्स्वस्तिकपाणिरेख चन्द्रसूर्यादिहस्तरेखा हस्ते विद्यमाना प्रशस्तफलप्रदा भवन्ति, ताभिश्चन्द्रादिरेखाभिश्चिह्नितहस्तवानित्यर्थ, 'कणग–सिलायलु–ज्जल–पसत्थ–समतल–उवचिय–विच्छिण्ण–पिहुलवच्छे' कनकशिलातलो–ज्ज्वल–प्रशस्त–समतलो-पचित–विस्तीर्ण-पृथुल-वक्षस्क – कनकशिलातलवत्=सौवर्णपट्टिकावत् , उज्ज्वल=देदीप्यमान प्रशस्त=सुलक्षणोपेत समतलश्च–उन्नताऽऽनतरहितम् , उपचित–पुष्ट, विस्तीर्णपृथुलम् ,–अतिविशाल, वक्ष –उरस्थल यस्य स तथा,

(सूरपाणिलेहे) सूर्यरेखा थी, (संखपाणिलेहे) शंखरेखा थी, (चक्कपाणिलेहे) चक्ररेखा थी, (दिसासोत्थियपाणिलेहे) दक्षिणावर्त स्वस्तिक रेखा थी, (चंद–सूर-संख–चक्क–दिसासोत्थिय–पाणिलेहे) इस प्रकार चन्द्रमा, सूर्य, शंख, चक्र एव दक्षिणावर्त स्वस्तिक की रेखाओं से भगवान के हाथ सुशोभित थे। (कणग–सिलायलु–ज्जल–पसत्थ–समतल–उवचिय–विच्छिण्ण–पिहुल–वच्छे) कनक शिला के समान–सुवर्ण के पाट के समान देदीप्यमान, शुभलक्षणों से युक्त, सम, पुष्ट, विस्तीर्ण एव अतिविशाल वक्षस्थल था। वह वक्षस्थल (सिरिवच्छंकियवच्छे)

(सूरपाणिलेहे) सूर्यरेખा હતી [संखपाणिलेहे] શંખરેખા હતી (चक्क पाणिलेहे] ચક્રરેખા હતી, (दिसासोत्थियपाणिलेहे) દક્ષિણાવર્ત સ્વસ્તિક રેખા હતી (चंद–सूर–संख–चक्क–दिसासोत्थिय–पाणिलेहे) એ પ્રકારે ચંદ્રમા, સૂર્ય, શંખ, ચક્ર તેમજ દક્ષિણાવર્ત સ્વસ્તિકની રેખાઓથી ભગવાનના હાથ સુશોભિત હતા (कणग–सिलायलु–ज्जल–पसत्थ–समतल–उवचिय–विच्छिण्ण पिहुल–वच्छे) કનક શિલા સમાન–સોનાની પાટાના જેવુ દેદીપ્યમાન, શુભલક્ષણોવાળુ, સરખુ, પુષ્ટ, વિશાળ તેમજ બહુ પહોળુ વક્ષસ્થળ [છાતી] હતુ તે વક્ષસ્થળ (सिरिवच्छंकियवच्छे) શ્રીવત્સના ચિહ્નવાળુ હતુ અને

सुजाय-निरुवहय-देह-धारी अट्ठसहस्स-पडिपुण्ण-वरपुरिस-लक्खण-धरे सण्णयपासे संगयपासे सुंदरपासे सुजायपासे मियमाइय-

'सिरिवच्छंकियवच्छे' श्रीवत्साङ्कितवक्षस्क –श्रीवत्सेन=शुभचिह्नविशेषेण अङ्कित= चिह्नित–वक्ष –हृदयस्थल यस्य स तथा, 'अकरंडुय–कणग–रुयय–निम्मल–सुजाय-निरुवहय–देह–धारी', अकरण्डुक–कनक–रुचक–निर्मल–सुजात–निरुपहत–देहधारी, अकरण्डुक –'करंडुय' इति देशीय शब्द, अदृश्यमान करण्डुक=पृष्ठभागास्थिक यस्य देहस्य स अकरण्डुक, तथा कनकरुचक –सुवर्णवर्णयुक्त, तथा–निर्मल, सुजात, निरुपहत =रोगादिबाधारहितो यो देहस्त देह धरतीत्येव शीलो य स तथा, 'अट्ठ-सहस्स–पडिपुण्ण–वरपुरिस–लक्खण–धरे' अष्टसहस्र–प्रतिपूर्ण–वरपुरुष–लक्षणधर - अष्टोत्तर सहस्रम्–अष्टसहस्र, प्रतिपूर्णम्–अन्यून, वरपुरुषाणा लक्षण–स्वस्तिकादिकम्, तस्य धर –धारक, महापुरुषाणामष्टोत्तरसहस्रपरिमितानि सुलक्षणानि सन्ति, तेषा सर्वेषा धारक –इति भाव । 'सण्णयपासे' सन्नतपार्श्व –सन्नतौ अधोऽधोऽवनतौ पार्श्वौ–पार्श्व-भागौ यस्य स सन्नतपार्श्व, 'संगयपासे' सङ्गतपार्श्व –सङ्गतौ–प्रमाणोचितौ, पार्श्वौ-भुजमूलादध प्रदेशौ यस्य स, प्रमाणयुक्तपार्श्वप्रदेशवानिति भाव । 'सुंदरपासे' सुन्दरपार्श्व –दर्शनीयपार्श्वयुक्त, 'सुजायपासे' सुजातपार्श्व –सुन्दरपार्श्ववानित्यर्थ ।

श्रीवत्सके चिह्न से युक्त था। और प्रभुका शरीर (अकरंडुय–कणग–रुयय–निम्मल-सुजाय-निरुवहय–देह–धारी) अकरण्डुक–अदृश्यमान पृष्ठभाग की हड्डीयुक्त, तथा सुवर्ण के जैसा निर्मल एव रोगादिक बाधा से रहित था। भगवान् (अट्ठसहस्स-पडिपुण्ण-वर–पुरिस–लक्खण–धरे) न्यूनतारहित ऐसे १००८ स्वस्तिकादिक उत्तम पुरुषों के योग्य लक्षणों के धारक थे। भगवान् के शरीरका पार्श्वभाग (सण्णयपासे सगयपासे सुंदरपासे सुजायपासे मियमाइय–पीण–रइय–पासे) क्रमिक अवनत

प्रभुनु शरीर (अकरंडुय–कणग–रुयय–निम्मल–सुजाय–निरुवहय–देह–धारी) અકરંડુક–અદૃશ્યમાન–ન દેખાય તેવી રીતે વાંસા–બરડા–ની કરોડવાળુ તથા સોનાના વર્ણ જેવુ નિર્મળ તેમજ રોગાદિકની પીડા વગરનુ હતુ ભગવાન્ (अट्ठसहस्स पडिपुण्ण वर–पुरिस–लक्खण–धरे) ન્યૂનતારહિત એવા ૧૦૦૮ સ્વસ્તિક આદિક ઉત્તમ પુરૂષોને યોગ્ય લક્ષણોના ધારક હતા ભગવાનના શરીરનો પડખાનો ભાગ (सण्णयपासे सगयपासे सुंदरपासे सुजायपासे मियमा-इय पीण-रइय पासे) ક્રમથી નમેલો હતો, ઉચિત પ્રમાણવાળો હતો, સુદર

पीण-रइय-पासे उज्जुय-सम-सहिय-जच्च-तणु-कसिण-णिद्ध-आइज्ज-लडह-रमणिज्ज-रोम-राई झस-विहग-सुजाय-पीण-कुच्छी झसोयरे सुइकरणे पउम-वियड-णाभे गंगावत्तग-पयाहिणावत्त-

'मियमाइय-पीण-रइय-पासे' मितमात्रिक-पीन-रतिद-पार्श्व, तत्र-मितमात्रिकौ-समुचितपरिमाणवन्तौ, पीनौ-पुष्टौ, रतिदौ-रम्यौ, पार्श्वौ-कक्षाभ्यामधो वामदक्षिणशरीर-भागौ यस्य स तथा, 'उज्जुय-सम-सहिय-जच्च-तणु-कसिण-णिद्ध-आइज्ज-लडह-रमणिज्ज-रोमराई' ऋजुक-सम-सहित-जात्य-तनु-कृष्ण-स्निग्धा-ऽऽदेय-ललित-रमणीय-रोमराजि, ऋजुकाणा-सरलाना, समसहिताना-मिलिताना, जात्याना-स्वजातीयेषूत्तमाना, तनूना-सूक्ष्माणा, स्निग्धाना-सरसानाम्, आदेयानाम् उपादेयाना, 'लडह' ललिताना=रमणीयाना-मनोरमाणा रोम्णा राजि-पङ्क्तिर्यस्य स तथा, सरल-सूक्ष्म-कृष्ण-सरस-रम्य-रोमराजिमान् इत्यर्थ । 'झस-विहग-सुजाय-पीण-कुच्छी' झष-विहग-सुजात-पीन-कुक्षि-मत्स्य-पक्षिणोरिव सुजात=सुन्दर, पीन-पुष्ट, कुक्षि-उदर यस्य स तथा, 'झसोयरे' झषोदर-मीनवत्सुन्दरोदरवान् इति भाव । 'सुइकरणे' शुचिकरण-शुचीनि-पवित्राणि, करणानि-इन्द्रियाणि यस्य स, इन्द्रियाणा मलग्राहित्वेऽपि भगवदतिशयाद्-निर्मलतया निर्मल-निरुपलेपेन्द्रियवान् इति भाव । 'पउम-वियड-

---

था, उचित प्रमाण से युक्त था, सुन्दर था, शोभन था, तथा-परिमित मात्रावाला, पुष्ट एव रम्य था। रोमराजि (उज्जुय-सम-सहिय-जच्च-तणु-कसिण-णिद्ध-आइज्ज-लडह-रमणिज्ज-रोम-राई) सरल, परस्पर मे मिलित, उत्तम, पतली, काली, चिकनी, उपादेय एव अत्यन्त मनोहर थी। उनकी कुक्षि (झस-विहग-सुजाय-पीण-कुच्छी) मत्स्य एव पक्षी के समान सुन्दर और पुष्ट थी। (झसोयरे) उनका उदर मत्स्य के जैसा सुन्दर था। (सुइकरणे) इन्द्रियाँ यद्यपि स्वभावत मलग्राहिनी है, तथापि अतिशय के प्रभाव

હતો, શોભન હતો, તથા મર્યાદિત ઘાટનો પુષ્ટ તેમજ રમ્ય હતો. રોમરાજિ (શરીર ઉપરના વાળની પંક્તિ) (उज्जुय-समसहिय-जच्च-तणु-कसिण-णिद्ध-आइज्ज-लडह- रमणिज्ज-रोम-राई) સરખી, પરસ્પરમા મળી ગયેલી, ઉત્તમ, પાતળી, કાળી, ચિકણી, ઉપાદેય તેમજ બહુજ મનોહર હતી તેમની કાખ (બગલ) (झस-विहग-सुजाय-पीण-कुच्छी) મત્સ્ય તેમજ પક્ષીના જેવી સુંદર અને પુષ્ટ હતી (झसोयरे) તેમનુ ઉદર (પેટ) માછલીના જેવુ સુંદર હતુ (सुइकरणे) ઇન્દ્રિયો જોકે સ્વભાવથી મલવાહિની છે તો પણ અતિશયના

नरंग-भंगुर-रवि-किरण तरुण-बोहिय-अकोसायंत-पउम-गंभीर-वि-यड-णाभे साहय-सोणंद-मुसल-दप्पण-णिकरिय-वर-कणगच्छ-रुसरिस-वरवइर-वलियमज्झे पमुइय-वरतुरग-सीह-वर-वट्टिय-कडी

णाभे' पद्म-निकट-नाम -पद्मकोशवद् विकटा-गम्भीरा नाभिर्यस्य स तथा, 'गंगावत्तग-पयाहिणावत्त-तरग-भगुर-रवि-किरण-तरुण-बोहिय-अकोसायत-पउम-गभीर-वियडणाभे' गङ्गाऽऽवर्तक-प्रदक्षिणाऽऽवर्त-तरङ्ग-भङ्गुर-रवि-किरण-तरुण-बोधित-विकसत्पद्म-गम्भीर - विकट-नाभ -तत्र - गङ्गाऽऽवर्तकसम्बन्धिप्रदक्षिणावर्ततरङ्गवद्भङ्गुरा=चक्राकारवर्तुला, रविकिरणतरुणबोधितविकसत्पद्मवद् गम्भीरा, विकटा=विशाला च नाभिर्यस्य स तथा, 'साहय-सोणद-मुसल-दप्पण-णिकरिय-वरकणगच्छरु-सरिस-वरवइर-वलिय-मज्झे' संहत-सोनन्द-मुसल-दर्पण-निकरित-वरकनकत्सरु-सदृश-वरवज्र-वलित-मध्य -संहत-संक्षिप्तमध्य यत्-सोनन्द=त्रिकाष्ठिका, मुसल -प्रसिद्ध, दर्पण -दर्पणदण्ड, निकरितवरकनकत्सरु =निकरित=सारीकृत सर्वथा मशोधित यद् वरकनक-श्रेष्ठसुवर्णं, तस्य त्सरु -खड्गमुष्टि, एतेषामितरेतरयोगद्वन्द्व, तै सदृश -वर-

---

से भगवान का इन्द्रियाँ निर्लेप रहता थीं। (पउमवियडणाभे) नाभि पद्मकोश के समान गभीर था, (गगावत्तग-पयाहिणावत्त-तरग-भगुर-रवि-किरण-तरुण-बोहिय-अकोसायत-पउम-गभीर-वियड-णाभे) तथा-गगावर्तक-सबधी प्रदक्षिणावर्तयुक्त तरग की तरह भगुर, चक्रसमान गोल, मध्याह्नकालके सूर्यकी किरणों द्वारा विकसित पद्म के समान गभीर एव विशाल थी। (साहय-सोणद-मुसल-दप्पण-णिकरिय-वरकणगच्छरु-सरिस-वरवइर-वलिय मज्झे) कटिप्रदेश त्रिकाष्ठिका के मध्यभाग समान, मूसल के मध्यभाग समान, दर्पण के दण्ड के मध्यभाग समान, चलकते हुए सोनेकी

प्रभावथी भगवाननी ईंद्रियो निर्लेप रहेती हती (पउमवियडणाभे) नाभि पद्मकोश जेवी गभीर हती (गगावत्तग-पयाहिणावत्त-तरग-भगुर-रवि किरण-तरुण-बोहिय-अकोसायत-पउम-गभीर-वियड-णाभे) तथा -गंगावर्तक संबंधी प्रदक्षिणावर्तयुक्त तरंगनी पेठे भंगुर, चक्रना जेवी- गोळ, मध्याह्न-काळना सूर्यना किरणोथी विकसेला पद्म समान गभीर तेमज विशाळ हती (साहय-सोणद-मुसल दप्पण णिकरिय वरकणगच्छरु-सरिस-वरवइर-वलिय-मज्झे) कटिप्रदेश त्रिकाष्ठिका (घोडी अथवा तिरपाई)ना मध्यभाग जेवो, मूसलना मध्यभाग जेवो, दर्पणना दंडना मध्यभाग जेवो, चळकता सोनानी खड्ग

वर-तुरग-सुजाय-गुज्झ-देसे आइण्ण-हउव्व णिरुवलेवे वर-वारण-तुल्ल-विक्कम-विलसिय-गई गय-ससण-सुजाय-सन्निभोरू

वज्र इव वलित=क्षाम-कृश, मध्य=मध्यभागो यस्य स तथा, 'पमुइय-वरतुरग-सीह-वर-वट्टिय-कडी' प्रमुदित-वरतुरग-सिंहवर-वर्तित-कटि-प्रमुदितस्य रोगादि-रहिततया प्रसन्नस्य, वरतुरगस्य-श्रेष्ठहयस्य, तादृशस्य सिंहस्य चेव वग=श्रेष्ठा वर्त्तिता-वर्तुला, कटिर्यस्य स तथा, 'वर-तुरग-सुजाय-गुज्झ-देसे' वर तुरग-सुजात-गुह्यदेश-वरस्य=श्रेष्ठस्य अश्वस्येव सुजात-सुन्दरो गुह्यदेशो यस्य स तथा। 'आइण्णहउव्व णिरुव-लेवे' आकीर्णहय इव निरपलेप-आकीर्ण=सुलक्षणयुक्त उत्तम-जातीयो यो हय=अश्व., स इव निरपलेप=निर्गत उपलेपात्—मलिनसम्पर्कात् इति निरपलेप-निर्मल इत्यर्थ। 'वर-वारण-तुल्ल-विक्कम-विलसिय-गई' वर-वारण-तुल्य-विक्रम-विलसित-गति-वरवारणस्य=श्रेष्ठगजस्य तुल्य=समान विक्रम=पराक्रम, तथा तत्तुल्या विलसिता=चरणसचरणगणनरहिता गतिर्गमन यस्य स, गजेन्द्रवदतुलनलशाली ललितगमनशीलश्चेति भाव.। 'गय-ससण-सुजाय-सन्निभोरू' गज-श्वसन-सुजात-सन्निभोरु-गजश्वसनस्य=हस्तिशुण्डादण्डस्य सुजातस्य=सुष्ठुत्पन्नस्य हस्तिश्वसनस्यैव सन्निभौ-सदृशौ

खड्गमुष्टि के मध्यभाग समान और वज्रके मध्यभाग समान पतला था। तथा (पमुइय-वरतुरग-सीहवर-वट्टिय-कडी) कटिप्रदेश रोगादिकरहित होने से प्रसन्न श्रेष्ठ घोडे के समान और सिंह के समान गोल था। (वर-तुरग-सुजाय-गुज्झ-देसे) गुह्य प्रदेश सुन्दर घोडे के गुह्य प्रदेश के समान था। (आइण्णहउव्व णिरुवलेवे) आकीर्ण जातीय घोडेके गुह्य प्रदेश के समान भगवानका गुह्य प्रदेश निरुपलेप था। तथा (वर-वारण-तुल्ल-विक्कम-विलसिय-गई) भगवानका पराक्रम उत्तम हाथी के समान था, तथा उनकी गति भी उसीके समान सुन्दर थी। (गय-ससण-सुजाय-सन्निभोरू) हस्तिशुण्डा-

મુઠીના મધ્યભાગ જેવો અને વજ્રના મધ્યભાગ જેવો પાતળો હતો. તથા (पमुइय-वरतुरग-सीह-वर-वट्टिय-कडी) કટિપ્રદેશ રોગ આદિકથી રહિત હોવાથી પ્રસન્ન શ્રેષ્ઠ ઘોડાની પેઠે અને સિંહની પેઠે ગોળ હતો. (वरतुरग-सुजाय-गुज्झ-देसे) ગુહ્યપ્રદેશ સુંદર ઘોડાના ગુહ્યપ્રદેશના જેવો હતો. (आइण्णहउव्व णिरुवलेवे) આકીર્ણ-જાતવાન ઘોડાના ગુહ્યપ્રદેશના જેવો ભગવાનનો ગુહ્યપ્રદેશ નિરૂપલેપ હતો. તથા (वर-वारण-तुल्ल-विक्कम-विलसिय-गई) ભગવાનનું પરાક્રમ ઉત્તમ હાથીના જેવું હતું, તથા તેમની ચાલ પણ તેના

समुग्ग-णिमग्ग-गूढ-जाणू एणी-कुरुविंदा-वत्त-वट्टा-णुपुव्व-जंघे संठिय-सुसिलिट्ट-विसिट्ठ-गूढ-गुप्फे सुपइट्ठिय-कुम्म-चारु-चलणे

ऊरू यस्य स तथा, सुन्दर-गजशुण्डादण्डसदृशोरुयुगलवानिति भाव, 'समुग्ग-णिमग्ग गूढ-जाणू' समुद्ग-निमग्न-गूढ-जानु -समुद्ग -सम्पुटक -तस्योपरितनाधस्तन-रूपयोर्भागयो सन्धिवत् निमग्नगूढे=अत्यन्तावृते-मांसपुष्टे इत्यर्थ, तादृशे जानुनी 'घुटना' इति प्रसिद्धे यस्य स तथा, उपचितत्वाददृश्यमानजान्वस्थिक इत्यर्थ । 'एणी-कुरुविंदावत्त-वट्टा-णुपुव्व-जघे' एणी-कुरविन्द - वर्त्त वृत्ता-नुपूर्व्यजङ्घ - एण्या -हरिण्या इव, कुरुविन्द -तृणविशेष, वर्त्त=सूत्रवलनक च, ते इव च वृत्ते-वर्तुले, आनुपूर्व्येण तनुरूपे जङ्घे यस्य स तथा यद्वा-एणी-कुरुविन्दावर्त्त-वृत्ता-नुपूर्व्यजङ्घ -इति छाया, तत्र-एण्या इव, कुरुविन्दावर्त्त =भूषणविशेष इव च वृत्ते= वर्तुले आनुपूर्व्येण तनुस्वरूपे जङ्घे यस्य स तथा, 'सठिय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-गूढ-गुप्फे' सस्थित-सुश्लिष्ट-विशिष्ट-गूढ-गुल्फ -सस्थितौ-सुसस्थानवन्तौ, सुश्लिष्टौ-

दण्ड के समान उन प्रभुकी दोनो जघाएँ थीं । (समुग्ग-निमग्ग-गूढ-जाणू) डिब्बे के समान प्रभुके घुटने गुप्तढकनी से युक्त एव अन्तर रहित होनेसे सुन्दर थे । अर्थात् उपचित होनेसे प्रभुके जानु की अस्थियाँ दृष्टिगोचर नहीं होती थीं । (एणी-कुरुविंदा-वत्त-वट्टा-णुपुव्व-जघे) एणी-हिरणी की जङ्घा समान, तथा-कुरु-विन्द-तृणविशेष और डोरी के बलके समान अथवा कुरुविन्दावर्त्त नामक भूषणके समान गोल पतली-ऊपर से मोटी नीचेकी ओर उतरतीं २ पतली प्रभुकी दोनो जघाएँ थीं । (सठिय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-गूढ-गुप्फे) शोभन आकारयुक्त,- अच्छी

જેવીજ સુદર હતી (गय ससण-सुजाय-सन्निभोरु) હસ્તિશુ ડાદ ડના (હાથીના સૂઢના) જેવી તે પ્રભુની બન્ને જ ઘાઓ હતી (समुग्ग-णिमग्ग-गूढ जाणू) ડબ્બાની પેઠે પ્રભુના ઘુ ટણો ગુપ્ત ઢાકણવાળા તેમજ અ તર રહિત હોવાથી સુ દર હતા, અર્થાત્ ઉપચિત હોવાથી પ્રભુના ઘુ ટણના હાડકા દેખાતા નહતા (ण्णी कुरुविंदा-वत्त वट्टा-णुपुव्व-जघे) એણી-હિરણીની જ ઘા-સમાન, તથા -કુરુવિ દ તૃણવિશેષ, અને દોરીની વલ સમાન, અથવા કુરુ વિન્દાવર્ત્ત નામક ભૂષણ સમાન ગોળ પાતળી ઉપરથી જાડી તેમજ નીચેની તરફ ઉતરતી ઉતરતી પાતળી પ્રભુની બન્ને જ ઘાઓ હતી (सठिय-सुसि लिट्ठ विसिट्ठ-गूढ गुप्फे) શોભાયમાન આકારવાળા, સારી રીતે મળેલા તેમજ

अणुपुव्व-सुसंहयं-गुलीए उण्णय-तणुतंव-णिद्ध-णक्खे रत्तुप्पल-पत्त-मउय-सुकुमाल-कोमल-तले नग-नगर-मगर-सागर-चक्कंक-

सुमिलितौ, गूढौ-मांसलत्वाद्दृश्यौ गुल्फौ यस्य स तथा, पुष्टतया तिरोहितगुल्फ । 'सुप्पइट्ठिय-कुम्म-चारुचलणे' सुप्रतिष्ठित-कूर्मचारु-चरण -सुप्रतिष्ठितौ शोभनरूपेण स्थितौ, कूर्मवत्-कच्छपवत् चारू=सुन्दरौ चरणौ यस्य स तथा, सङ्कोचिताङ्गकच्छपपृष्ठवच्चरणवानिति भाव । 'अणुपुव्व-सुसहय-गुलीए' आनुपूर्व्य-सुसंहताङ्गुलीक -आनुपूर्व्येण=क्रमेण हीयमाना वर्द्धमाना वा, तथा सुसहता -निभिन्ना अपि समिलिता अङ्गुल्य =चरणाङ्गुल्यो यस्य स तथा, 'उण्णय-तणु-तंव-णिद्ध-णक्खे' उन्नत-तनुताम्र-स्निग्ध-नख -समुन्नत-प्रतल-रक्तचिक्कण-नख-युक्त इत्यर्थ, 'रत्तुप्पल-पत्त-मउय-सुकुमाल-कोमल-तले' रक्तोत्पल-पत्र मृदुक-सुकुमार-कोमलतल -रक्तकमलदलवदतिकोमलारुणवर्णचरणतलवानित्यर्थ । 'नग-नगर-मगर-सागर-चक्कंक-वरंग-मंगल-किय-चलणे' नग-नगर-मकर-सागर-चक्राङ्क-वराङ्ग-मङ्गलाङ्कित-चरण ,तत्र-नग =पर्वत ,

रीति से मिलित एव गूढ-मासल-पुष्ट होनेसे अदृश्य ऐसे प्रभुके दोनों पैरोंके गुल्फ थे । (सुप्पइट्ठिय-कुम्म-चारु-चलणे) प्रभुके पाँव सकुच कर बैठे हुए कच्छपके समान सुन्दर थे । (अणुपुव्व-सुसहय-गुलीए) अनुक्रमसे उचित आकारवाली एव भिन्न २ होने पर भी परस्पर मे समिलित प्रभुके चरणोंकी अगुलिया थीं।, (उन्नय-तणु-तंव-णिद्ध-णक्खे) समुन्नत, प्रतल, रक्त एव चिक्कण प्रभुके नख थे । (रत्तुप्पल-पत्त-मउय-सुकुमाल-कोमल-तले) रक्तकमलके दलके समान अति कोमल लालवर्णके प्रभुके चरणोंके तले थे । (नग-नगर-मगर-सागर-चक्कंक-वरंग-मंगल-किय-चलणे) नग-पर्वत, नगर-पुर, मकर-जलचरजीवविशेष,

ગૂઢ માંસલ પુષ્ટ હોવાથી ન દેખાય એવા પ્રભુના બન્ને પગના ગોઠણો હતા (सुप्पइट्ठिय कुम्म-चारु चलणे) પ્રભુના પગ સંકુચાઈને બેઠેલા કાચબાની પેઠે સુંદર હતા (अणुपुव्व सुसहय गुलीए) અનુક્રમથી ઉચિત આકારવાળી તેમજ જુદી જુદી હોવા છતાં પણ પરસ્પરમાં જોડાએલી પ્રભુના ચરણોની આંગળીઓ હતી (उन्नय तणु तंव -णिद्ध- णक्खे) સમુન્નત, પ્રતલ, લાલ તેમજ ચિકણા પ્રભુના નખ હતા (रत्तुप्पल पत्त-मउय-सुकुमाल- कोमल- तले), રક્ત કમલના દલના જેવા અતિશય કોમળ લાલ વર્ણના પ્રભુના ચરણોના તળિયાં હતાં (नग- नगर- मगर- सागर -चक्कंक वरंग-मंगल-किय-चलणे) નગ પર્વત, નગર પુર, મકર-જલચર જીવ વિશેષ, સાગર-સમુદ્ર અને ચક્ર

वरंग-मंगलं-किय-चलणे विसिट्ठरूवे हुयवह-निद्धूम-जलिय-तडि-तडिय-तरुण-रवि-किरण-सरिस-तेए अणासवे अममे अकिंचणे

नगरं=पुर, मकर=जलचरजीवविशेष, सागर=समुद्र, चक्र=प्रसिद्धम्, एतान्येव अङ्का-लक्षणानि, तथा वराङ्काथ=शुभमृचकस्वस्तिकादिलक्षणानि, मङ्गल=शुभलक्षण-विशेषश्च, तैरलङ्कृतौ सुशोभितौ-चरणौ यस्य स तथा, नगनगरमकरादिचिह्न-स्वस्तिका-दिचिह्न-मङ्गलचिह्नरूप-शुभलक्षणसुशोभितचरणयुगवानिति भाव । 'विसिट्ठरूवे' विशि-ष्टरूप-अतिसुन्दर, 'हुयवह-निद्धूम-जलिय-तडितडिय-तरुण-रवि-किरण-सरिस-तेए' हुतवह - निर्धूम - ज्वलित - तडितडि - तरुण - रवि-किरण - सदृश - तेजस्क, हुतवहनिर्धूमज्वलितस्य=अग्नेर्निर्धूमज्वालाया, तडितडित – धारावाहिकतया पुन पुनर्विद्योतितविद्युत,-तथा तरुणरविकिरणाना–सदृश=समान तेज –दीप्तिर्यस्य स तथा, 'अणासवे' अनास्रव –अविद्यमाना आस्रवा यस्य स तथा, कर्मागमरहित इत्यर्थ, 'अममे' अमम –ममत्वरहित 'अकिंचणे' अकिञ्चन –नास्ति

सागर–समुद्र और चक्र इनके शुभ चिह्नों से, स्वस्तिकादि शुभ चिह्नों से तथा मङ्गल नामक शुभ चिह्नसे सुशोभित प्रभुके दोनों चरण थे । (विसिट्ठरूवे) प्रभुका रूप विशिष्ट–असाधारण अर्थात् अनुपम था । (हुयवय–णिद्धूम–जलिय–तडित-डिय–तरुण–रवि–किरण–सरिस–तेए) निर्धूम अग्नि के समान, बार बार चमकती हुई बिजली के समान तथा मध्याह्नकालिक रविकिरणोंके समान प्रभुका तेज था । (अणासवे) नवीन कर्मोंके आस्रवसे प्रभु सर्वथा रहित थे । (अममे) प्रभुके किसी भी पर पदार्थमें ममत्व नहीं था । (अकिंचणे) प्रभु अकिंचन–परिग्रह-रहित थे । (छिन्नसोए) भगवानने अपनी भवपरम्पराको नष्ट कर दिया था ।

એના શુભ ચિહ્નોથી-સ્વસ્તિકાદિ શુભચિહ્નોથી, તથા મંગળનામક ચિહ્નથી સુશોભિત પ્રભુના બન્ને ચરણ હતા (विसिट्ठरूवे) પ્રભુનું રૂપ વિશિષ્ટ અસાધા-રણ અર્થાત્ અનુપમ હતું (हुयवह णिद्धूम जलिय तडि तडिय-तरुण रवि-किरण–सरिस तेए) ધુમાડા વગરના અગ્નિના જેવું, વારવાર ચળકતી વિજ-ળીના જેવું, તથા મધ્યાહ્ન કાળના સૂર્યના કિરણો જેવું પ્રભુનું તેજ હતું (अणासवे) નવીન કર્મોના આસ્રવથી પ્રભુ સર્વથા રહિત હતા (अममे) પ્રભુને કોઇ પણ પર પદાર્થમાં મમત્વ નહોતું (अकिंचणे) પ્રભુ અકિંચણ-પરિ ગ્રહ વગરના હતા (छिन्नसोए) ભગવાને પોતાના ભવપરંપરાનો નાશ કરી

छिन्नसोए निरुवलेवे ववगय-पेम-राग-दोस-मोहे निग्गंथस्स पवयणस्स देसए सत्थनायगे पइट्ठावए समणगपई समणग-

किञ्चन यस्य स तथा, परिग्रहग्रन्थिरहित । 'छिन्नसोए' छिन्नस्रोता --निवर्तित-भवप्रवाह, 'निरुवलेवे' निरुपलेप --उपलेपो--मालिन्य, तद् द्विविध द्रव्यरूप भावरूपञ्च, तादृशाद् द्विविधादुपलेपात्--निर्गतो निरुपलेप, द्रव्यतो निर्मलशरीर, भावत कर्मबन्धहेतु-भूतोपलेपरहित । पूर्वोक्तमेवार्थं विशेषत स्पष्टयन्नाऽऽह 'ववगय-पेम-राग-दोस-मोहे' व्यपगतप्रेमरागद्वेषमोहः--प्रेम च रागश्च द्वेषश्च मोहश्चेति प्रेमरागद्वेषमोहा, प्रेम--आसक्ति-लक्षणम्, राग --विषयेषु अनुरागरूप, द्वेष--अप्रीतिरूप मोह --अज्ञानरूप, एते प्रेमादयो व्यपगता --विनष्टा यस्य स तथा, 'निग्गथस्स पवयणस्स देसए' निर्ग्रन्थस्य प्रवचनस्य देशक --निर्ग्रन्थस्य--निर्गत ग्रन्थाद् द्रव्यत सुवर्णादिरूपाद्, भावतो मिथ्यात्वादिलक्षणात्--निर्ग्रन्थ तस्य निर्ग्रन्थस्य, प्रवचनस्य--प्रकर्षेण--उच्यते--परमकल्याणाय कथ्यते--इति प्रवचनम्--तस्य प्रवचनस्य देशक =उपदेशक --निरारम्भ--निष्परिग्रह--धर्मोपदेशक इति भाव । 'सत्थनायगे' सार्थनायकः--सार्थस्य--मोक्षप्रस्थितभव्यसमूहस्य, नेता--स्वामी यद्वा 'पइट्ठावए' प्रतिष्ठापक --श्रुतचारित्र-लक्षणधर्मसंस्थापक । 'समणगपई' श्रमणकपति --श्राम्यति=सोत्साह कर्मनिर्जरार्थं

(णिरुवलेवे) द्रव्य एव भाव रूप दोनों प्रकारकी मलिनतासे प्रभु वर्जित थे । इसी बातको पुन विशेष रूपसे इन विशेषणों से सूत्रकार स्पष्ट करते है--(ववगय-पेम-राग-दोस-मोहे) भगवानने अपनी आत्मा से प्रेम, राग द्वेष एव मोहको नष्ट कर दिया था । (णिग्गथस्स पवयणस्स देसए) प्रभु निर्ग्रन्थ प्रवचनके उपदेशक थे । (सत्थणायगे) मोक्षकी ओर प्रस्थित भव्यसमूहके भगवान नेता थे । (पइ-ट्ठावए) श्रुतचारित्ररूप धर्मके प्रभु संस्थापक थे । (समणगपई) भगवान् तप एव

દીધા હતા (णिरुवलेवे) દ્રવ્ય તેમજ ભાવરૂપ બન્ને પ્રકારની મલિનતાથી પ્રભુ વર્જિત હતા આ વાતને ફરીને વિશેષ રૂપથી તેમના અંગોના વિશે-ષણોથી સૂત્રકાર સ્પષ્ટ કરે છે (ववगय पेम-राग-दोस मोहे) ભગવાને પોતાના આત્મામાંથી પ્રેમ, રાગ, દ્વેષ તેમજ મોહનો નાશ કર્યો હતો (णिग्गथस्स पवयणस्स देसए) પ્રભુ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનના ઉપદેશક હતા (सत्थणायगे) મોક્ષના તરફ વળેલા ભવ્યસમૂહના ભગવાન નેતા હતા (पइट्ठावए) શ્રુત ચારિત્રરૂપ ધર્મના પ્રભુ સંસ્થાપક હતા (समणगपई)

विंद–परियट्टिए चउतीस-बुद्धा-इसेस–पत्ते, पणतीस-सच्चवयणा-

श्रम कुर्वन्ति तपः–स्वाध्यायादिषु इति श्रमणाः–त एव श्रमणकाः, तेषां पतिः–चतुर्विधसङ्घाधिपतिरिति भावः, 'समणग-विंद-परियट्टिए' श्रमणक-वृन्द-परिवर्द्धकः–श्रमणकानां चतुर्विधानां, वृन्द–सङ्घः–तस्य परिवर्द्धकः–वृद्धिकारी। अथवा 'परियट्टए' पर्यटकः–अग्रेसरः, यद्वा पर्यायकः–तैः परिपूर्णः। 'चउत्तीस-बुद्धाइसेस पत्ते' चतुस्त्रिंशद्–बुद्धातिशेष–प्राप्तः=चतुस्त्रिंशत्=चतुस्त्रिंशत्संख्यकाः ये बुद्धानां=तीर्थकराणाम् अतिशेषाः-अतिशयाः तान् प्राप्तः, तत्र-अवृद्धिस्वभावकः केशश्मश्रुरोमनखमिति प्रथमोऽतिशयः, अन्येऽप्यतिशयाः समवायाङ्गसूत्रेऽभिहितास्ततोऽवगन्तव्याः। 'पणतीस–सच्चवयणाइ-सेस–पत्ते' पञ्चत्रिंशत्सत्यवचनातिशेषप्राप्तः-पञ्चत्रिंशत्संख्यकाः ये सत्यवचनस्य अति-शेषाः-अतिशयाः तान् प्राप्तः, अर्थात् पञ्चत्रिंशद्वाणीगुणयुक्त इति भावः। पञ्चत्रिंश-द्वाणीगुणाः आचाराङ्गसूत्रस्य मत्कृताऽऽचारचिन्तामणिटीकायां प्रथमाध्ययने

स्वाध्याय आदि क्रियाओंमे कर्मनिर्जराके लिये परिश्रम करनेवाले श्रमणोंके स्वामी थे। (समणग-विंद-परियट्टिए) चतुर्विध संघके वे प्रभु वर्द्धक थे। अथवा उसके अग्रेसर या उससे परिपूर्ण थे। (चउत्तीस–बुद्धाइसेस–पत्ते) तीर्थंकरोंके चौतीस अतिशयोंसे प्रभु विराजमान थे। इनमे नख, केश एवं श्मश्रु–दाढी–मूँछका नहीं बढना यह पहला अतिशय है, अवशिष्ट अतिशय समवायाङ्ग सूत्र से जान लेना चाहिये। (पणतीस सच्चवयणा–इसेस-पत्ते) वाणीके पैंतीस गुणों से प्रभु युक्त थे। ३५वाणी-गुणरूप अतिशय आचाराग सूत्रके प्रथम अध्ययनकी आचारचिंतामणि टीका मे कहे हैं, अतः वहा से जान लेना चाहिये। (आगासगएण चक्केण) आकाशगत

ભગવાન તપ તેમજ સ્વાધ્યાય આદિ ક્રિયાઓમાં કર્મનિર્જરાને માટે પરિશ્રમ કરવાવાળા શ્રમણોના સ્વામી હતા (समणग विंद परियट्टिए) ચતુર્વિધ સંઘના તે પ્રભુ વર્દ્ધક હતા અથવા તેના અગ્રેસર કે તેનાથી પરિપૂર્ણ હતા (चउत्तीसबुद्धा इसेसपत्ते) તીર્થંકરોના ચોત્રીસ અતિશયોથી પ્રભુ બિરાજમાન હતા તેમાં નખ કેશ તેમજ શ્મશ્રુ–દાઢી મૂછનું ન વધવું એ પહેલો અતિશય છે, બાકીના અતિશય સમવાયાંગ સૂત્રથી જાણી લેવા જોઈએ (पणतीस सच्च वयणाइसेस-पत्ते) વાણીના પાંત્રીસ ગુણોથી પ્રભુ યુક્ત હતા ૩૫ વાણી ગુણરૂપ અતિશય આચારાંગ સૂત્રના પ્રથમ અધ્યયનની આચાર ચિંતામણિ ટીકામાં કહેલા છે, એટલે ત્યાંથી તે જાણી લેવા

इसेस-पत्ते आगासगएणं चक्केणं आगासगएणं छत्तेणं आगास-मियाहिं चामराहिं आगासगएणं फालियामएणं सपायवीढेणं सीहासणेणं धम्मज्झएणं पुरओ पकढिज्जमाणेणं चउदसहिं समणसाहस्सीहिं छत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपडिवुडे

व्याख्याता, 'आगासगएण चक्केण' आकाशगतेन चक्रेण। 'आगासगएण-छत्तेण' आकाशगतेन छत्रेण। 'आगासमियाहिं' आकाशमिताभ्या=प्रामाभ्या, 'चामराहिं' चामराभ्याम्—अतिशयप्रभावाच्चक्रादिभिरुपलक्षित इति भाव। 'आगास-गएण फलिआमएण' आकाशगतेन स्फटिकमयेन—आकाशस्थितेन स्फटिकनिर्मितेन 'सपायवीढेण' सपादपीठेन—पादस्थापनपीठसहितेन 'सीहासणेण' सिंहासनेन, 'धम्मज्झएण' धर्मध्वजेन, 'पुरओ' पुरत—अग्रत, 'पकढिज्जमाणेण' अतिशय-महिम्ना प्रकटयमानेन 'चउदसहिं समणसाहस्सीहिं' चतुर्दशभि—श्रमणसाहस्रीभि श्रमणाना चतुर्दशसहस्रै 'छत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं' षट्त्रिंशता आर्यिकासाह-स्रीभि—आर्यिकाणा षट्त्रिंशत्सहस्रै 'सद्धिं' सार्द्ध—सह। 'संपडिवुडे' सम्परिवृत -

चक्रसे, (आगासगएण छत्तेण) आकाशगत छत्र से (आगासमियाहिं चामराहिं) आकाशगत चामरों से वे प्रभु उपलक्षित थे। (आगासगएण फलियामएण सपायवीढेण-सीहासणेण धम्मज्झएण पुरओ पकढिज्जमाणेण) आकाशगत, स्फटिकमय एव पादपीठसहित ऐसे सिंहासन से एव अतिशय की महिमा से प्रकटित और आगे २ चलनेवाले ऐसे धर्मध्वजा से युक्त, तथा—(चउदसहिं समणसाहस्सीहिं छत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे) १४ हजार श्रमणों के, एव

જોઈએ (आगासगएण चक्केण) આકાશગત ચક્રથી (आगासगएणं छत्तेण) આકાશગત છત્રોથી (आगासमियाहिं चामराहिं) આકાશગત ચામરોથી તે પ્રભુ ઉપલક્ષિત (દેખાતા) હતા (आगासगएण फलियामएण सपायवीढेण सीहासणेण धम्मज्झएण पुरओ पकढिज्जमाणेण] આકાશગત, સ્ફટિકમય તેમજ પાદપીઠ સહિત એવા સિંહાસનથી તેમજ અતિશયની મહિમાથી પ્રગટિત અને આગળ આગળ ચાલનાર એવા ધર્મધ્વજાથી યુક્ત [चउद्दसहिं समणसाहस्सीहिं छत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे] ૧૪ હજાર શ્રમણોના તેમજ છત્રીસ હજાર આર્યાઓના પરિવારથી યુક્ત ભગવાન શ્રી મહાવીર પ્રભુ

पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहर-माणे चंपाए णयरीए बहिया उवणगरग्गामं उवागए चंपं नगरिं पुण्णभद्दं चेइयं समोसरिउकामे ॥ सू० १६ ॥

भगवान्—श्रीमहावीर, 'पुव्वाणुपुव्विं' पूर्वानुपूर्व्या—तीर्थंकरपरिपाट्या—तीर्थङ्करपरम्परया। 'चरमाणे' चरन्—विहरन्, 'गामाणुग्गाम' ग्रामानुग्रामम् एकस्माद् ग्रामाद् ग्रामान्तरम्, 'दूइज्जमाणे' द्रवन्—गच्छन् एकस्माद् ग्रामादनन्तर ग्राममनुल्लङ्घयन्नित्यर्थ, 'सुहसुहेण' सुखसुखेन—संयमबाधारहितेन, 'विहरमाणे' विहरन्—अप्रतिबद्धविहार कुर्वन्, 'चपाए नयरीए' चम्पाया नगर्या, 'बहिया' बहि 'उवणगरग्गाम' उपनगरग्रामम् नगरसमीपवर्तिन ग्रामम्। 'उवागए' उपागत —समवसृत, किमर्थमुपागत' इत्याह—'चप णयरिं' चम्पाया—चम्पानाम्या नगर्या 'पुण्णभद्द चेइय समोसरिउकामे' पूर्णभद्र=पूर्णभद्रनामक चैत्यम्=उद्यान समवसर्तुकाम —आगन्तुकाम सन् उपागत इति सम्बन्ध ॥ सू० १६ ॥

छत्तीसहजार आर्यिकाओं के परिवार से युक्त भगवान् श्रीमहावीर प्रभु (पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे) तीर्थंकरों की परपरा के अनुसार विहार करते हुए (गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे) एकग्राम से दूसरे ग्राम पधारते हुए (सुहसुहेण विहरमाणे) सुख सुख से विचरते हुए (चपाए णयरीए बहिया उवणगरग्गाम उवागए) चपानगरी के बाहरभाग की ओर स्थित, परन्तु वहा से बहुत दूर नहीं, किन्तु थोडी दूर पर रहे हुए ऐसे ग्राम में पधारे, यहा आने का कारण उनका यह था कि वे प्रभु (चप णयरिं पुण्णभद्द चेइय समोसरिउकामे) चपानगरी के पूर्णभद्र नामक उद्यान में पधारनेवाले थे ॥ सू० १६ ॥

(पुव्वाणुपव्विं चरमाणे) तीर्थंकरोनी परंपराने अनुसरीने विहार करता करता (गामाणुग्गाम दूइज्जमाणे) એક ગામથી બીજે ગામ પધારતા (सुहसुहेण विहरमाणे) સુખ સુખેથી વિચરતા (चपाए णयरीए बहिया उवणगरग्गाम उवागए) ચંપા નગરીની બહારના ભાગ તરફ પરંતુ એનાથી બહુ દૂર નહિ પણ જરા દૂર આવેલા એવા ગામમા પધાર્યા અહી આવવાનુ કારણ તેમને એ હતુ કે તે પ્રભુ (चप णयरिं पुण्णभद्द चेइय समोसरिउकामे) ચંપાનગરીના પૂર્ણભદ્ર નામના ઉદ્યાનમા પધારવાવાળા હતા [સૂ ૧૬]

मूलम्—तए णं से पवित्तिवाउए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ-तुट्ठ-चित्त-माणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए

टीका—'तए ण' इत्यादि, तत खलु=यदा भगवान्—चम्पानगरीसमीपग्राम-मुपागत तदनन्तर—तपश्चात, 'से पवित्तिवाउए' स प्रवृत्तिव्यापृत =स पूर्वोक्त —भगवद्वार्ताऽऽनयन नियुक्त 'इमीसे कहाए' अस्या कथाया 'लद्धट्ठे समाणे' लब्धार्थ सन्—ज्ञातभगवदागमनवृत्तान्त सन्, 'हट्ठ-तुट्ठ-चित्त-माणदिए' हृष्ट—तुष्ट—चित्ता—नन्दित —हृष्टतुष्ट=अतितुष्टम्, यद्वा हृष्ट=हर्षितम्, तुष्टम् प्राप्तसन्तोष-तादृश चित्त यस्य स हृष्टतुष्टचित्त, अत एव आनन्दित =आनन्द प्राप्त सजात-मानसोल्लास इत्यर्थ । सूत्रे 'चित्तमाणदिए' इत्यत्र मकार प्राकृतत्वात् । 'पीइमणे' प्रीतिमना —प्रीति —तृप्तिर्मनसि यस्य स प्रीतिमना —तृप्तमानस । 'परमसोमणस्सिए' परमसौमनस्यित —परमम्—उत्कृष्ट च तत् सौमनस्य प्रसन्नचित्तता चेति परमसौमनस्य तदस्य सजात परमसौमनस्यित परमानुरागपूर्णमनस्क,

'तए ण से पवित्तिवाउए' इत्यादि—

(तए ण) जब भगवान् चपानगरी के समीपवर्ती ग्राम मे पधारे तब (से पवित्तिवाउए) भगवान की वार्ता के लाने के लिये नियुक्त किया हुआ वह पुरुष (इमीसे कहाए) इस समाचार को (लद्धट्ठे समाणे) जानकर कि भगवान् चपानगरी के समीपवर्ती ग्राम म आकर विराजमान हो चुके है, (हट्ठ—तुट्ठ—चित्त—माणदिए) इससे उसके चित्त म अत्यन्त हर्ष और सन्तोष हुआ। अत वह अत्यन्त आनदित हुआ, (पीइमणे) मन मे प्रेम छा गया, (परमसोमणस्सिए) अयत अनुराग से उसका मन भर गया (हरिस—वस—विसप्पमाण—हियए) अपार

'तए ण से पवित्तिवाउए' ईत्यादि—

(तए ण) જ્યારે ભગવાન ચ પાનગરીના સમીપવર્તી ગામમા પધાર્યા ત્યારે (से पवित्तिवाउए) ભગવાનની વાર્તા—સમાચાર લઈ જવા માટે નિમાએલા તે પુરૂષે (इमीसे कहाए) એ સમાચારને (लद्धट्ठे समाणे) જાણ્યા કે ભગવાન ચ પાનગરીના સમીપવર્તી ગામમા આવીને બિરાજમાન થઈ ચૂકયા છે, (हट्ठ तुट्ठ चित्त-माणदिए) આથી તેના મનમા અત્યત હર્ષ અને સતોષ થયો અને તેથી તે બહુ આનદ પામ્યો, (पीइमणे) મનમા પ્રેમ છવાઈ ગયો, (परमसोमणस्सिए) અત્યત અનુરાગથી તેનુ મન ભરાઈ ગયુ,

हरिस-वस-विसप्पमाण-हियए ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पवेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्प-महग्घा-भरणा-लंकिय-सरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खम-

'हरिस-वस-विसप्पमाण-हियए' हर्ष-वश-निसर्प-हृदय-हर्षवशेन विसर्पत्-परित उच्छलद् हृदय यस्य स तथा, भगवद्दर्शनादमन्दानन्दतरङ्गसमुच्छलितचित्त इत्यर्थ। 'ण्हाए' स्नात-कृतस्नान, 'कयवलिकम्मे' कृतवलिकर्मा-स्नाने कृते पशुपक्ष्यार्थं कृतान्नभाग 'कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते' कृत-कौतुक-मङ्गल-प्रायश्चित्त-कृतानि कौतुकमङ्गलान्येव प्रायश्चित्तानि-दु स्वप्नादिविघातार्थमवश्यकरणीयत्वात् येन स तथा, तत्र कौतुकानि=मषीतिलकादीनि, मङ्गलानि तु सिद्धार्थदध्यक्षतादीनि। 'सुद्धप्पवेसाइ' शुद्धप्रवेश्यानि-शुद्धानि=प्रक्षालितत्वात् निर्मलानि, प्रवेश्यानि=राजसभाप्रवेशाऽर्हाणि-राजसभायोग्यानि 'मगलाइ' मङ्गलानि-मङ्गलकारकाणि, 'वत्थाइ' वस्त्राणि-विविधरूप-प्रकाराणि-'पवर'-प्रवराणि-मूल्यतो महार्घाणि, रूपत उज्ज्वलानि मृदूनि सान्द्राणि च, प्राकृतत्वाद् विभक्तेर्लोप, 'परिहिए' परिहित-शरीरे यथास्थान योजित। 'अप्प-महग्घा-भरणा-लकियसरीरे' अल्प-महार्घा-भरणा-ऽलङ्कृत-शरीर-अल्पानि=

हर्ष से उसका हृदय उछलने लगा। फिर उसने कोणिक राजा के पास जाने की तैयारी की। उसने (ण्हाए) स्नान किया, (कयवलिकम्मे) पश्चात् पशुपक्षी आदि के लिये अन्न का विभागरूप बलिकर्म किया, (कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते) दु स्वप्नादि निवारण के लिए मषीतिलकादि किये और दही अक्षतादि धारण किये। (सुद्धप्पवेसाइ मगलाइं वत्थाइ पवर परिहिए) पश्चात् उसने स्वच्छ, राजसभा में जाने योग्य, मागलिक, बहुमूल्य, तथा रूप से उज्वल वस्त्रों को धारण किये। (अप्प-महग्घा-भरणा-लकिय-सरीरे) वस्त्र पहिर चुकने के अनन्तर फिर उसने

(हरिस-वस विसप्पमाण हियए) અપાર હર્ષથી તેનુ હૃદય ઉછળવા લાગ્યુ પછી તેણે કોણિક રાજાની પાસે જવાની તૈયારી કરી તેણે (ण्हाए) સ્નાન કર્યું, (कयबलिकम्मे) પછી પશુ પક્ષિ આદિ ને માટે અન્નના વિભાગરૂપ બલિકર્મ કર્યું (कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते) દુ સ્વપ્નાદિ દોષના-નિવારણને માટે મષી-તિલક આદિ કર્યા અને દહી અક્ષત આદિ ધારણ કર્યા (सुद्धप्पवेसाइ मगलाइ वत्थाइ पवर परिहिए) પછી તેણે સ્વચ્છ, રાજસભામા પહેરી જવા યોગ્ય, માગલિક, બહુમૂલ્ય તથા રૂપથી ઉજ્જવલ વસ્ત્રો ધારણ કર્યા (अप्प-महग्घा-भरणा लकिय सरीरे) વસ્ત્ર પહેરી લીધા પછી તેણે ઓછા

मइ, पडिणिक्खमित्ता चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव कोणियस्स रण्णो गिहे जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव कूणिए राया भिंभसारपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छि-

परिमाणतो न्यूनानि, महार्घाणि-महान्=अतिशय-अर्घो=मूल्य येषा तानि, आभ्रियन्ते=सम्यग् धार्यन्त इत्याभरणानि- अलङ्कारा, तैरलङ्कृत शरीर यस्य स तथा, अल्पबहुमूल्य-भूषणभूषितदेह इत्यर्थ, 'सयाओ गिहाओ' स्वकाद् गृहाद्, 'पडिणिक्खमइ' प्रतिनिष्क्राम्यति-निर्गच्छति। 'पडिणिक्खमित्ता' प्रतिनिष्क्रम्य-निर्गत्य, 'चपाए णयरीए' चम्पाया नगर्या, 'मज्झमज्झेण' मध्यमध्येन-चतुर्दिगपेक्षमध्यभागेन, 'जेणेव कोणियस्स रण्णो गिहे' यत्रैव कोणिकस्य राज्ञो गृह-भवनम्, 'जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला' यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला-आस्थानमण्डप, 'जेणेव कूणिए राया भिंभसारपुत्ते' यत्रैव कोणिको राजा भिंभसारपुत्र, 'तेणेव उवागच्छइ' तत्रैवोपागच्छति, 'उवागच्छित्ता' उपागत्य, 'करयलपरिग्गहिय'

भार से अल्प एव बहुमूल्य आभरण भी शरीर पर धारण किये। इस प्रकार सज-धज कर वह (सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ) अपने घर से निकला, (पडिणिक्खमित्ता चपाए णयरीए मज्झमज्झेण जेणेव कोणियस्स रण्णो गिहे) घर से निकलकर वह चपानगरी के ठीक मध्य के मार्ग से होकर जहा कोणिक राजा का प्रासाद था, (जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला) जहा पर बाहरी उपस्थानशाला थी, और (जेणेव कूणिए राया भभसारपुत्ते तेणेव उवागच्छइ) उस उपस्थानशाला में, जहाँ भभसार के पुत्र कोणिक राजा बैठे हुए थे, वहा पहुँचा। (उवागच्छित्ता) वहाँ पहुँचते ही सर्वप्रथम उसने (करयलपरिग्गहियं

વજનના તેમજ બહુમૂલ્ય આભરણ પણ શરીર ઉપર ધારણ કર્યાં આ પ્રકારે શણગાર કરીને તે (सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ) પોતાને ઘેરથી નીકળ્યો. (पडिणिक्खमित्ता चपाए णयरीए मज्झमज्झेण जेणेव कोणियस्स रण्णो गिहे) ઘેરથી નીકળીને તે ચ પાનગરીના બરાબર મધ્યભાગમા થઈને જ્યા કોણિક રાજાનો મહેલ હતો (जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला) અને જ્યા બાહ્ય ઉપસ્થાન શાલા હતી, તથા (जेणेव कूणिए राया भंभसारपुत्ते तेणेव उवागच्छइ) તે ઉપસ્થાન-શાલામા જ્યા ભભસારના પુત્ર કોણિક રાજા બેઠા હતા ત્યા પહોચ્યો. (उवागच्छित्ता) ત્યા પહોચતાજ સર્વ પ્રથમ તેણે (करयलपरिग्गहि

त्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं वयासी ॥ सू० १७॥

मूलम्—जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं कंखंति, जस्स

करतलपरिगृहीत=करतलेन करतल परिगृहीत—परस्पर संश्लिष्टम् । 'सिरसावत्तं' शिरआवर्तम्—शिरसि=शिरसोऽग्रभागे आ—समन्तात् वर्तते—परिभ्राम्यति इति शिर-आवर्तस्तम् । 'अंजलिं' संमिलितकरयुगम् । 'मत्थए' मस्तके—ललाटदेशे, 'कट्टु'—कृत्वा 'जएणं' जयेन—जय=उत्कर्षप्राप्तिरूप तेन—'जय जय महाराज' इति रूपेण, 'विजएणं' विजयेन—विशिष्ट प्रचण्डशत्रुनिग्रहरूपो जयो विजय तेन—अर्थात्—विजयस्व विजयस्व महाराज इति रूपेण 'वद्धावेइ' वर्द्धयति—जयेन विजयेन वर्द्धस्वेति वृद्धिकामनारूपामाशिष प्रयुङ्क्ते स्म, वर्द्धयित्वा 'एवं वयासी' एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् ॥ सू० १७ ॥

टीका—भगवद्विहारादिवार्तानिवेदक पुरुष कोणिकनृप किमवादीत्? इत्याह—'जस्स णं' इत्यादि, यस्य भगवत श्रीमहावीरस्य खलु=निश्चयेन, हे देवानुप्रिया! 'दंसणं' दर्शन सबहुमान रूपावलोकन भवन्त 'कंखंति' काङ्क्षन्ति—

सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं वयासी) दोनों हाथ जोडकर और अञ्जलिरूप मे परिणत उन्हे मस्तक के दाँये—बाँये घुमाकर पश्चात् उन्हे मस्तक पर लगाकर अर्थात् नमस्कार कर "जय हो महाराज की, विजय हो महाराज की"—इस प्रकार जय विजय शब्दों द्वारा राजा को बधाया। बधाने के बाद फिर वह इस प्रकार बोला—॥सू० १७॥

'जस्स णं देवाणुप्पिया' इत्यादि—

(देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रिय! (जस्स णं) जिनके सदा आप (दंसणं कंखंति) दर्शनों की इच्छा किया करते है (जस्स णं देवाणुप्पिया

य सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावित्ता एवं वयासी) બન્ને હાથ જોડીને અને તેમને મસ્તકની જમણી અને ડાબી બાજુએ ફેરવીને અંજલિ રૂપમાં પરિણત કરી માથે લગાવીને અર્થાત્ નમસ્કાર કરીને "જય હો મહારાજાનો, વિજય હો મહારાજાનો" એ પ્રકારે જય વિજય શબ્દો દ્વારા રાજાને વધાવ્યા અને વધાવ્યા પછી તે નીચે પ્રમાણે બોલ્યો. (સૂ ૧૭)

'जस्स णं देवाणुप्पिया' ईत्यादि—

(देवाणुप्पिया!) હે દેવાનુપ્રિય! (जस्स णं) જેમના સદા આપ (दंसण

णं देवाणुप्पिया दंसणं पीहंति, जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं पत्थंति, जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं अभिलसंति, जस्स णं देवाणु-

अप्राप्त प्राप्तुमिच्छन्ति 'जस्स खलु देवाणुप्पिया दसण पीहति' हे देवानुप्रिया ! यस्य भगवत श्रीमहावीरस्य खलु दर्शनाय भवन्त स्पृहयन्ति=कदा मे भगवद्दर्शन भविष्यतीत्युत्कण्ठा सतत धरन्ति, प्राप्त सत पुनस्त परित्यक्तु नेच्छन्तीति भाव । हे देवानुप्रिया ! यस्य भगवत खलु 'दसण' दर्शन 'पत्थति' प्रार्थयन्ति=भवन्तो याचन्ते-हे भगवन ! भवद्दर्शनादेव मम जन्मन सफलता स्यादतो भवन्तश्चरणपङ्कज दर्शयन्तु-इति रहसि पुन पुन प्रार्थना कुर्वन्ति, यद्वा-अस्मत्सदृशेभ्यो जनेभ्य सतत याचन्ते-भगवद्दर्शन कारयतेति भाव । 'जस्स ण देवाणुप्पिया दसण अभिलसति' यस्य खलु देवानुप्रिया दर्शनमभिलष्यन्ति=कदाऽह भगवत्समीपमुपगत्य तत्पर्युपासन करिष्यामीत्यभिलाषमन्त करणे कुर्वन्तो भवन्त सन्ति। 'जस्स ण देवाणुप्पिया

दसणं पीहति) जिनके आप देवानुप्रिय दर्शन करने की सदा स्पृहा रखा करते है-कब मुझे भगवान् के दर्शन होंगे इस प्रकार की उत्कण्ठा निरन्तर किया करते है, (जस्स ण देवाणुप्पिया दसण पत्थति) हे देवानुप्रिय ! जिनके दर्शनो की याचना किया करते है, अर्थात्-हे भगवन् ! आपके दर्शन से ही मेरा जन्म सफल होगा, इसलिये आप कृपा करके अपने चरणकमल का दर्शन दीजिये, इस प्रकार एकान्त मे आप बार २ प्रार्थना किया करते है, अथवा-हमारे जैसे लोगों से आप प्रार्थना करते है कि-मुझे भगवान का दर्शन कराओ। (जस्स ण देवाणुप्पिया दसण अभिलसंति) हे देवानुप्रिय ! आप जिनके दर्शनों की चित्तमें सदा अभिलाषा धारण किये रहते हैं कि कब मै प्रभु के चरणोंमें उपस्थित होकर उनकी

करंति) दर्शननी ईच्छा कर्या करो छो, (जस्स ण देवाणुप्पिया ! दसण पीहति) जेमना आप दर्शन करवानी सदा स्पृहा राखो छो के क्यारे मने भगवानना दर्शन थशे-ए प्रकारनी उत्कंठा निरंतर कर्या करो छो, (जस्स ण देवाणुप्पिया ! दसण पत्थति) हे देवानुप्रिय ! जेमना दर्शनोनी याचना कर्या करो छो, अर्थात् हे भगवान् ! आपना दर्शनथीज मारो जन्म सफल थशे, ए माटे आप कृपा करीने आपना चरण कमलना दर्शन आपशो ए प्रकारे एकांतमा आप वारवार प्रार्थना कर्या करो छो, अथवा-अमारा जेवा लोको पासे आप प्रार्थना करो छो के मने भगवानना दर्शन करावो (जस्स ण देवाणुप्पिया ! दसण अभिलसति) हे देवानुप्रिय ! आप जेना दर्शनोनी मनमा सदा अभिलाषा धारण

प्पिया नामगोयस्सवि सवणयाए हट्ठ—तुट्ठ—जाव -हियया भवंति, से णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे चंपाए णयरीए उवणगरग्गामं उवागए चंपं णयरिं पुण्णभद्दं चेइयं समोसरिउकामे। तं एवं देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियं णिवेदेमि, पियं ते भवउ ॥ सू० १८॥

नामगोयस्सवि सवणयाए हट्ठ—तुट्ठ—जाव—हियया भवति' यस्य भगवत खलु हे देवानुप्रिय ! नामगोत्रस्यापि—नाम='महावीर' इति, गोत्र=वश —काश्यप गोत्रम् इति तयोरित्यर्थ, श्रवणतया—श्रवणेन इत्यर्थ, स्वार्थिकस्तलप्रत्ययः प्राकृतशैलीप्रभव इति, हृष्ट—तुष्ट—यावत्—हृदया भवन्ति, 'से ण समणे भगव महावीरे' स खलु श्रमणो भगवान् महावीर —अतिशयमहिमान्वित श्रमण —साधु, भगवान्—परमैश्वर्यसम्पन्न महावीर इति अन्वर्थनामा 'पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे चपाए णयरीए उवणगरग्गाम उवागए' पूर्वानुपूर्व्या चरन् ग्रामानुग्राम द्रवन्—चम्पाया नगर्या उपनगरग्राम—नगरसमीपवर्तिन ग्रामम् उपागत —समागत । किमर्थम्? अत्राह— 'चंप णयरिं पुण्णभद्द चेइय समोसरिउकामे' चम्पा नगरीं पूर्णभद्रनामकम्

उपासना करूँगा, (जस्स ण देवाणुप्पिया नामगोयस्सवि सवणयाए हट्ठ—तुट्ठ—जाव—हियया भवति) हे देवानुप्रिय! जिनका नाम तथा गोत्र—वश सुनकर भी आपका हृदय हृष्ट तुष्ट हुआ करता है, (से ण समणे भगव महावीरे) वे श्रमण भगवान्=परमैश्वर्यसम्पन्न, गुणनिष्पन्न नामवाले महावीर (पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे चपाए णयरीए उवणगरग्गाम उवागए) पूर्वानुपूर्वीरूप से विहार करते हुए, एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विचरते हुए आज चपा नगरी के समीप ग्राम में पधारे हुए हैं, (चप णयरिं पुण्णभद्द चेइय समोसरिउकामे) और

કર્યા કરો છે। કે કયારે હુ પ્રભુના ચરણોમા ઉપસ્થિત થઇને તેમની ઉપાસના કરુ, (जस्स णं देवाणुप्पिया! नामगोयस्सवि सवणयाए हट्ठ—तुट्ठ—जाव—हियया भवति) હે દેવાનુપ્રિય! જેમનુ નામ તથા ગોત્ર—વ શ સાભળીને પણ આપનુ હ્રદય હૃષ્ટ—તુષ્ટ થઈ જાય છે, (से ण समणे भगव महावीरे) તે શ્રમણ ભગવાન્ પરમૈશ્વર્યસ પન્ન, ગુણનિષ્પન્ન નામવાળા મહાવીર (पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे चपाए णयरीए उवणयरग्गामं उवागए) પૂર્વાનુપૂર્વી રૂપથી વિહાર કરતા કરતા એક ગામથી બીજે ગામ વિચરતા વિચરતા આજ ચ પાનગરીની સમીપના ગામમા પધાર્યા છે (चंपं णयरिं पुण्णभद्द चेइयं

मूलम्—तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते तस्स पवित्तिवाउयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ट-तुट्ट-जाव

उद्यान समवसर्तुकाम 'त एवं देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए' तदेव देवानुप्रियाणां प्रियार्थनया=उत्कण्ठाविषयत्वादनुकूलार्थनया, एवम्=अमुना प्रकारेण तद् वृत्तम् 'पियं णिवेदेमि' प्रियं=प्रीतिकारकं निवेदयामि=सविनयं कथयामीति भावः। 'पियं ते भवउ' प्रियं ते भवतु ॥सू० १८॥

टीका—'तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते' इत्यादि। तत = तदनन्तरं खलु स कूणिको राजा भंभसारपुत्र 'तस्स पवित्तिवाउयस्स अंतिए' तस्य प्रवृत्तिव्यापृतस्य भगवद्विहारनिवेदकस्य पुरुषस्य अन्तिके=समीपे-तन्मुखादिति भाव, 'एयमट्ठं' एतमर्थम्-भगवदागमनरूपम्-'सोच्चा' श्रुत्वा-श्रवणविषयं कृत्वा, 'णिसम्म' निशम्य-हृदि धृत्वा 'हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए' हृष्ट-तुष्ट-यावद्-हृदय =हर्षाति-

चम्पानगरी के पूर्णभद्र चैत्य मे पधारेंगे, (तं एवं देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियं णिवेदेमि पियं ते भवउ) इसलिये हे देवानुप्रिय! मैं आपको यह प्रिय आत्म-हितकारी समाचार आपके हितके लिये सविनय निवेदन करता हू। आपका कल्याण हो ॥ सू० १८ ॥

'तए णं से कूणिए राया' इत्यादि—

(तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते) उसके बाद भंभसार का पुत्र वह कोणिक राजा (तस्स पवित्तिवाउयस्स अंतिए) उस संदेशवाहक के मुख से (एयमट्ठं सोच्चा) 'भगवान पधारे है' इस कर्णप्रिय समाचार को सुनकर (णिसम्म) और हृदय मे अच्छी तरह धारण कर (हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए)

समोसरिउकामे) અને ચંપાનગરીના પૂર્ણભદ્ર ચૈત્યમાં પધારશે (तं एवं देवाणुप्पियाणं पियं णिवेदेमि पियं ते भवउ) આથી હે દેવાનુપ્રિય! હું આપને આ પ્રિય આત્મહિતકારી સમાચાર આપના હિતને માટે સવિનય નિવેદન કરૂં છું. આપનું કલ્યાણ થાઓ. (સૂ. ૧૮)

'तए णं से कूणिए राया' ઇત્યાદિ—

(तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते) ત્યારપછી ભંભસારના પુત્ર તે કોણિક રાજા (तस्स पवित्तिवाउयस्स अंतिए) તે સંદેશવાહકના મુખથી (एयमट्ठं सोच्चा) 'ભગવાન પધાર્યા છે' એ કર્ણપ્રિય સમાચાર સાંભળીને (णिसम्म) અને હૃદયમાં સારી રીતે ધારણ કરીને (हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए)

हियए धारा-हय-नीव-सुरहि-कुसुमंव चंचुमालइय-ऊसविय-रोमकूवे वियसिय-वर-कमल-णयण-वयणे पयलिय-वर-कडग-तुडिय-केऊर-

शयेन प्रमुदितहृदय, 'धारा हयनीव-सुरहि-कुसुमव चंचुमालइय-ऊसविय-रोमकूवे' धारा-हत-नीप-सुरभि-कुसुममिव रोमाञ्चितो-च्छ्रित-रोमकूप, तत्र-धाराभि-जलधरजलधाराभि आहत=सिक्त यत्-नीपस्य=कदम्बस्य सुरभि=परिमलयुक्त कुसुम=पुष्पम तदिव 'चचुमालइय' इति देशीय शब्द, रोमाञ्चित इत्यर्थ, अतएव-उच्छ्रित-उच्चता गतो रोमकूपो-रोमस्थान यस्य स उच्छ्रितरोमकूप, तत पदद्वयस्य कर्मधारय। 'विअसिय-वर-कमल-णयण-वयणे' विकसित वर-कमल-नयन-वदन -विकसितवरकमलवन्नयनवदन यस्य स तथा, 'पयलिय-वर-कडग-तुडिय-केऊर-मउड-कुंडल-हार-विरायत-रइय-वच्छे' प्रचलित-वर कटक-त्रुटित-केयूर-मुकुट-कुण्डल हार-विराजमान-रचित-वक्षस्क -प्रचलितानि=प्रकम्पितानि वर-कटक-त्रुटित-केयूर-मुकुट-कुण्डलानि यस्य स तथा, तत्र-वरौ=श्रेष्ठौ, कटकौ=वलयौ, त्रुटिते-बाहुरक्षकभूषणे, केयूरौ-बाहुभूषण भुजबन्धविशेषौ, मुकुट=शिरोभूषणम्, कुण्डले=कर्णभूषणे-इति, तथा हार =अष्टादशसरिकादिक, विराजमान =शोभमान, रचित =विन्यस्त -

बहुत ही हृष्ट तुष्ट एव आनन्दित हुए, (धारा-हय-नीव-सुरहि-कुसुमव चचुमालइय-ऊसविय-रोमकूवे) जिस प्रकार बरसात का धारा से सींचे जाने पर कदम्ब के सुगन्धित फूल एकदम विकसित हो जाते है, उसी प्रकार भगवान् के पधारने का समाचार सुनकर राजा के रोम खडे हो गये, (वियसिय-वर-कमल-णयण-वयणे) उनके नेत्र और मुख दोनो कमल के समान विकसित हो गये। (पयलिय-वर-कडग-तुडिय-केऊर-मउड-कुडल-हार-विरायत-रइय-वच्छे) अपार हर्ष के मारे कम्पित इनके शरीर पर धृत श्रेष्ठ दोनों वलय, दोनो त्रुटित-बाहुरक्षकभूषण,

घणाज हृष्ट तुष्ट तेमज आनंदित थया [धारा-हय-नीव-सुरहि-कुसुमव चचु-मालइय-ऊसविय-रोमकूवे) जे प्रकारे वरसादनी धाराथी सींचायेला कदंबना सुगंधित फूल एकदम खीली नीकळे छे तेज प्रकारे भगवानना पधारवाना समाचार सांभळीने राजाना रोमे रोम आनंदथी पुलकित थई ऊभा थया, (वियसिय-वर-कमल-णयण-वयणे) तेमना नेत्र तथा मुख बन्ने कमलना जेम विकसी गया (पयलिय-वर-कडग-तुडिय-केऊर-मउड-कुडल-हार-विरायत-रइय-वच्छे) अपार हर्षने लईने कंपायमान थता तेमना शरीर पर धारण करेला श्रेष्ठ बन्ने वलय (कडा), बन्ने त्रुटित-बाहुरक्षक भूषण, बन्ने केयूर

मउड-कुंडल-हार-विरायंत-रइय-वच्छे पालंबपलंबमाण-घोलंत-भूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं नरिंदे सीहासणाओ अब्भुट्टेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेरुलिय-वरिट्ठ-रिट्ठ-

परिवृत वक्षसि=वक्ष स्थले यस्य स तथा, तत पदद्वयस्य कर्मधारय। 'पालंब-पलंबमाण-घोलंत-भूसण-धरे' प्रालम्ब-प्रलम्बमान-घूर्णमान-भूषण-धर - प्रालम्ब -कण्ठाभरणविशेष, स एव प्रलम्बमान=लम्बाकार घूर्णमान=डोलायमान भूषण तस्य धर -धारक, एतादृश 'नरिंदे' नरेन्द्र कूणिकनृप 'ससभम' ससम्भ्रम-सादर यथा स्यात्, 'तुरिय' त्वरित-शीघ्रतया यथा स्यात्, 'चवल' चपल-चञ्चलतया यथा स्यात् तथा 'सीहासणाओ अब्भुट्टेइ' सिंहासानदभ्युत्तिष्ठति-अवतरति, 'अब्भुट्ठित्ता' अभ्युत्थाय-अवतीर्य 'पायपीढाओ पच्चोरुहइ' पादपीठात्प्रत्यवरोहति-अवतरति, प्रत्यवरुह्य-अवतीर्य पादपीठादधोऽवतार्य 'पाउआओ ओमुअइ' पादुके अवमुञ्चति, कीदृशे पादुके' इत्याह-'वेरुलिय' इत्यादि, 'वेरुलिय-वरिट्ठ-

दोनों केयूर-बाजूबन्द, मुकुट, दोनों कुण्डल, एव १८ लरका हार, जो वक्षस्थल मे धारण किया हुआ था और जिसकी शोभा से वक्ष स्थल सुशोभित हो रहा था, ये सब के सब आभूषणादि कपित हो उठे। (पलंब-पालंबमाण-घोलंत-भूसण-धरे) हर्ष-जनित कम्प से चलायमान उनका प्रलम्बमान कण्ठाभरण उनकी शोभा को बढा रहा था। बाद मे (ससभम तुरिय चवल नरिंदे) राजा बडे ही सभ्रम से-आदरपूर्वक, अर्थात् एकदम जैसे बैठे थे वैसे ही, शीघ्र ही चचल जैसा होकर (सीहासणाओ अब्भुट्टेइ) अपने सिंहासन से उठे, और (अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ) उठ कर पादपीठ पर पैर रखकर नीचे उतरे, (पच्चोरुहित्ता वेरु-

(બાજુબંધ), મુકુટ, બન્ને કુંડલ તેમજ ૧૮ સરનો હાર જે વક્ષ સ્થળ ઉપર ધારણ કરવામાં આવ્યો હતો, અને જેની શોભાથી વક્ષ સ્થલ સુશોભિત થઇ રહ્યું હતું, તે તમામે તમામ આભૂષણ આદિ હલી રહ્યા હતા, (पालंब पलंबमाण घोलत-भूसण-धरे) હર્ષથી ઉત્પન્ન થતા કંપથી ચલાયમાન થતા તેના ગળામાં પહેરેલા લાંબા લટકતા હાર તેની શોભામાં વધારો કરી રહ્યા હતા પછી (ससंभम तुरिय चवल नरिंदे) રાજા ઘણા સંભ્રમથી-આદરથી અર્થાત્ એકદમ જેવા બેઠેલા હતા તેવાજ ઉતાવળા ચંચળ જેવા થઈને (सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ) પોતાના સિંહાસન પરથી ઉઠયા, અને (अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ) ઉઠીને પાદપીઠ પર પગ રાખીને નીચે ઉતર્યા, (पच्चोरुहित्ता-वेरुलिय-वरिट्ठ-रिट्ठ-

अंजण-निउणो-विय-मिसिमिसंत-मणि-रयण-मंडियाओ पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता अवहट्टु पंच रायककुहाइं, तंजहा-खग्गं १, छत्तं २, उप्फेसं ३, वाहणाओ ४, वालवीयणं ५। एगसाडियं

रिट्ठ-अजण-निउणो-विय-मिसिमिसंत-मणि-रयण-मडियाओ' वैडूर्य-वरिष्ट-रिष्टा-ञ्जन-निपुणाऽपरोपित-चिकिचिकायमान-मणि-रत्न-मण्डिते, तत्र-वरिष्ठानि=श्रेष्ठानि वैडुर्याणि रिष्टानि अञ्जनानि-एतन्नामकानि रत्नानि ययो पादुकयोस्ते वैडूर्य-वरिष्ट-रिष्टाञ्जने,-वैडूर्यादिभिर्घटिते इत्यर्थ, पुन 'निपुणापरोपित-चिकिचिकायमान-मणि-रत्न-मण्डिते'-निपुणेन=शिल्पकलाकुशलेन अपरोपितानि=परिकर्मितानि-सस्कारितानि यथास्थानजटितानि यानि चिकचिकायमानानि=चाकचिक्यमयानि मणि-रत्नानि तैर्मण्डिते, तत पदद्वयस्य कर्मधारय, अवमुच्य, 'अवहट्टु पच रायकुहाइ' अपहृत्य पञ्च राजककुदानि-अवतार्य पञ्चसख्यकानि राजचिह्नानि, तान्येव पृथक्२ परिसख्याति-तद्यथा-तानि-इमानि १-'खग्गं' खड्ग त्यजति, २-'छत्त' छत्र-जहाति। ३-उप्फेस-मुकुटम्-अवतारयति, ४ वाहणाओ-उपानहौ, पूर्व-परित्यक्ते पादुके अत्र 'वाहणाओ' इति पदेन गृह्येते, त्यजति। ५-'वालवीयण'

लिय-वरिट्ठ-रिट्ठ-अजण-निउणो-विय-मिसिमिसत-मणि-रयण-मडियाओ पाउयाओ ओमुयइ) नीचे उतर कर इन्होंने फिर दोनों पैरों से पादुकाएँ उतारीं, ये पादुकाएँ श्रेष्ठ वैडुर्य, रिष्ट एव अजन नाम के रत्नों से खचित थीं, तथा शिल्पकलामे कुशल ऐसे कारीगरों द्वारा यथास्थान निवेशित चमकते हुए अनेक रत्नों से मडित था। (ओमुइत्ता अवहट्टु पच रायककुहाइ) पादुकाएँ उतारने के बाद इन्होंने पाच राज-चिह्नों का भी परित्याग कर दिया। वे पाच राजचिह्न ये है-(खग्ग छत्त उप्फेस वाहणाओ वालवीयण) खड्ग, छत्र, उप्फेस=मुकुट, दोनों पैरों के जूते-पादुकाएँ

अजण-निउणो-विय-मिसिमिसत-मणि-रयण-मंडियाओ पाउयाओ ओमुयइ) नीચે ઉતરીને પછી તેમણે બન્ને પગમાંથી પાદુકાઓ ઉતારી નાખી, એ પાદુકાઓ શ્રેષ્ઠ વૈડૂર્ય, રિષ્ટ તેમજ અજન નામના રત્નોથી જડેલી હતી તથા શિલ્પકલામા કુશળ એવા કારીગરો દ્વારા યથાસ્થાન બેસાડેલા ચમકાર મારતા અનેક રત્નોથી તે શોભિત હતી (ओमुइत्ता अवहट्टु पच रायककुहाइ) પાદુકાઓ ઉતાર્યા પછી તેમણે પાચ રાજચિહ્નોનો પણ પરિત્યાગ કર્યો તે પાચ રાજચિહ્ન આ પ્રમાણે હતા-(खग्ग छत्त उप्फेस वाहणाओ वालवीयण) ખડ્ગ, છત્ર, ઉપ્ફેસ=મુકુટ, બન્ને પગના જોડા-પાદુકાઓ તેમજ ચામર પછી

उत्तरासंगं करेइ, करित्ता अंजलिमउलियहत्थे तित्थगराभिमुहे सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि साहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि

चाल्व्यजन–चामरयुगल त्यजति । त्यक्त्वा '**एगसाडिय उत्तरासग करेइ**' एकशाटिकमुत्तरासङ्ग करोति, एकशाटिकम्–अस्फाटितमयोजित स्यूतरहितम् उत्तरासङ्गम्–=उत्तरीयवस्त्र मुखोपरि यतनार्थं करोति–धरति '**करित्ता**' कृत्वा '**अजलिमउलियहत्थे**' अञ्जलिमुकुलितहस्त –अञ्जलिना–अञ्जलिकरणेन मुकुलितौ–कमलमुकुलतुल्यौ, हस्तौ यस्य स तथा–बद्धाञ्जलिपुट इत्यर्थ । '**तित्थगराभिमुहे**' तीर्थङ्कराभिमुख –यस्या दिशि महावीरप्रभुर्वर्तते तस्या दिशि कृतमुख '**सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ**' सप्त अष्ट पदानि अनुगच्छति–आनुकूल्येन व्रजति–सिंहासनात्प्रभुसम्मुख सप्ताष्टपदानि गच्छति, '**अणुगच्छित्ता**' अनुगम्य '**वाम जाणु अंचेइ**' वाम जानु आकुञ्चयति–उर्ध्वं करोति, '**अचित्ता**' वाम जान्वाकुञ्च्य–उर्ध्वीकृत्य, '**दाहिण जाणु धरणितलसि साहट्टु**' दक्षिण जानु धरणितले सहृत्य–अध सस्थाप्य, '**तिक्खुत्तो**' त्रिकृत्व –त्रिरावृत्त–त्रिवारमिति यावत्–'**मुद्धाणं धरणितलसि**

एव दोनों चामर। फिर (**एकसाडिय उत्तरासग करेइ**) पश्चात् अस्फाटित, अयोजित–विना सीये ऐसे उत्तरीयवस्त्र को मुख के ऊपर यतनानिमित्त धारण किया । (**करित्ता**) धारण कर (**अजलिमउलियहत्थे तित्थगराभिमुहे सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ**) बद्ध कमल के समान अञ्जलिपुट करके जिस दिशामे तीर्थंकर विराजमान थे उस ओर सन्मुख होकर सात आठ पग आगे गये, (**अणुगच्छित्ता वामं जाणु अचेइ**) जाकर वहा उन्होंने अपने बाये घुटने को ऊपर किया और (**दाहिण जाणु धरणितलसि साहट्टु**) दाहिने घुटने को जमीन पर रखकर (**तिक्खुत्तो**

(एगसाडिय उत्तरासग करेइ) અસ્ફાટિત, (ફાટયા વગરનુ) અયોજિત સ્યૂત રહિત (સીવ્યા વગરનુ) એવા ઉત્તરીય વસ્ત્રને મુખ ઉપર યતના નિમિત્ત ધારણ કર્યું (करित्ता) ધારણ કરીને (अजलिमउलियहत्थे तित्थगराभिमुहे सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ) બધ કમળની પેઠે અજલિપુટ કરીને જે દિશામા તીર્થંકર બિરાજમાન હતા તે તરફ સન્મુખ થઈને સાત આઠ પગલા આગળ ગયા, (अणुगच्छित्ता वाम जाणु अचेइ) જઈને ત્યા તેમણે પોતાનો ડાબો ઢીચણ ઉપર રાખ્યો અને (दाहिण जाणु धरणितलसि साहट्टु) જમણા ઢીચણને જમીન ઉપર રાખીને (तिक्खुत्तो मुद्धाण धरणितलसि निवेसेइ) ત્રણ વાર

निवेसेइ, निवेसित्ता ईसिं पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता कडग-तुडिय-थंभियाओ भुयाओ पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता करयल-जाव-कट्टु एवं वयासी ॥ सू. १९ ॥

निवेसेइ' मूर्द्धानं धरणितले निवेशयति=निजमस्तकं भूमिसलग्नं करोति । 'निवेसित्ता' निवेश्य, 'ईसिं पच्चुण्णमइ' ईषत् प्रत्युन्नमति–अल्पनम्रीभूतकायो भवति, 'पच्चुण्णमित्ता' प्रत्युन्नम्य–अल्पनम्रीभूतकायो भूत्वा 'कडग–तुडिय–थंभियाओ भुयाओ पडिसाहरइ' कटकत्रुटितस्तम्भितौ भुजौ प्रतिसंहरति,–कटकत्रुटिताभ्यां-कङ्कण-भुजरक्षकाभ्यां-स्तम्भितौ–स्तम्भरूपौ यौ भुजौ तौ प्रतिसंहरति-उर्ध्वं नयति-उत्थापयतीत्यर्थः, 'पडिसाहरित्ता' प्रतिसंहृत्य–उत्थाप्य, 'करयल जाव कट्टु' करतल यावत् कृत्वा, अत्र-यावच्छब्देन-परिगृहीत–परस्पर समिलित शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वेति बोध्यते, 'एवं वयासी' एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् ॥ सू० १९ ॥

मुद्धाणं धरणितलंसि निवेसेइ) तीनबार अपने मस्तक को जमीन पर झुकाया–जमीन से माथे को लगाया। (निवेसित्ता ईसिं पच्चुण्णमइ) लगाने के बाद फिर ये थोडे से उठे, (पच्चुण्णमित्ता कडग-तुडिय-थभियाओ भुयाओ पडिसाहरइ) उसके पश्चात् इन्होंने अपने दोनों हाथों को कि जो कंकण एवं भुजरक्षक अलंकारों से स्तम्भित थे, ऊँचा किया, (पडिसाहरित्ता करयल–जाव–कट्टु एवं वयासी) ऊँचे करने के बाद फिर ये मस्तक पर अञ्जलिपुट रख कर इस प्रकार बोले–

भावार्थ—संदेशहर से प्रभु के आगमन की वार्ता सुनकर कोणिकराजा मारे अतिशय आनन्द के कारण उल्लसित हो गये। इस समाचार को सुनते ही ये रोमाञ्चित हो उठे। कमल के समान मुख आनन्दातिरेक से खिल उठा। नयनों ने

પોતાના મસ્તકને જમીનપર નમાવ્યુ–જમીનને માથુ અડાડ્યુ (निवेसित्ता ईसिं पच्चुण्णमइ) અડાડ્યા પછી તેઓ જરા ઉઠયા (पच्चुण्णमित्ता कडग तुडिय–थभियाओ भुयाओ पडिसाहरइ) ત્યાર પછી તેઓએ પોતાના બન્ને હાથ કે જે કંકણ તેમજ કડા ભુજરક્ષક વગેરે અલંકારોથી સ્તંભિત હતા તે ઉંચા કર્યા (पडिसाहरित्ता करयल जाव कट्टु एव वयासी) ઉંચા કરીને પછી તેઓએ મસ્તક ઉપર અંજલિપુટ રાખીને આ પ્રમાણે કહ્યુ —

ભાવાર્થ—સંદેશવાહકદ્વારા પ્રભુના આગમનના સમાચાર સાંભળીને કોણિક રાજા અતિશય આનંદ થવાના કારણે ઉલ્લાસમાં આવી ગયા એ સમાચાર સાંભળતાં જ તેઓ રોમાંચિત થઈ ગયા કમલની પેઠે મુખ આનંદના

मूलम्—णमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थ-

टीका—'नमोत्थु णं' इत्यादि—

'नमोत्थु णं' नमोऽस्तु खलु, 'अरिहंताणं' अरिहन्तृभ्य - अरीन्-रागादिरूपान्-शत्रून् घ्नन्ति-नाशयन्तीति व्युत्पत्याऽत्र सिद्धार्हतोरुभयोररिहन्तृपदेन ग्रहणं बोध्यम्, तेभ्य, 'भगवंताणं' भगवद्भ्य, भगः-१ ज्ञान-सर्वार्थविषयकम्,

---

भी सुख का माथ दिया। हर्षातिरेक के कारण इनका सम्पूर्ण शरीर कम्पित होने लगा, इस हेतु धारण किये हुए आभूषणादिक भी चचल हो उठे। ये एकदम सिंहासन से उठे, उठकर पादपीठपर पैर रखकर नीचे उतरे। मणि-वैडूर्य-खचित दोनों पादुकाएँ उतारीं। खड्ग आदि राजचिह्नों का परित्याग कर ये एकशाटिक उत्तरासग कर जिस दिशा की तरफ वे महावीर प्रभु विराजमान थे उस दिशाकी ओर सात आठ पैर आगे जाकर नमस्कारविधि के अनुसार प्रभुकी परोक्ष वदना करने लगे। उसमें यह पाठ बोले—॥ सू० १९ ॥

'नमोत्थु णं' इत्यादि—

(नमोत्थु णं अरिहंताणं) रागादिकरूप शत्रुओं पर विजय पानेवाले अरिहंतों को नमस्कार हो। (भगवंताणं) भगवान के लिये नमस्कार हो, भग जिनके हो वे भगवान है। भग शब्द के दस (१०) अर्थ है। वे इस प्रकार है—ज्ञान=

અતિરેકથી ખિલી ઉઠ્યુ નેત્રોએ પણ સુખને સાથ આપ્યો. હર્ષાતિરેક થવાના કારણે તેમનુ આખુ શરીર ધ્રુજવા લાગ્યુ અને તેથી શરીર પર ધારણ કરેલા આભૂષણાદિક પણ ચચલ (ચળાયમાન) થઈ ગયા તેઓ એકદમ આસન ઉપરથી ઉઠ્યા અને ઉઠીને પાદપીઠ પર પગ રાખીને નીચે ઉતર્યા મણિવૈડૂર્ય જડેલી બન્ને પાદુકાઓ ઉતારી ખડગ આદિ રાજચિહ્નોનો પરિત્યાગ કરી તેઓ એકશાટિક ઉત્તરાસગ ધારણ કરી જે દિશા તરફ તે મહાવીર પ્રભુ બિરાજમાન હતા તે દિશા તરફ સાત આઠ પગલા આગળ જઈને નમસ્કાર વિધિ અનુસાર પ્રભુની પરોક્ષ વદના કરવા લાગ્યા તેમા આ પાઠ બોલ્યા (સૂ ૧૯)

'નમોત્થુણ' ઈત્યાદિ

(નમોત્થુ ણ અરિહંતાણં) રાગાદિકરૂપ શત્રુઓ પર વિજય મેળવવા વાળા અરિહતોને નમસ્કાર હો (ભગવંતાણ) ભગવાનને નમસ્કાર હો જેને ભગ હોય તે ભગવાન છે ભગ શબ્દના ૧૦ અર્થ છે, તે આ પ્રકારે છે

૧ જ્ઞાન-સમસ્ત ત્રણુકાળના પદાર્થને યુગપત જાણનાર કેવળજ્ઞાન,

पुरुषवरपुण्डरीकम् पुरुषवरपुण्डरीकम्वे यादिरी येकजेवे पुरुषवरपुण्डरीकाणि तेभ्य । भगवतो वरपुण्डरीकोपमा च विनिर्गताऽखिलाऽशुभमलीमसवासर्वे शुभानुभावै परिशुद्धत्वाच, यद्वा यथा पुण्डरीकाणि पङ्काज्जातान्यपि सलिले वर्धितान्यपि चोभयसम्बन्ध-मपहाय निर्लेपानीव जलोपरि रमणीयानि सन्दृश्यन्ते निजानुपमगुणगणबलेन सुरासुर-नरनिकरशिरोधारणीयतयाऽतिमहनीयानि परमसुखाऽऽस्पदानि च भवन्ति, तथेमे भगवन्त कर्मपङ्काज्जाता भोगाऽम्भोवर्द्धिता सन्तोऽपि निर्लेपास्तदुभयमतिवर्तन्ते, गुण-सम्पदास्पदतया च केवलादिगुणभावादखिलभव्यजनशिरोधारणीया भवन्तीति, विस्तरस्तु शास्त्रान्तरेऽवलोकनीय । 'पुरिसवरगंधहत्थीणं' पुरुषवरगन्धहस्तिभ्य -

---

उपमा से युक्त किया है उसका कारण यह है कि प्रभु की आत्मा से समस्त अशुभ मलिन कर्म नष्ट हो गये है एव शुभ अनुभावों से प्रभु सभी प्रकार से शुद्ध हैं। धवल कमल जिस प्रकार कीचड से उद्भूत होने पर और जल में वर्द्धित होने पर भी उन दोनों से अलिप्त रहता है, जलके ऊपर बहुत ही रमणीय प्रतिभासित होता है, तथा सुर असुरादिकों द्वारा शिरोधार्य होने से वह अतिमहनीय एव परम सुख का आस्पद होता है उसी प्रकार प्रभु भी नामकर्म के उदय से, कर्मरूप पक से पैदा होने पर एव भोगरूप जल से सवर्द्धित होने पर भी इन दोनों के सबध से सर्वथा निर्लेप रहा करते है, एव गुणरूपसपत्ति के आस्पद होने से तथा केवलज्ञान की जागृति होने से वे अखिल भव्यजनों द्वारा शिरोधार्य भी होते हैं। (**पुरिसवरगधहत्थीण**) पुरुषों मे उत्तम गधहस्ती के समान जो होते हे वे पुरुषवरगधहस्ती कहे जाते है,

---

જે વરપુડરીકની ઉપમા આપી છે તેનુ કારણ એ છે કે પ્રભુના આત્મામાથી સમસ્ત અશુભ કાલિમા નષ્ટ થઈ ગયી છે તેમજ શુભ અનુભાવોથી પ્રભુ સારી રીતે શુદ્ધ છે, શ્વેત કમલ જે પ્રકારે કીચડથી ઉત્પન્ન થાય છે અને જલમા વધે છે છતા પણ તે બન્નેથી અલિપ્ત રહે છે, જલની ઉપર બહુજ રમણીય પ્રતિભાસિત થાય છે, તથા સુર અસુર આદિકોથી શિરપર ધારિત હોવાથી તે અતિમહનીય તેમજ પરમ સુખને આપનાર બને છે, તેવીજ રીતે પ્રભુ પણ નામ કર્મના ઉદયથી, કર્મરૂપ પકથી પેદા થવા છતા તેમજ ભોગરૂપ જલથી સવર્ધન પામવા છતા પણ એ બન્નેના સબધથી સર્વથા નિર્લેપ રહ્યા કરે છે તેમજ ગુણરૂપ સપત્તિના આપનાર હોવાથી તથા કેવલ જ્ઞાનની જાગૃતિ થવાથી તેઓ તમામ ભવ્યજનો દ્વારા શિરોધાર્ય પણ થઇ જાય છે (પુરિસ-વર-ગધ-હત્થીણ) પુરૂષોમા ઉત્તમ ગધહસ્તીના જેવા જે હોય

पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोग-

गन्धयुक्ता हस्तिनो गन्धहस्तिन, वराश्च ते गन्धहस्तिनो वरगन्धहस्तिन, पुरुषा वरगन्धहस्तिन इव पुरुषवरगन्धहस्तिनस्तेभ्य, गन्धहस्तिलक्षण यथा—

यस्य गन्ध समाघ्राय, पलायन्ते परे गजा ।

त गन्धहस्तिन विद्यान्नृपतेर्विजयावहम् ॥ इति ।

अतएव यथा गन्धहस्तिगन्धमाघ्राय गजान्तराणीतस्ततो द्रुत पलाय्य प्रच्छन्नस्थान प्राप्नुवन्ति, तद्वदचिन्त्यातिशयप्रभाववशाद् भगवद्विहरणसमीरणगन्ध–सम्बद्धगन्धतोऽपि–ईति–डमर–मरकादय उपद्रवा द्राग् दिक्षु प्रद्रवन्तीति, गन्धगजाऽऽश्रितराजवद् भगवदाश्रितो भव्यगण सर्वदा विजयवान् भवतीति भवत्युभयो सादृश्यम् । 'लोगुत्तमाण' लोकोत्तमेभ्य, लोकेषु–भव्यसमाजेषु उत्तमाश्चतुस्त्रिंशदति-

उनके लिये नमस्कार हो, गन्धहस्तीका लक्षण इस प्रकार है—

"यस्य गन्धं समाघ्राय पलायन्ते परे गजाः ।
त गधहस्तिनं विद्यान्नृपतेर्विजयावहम्" ॥

जिसकी गध को सूघकर भी अन्य हाथी भाग जाते हैं वह गधहस्ती कहलाता है। यह जिस राजा के पास होता है वह अवश्य ही युद्ध मे विजय प्राप्त करता है। तात्पर्य यह है कि–जिस प्रकार गधहस्ती की गध को सूघकर अन्यगज भाग जाते है उसी प्रकार प्रभु के विहार की गध सूघ कर, अर्थात्–प्रभुके विहार की वायु के सबध से ईति, डमर और मरकी आदि उपद्रव बिलकुल शात हो जाते हैं। (लोगुत्तमाण)

છે તે પુરૂષવરગધહસ્તી કહેવાય છે તેમને નમસ્કાર હો ગધહસ્તીનુ લક્ષણુ આ પ્રકારે છે—

"यस्य गन्ध समाघ्राय पलायन्ते परे गजा ।

त गन्धहस्तिन विद्यान्नृपतेर्विजयावहम्"

જેની ગધ સૂઘવામાત્રથી બીજા હાથી ભાગી જાય તે ગધહસ્તી કહેવાય છે તે જે રાજાની પાસે હોય છે તે અવશ્યમેવ યુદ્ધમા વિજય પ્રાપ્ત કરે છે તાત્પર્ય એ છે કે–જે પ્રકારે ગધહસ્તીની ગધને સુઘીને બીજા હાથી ભાગી જાય છે તેવી જ રીતે પ્રભુના વિહારની ગધને સુઘીને અર્થાત્ પ્રભુના વિહારના વાયુના સબધથી ઇતિ ડમર અને મરકી આદિ ઉપદ્રવ બિલકુલ શાત થઈ જાય છે (लोगुत्तमाण) ચોત્રીશ અતિશયો તેમજ

शयपञ्चत्रिंशद्वाणीगुणोपेतत्वात्, तेभ्य, 'लोगनाहाणं' लोकनाथेभ्य, लोकानां= भव्याना नाथा=नेतारो योगक्षेमकारित्वानिति लोकनाथास्तेभ्य । 'लोगहियाण' लोकहितेभ्य —लोक —एकन्द्रियादि सर्वप्राणिगणस्तस्मै हिता रक्षोपायप्रदर्शकत्वा-ल्लोकहितास्तेभ्य । 'लोगपईवाण' लोकप्रदीपेभ्य, लोकस्य=भव्यजनसमुदायस्य प्रदीपास्तन्मनोऽभिनिविष्टाऽनादिमिथ्यात्वतम पटलव्यपगमेन विशिष्टात्मतत्त्वप्रकाशक-त्वात्प्रदीपतुल्यास्तेभ्य । यथा प्रदीपस्य सकलजीवार्थे तुल्यप्रकाशकत्वेऽपि चक्षुष्मन्त एव तत्प्रकाशसुखभाजो भवन्ति नान्धास्तथा भव्या एव भगवदनुभावसमुद्भूत-परमानन्दसन्दोहभाजो भवन्ति नाऽभव्या इति प्रतिबोधयितु प्रदीपदृष्टान्त, अत एव च, लोकपदेन भव्यानामेव ग्रहणम् । 'लोगपज्जोयगराण' लोकप्रद्योतकरेभ्य —

चौतीस अतिशयों एव पैंतीस वाणी के गुणों से युक्त होने से प्रभु लोकोत्तम कहलाते है, ऐसे उनके लिये नमस्कार हो । (लोगनाहाण) भव्यजीवों के योग–क्षेम–कारी होने से लोकनाथ प्रभु को नमस्कार हो। (लोगहियाण) एकेन्द्रिय प्राणियों से लेकर पचेन्द्रिय पर्यन्त समस्त जीवों से व्याप्त इस लोक के लिये रक्षाके उपायभूत मार्ग के प्रदर्शक होने से लोकहितस्वरूप प्रभुके लिये नमस्कार हो। (लोगपईवाण) भव्यजनों के मन मे अनादिकाल से ठसाठस भरे हुए मिथ्यात्वरूपी अन्धकार के पटल के विनाश से विशिष्ट आत्मतत्त्व के प्रकाशक होने से भगवान् प्रदीपतुल्य हैं, जिस प्रकार दीपक सकल जीवों के लिये समान प्रकाशक होता हुआ भी चक्षुष्मान जीवों के लिये विशेष आनदप्रद होता है उसी प्रकार प्रभु को लखकर भव्य जीव ही अमन्द आनद के सदोह से सुखी हुआ करते हैं, ऐसे लोकके प्रदीपस्वरूप को नमस्कार

પાંત્રીશ વાણીના ગુણોથી યુક્ત હોવાથી પ્રભુ લોકોત્તમ કહેવાય છે, તેમને નમસ્કાર હો (लोगनाहाण) ભવ્ય જીવોના યોગક્ષેમ કરનાર હોવાથી લોકનાથ પ્રભુને નમસ્કાર હો (लोगहियाण) એકેન્દ્રિય પ્રાણિઓથી માંડીને પંચેન્દ્રિય પર્યન્ત સમસ્ત જીવોથી વ્યાપ્ત આ લોકના માટે રક્ષાના ઉપાયભૂત માર્ગના પ્રદર્શક હોવાથી લોકહિતસ્વરૂપ પ્રભુને નમસ્કાર હો (लोगपईवाण) ભવ્ય જનોના મનમા અનાદિકાલથી ઠસાઠસ ભરેલા મિથ્યાત્વરૂપી અંધકારના સમૂહના વિના-શથી વિશિષ્ટ આત્મતત્વના પ્રકાશક હોવાથી ભગવાન પ્રદીપ સમાન છે, જેમ દીવો બધા જીવોને સમાન પ્રકાશક હોય છે છતા ચક્ષુવાળા જીવોને વિશેષ આનંદપ્રદ થાય છે તેવી રીતે પ્રભુને જોઈ ભવ્ય જીવો જ ઘણો આનંદ મેળવીને સુખ પ્રાપ્ત કરે છે, એવા લોકના પ્રદીપસ્વરૂપને નમસ્કાર હો [लोयपज्जोयगराण]

पईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं

लोकशब्देनाऽत्र लोक्यते—दृश्यते केवलाऽऽलोकेन यथावस्थिततयेति व्युत्पत्त्या लोका-लोकयोरुभयोर्ग्रहणम्, तेन लोकस्य—लोकालोकलक्षणस्य सकलपदार्थस्य प्रद्योत —लोका-लोकप्रद्योतस्तं कर्तुं शील येषा ते लोकालोकप्रद्योतकरा लोकालोकसकलपदार्थ-प्रकाशकरणशीलास्तेभ्य । 'अभयदयाण' अभयदयेभ्य —न भयम् अभयम्, भया-नामभावो वा अभयम्, अक्षोभलक्षण आत्मनोऽवस्थाविशेषो मोक्षसाधनभूतमुत्कृष्टधैर्यमिति यावत्, दयन्ते=ददतानि दया, दयधातो कर्तरि पचादित्वादच्, अभयस्य दया अभयदया, यद्वा अभया=भयविरहिता दया=सर्वजीवसङ्कटप्रविमोचनस्वरूपा अनुकम्पा येषा तेऽभयदया-स्तेभ्य । 'चक्खुदयाण' चक्षुर्दयेभ्य चक्षु —ज्ञान—निखिलवस्तुतत्त्वाऽवभासकतया चक्षु—सादृश्यात, तस्य दया —दायकाश्चक्षुर्दयास्तेभ्य, यथा हरिणादिशरण्येऽरण्ये लुण्टाक—

हो। (लोयपज्जोयगराण) लोकालोकस्वरूप सकलपदार्थों को प्रकाश करनेके स्वभाववाले लोक-प्रद्योतकरों के लिये नमस्कार हो। (अभयदयाण) अभयदयों के लिये नमस्कार हो। आत्मा को अक्षोभलक्षण अवस्थाविशेष का नाम अभय है, इसे मोक्षसाधनरूप उत्कृष्ट धैर्य—स्वरूप जानना चाहिये। इसे प्रदान करनेवाले होने से प्रभु अभयदय कहे गये है। अथवा—जिनकी दया भयरहित है अर्थात भगवान् द्वारा प्रतिपादित दया समस्त जीवों के सकटोंको दूर करनेवाली है, भगवानने इस प्रकार की दयाका स्वरूप प्रकट किया है कि जिससे जीवों के ऊपर कोई भी सकट नहीं आ सकता है। (चक्खुदयाण) ज्ञानरूपचक्षु के दातार को नमस्कार हो। प्रभु चक्षुर्दय इसलिये कहे गये है कि जिसप्रकार हरिणादि जन्तुओं से व्याप्त जगल मे लुटेरो से लूटे गये

લોકાલોક સ્વરૂપ સકલ પદાર્થોના પ્રકાશ આપવાના સ્વભાવવાળા લોકપ્રદ્યોતકરોને નમસ્કાર હો [अभयदाण] અભયદયોને નમસ્કાર હો આત્માના અક્ષોભ-લક્ષણ અવસ્થાવિશેષનુ નામ અભય છે, એને મોક્ષ સાધનરૂપ ઉત્કૃષ્ટ ધૈર્ય-સ્વરૂપ જાણવા જોઇએ એનુ પ્રદાન કરવાવાળા હોવાથી પ્રભુ અભયદય કહેવાય છે અથવા—જેમની દયા ભયરહિત છે અર્થાત્ ભગવાન દ્વારા પ્રતિપાદિત દયા સમસ્ત જીવોના સકટને દૂર કરવાવાળી છે ભગવાને એ પ્રકારે દયાનુ સ્વરૂપ પ્રકટ કર્યું છે કે જેથી જીવો ઉપર કોઇ પણ સકટ ન આવી શકે (चक्खुदयाण) જ્ઞાનરૂપ ચક્ષુના દાતારને નમસ્કાર હો પ્રભુ ચક્ષુર્દય એટલા માટે કહેવાય છે કે જે પ્રકારે હરિણ આદિ જાનવરોથી વ્યાપ્ત જગલમા લુટારાથી લૂટાયેલા પછી આખો પર પાટા બાધીને ખાડા આદિમા ધક્કા

लुण्टितेभ्य पट्टिकादिदानेन चक्षुषि पिधाय हस्तपादादि बद्ध्वा तैर्गर्ते पातितेभ्य कश्चि-त्पट्टिकाद्यपनोदनेन चक्षुर्दत्त्वा मार्ग प्रदर्शयति तथा भगवन्तोऽपि भवाऽरण्ये रागद्वेष-लुण्टाकलुण्ठिताऽऽत्मगुणधनेभ्यो दुराग्रहपट्टिकाच्छादितज्ञानचक्षुर्भ्यो मिथ्यात्वोन्मार्गे पातितेभ्यस्तदपनयनपूर्वक ज्ञानचक्षुर्दत्त्वा मोक्षमार्ग प्रदर्शयन्ति। एतदेव भङ्ग्यन्तरेणाऽऽह 'मग्गदयाण' मार्गदयेभ्य –मार्ग =सम्यग्रत्नत्रयलक्षण शिवपुरपथ, यद्वा–विशिष्ट–

पश्चात् आखों पर पट्टी बाधकर गर्त आदि मे धक्का देकर पटके गये मानवों के लिये कोई दयालु मानव उनकी आखोंकी पट्टी खोलकर चक्षुर्दाता बन उन्हें मार्गका प्रदर्शन कराता है, उसी प्रकार प्रभु भी इस अशरण भवरूप अरण्य मे रागद्वेष आदि लुटेरों द्वारा आत्मगुणरूप धनों के अपहरण होने से दीनहीन बने हुए समस्त ससारी जीवोंको कि जिनकी ज्ञानरूप आखों पर दुराग्रहरूपी पट्टी कर्मोंने बाध रखी है और इसीसे जिनका ज्ञानरूप नेत्र आच्छादित हो रहा है और इसीके वजह से जो उन्मार्गरूपी गर्त मे धकेल दिये गये है, प्रभुने अपने दिव्य उपदेश द्वारा उन्हें सत् ज्ञान दिया, इससे उनका दुराग्रह नष्ट हो गया, और ज्ञानरूप अन्तरग नेत्र निर्मल हो जाने से प्रभुने उन्हे मोक्षमार्ग दिखाया। इसलिये प्रभु उनके चक्षुर्दाता समान माने गये है। इसी विषय को विशेष स्पष्ट करने के लिये सूत्रकार प्रकारान्तर से कहते है–कि (मग्गदयाण) मोक्षमार्ग मे लगानेवालों के लिये नमस्कार हो। यहा रत्नत्रय यही मोक्षमार्ग है, अथवा–गुणस्थानोंकी प्राप्ति करानेवाला क्षयोपशम

દઈને નાખી દેવાયેલા માણસને જેમ કોઈ દયાળુ માણસ તેની આંખોના પાટા ખોલીને ચક્ષુર્દાતા બની તેને માર્ગ બતાવે છે તેજ પ્રકારે પ્રભુ પણ આ અશરણ ભવરૂપ અરણ્યમા રાગદ્વેષ આદિ લૂટારા દ્વારા આત્મગુણરૂપ સપત્તિ લુટાઈ જતા દીનહીન બનેલા સમસ્ત સસારી જીવોને કે જેમની જ્ઞાનરૂપ આંખો પર દુરાગ્રહરૂપી પાટા કર્મોએ બાધી રાખેલા છે અને તેથીજ જેના જ્ઞાનરૂપી નેત્ર ઢકાઈ ગયા છે અને એજ કારણથી જે ખોટા માર્ગરૂપી ખાડામા ધકેલાઈ ગયા છે તેમને પ્રભુએ પોતાના દિવ્ય ઉપદેશ દ્વારા સત્ જ્ઞાન આપ્યુ, તેથી તેમના દુરાગ્રહ નાશ પામ્યા અને જ્ઞાનરૂપ અતરગના નેત્ર નિર્મળ થઈ જવાથી પ્રભુએ તેમને મોક્ષમાર્ગ દેખાડયો તેથી પ્રભુ તેમના ચક્ષુર્દાતા સમાન મનાય છે આજ વિષયને વિશેષ સ્પષ્ટ કરવા માટે સૂત્રકાર પ્રકારાતરથી કહે છે કે (मग्गदयाण) મોક્ષ માર્ગમા લગાડવાવાળાને નમસ્કાર હો અહી રત્નત્રય એજ મોક્ષમાર્ગ છે અથવા ગુણસ્થાનોની પ્રાપ્તિ કરા-

सरणदयाणं जीवदयाणं बोहिदयाण धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं

गुणस्थानप्रापक क्षयोपशमभावो मार्गस्तस्य दया—दातारस्तेभ्य । 'सरणदयाण' शरणदयेभ्य —शरण=परित्राण—कर्मरिपुवशीकृततया व्याकुलाना प्राणिना रक्षणस्थान वा तस्य दयास्तेभ्य । 'जीवदयाणं' जीवदयेभ्य —जीवेषु—एकेन्द्रियादिसमस्तप्राणिषु दया—सङ्कटमोचनलक्षणा येषामिति, यद्वा—जीवन्ति मुनयो येन स जीव —सयमजीवितं तस्य दयास्तेभ्य । 'बोहिदयाण' बोधिदयेभ्य —बोधिर्जिनप्रणीतधर्ममूलभूता-तत्वार्थ-श्रद्धानलक्षणसम्यग्दर्शनरूपा तस्या दया —बोधिदयास्तेभ्य । 'धम्मदयाण' धर्म-दयेभ्य —धर्म —दुर्गतिप्रपतज्जन्तुसरक्षणलक्षण श्रुतचारित्रात्मकस्तस्य दयास्तेभ्य ।

भावरूप मार्ग है, भव्य जीवोंके लिये प्रभु इसके दातार हैं। इसलिये प्रभु मार्गदय है। (सरणदयाण) शरणदातारों के लिये नमस्कार हो। प्रभु शरणदातार इसलिये है कि उन्होंने कर्मरूपी रिपु द्वारा वशीकृत होनेके कारण व्याकुल बने हुए समस्त प्राणियों को निर्भय स्थान में पहुँचनेका उपदेश दिया, अथवा—तुम्हारी रक्षा कैसे हो सकती है इसका उपाय बतलाया। (जीवदयाण) जीवों के ऊपर दया रखने का उपदेश देनेवालों के लिये, अथवा—सयमरूप जीवन को प्रदान करनेवालों के लिये नमस्कार हो। (बोहिदयाण) बोधिके दातारोंको नमस्कार हो। प्रभुने समस्त ससारी जीवों को जो मोक्षाभिलाषी थे उन्हें तत्वार्थ के श्रद्धान करने रूप बोधि को प्रदान किया, क्योंकि आत्मकल्याण के मार्ग में सर्वप्रथम यही एक प्रधान साधक है। इसलिये प्रभु इस अपेक्षा से बोधिदातार कहे गये है। (धम्मदयाण) धर्मके

વનારા ક્ષયોપશમભાવરૂપ માર્ગ છે ભવ્ય જીવોનેમાટે પ્રભુ તેના દાતાર છે તેથી પ્રભુ માર્ગદય છે (सरणदयाण) શરણદાતારોને નમસ્કાર હો પ્રભુ શરણ-દાતાર એટલા માટે છે કે તેમણે કર્મરૂપી રિપુદ્વારા વશીભૂત થઈ જવાના કારણે વ્યાકુલ બની ગયેલા સમસ્ત પ્રાણિયોને નિર્ભય સ્થાનમા પહોચવાનો ઉપદેશ કર્યો, અથવા તેમની રક્ષા કેમ થઇ શકે તેનો ઉપાય બતાવ્યો (जीवदयाण) જીવોના ઉપર દયા રાખવાનો ઉપદેશ દેવાવાળા અથવા સયમરૂપ જીવન પ્રદાન કરવા વાળાને નમસ્કાર હો (बोहिदयाण) બોધિના દાતારોને નમસ્કાર હો પ્રભુએ સમસ્ત સસારી જીવોને જે મોક્ષાભિલાષી હતા તેમને તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાનરૂપ બોધિ પ્રદાન કર્યું, કેમકે આત્મકલ્યાણના માર્ગમા સૌથી પ્રથમ આજ એક મુખ્ય સાધન છે એ માટે પ્રભુ એ અપેક્ષાએ બોધિ દાતાર કહેવાય છે (धम्मदयाण) ધર્મના દાતારોને નમસ્કાર હો દુર્ગતિમા

धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्म-वर-चाउरंत-चक्क-वट्टीणं दीवो

इहोक्तेषु विशेषणेषु त दयन्ते इत्यपव्याख्यानम्, 'अधीगर्थदयेशाम्' इति कर्मणि शेषत्वविवक्षाया षष्ठ्युपपत्ते। शेषत्वाऽविवक्षाया तु द्वितीयाया सत्वेऽपि 'कर्मण्यण्' इत्यणुपपत्त्या अभयदायेभ्य इत्याद्यनिष्टप्रयोगापत्तेर्दुर्वारत्वात। 'धम्मदेसयाण' धर्मदेशकेभ्य—धर्म =प्राक्प्रतिपादितलक्षण, तस्य देशका उपदेशकारतेभ्य। 'धम्म नायगाण' धर्मनायकेभ्य—धर्मस्य नायका =नेतार —जनानामन्त करणे धर्मप्रचार-करणाद् इति यावत—धर्मनायकास्तेभ्य। 'धम्मसारहीण' धर्मसारथिभ्य—धर्मस्य सारथय धर्मसारथयस्तेभ्य, भगवत्सु सारथित्वाऽऽरोपेण धर्मे रथत्वारोपो व्यज्यते इति परम्परितरूपकमलङ्कारस्तस्माद्यथा सारथयो रथद्वारा रथस्थान् पथिकान् सुखपूर्वक-मभीष्ट स्थान नयन्त्युन्मार्गगमनादितश्च प्रतिरुन्धते, तथा भगवन्तो धर्मद्वारा मोक्षस्थान–

दातारोंको नमस्कार हो। दुर्गति में पडने से जीवोंको रोकनेवाला एक सर्वज्ञ वीतराग प्रभु द्वारा प्रतिपादित श्रुतचारित्ररूप धर्म ही है। प्रभुने ऐसे धर्मका जीवों को अपनी दिव्यवाणी द्वारा उपदेश दिया, अत वे धर्मके दातार कहलाये। (धम्मदेसयाण) धर्मदेशकों के लिये नमस्कार हो। (धम्मनायगाण) धर्मके नायकों के लिये नमस्कार हो। प्रभु धर्म के नायक इसलिये कहलाये हैं कि, उन्होंने जनता के अन्त करण में धर्मका प्रचार किया है। (धम्मसारहीण) धर्मके सारथियों को नमस्कार हो। यहा परम्परितरूपकालकार है। क्योंकि भगवान मे सारथित्व का जब आरोप किया गया है तो धर्ममें रथत्वका आरोप प्रकट होता है। इसलिये जिसतरह सारथी रथ द्वारा रथस्थ पथिक को सुखपूर्वक अभीष्ट स्थान पर पहुँचा दिया करता है,

---

પડવાથી જીવોને રોકવાવાળા એક સર્વજ્ઞ વીતરાગ પ્રભુદ્વારા પ્રતિપાદિત શ્રુત ચારિત્રરૂપ ધર્મજ છે પ્રભુએ એવા ધર્મનો જીવોને પોતાની દિવ્યવાણી દ્વારા ઉપદેશ આપ્યો, માટે તેઓ ધર્મના દાતાર કહેવાયા (धम्मदेसयाण) ધર્મ-દેશકો ને નમસ્કાર હો (धम्मनायगाण) ધર્મના નાયકોને નમસ્કાર હો પ્રભુ ધર્મના નાયક એટલા માટે કહેવાય છે કે તેમણે જનતાના અત કરણમા ધર્મનો પ્રચાર કર્યો છે (धम्मसारहीण) ધર્મના સારથિઓને નમસ્કાર હો-અહી પરપરિત-રૂપક અલકાર છે, કેમકે ભગવાનમા સારથિત્વનો આરોપ કરવાથી ધર્મમા રથત્વનો આરોપ પ્રકટ થાય છે આ માટે જેવી રીતે સારથી રથદ્વારા રથમા બેસનાર પથિકને સુખપૂર્વક અભીષ્ટ સ્થાને પહોચાડી દે છે તેમજ ખોટા માર્ગથી તેની રક્ષા કરે છે તેવીજ રીતે પ્રભુએ પણ

मितिभाव । 'धम्म-वर-चाउरंत-चक्क-वट्टीण'-धर्म-वर-चातुरन्त-चक्र-वर्तिभ्य दानशीलतपोभावैश्चतसृणा नरकादिगतीना चतुर्णा वा कषायाणामन्तो नाशो यस्मात्, अथवा चतस्रो गतीश्चतुर कषायान् वा अन्तयति=नाशयतीति, यद्वा-चतुर्भिर्दानशील-तपोभावै कृत्वा अन्तो रम्य, 'मृतावत्रसिते रम्ये समाप्तावन्त इष्यते' इति निश्चकोपात । अथवा चत्वारो दानादयोऽन्ता=अवयवा यस्य, यद्वा चत्वारो दानादय अन्ता स्वरूपाणि यस्य, 'अन्तोऽवयवे स्वरूपे च' इति हेमचन्द्र, स चतुरन्त स एव चातुरन्त, स्वार्थिक प्रज्ञाद्यण्, चातुरन्त एव चक्र-

---

एव उन्मार्ग गमन से उसकी रक्षा करता है, उसी प्रकार प्रभु ने भी धर्मद्वारा जीवों को उनके अभीष्ट स्थानरूप मुक्तिस्थान में पहुँचाया है, एवं कुमार्ग-कुधर्म-से उनकी रक्षा की है। (धम्म-वर-चाउरत-चक्क-वट्टीण) दान, शील, तप एव भाव इन चार का सहारा लेकर चार नरकादिगतियों का, अथवा-चार क्रोधादिक कषायों का जिससे नाश होता है, अथवा-चार गतियों एवं चार कषायों का जो विनाश करता है, अथवा दान, शील, तप एव भाव इनको लेकर जो रम्य है, अथवा-ये चार दानादिक जिसके अवयव है, अथवा-ये चार दानादिक जिसके निजस्वरूप है वह चातुरन्त है। अन्त शब्द के कोषों मे "मृतावत्रसिते रम्ये समाप्तावन्त इष्यते" "अन्तोऽवयवे स्वरूपे च" इस प्रकार अनेक अर्थ है। उन्हीं अर्थों को लेकर यहा "अन्त" शब्द के अर्थ का स्पष्टीकरण किया गया है। स्वार्थ मे अण् प्रत्यय करने से "चातुरन्त" ऐसा पद निष्पन्न हो जाता

धर्मद्वारा જીવોને તેમના અભીષ્ટ સ્થાનરૂપ મુક્તિસ્થાનમા પહોચાડયા છે તેમજ કુમાર્ગ કુધર્મથી તેમની રક્ષા કરી છે (धम्मवर चाउरत चक्क वट्टीण) દાન, શીલ, તપ, તેમજ ભાવ એ ચારનો આશ્રય લઈને ચાર નરકાદિ ગતિઓનો, અથવા ચાર ક્રોધાદિક કષાયોનો જે વિનાશ કરે છે, અથવા દાન, શીલ, તપ તેમજ ભાવ એ લઈને જે રમ્ય છે, અથવા એ ચાર દાનાદિક જેમના અવયવ છે, અથવા એ ચાર દાનાદિક જેના નિજસ્વરૂપ છે તે ચાતુરન્ત છે અન્ત શબ્દના કોષોમા "मृतावत्रसिते रम्ये समाप्तावन्त इष्यते" "अन्तोऽवयवे स्वरूपे च" એ પ્રકારે અનેક અર્થ છે તે અર્થો લઈને અહી અન્ત શબ્દના અર્થનુ સ્પષ્ટીકરણ કરવામા આવેલુ છે સ્વાર્થમા अण् પ્રત્યય કરવાથી "चातुरन्त" એવુ પદ નિષ્પન્ન થઈ જાય છે આ चातुरन्त જ એક ચક્ર છે, કેમકે ચક્ર જે પ્રકારે બીજાનો ઉચ્છેદ કરે છે

जन्मजरामरणोच्छेदकत्वेन चक्रतुल्यत्वात्, वर च तच्चातुरन्तचक्र वरचातुरन्तचक्रम्, वरपदेन राजचक्राऽपेक्षयाऽस्य श्रेष्ठत्व व्यज्यते लोकद्वयसाधकत्वात्, धर्म एव वरचातुरन्तचक्र–धर्मवरचातुरन्तचक्र, तादृशस्य धर्मातिरिक्तस्याऽसम्भवात्, अत एव सौगतादिधर्माऽऽभासनिरास, तेषा तात्त्विकार्थप्रतिपादकत्वाभावेन श्रेष्ठत्वाऽभावात्, धर्मवरचातुरन्तचक्रेण वर्तितु शील येषामिति धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्तिनस्तेभ्य । चक्रवर्तिपदेन षट्खण्डाधिपतिसादृश्य व्यज्यते, तथा हि चत्वार =उत्तरदिशि हिमवान् शेषदिक्षु चोपाधिभेदेन समुद्रा अन्ता =सीमानस्तेषु स्वामित्वेन भवाश्चातुरन्ता, चक्रेण=रत्न-

है। यह चातुरन्त ही एक चक्र है, क्यों कि चक्र जिस प्रकार पर का उच्छेदक होता है उसी प्रकार यह "चातुरन्तचक्र" भी जीवों के जन्म, जरा एव मरण का उच्छेदक है। इसलिये इसमें चक्र की उपमा सार्थक होती है। 'वर' शब्द का अर्थ उत्कृष्ट है, यह चातुरन्तचक्र में उत्कृष्टता द्योतित करता है। राजचक्र की अपेक्षा यह चक्र उत्कृष्ट है। क्यों कि यह लोकद्वय में हित का साधक होता है। धर्म ही एक उत्कृष्ट चातुरन्त चक्र है, अन्य नहीं। इस कथन से अन्य सौगतादिक ममत धर्म में धर्माभासता होने से तात्त्विक अर्थ को प्रतिपादन करने का अभाव कथित हुआ है, अत उनमें श्रेष्ठता नहीं है। इस धर्मवरचातुरन्तचक्र के अनुसार जिनका वर्तन करने का स्वभाव है वे धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्ती कहे गये हैं। "चक्रवर्ती" पद से षट्खड के अधिपति का सादृश्य अभिव्यक्त होता है। "चत्वारःअन्ताः–चतुरन्ताः" यहा अन्त शब्द का अर्थ सीमा होता है। उत्तरदिशा मे हिमवान् एव शेष तीन दिशाओं मे उपाधि के भेद से तीन समुद्र ये चतुरन्त पद से गृहीत

તેજ પ્રકારે આ ચાતુરન્તચક્ર પણ જીવોના જન્મ, જરા તેમજ મરણનો ઉચ્છેદ કરે છે એ માટે આમા ચક્રની ઉપમા સાર્થક થાય છે 'वर' શબ્દનો અર્થ ઉત્કૃષ્ટ છે આ પદ ચાતુરન્તચક્રમા ઉત્કૃષ્ટતા દ્યોતિત કરે છે રાજચક્રની અપેક્ષાએ આ ચક્ર ઉત્કૃષ્ટ છે કેમકે આ બન્ને લોકમા હિતનુ સાધક થાય છે ધર્મજ એક ઉત્કૃષ્ટ ચાતુરન્તચક્ર છે, બીજુ નહિ! આ કથનથી બીજા સૌગત આદિક મમત ધર્મમા ધર્માભાસતા હોવાથી તાત્ત્વિક અર્થને પ્રતિપાદન કરવાનો અભાવ કહેવામા આવ્યો છે, માટે તેમા શ્રેષ્ઠતા નથી આ ધર્મવર ચાતુરન્તચક્ર અનુસાર જેનુ વર્તન કરવાનો સ્વભાવ છે તે ધર્મવરચાતુરન્ત ચક્રવર્તી કહેવાય છે "ચક્રવર્તી" પદથી ષટ (છ) ખડના અધિપતિનુ સાદૃશ્ય અભિવ્યક્ત થાય છે "चत्वार अन्ता चतुरन्ता." અહી અન્ત શબ્દનો અર્થ સીમા થાય છે ઉત્તરદિશામા હિમવાન્ તેમજ શેષ (બાકીની)

भूतप्रहरणविशेषमदृशसम्यक्चारित्ररूपरत्नेन वर्तितु शील येषा ते चक्रवर्तिन, चातुरन्ताश्च ते चक्रवर्त्तिन चातुरन्तचक्रवर्तिन, धर्मेण—न्यायेन वरा श्रेष्ठा इतरतीर्थिकाऽपेक्षयेति धर्मवरा, धर्मा =प्राणातिपातादिनिवृत्तिदानशीलादिरूपा, 'धर्मः पुण्य—यम—न्याय—स्वभावाऽऽचार—सोमपा '—इत्यमर, तैर्वरा =श्रेष्ठा अन्यतीर्थिकापेक्षयेति धर्मवरा, ते च ते चातुरन्तचक्रवर्तिनश्चेति—धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्त्तिन । यद्वा चातुरन्त च तच्चक्र चातुरन्तचक्र, वरञ्च तच्चातुरन्तचक्र वरचातुरन्तचक्र, धर्मो वरचातुरन्तचक्रमिव धर्मवरचातुरन्तचक्र तेन वर्तितु-वर्तयितु वा शील येषा ते धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्त्तिन—स्तेभ्य, 'दीवो' द्वीपेभ्य -ससारसमुद्रे निमज्जता द्वीपतुल्यत्वात्। 'ताण ' त्राणम्य-कर्मकद-

---

किये गये है। इन चार सीमाओं के जो स्वामी है वे चातुरन्त हैं। चक्रशब्द का अर्थ रत्नरूप प्रहरण—शस्त्रविशेष है। चक्रवर्ती के चौदह रत्नो मे एक रत्न चक्र भी होता है। चक्रवर्ती के चक्ररत्नसदृश सम्यक्चारित्ररूपी रत्न से वर्तन करने का जिनका स्वभाव है वे चक्रवर्ती हैं। धर्म शब्द का अर्थ न्याय और प्राणातिपातादि—निवृत्ति, दान, शील, आदि भी है। धर्म से—न्याय से, अथवा—प्राणातिपातादि—निवृत्ति, दान, शील—आदि से जो अन्यतीर्थिकों की अपेक्षा उत्तम है वे धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्ता हैं। अथवा—चातुरन्तचक्रसदृश धर्म से जिनका वर्त्तन का स्वभाव है वे धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्ती है । ऐसे धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्तियो के लिये नमस्कार हो। 'दीवो ' ससारसमुद्र मे डूबते हुए प्राणियों के जो द्वीप के समान आधार है ऐसे प्रभु के लिये नमस्कार हो। (ताण) कर्मों से कदर्थित प्राणियो

त्रणु दिशाओमा उपाधिना लेदथी त्रणु समुद्र ओ चतुरन्त पदथी लेवायु छे आ चार सीमाओना जे स्वामी छे ते चातुरन्त छे चक्र शब्दनो अर्थ रत्नरूप प्रहरणु अर्थात् शस्त्रविशेष छे चक्रवर्तीना चौद रत्नोमा ओक रत्न चक्र पणु होय छे चक्रवर्तीना चक्ररत्नसदृश सम्यक्चारित्ररूपी रत्नथी वर्तन करवानो जेनो स्वलाव छे ते चक्रवर्ती छे धर्म शब्दनो अर्थ न्याय अने प्राणुातिपातादिनिवृत्ति, दान, शील आदि पणु छे धर्मथी, न्यायथी अथवा प्राणुातिपातादिनिवृत्ति, दान, शील आदिथी जे अन्यतीर्थिकोनी अपेक्षाओ उत्तम छे ते धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्ती छे अथवा वरचातुरन्तचक्रसदृश धर्मथी जेनो वर्त्तवानो स्वलाव छे ते धर्मवर-चातुरन्तचक्रवर्ती छे ओवा धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्तीओने नमस्कार हो (दीवो) ससारसमुद्रमा डूबता प्राणीओने द्वीपना समान जे आधार छे

ताणं सरणगई पइट्ठा अप्पडिहय-वर-नाण-दंसण-धराणं वियट्ट-

थिताना भव्याना रक्षसक्षणेभ्य । अतएव तेषा भव्याना 'सरणगई' शरणगतिभ्य – आश्रयस्थानेभ्य', 'पइट्ठा' प्रतिष्ठाभ्य –कालत्रयेऽपि अविनाशिन्वात् स्थितेभ्य, 'दीवो' इत्यादीनि 'पइट्ठा' इत्यन्तानि चतुर्थ्यर्थे प्रथमान्तानि, अत्रैकवचन नपुसकत्व स्त्रीत्व चाविवक्षितम् । 'अप्पडियहय–वर–नाण–दसण–धराण' अप्रतिहतवर–ज्ञान दर्शन–धरेभ्य –प्रतिहत–भित्त्याद्यावरणस्खलित–न प्रतिहतम्–अप्रतिहत, ज्ञानञ्च दर्शनञ्चेति ज्ञानदर्शने, यतोऽप्रतिहते अतएव वरे–श्रेष्ठे च ते ज्ञानदर्शने वरज्ञानदर्शने केवल– ज्ञानकेवलदर्शने, अप्रतिहते वरज्ञानदर्शने अप्रतिहतवरज्ञानदर्शने, तयोर्धरा – अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनधरा – सम्पूर्णाऽऽवरणरहितकेवलज्ञानकेवलदर्शनधारिणस्तेभ्य । 'वियट्टच्छउमाण' व्यावृत्तच्छद्मभ्य –छाद्यते=आव्रियते केवलज्ञानकेवलदर्शनगुणाद्या- त्मनोऽनेनेति छद्म–ज्ञानावरणीयादिक कर्माष्टक, व्यावृत्त–निवृत्त छद्म येभ्यस्ते व्यावृ

के जो त्राता है ऐसे प्रभु के लिये नमस्कार हो। (सरणगई) भव्यों के लिये आश्रयस्थानस्वरूप प्रभु के लिये नमस्कार हो। (पइट्ठा) कालत्रय में भी अविनश्वरस्वरूप प्रभु के लिये नमस्कार हो (दीवो) यहा से लेकर (पइट्ठा) तक के समस्त विशेषण चतुर्थी विभक्ति के अर्थ मे प्रथमान्त प्रयुक्त हुए है। यहा एकवचन, नपुसकत्व एव स्त्रीत्व अविवक्षित है। (अप्पडिहय–वर–नाण– दसण–धराण) जो अप्रतिहत अनन्त ज्ञान और अनन्त दर्शन के धारक है, उनके लिये नमस्कार हो। (वियट्टच्छउमाण) जिनके द्वारा आत्मा का स्वभावभूत केवलज्ञान एव केवल दर्शन आवृत होता है ऐसे आठों ही कर्म 'छद्म' शब्द से गृहीत हुए है, यह छद्म जिनकी आत्मा से सदा के लिये दूर हो चुका है

એવા પ્રભુને નમસ્કાર હો (ताण) કર્મોથી અથડાતા પ્રાણિઓના જે ત્રાણ અર્થાત્ રક્ષક છે એવા પ્રભુને નમસ્કાર હો (सरणगई) ભવ્યોને માટે આશ્રય સ્થાન સ્વરૂપ પ્રભુને નમસ્કાર હો (पइट्ठा) ત્રણે કાળમા અવિનાશીસ્વરૂપ પ્રભુને નમ સ્કાર હો (दीवो) અહીં થી લઇને (पइट्ठा) સુધીના બધા વિશેષણો ચતુર્થી વિભક્તિના અર્થમા પ્રથમાન્ત વપરાયેલા છે, અહીં એકવચન નપુસકત્વ (નાન્યતર જાતિ) તેમ જ સ્ત્રીત્વ [નારી જાતિ] અવિવક્ષિત છે [अप्पडिहय वर नाण दसण धराणं] જે અપ્રતિહત અનતજ્ઞાન અને અનત દર્શનના ધારક છે તેમને નમસ્કાર હો (वियट्टच्छउमाण) જેમના દ્વારા આત્માના સ્વભાવભૂત કેવલ જ્ઞાન તેમજ કેવલ દર્શન આવૃત થાય છે એવા આઠેય કર્મ 'छद्म' શબ્દથી ગૃહીત થાય

छउमाणं जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोह-
याणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं सिव-मयल-

त्तछद्मानस्तेभ्य । 'जिणाण' जिनभ्य–स्वय रागद्वेषशत्रुजेतृभ्य, 'जायगाण' जापकेभ्य–जापयन्ति कर्मशत्रून् जयन्त भव्यजीवगण धर्मदेशनादिना प्रेरयन्तीति जापका, जिधातोर्णा 'क्रीङ्जीना णौ' इतिसूत्रेण आत्वे पुकि जापि इति ण्यन्ताद्धातोर्ण्वुलि जापकपदसिद्धि, तेभ्यो जापकेभ्य । 'तिन्नाण' तीर्णेभ्य–स्वय ससारौघ–ससारार्णव तीर्णा=उत्तीर्णास्तेभ्य । 'तारयाण' तारकेभ्य–तारयन्त्यन्यान् इति तारकास्तेभ्य । 'बुद्धाण' बुद्धेभ्य–स्वय बोध प्राप्तेभ्य । 'बोहयाण' बोधकेभ्य–बोधयन्त्यन्यान् इति बोधकास्तेभ्य । 'मुत्ताण' मुक्तेभ्य–अमोचिपत स्वय कर्मबन्धाद्विति मुक्तास्तेभ्य । 'मोयगाण' मोचकेभ्य–मुच्यमानान अन्यान् प्रेरय-

ऐसे व्यावृत्तछद्मवाले सिद्ध प्रभु के लिये नमस्कार हो। (जिणाण) राग द्वेष आदि अतरग शत्रुओं के विजेता ऐसे प्रभु के लिये नमस्कार हो। (जावयाण) जो कर्मशत्रुओं के जीतने के लिये उद्यत भव्यगणों को धर्मदेशनादि द्वारा प्रेरित करते है वे जापक है, ऐसे जापक सिद्ध प्रभु को नमस्कार हो। (तिन्नाण) स्वय ससार समुद्र से जो पार हुए हैं वे तीर्ण है, ऐसे तीर्ण सिद्ध प्रभु को नमस्कार हो। (तारयाण) जो पर को पार कर देते है वे तारक है, ऐसे तारक प्रभु को नमस्कार हो। (बुद्धाण) स्वय बोध को प्राप्त जो होते है वे बुद्ध कहलाते है उनको नमस्कार हो। (बोहयाण) पर को बोध करने वाले प्रभु के लिये नमस्कार हो। (मुत्ताणं) मुक्त प्रभु के लिये नमस्कार हो। (मोयगाण)

છે આ 'છદ્મ' જેમના આત્માથી સદાને માટે દૂર થઈ ચુકેલા છે એવા વ્યાવૃત્તછદ્મવાળા સિદ્ધ પ્રભુને નમસ્કાર હો (जिणाण) રાગદ્વેષ આદિ અતરગ શત્રુઓના વિજેતા એવા સિદ્ધ પ્રભુને નમસ્કાર હો. (जावयाण) જે કર્મશત્રુઓને જીતવાને માટે ઉદ્યત (તૈયાર) ભવ્યગણોને ધર્મદેશના આદિ દ્વારા પ્રેરિત કરે છે તે જાપક છે એવા જાપક સિદ્ધ પ્રભુને નમસ્કાર હો. (तिन्नाण) પોતે સસાર સમુદ્રથી પાર થએલા છે તે તીર્ણ કહેવાય છે એવા તીર્ણ સિદ્ધ પ્રભુને નમસ્કાર હો (तारयाण) જે બીજાને પાર ઉતારી દે છે તે તારક છે એવા તારક પ્રભુને નમસ્કાર હો (बुद्धाण) પોતે બોધને પ્રાપ્ત થયેલા છે તે બુદ્ધ કહેવાય છે તેમને નમસ્કાર હો (बोहयाणं) બીજાને બોધ કરવાવાળા પ્રભુને નમસ્કાર હો (मुत्ताण) મુક્ત પ્રભુને નમસ્કાર હો (मोयगाण) બીજાને

मरुय-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेय

न्तीति मोचकास्तेभ्य, 'सव्वन्नूणं' सर्वज्ञेभ्य—सर्वं=समस्त युगपद् गुण-पर्यायलक्षण वस्तुजात याथातथ्येन जानन्तीति सर्वज्ञास्तेभ्य, 'सव्वदरिसीणं' सर्वदर्शिभ्य—सर्वं=समस्त पदार्थस्वरूप सामान्येन द्रष्टु शील येषा ते सर्वदर्शिनस्तेभ्य, स्थान-विशेषणमाह—'सिव' शिव—निखिलोपद्रवरहितत्वाच्छिव—कल्याणमयम्, 'अयल' अचलम् स्वाभाविकप्रायोगिकचलनक्रियाशून्यम्, 'अरुय' अरुजम्—अविद्यमाना रुजा यत्र तत्, अविद्यमानशरीरमनस्त्वात् आधिव्याधिरहितमित्यर्थ, 'अणत' अनन्तम्—अविद्यमानोऽन्तो नाशो यस्य तत्, अत एव—'अक्खय' अक्षयम्—नास्ति लेशतोऽपि क्षयो यस्य तत्—अविनाशीत्यर्थ, 'अव्वाबाह' अव्याबाधम्—न विद्यते व्याबाधा—पीडा द्रव्यतो भावतश्च यत्र तत्। 'अपुणरावित्ति' अपुनरावृत्ति=न ससारे पुनरा-वृत्ति=पुनरवतरण यस्मात् तत्, यत्र गत्वा न कदाचिदप्यात्मा निवर्तते, समाम्नातमन्य-

---

दूसरों को मुक्त कराने वाले सिद्ध प्रभु के लिये नमस्कार हो। (सव्वण्णूणं सव्व-दरिसीणं) सर्वज्ञ—समस्त गुणपर्यायस्वरूप वस्तुसमूह के युगपत् यथार्थ ज्ञाता के लिये नमस्कार हो, एव यथार्थ द्रष्टा के लिये नमस्कार हो। विशेषाकार बोध का नाम ज्ञान एव सामान्याकार बोध का नाम दर्शन है। (सिव—मयल—मरुय-मणत—मक्खय—मव्वाबाह—मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेय ठाण सपत्ताण) निखिल उपद्रवों से रहित होने के कारण शिव=कल्याणमय, अचल=स्वाभाविक एव प्रायोगिक क्रिया से शून्य, अरुज=शारीरिक एव मानसिक व्याधि और आधि से सर्वथा परिवर्जित, अनन्त, अविनाशी, अतएव अक्षयस्वरूप, अव्याबाध—द्रव्य और भाव दोनों प्रकार की पीडा से निर्मुक्त, अपुनरावृत्ति—जहा जाकर फिर ससार मे

મુક્ત કરાવવાવાળા સિદ્ધ પ્રભુને નમસ્કાર હો (सव्वण्णूण सव्वदरिसीण) સર્વજ્ઞ સમસ્ત—ગુણ—પર્યાય—સ્વરૂપ વસ્તુસમૂહના યુગપત્ યથાર્થ જ્ઞાતાને નમસ્કાર હો, તેમજ યથાર્થ દ્રષ્ટાને નમસ્કાર હો વિશેષાકાર બોધનુ નામ જ્ઞાન તેમજ સામાન્યાકાર બોધનુ નામ દર્શન છે (सिव-मयल-मरुय-मणत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेय ठाण सपत्ताण) સકળ ઉપદ્રવોથી રહિત હોવાના કારણે શિવ—કલ્યાણમય, અચલ—સ્વાભાવિક તેમજ પ્રાયોગિક ક્રિયાઓથી શૂન્ય, અરૂજ-શારીરિક તેમજ માનસિક વ્યાધિ અને આધિથી સર્વથા પરિવર્જિત (મુક્ત), અનંત, અવિનાશી અને તેથી અક્ષય-સ્વરૂપ, અવ્યાબાધ દ્રવ્ય અને ભાવ બન્ને પ્રકારની પીડાથી નિર્મુક્ત, અપુનરાવૃત્તિ—જ્યા જઈને પાછુ

ठाणं संपत्ताणं, नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स

त्रापि- 'न म पुनरावर्त्तते न म पुनरावर्त्तते'-इति । इत्थम्-उक्तविधवादि-विशेषणविशिष्टम् । 'सिद्धिगइनामधेयं' सिद्धिगतिनामधेयम्, सिद्धिगतिरिति नाम-धेय=नाम यस्य तत्, सिद्धिगतिनामकम् 'ठाणं' स्थानम्-स्थीयतेऽस्मिन् इति स्थान-लोकाग्रलक्षणम्, 'संपत्ताणं' सम्प्राप्तेभ्यः-समाश्रितेभ्यः । इयदवधि-समुच्चयेन सर्व-सिद्धापेक्षया विशेषणोपादानपूर्वकं नमस्कारवाक्यमभिधाय सम्प्रति भगवन्महावीरोद्देश्यकं नमस्कारमभिधत्ते-'नमोत्थु णं' नमोऽस्तु खलु-'समणस्स भगवओ महावीरस्स' श्रमणाय भगवते-महावीराय, अत्र श्रमणशब्देनायमर्थो बोद्धव्यः-परकृतस्थान-निवासा-दुरगसम, परीषहोपसर्गाप्रकम्प्यत्वाद्गिरिसम, तपस्तेजोभराज्ज्वलनसम, गम्भीरत्वाद्-

जन्म का अवतरण नहीं होवे ऐसे सिद्धिगति नामक स्थान को-लोक के अग्रभाग में स्थित मुक्तिस्थान को-प्राप्त हुए श्री सिद्धों को नमस्कार हो। यहां तक के इन विशेषणों से समस्त सिद्धों की अपेक्षा से नमस्कार का कथन किया गया है। अब भगवान महावीर को उद्देश्य कर के यहां से नमस्कार करने का कथन सूत्रकार करते हैं-(नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आदिगरस्स तित्थगरस्स जाव संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स) श्रमण भगवान महावीर के लिये नमस्कार हो। श्रमण शब्द से सूत्रकार ने प्रभु महावीर में इन विशेषताओं का कथन किया है, वे कहते हैं भगवान महावीर सर्प की तरह परकृत स्थान में निवास करने के कारण सर्प-सदृश हैं। परीषह एवं उपसर्गों के आने पर भी प्रभु अप्रकंप थे, अतः वे गिरिसम हैं। तप एवं तेजके धारक होने से प्रभु अग्नि-जैसे प्रतापशाली हैं। गांभीर्य एवं ज्ञानादिकरूप

સંસારમાં જીવને અવતરવું ન થાય એવા સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને લોકના અગ્રભાગમાં રહેલા મુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત થયેલ શ્રીસિદ્ધ પ્રભુને નમસ્કાર હો. અહીં સુધીના આ વિશેષણોથી સમસ્ત સિદ્ધોની અપેક્ષાએ નમસ્કારનું કથન કર્યું છે. હવે ભગવાન મહાવીરને ઉદ્દેશીને અહીંથી નમસ્કાર કરવાનું કથન સૂત્રકાર કરે છે-(नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आदिगरस्स तित्थगरस्स जाव संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને નમસ્કાર હો. શ્રમણ શબ્દથી સૂત્રકારે પ્રભુ મહાવીરમાં આ વિશેષતાઓનું કથન કર્યું છે. તેઓ કહે છે કે ભગવાન મહાવીર સર્પની પેઠે બીજાએ કરેલા નિવાસસ્થાનમાં રહેવાને કારણે સર્પ જેવા છે. પરીષહ તેમજ ઉપસર્ગો આવતા પણ પ્રભુ ધ્રુજી જતા નહિ, માટે તે પર્વત

आदिगरस्स तित्थगरस्स जाव संपाविउकामस्स मम धम्माय-

ज्ञानादिरत्नाकरत्वात् मर्यादाधारकत्वात् सागरसम । निरालम्बनत्वाद् गगनसम । सुखदुःखयोरदर्शितविकारभावाद् वृक्षसम । अनियतवृत्तित्वाद् भ्रमरसम । संसारभयोद्विग्नत्वात् मृगसम । सर्वसहत्वाद् धरणिसम । कामभोगोद्भवत्वेऽपि विषयविरक्ततया पङ्कजलोपरि वर्तमानकमलवन्निर्लेपत्वात् कमलसम । लोकालोकयोरविशेषेण प्रकाशकत्वाद्रविसम । सर्वत्राप्रतिहतगतित्वात्पवनसम । स एवमूतो भगवानस्तीति भाव । भगवते—समग्रैश्वर्ययुक्ताय, महावीराय—महाश्चासौ वीर—'वीर विक्रान्तौ'—अस्माद्धातोरिगुपधत्वात्कप्रत्यये वीर—कषायादिमहारिपुविजेता इत्यर्थ, तस्मै महावीराय=अस्यामवसर्पिण्या चतुर्विंशतितमचरमतीर्थङ्कराय । 'आदिगरस्स' आदिकराय, 'तित्थगरस्स' तीर्थकराय, 'जाव संपाविउकामस्स' यावत् सम्प्राप्तुकामाय—यावच्छब्दात्— 'सयसंबुद्धस्स' इत्यारभ्य-

रत्नों से भरे हुए होने के कारण, एव मर्यादा के धारक होने के कारण प्रभु समुद्रतुल्य है। गगन की तरह निरालम्ब, वृक्षकी तरह सुख एव दुःख में अदर्शितविकारभावयुक्त, भ्रमर की तरह अनियतवृत्तिसपन्न, मृग की तरह इस ससाररूपी भय से अयत त्रस्त, धरिणी की तरह क्षमा के भडार वे प्रभु हैं। प्रभु कामभोग से उत्पन्न हैं तो भी विषयों से विरक्त होने के कारण पक से उत्पन्न एव जल से सवर्द्धित कमल की तरह बिलकुल वैषयिक भावों से निर्लिप्त है, इसलिये प्रभु कमल जैसे हैं। प्रभु लोक और अलोक के समानरूप से प्रकाशक है, इसलिये रवितुल्य हे । प्रभु सर्वत्र अप्रतिहत—विहारी है, इसलिये वायु जैसे हैं। प्रभु समग्र ऐश्वर्यसम्पन्न है, इसलिये भगवान् हैं। प्रभु एक महावीर है,

જેવા છે તપ તેમજ તેજના ધારક હોવાથી પ્રભુ અગ્નિ જેવા પ્રતાપશાલી છે ગાભીર્ય તેમજ જ્ઞાનાદિકરૂપ રત્નોથી ભરેલા હોવાના કારણે, તેમજ મર્યાદાના ધારક હોવાના કારણે પ્રભુ સમુદ્ર સમાન છે આકાશની પેઠે નિરાલબ, વૃક્ષની પેઠે સુખ તેમજ દુ ખમા ન દેખાય જેનો વિકાર એવા, ભ્રમરની પેઠે અનિયતવૃત્તિસપન્ન, મૃગની પેઠે આ સસારરૂપી ભયથી અત્યત ત્રાસી ગયેલા, ધરનીની પેઠે ક્ષમાના ભડાર, તે પ્રભુ છે પ્રભુ કામભોગથી ઉત્પન્ન થયેલા છે તો પણ વિષયોથી વિરક્ત હોવાના કારણે કીચડથી પેદા થયેલ તેમજ જલથી વધેલા કમળની પેઠે બિલકુલ વિષયના ભાવોથી નિર્લેપ છે, તેથી પ્રભુ કમલ જેવા છે પ્રભુ લોક અને અલોકનો સમાનરૂપથી પ્રકાશક છે તેથી રવિ (સૂર્ય) સમાન છે પ્રભુ સમગ્ર-ઐશ્વર્ય-સપન્ન છે તેથી ભગવાન છે પ્રભુ એક મહાન વીર છે, કેમકે તેમણે કષાય આદિક

'सिद्धिगइनामधेय ठाण इयदवधि ग्राह्यम् । अत्रेतावान् विशेष –'ठाण सपत्ताण' स्थान सम्प्राप्तेभ्य –इति प्रागुक्तम्, इह तु 'सपाविउकामस्स' सम्प्राप्तुकामाय–मोक्षगामिने–इत्युच्यते, चरमस्य तीर्थकरस्य कूणिकनृपशासनकाले विद्यमानत्वात । **'मम धम्मायरियस्स'** मम धर्माऽऽचार्याय=ज्ञानाचारादिपञ्चविधाचारधारकाय, न तु कलाचार्याय,

---

क्यों कि उन्होंने कषायादिक अन्तरग शत्रुओं पर विजय प्राप्त की है । महावीर प्रभु इस अवसर्पिणी काल के चौवीसवें अन्तिम तीर्थकर है । **"आदिगरस्स"** इस पद–द्वारा प्रभु मे अपने शासन की अपेक्षा धर्म की आदिकर्तृता प्रकट की गयी है । भगवान महावीर चतुर्विध सघ के सस्थापक है । **"जाव"** पदसे **"सयसबुद्धस्स"** यहा से लेकर **"सिद्धिगइनामधेय ठाण"** यहा तकका पाठ सगृहीत किया गया है । यहा इस पाठ में इतनी विशेषता पहिले पाठ की अपेक्षा जान लेनी चाहिये कि पहिले पाठ में **"ठाण सपत्ताण–स्थान समाप्तेभ्यः"** ऐसा पद रखा गया है और यहा पर **"ठाण सपाविउकामस्स–स्थान समाप्तुकामाय"** ऐसा पाठ रखा है, क्योंकि प्रभु महावीर अभी उस सिद्धिगतिनामक स्थान की प्राप्ति करनेवाले है । **'मम धम्मायरियस्स'**–कोणिक कहते है कि ये श्रमण भगवान् महावीर प्रभु, जो कि ज्ञानाचारादि पॉच प्रकार के आचारो के धारक होने के कारण मेरे धर्माचार्य है, कलाचार्य नहीं, उनके लिये नमस्कार है । इससे यह सूचित होता है कि जो ज्ञानाचारादि पॉच प्रकार के आचारों के धारक है वे ही धर्माचार्य कहे जाते है ।

अतरग शत्रुओ पर विजय प्राप्त कर्यो छे महावीर प्रभु आ अवसर्पिणी कालना चोवीसमा अतिम तीर्थंकर छे. "आदिगरस्स" ए पदथी प्रभुमा पोताना शासननी अपेक्षाए धर्मना आदिकर्तापणु प्रगट कर्यु छे भगवान महावीर चतुर्विध सघना सस्थापक छे 'जाव' पदथी "सयसबुद्धस्स" अहीथी लईने "सिद्धिगइनामधेय ठाण" अहीं सुधीनो पाठ लेवामा आव्यो छे अहीं आ पाठमा एटली विशेषता पहेला पाठनी अपेक्षाए जाणवी जोईए के पहेला पाठमा "ठाण सपत्ताण"–स्थान सप्राप्तेभ्य" एवु पद वपरायु छे अने अहीं "ठाण सपाविउकामस्स–स्थान सप्राप्तुकामाय" एवो पाठ लीधो छे, केमके प्रभु महावीर हजु ते सिद्धिगतिनामक स्थानने प्राप्त करवावाळा छे "मम धम्मायरियस्स" कोणिक कहे छे के ते श्रमण भगवान् के जे ज्ञानाचारादि पाचप्रकारना आचारोना धारक होवाना कारणे मारा धर्माचार्य छे, कलाचार्य नथी, एवा प्रभु ने नमस्कार हो आथी एम सूचित थाय छे के जे ज्ञानाचारादि पाचप्रकारना आचारोना धारक होय

रियस्स धम्मोवदेसगस्स, वदामि णं भगवंतं तत्थ गयं इहगए, पासउ मे भगवं तत्थगए इहगयंति-कट्टु वंदइ णमंसइ, वदित्ता

धर्माचार्यत्वमेव प्रकटीकरोति-'धम्मोवदेसगस्स' धर्मोपदेशकाय, श्रुतचारित्रलक्षणरूप-धर्मप्ररूपकाय, 'वदामि ण भगवत तत्थगय इहगए' वन्दे खलु भगवन्त तत्रगतमिहगत -इह गत -चम्पानगरीस्थितोऽहम् कोणिक ,तत्रगत=चम्पा नगरीसमीप-ग्रामे स्थित भगवन्त महावीर, वन्दे-पूर्वोक्तस्तुत्या स्तुतिविषय करोमि । 'पासउ मे भगव तत्थगए इहगय तिकट्टु' पश्यतु मा भगवान् तत्रगत इहगतमिति कृत्वा-सर्वज्ञत्वात् तत्रगतो=दूरस्थितो भगवान् इहगत=व्यवधानेन स्थित मा पश्यतु-इति कृत्वा=उक्त्वा-'वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता' वन्दते-स्तौति, नमस्यति=पञ्चाङ्गनमनपूर्वक प्रणमति, वन्दित्वा नमस्यित्वा

'धम्मोवदेसगस्स' भगवान वीर श्रुतचारित्ररूप धर्मका उपदेश करते हैं, इसलिये वे धर्मोपदेशक है, अत ऐसे वीरप्रभु के लिये नमस्कार हो। कोणिक राजा इस प्रकार कहकर प्रभुवीर को परोक्ष वदन करते है कि-(तत्थगय इहगएत्ति कट्टु वदइ णमसइ) वे वीरप्रभु कि जिन्हें मैं इस समय नमस्कार कर रहा हू, यद्यपि मेरे प्रत्यक्ष नहीं है तथापि वे इस चपानगरी के पास के ग्राम मे विराजमान है और मैं यहा पर हू, अत यहा चपानगरी मे रहा हुआ मैं उपनगरग्राम मे विराजमान वीर प्रभु को नमस्कार करता हू। "पासउ मे भगव तत्थगए इहगय" वे प्रभु वहा पर विराजमान होते हुए व्यवधान से स्थित मुझे अपने ज्ञानरूपी नेत्र द्वारा देखें। इस प्रकार कहकर कोणिक राजाने प्रभु को वदन किया एव नमस्कार किया-पंचागनमनपूर्वक नमस्कार किया। (वदित्ता नमसित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे

છે તેમને જ ધર્માચાર્ય કહેવામા આવે છે "धम्मोवदेसगस्स" ભગવાન મહાવીર શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મના ઉપદેશક છે તેથી તેઓ ધર્મોપદેશક છે, માટે એવા મહાવીર પ્રભુને નમસ્કાર હો કોણિકરાજા આ પ્રકારે કહીને પ્રભુ વીરને પરોક્ષ વદન કરે છે કે (तत्थगय इहगएत्ति कट्टु वदइ णमसइ) તે વીર પ્રભુ કે જેમને હુ આ સમયે નમસ્કાર કરી રહ્યો છુ તે જો કે મને પ્રત્યક્ષ નથી તો પણ તેઓ આ ચપાનગરીની પાસેના ગામમા છે અને હુ અહી છુ, આથી હુ અહી ચપાનગરીમા રહીને ઉપનગર ગામમા વિરાજમાન વીર પ્રભુને નમસ્કાર કરુ છુ [पासउ मे भगव तत्थगए इहगय] પ્રભુ ત્યા વિરાજમાન હોવા છતા દૂર રહેલા એવા મને પોતાના જ્ઞાનરૂપી નેત્રદ્વારા જુએ આ પ્રકારે કહીને કોણિક રાજાએ પ્રભુને વદન કર્યા,

णमंसित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीइत्ता तस्स पवित्तिवाउयस्स अट्ठुत्तर सयसहस्सं पीइदाणं दलयइ, दलइत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता संमाणित्ता एवं वयासी ॥ सू० २० ॥

'सीहासणवरगए' सिंहासनवरगत, 'पुरत्थाभिमुहे' पौरस्त्याभिमुख,-पूर्वाभिमुख सन 'निसीयइ' निषीदति-उपविशति, 'निसीइत्ता' निषद्य-उपविश्य 'तस्स पवित्ति-वाउयस्स' तस्मै प्रवृत्तिव्यापृताय-भगवदागमननिवेदकाय, 'अट्ठुत्तर सयसहस्स पीइदाण दलयइ' अष्टोत्तर शतसहस्र प्रीतिदान ददाति-अष्टाधिक लक्षमित राजतमुद्रारूप प्रीतिदान=तुष्टिदान पारितोषिक ददाति । 'दलइत्ता सक्कारेइ समाणेइ' दत्त्वा सत्करोति-वस्त्रादिना, सम्मानयति आसनादिना, दान विधिसहितमेव सत्यस्य भवति-इति भाव । 'सक्कारित्ता सम्माणित्ता एवं वयासी' सत्कृत्य= सन्तोष्य, सम्मान्य=सम्मान विधाय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् ॥ सू० २० ॥

निसीयइ) वदन नमन करके वह कोणिक राजा अपने सिंहासन पर पीछे जाकर पूर्व की तरफ मुख करके बैठ गये। (निसीइत्ता तस्स पवित्तिवाउयस्स अट्ठुत्तर सयसहस्स पीइदाण दलयइ) बैठकर फिर उन्होंने उस संदेशवाहक को प्रीतिदान मे-पारितोषिकरूपसे १ लाख ८ चादी की मुद्राएँ दी। (दलइत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ) देकर उसका खूब सत्कार किया और सन्मान किया, (सक्कारित्ता समाणित्ता एव वयासी) आदर सत्कार कर चुकने पर फिर राजाने उससे इस प्रकार कहा-॥सू०२०॥

તેમજ નમસ્કાર કર્યા-પંચાગ-નમન-પૂર્વક નમસ્કાર કર્યા (वदित्ता नमसित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे निसीयइ) વદન નમસ્કાર કરીને તે કોણિકરાજા પોતાના સિંહાસન પર પાછા જઈને પૂર્વ તરફ મુખ કરીને બેસી ગયા (निसीइत्ता तस्स पवित्तिवाउयस्स अट्ठुत्तर सयसहस्स पीइदाण दलयइ) બેસીને પછી તેમણે તે સદેશવાહકને પ્રીતિદાનમા પારિતોષિક (ઈનામ) રૂપે ૧ લાખ ૮ મુદ્રાઓ આપી (दलइत्ता सकारेइ समाणेइ) દઈને તેનો ખૂબ સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું (सकारित्ता समाणित्ता एव वयासी) આદર સત્કાર કરી ચુકયા પછી રાજાએ તેને આ પ્રકારે કહ્યુ-(સૂ ૨૦)

मूलम्—जया णं देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे इहमागच्छेज्जा, इह समोसरिज्जा, इहेव चंपाए णयरीए वहिया पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ताणं अरहा जिणे केवली समणगणपरिवुडे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरेज्जा, तया णं तुमं मम एयमट्ठं निवेदिज्जासि-त्ति कट्टु विसज्जिए ॥ सू० २१ ॥

टीका—राजा कूणिको भगवद्वार्तानिवेदक पुरुषमादिशति 'जया ण' इत्यादि। यदा खलु देवानुप्रिय ! श्रमणो भगवान् महावीर इहाऽऽगच्छेत्, इह समवसरेत्, इहैव चम्पाया नगर्या बाह्ये पूर्णभद्रे चैत्ये यथाप्रतिरूपमवग्रहमवगृह्य अरहा जिन केवली श्रमणगणपरिवृत संयमेन तपसाऽऽत्मान भावयन् विहरेत्, तदा खलु मह्यमेतमर्थं निवेदयेरितिकृत्वा विसर्जित ॥ सू० २१ ॥

'जया ण इत्यादि—

(देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रिय ! (जया ण) जिस समय (समणे भगवं महावीरे) श्रमण भगवान् महावीर प्रभु (इहमागच्छेज्जा) यहा पर विहार करते हुए पधारें, (इह समोसरिज्जा) यहाँ समवसृत हों, और (इहेव चपाए णयरीए वहिया पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूव ओग्गहं ओगिण्हित्ताण अरहा जिणे केवली समणगणपरिवुडे सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरेज्जा) इस चपानगरी के बाहर पूर्णभद्र नामक उद्यान मे यथाप्रतिरूप—साधु को कल्पने योग्य—अवग्रह—वसति की आज्ञा वनमाली से ग्रहण कर वे श्रमणगण से परिवृत अरहा जिन

'जया ण' ईत्यादि—

(देवाणुप्पिया) ! हे देवानुप्रिय ! (जया ण) જે સમયે (समणे भगव महावीरे) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર પ્રભુ (इहमागच्छेज्जा) વિહાર કરતા કરતા અહીં પધારે, (इह समोसरिज्जा) અહીં સમવસૃત થાય, અને (इहेव चपाए णयरीए वहिया पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूव ओग्गहं ओगिण्हित्ताणं अरहा जिणे केवली समणगणपरिवुडे सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरेज्जा) આ ચંપાનગરીની બહાર પૂર્ણભદ્ર નામના ઉદ્યાનમાં યથાપ્રતિરૂપ-સાધુને કલ્પવા યોગ્ય અવગ્રહ-વસ્તીની આજ્ઞા ગ્રહણ કરીને તેઓ શ્રમણગણથી વીંટળાએલા અરહા જિન કેવલી ભગવાન્ મહાવીર સ્વામી સત્તર પ્રકારના સંયમ વડે

मूलम्— तए णं समणे भगवं महावीरे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलु-म्मीलियम्मि अहपंडुरे पहाए रत्तासोग-प्पगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धराग-सरिसे कम-

टीका—'तए णं' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं खलु श्रमणो भगवान् महावीरः 'कल्लं' कल्ये द्वितीयदिवसे 'पाउप्पभायाए रयणीए' प्रादुष्प्रभातायां प्रकटीभूत-प्रभातायां रजन्यां 'फुल्लुप्पल-कमल-कोमलु-म्मीलियम्मि' फुल्लोत्पल कमल-कोमलोन्मीलिते-फुल्ल-विकसितं च तत्-उत्पल-पद्म, कमलश्च=चित्रमृग -हरिणविशेष, तयो कोमल-मृदुकम्, उन्मीलित-पत्राणा नयनयोश्चोन्मीलन यस्मिन् तत्तथा तस्मिन्, इत्य प्रभातविशेषणम्। 'अह' अथ-अनन्तर-रजनीपर्यवसानाऽनन्तरम्-'पंडुरे' पाण्डुरे-शुक्ले 'पभाए' प्रभाते-प्रात काले, अथ सूर्यविशेषणान्याह-'रत्तासोग' इत्यादि। 'रत्तासोग-प्पगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धराग-सरिसे' रक्ताऽशोक-प्रकाश-किंशुक-शुकमुख-गुञ्जाऽर्द्धराग-सदृशे, रक्ताऽ

केवली भगवान् महावीर स्वामी सत्रह प्रकार के संयम से और बारह प्रकार के तप से अपनी आत्मा को भावते हुए जब विचरें, (तया णं) तब तुम निश्चय से (मम एयमट्ठं निवेदिज्जासि) मुझे यह समाचार निवेदित करना, (त्तिकट्टु विसज्जिए) ऐसा कहकर उसे विसर्जित कर दिया ॥सू०२१॥

'तए णं' इत्यादि—

(तए णं) तदनन्तर (समणे भगवं महावीरे) श्रमण भगवान् महावीर (कल्लं) दूसरे दिन (पाउप्पभायाए रयणीए) जिसमें प्रभात प्रकट हो चुका है ऐसी रजनी के होने पर (फुल्लु-प्पल-कमल-कोमलुम्मीलियम्मि अहपंडुरे पहाए) तथा विकसित कमलपत्रों एवं चित्रमृग के नयनों का उन्मीलन जिसमें हो चुका है ऐसे शुभ्र आभायुक्त प्रात काल के होने पर, तथा (रत्तासोग-प्पगास-किंसुय-

અને બાર પ્રકારના તપ વડે પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા જ્યારે વિચરે (तया णं) ત્યારે તમે જરૂર (मम एयमट्ठं निवेदिज्जासि) મને એ સમાચાર નિવેદન કરજો (त्तिकट्टु विसज्जिए) એમ કહીને તેને વિદાય કર્યો [સૂ ૨૧]

'तए णं' ઇત્યાદિ

(तए णं) ત્યાર પછી (समणे भगवं महावीरे) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર (कल्लं) બીજે દિવસે (पाउप्पभायाए रयणीए) તે રાત્રિનું જ્યારે પ્રભાત પ્રકટ થયું, (फुल्लु-प्पल-कमल-कोमलु-म्मीलियमि अहपंडुरे पहाए) તથા વિકસેલા કમલપત્રો તેમજ ચિત્રમૃગના નયન જ્યારે ઉઘડી ચુક્યા હોય એવી શુભ આભાવાળો પ્રાત કાળ થયો, તથા (रत्तासोग-प्पगास-किंसुय-सुयमुह-

लागर-संड-बोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते, जेणेव चंपा णयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव वणसंडे,

शोक=प्रसिद्धवृक्ष-तस्य प्रकाश=प्रभा, स रक्ताऽशोकप्रकाश सच किंशुक=पलाशपुष्प, शुकमुख च, गुञ्जा=रक्तकृष्ण फलविशेष-तस्या च रक्तार्द्धभाग, एतथा यो राग-रक्तवर्ण तेन सदृश-समान तस्मिन्=तत्तुल्यकान्तिप्रयुक्ते, 'कमलागर-सड-बोहए' कमलाऽऽकर-षण्ड-बोधके-कमलानामाकरा=कमलोत्पत्तिस्थानानि तडागादय, तेषु-कमलाकरेषु यानि षण्डानि=कमलवनानि, तेषा बोधक=विकाशक तस्मिन-कमलवनविकाशकारिणि यथे, 'उट्ठियम्मि' उत्थिते-उदिते 'सूरे' सूर्ये, पुन कीदृशे 'सहस्सरस्सिमि दिणयरे तेयसा जलते' सहस्ररश्मौ दिनकरे तेजसा ज्वलति-सहस्र-सहस्रपरिमिता रश्मय=किरणा यस्य स तस्मिन् तादृशे दिनकरे-दिवसकारके, तेजसा-किरणपुञ्जेन, ज्वलति-जाज्वल्यमाने सति, **'जेणेव चपा णयरी'** यत्रैव चम्पा नगरी वर्तते इति शेष । **'जेणेव पुण्णभद्दे चेइए'** यत्रैव पूर्णभद्र चैत्यमुद्यानमस्ति । **'जेणेव वणसडे'** यत्रैव वनषण्ड, **'जेणेव असोगवरपायवे'** यत्रैवाशोकवरपादप, **'जेणेव पुढविसिलापट्टए'** यत्रैव पृथ्वी

सुयमुह-गुजद्धराग-सरिसे कमलागर-सड-बोहए) रक्त-अशोक के प्रकाशतुल्य, पलाशपुष्प के समान, शुक के मुख के समान और गुजा के आधे भाग की ललाई के समान, कमलवनों को विकसित करनेवाला प्रभात होने पर (**उट्ठियमि सूरे**) आकाश में सूर्य का उदय होने पर, और पश्चात (**सहस्सरस्सिमि दिणयरे तेयसा जलते**) सहस्रकिरणवाला दिनकर जब अपने तेजसे आकाश मे चमकने लगा तब (**जेणेव चपाणयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए जेणेव वणसडे जेणेव असोगवर-पायवे जेणेव पुढवीसिलापट्टए तेणेव उवागच्छइ**) जहाँ वह चपानगरी थी, जहाँ वह पूर्णभद्र उद्यान था, जहाँ वह अशोक वरवृक्ष था, जहाँ पृथिवीशिलापट्टक था, वहा

गुजद्धराग-सरिसे) રક્ત અશોકના પ્રકાશ સમાન,કિંશુક-કેસુડાના પુષ્પ સમાન, શુકમુખ-પોપટના મુખ સમાન, અને ગુંજાના અર્ધભાગની લાલાશ સમાન (कमलागरसडबोहण) કમલના વનોને ખીલવવાવાળુ પ્રભાત થતા (उट्ठियम्मि सूरे) આકાશમા સૂર્યનો ઉદય થતા અને પછી (सहस्सरस्सिमि दिणयरे, तेयसा जलते) સહસ્રકિરણવાળો સૂર્ય જ્યારે પોતાના તેજવડે, આકાશમા ચમકવા લાગ્યો ત્યારે, (जेणेव चपाणयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए जेणेव वणसडे जेणेव असोगवरपायवे जेणेव पुढवीसिलापट्टए तेणेव उवागच्छइ) જ્યા તે ચપાનગરી હતી, જ્યા તે પૂર્ણભદ્ર ઉદ્યાન હતું, જ્યા તે અશોક વરવૃક્ષ હતુ અને જ્યા

जेणेव असोगवरपायवे जेणेव, पुढवीसिलापट्टए तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ताणं असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टगंसि पुरत्थाभिमुहे पलियंकनिसन्ने- अरहा जिणे केवली समणगणपरिवुडे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ सू० २२ ॥

शिलापट्टकोऽस्ति, 'तेणेव उवागच्छइ' तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, 'अहापडिरूवं' यथाप्रतिरूपम्-यथासाधुकल्प, 'ओग्गहं' अवग्रहम्-आज्ञाम्, 'ओगिण्हित्ता णं' अवगृह्य-गृहीत्वा खलु 'असोगवरपायवस्स अहे' अशोकवरपादपस्य अधः=अधःप्रदेशे, 'पुढविसिलापट्टगंसि' पृथ्वीशिलापट्टके-पृथ्वीशिलापट्टकोपरि, 'पुरत्थाभिमुहे' पौरस्त्याऽभिमुखः-पूर्वाऽभिमुखः, 'पलियंकनिसन्ने' पर्यङ्कनिषण्णः-पर्यङ्केन-पल्थीतिः तेन आसनविशेषेण निषण्णः-उपविष्टः, 'अरहा' अरहाः-अविद्यमान-रहः=एकान्तम् यस्य सोऽरहाः-केवलज्ञानबलेन सर्वज्ञ, 'जिणे' जिनः-रागद्वेषविजेता, 'केवली' प्राप्तकेवलज्ञानः, 'समणगणपरिवुडे' श्रमणगणपरिवृतः-साधुपरिवारसंयुक्तः 'संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे' संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् 'विहरइ' विहरति स्म ॥ सू० २२ ॥

पधारे। (उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ताणं असोगवरपायवस्स अहे पुढवीसिलापट्टगंसि पुरत्थाभिमुहे पलियंकनिसन्ने अरहा जिणे केवली समणगणपरिवुडे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) पधारने के बाद वे प्रभु साधुसमाचारी के अनुसार वनमाली की आज्ञा लेकर अशोकवृक्ष के नीचे पृथ्वीशिलापट्टक पर पूर्वकी ओर मुख कर पर्यङ्क आसन से (पलथी मारकर) विराजमान हुए। तथा श्रमणगणों से परिवृत वे अरहा केवली जिन महावीर प्रभु तप एवं संयम से अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे ॥ सू० २२ ॥

પૃથિવીશિલા-પટ્ટક હતો, ત્યાં પધાર્યા (उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ताणं असोगवरपायवस्स अहे पुढवीसिलापट्टगंसि पुरत्थाभिमुहे पलियंकनिसन्ने अरहा जिणे केवली समणगणपरिवुडे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) પધાર્યા પછી તે સાધુ-સમાચારી પ્રમાણે વનમાલીની આજ્ઞા લઈને અશોકવૃક્ષની નીચે પૃથિવીશિલાપટ્ટક ઉપર પૂર્વદિશા તરફ મુખ રાખીને પર્યંક આસનથી (પલોઠી વાળીને) વિરાજમાન થયા તથા શ્રમણ-ગણોથી વીંટળાઈને અરહા કેવલી જિન મહાવીર પ્રભુ, તપ તેમજ સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા વિચરવા લાગ્યા સૂ. ૨૨

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे समणा भगवंतो, अप्पेगइया उग्ग-

टीका—चम्पाया नगर्यां पूर्णभद्रोद्याने यदा भगवत श्रीमहावीरस्य समवसरणमभूत् तदा तेन सार्धं समागतानां श्रमणानां वर्णनं कुर्वन्नाह—'तेणं कालेणं' इत्यादि। तस्मिन् खलु काले तस्मिन् खलु समये च श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य=श्रीमहावीरस्वामिनः अन्तेवासिनः—अन्ते=समीपे चारित्रक्रियार्थं वस्तु शील=स्वभावो येषां तेऽन्तेवासिनः—शिष्याः, 'बहवे'—बहवः—बहुसंख्यकाः, 'समणा' श्रमणाः—साधवः 'भगवंतो'—भगवन्तः—वैराग्येण श्रुतचारित्रलक्षणधर्मेण च युक्तत्वात् श्रमणा अपि भगवन्त इत्युच्यन्ते। 'अप्पेगइया' अप्येके—अपि—समुच्चये, एके=केचिदित्यर्थः। 'उग्गपव्वइया' उग्रप्रव्रजिताः—उग्राः=आदिनाथेन ये नगररक्षकत्वेन—आरक्षकत्वेन नियुक्तास्तद्वंशजाः प्रव्रजिताः=दीक्षिताः, उग्र इति क्षत्रियजातिभेदः, तद्वन्त उग्रा उच्यन्ते, ते प्रव्रजिता इत्यर्थः।

'तेणं कालेणं' इत्यादि

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' उसी काल और उसी समयमें (**समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे समणा भगवंतो**) श्रमण भगवान् महावीर के बहुत से श्रमण भगवन्त अन्तेवासी=समीप में रह कर चारित्रक्रिया आदिके आराधन करने वाले शिष्य थे। शिष्यों का विशेषण जो "**समणा भगवंतो**" है, उसका अभिप्राय यह है कि वे सब श्रमण—साधु थे, और वैराग्य से, एवं श्रुतचारित्ररूप धर्म से युक्त थे। इनमें (**अप्पेगइया**) कितनेक (**उग्गपव्वइया**) उग्रवंश के—आदिनाथ प्रभुने पहिले जिन्हें नगरों की रक्षा के लिये नियुक्त किया था उन पुरुषों के वंशके थे। कितनेक

"तेणं कालेणं" इत्यादि

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તેજ કાલ અને તેજ સમયમાં (समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे समणा भगवंतो) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરના ઘણાય શ્રમણ ભગવંત અંતેવાસી=સમીપમાં રહીને ચારિત્રક્રિયા આદિના આરાધના કરવાવાળા શિષ્યો હતા. શિષ્યોનું વિશેષણ જે समणा भगवंतो છે, તેનો અભિપ્રાય એ છે કે તેઓ બધા શ્રમણ=સાધુ હતા અને વૈરાગ્ય તેમજ શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મથી યુક્ત હતા. તેઓમાં (अप्पेगइया) કેટલાએક (उग्गपव्वइया) ઉગ્ર વંશના—આદિનાથ પ્રભુએ પહેલાં જેઓને નગરોની રક્ષા માટે નિયુક્ત કર્યા હતા તે પુરૂષોના વંશના—હતા.

पव्वइया, भोगपव्वइया, राइण्ण–णाय–कोरव्व–खत्तिय–पव्व-इया, भडा जोहा सेणावई पसत्थारो सेट्ठी इब्भा, अण्णे य बहवे

'**भोगपव्वइया**' भोगप्रव्रजिता–ऋषभदेवेन ये पूर्वं गुरुत्वेन स्थापितास्तद्वंशजा भोगा इत्युच्यन्ते, भोगाश्च ते प्रव्रजिता=दीक्षिता भोगप्रव्रजिता, भोगकुलोत्पन्ना दीक्षिता इत्यर्थः । '**राइण्ण–णाय–कोरव्व–खत्तिय–पव्वइया**' राजन्य–ज्ञात–कौरव–क्षत्रिय प्रव्रजिता–ये तेनैव मित्रत्वेन व्यवस्थापितास्तद्वंशजाश्च राजन्या उच्यन्ते, ज्ञाता इक्ष्वाकुवंशविशेषे जाता, कौरवा–कुरुवंशोत्पन्ना, '**खत्तिय**' क्षत्रिया–क्षतात् त्रायन्ते इति क्षत्रिया, ते राजन्यादयः प्रव्रजिता, '**भडा**'–भटा–चारभटा–पदातयः, '**जोहा**'=योधा–भटेभ्यो विशिष्टतरा सहस्रपरिमितैरपि रिपुसैनिकैरेकाकिनोऽपि योद्धुं समर्था । '**सेणावई**' सेनापतयः–सैन्यनायकाः, '**पसत्थारो**' प्रशास्तारः–शासका नीतिशास्त्रधुरीणाः, '**सेट्ठी**' श्रेष्ठिनः–लक्ष्मीदेवताऽध्यासितसौवर्णपट्टमण्डितमस्तकाः, '**इब्भा**' इभ्या–इभो–हस्ती तत्प्रमाणपरिमितसुवर्णादिराशिस्वामिनः । एते सर्वे प्रव्रजिता अन्तेवासिनो जाताः । ये–च–

(**भोगपव्वइया**) जिन्हें आदिनाथ प्रभुने गुरुरूप से स्थापित किया था उन भोगों के वंश के थे। कितनेक (**राइण्ण–णाय–कोरव्व–खत्तिय–पव्वइया**) प्रभुने जिन्हें अपने मित्ररूप से स्थापित किया था उन राजन्यों के वंश के थे, कितनेक ज्ञात=इक्ष्वाकुवंश के थे, कितनेक कौरव=कुरुवंश के थे, कितनेक क्षत्रियवंश के थे। ऐसे ही (**भडा जोहा सेणावई पसत्थारो सेट्ठी इब्भा**) भट=सामान्यवीर, योधा=अकेले ही हजारों शत्रुसैनिकों से युद्ध करने में समर्थ वीर, तथा–सेनापति, प्रशास्ता=न्यायाधीश, सेठ=सर्वापेक्षा अधिक धनी होने का सूचक राजप्रदत्त पट्टबन्ध को धारण करने वाले नगरसेठ, और इभ्य=हाथी प्रमाण सुवर्णादि राशिके स्वामी भी भगवान् के समीप प्रव्रजित हुए थे।

કેટલાએક (भोगपव्वइया) જેમને આદિનાથ પ્રભુએ ગુરૂરૂપે સ્થાપિત કર્યા હતા તે ભોગ–વંશના હતા. કેટલાએક (राइण्ण-णाय-कोरव्व-खत्तिय पव्वइया) પ્રભુએ જેમને પોતાના મિત્રરૂપે સ્થાપિત કર્યા હતા તે રાજન્ય–વંશના હતા. કેટલાએક જ્ઞાત= ઇક્ષ્વાકુવંશના હતા. કેટલાક કૌરવ=કુરુવંશના હતા, કેટલાક ક્ષત્રિયવંશના હતા. તેમજ (भडा जोहा सेणावई पसत्थारो सेट्ठी इब्भा) ભટ=સામાન્યવીર, યોદ્ધા-એકલાજ હજારો શત્રુ સૈનિક સાથે યુદ્ધકરવામાં સમર્થ વીર, તથા સેનાપતિ, પ્રશાસ્તા=ધારાશાસ્ત્રમાં નિપુણ, સેઠ=સર્વની અપેક્ષાએ વધારે પૈસાદાર હોવાનું સૂચક રાજ્યતરફથી અપાએલ પટ્ટબંધ (ઇલકાબ) ધારણ કરવાવાળા નગરશેઠ, અને ઇભ્ય=હાથી જેવડા સુવર્ણના ઢગલાના સ્વામી પણ ભગવાન પાસે પ્રવ્રજિત થયા હતા. (अण्णे य बहवो एवमाइणो) ભગવાનની પાસે બીજા

एवमाइणो उत्तम–जाइ–कुल–रूव–विणय विण्णाण–वण्ण–लावण्ण–विक्कम–पहाण–सोभग्ग-कंति–जुत्ता बहु–धण–धण्ण–

पुन 'अण्णे' अन्ये–उक्तातिरिक्ता, 'बहवे' बहव –बहु र्यका । 'एवमाइणो' एवमादय –एवम्प्रकारा, 'उत्तम–जाइ कुल-रूव-विणय विण्णाण वण्ण–विक्कम पहाण–सोभग्ग-कंति-जुत्ता' उत्तम-जाति–कुल-रूप-विनय विज्ञान–वर्ण–लावण्य–विक्रम–प्रधान–सौभाग्य-कान्ति-युक्ता –उत्तमा –श्रेष्ठा जात्यान्यो विक्रमान्ता, तत्र–जातिर्मातृवंश, कुल–पितृवंश, रूप–शरीराऽऽकार, विनय -कायिक-वाचिक-मानसिक विशुद्धिर्नम्रता च, विज्ञान-ससाराऽसारतारूपं विशिष्टज्ञान, वर्ण कायकान्ति, लावण्यम्-आकारस्यैव स्पृहणीयता, विक्रमः पराक्रम, प्रधाने–श्रेष्ठे ये सौभाग्यकान्ती–सौभाग्य–सुन्दरभाग्यम्, कान्ति –दीप्ति –एताभ्याम् सौभाग्यकान्तिभ्याम्, तथा उत्तमजात्यादिभिर्युक्ता उत्तमजात्यादिमन्त प्रव्रजिता, तथा 'बहु–धण–धण्ण–णिचय–परियाल–फिडिया' बहु–धन धान्य–निचय–परिवार–

(अण्णे य बहवो एवमाइणो) भगवान के समीप और भी बहुत से प्रव्रजित हुए थे, वे सब (उत्तम–जाइ–कुल–रूव–विणय–विण्णाण–वण्ण–लावण्ण–विक्कम–पहाण–सोभग्ग–कंति–जुत्ता) उत्तमजाति=निर्मलमातृवंश, उत्तमकुल=निर्मलपितृवंश, उत्तमरूप=सुन्दर आकार, विनय=कायिक वाचिक मानसिक विशुद्धि, अथवा नम्रता, विज्ञान=ससार को असार समझने की बुद्धि, वर्ण=शरीरकान्ति, लावण्य=शरीर का जगमगाहट, विक्रम=शारीरिक बल, श्रेष्ठ सौभाग्य और उत्तम द्युति से युक्त थे। (बहु–धण–धण्ण–णिचय–परियाल–फिडिया णरवइ–गुणा–इरेगा इच्छियभोगा सुहसपललिया) कितनेक इस शिष्यमडली मे ऐसे भी थे जो दीक्षित होने के पहिले गणिम एव धरिमरूप धन की एव शाली आदि धान्य की राशियों से, और

પણ ઘણાય પ્રવ્રજિત થયા હતા તેઓ બધા (उत्तम जाइ-कुल रूव विणय विण्णाण वण्ण लावण्ण–विक्कम–पहाण–सोभग्ग कंति–जुत्ता) ઉત્તમજાતિ=નિર્મળ માતૃવંશ, ઉત્તમ કુળ=નિર્મળ પિતૃવંશ, ઉત્તમરૂપ=સુંદરઆકાર, વિનય=કાયિક વાચિક માનસિક વિશુદ્ધિ, નમ્રતા, વિજ્ઞાન=સંસારને અસાર સમજવાનીબુદ્ધિ, વર્ણ=શરીરની કાંતિ, લાવણ્ય=શરીરનો ઝગમગાટ, વિક્રમ=શારીરિકબલ, શ્રેષ્ઠ સૌભાગ્ય તથા ઉત્તમ દીપ્તિવાળા હતા (बहुधण धण्ण णिचय परियाल फिडिया णरवइ–गुणा–इरेगा इच्छियभोगा सुहसंपललिया) કેટલાએક આ શિષ્યમંડળીમાં એવા પણ હતા કે જે દીક્ષિત થયા પહેલા ગણિમ તેમજ ધરિમરૂપ ધનના, તેમજ શાલી આદિ ધાન્યના ઢગલાથી અને દાસદાસીઓ આદિ પરિવાર સમુદાયથી રાજ્મી

णिच्चय-परियाल-फिडिया णरवइ-गुणा-इरेगा इच्छियभोगा सुहसंपललिया किंपागफलोवमं च मुणिय विसयसोक्खं, जल-

स्फुटिता, तत्र-धनानि-गणिम-धरिमादीनि, धान्यानि-शाल्यादीनि तेषां निचया राशय, यद्वाऽऽत्मा धनधान्यनिचयाश्च, परिवारा -दासीदासादिपरिकरा, तै स्फुटिता =प्रकाशिता, 'नरवइ-गुणाइरेगा' नरपति-गुणा-तिरेका, नरपतिगुणैर्विभवविलासादिभिरतिरेक आधिक्य येषा ते तथा, 'इच्छियभोगा' ईप्सितभोगा -ईप्सिता -वाञ्छिता भोगा-भुज्यन्त इति भोगा =शब्दरूपादयो विषया येषा ते तथा, परमविलासिन, 'सुहसंपललिया' सुखसम्प्रलालिता -सुखेन-अनुकूलवेदनीयेन-शुभपरिणामोपार्जितानुकूलशब्दा-र्जितकपुण्यपुञ्जेन सम्प्रलालिता -सम्यक् वर्धिता, एवविधा पूर्वं सुखिनोऽपि प्रव्रजिता, किं कृत्वा प्रव्रजिता इत्याह-'किंपागफलोवम च' इत्यादि। किम्पाक-फलोपम=किंपाको वृक्षविशेषस्तत्फलतुल्यम्, किम्पाकफल दर्शन आस्वादे च मनोरम परिणामे प्राणहारक भवति तद्वदित्यर्थ। 'विसयसोक्ख' विषयसौख्यम्-विषयाणा-शब्दस्पर्शादीना सौख्य सुख 'मुणिय'-ज्ञात्वा, च-पुन 'जल-बुब्बुय-समाण' जल-बुद्बुद-समा-

दासीदास आदि परिवार समुदाय से राजसी ठाठ वाले थे, जो वाञ्छित शब्द-रूपादि विषयों मे तल्लीन थे, परम विलासी थे, एव पुण्य के पुज से ही जिनका मानों लालन-पालन होता रहता था। (किंपाक-फलो-वम च मुणिय विसय-सोक्ख जलबुब्बुय-समाण कुसग्ग-जल-बिंदु-चचल जीविय य णाऊण) इन्होंने क्या समझकर के दीक्षा धारण की ? इस प्रश्न का समाधान करते हुए सूत्रकार कहते हैं-इन्होंने यह समझा कि ये वैषयिक सुख किंपाकफलके समान परिणाम मे अनिष्टकारक है, और यह मानवजीवन पानी के बुलबुले के समान क्षणभगुर है, एव कुश के अग्र पर रहे हुए जल के बिन्दु के समान चचल है

ઠાઠવાળા હતા, જે મનવાછિત શબ્દરૂપ આદિક વિષયોમા તલ્લીન હતા, બહુજ વિલાસી હતા, તેમજ પુણ્યના ઢગલાથી જ જાણે જેમનુ લાલન પાલન થતુ રહેતુ હતુ (किंपाग-फलो-वम च मुणिय विसयसोक्ख जल-बुब्बुय-समाण कुसग्ग-जल-बिंदु-चचल जीविय य णाऊण) તેઓ એ શુ સમજીને દીક્ષા ધારણ કરી હતી ? એ પ્રશ્નનુ સમાધાન કરતા સૂત્રકાર કહે છે-તેઓ એમ સમજ્યા કે આ વિષયસુખ કિંપાકફલની પેઠે પરિણામે અનિષ્ટકારક છે, અને આ માનવ જીવન પાણીના પરપોટાની પેઠે ક્ષણભગુર છે, તેમજ કુશના ઠેડાપર રહેલા પાણીના ટીપાની પેઠે ચચલ છે એમ જાણીને (अद्धुवमिण रयमिव पडग्ग

बुब्बुयसमाणं कुसग्ग-जल-बिंदु-चंचलं जीवियं च णाऊण, अद्धुवमिणं रयमिव पडग्गलग्गं संविधुणित्ताणं, चइत्ता हिरण्णं, चिच्चा सुवण्णं, चिच्चा धणं, एवं धण्णं बलं वाहणं कोसं कोट्ठा-

नम्-यथा जले बुद्बुदा प्रादुर्भवन्ति झटित्येव नश्यन्ति च तद्वत् आशुविनाशि, तथा 'कुसग्ग-जलबिंदु-चचल' कुशाग्र-जलबिन्दु-चञ्चल-कुशाऽग्रे-दर्भपत्राग्रभागे यो जलबिन्दु तद्वच्चञ्चल-झटिति पतनशील, 'जीविय' जीवित-मनुष्यजीवनम्, 'णाऊण-ज्ञात्वा-अवगत्य, 'अद्धुवमिण' अध्रुवमिदम्-इद विषयसौख्यधनादिसञ्च-याऽऽदिकम्, अध्रुवम् अनियतरूप, 'पडग्गलग्ग' पटाग्रलग्न, 'रयमिव-रज इव-धूलि-कणमिव 'सविधुणित्ताण' सविधूय-सम्यक्-विशेषरूपेण, पृथक्कृत्य, तथा 'चइत्ता' त्यक्त्वा, 'हिरण्ण' हिरण्य-रूप्यम्, 'चिच्चा सुवण्ण' त्यक्त्वा सुवर्णम्, 'चिच्चा धण' त्यक्त्वा धनम्, 'एव' एवम्-अनेन प्रकारेण 'धण्ण'-धान्य-शान्यादिसञ्चयम्, बल-चतुर्विध सैन्यम्, 'वाहण' वाहन-रथादिकम्, 'कोस' कोशम्-स्वर्णरजतादि-गृहम्, 'कोट्ठागार' कोष्ठागार धान्यराशिगृहम्' 'रज्ज'-राज्य-राजाधिकृतदेशम्

ऐसा जानकर (अद्धुवमिण रयमिव पडग्गलग्ग सविधुणित्ताण) तथा ये विषयसुख एव धन आदि का सचय सब के सब अध्रुव-अनित्यस्वरूप है, ऐसा विचार कर, उन्होने पटके अग्रभाग में लगी हुई धूलि के समान उन्हे भावत मन से सर्वथा दूर कर दिया। और ये द्रव्यत बाह्यरूप से भी (चइत्ता हिरण्ण, चिच्चा सुवण्ण, चिच्चा धण एव धण्ण बल वाहण कोस कोट्ठागार रज्ज रट्ठ पुर अतेउर चिच्चा, विउल-धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिलप्पवाल-रत्तरयण-माइय सत-सार-सावतेज्ज विच्छड्डइत्ता विगोवइत्ता, दाण च दाइयाण परिभायइत्ता, मुडा भवित्ता,अगाराओ अणगारिय पव्वइया) हिरण्य-चान्दी का परित्याग कर, सुवर्ण का परित्याग कर,सोनाचान्दी से अतिरिक्त धन का परित्याग कर, इसी तरह धान्य का,

लग्ग सविधुणित्ताण) तथा આ વિષયસુખ તેમજ ધન આદિનો સંચય તમામે-તમામ અધ્રુવ-અનિત્યસ્વરૂપ છે, એમ વિચારીને તેઓએ વસ્ત્રના છેડા ઉપર લાગેલ ધૂળની જેમ તેમનો ભાવપૂર્વક મનમાથી તદ્દન ત્યાગ કર્યો અને તેઓ દ્રવ્યથી બાહ્યરૂપે પણ (चइत्ता हिरण्ण, चिच्चा सुवण्ण, चिच्चा धण, एव धण्ण बल वाहण कोस कोट्ठागार रज्ज रट्ठ पुर अतेउर चिच्चा, विउल-धण कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिलप्पवाल-रत्तरयण-माइय सत-सार-सावतेज्ज विच्छड्डइत्ता विगोवइत्ता, दाण च दाइयाण परिभायइत्ता, मुडा भवित्ता, अगाराओ अणगारिय पव्वइया) હિરણ્ય ચાંદીનો પરિત્યાગ કરીને,સુવર્ણનો પરિત્યાગ કરીને,

गारं रज्जं रट्ठं पुरं अंतेउरं चिच्चा, विउल-धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिलप्पवाल-रत्तरयण-माइयं संत-सार-सावतेज्जं विच्छड्डइत्ता विगोवइत्ता, दाणं च दाइयाणं परिभाय-

एकभूपाज्ञावशवर्तिदेशम्। 'रट्ठ' राष्ट्र-देशम्, 'पुर-प्राकारयुक्त नगरम्। 'अंतेउर' अन्तःपुर-राजस्त्रीणां निवासगृहम्,। 'चिच्चा' त्यक्त्वा 'विउल-धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिलप्पवाल-रत्तरयण-माइय, विपुल-धन-कनक-रत्न-मणि-मौक्तिक-शङ्ख-शिलाप्रवाल-रक्तरत्नाऽऽदिकम्, तत्र-विपुलानि धनानि-गोवृषादीनि, कनक सुवर्णम्-अघटितसुवर्णसमूहम्, रत्नानि-कर्केतनादीनि, मणयः-चन्द्रकान्तादयः, मौक्तिकानि-मुक्ताफलानि, शङ्खाः-पञ्चशङ्खादयः, शिलाप्रवालानि-विद्रुमाणि, रक्तरत्नानि-पद्मरागादीनि, आदिशब्दात् शय्यासिंहासनादिपरिग्रहः। एतत्सर्वसारभूतं कथयति-'संत-सार-सावतेज्ज' सत्सारस्वापतेयम्-सत्=विद्यमानः सारो=बहुमूल्यता यत्र तत् सत्सारं, स्वपतौ साधु स्वापतेयं-धनं, सत्सारं च तत् स्वापतेयं सत्सारस्वापतेयं प्रधानधनं त्यक्त्वा, पुनः 'विच्छड्डइत्ता' विच्छर्द्य-परित्यज्य, विच्छर्दवत् कृत्वेत्यर्थः। 'विगोवइत्ता' विगोप्य

चतुर्विध सैन्य का, रथादिकरूप वाहनका, स्वर्ण रजत आदि के स्थानभूत कोशका, कोष्ठागार का, राज्यका, देशका, पुरका, अन्तःपुरका परित्याग कर, एवं विपुलधन-गोवृषभादिकका, कनक-सामान्य सुवर्णका, रत्न का, मणि-मौक्तिकका, शंख-पञ्चशंख आदि का, शिलाप्रवाल-विद्रुम का, रक्तरत्न-पद्मरागादिक मणियों का, आदि शब्द से गृहीत शय्यासिंहासन वगैरह इन सबका परित्याग कर, तथा उत्तमसारभूत-कोहीनूर जैसे बहुमूल्य होने से जिसमें सार विद्यमान है ऐसे स्वापतेय-प्रधानधन को भी छोडकर, वमन के समान उससे ममत्व बुद्धि हटाकर, एवं जो खजाने में भी पहिले से गुप्त

સોના ચાન્દીથી અતિરિક્ત ધનનો પરિત્યાગ કરીને, અને એવી રીતે ધાન્યનો, ચતુર્વિધ સૈન્યને, રથ આદિરૂપ વાહનનો, સોના ચાંદી આદિના સ્થાનભૂત ખજાનાનો, કોષ્ઠાગારનો, રાજ્યનો, દેશનો, પુરનો, અંતઃપુરનો પરિત્યાગ કરીને, તેમજ વિપુલ (બહુ) ધનનો-ગાય બળદ આદિકનો, કનકનો-સામાન્ય સુવર્ણનો, રત્નનો, મણિમોતીનો, શંખ-પંચશંખ આદિનો, શિલાપ્રવાલ-વિદ્રુમનો, રક્તરત્ન-પદ્મરાગ આદિક મણિઓનો, આદિ શબ્દથી એમ સમજવાનું કે શય્યા સિંહાસન વગેરે એ બધાનો પરિત્યાગ કરીને, તથા ઉત્તમ સારભૂત કોહીનૂર જેવા કિંમતી હોવાથી જેમાં સાર મોજુદ છે એવા સ્વાપતેય-મુખ્ય ધનને પણ છોડીને, વમન (ઉલટી) ની પેઠે તેમાંથી મમત્વ બુદ્ધિ હટાવી દઈને તેમજ જે ખજાનામાં પણ પહેલેથી જ ગુપ્ત દ્રવ્ય હતું તેને પણ બહાર

इत्ता, मुंडा भवित्ता, अगाराओ अणगारियं पव्वइया; अप्पे-गइया अद्धमासपरियाया, अप्पेगइया मासपरियाया, एवं दुमास-

यदपि गुप्त–निधौ निक्षिप्त धन प्रागासीत् तदपि प्रकटीकृत्य=निःसार्य, उदारतापूर्वक '**दाणं**' दान दत्त्वा, '**दाइयाणं**' दायादेभ्य–स्वगोत्रिकेभ्य '**परिभायइत्ता**' विभागशो-दत्त्वा च '**मुंडा भवित्ता**' मुण्डा भूत्वा=द्रव्यत शिरोलुञ्चनेन, भावत क्रोधाद्यपनयनेन च मुण्डिता भूत्वा, '**पव्वइया**' प्रव्रजिता–श्रमणा जाता इत्यर्थ । '**अप्पेगइया**' अप्येके–केचिद् '**अद्धमासपरियाया**' अर्द्धमासपर्याया कथञ्चित्प्रागवस्थात्यागेन अव-स्थान्तराऽऽप्ति पर्याय, स पर्यायो जन्मना दीक्षया चेति द्विविध, प्रथमो जन्मपर्याय, द्वितीयो दीक्षापर्याय, अत्र दीक्षापर्यायो गृह्यते, केचिदर्द्धमासाद् गृहीतश्रमपर्याया । '**अप्पेगइया**' अप्येके–केचन, '**मासपरियाया**' मासपर्याया–मासाऽवधे कालाद् गृहीतश्रमणपर्याया । एवम्–अमुना प्रकारेण केचिद्द्विमासपर्याया, केचित् त्रिमास-

द्रव्य था उसे भी बाहर निकाल कर, और उदारतापूर्वक उसे दान में व्यय करके तथा सगोत्रियों में विभक्त करके, मुडित हो–द्रव्यरूप से मस्तक लुचितकर एव भावरूप से क्रोधादिक का परिहार कर प्रव्रजित हुए थे। (**अप्पेगइया**) कितनेक (**अद्धमासपरियाया**) इनमे ऐसे थे जिन्हे दीक्षा ग्रहण किये केवल अर्धमास ही हुआ था। (**अप्पेगइया मासपरियाया एव दुमासपरियाया तिमासपरियाया जाव एक्कारसमासपरियाया**) इसी प्रकार कितनेक ऐसे थे जिन्हे दीक्षा लिये हुए दो मास हुए थे, कितनेक ऐसे थे जिन्हे दीक्षा लिये ३ मास हुए थे, कितनेक ऐसे थे जिन्हे चार, पाच, छह, सात, आठ, नौ, दश एव ११ ग्यारह

કાઢીને અને ઉદારતાપૂર્વક તેનો દાનમા વ્યય કરીને તથા સગોત્રિઓમા વહેચી દઈને મુડિત થઈ–દ્રવ્યરૂપથી મસ્તકને લુચિત કરીને તથા ભાવરૂપથી ક્રોધાદિકને છોડીને પ્રવ્રજિત થયા હતા (अप्पेगइया) કેટલાએક (अद्धमास परियाया) એમા એવા હતા જેઓને દીક્ષા લીધાને માત્ર અરધો મહિનો જ થયો હતો (अप्पेगइया मासपरियाया एव दुमासपरियाया तिमासपरियाया जाव एक्कारसमासपरियाया) તેવીજ રીતે કેટલાએક તેઓમા એવા હતા કે જેઓને દીક્ષા લીધાને એક માસ થયો હતો, કેટલાએક એવા હતા કે જેઓને દીક્ષા લીધાને બે માસ થયા હતા, કેટલાએક એવા હતા કે જેઓને દીક્ષા લીધાને ત્રણમાસ થયા હતા, કેટલાએક એવા હતા જેમને ચાર, પાચ, છ, સાત, આઠ, નવ, દશ તેમજ અગિયાર મહિના થયા હતા (अप्पेगइया

परियाया, तिमासपरियाया जाव एक्कारसमासपरियाया, अप्पेगइया वासपरियाया, दुवासपरियाया, तिवासपरियाया, अप्पेगइया अणेगवासपरियाया संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥ सू. २३ ॥

पर्याया यावदेकादशमासपर्यायाः, केचिद्वर्षपर्यायाः, केचिद् द्विवर्षपर्यायाः, केचित् त्रिवर्षपर्यायाः, केचिदनेकवर्षपर्यायाः, 'संजमेण' संयमेन सप्तदशविधेन, तपसा कर्मनिवारकेण द्वादशविधेन 'अप्पाण' आत्मानं 'भावेमाणा' भावयन्तो विहरन्ति ॥ सू० २३ ॥

महिने हुए थे । (**अप्पेगइया वासपरियाया दुवासपरियाया तिवासपरियाया**) कितनेक इनमें ऐसेभी थे कि जिन्हे दीक्षा लिये हुए १ वर्ष, २ वर्ष, एव तीनवर्ष आदि हो चुके थे। (**अप्पेगइया अणेगवासपरियाया**) कितनेक ऐसे भी मुनिजन थे जिन्हे दीक्षा लिए हुए अनेक वर्ष व्यतीत हो चुके थे। ये सबके सब मुनिजन (**संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरंति**) १७ प्रकार के संयम से एव १२ प्रकारके तपसे अपनी आत्माको भावित करते हुए विचरते थे ॥

भावार्थ—भगवान् महावीर प्रभुकी शिष्यमडली में अनेक मुनिजन थे। कोई उग्रकुलके थे, कोई भोगकुलके थे, कोई राजन्यकुलके थे। कोई कौरव वंश के थे, कोई क्षत्रियवंश के थे। कितनेक भट—सामान्य वीर, योधा, सेनापति, प्रशासक, श्रेष्ठी और इभ्य आदि थे। विनय विज्ञान आदि अनेक सद्गुणों से संपन्न ये मुनिजन दीक्षा लेने के पहिले अनेक प्रकार के धनादिक से, एव भोगोपभोग की सामग्री

वासपरियाया दुवासपरियाया तिवासपरियाया) કેટલાએક તેઓમાં એવા પણ હતા કે જેમને દીક્ષા લીધાને ૧ વર્ષ, ૨ વર્ષ, તેમજ ત્રણ વર્ષ આદિ થઈ ગયાં હતાં. (अप्पेगइया अणेगवासपरियाया) કેટલાએક એવા પણ મુનિ હતા કે જેઓને દીક્ષા લીધાને અનેક વર્ષ વીતી ગયેલાં હતાં. તે તમામે તમામ મુનિજનો (संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरंति) ૧૭ પ્રકારના સંયમથી તેમજ ૧૨ પ્રકારના તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા વિચરતા હતા.

ભાવાર્થ—ભગવાન મહાવીર પ્રભુની શિષ્યમંડલીમાં અનેક મુનિજનો હતા. કોઈ ઉગ્રકુળના હતા, કોઈ ભોગકુળના હતા, કોઈ રાજન્યકુળના હતા, કોઈ કૌરવ વંશના હતા, કોઈ ક્ષત્રિય વંશના હતા, કેટલાએક ભટ સામાન્યવીર, યોદ્ધા-વિશિષ્ટવીર, સેનાપતિ, પ્રશાસક, શ્રેષ્ઠી અને ઈભ્ય આદિ હતા. વિનય વિજ્ઞાન આદિ અનેક સદ્ગુણોથી સંપન્ન એવા આ મુનિજન દીક્ષા લીધા પહેલાં

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ

टीका—'तेणं कालेणं' इत्यादि,

तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'अंतेवासी'

से युक्त थे। इनका वैभवविलास राजाओं के वैभवविलास तुल्य था। इन्होंने अपने जीवन में यह विचार किया था कि ये सांसारिक विषयभोग किंपाकफल के समान बाहर से ही मनोहर लगते हैं, परिणाम में ये जीवको महान् दुखदायी है। जलबिन्दु के समान ये क्षणविनश्वर हैं। कुशाग्रभागमें स्थित ओसकी बूंद के तुल्य देखते २ नष्ट हो जाते हैं। अतः इनका परित्याग ही सर्वश्रेयस्कर है। ऐसा समझ कर ही इन्होंने समस्त धनधान्यादिक परिग्रहका परित्याग किया और प्रभु के पास दीक्षित हो गये। इनमें कितनेक मुनिजनोंकी दीक्षापर्याय १५ दिन, एकमास आदि की थी, कितनेक मुनिजनों की १ वर्ष २ वर्ष आदि की थी, एवं कितनेक मुनिजनों की अनेक वर्ष की थी ॥ सू. २३ ॥

'तेण कालेण' इत्यादि०

(**तेण कालेण तेण समएणं**) उस काल में और उस समयमें (**समणस्स भगवओ महावीरस्स**) श्रमण भगवान् महावीर के (**बहवे**) अनेक (**अंतेवासी**) शिष्य

અનેક પ્રકારના ધન આદિક તેમજ ભોગોપભોગની સામગ્રીવાળા હતા. તેમના વૈભવ વિલાસ રાજાઓના વૈભવવિલાસ જેવા હતા. તેઓએ પોતાના જીવનમાં એમ વિચાર કર્યો હતો કે આ સાંસારિક વિષયભોગ કિંપાકફલની પેઠે બહારથી જ મનોહર લાગે છે, પરિણામમાં તે આ જીવને દુઃખદાયી છે. પાણીના ટીપાની પેઠે તે ક્ષણમાં નાશ પામે તેવા છે. કુશના અગ્રભાગમાં રહેલા ઓસના ટીપાની પેઠે જોતજોતામાંજ નાશ પામી જાય છે. આથી તેમનો પરિત્યાગ જ સર્વશ્રેયસ્કર છે એમ સમજીને તેઓએ તમામ ધન ધાન્ય આદિક પરિગ્રહનો પરિત્યાગ કર્યો, અને પ્રભુની પાસે દીક્ષિત થઈ ગયા. તેઓમાં કેટલાએક મુનિજનોની દીક્ષાપર્યાય ૧૫ દિવસ, એક માસ વગેરે મુદતની હતી, અને કેટલાએક મુનીજનોની દીક્ષાપર્યાય ૧ વર્ષ ૨ વર્ષ આદિની હતી, તેમજ કેટલાક મુનિજનોની અનેક વર્ષની હતી (સૂ. ૨૩)

"तेण कालेण" ઇત્યાદિ

(**तेण कालेण तेण समएण**) તે કાલમાં અને તે સમયમાં (**समणस्स भगवओ महावीरस्स**) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરના (**बहवे**) અનેક (**अंतेवासी**)

महावीरस्स अंतेवासी बहवे निग्गंथा भगवंतो, अप्पेगइया आ-भिणिबोहियणाणी जाव केवलणाणी, अप्पेगइया मणबलिया

अन्तेवासिन –शिष्या 'बहवे' बहव –बहुसख्यका, 'निग्गथा' निर्ग्रन्था –ग्रन्थो द्विविध आभ्यन्तरो बाह्यश्च, तत्र–कषायादिरूप आभ्यन्तर, धनधान्यादिपरिग्रहरूपो बाह्य, तेन द्विविधेन बाह्याभ्यन्तररूपेण ग्रन्थेन निर्मुक्ता निर्ग्रन्था, अथवा ग्रन्थान्निर्गता निर्ग्रन्था –क्रोधादिभिर्धनादिभिश्च मुक्ता इत्यर्थ, भगवन्त 'अप्पेगइया' अप्येकके–केचित् 'आभिणिबोहियणाणी' आभिनिबोधिकज्ञानिन –'अभि' इति आभिमुख्ये, 'नि'–इति नैयत्ये, ततश्च–अभिमुखो=वस्तुयोग्यदेशाऽवस्थानाऽपेक्षी बोध –अभिनि-बोध, स एव आभिनिबोधिकम्, स्वार्थे विनयादित्वात् इकण् प्रत्यय, क्वचित्स्वार्थिको-ऽपि प्रत्यय प्रकृति वचनश्चातिवर्तते, तेन अभिनिबोधस्य पुस्त्वेऽपि आभिनिबोधिकस्य नपुसकत्व, यथा विनय एव वैनयिकम्, आभिनिबोधिक च तज्ज्ञानम् आभिनिबोधि-कज्ञानम्, तदस्त्येपामित्याभिनिबोधिकज्ञानिन, 'जाव' यावत् 'केवलणाणी' केवल-ज्ञानिन – केवल – शुद्ध – निर्मल – सकलाऽऽवरणमलकलङ्कनिगमसम्भूत त्वात्, अथवा

थे, जो (निग्गथा) बाह्य एव अन्तरग परिग्रह के सर्वथा त्यागी थे, तथा (भगवतो) त्याग एव वैराग्य से जिनका अन्त करण भरपूर था। इनमें (अप्पेगइया) कितनेक (आभिणि-बोहियनाणी) आभिनिबोधिक ज्ञानी थे। जो ज्ञान अभिमुख एव योग्यक्षेत्र में स्थित वस्तु को इद्रिय और मनकी सहायता से जानता है वह अभिनिबोध है, अभिनिबोध ही आभिनिबोधिक है। आभिनिबोधिक ज्ञान का दूसरा नाम मतिज्ञान है। इस ज्ञान से जो युक्त थे वे आभिनिबोधिकज्ञानी कहे गये हैं। (जाव केवलणाणी) कितनेक श्रुतज्ञानी थे, कितनेक अवधिज्ञानी थे, कितनेक मन पर्ययज्ञानी थे और कितनेक केवलज्ञानी

શિષ્યો હતા (निग्गथा) જે બાહ્ય તેમજ અતરગ પરિગ્રહના સર્વથા ત્યાગી હતા, તથા (भगवतो) ત્યાગ તેમજ વૈરાગ્યથી જેમના અત કરણ ભરપૂર હતા. તેઓમા (अप्पेगइया) કેટલાએક (आभिणिबोहियनाणी) આભિનિબોધિક-જ્ઞાની હતા જે જ્ઞાન અભિમુખ એટલે યોગ્ય ક્ષેત્રમા રહેલ વસ્તુને ઇંદ્રિય અને મનની સહાયતાથી જાણે છે તે અભિનિબોધ છે અભિનિબોધ એજ આભિનિબોધિક છે આભિનિબોધિક જ્ઞાનનુ જ બીજુ નામ મતિજ્ઞાન છે આ જ્ઞાનથી જે યુક્ત હતા તેમનેજ આભિનિબોધિકજ્ઞાની કહેવામા આવે છે (जाव केवलणाणी)કેટલાએક શ્રુતજ્ઞાની હતા, કેટલાએક અવધિજ્ઞાની હતા, કેટલાએક મન પર્યયજ્ઞાની હતા, તથા કેટલાએક કેવલજ્ઞાની હતા કેવલ

वयवलिया कायवलिया णाणवलिया दंसणवलिया चारित्त-

सकल–परिपूर्ण–सम्पूर्णज्ञेयग्राहित्वात्, यद्वा केवलम् असाधारण तादृशाऽपरज्ञानाऽभावात्, केवलञ्च तद् ज्ञान केवलज्ञान, तदस्ति येषा ते केवलज्ञानिन । अत्र–आभिनिबोधिकज्ञानि–केवलज्ञानिनोर्मध्ये यावच्छ्रुतज्ञान्यवधि-मन पर्ययज्ञानिनोऽपि गृह्यन्ते, विस्तरभयादेषा व्याख्यातो विरम्यते, 'अप्पेगइया' अप्येकके–केचित् 'मणवलिया' मनोबलिका –अनुकूलप्रतिकूलपरिषहेऽपि तत्सहनशीलतया मनोबलधारिण ,'वयवलिया' वाग्बलिका -प्रतिज्ञातार्थनिर्वाहक्षमा , 'कायवलिया 'कायबलिका –क्षुधादि–परिषहेषु तापेषु ग्लानिरहितदेहा , 'णाणवलिया'

थे। केवल शब्दका शुद्ध परिपूर्ण अथवा असाधारण ऐसा अर्थ है। यह ज्ञान शुद्ध इसलिये कहा गया है कि यह आत्मा मे चतुर्विध घातिकर्मों के सर्वथा विनाश से उद्भूत होता है। परिपूर्ण–सपूर्ण इसलिये है कि यह त्रिकालगत समस्त ज्ञेयराशि को युगपत् जानता है। असाधारण इसलिये है कि इसके जैसा और कोई दूसरा ज्ञान नहीं है। यह केवलज्ञान जिनके आत्मामें अभिव्यक्तरूपमे विद्यमान है वे केवलज्ञानी है। (अप्पेगइया मणवलिया वयवलिया कायवलिया) कितनेक मनोबलधारी थे। इसबल के प्रभाव से ही अनुकूल एव प्रतिकूल परिषहों के सहनेमें शक्ति आत्मा को मिलती है। कितनेक वचनबल के धारी थे। प्रतिज्ञात अर्थ को निर्वाह करने की क्षमता इस बलद्वारा आत्मा को प्राप्त होती है। कितनेक कायबल के धारी थे। इसके द्वारा तीव्र क्षुधादिक परीषहों के होने पर भी देहमे थोडीसी भी ग्लानि उद्भूत नहीं होने पाती है। (णाणवलिया दंसणवलिया चारित्तवलिया) कितनेक निरति-

શબ્દનો અર્થ શુદ્ધ પરિપૂર્ણ અથવા અસાધારણ એવો છે આ જ્ઞાન શુદ્ધ એટલા માટે કહેવામા આવ્યુ છે કે તે આત્માના ચતુર્વિધ ઘાતિકર્મોના સર્વથા વિનાશથી ઉત્પન્ન થાય છે, પરિપૂર્ણ–સપૂર્ણ એટલા માટે છે કે તે ત્રણે કાળમા સમસ્ત જ્ઞેયરાશિને યુગપત્ જાણે છે અસાધારણ એટલા માટે છે કે તેના જેવુ બીજુ કોઇ જ્ઞાન નથી આ કેવલજ્ઞાન જેના આત્મામા અભિવ્યક્તરૂપમા વિદ્યમાન છે તે કેવલજ્ઞાની છે (अप्पेगइया मणवलिया वयवलिया कायवलिया) કેટલાએક મનોબલધારી હતા, આ બલના પ્રભાવથીજ અનુકૂળ તેમજ પ્રતિકૂળ પરીષહોને સહન કરવાની શક્તિ આત્માને મળે છે કેટલાએક વચનબલના ધારી હતા, પ્રતિજ્ઞાત : અર્થાત્ પ્રતિજ્ઞા કરેલા અર્થનુ પાલન કરવાની ક્ષમતા આ બલથી જ આત્માને પ્રાપ્ત થાય છે કેટલાએક કાયબલના ધારી હતા તેના દ્વારા તીવ્ર ક્ષુધા આદિક પરિષહો આવતા પણ

लिया, अप्पेगइया मणेणं सावा-णुग्गह-समत्था, एवं वएणं

ज्ञानवलिका—निरतिचारज्ञानवन्त । 'दसणबलिया' दर्शनबल्किा दर्शन—श्रद्धा तद्रूप बलमस्त्येषामिति दर्शनबल्किा—सुरैरपि सम्यक्त्वधर्मतश्चालयितुमशक्या इत्यर्थ, 'चारित्तबलिया' चारित्रबल्किा—दृढचारित्रबलयुक्ता, 'अप्पेगइया' अप्येकके—केचित, 'मणेण सावा-णुग्गह-समत्था' मनसा शापाऽ—नुग्रह—समर्था—मनसैव मनोभावाग्निनैव येपा शापाऽनुग्रहौ=निग्रहाऽनुग्रहौ कर्तुं समथा, 'एव' एवम्—अनेन प्रकारेण 'वएण काएण' वाचा कायेन च निग्रहाऽनुग्रहयो समथा । 'अप्पेगइया' अप्येकके—'खेलोसहिपत्ता' खेलौषधिप्राप्ता—खेल—श्लेष्मा, स एवौषधि सकलरोगादच-

---

चारज्ञानवान थे । कितनेक श्रद्धारूपबलसपन्न थे । इस बल का प्राप्ति होने पर सम्यक्त्व से चलायमान करने के लिये कोई भी शक्ति कार्यकर नहीं हो सकती है । कितनेक चारित्ररूपबलविशिष्ट थे । इस शक्ति की जागृतिमे आत्मा अपने गृहीत चारित्र से रचमात्र भी शिथलित नहीं होता है । (अप्पेगइया मणेण सावा-णुग्गह-समत्था एव वएण कायेण) कितनेक मन से ही शाप एव अनुग्रह करने मे समर्थ थे । इसी तरह वचन और काय से भी समझ लेना चाहिये । (अप्पेगइया खेलोसहिपत्ता, एव जल्लोसहिपत्ता, विप्पोसहिपत्ता, आमोसहिपत्ता, सव्वोसहिपत्ता) कितनेक ऐसे थे जिन्हे खेलोषधिरूप लब्धि प्राप्त थी । इस लब्धिवाले मुनिजन का स्वेद-ज मल भी समस्त शारीरिक उपद्रवों का अपहारक होता है । कितनेक ऐसे थे जिन्हे विप्रुडोषधि प्राप्त थी । इस लब्धिवाले मुनि के थूक की बूंदे तक भी रोगापर ओषधिका

દેહમા જરા—જેટલીએ ગ્લાનિ ઉત્પન્ન થતી નથી (णाणवलिया दसणवलिया चारित्तवलिया) કેટલાએક નિરતિચાર જ્ઞાનવાન હતા કેટલાએક શ્રદ્ધારૂપ-બલ-સંપન્ન હતા, આ બલની પ્રાપ્તિ થતા સમ્યક્ત્વથી ચલાયમાન કરવાને કોઈ પણ સમર્થ નથી કેટલાએક ચારિત્રરૂપ બલવિશિષ્ટ હતા આ શક્તિની જાગૃતિમા આત્મા પોતે ગ્રહણ કરેલ ચારિત્રથી થોડો પણ શિથિલ થતો નથી (अप्पेगइया मणेण सावाणुग्गहसमत्था एव वएण कायेण) કેટલાએક મનથી જ શાપ તેમ જ અનુગ્રહ કરવામા સમર્થ હતા એવી જ રીતે વચન અને કાયાથી પણ સમજી લેવા જોઈએ (अप्पेगइया खेलोसहिपत्ता, एव जल्लोसहिपत्ता विप्पोसहिपत्ता आमोसहिपत्ता सव्वोसहिपत्ता) કેટલાએક એવા હતા જેઓને જલ્લૌષધિ લબ્ધિ પ્રાપ્ત હતી આ લબ્ધિ (સિદ્ધિ)વાળા મુનિજનના સ્વેદ (પરસેવા)ના મલ પણ સમસ્ત શારીરિક ઉપદ્રવોનો નાશ કરે છે કેટલાએક એવા હતા

काएणं, अप्पेगइया खेलोसहिपत्ता, एवं जल्लोसहिपत्ता, विप्पोसहिपत्ता,आमोसहिपत्ता,सव्वोसहिपत्ता,अप्पेगइया कोट्ठबुद्धी,एवं

नर्थोपशमनहेतुत्वात्, ता प्राप्ता, येषा श्लेष्मस्पर्शेन सर्वे रोगा विनश्यन्ति ते इत्यर्थ, एवम्-अमुना प्रकारेण '**जल्लोसहिपत्ता**' जल्लौषधिप्राप्ता - जल्ल-स्वेदजो मल स एवौषधि सकलव्याधिप्रशमनहेतुत्वात्ता प्राप्ता, येषा स्वेदजमलस्पर्शेन रोगा विनश्यन्ति ते इति भाव, '**विप्पोसहिपत्ता**' विप्रुडौषधिप्राप्ता -विप्रुष -निष्ठीवनादिबिन्दव, तद्रूपा ओषधिस्ता प्राप्ता, '**आमोसहिपत्ता**' आमर्षौषधिप्राप्ता - आमर्षणम्-आमर्ष -हस्तादिकस्पर्श इति, स ओषधिरिव इत्यामर्षौषधिस्ता प्राप्ता । '**सव्वोसहिपत्ता**' सर्वौषधिप्राप्ता -सर्वे खेलजल्लविप्रुट्केशनखादयस्ते सर्वे एवौषधयस्ता प्राप्ता, एषु एकैकस्य सर्वविधरोगोपशमकतयौषधित्वाऽऽरोप । '**अप्पेगइया**' अप्येकके-केचित्-'**कोट्ठबुद्धी**' कोष्ठबुद्धय -कोष्ठवत्-कुशूलवत् सूत्राऽर्थरूपधान्यस्य यथालब्धस्याऽविस्मृतस्य आजीवनधारणात् कोष्ठबुद्धय, यथा धान्य-

काम करती है। कितनेक ऐसे थे जिन्हें आमर्षौषधि प्राप्त हो चुकी थी। इस लब्धि के प्रभाव से इस लब्धिप्राप्त मुनिजन का हस्तादिक स्पर्श औषधि का काम करता है। कितनेक ऐसे भी मुनिजन थे जिन्हे सर्वौषधि नामकी लब्धि प्राप्त हो चुकी थी। इस लब्धिप्राप्त मुनिजन के खेल-श्लेष्मा, जल्ल-स्वेदज मेल, विप्रुट्-थूक आदि के कण, केश और नखादिक सब औषधि का काम करते है। इन सब को औषधि इसलिये कहा गया है कि जिस प्रकार औषधिया रोगोपशामक होती है उसी प्रकार ये सब भी रोगोपशामक होते है। (**अप्पेगइया कोट्ठबुद्धी, एव बीयबुद्धी, पडबुद्धी, अप्पेगइया पयाणुसारी, अप्पेगइया संभिन्नसोया**) कितनेक ऐसे थे जिन्हे कोष्ठ-

જેમને વિપ્રુડૌષધિ લબ્ધિ પ્રાપ્ત હતી આ લબ્ધિવાળા મુનિના થૂકનુ ટીપુ પણ ઓષધીનુ કામ કરે છે કેટલાએક એવા મુનિજનો હતા જેઓને આમર્ષૌષધિ પ્રાપ્ત હતી આ લબ્ધિના પ્રભાવથી આ લબ્ધિવાળા મુનિજનના હસ્તાદિકનો સ્પર્શ પણ ઓષધીનુ કામ કરે છે કેટલાક એવા પણ મુનિજન હતા, જેમને સર્વૌષધિ નામની લબ્ધિ પ્રાપ્ત હતી આ લબ્ધિવાળા મુનિજનના ખેલ-કફ, જલ્લ-સ્વેદજ મેલ, વિપ્રુટ્-થૂક આદિના કણ, કેશ અને નખ આદિક બધુ ઓષધિનુ કામ કરે છે એ બધાને ઓષધિઓ એટલા માટે કહેવામા આવે છે કે જે પ્રકારે ઔષધીઓ રોગને મટાડે છે તે જ પ્રકારે એ પણ સમસ્ત રોગ મટાડે છે (अप्पेगइया कोट्ठबुद्धी, एवं बीयबुद्धी, पडबुद्धी, अप्पेगइया पयाणुसारी, संभिन्नसोया) કેટલાએક

बीयबुद्धी पडबुद्धी, अप्पेगइया पयाणुसारी, अप्पेगइया संभि-

सम्भृतकुशूला इष्टदेवताऽनुग्रहप्रभावात्सदा पूर्णा आसते तथा प्रवर्धमानमेधापरिपूर्णास्तेऽप्यन्तेवासिन इति भाव । 'एवम्'-इत्थम् 'बीयबुद्धी' बीजबुद्धय -विविधसूत्रार्थागमरहस्याधिगमविशालवृक्षजननाद् बीजमिव बुद्धिर्येषा ते बीजबुद्धय -अल्पेनापि पदेन बह्वर्थप्रतिपादकबुद्धिशालिन इति भाव । 'पडबुद्धी' पटबुद्धय -अत्र पट-शब्देन पटसदृशा विस्तीर्णा सूत्रार्था गृह्यन्ते, तद्विषयिका बुद्धिर्येषा ते तथा, तन्तुसमुदायात्मकवस्त्रवत्प्रभूतसूत्रार्थसंग्रहणसमर्थज्ञानवन्त इत्यर्थ । 'अप्पेगइया पयाणुसारी' अप्येकके पदानुसारिण -पदेनैकेनैव सूत्रपदेन तदनुकूलानि तदाकाङ्क्षितानि पदशतान्य-

बुद्धि प्राप्त थी। जिस प्रकार कोठा धान्य से इष्टदेवता के अनुग्रहवश सदा भरा हुआ रहता है उसी प्रकार इस बुद्धि की प्राप्ति से मुनिजन भी सूत्रार्थरूप धान्य से जीवन-पर्यन्त भरे हुए रहते है। वह इन्हे कभी भी विस्मृत नहीं होता है। कितनेक ऐसे थे जिन्हे बीजबुद्धि प्राप्त थी। जिस प्रकार सूक्ष्म से भी सूक्ष्म बीज से विशालवृक्ष तैयार हो जाता है उसी प्रकार इस बुद्धि के धारक मुनिजन भी विविध सूत्रों के अर्थों के अर्थात् आगमों के रहस्यों के ज्ञाता हो जाते है। अल्पपद से भी ये विस्तृत अर्थ के प्रतिपादन करने की योग्यता से विशिष्ट बन जाते हैं। कितनेक पटबुद्धि के धारक थे। पट शब्द से यहा विस्तृत सूत्रार्थ गृहीत हुए है। जिस प्रकार वस्त्र तन्तुओंका समुदायात्मक होता है उसी प्रकार इस बुद्धि के प्रभाव से मुनिजन भी विस्तृत-सूत्रार्थ के ज्ञानविशिष्ट होते है। कितनेक पदानुसारी थे। एक ही सूत्र के पद से इतर तदनुकूल एव उस सूत्र

એવા હતા કે જેમને કોષ્ઠબુદ્ધિ પ્રાપ્ત હતી, જે પ્રકારે ઇષ્ટદેવતાના અનુગ્રહથી કોઠાર ધાન્યથી સદા ભરેલા રહ્યા કરે છે તેજ પ્રકારે આ બુદ્ધિની પ્રાપ્તિથી મુનિજન પણ સૂત્રના અર્થરૂપ ધાન્યથી જીવનપર્યન્ત ભરેલા રહ્યા કરે છે તેઓ તેને કદી પણ ભૂલી જતા નથી

કેટલાએક એવા પણ હતા કે જેમને બીજબુદ્ધિ પ્રાપ્ત હતી જે પ્રકારે સૂક્ષ્મના પણ સૂક્ષ્મ બીજથી વિશાલ વૃક્ષ તૈયાર થઇ જાય છે તે જ પ્રકારે આ બુદ્ધિના ધારક મુનિજન પણ વિવિધ સૂત્રોના અર્થોને એટલે આગમોના રહસ્યોને જાણનારા થઇ જાય છે અલ્પપદથી પણ વિસ્તૃત અર્થનુ પ્રતિપાદન કરવાની યોગ્યતાવાળા બની જાય છે કેટલાએક પટબુદ્ધિના ધારક હતા. પટ શબ્દથી અહીં વિસ્તૃત સૂત્રાર્થ લીધેલ છે જે પ્રકારે વસ્ત્ર એ તંતુઓનુ સમુદાયાત્મક હોય છે તેજ પ્રકારે આ બુદ્ધિના પ્રભાવથી મુનિજન પણ વિસ્તૃત સૂત્રાર્થના જ્ઞાનવિશિષ્ટ થાય છે કેટલાક પદાનુસારી હતા એક જ સૂત્રના

काएणं, अप्पेगइया खेलोसहिपत्ता, एवं जल्लोसहिपत्ता, विप्पो-सहिपत्ता, आमोसहिपत्ता, सव्वोसहिपत्ता, अप्पेगइया कोट्ठबुद्धी, एवं

नर्थोपशमनहेतुत्वात्, ता प्राप्ता, येषा श्लेष्मस्पर्शेन सर्वे रोगा विनश्यन्ति ते इत्यर्थ, एवम्–अमुना प्रकारेण **'जल्लोसहिपत्ता'** जल्लौषधिप्राप्ता – जल्ल–स्वेदजो मल स एवौषधि सकलव्याधिप्रशमनहेतुत्वात्ता प्राप्ता, येषा स्वेदजमलस्पर्शेन रोगा विनश्यन्ति ते इति भाव, **'विप्पोसहिपत्ता'** विप्रुडोषधिप्राप्ता –विप्रुष –निष्ठीवनादिबिन्दव, तद्रूपा ओषधिस्ता प्राप्ता, **'आमोसहिपत्ता'** आमर्षौषधिप्राप्ता – आमर्षणम्–आमर्ष –हस्तादिभिस्स्पर्श इति, स ओषधिरिव इत्यामर्षौषधिस्ता प्राप्ता । **'सव्वोसहिपत्ता'** सर्वौषधिप्राप्ता –सर्वे खेलजल्लविप्रुट्केशनखादयस्ते सर्वे एवौषधयस्ता प्राप्ता, एषु एकैकस्य सर्वविधरोगोपशमकत्वौषधित्वाऽऽरोप । **'अप्पेगइया'** अप्येकके–केचित्–**'कोट्ठबुद्धी'** कोष्ठबुद्धय –कोष्ठवत्–कुशूलवत् सूत्रार्थरूपधान्यस्य यथालब्धस्याऽविस्मृतस्य आजीवनधारणात् कोष्ठबुद्धय, यथा धान्य–

काम करती है। कितनेक ऐसे थे जिन्हें आमर्षौषधि प्राप्त हो चुकी थी। इस लब्धि के प्रभाव से इस लब्धिप्राप्त मुनिजन का हस्तादिक स्पर्श औषधि का काम करता है। कितनेक ऐसे भी मुनिजन थे जिन्हे सर्वौषधि नामकी लब्धि प्राप्त हो चुकी थी। इस लब्धिप्राप्त मुनिजन के खेल–श्लेष्मा, जल्ल–स्वेदज मेल, विप्रुट्–थूक आदि के कण, केश और नखादिक सब औषधि का काम करते हैं। इन सब को औषधि इसलिये कहा गया है कि जिस प्रकार औषधिया रोगोपशामक होती है उसी प्रकार ये सब भी रोगोपशामक होते है। (**अप्पेगइया कोट्ठबुद्धी, एव बीयबुद्धी, पडबुद्धी, अप्पेगइया पयाणुसारी, अप्पेगइया संभिन्नसोया**) कितनेक ऐसे थे जिन्हे कोष्ठ–

જેમને વિપ્રુડૌષધિ લબ્ધિ પ્રાપ્ત હતી આ લબ્ધિવાળા મુનિના થૂકનુ ટીપુ પણ ઓષધીનુ કામ કરે છે કેટલાએક એવા મુનિજનો હતા જેઓને આમર્ષૌષધિ પ્રાપ્ત હતી આ લબ્ધિના પ્રભાવથી આ લબ્ધિવાળા મુનિજનના હસ્તાદિકનો સ્પર્શ પણ ઓષધીનુ કામ કરે છે કેટલાક એવા પણ મુનિજન હતા, જેમને સર્વૌષધિ નામની લબ્ધિ પ્રાપ્ત હતી આ લબ્ધિવાળા મુનિજનના ખેલ–કફ, જલ્લ–સ્વેદજ મેલ, વિપ્રુટ્–થૂક આદિના કણ, કેશ અને નખ આદિક બધુ ઓષધિનુ કામ કરે છે એ બધાને ઓષધિઓ એટલા માટે કહેવામા આવે છે કે જે પ્રકારે ઔષધીઓ રોગને મટાડે છે તે જ પ્રકારે એ પણ સમસ્ત રોગ મટાડે છે (अप्पेगइया कोट्ठबुद्धी, एव बीयबुद्धी, पडबुद्धी, अप्पेगइया पयाणुसारी, संभिन्नसोया) કેટલાએક

गइया सप्पियासवा, अप्पेगइया अक्खीणमहाणसिया, एवं

मधुरवचनान्यास्रवन्ति येषा ते तथा, 'अप्पेगइया सप्पियासवा' अप्येकके सर्पिरास्रवा -घृतवच्छ्रोतृणा स्नेहातिशयसम्पादका, श्रोतृस्नेहातिशयसंपादकत्वादेव ते क्षीरास्रवमध्वास्रवेभ्यो भेदेन कथिता, 'अप्पेगइया अक्खीणमहाणसिया' अप्येकके अक्षीणमहानसिका - अक्षीणमहानसीं नाम लब्धिं प्राप्ता, अत्र महानसम्-अन्नपाकस्थान, तदाश्रितत्वादन्नमपि महानसमुच्यते, अक्षीण-भिक्षार्थमागताय लब्धिविशेषधारिणे साधवेऽन्ने प्रदत्ते सति तदवशिष्टमन्न पुरुषशतसहस्रेभ्योऽपि दीयमानं न क्षीयते, यावत्तदन्नस्वामी स्वय न भुङ्क्ते, अपिच भिक्षापात्रगत तदन्न लब्धिविशेषप्रभावादेव साधुशतसहस्रेभ्योऽपि परिवेष्यमाण न क्षीयते यावत् तदन्नभिक्षाग्राहक स्वय न भुङ्क्ते,

निकला करते थे। क्षीरास्रवलब्धि का काम यही है कि यह जिसे प्राप्त होता है वह क्षीर के समान मधुर वचनों को सदा बोला करता है। कितनेक ऐसे मुनिजन थे जो मध्वास्रव थे, जिनके मुखकमल से मधु के तुल्य मधुर वचन निकला करते थे। कितनेक ऐसे थे जो सर्पिरास्रव थे-घृत के समान स्नेहापादन करनवाले वचनों के प्रयोक्ता थे। कितनेक अक्षीणमहानसिक थे। इस लब्धिप्राप्त मुनिजन का यह प्रभाव होता है कि यह जिस घर से भिक्षा ले आवे उस घर का अवशिष्ट अन्न जनतक देनेवाला स्वय न खा लेवे, तबतक लाख आदमियों को भी वितरित करने पर खूटता नहीं है। तथा उस साधुद्वारा लाया गया वह भिक्षान्न भी जबतक लानेवाला साधु स्वय न खा लेवे तबतक लाख साधुओं द्वारा आहारित होने पर भी

શ્રોતાજનોના પ્રતિ દૂધપાક જેવા મધુર-મીઠા વચન નીકળ્યા કરતા હતા ક્ષીરાસ્રવ લબ્ધિનુ કામ એજ છે કે તે જેને પ્રાપ્ત થાય છે તે દૂધપાક જેવા મધુર વચનો જ સદાય બોલ્યા કરે છે કેટલાએક એવા પણ મુનિજનો હતા જે મધ્વાસ્રવ હતા જેમના મુખકમલમાથી મધના જેવા મધુર વચન નીકળે છે તે મધ્વાસ્રવ છે કેટલાએક એવા હતા કે જે સર્પિરાસ્રવ હતા, ઘીની પેઠે સ્નેહાપાદન કરવાવાળા વચનો બોલનારા હતા કેટલાએક અક્ષીણમહાનસિક-લબ્ધિધારી હતા, આ લબ્ધિપ્રાપ્ત મુનિજનનો એવો પ્રભાવ હોય છે કે તે જે ઘેરથી ભિક્ષા લઈને આવે તે ઘરનુ બાકીનુ અન્ન જ્યા સુધી દેવાવાળો પોતે ન ખાય ત્યા સુધી લાખો માણસોમા વહેચી આપે તો પણ ખૂટી જતુ નથી તથા તે સાધુએ લાવેલુ તે ભિક્ષાનુ અન્ન પણ તે લઈ આવનાર સાધુ પોતે ખાય નહિ, ત્યા સુધી લાખો સાધુઓ તેનો આહાર કરે તોય પણ

न्नसोया, अप्पेगइया खीरासवा, अप्पेगइया महुयासवा, अप्पे-

नुसरन्ति तच्छील । अप्येनाऽऽगात्पकल्पका इत्यर्थ । 'अप्पेगइया संभिन्नसोया' अप्येकके सभिन्नश्रोतार --सभिन्नान शब्दान्--पृथक् २ युगपच्छृण्वन्ति इति सभिन्न श्रोतार, यद्वा सभिन्नानि--शब्देन समस्तानि शब्दग्राहकाणि श्रोतासि--सर्वाणीन्द्रियाणि येषा ते सम्भिन्नश्रोतस । 'अप्पेगइया खीरासवा' अप्येके क्षीराऽऽस्रवा -- मधुरत्वेन क्षीरवद्--दुग्धवच्छ्रोतॄणा सुखकराणि वचनान्यास्रवन्ति--मुखेभ्यो निर्गच्छन्ति येषा ते क्षीराऽऽस्रवा, 'अप्पेगइया महुयासवा' अप्येके मध्वास्रवा --मधुवत्

में आकांक्षित अन्य सैकडो पदों का भी जो अनुसरण करनेवाले होते हैं वे पदानुसारी कहलाते हैं । कितनेक सभिन्नश्रोता थे । सभिन्नश्रोता मुनिजन अनेक भेदों से भिन्न २ शब्दों को भी युगपत् पृथक् २ रूप से सुन लिया करते हैं । एक ही साथ अनेक शब्द एकत्र हो रहे हों, तो भी सभिन्नश्रोता उन शब्दों को पृथक् २ रूप से युगपत् जान लिया करते है, अथवा 'श्रोतस्' शब्द समस्त इन्द्रियों का वाचक है, इससे यह अर्थ लब्ध होता है कि सभिन्नश्रोता मुनिजन की समस्त इन्द्रियाँ शब्दों से सनद्ध रहा करती है, अर्थात वह श्रोत्र--इन्द्रियका काम शेष चार इन्द्रियों से भी लेते है, एक इन्द्रिय से अन्य इन्द्रियों का काम लेते हैं। (अप्पेगइया खीरासवा अप्पेगइया महुयासवा अप्पेगइया सप्पियासवा अप्पेगइया अक्खीणमहाणसिया) कितनेक ऐसे भी थे जिनके मुख से श्रोताजनों के प्रति क्षीर के जैसे मधुर--मीठे वचन

पदथी बीजा तेने अनुकूळ तेमज ते सूत्रमा आकांक्षित अन्य सेंकडो पदोना पण जे अनुसरण करवावाळा होय छे ते पदानुसारी कहेवाय छे केटलाएक सभिन्न-श्रोता हता सभिन्नश्रोता मुनिजनो अनेकभेदोवाळा जुदा जुदा शब्दोने पण युगपत् जुदा जुदा रूपथी साभळी ले छे एकीसाथे अनेक शब्द एकत्र थई जाय छे तो पण सभिन्नश्रोता ते शब्दोने जुदा जुदा रूपथी युगपत जाणी ले छे अथवा श्रोतस् शब्द इंद्रियोनो वाचक छे तेथी एवो अर्थ नीकळे छे के सभिन्न-श्रोता मुनिजननी समस्त इंद्रिओ शब्द साथे सबद्ध रह्या करे छे (जोडाएली रहे छे), अर्थात् ते श्रोत्र इंद्रियनु काम बीजी चार इंद्रियो पासेथी पण ले छे एक इंद्रिय पासे बीजी इंद्रियोनु काम ले छे (अप्पेगइया खीरासवा अप्पेगइया महुयासवा अप्पेगइया सप्पियासवा अप्पेगइया अक्खीणमहाणसिया) केटलाएक एवा पण हता, जेमना मुखथी

गइया सप्पियासवा, अप्पेगइया अक्खीणमहाणसिया, एवं

मधुरवचनान्यास्रवन्ति येषां ते तथा, 'अप्पेगइया सप्पियासवा' अप्येकके सर्पिरास्रवाः-घृतवच्छ्रोतॄणां स्नेहातिशयसम्पादकाः, श्रोतृस्नेहातिशयसम्पादकत्वादिह ते क्षीरास्रवमध्वास्रवेभ्यो भेदेन कथिताः, 'अप्पेगइया अक्खीणमहाणसिया' अप्येकके अक्षीणमहानसिकाः- अक्षीणमहानसा नाम लब्धिं प्राप्ताः, अत्र महानसम्-अन्नपाकस्थानं, तदाश्रितत्वादन्नमपि महानसमुच्यते, अक्षीण-भिक्षार्थमागताय लब्धिविशेषधारिणे साधवेऽन्ने प्रदत्ते सति तदवशिष्टमन्नं पुरुषशतसहस्रेभ्योऽपि दीयमानं न क्षीयते, यावत्तदन्नस्वामी स्वयं न भुङ्क्ते, अपिच भिक्षापात्रगतं तदन्नं लब्धिविशेषप्रभावादेव साधुशतसहस्रेभ्योऽपि परिविष्यमाणं न क्षीयते यावत् तदन्नभिक्षाग्राहकः स्वयं न भुङ्क्ते,

निकला करते थे। क्षीरास्रवलब्धि का काम यही है कि यह जिसे प्राप्त होता है वह क्षीर के समान मधुर वचनों को सदा बोला करता है। कितनेक ऐसे मुनिजन थे जो मध्वास्रव थे, जिनके मुखकमल से मधु के तुल्य मधुर वचन निकला करते थे। कितनेक ऐसे थे जो सर्पिरास्रव थे-घृत के समान स्नेहापादन करनेवाले वचनों के प्रयोक्ता थे। कितनेक अक्षीणमहानसिक थे। इस लब्धिप्राप्त मुनिजन का यह प्रभाव होता है कि यह जिस घर से भिक्षा ले आवे उस घर का अवशिष्ट अन्न जबतक देनेवाला स्वयं न खा लेवे, तबतक लाख आदमियों को भी वितरित करने पर खूटता नहीं है। तथा उस साधुद्वारा लाया गया वह भिक्षान्न भी जबतक लानेवाला साधु स्वयं न खा लेवे तबतक लाख साधुओं द्वारा आहारित होने पर भी

શ્રોતાજનોના પ્રતિ દૂધપાક જેવા મધુર-મીઠા વચન નીકળ્યા કરતા હતા ક્ષીરાસ્રવ લબ્ધિનુ કામ એજ છે કે તે જેને પ્રાપ્ત થાય છે તે દૂધપાક જેવા મધુર વચનો જ સદાય બોલ્યા કરે છે કેટલાએક એવા પણ મુનિજનો હતા જે મધ્વાસ્રવ હતા જેમના મુખકમલમાથી મધના જેવા મધુર વચન નીકળે છે તે મધ્વાસ્રવ છે કેટલાએક એવા હતા કે જે સર્પિરાસ્રવ હતા, ઘીની પેઠે સ્નેહાપાદન કરવાવાળા વચનો બોલનારા હતા કેટલાએક અક્ષીણમહાનસિક લબ્ધિધારી હતા, આ લબ્ધિપ્રાપ્ત મુનિજનનો એવો પ્રભાવ હોય છે કે તે જે ઘેરથી ભિક્ષા લઈને આવે તે ઘરનુ બાકીનુ અન્ન જ્યા સુધી દેવાવાળો પોતે ન ખાય ત્યા સુધી લાખો માણસોમા વહેચી આપે તો પણ ખૂટી જતુ નથી તથા તે સાધુએ લાવેલુ તે ભિક્ષાનુ અન્ન પણ તે લઈ આવનાર સાધુ પોતે ખાય નહિ, ત્યા સુધી લાખો સાધુઓ તેનો આહાર કરે તોય પણ

उज्जुमई, अप्पेगइया विउलमई विउव्वणिड्ढिपत्ता चारणा विज्जा-

एवम् 'उज्जुमई' ऋजुमतय—मनन मति, मनेदनमित्यर्थ —ऋ जी सामान्यग्राहिणी मतिर्येषा ते ऋजुमतय । अर्धतृतीयोच्छ्रयाङ्गुलन्यूनमनुष्यक्षेत्रवर्तिसज्ञिपञ्चेन्द्रिय-मनोद्रव्यप्रत्यक्षीकरणहेतुमन पर्ययज्ञानविशेषवन्त इत्यर्थ । ऋजुमतिनामकलब्धि-विशेषधारिण इति भाव । अप्पेगइया विउलमई' अप्येकके विपुलमतय — विपुला सविशेषणवस्तुग्राहितया विस्तीर्णा मति—मन पर्ययज्ञान येषा ते विपुलमतय । ऋजुमतिविपुलमतिमतामय तात्विको भेद, विपुलमतय — घटोऽनेन चिन्तित, स घटो द्रव्यत — सुवर्णघटित, क्षेत्रत — पाटलिपुत्रनगरस्य, कालत — शारदीय, भावत —पीतवर्ण इत्येवमशेषविशेषणयुक्त वस्तु जानन्ति, ऋजुमतयस्तु सामा यत एव जानन्ति। अर्द्धतृतीयोच्छ्रयाऽङ्गुलन्यूने मनुजक्षेत्रे वर्तमानाना सज्ञिपञ्चेन्द्रि-

खूटता नहीं है। (एव उज्जुमई, अप्पेगइया विउलमई विउव्वणिड्ढिपत्ता चारणा विज्जाहरा आगासाइवाई) इस प्रकार कितनेक तपस्वी शिष्यजन ऋजुमति—मन पर्यवज्ञानवाले थे । ऋजुमति—मन पर्यवज्ञानी सामान्यत सञ्ज्ञी—पचेन्द्रिय के मन के भावों को जानते है । कितनेक विपुलमति—मन पर्यव के धारक थे—विशेषणसहित वस्तु को ग्रहण करने की बुद्धिवाले थे। जैसे किसी ने द्रव्य की अपेक्षा सुवर्ण का, क्षेत्र की अपेक्षा पाटिलपुत्र का, काल की अपेक्षा शरदकाल का और भाव की अपेक्षा पीत वर्णका घट चिन्तित किया, विपुलमति इन समस्त विशेषणों सहित उस घट को जान लेते है । अर्द्धतृतीय अगुलसे न्यून इस मनुष्य क्षेत्रमें वर्तमान सज्ञि पचेन्द्रिय जीवों के मनमें स्थित वस्तु का सामान्यत जाननेवाला ऋजुमति—मन पर्य-

ખૂટતુ નથી (एव उज्जुमई अप्पेगइया विउलमई विउव्वणिड्ढिपत्ता चारणा विज्जाहरा आगासाइवाई) તેજ પ્રકારે કેટલાએક તપસ્વી શિષ્યજન ઋજુમતિ મન —પર્યવજ્ઞાની હતા ઋજુમતિમન —પર્યવજ્ઞાની સામાન્યત સ જ્ઞી—પ ચે દ્રિયના મનના ભાવોને જાણે છે કેટલાએક વિપુલમતિ—મન પર્યવના ધારક હતા, વિશેષણસહિત વસ્તુને જાણનારી બુદ્ધિવાળા હતા જેમ કે કોઇએ દ્રવ્યની અપેક્ષા સુવર્ણના, ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ પાટલિપુત્રના, કાલની અપેક્ષાએ શરદકાલના, અને ભાવની અપેક્ષાએ પીળા ર ગના ઘટનુ ચિ તવન કર્યું, ત્યારે વિપુલમતિ એ બધા વિશેષણો સહિત તે ઘટને જાણી લે છે અર્દ્ધતૃતીયઅ ગુળન્યૂન આ મનુષ્ય ક્ષેત્રમા વર્તમાન સ જ્ઞી પ ચે દ્રિય જીવોના મનમા રહેલ વસ્તુને સામાન્યત જાણવા-વાળા ઋજુમતિ—મન પર્યવજ્ઞાન થાય છે, તેમજ સ પૂર્ણ મનુષ્યક્ષેત્રમા વર્તમાન

याणा मनोऽवस्थितवस्तुन सामान्यतो ग्राहिका ऋजुमति । सम्पूर्णे मनुजक्षेत्रेऽशेष-विशेषवस्तुग्राहिका विपुलमति । विपुलमतिनामकलब्धिविशेषधारिण इति भाव । 'विउव्वणिड्ढिपत्ता' विकुर्वणर्द्धिप्राप्ता -विकुर्वणा-वैक्रियकरणलब्धि सैव ऋद्धि, ता प्राप्ता ये ते तथा ।'विकुर्व' विक्रियाम् इति पारिभाषिक सौत्रो धातु, अस्माद्धा-तोर्युच्प्रत्यये विकुर्वणा, नानारूपा विक्रिया- रचनेत्यर्थ, बाह्यपुद्गलान् भवधारणीय-शरीरानवगाढक्षेत्रप्रदेशवर्तिना वैक्रियसमुद्घातेन गृहीत्वा एका विकुर्वणा क्रियते, एवम् आभ्यन्तरपुद्गलान् भवधारणीयेनौदारिकेण वा शरीरेण ये क्षेत्रप्रदेशमवगाढास्तेष्वेव ये वर्तन्ते तान् गृहीत्वा द्वितीया। एव बाह्यान्तरपुद्गलयोगेन तृतीया विकुर्वणा बोध्या। स्थानाङ्गसूत्रे-(३ ठा १३०) सविस्तर वर्णिता। 'चारणा' चारणा -चरण=गम-नम् अतिशययुक्तमस्ति येषा ते चारणा, 'ज्योत्स्नादिभ्योऽण्' इति पाणिनिसूत्रान्मत्वर्थी-योऽण्प्रत्यय । आकाशगमनागमनरूपलब्धिसम्पन्ना इत्यर्थ । ते द्विविधा -विद्याचारणा, जङ्घाचारणाश्च। तत्र विद्या-पूर्वगतविवक्षितश्रुतज्ञानाश, तदभ्याससमये षष्ठषष्ठनिरन्त-

ज्ञान होता है, एव सम्पूर्ण मनुष्यक्षेत्र में वर्तमान समस्त वस्तुओं-बादर पदार्थों को विशेषरूप से जाननेवाला विपुलमतिमन पर्यवज्ञान होता है। कितनेक वैक्रिय-लब्धि के धारी थे। वैक्रियलब्धि अनेक प्रकार की होती है। इस ऋद्धि के धारी मुनिजन अनेक प्रकार से अपने शरीर की विकुर्वणा कर लेते हैं। इसका विशेष वर्णन स्थानाग सूत्र के तृतीय ठाणे के प्रथम उद्देशक में किया गया है। कितनेक चारणलब्धि के धारक थे। चारणलब्धि के धारी मुनिजनों का गमन अतिशयसपन्न होता है। इस ऋद्धि के धारक मुनियों का गमनागमन आकाश में होता है। चारणऋद्धिधारी मुनिजन दो प्रकार के होते हैं- एक विद्याचारण, दूसरे जघाचारण। १४ पूर्वो मे विवक्षित श्रुतज्ञान

समस्त वस्तुओ બાદર પદાર્થોને વિશેષરૂપે જાણવાવાળા વિપુલમતિ-મન પર્યવજ્ઞાન થાય છે કેટલાએક વૈક્રિયલબ્ધિના ધારક હતા વૈક્રિયલબ્ધિ અનેક પ્રકારની થાય છે એ ઋદ્ધિના ધારક મુનિજનો અનેક પ્રકારથી પોતાના શરીરની વિકુર્વણા કરે છે આનુ વિશેષ વર્ણન સ્થાનાગ સૂત્રના તૃતીય ઠાણા પ્રથમ ઉદ્દેશકમા કરેલુ છે કેટલાક ચારણલબ્ધિના ધારક હતા ચારણલબ્ધિના ધારક મુનિજનોનુ ગમન અતિશયસપન્ન હોય છે આ ઋદ્ધિના ધારક મુનિઓનુ ગમનાગમન આકાશ માર્ગે થાય છે ચારણ-ઋદ્ધિધારી મુનિજન બે પ્રકારના થાય છે-એક વિદ્યા-ચારણ અને બીજા જઘાચારણ ૧૪ પૂર્વોમા વિવક્ષિત શ્રુતજ્ઞાનનુ અ શ વિદ્યા

रतप करणेन द्विचत्वारिंशद्दोषवर्जनपूर्वकसाभिग्रहान्तप्रान्ततुच्छरूक्षादिग्रहणरूपया पिण्ड-विशुद्धया च विद्याचारणनामकऋद्धिर्भवति, ये तया ऋद्ध्या युक्तास्ते विद्याचारणा उच्यन्ते। यद्यपि पिण्डविशुद्ध्यादिकं सर्वेषां साधूनामपेक्ष्य तथाप्यत्र तप्रान्तादिग्रामाभिग्रहग्रहणभावश्यक-मिति विशेष। विद्याचारणास्तिर्यग्गत्या प्रथमेनोत्पातेन मानुषोत्तरं पर्वतं गच्छन्ति, ततो द्वितीयोत्पातेनाष्टमं नन्दीश्वरं गच्छन्ति, ततः परं तेषां गतिर्नास्ति, नन्दीश्वरद्वीपात् प्रति-निवर्तमाना एकेनैवोत्पातेन स्वस्थानमायान्ति। ते पुनरूर्ध्वगत्या मेरुं जिगमिषवः प्रथमे-

का अंग लिया है। इस विद्या के अभ्यास के समय में मुनिजन अन्तररहित षष्ठ षष्ठ तपस्या करते हैं, और पारणा के दिन ४२ दोषों को टालकर अन्तप्रान्त एव तुच्छ–रूक्षादिक आहार ग्रहण करते हैं। इसपर भी अभिग्रह रखते हैं। इस तरह उन्हे विद्याचारण नामकी लब्धि प्राप्त होती है। इस लब्धि से युक्त मुनिजन विद्याचारण कहे गये है। यद्यपि पिण्डादिक की विशुद्धि समस्त साधुओं के लिये सापेक्ष है, तथापि इस ऋद्धि की प्राप्ति के लिये साभिग्रह अन्त–प्रान्तादि आहार का ग्रहण करना आवश्यक है। विद्याचारण ऋद्धि के धारक मुनिजन यदि तिरछे गमन करें तो इस ऋद्धि के प्रभाव से प्रथम उत्पात मे मानुषोत्तर पर्वत तक चले जाते हैं। द्वितीय उत्पात से आठवे नंदीश्वर द्वीप तक जाते हैं। इससे आगे उनका गमन नहीं होता है। पुन एक ही उत्पात से ये नंदीश्वर द्वीप से वापिस अपने स्थान-पर आ जाते है। यदि ये ऊपर की ओर गमन करे, और मेरु पर्वत पर जाने के इच्छुक हों तो प्रथम उत्पात से नन्दनवन तक जाते है और द्वितीय उत्पात से

છે આ વિદ્યાના અભ્યાસના સમયમા મુનિજન અ તરરહિત છઠછઠ તપસ્યા કરે છે અને પારણાને દિવસે ૪૨ દોષોથી રહિત અ તપ્રાત તેમજ તુચ્છ રૂક્ષ આદિક આહાર ગ્રહણ કરે છે તે ઉપરાત પણ અભિગ્રહ રાખે છે આવી રીતે તેમને વિદ્યાચારણ નામની લબ્ધિ પ્રાપ્ત થાય છે આ લબ્ધિવાળા મુનિજન વિદ્યાચારણ કહેવાય છે એ કે પિ ડાદિકની વિશુદ્ધિ સમસ્ત સાધુઓ માટે સાપેક્ષ છે, તો પણ આ ઋદ્ધિની પ્રાપ્તિ માટે સાભિગ્રહ અ તપ્રાતાદિ આહાર ગ્રહણ કરવો આવશ્યક છે વિદ્યાચારણ ઋદ્ધિના ધારક મુનિજન જો તિરછા ગમન કરે તો આ ઋદ્ધિના પ્રભાવથી પ્રથમ ઉત્પાતમા માનુષોત્તર પર્વતસુધી ચાલ્યા જાય છે, બીજા ઉત્પાતમા આઠમા નદીશ્વર દ્વીપ સુધી જાય છે તેનાથી આગળ તેમનુ ગમન થતુ નથી પાછા એક જ ઉત્પાતથી એ નદીશ્વર દ્વીપથી પોતાના સ્થાને આવી જાય છે જો તેઓ ઉપરની તરફ ગમન કરે અને મેરૂપર્વત પર જવાની ઇચ્છા હોય તો પ્રથમ ઉત્પાતથી નદનવન

नोपातेन नन्दनवनं गच्छन्ति, ततो द्वितीयोपातेन पण्डकवनम्, तत्र प्रतिनिवर्तमाना एकेनैवोपातेन स्वस्थानमागच्छन्ति। पण्डकवनादूर्ध्वं तेषां गतिर्नास्ति।

येऽष्टमाष्टमेनिरन्तरतपःकरणेनाऽऽत्मानं भावयन्ति तेषां जङ्घाचारणनामकलब्धिः समुत्पद्यते, ये तया लब्ध्या युक्तास्ते जङ्घाचारणा उच्यन्ते। जङ्घाचारणास्तिर्यग्गत्या एकेनोत्पातेनैव त्रयोदशं रुचकवरद्वीपं गच्छन्ति, ततः परं तेषां गतिर्नास्ति, ततः प्रतिनिवर्तमानाः प्रथमोत्पातेन नन्दीश्वरवरद्वीपमागच्छन्ति, द्वितीयोत्पातेन स्वस्थानम्। ते पुनरूर्ध्वगत्या मेरुं जिगमिषवः स्वस्थानादेकोत्पातेन पण्डकवनमधिरोहन्ति। ततः प्रतिनिवर्तमानाः प्रथमोत्पातेन नन्दनवनमागच्छन्ति, ततो द्वितीयोत्पातेन स्वस्थानमायान्ति। पण्डकवनादूर्ध्वं जङ्घाचारणानामपि गतिर्नास्ति।

पण्डकवन तक चले जाते हैं। फिर वहा से लौटकर एक ही छलांग में अपने स्थान पर वापिस आजाते है। पण्डकवन से आगे इनका गमन नही है। जंघाचारण नामकी लब्धि उन साधुजनों को प्राप्त होती है, जो निरन्तर–अन्तररहित अष्टम की तपस्या करते हैं। इस लब्धिसंपन्न मुनिजन यदि तिरछे गमन करे तो प्रथम ही उत्पात में तेरहवा द्वीप जो रुचकवर द्वीप है वहा तक पहुँच जाते हैं, इसके आगे नहीं जाते हैं। क्यों कि आगे इनकी गति नहीं होती है। वहा से वापिस होकर ये प्रथम उत्पात मे नन्दीश्वर द्वीप आ जाते हैं और द्वितीय उत्पात में अपने स्थान पर आ जाते हैं। यदि ये ऊपर की ओर उडें और मेरुपर्वत पर जाने की इच्छावाले हों तो अपने स्थान से एक ही उत्पात मे पण्डकवन में पहुँच जाते हैं। वहा से जब ये वापिस होते है तो प्रथम उत्पात में ये नंदनवन आजाते है और फिर द्वितीय उत्पात से अपने स्थान पर। पण्डकवन से आगे जंघाचारणवालों की भी गति नहीं है।

સુધી જાય છે, અને બીજા ઉત્પાતથી પંડકવન સુધી ચાલ્યા જાય છે પછી ત્યાંથી પાછા આવતા એક જ છલાગમા પોતાના સ્થાનપર પાછા આવી જાય છે પંડકવનથી આગળ તેમનુ ગમન નથી

જંઘાચારણ નામની લબ્ધિ એ સાધુઓને પ્રાપ્ત થાય છે કે જે નિરંતર-સતત અષ્ટમ-અષ્ટમની તપસ્યા કરે છે આ લબ્ધિવાળા મુનિજનો જો તિરછા ગમન કરે તો પ્રથમ જ ઉત્પાતમા તેરમો દ્વીપ જે રૂચકવર નામે દ્વીપ છે, ત્યા સુધી પહોંચી જાય છે, તેનાથી આગળ નથી જતા, કેમ કે આગળ તેમની ગતિ થતી નથી ત્યાથી પાછા વળતા તેઓ પ્રથમ ઉત્પાતમા નંદીશ્વરદ્વીપ આવી જાય છે, અને બીજા ઉત્પાતમા પોતાના સ્થાનપર આવી જાય

चारणलब्धिसम्पन्नो हि साधु खलु भगवद्वर्णितगणितानुयोग विज्ञाय, स्वेन स्वेन गम्य द्वीपवनादिक विलोकयितुमौत्सुक्यवशात् स्वस्वलब्धि स्फोटयित्वा तत्र तत्र जिगमिषति। गत्वा च तत्र तत्र यथाभगवद्वर्णित द्वीपवनादिक विलोक्य सञ्जाताह्लाद-श्चैत्यानि वन्दते, अथात् भगवतोऽनन्तानि ज्ञानानि स्तौति, स्तुत्वा प्रतिनिवर्तते, प्रति-निवृत्य इह स्वस्थानमागच्छति, आगत्य इह चैत्यानि वन्दते—अर्थात्—ज्ञानानि स्तौति। ज्ञानानन्त्याद् बहुवचनम्। सर्वमेतद् भगवतीसूत्रेऽभिहितम्। अधिकजिज्ञासुभिस्तत्र द्रष्ट-व्यम्। 'विज्जाहरा' विद्याधरा—रोहिणीप्रज्ञप्त्यादिविविधविद्याविशेषधारिण। 'आगा-

चारणलब्धिसम्पन्न साधुजन प्रभुद्वारा वर्णित गणितानुयोग को जान करके अपने२ द्वारा गम्य द्वीपवनादिक को देखने के लिये उत्कठा के वशवर्ती हो, अपनी२ लब्धि को प्रगट करते है और वहा२ जाते है। भगवान् ने द्वीपवनादिक का स्वरूप जैसा कहा है वैसा वे वहा उसे देखते है और अपार आनद से पुलकित होते है। प्रभु के अपार ज्ञान की अतिशय स्तुति करते है। फिर वहा से वापिस अपनी जगह पर आजाते है। आकर यहा पर भी चैत्यों की अर्थात् प्रभु के ज्ञान की स्तुति करते है। यह सब प्रकरण भगवतीसूत्र मे कहा हुआ है। जिन्हे अधिक जानने की इच्छा हो वह वहा से देख लेवें। कितनेक मुनि रोहिणी—प्रज्ञप्ति—आदि विविध प्रकार की विद्याओं के धारण करनेवाले

છે જો તેઓ ઉપરની તરફ ઉડે અને મેરૂ પર્વત પર જવાની ઈચ્છા કરે તો પોતાના સ્થાનથી એક જ ઉત્પાતમા પડકવનમા પહોચી જાય છે ત્યાથી જ્યારે તેઓ પાછા વળે ત્યારે પ્રથમ ઉત્પાતમા નદનવન આવી જાય છે, અને પછી બીજા ઉત્પાતમા પોતાના સ્થાન પર આવે છે પડકવનથી આગળ જઘાચારણવાળાની પણ ગતિ હોતી નથી

ચારણલબ્ધિમપન્ન સાધુજન પ્રભુએ વર્ણવેલા ગણિતાનુયોગને જાણીને પોતપોતાથી ગમ્ય દ્વીપવન આદિકને જોવા માટે ઉત્કઠાને વશવર્તી થઈને પોતપોતાની લબ્ધિને પ્રગટ કરે છે, અને ત્યા ત્યા જાય છે ભગવાને દ્વીપવન આદિકના સ્વરૂપ જેવા કહેલા છે તેવા જ તેઓ ત્યા જુએ છે, અને અપાર આનદથી પુલકિત થાય છે પ્રભુના અપાર જ્ઞાનની અતિશય સ્તુતિ કરે છે. પછી ત્યાથી પાછા પોતાના સ્થાને આવી જાય છે આવીને અહી પણ ચૈત્યની અર્થાત્ પ્રભુના જ્ઞાનની સ્તુતિ કરે છે કેટલાએક મુનિ રોહિણી પ્રજ્ઞપ્તિ આદિ વિવિધ પ્રકારની વિદ્યાઓના ધારણ કરવાવાળા હતા કેટલાએક મુનિજન

हरा आगासाइवाई, अप्पेगइया कणगावलितवोकम्मं पडिवण्णा, एवं एगावलिं खुड्डागसीहनिक्कीलियं तवोकम्मं पडिवण्णा, अप्पेगइया

साइवाई' आकाशातिपातिन:–आकाश–व्योम अतिपतन्ति–अतिक्रामन्ति–आकाशगामिविद्याप्रभावात्–ये ते तथा। 'अप्पेगइया कणगावलितवोकम्मं पडिवण्णा' अप्येकके कनकावलीतप:कर्म प्रतिपन्ना, 'एवं' एवम्–अनेन प्रकारेण 'एगावलिं' एकावलीं प्रतिपन्ना, एकावलीनामकतप:कर्मेण आष्टनिर्व्याख्याता–इति न सा विविच्यते। 'खुड्डागसीहनिक्कीलियं तवोकम्मं पडिवण्णा' क्षुल्लक–सिंह–निष्क्रीडितम्–क्षुल्लक–लघु, सिंहनिष्क्रीडित–सिंहगमनं तदिव यत्तपस्तत् सिंहनिष्क्रीडितम्, एतत्तपो वक्ष्यमाणमहासिंहनिष्क्रीडितापेक्षया क्षुल्लकं, सिंहगमनञ्च अतिक्रान्तदेशावलोकनतो भवति, एवमतिक्रान्ततप:सेवनेन अपूर्वतपसोऽनुष्ठानं यस्मिन् तत् सिंहनिष्क्री-

थे। कितनेक ऐसे मुनिजन थे जो आकाशगामी थे। इनके पास आकाशगामिनी विद्या थी। उसके ही प्रभाव से ये आकाशमें उडते थे। (अप्पेगइया कणगावलितवोकम्मं पडिवण्णा एवं एगावलिं खुड्डागसीहनिक्कीलियं तवोकम्मं पडिवन्ना) कितनेक ऐसे मुनिजन थे जो कनकावली तप को तपते थे, और कितनेक मुनिजन एकावली तप तपते थे। कितनेक ऐसे थे जो लघुसिंहनिष्क्रीडित तप की आराधना करते थे। इस तप के साथ "क्षुल्लक" पद का प्रयोग हुआ है सो महासिंहनिष्क्रीडित तपकी अपेक्षा समझना चाहिये। जिस प्रकार सिंह अपने द्वारा अतिक्रान्त देश को अवलोकन करते हुए आगे २ गमन करता है। उसी प्रकार इस तप में भी अतिक्रान्त तप के सेवन की अपेक्षा रखते हुए अपूर्व २ तपों का अनुष्ठान किया जाता है।

એવા હતા કે જે આકાશગામી હતા તેમની પાસે આકાશગામિની વિદ્યા હતી તેનાજ પ્રભાવથી તેઓ આકાશમા ઉડતા હતા (अप्पेगइया कणगावलितवोकम्मं पडिवण्णा, एवं एगावलिं खुड्डागसीहनिक्कीलियं तवोकम्मं पडिवन्ना) કેટલાએક એવા મુનિજનો હતા કે જે કનકાવલી તપ તપતા હતા, અને કેટલાક મુનિજન એકાવલી તપ તપતા હતા કેટલાક એવા હતા જે લઘુસિંહ-નિષ્ક્રીડિત તપની આરાધના કરતા હતા આ તપની સાથે "ક્ષુલ્લક" પદનો પ્રયોગ થયો છે, તે મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપની અપેક્ષાએ સમજવો જોઈએ જે પ્રકારે સિંહ પોતાથી અતિક્રાંત દેશને જોતો થકો આગળ આગળ ગમન કરે છે તેજ પ્રકારે આ તપમા પણ અતિક્રાંત તપના સેવનની અપેક્ષા રાખતા અપૂર્વ અપૂર્વ તપોનુ અનુષ્ઠાન કરવામા આવે છે

महालयं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं पडिवण्णा, भद्दपडिमं महाभद्दपडिमं सव्वओभद्दपडिमं आयंबिलवड्ढमाणं तवोकम्मं पडिवण्णा, मासियं भिक्खुपडिमं, एवं दोमासियं पडिमं, तिमासियं

डित तप कर्म प्रतिपन्ना, 'अप्पेगइया महालय सीहनीकीलिय तवोकम्म पडिवण्णा' अप्येकके महासिंहनिष्क्रीडित तप कर्म प्रतिपन्ना, 'भद्दपडिम' भद्र प्रतिमा 'महाभद्दपडिम' महाभद्रप्रतिमा, 'सव्वओभद्दपडिम' सर्वतोभद्रप्रतिमा प्रतिपन्ना, 'आयंबिलवद्धमाण तवोकम्मं पडिवण्णा' आचामाम्लवर्द्धमानक तप-कर्म प्रतिपन्ना । 'मासिय भिक्खुपडिम' मासिकीं भिक्षुप्रतिमा—मासपरिमाणा मासिकी ता भिक्षुप्रतिमाम्—अभिग्रहरूपाम्, तत्र हि मास यावदेका दत्ति—अविच्छिन्न-दानम्, अर्थात्—अविच्छिन्नधारया करस्थान्यादिभ्य यद् भक्त पान च पतति सा

(अप्पेगइया महालय सीहनीकीलिय तवोकम्म पडिवन्ना) कितनेक मुनिजन महासिंह-निष्क्रीडित तप करते थे। (भद्दपडिम महाभद्दपडिम सव्वओभद्दपडिम आयबिल-वद्धमाण तवोकम्म पडिवण्णा) कितनेक मुनि ऐसे थे जो भद्रप्रतिमा, महाभद्र-प्रतिमा एव सर्वतोभद्रप्रतिमा—रूप तप का आराधन करते थे। कितनेक ऐसे भी थे जो आयबिलवर्द्धमान तप को करते थे। इनका विस्तृत वर्णन अन्य शास्त्रों में है। (मासिय भिक्खुपडिम, एव दोमासिय पडिम तिमासिय पडिम जाव सत्तमासिय भिक्खुपडिम पडिवण्णा) कितनेक मुनिराज ऐसे थे जो एकमासिक भिक्षुप्रतिमा के धारी थे। इस प्रतिमा मे एक महिने तक एक दत्ति होती है। भिक्षापात्र में अविच्छिन्नधारापूर्वक जो भिक्षा दाता के हाथ अथवा थाली आदिसे गिरती

(अप्पेगइया महालय सीहनीक्कीलिय तवोकम्म पडिवन्ना) કેટલાક મુનિજન મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપ કરતા હતા (भद्दपडिम महाभद्दपडिम सव्वओभद्द पडिम आयबिलवद्धमाण तवोकम्म पडिवण्णा) કેટલાએક મુનિઓ એવા હતા કે જેઓ ભદ્રપ્રતિમા મહાભદ્રપ્રતિમા તેમજ સર્વતોભદ્રપ્રતિમા રૂપ તપનું આરાધન કરતા હતા કેટલાક એવા પણ હતા જે આયબિલ-વર્દ્ધમાન તપ કરતા હતા આનું વિસ્તારપૂર્વક વર્ણન અન્ય શાસ્ત્રોમા છે (मासिय भिक्खु-पडिम, एव दोमासिय पडिम तिमासिय पडिम जाव सत्तमासिय भिक्खुपडिम पडिवण्णा) કેટલાએક મુનિરાજ એવા હતા કે જે એકમાસિક ભિક્ષુપ્રતિમાના ધારક હતા આ પ્રતિમામા એક મહીના સુધી એક દત્તિ થાય છે ભિક્ષા

पडिमं जाव सत्तमासियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा, पढमं सत्तराइं-दियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा जाव तच्चं सत्तराइंदियं भिक्खु-

दत्ति, एवं द्वितीयाद्याः समभ्यन्ता एकैकदत्तिवृद्धियुक्ता । एवं 'दोमासियं पडिमं' द्वैमासिकीं प्रतिमाम् प्रतिपन्ना । 'तिमासियं पडिमं' त्रैमासिकीं प्रतिमां प्रतिपन्ना । 'जाव सत्तमासियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा' यावत् सप्तमासिकीं भिक्षुप्रतिमां प्रतिपन्ना । 'पढमं सत्तराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा जाव तच्चं सत्तराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा' प्रथमां सप्तरात्रिन्दिवां भिक्षुप्रतिमां प्रतिपन्ना —यावत्तृतीयां सप्तरात्रिन्दिवां भिक्षुप्रतिमां प्रतिपन्ना । तत्र सप्तरात्रिन्दिवा-

है उसका नाम दत्ति है । इस प्रकार १ महीने तक आहार की एक दत्ति और पानी की एक दत्ति ग्रहण की जाती है। इसी प्रकार दोमास प्रमाणवाली-भिक्षुप्रतिमा को, तीन मास की प्रमाणवाली भिक्षुप्रतिमा को यावत् सातमास प्रमाणवाली भिक्षुप्रतिमा को पालन करनेवाले मुनिजन थे। द्विमासिक भिक्षुप्रतिमा में २ दत्तियाँ आहार की २ दत्तियाँ पानी की ली जाती हैं । इस क्रमिक वृद्धि से सातमास-प्रमाणवाली सप्तम-भिक्षुप्रतिमा में ७ दत्तियाँ आहार की और सात दत्तियाँ पानी की ली जाती हैं। (पढमं सत्तराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा जाव तच्चं सत्तराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवन्ना) और पहली सात दिनरात की भिक्षुप्रतिमा के, दूसरी सात दिनरात की भिक्षुप्रतिमा के, तथा तीसरी सात दिनरात की भिक्षुप्रतिमा के धारी थे। इन तीनों-

પાત્રમાં અવિચ્છિન્ન-ધારાપૂર્વક જે ભિક્ષા દાતાના હાથે અથવા થાળીથી પડે છે તેનું નામ દત્તિ છે આ પ્રકારે એક મહિના સુધી આહારની એક દત્તિ અને પાણીની એક દત્તિ ગ્રહણ કરાય છે એ પ્રકારે બે માસના પ્રમાણવાળી ભિક્ષુ-પ્રતિમાનું, ત્રણ માસ પ્રમાણવાળી ભિક્ષુપ્રતિમાનું, યાવત્ સાત માસ પ્રમાણ વાળી ભિક્ષુપ્રતિમાનું પાલન કરવાવાળા મુનિજન હતા દ્વિમાસિકભિક્ષુપ્રતિમામાં ૨ દત્તિ આહારની, ૨ દત્તિ પાણીની લેવામાં આવે છે આ પ્રકારે ક્રમિક વૃદ્ધિથી સાત માસના પ્રમાણવાળી સપ્તમ ભિક્ષુપ્રતિ-મામાં ૭ દત્તિ આહારની અને ૭ દત્તિ પાણીની લેવામાં આવે છે (पढमं सत्तराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा जाव तच्चं सत्तराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवन्ना) અને પહેલી સાત દિવસ રાતની ભિક્ષુપ્રતિમાના, બીજી સાત દિવસ-રાતની ભિક્ષુપ્રતિમાના તથા ત્રીજી સાત દિવસરાતની ભિક્ષુપ્રતિમાના ધારક હતા આ ત્રણેય સાત દિવસ-રાતની ભિક્ષુપ્રતિમાઓની વિધિ આ પ્રકારે છે.—

पडिमं पडिवण्णा, अहोराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा, एक-

सप्त रात्रिन्दिवानि=अहोरात्रा यस्या सा सप्तरात्रिंदिवा–सप्ताऽहोरात्रप्रमाणा। प्रथमाया च चतुर्थचतुर्थेन पानकाऽऽहाररहित उत्तानको वा पार्श्वशायी वा निषद्योपगतो वा ग्रामादिभ्यो बहिर्विहरति। द्वितीया सप्तरात्रिन्दिवाऽप्येवंविधैव, नवरम्–दण्डाऽऽयतो वा लगण्डशायी वा उत्कुटुको वा विहरति। एव तृतीया सप्तरात्रिन्दिवाऽपि, नवरं वीराऽऽसनिको वा गोदोहिकास्थितो वा आम्रकुब्जको वाऽऽस्ते। 'अहोराइंदिय भिक्खुपडिम

सात दिनरात की भिक्षुप्रतिमाओं की विधि इस प्रकार है–प्रथम सप्तरात्रिन्दिव भिक्षुप्रतिमा में–अष्टमी भिक्षुप्रतिमा में–एकान्तर चउविहार उपवास करते हुए ग्राम से बाहर कायोत्सर्ग करे, और तीन आसन करे। उनके नाम (१) उत्तानासन=चित्त होकर सोना (२) एकपार्श्वासन=एक करवट से सोना, और (३) निषद्यासन–पर्यङ्कासन से रहना। दूसरी और तीसरी सात दिनरात की भिक्षुप्रतिमायें–नवमी तथा दसमी भिक्षुप्रतिमायें भी इसी प्रकार की है। केवल आसन के भेद है। नौमी के तीन आसन–दण्डासन, लगण्डासन, उत्कुटुकासन। (१) दण्डासन=दण्ड के समान सीधे शयन करना। (२) लगण्डासन=टेढे काठ के जैसे शयन करना अर्थात् मस्तक और एँडी को पृथ्वी पर सटा कर पीठ को अधर रख कर सोना, (३) उत्कुटुकासन=पैरों के बल बैठना। दसमी के तीन आसन–वीरासन, गोदोहिकासन, आम्रकुब्जकासन। (१) वीरासन=पृथ्वी पर पैर रख कर सिंहा-

પ્રથમ સપ્તરાત્રિદિવ ભિક્ષુપ્રતિમામાં–અષ્ટમી ભિક્ષુપ્રતિમામાં–એકાન્તર ચૌવિહાર ઉપવાસ કરતા ગામથી બહાર જઈ કાયોત્સર્ગ કરવો અને ત્રણ આસન કરવા તેમના નામ–(૧) ઉત્તાનાસન–ચિત્તા થઈને સુવુ (૨) એકપાર્શ્વાસન–એક પડખે રહી સુવુ, અને (૩) નિષદ્યાસન–પર્યંકાસનથી રહેવુ બીજી અને ત્રીજી સાત દિવસ-રાતની ભિક્ષુપ્રતિમાઓ–નૌમી અને દશમી ભિક્ષુપ્રતિમાઓ–પણ આ પ્રકારની છે કેવલ આસનમા ફેર છે નવમી પ્રતિમાના ત્રણ આસન–દંડાસન, લગંડાસન, ઉત્કુટુકાસન (૧) દંડાસન–દંડની પેઠે સીધા સુઈ જવુ, (૨) લગંડાસન–વાંકા લાકડાની પેઠે શયન કરવુ અર્થાત્ માથુ અને એડી (પાની) ને પૃથ્વીપર લગાડી પીઠને અધર રાખી સુવુ, (૩) ઉત્કુટુકાસન–પગના બલથી (ઉભડક પગે) બેસવુ.

દશમી પ્રતિમાના ત્રણ આસન–વીરાસન, ગોદોહિકાસન, આમ્રકુબ્જકાસન (૧) વીરાસન–પૃથ્વીપર પગ રાખીને સિંહાસન પર બેઠેલાની પેઠે

राइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा, सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं,

पडिवण्णा' अहोरात्रिन्दिवा भिक्षुप्रतिमा प्रतिपन्ना—आहोरात्रिकीमित्यर्थः । अत्र-रात्रिन्दिवशब्दो रात्रिपरो बोध्य । अस्याश्च षष्ठोपवासिको ग्रामादिभ्यो बहिः प्रलम्बभुजस्तिष्ठति । 'एकराइदिय भिक्खुपडिम पडिवण्णा' एकरात्रिन्दिवाम्=एकरात्रप्रमाणा भिक्षुप्रतिमा प्रतिपन्ना, अत्रापि 'रात्रिन्दिव' शब्दो रात्रिपरो बोध्य । अस्या चाऽष्टमभक्तिको ग्रामाद् बहिरीपदवनतगात्रोऽनिमिषनयन शुष्कपुद्गलनिबद्धदृष्टिर्जिनमुद्रास्थापि-

सन पर बैठे हुए के समान घुटने अलग २ रखकर बिना सहारे स्थिर रहना, (२) गोदोहिकासन—गोदोहिक के समान बैठना अर्थात् जैसे गाय दुहने वाला जब दूध दुहता है तब वह अपने दोनों पैरों के अग्रभाग के सहारे बैठता है, उसी प्रकार बैठना। (३) आम्रकुब्जकासन=आम्रफल के समान कुबडे होकर स्थिर रहना। आठवीं नौमी दशमी प्रतिमा में तीन २ आसन बताये हैं, उन तीन तीन में से किसी एक आसन से रहे। तथा (अहोराइदिय भिक्खुपडिम पडिवण्णा) ग्यारहवीं अहोरात्रिक भिक्षुप्रतिमा के धारक थे। इसमें चउविहार वेला किया जाता है, और गाम के बाहर आठ प्रहरों तक काउसग किया जाता है। (एगराइदिय भिक्खुपडिम पडिवण्णा) बारहवीं एकरात्रिक भिक्षुप्रतिमा के धारक थे। इसमे चउविहार तेले के दिन गाम से बाहर श्मशान भूमि में जाकर किसी एक पुद्गल पर दृष्टि स्थिर करके चार प्रहरों तक कायोत्सर्ग किया जाता है। इन सभी प्रतिमाओं—अभिग्रहविशेषों में सभी का

ગોઠણો જુદા જુદા રાખીને ટેકો લીધા વિના સ્થિર રહેવુ, (૨) ગોદોહિકાસન-ગોદોહિકની પેઠે બેસવુ અર્થાત્ જેમ ગાય દોહવાવાળો જ્યારે દૂધ દોહે છે ત્યારે તે પોતાના બન્ને પગના અગ્રભાગને ટેકે બેસે છે, તેવી જ રીતે બેસવુ (૩) આમ્રકુબ્જકાસન-આમ્રફલની પેઠે કૂબડા થઈને સ્થિર રહેવુ આઠમી નોમી અને દશમી પ્રતિમામા ત્રણ ત્રણ આસન બતાવ્યા છે તે ત્રણ ત્રણમાથી કોઇ પણ એક આસનથી રહેવુ તથા (अहोराइदिय भिक्खुपडिम पडिवण्णा) અહોરાત્ર-દિવસરાતની અગ્યારમી ભિક્ષુપ્રતિમાના ધારકો હતા આમા ચૌવિહાર છઠ કરાય છે, અને ગામની બહાર આઠ પહોરનો કાઉસગ કરાય છે (एकराइदिय भिक्खुपडिम पडिवण्णा) બારમી એકરાત્રિક ભિક્ષુ પ્રતિમાના ધારક હતા આમા ચૌવિહાર તથા અઠ્ઠમને દિવસે ગામથી બહાર શ્મશાન ભૂમિમા જઈને એક પુદ્ગલપર દૃષ્ટિ સ્થિર કરીને કાયોત્સર્ગ કરાય છે આ બધી પ્રતિમાઓમા

तपाद् प्रलम्बितभुजस्तिष्ठति। एतासु प्रतिमासु न सर्वेषामधिकार, किन्तु विशिष्टसहननवतामेव। आह च, 'पडिवज्जइ एयाओ, सघयणधिइजुओ महासत्तो। पडिमाउ भावियप्पा सम्म गुरुणा अणुन्नाओ ॥ १ ॥ इति, 'सत्तसत्तमिय भिक्खुपडिम' सप्तसप्तमिकां भिक्षु-प्रतिमा—सप्त सप्तमानि दिनानि यस्या सा सप्तसप्तमिका, इय च सप्तभिर्दिनाना सप्तकैर्भवति अर्थात्—सप्तभि सप्ताहैरिति। तत्र च प्रथमदिने एका दत्तिर्भक्तस्य, एकैव दत्ति पानकस्य, एव द्वितीयादिषु दिनेषु क्रमेणैकैकदत्तिवृद्ध्या सप्तमदिने सप्त दत्तय। एवम्

अधिकार नहीं है, किन्तु विशिष्ट सहननवाले ही इन प्रतिमाओं का आराधन कर सकते है। कहा भी है—'पडिवज्जइ एयाओ, सघयण-धिइ-जुओ महासत्तो। पडिमाउ भावियप्पा, सम्म गुरुणा अणुन्नाओ ॥" छाया—प्रतिपद्यते एता सहनन-धृति-युतो महासत्त्व । प्रतिमा भावितात्मा, सम्यग्गुरुणा अनुज्ञात ॥ अर्थात्—महासत्त्वशाली, सहनन और धैर्य से युक्त भावितात्मा मुनिजन ही गुरु से सम्यक् अनुज्ञात होकर इन प्रतिमाओं को स्वीकार करते है। तथा (सत्तसत्तमिय भिक्खुपडिम) सात सात है सातवें दिन जिसमे ऐसी भिक्षुप्रतिमा के अर्थात् ऊनपचास दिन की भिक्षुप्रतिमा के धारक थे। यह प्रतिमा सातसप्ताहों मे की जाती है। इसमे प्रथम सप्ताह के प्रथमदिन मे एक दत्ति आहार की और एक दत्ति पानी की ली जाती है, द्वितीय दिन मे दो दत्तियाँ आहार की और दो दत्तियाँ पानी की ली जाती है। इसी तरह प्रतिदिन एक एक दत्ति की वृद्धि से सातवे दिन सात दत्तियाँ आहार की और

અભિગ્રહ વિશેષોમા બધાનો અધિકાર નથી, પરતુ વિશિષ્ટસહનનવાલા જ આ બધી પ્રતિમાઓનુ આરાધન કરી શકે છે કહ્યુ પણ છે—

" पडिवज्जइ एयाओ, सघयण-धिइ-जुओ महासत्तो।
पडिमाउ भावियप्पा, सम्म गुरुणा अणुन्नाओ " ॥

छाया—प्रतिपद्यते एता सहनन-धृतियुतो महासत्त्व ।
प्रतिमा भावितात्मा, सम्यग्गुरुणा अनुज्ञात ॥

અર્થાત્ મહાસત્ત્વશાલી સહનન અને ધૈર્યથી યુક્ત ભાવિતાત્મા મુનિજન સમ્યક્ અનુજ્ઞાત થઈને અર્થાત્ ગુરૂની આજ્ઞા લઈને, પ્રતિમાઓનો સ્વીકાર કરે છે તથા (सत्तसत्तमिय भिक्खुपडिम) સાતછે સાતમો દિવસ જેમા એવી ભિક્ષુપ્રતિમાના અર્થાત્ ઓગણપચાસ દિવસની ભિક્ષુપ્રતિમાના ધારક હતા, આ પ્રતિમા સાત સપ્તાહોમા કરાય છે તેમા પ્રથમ સપ્તાહના પ્રથમ દિવસે એક દત્તિ આહારની અને એક દત્તિ પાણીની લેવાય છે બીજે

ट्टअट्टमियं भिक्खुपडिमं, णवणवमियं भिक्खुपडिमं, दसदस-

अट्ठअट्ठमियं 'भिक्खुपडिम' अष्टाऽष्टमिका भिक्षुप्रतिमाम्, 'णवणवमिय' नवनवमिका क्षुप्रतिमाम्, 'दसदसमिय' दशदशमिका भिक्षुप्रतिमाम्, नवरम्–दत्तिवृद्धि

ल दत्तियाँ पानी की ली जाती है। इसी प्रकार दूसरे सप्ताह से लेकर सातवे ताह तक की दत्तियों के विषय मे भी समझना चाहिये। इस प्रकार आहार और नी की सब दत्तियाँ ३९२ होती है। तथा (अट्ठअट्ठमिय भिक्खुपडिम) अष्टाष्ट- क भिक्षुप्रतिमा के धारक थे। यह भिक्षुप्रतिमा आठ अष्टाहों मे अर्थात् चौसठ नों मे की जाती है। इसमे प्रथम अष्टाह के प्रथम दिन मे एकदत्ति आहार । और एक दत्ति पानी की ली जाती है। प्रत्येक दिन मे एक एक दत्ति की द्धि होने के कारण आठवें दिन मे आठ दत्तियाँ आहार की और आठ दत्तियाँ पानी ी ली जाती हैं। इसी प्रकार अवशिष्ट सातों अष्टाहों के बारे म भी समझना चाहिये। स प्रकार आहार और पानी की कुल दत्तियाँ ५७६ होती हे। तथा (नवनवमिय भिक्खुपडिम) नवनवमिका भिक्षुप्रतिमा के धारक थे। यह भिक्षुप्रतिमा नौ नवाहों , अर्थात् ८१ दिनों मे पूरी होती है। प्रत्येक नौ दिनों के अन्तिम दिन मे एक एक त्ति की वृद्धि होने से नौ दत्तियाँ आहार की और नौ दत्तियाँ पानी की होती है।

દિવસે બે દત્તિ આહારની અને બે દત્તિ પાણીની લેવાય છે એવી રીતે પ્રતિદિન એક એક દત્તિના વધારાથી સાતમે દિવસે ૭ દત્તિ આહારની અને ૭ દત્તિ પાણીની લેવાય છે આ પ્રકારે બીજા સપ્તાહથી લઈને ૭ મા સપ્તાહ સુધીની દત્તિઓના વિષયમા પણ સમજી લેવુ જોઈએ આ પ્રકારે આહાર અને પાણીની બધી દત્તિઓ ૩૯૨ થાય છે તથા (अट्ठअट्ठमिय भिक्खुपडिम) અષ્ટાષ્ટમિક ભિક્ષુપ્રતિમાના ધારકો હતા આ ભિક્ષુપ્રતિમા આઠ અષ્ટાહોમા અર્થાત્ ચોસઠ દિવસોમા કરાય છે તેમા પ્રથમ અષ્ટાહના (અઠવાડિયાના) પ્રથમ દિવસે એક દત્તિ આહારની અને એક દત્તિ પાણીની લેવાય છે પ્રત્યેક દિવસે એક એક દત્તિનો વધારો થવાના કારણે આઠમે દિવસે આઠ દત્તિઓ આહારની અને આઠ દત્તિઓ પાણીની લેવાય છે એજ પ્રકારે બાકીના ૭ અષ્ટાહો (અઠવાડિયા)ના બારામા પણ સમજવુ જોઇએ એવી રીતે આહાર અને પાણીની કુલ દત્તિઓ ૫૭૬ થાય છે તથા (नवनवमिय भिक्खुपडिम) નવનવમિકા ભિક્ષુપ્રતિમાના ધારકો હતા આ ભિક્ષુપ્રતિમા નવનવાહોમા અર્થાત ૮૧ દિવસોમા પૂરી થાય છે પ્રત્યેક નવ

मियं भिक्खुपडिमं, खुड्डियं मोयपडिमं पडिवण्णा, महल्लियं मोय-
पडिमं पडिवण्णा, जवमज्झं चंदपडिमं पडिवण्णा, वइर-

सङ्ख्याक्रमेण कार्या। केचित् 'खुड्डियं मोयपडिम पडिवण्णा' क्षुल्लिका मोक-
प्रतिमा प्रतिपन्ना, अस्या क्षुल्लकत्व महत्यपेक्षया बोध्यम्। तथा 'महल्लिय मोय-
पडिम पडिवण्णा' महतीं मोकप्रतिमा प्रतिपन्ना। अनयो प्रतिमयोर्व्याख्या ग्रन्था-
न्तरे विलोकनीया। 'जवमज्झ चंदपडिम पडिवण्णा' यवमध्या चन्द्रप्रतिमा प्रति
पन्ना—यवस्येव मध्य यस्या सा यवमध्या, चन्द्र इव कलावृद्धिहानिभ्या या प्रतिमा
सा चन्द्रप्रतिमा, तथा हि शुक्लप्रतिपदि—एक कवलम् अभ्यवहृत्य प्रतिदिनमेकैक-

इस प्रकार आहार और पानी की सब दत्तियाँ ८१० होती हैं। तथा (दसदसमिय
भिक्खुपडिम) दशदशमिका भिक्षुप्रतिमा के धारक थे। यह भिक्षुप्रतिमा दश दशाहों
में, अर्थात् सौ दिनों में पूरी होती है। इसमें प्रत्येक दशवें दिनमें दस दत्तियाँ आहार
की और दस दत्तियाँ पानी की होती हैं। इस प्रकार आहार और पानी की कुल
दत्तियाँ ११०० होती है। कितनेक मुनिजन (खुड्डिय मोयपडिम पडिवण्णा) क्षुल्लक
मोकप्रतिमा के धारक थे। तथा—(महल्लिय मोयपडिम पडिवण्णा) महामोकप्रतिमा के
धारक थे। तथा कितनेक मुनिजन (जवमज्झ चंदपडिम पडिवण्णा) यवमध्य चन्द्र-
प्रतिमा के धारक थे। इस प्रतिमा मे शुक्ल पक्ष की एकम तिथि में एक कवल आहार
किया जाता है। प्रतिदिन एक एक कवल की वृद्धि से पूर्णिमा में १५ कवल आहार

દિવસોના અતના દિવસે એક એક દત્તિની વૃદ્ધિ થવાથી નવ દત્તિઓ આહા
રની અને નવ દત્તિઓ પાણીની થાય છે આ પ્રકારે આહાર અને પાણીની
બધી દત્તિઓ ૮૧૦ થાય છે તથા (दसदसमिय भिक्खुपडिम) દશદશમિકા ભિક્ષુ
પ્રતિમાના ધારકો હતા આ ભિક્ષુપ્રતિમા દશ દશાહોમા અર્થાત સો દિવસોમા
પૂરી થાય છે એમા પ્રત્યેક દશમા દિવસે દશ દત્તીઓ આહારની અને દશ
દત્તિઓ પાણીની હોય છે આ પ્રકારે આહાર અને પાણીની કુલ દત્તિઓ ૧૧૦૦
થાય છે કેટલાક મુનિજન (खुड्डिय मोयपडिम पडिवण्णा) ક્ષુલ્લકમોકપ્રતિમાના
ધારક હતા તથા (महल्लिय मोयपडिम पडिवण्णा) મહામોક પ્રતિમાના
ધારક હતા તથા કેટલાક મુનિજન (जवमज्झ चंदपडिम पडिवण्णा)
યવમધ્યચન્દ્રપ્રતિમાના ધારક હતા આ પ્રતિમામા શુક્લપક્ષની એકમ તિથિમા
એક કોળિઆનો આહાર કરાય છે પ્રતિદિન એક એક કોળિઆનો વધારો

मज्झं चंदपडिमं पडिवण्णा, विवेगपडिमं विओसग्गपडिमं उव-

कवलवृद्ध्या पञ्चदश पौर्णमास्या, कृष्णप्रतिपदि च पञ्चदशैव भुक्त्वा द्वितीयादौ प्रतिदिनम् एकैककवलहान्या अमावास्यायामेकमेव यस्या भुङ्क्ते सा स्थूलमध्यत्वाद् यवमध्येति ता प्रतिपन्ना । 'वइर-(वज्र)मज्झ चंदपडिमं पडिवण्णा' वज्रमध्या चन्द्रप्रतिमा प्रतिपन्ना —वज्रस्येव मध्य यस्या सा तथा, यस्या हि कृष्णप्रतिपदि पञ्चदश कवलान् भुक्त्वा तत प्रतिदिनमेकैकहान्या अमावास्यायामेक, शुक्लप्रतिपदपि एकमेव, ततो द्वितीयादौ पुनरेकैकवृद्ध्या पौर्णमास्या पञ्चदश भुङ्क्ते सा तनुमध्यत्वाद्वज्रमध्या इति ता प्रति-

किया जाता है। तथा कृष्णपक्ष की एकम तिथि मे १५ कवल आहार किया जाता है, और द्वितीया से एक एक कवल घटाने से अमावास्या तिथि में मात्र एक कवल आहार किया जाता है। जैसे-यव का मध्यभाग स्थूल होता है, उसी प्रकार इस प्रतिमा का भी मध्यभाग पूर्णिमा और कृष्ण पक्षकी एकम, पन्द्रह पन्द्रह कवल आहार-लेने के कारण स्थूल है। इसलिये इस प्रतिमा को 'यवमध्यचन्द्रप्रतिमा' कहते हैं। तथा-कितनेक मुनिजन (वइरमज्झ चंदपडिमं पडिवण्णा) वज्रमध्य चन्द्रप्रतिमा को धारण किये हुए थे। यह प्रतिमा कृष्णपक्ष की एकम के दिन पन्द्रह कवल आहार कर के प्रारम्भ की जाती है। प्रतिदिन एक एक कवल घटाने से अमावास्या मे एक कवल तथा-शुक्लपक्ष की एकमतिथि मे एक कवल आहार किया जाता है। फिर प्रतिदिन एक एक कवलकी वृद्धि से पूर्णिमा के दिन पन्द्रह कवल आहार लिया जाता

કરવાનો હોવાથી પૂનમના દિવસે ૧૫ કોળિઆનો આહાર કરાય છે, તથા કૃષ્ણપક્ષની એકમ તિથિએ ૧૫ કોળિઆનો આહાર કરાય છે, અને બીજથી એક એક કોળિઆનો આહાર ઘટાડતા અમાવાસ્યા તિથિમા માત્ર એક કોળિઆનો આહાર કરાય છે જેમ યવનો મધ્યભાગ સ્થૂલ હોય છે તેવી જ રીતે આ પ્રતિમામા પણ મધ્યભાગ પૂનમ અને કૃષ્ણપક્ષની એકમ, પદર પદર કોળિઆ આહાર લેવાને કારણે, સ્થૂલ છે, તેથી આ પ્રતિમાને 'યવમધ્ય ચદ્રપ્રતિમા' કહે છે તથા કેટલાક મુનિજન (वइरमज्झं चंदपडिमं पडिवण्णा) વજ્રમધ્યચદ્રપ્રતિમાને ધારણ કરવાવાળા હતા આ પ્રતિમા કૃષ્ણપક્ષની એકમને દિવસે પદર કોળિઆ આહાર લઈને શરૂ કરાય છે પ્રતિદિન એક એક કોળિઓ આહાર ઘટાડતા અમાવાસ્યાને દિવસે એક કોળિઓ તથા શુકલ પક્ષની એકમ તિથિએ એક કોળિઓ આહાર કરાય છે પછી પ્રતિદિન

हाणपडिमं पडिसंलीणपडिमं पडिवण्णा संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥ सू. २४ ॥

पन्ना । तथा-केचित् 'विवेगपडिमं' विवेकप्रतिमा-विवेचनं विवेकः=त्यागः, स च आन्तराणां कषायादीनां बाह्यानां च गणशरीरानुचितभक्तपानादीनाम्, तस्य प्रतिमा=प्रतिपत्तिर्विवेकप्रतिमा तां, 'विओसग्गपडिमं' व्युत्सर्गप्रतिमा=कायोत्सर्गप्रतिमाम्, 'उवहाणपडिमं' उपधानप्रतिमाम्-मोक्षं प्रति उप=सामीप्येन दधाति=नयतीत्युपधानम्-अनशनादिकं तपस्तद्विषया प्रतिमा=अभिग्रहस्तां, तथा 'पडिसंलीणपडिमं' प्रतिसंलीनप्रतिमा=क्रोधादिनिरोधाऽभिग्रहं 'पडिवण्णा' प्रतिपन्ना संयमेन तपसा आत्मानम् भावयन्तः विहरन्ति ॥ सू० २४ ॥

है। जैसे वज्रका मध्यभाग पतला होता है उसी प्रकार इस प्रतिमा का भी मध्यभाग अमावास्या और शुक्लपक्ष की एकम, एक एक कवल आहार लेने के कारण पतला है, इसीलिये इस प्रतिमा को 'वज्रमध्यचन्द्रप्रतिमा' कहते हैं। तथा कितनेक मुनिजन 'विवेगपडिमं' विवेकप्रतिमाके अर्थात् आभ्यन्तरिक कषायादिकों के, तथा-गण, स्वशरीर और अकल्पनीय भक्तपानादिकों के त्याग की प्रतिमा के, 'विओसग्गपडिमं' व्युत्सर्गप्रतिमा के, अथात् कायोत्सर्गप्रतिमा के, 'उवहाणपडिमं' उपधान प्रतिमा के अर्थात् अनशनादिरूप उग्र तपस्या की प्रतिमा के, तथा-(पडिसंलीणपडिमं) प्रतिसलीन प्रतिमा के अथात् क्रोध आदि कषायों के निरोध करने के अभिग्रह के (पडिवण्णा) धारक थे। पूर्वोक्त सभी प्रकार के मुनिराज सत्रह प्रकार के संयम से

એક એક કોળિઓ વધારતા જઈ પૂનમને દિવસ ૧૫ દર કોળિઆ આહાર લેવાય છે જેમ વજ્રનો મધ્યભાગ પાતળો હોય છે તેવી જ રીતે આ પ્રતિમામાં પણ મધ્યભાગ-અમાવાસ્યા અને શુક્લ પક્ષની એકમ, એક એક કોળિઓ આહાર લેવાના કારણે પાતળો છે, એ માટે જ આ પ્રતિમાને "વજ્રમધ્ય-ચન્દ્રપ્રતિમા" કહેવાય છે તથા કેટલાએક મુનિજન (विवेगपडिम) વિવેક-પ્રતિમાના અર્થાત આભ્યન્તરિક કષાય આદિના, તથા-ગણના, પોતાના-શરીરના અને અકલ્પનીય ભોજન પાન આદિના ત્યાગની પ્રતિમાના(विओसग्गपडिम) વ્યુત્સર્ગપ્રતિમા એટલે કાયોત્સર્ગપ્રતિમાના, (उवहाणपडिम) ઉપધાનપ્રતિમાના અર્થાત્ અનશન આદિરૂપ ઉગ્ર તપસ્યાની પ્રતિમાના, તથા (पडिसंलीणपडिम) પ્રતિસંલીનપ્રતિમાના અર્થાત્ ક્રોધ આદિ કષાયોના નિરોધ કરવાના અભિગ્રહના (पडिवण्णा) ધારક હતા પૂર્વોક્ત સર્વ પ્રકારના મુનિરાજ સત્તર પ્રકારના સંય-

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीर-स्स अंतेवासी बहवे थेरा भगवंतो जाइसंपण्णा कुलसंपण्णा बलसंपण्णा रूवसंपण्णा विणयसंपण्णा णाणसंपण्णा दंसणसंपण्णा

टीका—'तेण कालेण' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'अंतेवासी' अन्तेवासिन—शिष्या बहव स्थविरा = चिरतरकाल-पालितश्रामण्यपर्याया, भगवन्त =सयमशोभाशालिन, एषा विशेषणान्याह—'जाइ-सपण्णा' जातिसम्पन्ना -उत्तममातृकवशयुक्ता, एवम् 'कुलसपण्णा' कुलसम्पन्ना —श्रेष्ठ-पैतृकवशयुक्ता, 'बलसपण्णा' बलसम्पन्ना —बल—सहननसमुत्थित पराक्रम, तेन सम्पन्ना -युक्ता, 'रूवसंपण्णा' रूपसम्पन्ना —रूपम्—आकृति -सुन्दराऽऽकारस्तेन युक्ता। 'विण-

---

तथा बारह प्रकार के तप से आत्मा को भावित करते हुए विचरते थे ॥ सू० २४ ॥

'तेण कालेण तेण समएण' इत्यादि.

(**तेण कालेण तेणं समएण**) उसकाल उस समय मे (**समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी बहवे थेरा भगवतो**) श्रमण भगवान् महावीर के अन्तेवासी—शिष्य अनेक स्थविर भगवन्त थे। दीक्षापर्याय से युक्त एव धर्म से प्रचलित को पुन धर्म मे स्थिर करनेवाले को स्थविर कहते हैं। सयमशोभासे जो युक्त हो उन्हे 'भगवन्त' कहते है। ये (**जाइसंपण्णा**) जातिसपन्न—उत्तममातृवश के थे, और (**कुलसपण्णा**) कुल—सम्पन्न—उत्तमपितृवश के थे। (**बलसंपण्णा**) सहनननामकर्मसे प्राप्त बल से विशिष्ट थे। (**रूवसपण्णा**) सुन्दर आकृतिवाले थे। (**विणयसपण्णा**)जिससे अष्टविध कर्ममल

મથી તથા બાર પ્રકારના તપથી આત્માને ભાવિત કરતા વિચરતા હતા (સૂ ૨૪)

'तेण कालेण तेण समएणं' ઈત્યાદિ

(**तेण कालेणं तेण समएण**) તે કાલ તે સમયમા (**समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी बहवे थेरा भगवतो**) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરના અતેવાસી—શિષ્ય અનેક સ્થવિર ભગવતો હતા ધર્મથી ચલાયમાન થતા સાધુઓને ફરીથી ધર્મમા સ્થિર કરવાવાળાને સ્થવિર કહે છે જે સંયમ-શોભાવાળા હોય તેમને ભગવત કહે છે તેઓ (**जाइसपण्णा**) જાતિસપન્ન—ઉત્તમ માતૃવશના હતા, અને (**कुलसपण्णा**) કુલ સપન્ન—ઉત્તમ પિતૃવશના હતા (**बलसपण्णा**) સહનનનામકર્મથી પ્રાપ્ત થયેલ બલવડે વિશિષ્ટ હતા (**रूवसपण्णा**) સુદર આકૃતિવાળા હતા (**विणयसपण्णा**) જેનાથી

चरित्तसंपण्णा लज्जासंपण्णा लाघवसंपण्णा ओयंसी तेयंसी

यसपण्णा' विनयसम्पन्ना –विनीयतेऽपनीयते- सक्लेशकारकमष्टविधं कर्म येन स विनय – अभ्युत्थानादि–गुरुसेवालक्षण तेन युक्ता, 'णाणसपण्णा' ज्ञानसपन्ना, ज्ञान=श्रुतचारित्र-लक्षण तेन युक्ता, 'दसणसपण्णा' दर्शनसम्पन्ना –दर्शन–सम्यक्त्व तेन युक्ता 'चरित्त-सपण्णा' चरित्रसम्पन्ना चरित्र-समितिगुप्त्यादिक तेन युक्ता, 'लज्जासपण्णा' लज्जा-सम्पन्ना लज्जा–सयमविराधनाया हृदयसकोचरूपा तया युक्ता, 'लाघवसपण्णा' लाघवसम्पन्ना लाघव द्रव्यतो ऽल्पोपधिता, भावतो गौरवत्रयत्याग –तेन युक्ता, 'ओयसी' ओजस्विन, ओजो-मानसी शक्तिस्तद्वन्त, 'तेयसी' तेजस्विन –तेज अन्तर्बहिर्देदीप्यमानत्व तेजोलेश्यादि वा तद्वन्त, 'वचसी' वचस्विन, वच --आदेयवचन–सौभाग्याद्युपेतमेषामस्तीति ते वचस्विन,

---

अपनीत–नष्ट होता है वह विनय है, ऐसे विनय से युक्त थे। गुरुओं के आने एव जाने आदि पर खडे होना इत्यादिक क्रियाएँ सब विनय के ही अन्तर्गत हैं। (णाण-सपण्णा) विशिष्टज्ञान से सपन्न थे। (दसण-सपण्णा) विशिष्टदर्शनसे–सम्यक्त्व से सपन्न थे। (चरित्तसपण्णा) समिति–गुप्ति–आदिरूप चारित्र से सपन्न थे। (लज्जा-सपन्ना) सयमविराधनामे जो स्वाभाविक हृदयका सकोच उसे लज्जा कहते हैं, उससे वे युक्त थे। (लाघवसपण्णा) अल्प–उपधिरूप द्रव्यलाघव एव तीन गौरवका परि-त्यागरूप भावलाघव से युक्त थे। (ओयसी) ये ओजस्वी थे, अर्थात् तप और सयम के प्रभाव से युक्त थे। (तेयसी) ये तेजस्वी थे, अर्थात् भीतर और बाहर देदीप्यमान थे, अथवा द्रव्यभावरूप तेजोलेश्या आदिसे युक्त थे। (वचसी) ये आदेयवचन से,

---

અષ્ટવિધ કર્મમલ અપનીત–નષ્ટ થાય છે તેને વિનય કહે છે એવા વિનયથી યુક્ત હતા ગુરૂઓ આવે તેમ જ જાય ત્યારે ઉભા થવુ વિગેરે ક્રિયાઓ બધી વિનયની જ અતર્ગત છે (णाणसपण्णा) વિશિષ્ટજ્ઞાનવાળા હતા (दसणसंपण्णा) વિશિષ્ટ દર્શનથી–સમ્યક્ત્વથી સપન્ન હતા (चरित्तसपण्णा) સમિતિગુપ્તિ–આદિરૂપ ચારિત્રથી સપન્ન હતા (लज्जासपण्णा) સયમવિરાધનામા જે સ્વાભાવિક હૃદયનો સકોચ થાય તેને લજ્જા કહે છે તેનાથી યુક્ત હતા (लाघवसपण्णा) અલ્પ–ઉપધિરૂપ દ્રવ્યલાઘવ તેમજ ત્રણ ગૌરવના પરિત્યાગરૂપ ભાવલાઘવથી યુક્ત હતા. (ओयसी) તેઓ ઓજસ્વી હતા, અર્થાત્ તપ અને સયમના પ્રભાવવાળા હતા (तेयसी) તેઓ તેજસ્વી હતા અર્થાત્ અદર અને બહાર દેદીપ્યમાન હતા, અથવા દ્રવ્યભાવરૂપ તેજોલેશ્યા આદિવાળા હતા (वचसी) તેઓ આદેયવચનવાળા, અથવા તપ સયમના

वच्चंसी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जिइंदिया जियणिद्दा जियपरीसहा जीवियास-मरण-भय-विप्पमुक्का वय-

अथवा-वर्च तेज प्रभाव-तद्वन्तो वर्चस्विन । 'जससी' यशस्विन तप सयमसमाराधनख्यातिप्राप्ता । 'जियकोहा' जितक्रोधा -जित क्रोधो यैस्ते जितक्रोधा, क्रोधजय -उदयप्राप्तक्रोधनिष्फलीकरणतो ज्ञातव्य । 'जियमाणा' जितमाना, तत्र मान -मन्यतेऽनेनेति मान -अभिमान -ज्ञानादिना अहमनुपमोऽस्मीत्यभिमानरूप -गर्व इति यावत् । 'जियमाया' जितमाया - तत्र माया-परवञ्चनाभिप्रायेण शरीराकारनपथ्यमनोवाक्कायकौटिल्यकरणरूपा, सा जिता यैस्ते तथा, उदयप्राप्तपरवञ्चनकर्मनिष्फलीकारका, 'जियलोभा' जितलोभा 'जिइंदिया' जितेन्द्रिया 'जियणिद्दा' जितनिद्रा 'जियपरीसहा' जितपरीषहा 'जीवियास-मरण-भय-विप्पमुक्का' जीविताऽऽशा-मरण-भय-विप्रमुक्ता -जीवितस्य-प्राण-

अथवा तपसयमके प्रतापसे युक्त थे। (जससी) ये यशस्वी थे, अर्थात् तप और सयमकी आराधना से प्रसिद्धि पाये हुए थे। (जियकोहा) क्रोधको जिन्होंने जीत लिया था। (जियमाणा) मानको जिन्होंने दूर कर दिया था, अर्थात् "मै ज्ञानादिक गुणोंसे अनुपम हूँ" इस प्रकार अभिमानरूप गर्वको जिन्होंने परास्त कर दिया था। (जियमाया) दूसरोंको वचन करनेके अभिप्रायसे वेष बनाना, एव मन-वचन और कायको कुटिलतामे परिणत करना इसका नाम माया है, इस मायाका भी जिन्होंने अपनी शुभपरिणति द्वारा निवारण कर दिया था। (जियलोभा) इसी प्रकार लोभको भी जिन्होंने नष्ट कर दिया था। (जिइंदिया) इन्द्रियोंको जिन्होंने अच्छी तरह अपने वशमे कर रखा था। (जियणिद्दा जियपरीसहा) निद्रा और परीषहो को जिन्होंने जीत लिया था। (जिवियास-मरण-भय-विप्पमुक्का) जीनेकी आशा एव मरणके

प्रतापवाळा હતા (जससी) તેઓ યશસ્વી હતા, અર્થાત્ તપ અને સયમની આરાધનાથી પ્રસિદ્ધિ પામેલા હતા (जियकोहा) ક્રોધ જેમણે જીત્યો છે (जियमाणा) માન જેઓએ દૂર કરેલુ છે, અર્થાત્ 'હુ જ્ઞાનાદિક ગુણોથી અનુપમ છુ' એવા અભિમાનરૂપ ગર્વને જેઓએ પરાસ્ત કર્યો છે (जियमाया) બીજાની વચના-છેતરપિંડી કરવાના હેતુથી વેષ બનાવવા તેમ જ મન વચનકાયાથી કુટિલતા કરવી તેનુ નામ માયા છે આ માયાનુ પણ જેઓએ પોતાની શુભપરિણતિથી નિવારણ કર્યું છે (जियलोभा) તેવી જ રીતે લોભનો પણ જેઓએ નાશ કર્યો છે (जिइंदिया) જેઓએ સારીરીતે ઇન્દ્રિયોને પોતાને વશ કરી લીધી હતી (जियणिद्दा जियपरीसहा) નિદ્રા અને પરીષહોને જેઓએ જીતી

प्पहाणा गुणप्पहाणा करणप्पहाणा चरणप्पहाणा णिग्गहप्प-
हाणा निच्छयप्पहाणा अज्जवप्पहाणा मद्दवप्पहाणा लाघवप्पहाणा

धारणस्य-आशा जीविताऽऽशा, मरणस्य भय=त्रास, एताभ्या विप्रमुक्ता, 'वयप्पहाणा' व्रतप्रधाना —व्रत-सयम प्रधानम्—उत्तम—अन्यान्भिक्षुकाऽपेक्षया निर्ग्रन्थवाद् येषा ते व्रतप्रधाना, अथवा व्रतेन—सयमेन प्रधाना श्रेष्ठा—निर्ग्रन्थश्रमणा इत्यर्थ । ते च न केवल व्यवहारत एव इत्यत आह—'गुणप्पहाणा' गुणप्रधाना —गुणा कारुण्यादय, यथोक्त-'परोपकारैकरतिर्निरीहता, विनीतता सत्यमनुग्रचित्तता । श्रुते विनोदोऽनुदिन न दीनता, गुणा इमे सत्त्वनता स्वभावजा । इति, एतैर्गुणै प्रधाना । 'करणप्पहाणा' करण-प्रधाना —करण=क्रिया, तचेह पिण्डविशुद्ध्यादिरूप, तेन प्रधाना, अथवा करण—पिण्डविशु-द्ध्यादिरूप प्रधान येषा ते करणप्रधाना, 'चरणप्पहाणा' चरणप्रधाना —चरण=महा-व्रतादिमूलगुणरूप त प्रधाना, 'णिग्गहप्पहाणा' निग्रहप्रधाना -इन्द्रियनोइन्द्रियदमनप्रधाना, 'निच्छयप्पहाणा' निश्चयप्रधाना —निश्चय —तत्त्वनिर्णय, तत्र प्रधाना, अथवा अव-श्यकरणीयासु सयमक्रियासु निश्चितचित्ता, 'अज्जवप्पहाणा' आर्जवप्रधाना —आर्जव—माया-राहित्य तत्प्रधाना, कर्पूरवदन्तर्बहिर्निर्मला, 'मद्दवप्पहाणा' मार्दवप्रधाना -मार्दव-मानो-

भयसे जो सर्वथा विप्रमुक्त थे । (वयप्पहाणा) व्रतपालन करनेके कारण प्रधान थे, (गुण-प्पहाणा) क्षान्त्यादि गुणोंसे प्रधान थे, (करणप्पहाणा) पिण्डविशुद्ध्यादि रूप मुनियोंकी क्रियामे प्रधान थे, (चरणप्पहाणा) महाव्रत आदि मूल गुणोंसे प्रधान थे, (णिग्गहप्पहाणा) इन्द्रिय, नोइन्द्रिय (मनके) दमन करनेमे प्रधान थे, (णिच्छयप्पहाणा) तत्त्वनिर्णय तथा अवश्य-करणीय सयम क्रियामें प्रधान थे। (अज्जवप्पहाणा) सरलतामे प्रधान थे, अर्थात् कपूर के तुल्य अन्तर बाहर निर्मल थे। (मद्दवप्पहाणा) मानके उदयका निरोध करनेवाले

લીધા હતા, (जीवियास मरण भय-निप्पमुक्का) જીવવાની આશા તેમજ મરણના ભયથી જેઓ સર્વથા મુક્ત હતા (वयप्पहाणा) વ્રતપાલન કરવાના કારણે પ્રધાન હતા, (गुणप्पहाणा) ક્ષાન્તિ આદિ ગુણોથી પ્રધાન (મુખ્ય) હતા, (करणप्पहाणा) પિંડવિશુદ્ધિ-આદિરૂપ મુનિઓની ક્રિયામા પ્રધાન હતા, (चरणप्पहाणा) મહાવ્રત આદિ મૂલગુણોથી પ્રધાન હતા, (णिग्गहप्पहाणा) ઇંદ્રિય નોઇંદ્રિયનું દમન કરવામા પ્રધાન હતા, (णिच्छयप्पहाणा) તત્ત્વ નિર્ણય તથા અવશ્ય કરવાની સયમક્રિયામા પ્રધાન હતા (अज्जवप्पहाणा) સરલતામા પ્રધાન હતા, અર્થાત્ કપૂરની પેઠે અ તર બહારથી નિર્મળ હતા, (मद्दवप्पहाणा) માનના ઉદયનો નિરોધ કરવાવાળા અર્થાત્ જાત્યાદિ આઠ પ્રકા

खंतिप्पहाणा मुत्तिप्पहाणा विज्जापहाणा मंतप्पहाणा वेयप्पहाणा वंभप्पहाणा नयप्पहाणा नियमप्पहाणा सच्चप्पहाणा सोयप्पहाणा

दयनिरोध, तत्प्रधाना –जात्याद्यष्टविधमदवर्जिता, 'लाघवप्पहाणा' लाघवप्रधाना, लाघव-द्रव्यतोऽल्पोपधिच भावतो गौरवत्रयत्याग, तत्प्रधाना। 'खंतिप्पहाणा' क्षान्तिप्रधाना - क्षान्ति -क्रोधोदयनिरोध -तत्प्रधाना। 'मुत्तिप्पहाणा' मुक्तिप्रधाना –मुक्तिर्लोभोदयनिरोध, तत्प्रधाना, निर्लोभा इत्यर्थ। 'विज्जापहाणा' विद्याप्रधाना –वेदन विद्या–ससाधना रोहिणीप्रज्ञप्तिप्रभृतिर्देव्यधिष्ठिता सा प्रधान येषा ते विद्याप्रधाना। 'मतप्पहाणा' मन्त्रप्रधाना, 'वेयप्पहाणा' वेदप्रधाना –वेद्यते ज्ञायते जीवाजीवादिस्वरूपमेभिरिति वेदा - आचाराङ्गादय आगमा, तत्प्रधाना, 'वभप्पहाणा' ब्रह्मप्रधाना, ब्रह्म–ब्रह्मचर्य–कुश-लानुष्ठान तत्प्रधाना। 'नयप्पहाणा' नयप्रधाना –नयन्ति बोधयन्ति अनेकधर्मात्मकवस्तुन एकाशम् इति नया –नैगमादय सप्त, तत्प्रधाना, 'नियमप्पहाणा' नियमप्रधाना, नियमो-द्रव्य-क्षेत्रकालभावतो विविधाभिग्रहग्रहणम् तत्प्रधाना, 'सच्चप्पहाणा' सत्यप्रधाना –जीवा-

अर्थात् जात्यादि आठ प्रकारके मदसे रहित थे। (लाघवप्पहाणा) द्रव्यसे अल्प-उपधियुक्त होने कारण तथा भावसे गौरवत्रयरहित होनेके कारण प्रधान थे। (खंति-प्पहाणा) क्रोधके उदयका निरोध करनम प्रधान थे। (मुत्तिप्पहाणा) लोभ के उदयका निरोध करने मे प्रधान थे। (विज्जापहाणा) रोहिणी प्रज्ञप्ति आदि विद्याओंसे प्रधान थे। (मतप्पहाणा) मन्त्रोंसे प्रधान थे। (वेयप्पहाणा) आचाराङ्ग आदि शास्त्रों से प्रधान थे। (वभप्पहाणा) ब्रह्मचर्यसे प्रधान थे। (नयप्पहाणा) नैगमादि सात–नयोंके स्वरूप निरूपण करनेम प्रधान थे। (निगमप्पहाणा) द्रव्य क्षेत्र काल भावसे विविध प्रकार के अभिग्रह करनेम प्रधान थे। (सच्चप्पहाणा) जीवा-

રના મદથી રહિત હતા, (लाघवप्पहाणा) દ્રવ્યથી અલ્પ–ઉપધિવાળા હોવાના કારણે તથા ભાવથી ત્રણ ગૌરવથી રહિત હોવાના કારણે પ્રધાન હતા (खंति-प्पहाणा) ક્રોધના ઉદયનો નિરોધ કરવામા પ્રધાન હતા, (मुत्तिप्पहाणा) લોભના ઉદયનો નિરોધ કરવામા પ્રધાન હતા, (विज्जापहाणा) રોહિણી પ્રજ્ઞપ્તિ આદિ વિદ્યાઓમા પ્રધાન હતા (मतप्पहाणा) મત્રોથી પ્રધાન હતા (वेयप्पहाणा) અચારાગ આદિ શાસ્ત્રોથી પ્રધાન હતા (वभप्पहाणा) બ્રહ્મચર્યથી પ્રધાન હતા, (नयप्पहाणा) નૈગમ આદિ સાત નયોના સ્વરૂપ નિરૂપણ કરવામા પ્રધાન હતા (नियमप्पहाणा) દ્રવ્ય–ક્ષેત્ર–કાલ–ભાવથી વિવિધ પ્રકારના અભિ-ગ્રહ કરવામા પ્રધાન હતા, (सच्चप्पहाणा) જીવ અજીવ આદિ પદાર્થોના

चारुवण्णा लज्जा-तवस्सी-जिइंदिया सोही अणियाणा अप्पोसुया

जीवादिपदार्थाना यथावस्थितस्वरूपकथन सत्य तत्प्रधाना, 'सोयप्पहाणा' शौचप्रधाना- शौचम्-अन्त करणशुद्धिरूपम्, तत्प्रधाना । यद्यप्यत्र चरणकरणग्रहणेऽप्यार्जवादिक गृहीत भवति, तथापि आर्जवादीना पृथक्कथन प्रधानताख्यापनार्थम्-इत्यवगन्तव्यम् । 'चारुवण्णा' चारुवर्णा -वर्ण -कान्ति, कीर्ति, मतिश्च;-चारुर्वर्णो येषा ते, गौरवर्णयुक्ता, अथवा उत्तमकीर्तिमन्त, प्रशस्तमतियुक्ता वा, 'लज्जा-तव-स्सी जिइंदिया' लज्जातप -श्री-जितेन्द्रिया -लज्जया=सयमविराधनाया हृदयसकोचरूपया तप श्रिया=तपस्तेजसा जितानि इन्द्रियाणि यैस्ते तथा, यद्यपि जितेन्द्रिया इति प्रागुक्त, तथाप्यत्र लज्जातप श्रीविशेषित वाम पुनरुक्तिदोष । 'सोही' शोधय -शोधियोगात् शोधिरूपा -शुद्धा -अकलुषहृदया इत्यर्थ,

जीवादि पदार्थोके यथावस्थित स्वरूपकथनको सत्य कहते हैं, उससे वे प्रधान थे। (सोयप्पहाणा) अन्त करणकी शुद्धिको शौच कहते है, उसमें वे प्रधान थे। (चारुवण्णा) वर्णशब्दका प्रयोग कान्ति, कीर्त्ति एव मतिमे होता है। इस अपेक्षासे ये सब गौरवर्ण विशिष्ट थे, अथवा उत्तमकीर्तिमपन्न थे, या उत्तमबुद्धि-आत्मकल्याणमें आगर अधिकाधिकरूपसे प्रेरणा करनेवाली बुद्धिसे युक्त थे। (लज्जा-तव-स्सी-जिइंदिया) लज्जा-सयमविराधनामें सकोच, एव तप श्री के प्रभावसे इन्होंने इन्द्रियोंको जीत लिया था। यद्यपि "जिइंदिया" इस पद-द्वारा उनमें जितेन्द्रियता प्रकट कर दी गई है, फिर भी यहा पर जो पुन जितेन्द्रियता वर्णित हुई है, वह लज्जा एव तपके प्रभाव से उनमें जितेन्द्रियता थी यह विशेषरूपसे कथित हुआ है, अत इस कथनमे पुन

યથાવસ્થિત સ્વરૂપનુ કથન સત્ય કહેવાય, તેમા તેઓ પ્રધાન હતા (સોયપ્પહાણા) અ ત કરણની શુદ્ધિને શૌચ કહે છે, તેમા તેઓ પ્રધાન હતા (ચારુવણ્ણા) વર્ણ શબ્દનો પ્રયોગ કાતિ, કીર્તિ તેમજ મતિમા થાય છે આ અપેક્ષાએ તેઓ બધા ગૌરવર્ણવિશિષ્ટ હતા, અથવા ઉત્તમ કીર્તિ-સ પન્ન હતા, અથવા ઉત્તમબુદ્ધિ-આત્મ કલ્યાણમા આગળ આગળ વધારેમા વધારે રૂપથી પ્રેરણા કરવાવાળી બુદ્ધિવાળા હતા (लज्जा-तवस्सी-जिइंदिया) લજ્જા=સ યમવિરાધનામા સ કોચ તેમ જ તપશ્રીના પ્રભાવથી તેઓએ ઇદ્રિઓને જીતી લીધી હતી જો કે "जिइंदिया" એ પદથી તેમનામા જિતે-દ્રિયપણુ પ્રકટ કરી દીધેલુ છે, છતા પણ અહી જે ફરીને જિતેદ્રિયતાનુ વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે તે લજ્જા તેમજ તપના પ્રભાવથી તેમનામા જિતેદ્રિયપણુ હતુ તેનુ વિશેષરૂપથી કથન કર્યું છે માટે આ કથનમા પુન

अवहिल्लेसा अप्पडिलेस्सा सुसामण्णरया दंता इणमेव णिग्गंथं पावयणं पुरओकाउं विहरंति ॥ सू० २५ ॥

यद्वा–सुहृद –प्राणिमात्रस्य मित्ररूपा, '**अणियाणा**' अनिदाना –निदायते=छिद्यते मोक्षफलमनेन इति निदान–स्वर्गादिऋद्धिप्रार्थनम्, न विद्यते निदान येषा ते अनिदाना, '**अप्पोसुया**' अल्पौत्सुक्या –अल्पम्–अपगतम् औत्सुक्यम्–उत्सुकता येषा ते–अल्पौत्सुक्या-विषयौत्सुक्यरहिता, '**अवहिल्लेसा**' अबहिर्लेश्या –सयमादबहिर्भूता लेश्या मनोवृत्तयो येषा ते इत्यर्थ । '**अप्पडिलेस्सा**' अप्रतिलेश्या –अविद्यमाना प्रतिलेश्या –सदृशमनोवृत्तयो येषा ते–अप्रतिलेश्या प्रवर्धमानपरिणामसम्पन्ना, '**सुसामण्णरया**' सुश्रामण्यरता -श्रमणस्य भाव श्रामण्य, शोभन श्रामण्य सुश्रामण्य–सम्पूर्ण सकलसावद्यनिवृत्तिरूप सयम तस्मिन् रता =सलग्ना, '**दता**' दान्ता –इन्द्रिय–नोइन्द्रियदमनपरायणा इति भाव । '**इणमेव**' इदमेव '**णिगथ**' नैर्ग्रन्थ्य–निर्ग्रन्थाना भावो नैर्ग्रन्थ्य–श्रमणधर्ममयम् '**पावयण**' प्रवचन–प्र=प्रकृष्टतया-उच्यते जीवादिस्वरूप यस्मिन् तत्प्रवचन जैनागम तत् '**पुरओकाउ**' पुरस्कृत्य=प्रमाणीकृत्य '**विहरंति**' विहरन्ति ॥ सू० २५ ॥

रक्तिदोष नहीं आता है। (**सोही**) ये शोधि–अकलुषहृदयवाले थे, अथवा प्राणिमात्रके मित्रस्वरूप थे। (**अणियाणा**) मोक्षरूप फल जिसके द्वारा काट दिया जाता है वह निदान है, इस निदानसे ये सर्वथा रहित थे। (**अप्पोसुया**) इनमें विषयसम्बन्धी कोई उत्सुकता नहीं थी। (**अवहिल्लेसा**) इनका मानसिक व्यापार सयमकी आराधनासे बाहिरकी ओर थोडा भी नहीं जाता था। (**अप्पडिलेस्सा**) मनके साधारण प्रवृत्तिको प्रतिलेश्या कहते है, परन्तु वे अप्रतिलेश्या से–प्रवर्द्धमान मनके शुभ परिणामोंसे युक्त थे। (**सुसामण्णरया**) वे सुश्रामण्य में रत थे, अर्थात् सकल सावद्यकी

રક્તિ દોષ આવતો નથી (सोही) તેઓ શોધિ–અકલુષિતહૃદયવાળા હતા અથવા પ્રાણિમાત્રના મિત્રસ્વરૂપ હતા (अणियाणा) મોક્ષરૂપ ફલ જેનાથી કપાઈ જાય છે તેને નિદાન કહે છે, તેવા નિદાનથી તેઓ સર્વથા રહિત હતા. (अप्पोसुया) તેમનામા વિષયસબંધી કોઇ ઉત્સુકતા નહોતી, (अवहिल्लेसा) તેમનો માનસિક વ્યાપાર સયમની આરાધનાથી બહારની તરફ જરાપણ જતો નહોતો (अपडिलेस्सा) મનની સાધારણ પ્રવૃત્તિને પ્રતિલેશ્યા કહે છે, પરતુ તેઓ અપ્રતિલેશ્યાથી=પ્રવર્દ્ધમાન મનના શુભ પરિણામોથી યુક્ત હતા (सुसामण्णरया) તેઓ સુશ્રામણ્યમા રત (લાગી રહેલા) હતા, અર્થાત્ સઘળા સાવદ્યની નિવૃત્તિરૂપ સયમમા તેઓ સદા મલગ્ન રહેતા હતા, (दंता) દાન્ત હતા–

मूलम्—तेसि णं भगवंताणं आयावाया वि विदिता भवंति, परवाया वि विदिता भवंति, आयावायं जमइत्ता नलवणमिव-

टीका—'तेसि णं भगवंताणं' इत्यादि। तेषां खलु श्रीमहावीरशिष्याणां भगवतां=संयमविभूषितानाम् 'आयावाया वि' आत्मवादा अपि—स्वसिद्धान्तवादा अपि-आर्हतवादा अपीत्यर्थः, विदिता-विज्ञाता भवन्ति, 'परवाया वि विदिता भवंति' परवादा अपि विदिता भवन्ति—परेषां—शाक्यादीनां वादा—मतानि विदिता भवन्ति, स्वपर—

निवृत्तिरूप संयममें ये सदा सलग्न रहते थे। (दंता) दान्त थे, अर्थात् इन्द्रिय और नोइन्द्रिय-मन के दमन करनेवाले थे। (इणमेव णिग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरंति) ये मुनिजन इसी निर्ग्रन्थ प्रवचनको आगे रखकर विचरते थे, अर्थात् इनकी सब प्रवृत्ति आगमानुकूल ही होती थी ॥ सू० २५ ॥

'तेसि णं भगवंताणं' इत्यादि—

(तेसि णं भगवंताणं) भगवान् महावीर के संयम से विभूषित उन शिष्यों के (आयावाया वि) आत्मवाद—स्वसिद्धान्तप्रतिपादित —आर्हतवाद भी (विदिता भवंति) विदित था, अर्थात् भगवान् महावीर के ये शिष्य स्वसिद्धान्त—प्रतिपादित-तत्त्वों के पूर्ण ज्ञाता थे। (परवाया वि विदिता भवंति) तथा शाक्यादिकों का क्या सिद्धान्त है, यह भी इन्हें विदित था। मतलब कहने का यह है कि ये मुनिजन स्वपरसिद्धान्त के पूर्णवेत्ता थे। ऐसा कोई भी सिद्धान्त नहीं था जो इनकी

અર્થાત્ ઇન્દ્રિય અને નોઇન્દ્રિયનું દમન કરવાવાળા હતા, (इणमेव णिग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरंति) તે મુનિજનો આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનને આગળ રાખીને વિચરતા હતા, અર્થાત્ તેમની સર્વ પ્રવૃત્તિ આગમને અનુકૂળ જ થતી હતી (સૂ ૨૫)

'तेसि णं भगवंताणं' ઇત્યાદિ

(तेसि णं भगवंताणं) સંયમથી વિભૂષિત ભગવાન મહાવીરના તે શિષ્યો (आयावाया वि) આત્મવાદ-સ્વસિદ્ધાંત-પ્રતિપાદિત તત્ત્વ-આર્હતવાદ પણ (विदिता भवंति) જાણતા હતા, અર્થાત્ ભગવાન મહાવીરના તે શિષ્યો સ્વસિદ્ધાંતપ્રતિપાદિત તત્ત્વોના સંપૂર્ણ જ્ઞાતા હતા (परवाया वि विदिता भवंति) તથા શાક્ય આદિકોનો શું સિદ્ધાંત છે તે પણ તેઓ જાણતા હતા. કહેવાનો મતલબ એ છે કે તે મુનિજનો સ્વપર-સિદ્ધાંતના પૂર્ણ જ્ઞાતા હતા. એવો કોઇ પણ સિદ્ધાંત નહોતો કે જે તેમની નજર બહાર હોય. હજુ તેઓ કેવા

मत्तमातंगा अच्छिद्दपसिणवागरणा रयणकरंडगसमाणा कुत्तिया-

सिद्धान्तप्रवीणतया न किञ्चिदविदित तेषा भवतीति भाव । पुनस्ते कीदृशा ? इत्यनके विशेषणै कथयति–'आयावायं जमइत्ता' आत्मवादान् यमयित्वा–स्वसिद्धान्तान् पुन पुनरभ्यस्य–अतिपरिचितान् विधाय, 'नलवणमिव मत्तमातगा' नलवनमिव मत्त-मातङ्गा –क्रीडार्थं पुन पुन प्रवेशेन कमलवन यथा मदोन्मत्ता गजेन्द्रा अतिपरिचित कुर्वन्ति तथैव ते पुन पुनरभ्यासेन निजसिद्धान्त परिचित कृतवन्तोऽनस्ते तत्तुल्या इत्यर्थ । 'अच्छिद्द-पसिण-वागरणा' अच्छिद्र-प्रश्न-व्याकरणा –अच्छिद्रा –निरन्तरा –धारा-वाहिकरूपा प्रश्ना, निरन्तराण्युत्तराणि येषु तादृशानि व्याकरणानि–विस्तारयुक्तव्याख्या-नानि येषा ते–अच्छिद्रप्रश्नव्याकरणा –पुन पुन प्रश्नोत्तरसमुचितव्याख्यानिपुणा, अत एव–' रयण-करडग-समाणा' रत्न-करण्डक-समाना –रत्नाना=मणिमाणिक्या-दीना करण्डको मञ्जूषा तस्य समानास्तत्तुल्या, करण्डको यथा बहुविधरत्नपूर्णो भवति

दृष्टि से बाहर हो। और भी ये कैसे थे ? सो इस बात को आगे के विशेषणों द्वारा सूत्रकार कहते है–(आयावाय जमइत्ता नलवणमिव मत्तमायगा) जिस प्रकार मदोन्मत्त गजराज सरोवर आदि में क्रीडा करने के लिये पुन पुन प्रवेश कर कमलवन से पूर्ण परिचित हो जाते है उसी प्रकार ये भी ज्ञानरूपी सरोवर में क्रीडा करने के लिये पुन २ प्रवेश कर स्वपर–सिद्धान्तरूपी कमलवन से पूर्ण परिचित थे। (अच्छिद्द-पसिण-वागरणा) जब ये प्रवचन करते थे तब उसमें श्रोताजन धारा-वाहिकरूप से प्रश्न किया करते थे, उनका उत्तर भी ये उसी ढग से देते थे । (रयण-करडक-समाणा) इसलिये ये ऐसे ज्ञात होते थे कि मानों रत्नकरण्डक है, जैसे रत्नों का करण्डक अनेक प्रकार के उत्तमोत्तम अमूल्य रत्नों से भरपूर होता

હતા તે વાત આગળના વિશેષણોદ્વારા સૂત્રકાર કહે છે–(आयावाय जमइत्ता नलवणमिव मत्तमायगा) જેવી રીતે મદોન્મત્ત ગજરાજ સરોવર આદિમા ક્રીડા કરવા માટે વારવાર પ્રવેશ કરીને કમલોના વનથી પૂર્ણ પરિચિત થઈ જાય છે, તેવીજ રીતે તેઓ પણ જ્ઞાનરૂપી સરોવરમા ક્રીડા કરવાના કારણે વારવાર પ્રવેશ કરીને સ્વપર–સિદ્ધાતરૂપી કમલવનથી પૂર્ણ પરિચિત હતા (अच्छिद्द-पसिण-वागरणा) જ્યારે તેઓ પ્રવચન કરતા હતા ત્યારે તેમા શ્રોતા-જનો એકધારી રીતે પ્રશ્ન કર્યા કરતા હતા અને તેના ઉત્તર પણ તેઓ તેવીજ રીતે આપતા હતા (रयण करडग-समाणा) એથી તેઓ એવા લાગતા હતા કે જાણે રત્નનો કરડિઓ હોય જેમ રત્નોનો કરડિઓ અનેક પ્રકારના ઉચામા ઉચા

वणभूया परवाइपमद्दणा आयारधरा चोद्दसपुव्वी दुवालसंगिणो

तथैव तेऽपि मुनिवरा सम्यग्ज्ञानादिरत्नपूर्णाः सन्ति। पुनस्ते कीदृशाः? इत्याह-'कुत्तियावणभूया' कुत्रिकाऽऽपणभूता =कुत्रा=स्वर्गमर्त्यपातालभूमीनां त्रिकं कुत्रिकं, तात्स्थ्यात् तद्व्यपदेश इति कृत्वा तत्र स्थितं वस्त्वपि कुत्रिकमुच्यते,कुत्रिकस्य आपण कुत्रिकापण। देवाधिष्ठितत्वेन स्वर्गमर्त्यपाताललोकत्रयसमविवस्तुसम्पादकहट्ट इत्यर्थ, तद्भूता -समीहितार्थसम्पादनलब्धियुक्तत्वेन तत्तुल्या इति भाव.। 'परवाइपमद्दणा' परवादिप्रमर्दना -परवादिनां शाक्यादीनां मतनिराकरणेन विजेतार इत्यर्थ। 'आयारधरा' आचारधरा -आचाराङ्गसूत्रस्य धारका यावद्विपाकसूत्रधरा, 'चोद्दसपुव्वी' चतुर्दशपूर्विण -चतुर्दश पूर्वाणि विद्यन्ते येषां ते चतुर्दशपूर्विण षड्गुणहानिवृद्धिरूपस्थानमस्थिता परस्पर भवन्ति न्यूनाधिक्येन, तथाहि-यः कश्चित् सकलाभिलाप्यवस्तुवेदितया चतुर्दशपूर्वी स उत्कृष्ट, ततोऽन्ये सूत्रार्थतदुभयरूपतारतम्याच्चतुर्दशपूर्वधरा। 'दुवालसंगिणो' द्वादशाङ्गिन -द्वादशानि-अङ्गानि आचाराङ्गादीनि सन्ति

है उसी प्रकार ये साधुजन भी सम्यग्दर्शन एव सम्यग्ज्ञान आदि विविध गुणरूप रत्नों से भरपूर थे। (कुत्तियावणभूया) ये कुत्रिकापण तुल्य थे। जिस आपण (दूकान) में स्वर्ग मर्त्य, पाताल—तीनों लोक की वस्तुएँ रहती हैं, उसको 'कुत्रिकापण' कहते है। उस कुत्रिकापण से सभी अभिलषित वस्तुएँ मिलती है। उसी प्रकार ये अभिलषित तीनों लोक के पदार्थों के सम्पादन करने की लब्धियों से युक्त थे। अत एव कुत्रिकापण—तुल्य थे। (परवाइपमद्दणा) परवादियों के मत को निराकरण करने से ये उनके विजेता थे। (आयारधरा) आचाराग सूत्र से लेकर विपाकसूत्रतक के आगमों के ये धारक थे। (चोद्दसपुव्वी) चौदहपूर्वों के ये पाठी थे। इस प्रकार ये सब के सब (दुवालसंगिणो) द्वादशाग के वेत्ता थे। (समत्त-

કિંમતી રત્નોથી ભરપૂર હોય છે તેમ એ સાધુજનો પણ સમ્યગ્દર્શન તેમજ સમ્યગ્જ્ઞાન આદિ વિવિધ ગુણરૂપ રત્નોથી ભરપૂર હતા, (कुत्तियावणभूया) તેઓ કુત્રિકાપણ જેવા હતા જે આપણ (દૂકાન)મા સ્વર્ગ મર્ત્ય અને પાતાળ ત્રણે લોકોની વસ્તુઓ રહેતી હોય તેને 'કુત્રિકાપણ' કહે છે તે કુત્રિકાપણમા બધી ઇચ્છિત વસ્તુઓ મળે છે, તેવી રીતે તેઓ પણ ત્રણે લોકોના ઇચ્છિત પદાર્થો મેળવવાની લબ્ધિઓવાળા હતા એથી તેઓ કુત્રિકાપણ જેવા હતા (आयारधरा) આચારાગસૂત્રથી લઈને વિપાકસૂત્ર સુધીના આગમોના તેઓ ધારક હતા (चोद्दसपुव्वी) ચૌદ પૂર્વોના તેઓ જાણનારા હતા એ પ્રકારે એ તમામે તમામ (दुवालसंगिणो) દ્વાદશાગના જ્ઞાતા હતા (समत्तगणिपिडगधरा) સમસ્ત

समत्तगणिपिडगधरा सव्वक्खरसण्णिवाइणो सव्वभासाणुगामिणो अजिणा जिणसंकासा जिणा इव अवितहं वागरमाणा संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥ सू० २६ ॥

येषा ते द्वादशाङ्गिन -द्वादशाङ्गागमज्ञातार , द्वादशाङ्गज्ञातृत्वेऽपि समस्तश्रुतधरत्व न सिध्यतीत्यत आह-'समत्तगणिपिडगधरा' समस्तगणिपिटकधरा -गणो-गच्छ ,गुणगणो वाऽस्याऽस्तीति गणी-आचार्य तस्य पिटकइव पिटक सर्वस्वमित्यर्थ , समस्तस्य गणिपिटकस्य धराः=धारका अतएव-'सव्वक्खर-सण्णिवाइणो' सर्वाऽक्षरसन्निपातिन ,यद्यपि न क्षरति-स्वभावात् कदाचित्प्रच्यवते इत्यक्षर परं तत्त्व केवलज्ञानादिरूपम् , तथाप्यत्र अक्षर-शब्दो स्वरव्यञ्जनभेदेन भिन्ने वर्णसमुदाये, ततश्च—अक्षराणा सन्निपाता -सयोगा स्ववर्गपरवर्गे ममीलनानि-अक्षरसन्निपाता', सर्वे च-तेऽक्षरसन्निपाता , ते सन्ति येषा ते सर्वाऽक्षरसन्निपातिन सर्वाक्षरज्ञानवन्त इतिभाव ।'सव्वभासा-णुगामिणो' सर्वभाषानुगामिन —सर्वाश्च ता भाषाः—भाषणानि, यद्वा भाष्यन्ते इति भाषा = व्यक्तवचनानि, आसा भाषाणा सस्कृतप्राकृताऽऽदय आर्याऽनार्यादयो वहवो भेदा भवन्ति, ता सर्वभाषा अनुगच्छन्ति एव शीला सर्वभाषानुगामिन , 'अजिणा' अजिना - असर्वज्ञत्वादिति भाव । जयन्ति कर्मरिपून् इति जिना =सर्वज्ञा , ये जिना न भवन्ति ते अजिना —असर्वज्ञा , तथापि—'जिनसकासा, जिनसङ्काशा —जिनसदृशा पृष्टनिर्वचनकारि-

---

गणिपिडग—धरा) समस्तगणिपिटक के धारक थे। **(सव्वक्खरसण्णिवाइणो)** यद्यपि केवलज्ञानादिरूप तत्त्व—अक्षर शब्द से गृहीत होना चाहिये था, परन्तु ऐसा अक्षर यहा गृहीत नहीं हुआ है, किन्तु स्वर एव व्यजन के भेद से भिन्न वर्णसमुदाय का ही यहां अक्षर शब्द से ग्रहण किया गया है। सन्निपात शब्द का अर्थ सयोग है। ये मुनिजन, सर्व प्रकार के अक्षरों के सयोग से क्या अर्थ होता है, उसके ज्ञाता थे। **(सव्व—भासा—णुगामिणो)** आर्य एव अनार्य सब देश की भाषा के ये सब जानकार थे। **(अजिणा)** ये सर्वज्ञ तो नहीं थे पर **(जिणसकासा)** सर्वज्ञ के जैसे थे।

ગણિપિટકના તેઓ ધારક હતા (सव्वक्खरसण्णिवाइणो) જો કે કેવલજ્ઞાન આદિરૂપ તત્ત્વ—અક્ષર શબ્દથી લેવો જોઈતો હતો, પરતુ એવો અક્ષર અહીં લેવાયો નથી, પણ સ્વર તેમજ વ્યજનના ભેદથી જુદા વર્ણસમુદાયજ અહીં અક્ષર શબ્દથી લેવામા આવ્યો છે સન્નિપાત શબ્દનો અર્થ સયોગ છે એ મુનિજનો સર્વ પ્રકારના અક્ષરોના સયોગથી શુ અર્થ થાય છે તેના જ્ઞાતા હતા (सव्व भासा-णुगामिणो) આર્ય તેમજ અનાર્ય બધા દેશની ભાષાના તેઓ બધા જાણકાર હતા (अजिणा) તેઓ સર્વજ્ઞ તો નહોતા, પણ (जिणसंकासा)

मूलम्-तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे अणगारा भगवंतो, इरियासमिया

त्वाद् अविसंवादिवचनत्वाचेति भाव । 'जिणा इव अवितह वागरमाणा' जिना इव अवितथ व्याकुर्वाणा –जिनवद् याथातथ्येन–यद्वस्तु यादृगेव तथा कथयन्त 'संजमेण' संयमेन-सावद्ययोगविरमणलक्षणेन 'तवसा' तपसा 'अप्पाण भावेमाणा विहरंति' आत्मानं भावयन्तो विहरन्ति ॥ सू० २६॥

टीका–'तेण कालेणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य अन्तेवासिनो बहवोऽनगारा, 'भगवंतो' भगवन्त –पयमशोभावन्त, 'इरियासमिया' ईर्यासमिता-ईरण–गमनमीर्या, तस्या समिता=सम्यक्प्रवृत्ता, गमने

(जिणा इव अवितह वागरमाणा) जिन–सर्वज्ञ–प्रभु जिस प्रकार यथार्थ की प्ररूपणा करते है उसी प्रकार ये भी अवितथ–जो वस्तु जैसी थी उसी तरह से उसकी व्याख्या करने वाले थे। (संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरंति) ये सब के सब साधुजन सावद्ययोगविरमणलक्षणरूप १७ प्रकार के संयम से एव अनशनादि १२ प्रकार के तप से आत्मा को भावित करते हुए प्रभु के साथ विचरते थे ॥सू० २६॥

'तेण कालेण तेण समएण' इत्यादि—

(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में (समणस्स भगवओ महावीरस्स) श्रमण भगवान् महावीर के (अंतेवासी) पास में रहनेवाले (बहवे अणगारा भगवंतो) सभी अनगार भगवान (इरियासमिया) ईर्यासमिति से युक्त थे, अर्थात् अन्य जीवों की किसी भी प्रकार से विराधना न

સર્વજ્ઞ જેવા હતા (जिणा इव अवितह वागरमाणा) જિન–સર્વજ્ઞ–પ્રભુ જે પ્રકારે યથાર્થની પ્રરૂપણા કરે છે તેજ પ્રકારે તેઓ પણ અવિતથ–જે વસ્તુ જેવી હતી તેવીજ રીતથી તેની વ્યાખ્યા કરનારા હતા (सजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति) તેઓ તમામ સાધુજનો સાવદ્યયોગ વિરમણ લક્ષણરૂપ ૧૭ પ્રકારના સંયમથી તેમ જ અનશન આદિ ૧૨ પ્રકારના તપથી આત્માને ભાવિત કરતા કરતા પ્રભુની સાથે વિચરતા હતા (સૂ૦ ૨૬)

"तेण कालेण तेण समएण" ઈત્યાદિ

(तेण कालेण तेणं समएण) તે કાળ અને તે સમયમાં (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરના (अंतेवासी) પાસે રહેવાવાળા (बहवे अणगारा भगवंतो) ઘણા અનગાર ભગવાન (इरियासमिया) ઈર્યાસમિતિ

भासासमिया एसणासमिया आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणा-समि-

दत्तावधाना इत्यर्थ, यथाऽन्यजीवस्य कथमपि विराधना न भवेत् तथोपयोगपूर्वकगमनशीला इति भाव । 'भासासमिया' भाषासमिता — भाषासमितियुक्ता —भाषासमितिर्निरवद्यवचनप्रवृत्तिस्तया युक्ता इत्यर्थ । 'एसणासमिया' एषणासमिता —एषणायामुद्गमादिद्विचत्वारिंशद्दोषवर्जनेन समिति —सम्यक्प्रवृत्तिरेषणासमितिस्तया युक्ता, विशुद्धाऽऽहारादिग्रहणान्वेषणोपयोगयुक्ता इत्यर्थ । 'आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणा-समिया' आदान-भाण्ड-मात्र-निक्षेपणासमिता —आदान=ग्रहण—अस्य भाण्डमात्रयोरित्यनेन सम्बन्ध —प्रत्यासत्तिन्यायात्, साहचर्याद्वा । देहलीदीपन्यायाद्वा भाण्डमात्रशब्दस्य आदाननिक्षेपाभ्यामन्वय, भाण्डमात्रयो —भाण्डस्य=पात्रस्य, मात्रस्य=वस्त्राद्युपकरणस्य चेत्यर्थ,

हो इस प्रकार उपयोगपूर्वक गमन करने के स्वभाववाले थे। (भासासमिया) निरवद्यवचनप्रवृत्ति से युक्त थे। (एसणासमिया) एषणा में उद्गमादिक ४२ दोषों का परिवर्जनपूर्वक प्रवृत्ति करना इसका नाम एषणासमिति है। इस समिति से युक्त एषणासमित है। ये साधुजन विशुद्ध आहारादिके ग्रहण में एवं अन्वेषणमें उपयोग-विशिष्ट थे। (आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणा-समिया) आदान शब्द का अर्थ ग्रहण है। इसका अन्वय प्रत्यासत्तिन्याय से, अथवा साहचर्य से भाण्डमात्र के साथ है। अथवा-भाण्डमात्र शब्द का सम्बन्ध 'देहली-दीपक' न्याय से आदान और निक्षेप इन दोनों के साथ होता है। ये साधुजन भाण्ड=पात्र एवं मात्र=वस्त्रादिक उपकरण के आदान-ग्रहण और निक्षेपण-रखना रूप समिति से युक्त थे।

વાળા હતા, અર્થાત્ બીજા જીવોની કોઈ પણ પ્રકારે વિરાધના ન થાય એવી રીતે ઉપયોગપૂર્વક ગમન કરવાના સ્વભાવવાળા હતા (भासासमिया) નિરવદ્ય વચન-પ્રવૃત્તિવાળા હતા (एसणासमिया) એષણામા ઉદ્ગમ આદિક ૪૨ દોષોના પરિવર્જનપૂર્વક પ્રવૃત્તિ કરવી તેનુ નામ એષણાસમિતિ છે આ સમિતિથી યુક્ત જે છે તે એષણાસમિત છે તે સાધુજનો વિશુદ્ધ આહારાદિક લેવામા તેમજ તેના અન્વેષણમા ઉપયોગવિશિષ્ટ હતા, (आयाण भड मत्त निक्खेवणा-समिया) આદાન શબ્દનો અર્થ ગ્રહણ છે, તેનો સબધ પ્રત્યાસત્તિન્યાયથી અથવા સાહચર્યથી ભાડમાત્રની સાથે છે અથવા ભાડમાત્ર શબ્દનો સબધ 'દેહલીદીપક' ન્યાયથી આદાન અને નિક્ષેપ એ બેઉની સાથે થાય છે, તે મુનિઓ ભાડપાત્રના અને વસ્ત્રાદિક ઉપકરણના આદાન=ગ્રહણ અને નિક્ષેપણ=મૂકવારૂપ સમિતિથી યુક્ત હતા, અર્થાત્ પાત્ર તેમજ વસ્ત્રાદિક ઉપકરણોના

या उच्चार-पासवण-खेल-जल्ल-सिंघाण-पारिट्ठावणिया-समिया मण-
गुत्ता वयगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता गुत्तिंदिया गुत्तबंभयारी अममा अकिं-

तयोर्निक्षेपणे—अवस्थापने समिता —सुप्रतिलेखन—प्रमार्जनाद्युपयोगपूर्वकप्रवृत्तियुक्ता, **'उच्चार पासवण–खेल–जल्ल–सिंघाण–पारिट्ठावणिया–समिया'** उच्चार–प्रस्रवण–श्लेष्म–जल्ल शिङ्घाण–परिष्ठापनिका–समिता, तत्र-उच्चार -पुरीषम्, प्रस्रवण-मूत्र, खेल -श्लेष्मा, उपलक्षणत्वान्निष्ठीवनस्यापि ग्रहणम्, जल्ल —स्वेदजमलम्, शिङ्घाण—नासिकामलम्, एतेषा परिष्ठापनिका-परिष्ठापना—परित्याग —सैव परिष्ठापनिका, स्वार्थ क, तस्या समिता, शुद्धस्थण्डिलाश्रयणात्सम्यगुपयुक्ता । **'मणगुत्ता'** मनोगुप्ता —(१) त्रिविधा मनोगुप्तयः—आर्त्तरौद्रध्यानानुबन्धिकल्पनाजालवियोग प्रथमा (२) शास्त्रानुसारिणी परलोकसाधिका धर्मध्यानानुबन्धिनी माध्यस्थ्यपरिणतिर्द्वितीया, (३) सकलमनोवृत्तिनिरोधेन योगनिरोधाऽवस्थाभाविनी=आ मरमणरूपा

अर्थात् पात्र एव वस्त्रादिक उपकरणों के सुप्रतिलेखन प्रमार्जनादिक में ये सब उपयोगपूर्वक प्रवृत्ति करने वाले थे। **(उच्चार–पासवण–खेल–जल्ल–सिंघाण–पारिट्ठावणिया–समिया)** उच्चार–पुरीष, प्रस्रवण–मूत्र, खेल–श्लेष्मा, उपलक्षण से निष्ठीवन थूकना, जल्ल—स्वेदज मेल, शिंघाण—नासिका का मेल, इन सबके परिष्ठापन—रूप समिति से युक्त थे। **(मणगुत्ता वयगुत्ता कायगुत्ता)** गुप्ति तीन प्रकार की है—मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति, इनमें मनोगुप्ति तीन प्रकारकी है-आर्त्त एव रौद्रध्यान का परित्याग करना प्रथम मनोगुप्ति है, शास्त्र के अनुसार, परलोक की साधक और धर्मध्यान के साथ अनुबन्ध रखने वाली माध्यस्थ्यपरिणतिरूप द्वितीय मनोगुप्ति है। सकल मनोवृत्ति के निरोध से योगों की निरोधावस्था मे होनेवाली परिणति—आत्मा में रमणरूप परिणति

સુપ્રતિલેખન અને પ્રમાર્જન આદિકમા તે બધા ઉપયોગપૂર્વક પ્રવૃત્તિ કરવાવાળા હતા (*उच्चार पासवण-खेल-जल्ल सिंघाण पारिट्ठावणिया–समिया*) ઉચ્ચાર=પુરીષ, પ્રસવણ=મૂત્ર, ખેલ=શ્લેષ્મા, ઉપલક્ષણથી નિષ્ઠીવન–થૂકવુ, જલ્લ–પરસેવાનો મેલ, શિંઘાણ–નાકનો મેલ, આ બધાના પરિષ્ઠાપનરૂપ સમિતિથી યુકત હતા (मणगुत्ता वयगुत्ता कायगुत्ता) ગુપ્તિ ત્રણ પ્રકારની છે મનોગુપ્તિ, વચનગુપ્તિ અને કાયગુપ્તિ, તેમા મનોગુપ્તિ ત્રણ પ્રકારની છે–આર્ત્ત તેમજ રૌદ્ર ધ્યાનનો પરિત્યાગ કરવો એ પ્રથમ મનોગુપ્તિ છે, શાસ્ત્રને અનુસરનારી પરલોકની સાધક અને ધર્મધ્યાનની સાથે અનુબધ રાખનારી માધ્યસ્થ્યપરિણતિરૂપ બીજી મનોગુપ્તિ છે બધી મનોવૃત્તિ માત્રના નિરોધથી યોગોની નિરોધાવસ્થામા થનારી પરિણતિ–આત્મામા

तृतीया। उक्त च योगशास्त्रे—

विमुक्तकल्पनाजाल समत्वे सुप्रतिष्ठितम्।
आत्माराम मनस्तज्ज्ञैर्मनोगुप्तिरुदाहृता ॥इति॥

तया मनोगुप्त्या युक्ता—मनोगुप्ता। 'वयगुत्ता' वचोगुप्ता-वचनगुप्तियुक्ता, वचनगुप्तिश्चतुर्विधा, उक्त च—

सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य।
चउत्थी असच्चमोसा य, वयगुत्ती चउव्विहा॥ (उत्त० अ २४ गा २२)

छाया—सत्या तथैव मृषा च सत्यमृषा तथैव च।
चतुर्थ्यसत्यमृषा च वचोगुप्तिश्चतुर्विधा॥

वचोगुप्ति=वचनगुप्तिश्चतुर्विधा—सत्या, मृषा, सत्यमृषा असत्यमृषा चेति। जीव प्रति—'अय जीव' इति कथन सत्या, जीव प्रति 'अयमजीव' इति कथन मृषा, पूर्वमनिर्णीय वदति-'अद्यास्मिन्

तीसरी मनोगुप्ति है। योगशास्त्र में यही बात कही है—

विमुक्तकल्पनाजाल समत्वे सुप्रतिष्ठितम्॥
आत्माराम मनस्तज्ज्ञैर्मनोगुप्तिरुदाहृता॥

इस मनोगुप्ति से युक्त होने का नाम मनोगुप्त है। वचनगुप्ति से युक्त होना सो वचनगुप्त है। वचनगुप्ति ४ प्रकार की है—

"सच्चा तहेव मोसा य, सच्चामोसा तहेव य॥
चउत्थी असच्चमोसा य वयगुत्ती चउव्विहा॥ (उत्त० अ० २४ गा २२)

अर्थ इस गाथा का इस प्रकार है। सत्य, मृषा, सत्यमृषा और असत्य-मृषा, इस प्रकार वचन ४ प्रकार के होते है, (१) जिस वस्तु का जैसा स्वरूप

રમણરૂપ પરિણતિ એ ત્રીજી મનોગુપ્તિ છે યોગશાસ્ત્રમા એજ વાત કહી છે—

विमुक्तकल्पनाजाल, समत्वे सुप्रतिष्ठितम्।
आत्मारामं मनस्तज्ज्ञै, – र्मनोगुप्तिरुदाहृता॥

આ મનોગુપ્તિથી યુક્ત હોવાનુ નામ મનોગુપ્ત છે વચનગુપ્તિથી યુક્ત વચનગુપ્ત છે વચનગુપ્તિ ૪ પ્રકારની છે

सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य।
चउत्थी असच्चमोसा य वयगुत्ती चउव्विहा॥ (उत्त० अ० २४गा० २२)

ગાથાનો અર્થ આ પ્રકારનો છે સત્ય ૧, મૃષા ૨, સત્યમૃષા ૩ અને અસત્યમૃષા ૪–એ પ્રકારે વચન ૪ પ્રકારના થાય છે

(૧) જે વસ્તુનુ જેવુ સ્વરૂપ હોય તે વસ્તુને તે જ સ્વરૂપથી પ્રકાશિત

या उच्चार-पासवण-खेल-जल्ल-सिंघाण-पारिट्ठावणिया-समिया मण-गुत्ता वयगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता गुत्तिंदिया गुत्तबंभयारी अममा अकिं-

तयोर्निक्षेपणे—अवस्थापने समिता —सुप्रतिलेखन—प्रमार्जनाद्युपयोगपूर्वकप्रवृत्तियुक्ता, 'उच्चार पासवण—खेल—जल्ल—सिंघाण—पारिट्ठावणिया—समिया' उच्चार—प्रस्रवण—श्लेष्म—जल्ल शिङ्घाण—परिष्ठापनिका—समिता, तत्र-उच्चार -पुरीषम्, प्रस्रवण-मूत्र, खेल -श्लेष्मा, उपलक्षणत्वान्निष्ठीवनस्यापि ग्रहणम्, 'जल्ल —स्वेदजमलम्, शिङ्घाण—नासिकामलम्, एतेषा परिष्ठापनिका—परिष्ठापना—परित्याग —सैव परिष्ठापनिका, स्वार्थे क, तस्या समिता, शुद्धस्थण्डिलाश्रयणात्सम्यगुपयुक्ता । 'मणगुत्ता' मनोगुप्ता —(१) त्रिविधा मनोगुप्तयः—आर्तरौद्रध्यानानुबन्धिकल्पनाजालवियोग प्रथमा (२) शास्त्रानुसारिणी परलोकसाधिका धर्मध्यानानुबन्धिनी माध्यस्थ्य परिणतिर्द्वितीया, (३) सकलमनोवृत्तिनिरोधेन योगनिरोधाऽवस्थाभाविनी=आत्मरमणरूपा

अर्थात् पात्र एव वस्त्रादिक उपकरणों के सुप्रतिलेखन प्रमार्जनादिक में ये सब उपयोगपूर्वक प्रवृत्ति करने वाले थे। (**उच्चार—पासवण—खेल—जल्ल—सिंघाण—पारिट्ठावणिया—समिया**) उच्चार—पुरीष, प्रस्रवण—मूत्र, खेल—श्लेष्मा, उपलक्षण से निष्ठीवन थूकना, जल्ल—स्वेदज मेल, सिंघाण—नासिका का मेल, इन सबके परिष्ठापन—रूप समिति से युक्त थे। (**मणगुत्ता वयगुत्ता कायगुत्ता**) गुप्ति तीन प्रकार की है—मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति, इनमे मनोगुप्ति तीन प्रकारकी है-आर्त्त एव रौद्रध्यान का परित्याग करना प्रथम मनोगुप्ति है, शास्त्र के अनुसार, परलोक की साधक और धर्मध्यान के साथ अनुबन्ध रखने वाली माध्यस्थ्यपरिणतिरूप द्वितीय मनोगुप्ति है। सकल मनोवृत्ति के निरोध से योगों की निरोधावस्था मे होनेवाली परिणति—आत्मा में रमणरूप परिणति

સુપ્રતિલેખન અને પ્રમાર્જન આદિકમા તે બધા ઉપયોગપૂર્વક પ્રવૃત્તિ કરવાવાળા હતા (उच्चार पासवण-खेल-जल्ल सिंघाण पारिट्ठावणिया-समिया) ઉચ્ચાર=પુરીષ, પ્રસ્રવણ=મૂત્ર, ખેલ=શ્લેષ્મા, ઉપલક્ષણથી નિષ્ઠીવન—થૂકવુ, જલ્લ—પરસેવાનો મેલ, શિંઘાણ—નાકનો મેલ, આ બધાના પરિષ્ઠાપનરૂપ સમિતિથી યુક્ત હતા (मणगुत्ता वयगुत्ता कायगुत्ता) ગુપ્તિ ત્રણ પ્રકારની છે મનોગુપ્તિ, વચનગુપ્તિ અને કાયગુપ્તિ, તેમા મનોગુપ્તિ ત્રણ પ્રકારની છે—આર્ત્ત તેમજ રૌદ્ર ધ્યાનનો પરિત્યાગ કરવો એ પ્રથમ મનોગુપ્તિ છે, શાસ્ત્રને અનુસરનારી પરલોકની સાધક અને ધર્મધ્યાનની સાથે અનુબધ રાખનારી માધ્યસ્થ્યપરિણતિરૂપ બીજી મનોગુપ્તિ છે. બધી મનોવૃત્તિ માત્રના નિરોધથી યોગોની નિરોધાવસ્થામા થનારી પરિણતિ—આત્મામા

प्रतिलेखनाप्रमार्जनादिसमयोक्तक्रियाकलापपुर सर शयनासनादि विधेयम्, तत शयनासननिक्षेपादानादिपु स्वेच्छया चेष्टापरिहारेण नियता=शास्त्रनियमानुसारिणी या कायचेष्टा सा द्वितीयेति।

उक्त च—उपसर्गप्रसङ्गेऽपि कायोत्सर्गजुषो मुने ।
स्थिरीभाव शरीरस्य कायगुप्तिर्निगद्यते ॥१॥
शयनासननिक्षेपादानसक्रमणेषु च ।
स्थानेषु चेष्टानियम कायगुप्तिस्तु सा परा ॥२॥इति॥

तथा युक्ता । 'गुत्ता' गुप्ता—अशुभयोगनिग्रहो गुप्तिस्तया युक्ता, 'गुत्तिंदिया' गुप्तेन्द्रिया—गुप्तानि—असयमस्थानेभ्य सुरक्षितानि—इन्द्रियाणि यैस्ते गुप्तेन्द्रिया, 'गुत्त-

---

अथवा भूमि आदिकी प्रतिलेखना एव प्रमार्जन करते समय जो अपनी इच्छानुसार शारीरिक चेष्टाओं का परित्याग करना है, एव गुरु आदि की आज्ञानुसार शयन, आसन, निक्षेपण एव आदानादिक में कायचेष्टा का नियमन करना है वह दूसरी कायगुप्ति है। कहा भी है—**उपसर्गप्रसगेऽपि, कायोत्सर्गजुषो मुनेः। स्थिरीभावः शरीरस्य, कायगुप्तिर्निगद्यते ॥१॥ शयनासननिक्षेपा,—दानसक्रमणेषु च। स्थानेषु चेष्टानियमः कायगुप्तिस्तु सा परा ॥२॥** श्लोकों का अर्थ ऊपर लिखे भावके अनुसार है। ये साधुजन कायगुप्ति के आराधक थे। अत एव (**गुत्ता**) अशुभ योग के निग्रहरूप गुप्ति से ये मुनिजन युक्त थे। (**गुत्तिंदिया**) असयमस्थानों से इन्द्रिया को सुरक्षित रखनेवाले थे, इसलिये इन्हें गुप्तेन्द्रिय कहा गया है। (**गुत्तबंभयारी**) नौ—

નિવૃત્તિરૂપ પહેલી કાયગુપ્તિ છે ગુરુને પૂછીને શારીરિક ક્રિયાઓની (શૌચાદિની) નિવૃત્તિના સમયે અથવા ભૂમિ આદિની પ્રતિલેખના તેમજ પ્રમાર્જના કરવાના સમયે જે પોતાની ઈચ્છાપ્રમાણે શારીરિક ચેષ્ટાઓનો પરિત્યાગ કરવાનો છે, તેમજ ગુરુ આદિની આજ્ઞા-અનુસાર શયન, આસન, નિક્ષેપણ, તેમજ આદાનાદિકમા કાયચેષ્ટાનુ નિયમન કરવાનુ હોય છે, તે બીજી કાયગુપ્તિ છે કહ્યુ પણ છે કે- उपसर्गप्रसङ्गेऽपि, कायोत्सर्गजुषो मुने ।
स्थिरीभाव शरीरस्य, कायगुप्तिर्निगद्यते ॥
शयनासननिक्षेपा,—दानसक्रमणेषु च ।
स्थानेषु चेष्टानियम कायगुप्तिस्तु सा परा ॥

શ્લોકોનો અર્થ ઉપર લખેલા ભાવ પ્રમાણે છે તે સાધુજનો કાયગુપ્તિના આરાધક હતા માટેજ (गुत्ता) અશુભયોગના નિગ્રહરૂપ ગુપ્તિથી તે મુનિજનો યુકત હતા (गुत्तिंदिया) અસયમના સ્થાનોથી ઇંદ્રિયોને સુરક્ષિત રાખવાવાળા

नगरे शत बालका जाता 'इति तत्कथा सत्यमृषा। 'स्वाध्यायसमं तपो नास्ति' इति कथन चतुर्थी असत्यमृषा, यद्वचन न सत्य नापि मृषा, सा चतुर्थीति, चतुर्विधवचनयोग-निवृत्तिर्वचोगुप्तिरिति भाव। 'कायगुत्ता' कायगुप्ता-गमनागमनप्रचलनादिक्रियाया गोपन-कायगुप्ति, कायगुप्तिर्द्विधा-चेष्टानिवृत्तिरूपा, यथागम चेष्टा-नियमरूपा च। तत्र परीषहोपसर्गादिसद्भावेऽपि यत कायोत्सर्गकरणात्तिना कायस्य निश्चलताकरणम्, सर्वयोगनिरोधावस्थाया वा सर्वथा यत् कायचेष्टानिरोधन सा प्रथमा। गुरुमापृच्छ्य शरीरसंस्तारकभूम्यादि-

है उस वस्तु को उसी स्वरूप से प्रकाशित करनेवाला वचन सत्यवचन है, जैसे-यह जीव है। (२) जीव को अजीव कहना मृषावचन है। (३) मिश्रितवचन सत्यमृषा वचन है, जैसे-आज इस नगर में सौ बालक जन्मे हैं। यह वचन मिश्ररूप इसलिये है कि इसमे सौ का निर्णय नहीं है। (४) जो वचन मृषा भी न हो और सत्य भी न हो ऐसे वचन का नाम असत्यमृषा है, जैसे-स्वाध्याय समान तप नहीं है "-ऐसा वचन न सत्य है और न असत्य ही है, अर्थात् व्यवहार वचन है। इस ४ प्रकार के वचनयोग का वचनगुप्ति में निरोध हो जाता है। गमन-आगमन आदि क्रिया का जिसमें निरोध है वह कायगुप्ति है। यह कायगुप्ति २ प्रकारकी है-चेष्टानिवृत्तिरूप १, यथा-आगम-चेष्टानियमनरूप २। परीषह एव उपसर्ग के आनेपर भी शरीर से ममत्व का परित्याग कर जो उसे निश्चल करना है, अथवा सर्वयोगों की निरोध-अवस्था मे जो सर्वथा काय की चेष्टाओं का निरोध करना है यह चेष्टानिवृत्तिरूप पहली कायगुप्ति है। गुरु से पूछकर शारीरिक क्रियाओं की निवृत्ति के समय,

કરવાવાળુ વચન સત્યવચન છે જેમકે આ જીવ છે (૨) જીવને અજીવ કહેવુ એ મૃષાવચન છે (૩) મિશ્રવચન સત્યમૃષાવચન છે, જેમ કે આજે આ નગરમા સો બાળક જન્મ્યા છે આ વચન મિશ્રરૂપ એટલા માટે છે કે એમા સોનો નિર્ણય નથી (૪) જે વચન મૃષા પણ ન હોય અને સત્ય પણ ન હોય એવા વચનનુ નામ અસત્યમૃષા છે, જેમ "સ્વાધ્યાયના જેવુ તપ નથી" એવા વચન નથી તો સત્ય કે નથી અસત્ય, અર્થાત્ વ્યવહારવચન છે. આ ચાર પ્રકારના વચનયોગનો વચનગુપ્તિમા નિરોધ થઇ જાય છે ગમન-આગમન-આદિ ક્રિયાઓનો જેમા નિરોધ હોય તેને કાયગુપ્તિ કહે છે આ કાયગુપ્તિ બે પ્રકારની છે-૧ ચેષ્ટાનિવૃત્તિરૂપ, અને ૨ યથા-આગમ-ચેષ્ટાનિયમનરૂપ પરીષહ તેમજ ઉપસર્ગના આવવા છતા પણ શરીરથી મમત્વનો ત્યાગ કરીને જે તેને નિશ્ચલ કરવુ, અથવા સર્વ યોગોની નિરોધ-અવસ્થામા જે સર્વથા કાયની ચેષ્ટાઓનો નિરોધ કરવુ તે ચેષ્ટા

प्रतिलेखनाप्रमार्जनादिसमयोक्तक्रियाकलापपुर सर शयनासनादि विधेयम्, तत शयनासननिक्षेपादानादिषु स्वेच्छया चेष्टापरिहारेण नियता=शास्त्रनियमानुसारिणी या कायचेष्टा सा द्वितीयेति।

उक्त च—उपसर्गप्रसङ्गेऽपि कायोत्सर्गजुषो मुने ।
स्थिरीभाव शरीरस्य कायगुप्तिर्निगद्यते ॥१॥
शयनासननिक्षेपादानसङ्क्रमणेषु च ।
स्थानेषु चेष्टानियम कायगुप्तिस्तु सा परा ॥२॥इति॥

तया युक्ता । 'गुत्ता' गुप्ता—अशुभयोगनिग्रहो गुप्तिस्तया युक्ता, 'गुत्तिंदिया' गुप्तेन्द्रिया—गुप्तानि—असयमस्थानेभ्य सुरक्षितानि—इन्द्रियाणि यैस्ते गुप्तेन्द्रिया, 'गुत्त-

---

अथवा भूमि आदिकी प्रतिलेखना एव प्रमार्जन करते समय जो अपनी इच्छानुसार शारीरिक चेष्टाओं का परित्याग करना है, एव गुरु आदि की आज्ञानुसार शयन, आसन, निक्षेपण एव आदानादिक मे कायचेष्टा का नियमन करना है वह दूसरी कायगुप्ति है। कहा भी है—**उपसर्गप्रसगेऽपि, कायोत्सर्गजुषो मुनेः। स्थिरीभावः शरीरस्य, कायगुप्तिर्निगद्यते ॥१॥ शयनासननिक्षेपा,—दानसक्रमणेषु च। स्थानेषु चेष्टानियमः कायगुप्तिस्तु सा परा ॥२॥** श्लोकों का अर्थ ऊपर लिखे भावके अनुसार है। ये साधुजन कायगुप्ति के आराधक थे। अत एव (**गुत्ता**) अशुभ योग के निग्रहरूप गुप्ति से ये मुनिजन युक्त थे। (**गुत्तिंदिया**) असयमस्थानों से इन्द्रियों को सुरक्षित रखनेवाले थे, इसलिये इन्हे गुप्तेन्द्रिय कहा गया है। (**गुत्तबभयारी**) नौ—

નિવૃત્તિરૂપ પહેલી કાયગુપ્તિ છે ગુરુને પૂછીને શારીરિક ક્રિયાઓની (શૌચાદિની) નિવૃત્તિના સમયે અથવા ભૂમિ આદિની પ્રતિલેખના તેમજ પ્રમાર્જના કરવાના સમયે જે પોતાની ઇચ્છાપ્રમાણે શારીરિક ચેષ્ટાઓનો પરિત્યાગ કરવાનો છે, તેમજ ગુરુ આદિની આજ્ઞા—અનુસાર શયન, આસન, નિક્ષેપણ, તેમજ આદાનાદિકમા કાયચેષ્ટાનુ નિયમન કરવાનુ હોય છે, તે બીજી કાયગુપ્તિ છે કહ્યુ પણ છે કે- उपसर्गप्रसङ्गेऽपि, कायोत्सर्गजुषो मुने ।
स्थिरीभाव शरीरस्य, कायगुप्तिर्निगद्यते ॥
शयनासननिक्षेपा,—दानसक्रमणेषु च ।
स्थानेषु चेष्टानियम कायगुप्तिस्तु सा परा ॥

શ્લોકોનો અર્થ ઉપર લખેલા ભાવ પ્રમાણે છે તે સાધુજનો કાયગુપ્તિના આરાધક હતા માટેજ (गुत्ता) અશુભયોગના નિગ્રહરૂપ ગુપ્તિથી તે મુનિજનો યુક્ત હતા (गुत्तिंदिया) અસયમના સ્થાનોથી ઇંદ્રિયોને સુરક્ષિત રાખવાવાળા

चणा अकोहा अमाणा अमाया अलोभा संता पसंता उवसंता परिणिव्वुया अणासवा अग्गंथा छिण्णग्गंथा छिण्णसोया निरुवलेवा,

वभयारी' गुप्तब्रह्मचारिण —गुप्त नवभिर्ब्रह्मचर्यगुप्तिभी रक्षित ब्रह्म—मैथुनविरमणं चरन्ति तच्छीला, 'अममा' अममा —ममत्वरहिता, 'अकिंचणा' अकिञ्चना —नास्ति किञ्चन येषा ते अकिञ्चना —धर्मोपकरणातिरिक्तवस्तुरहिता । 'अकोहा' अक्रोधा =क्रोधवर्जिता, 'अमाणा' अमाना = मानरहिता, 'अमाया' अमाया = मायावर्जिता, 'अलोभा' अलोभा =लोभरहिता, 'संता' शान्ता =बहिर्वृत्त्या शान्तियुक्ता, 'पसंता' प्रशान्ता = अन्तर्वृत्त्या शान्तियुक्ता, अत एव 'उवसंता' उपशान्ता =शीतीभूता 'परिणिव्वुया' परिनिर्वृता = कर्मकृतविकाररहितत्वात् स्वस्थीभूता, अतएव 'अणासवा' अनास्रवा = आस्रवरहिता, 'अग्गंथा' अग्रन्था =निर्ग्रन्था, 'छिण्णग्गंथा' छिन्नग्रन्था ग्रन्थाति बध्नाति आत्मानं कर्मणेति ग्रन्थ, स द्विविध — द्रव्यभावभेदात्, द्रव्य-हिरण्यादि,

वाटिका—सहित ब्रह्मचर्य के धारक थे, इसलिये गुप्तब्रह्मचारी थे। (अममा) ममत्व से रहित थे। (अकिंचणा) धर्मोपकरण से अतिरिक्त और इनके पास कुछ नहीं था। (अकोहा) क्रोधरहित थे। (अमाणा) मानरहित थे। (अमाया) मायारहित थे। (अलोभा) लोभरहित थे। (संता) बाहरसे शान्तियुक्त थे, (पसंता) आभ्यन्तर से शान्तियुक्त थे, अत एव (उवसंता) शीतीभूत थे। (परिणिव्वुया) कर्मकृत विकार से रहित होने के कारण स्वस्थ थे, अत एव (अणासवा) आस्रव से रहित थे। (अग्गंथा) निर्ग्रन्थ थे। (छिण्णगंथा) जो आत्मा को कर्मों से जकडे (बाँधे) उसका नाम ग्रन्थ है। यह दो प्रकार का होता है। १ द्रव्यग्रन्थ, दूसरा भावग्रन्थ। हिरण्यादि द्रव्यग्रन्थ है।

હતા, તેથી તેમને ગુપ્તેન્દ્રિય કહે છે (गुत्तवभयारी) નવવાટિકા (વાડ) સહિત બ્રહ્મચર્યનું પાલન કરનાર હતા (अममा) મમત્વથી રહિત હતા (अकिंचणा) ધર્મોપકરણથી અતિરિક્ત બીજુ તેમની પાસે કંઈ નહોતુ (अकोहा) ક્રોધરહિત હતા (अमाणा) માનરહિત હતા (अमाया) માયારહિત હતા (अलोभा) લોભરહિત હતા (संता) બહારથી શાન્તિયુક્ત હતા (पसंता) આભ્યન્તરથી શાન્તિયુક્ત હતા, અત એવ (उवसंता) ઉપશાન્ત—શીતીભૂત અન્દર અને બહારથી શીતલ હતા (परिणिव्वुया) કર્મકૃત વિકારથી હોવાને કારણે સ્વસ્થ હતા, અત એવ (अणासवा) આસ્રવથી રહિત હતા (अग्गंथा) નિર્ગ્રન્થ હતા (छिण्णगंथा) જે આત્માને કર્મોથી જકડી રાખે (બાંધે) તેનુ નામ ગ્રન્થ છે એ બે પ્રકારના થાય છે ૧ દ્રવ્યગ્રન્થ અને ૨ ભાવગ્રન્થ

कंसपाईव मुक्कतोया, संखइव निरंगणा, जीवो विव अप्पडिहयगई.

भावो मिथ्यात्वादि, स द्विविधो ग्रन्थश्छिन्नो यैस्ते तथा। 'छिण्णसोया' छिन्नस्रोत-स -छिन्नसंसारप्रवाहा। 'निरुवलेवा' निरुपलेपा -कर्मबन्धहेतुरुपलेपो रागादिस्तेन रहिता, निरुपलेपतामेव 'कंसपाईव' इत्यादि-'सुहुयहुयासणो इव' इत्यन्तैरुपमानोपमेयभावै प्रदर्शयति, तत्र-'कंसपाईव मुक्कतोया' कांस्यपात्रीव मुक्ततोया-मुक्त-त्यक्त तोयमिव संसारबन्धहेतुत्वात्स्नेहो यैस्ते तथा, यथा कांस्यपात्र्या पतितमपि जल लिप्त न भवति तथा संसारबन्धहेतुस्तेषु लिप्तो न भवतीति भाव, 'संख इव निरंगणा' शङ्ख इव

मिथ्यात्वादि भावग्रन्थ है। इन दोनों प्रकार के ग्रन्थों से रहित होने के कारण ये 'छिन्नग्रन्थ' कहे गये हैं। (छिण्णसोया) संसार का प्रवाहरूप स्रोत इनसे अलग हो चुका था। (णिरुवलेवा) कर्मबन्ध में कारणभूत रागादिक लेप से भी ये रहित थे, इसलिये निरुपलेप थे। इसी बात को आगे के 'कंसपाईव' से लेकर 'सुहुय-हुयासणो इव' यहाँ तक के उपमान पदों के द्वारा सूत्रकार प्रकट करते हैं। (कंसपाईव मुक्कतोया) काँसे का भाजन जिस प्रकार पानी के संसर्ग से सर्वथा रहित होता है उसी प्रकार जल के तुल्य स्नेह को संसार का बंधन का हेतु होने से जिन्होंने सर्वथा छोड दिया, अथवा काँसे के भाजन मे गिरा हुआ जल जैसे लिप्त नहीं होता उसी प्रकार संसारबन्धहेतु आस्रव जिनमें लिप्त नहीं होता, अतः वे काँसे के भाजन के समान निरुपलेप कहे गये हैं। (संख इव निरंगणा) शंख में

હિરણ્ય આદિ દ્રવ્યગ્રંથ છે મિથ્યાત્વ આદિ ભાવગ્રન્થ છે આ બન્ને પ્રકારના ગ્રન્થોથી રહિત હોવાના કારણે તેઓને છિન્નગ્રંથ કહેવામાં આવ્યા છે (छिण्णसोया) સંસારના પ્રવાહરૂપ સ્રોત તેમનાથી અલગ થઈ ચુકયા હતા (णिरुवलेवा) કર્મબંધમાં કારણભૂત રાગાદિકલેપથી પણ તેઓ રહિત હતા, તેથી નિરૂપલેપ હતા આજ વાતને આગળના 'कंसपाईव' થી લઈને 'सुहुयहु-यासणो इव' અહીં સુધીના ઉપમાનપદોથી સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે (कंसपाईव मुक्कतोया) કાંસાનું વાસણ જેમ પાણીના સંસર્ગથી સર્વથા રહિત હોય છે તેજ રીતે જલના તુલ્ય સ્નેહ જે, સંસારના બંધનનો હેતુ છે તેને જેમણે સર્વથા છોડી દીધો, અથવા કાંસાના વાસણમાં પડેલા પાણી જેમ લિપ્ત થતાં (ચોટતાં) નથી, તેવીજ રીતે સંસારબંધનનો હેતુ આસ્રવ જેઓમાં લિપ્ત થતો નથી, તેથી તેઓને કાંસાના વાસણની પેઠે નિરૂપલેપ કહેવામાં આવ્યો છે (संख इव निरंगणा) શંખમાં જેમ કોઈ પણ રંગ હોતો નથી તેવીજ રીતે

जच्चकणगं पिव जायरूवा, आदरिसफलगा इव पागडभावा, कुम्मो

नीरङ्गणा —रङ्गण–रागाद्युपरञ्जन तस्मान्निर्गता, शङ्खे यथा किमपि रञ्जनद्रव्यं स्थितिं न लभते तथैतेष्वनगारेषु रागादयो न तिष्ठन्तीत्यर्थः । 'जीवो विव अप्पडिहयगई' जीव इव अप्रतिहतगतयः—जीवो यथा शुभाशुभकर्मवशाद्व्याहतगत्या सर्वत्र याति तथा अप्रतिहता गतिर्येषां ते तथा, देशनगरादिषु अप्रतिहतविहारित्वेन वादादिषु-कुतीर्थिकमतनिराकरणसामर्थ्योपेतत्वेन च अस्खलितगतयः, 'जच्चकणगं पिव जायरूवा' जात्यकनकमिव जातरूपाः—शोधितसुवर्णमिव निर्मलाः—रागादिरहिता इत्यर्थः । 'आदरिसफलगा इव पागडभावा' आदर्शफलका इव प्रकटभावाः—प्रकटाः=प्रकटिताः, भावाः—उत्पादव्ययध्रौव्यस्वभावकाः जीवाजीवादिपदार्था यैस्ते तथा, आदर्शफलका

जैसे कोई भी रंग स्थिति नहीं पा सकता, उसी प्रकार रागादिक भी उन अनगारों में ठहर नहीं सकते थे। अतः ये शंख के समान नीरङ्गण कहे गये हैं। (जीवो विव अप्पडिहयगई) जीव जिस प्रकार शुभ और अशुभ कर्म के वश प्रेरित होकर अव्याहत गति से सर्वत्र चला जाता है उसी प्रकार इनका भी देश, नगर आदि में अप्रतिहतगतिविहार होने से एवं वाद–विवाद आदि मे कुतीर्थिक मतों के निराकरण करने की सामर्थ्य से युक्त होने से ये भी जीव के समान अस्खलितगतिवाले थे। (जच्चकणगं पिव जायरूवा) शोधितसुवर्ण के समान ये बिल्कुल निर्मल थे। (आदरिसफलगा इव पागडभावा) आदर्श अर्थात् काच जिस प्रकार प्रतिबिम्बित मुखादिक अवयवों को यथावस्थित प्रकट करता है उसी प्रकार ये भी अपने ज्ञान के द्वारा उत्पाद व्यय एवं ध्रौव्य–विशिष्ट जीवाजीवादिक पदार्थों को प्रकट करते थे। इनकी

રાગાદિક પણ તે અનગારોમાં રહી શકતા નથી, તેથી તેઓ શંખની પેઠે નીરંગણ કહેવાય છે (जीवोविव अप्पडिहयगई) જીવ જેમ શુભ અને અશુભ કર્મવશ પ્રેરિત થઇને અવ્યાહત ગતિથી સર્વત્ર ચાલ્યો જાય, તેમ તેઓની પણ દેશ નગર આદિમાં અપ્રતિહતગતિ–વિહાર હોવાથી તેમજ વાદવિવાદ આદિમાં કુતીર્થિકમતોનું નિરાકરણ કરવાનું સામર્થ્ય હોવાથી તેઓ પણ જીવની પેઠે અસ્ખલિતગતિવાળા હતા (जच्चकणग पिव जायरूवा) શોધેલા સુવર્ણના જેવા તેઓ બિલકુલ નિર્મળ હતા (आदरिसफलगा इव पागडभावा) આદર્શ અર્થાત્ અરીસો જેમ પ્રતિબિંબિત મુખ આદિક અવયવોને યથાવસ્થિત પ્રકટ કરે છે (દેખાડે છે) તેમ તેઓ પણ પોતાના જ્ઞાનદ્વારા ઉત્પાદ, વ્યય તેમ જ ધ્રૌવ્ય–વિશિષ્ટ જીવ–અજીવ–

इव गुत्तिदिया, पुक्खरपत्तं व निरुवलेवा, गगणमिव निरालंबणा,

यथा प्रतिबिम्बितान् मुखाद्यवयवान् यथावस्थित प्रकटीकुर्वन्ति, तथा यद्देशनया जनाना चित्तदर्पणे जीवाजीवादिसकलपदार्थाः सुस्पष्ट प्रकाशन्ते इत्यर्थः । 'कुम्मो इव गुत्तिदिया' कूर्म इव गुप्तेन्द्रिया—कूर्मो यथा भयहेतौ सति सवृतसर्वेन्द्रियो भवति तथा ससार-भ्रमणभयात् गुप्तानि-विषयकषायेभ्य सरक्षितानि इन्द्रियाणि येषा ते गुप्तेन्द्रिया । 'पुक्खरपत्त व निरुवलेवा' पुष्करपत्रमिव निरुपलेपा—यथा कमलपत्र निर्लिप्त सत् जलोपरि तिष्ठति तथा निरुपलेपा —पङ्कजलतुल्यस्वजनविषयसम्बन्धरहिता भवन्तीति भाव । 'गगणमिव निरालवणा' गगनमिव निरालम्बना —कुलग्रामनगराद्यालम्बनवर्जिता,

जीवाजीवादिविषयक देशना ऐसी होती थी कि जिससे मनुष्यों के चित्तरूपी दर्पण में उत्पादादि-स्वभाव वाले समस्त जीवादिक पदार्थ अच्छी तरह-स्पष्टरूप से प्रतिभासित होने लगते थे। (कुम्मो इव गुत्तिदिया) कच्छप जिस प्रकार भय के कारणों के उपस्थित होने पर समस्त इन्द्रियों को सगोपित कर लेता है उसी प्रकार ये मुनिजन भी ससारपरिभ्रमण के भयसे विषय-कषायों की ओर से अपनी २ इन्द्रियों को सुरक्षित किये हुए रहते थे। (पुक्खरपत्तव निरुवलेवा) जिस प्रकार कमलपत्र जल में निर्लिप्त होकर उस के ऊपर रहता है और कीचड से उत्पन्न होने पर भी जैसे वह उसके सबध से रहित होता है इसी प्रकार ये साधुजन भी कीचड एव जलतुल्य स्वजन, एव विषयों के सबध से बिलकुल रहित थे। (गगणमिव निरालवणा) आकाश की तरह ये कुल, ग्राम और नगर आदि के सहारे की अपेक्षा नहीं रखते थे। (अणिलो इव निरालया) पवन की तरह घर

આદિક પદાર્થોને પ્રકટ કરતા હતા. તેમની જીવાજીવાદિ વિષયની દેશના એવી થતી હતી કે જેવી મનુષ્યોના ચિત્તરૂપી દર્પણમા ઉત્પાદ આદિ સ્વ-ભાવવાળા સમસ્ત જીવાદિક પદાર્થ સારી રીતે સ્પષ્ટરૂપે પ્રતિભાસિત થતા હતા (कुम्मो इव गुत्तिंदिया) કાચબો જેમ ભયના કારણો આવી પડતા સમસ્ત ઇન્દ્રિઓને સગોપિત કરી લે છે તેમ એ મુનિજનો પણ સસાર-પરિભ્રમણના ભયથી વિષયકષાયોની તરફથી પોતપોતાની ઇંદ્રિઓને સુરક્ષિત રાખતા હતા (पुक्खरपत्त व निरुवलेवा) જેમ કમળપત્ર જલથી નિર્લિપ્ત થઈને તેની ઉપર રહે છે અને કીચડથી ઉત્પન્ન થાય છે તો પણ જેમ તે તેના સબધથી રહિત હોય છે તેવી જ રીતે સાધુજન પણ કીચડ તેમ જ જલતુલ્ય સ્વજન તેમ જ વિષયોના સબધથી બિલકુલ રહિત હતા (गगणमिव निरालवणा) આકાશની પેઠે તેઓ કુળ, ગામ અને નગર આદિના આશ્રયની

अणिलो इव निरालया, चंदो इव सोमलेस्सा, सूरो इव दित्ततेया, सागरो इव गंभीरा, विहग इव सव्वओ विप्पमुक्का, मंदरो इव अप्पकंपा, सारयसलिलं व सुद्धहियया, खग्गिविसाणं व एगजाया,

'अणिलो इव निरालया' अनिल इव निरालया—पवन इव गृहरहिता। 'चंदो इव सोमलेस्सा' चन्द्र इव सौम्यलेश्या—अनुपतापहेतुमन परिणामधारिण, 'सूरो इव दित्ततेया' सूर्य इव दीप्ततेजस—द्रव्यत शरीरकान्त्या भावतो ज्ञानेन च देदीप्यमाना। 'सागर इव गभीरा' सागर इव गम्भीरा—हर्षशोकादिकारणसंयोगेऽपि निर्विकारचित्ता। 'विहग इव सव्वओ विप्पमुक्का' विहग इव सर्वतो विप्रमुक्ता—परिवारपरित्यागात् नियत-वासरहिता चेति भाव। 'मंदरो इव अप्पकंपा' मन्दर इव अप्रकम्पा—मेरुवत् परिषहोपसर्गपवनैरचलिता। 'सारयसलिलं व सुद्धहियया' शारदसलिलमिव शुद्ध-हृदया—यथा शरदृतौ जल निर्मल भवति तथा परमनिर्मलहृदया इति भाव। 'खग्गिविसाणं

से रहित थे। (चंदो इव सोमलेस्सा) चन्द्र के समान इनकी लेश्या सौम्य थी। (सूरो इव दित्ततेया) सूर्य के समान ये दीप्त तेजवाले थे। शारीरिक कांति द्रव्यतेज, एव ज्ञान यह भावतेज है। (सागर इव गभीरा) सागर के तुल्य ये गंभीर प्रकृति के थे। हर्ष शोक आदि के कारणों के उपस्थित होने पर भी इनके चित्त में किसी भी तरह का विकार उत्पन्न नहीं होता था। (विहग इव सव्वओ विप्पमुक्का) पक्षी की तरह ये नियमित निवास से रहित थे। (मंदरो इव अप्पकंपा) मेरुपर्वत की तरह परीषह एव उपसर्गरूप पवन से ये अचलित थे। (सारयसलिलं व सुद्धहियया) शरद ऋतु के जल समान उनका हृदय निर्मल था। (खग्गिविसाण व एगजाया) खड्गी

અપેક્ષા રાખતા નહતા (अणिलो इव निरालया) પવનની પેઠે ઘરથી રહિત હતા (चंदो इव सोमलेस्सा) ચન્દ્રની પેઠે તેમની લેશ્યા સૌમ્ય હતી (सूरो इव दित्ततेया) સૂર્યની પેઠે તેઓ દીપ્ત-તેજસ્વી હતા શારીરિક કાંતિ દ્રવ્યતેજ તેમ જ જ્ઞાન એ ભાવતેજ છે (सागर इव गभीरा) સાગરના જેવા ગંભીર પ્રકૃતિના તેઓ હતા હર્ષ શોક આદિના કારણો આવી જતા પણ તેમના ચિત્તમા કોઇ પણ જાતનો વિકાર ઉત્પન્ન થતો નહોતો (विहग इव सव्वओ विप्पमुक्का) પક્ષીની પેઠે તેઓ નિયમિત નિવાસથી રહિત હતા (मंदरो इव अप्पकंपा) મેરુ પર્વતની પેઠે પરીષહ તેમજ ઉપસર્ગરૂપ પવનથી તેઓ અચલિત હતા (सारयसलिलं व सुद्धहियया) શરદ ઋતુના જલની પેઠે તેમના હૃદય નિર્મળ હતા (खग्गिविसाण व एगजाया) ખડ્ગી (ગેંડા)ના શીંગડાની પેઠે,

भारंडपक्खीव अप्पमत्ता, कुंजरो इव सोंडीरा, वसभो इव जाय-

व एगजाया' खड्गिविषाणमिवैकजाता -खड्गी=आरण्यजीव -तस्य विषाण शृङ्ग, तदेकमेव भवति, तद्वत् एकजाता -एकीभूता-रागादिसहायरहिता, कुटुम्बादिसहायवर्जिता इत्यर्थ । 'भारंडपक्खीव अप्पमत्ता' भारण्डपक्षीवाऽप्रमत्ता -भारण्डपक्षी=भारण्डनामा पक्षी च भारण्ड-पक्षी, अय द्विजीवको विचरणवान् द्वाभ्या ग्रीवाभ्या द्वाभ्या मुखाभ्या च युक्त, द्वयोर्जीवयोरेकमेवोदर भवति, तौ चात्यन्तमप्रमत्ततयैव निर्वाह लभेते। यदि कदाचिद्दैवात् तयोरेकोऽपि जीव प्रमाद करोति, तदा उभयोर्नाशो भवति, तस्मात् सर्वदा चकितचित्तौ प्रमादरहितौ तौ तिष्ठत । तद्वद-प्रमत्ता -तप सयमादिधर्मरक्षण प्रमादरहिता इत्यर्थ । 'कुजरो इव सोंडीरा' कुञ्जर इव शौण्डीरा -हस्तीव शूरा -कषायादिरिपुभञ्जनशील । 'वसभो इव जायत्थामा' वृषभ इव जातस्थामान -जात स्थाम-बल येषा ते जातस्थामान -वृषभवत्सजातपराक्रमा

(गेंडा) के सींग की तरह, ये रागादिकों की सहायता से रहित होने के कारण, एक-स्वरूप थे। (भारंडपक्खीव अप्पमत्ता) भारंड पक्षी की तरह ये अप्रमत्त थे। यह पक्षी दो जीववाला होता है। इसके तीन पैर होते हैं। ग्रीवा और मुख इसके दो होते हैं। उदर अर्थात् पेट एकही होता है। ये दोनों जीव अयत अप्रमत्त होते हे। यदि कदाचित् एक जीव प्रमाद कर तो दोनों का नाश होवे। इसलिये अप्रमत्तचित्त होकर ये दोनों बहुत ही सावधानी से रहते हैं। उसी तरह ये मुनिजन भी तप एव सयमादिक धर्म के रक्षण करने में प्रमादवर्जित थे। (कुजरो इव सोंडीरा) कुजर के समान ये कषायादिक के भजन में शौण्डीर-शूरवीर थे। (वसभो इव जायत्थामा) वृषभ के

तेओ रागादिकोनी सहायताथी रहित होवाने कारणे, एकस्वरूप हता (भारंड-पक्खीव अप्पमत्ता) भारंड पक्षीनी पेठे तेओ अप्रमत्त हता आ पक्षी बे जीववाळा होय छे तेने त्रण पग होय छे डोक अने मुख तेने बे होय छे उदर (पेट) तेने एक ज होय छे ते बन्ने जीव बहु अप्रमत्त होय छे जो कदाचित् एक जीव प्रमाद (भूल) करे छे तो बन्नेनो नाश थाय छे तेथी अप्रमत्तचित्त (चतुर) थईने ते बन्ने बहु ज सावधानीथी रहे छे तेवी ज रीते ए मुनिजनो पण तप तेमज सयम आदि धर्मना रक्षण करवामा प्रमादरहित हता (कुजरो इव सोंडीरा) कुजर (हाथी)नी पेठे तेओ कषाय आदिकना भग (नाश) करवामा शौडीर-शूरवीर हता. (वसभो इव जायथामा) वृषभनी पेठे तेओ बलिष्ठ हता (सीहो इव दुद्ध-

त्थामा, सीहो इव दुद्धरिसा, वसुंधरा इव सव्वफासविसहा, सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंता ॥ सू० २७ ॥

इत्यर्थः । 'सीहो इव दुद्धरिसा' सिंह इव दुर्धर्षाः—सिंहवत्परीषहादिमृगैर्दुर्धर्षाः इत्यर्थः । 'वसुंधरा इव सव्वफासविसहा' वसुन्धरा इव सर्वस्पर्शविषहाः—पृथ्वी यथा सर्वं समसह्यं वा स्पर्शं सहते सर्वंसहेति प्रोच्यते तथैव साधवोऽपि अनुकूलप्रतिकूलपरीषहोपसर्गसुसहा भवन्ति । 'सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंता' सुहुतहुताशन इव तेजसा ज्वलन्तः—सुहुत=सुष्ठु हुत—घृताद्याहुतिभिस्तर्पितो यो हुताशनो वह्निः—तद्वत्तेजसा—तपः—संयमतेजसा ज्वलन्तो दीप्यमाना इति भावः ॥

अत्र उपमानसंग्राहकम् इदं गाथाद्वयम्—

'कंसे १ संखे २ जीवे ३, जच्चे कणगे य ४ आदरिसे ५ ।
कुम्मे ६ पुक्खरपत्ते ७, गयणे ८ अणिले ९ य चंद १० सूरे य ११ ॥
सागर १२ विहगे १३ मंदर १४, सारयसलिल च १५ खग्गी य १६ ।
भारंडे १७ गय १८ वसहे १९, सीह २० वसुधरा २१ सुहुयहुए २२ ॥ २ ॥ इति ॥ सू० २७ ॥

समान ये बलिष्ठ थे । (**सीहो इव दुद्धरिसा**) सिंह के समान ये दुर्धर्ष थे । सिंह जैसे मृगादिकों से अप्रधृष्य होता है, उसी प्रकार मृग जैसे परीषहादिकों से ये भी चलितचित्त नहीं होते थे । (**वसुंधरा इव सव्वफासविसहा**) पृथिवी के समान सर्वस्पर्शसह थे । पृथिवी जिस तरह सहने योग्य अथवा नहीं सहन करने योग्य ऐसे भी स्पर्श को सहती है उसी प्रकार ये मुनिजन भी अनुकूल एवं प्रतिकूल परीषहों के उपनिपात को अच्छी तरह सहन करते थे (**सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंता**) सुहुत अग्नि की तरह ये तप और संयम के तेज से देदीप्यमान थे ॥ सू० २७ ॥

रिसा) સિંહના જેવા તેઓ દુર્ધર્ષ હતા. સિંહ જેમ મૃગ આદિકોથી અપ્રધૃષ્ય હોય છે તેવી જ રીતે મૃગસમાન પરીષહ આદિકોથી તેઓ પણ ચલિતચિત્ત થતા નહોતા. (वसुंधरा इव सव्वफासविसहा) પૃથિવીની પેઠે સર્વ સ્પર્શ સહન કરતા હતા. પૃથિવી જેમ સહેવા યોગ્ય અથવા ન સહન કરવા યોગ્ય એવા પણ સ્પર્શને સહન કરે છે તેવી જ રીતે એ મુનિજનો પણ અનુકૂળ તેમ જ પ્રતિકૂળ પરીષહોના ઉપનિપાત ને સારી રીતે સહન કરતા હતા. (सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंता) સુહુત અગ્નિની પેઠે તેઓ તપ અને સંયમના તેજથી દેદીપ્યમાન હતા. (સૂ૦ ૨૭)

मूलम्—नत्थि णं तेसि णं भगवंताणं कत्थइ पडिबंधे भवइ। से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। दव्वओ णं-सचित्ताचित्तमीसिएसु

टीका—'नत्थि' इत्यादि। नास्ति अथ पक्ष, यत् खलु 'तेसि ण भगवताणं' तेषा खलु भगवताम्-श्रीमहावीरस्वामिन शिष्याणाम् 'कत्थइ' क्वापि-कस्मिन्नपि विषये 'पडिबधे भवइ' प्रतिबन्ध-आसक्ति भवतीति, श्री महावीर-स्वामिनोऽन्तेवासिना सयमप्रतिबन्धीभूत कोऽपि हेतु कुत्राऽपि न भवतीति भाव । 'से य पडिबधे चउव्विहे पण्णत्ते' स च प्रतिबन्धश्चतुर्विध प्रज्ञप्त 'त जहा' तद्यथा-भेद-प्रकारश्चैवम्-द्रव्यत क्षेत्रत कालतो भावतश्च। तेषु 'दव्वओ णं' द्रव्यत खलु 'सचित्ता-चित्त-मीसिएसु दव्वेसु' सचित्ताऽचित्त-मिश्रितेषु द्रव्येषु। तत्र-सचित्त=शिष्यादिकम्, अचित्त=वस्त्रादिकम्, मिश्रितम्=शिष्यसहितवस्त्रादिकम्, एतेषु द्रव्येषु, 'खेत्तओ' क्षेत्रत –

'नत्थि णं' इत्यादि।

(तेसि णं भगवताणं) भगवान महावीर के समीप मे रहनेवाले उन स्थविर भगवन्तों का (कत्थइ) किसी भी विषय मे (पडिबधे) प्रतिबंध (नत्थि) नहीं था। अर्थात् भगवान् वीर प्रभु के ये समस्त मुनिजन सयम के विघातक किसी भी विषय मे आसक्ति नहीं रखते थे। (से य पडिबधे चउव्विहे पण्णत्ते) वह प्रतिबध चार प्रकार का कहा गया है, (तजहा) वह इस प्रकार है-(दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ) द्रव्य से, क्षेत्र से, काल से एव भाव से। (दव्वओ ण सचित्ता-चित्त-मीसिएसु दव्वेसु) द्रव्य से प्रतिबध ३ प्रकार का है-(१) सचित्त (२) अचित्त (३) सचित्ताचित्त।

'नत्थि ण' ईत्यादि

(तेसि ण भगवंताण) ભગવાન મહાવીરના સમીપમા રહેવાવાળા તે સ્થવિર ભગવતોને (कत्थइ) કોઈપણ વિષયમા (पडिबधे) પ્રતિબધ (नत्थि) ન હોતો, અર્થાત્-ભગવાન્ વીરપ્રભુના તે સમસ્ત મુનિજનો સયમના વિઘાતક હોય એવા કોઈ પણ વિષયમા આસક્તિ રાખતા નહોતા (से य पडिबधे चउव्विहे पण्णत्ते) તે પ્રતિબધ ચાર પ્રકારના કહેલા છે (तजहा) તે આ પ્રકારે છે (दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ) દ્રવ્યથી, ક્ષેત્રથી, કાળથી તેમજ ભાવથી (दव्वओ ण सचित्ता-चित्त-मीसिएसु दव्वेसु) દ્રવ્યથી પ્રતિબધ ત્રણ પ્રકારનો (૨) અચિત્ત, (૩) સચિત્તાચિત્ત, શિષ્ય આદિક સચિત્ત છે

स्थामा, सीहो इव दुद्धरिसा, वसुंधरा इव सव्वफासविसहा, सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंता ॥ सू० २७॥

इत्यर्थः । 'सीहो इव दुद्धरिसा' सिंह इव दुर्धर्षा –सिंहवत्परीषहादिमृगैर्धर्षितुमशक्या इत्यर्थः । 'वसुंधरा इव सव्वफासविसहा' वसुंधरा इव सर्वस्पर्शविषहा –पृथ्वी यथा सर्वं सह-मसह्यं वा स्पर्शं सहते सर्वंसहेति चोच्यते तथैवैते साधवोऽपि अनुकूलप्रतिकूलपरीषहोपसर्गं सुसहा भवन्ति । 'सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंता' सुहुतहुताशन इव तेजसा ज्वलन्त –सुहुत =सुष्ठु हुत –घृताद्याहुतिभिस्तर्पितो यो हुताशनो वह्निः –तद्वत्तेजसा–तपः–संयमतेजसा ज्वलन्तो दीप्यमाना इति भावः॥

अत्र उपमानसमाहकम् इदं गाथाद्वयम्—

'कंसे १ संखे २ जीवे ३, जच्चे कणगे य ४ आदरिसे ५ ।
कुम्मे ६ पुक्खरपत्ते ७, गयणे ८ अनिले ९ य चंद १० सूरे य ११॥
सागर १२ विहगे १३ मंदर १४, सारयसलिलं च १५ खग्गी य १६ ।
भारंडे १७ गय १८ वसहे १९, सीह २० वसुंधरा २१ सुहुयहुए २२॥ २॥ इति ॥ सू० २७ ॥

समान ये बलिष्ठ थे। (सीहो इव दुद्धरिसा) सिंह के समान ये दुर्धर्ष थे। सिंह जैसे मृगादिकों से अप्रधृष्य होता है, उसी प्रकार मृग जैसे परीषहादिकों से ये भी चलितचित्त नहीं होते थे। (वसुंधरा इव सव्वफासविसहा) पृथिवी के समान सर्वस्पर्शसह थे। पृथिवी जिस तरह सहने योग्य अथवा नहीं सहन करने योग्य ऐसे भी स्पर्श को सहती है उसी प्रकार ये मुनिजन भी अनुकूल एवं प्रतिकूल परीषहों के उपनिपात को अच्छी तरह सहन करते थे (सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंता) सुहुत अग्नि की तरह ये तप और संयम के तेज से देदीप्यमान थे ॥सू० २७॥

रिसा) સિંહના જેવા તેઓ દુર્ધર્ષ હતા સિંહ જેમ મૃગ આદિકોથી અપ્રધૃષ્ય હોય છે તેવી જ રીતે મૃગસમાન પરીષહ આદિકોથી તેઓ પણ ચલિત ચિત્ત થતા નહોતા (वसुंधरा इव सव्वफासविसहा) પૃથિવીની પેઠે સર્વ સ્પર્શ સહન કરતા હતા પૃથિવી જેમ સહેવા યોગ્ય અથવા ન સહન કરવા યોગ્ય એવા પણ સ્પર્શને સહન કરે છે તેવી જ રીતે એ મુનિજનો પણ અનુકૂળ તેમ જ પ્રતિકૂળ પરીષહોના ઉપનિપાત ને સારી રીતે સહન કરતા હતા (सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंता) સુહુત અગ્નિની પેઠે તેઓ તપ અને સંયમના તેજથી દેદીપ્યમાન હતા (સૂ० २७)

मूलम्—नत्थि णं तेसि णं भगवंताणं कत्थइ पडिबंधे भवइ। से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते; तंजहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। दव्वओ णं—सचित्ताचित्तमीसिएसु

टीका—'नत्थि' इत्यादि। नास्ति अथ पक्ष, यत् खलु 'तेसि णं भगवंताणं' तेषां खलु भगवताम्—श्रीमहावीरस्वामिन शिष्याणाम् 'कत्थइ' क्वापि—कस्मिन्नपि विषये 'पडिबंधे भवइ' प्रतिबन्ध —आसक्ति भवतीति, श्री महावीर-स्वामिनोऽन्तेवासिना संयमप्रतिबन्धीभूत कोऽपि हेतु कुत्राऽपि न भवतीति भाव। 'से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते' स च प्रतिबन्धश्चतुर्विध प्रज्ञप्त 'तं जहा' तद्यथा-भेद-प्रकारश्चैवम्—द्रव्यत क्षेत्रत कालतो भावतश्च। तेषु 'दव्वओ णं' द्रव्यत खलु 'सचित्ता-चित्त-मीसिएसु दव्वेसु' सचित्ताऽचित्त-मिश्रितेषु द्रव्येषु। तत्र—सचित्त=शिष्यादिकम्, अचित्त=वस्त्रादिकम्, मिश्रितम्=शिष्यसहितवस्त्रादिकम्, एतेषु द्रव्येषु, 'खेत्तओ' क्षेत्रत —

'नत्थि णं' इत्यादि।

(तेसि णं भगवंताणं) भगवान महावीर के समीप में रहनेवाले उन स्थविर भगवन्तों का (कत्थइ) किसी भी विषय में (पडिबंधे) प्रतिबंध (नत्थि) नहीं था। अर्थात् भगवान् वीर प्रभु के ये समस्त मुनिजन संयम के विघातक किसी भी विषय में आसक्ति नहीं रखते थे। (से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते) वह प्रतिबंध चार प्रकार का कहा गया है, (तंजहा) वह इस प्रकार है—(दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ) द्रव्य से, क्षेत्र से, काल से एवं भाव से। (दव्वओ णं सचित्ता-चित्त-मीसिएसु दव्वेसु) द्रव्य से प्रतिबंध ३ प्रकार का है—(१) सचित्त (२) अचित्त (३) सचित्ताचित्त।

'नत्थि णं' ईत्यादि

(तेसि णं भगवंताणं) ભગવાન મહાવીરના સમીપમાં રહેવાવાળા તે સ્થવિર ભગવંતોને (कत्थइ) કોઈપણ વિષયમાં (पडिबंधे) પ્રતિબંધ (नत्थि) ન હોતો, અર્થાત્—ભગવાન્ વીરપ્રભુના તે સમસ્ત મુનિજનો સંયમના વિઘાતક હોય એવા કોઈ પણ વિષયમાં આસક્તિ રાખતા નહોતા (से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते) તે પ્રતિબંધ ચાર પ્રકારના કહેલા છે (तंजहा) તે આ પ્રકારે છે (दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ) દ્રવ્યથી, ક્ષેત્રથી, કાળથી તેમજ ભાવથી (दव्वओ णं सचित्ता-चित्त-मीसिएसु दव्वेसु) દ્રવ્યથી પ્રતિબંધ ત્રણ પ્રકારનો છે—(૧) સચિત્ત, (૨) અચિત્ત, (૩) સચિત્તાચિત્ત, શિષ્ય આદિક સચિત્ત છે

दव्वेसु । खेत्तओ–गामे वा णयरे वा रण्णे वा खेत्ते वा खले वा घरे वा अंगणे वा । कालओ–समए वा आवलियाए वा आणा-

'गामे वा' ग्रामे वा, 'णयरे वा' नगरे वा 'रण्णे वा' अरण्ये वा, 'खेत्ते वा' क्षेत्रे वा, खले=धान्यमर्दनसंशोधनस्थाने वा, 'घरे वा अंगणे वा' गृहे वाऽङ्गणे वा । 'कालओ समए वा आवलियाए वा' कालतः–समये सर्वतो जघन्ये काले, समयस्य विस्तृतोऽर्थ उपासकदशाङ्गस्यागारधर्मसञ्जीवनी-वृत्तितोऽवसेयः । 'आवलिकायाम्' असंख्यातसमय रूपायाम, 'आणापाणुए वा' आनप्राणे वा=

शिष्यादिक सचित्त है। वस्त्रादिक अजीव पदार्थ अचित्त हैं। शिष्यसहित वस्त्रादिक सचित्ताचित्त हैं। इनमें इन मुनिजनों को बिलकुल भी आसक्ति नहीं थी। (खेत्तओ गामे वा णयरे वा रण्णे वा खेत्ते वा खले वा घरे वा अंगणे वा) इसी तरह क्षेत्र की अपेक्षा–ग्राम में, नगर में, जंगल में, क्षेत्र में, खल–धान्यादिक के कूटने और फटकने के स्थान ऐसे खलिहान में, घर में अथवा आंगन मे प्रतिबंध नहीं था। (कालओ समए वा आवलियाए वा आणापाणुए वा थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा अयणे वा अण्णयरे वा दीहकालसंजोगे) कालकी अपेक्षा से समय–सब से छोटे काल मे, इस समय और कालका विस्तृत अर्थ 'उपासकदशाङ्ग' की 'अगारधर्मसंजीवनी' वृत्ति मे कहा है, वहा से जान लेना चाहिये। आवलिका में, असंख्यात समयकी एक आवलिका होती है, उच्छ्वासनिश्वासकालरूप आनप्राण में, स्तोकमे–सातप्राणप्रमाणवाले कालविशेषमे–सात उच्छ्वासमे, लवमे–सात-

વસ્ત્રાદિક અજીવ પદાર્થ અચિત્ત છે શિષ્યસહિત વસ્ત્રાદિક સચિત્તાચિત્ત છે તેમા એ મુનિજનોને બિલકુલ જ આસક્તિ નહોતી (खेत्तओ गामे वा णयरे वा रण्णे वा खेत्ते वा खले वा घरे वा अंगणे वा) તેવી જ રીતે ક્ષેત્રની અપેક્ષા–ગામમા, નગરમા, જગલમા, ખેતરમા, ખલ–ધાન્ય વગેરેને કૂટવા ઝાડવાના સ્થાનભૂત એવા ખલિહાનમા, ઘરમા, આગણામા પ્રતિબધ નહોતો. (कालओ समए वा आवलियाए वा आणापाणुए वा थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा अयणे वा अण्णयरे वा दीहकालसंजोगे) કાલની અપેક્ષાએ સમય–સૌથી થોડા કાળમા (આ સમય અને કાલનો વિસ્તૃત અર્થ 'ઉપાસકદશાગની' 'અગારધર્મસંજીવની' વૃત્તિમા કહેલો છે ત્યાથી જાણી લેવો જોઈએ), આવલિકામા (અસખ્યાત સમયની એક આવલિકા થાય છે), ઉચ્છવાસ-નિશ્વાસ-કાલરૂપ આનપ્રાણમા, સ્તોકમા–સાતપ્રાણના પ્રમાણ

पाणुए वा थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा अयणे वा अण्णयरे वा दीहकालसंजोगे। भावओ-कोहे वा माणे वा मायाए वा लोहे वा भए वा हासे वा। एवं तेसिं ण भवइ ॥ सू० २८ ॥

उच्छ्वसिमनि श्वासकाल इत्यर्थ, 'थोवे वा' स्तोके वा=सप्तप्राणमाने वा कालविशेषे, 'सत्त पाणाणि से थोवे' इत्युक्ते। 'लवे वा'-'सत्त थोवाणि से लवे' इति सप्तस्तोकमिते काले वा, 'मुहुत्ते वा' मुहूर्त्ते वा-लवाना सप्तसप्ततिप्रमाणे काले, 'अहोरत्ते वा' अहोरात्रे वा-रात्रिदिवसप्रमाणे काले वा, 'पक्खे वा' पक्षे-पञ्चदशदिवस-प्रमाणके काले वा 'मासे वा' त्रिंशद्दिवसप्रमाणके काले वा, 'अयणे वा' अयने-उत्तरायणदक्षिणायनभेदाद्द्विविधे षण्मासप्रमिते काले वा, 'अण्णयरे वा दीहकालसंजोगे' अन्यतरस्मिन् वा दीर्घकालसंयोगे-उक्तप्रभेदाद् भिन्ने वा संवत्सरादिरूपे काले। 'भावओ' भावत -'कोहे वा' क्रोधे वा 'माणे वा'-माने वा, 'मायाए वा'-मायाया वा, 'लोहे वा' लोभे वा 'भए वा' भये वा, हासे वा। 'एवं तेसिं ण भवइ' एवं तेषां न भवति, एवं-पूर्ववर्णितप्रकारेण तत्र तत्र प्रतिबन्ध -आसक्तिस्तेषां मुनीनां न भवति ॥सू० २८॥

स्तोक अर्थात् ४९ उच्छ्वास-प्रमित कालमें, मुहूर्त्तमें-७७ लवोंसे प्रमित कालमें, अहोरात्रमें, पक्ष-१५ दिनके कालमें, मास-३० दिन-प्रमाण समयमे, अयनमे-उत्तरायण-दक्षिणायन रूप छ छ महिनेमें, एवं और भी संवत्सरादिरूप बृहत्समयमे प्रतिबंध नहीं था। (भावओ) भावकी अपेक्षासे (कोहे वा माणे वा मायाए वा लोहे वा भए वा हासे वा एवं तेसिं ण भवइ) क्रोधमें, मानमें, मायामें, लोभमे, भयमें, अथवा हास्यमे उन मुनिजनोंको किसीभी तरहका प्रतिबंध नहीं था ॥ सू० २८ ॥

જેટલા કાળવિશેષમા-સાત ઉચ્છ્વાસમા, લવમા-સાત સ્તોક અર્થાત્ ૪૯ ઉચ્છ્વાસના પ્રમાણના કાળમા, મુહૂર્ત્તમા-૭૭ લવોથી પ્રમિત કાળમા, અહોરાત્રિમા, પક્ષ-૧૫ દિવસના કાળમા, માસ-૩૦ દિવસના સમયમા, અયનમા-ઉત્તરાયણ-દક્ષિણાયનરૂપ છ છ મહિનામા, તેમજ બીજાપણ સંવત્સર આદિરૂપ લાબા સમયમા પ્રતિબંધ નહોતો (ભાવઓ) ભાવની અપેક્ષાએ (कोहे वा माणे वा मायाए वा लोहे वा भए वा हासे वा एवं तेसिं ण भवइ) ક્રોધમા, માનમા, માયામા, લોભમા, ભયમા અથવા હાસ્યમા તે મુનિઓને કોઇ પણ તરેહનો પ્રતિબંધ નહોતો (સૂ ૨૮)

मूलम्–ते णं भगवंतो वासावासवज्जं अट्ठ गिम्हहेमंतियाणि मासाणि गामे एगराइया णयरे पंचराइया, वासीचंदणसमाण-

'ते णं भगवंतो' इत्यादि। ते=श्रीवर्धमानस्वामिन शिष्या खलु भगवंतो 'वासावासवज्जं' वर्षावासवर्जम् 'अट्ठ गिम्हहेमंतियाणि' अष्टौ ग्रैष्महैमन्तिकान 'मासाणि' मासान्, 'गामे एगराइया' ग्रामे एकरात्रिका –यस्मिन् दिवसेऽनगारा ग्राममागच्छन्ति स दिवस पुनर्यावत्परावर्तते तावत्पर्यन्त काल एकरात्रशब्देन गृह्यते, तेनैकसमाहनिवासिन इत्यर्थ। 'णयरे पंचराइया'–नगरे पञ्चरात्रिका –यस्मिन् दिवसेऽनगारा नगरमागच्छन्ति स दिवस पञ्चवारमावर्तित पञ्चरात्रमुच्यते, तेनैकोनत्रिंशद्दिवसवासिन इत्यर्थ। स्थविरकल्पिना शेषकाले एकस्मिन् नगरे मासकल्पविहारित्वात्। 'वासी–चंदण–समाण–कप्पा' वासी–चन्दन–समान–कल्पा, वासी–'वसुला' इति प्रसिद्ध काष्ठतक्षणशस्त्रविशेष, वासीव वासी अपकारी, ता चन्दनसमान–चन्दनवत् कल्पयन्ति=मन्यन्ते ये ते वासीचन्दनसमानकल्पा –अपकारिण-मप्युपकारकत्वेन मन्यमाना इत्यर्थ। तथा चोक्तम्—

'तेण भगवतो' इत्यादि,

(तेण भगवतो) वर्द्धमान स्वामी के वे सयमी शिष्यजन (वासावासवज्ज) वर्षाकाल–चौमासा छोडकर (अट्ठ गिम्हहेमतियाणि मासाणि) ग्रीष्मकाल एव शीत-कालके ८ महीनोंमे (गामे) छोटे गाममें (एगराइया) एकरात्रिपर्यन्त–एक सप्ताह तक और (णयरे) नगरमें (पचराइया) पाच रात्रितक–२९ दिवस–पर्यन्त ठहरते थे। (वासी-चदण-समाण-कप्पा) ये अपने अपकारीजनको भी उपकारीरूपसे मानते थे। अथवा कोई चाहे इन्हे वसूलासे छीले, चाहे चदनसे चर्चे, दोनों पर समान दृष्टि रखते थे। कहा भी है

'तेण भगवंतो' ઇત્યાદિ

(तेण भगवतो) વર્દ્ધમાન સ્વામીના તે સયમી શિષ્યજનો (वासावास-वज्ज) વર્ષાકાલ–ચોમાસું છોડીને (अट्ठ गिम्हहेमतियाणि मासाणि) ગ્રીષ્મકાલ તેમજ શીતકાલના આઠ મહિનામા (गामे) નાના ગામમા (एगराइया) એક રાત્રિ સુધી–એક અઠવાડીયા સુધી, અને (णयरे) નગરમા (पचराइया) પાચ રાત્રિ સુધી–૨૯ દિવસ સુધી રોકાતા હતા (वासीचदणसमाणकप्पा) તે પોતાના અપકારીજનોને પણ ઉપકારીરૂપ ગણતા હતા અથવા કોઈ ભલે તેમને વાસલાથી છોલે કે ભલે ચદનથી ચર્ચે એઉપર સમાન દૃષ્ટિ રાખતા હતા કહ્યું પણ છે–

"यो मामपकरोत्येष, तत्त्वेनोपकरोत्यसौ ॥
शिरामोक्षाद्युपायेन, कुर्वाण इव नीरुजम् ॥" इति ॥

यद्वा-वास्या चन्दनसमानं कल्प आचारो येषां ते वासीचन्दनसमानकल्पाः,

---

यो मामपकरोत्येष तत्त्वेनोपकरोत्यसौ ।
शिरामोक्षाद्युपायेन, कुर्वाण इव नीरुजम् ॥ १ ॥

सज्जनोंका जब कोई मनुष्य अपकार करता है, तब वे ऐसा समझते हैं कि यह जो मेरा अपकारी है सो तो वस्तुतः उपकारी ही है। क्यों कि इसके अपकार से हमारी सहनशीलता आदि गुणोंका परीक्षा होता है, शत्रु-मित्रमें, निन्दा-स्तुति-आदिमें समदृष्टिता बढती है। अतः यह मेरा अपकारी नहीं, प्रत्युत उपकारी है। जैसे किसीकी गर्दनकी नस यदि चढ जाती है, उसको यथास्थानमें बैठानेके वैद्य उसका शिर पकडकर बायें-दायें घुमाता है, उस समय रोगीको पीडा होती है, परन्तु नसके अपने स्थान पर बैठ जाने पर पीडितकी पीडा शान्त हो जाती है, वह नीरोग हो जाता है, उसी प्रकार अपकारी भी अपकारके द्वारा सज्जनोंकी आत्माको, जो अनादिकालसे स्व-स्थानच्युत हो ससारमें भ्रमण कर रही है, स्वस्थानमें स्थित करता है। इसलिये सज्जन अपने अपकारीको उपकारीही मानते हैं, उस पर आक्रोश कभी भी नहीं करते

यो मामपकरोत्येष तत्त्वेनोपकरोत्यसौ ।
शिरामोक्षाद्युपायेन कुर्वाण इव नीरुजम् ॥ १ ॥

સજ્જનોનો કોઈ મનુષ્ય જ્યારે અપકાર કરે છે ત્યારે તેઓ એમ સમજે છે કે આ જે અમારો અપકારી છે તે તો ખરીરીતે ઉપકારી જ છે કેમકે તેના અપકારથી અમારી સહનશીલતા આદિગુણોની પરીક્ષા થાય છે, શત્રુ-મિત્રમાં, નિંદા-સ્તુતિ આદિમાં સમદૃષ્ટિપણુ વધે છે તેથી તે અમારો અપકારી નથી, પરંતુ ઉપકારી છે જેમકે કોઇની ગરદનની નસ જો ચડી જાય છે તો તે બરાબર ઠેકાણે બેસાડી દેવાને માટે વૈદ્ય તેનું માથું પકડીને જમણુ-ડાબુ ફેરવે છે તે વખતે રોગીને પીડા થાય છે, પરંતુ નસને પોતાને ઠેકાણે બેસી જવાથી તે રોગીની પીડા શાંત થઇ જાય છે, અને તે નિરોગી થઇ જાય છે તેવીજ રીતે અપકારી પણ અપકારદ્વારા સજ્જનોના આત્માને-કે જે અનાદિકાલથી પોતાના સ્થાનથી ચ્યુત થઇ સંસારમાં ભ્રમણ કરી રહેલો છે તેને-પોતાના સ્થાનમાં સ્થિર કરે છે તેથી સજ્જન પોતાના અપકારીને ઉપકારીજ માને છે તેના પર ગુસ્સો કદી પણ કરતા નથી

कप्पा समलेट्टुकंचणा समसुहदुक्खा इहलोग-परलोग-अप्पडिबद्धा संसारपारगामी कम्मणिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिया विहरंति॥सू. २९॥

तथाचोक्तम्—

"अपकारपरेऽपि परे, कुर्वन्त्युपकारमेव हि महान्त ।
सुरभीकरोति वासीं, मलयजमपि तक्षमाणमपि ॥" इति ।

'समलेट्टुकंचणा' समलेष्टुकाञ्चना =लेष्टु—मृत्तिकाखण्ड, काञ्चन—सुवर्णं, ते उभे समे तुल्ये येषा ते तथा, 'समसुहदुक्खा' समसुखदु खा, सुखे दु खे च समानपरिणामा

है, अथवा—वासी—अपकारीमें चदनके समान है आचार जिनका ऐसे वे साधुजन थे। चदन वासी द्वारा—वसूला द्वारा—काट जाने पर भी वसूलाके मुखको सुवासित करता है। कहा भी है—

अपकारपरेऽपि परे, कुर्वन्त्युपकारमेव हि महान्तः ।
सुरभीकरोति वासीं मलयजमपि तक्षमाणमपि ॥ १ ॥

तथा दुष्ट—स्वभाववाले मनुष्य यद्यपि सज्जनोंका निरन्तर अपकार ही करते रहते हैं, तो भी वे सज्जन उन अपकारियों पर कभी भी क्रुद्ध नहीं होते हैं, उनका कभी भी अपकार नहीं करते है। प्रत्युत वे अपकारियोंका भी उपकार ही करते है। जैसे चदनवृक्ष अपने अङ्गको काटनेवाले मनुष्यको, काटने के साधन कुठारके मुखको भी सुरभित ही करता है ॥१॥ (समलेट्टुकंचणा) पाषाण और सुवर्ण इन दोनों को बराबर समझते थे। (समसुह-

---

અથવા વાસી—અપકારી પ્રતિ ચદનના સરખો આચાર છે જેમનો એવા તે સાધુજનો હતા ચદન વાસીદ્વારા—વાસલાથી કપાઇ જવા છતા પણ વાસલાના મુખને સુવાસિત કરે છે કહ્યુ પણ છે—

अपकारपरेऽपि परे, कुर्वन्त्युपकारमेव हि महान्त ।
सुरभीकरोति वासीं मलयजमपि तक्षमाणमपि ॥

તથા તે દુષ્ટ સ્વભાવવાળા મનુષ્ય જો કે સજ્જનોનો હમેશ અપકાર જ કર્યા કરે છે તો પણ તે સજ્જનો તે અપકારીઓ ઉપર કદી પણ ક્રોધ કરતા નથી, કદી પણ તેમનો અપકાર કરતા નથી, પરતુ તે અપકારીઓ ઉપર પણ ઉપકાર જ કરે છે જેમ ચદનવૃક્ષ પોતાના અગને કાપવાવાળા મનુષ્યને, અને કાપવાના સાધન કુહાડાના મુખને પણ સુગધિત કરે છે (૧) (समलेट्टु कचणा) પાષાણુ અને સુવર્ણ એ બન્નેને બરાબર સમજતા હતા (समसुह-

मूलम्—तेसि णं भगवंताणं एएणं विहारेणं विहरमा-

इ यर्थ । 'इहलोग-परलोग-अप्पडिबद्धा' इहलोकपरलोकाऽप्रतिबद्धा -लोकद्वयसुखास-क्तिरहिता, 'ससार-पार-गामी' ससार-पार-गामिन -भवसमुद्रत स्वपरात्मतारका, 'कम्मणिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिया विहरति' कर्मनिघातनार्थमभ्युत्थिता -सकलकर्मनिर्जरणार्थं कृतोद्यमा विहरन्ति ॥ सू० २९ ॥

टीका—'तेसि ण' इत्यादि । तेषा श्रीमहावीरस्वामिशिष्याणा 'भगवताण' भगवता-तप सयमशोभाशालिनाम्, 'एएण विहारेण विहरमाणाण' एतेन विहारेण विहरताम्-अत्र विहार =विचरण-मुनिचर्या, यद्वा विविधैरनेकप्रकारैरुपधिभारवहन-पादचलन-परीषहसहनादिरूपै कायक्लेशै कर्माणि ह्रियन्तेऽनेनेति विहार, एतेन विहारेण-ग्रामनगरा-

दुक्खा) सुख एव दु खमे समान परिणाम वाले थे। सुखमें हर्ष एव दु खम विषाद इस प्रकार विषमता लिये इनके परिणाम नहीं थे। (इहलोग परलोग-अप्पडिबद्धा) इस लोक-सबधी एव परलोक सबधी सुखोंकी आसक्ति इनके हृदयमें नहीं थी। (संसार-पारगामी) ये भवरूपी समुद्रको तिरनेवाले थे। (कम्मणिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिया विहरति) समस्त कर्मोंकी निर्जरा करनेके लिये ही सयमाराधनमे तत्पर होकर विचरते थे ॥ सू० २९ ॥

'तेसि ण भगवताण' इत्यादि,

(तेसि ण भगवताण) महावीर स्वामीके इन स्थविर भगवन्तोंका जो (एएण विहारेण विहरमाणाण) इस प्रकारके विहार करते थे। विहार शब्दका अर्थ मुनिचर्या

दुक्खा) सुખ तेमજ દુ ખમા સમાન પરિણામવાળા હતા સુખમા હર્ષ તેમ જ દુ ખમા વિષાદ (શોક) એવી વિષમતા તેમનામા નહોતી (इहलोग-परलोग-अप्पडिबद्धा) આ લોક-સ બધી તેમજ પરલોક-સ બધી સુખોની આસક્તિ તેમના હૃદયમા નહોતી (ससारपारगामी) તેઓ ભવરૂપી સમુદ્રને તરવાવાળા હતા (कम्मणिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिया विहरति) સમસ્ત કર્મોની નિર્જરા કરવા માટે જ સ યમ-આરાધનમા તત્પર થઈને વિચરતા હતા (સૂ ૨૯)

'तेसि ण भगवताणं' ઇત્યાદિ,

(तेसि ण भगवताण) એ મહાવીર સ્વામીના તે સ્થવિર ભગવ તો (एएण विहारेण विहरमाणाण) આ પ્રકારે વિહાર કરતા હતા, વિહાર શબ્દનો

जहा—इत्तरिए य १ आवकहिए य २। से किं तं इत्तरिए? इत्तरिए अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—चउत्थभत्ते १ छट्टभत्ते २ अट्टमभत्ते

रिक च—एति—गच्छति तच्छीघ्रम् इत्वर, तदेव—इत्वरिकम्—अल्पकालिकम्, यथा श्रीमहावीरस्वामिनस्तीर्थे नमस्कारसहितप्रत्याख्यानकालादारभ्य षण्मासपर्यन्तम्, श्रीनाभेयतीर्थङ्करतीर्थे संवत्सरपर्यन्तम्—इति १। 'आवकहिए य' यावत्कथिकम्—यावत्—यदवधिर्मनुष्योऽयमिति मनुष्यव्यवहाररूपा कथा यावत्कथा, तत्र भवं यावत्कथिकम्—जीवनपर्यन्तम् अनशनमिति। अनयोरित्वरिकं पृच्छति—'से किं तं इत्तरिए' अथ किं तद् इत्वरिकम्?, अस्योत्तरमाह—'इत्तरिए अणेगविहे पण्णत्ते' इत्वरिकम् अनेकविधं प्रज्ञप्तम्, 'तं जहा'—तद्यथा—तानि यद्रूपाणि सन्ति तथा कथयति—'चउत्थभत्ते' चतुर्थभक्तम्—एकोपवासरूपम् १। 'छट्ठभत्ते' षष्ठभक्तम्—निरन्तरदिनद्वयोपवासरूपम् २। 'अट्ठमभत्ते' अष्टमभक्त—निरन्तरदिनत्रयोपवासरू-

स्वामी के तीर्थ मे इत्वरिक तप नमस्कारसहित=नौकारसी प्रत्याख्यान काल से लेकर छह मासपर्यन्त का कहा गया है। श्री आदिनाथ तीर्थंकर के शासनमें इसकी मर्यादा नौकारसी से लेकर एकवर्ष पर्यन्त की थी। शेष २२ तीर्थंकरों के शासनमें अष्टमास पर्यन्त इसकी अवधि थी। (**से किं तं इत्तरिए?**) इत्वरिक तप क्या है? उत्तर—(**इत्तरिए अणेगविहे पण्णत्ते**) यह इत्वरिक तप अनेक प्रकार का कहा गया है, (तं जहा) वे प्रकार ये है—(**चउत्थभत्ते छट्ठभत्ते अट्ठमभत्ते दसमभत्ते बारसभत्ते चउद्दसभत्ते सोलसभत्ते अद्धमासियभत्ते मासियभत्ते दोमासियभत्ते तेमासियभत्ते चउमासियभत्ते पंचमासियभत्ते छम्मासियभत्ते**) चतुर्थभक्त—एक उपवास, षष्ठभक्त—दो उपवास—निरन्तर—लगातार—दो दिन का उपवास, अष्टमभक्त—निरन्तर तीन दिन तक उपवास, दशमभक्त—चार—उपवास—लगातार

સ્વામીના તીર્થમાં ઈત્વરિક તપ નમસ્કારસહિત—નૌકારશી પ્રત્યાખ્યાનકાલથી લઈને ૭ માસ સુધીનું કહેલું છે શ્રી આદિનાથ તીર્થંકરના સમયે તીર્થમાં તેની મર્યાદા નૌકારશીથી લઈને એક વર્ષ સુધીની હતી બાકીના ૨૨ તીર્થંકરોના તીર્થમાં ૮ માસ સુધીની તેની અવધિ હતી (से किं तं इत्तरिए?) ઈત્વરિક તપ શું છે? ઉત્તર—(इत्तरिए अणेगविहे पण्णत्ते) આ ઈત્વરિક તપ અનેક પ્રકારનું કહેલું છે, (तं जहा) તે આમ છે (चउत्थभत्ते छट्ठभत्ते अट्ठमभत्ते दसमभत्ते बारसभत्ते चउद्दसभत्ते सोलसभत्ते अद्धमासियभत्ते मासियभत्ते दोमासियभत्ते तेमासियभत्ते चउमासियभत्ते पंचमासियभत्ते छम्मासियभत्ते) ચતુર્થ-ભક્ત એક ઉપવાસ, ષષ્ઠભક્ત—બે ઉપવાસ—निरन्तर—લગાતાર બે દિવસનો ઉપવાસ, અષ્ટમભક્ત—એક સાથે ત્રણ દિવસનો ઉપવાસ—ત્રણ ઉપવાસ, દશમ

३ दसमभत्ते ४ बारसभत्ते ५ चउद्दसभत्ते ६ सोलसभत्ते ७ अद्ध-मासियभत्ते ८ मासियभत्ते ९ दोमासियभत्ते १० तेमासियभत्ते ११ चउमासियभत्ते १२ पंचमासियभत्ते १३ छम्मासियभत्ते १४,

पम् ३। 'दसमभत्ते' दशमभक्तम्--निरन्तरदिनचतुष्टयोपवासरूपम् ४। 'बारसभत्ते' द्वादशभक्तम्--निरन्तरदिनपञ्चकोपवासरूपम् ५। 'चउद्दसभत्ते' चतुर्दशभक्तम्--निरन्तरदिनषट्कोपवासरूपम् ६। 'सोलसभत्ते' षोडशभक्तम्--निरन्तरदिनसप्तकोपवासरूपम् ७। 'अद्धमासियभत्ते' अर्द्धमासिकभक्तम्-निरन्तरपञ्चदशदिनसोपवासरूपम् ८। 'मासियभत्ते' मासिकभक्तम्--निरन्तरत्रिंशद्दिनसोपवासरूपम् ९। 'दोमासियभत्ते' द्वैमासिकभक्तम् 'तेमासियभत्ते' त्रैमासिकभक्तम्। 'चउमासियभत्ते' चातुर्मासिकभक्तम्। 'पचमासियभत्ते' पाञ्चमासिकभक्तम्। 'छम्मासियभत्ते' षाण्मासिकभक्तम्। 'से त इत्तरिए' तदेतदित्वरिकम्। 'से किं त आवकहिए' अथ किन्तद् यावत्कथिकम्? 'आवकहिए' यावत्कथिकम्--यावत्--यदवधि

४ दिन के उपवास, द्वादशभक्त--पाँच उपवास-लगातार पाँच दिन तक उपवास, चतुर्दशभक्त-छ उपवास--लगातार ६ दिनतक उपवास करना, षोडशभक्त--७ दिन उपवास--लगातार ७ दिनतक उपवास करना, अर्द्धमासिकभक्त--निरन्तर--लगातार १५ दिनतक उपवास करना, मासिकभक्त--लगातार एक महिने भर के उपवास करना, द्वैमासिकभक्त--लगातार एकही साथ २ मास के उपवास, त्रैमासिकभक्त--लगातार--एकही साथ ३ मास के उपवास, चातुर्मासिकभक्त--लगातार--एकहीसाथ चार महिने का उपवास, पाञ्चमासिकभक्त--पाँच महिने के लगातार उपवास, और षाण्मासिकभक्त--लगातार छह महिने के उपवास करना। यह सब इत्वरिक नामका अनशन तप है। यावत्कथिक का मतलब है--जबतक " यह मनुष्य है " इस

ભક્ત--ચાર ઉપવાસ--એક સાથેજ ચાર દિવસનો ઉપવાસ, દ્વાદશભક્ત--પાચ ઉપવાસ--એકસાથે પાચ દિવસ સુધી ઉપવાસ, ચતુર્દશભક્ત--એક સાથે ૬ દિવસો સુધી ઉપવાસ કરવો, ષોડશભક્ત--૭ દિવસ એક સાથે ઉપવાસ કરવો, અર્ધમાસિકભક્ત નિરતર એક સાથે ૧૫ દિવસ સુધી ઉપવાસ કરવો, માસિકભક્ત--એક સાથે એક મહિના સુધી ઉપવાસ કરવો, દ્વૈમાસિકભક્ત--એક સાથે બે મહીના સુધીના ઉપવાસ, ત્રૈમાસિક ભક્ત--એક સાથે ત્રણ માસ સુધી ઉપવાસ, ચાતુર્માસિક ભક્ત--એક સાથે ચાર મહિનાના ઉપવાસ, પાચમાસિકભક્ત--પાંચ મહિના સુધી એકીસાથે ઉપવાસ, અને ષાણ્માસિક ભક્ત--છ મહિના સુધી એકીસાથે ઉપવાસ કરવો આ બધુ ઇત્વરિકનામનુ અનશન તપ છે યાવત્ક-

जहा–इत्तरिए य १ आवकहिए य २। से किं तं इत्तरिए? इत्तरिए अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा–चउत्थभत्ते १ छट्टभत्ते २ अट्ठमभत्ते

रिक च–एति–गच्छति तच्छील्म् इत्वर, तदेव–इत्वरिकम्–अल्पकालिकम्, यथा श्रीमहावीर-स्वामिनस्तीर्थे नमस्कारसहितप्रत्याख्यानकालादारभ्य षण्मासपर्यन्तम्, श्रीनाभेयतीर्थङ्कर-तीर्थे संवत्सरपर्यन्तम्–इति १। 'आवकहिए य' यावत्कथिकश्च–यावत्–यदवधिर्मनुष्योऽयमिति मुख्यव्यवहाररूपा कथा यावत्कथा, तत्र भव याव कथिक–जीवनपर्यन्तम् अनशनमिति। अनयोरित्वरिक पृच्छति–'से किं त इत्तरिए' अथ किंतद् इत्वरिकम्?, अस्योत्तरमाह–'इत्तरिए अणेगविहे पण्णत्ते' इत्वरिकम् अनेकविध प्रज्ञप्तम्, 'त जहा'–तद्यथा–तानि यद्रूपाणि सन्ति तथा कथयति–'चउत्थभत्ते' चतुर्थभक्तम्–एकोपवासरूपम्१। 'छट्ठभत्ते' षष्ठभक्तम्–निरन्तरदिनद्वयोपवासरूपम्२। 'अट्ठमभत्ते' अष्टमभक्त–निरन्तरदिनत्रयोपवासरू-

स्वामी के तीर्थ में इत्वरिक तप नमस्कारसहित=नौकारसी प्रत्याख्यान काल से लेकर छह मासपर्यन्त का कहा गया है। श्री आदिनाथ तीर्थंकर के शासनमे इसकी मर्यादा नौकारसी से लेकर एकवर्ष पर्यन्त की था। शेप २२ तीर्थंकरों के शासनमे अष्टमास पर्यन्त इसकी अवधि थी। (से किं त इत्तरिए?) इत्वरिक तप क्या है? उत्तर–(इत्तरिए अणेगविहे पण्णत्ते) यह इत्वरिक तप अनेक प्रकार का कहा गया है, (त जहा) वे प्रकार ये हैं–(चउत्थभत्ते छट्ठभत्ते अट्ठमभत्ते दसमभत्ते बारसभत्ते चउद्दसभत्ते सोलसभत्ते अद्धमासियभत्ते मासियभत्ते दोमासियभत्ते तेमासियभत्ते चउमासियभत्ते पचमासियभत्ते छम्मासियभत्ते) चतुर्थभक्त–एक उपवास, षष्ठभक्त–दो उपवास–निरन्तर–लगातार–दो दिन का उपवास, अष्टमभक्त–निरन्तर तीन दिन तक उपवास, दशमभक्त–चार–उपवास–लगातार

સ્વામીના તીર્થમા ઈત્વરિક તપ નમસ્કારસહિત–નૌકારસી પ્રત્યાખ્યાનકાલથી લઈને છ માસ સુધીનુ કહેલુ છે શ્રી આદિનાથ તીર્થંકરના સમયે તીર્થમા તેની મર્યાદા નૌકારસીથી લઈને એક વર્ષ સુધીની હતી બાકીના ૨૨ તીર્થંકરોના તીર્થમા ૮ માસ સુધીની તેની અવધિ હતી (से किं त इत्तरिए?) ઈત્વરિક તપ શુ છે? ઉત્તર–(इत्तरिए अणेगविहे पण्णत्ते) આ ઈત્વરિક તપ અનેક પ્રકારનુ કહેલુ છે, (तजहा) તે આમ છે (चउत्थभत्ते छट्ठभत्ते अट्ठमभत्ते दसमभत्ते बारसभत्ते चउद्दसभत्ते सोलसभत्ते अद्धमासियभत्ते मासियभत्ते दोमासियभत्ते तेमासियमभत्ते चउमासियमभत्ते पचमासियभत्ते छम्मासियभत्ते) ચતુર્થ-ભક્ત એક ઉપવાસ, ષષ્ઠભક્ત–બે ઉપવાસ–નિરન્તર–લગાતાર બે દિવસનો ઉપવાસ, અષ્ટમભક્ત–એક સાથે ત્રણુદિવસનો ઉપવાસ–ત્રણ ઉપવાસ, દશમ

वगमणे? पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते; तं जहा—वाघाइमे य १ निव्वाघाइमे य २ नियमा अप्पडिकम्मे। से तं पाओवगमणे। से किं तं भत्तपच्चक्खाणे? भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, तं

पगमन द्विविध प्रज्ञप्तम्, 'त जहा' तद्यथा—'वाघाइमे य' व्याघातवच—व्याघात—व्याघ्र-सिंह—दावानलादि—सजातोपद्रव, तेन सहित व्याघातवत्। 'निव्वाघाइमे य' निर्व्याघातवच—सिंहदावानलाद्युपद्रवरहित य प्रतिपद्यते तत् निर्व्याघातवत्, व्याघातविरहितमित्यर्थ। एतद् द्विविध 'नियमा अप्पडिकम्मे' नियमादप्रतिकर्म=नियमत शरीरचलनादिक्रियारहित भवति। 'से त पाओवगमणे' तदेत पादपोपगमनम्। 'से किं त भत्तपच्चक्खाणे?' अथ किं तद् भक्तप्रत्याख्यानम्?,—'भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते' भक्तप्रत्याख्यान द्विविध प्रज्ञप्तम्, तत्र—भक्तप्रत्याख्यान—चतुर्विधस्याऽऽहारस्य, त्रिविधस्य पानकरहितस्य वाऽऽहारस्य वर्जनरूप द्विविध प्रज्ञप्तम्—द्विप्रकारक कथितम्। 'त जहा' तद्यथा—'वाघाइमे य'

प्रकार से—(वाघाइमे य १ निव्वाघाइमे य २ नियमा अप्पडिकम्मे) १ व्याघातवत्, २ निर्व्याघातवत्। जो व्याघ्र, सिंह एव दावानल आदि से उद्भूत उपद्रव से सहित होता है वह व्याघातवत् है। जिसमें इस प्रकार के उपद्रव न हों वह निर्व्याघातवत् है। यह पादपोपगमन नियमत शारीरिक हलनचलन आदि क्रियाओं से रहित होता है। तथा इसमें औषधो-पचार आदि नहीं किया जाता है। (से त पाओवगमणे) यह पादपोपगमन सन्थारा है। अब भक्तप्रत्याख्यान का वर्णन करते है—(से किं त भत्तपच्चक्खाणे) यह भक्तप्रत्या-ख्यान कितने प्रकार का होता है?, (भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते) यह भक्तप्रत्या-ख्यान दो प्रकार का है, (त जहा) वह इस प्रकार—(वाघाइमे य निव्वाघाइमे य

છે-(त जहा) તે આ પ્રકારે-(वाघाइमे य १ निव्वाघाइमे २ य नियमा अप्पडिकम्मे) ૧ વ્યાઘાતવત્ અને બીજો નિર્વ્યાઘાતવત્ જે વાઘ (માવજ) તેમજ દાવાનલથી થતા ઉપદ્રવવાળા હોય છે તે વ્યાઘાતવત્ છે જેમા એ પ્રકારના ઉપદ્રવ ન હોય તે નિર્વ્યાઘાતવત્ છે આ પાદપોપગમન નિયમ પ્રમાણે શારીરિક હલનચલન આદિ ક્રિયાઓથી રહિત હોય છે, તથા એમા ઔષધો-પચાર આદિ નથી કરતા (से त पाओवगमणे) એ પાદપોપગમન સથારો આ પ્રમાણે થાય છે હવે ભક્તપ્રત્યાખ્યાનનુ વર્ણન કરે છે-(से किं त भत्तपच्चक्खाणे?) આ ભક્તપ્રત્યાખ્યાન કેટલા પ્રકારના થાય છે? (भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते) એ બે પ્રકારના છે-(त जहा) તે આ પ્રકારે-(वाघाइमे य निव्वाघाइमे य नियमा

-से तं इत्तरिए। से किं तं आवकहिए ? आवकहिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पाओवगमणे य १ भत्तपच्चक्खाणे य २। से किं तं पाओ-

कथा—'मनुष्योऽयम्' एतद्रूपा सा यावत्कथा, तत्र भव यावत्कथिकम्—यावज्जीवनमित्यर्थ, तद् 'दुविहे पण्णत्ते' द्विविध प्रज्ञप्तम्। 'त जहा' तद्यथा—'पाओवगमणे य भत्तपच्चक्खाणे य' पादपोपगमनं च भक्तप्रत्याख्यान च, तत्र—पादपस्येव वृक्षस्येवोपगमनम्—अस्पन्दतया—निश्चलतयाऽवस्थान पादपोपगमनम्—चतुर्विधाऽऽहारपरित्यागेन शरीरप्रतिक्रियावर्जनेन च वृक्षवन्निश्चलावस्थानमित्यर्थ। 'से किं त पाओवगमणे'—अथ किन्तत्पादपोपगमनम्?—पादपोपगमन कीदृगम्? अत्राह—'पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते' पादपो-

प्रकार का उसके—तप करने वाले के—साथ व्यवहार चलता रहे तबतक जो व्रत किया जाय वह यावत्कथिक है—जीवनपर्यन्त आराधित अनशन व्रत यावत्कथिक है। (से किं त आवकहिए ?) यावत्कथिक तप कितने प्रकार का है? उत्तर—(आवकहिए दुविहे पण्णत्ते) यह तप दो प्रकार का है—(त जहा) वह इस प्रकारसे (पाओवगमणे य भत्तपच्चक्खाणे य) पादपोपगमन और दूसरा भक्तप्रत्याख्यान। जिसमे कटे वृक्ष की तरह निश्चल हो कर स्थिति रहे वह पादपोपगमन है—चारो प्रकार के आहार के परित्याग से एव शरीर की शुश्रूषा आदि क्रियाओ के परित्याग से कटे वृक्ष की तरह निश्चल हो जाना इसका नाम पादपोपगमन है। (से किं तं पाओवगमणे ?) पादपोपगमन कितने प्रकार का है?, (पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते)यह पादपोपगमन स्थारा दो प्रकार का है, (त जहा) वह इस

થિકની મતલબ છે, જ્યા સુધી "આ મનુષ્ય છે" એ પ્રકારનો તેના—તપ કરનારના સાથે વ્યવહાર ચાલતો રહે ત્યા સુધી જે વ્રત કરવામા આવે તે યાવત્કથિક છે—જીવનપર્યંત આરાધિત અનશન વ્રત યાવત્કથિક છે (से किं त आवकहिए) યાવત્કથિક વ્રત કેટલા પ્રકારના છે ? ઉત્તર (आवकहिए दुविहे पण्णत्ते) આ તપ બે પ્રકારનુ છે (त जहा) તે આ પ્રકારે છે (पाओवगमणे य भत्तपच्चक्खाणे य) (૧) પાદપોપગમન અને બીજુ ભક્તપ્રત્યાખ્યાન જેમા કાપેલા વૃક્ષની પેઠે નિશ્ચલ જેવી સ્થિતિ રહે તે પાદપોપગમન છે—ચારેય પ્રકારના આહારનો ત્યાગ કરીને તેમજ શરીરની સેવા—શુશ્રૂષા આદિ ક્રિયાઓના ત્યાગ કરીને કાપેલા વૃક્ષની પેઠે નિશ્ચલ થઈ જવુ તેનુ નામ પાદપોપગમન છે (से किं त पाओवगमणे?) પાદપોપગમન કેટલા પ્રકારના છે ? (पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते) આ પાદપોપગમન સથારા બે પ્રકારના

यरिया य २। से किं तं दव्वोमोयरिया? दव्वोमोयरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–उवगरणदव्वोमोरिया य १ भत्तपाणदव्वोमोयरिया य २। से किं तं उवगरणदव्वोमोयरिया? उवगरणदव्वोमोयरिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–एगे वत्थे १ एगे पाए २ चिय-

रा कथिता 'त जहा' तद्यथा–'दव्वोमोयरिया य' द्रव्यावमोदरिका च। 'भावोमोयरिया य' भावाऽवमोदरिका च। 'से किं त दव्वोमोयरिया?' अथ का सा द्रव्याऽवमोदरिका?, 'दव्वोमोयरिया दुविहा पण्णत्ता' द्रव्यावमोदरिका द्विविधा प्रज्ञप्ता, 'त जहा'–तद्यथा 'उवगरणदव्वोमोयरिया य' उपकरणद्रव्यावमोदरिका च १। 'भत्तपाणदव्वोमोयरिया य' भक्तपानद्रव्यावमोदरिका च २। 'से किं त उवगरणदव्वोमोयरिया' अथ का सा उपकरणद्रव्यावमोदरिका? 'उवगरणदव्वोमोयरिया तिविहा पण्णत्ता' उपकरणद्रव्यावमोदरिका त्रिविधा प्रज्ञप्ता, 'त जहा' तद्यथा–१ 'एगे वत्थे' एक वस्त्रम्–एक–चोलपट्टरूप वस्त्र न द्वितीयम्, २–'एगे पाए' एक पात्रम्, ३–'चियत्तोवगरणसाइ-

दो प्रकार की है, [त जहा] वे दो प्रकार ये है–[दव्वोमोयरिया य भावोमोयरिया य] एक द्रव्यावमोदरिका और दूसरी भावावमोदरिका। [से किं त दव्वोमोयरिया] प्रश्न–वह द्रव्यावमोदरिका क्या है–कितने भेदवाली है? उत्तर–[दव्वोमोयरिया दुविहा पण्णत्ता] द्रव्यावमोदरिका दो भेदवाली है, [त जहा] वे दो प्रकार इस तरह है–[उवगरण–दव्वोमोयरिया य भत्तपाणदव्वोमोयरिया य] १ उपकरणद्रव्यावमोदरिका और २ भक्तपानद्रव्यावमोदरिका। [उवगरणदव्वोमोयरिया तिविहा पण्णत्ता] इनमे उपकरण-द्रव्यावमोदरिका तीन प्रकार की है। (त जहा) वे तीनप्रकार ये है–[एगे वत्थे एगे पाए चियत्तोवगरणसाइज्जणया] एक वस्त्र १, एक पात्र २, और तीसरा त्यक्तोपकरणस्वादनता

છે (तजहा) તે બે પ્રકાર આ છે–(दव्वोमोयरिया य भावोमोयरिया य) એક દ્રવ્યાવમોદરિકા અને બીજી ભાવાવમોદરિકા (से किं तं दव्वोमोयरिया) પ્રશ્ન– એ દ્રવ્યાવમોદરિકા શું છે? કેટલા પ્રકારની છે? (दव्वोमोयरिया दुविहा पण्णत्ता) ઉત્તર–તે બે પ્રકારની છે–(तं जहा) તે બે પ્રકાર આવી રીતે છે (उवगरणदव्वोमोयरिया य भत्तपाणदव्वोमोयरिया य) ૧ ઉપકરણદ્રવ્યાવમોદરિકા અને બીજી ભક્તપાનદ્રવ્યાવમોદરિકા (उवगरणदव्वोमोयरिया तिविहा पण्णत्ता) તેમા ઉપકરણદ્રવ્યાવમોદરિકા ત્રણ પ્રકારની છે (त जहा) તે ત્રણ પ્રકાર આ છે–(एगे वत्थे एगे पाए चियत्तोवगरणसाइज्जणया) ૧ એક વસ્ત્ર, બીજુ એક પાત્ર, અને ત્રીજુ ત્યક્તોપકરણસ્વા-

जहा—वाघाइमे य १ निव्वाघाइमे य २ णियमा सप्पडिकम्मे। से तं भत्तपच्चक्खाणे। से तं अणसणे। से किं तं ओमोयरिया? ओमोयरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वोमोयरिया य १ भावोमो-

व्याघातवच्च विघ्नयुक्तश्च। '**निव्वाघाइमे य**' निर्व्याघातवच्च—विघ्नरहित च। एतद् द्वय '**णियमा सप्पडिकम्मे**' नियमात् सप्रतिकर्म—नियमत शरीरचलनादिक्रियासहित भवति। तेन बाह्यौ-षधोपचारो वैयावृत्त्य च तस्य भवति। '**से त भत्तपच्चक्खाणे**' तदेतद् भक्तप्रत्याख्यानम्। '**से त अणसणे**' तदेतदनशनम्।

'**से किं त ओमोयरिया**' अथ का साऽवमोदरिका?, '**ओमोयरिया दुविहा पण्णत्ता**' अवमोदरिका द्विविधा प्रज्ञप्ता—अवमोदरिका—अवमम्—ऊनम्, उदर यस्मिन् भोजने तद् अवमोदर, तदस्त्यस्यामिति अवमोदरिका—तपोरूपा क्रिया, सा द्विविधा प्रज्ञप्ता,—द्विप्रका-

नियमा सप्पडिकम्मे) १ व्याघातवत् २ निर्व्याघातवत्। इस भक्तप्रत्याख्यान में चौ-निहार एव तेविहार दोनों किया जाता है। विघ्नयुक्त का नाम व्याघातवत् एव विघ्नरहित का नाम निर्व्याघातवत् है। इस तप में नियमत शारीरिक हलन—चलनादिक क्रियाएँ होती है। उनका इसमें परित्याग नहीं है। इसलिये इसमें बाह्य औषधोपचार, एव वैयावृत्य किये जाते है। (**से त भत्तपच्चक्खाणे**) यह भक्तप्रत्याख्यान के भेदों का वर्णन है। (**से त अणसणे**) इस प्रकार तपके १२ भेदों में से अनशन नामका १ प्रथम बाह्यतप का वर्णन सम्पूर्ण हुआ। (**से किं त ओमोयरिया?**) प्रश्न—अवमोदरिका किसे कहते है और वह कितने प्रकार की है? (**ओमोयरिया दुविहा पण्णत्ता**) उत्तर—यह अवमोदरिका

सप्पडिकम्मे) १ व्याधातवत् २ निर्व्याघातवत् આ ભક્તપ્રત્યાખ્યાનમા ચૌવિહાર-૪ ચારે પ્રકારના આહારનો ત્યાગ તેમજ તેવિહાર બન્ને કરવામા આવે છે વિઘ્ન-વાળાનુ નામ વ્યાઘાતવત્ તેમજ વિઘ્નરહિતનુ નામ નિર્વ્યાઘાતવત્ છે આ તપમા નિયમપ્રમાણે શારીરિક હલનચલન આદિક ક્રિયાઓ થાય છે તેનો આમા પરિત્યાગ નથી તેથી આમા બાહ્ય ઔષધોપચાર તેમજ વૈયાવૃત્ય કરાય છે (से त भत्तपच्चक्खाणे) આ ભક્તપ્રત્યાખ્યાનના ભેદોનુ વર્ણન છે (से त अणसणे) એ પ્રકારે તપના ૧૨ ભેદોમાથી અનશનનામના ૧ પ્રથમ બાહ્ય-તપનુ વર્ણન સપૂર્ણ થયુ

(से किं त ओमोयरिया) પ્રશ્ન—અવમોદરિકા કોને કહે છે? અને તે કેટલા પ્રકારની છે? (ओमोयरिया दुविहा पण्णत्ता) ઉત્તર—એ અવમોદરિકા બે પ્રકારની

माणे अप्पाहारे १, दुवालस कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहार-
माणे अवड्ढोमोयरिया २, सोलस कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले
आहारमाणे दुभागपत्तोमोयरिया ३, चउवीसं कुक्कुडियंडगप्प-

ण्डकप्रमाणमात्रान् कवलान् य आहरन् भवति, तस्य स आहारः अल्पाहारः । द्वात्रिंशत्परिमितैः कवलैः पुरुषाऽऽहारः पर्याप्तः, तत्र चतुर्थांशस्य ग्रहणादल्पाहारस्तेनैव भक्तपान-द्रव्यावमोदरिकाऽपि सिद्धा (१)। 'दुवालस कुक्कुडियडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे अवड्ढोमोयरिया' द्वादश कुक्कुटाऽण्डकप्रमाणमात्रान् कवलान् आहरन् यो भवति तस्य स आहारः अपार्द्धावमोदरिका, षोडश कवला अर्द्धम्, तस्मात् अपकृष्टा = न्यूना द्वादशकवलात्मकत्वाद् याऽवमोदरिका सा-अपार्द्धाऽवमोदरिका (२)। 'सोलस कुक्कुडियडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे दुभागपत्तोमोयरिया' षोडश कुक्कुटाण्डकप्रमाणमात्रान् कवलान् आहरन् द्विभागप्राप्ताऽवमोदरिका—षोडश कुक्कुटाण्डकप्रमाणमात्रान् कवलान् आहरन् यो भवति तस्य स आहारो द्विभागप्राप्तावमोदरिका=द्वितीयभागप्राप्तावमोदरिका भवति । अयं भावः—पर्याप्तपुरुषाहारद्वात्रिंशत्कवलानां भागद्वये कृते सति प्राप्तान् षोडश कवलान् भुञ्जानस्य द्विभागप्राप्तावमोदरिका तपस्या भवतीति (३)। 'चउवीस कुक्कुडियडगप्पमाणमेत्ते कवले

कुक्कुटके अण्ड प्रमाण आठ कवल का आहार होता है। पुरुष के लिये ३२ कवलप्रमाण आहार पर्याप्त होता है। इनमें चतुर्थांश—आठ कवल प्रमाण आहार के लेने से यह अल्पाहार कहा गया है (१)। (दुवालस कुक्कुडियडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे अवड्ढोमोयरिया) दूसरा भेद अपार्द्ध—अवमोदरिका है, इसमें—कुक्कुड अंड प्रमाण १२ कवलों का आहार लिया जाता है (२)। (सोलस कुक्कुडियडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे दुभागपत्तोमोय-रिया) तीसरा भेद द्विभागप्राप्तावमोदरिका है, इसमें—कुक्कुट—अंड—प्रमाण १६ कवलों का आहार किया जाता है (३)। (चउवीस कुक्कुडियडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे

જેટલો—કોળિઆનો આહાર થાય છે પુરૂષને માટે ૩૨ કોળિઆ જેટલો આહાર પર્યાપ્ત થાય છે તેમાથી ચતુર્થાંશ કોળિઆ—જેટલો આહાર લેવાથી એને અલ્પાહાર કહેવાય છે (૧) (दुवालस कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे अवड्ढोमोयरिया) બીજો ભેદ અપાર્દ્ધ—અવમોદરિકા છે એમા કુકડાના ઇંડા જેવડા ૧૨ કોળિઆનો આહાર લેવાય છે (૨) (सोलस कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे दुभागपत्तोमोयरिया) ત્રીજો ભેદ દ્વિભાગપ્રાપ્તાવમોદરિકા છે એમા કુકડાના ઇંડા જેવડા ૧૬ કોળિઆનો આહાર લેવાય છે (૩) (चउवीस कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे पत्तोमोयरिया) ચોથો ભેદ પ્રાપ્તાવ

त्तोवगरणसाइज्जणया ३ से तं उवगरणदव्वोमोयरिया। से किं तं भत्तपाणदव्वोमोयरिया? भत्तपाणदव्वोमोरिया–अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा–अट्ट कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहार-

ज्जणया' त्यक्तोपकरणस्वादनता, त्यक्ता–उपकरणस्य स्वादनता–आसक्तिर्यस्यामवमोदरिकायां सा तथा, भाण्डोपकरणादिषु मूर्च्छापरित्यागितेत्यर्थः। 'से त उवगरणदव्वोमोयरिया' सैषा उपकरणद्रव्यावमोदरिका। 'से किं त भत्तपाणदव्वोमोयरिया' अथ का सा भक्तपान-द्रव्यावमोदरिका? 'भत्तपाणदव्वोमोयरिया'–भक्तपानद्रव्यावमोदरिका–'अणेगविहा पण्णत्ता' अनेकविधा प्रज्ञप्ता, 'त जहा' तद्यथा-'अट्ठ कुक्कुडियडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे अप्पाहारे' अष्टौ कुक्कुटाऽण्डकप्रमाणमात्रान् कवलान् आहरन्नल्पाहार -अष्ट कुक्कुटा-

३। वस्त्र में एक ही वस्त्र रखना, जैसे कोई चोलपट्ट रखता है तो वह वही रखेगा, अन्य दूसरा वस्त्र नहीं रख सकता। दूसरे प्रकार मे एक ही पात्र रखना दूसरा पात्र नहीं। जिस अवमोदरिका में उपकरण का आसक्ति त्यक्त हो जाती है वह उसका-तीसरा प्रकार है, अर्थात्–भाण्डोपकरण में मूर्च्छा का परित्याग। (से त उवगरणदव्वोमोयरिया) इस प्रकार ये तीन भेद उपकरणद्रव्यावमोदरिका के कहे गये है। [से किं त भत्तपाण-दव्वोमोयरिया] प्रश्न–भक्तपानद्रव्यावमोदरिका क्या है?, अर्थात्–भक्तपानद्रव्यावमोदरिका के कितने भेद है?, (भत्तपाणदव्वोमोयरिया अणेगविहा पण्णत्ता) यह भक्तपान-द्रव्यावमोदरिका अनेक प्रकार की कही गयी है, (त जहा) वे प्रकार ये है–(अट्ठ-कुक्कुडि-यंडगप्पामाणमेत्ते कवले आहारमाणे अप्पाहारे) प्रथम भेद अल्पाहार है, इसमे

ઠનતા વસ્ત્રમા એકજ વસ્ત્ર રાખવુ જેમ કોઈ ચોલપટ્ટ રાખે છે તો તે તે જ રાખે, બીજુ વસ્ત્ર રાખી શકે નહિ બીજા પ્રકારમા એક જ પાત્ર રાખવુ બીજુ (દ્વિતીયાદિક) પાત્ર નહિ જે અવમોદરિકામા ઉપકરણની આસક્તિ ત્યક્ત થઈ જાય છે તે તેનો ત્રીજો પ્રકાર છે અર્થાત્ ભાંડોપકરણમા મૂર્છાનો પરિત્યાગ (से त उवगरणदव्वोमोयरिया) એ પ્રકારના આ ત્રણ ભેદ ઉપકરણદ્રવ્યાવમોદરિકાના કહેલા છે (से किं त भत्तपाणदव्वोमोयरिया) પ્રશ્ન–ભક્તપાનદ્રવ્યાવમોદરિકા શુ છે? અર્થાત્ ભક્તપાનદ્રવ્યાવમોદરિકાના કેટલા પ્રકાર છે? (भत्तपाणदव्वोमोयरिया अणेगविहा पण्णत्ता) આ ભક્તપાનદ્રવ્યાવમોદરિકા અનેક પ્રકારની કહેલી છે, (तजहा) તે આ પ્રકારે છે–(अट्ठ कुकुडियडगप्पमाण मेत्ते कवले आहारमाणे अप्पाहारे) પ્રથમ ભેદ અલ્પાહાર છે તેમા કુકડાના ઇંડા

भोऽत्ति वत्तव्वं सिया। से तं भत्तपाणदव्वोमोयरिया। से तं दव्वोमोयरिया। से किं तं भावोमोयरिया? भावोमोयरिया अणेगविहा पण्णत्ता; तं जहा—अप्पकोहे १, अप्पमाणे २, अप्पमाए ३,

लेभ्य —एकेनाऽपि ग्रासेनोनकमाहारमाहरन् श्रमणो निर्ग्रन्थो नो प्रकामरसभोजी-नात्यन्तभोजनशीलोऽस्तीति वक्तव्यम् स्यात्, अथ भाव —किञ्चिदूनावमोदरिका तपस्या कुर्वन् 'प्रकामभोजी' इति नोच्यते इति। 'से त भत्तपाणदव्वोमोयरिया' सैषा भक्तपानद्रव्यावमोदरिका। अत पर भावाऽमोदरिकामाह—'से किं त भावोमोयरिया' अथ का सा भावाऽवमोदरिका? 'भावोमोयरिया अणेगविहा पण्णत्ता' भावाऽमोदरिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता, 'तं जहा' तद्यथा 'अप्पकोहे' अल्पक्रोध -क्रोधन क्रोध -क्रोधमोहनीयोदयसम्पाद्य अक्षमापरिणतिरूप, अल्पशब्दोऽत्र प्रतनुवाचक —तेन अल्प —स्वल्प क्रोध —अल्पक्रोध। 'अप्पमाणे'

निर्ग्रंथ एक कवल भी आहार कम करते हैं वे पकामभोजी नहीं है, अर्थात् जिह्वा-इन्द्रिय के विजेता हैं—ऐसा समझना चाहिये। (से त भत्तपाणदव्वोमोयरिया) इस प्रकार यहा तक भक्तपानद्रव्यावमोदरिका का कथन किया, अर्थात् इस पूर्वोक्त प्रकार से भक्तपानद्रव्यावमोदरिका का स्वरूप है। (से त दव्वोमोयरिया) इस प्रकार यह द्रव्यावमोदरिका का स्वरूप है। यहा से आगे अब भावावमोदरिका का कथन करते हैं—(से किं त भावोमोयरिया?) प्रश्न—यह भावावमोदरिका क्या है? कितने प्रकार की है? (भावोमोयरिया अणेगविहा पण्णत्ता) उत्तर—भावावमोदरिका अनेक प्रकार की कही गई है, (त जहा) जैसे—(अप्पकोहे) अल्पक्रोध—अक्षमापरिणतिका नाम क्रोध है, अल्पशब्द प्रतनुवाची है, अर्थात् क्रोधकषाय मे अल्पता करना। (अप्प-

એક કોળિયો પણ આહાર ઓછો કરે તે પ્રકામભોજી નથી, અર્થાત્ જીભ-ઇંદ્રિયનો વિજેતા છે—એમ સમજવું જોઇએ (से त भत्तपाणदव्वोमोयरिया) એ પ્રકારે અહીં સુધી ભક્તપાનદ્રવ્યાવમોદરિકાનું કથન કર્યું, અર્થાત્ એ પૂર્વોક્ત પ્રકારે ભક્તપાનદ્રવ્યાવમોદરિકાનું સ્વરૂપ છે (से त दव्वोमोयरिया) આ પ્રકારે આ દ્રવ્યાવમોદરિકાનું સ્વરૂપ છે અહિંથી આગળ હવે ભાવાવમોદરિકાનું કથન કરે છે—(से कि त भावोमोयरिया?) પ્રશ્ન—આ ભાવાવમોદરિકા શું છે, કેટલા પ્રકારની કહેવાય છે? (भावोमोयरिया अणेगविहा पण्णत्ता) ઉત્તર ભાવાવમોદરિકા ઘણા પ્રકારની કહેવાય છે (त जहा) જેમકે (अप्पक्कोहे) અલ્પક્રોધ, અક્ષમા-પરિણતિનું નામ ક્રોધ છે, અલ્પ શબ્દ પ્રતનુવાચી છે—અર્થાત્ ક્રોધકષાયમાં અલ્પપણું (ઓછું) કરવું (अप्पमाणे अप्पमाए

माणमेत्ते कवले आहारमाणे पत्तोमोयरिया ४, एक्कतीसं कुक्कुडियं-डगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे किंचूणोमोयरिया ५, बत्तीसं कुक्कुडियंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे पमाणपत्ते, एत्तो एगेण वि घासेणं ऊणयं आहारमाहारेमाणे समणे निग्गंथे णो पकामरस-

---

आहारमाणे पत्तोमोयरिया'—चतुर्विंशति कुक्कुटाण्डकप्रमाणमात्रान् कवलान् आहरन् प्राप्ताऽवमोदरिका—द्वात्रिंशत्कवलाना चतुर्थांशन्यूनमाहारम् आहरन् यो भवति, तस्य स आहार प्राप्तावमोदरिका—पादमात्रोनतया प्राप्तेऽवमोदरिका प्राप्तावमोदरिका भवति, ॥४॥ 'एक्कतीस कुक्कुडियडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे किंचूणोमोयरिया' एक-त्रिंशत कुक्कुटाऽण्डकप्रमाणमात्रान् कवलान् आहरन् यो भवति तस्य किञ्चिदूनावमोदरिका= कवलैकन्यूनावऽमोदरिका भवति ॥५॥ 'बत्तीस कुक्कुडियगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे पमाणपत्ते' द्वात्रिंशत कुक्कुटाऽण्डप्रमाणमात्रान् कवलान आहरन् प्रमाणप्राप्त =प्रमाणप्रमिता-ऽऽहारयुक्तो भवतीत्यर्थ, 'एत्तो एगेण वि घासेण ऊणय आहारमाहारेमाणे समणे निग्गथे णो पकामरसभोइत्ति वत्तव्वं सिया' इत एकेनापि ग्रासेन ऊनकम् आहरम् आहरन् श्रमणो निर्ग्रन्थो नो प्रकामरसभोजीति वक्तव्य स्यात्—इत —एतेभ्य —द्वात्रिंशत्कव-

---

पत्तोमोयरिया) चौथा भेद प्राप्तावमोदरिका है,इसमे कुकुटाण्डप्रमाण २४ कवलों का आहार किया जाता है (४) । **(एकतीस कुकुडियडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे किंचू-णोमोयरिया)** पाँचवाँ भेद किंचित्—न्यून—अवमोदरिका है। इसमे कुकुट अड प्रमाण ३१ कवलों का आहार लिया जाता है। **(बत्तीस कुकुडियडगप्पमाणमेत्ते कवले आहा-रमाणे पमाणपत्ते)** ३२—कवल—प्रमाण आहार करना पर्याप्त आहार है । यह अवमो-दरिका तप नहीं है। **(एत्तो एगेणवि घासेण ऊणय आहारमाहारेमाणे समणे निग्गथे णो पकामरसभोइत्ति वत्तव्व सिया)** ३२ कवलप्रमाण आहार में से जो श्रमण

મોદરિકા છે એમા કુકડાના ઇંડા જેવડા ૨૪ કોળિઆનો આહાર કરાય છે (૪) (एक्कतीस कुकुडियडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे किंचूणोमोयरिया) પાંચમો ભેદ કિંચિત્—ન્યૂન—અવમોદરિકા છે તેમા કુકડાના ઇંડા જેવડા ૩૧ કોળિઆનો આહાર લેવાય છે (बत्तीस कुकुडियडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे पमाण-पत्ते) ૩૨ કોળિઆ જેટલો આહાર કરવો એ મર્યાદા છે આ અવમોદરિકા તપ નથી (एत्तो एगेणवि घासेण ऊणय आहारमाहारेमाणे समणे निग्गथे णो पकाम-रसभोइत्ति वत्तव्व सिया) ૩૨ કોળિયા જેટલા આહારમાથી જે શ્રમણ નિર્ગ્રંથ

खेत्ताभिग्गहचरए २, कालाभिग्गहचरए ३, भावाभिग्गहचरए ४, उक्खित्तचरए ५, णिक्खित्तचरए ६, उक्खित्तणिक्खित्तचरए ७,

चरति=भिक्षामटति, द्रव्याश्रिताऽभिग्रहं वा चरति—आसेवते य स द्रव्याभिग्रहचरकः, इह च भिक्षाचर्यायां प्रक्रान्तायां यद् द्रव्याभिग्रहचरक इत्युक्तं तद्धर्मधर्मिणोरभेदविवक्षणात्। द्रव्याभिग्रहश्च लेपकृताऽन्द्रव्यविषयः ।१। 'खेत्ताभिग्गहचरए' क्षेत्राऽभिग्रहचरकः-क्षेत्राऽभिग्रहः 'अमुकस्थाने ग्रहीष्यामि' इत्यादिरूपः ।२। 'कालाभिग्गहचरए' कालाभिग्रहचरकः, कालाभिग्रहः—पूर्वाह्णादिविषयः ।३। 'भावाभिग्गहचरए' भावाभिग्रहचरकः—भावाभिग्रहो—गानहसनादिप्रवृत्तपुरुषादिविषयः, तेन चरतीति ।४। 'उक्खित्तचरए' उत्क्षिप्तचरकः—उत्क्षिप्त—गृहस्थेन स्वप्रयोजनाय पाकभाजनादुद्धृतं तदर्थमभिग्रहतश्चरति—गच्छतीत्युत्क्षिप्तचरकः ।५। 'णिक्खित्तचरए' निक्षिप्तचरकः—निक्षिप्त—पाकादिभाजनादुद्धृत्य अन्यभाजने स्थापितं, तदर्थमभिग्रहं कृत्वा चरति—इति निक्षिप्तचरकः ।६। 'उक्खित्त-णिक्खित्त-चरए' उत्क्षिप्त-निक्षिप्तचरकः—पाकभाजनादुत्क्षिप्तं तदेव अन्यत्र स्थाने निक्षिप्तं यत् तदुत्क्षिप्तनिक्षिप्तम्,

---

मिलेगी तो ही लूंगा, अन्यथा नहीं। भिक्षाचर्या का यद्यपि प्रकरण है, परन्तु जो "द्रव्याभिग्रहचरक" ऐसा निर्देश किया है वह धर्म और धर्मी में अभेद की विवक्षासे समझना चाहिये। २ क्षेत्राभिग्रहचरक—अमुक स्थान में मिलेगा तो लूंगा। ३ कालाभिग्रहचरक-अमुक समय में लूंगा। ४ भावाभिग्रहचरक—अमुक प्रकार का दाता देगा तो लूंगा। ५—(उक्खित्तचरए) उत्क्षिप्तचरक—गृहस्थने पाकभाजन से अपने लिये निकाला हो, उसमें से यदि देगा तो लूंगा। (६) (निक्खित्तचरए) निक्षिप्तचरक-गृहस्थने पाक भाजन से निकाल कर अन्य भाजन में रख दिया हो, उसमें से देगा तो लूंगा। ७—(उक्खित्त-

---

ભિગ્રહચરક—મુનિ અભિગ્રહ કરે છે કે મને જે અમુક વસ્તુ ભિક્ષામાં મળશે તે જ હું લઈશ, બીજી નહિ ભિક્ષાચર્યાનું જો કે પ્રકરણ છે, પરંતુ જે 'દ્રવ્યાભિગ્રહચરક' એમ નિર્દેશ કરેલો છે તે ધર્મ અને ધર્મીમાં અભેદની વિવક્ષાએ સમજવો જોઈએ [૨] ક્ષેત્રાભિગ્રહચરક—અમુક સ્થાનમાં મળશે તો લઈશ, [૩] કાલાભિગ્રહચરક—અમુક સમયમાં લઈશ, [૪] ભાવાભિગ્રહચરક—અમુક પ્રકારનો દાતા આપશે તો લઈશ, [૫] (उक्खित्तचरए) ઉત્ક્ષિપ્તચરક—ગૃહસ્થે રાંધવાના પાત્રમાંથી પોતાને માટે કાઢેલું હોય તેમાંથી જો આપશે તો લઈશ, [૬] (निक्खित्तचरए) નિક્ષિપ્તચરક—ગૃહસ્થે રાંધવાના પાત્રમાંથી કાઢીને બીજા વાસણમાં રાખી દીધું હોય તેમાંથી આપશે તો લઈશ [૭] (उक्खित्त-निक्खित-

अप्पलोहे ४, अप्पसद्दे ५, अप्पकलहे ६, अप्पझंझे ७। से तं भावोमोयरिया। से तं ओमोयरिया। से किं तं भिक्खायरिया? भिक्खायरिया अणेगविहा पण्णत्ता; तं जहा-दव्वाभिग्गहचरए १,

अल्पमान —जात्याद्यभिमानराहित्यम्। 'अप्पमाए' अल्पमाया, 'अप्पलोहे' अल्पलोभ,— 'अप्पसद्दे' अल्पशब्द,—'अप्पकलहे' अल्पकलह =कलहाभाव, 'अप्पझंझे' अल्पझञ्झ = परस्परभेदोत्पादकवचनव्यापारो झञ्झ, तस्याभाव। 'से त भावोमोयरिया' सैषा भावाऽवमोदरिका। 'से त ओमोयरिया' सैषाऽवमोदरिका।

'से किं तं भिक्खायरिया' अथ का सा भिक्षाचर्या, 'भिक्खायरिया अणेगविहा पण्णत्ता' भिक्षाचर्या अनेकविधा प्रज्ञप्ता, 'त जहा' तद्यथा—'दव्वाभिग्गहचरए' द्रव्याभिग्रहचरक —द्रव्याऽऽश्रिताभिग्रहेण 'अमुकवस्तु ग्रहीष्यामि' इति रूपेण

माणे अप्पमाए अप्पलोहे अप्पसद्दे अप्पकलहे अप्पझंझे) मान को अल्प करना, माया को अल्प करना, लोभ को अल्प करना, शब्द को अल्प करना अर्थात् कम बोलना, कलह को अल्प करना—अभाव करना, झंझा को अर्थात्—गण में जिस वचन से छेद—भेद उत्पन्न होता है उस वचनका अल्प करना—अभाव करना, यहाँ पर 'अल्प' शब्द अभावार्थक है। (से तं भावोमोयरिया) ये सभी भावावमोदरिका है। (से तं ओमोयरिया) यह अवमोदरिका तपका वर्णन सपूर्ण हुआ।

(से किं त भिक्खायरिया?) भिक्षाचर्या क्या है—कितने तरह की है?

उत्तर—(भिक्खायरिया अणेगविहा पण्णत्ता) भिक्षाचर्या अनेक तरह की कही गई है। (त जहा) जैसे (दव्वाभिग्गहचरए, खेत्ताभिग्गचरए, कालाभिग्गहचरए भावाभिग्गहचरए) १ द्रव्याभिग्रहचरक—मुनि अभिग्रह लेता है कि मुझे जो अमुक वस्तु भिक्षा में

अप्पलोहे अप्पसद्दे अप्पकलहे अप्पझंझे) मान અલ્પ(ઓછુ)કરવુ, માયા અલ્પ કરવી, લોભ અલ્પ કરવો, શબ્દ અલ્પ કરવા અર્થાત્ ઓછુ બોલવુ, કલહ (કકાસ) ઓછા કરવા, ઝઝા અથાત્ લોકોના સમૂહમા જે વચનોથી છેદ—ભેદ ઉત્પન્ન થાય એવા વચન નહી બોલવા, (से त भावोमोयरिया) આ બધા ભાવાવમોદરિકા છે. (से त ओमोयरिया) આ અવમોદરિકા તપનુ વર્ણન સપૂર્ણ થયુ (से किं त भिक्खायरिया) ભિક્ષાચર્યા શુ છે—કેટલા જાતની છે? ઉત્તર (भिक्खायरिया अणेगविहा पण्णत्ता) ભિક્ષાચર્યા અનેકજાતની કહેવાય છે (त जहा) જેમકે (दव्वाभिग्गहचरए, खेत्ताभिग्गहचरए, कालाभिग्गहचरए, भावाभिग्गहचरए) १ દ્રવ્યા-

खेत्ताभिग्गहचरए २, कालाभिग्गहचरए ३, भावाभिग्गहचरए ४, उक्खित्तचरए ५, णिक्खित्तचरए ६, उक्खित्तणिक्खित्तचरए ७,

चरति=भिक्षामटति, द्रव्याश्रिताऽभिग्रहं वा चरति–आसेवते य स द्रव्याभिग्रहचरकः, इह च भिक्षाचर्यायां प्रक्रान्तायां यद् द्रव्याभिग्रहचरक इत्युक्तं तद्धर्मधर्मिणोरभेदविवक्षणात्। द्रव्याभिग्रहश्च लपकुन्तादिद्रव्यविषयः ।१। '**खेत्ताभिग्गहचरए**' क्षेत्राऽभिग्रहचरकः-क्षेत्राऽभिग्रहः 'अमुकस्थाने ग्रहीष्यामि' इत्यादिरूपः ।२। '**कालाभिग्गहचरए**' कालाभिग्रहचरकः, कालाभिग्रहः–पूर्वाह्णादिविषयः ।३। '**भावाभिग्गहचरए**' भावाभिग्रहचरकः–भावाभिग्रहो–गानहसनादिप्रवृत्तपुरुषादिविषयः, तेन चरतीति ।४। '**उक्खित्तचरए**' उत्क्षिप्तचरकः–उत्क्षिप्त–गृहस्थेन स्वप्रयोजनाय पाकभाजनादुद्धृतं तदर्थमभिग्रहतश्चरति–गच्छतीत्युत्क्षिप्तचरकः ।५। '**णिक्खित्तचरए**' निक्षिप्तचरकः–निक्षिप्त–पाकादिभाजनादुद्धृत्य अन्यभाजने स्थापितं, तदर्थमभिग्रहं कृत्वा चरति–इति निक्षिप्तचरकः ।६। '**उक्खित्त–णिक्खित्त–चरए**' उत्क्षिप्त-निक्षिप्तचरकः–पाकभाजनादुत्क्षिप्तं तदेव अन्यत्र स्थाने निक्षिप्तं यत् तदुत्क्षिप्तनिक्षिप्तम्,

---

मिलेगी तो ही लूगा, अन्यथा नहीं। भिक्षाचर्या का यद्यपि प्रकरण है, परन्तु जो "द्रव्याभिग्रहचरक" ऐसा निर्देश किया है वह धर्म और धर्मी मे अभेद की विवक्षासे समझना चाहिये। २ क्षेत्राभिग्रहचरक–अमुक स्थान मे मिलेगा तो लूगा। ३ कालाभिग्रहचरक–अमुक समय मे लूगा। ४ भावाभिग्रहचरक–अमुक प्रकार का दाता देगा तो लूगा। ५–(**उक्खित्तचरए**) उत्क्षिप्तचरक–गृहस्थने पाकभाजन से अपने लिये निकाला हो, उसमें से यदि देगा तो लूगा। (६) (**निक्खित्तचरए**) निक्षिप्तचरक–गृहस्थने पाक भाजन से निकाल कर अन्य भाजन मे रख दिया हो, उसमे से देगा तो लूगा। ७–(**उक्खित्त-**

भिग्रहचरक–मुनि अभिग्रह करे छे के मने जे अमुक वस्तु भिक्षामा मळशे ते ज हु लईश, बीजी नहि भिक्षाचर्यानु जो के प्रकरण छे, परतु जे 'द्रव्याभिग्रहचरक' एम निर्देश करेलो छे ते धर्म अने धर्मीमा अभेदनी विवक्षाए समजवो जोईए [२] क्षेत्राभिग्रहचरक–अमुक स्थानमा मळशे तो लईश, [३] कालाभिग्रहचरक–अमुक समयमा लईश, [४] भावाभिग्रहचरक–अमुक प्रकारनो दाता आपशे तो लईश, [५] (उक्खित्तचरए) उत्क्षिप्तचरक–गृहस्थे राधवाना पात्रमाथी पोताने माटे काढेलु होय तेमाथी जो आपशे तो लईश, [६] (निक्खित्तचरए) निक्षिप्तचरक–गृहस्थे राधवाना पात्रमाथी काढीने बीजा वासणमा राखी दीधु होय तेमाथी आपशे तो लईश [७] (उक्खित्त–निक्खित्त-

णिक्खित्तउक्खित्तचरए ८, वट्टिज्जमाणचरए ९, साहरिज्जमाणचरए १०, उवणीयचरए ११, अवणीयचरए १२, उवणीय-अवणीयचरए

तदर्थमभिग्रहतश्चरति स उत्क्षिप्तनिक्षिप्तचरक इत्युच्यते ।७। 'णिक्खित्त-उक्खित्त-चरए' निक्षिप्तोत्क्षिप्तचरक--निक्षिप्त--पाकभाजनादन्यत्र स्थापितमुत्क्षिप्त--तदेव पुनरद्धृत--हस्ते गृहीत, तदर्थमभिग्रह कृत्वा चरति स निक्षिप्तोत्क्षिप्तचरक ।८। 'वट्टिज्जमाणचरए' वर्त्यमानचरक -वर्त्यमान-परिनिष्यमाणं ग्रहीतु चरति स वर्त्यमानचरक ।९। 'साहरिज्जमाणचरए' संहियमाणचरक --अत्युष्ण व्यञ्जनसूपादि शीतलीकरणाय स्थाल्यादिपु विस्तारित त पुनर्भाजने क्षिप्यमाण संहियमाणमुच्यते, तद् ग्रहीतु चरति-इति संहियमाणचरक ।१०। 'उवणीयचरए' उपनीतम्=अन्येन केनचिद् गृहस्थाय प्रेषित यत् तदुपनीत, तदेव ग्रहीतु चरति-इत्युपनीत-चरक ।११। 'अवणीयचरए' अपनीतचरक --अपनीत गृहस्थेन अन्यस्मै कस्मै चिद्दातु

निक्खित्त-चरए) उत्क्षिप्तनिक्षिप्तचरक-दाताने पहले पाकभाजन से अन्नादिक निकाला, फिर उसको उसने अन्य पात्रमे रखा, उसमें से यदि देगा तो लूगा । ८-(निक्खित्त-उक्खित्त-चरए) निक्षिप्तउत्क्षिप्तचरक-दाताने पाकभाजन से अन्नादिक को निकाल कर दूसरे पात्र में रख दिया हो, उसीको हाथ मे उठाया हुआ हो, उससे यदि देगा तो लूगा । ९-(वट्टिज्जमाणचरए) वर्त्यमानचरक-दाता द्वारा परोसी जाती हुई वस्तु म से देगा तो लूगा । १०-(साहरिज्जमाणचरए) संहियमाणचरक-दाताने उष्ण व्यञ्जन एव सूपादिक को ठडा करने के लिये स्थाली आदि मे रखा, फिर उस व्यञ्जनादिक को उसी पात्र में रखता हुआ उसमें से देगा तो लूगा । ११-(उवणीयचरए) उपनीतचरक-दाता से मै उसी पदार्थ को लूगा जो उसके लिये अन्य किसी व्यक्तिने भेजा होगा । १२ (अवणीयचरए) अपनीतचरक-मै दाता से वही पदार्थ लूगा जो उसने अन्य किसी

त्तचरए) ઉત્ક્ષિપ્તનિક્ષિપ્તચરક-દાતાએ પહેલા રાંધવાના વાસણમાંથી અન્નાદિક કાઢ્યું પછી તેને તેણે બીજા વાસણમાં રાખ્યું હોય, તેમાંથી એ આપશે તો લઈશ [૮] (वट्टिज्जमाणचरए) વર્ત્યમાનચરક-દાતા દ્વારા પીરસવામાં આવતી વસ્તુમાંથી આપશે તો લઈશ [૧૦] (साहरिज्जमाणचरए) સંહ્રિયમાણચરક-દાતાએ ગરમ વ્યંજન તેમજ સૂપ (દાલ) આદિ ને ઠંડા કરવા માટે થાળી આદિમાં રાખ્યા હોય, પછી તે વ્યંજન આદિકને તેજ પાત્રમાં રાખતા તેમાંથી આપશે તો લઈશ [૧૧] (उवणीयचरए) ઉપનીતચરક-દાતા પાસેથી હું એજ પદાર્થ લઈશ કે જે બીજા કોઈએ તેને માટે મોકલ્યો હોય [૧૨] (अवणीयचरए) અપનીતચરક-હું દાતા પાસેથી તેજ પદાર્થ લઈશ કે જે

१३, अवणीय-उवणीयचरए १४, संसट्ठचरए १५, असंसट्ठचरए १६, तज्जायसंसट्ठचरए १७, अण्णायचरए १८, मोणचरए १९,

निमायान्यत्र स्थापित तदेव अपनीत, तदर्थं चरति-इत्यपनीतचरकः ।१२। 'उवणीय-अवणीय-चरए' उपनीतापनीतचरकः-यदेव उपनीतम्-अन्येन प्रेषित तदेव अपनीत स्थानान्तरे स्थापित तद् ग्रहीतु चरति इत्युपनीताऽपनीतचरकः ।१३। 'अवणीय-उवणीय-चरए' अपनीतोपनीतचरकः-अपनीतम्=कस्मै चित् अन्यस्मै दातु निमायान्यत्र स्थापित, तदेव उपनीत=यस्य गृहस्थस्य समीपे प्रेषित तस्य गृहस्थस्य गृह प्रापित तदपनीतोपनीत, तदर्थं चरतीत्यपनीतोपनीतचरकः ।१४। 'संसट्ठचरए' संसृष्टचरकः-संसृष्टेन=खरण्टितेन हस्तादिना दीयमान संसृष्टमुच्यते, तद् ग्रहीतु चरति-इति संसृष्टचरकः ।१५। 'असंसट्ठचरए' असंसृष्टचरकः-असंसृष्टेन=अखरण्टितेन चरति-इत्यसंसृष्टचरकः ।१६। 'तज्जायसंसट्ठचरए' तज्जातसंसृष्टचरकः-तज्जातेन=परिवेष्यमाणद्रव्येण यत्संसृष्ट हस्तादि, तेन दीयमान वस्तु ग्रहीतु य-

दूसरे को देने के लिये निकाल कर रख दिया होगा। १३-(उवणीय-अवणीय-चरए) उपनीत-अपनीतचरक-मैं वही पदार्थ लूगा जो उस दाता के लिये किसी दूसरेने उसके पास भेजा होगा, और दाताने उसी पदार्थ को यदि दूसरे को देने के लिये एक तरफ रख छोड़ा होगा। १४-(अवणीय-उवणीय-चरए) अपनीतउपनीतचरक-किसी गृहस्थने किसी व्यक्ति को देने के लिये अन्नादिक अन्यत्र स्थापित कर रखा होगा और उसको उसने उसके यहा भेज दिया होगा, तथा वह उसके घर भी पहुँच चुका होगा, उसमें से देगा तो लूगा। १५-(संसट्ठचरए) संसृष्टचरक-भरे हुए हाथ से देगा तो लूगा। १६-(असंसट्ठचरए) असंसृष्टचरक-विना भरे हुए हाथ से देगा तो लूगा। १७ (तज्जायसंसट्ठचरए) तज्जातसंसृष्टचरक-हाथ जिस चीज से संसृष्ट भरा रहा होगा वही चीज यदि

तेणे બીજા કોઈ માણસને દેવાને માટે કાઢી રાખેલા હોય [૧૩] (उवणीय-अवणीयचरए) ઉપનીત-અપનીત-ચરક-હું તે જ પદાર્થ લઈશ કે જે કોઇ બીજાએ તે દાતાને માટે તેની પાસે મોકલ્યો હોય અને દાતાએ તે જ પદાર્થને કોઈ બીજાને દેવા માટે એક તરફ રાખી મૂકયો હોય [૧૪] (अवणीय उवणीयचरए) અપનીત-ઉપનીત-ચરક-કોઇ ગૃહસ્થે કોઇ વ્યકિતને દેવા માટે અન્નાદિક બીજે ઠેકાણે રાખી મુકેલુ હોય અને તે તેણે તેને ત્યા મોકલી દીધુ હોય અને તે તેને ઘેર પણ પહોંચી ગયુ હોય તેમાથી આપશે તો લઈશ [૧૫] (संसट्ठचरए) સંસૃષ્ટચરક-શાક આદિથી ભરેલા હાથથી આપશે તો લઈશ (૧૬) (असंसट्ठचरए) અસંસૃષ્ટચરક વગર ભરેલા હાથથી આપશે તો લઈશ

दिट्ठलाभिए २०, अदिट्ठलाभिए २१. पुट्ठलाभिए २२, अपुट्ठलाभिए

चरति स तज्जातसंसृष्टचरकः ।१७। 'अण्णायचरए' अज्ञातचरकः—अज्ञातम्-अज्ञातसाधुनियमं कुलं चरति यः सोऽज्ञातचरकः । १८ । 'मोणचरए' मौनचरकः—मौनम्=वाक्संयमनं, तेन चरति यः स मौनचरकः ।१९। 'दिट्ठलाभिए' दृष्टलाभिकः—दृष्टस्यैव भक्तादेर्लाभो दृष्टलाभः, यद्वा दृष्टात्प्रथमदृष्टादेव दातुर्गृहाद्वा लाभो दृष्टलाभः, सोऽस्ति यस्य स दृष्टलाभिकः ।२०। 'अदिट्ठलाभिए' अदृष्टलाभिकः—अदृष्टस्य—आवरणाऽऽच्छादितस्य दात्रादिभिः कृतोपयोगस्य भक्तादेर्लाभः, अथवा अदृष्टात्=पूर्वं कदापि न दृष्टाद् दायकाल्लाभः, सोऽस्याऽस्तीत्यदृष्टलाभिकः ।२१। 'पुट्ठलाभिए' पृष्टलाभिकः—भिक्षार्थं समागतं यं साधुं 'भो साधो! त्वं किमिच्छसि?' एवं कश्चिद् गृहस्थः पृच्छति स पृष्ट इत्युच्यते, तस्य साधो-

मुझे देगा तो लूगा । १८—(अण्णायचरए) अज्ञातचरक—जो साधुओं के नियमों से अनभिज्ञ होगा उसी कुल की मैं भिक्षा लूगा। १९—(मोणचरए) मौनचरक—मैं वहीं से भिक्षाप्राप्त करूँगा जो मेरे विना बोले मुझे भिक्षा लाकर देगा। २०—(दिट्ठलाभिए) दृष्टलाभिक—मैं वही भिक्षा लूगा जो सर्वप्रथम मेरी दृष्टि मे आवेगी, अथवा मैं उसीसे भिक्षा लूगा जो सर्वप्रथम मुझे दिखाई देगा, अथवा मैं उसी स्थान से भिक्षा लूगा जो सबसे पहिले मुझे दिख जायगा । २१—(अदिट्ठलाभिए) अदृष्टलाभिक—जो अशनादिक आवरण से आच्छादित होने की वजह से दिखलाई तो न पडे, परन्तु दाता उसे अपने उपयोग में ला चुका हो, उसमें से भिक्षा देगा तो लूगा, अथवा—जिस दाता को मैं पहिले कभी भी नहीं देखा वह देगा तो लूँगा । २२—(पुट्ठलाभिए) पृष्टलाभिक—दाता यदि पूछेगा,

[१७] (तज्जायससट्ठचरए) तज्जातसंसृष्टचरक—હાથ જે ચીજથી સંસૃષ્ટ થઈ જાય તે ચીજ જો મને આપશે તો લઈશ (૧૮) (अण्णायचरए) અજ્ઞાતચરક—જે સાધુઓના નિયમોથી અજ્ઞાત હોય એવા કુળની હું ભિક્ષા લઈશ (૧૯) (मोणचरए) મૌનચરક—હું તેના પાસેથી ભિક્ષા લઈશ કે જે મારા બોલ્યા વિનાજ મને ભિક્ષા લાવીને આપી દેશે (૨૦) (दिट्ठलाभिए) દૃષ્ટલાભિક—હું એ જ ભિક્ષા લઈશ કે જેને હું સર્વથી પહેલા જોઈશ અથવા હું તેના જ હાથથી ભિક્ષા લઈશ જે માણસ મારે સર્વપ્રથમ જોવામા આવશે, અથવા હું તેજ જગ્યાથી ભિક્ષા લઈશ જે જગ્યા મારે સર્વ-પ્રથમ દેખાશે (૨૧) (अदिट्ठलाभिए) અદૃષ્ટલાભિક—જે ખાવાના પદાર્થો ઢાંકણાથી ઢાંકેલા હોવાના કારણથી દેખાય નહિ પણ દાતા તેને પોતાના ઉપયોગમા લાવી ચૂકેલા હોય તેમાથી ભિક્ષા આપશે તો લઈશ અથવા જે દાતાને મે પહેલા કદી જોયેલા ન હોય તે આપશે તો લઈશ (૨૨) (पुट्ठलाभिए) પૃષ્ટલાભિક—દાતા જો

२३, भिक्खालाभिए २४, अभिक्खालाभिए २५, अण्णगिलायए

स्तस्माद् गृहस्थाद् यो लाभ स पृष्टलाभ, सोऽस्याऽस्तीति पृष्टलाभिक ।२२। 'अपुट्ठलाभिए' अपृष्टलाभिक –केनचिद् गृहस्थेनाऽपृष्टस्यैव साधोर्यस्तस्माद् गृहस्थाल्लाभ सोऽपृष्टलाभ, सोऽस्याऽस्तीत्यपृष्टलाभिक ।२३। 'भिक्खालाभिए' भिक्षालाभिक –कस्यचित् क्षेत्राद् गृहाद्वा याचित्वा गृहस्थेन समानीततुच्छचणकचणककोद्रवादिकनिष्पादित आहारो भिक्षा, तस्या लाभोऽस्यास्तीति भिक्षालाभिक ।२४। 'अभिक्खालाभिए' अभिक्षालाभिक – अयाचितलाभ –अभिक्षा, तस्या लाभोऽस्याऽस्तीत्यभिक्षालाभिक ।२५। 'अण्णगिलायए' अन्नग्लायक –अन्नेन–आहारेण विना ग्लायक, रात्रिनिष्पन्नमन्न प्रातर्यामी यदग्रह कृत्वा भिक्षाचरक इत्यर्थ, पर्युषितान्नभिक्षाचरक इति भाव ।२६। 'ओवणिहिए' औपनिहितिक – उपनिहित–कथञ्चिद् गृहस्थेन स्वसमीपे समानीतमन्नादिकम्, तेन चरति इत्यौपनिहितिक

महाराज! आप क्या चाहते हैं, तभी लूँगा। २३–(अपुट्ठलाभिए) अपृष्टलाभिक–दाता यदि नहीं पूछेगा तभी लूँगा। २४–(भिक्खालाभिए) भिक्षालाभिक–दाता गृहस्थ वाल चना एव कोद्रव आदि अन्न को किसी के खेत से अथवा किसी के घर से माग कर लाया होगा उस अन्न से निष्पादित आहारमें से यदि देगा तो लूगा। २५ (अभिक्खालाभिए) अभिक्षालाभिक–दाता माँग कर जो पदार्थ नहीं लाया होगा उसमें से देगा तो लूंगा। २६–(अन्नगिलायए) अन्नग्लायक–जो अशनादिक रात्रिमें पकाया गया होगा वही लूगा, अर्थात्–पर्युषित अन्न की भिक्षा लेने का अभिग्रह लेनेवाला सयमी जन अन्नग्लायक है। २७ (ओवणिहिए) औपनिहितिक–गृहस्थ अपने समीप में किसी प्रकार से लाया गया अशनादिक में से देगा तो लूँगा। २८-(परिमियपिंड-

---

પૂછશે કે મહારાજ! આપને શુ જોઇએ છે ત્યારે લઇશ (૨૩) (अपुट्ठलाभिए) અપૃષ્ટલાભિક–દાતા જો નહિ પૂછશે તો જ લઇશ (૨૪) (भिक्खालाभिए) ભિક્ષાલાભિક–દાતા ગૃહસ્થ જે વાલ ચણા તેમજ કોદરા આદિ અનાજ કોઇના ખેતરથી અથવા કોઇને ઘેરથી માગીને લાવ્યા હોય તે અન્નથી બનાવેલા આહાર માથી આપશે તો લઇશ (૨૫) (अभिक्खालाभिए) અભિક્ષાલાભિક–દાતાએ માગીને જે પદાર્થ નહી લાવ્યો હોય તેમાથી આપશે તો લઇશ (૨૬) (अन्नगिलायए) અન્નગ્લાયક–જે ભોજન રાતમા રાધેલુ હશે તે જ લઇશ–અર્થાત્ વાસી અન્નની ભિક્ષા લેવાનો અભિગ્રહ લેનાર સયમી જન અન્નગ્લાયક છે (૨૭) (ओवणिहिए) ઔપનિહિતિક–ગૃહસ્થ પોતાની સમીપમા કોઇ પણ પ્રકારે લાવેલા ભોજનમાથી

२६, ओवणिहिए २७, परिमियपिंडवाइए २८, सुद्धेसणिए २९, संखादत्तिए ३०। से तं भिक्खायरिया ॥ सू. ३० ॥

।२७। '**परिमियपिंडवाइए**' परिमितपिण्डपातिक –परिमितपिण्डस्य – प्रमाणोपेतपिण्डस्य पातो लाभ परिमितपिण्डपात, सोऽस्यास्तीति परिमितपिण्डपातिक –आधाकर्मादिदोषरहित भक्तादिकमेकस्माद् गृहाद्यदि पर्याप्त लभ्येत तदा ग्राह्यम्–इत्यभिग्रहवान ।२८। '**सुद्धेसणिए**' शुद्धैषणिक –शुद्धैषणा–शङ्कादिदोषरहितता, शुद्धस्य=उद्गमादिदोषरहितस्य या एषणा, साऽस्याऽस्तीति शुद्धैषणिक, सर्वथा शुद्धमेव ग्राह्यमित्यभिग्रहधारीति भाव ।२९। '**संखादत्तिए**' संख्यादत्तिक –संख्याप्रधाना दत्ति संख्यादत्ति, तया चरतीति संख्यादत्तिक । दर्वीकटोरकादितोऽविच्छिन्नधारया या भिक्षा पतति सा, तथा–एकक्षेपरूपा च भिक्षा दत्तिरित्युच्यते ।३०। '**से त भिक्खायरिया**' सैषा भिक्षाचर्या ॥ सू ३० ॥

वाइए) परिमितपिण्डपातिक–आधाकर्मादिक दोषों से रहित भक्तादिक यदि एक ही गृह से पर्याप्तमात्रा मे मिल जाय तो लूँगा। २९ (**सुद्धेसणिए**) शुद्धैषणिक–शकादिक दोषों से रहित अथवा उद्गमादिक दोषों से वर्जित आहार लेने वाला। ३० (**संखादत्तिए**) संख्यादत्तिक वह है जो इस प्रकार का सकल्प करता है कि दर्वी–कडछी एव कटोरी आदि से अविच्छिन्न धारारूप में जो भिक्षा मेरे पात्र मे पड जायगी उतनी ही भिक्षा ग्रहण करूगा। (**से त भिक्खायरिया**) भिक्षाचर्या के ये ३० भेद है ॥ सू० ३० ॥

આપશે તો લઈશ (૨૮) (परिमियपिंडवाइए) પરિમિતપિંડપાતિક–આધાકર્મ આદિક દોષોથી રહિત ભક્તાદિક જો એક જ ઘેરથી પુરતા પ્રમાણમા મળી જાય તો લઈશ (૨૯) (सुद्धेसणिए) શુદ્ધૈષણિક–શંકા આદિક દોષોથી રહિત અથવા ઉદ્ગમાદિક દોષોથી વર્જિત આહાર લેવાવાળા ૩૦ (संखादत्तिए) સંખ્યાદત્તિક તે છે કે જે એવો સંકલ્પ કરે છે કે દર્વી–કડછી તેમજ કટોરી આદિથી સતત ધારારૂપમા જેટલી પણ ભિક્ષા મારા પાત્રમા પડી જશે એટલી જ ભિક્ષા લઈશ (से त भिक्खायरिया) ભિક્ષાચર્યાના આ ૩૦ ભેદ છે (સૂ ૩૦)

मूलम्—से किं तं रसपरिच्चाए? रसपरिच्चाए अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा १ निव्विइए, २ पणीयरसपरिच्चाए, ३ आयंविलिए,

टीका—'से किं तं' इत्यादि-'से किं तं रसपरिच्चाए' अथ कोऽसौ रसपरित्यागः?, 'रसपरिच्चाए' रसपरित्यागः 'अणेगविहे पण्णत्ते' अनेकविधः प्रज्ञप्तः, 'तं जहा' तद्यथा-तदनेकविधत्वं चैवम्-'निव्विइए' निर्विकृतिकः-निर्गता घृतादिरूपा विकृतिर्यस्मात् स निर्विकृतिकः १, 'पणीयरसपरिच्चाए' प्रणीतरसपरित्यागः-प्रणीतरसप्रचुरत्वात् द्रवद्घृतबिन्दुसन्दोहोऽपूपादिः, तस्य परित्यागः २, 'आयंविलिए' आचामाम्लम्-विकृतिरहितानामन्नभर्जितचणकादीनां रूक्षान्नानामचित्ते उदके प्रक्षिप्यैकासनस्थेन सकृद्भोजनमाचामाम्लं नाम तप उच्यते। तथा चोक्तम्-

'से किं तं रसपरिच्चाए?' इत्यादि।

(से किं तं रसपरिच्चाए?) रसपरित्याग तप किसे कहते हैं? वह कितने प्रकार का है? इस प्रकार शिष्य प्रश्न करता है। उत्तर-(रसपरिच्चाए) रसपरित्याग तप (अणेगविहे पण्णत्ते) अनेक प्रकारका कहा गया है। वह इस प्रकार से है-(निव्विइए) निर्विकृतिक-जिस आहार से घृतादिक विकृति निर्गत हो चुकी हो ऐसे आहारका ग्रहण करना सो निर्विकृतिक है। अर्थात्-विगय नहीं लेना (१)। (पणीयरसपरिच्चाए) प्रणीतरसपरित्याग-अपूप अर्थात् मालपुआ आदि सरस आहार का परित्याग करना (२)। (आयविलिए) आचामाम्ल-विगयरहित ओदन, भूँजे हुए चने आदि रूक्ष अन्नको अचित्त पानी में डालकर एकस्थान पर बैठ एक बार ही खाना सो आचामाम्ल तप है।

'से किं तं रसपरिच्चाए?' ઇત્યાદિ

(से किं तं रसपरिच्चाए) હવે અહીં રસપરિત્યાગ તપ કોને કહે છે-તે કેટલા પ્રકારના છે? આ પ્રકારે શિષ્ય પ્રશ્ન કરે છે ઉત્તર (रसपरिच्चाए) રસ-પરિત્યાગ તપ (अणेगविहे पण्णत्ते) અનેક પ્રકારના કહેવાય છે તે આ પ્રકારે છે-(निव्विइए) નિર્વિકૃતિક-જે આહારમાંથી ઘી વગેરેની વિકૃતિ નીકળી ગઈ હોય એવો આહાર લેવો તે નિર્વિકૃતિક છે અર્થાત્ વિગય (ઘી-દૂધ વગેરે) લેવું નહિ (૧) (पणीयरसपरिच्चाए) પ્રણીતરસપરિત્યાગ-અપૂપ અર્થાત્ માલપુઆ આદિ સરસ આહારનો પરિત્યાગ કરવો (૨) (आयविलिए) આચામામ્લ-વિગયરહિત ભાત, ભુંજેલ ચણા આદિ લુખુ અન્ન અચિત્ત પાણીમાં નાખી

४ आयामसित्थभोई, ५ अरसाहारे, ६ विरसाहारे, ७ अंताहारे,

विगइरहियस्स ओयण,–भज्जियचणगाइलुक्ख–अन्नस्स ।
खित्ता जले अचित्ते, खाण आयंबिल जाण ॥ ३ ॥ इति

'आयाम-सित्थ-भोई' आयाम-सिक्थ भोजी,=अवस्रावणगतसिक्थभोक्ता, ४ 'अर-साहारे' अरसाऽऽहार -अरस =जीरक-हिङ्ग्वादिभिरसंस्कृत आहारो यस्य सोऽरसाऽऽहार ५। 'विरसाहारे' विरसाऽऽहार –विरस =विगतरस –पुराणधान्यौदनादि आहारो यस्य स विरसाहार ६ । 'अंताहारे' अन्त्याऽऽहार –अन्ते भवम् अन्त्य–जघन्यधान्य कोद्रवादि तदेवाऽऽहारो यस्य सोऽन्त्याहार ७। 'पंताहारे' प्रान्ताऽऽहार –प्रकर्षेणान्त प्रान्त–पाक-पात्रादन्ने नि सारिते तत्पात्रश्लिष्ट दर्व्यादिना घर्षणेन नि सारितमन्न, वल्लचणकादिनिष्पादि-

कहा भी है–"विगइरहियस्स ओयणभज्जियचणगाइलुक्खअन्नस्स । खित्ता जले अचित्ते खाण आयंबिल जाण" इसका अर्थ आयंबिल का जो अर्थ किया है वही है (३) । (आयामसित्थभोई) आयामसिक्थभोजी–ओसामण में आये हुए सीथ मात्र का आहार करना (४) । (अरसाहारे) अरसाहार–जीरे हींग आदि से विना बघारे हुए आहार का लेना (५) (विरसाहारे) विरसाहार–विगत रसवाले पुराने धान्य का आहार लेना (६)। (अंताहारे) अन्त्याहार-कोद्रव आदि तुच्छ धान्य का आहार लेना (७) । (पंताहारे) प्रान्ताहार–पकाने के वर्तन में से अन्न के निकालने पर करछली आदि के घर्षण से पात्र मे लगा हुआ जो कुछ अन्न निकाला जाता है वह, अथवा वल्ल चणा आदि से बना हुआ पश्चात् खट्टी छाछ से मिश्रित अन्नादि

એક ઠેકાણે બેસી એકવાર ખાવુ તે આયામામ્લ તપ છે " विगइरहियस्स ओयणभज्जियचणगाइलुक्खअन्नस्स । खित्ता जले अचित्ते खाण आयंबिल जाण " આનો અર્થ આયંબિલનો જે અર્થ કર્યો છે તે જ છે (૩) (अयामसित्थभोई) આયામસિક્થભોજી–ઓસામણમા આવેલા સીથનો જ માત્ર આહાર કરવો. (૪) (अरसाहारे) અરસાહાર–જીરૂ હીંગ આદિથી વઘાર્યા વગરના ભોજનનો આહાર કરવો (૬) (विरसाहारे) વિરસાહાર–રસ વગરના જુના ધાન્યથી બનેલુ આહાર લેવો (अताहारे) અંતાહાર–કોદરા આદિ તુચ્છ ધાન્યનો આહાર લેવો. (૭) (पताहारे) પ્રાન્તાહાર–રાંધવાના વાસણમાથી અન્ન કાઢી લીધા પછી કડછી આદિના ઘર્ષણથી પાત્રમા લાગેલુ જે કાંઈ અન્ન નિકાળવામા આવે છે તે અથવા વાલ –ચણા આદિનો બનેલો (લોટ) પછી ખાટી છાશમા મેળવી રાખેલુ અન્ન આદિ તે

८ पंताहारे, ९ लूहाहारे, १० तुच्छाहारे, से तं रसपरिच्चाए।

से किं तं कायकिलेसे? कायकिलेसे अणेगविहे पण्णत्ते, तंजहा—ठाणट्ठिइए १, उक्कुडुयासणिए २, पडिमट्ठाई ३,

तमम्लनकमिश्रित पर्युषित वाऽन्न, तदाहारो यस्य स तथा ८। 'लूहाहारे' रूक्षाहार—रूक्षम्=अस्निग्धमन्नमेवाहारो यस्य स तथा ९। 'तुच्छाहारे' तुच्छाहार—तुच्छ—अल्पोऽसारश्च श्यामाकादिनिष्पादित आहारो यस्य स तथा १० इति। उपसंहरन्नाह—'से त रसपरिच्चाए' स एष रसपरित्याग इति।

इत्थं दशविध रसपरित्याग वर्णयित्वा कायक्लेश वर्णयति—'से किं त कायकिलेसे' अथ कोऽसौ कायक्लेश? उत्तरमाह—'कायकिलेसे अणेगविहे पण्णत्ते' कायक्लेशोऽनेकविध प्रज्ञप्त। 'तजहा' तद्यथा—'ठाणट्ठिइए' स्थानस्थितिक—स्थान कायोत्सर्ग, तेन स्थितिर्यस्य स स्थानस्थितिक ।१। 'उक्कुडुयासणिए' उत्कुटुकाऽऽसनिक—भूमावसलग्नपुतेन

प्रांत है, अथवा प्रान्तका अर्थ वासी अन्न भी है। इसका आहार करना प्रान्ताहार है (८)। (लूहाहारे) रूक्षाहार—रूक्षस्वभाववाला कुलथी आदि का आहार रूक्षाहार है (९)। (तुच्छाहारे) तुच्छाहार—असार—जिसमें कुछ भी सार नहीं है ऐसा श्यामाक, मकीचा आदि तुच्छ धान्य का आहार तुच्छाहार है (१०)। (से त रसपरिच्चाए) ये दस प्रकार के रस-परित्याग तप हैं। अब कायक्लेश का वर्णन सूत्रकार करते हैं—(से किं त कायकिलेसे?) प्रश्न—वह कायक्लेश तप कितने प्रकार का है? (कायकिलेसे अणेगविहे पण्णत्ते) उत्तर-कायक्लेश तप अनेक प्रकार का है, (त जहा) वे प्रकार इस तरह हैं—(ठाणट्ठिइए) स्थान-स्थितिक, स्थान शब्द का अर्थ कायोत्सर्ग है, इस कायोत्सर्ग से जिसकी स्थिति सर्वदा रहती है वह स्थानस्थितिक है। (उक्कुडुयासणिए) उत्कुटुकासनिक—उकडु—आसन से बैठना

પ્રાન્ત છે, અથવા-પ્રાન્તનો અર્થ વાસી અન્ન પણ છે, તેનો આહાર કરવો તે પ્રાન્તાહાર છે (૮) (लूहाहारे) રૂક્ષાહાર-રૂક્ષ સ્વભાવના કુળથી આદિ નો આહાર રૂક્ષાહાર છે (૯) (तुच्छाहारे) તુચ્છાહાર-અસાર-જે અન્નમા કાંઈ પણ સાર નથી એવુ સામો મલીચા આદિ તુચ્છ ધાન્યનો આહાર તે તુચ્છાહાર છે (૧૦) (से त रसपरिच्चाए) આ દસ પ્રકારના રસપરિત્યાગ તપ છે હવે કાયકલેશનુ વર્ણન સૂત્રકાર કરે છે-(से किं त कायकिलेसे) પ્રશ્ન-તે કાયકલેશ તપ કેટલા પ્રકારના છે?-(कायकिलेसे अणेगविहे पण्णत्ते) કાયકલેશ અનેક પ્રકારના છે, (त जहा) તે પ્રકાર આમ છે-(ठाणट्ठिइए) સ્થાનસ્થિતિક=સ્થાન શબ્દનો અર્થ કાયોત્સર્ગ છે આ કાયોત્સર્ગથી જેની સ્થિતિ સર્વદા રહે છે તે

वीरासणिए ४, नेसज्जिए ५, दडायइए ६, लउडसाई ७, आया-

बद्धाञ्जलिपुटेन भूमौ चरणतलमारोप्योपवेशनम्-उत्कुटुक, तदासनमस्यास्तीति उत्कुटुकाऽऽसनिक ।२। 'पडिमट्ठाई' प्रतिमास्थायी-प्रतिमा=मासिक्यादय नियमविशेषा, ताभिस्तिष्ठति तच्छील प्रतिमास्थायी ।३। 'वीरासणिए' वीराऽऽसनिक -सिंहासनोपरि समुपविष्टस्य भूमिस्थितचरणस्य सिंहासनापनयने कृते सिंहासनोपविष्टवदवस्थान वीरासन, तदस्यास्तीति वीरासनिक ।४। 'नेसज्जिए' नैषधिक -निषद्या-पुताभ्या भूम्यामुपवेशन, तया चरतीति नैषेधिक ।५। 'दडायइए' दण्डायतिक -दण्डस्येवायतम्=आयामोऽस्याऽस्तीति

यह उत्कुटुक-आसन है, जो इस आसन से बैठता है वह उत्कुटुकासनिक है । इस आसन में भूमि पर दोनों चरणों के तलियों को जमाया जाता है और पुत-(बैठक) जमीन को स्पर्श नहीं करते, तथा दोनों हाथों की अजली बधी रहती है । (पडिमट्ठाई) प्रतिमास्थायी-साधु की १२ प्रतिमाओं का धारण करने वाला प्रतिमास्थायी है । (वीरासणिए) वीरासनिक-वीरासन से ठहरनेवाला वीरासनिक है । इस आसन का यह लक्षण है-कोई मनुष्य सिंहासन पर बैठा हुआ है, उस सिंहासन को हटा लेने पर वह वैसे ही खडा रह जाय, उसे 'वीरासन' कहते है । उस आसन से तप करनेवाले को वीरासनिक कहते है । (नेसज्जिए) नैषधिक-निषद्याका अर्थ है-पालथी मार कर बैठना । इस आसन से तप करनेवाले को नैषधिक कहते है । (दडायइए) दण्डायतिक-दड की तरह लबा होकर आसन मे स्थिति करनेवाला दडायतिक है । (लउडसायी) लकुटशायी-वक्रकाष्ठ का नाम

સ્થાનસ્થિતિક છે (उक्कुडुयासणिए) ઉત્કુટુકાસનિક=ઉકડુ આસનથી બેસવુ તે ઉત્કુટુક આસન છે જે આ આસન કરે છે તે ઉત્કુટુકાસનિક છે આ આસનમા ભૂમિ ઉપર બન્ને પગના તળિયાને જમાવી દેવામા આવે છે અને પુત (વેઠક) જમીનને સ્પર્શ કરતી નથી તથા બન્ને હાથની અ જલિ બાધેલી રહે છે (पडिमट्ठाई) પ્રતિમાસ્થાયી-સાધુની ૧૨ પ્રતિમાઓનો ધારણ કરવાવાળો પ્રતિમાસ્થાયી છે (वीरासणिए) વીરાસનિક-વીરાસનથી બેસનાર વીરાસનિક છે આ આસનનુ એ લક્ષણ છે કે-કોઈ મનુષ્ય સિંહાસન ઉપર બેઠો હોય તે સિંહાસનને હટાવી લેવાથી તે જ પ્રમાણે ઉભો રહી જાય તેને વીરાસન કહે છે તે આસનથી તપ કરવાવાળાને વીરાસનિક કહે છે (नेसज्जिए) નૈષધિક-નિષદ્યાનો અર્થ છે પલાઠી મારીને બેસવુ આ આસનથી તપ કરવાવાળાને નૈષધિક કહે છે (दडायइए) દ ડાયતિક-દ ડની પેઠે લાબા થઈને આસનમા સ્થિતિ કરવાવાળા દ ડાયતિક છે (लउडसाई) લકુટશાયી-વાકા લાકડાનુ નામ

वए ८; अवाउडए ९, अकंडुयए १०, अणिट्ठूहए ११, सव्वगाय-परिकम्म-विभूस-विप्पमुक्के १२, से तं कायकिलेसे।

दण्डायतिक ।६। 'लउडसाई' लकुटशायी–लकुटो=वक्रकाष्ठ तद्वच्छेते तच्छीलो लकुट-शायी–उत्तान सन् शयित्वा पार्ष्णिकद्वय ('एडी' इति भाषाप्रसिद्धद्वय) शिरश्चेति त्रय भूमौ स्थापयित्वा शेते तच्छील ।७। 'आयावए' आतापक -आतापयति शीतोष्णादिभिर्देह सतापयति-क्लेशयती यातापक, आतापना च सूर्यातपादिसहनम् ।८। 'अवाउडए' अप्रावृतक –शीतकाले प्रावरणरहित –सदोरकमुखवस्त्रिकाचोलपट्टातिरिक्तवस्त्ररहित ।९। 'अकडूयए' अकण्डूयक -कण्डूयन–गात्रघर्षण, तद्रहित ।१०। 'अणिट्ठूहए' अनिष्ठीवक –निष्ठीवनरहित ।११। 'सव्वगाय–परिकम्म–विभूस–विप्पमुक्के' सर्वगात्र–परिकर्म–विभूषा–विप्रमुक्त =सर्वस्य गात्रस्य परिकर्म–मार्जन विभूषा–विभूषण च, ताभ्या विप्रमुक्त –त्यक्तसमार्जनविभूषण ।१२। 'से त कायकिलेसे' स एष कायक्लेश ।

लकुट है। इस तरह होकर जो शयन करता है वह लकुटशायी है। ऊपर मुँह कर पहिले सोना पश्चात् दोनों पैरों की एडियों को एव शिर को जमीन पर टेकना, इस प्रकार शरीर को अधर रखकर आसन करना 'लकुटशयनासन' है। (आयावए) आतापक–सूर्यादि की आतापना लेने वाला, (अवाउडए) अप्रावृतक–शीतकाल में सदोरक मुँहपत्ती एव चोल-पट्टा के अतिरिक्त अन्य वस्त्रों से रहित हो खुले शरीर से शीतको सहन करनेवाला अप्रावृतक है। (अकडूयए) अकण्डूयक–खुजली चलने पर भी शरीर को नहीं खुजलाने वाला अकण्डूयक है। (अणिट्ठूहए) अनिष्ठीवक–थूँक आने पर भी नहीं थूँकनेवाला अनिष्ठीवक है। (सव्वगाय–परिकम्म–विभूस–विप्पमुक्के) सर्वगात्रपरिकर्मविभूषाविप्रमुक्त–शरीर की सर्वथा शुश्रूषा–विभूषा नहीं करनेवाला सर्वगात्रपरिकर्मविभूषाविप्रमुक्त है। (से त काय-

લકુટ છે એવી રીતે થઇને જે શયન કરે છે તે લકુટશાયી છે ઉપર મોઢુ રાખીને પહેલા સુવુ, પછી બન્ને પગની એડીઓને તેમજ શિરને જમીન ઉપર ટેકાવવુ–આ પ્રકારે શરીરને અધર રાખીને આસન કરવુ તે 'લકુટ-શયનાસન' છે (आयावए) આપાતક–સૂર્ય આદિની આતાપના લેવાવાળા, (अवाउडए) અપ્રાવૃતક–શીતકાલમા દોરાસાથે મુહપત્તી તેમજ ઓલપટ્ટા સિવાયના બીજા વસ્ત્રો રહિત થઈને ખુલ્લે શરીરે શીતને સહન કરવાવાળા અપ્રાવૃતક છે (अकडूयए) અકડૂયક–ખુજલી આવતા છતા પણ જે શરીરને ખજવાળે નહિ તે અકડૂયક છે (अणिट्ठूहए) અનિષ્ઠીવક–થૂક આવવા છતા પણ ન થૂકવાવાળા અનિષ્ઠીવક છે (सव्वगाय परिकम्म विभूस-विप्पमुक्के) સર્વગાત્રપરિકર્મ

से किं तं पडिसंलीयणा? पडिसंलीणया चउव्विहा पण्णत्ता; तंजहा—१ इंदियपडिसंलीणया, २ कसायपडिसंलीणया, ३ जोगपडिसंलीणया, ४ विवित्त-सयणा-सण-सेवणया। से किं तं इंदियपडिसंलीणया ? इंदियपडिसंलीणया पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—

'से किं त पडिसलीणया ?' अथ का सा प्रतिसलीनता=प्रतिसलीनता=गोपन, सा कतिविधा ? उत्तरमाह—'पडिसंलीणया' प्रतिसलीनता—'चउव्विहा पण्णत्ता' चतुर्विधा प्रज्ञप्ता, 'त जहा' तद्यथा १—'इदियपडिसलीणया' इन्द्रियप्रतिसलीनता—इन्द्रियनिरोधकरणशीलता । २—'कसायपडिसलीणया' कषायप्रतिसलीनता। ३—'जोगपडिसलीणया' योगप्रतिसलीनता। ४—'विवित्त–सयणा–सण–सेवणया' विविक्त–शयनाऽऽसन–सेवनता। 'से किं त इदियपडिसलीणया' अथ का सा इन्द्रियप्रतिसलीनता ?, 'इदिय-

किलेसे) कायक्लेश के ये १२ भेद है। (से किं त पडिसलीणया) प्रतिसलीनता तप कितने प्रकार का है ? (पडिसलीणया चउव्विहा पण्णत्ता) प्रतिसलीनता तप चार प्रकार का है। (त जहा) वे चार प्रकार ये है—(इदियपडिसलीणया) इन्द्रियप्रतिसलीनता—इन्द्रियों को गोप करके रखना। (कसायपडिसलीणया) कषायप्रतिसलीनता—क्रोधादिकषायों को गोप करके रखना, (जोगपडिसलीणया) योगप्रतिसलीनता—मन वचन काया के व्यापार को गोप करके रखना (विवित्त—सयणा—सण—सेवणया) विविक्तशयनासनसेवनता-स्त्री-पशु-पण्डक-रहित स्थान में शयनासन करना। (से किं त इदियपडिसलीणया) इन्द्रियप्रतिसलीनता कितने प्रकार की है ? (इदियपडिसलीणया पचविहा पण्णत्ता) यह

વિભૂષાવિપ્રમુક્ત—શરીરની સર્વથા શુશ્રૂષા (સેવા શણગાર) ન કરવાવાળાને સર્વગાત્રપરિકર્મવિભૂષાવિપ્રમુક્ત કહે છે (से त कायकिलेसे) કાયકલેશના આ ૧૨ પ્રકાર થાય છે (से किं त पडिसलीणया) પ્રતિસલીનતા તપ કેટલા પ્રકારના છે ? (पडिसलीणया चउव्विहा पण्णत्ता) પ્રતિસલીનતા તપ ચાર પ્રકારના છે (त जहा) તે ચાર પ્રકાર આ પ્રમાણે છે (इदियपडिसलीणया) ઇંદ્રિઓને ગોપી રાખવી (कसायपडिसलीणया) કષાયપ્રતિસલીનતા—ક્રોધ આદિ કષાયોને રોકી રાખવા (जोगपडिसलीणया) યોગપ્રતિસલીનતા—વાણી, મન અને કાયાના વ્યાપારને રોકી રાખવા (विवित्त-सयणा-सण सेवणया) વિવિક્તશયનાસનસેવનતા સ્ત્રીપશુપંડકરહિત સ્થાનમાં શયનાસન કરવું (से किं त इदियपडिसलीणया) ઇંદ્રિયપ્રતિસલીનતા કેટલા પ્રકારની છે ? (इदियपडिसलीणया पचविहा पण्णत्ता)

सोइंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा सोइंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा १, चक्खिदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा चक्खि-

पडिसंलीणया' इन्द्रियप्रतिसंलीनता 'पंचविहा पण्णत्ता' पञ्चविधा प्रज्ञप्ता, 'तं जहा' तद्यथा-'सोइंदिय-विसय-पयार-निरोहो वा, सोइंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु राग-दोसनिग्गहो वा' श्रोत्रेन्द्रियविषयप्रचारनिरोधो वा श्रोत्रेन्द्रियविषयप्राप्तेष्वर्थेषु रागद्वेषनिग्रहो वा-श्रोत्रेन्द्रियस्य=कर्णस्य विषये=शब्दे, प्रचारस्य=प्रवृत्ते, निरोध:-निषेध, संयमशीलतानिघा-तक शब्दो न श्रोतव्य, यद्यकस्मात्कर्णकुहरगत स्यात् तदा यत्कार्यं तदाह-श्रोत्रेन्द्रिय-विषय-प्राप्तेष्वर्थेषु=श्रुतेषु भावेषु, रागद्वेषयोर्निग्रहो विधेय, अर्थात्-मधुरमृदङ्गसङ्गीतेषु-अनुरागो न कर्तव्य, आक्रोशादिषु शब्देषु द्वेष -अप्रीतिलक्षणश्चित्तविकारो न कार्य १। 'चक्खिदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा, चक्खिदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्ग-हो वा' चक्षुरिन्द्रियविषयप्रचारनिरोधो वा चक्षुरिन्द्रियविषयप्राप्तेष्वर्थेषु रागद्वेषनिग्रहो वा-

इन्द्रियप्रतिसंलीनता पाच प्रकार की है,(तं जहा) वे प्रकार ये हैं-(**सोइंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा, सोइंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा**) श्रोत्र इन्द्रिय को विषय-शब्द में प्रवृत्ति करने से रोकना, संयम एव शील को विघात करनेवाले शब्दों को नहीं सुनना, यदि अकस्मात् इस प्रकार के शब्द कानमें आकर पड भी जावें तो उस विषयमें राग-द्वेष नहीं करना, यह प्रथम प्रकार है १। मतलब इसका यह है कि मधुर मृदङ्ग सङ्गीत आदि प्रिय एव आक्रोशादि अप्रिय शब्दों के प्रति प्रीति-अप्रीतिलक्षणरूप चित्तविकार नहीं करना सो श्रोत्रेन्द्रियविषयप्रचारनिरोध, एव श्रोत्रेन्द्रियविषयप्राप्तार्थरागद्वेषनिग्रहनामक प्रथम प्रकार है १। **चक्खिदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा चक्खिदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा**) चक्षु इन्द्रिय को अपने विषयभूत पदार्थों में प्रवृत्त होने से रोकना,

આ ઇંદ્રિયપ્રતિસંલીનતા ૫ પ્રકારની છે-(तं जहा) તે પ્રકાર આ છે-(सोइंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा, सोइंदिय विसय पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा) શ્રોત્ર-ઇંદ્રિયને વિષય-શબ્દમાં પ્રવૃત્તિ કરવાથી રોકવી, સંયમ તેમજ શીલનો વિઘાત કરવાવાળા શબ્દો સાંભળવા નહિ જો અકસ્માત્ આવા પ્રકારના શબ્દ કાનમાં આવીને પડી પણ જાય તો તે વિષયના રાગદ્વેષ ન કરવો એ ૧ પ્રથમ પ્રકાર છે મતલબ તેની એ છે કે મધુર મૃદંગ સંગીત આદિ પ્રિય, તેમજ આક્રોશ આદિ અપ્રિય શબ્દોમાં પ્રીતિ અપ્રીતિ-લક્ષણરૂપ ચિત્તવિકાર ન કરવો તે શ્રોત્રેંદ્રિયવિષય-પ્રચારનિરોધ તેમજ શ્રોત્રેંદ્રિયવિષયપ્રાપ્તાર્થરાગદ્વેષનિગ્રહ નામનો પ્રથમ પ્રકાર છે (चक्खिदिय विसय-प्पयार-निरोहो वा चक्खिदिय विसय पत्तेसु अत्थेसु

दिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा २, घाणिंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा घाणिंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा ३, जिब्भिंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा जिब्भिंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा ४, फासिंदिय-विसय-प्पयार-

चक्षुरिन्द्रियस्य=नेत्रस्य विषये=रूपे प्रचारस्य=प्रवृत्तेर्निरोधः कार्यः, वा-अथवा चक्षुरिन्द्रिय-विषयप्राप्तेषु=दृष्टेषु अर्थेषु-मनोज्ञामनोज्ञरूपेषु रागद्वेषयोर्निग्रहः कर्तव्य इति शेषः ।२। **'घाणिंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा, घाणिंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोस-निग्गहो वा'** घ्राणेन्द्रियविषयप्रचारनिरोधो वा घ्राणेन्द्रियविषयप्राप्तेष्वर्थेषु रागद्वेषनिग्रहो वा-घ्राणेन्द्रिय=नासिका, तस्य विषयो=गन्धस्तस्य प्रवृत्तेर्निषेधो विधेयः-सुरभिगन्धे दुरभि-गन्धे वा नासिकामागते रागद्वेषौ निराकर्तव्यौ ।३। **'जिब्भिंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा, जिब्भिंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा'** जिह्वेन्द्रियविषयस्य भोजनरसस्य प्रचारनिषेधः, जिह्वायामागतेऽपि मनोज्ञामनोज्ञरसे रागद्वेषयोर्निग्रहः ।४। **'फासिं-**

अथवा प्रवृत्त होने पर उसके विषय मे राग और द्वेष नहीं करना, यह द्वितीय प्रकार है २। **(घाणिंदिय-विषय-प्पयार-निरोहो वा, घाणिंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोस-निग्गहो वा)** घ्राण-इन्द्रिय को अपने विषय मे प्रवृत्त होने से रोकना, तथा प्रवृत्त होने पर उस विषयमे राग द्वेष नहीं करना, यह तृतीय प्रकार है ३। **(जिब्भिंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा जिब्भिंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा)** जिह्वा-इन्द्रिय को अपने विषयमे प्रवृत्त होने से रोकना, एवं उस विषय मे उसके प्रवृत्त होने पर प्राप्त विषयमें राग-द्वेषका निग्रह करना, यह चौथा प्रकार है ४। **(फासिंदिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा, फासिंदिय-विसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा)** इसी प्रकार स्पर्शन, इन्द्रिय

रागदोसनिग्गहो वा) ચક્ષુ ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત પદાર્થોમા તેની પ્રવૃત્તિ રોકવી અથવા પ્રવૃત્તિ થઈ જતા તે બાબત રાગ અને દ્વેષ ન કરવો એ બીજો પ્રકાર છે (घाणिंदिय विसय-प्पयार निरोहो वा घाणिंदिय विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा) ઘ્રાણ-ઇન્દ્રિયના વિષયમા તેની પ્રવૃત્તિ રોકવી, અથવા પ્રવૃત્તિ થઇ જતા તે બાબતમા રાગ-દ્વેષ ન કરવો એ ત્રીજો પ્રકાર છે (जिब्भिंदिय विसय-प्पयार-निरोहो वा जिब्भिंदिय विसय पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा) જીભ ઇન્દ્રિયના વિષયમા-પ્રવૃત્તિ રોકવી તેમજ તેના વિષયમા તે પ્રવૃત્ત થઇ જાય તો પછી પ્રાપ્ત બાબતમા રાગ દ્વેષ થતા રોકવો એ ચોથો પ્રકાર છે (फासिंदिय-विसय

निरोहो वा फासिंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा ५, से तं इंदियपडिसंलीणया। से किं तं कसायपडिसंलीणया? कसायपडिसंलीणया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—१ कोहस्सुदयनिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा कोहस्स विफलीकरणं। २ माण-

दिय-विसय-प्पयार-निरोहो वा, फासिंदिय-विसय-पत्तेसु अत्थेसु रागदोस-निग्गहो वा' स्पर्शेन्द्रियविषयप्रचारनिरोधो वा स्पर्शेन्द्रियविषयप्राप्तेष्वर्थेषु रागद्वेषनिग्रहो वा-स्पर्शेन्द्रिय=त्वक्, तस्य विषय स्पर्श=शीतोष्णादिक, तत्र प्रवृत्ते प्रतिषेध, प्राप्तेष्वपि शुभाशुभस्पर्शेषु रागद्वेषयोर्निषेध। 'से त इंदियपडिसलीणया' सैषा इन्द्रियप्रतिसलीनता। 'से किं त कसायपडिसलीणया' अथ का सा कषायप्रतिसलीनता?, 'कसाय-पडिसंलीणया' कषायप्रतिसलीनता 'चउव्विहा पण्णत्ता' चतुर्विधा प्रज्ञप्ता, 'त जहा' तद्यथा—'कोहस्सुदयनिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा कोहस्स विफलीकरणं' क्रोधस्योदय-निरोधो वा, उदयप्राप्तस्य वा क्रोधस्य विफलीकरणम्—प्रथमतस्तु क्रोधस्य उदय एव निषे-

को भी अपने विषय म प्रवृत्त होने से रोकना एव उस विषय मे उसके प्रवृत्त होने पर उसमे राग द्वेष होने का वर्जन करना, यह पाचवाँ प्रकार है। इन पाचों प्रकारों का भाव यही है कि इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना, तथा प्राप्त उनके अपने २ मनोज्ञ एव अमनोज्ञ विषयों के ऊपर राग एव द्वेषकी परिणति से विरक्त रहना। (से त इंदियपडि-सलीणया) यह सब इन्द्रियप्रतिसलीनता है। (से किं त कसायपडिसलीणया) कषायप्रतिसलीनता क्या है? (कसायपडिसंलीणया चउव्विहा पण्णत्ता) कषायप्रतिसलीनता चार प्रकार की है। (त जहा) वह इस प्रकार से है—(१—कोहस्सुदयनिरोहो वा, उदय-

प्पयार-निरोहो वा फासिंदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा) એ પ્રકારે સ્પર્શન-ઇંદ્રિયના વિષયમા તેની પ્રવૃત્તિ રોકવી તેમજ તે વિષયમા તેની પ્રવૃત્તિ થઇ જાય તો તે માટે રાગ દ્વેષ ન કરવો એ પાચમો પ્રકાર છે આ પાચેય પ્રકારોનો ભાવ એ જ છે કે ઇંદ્રિઓ ઉપર વિજય પ્રાપ્ત કરવો, તથા તે પ્રાપ્ત થતા પોતપોતાના મનોજ્ઞ તેમજ અમનોજ્ઞ વિષયો ઉપર રાગ કે દ્વેષની પરિણતિથી વિરક્ત રહેવુ (से त इंदियपडिसलीणया) આ બધુ ઇંદ્રિયપ્રતિસલીનતા છે (से कि त कसायपडिसलीणया) પ્રશ્ન—કષાયપ્રતિસલીનતા શુ છે? ઉત્તર—(कषायपडिसलीणया चउव्विहा पण्णत्ता) કષાયપ્રતિસલીનતા ચાર પ્રકારની છે (त जहा) તે આ પ્રકારે છે—(कोहस्सुदयनिरोहो वा उदयपत्तस्स वा

स्सुदयनिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा माणस्स विफल
३ मायाउदयणिरोहो वा, उदयपत्ताए वा मायाए ।
करणं । ४ लोहस्सुदयणिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा लो.

धनीय, यथा क्रोधो नोदयेत तथा यतितव्यम्, अथापि यदि क्रोध उदय प्राप्नुया. तदा तस्य निष्फलीकरणम्=व्यर्थीकरणम् ।१। '**माणस्सुदयनिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा माणस्स विफलीकरण**'—मानस्योदयनिरोधो वा उदयप्राप्तस्य वा मानस्य निष्फलीकरणम्—मानस्य—अभिमानस्योदय एव निषेधितव्य, माने उदय प्राप्तेऽपि निष्फलीकरणम्=सतोऽपि असत इव करणम् ।२। '**माया-उदय-निरोहो वा, उदयपत्ताए वा मायाए विफलीकरण**' मायाया उदयनिरोधो वा, उदयप्राप्ताया वा मायाया निष्फलीकरणम्—उदयमानाया एव मायाया =परवञ्चनारूपाया निषेध कर्तव्य, कथञ्चिदुदिताया वा मायाया = कपटक्रियाया विफलीकरणम् ।३। '**लोहस्सुदयणिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा लोहस्स**

पत्तस्स वा कोहस्स विफलीकरण, २—माणस्सुदयनिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा माणस्स विफलीकरण, ३ मायाउदयनिरोहो वा, उदयपत्ताए वा मायाए विफलीकरण, ४ लोहस्सुदयणिरोहो वा उदयपत्तस्स वा लोहस्स विफलीकरण) प्रथम तो क्रोध के उदय का ही निरोध करना, यह सर्वोत्तम पक्ष है, उदयनिरोध होने से क्रोध का मूल विनष्ट हो जाता है । यदि क्रोध उदित हो जाय तो उसे विफल कर देना चाहिये १ । प्रथम तो ऐसा ही यत्न करना चाहिये कि जिससे मानकषाय का उदय ही न हो, यदि मानकषाय उदित हो जाय तो उसे निष्फल कर देना चाहिये २ । उत्तम बात यही है कि मायाकषाय आत्मा में उदित न हो, यदि वह उदित हो जाती है तो उसको विफल बना देना

कोहस्स विफलीकरण, माणुस्सुदयनिरोहो वा उदयपत्तस्स वा माणस्स विफलीकरण, माया-उदयनिरोहो वा उदयपत्ताए वा मायाए विफलीकरण, लोहस्सुदयणिरोहो वा उदयपत्तस्स वा लोहस्स विफलीकरण) પ્રથમ તો ક્રોધનો ઉદય થતા જ નિરોધ કરવો એ સર્વોત્તમ પક્ષ છે ઉદયનિરોધ થવાથી ક્રોધનુ મૂળ જ નાશ પામે છે જો ક્રોધનો ઉદય થઈ જાય તો તેને વિફલ કરી દેવો જોઇએ ૧ પહેલા તો એવો જ યત્ન કરવો જોઇએ કે જેથી માનકષાયનો ઉદય જ ન થાય જો માનકષાયનો ઉદય થઈ જાય તો તેને વિફલ કરી દેવો જોઇએ ૨ ઉત્તમ વાત એ જ છે કે માયાકપાય પણ આત્મામા ઉદય ન થઈ શકે એવી જાતની પ્રવૃત્તિ કરવી જોઇએ જો તેનો ઉદય થઈ ચુકયો હોય તો તેને વિફલ કરી દેવુ જોઇએ ૩ એ જ પ્રકારે લોભ પણ આત્મામા ઉદિત ન થાય

त्रिफलीकरणं, से तं कसायपडिसंलीणया। से किं तं जोगपडिसंलीणया? जोगपडिसंलीणया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–१ मणजोगपडिसंलीणया, २ वयजोगपडिसंलीणया, ३ कायजोगपडिसंली-

त्रिफलीकरण'–लोभस्योदयनिरोधो वा, उदयप्राप्तस्य वा लोभस्य त्रिफलीकरणम्–परस्वग्रहणलालसा लोभस्तस्योदय एव निराकरणीय, कथञ्चित्क्वापि वस्तुनि लोभे सत्यपि स लोभ उदितोऽपि निषेधनीय ।४। 'से त कसायपडिसलीणया' सैषा कषायप्रतिसलीनता ।४। 'से किं त जोगपडिसलीणया' अथ का सा योगप्रतिसलीनता? 'जोगपडिसलीणया' योगप्रतिसलीनता–'तिविहा पण्णत्ता' त्रिविधा प्रज्ञप्ता 'त जहा' तद्यथा 'मणजोगपडिसलीणया' मनोयोगप्रतिसलीनता–योगो=बन्ध, कर्मणा सह मनसो योगो–मनोयोग, तस्य प्रतिसलीनता–निरोधशीलता १। 'वयजोगपडिसलीणया'–वाग्योगप्रतिसलीनता २। 'कायजोगपडिसलीणया' काययोगप्रतिसलीनता ३। 'से किं त

चाहिये ३। इसी प्रकार लोभ भी आत्मा में उदित न हो सके, इस प्रकार प्रवृत्ति करनी चाहिये, यदि वह उदित हो चुका हो तो उसे विफल कर देना चाहिये ४। तात्पर्य यह है कि चारों कषायों को जैसे भी बने उस प्रकार से जीतना। (से त कसायपडिसलीणया) यह कषायप्रतिसलीनता है। (से किं तं जोगपडिसलीणया) योगप्रतिसलीनता क्या है? (जोगपडिसलीणया तिविहा पण्णत्ता) योगप्रतिसलीनता तीन प्रकार की कही गई है, (तजहा) वह इस तरह से, (मणजोगपडिसलीणया वयजोगपडिसलीणया कायजोगपडिसलीणया) कर्मों के साथ मनका बधन होना सो मनोयोग है, उसका गोपन करना मनोयोगप्रतिसलीनता है। वचनयोगप्रतिसलीनता एव काययोगप्रतिसलीनता भी वचनयोग को गोपना एव काययोग को गोपना है। इसी विषय को आगे के सूत्रांश से सूत्र-

આ માટે પ્રયત્ન કરવો જોઈએ કદાચ તે ઉદિત થઈ ચુકયો હોય તો તેને નિષ્ફળ કરી દેવુ જોઇએ ૪

તાત્પર્ય એ છે કે ચારેય કષાયોને જેમ બને તેવા પ્રકારે જીતવા (से त कसाय डिसलीणया) આ કષાયપ્રતિસલીનતા છે (से किं त जोगपडिसलीणया) પ્રશ્ન–યોગ પ્રતિસલીનતા શુ છે? ઉત્તર–(जोगपडिसलीणया तिविहा पण्णत्ता) યોગપ્રતિસલીનતા ત્રણ પ્રકારની કહેવાય છે, (त जहा) તે આ પ્રમાણે છે–(मणजोगपडिसंलीणया वयजोगपडिसलीणया कायजोगपडिसलीणया) કર્મોની સાથે મનનુ બધન થાય તે મનોયોગ છે તેનુ ગોપન કરવુ તે મનોયોગપ્રતિસલીનતા છે વચનયોગપ્રતિસલીનતા તેમજ કાયયોગપ્રતિસલીનતા પણ વચનયોગને ગોપવુ તેમજ કાય-

स्सुदयनिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा माणस्स विफलीकरणं। ३ मायाउदयणिरोहो वा, उदयपत्ताए वा मायाए विफली-करणं। ४ लोहस्सुदयणिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा लोहस्स

धनीय, यथा क्रोधो नोदयेत तथा यतितव्यम्, अथापि यदि क्रोध उदय प्राप्नुयात् तदा तस्य विफलीकरणम्=व्यर्थीकरणम् ।१। '**माणस्सुदयनिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा माणस्स विफलीकरण**'—मानस्योदयनिरोधो वा उदयप्राप्तस्य वा मानस्य विफलीकरणम्—मानस्य—अभिमानस्योदय एव निषेधितव्य, माने उदय प्राप्तेऽपि विफलीकरणम्=सतोऽपि असत इव करणम् ।२। '**माया—उदय—निरोहो वा, उदयपत्ताए वा मायाए विफलीकरण**' मायाया उदयनिरोधो वा, उदयप्राप्ताया वा मायाया विफलीकरणम्—उदयमानाया एव मायाया =परवञ्चनारूपाया निषेध कर्तव्य, कथञ्चिदुदिताया वा मायाया = कपटक्रियाया विफलीकरणम् ।३। '**लोहस्सुदयणिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा लोहस्स**

पत्तस्स वा कोहस्स विफलीकरण, २—माणस्सुदयनिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा माणस्स विफलीकरण, ३ मायाउदयनिरोहो वा, उदयपत्ताए वा मायाए विफली-करण, ४ लोहस्सुदयणिरोहो वा उदयपत्तस्स वा लोहस्स विफलीकरण) प्रथम तो क्रोध के उदय का ही निरोध करना, यह सर्वोत्तम पक्ष है, उदयनिरोध होने से क्रोध का मूल विनष्ट हो जाता है । यदि क्रोध उदित हो जाय तो उसे निष्फल कर देना चाहिये १ । प्रथम तो ऐसा ही यत्न करना चाहिये कि जिससे मानकषाय का उदय ही न हो, यदि मानकषाय उदित हो जाय तो उसे निष्फल कर देना चाहिये २ । उत्तम बात यही है कि मायाकषाय आत्मा में उदित न हो, यदि वह उदित हो जाती है तो उसको विफल बना देना

कोहस्स विफलीकरण, माणुस्सुदयनिरोहो वा उदयपत्तस्स वा माणस्स विफलीकरण, माया-उदयनिरोहो वा उदयपत्ताए वा मायाए विफलीकरण, लोहस्सुदयणिरोहो वा उदयपत्तस्स वा लोहस्स विफलीकरण) પ્રથમ તો ક્રોધનો ઉદય થતા જ નિરોધ કરવો એ સર્વોત્તમ પક્ષ છે ઉદયનિરોધ થવાથી ક્રોધનુ મૂળ જ નાશ પામે છે જો ક્રોધનો ઉદય થઈ જાય તો તેને વિફલ કરી દેવો જોઇએ ૧ પહેલા તો એવો જ યત્ન કરવો જોઇએ કે જેથી માનકષાયનો ઉદય જ ન થાય જો માનકષાયનો ઉદય થઈ જાય તો તેને વિફલ કરી દેવો જોઇએ ૨ ઉત્તમ વાત એ જ છે કે માયાકષાય પણ આત્મામા ઉદય ન થઈ શકે એવી જાતની પ્રવૃત્તિ કરવી જોઇએ જો તેનો ઉદય થઈ ચુકયો હોય તો તેને વિફલ કરી દેવુ જોઇએ ૩ એ જ પ્રકારે લોભ પણ આત્મામા ઉદિત ન થાય

कायजोगपडिसंलीणया—जं णं सुसमाहियपाणिपाए कुम्मो इव गुत्तिदिए सव्वगायपडिसंलीणे चिट्ठइ, से तं कायजोगपडिसंलीणया। से किं तं विवित्त-सयणा-सण-सेवणया? विवित्त-सयणा-सण-सेवणया--जं णं आरामेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु सहासु पवासु पणि-

काययोगप्रतिसंलीनतामाह—'से किं तं कायजोगपडिसंलीणया?' अथ का सा काययोगप्रतिसंलीनता? 'कायजोगपडिसंलीणया' काययोगप्रतिसंलीनता नाम—'जं णं सुसमाहियपाणिपाए कुम्मो इव गुत्तिदिए सव्वगायपडिसंलीणे चिट्ठइ' यत् खलु सुसमाहितपाणिपादः कूर्म इव गुप्तेन्द्रियः सर्वगात्रप्रतिसंलीनस्तिष्ठति। यत् खलु=निश्चयेन सुसमाहितपाणिपादः=सुसंयतहस्तचरणः, अत एव कच्छपवद् गुप्तेन्द्रियः=सुरक्षितसर्वेन्द्रियः, सर्वगात्रप्रतिसंलीनः—सर्वैः गात्रैः=अवयवैः प्रतिसंलीनः—निवारितवृत्तिस्तिष्ठति—कायिकसावद्याऽनुष्ठानवर्जितो भवति। 'से तं कायजोगपडिसंलीणया' सैषा काययोगप्रतिसंलीनता। 'से किं तं विवित्त-सयणा-सण-सेवणया' अथ का सा विविक्तशयनाऽऽसनसेवनता? विविक्तानि=दोषरहितानि शयनासनानि, तेषां सेवनता—सेवनम्, सा कीदृशी? इति प्रश्नः, उत्तरमाह—'विवित्त-सयणा-सण-सेवणया--जं णं आरामेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु सहासु पवासु पणियगिहेसु पणियसालासु इत्थी-पसु-पंडग-संसत्त-विरहियासु वसहीसु फासुएसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं उवसंपज्जित्ताणं

पडिसंलीणया—जं णं सुसमाहियपाणिपाए कुम्मो इव गुत्तिदिए सव्वगायपडिसंलीणे चिट्ठइ, से तं कायजोगपडिसंलीणया) हाथ पैरों को तथा इन्द्रियों को कच्छप के समान अच्छी तरह विषयों से गोप कर रखना काययोगप्रतिसंलीनता है। (से किं तं विवित्त-सयणा-सण-सेवणया) विविक्तशयनासन--दोषरहित शयन तथा आसन की सेवनता क्या है? (विवित्त-सयणा-सण-सेवणया--जं णं आरामेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु, सहासु, पवासु, पणियगिहेसु, पणियसालासु, इत्थीपसुपंडगसंसत्तविरहियासु

કાયયોગપ્રતિસંલીનતા શેનું નામ છે?-(कायजोगपडिसंलीणया--जं णं सुसमाहियपाणिपाए कुम्मो इव गुत्तिदिए सव्वगायपडिसंलीणे चिट्ठइ, से तं कायजोगपडिसंलीणया) હાથ,પગ,તથા ઇંદ્રિયોને કાચબાની પેઠે સારી રીતે વિષયોથી ગોપવી રાખવા તે કાયયોગપ્રતિસંલીનતા છે (से किं तं विवित्त-सयणा सण सेवणया) વિવિક્તશયનાસન-દોષરહિત શયન તેમજ આસનનું સેવન શું છે? (विवित्त-सयणा-सण सेवणया-जं णं आरामेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु सहासु पवासु पणियगिहेसु पणियसालासु,

णया। से किं तं मणजोगपडिसंलीणया? मणजोगपडिसंलीणया–१ अकुसलमणनिरोहो वा, २ कुसलमणउदीरणं वा। से तं मण-जोग-पडिसंलीणया। से किं तं वयजोगपडिसंलीणया? वयजोगपडिसंलीणया–१ अकुसलवयणिरोहो वा, २ कुसलवयउदीरणं वा। से तं वयजोगपडिसंलीणया। से किं तं कायजोगपडिसंलीणया?

मणजोगपडिसलीणया ' अथ का सा मनोयोगप्रतिसलीनता ? ' मणजोगपडिसलीणया ' मनोयोगप्रतिसलीनता ' अकुसल–मण–णिरोहो वा ' अकुशलमनोनिरोधो वा, ' कुसल–मण–उदीरण वा ' कुशलमनउदीरण वा, शुभमनस उदीरण=प्रवर्तनम्, ' से त मण–जोग–पडिसलीणया ' सैषा मनोयोगप्रतिसलीनता,। ' से किं त वयजोगपडिसलीणया ' अथ का सा वाग्योगप्रतिसलीनता ? ' वयजोगपडिसलीणया ' वाग्योगप्रतिसलीनता-'अकुसलवयनिरोहो वा' अकुशलवाड्निरोधो वा ?, 'कुसलवयउदीरण वा' कुशलवागुदीरण वा २। ' से त वयजोगपडिसलीणया ' सैषा वाग्योगप्रतिसलीनता।

कार प्रकट करते है– (से किं त मणजोगपडिसलीणया) वह मनोयोगप्रतिसलीनता क्या है ? (मणजोगपडिसलीणया–अकुसलमणनिरोहो, कुसलमणउदीरण वा, से त मणजोगपडिसलीणया) अकुशल–अशुभ मनका निरोध होना, अथवा शुभमन का प्रवर्तन होना सो यह मनोयोगप्रतिसलीनता है। (से किं त वयजोगपडिसलीणया) वचनयोगप्रतिसलीनता क्या है ? (वयजोगपडिसलीणया अकुसलवयनिरोहो वा कुसलवयउदीरण वा, से त वयजोगपडिसलीणया) अकुशलवाणी का निरोध करना अथवा कुशलवाणी का उदीरण करना, यह वचनयोगप्रतिसलीनता है। (से किं त कायजोगपडिसलीणया) काययोगप्रतिसलीनता किसका नाम है ? (कायजोग-

યોગને ગોપવુ એ છે આ વિષયને આગળના સૂત્રના અંશમા સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે—(से किं त मणजोगपडिसलीणया) તે મનોયોગપ્રતિસલીનતા શુ છે ? (मणजोगपडिसलीणया अकुसलमणनिरोहो कुसलमणउदीरण वा, से त मणजोगपडिसली णया)–અકુશલ–અશુભ મનનો નિરોધ થવો,અથવા શુભ મનમા પ્રવર્તન થવુ તે મનોયોગપ્રતિસલીનતા છે (से किं त वयजोगपडिसलीणया)–વચનયોગપ્રતિસલીનતા શુ છે ? (वयजोगपडिसलीणया अकुसलवयनिरोहो वा कुसलवयउदीरण वा,से त वयजोगपडिसलीणया)–અકુશલ વાણીનો નિરોધ કરવો, અથવા કુશલ વાણીનુ ઉદીરણ કરવુ તે વચનયોગપ્રતિસલીનતા છે (से किं त कायजोगपडिसलीणया)

मूलम्—से किं तं अब्भितरए तवे ?, अब्भितरए तवे छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—१ पायच्छित्ते, २ विणए, ३ वेयावच्चं ४ सज्झाओ, ५ झाणं, ६ विउसग्गो।

णाय=निरवद्य पीठफलकशय्यासंस्तारकम् उपसम्पद्य विहरति। 'से तं विवित्त-सयणा-सण-सेवणया' सैषा विविक्त-शयना-सन-सेवनता। 'से तं पडिसलीणया' सैषा प्रतिसंलीनता, 'से तं बाहिरए तवे' तदिदं बाह्यं तपः ॥ सू० ३० ॥

टीका—अथाभ्यन्तरं तपः प्रोच्यते-'से किं तं अब्भितरए तवे?' अथ किं तद् आभ्यन्तरं तपः ?, उत्तरमाह-'अब्भितरए तवे छव्विहे पण्णत्ते' आभ्यन्तरं तपः षड्विधं प्रज्ञप्तम्, 'तं जहा' तद्यथा-१ 'पायच्छित्त' प्रायश्चित्तम्, २-'विणए' विनयः, ३ 'वेयावच्च' वैयावृत्यम्, ४-'सज्झाओ' स्वाध्यायः, ५-'झाण' ध्यानम्, ६-'विउसग्गो' व्युत्सर्ग इति। तत्र प्रायश्चित्तमाह-'से किं तं पायच्छित्ते' अथ किं

शय्या एवं संस्तारक अंगीकार कर विचरता है, (से तं विवित्त-सयणा-सण-सेवणया) यह विविक्तशयनासनसेवनता है। (से तं पडिसलीणया) इस प्रकार यह प्रतिसंलीनता है। (से तं बाहिरए तवे) इस प्रकार यह छह प्रकार के बाह्य तप के भेद-प्रभेद कहे गये हैं ॥ सू० ३० ॥

अब आभ्यन्तर तप का सूत्रकार वर्णन करते हैं-'से किं तं अब्भितरए तवे ?' इत्यादि।

(से किं तं अब्भितरए तवे ?) आभ्यन्तर तप क्या है—कितने प्रकार का है? (अब्भितरए तवे छव्विहे पण्णत्ते) आभ्यन्तर तप छह प्रकार का हैं, (तं जहा) वह इस प्रकार से है, (पायच्छित्त, विणए, वेयावच्च, सज्झाओ, झाण, विउसग्गो) १ प्रायश्चित्त, २ विनय, ३ वैयावृत्य, ४ स्वाध्याय, ५ ध्यान और ६

પીઠ, ફલક, શય્યા તેમજ સંસ્તારક અંગીકાર કરીને વિચરે છે (से तं विवित्त सयणा-सण-सेवणया) તે વિવિક્ત શયનાસનસેવનતા છે (से तं पडिसलीणया) આ પ્રકારે આ પ્રતિસંલીનતા છે (से तं बाहिरए तवे) આ પ્રકારે તે છ પ્રકારના બાહ્યતપના ભેદ-પ્રભેદ કહેલા છે (સૂ. ૩૦)

હવે આભ્યન્તર તપનું સૂત્રકાર વર્ણન કરે છે-'से किं तं अब्भितरए तवे ?' ઇત્યાદિ

(से किं तं अब्भितरए तवे ?) પ્રશ્ન-આભ્યન્તર તપ શું છે ? કેટલા પ્રકારના છે ? (अब्भितरए तवे छव्विहे पण्णत्ते) ઉત્તર-આભ્યન્તર તપ છ પ્રકારના છે (तं जहा) તે આ પ્રકારે છે-(पायच्छित्त विणए वेयावच्च, सज्झाओ झाण विउसग्गो) ૧ પ્રાયશ્ચિત્ત, ૨ વિનય, ૩ વૈયાવૃત્ય, ૪ સ્વાધ્યાય, ૫ ધ્યાન ૬

यगिहेसु पणियसालासु इत्थी-पसु-पंडग-संसत्त-विरहियासु वसहीसु फासुएसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, से तं विवित्तसयणासणसेवणया। से तं पडिसंलीणया। से तं बाहिरए तवे ॥ सू०३० ॥

विहरइ' विविक्तशयनासनसेवनता—यत् खल्वारामेषु उद्यानेषु देवकुलेषु प्रपासु पणितगृहेषु पणितशालासु स्त्री-पशु-पण्डक-संसक्त-विरहितासु वसतिषु प्रासुकैषणीय पीठ-फलक-शय्या-संस्तारकम् उपसम्पद्य विहरति, 'स्त्री-पशु-पण्डक-संसक्त-विरहितासु' इत्यस्य लिङ्गविपरिणामेन आरामादिपदेष्वप्यन्वयः कार्य, ततश्च—यत् खलु=निश्चयेन अनगार, स्त्री-पशु-पण्डक-संसक्त-विरहितेषु=स्त्रियः, पशवः, पण्डकाः=नपुंसकाः, एतैः सर्वैः संसक्तः=संयोगः, तेन विरहितेषु आरामेषु=कृत्रिमवनेषु, उद्यानेषु=कुसुमकाननेषु, देवकुलेषु=यक्षकुलेषु, तथा स्त्र्यादिसंसक्तवर्जितासु सभासु, प्रपासु=पानीयशालासु, पणितगृहेषु=व्यावहारिकजनोचितेषु पण्यगृहेषु, पणितशालासु = बहुग्राहकदायकजनयोग्यासु, स्त्र्यादिसंसर्गरहितासु वसतिषु=सामान्यगृहिगृहेषु, एवंविधानेकस्थानेषु 'फासुएसणिज्ज' प्रासुकैषणीय—प्रगताः असवः=असुमन्तः प्राणिनो यस्मात् तत्प्रासुकम्=अचित्तम्, अत एव एष-

वसहीसु फासुएसणिज्ज पीढफलगसेज्जासंथारगं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) दोषरहित शयन एवं आसन की सेवनता यह इस प्रकार से होती है—जो अनगार स्त्रियों, पशुओं, एवं नपुंसकों से रहित आरामों में—कृत्रिमवनों में, उद्यानों में—कुसुमित काननों में, देवकुलों में—यक्षायतनों में, सभाओं में, प्रपाओं में—पानीयशालाओं में, पणितगृहों मे—व्यावहारिकजनोचित पण्यगृहों में, पणितशालाओं में—अनेक ग्राहक एवं दायक जनों के योग्य ऐसे स्थानों में, वसतियों में—सामान्य गृहस्थजनों के घरों में, अचित्त एवं निरवद्य पीठ, फलक,

इत्थीपसुपंडगसंसत्तविरहियासु वसहीसु फासुएसणिज्जं पीढफलगसेज्जासंथारगं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, से तं पडिसंलीणया) દોષરહિત આસન તેમજ શયનનું સેવન કરવું તે આ પ્રકારે થાય છે કે જે અનગાર સ્ત્રીઓ, પશુઓ, તેમજ પંડકો-નપુંસકોથી રહિત આરામોમાં—એટલે કૃત્રિમવનોમાં, ઉદ્યાનોમાં—ફુલવાડીઓમાં, દેવકુલોમાં—યક્ષાયતનોમાં, સભાઓમાં, પ્રપાઓમાં—પાનીયશાલાઓમાં (પરબના સ્થાનમાં) પણિતગૃહોમાં—વ્યવહારિક-લોકોચિત દુકાનોમાં, પણિતશાલાઓમાં—અનેક ગ્રાહકો તેમજ દાયકો (દેનારા) લોકોને યોગ્ય એવા સ્થાનોમાં એટલે ગોદામોમાં, વસતિઓમાં—સામાન્ય ગૃહસ્થ લોકોના ઘરોમાં, અચિત્ત તેમજ નિરવદ્ય

यदर्हति भिक्षाचर्यादौ गजातमतिचारजात तदालोचनार्हं, तद्विशोधकमालोचनालक्षण प्रायश्चित्तरूप कार्यमपि अतिचाररूपे कारणे कार्योपचारादालोचनार्हमित्युच्यते। 'पडिक्कमणारिहे' प्रतिक्रमणार्हम्–प्रतिक्रमण=प्रतिनिवर्तन–शुभयोगादशुभयोगमाक्रान्तस्यात्मन पुन शुभयोगे प्रत्यानयन, मिथ्यादुष्कृतप्रदानरूपमित्यर्थ । अय भाव –गुप्तित्रये समितिपञ्चके च सहसाकारतोऽनाभोगतो वा कथमपि प्रमादे सति मिथ्यादुष्कृतप्रदानलक्षण प्रतिक्रमणम् । तत्र सहसाकारतोऽनाभोगतो वा यदि मनसा दुश्चिन्तित, तथा वचसा दुर्भाषित, कायेन दुश्चेष्टित, तथा–ईर्यायां यदि कथा कथयन् व्रजेत, भाषायामपि यदि गृहस्थभाषया, प्रहरात्र्यनन्तर-

---

प्रायश्चित्त है। भिक्षाचर्या आदि में लगे हुए अतिचारस्वरूप पापों की गुरु के समीप विशुद्धि के लिये आलोचना की जाती है, अत ये पाप आलोचना के योग्य हैं। आलोचना के योग्य जो प्रायश्चित्त को कहा है वह कारण म कार्य के उपचार से जानना चाहिये। (**पडिक्कमणारिहे**) प्रतिक्रमण शब्द का अर्थ पीछे हटना है, शुभ योग से अशुभ योग की तरफ झुके हुए आत्मा को पुन शुभ योग में लाने के लिये मिथ्यादुष्कृत देना सो प्रतिक्रमण के योग्य प्रायश्चित्त है। इसका भाव यह है–तीन गुप्तियों मे, एव पाच समितियों में अकस्मात्–सहसाकार से, अथवा अनाभोग–अनुपयोग से कथमपि प्रमाद के हो जाने पर मिथ्यादुष्कृत प्रदान करना सो प्रतिक्रमण है। इसमें यदि सहसाकार से अथवा अनाभोग से मन द्वारा खोटा चिन्तवन हो गया हो, वचन से दुर्भाषण हो गया हो, एव काय से–दुश्चेष्टित हो गया हो, तथा ईर्यापथ में प्रवृत्ति करते (मार्गमें चलते) समय यदि कथा कही गयी हो, भाषासमिति में यदि गृहस्थ की भाषा के अनुसार, अथवा प्रहररात्रि के

આદિમા લાગેલા અતિચારસ્વરૂપ પાપોની ગુરુની પાસે વિશુદ્ધિને માટે આલોચના કરાય છે આથી તે પાપ આલોચનાયોગ્ય છે આલોચનાને યોગ્ય જે પ્રાયશ્ચિત્ત ને કહ્યુ છે તે કારણમા કાર્યના ઉપચારથી જાણવુ જોઈએ ? (पडिक्कमणारिहे) પ્રતિક્રમણ શબ્દનો અર્થ 'પાછુ હટવુ' છે શુભયોગથી હટી જઈને અશુભ યોગની તરફ વળતા ચિત્તને ફરીને શુભયોગમા લાવવા માટે મિથ્યાદુષ્કૃત દેવુ તે પ્રતિક્રમણને યોગ્ય આયશ્ચિત્ત છે તેનો આ ભાવ છે–ત્રણ ગુપ્તિઓમા, તેમજ પાચ સમિતિઓમા અકસ્માત્–અચાનક, અથવા અનાભોગ–અનુપયોગથી કોઈ પણ પ્રમાદ થઈ જતા મિથ્યાદુષ્કૃત પ્રદાન કરવુ તે પ્રતિક્રમણ છે આમા જો અચાનક અથવા અનાભોગે મનથી ખોટુ ચિતવન થઈ ગયુ હોય, વચનથી ખરાબ ભાષણ થયુ હોય, તેમજ કાયાથી ખરાબ ચેષ્ટા થઈ હોય, તથા ઈર્યાપથમા પ્રવૃત્તિ કરતા (માર્ગે ચાલતા) જો કથા કહેવાઇ ગઇ હોય, ભાષાસમિતિમા જો ગૃહસ્થની ભાષા

से किं तं पायच्छित्ते? पायच्छित्ते-दसविहे पण्णत्ते; तं जहा-आलोयणारिहे १, पडिक्कमणारिहे २, तदुभयारिहे ३, विवे-

तत्प्रायश्चित्तम् '-प्रायश्चित्त किंस्वरूप कतिविधंचेति पृच्छति, उत्तरमाह-**'पायच्छित्ते दसविहे पण्णत्ते'** प्रायश्चित्त दशविध प्रज्ञप्तम्-प्राय =पाप, तस्मात् चित्त=जीव शोधयति=कर्ममलिन विमलीकरोतीति प्रायश्चित्तमिति । यद्वा-प्रायो=बाहुल्येन चित्तम्=अन्तःकरण स्वेन स्वरूपेण अस्मिन् सति भवति-इति प्रायश्चित्तम्-अनुष्ठानविशेष । सवरादेरपि तथैवात्मन शुद्धिकरणात् प्रायोग्रहणमिति । अस्य दशविधत्व दर्शयति-**'त जहा'** तद्यथा-**'आलोयणारिहे'** आलोचनाऽर्हम्-आलोचना गुरुसमीपे पापस्य निवेदन, तावन्मात्रेणैव यस्य पापस्य शुद्धिस्तदालोचनार्हम् । आलोचना=गुरुनिवेदना विशुद्धये

व्युत्सर्ग । **(से किं त पायच्छित्ते)** प्रायश्चित्त कितने प्रकार का है ?-**(पायच्छित्ते दसविहे पण्णत्ते)**- प्रायश्चित्त १० प्रकारका है । **(त जहा)** वे प्रकार ये हैं-**(आलोयणारिहे[1] पडिक्कमणारिहे[2] तदुभयारिहे[3] विवेगारिहे[4] विउसग्गारिहे[5] तवारिहे[6] छेयारिहे[7] मूलारिहे[8] अणवट्ठप्पारिहे[9] पारचियारिहे[10])** कर्मों से मलिन चित्त-जीवका सशोधन जिससे होता है, अथवा जिसके होने पर प्राय करके अन्त करण अपने स्वरूप मे स्थित होता है, वह प्रायश्चित्त है । सवरादिक से भी आत्मा की शुद्धि होती है इसलिये उनसे इसे पृथक् करनेके लिये प्रायश्चित्त मे 'प्राय' शब्दका प्रयोग हुआ है । इस में प्रथम प्रायश्चित्त आलोचनार्ह होता है । गुरु के समीप पापों का निवेदन करना इसका नाम आलोचना है । इस आलोचनामात्र से जिस पाप की शुद्धि हो जाती है वह आलोचनार्ह

व्युत्सर्ग (से किं त पायच्छित्ते) प्रायश्चित्त કેટલા પ્રકારના છે ? (पायच्छित्ते दसविहे पण्णत्ते) -પ્રાયશ્ચિત્ત ૧૦ પ્રકારના છે (त जहा) તે આ પ્રકારે છે- (आलोयणारिहे[1] पडिक्कमणारिहे[2] तदुभयारिहे[3] विवेगारिहे[4] विउसग्गारिहे[5] तवारिहे[6] छेयारिहे[7] मूलारिहे[8] अणवट्ठप्पारिहे[9] पारचियारिहे[10], से त पायच्छित्ते) કર્મોથી મલિન થયેલા ચિત્તનુ સશોધન જેનાથી થાય છે અથવા જે થવાથી પ્રાય અત'કરણ પોતાના સ્વરૂપમા આવી જાય છે તે પ્રાયશ્ચિત્ત છે સવરાદિકથી પણ આત્માની શુદ્ધિ થાય છે તેથી તેનાથી આને જુદુ કરવા માટે પ્રાયશ્ચિત્તમા પ્રાયઃ શબ્દ લીધો છે આમા પ્રથમ પ્રાયશ્ચિત્ત આલોચનાર્હ થાય છે ગુરૂની પાસે પાપોનુ નિવેદન કરવુ તેનુ નામ આલોચના છે આ આલોચનામાત્રથી જે પાપની શુદ્ધિ થઈ જાય છે તે આલોચનાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત છે ભિક્ષાચર્યા

गारिहे ४, विउस्सग्गारिहे ५, तवारिहे ६, छेदारिहे ७, मूलारिहे ८, अणवट्टप्पारिहे ९, पारंचियारिहे १०। से तं पायच्छित्ते ।

योग्यम् ।३। 'विवेगारिहे' विवेकार्ऽर्हम्-विवेक -अनेषणीयभक्तादिपरित्याग, तदर्हम् ।४। 'विउस्सग्गारिहे' व्युत्सर्गार्ऽर्हम्-व्युत्सर्ग =कायोत्सर्ग, तद्योग्यम् ।५। 'तवारिहे' तपोऽर्हम्-तप =नमस्कारसहितकालादारभ्य षण्मासपर्यन्तमनशनम्, तत्र कस्यापि तपसो योग्य मपोऽर्हम-अतीचार, तद्विशोधकत्वात् प्रायश्चित्तमपि तपोऽर्हमुच्यते-इति ।६। 'छेदारिहे' छेदार्हम-छेद -दिनपञ्चकादारभ्य षण्मासपर्यन्त साधुपर्यायस्य न्यूनताकरण, तदर्हम ।७। 'मूलारिहे' मूलार्ऽर्हम्-मूल-पुनर्व्रतस्योपस्थापनम्-पुनर्दीक्षारोपणम्, तदर्हम् ।८। 'अणवट्टप्पारिहे' अनवस्थाप्यार्ऽर्हम्-यस्मिन् आसेविते कंचन काल व्रतेषु अनवस्थाप्य कृत्वा पश्चात्तपश्चीर्णतया तद्दोषोपरतो व्रतेषु स्थाप्यते तदनवस्थाप्यार्हम् ।

योग्य होता है वह तदुभयार्ह प्रायश्चित्त है ३। (विवेगारिहे) अनेषणीय भक्तादिक का परित्याग करना विवेक है, इसके योग्य जो प्रायश्चित्त है वह विवेकार्ह प्रायश्चित्त है ४। (विउसग्गारिहे) व्युत्सर्ग शब्द का अर्थ कायोत्सर्ग है। इसके योग्य प्रायश्चित्त का नाम व्युत्सर्गार्ह प्रायश्चित्त है ५। (तवारिहे) जो प्रायश्चित्त तपस्या के योग्य होता है वह तपोऽर्ह प्रायश्चित्त है। यह प्रायश्चित्त नोकारसी से लेकर छ मास तक होता है ६। (छेदारिहे) साधुपर्याय में पाँच दिनसे लेकर छ मास तक की साधुपर्याय की न्यूनता करना छेदार्ह प्रायश्चित्त है ७। (मूलारिहे) जो प्रायश्चित्त पुन दीक्षा आरोपण के योग्य होता है वह मूलार्ह प्रायश्चित्त है ८। (अणवट्टप्पारिहे) जिस दोषके सेवन करने पर संयमीजन कुछ काल तक महाव्रतों के विषय में अनवस्थापित अलग-कर दिये जाते हैं,

પ્રતિક્રમણ, એ બન્નેને યોગ્ય હોય છે તે તદુભયાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત છે ૩ (विवेगारिहे) અનેષણીય ભોજન આદિકનો પરિત્યાગ કરવો તે વિવેક છે તેને યોગ્ય જે પ્રાયશ્ચિત્ત છે તે વિવેકાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત છે ૪. (विउसग्गारिहे) વ્યુત્સર્ગ શબ્દનો અર્થ કાયોત્સર્ગ છે તેને યોગ્ય પ્રાયશ્ચિત્તનુ નામ વ્યુત્સર્ગાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત છે ૫ (तवारिहे) જે પ્રાયશ્ચિત્ત તપસ્યાને યોગ્ય હોય છે તે તપોડર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત છે આ પ્રાયશ્ચિત્ત નોકારસીથી લઈને છ માસ સુધી થાય છે ૬. (छेयारिहे) સાધુપર્યાયમા પાચ દિવસથી લઈને છ માસ સુધીની સાધુપર્યાયની ન્યૂનતા કરવી તે છેદાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત છે ૭ (मूलारिहे) જે પ્રાયશ્ચિત્ત ફરીને દીક્ષા આરોપણને યોગ્ય હોય છે તે મૂલાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત છે ૮ (अणवट्टप्पारिहे) જે દોષનુ સેવન કરવાથી સયમી જન કેટલાક કાળ સુધી મહાવ્રતોના વિષયમા

मुच्चैस्वरेण वा, अन्यथा सावद्यवचनेन भाषेत, तथा—एषणाया=भक्तपानगवेषणवेलाया-मनुपयुक्त सदोषमाहारादिक गृह्णीयात्, तथा सहसाऽनाभोगतो वा भाण्डोपकरणस्या-दान निक्षेप प्रमार्जन प्रतिलेखन च कुर्यात्, तथा—अप्रत्युपेक्षिते स्थण्डिले उच्चारादीना परिष्ठापन सहसाऽनाभोगतो वा कुर्यात् । उपलक्षणमेतत्—तेन यदि चतुर्विधा विकथा, क्रोधादय कषाया, शब्दादिविषयेष्वासक्तिर्वा सहसाऽनाभोगतो वा कृता स्यात्, तदा एतेषु सर्वेषु स्थानेषु मिथ्यादुष्कृतप्रदानलक्षण प्रायश्चित्त, तच्च पूर्ववत् कारणे कार्योप-चारात्प्रतिक्रमणार्हमित्युच्यते ।२। 'तदुभयारिहे' तदुभयाऽर्हम्—आलोचनाप्रतिक्रमणोभय-

---

अनन्तर उच्चस्वर से वचनकी प्रवृत्ति हो गई हो, या सावद्यवचन निकल गया हो, एषणा-समिति में—भक्तपानगवेषण के काल मे अनुपयुक्त होकर यदि सदोष आहार ग्रहण करने में आगया हो, अनाभोग से—अनुपयोग से अथवा सहसाकार से भाण्डोपकरण का आदान एव निक्षेपण, प्रमार्जन या प्रतिलेखन हो गया हो, तथा अप्रत्युपेक्षित स्थडिल में उच्चार आदिका परिष्ठापन सहसाकार से या अनाभोग से कर दिया गया हो, इसी तरह यदि सहसाकार से एव अनाभोग से चार विकथाओं म, चार क्रोधादिक कषायों में, एव शब्दादि पाच इन्द्रियों के विषयों मे आसक्ति हो गई हो तो इन समस्त स्थानो में "मेरे दुष्कृत मिथ्या हों" इस प्रकार मिथ्यादुष्कृतप्रदानस्वरूप यह प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त है । पहिले की तरह यह प्रायश्चित्त भी कारण मे कार्य के उपचार से प्रतिक्रमणार्ह कहा गया है २। (तदुभयारिहे) जो प्रायश्चित्त आलोचना एव प्रतिक्रमण इन दोनों के

અનુસાર અથવા પ્રહરરાત્રિ વીત્યા પછી ઉચા સ્વરથી વચન બોલાઈ ગયુ હોય, અથવા સાવદ્ય વચન નીકળી ગયુ હોય, એષણાસમિતિમા—આહારપાણીના ગવેષણ કાલમા અનુપયુક્ત થઇને જો સદોષ આહાર ગ્રહણ કરવામા આવી ગયો હોય, અનાભોગથી અથવા અચાનક ભાંડોપકરણના આદાન તેમજ નિક્ષે-પણ, પ્રમાર્જન અથવા પ્રતિલેખન થઇ ગયુ હોય, તથા અપ્રત્યુપેક્ષિત સ્થંડિલમા ઉચ્ચાર આદિનુ પરિષ્ઠાપન સહસાકારથી કે અનાભોગથી (અચાનક કે અના ભોગથી) કરાઇ ગયુ હોય, એવી જ રીતે જો સહસાકારથી કે અનાભોગથી ચાર વિકથાઓમા, ચાર ક્રોધાદિક કષાયોમા, તેમજ શબ્દાદિ પાચ ઇદ્રિઓના વિષયોમા આસક્તિ થઇ ગઈ હોય તો એ બધા સ્થાનોમા "મારૂ દુષ્કૃત મિથ્યા થાઓ" એ પ્રકારે મિથ્યાદુષ્કૃતપ્રદાનસ્વરૂપ આ પ્રતિક્રમણ—પ્રાય-શ્ચિત્ત છે પહેલાની પેઠે આ પ્રાયશ્ચિત્ત પણ કારણમા કાર્યના ઉપચારથી પ્રતિક્રમણાર્હ કહેવાય છે ૨ (તદુભયારિહે) જે પ્રાયશ્ચિત્ત આલોચના તેમજ

तदनन्तरं व्रतेषु स्थाप्यते। संहननादिगुणयुक्त एवानवस्थाप्यं क्रियते, अन्यस्य तु मूलमेव दीयते। संहननादिगुणयुक्तोऽपि यदि अनन्यसाध्यकुलगणसङ्घकार्यकारी बहुजनसाध्यकार्यकारी वा भवेत्, तर्हि द्विविधोऽप्यनवस्थाप्यः खलु गुरुमुखात् सङ्घसाक्षितया च स्तोकं स्तोकतरं वा मासद्वयं मासैकमात्रं वा अनवस्थाप्यतपो वहेत्। यद्वा—चतुर्विधसङ्घाधारभूतोऽयं परमभद्रकः स्वयमेव तपश्चर्यादिनाऽनवस्थाप्ययोग्यमतीचारमलं क्षालयिष्यतीति कृत्वा सर्वं मुञ्चेत्=अनवस्थाप्यतपो न कारयेदिति।

और उत्कृष्ट से बारह वर्ष का। इस प्रकार तपस्या करने के बाद वह साधु महाव्रतों में स्थापित किया जाता है। संहननादिगुणयुक्त ही इस प्रायश्चित्त के अधिकारी है। दूसरे को तो मूलार्ह प्रायश्चित्त ही दिया जाता है। संहननादिगुणयुक्त साधु यदि दूसरों से असाध्य ऐसे कुल गण संघ के कार्य करनेवाला हो, अथवा कुल गण संघ का जो कार्य बहुजनसाध्य हो उस कार्य को वह अकेले ही करनेवाला हो तो ऐसे आशातनाऽनवस्थाप्य और प्रतिसेवनाऽनवस्थाप्य साधु के लिये संघकी साक्षी मे गुरुके मुख से स्तोक—दो मास का, अथवा स्तोकतर—एकमास का तप दिया जाता है। तदनन्तर वह महाव्रतों म स्थापित किया जाता है। अथवा यदि कोई साधु चतुर्विध संघ का आधार हो, परमभद्रक हो, वह स्वयमेव तपस्या करके अनवस्थाप्य तप के द्वारा विशोधनीय पापमल का प्रक्षालन कर लेगा, ऐसा विश्वास हो, तो ऐसे साधु को अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त नहीं दिया जाता है।

આ પ્રાયશ્ચિત્ત જઘન્યથી એક વર્ષનુ થાય છે અને ઉત્કૃષ્ટથી બાર વર્ષનુ થાય છે આ પ્રકારે તપસ્યા કર્યા પછી તે સાધુ મહાવ્રતોમા સ્થાપિત કરાય છે સંહનનાદિગુણયુક્ત જ તે પ્રાયશ્ચિત્તના અધિકારી છે બીજાને તો મૂલાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત જ અપાય છે સંહનનાદિગુણયુક્ત સાધુ જો બીજાથી અસાધ્ય (ન બને) એવા કુલ ગણ સંઘના કાર્ય કરવાવાળો હોય અથવા કુલ ગણ સંઘના જે કાર્ય બહુજનસાધ્ય હોય, એવા કાર્યોને તે એકલો જ કરવાવાળો હોય તો એવા આશાતનાનવસ્થાપ્ય અને પ્રતિસેવનાનવસ્થાપ્ય સાધુને માટે સંઘની સાક્ષીમા ગુરૂના મુખથી સ્તોક–બે માસનુ, અથવા સ્તોકતર–એક માસનુ તપ અપાય છે ત્યાર પછી તે મહાવ્રતોમા સ્થાપિત કરાય છે અથવા જો કોઇ સાધુ ચતુર્વિધ સંઘનો આધાર હોય, પરમભદ્રક હોય, તે પોતે જ તપસ્યા કરીને અનવસ્થાપ્ય તપ દ્વારા વિશોધનીય પાપમલ ધોઈ નાખશે એવો વિશ્વાસ હોય તો એવા સાધુને અનવસ્થાપ્ય પ્રાયશ્ચિત્ત અપાતુ નથી.

अथ भाव —अनवस्थाप्यो द्विविधो भवति—आशातनाऽनवस्थाप्य , प्रतिसेवनानवस्थाप्यश्चेति । तत्र तीर्थकर—संघ—श्रुता-ऽऽचार्यो—पाध्याय—गणधर—महर्द्धिकान आशातयन् अनवस्थाप्यार्ह-नामक नवम प्रायश्चित्त प्राप्नोति । स जघन्येन षण्मासान् उत्कर्षेन संवत्सर यावत् तप कुर्वन् आशातनतपोऽनवस्थाप्य कर्तव्य । तावता च तपसा क्षपिताऽऽशातनाजनितकर्मत्वा-दूर्ध्वं महाव्रतेषु स्थाप्यते । प्रतिसेवनानवस्थाप्यस्तु साधर्मिकाऽन्यधार्मिकवस्तुस्तैन्याभ्या हस्त-तालादिभिश्च भवति । स च जघन्यतो वर्षम् उत्कृष्टतो द्वादश वर्षाणि तप कुर्वन् भवति,

---

एव पुन उस दोष के निवारण के लिये तपस्या मे लगाये जाते हैं, इस प्रकार जब तपसे उस दोषकी पूर्णतया शुद्धि हो जाती है तब दोषोपरत वे संयमी महाव्रतों मे स्थापित कर दिये जाते है । इस प्रकार के प्रायश्चित्त का नाम अनवस्थाप्यार्ह है, मतलब इसका यह है—अनवस्थाप्य दो प्रकारका होता है—१ आशातनानवस्थाप्य, २ प्रतिसेवनानवस्थाप्य । जो तीर्थंकर, संघ, श्रुत, आचार्य, उपाध्याय, गणधर एव लब्धिधारियों की आशातना करता है एसा संयमी इस अनवस्थाप्यार्ह नामक नवम प्रायश्चित्त का भागी होता है । इनसे आशा-तनाजन्य दोष की शुद्धि के लिये जघन्य से छहमाह तक, और उत्कृष्ट से एक वर्ष तक तप कराया जाता है । इतने तप से आशातनाजन्य दोष की जब शुद्धि हो जाती है तब बाद मे वह साधु महाव्रतों मे स्थापित कर दिया जाता है । जो स्वधर्मी और अन्यधर्मी की वस्तु चुराता है, अथवा दयारहित बुद्धि से थप्पड आदि मारता है, उसे प्रतिसेवनाऽन-वस्थाप्यार्ह प्रायश्चित्त करना पडता है । यह प्रायश्चित्त जघन्य से एक वर्ष का होता है,

---

અનવસ્થાપિત કરવામા આવે છે, તેમજ પાછા તે દોષના નિવારણ માટે તપ-સ્યામા લગાડવામા આવે છે, એ પ્રકારે જ્યારે તપસેવનથી દોષની સંપૂર્ણ શુદ્ધિ થઈ જાય છે ત્યારે દોષોપરત (દોષમુક્ત) તે સંયમી મહાવ્રતોમા સ્થાપિત કરવામા આવે છે આ પ્રકારના પ્રાયશ્ચિત્તનુ નામ અનવસ્થાપ્યાર્હ છે એની મતલબ એ છે કે—અનવસ્થાપ્ય બે પ્રકારના થાય છે ૧ આશા-તનાનવસ્થાપ્ય અને ૨ પ્રતિસેવનાનવસ્થાપ્ય 'જે તીર્થંકર, સંઘ, શ્રુત, આચાર્ય, ઉપાધ્યાય, ગણધર, તેમજ લબ્ધિધારિઓની આશાતના કરે છે, એવા સંયમી આ અનવસ્થાપ્યાર્હ નામના નવમા પ્રાયશ્ચિત્તના ભાગી થાય છે તેનાથી આશાતનાજન્ય દોષની શુદ્ધિને માટે જઘન્યથી છ મહિના સુધી અને ઉત્કૃષ્ટથી એક વર્ષ સુધી તપ કરાય છે એટલા તપથી આશાતનાજન્ય દોષની જ્યારે શુદ્ધિ થઈ જાય છે ત્યાર બાદ તે સાધુ મહાવ્રતોમા સ્થાપિત કરી દેવાય છે જે સાધર્મીની અને અન્યધર્મીની વસ્તુને ચોરી લે છે, અથવા દયારહિત બુદ્ધિથી લાફો આદિ મારે છે તેને પ્રતિસેવનાનવસ્થાપ્યાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવુ પડે છે

ङ्गिन प्रतिलेखयम्, न चाय भवतां प्रतिलेखयिष्यति । भक्तपानमस्मै न देय, नाप्यस्माद्ग्राह्यम्, अनेन सार्धं नोपवेष्टव्यम्, न चाप्यनेन सहैकमण्डल्या भोक्तव्यम्, अनेन सार्धं किमपि न कार्यमिति ।" अथ नवदीक्षित साधु वन्दते, एन न कोऽपि वन्दते, ग्रीष्मे चतुर्थषष्ठाष्टमानि, शिशिरे षष्ठाष्टमदशमानि, वर्षास्वष्टमदशमद्वादशानि जघन्यमध्यमोत्कृष्टानि, पारणके च निर्लेप, एवरूप सुदुष्कर तपश्चरति । अस्य गच्छेन सह वास एकक्षेत्रे एकोपाश्रये एकस्मिन् पार्श्वे शेषसाधुपरिभोग्यप्रदेशे कल्पते, नत्वालपनादीनि शेषाणि । रोगादौ समुत्पन्ने सति रोगादिनिवृत्तिपर्यन्त

इसके उपकरण की प्रतिलेखना तुम लोग मत करना, यह भी तुम लोगोंके उपकरण की प्रतिलेखना नहीं करेगा, न तुम लोग इसे भक्तपान दो, न इससे भक्तपान लो, न इसके साथ बैठो, न इसके साथ एक मण्डली में आहारादि करो, और न इसका सहकार लेकर कोई अन्य कार्य करो ।" यह साधु नवदीक्षित साधु की वन्दना करता है, इसको वन्दना कोई भी नहीं करता । यह साधु ग्रीष्म ऋतु मे–जघन्य से उपवास, मध्यम से वेला, और उत्कृष्ट से तेला करता है, शिशिर ऋतु मे–जघन्य से वेला, मध्यम से तेला और उत्कृष्ट से चौला करता है, एव वर्षा ऋतु मे–जघन्य से तेला, मध्यम से चोला और उत्कृष्ट से पंचोला करता है, पारणा मे निकृतिवर्जित आहार लेता है। अनवस्थाप्य–प्रायश्चित्ती इस प्रकार का दुष्कर तप करता है। इस साधु को अन्य साधुओं के वसतियोग्य प्रदेश में रहना कल्पता है। यह गच्छ के साथ एकक्षेत्र म, एक उपाश्रय म, एक ही पार्श्व में रह सकता है, किन्तु इसको आलपन (वातचीत) आदि नहीं

ઉપકરણની પ્રતિલેખના તમારે ન કરવી તે પણ તમારા ઉપકરણની પ્રતિલેખના નહિ કરે ન તમારે તેને આહારપાણી દેવા કે ન તેની પાસેથી આહારપાણી લેવા ન તેની સાથે બેસવુ, ન તેની સાથે એકમડલીમા આહાર આદિ કરવા અને ન તેનો સહકાર લઈને કોઈ અન્ય કાર્ય કરવુ " આ સાધુ નવ દીક્ષિત સાધુની વદના કરે છે, તેની વદના કોઈ પણ કરતુ નથી આ સાધુ ગ્રીષ્મઋતુમા જઘન્યથી ઉપવાસ, મધ્યમથી બેલા, અને ઉત્કૃષ્ટથી તેલા કરે છે, શિશિરઋતુમા જઘન્યથી બેલા, મધ્યમથી તેલા અને ઉત્કૃષ્ટથી ચૌલા કરે છે, તેમજ વર્ષાઋતુમા જઘન્યથી તેલા, મધ્યમથી ચૌલા અને ઉત્કૃષ્ટથી પચોલા કરે છે પારણામા વિકૃતિવર્જિત આહાર લે છે અનવસ્થાપ્યપ્રાયશ્ચિત્તી આ પ્રકારનુ દુષ્કર તપ કરે છે આ સાધુને અન્ય સાધુઓના વસતિયોગ્ય પ્રદેશમા રહેવુ કલ્પે છે તે ગચ્છની સાથે એક ક્ષેત્રમા, એક ઉપાશ્રયમા, એક જ પાર્શ્વમા રહી શકે છે પરતુ તેને આલપન (વાતચીત) આદિ કલ્પતુ

अनवस्थाप्यतपोविधिरुच्यते–अनवस्थाप्यप्रायश्चित्ती साधु प्रशस्तेषु द्रव्यक्षेत्रकालभावेषु गुरुसमीपे सरलभावेन स्वातिचारमालोचयति। आलोचनाऽनन्तरं गुरुः कायोत्सर्गं कारयति, तथाहि ऐर्यापथिकीं समग्रां श्रावयति, 'तस्सुत्तरीकरणेणं' इत्यारभ्य यावत्–'अप्पाणं वोसिरामि' इति पठित्वा कायोत्सर्गे वारद्वयं चतुर्विंशतिस्तवमनुचिन्त्य पारयित्वा पुनश्चतुर्विंशतिस्तवमुच्चार्य आचार्य साधूनामन्त्र्य वदति–"एषोऽनवस्थाप्यो मुनिस्तपः प्रतिपद्यते, एष युष्माभिरालपिष्यति युष्माभिरपि नालपनीयः, एष सूत्रार्थं शरीरवार्तां सुखशातादिरूपां वा न प्रक्ष्यति, युष्माभिरपि न प्रष्टव्यः, परिष्ठापनादिकमस्य भवद्भिर्न कर्तव्यम्, न चाऽयं भवतां करिष्यति। उपकरणमस्य भव-

---

अब अनवस्थाप्यप्रायश्चित्त की विधि कहते हैं–अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त लेने वाला साधु प्रशस्त द्रव्य क्षेत्र काल भावमे गुरु के निकट सरल भावसे अपने अतीचारों की आलोचना करता है। जब वह आलोचना कर चुकता है तब गुरु महाराज उसे कायोत्सर्ग करवाते हैं। वह इस प्रकार है–गुरु महाराज पहले समग्र ईर्यापथिकी सुनाते हैं, फिर 'तस्सुत्तरीकरणेण' यहा से लेकर "अप्पाण वोसिरामि" यहाँ तक पढकर कायोत्सर्ग में दो वार चतुर्विंशतिस्तव की अनुचिन्तना कर, पाल कर, फिर एकवार चतुर्विंशतिस्तव का उच्चारण करते हैं, और आचार्य तथा साधुओं को बुलाकर इस प्रकार कहते है–"यह अनवस्थाप्य मुनि तपस्या कर रहा है, यह न तुम लोगों से बोलेगा, न तुम लोग इससे बोलना। यह तुम लोगों से सूत्रार्थ और शरीर की सुखशाता आदि नहीं पूछेगा, तुम लोग भी इस से मत पूछना। इसकी परिष्ठापनिका आदि तुम लोग मत करना, यह भी तुम लोगों की नहीं करेगा।

હવે અનવસ્થાપ્ય પ્રાયશ્ચિત્તની વિધિ કહે છે–

અનવસ્થાપ્ય પ્રાયશ્ચિત્ત લેવાવાળો સાધુ પ્રશસ્ત દ્રવ્ય ક્ષેત્ર કાલ અને ભાવમા ગુરૂની પાસે સરલભાવથી પોતાના અતીચારોની આલોચના કરે છે જ્યારે તે આલોચના કરી લે છે ત્યારે ગુરૂ મહારાજ તેને કાયોત્સર્ગ કરાવે છે તે આ પ્રકારે છે–ગુરૂ મહારાજ પહેલા સમગ્ર ઈર્યાપથિકી સભળાવે છે પછી 'तस्सुत्तरीकरणेण' અહીથી લઈને 'अप्पाण वोसिरामि' અહી સુધી ભણીને કાયોત્સર્ગમા ચતુર્વિંશતિસ્તવની અનુચિંતના કરીને, પાળીને, પછી ચતુર્વિંશતિસ્તવનુ ઉચ્ચારણ કરે છે, અને આચાર્ય તથા સાધુઓને બોલાવીને આ પ્રકારે કહે છે–"આ અનવસ્થાપ્ય મુનિ તપસ્યા કરી રહ્યો છે, તે ન તો તમારી સાથે બોલશે અને ન તમારે એને બોલાવવો એ તમોને સૂત્રાર્થ અને શરીરની સુખશાતા આદિ નહિ પૂછે અને તમારે પણ તેને પુછવુ નહિ તેની પરિષ્ઠાપનિકા આદિ તમારે ન કરવી અને તે પણ તમારી નહિ કરે તેના

आशातनापाराश्चिकः । तस्य पाराश्चिकार्हनामकं दशमं प्रायश्चित्तं प्राप्नोति । स जघन्येन षण्मासान्, उत्कर्षतो द्वादश मासान् गच्छतो निःसारितस्तपसि तिष्ठति । प्रतिसेवनापाराश्चिकस्त्रिविधः—दुष्ट, प्रमत्त, अन्योन्यं कुर्वाणश्चेति । तत्र दुष्टो द्विविधः—कषायदुष्टो, विषयदुष्टश्चेति । तत्र कषायदुष्टो द्विविधः-स्वपक्षदुष्ट, परपक्षदुष्टश्च । अत्र चतुर्भङ्गी, तद्यथा—स्वपक्षः स्वपक्षे दुष्टः १, स्वपक्षः परपक्षे दुष्टः २, परपक्षः स्वपक्षे दुष्टः ३, परपक्षः परपक्षे दुष्टः ४ । प्रथमभङ्गे—मृतगुरुदन्तभञ्जक १, गुरुगलमर्दक २, नेत्रोत्पाटक ३, दन्तैर्दंशक ४, इत्यादीन्युदाहरणानि । द्वितीयभङ्गे—राजादिगृहस्थघातक २, तृतीये—यथा केनापि गृहस्थाऽवस्थायां वादे पराजितः कश्चिद् आसीत्,

करता है वह 'आशातनापाराञ्चिक' है। इसे 'पाराञ्चिकार्ह' नामक दशवाँ प्रायश्चित्त दिया जाता है। यह जघन्य से छ मास तक और उत्कृष्ट से बारह मास तक गच्छ से बहिष्कृत होकर तपस्या करता है। 'प्रतिसेवनापाराञ्चिक' तीन प्रकार का होता है। वे प्रकार ये हैं–(१) दुष्ट, (२) प्रमत्त और (३) अन्योऽन्य-कुर्वाण। इनमें 'दुष्ट' दो प्रकार का होता है–(१) कषायदुष्ट और (२) विषय-दुष्ट। कषायदुष्ट दो प्रकार का है–(१) स्वपक्षदुष्ट और (२) परपक्षदुष्ट। यहाँ पर चतुर्भङ्ग होती है। चतुर्भङ्गी का प्रकार इस प्रकार है–(१) स्वपक्ष, स्वपक्ष में दुष्ट–साधुओं से द्वेष करनेवाला साधु। इसका उदाहरण है–मृत गुरु का दाँत पाडनेवाला, मृत गुरु की गर्दन मरोडनेवाला, मृत गुरु तथा साधु की आँखों को निकालनेवाला, दाँतों से साधु को काटनेवाला–साधु। (२) स्वपक्ष–परपक्ष में दुष्ट–गृहस्थों से द्वेष करनेवाला साधु। इसका उदाहरण है–राजा आदि गृहस्थों का वध

श्रुत, आचार्य, गणधर अने लब्धिधारीनी आशातना करे छे ते 'आशातना-पाराचिक' छे तेने पाराचिकार्ह नामनु दशमु प्रायश्चित्त देवाय छे ए जघन्यथी छ मास सुधी अने उत्कृष्टथी बार मास सुधी गच्छथी बहिष्कृत थइने तपस्या करे छे 'प्रतिसेवनापाराचिक' त्रण प्रकारना थाय छे ते आ प्रकारे छे–(१) दुष्ट, (२) प्रमत्त अने (३) अन्योऽन्यकुर्वाण तेमा 'दुष्ट' बे प्रकारना थाय छे (१) कषायदुष्ट अने (२) विषयदुष्ट कषायदुष्ट बे प्रकारना छे–(१) स्वपक्षदुष्ट अने (२) परपक्षदुष्ट अही चतुर्भंगी थाय छे चतुर्भंगीना प्रकार आम छे–(१) स्वपक्ष, स्वपक्षमा दुष्ट–साधुओनो द्वेष करवावाळो साधु तेनु उदाहरण छे–मरेला गुरुना दात पाडवावाळो, मरेला गुरुनी गरदन मरडवावाळो, मरेला गुरु तथा साधुनी आखो काढी लेवावाळो, दातेथी साधुने बटका भरवावाळो साधु (२) स्वपक्ष, परपक्षमा दुष्ट–गृहस्थोनो द्वेष करवावाळो साधु तेनु उदाहरण छे–राजा आदि गृहस्थोनो वध करवा

तद्वैयावृत्य करणीय, तस्मिन्निवृत्ते सति पुनस्तपसि सस्थाप्य । इति सक्षेपतोऽनवस्थाप्यतपोविधि । इद नवम प्रायश्चित्तम् ।९।

'पारचियारिहे' पाराञ्चिकाऽर्हम्—पार=तीर तपसाऽपराधस्य अञ्चति=गच्छति ततो दीक्ष्यते य स पाराञ्ची, स एव पाराञ्चिक, तस्य यदर्हं तत् पाराञ्चिकार्हं दशम प्रायश्चित्तम् । यद्वा—पारमन्त प्रायश्चित्ताना तत उत्कृष्टतरप्रायश्चित्ताऽभावाद् अञ्चति—गच्छतीत्येवशील साधु पाराञ्चिकस्तदर्हं प्रायश्चित्तम् ।१०। पाराञ्चिक सक्षेपतो द्विविध —आशातनापाराञ्चिक, प्रतिसेवनापाराञ्चिकश्चेति । तत्र—तीर्थंकर—सघ—श्रुताचार्य—गणधर—महर्द्धिकान् आशातयति य स

कल्पता है। यदि उस साधु को रोगादि हो जाय तो जबतक रोगादि की निवृत्ति न हो तबतक अन्य साधु उसकी वैयावृत्य कर सकते हैं। जब वह साधु रोग से निर्मुक्त हो जाय तो फिर उससे तपस्या करानी चाहिये। यह अनवस्थाप्यार्ह नामक नवमा प्रायश्चित्त हुआ।

'पारंचियारिहे' जो साधु तप के द्वारा अपने किये हुए अपराध को पार करता है, अर्थात् अपराधजनित पापसे मुक्त होता है, फिर उसे दीक्षा दी जाती है, वह साधु 'पाराञ्चिक' है। उस साधु को पापविशोधनार्थ जो प्रायश्चित्त दिया जाता है, वह 'पाराञ्चिकार्ह' प्रायश्चित्त है। अथवा जो साधु उत्कृष्टतर अन्य प्रायश्चित्त के न होने के कारण मात्र अन्तिम प्रायश्चित्त का अधिकारी होता है वह 'पाराञ्चिक' कहा जाता है। उस अन्तिम प्रायश्चित्त को 'पाराञ्चिकार्ह' कहते हैं। पाराञ्चिक साधु दो प्रकार का है—पहला आशातनापाराञ्चिक, दूसरा प्रतिसेवना पाराञ्चिक। जो तीर्थंकर, सघ, श्रुत, आचार्य, गणधर और लब्धिधारी की आशातना

નથી જો તે સાધુને રોગાદિ થઈ જાય તો જ્યા સુધી રોગાદિની નિવૃત્તિ ન થાય ત્યા સુધી અન્ય સાધુ તેનુ વૈયાવૃત્ય કરી શકે છે જ્યારે તે સાધુ રોગથી નિર્મુક્ત થઈ જાય ત્યાર પછી તેની પાસે તપસ્યા કરાવવી જોઈએ આ અનવસ્થાપ્યાર્હ નામનુ નવમુ પ્રાયશ્ચિત્ત થયુ

'પારચિયારિહે' જે સાધુ તપદ્વારા પોતે કરેલા અપરાધને પાર કરે છે અર્થાત્ અપરાધજનિત પાપથી મુક્ત થાય છે તેને ત્યાર પછી દીક્ષા દેવાય છે તે સાધુ 'પારાઞ્ચિક' છે તે સાધુને પાપવિશોધનાર્થ જે પ્રાયશ્ચિત્ત દેવાય છે તે 'પારાઞ્ચિકાર્હ' પ્રાયશ્ચિત્ત છે, અથવા જે સાધુ ઉત્કૃષ્ટતર અન્ય પ્રાયશ્ચિત્ત ન હોવાના કારણ માત્રથી અતિમ પ્રાયશ્ચિત્તને અધિકારી છે તે 'પારાઞ્ચિક' કહેવાય છે તે અતિમ પ્રાયશ્ચિત્તને 'પારાઞ્ચિકાર્હ' કહેવાય છે. પારાઞ્ચિક સાધુ બે પ્રકારના છે-પહેલા આશાતનાપારાચિક, બીજા પ્રતિસેવનાપારાચિક જે તીર્થંકર, સઘ,

पाराञ्चिकार्हं प्रायश्चित्तं कर्तव्यम्। ततः साधुवेषपरित्यागेन स गुरुनिर्देशतः कपर्दिका वणिग्भ्यो याचित्वा गुरवे प्रदर्शयति, ततो गुरुर्मुनिवेषं दत्त्वा दीक्षां ददाति। पाराञ्चिकतपोविधानं प्रागुक्तानवस्थाप्यतपोवद् ग्रीष्मे चतुर्थषष्ठाष्टमानि, शिशिरे षष्ठाष्टमदशमानि, वर्षास्वष्टम-दशमद्वादशानि जघन्यमध्यमोत्कृष्टानि, पारणके च निर्लेपं इति।

द्वितीयभङ्गेऽपि चानुपरतः प्रथमभङ्गवत् साधुवेषापहारेण गच्छाद् बहिष्करणीयः, उपर-

ऐसे साधु को गुरु पाराञ्चिकार्ह प्रायश्चित्त दें। ऐसा साधु साधुवेष का परित्याग कर शिर के ऊपर कपडा बाँधकर गुरु की आज्ञा से बाजार में जाकर व्यापारियों से अपना पाप-निवेदनपूर्वक एक एक कौडी माँगता है, माँग कर उन कौडियों को गुरु महाराज को दिखलाता है। तब गुरु महाराज उसे मुनिवेष देकर फिर से दीक्षा देते हैं। पाराञ्चिक तप का विधान पूर्वोक्त अनवस्थाप्य तप के समान है। इस तपस्या मे वह साधु ग्रीष्म ऋतु में जघन्य से उपवास, मध्यम से बेला, उत्कृष्ट से तेला, शिशिर ऋतु में जघन्य से से बेला, मध्यम से तेला, उत्कृष्ट से चौला, और वर्षा ऋतु में जघन्य से तेला, मध्यम से चौला, उत्कृष्ट से पँचोला करता है। पारणा में विकृतिवर्जित आहार लेता है।

द्वितीयभङ्ग में जो साधु अनुपरत है अर्थात् राजा आदि गृहस्थों के घातरूप व्यापार से निवृत्त नहीं होता है, ऐसे साधु का साधुवेष छीनकर गुरु महाराज उसे गच्छ से निकाल दे। जो साधु राजादिक गृहस्थ के घातरूप व्यापार

સાધુ ઘાત પાડવા આદિ દુષ્કૃત્યોથી નિવૃત્ત થઈ જાય છે અને નિયમ કરે છે કે-'હવે હુ ફરીને એવુ કામ નહિ કરૂં' એવા સાધુને ગુરૂ પારાચિકાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત આપે એવો સાધુ, સાધુનો વેષ છોડી દઈ શિરના ઉપર કપડુ બાધી ગુરૂની આજ્ઞા લઈ બજારમા જાય છે અને વ્યાપારીઓની પાસે પોતાનુ પાપનુ નિવેદન કરી એક એક કોડી માગે છે માગીને તે કોડિઓને ગુરૂ મહારાજને બતાવે છે ત્યારે ગુરૂ મહારાજ તેને મુનિવેષ આપીને ફરીને દીક્ષા આપે છે પારાચિક તપનુ વિધાન આગળ કહેલ અનવસ્થાપ્ય તપના સમાન છે આ તપસ્યામા તે સાધુ ગ્રીષ્મઋતુમા જઘન્યથી ઉપવાસ, મધ્યમથી બેલા, ઉત્કૃષ્ટથી તેલા, શિશિરઋતુમા જઘન્યથી બેલા, મધ્યમથી તેલા, ઉત્કૃષ્ટથી ચૌલા, અને વર્ષાઋતુમા જઘન્યથી તેલા, મધ્યમથી ચૌલા, ઉત્કૃષ્ટથી પચોલા કરે છે પારણામા વિકૃતિવર્જિત આહાર લે છે

દ્વિતીયભગમા-જે સાધુ અનુપરત હોય અર્થાત્ રાજા આદિ ગૃહસ્થોના ઘાતરૂપ વ્યાપારથી નિવૃત્ત થતો નથી, એવા સાધુનો સાધુવેષ છીનવી લઈને

स तस्य गृहस्थावस्थाया विजयिन सामेर्गिको जात, यथा स्कन्दकुमारस्य पालक इति ।३। यो राज्ञो युवराजस्य वा वधक स चतुर्थभङ्गान्तर्गत । अदीक्षितत्वात् वधक परपक्ष, राजा तु परपक्ष एवास्ति ।४।

प्रथमभङ्गे योऽनुपरत स प्रायश्चित्तानर्ह, तस्मात् तस्य साधुवेषमपहृत्य गुरुणा बहिर्निस्सारण करणीयम्, यस्तूपरत 'पुनर्नैव करिष्यामी' ति प्रतिजानाति तस्य तपोरूप

करनेवाला साधु। (३) परपक्ष, स्वपक्ष मे दुष्ट—साधु से द्वेष करनेवाला गृहस्थ। इसका उदाहरण इस प्रकार है—किसी साधुने गृहस्थावस्था मे वादविवाद में किसी को पराजित किया था। पराजित मनुष्य उसका वैरी हो गया। बाद मे विजयी मनुष्यने दीक्षा लेकर साधुत्व को अङ्गीकार किया, उस समय पराजित मनुष्य तीव्र वैरानुबन्ध के कारण उस साधु को मार डाला। जैसे—पालकने स्कन्दक आदि पाँचसौ मुनियों को मार डाला। तथा (४) परपक्ष—परपक्ष मे दुष्ट—गृहस्थ से द्वेष करनेवाला गृहस्थ। इसका उदाहरण है—राजा वा युवराज का वध करनेवाला गृहस्थ। हत्या करनेवाला अदीक्षित होने के कारण परपक्षी है, राजा आदि तो परपक्षी है ही, इसलिये यह चतुर्थ भङ्ग का उदाहरण है।

प्रथमभङ्ग में जो साधु अनुपरत है, अर्थात् मृतगुरु के दात पाडना आदि दुष्कृत्य से निवृत्त नहीं होता है, वह प्रायश्चित्त का अधिकारी नहा है। गुरु को चाहिये कि ऐसे साधु का वेष छीन ले, और गच्छ से उसको निकाल दें। जो साधु दाँत पाडना आदि दुष्कृत्यों से निवृत्त हो जाता है, और प्रतिज्ञा करता है कि "मै अब फिर कभी ऐसा काम नहा करूँगा"

વાળો સાધુ (૩) પરપક્ષ, સ્વપક્ષમા દુષ્ટ—સાધુનો દ્વેષ કરવાવાળો ગૃહસ્થ આનુ ઉદાહરણ આમ છે—કોઇ સાધુએ ગૃહસ્થાશ્રમમા વાદવિવાદમા કોઈને પરાજિત કર્યો હતો પરાજિત માણસ તેનો વેરી થઈ ગયો પછી વિજયી મનુષ્યે દીક્ષા લઇ સાધુત્વ અગીકાર કર્યું, તે સમયે પરાજિત મનુષ્યે તીવ્ર વૈરાનુબધને કારણે તે સાધુને મારી નાખ્યો જેમ, પાલકે સ્કદક આદિ પાચસો મુનિઓને મારી નાખ્યા તથા (૪) પરપક્ષ, પરપક્ષમા દુષ્ટ—ગૃહસ્થોનો દ્વેષ કરવાવાળો ગૃહસ્થ તેનુ ઉદાહરણ છે—રાજા અથવા યુવરાજનો વધ કરવાવાળો ગૃહસ્થ હત્યા કરવાવાળો અદીક્ષિત હોવાને કારણે પરપક્ષી છે, રાજા આદિ તો પરપક્ષી છેજ, આથી એ ચતુર્થભગનુ ઉદાહરણ છે

પ્રથમ ભગમા—જે સાધુ અનુપરત છે અર્થાત્ મરેલા ગુરૂના દાત પાડવા આદિ દુષ્કૃત્યથી નિવૃત્ત થતો નથી તે પ્રાયશ્ચિત્તનો અધિકારી નથી ગુરૂએ એવા સાધુનો વેષ છીનવી લેવો જોઈએ અને ગચ્છથી તેનો બહિષ્કાર કરવો જોઇયે જે

परपक्षः परपक्षे दुष्टः ४। तत्र—बालाया तरुण्या वा साध्व्या यः साधुर्दुष्टः=शीलभङ्गकारकः, स प्रथमो भङ्गः। साधुः शय्यातरगृहिण्यामन्यतीर्थिकायां वा अभ्युपपन्न इति द्वितीयः। गृहस्थो बालया तरुण्या वा साध्व्यामभ्युपपन्न इति तृतीयः। गृहस्थो गृहस्थायामिति चतुर्थः। एवं विषयदुष्टोऽपि चतुर्विधो भवति।

तत्र—प्रथमभङ्गे वर्तमानो योऽनुपरतः स लिङ्गपाराञ्चिकः कर्तव्यः—साधुवेषापहारेण सर्वथा गच्छाद् बहिष्करणीयः। यस्तूपरतः=उपशान्तः 'पुनर्नैव करिष्यामी'-ति प्रतिजानाति, तस्य पाराञ्चिकार्हं तपोरूपं प्रायश्चित्तं कारयति ततः साधुवेषमनपहृत्य दीक्षाप्रदानं कुर्वन्ति, उपरतस्य विषयदुष्टस्य लिङ्गपाराञ्चिकविधानाभावात्।

परतीर्थिक की स्त्री से व्यभिचार करनेवाला साधु। (३) परपक्ष, स्वपक्ष में दुष्ट=बाला या तरुणी साध्वी का शीलभङ्ग करनेवाला गृहस्थ। (४) परपक्ष, परपक्ष में दुष्ट—गृहस्थ स्त्री के साथ व्यभिचार करने वाला गृहस्थ। विषयदुष्टके ये चार भङ्ग हुए। इनमें प्रथम-भङ्ग में वर्तमान साधु अपने दुष्कर्म से निवृत्त न हो तो गुरु उसको लिंगपाराञ्चिक कर दें, अर्थात्—उसका साधुवेष ले ले, और उसका गच्छ से सर्वथा बहिष्कार कर दे। जो साधु अपने दुष्कर्म से निवृत्त एवं उपशान्त होकर ऐसी प्रतिज्ञा करे कि "मैं अब फिर कभी भी ऐसा नहीं करूँगा" उसको गुरु पाराञ्चिकार्ह तपोरूप प्रायश्चित्त देते हैं। ऐसे साधुका साधु-वेष नहीं छीना जाता है, मात्र उसे नयी दीक्षा दी जाती है। अपने दुष्कर्म से निवृत्त विषयदुष्ट के लिये लिङ्गपाराञ्चिक का विधान नहीं है, अर्थात्—उसका वेष नहीं छीना जाता है।

परपक्षमां दुष्ट-शय्यातरनी स्त्री अथवा परतीर्थिकनी स्त्रीथी व्यभिचार करवावाळो साधु (३) परपक्ष, स्वपक्षमां दुष्ट-बाला अथवा तरुणी साध्वीनुं शीयळ भंग करवावाळो गृहस्थ (४) परपक्ष, परपक्षमां दुष्ट-गृहस्थ स्त्रीनी साथे व्यभिचार करवावाळो गृहस्थ विषयदुष्टना आ चार भंग थया. तेमां प्रथम भंगमां वर्तमान साधु पोताना दुष्कर्मथी निवृत्त न थाय तो गुरु तेने लिंगपाराञ्चिक करी दे, अर्थात् तेनो साधु वेष लई ले अने गच्छमांथी तेनो सर्वथा बहिष्कार करी दे जे साधु पोताना दुष्कर्मथी निवृत्त तेम ज उपशांत थईने एवी प्रतिज्ञा करे के 'हुं हवे फरीने करी एवुं नहि करुं' तेने गुरु पाराञ्चिकार्ह-तपोरूप प्रायश्चित्त आपे छे एवा साधुनो साधुवेष छीनवी लेवातो नथी मात्र तेने नवी दीक्षा अपाय छे पोताना दुष्कर्मथी निवृत्त विषयदुष्टने माटे लिंगपाराञ्चिकनुं विधान नथी अर्थात् तेनो वेष छीनवी लेवातो नथी

तश्चेत् तर्हि तस्य न पाराञ्चिकतप कारण, नापि च साधुवेषापहार, किं तु पुनर्दीक्षाप्रदानमात्र प्रायश्चित्तम्।

तृतीयभङ्गे चतुर्थभङ्गे च—यद्यतिशयज्ञानी 'उपशान्तोऽयम्' इति मन्यते, तदा स्वदेशे दीक्षितु न कल्पते, किन्तु अन्यस्मिन देशे गत्वा दीक्षा दातव्या।

विषयदुष्टोऽपि पूर्ववद् द्विविध—स्वपक्षदुष्ट, परपक्षदुष्टश्चेति। तत्रापि चतुर्भङ्गी-तद्यथा--स्वपक्ष स्वपक्षे दुष्ट १, स्वपक्ष परपक्षे दुष्ट २, परपक्ष स्वपक्षे दुष्ट ३,

---

से निवृत्त हो जाय तो उससे गुरु पाराञ्चिक तप नहीं कराये, न उसका साधुवेष ही छीनें, किन्तु उसे क्षेत्रपाराञ्चिक करके फिर से दीक्षा दे, यह उसका प्रायश्चित्त है।

तृतीयभङ्ग में—जो गृहस्थ साधु का घातक है वह यदि दीक्षा लेना चाहे, गुरुमहाराज को वह उपशान्त ज्ञात हो तो उसे गुरुमहाराज अन्यदेश में ले जाकर दीक्षा दे। क्यों कि स्वदेश में इसके लिये दीक्षा नहीं कल्पती है। चतुर्थभङ्ग में—जो कोई गृहस्थ, राजा युवराज आदि गृहस्थ का घातक है, वह यदि दीक्षा लेना चाहे और गुरु महाराज को वह उपशान्त मालूम हो, तो उसको परदेश में ले जाकर दीक्षा दे। स्वदेश में उसके लिये दीक्षा नहीं कल्पती है।

विषयदुष्ट भी पूर्ववत् दो प्रकार का होता है—स्वपक्षदुष्ट और परपक्षदुष्ट। यहाँ पर भी चतुर्भङ्गी है। वह इस प्रकार है—(१) स्वपक्ष, स्वपक्ष में दुष्ट—बाला या तरुणी साध्वी का शील भङ्ग करनेवाला साधु। (२) स्वपक्ष, परपक्ष में दुष्ट—शय्यातर की स्त्री या

ગુરૂ મહારાજે તેને ગચ્છથી બહાર કરવો જો સાધુ રાજાદિક ગૃહસ્થના ઘાતરૂપ વ્યાપારથી નિવૃત્ત થઇ જાય તો તેને ગુરૂ પારાચિંક તપ ન કરાવે, ન તેનો સાધુવેશ પણ છીનવી લે, પરંતુ તેને ક્ષેત્રપારાચિક કરીને ફરીથી તેને દીક્ષા આપે, એ જ તેનુ પ્રાયશ્ચિત્ત છે

તૃતીયભંગમા—જે ગૃહસ્થ સાધુનો ઘાતક હોય તે જો દીક્ષા લેવા ચાહે તો અતિશયજ્ઞાની ગુરૂમહારાજને જો તે ઉપશાત જણાય તો તેને ગુરૂમહારાજ અન્ય દેશમા લઇ જઇને દીક્ષા આપે કેમકે સ્વદેશમા તેને માટે દીક્ષા કલ્પતી નથી ચતુર્થભંગમા—જો કોઇ ગૃહસ્થ, રાજા યુવરાજ આદિ ગૃહસ્થનો ઘાતક હોય, તે જો દીક્ષા લેવાને ચાહે તો તેને પરદેશમા લઇ જઇને દીક્ષા દેવી સ્વદેશમા તેને માટે દીક્ષા કલ્પતી નથી

વિષયદુષ્ટ પણ પૂર્વ પ્રમાણે બે પ્રકારના થાય છે સ્વપક્ષદુષ્ટ અને પરપક્ષ દુષ્ટ અહીં પણ ચતુર્ભંગી છે તે આ પ્રકારે છે-(૧) સ્વપક્ષ, સ્વપક્ષમા દુષ્ટ—બાલા અથવા તરૂણી સાધ્વીનુ શીયળ ભંગ કરવાવાળો સાધુ (૨) સ્વપક્ષ,

नगर्यां यस्मिन् गृहस्थकुले दोष उत्पन्न, उत्पत्स्यते वा, तदीये कुले प्रवेष्टु वारणीय। तथा--यत्र निर्गमप्रवेशयोर्द्वारमेकमेवास्ति तत्र, तथा द्वयोर्ग्रामयोरपान्तराले यत्र द्व्यादिगृहाणा सन्निवेश-स्तत्रापि गमनागमन वारणीयम्। अय क्षेत्रपाराञ्चिक इत्युच्यते।

द्विविधेऽपि दुष्टपाराञ्चिके प्रथमभङ्गाधिकार। शेषाणि पुनर्द्वितीयभङ्गादीनि शिष्य-बुद्धिवैशद्यार्थं प्रदर्शितानि।

अथ प्रमत्तपाराञ्चिक उच्यते--स्त्यानर्द्धिनिद्रावान प्रमत्तपाराञ्चिक, तस्य सामान्य-लोकबलाद् द्विगुण त्रिगुण चतुर्गुण वा बल भवति, तस्मादसौ गुरुणा एव प्रज्ञापनीय-- सौम्य! लिङ्ग मुञ्च, चारित्र तत्र नास्ति। यद्येव गुरुणा सानुनयमुक्त साधुवेष मुञ्चति, तत

जिन ग्रामनगरादि स्थानों म विहार करता है वहाँ विहार नहीं करने दिया जाता है। द्विती-यभङ्ग के साधु को जिस नगरी में, जिस कुलमें उससे दोष हो गया और होने की संभावना है, वहा नहीं जाने दिया जाता है, और जहाँ निकलने तथा प्रवेश करने का द्वार एक ही हे वहाँ, तथा दो गावों के बीच में जहाँ दो तीन घर वसे हुए हों वहाँ भी, इस साधु का गमनागमन रोक दिया जाता है। यही क्षेत्रपाराञ्चिक कहा जाता है।

प्रतिसेवनापाराञ्चिक के दुष्ट नामक प्रथम भेद के कपायदुष्ट और विषयदुष्ट ये दो भेद हुए। इन दोनों भेदों में प्रथम भङ्गका ही यहाँ अधिकार है, क्यों कि प्रथम भङ्ग में ही पाराञ्चिकार्ह प्रायश्चित्त दिया जाता है। द्वितीयभङ्ग आदि तो शिष्यों की बुद्धि विशद हो, इसलिये दिखलाये गये हे।

अब **प्रमत्तपाराञ्चिक** कहते है। स्त्यानर्द्धिनिद्रावान् साधु प्रमत्तपाराञ्चिक है। उसे सामान्य लोगों के बलसे द्विगुण, त्रिगुण वा चतुर्गुण बल होता है। ऐसे साधु को

દ્વિતીય ભગના સાધુને, જે નગરીમા જે કુળમા તેનાથી દોષ થઈ ગયો હોય અને હોવાની સભાવના હોય ત્યા જવા દેવાતા નથી અને જ્યા નીકળ-વાનુ તથા પ્રવેશ કરવાનુ દ્વાર એક જ હોય ત્યા, તથા બે ગામોની વચ્ચે જ્યા બે ત્રણ ઘર વસેલા હોય ત્યા પણ તે સાધુનુ ગમનાગમન રોકવામા આવે છે, આ જ ક્ષેત્રપારાચિક કહેવાય છે

પ્રતિસેવનાપારાચિકના દુષ્ટ નામના પ્રથમ ભેદના કષાયદુષ્ટ અને વિષય-દુષ્ટ, એ બે પ્રકાર થયા એ બન્ને પ્રકારોમા પ્રથમ ભગનો જ અહી અધિકાર છે, કેમકે પ્રથમ ભગમા જ પારાચિકાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત દેવાય છે દ્વિતીય ભગ આદિ તો શિષ્યોની બુદ્ધિ વિશદ થાય તે માટે બતાવ્યા છે

હવે પ્રમત્તપારાચિક કહે છે. સ્ત્યાનર્દ્ધિનિદ્રાવાન્ સાધુ પ્રમત્તપારાચિક છે તેનામા સામાન્યલોકોના બળ કરતા બમણુ ત્રણગણુ અથવા ચારગણુ બળ

द्वितीयभङ्गेऽपि वर्तमानो योऽनुपरत स एव लिङ्गपाराञ्चिक कर्तव्य, उपरतस्तु न लिङ्गत पाराञ्चिक कर्तव्य, क्षेत्रत एव पाराञ्चिक कर्तव्य, पुनर्दीक्षाप्रदानमात्र तस्य प्रायश्चित्तम्। तृतीये चतुर्थे च भङ्गे यद्युपशान्तस्तदाऽन्यस्मिन् देशे दीक्षा दातव्या, अत्र पाराञ्चिकतपस प्रस्तुतत्वात् परपक्षे तस्यासम्भवात्। यद्यनुपशान्तस्तर्हि दीक्षा न दातव्या। येषु ग्रामादिषु ता साध्व्यो विहरन्ति तेषु तेषु स्थानेषु विहर्तुं स प्रथमभङ्गे वर्तमान साधुर्निवार्यते। द्वितीयादिष्वपि भङ्गेषु तानि स्थानानि ग्रामादीनि परिहर्तव्यानि। एतदुक्त भवति-द्वितीयभङ्गे यस्या

द्वितीयभङ्गमें वर्तमान साधु यदि अपने दुष्कर्म से निवृत्त न हो तो गुरु महाराज उस साधुको लिङ्गपाराञ्चिक कर दें, अर्थात् उसका साधुवेष लेकर उसको गच्छ से सर्वथा के लिये निकाल दें। जो साधु निवृत्त हो जाय उसको लिङ्गसे पाराञ्चिक न करें, अर्थात् उसका साधुवेष नहीं छीने, किन्तु उसको क्षेत्र से पाराञ्चिक कर दें। ऐसे साधुको फिर से दीक्षा दें। यही इसके लिये प्रायश्चित्त है। तृतीय चतुर्थ भङ्गमें वर्तमान गृहस्थ उपशान्त अर्थात् अपने दुष्कर्म से निवृत्त हो तो उसको अन्यदेश में दीक्षा देनी चाहिये। यदि वह उपशान्त न हो तो अन्य देश में भी दीक्षा नहीं दें। यहाँ पाराञ्चिक का प्रस्ताव, अर्थात्–उपक्रम है, पाराञ्चिक तप परपक्ष अर्थात गृहस्थ के लिये सम्भवित नहीं है, इसलिये गृहस्थ के लिये देशान्तर में दीक्षा देने का विधान किया है।

प्रथमभङ्ग के साधु को, जिन साध्वियों का उसने शील भङ्ग किया है वे साध्वियाँ

દ્વિતીયભંગમા વર્તમાન સાધુ જો પોતાના દુષ્કર્મથી નિવૃત્ત ન થાય તો ગુરૂ તે સાધુને લિંગપારાંચિક કરી દે, અર્થાત્ તેનો સાધુ વેષ લઈ લે અને તેને ગચ્છથી સર્વથા માટે બહિષ્કાર કરે જે સાધુ નિવૃત્ત થઇ જાય તેને લિંગથી પારાંચિક ન કરે, અર્થાત્ તેનો સાધુવેષ ન લઈ લે પરંતુ તેને ક્ષેત્રથી (તે સ્થળથી) પારાંચિક કરે એવા સાધુને ફરીને દીક્ષા દે, એ જ તેને માટે પ્રાયશ્ચિત્ત છે

તૃતીય ચતુર્થભંગમા વર્તમાન ગૃહસ્થ ઉપશાંત અર્થાત્ પોતાના દુષ્કર્મથી નિવૃત્ત થાય તો તેને બીજા દેશમા દીક્ષા દેવી જોઇએ જો તે ઉપશાંત ન થાય તો બીજા દેશમા પણ દીક્ષા ન દેવી અહીં પારાંચિકનો પ્રસ્તાવ, અર્થાત ઉપક્રમ છે, પારાંચિક તપ પરપક્ષ અર્થાત્ ગૃહસ્થને માટે સંભવિત નથી, તેથી ગૃહસ્થને માટે દેશાંતરમા દીક્ષા દેવાનું વિધાન કર્યું છે

પ્રથમ ભંગના સાધુને, જે સાધ્વીઓનું તેણે શીલભંગ કર્યું હોય તે સાધ્વીઓ જે ગામ નગરાદિ સ્થાનોમા વિહાર કરતી હોય ત્યા વિહાર કરવા દેવામા આવતો નથી.

श्रावकत्व सम्यक्त्व वा नेच्छति, तदा तस्य सहवासो वर्जनीय ।

अथाऽन्योन्यकुर्वाणपाराञ्चिक उच्यते—मुखपायुभ्या मैथुनी अन्योन्यकुर्वाणपाराञ्चिक । स पुनर्न दीक्षणीय । यदि तु अतिशयज्ञानी आचार्य –'अय न पुनरेव करिष्यति' इति जानाति, तदा पाराञ्चिकार्हं तप कारयित्वा पुनस्तस्मै दीक्षा प्रदेया ।

विषयदुष्टोऽनुपरत एव लिङ्गत पाराञ्चिक क्रियते। यस्तु विषयदुष्ट उपरत स उपाश्रयादिक्षेत्रत एव पाराञ्चिक क्रियते, न तु लिङ्गत । शेषा कषायदुष्टप्रमत्तान्योन्यकुर्वाणा नियमाल्लिङ्गपाराञ्चिका क्रियन्ते ।

वह श्रावकत्व अथवा सम्यक्त्व का स्वीकार करना नहीं चाहे, तब सघ उसका सहवास कभी भी नहीं करे, सर्वदा के लिये उसका बहिष्कार कर दे ।

अब अन्योऽन्यकुर्वाण पाराञ्चिक कहते है—जो साधु मुखमैथुनी और गुदा-मैथुनी हो, वह 'अन्योऽन्यकुर्वाण पाराञ्चिक' है । ऐसे साधु को फिर से दीक्षा नहीं दी जाती है । यदि अतिशयज्ञानी गुरु महाराज को ऐसा अनुभव हो कि—यह फिर ऐसा नहीं करेगा, तब वे उससे पाराञ्चिकार्ह तप करा कर फिर से उसे दीक्षा दे ।

विषयदुष्ट साधु यदि अपने दुष्कर्म से निवृत्त नहीं होता है तो वह लिङ्गपाराञ्चिक होता है, अर्थात् उसका साधुवेष ले लिया जाता है, और उसे गच्छ से निकाल दिया जाता है । जो विषयदुष्ट साधु अपने दुष्कर्म से निवृत्त हो जाता है, वह उपाश्रयादि क्षेत्र से ही पाराञ्चिक किया जाता है, अर्थात् वह अन्य प्रदेश मे भेज दिया जाता है, उसका साधुवेष

જો તે શ્રાવકત્વ અથવા સમ્યક્ત્વનો સ્વીકાર કરવા ન ચાહે તો સઘ તેનો સહવાસ કદી પણ કરે નહિ, સર્વદા માટે તેનો બહિષ્કાર કરી દે

હવે અન્યોઽન્યકુર્વાણ-પારાચિક કહે છે-જે સાધુ મુખમૈથુની અને ગુદા મૈથુની હોય તે 'અન્યોઽન્યકુર્વાણ-પારાચિક' છે એવા સાધુને ફરીને દીક્ષા અપાતી નથી જો અતિશયજ્ઞાની ગુરૂમહારાજને એવો અનુભવ થાય કે આ ફરીને એવુ નહિ કરે, તો તેઓ તેની પાસે પારાચિકાર્હ તપ કરાવીને ફરીને તેને દીક્ષા આપે

વિષયદુષ્ટ સાધુ જો પોતાના દુષ્કર્મથી નિવૃત્ત ન થાય તો તેને લિગ-પારાચિક કરાય છે, અર્થાત્ તેનો સાધુવેષ લઇ લેવાય છે, અને તેને ગચ્છથી કાઢી મૂકવામા આવે છે જે વિષયદુષ્ટ સાધુ પોતાના દુષ્કર્મથી નિવૃત્ત થઈ જાય છે તે ઉપાશ્રયાદિ ક્ષેત્રમાથી જ પારાચિક કરાય છે, અર્થાત્ તેને બીજા પ્રદેશમા મોકલવામા આવે છે તેનો સાધુવેષ લઇ લેવામા આવતો નથી વિષયદુષ્ટથી જુદા જે કપાયદુષ્ટ, પ્રમત્ત અને અન્યોઽન્યકુર્વાણ છે, એ ત્રણને નિયમપ્રમાણે લિગપારાચિક કરવામા આવે છે, અર્થાત્ તેમનો સાધુવેષ લઈ લેવાય છે

शोभनम्। अथ न मुञ्चति तत सघो मिलित्वा तस्य साधुवेष हरति, न त्वेक एव जन, तस्यैकस्योपरि प्रद्वेषसम्भवात्, प्रद्वेषयुक्तश्च स तस्य हिंसनमपि कुर्यात । तस्मै पुनर्दीक्षा न दीयते। यस्तु ज्ञानातिशयवान् आचार्य एव जानाति-'यत्र पुनरेतस्य स्त्यानर्द्धिनिद्रोदयो भविष्यतीति, तत पाराञ्चिकार्हं प्रायश्चित्त कारयित्वा तस्मै दीक्षा ददाति। सघेन मिलित्वा तस्य साधुवेषापहारे कृते पुनराचार्य एवमुपदिशति-स्थूलप्राणातिपातविरमणादीनि देश-व्रतानि गृहाण, तानि चेत् प्रतिपत्तु न समर्थस्ततो दर्शन (सम्यक्त्व) गृहाण। अथैवमुक्तोऽपि

गुरुमहाराज इस प्रकार कहे-"सौम्य! तुम साधुवेष छोड दो, क्यों कि तुम में चारित्र का अभाव है। गुरु से इस प्रकार सरल भाव से कहे जाने पर यदि वह साधुवेष का परित्याग कर दे तो अच्छा है, नहीं तो सघ मिलकर उसका साधुवेष छीन ले, अकेले नहीं, क्यों कि साधुवेष छीने जाने के समय उस साधु को द्वेष उत्पन्न होगा, और द्वेषयुक्त वह साधु मनुष्य की हिंसा भी कर सकता है। ऐसे साधु को फिर से दीक्षा नहीं दी जाती है। यदि अतिशयज्ञानी गुरु को ऐसा अनुभव हो कि यह प्रकृतिभद्रक है, इसे अब स्त्यानर्द्धिनिद्रा आदि नहीं होगी, तो गुरु उस साधु को पाराञ्चिकार्ह प्रायश्चित्त देकर फिर से दीक्षा दे। सघ मिलकर उस साधु का जब वेष छीन ले, तब गुरु महाराज स्त्यानर्द्धि-निद्रावान् प्रमत्तपाराञ्चिक साधु को इस प्रकार उपदेश दे-आज से तुम स्थूलप्राणातिपात-विरमणरूप श्रावक धर्म को स्वीकार करो। यदि तुम इसका आचरण करने मे असमर्थ हो तो तत्त्वार्थश्रद्धानरूप सम्यक्त्व को स्वीकार करो। इस प्रकार उपदेश देने पर भी यदि

હોય છે એવા સાધુને ગુરૂમહારાજ આ પ્રમાણે કહે-" સૌમ્ય ! તુ સાધુવેષ છોડી દે, કેમકે તારામા ચારિત્રનો અભાવ છે ગુરૂ તરફથી આ પ્રકારે સરલ ભાવે કહેવામા આવતા જો તે સાધુવેષનો પરિત્યાગ કરી દે તો સારૂ છે, નહિ તો સઘે મળીને તેનો સાધુવેષ છીનવી લેવો, એકલાએ નહિ કેમકે સાધુવેષ છીનવી લેતી વખતે તે સાધુને દ્વેષ ઉત્પન્ન થશે, અને દ્વેષવાળો તે સાધુ મનુષ્યની હિંસા પણ કરી શકે છે એવા સાધુને ફરીને દીક્ષા દેવાતી નથી જો અતિશય જ્ઞાનવાન્ ગુરૂને એવો અનુભવ થાય કે આ પ્રકૃતિભદ્રક છે, હવે એને સ્ત્યાનર્દ્ધિનિદ્રા આદિ નહિ થાય તો ગુરૂ તે સાધુને પારાચિકાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત દઈને ફરીને દીક્ષા આપે સઘ મળીને તે સાધુનો જ્યારે વેષ છીનવી લે ત્યારે ગુરૂમહારાજ સ્ત્યાનર્દ્ધિનિદ્રાવાન્ પ્રમત્તપારાચિક સાધુને આ પ્રકારે ઉપદેશ આપે-આજથી તુ સ્થૂલપ્રાણાતિપાતવિરમણરૂપ શ્રાવક ધર્મનો સ્વીકાર કર જો તુ તેનુ આચરણ કરવામા અસમર્થ હોય તો તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાનરૂપ સમ્યક્ત્વનો સ્વીકાર કર આ પ્રકારે ઉપદેશ દેવા છતા પણ

से किं तं विणए ? विणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा-

गच्छान्नि सारितोऽस्मीत्यशुभो भाव स्वल्पतरोऽपि न विद्यते स एवंविधगुणसम्पन्न । पाराञ्चिक प्रायश्चित्त कर्तुमर्हति । यस्त्वेतद्गुणरहितस्तस्य पाराञ्चिकापत्ति प्राप्तस्य मूलमेव यश्चित्त भवति ।

आशातनापाराञ्चिको जघन्येन षण्मासान्, उत्कर्षतश्च द्वादश मासान् भवति, एतावन्त ल गच्छान्निर्यूढ (निष्कासित) स्तिष्ठति । प्रतिसेवनापाराञ्चिको जघन्येन मवत्सरमुत्कर्षतो ादश वर्षाणि निर्यूढ आस्ते । विस्तरस्तु—अन्यत्र द्रष्टव्य । 'से त पायच्छित्ते' तदेत- प्रायश्चित्तम् ।

'से किं त विणए' अथ कोऽसौ विनय ? विनय किंस्वरूप इति प्रश्न । उत्तरमाह—'विणए' विनय —विनयति—अपनयति अष्टविधकर्माणीति विनय =अभ्युत्थानवन्दन-

गया हूँ' यह अशुभ भाव अणुमात्र भी न हो, इस प्रकार के गुणों से युक्त ही साधु पाराञ्चिक प्रायश्चित्त का अधिकारी है । जो साधु इन गुणों से रहित है, उससे पाराञ्चिकार्ह प्रायश्चित्त योग्य अपराध हो गया है, उसको मूलार्ह प्रायश्चित्त ही दिया जाता है ।

आशातनापाराञ्चिक साधु जघन्य से छ मास तक और उत्कर्ष से बारह मास- तक गच्छ से बहिष्कृत रहता है । प्रतिसेवनापाराञ्चिक साधु जघन्य से एक वर्ष और उत्कर्ष से बारह वर्ष गच्छ से बहिष्कृत रहता है । इसका विस्तृत वर्णन अन्यत्र देखना चाहिये । (से त पायच्छित्ते) ये दस प्रकार के प्रायश्चित्त है ॥सू० ३०॥

(से किं त विणए) विनय का क्या स्वरूप है' (विणए सत्तविहे पण्णत्ते) विनय सात प्रकार का है । जो अष्टविध कर्मों को दूर करता है, वह विनय है ।

માથી કાઢેલા છતા પણ જેના મનમા 'હુ ગચ્છથી બહિષ્કાર પામેલો છુ' એ અશુભ ભાવ અણુમાત્ર પણ ન હોય, એ પ્રકારના ગુણોવાળો જ સાધુ પારાંચિક પ્રાયશ્ચિત્તનો અધિકારી છે જે સાધુ એ ગુણોથી રહિત છે તેનાથી પારાંચિકાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત યોગ્ય અપરાધ થઈ ગયો હોય તો તેને મૂલાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત જ અપાય છે આશાતનાપારાંચિક સાધુ જઘન્યથી છ માસ સુધી અને ઉત્કર્ષથી બાર માસ સુધી ગચ્છથી બહિષ્કૃત રહે છે પ્રતિસેવના- પારાંચિક સાધુ જઘન્યથી એક વર્ષ અને ઉત્કર્ષથી બાર વર્ષ સુધી ગચ્છથી બહિષ્કૃત રહે છે તેનુ વિસ્તૃત વર્ણન બીજેથી જોઈ લેવુ જોઈએ (से तं- पायच्छित्ते) આ દશ પ્રકારના પ્રાયશ્ચિત્ત છે (સૂ० ૩૦)

(से किं त विणए) વિનય તપનુ સ્વરૂપ શુ છે? ઉત્તર–(विणए सत्तविहे पण्णत्ते) તે સાત

यस्तु साधु कर्मदोषात् पाराञ्चिकापत्तियोग्यात् उत्कृष्टमपराधपद प्राप्त, स यदि भद्रक 'पुनरेव न करिष्यामी'–ति व्यवसितस्तदा स तप पाराञ्चिक –अर्थात् तप समाराधनतत्पर पाराञ्चिक क्रियते। तस्य तप करणयोग्यता यथा भवति तदुच्यते–वज्रऋषभनाराच सहनन, वज्रकुड्यसमान वीर्य, सागरवद्गाम्भीरता, मेरुवद्धीरता, आगमज्ञान–जघन्येन नवमपूर्वान्तर्गतमाचाराख्य तृतीय वस्तु, उत्कर्षतो दशमपूर्वं मपूर्णं, तच्च सूत्रतोऽर्थतश्च यदि परिचित भवति। एतै सहननादिभि सम्पन्न, तथा सिंहविक्रीडितादितप कर्मभावित, इन्द्रियकषायाणा निग्रहे समर्थ, प्रवचनरहस्यार्थज्ञानसम्पन्नश्च, तथा गच्छान्नि सारितस्यापि यस्य

नहीं छीना जाता है। विषयदुष्ट से भिन्न जो कषायदुष्ट, प्रमत्त और अन्योऽन्यकुर्वाण हैं, ये तीन नियमत लिङ्गपाराञ्चिक किये जाते हैं, अर्थात् इनका साधुवेष ले लिया जाता है।

जिस दुष्कर्म से साधु पाराञ्चिक होता है, उस दुष्कर्म के कारण जो साधु उत्कृष्ट अपराधी हो गया हो, वह साधु यदि भद्रक हो और वह ऐसा नियम करे कि "मै अब फिर कभी भी ऐसा नहीं करूँगा" तब वह साधु तप पाराञ्चिक किया जाता है, अर्थात् उससे पाराञ्चिक तप कराया जाता है। पाराञ्चिक तप करने की योग्यता जैसे होती है सो कहते है-जो साधु वज्र-ऋषभ-नाराच-सहननवाला हो, वज्र की भींत के समान दृढ जिसका वीर्य=पराक्रम हो, समुद्र के समान जिसमें गाम्भीर्य हो, मेरु के समान जिसमें धीरता हो, तथा जो आगम को जानने वाला हो अर्थात् जघन्य से नवमपूर्वान्तर्गत आचाराख्य तृतीय वस्तु को, उत्कृष्ट से सम्पूर्ण दशम पूर्व को सूत्र से और अर्थ से जानने वाला हो, सिंहविक्रीडित आदि तप कर चुका हो, इन्द्रिय और कषायों के निग्रह करने मे समर्थ हो, प्रवचन के गूढार्थ को जानने वाला हो, गच्छ से निकाले जाने पर भी जिसके मनमे 'मै गच्छ से निकाला

જે દુષ્કર્મથી સાધુ પારાચિક થાય છે તે દુષ્કર્મના કારણે જે સાધુ ઉત્કૃષ્ટ અપરાધી થયો હોય તે સાધુ જો પ્રકૃતિભદ્રક હોય અને જો તે એવી પ્રતિજ્ઞા કરે કે 'હુ હવે ફરીને કદી આવુ નહિ કરૂ' તો તે સાધુ તપ પારાચિક કરાય છે, અર્થાત્ તેની પાસે પારાચિક તપ કરાવવામા આવે છે પારાચિક તપ કરવાની યોગ્યતા કેવી હોય તે કહે છે–જે સાધુ વજ્રઋષભનારાચસહુનનવાળા હોય, વજ્રની ભીતના જેવા દૃઢ જેનુ વીર્ય–પરાક્રમ હોય, સમુદ્રની જેમ જેનામા ગાભીર્ય હોય, મેરૂની પેઠે જેનામા ધીરતા હોય, તથા જે આગમને જાણવાવાળા હોય અર્થાત્ જઘન્યથી નવમપૂર્વગત આચારાખ્ય ત્રીજી વસ્તુને, ઉત્કૃષ્ટથી સપૂર્ણ દશમ પૂર્વને સૂત્રથી તથા અર્થથી જાણનારા હોય, સિહવિક્રીડિત આદિ તપ કરી ચૂકયા હોય, ઇંદ્રિય અને કાષાયોના નિગ્રહ કરવામા સમર્થ હોય, પ્રવચનના ગૂઢાર્થને જાણવાવાળા હોય, ગચ્છ

से किं तं विणए ? विणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा-

गच्छान्नि सारितोऽस्मीत्यशुभो भाव स्वल्पतरोऽपि न विद्यते स एवंविधगुणसम्पन्न पाराञ्चिक प्रायश्चित्त कर्तुमर्हति। यस्त्वेतद्गुणरहितस्तस्य पाराञ्चिकापत्तिं प्राप्तस्य मूलमेव देयं भवति।

आशातनापाराञ्चिको जघन्येन षण्मासान्, उत्कर्षतश्च द्वादश मासान् भवति, एतावन्त ---गच्छान्निर्यूढ (निष्कासित) स्तिष्ठति। प्रतिसेवनापाराञ्चिको जघन्येन संवत्सरमुत्कर्षतो द्वादश वर्षाणि निर्यूढ आस्ते। विस्तरस्तु—अन्यत्र द्रष्टव्य। 'से त पायच्छित्ते' तदेतत्प्रायश्चित्तम्।

'से किं त विणए' अथ कोऽसौ विनय ? विनय किंस्वरूप इति प्रश्न। उत्तरमाह—'विणए' विनय —विनयति—अपनयति अष्टविधकर्माणीति विनय =अभ्युत्थानवन्दन-

गया हूँ' यह अशुभ भाव अणुमात्र भी न हो, इस प्रकार के गुणों से युक्त ही साधु पाराञ्चिक प्रायश्चित्त का अधिकारी है। जो साधु इन गुणों से रहित है, उससे पाराञ्चिकार्ह प्रायश्चित्त योग्य अपराध हो गया है, उसको मूलार्ह प्रायश्चित्त ही दिया जाता है।

आशातनापाराञ्चिक साधु जघन्य से छ मास तक और उत्कर्ष से बारह मास-तक गच्छ से बहिष्कृत रहता है। प्रतिसेवनापाराञ्चिक साधु जघन्य से एक वर्ष और उत्कर्ष से बारह वर्ष गच्छ से बहिष्कृत रहता है। इसका विस्तृत वर्णन अन्यत्र देखना चाहिये। (से त पायच्छित्ते) ये दस प्रकार के प्रायश्चित्त है ॥सू० ३०॥

(से किं त विणए) विनय का क्या स्वरूप है? (विणए सत्तविहे पण्णत्ते) विनय सात प्रकार का है। जो अष्टविध कर्मों को दूर करता है, वह विनय है।

માથી કાઢેલા છતા પણ જેના મનમા 'હુ ગચ્છથી બહિષ્કાર પામેલો છુ' એ અશુભ ભાવ અણુમાત્ર પણ ન હોય, એ પ્રકારના ગુણોવાળો જ સાધુ પારાચિક પ્રાયશ્ચિત્તનો અધિકારી છે જે સાધુ એ ગુણોથી રહિત છે તેનાથી પારાચિકાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત યોગ્ય અપરાધ થઈ ગયો હોય તો તેને મૂલાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત જ અપાય છે આશાતનાપારાચિક સાધુ જઘન્યથી છ માસ સુધી અને ઉત્કર્ષથી બાર માસ સુધી ગચ્છથી બહિષ્કૃત રહે છે પ્રતિસેવના-પારાચિક સાધુ જઘન્યથી એક વર્ષ અને ઉત્કર્ષથી બાર વર્ષ સુધી ગચ્છથી બહિષ્કૃત રહે છે તેનુ વિસ્તૃત વર્ણન બીજેથી જોઈ લેવુ જોઈએ (से त-पायच्छित्ते) આ દશ પ્રકારના પ્રાયશ્ચિત્ત છે (સૂ० ૩૦)

(से किं त विणए) વિનય તપનુ સ્વરૂપ શુ છે? ઉત્તર-(विणए सत्तविहे पण्णत्ते) તે સાત

यस्तु साधुः कर्मदोषात् पाराञ्चिकापत्तियोग्यात् उत्कृष्टमपराधपदं प्राप्तः, स यदि भद्रकः 'पुनरेव न करिष्यामी'–ति व्यवसितस्तदा स तपःपाराञ्चिकः–अर्थात् तपःसमाराधनतत्परः पाराञ्चिकः क्रियते। तस्य तपःकरणयोग्यता यथा भवति तदुच्यते–वज्रऋषभनाराचसंहननः, वज्रकुड्यसमानवीर्यः, सागरवद्गम्भीरता, मेरुवद्धीरता, आगमज्ञान–जघन्येन नवमपूर्वान्तर्गतमाचाराख्यं तृतीयं वस्तु, उत्कर्षतो दशमपूर्वं सम्पूर्णं, तच्च सूत्रतोऽर्थतश्च यदि परिचितं भवति। एतैः संहननादिभिः सम्पन्नः, तथा सिंहविक्रीडितादितपःकर्मभावितः, इन्द्रियकषायाणां निग्रहे समर्थः, प्रवचनरहस्यार्थज्ञानसम्पन्नश्च, तथा गच्छान्निःसारितस्यापि यस्य

नहीं छीना जाता है। विषयदुष्ट से भिन्न जो कषायदुष्ट, प्रमत्त और अन्योऽन्यकुर्वाण हैं, ये तीन नियमतः लिङ्गपाराञ्चिक किये जाते हैं, अर्थात् इनका साधुवेष ले लिया जाता है।

जिस दुष्कर्म से साधु पाराञ्चिक होता है, उस दुष्कर्म के कारण जो साधु उत्कृष्ट अपराधी हो गया हो, वह साधु यदि भद्रक हो और वह ऐसा नियम करे कि "मैं अब फिर कभी भी ऐसा नहीं करूँगा" तब वह साधु तपःपाराञ्चिक किया जाता है, अर्थात् उससे पाराञ्चिक तप कराया जाता है। पाराञ्चिक तप करने की योग्यता जैसे होती है सो कहते है-जो साधु वज्र-ऋषभ-नाराच-संहननवाला हो, वज्र की भींत के समान दृढ जिसका वीर्य=पराक्रम हो, समुद्र के समान जिसमें गाम्भीर्य हो, मेरु के समान जिसमें धीरता हो, तथा जो आगम को जानने वाला हो अर्थात् जघन्य से नवमपूर्वान्तर्गत आचाराख्य तृतीय वस्तु को, उत्कृष्ट से सम्पूर्ण दशम पूर्व को सूत्र से और अर्थ से जानने वाला हो, सिंहविक्रीडित आदि तप कर चुका हो, इन्द्रिय और कषायों के निग्रह करने में समर्थ हो, प्रवचन के गूढार्थ को जानने वाला हो, गच्छ से निकाले जाने पर भी जिसके मनमें 'मैं गच्छ से निकाला

જે દુષ્કર્મથી સાધુ પારાચિક થાય છે તે દુષ્કર્મના કારણે જે સાધુ ઉત્કૃષ્ટ અપરાધી થયો હોય તે સાધુ જો પ્રકૃતિભદ્રક હોય અને જો તે એવી પ્રતિજ્ઞા કરે કે 'હું હવે ફરીને કદી આવું નહિ કરૂં' તો તે સાધુ તપપારાચિક કરાય છે, અર્થાત્ તેની પાસે પારાચિક તપ કરાવવામાં આવે છે પારાચિક તપ કરવાની યોગ્યતા કેવી હોય તે કહે છે–જે સાધુ વજ્રઋષભનારાચ-સંહનનવાળા હોય, વજ્રની ભીંતના જેવા દૃઢ જેનુ વીર્ય–પરાક્રમ હોય, સમુદ્રની જેમ જેનામાં ગાભીર્ય હોય, મેરૂની પેઠે જેનામાં ધીરતા હોય, તથા જે આગમને જાણવાવાળા હોય અર્થાત્ જઘન્યથી નવમપૂર્વગત આચારાખ્ય ત્રીજી વસ્તુને, ઉત્કૃષ્ટથી સંપૂર્ણ દશમ પૂર્વને સૂત્રથી તથા અર્થથી જાણનારા હોય, સિંહવિક્રીડિત આદિ તપ કરી ચૂકયા હોય, ઇન્દ્રિય અને કષાયોના નિગ્રહ કરવામાં સમર્થ હોય, પ્રવચનના ગૂઢાર્થને જાણવાવાળા હોય, ગચ્છ

मणपज्जवणाणविणए ४, केवलणाणविणए ५। से किं तं दंसण-विणए? दंसणविणए दुविहे पण्णत्ते तं जहा-सुस्सूसणाविणए १, अणच्चासायणाविणए २। से किं तं सुस्सूसणाविणए? सुस्सू-

विणए' श्रुतज्ञानविनय, 'ओहिणाणविणए' अवधिज्ञानविनय 'मणपज्जवणाण-विणए' मनःपर्ययज्ञानविनय, 'केवलणाणविणए' केवलज्ञानविनय। अथ दर्शनविनयं पृच्छति-'से किं तं दंसणविणए' अथ कोऽसौ दर्शनविनय? 'दंसणविणए' दर्शन-विनय-दर्शनमोहनीयक्षयादिजनिततत्त्वश्रद्धानरूप आत्मपरिणामो दर्शन, तत्सम्बन्धी विनयः दर्शनविनय, स 'दुविहे पण्णत्ते' द्विविध प्रज्ञप्त, द्वैविध्य दर्शयति-'त जहा' तद्यथा-'सुस्सूसणाविणए' शुश्रूषणाविनय-विधिसामीप्येन गुर्वादि सेवन शुश्रूषणा, तद्रूपो विनय। 'अणच्चासायणाविणए' अनत्याशातनाविनय - 'अति=अत्यन्त, आय= सम्यक्त्वादिलाभ-अत्याय, तस्य शातना=ध्वसना-अत्याशातना, तन्निषेधरूपो विनयोऽनत्या-शातनाविनय, गुर्वादिरवर्णवादादिनिवारणम्। पृषोदरादित्वात्सिद्धि।

णाणविणए, ओहिणाणविणए मणपज्जवणाणविणए केवलणाणविणए) आभिनिबोधिक-ज्ञानविनय, श्रुतज्ञानविनय, अवधिज्ञानविनय, मनःपर्ययज्ञानविनय, एव केवलज्ञानविनय। (से किं तं दंसणविणए) दर्शनविनय कितने प्रकार का है? (दंसणविणए दुविहे पण्णत्ते) दर्शनविनय दो प्रकार का है। (त जहा) वे प्रकार ये हैं-(सुस्सूसणा-विणए अणच्चासायणाविणए) पहला-शुश्रूषाविनय-गुरु आदि के समीप रह कर विधि-पूर्वक सेवा करना। दूसरा-अनत्याशातनाविनय-सम्यक्त्वादिक के लाभ को जो नष्ट करता है वह अत्याशातना है, इसका निषेधरूप जो विनय है वह अनत्याशातनाविनय है। गुरु आदि के अवर्णवाद को दूर करना-निवारण करना, इसका नाम अनत्याशातनाविनय है।

मणपज्जवणाणविणए, केवलणाणविणए) १ આભિનિબોધિકજ્ઞાનવિનય, २ શ્રુતજ્ઞાન વિનય, ૩ અવધિજ્ઞાનવિનય, ૪ મનઃપર્યયજ્ઞાનવિનય, ૫ કેવલજ્ઞાનવિનય પ્રશ્ન-(से किं तं दंसणविणए) દર્શનવિનય કેટલા પ્રકારનો છે? ઉત્તર-(दंसण-विणए दुविहे पण्णत्ते) દર્શનવિનય બે પ્રકારનો છે, (त जहा) તે આ પ્રકારે છે-(सुस्सूसणाविणए अणच्चासायणाविणए) પહેલો-શુશ્રૂષાવિનય-ગુરુ આદિની પાસે રહીને વિધિપૂર્વક સેવા કરવી, બીજો અનત્યાશાતનાવિનય-સમ્યક્ત્વ આદિકના લાભનો જે નાશ કરે છે તે અત્યાશાતના છે, તેનો નિષેધરૂપ જે વિનય છે તે અનત્યાશાતનાવિનય છે ગુરુ આદિના અવર્ણવાદને દૂર કરવો-તેનું નિવારણ કરવું તેનું નામ અનત્યાશાતનાવિનય છે પ્રશ્ન-(से किं त सुस्सूसणा

णाणविणए १, दंसणविणए २, चरित्तविणए ३, मणविणए ४, वयविणए ५, कायविणए ६, लोगोवयारविणए ७। से किं तं णाणविणए? णाणविणए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा- आभिणिबोहियणाणविणए १, सुयणाणविणए २, ओहिणाणविणए ३,

भक्त्यादिरूप, स 'सत्तविहे पण्णत्ते' सप्तविध प्रज्ञप्त । 'तं जहा' तद्यथा-१-'णाणविणए' ज्ञानविनय, २-'दसणविणए' दर्शनविनय, ३-'चरित्तविणए' चारित्रविनय, ४ 'मणोविणए' मनोविनय, ५-'वइविणए' वाग्विनय, ६ 'कायविणए' काय विनय, ७-'लोगोवयारविणए' लोकोपचारविनय। एष सप्तविधोऽपि विनय क्रमेण स्वरूपतो भेदतश्च निरूप्यते-'से किं त णाणविणए' अथ कोऽसौ ज्ञानविनय? उत्तरमाह- 'णाणविणए' ज्ञानविनय 'पचविहे पण्णत्ते' पञ्चविध प्रज्ञप्त, 'त जहा' तद्यथा- तत्पञ्चविधत्व दर्शयति-'आभिणिबोहियणाणविणए' आभिनिबोधिकज्ञानविनय, 'सुयणाण-

यह विनय गुरु आदि के आने पर खडे हो जाना, तथा वदना, शुश्रूषा, भक्ति आदि करना, इस रूप से शास्त्रों मे प्रतिपादित किया गया है। (त जहा) विनय के सात प्रकार ये है-(णाणविणए, दसणविणए, चरित्तविणए, मणविणए, वइविणए, कायविणए, लोगोवयारविणए) ज्ञानविनय, दर्शनविनय, चारित्रविनय, मनोविनय, वचनविनय, कायविनय, और लोकोपचारविनय। अब यथाक्रम इनके स्वरूप और भेदों का वर्णन सूत्रकार करते है-(से किं त णाणविणए) वह ज्ञानविनय क्या है? अर्थात् जिसमे ज्ञान का विनय किया जाता है ऐसा वह ज्ञानविनय कितने प्रकार का है?, (णाणविणए पचविहे पण्णत्ते) ज्ञानविनय पाच प्रकार का कहा है। (त जहा) वे पाच प्रकार ये है-(आभिणिबोहियणाणविणए, सुय-

પ્રકારના છે જે આઠ જાતના કર્મોને દૂર કરે છે તે વિનય છે આ વિનય તપ, ગુરુ આદિ પધારતા ઉભા થઈ જવુ, તથા વદના, શુશ્રૂષા આદિ કરવા, એ રૂપે શાસ્ત્રોમા પ્રતિપાદન કર્યું છે (त जहा) વિનય તપના તે સાત પ્રકાર આ છે-(णाणविणए दसणविणए चरित्तविणए मणविणए वयविणए कायविणए लोगोवयारविणए) ૧ જ્ઞાનવિનય, ૨ દર્શનવિનય, ૩ ચારિત્રવિનય, ૪ મનોવિનય, ૫ વચનવિનય, ૬ કાય વિનય, અને ૭ લોકોપચારવિનય હવે તેનુ ક્રમવાર સ્વરૂપ તથા પ્રકારોનુ વર્ણન સૂત્રકાર કરે છે-(से किं त णाणविणए) તે જ્ઞાનવિનય શુ છે?, અર્થાત્ જેમા જ્ઞાનનો વિનય કરાય છે એવો તે જ્ઞાનવિનય કેટલા પ્રકારનો છે? (णाणविणए पचविहे पण्णत्ते) જ્ઞાનવિનય પાચ પ્રકારનો કહેલો છે (त जहा) તે પાચ પ્રકાર આ છે-(आभिणिबोहियणाणविणए, सुयणाणविणए, ओहिणाणविणए,

स्स अणुगच्छणया ८, ठियस्स पज्जुवासणया ९, गच्छंतस्स पडिसंसाहणया १०, से तं सुस्सूसणाविणए। से किं त अणच्चासायणाविणए? अणच्चासायणाविणए पणयालीसविहे पण्णत्ते, तं जहा-अरहंताणं अणच्चासायणया १, अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अण-

'अंजलिप्पगहे इ वा' अञ्जलिप्रग्रह इति वा-अञ्जलिप्रग्रह=गुरुसन्मुखे अञ्जलीकरणम्।७। 'एतस्स अणुगच्छणया' आगच्छतोऽनुगमनता-गुर्वादिकम् आयान्तं प्रति सम्मुखे गमनम्।८। 'ठियस्स पज्जुवासणया' स्थितस्य पर्युपासनता-उपविष्टस्य गुर्वादेरिच्छानुकूलसेवा।९। 'गच्छंतस्स पडिससाहणया' गच्छतः प्रतिसंसाधनता=गच्छतो गुर्वादेः पश्चाद् गमनशीलता।१०। 'से त सुस्सूसणाविणए' स एष शुश्रूषणाविनय। अनत्याशातना पृच्छति-'से किं त अणच्चासायणाविणए' अथ कोऽसौ अनत्याशातनाविनय? 'अणच्चासायणाविणए' अनत्याशातनाविनय-'पणयालीसविहे पण्णत्ते' पञ्चचत्वारिंशद्विध प्रज्ञप्त। 'त जहा' तद्यथा-'अरहंताणं अणच्चासायणया' अर्हतामनत्याशातनता-

दिकों की सविधि वन्दना करना (६)। (अंजलिप्पगहे इ वा) गुरु के सन्मुख दोनों हाथ जोडना (७)। (एतस्स अणुगच्छणया) गुर्वादिक आ रहे हों तो उनके सन्मुख जाना (८)। (ठियस्स पज्जुवासणया) जब वे बैठे हों तो उनकी इच्छानुकूल सेवा करना (९)। (गच्छंतस्स पडिससाहणया) जब वे जाने लगें तो उनके पीछे २ चलना (१०)। (से त सुस्सूसणाविणए) यह सब शुश्रूषणाविनय है। (से किं त अणच्चासायणाविणए) अनत्याशातनाविनय कितने प्रकार का है? (अणच्चासायणाविणए पणयालीसविहे पण्णत्ते) अनत्याशातनाविनय पैंतालीस प्रकार का है, (त जहा) वे प्रकार ये है-(अरहंताणं अणच्चासायणया) अर्हंत भगवान् का अवर्णवाद आदि नहीं करना (१),

म्मे इ वा) यथाविधि वंदना करवी ओ कृतिकर्म छे, अथात् गुरु आदिकोनी सविधि वंदना करवी (६) (अंजलिप्पग्गहे इ वा) गुरुनी सामे बन्ने हाथ जोडवा (७) (एतस्स अणुगच्छणया) गुरु आदि पधारता होय त्यारे तेमनी सामे जवु (८) (ठियस्स पज्जुवासणया) ज्यारे तेओ बेठा होय त्यारे तेमनी ईच्छाने अनुकूळ सेवा करवी (९) (गच्छतस्स पडिससाहणया) ज्यारे तेओ जवा लागे त्यारे तेमनी पाछळ पाछळ चालवु (१०) (से त सुस्सूसणाविणए) ओ बधा शुश्रूषणाविनय छे प्रश्न-(से किं तं अणच्चासायणाविणए) अनत्याशातनाविनय केटला प्रकारनो छे? उत्तर-(अणच्चासायणाविणए पणयालीसविहे पण्णत्ते) अनत्याशातना विनय पिस्तालीस प्रकारनो छे, (त जहा) ते प्रकार आ छे-(अरहंताण अणच्चासायणया) अर्हंत

सणाविणए अणेगविहे पण्णत्ते; तं जहा–अब्भुट्ठाणे इ वा १, आसणाभिग्गहे इ वा २, आसणप्पदाणे इ वा ३, सक्कारे इ वा ४, सम्माणे इ वा ५, किइकम्मे इ वा ६; अंजलिप्पग्गहे इ वा ७, एंत-

'से किं त सुस्सूसणाविणए' अथ कोऽसौ शुश्रूषणाविनय ?—'सुस्सूसणाविणए' शुश्रूषणाविनय 'अणेगविहे पण्णत्ते' अनेकविध प्रज्ञप्त -'त जहा' तद्यथा—'अब्भुट्ठाणे इ वा' अभ्युत्थानमिति वा, 'इति' 'वा' इति पदद्वय वाक्यालङ्कारे, एवमग्रेऽपि बोध्यम् । अभ्युत्थानम्—आचार्यादेरागतस्य अभिमुखम्—उत्थानम् अभ्युत्थान—विनयाऽर्हस्य दर्शनादेवाऽऽसनत्याग ।१। 'आसणाभिग्गहे इ वा' आसनाभिग्रह इति वा, आसनाभिग्रह —गुर्वादिर्यत्र यत्रोपवेष्टुमिच्छति तत्र तत्राऽऽसनप्रापणम् ।२। 'आसणप्पदाणे इ वा' आसनप्रदानमिति वा, गुरौ समागते सति आसनदानम् ।३। 'सक्कारे इ वा' सत्कार इति वा—विनयाऽर्हस्य गुर्वादे वन्दनादिनाऽऽदरकरण-सत्कार ।४। 'समाणे इ वा' सम्मान इति वा, सम्मानो वा—गुर्वादे आहारवस्त्रादिप्रशस्त-वस्तुना सम्माननम् ।५। 'किइकम्मे इ वा' कृतिकर्म इति वा—कृतिकर्म=यथाविधि वन्दनम् ।६।

(से किं त सुस्सूणाविणए) शुश्रूषणाविनय कितने प्रकार का—है ? (सुस्सूसणाविणए अणेगविहे पण्णत्ते) शुश्रूषणाविनय अनेक प्रकार का है, (त जहा) जैसे-(अब्भुट्ठाणे इ वा) आये हुए आचार्य आदि के आने पर खडे होना । विनय के योग्य साधुजन को देखते ही आसन का परित्याग करना (१) । (आसणाभिग्गहे इ वा) गुर्वादिक जहा २ बैठना चाहे वहा २ आसन लेकर उपस्थित रहना, अथवा आसन पहुँचाना (२)। (आसणप्पदाणे इ वा) गुरुके आने पर आसन प्रदान करना (३) (सक्कारे इ वा) विनययोग्य गुर्वादिक का वन्दना आदि द्वारा सत्कार करना (४) । (समाणे इ वा) गुर्वादिकों का आहार, वस्त्रादिक प्रशस्तवस्तुओं द्वारा सम्मान करना (५) । (किइकम्मे इ वा) यथाविधि वन्दना करना यह कृतिकर्म है, अर्थात्–गुर्वा-

विणए) શુશ્રૂષણાવિનય કેટલા પ્રકારનો છે ? (सुस्सूसणाविणए अणेगविहे पण्णत्ते) શુશ્રૂષણાવિનય અનેક પ્રકારનો છે, (त जहा) જેમ કે-(अब्भुट्ठाणे इ वा) અહીં "इ" "वा" એ બે શબ્દો વાક્યાલંકારમા વપરાયા છે પધારેલા આચાર્ય આદિની સામે જવું, વિનયને યોગ્ય સાધુજનોને જોતાં જ આસનનો પરિત્યાગ કરવો (૧) (आसणाभिग्गहे इ वा) ગુરુ આદિક જ્યાં જ્યાં બેસવા ચાહે ત્યાં ત્યાં આસન લઈને હાજર રહેવું, અથવા આસન પહોંચાડવું (૨) (आसणप्पदाणे इ वा) ગુરુ આવે ત્યારે આસન પ્રદાન કરવું (૩) (सक्कारे इ वा) વિનય યોગ્ય ગુરુ આદિકનો વંદના આદિ દ્વારા સત્કાર કરવો (૪) (संमाणे इ वा) ગુરુ આદિકનું આહાર–વસ્ત્રાદિક પ્રશસ્ત વસ્તુઓથી સન્માન કરવું (૫) (किइक-

१२, ओहिणाणस्स १३, मणपज्जवणाणस्स १४, केवलणाणस्स १५, एएसिं चेव भत्तिबहुमाणे ३०, एएसिं चेव वण्णसंजलणया ४५, से तं अणच्चासायणाविणए। से किं तं चरित्तविणए?,

'ओहिणाणस्स' अवधिज्ञानस्य ।१३। 'मणपज्जवणाणस्स' मनःपर्ययज्ञानस्य ।१४। 'केवलणाणस्स' केवलज्ञानस्य ।१५। 'एएसिं चेव भत्तिबहुमाणे' एतेषाञ्चैव भक्तिबहुमानम्-भक्तियुक्तं बहुमानम् 'अरहताण' इत्यारभ्य 'केवलणाणस्स' इति-पर्यन्तानामनत्याशातनता पञ्चदशविधा, पुनरेतेषामेव अर्हदादीनां भक्तिबहुमानयोगे त्रिंशद्विधत्वम् । पुनः-'एएसिं चेव वण्णसंजलणया' एतेषामेव वर्णसंज्वलनता=सद्भूतगुणोत्कीर्तनता, अत्रेदं बोध्यम्-अनत्याशातनाविनयो हि पञ्चचत्वारिंशद्विधः प्रोक्तः, तत्र-अर्हदादिविनयाः पञ्चदश, अर्हदादिभक्तिबहुमानानि पञ्चदश, अर्हदादीनां वर्णसंज्वलनताश्च पञ्चदश, तदित्थमनत्याशातनाविनयः पञ्चचत्वारिंशद्विध इति । उपसंहरन्नाह-'से त अणच्चासायणाविणए' स एषोऽनत्याशातनाविनयः । इति । 'से किं त चरित्तविणए?' अथ कोऽसौ चारित्र-

(१२), (ओहिणाणस्स) अवधिज्ञान का (१३), (मणपज्जवणाणस्स) मनःपर्ययज्ञान का (१४) और (केवलणाणस्स) केवलज्ञान का अवर्णवाद नहीं करना (१५)। (एएसिं चेव भत्तिबहुमाणे) तथा इन्हीं पन्द्रह भेदों का भक्तिपूर्वक बहुमान करना। इस प्रकार इन पन्द्रह भेदों को भक्तिबहुमान के साथ द्विगुणित करने से तीस भेद हो जाते हैं। पुनः (एएसिं चेव वण्णसंजलणया) इन्हीं के सद्भूत गुणों का उत्कीर्तन करना। इस तरह तीस में पन्द्रह वर्णसंज्वलनता मिलाने से पैंतालीस भेद अनत्याशातनाविनय के होते हैं। इस प्रकार (से त अणच्चासायणाविणए) यह सब अनत्याशातनाविनय है। प्रश्न-(से किं त चरित्तविणए) चारित्रविनय कितने प्रकार का है? उत्तर-(चरित्त-

(१२), (ओहिणाणस्स) અવધિજ્ઞાનનો (१३), (मणपज्जवणाणस्स) મનઃપર્યવજ્ઞાનનો (१४), અને (केवलणाणस्स) કેવલજ્ઞાનનો અવર્ણવાદ ન બોલવો (१५) (एएसिं चेव भत्तिबहुमाणे) તથા આ જ પંદર પ્રકારોનું ભક્તિપૂર્વક બહુમાન કરવા એ પ્રકારે પંદર પ્રકારના ભક્તિબહુમાનની સાથે બમણા કરવાથી તીસ પ્રકાર થઈ જાય છે વળી (एएसिं चेव वण्णसंजलणया) તેમના સદ્‌ભૂત ગુણોનું ઉત્કીર્તન કરવું એ રીતે તીસ મા પંદર વર્ણસંજ્વલનતા મેળવવાથી પિસતાલીસ પ્રકાર અનત્યશાતનાવિનયના થાય છે (से त अणच्चासायणाविणए) આ પ્રકારે એ બધા અનત્યાશાતનાવિનય છે પ્રશ્ન-(से किं त चरित्तविणए) ચારિત્રવિનય-કેટલા પ્રકારનો છે? ઉત્તર-(चरित्तविणए पंचविहे पण्णत्ते) ચારિત્રવિનય પાંચ પ્રકારનો

च्चासायणया २, आयरियाणं अणच्चासायणया ३, एवं उवज्झायाणं ४, थेराणं ५, कुलस्स ६, गणस्स ७, संघस्स ८, किरियाणं ९, संभोगस्स १०, आभिणिबोहियणाणस्स ११, सुयणाणस्स

अर्हद्भगवतामवर्णवादादिनिवारणम् ।१। 'अरहतपण्णत्तस्स धम्मस्स अणच्चासायणया' अर्हत्प्रज्ञप्तस्य धर्मस्य अनत्याशातनता–सर्वज्ञकथितधर्मस्याऽवर्णवादादिनिवारणम् ।२। 'आयरियाण अणच्चासायणया' आचार्याणामनत्याशातनता ।३। एवम्–'उवज्झायाणं' उपाध्यायानाम् ।४। 'थेराण' स्थविराणाम् ।५। 'कुलस्स' कुलस्य–एकाचार्यसन्ततिरूपस्य समानाऽऽचारसाधुसमूहस्य ।६। 'गणस्स' गणस्य–परस्परसापेक्षाऽनेककुलसाधुसमुदायस्य ।७। 'सघस्स' सघस्य-सम्यग्दर्शनादियुक्तसाधुसाध्वीश्रावकश्राविकारूपस्य ।८। 'किरियाण' क्रियाणाम्–ईर्यापथिकादीनाम् ।९। "सभोगस्स' सम्भोगस्य–सम्=एकत्र भोगो=भोजन–सभोग –समानसामाचारीतया साधूना परस्परमुपध्यादिदानग्रहणमव्यवहारस्तस्य, एकसामाचारिकताया इत्यर्थ ।१०। 'आभिणिबोहियणाणस्स' आभिनिबोधिकज्ञानस्य ।११। 'सुयणाणस्स' श्रुतज्ञानस्य ।१२।

(अरहतपण्णत्तस्स धम्मस्स अणच्चासायणया) अर्हंत भगवान् द्वारा प्रज्ञप्त धर्मका अवर्णवाद आदि नहीं करना (२), (आयरियाण अणच्चासायणया) आचार्य महाराज का अवर्णवाद नहीं करना (३), इसी तरह (उवज्झायाणं) उपाध्याय का (४), (थेराण) स्थविरों का (५), (कुलस्स) एक आचार्य के सन्ततिरूप समान आचार वाले साधुओं के समूह का (६), (गणस्स) परस्पर सापेक्ष अनेककुलवाले साधुसप्रदाय का (७), (सघस्स) सम्यग्दर्शन आदि से युक्त साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकारूप सघ का (८), (किरियाण) ईर्यापथिक आदि क्रियाओं का (९), (सभोगस्स) सभोग–एकसामाचारिकता का (१०), (आभिणिबोहियणाणस्स) आभिनिबोधिक ज्ञान का (११), (सुयणाणस्स) श्रुतज्ञान का

ભગવાનનો અવર્ણવાદ ન બોલવો (૧), (अरहतपण्णत्तस्स धम्मस्स अणच्चासायणया) અર્હંત ભગવાન દ્વારા પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનો અવર્ણવાદ ન બોલવો (૨),(आयरियाण अणच्चासायणया) આચાર્ય મહારાજનો અવર્ણવાદ ન બોલવો (૩), એ રીતે (उवज्झायाण) ઉપાધ્યાયોનો (૪), (थेराण) સ્થવિરોનો (૫), (कुलस्स) એક આચાર્યના સંતતિરૂપ સમાન આચારવાળા સાધુઓના સમૂહનો (૬), (गणस्स) પરસ્પરસાપેક્ષ અનેક કુળવાળા સાધુસંપ્રદાયનો (૭), (सघस्स) સમ્યગ્દર્શન આદિથી યુક્ત સાધુ–સાધ્વી–શ્રાવક–શ્રાવિકા રૂપ સંઘનો (૮), (किरियाण) ઈર્યાપથિક આદિ ક્રિયાઓનો (૯), (समोगस्स) સંભોગ–એકસામાચારિકતાનો (૧૦), (आभिणिबोहियणाणस्स) આભિનિબોધિક જ્ઞાનનો (૧૧), (सुयणाणस्स) શ્રુતજ્ઞાનનો

छेदोवट्ठावणियचरित्तविणए २, परिहारविसुद्धिचरित्तविणए ३, सुहुमसंपरायचरित्तविणए ४, अहक्खायचरित्तविणए ५, से तं

नय ।१। 'छेदोवट्ठावणियचरित्तविणए' छेदोपस्थापनीयचारित्रविनय –छेदेन=पूर्वपर्याय-च्छेदन उपस्थाप्यते=आरोप्यते यन्महाव्रतलक्षण चारित्र तच्छेदोपस्थापनीयम्, तच्च तच्चारित्र च, तत्सम्बन्धी विनय ।२। 'परिहारविसुद्धिचरित्तविणए' परिहारविशुद्धि-चारित्रविनय –परिहरण–परिहारस्तपोविशेष, तेन कर्मनिर्जरारूपा विशुद्धिर्यस्मिन् चारित्रे तत्परिहारविशुद्धि, तादृश चारित्र, तत्सम्बन्धी विनय ।३। 'सुहुमसंपरायचरित्तविणए' सूक्ष्मसम्परायचारित्रविनय –सम्पर्येति ससारमनेनेति सम्पराय =कषायोदय, सूक्ष्मो लोभाशाव-शेष सम्परायो यत्र तत्सूक्ष्मसम्पराय, तद्रूप यच्चारित्र, तत्सम्बन्धी विनय, ।४। 'अह-क्खायचरित्तविणए' यथाख्यातचारित्रविनय –याथातथ्येनाऽभिविधिना च यदाख्यात

कर पुन महाव्रतों का जिसमे आरोपण किया जाता है वह छेदोपस्थापनीयचारित्र है। इस चारित्रसबधी जो विनय है वह छेदोपस्थापनीयचारित्रविनय है २। "परिहरण परिहारः" परिहरण अर्थात् गच्छ का परित्याग करने का नाम परिहार है, यह परिहार एक प्रकार का विशेष तप है। इससे कर्मों की निर्जरारूप विशुद्धि जिस चारित्र मे होती है उसका नाम परिहारविशुद्धिचारित्र है, इस चारित्रसबधी जो विनय है वह परिहारविशुद्धिचारित्रविनय है ३। 'सपराय' शब्द का अर्थ कषाय है, क्यों कि इसीके वश मे होकर जीव ससार मे परिभ्रमण किया करता है। जिस चारित्र मे सूक्ष्म लोभ के अश का सद्भाव पाया जाता है वह सूक्ष्मसपरायचारित्र है। इस चारित्र के विनय करने का नाम सूक्ष्मसपरायचारित्रविनय है ४। तीर्थकर प्रभु ने जिस यथार्थता एव अभिविधि के अनुसार चारित्र का प्रतिपादन किया

સામાયિક ચારિત્રનો જે વિનય તે સામાયિકચારિત્રવિનય છે પૂર્વ દીક્ષા-પર્યાયનુ છેદન કરી ફરીને મહાવ્રતોનુ જેમા આરોપણ કરાય છે તે છેદોપ-સ્થાપનીયચારિત્ર છે આ ચારિત્રસબધી જે વિનય છે તે છેદોપસ્થાપનીય-ચારિત્રવિનય છે "परिहरणं परिहार," પરિહરણ અર્થાત્ ગચ્છનો પરિત્યાગ કરવાનુ નામ પરિહાર છે, આ પરિહાર એક પ્રકારનુ વિશેષ તપ છે તેનાથી કર્મોની નિર્જરારૂપ વિશુદ્ધિ જે ચારિત્રમા થાય છે તેનુ નામ પરિહારવિશુદ્ધિ-ચારિત્ર છે આ ચારિત્રસબધી જે વિનય છે તે પરિહારવિશુદ્ધિચારિત્રવિનય છે 'સપરાય' શબ્દનો અર્થ કષાય છે, કેમકે એને જ વશ થઈને જીવ સસારમા પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે જે ચારિત્રમા સૂક્ષ્મલોભના અશનો સદ્ભાવ મળે છે તે સૂક્ષ્મસપરાયચારિત્ર છે આ ચારિત્રના વિનયનુ નામ સૂક્ષ્મસપરાયચારિત્રવિનય

चरित्तविणए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—सामाइयचरित्तविणए १,

विनयः—अनकजन्मसञ्चिताऽष्टविधकर्मसञ्चयस्य क्षयाय चरणं चारित्रं—सर्वविरतिलक्षणम्, तत्सम्बन्धी विनयश्चारित्रविनयः, स कतिविधः?, इति प्रश्नः, उत्तरमाह—'चरित्तविणए पंचविहे पण्णत्ते' चारित्रविनयः पञ्चविधः प्रज्ञप्तः 'तं जहा' तद्यथा—'सामाइयचरित्तविणए' सामायिकचारित्रविनयः—सर्वजीवेषु रागद्वेषविरहितो भावः समः, तस्य समस्य=प्रतिक्षणम-पूर्वापूर्वकर्मनिर्जराहेतुभूताया विशुद्धेरायो लाभः समायः, स एव सामायिकम्—सावद्ययोग-विरतिरूपम्, विनयादित्वात् स्वार्थे ठक्, तद्रूपं चारित्रं, तस्य विनयः—सामायिकचारित्रवि-

विणए पचविहे पण्णत्ते) अनेक जन्म म उपार्जित आठ प्रकार के कर्मों के क्षय के लिये जो आचरण क्रिया जाय वह सर्वविरतिरूप चारित्र है। इस चारित्र का विनय करना सो चारित्रविनय है। वह पाँच प्रकार का है। (तं जहा) वे प्रकार ये हैं-(सामाइयचरित्तविणए छेदोवट्ठावणियचरित्तविणए परिहारविसुद्धिचरित्तविणए सुहुमसंपरायचरित्तविणए अहक्खायचरित्तविणए) सामायिकरूप चारित्र का विनय, छेदोपस्थापनीयचारित्र का विनय, परिहारविशुद्धिचारित्र का विनय, सूक्ष्मसम्परायचारित्र का विनय, एवं यथाख्यातचारित्र का विनय। समस्त जीवों में राग एवं द्वेष की परिणति का परिहार करना इसका नाम "सम" है। प्रतिक्षण अपूर्व अपूर्व कर्मनिर्जरा के कारण इस समरूप विशुद्धि का आय=लाभ होना इसका नाम 'समाय' है। "समाय" ही सामायिक है। यह सामायिक सर्वसावद्ययोगविरतिरूप है। इस प्रकार इस सर्वसावद्ययोगविरतिरूप सामायिकचारित्र का जो विनय है वह सामायिकचारित्रविनय है १। पूर्वदीक्षापर्याय का छेदन

છે અનેક જન્મમા ઉપાર્જિત આઠ પ્રકારના કર્મોના ક્ષયને માટે જે આચરણ કરાય છે તે સર્વવિરતિરૂપ ચારિત્ર છે (तं जहा) તે પ્રકાર આ છે-(सामाइयचरित्तविणए छेदोवट्ठावणियचरित्तविणए परिहारविसुद्धिचरित्तविणए, सुहुमसपरायचरित्तविणए, अहक्खायचरित्तविणए) સામાયિકરૂપચારિત્રનો વિનય, છેદોપસ્થાપનીયચારિત્રનો વિનય, પરિહારવિશુદ્ધિચારિત્રનો વિનય, સૂક્ષ્મસંપરાયચારિત્રનો વિનય, તેમ જ યથાખ્યાતચારિત્રનો વિનય સમસ્ત જીવોમા રાગ તેમજ દ્વેષની પરિણતિનો પરિહાર (ત્યાગ) કરવો તેનુ નામ "सम" છે પ્રતિક્ષણે અપૂર્વ અપૂર્વ કર્મનિર્જરાના કારણભૂત આ સમરૂપ વિશુદ્ધિનો લાભ થવો તેનુ નામ "आय" છે सम અને आय એ બન્ને પદોને મેળવવાથી 'समाय' એવુ પદ બની જાય છે समाय એ જ સામયિક છે આ સામાયિક સર્વસાવદ્યયોગવિરતિરૂપ છે આ પ્રકારે આ સર્વસાવદ્યયોગવિરતિરૂપ

सकिरिए २, सकक्कसे ३, कडुए ४, णिट्ठुरे ५, फरुसे ६, अण्हयकरे ७, छेयकरे ८, भेयकरे ९, परितावणकरे १०, उद्दवणकरे ११, भूओवघाइए १२, तहप्पगारं मणो णो पहारेज्जा, से तं अप्पस-

य मणे' यच्च मन –'सावज्जे' सावद्य–सपापम् ।१। 'सकिरिए' सक्रियम्=प्राणातिपाताद्यारम्भक्रियायुक्तम् ।२। 'सकक्कसे' सकार्कश्यम्=कर्कशतासहितम् ।३। 'कडुए' कटुकम्–स्वस्य परस्य च कटुकरसवद् उद्वेजकम् ।४। 'णिट्ठुरे' निष्ठुर–दयारहितम् ।५। 'फरुसे' परुष–कठोरम् ।६। 'अण्हयकरे' आस्रवकरम्=आस्रवकारि ।७। 'छेयकरे' छेदकरम्=संयमसमाधिविनाशकम् ।८। 'भेयकरे' भेदकरम्=समाधिविघातकम् ।९। 'परितावणकरे' परितापनकरम्–प्राणिनां सन्तापजनकम् ।१०। 'उद्दवणकरे' उपद्रवणकरम्–प्राणान्तकष्टकारकम् ।११। 'भूओवघाइए' भूतोपघातिकम्-भूतानां=प्राणिनामुपघातो हिंसा, सोऽस्याऽस्तीति भूतोपघातिकम् ।१२।। 'तहप्पगारं मणो णो पहारेज्जा' तथाप्रकारं=तादृशं मनो नो प्रधारयेत् =नो प्रवर्तयेत्–असंयमक्रियासु मनो नोदीरयेत्। 'से तं अप्पसत्थमणविणए' स एषोऽप्रशस्तमनोविनयः । 'से किं तं पसत्थमणविणए' अथ कोऽसौ प्रशस्तमनोविनयः ?–

अण्हयकरे ७, छेयकरे ८, भेयकरे ९, परितावणकरे १०, उद्दवणकरे ११, भूओवघाइए १२)–जो मन सावद्य–पापसहित हो १, सक्रिय–प्राणातिपातादिक आरम्भक्रियायुक्त हो २, सकर्कश–प्रेमभाव से रहित हो ३, कटुक–अपने तथा पर के लिये कटुकरस के समान उद्वेजक हो ४, निष्ठुर–दयारहित हो ५, परुष–कठोर हो ६, आस्रवकर–आस्रवकारी हो ७, छेदकर–संयमरूपसमाधि का विध्वंसक हो ८, भेदकर–समाधिविघातक हो ९, परितापनकर–प्राणियों को सन्ताप का जनक हो १०, उपद्रवणकर–उपद्रव का कर्त्ता हो ११, एवं भूतोपघातिक–प्राणियों का प्राणहर्त्ता हो १२, वह मन अप्रशस्त है। (तहप्पगारं मणो णो पहारेज्जा) ऐसे मन को असंयम क्रियाओं में प्रवृत्त नहीं करना। (से तं अप्पसत्थमणविणए) वह अप्रशस्तमनोविनय है। (से किं तं पसत्थमणविणए) प्रशस्तमनोविनय क्या है ? उत्तर–

જે મન સાવદ્ય–પાપસહિત હોય, સક્રિય–પ્રાણાતિપાતાદિક આરંભક્રિયાયુક્ત હોય, પ્રેમભાવથી રહિત હોય, પોતાના તથા પારકા માટે કડવા રસની પેઠે ઉપદ્રવજનક હોય, નિષ્ઠુર–દયારહિત હોય, પરુષ–કઠોર હોય, આસ્રવકારી હોય, સંયમરૂપ સમાધિનો વિધ્વંસક હોય, શરીરાદિકનું ભેદક હોય, પ્રાણિઓને સંતાપજનક હોય, ઉપદ્રવ કરનારું હોય, તેમ જ પ્રાણિઓનું પ્રાણ લેનારું હોય તે મન અપ્રશસ્ત છે (तहप्पगारं मणो णो पहारेज्जा) એવા મનને અસંયમ ક્રિયાઓમાં પ્રવૃત્ત ન કરવું, (से तं अप्पसत्थमणविणए) તે અપ્રશસ્તમનોવિનય છે પ્રશ્ન–(से किं तं पसत्थमणविणए)

चरित्तविणए। से किं तं मणविणए? मणविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–पसत्थमणविणए १, अप्पसत्थमणविणए २। से किं तं अप्पसत्थमणविणए? अप्पसत्थमणविणए–जे य मणे सावज्जे १,

तीर्थंकरैः कथितमकषायं चारित्रमिति तत् यथाख्यातचारित्रं, तस्य कषायरहितचारित्रस्य विनयः ।५। 'से तं चरित्तविणए' स एष चारित्रविनयः । 'से किं तं मणविणए' अथ कोऽसौ मनोविनयः? उत्तरमाह–'मणविणए'–मनोविनयः–मन्यते चिन्त्यतेऽनेनेति मनः, तत्सम्बन्धी विनयः, 'दुविहे पण्णत्ते' द्विविधः प्रज्ञप्तः, 'तं जहा' तद्यथा'–पसत्थमणविणए' प्रशस्तमनोविनयः–प्रशस्तम्=अवद्यरहितं मनोऽन्तःकरणं, तस्य विनयः ।१। 'अप्पसत्थमणविणए' अप्रशस्तमनोविनयः–अप्रशस्तमनसो विनयः ।२। 'से किं तं अप्पसत्थमणविणए' अथ कोऽसौ अप्रशस्तमनोविनयः? उत्तरमाह–'अप्पसत्थमणविणए–जे

है, इस रूप के चारित्र का नाम यथाख्यातचारित्र है। इस चारित्र का विनय करना सो यथाख्यातचारित्रविनय है ५। (से तं चरित्तविणए) यह सब चारित्रविनय है। प्रश्न–(से किं तं मणविणए) मन का विनय कितने प्रकार का है? उत्तर–(मणविणए दुविहे पण्णत्ते) मनोविनय दो प्रकार का कहा गया है, (तं जहा) जैसे–(पसत्थमणविणए) प्रशस्त मन का विनय–पापरहित मन को अपनाना प्रशस्तमनोविनय है। (अप्पसत्थमणविणए) अप्रशस्त मन का विनय करना सो अप्रशस्तमनोविनय है। प्रश्न–(से किं तं अप्पसत्थमणविणए) अप्रशस्तमनोविनय क्या है? उत्तर–(अप्पसत्थमणविणए जे य मणे सावज्जे १, सकिरिए २, सकक्कसे ३, कडुए ४, णिट्ठुरे ५, फरुसे ६,

છે તીર્થંકર પ્રભુએ જે યથાર્થતા તેમજ અભિવિધિના અનુસાર ચારિત્રનું પ્રતિપાદન કર્યું છે તે રૂપના ચારિત્રનું નામ યથાખ્યાતચારિત્ર છે આ ચારિત્રનો વિનય કરવો તે યથાખ્યાતચારિત્રવિનય છે (से तं चरित्तविणए) આ બધા ચારિત્રવિનય છે

પ્રશ્ન–(से किं तं मणविणए) મનનો વિનય શું છે? કેટલા પ્રકારનો છે?

ઉત્તર–(मणविणए दुविहे पण्णत्ते) મનોવિનય બે પ્રકારનો કહેલો છે (तं जहा) જેમ કે–(पसत्थमणविणए) પ્રશસ્ત મનનો વિનય–પાપરહિત મનને અપનાવવું તે પ્રશસ્તમનોવિનય છે (अप्पसत्थमणविणए) અપ્રશસ્ત મનનો વિનય કરવો તે અપ્રશસ્તમનોવિનય છે પ્રશ્ન–(से किं तं अप्पसत्थमणविणए) અપ્રશસ્તમનોવિનય શું છે? ઉત્તર–(अप्पसत्थमणविणए–जे य मणे सावज्जे, सकिरिए, सकक्कसे, कडुए, णिट्ठुरे, फरुसे, अण्हयकरे, छेयकरे, भेयकरे परितावणकरे, उद्दवणकरे, भूओवघाइए)

सकिरिए २, सकक्कसे ३, कडुए ४, णिट्ठुरे ५, फरुसे ६, अण्हयकरे ७, छेयकरे ८, भेयकरे ९, परितावणकरे १०, उद्दवणकरे ११, भूओवघाइए १२, तहप्पगारं मणो णो पहारेज्जा, से तं अप्पस-

य मणे' यच्च मन –'सावज्जे' सावद्य–सपापम् ।१। 'सकिरिए' सक्रियम्=प्राणातिपाताद्यारम्भक्रियायुक्तम् ।२। 'सकक्कसे' सकार्कश्यम्=कर्कशतासहितम् ।३। 'कडुए' कटुकम्–स्वस्य परस्य च कटुकरसवद् उद्वेजकम् ।४। 'णिट्ठुरे' निष्ठुर–दयारहितम् ।५। 'फरुसे' परुष–कठोरम् ।६। 'अण्हयकरे' आस्रवकरम्=आस्रवकारि ।७। 'छेयकरे' छेदकरम्=संयमसमाधिविनाशकम् ।८। 'भेयकरे' भेदकरम्=समाधिविघातकम् ।९। 'परितावणकरे' परितापनकरम्–प्राणिनां सन्तापजनकम् ।१०। 'उद्दवणकरे' उपद्रवणकरम्–प्राणान्तकष्टकारकम् ।११। 'भूओवघाइए' भूतोपघातिकम्-भूतानां=प्राणिनामुपघातो हिंसा, सोऽस्याऽस्तीति भूतोपघातिकम् ।१२॥ 'तहप्पगारं मणो णो पहारेज्जा' तथाप्रकारं=तादृशं मनो नो प्रधारयेत् =नो प्रवर्तयेत्–असंयमक्रियासु मनो नोदीरयेत्। 'से तं अप्पसत्थमणविणए' स एषोऽप्रशस्तमनोविनयः । 'से किं तं पसत्थमणविणए' अथ कोऽसौ प्रशस्तमनोविनयः ?–

अण्हयकरे ७, छेयकरे ८, भेयकरे ९, परितावणकरे १०, उद्दवणकरे ११, भूओवघाइए १२)–जो मन सावद्य–पापसहित हो १, सक्रिय–प्राणातिपातादिक आरम्भक्रियायुक्त हो २, सकर्कश–प्रेमभाव से रहित हो ३, कटुक–अपने तथा पर के लिये कटुकरस के समान उद्वेजक हो ४, निष्ठुर–दयारहित हो ५, परुष–कठोर हो ६, आस्रवकर–आस्रवकारी हो ७, छेदकर–संयमरूपसमाधि का विध्वंसक हो ८, भेदकर–समाधिविघातक हो ९, परितापनकर–प्राणियों को सन्ताप का जनक हो १०, उपद्रवणकर–उपद्रव का कर्ता हो ११, एवं भूतोपघातिक–प्राणियोंका प्राणहर्ता हो १२, वह मन अप्रशस्त है। (तहप्पगारं मणो णो पहारेज्जा) ऐसे मन को असंयम क्रियाओं मे प्रवृत्त नहीं करना। (से तं अप्पसत्थमणविणए) वह अप्रशस्तमनोविनय है। (से किं तं पसत्थमणविणए) प्रशस्तमनोविनय क्या है ? उत्तर–

જે મન સાવદ્ય–પાપસહિત હોય, સક્રિય–પ્રાણાતિપાતાદિક આરંભક્રિયાયુક્ત હોય, પ્રેમભાવથી રહિત હોય, પોતાના તથા પારકા માટે કડવા રસની પેઠે ઉપદ્રવજનક હોય, નિષ્ઠુર–દયારહિત હોય, પરુષ–કઠોર હોય, આસ્રવકારી હોય, સંયમરૂપ સમાધિનો વિધ્વંસક હોય, શરીરાદિકનું ભેદક હોય, પ્રાણિઓને સંતાપજનક હોય, ઉપદ્રવ કરનારું હોય, તેમ જ પ્રાણિઓનું પ્રાણ લેનારું હોય તે મન અપ્રશસ્ત છે (तहप्पगारं मणो णो पहारेज्जा) એવા મનને અસંયમ ક્રિયાઓમાં પ્રવૃત્ત ન કરવું, (से तं अप्पसत्थमणविणए) તે અપ્રશસ્તમનોવિનય છે પ્રશ્ન–(से किं तं पसत्थमणविणए)

स्थमणविणए । से किं तं पसत्थमणविणए ? पसत्थमणविणए-तं चेव पसत्थं णेयव्वं। एवं चेव वइविणओवि एएहिं पएहिं चेव णेयव्वो। से तं वइविणए।

'पसत्थमणोविणए' प्रशस्तमनोविनय 'त चेव पसत्थ णेयव्व' तदेव प्रशस्त नेतव्यम्=अप्रशस्ते यद्विशेषण तदेव प्रशस्तरूपेण परिवर्तनीयम्, यथा-प्राक् तत्र सावद्य-मित्युक्त, अत्र तु निरवद्यमिति वाच्यम्। इत्थ सर्वाणि विशेषणानि परिवर्तनीयानि, तथा सति प्रशस्तमनोविनय। 'एव चेव वइविणओवि एएहिं पएहिं चेव णेयव्वो' एवमेव वाग्-

---

(पसत्थमणविणए तं चेव पसत्थ णेयव्व) अप्रशस्त मन के जो विशेषण है उनका प्रशस्तरूप मे परिवर्तन करने से प्रशस्तमन होता है। जैसे-जो मन निरवद्य-पापरहित हो १, अक्रिय-प्राणातिपातादिक क्रिया से विरत हो २, अकर्कश-प्रेमसहित हो ३, अकटुक-स्वपर का उद्वेग करने वाला नहीं हो ४, अनिष्ठुर-दयायुक्त हो ५, अपरुष-कोमल हो ६, अनास्रवकर-संवरयुक्त हो ७, अच्छेदकर-छेदकर नहीं हो, अर्थात् संयमसमाधि से युक्त हो ८, अभेदकर-भेदकर नहीं हो, अर्थात् समाधियुक्त हो ९, अपरितापनकर-प्राणियों के लिये संतापकर नहीं हो, अर्थात् शान्तिजनक हो १०, अनुपद्रवकर-प्राणियों का उपद्रवकारी नहीं हो ११, और अभूतोपघातिक-प्राणियों का उपघात करनेवाला नहीं हो १२। ऐसा मन प्रशस्तमन कहा गया है। इसका जो विनय-आदर सो प्रशस्तमनोविनय है। (एव चेव वइविणओवि एएहिं पएहिं चेव णेयव्वो) इसी प्रकार वचन का विनय भी प्रशस्त

પ્રશસ્તમનોવિનય શું છે? ઉત્તર-(पसत्थमणविणए-त चेव पसत्थ णेयव्व) અપ્રશસ્ત મનના જે વિશેષણો છે તેમનું પ્રશસ્ત રૂપમાં પરિવર્તન કરવાથી પ્રશસ્ત મન થાય છે જેમકે-જે મન નિરવદ્ય-પાપરહિત હોય, અક્રિય-પ્રાણાતિપાતાદિક ક્રિયાઓથી વિરત હોય, અકર્કશ-પ્રેમસહિત હોય, અકટુક-સ્વપરનો ઉદ્વેગ કરવાવાળું ન હોય, અનિષ્ઠુર-દયાવાળું હોય, અપરુષ-કોમળ હોય, અનાસ્રવકર-સંવરવાળું હોય, અચ્છેદકર-છેદન કરવાવાળું ન હોય અર્થાત્ સંયમસમાધિથી યુક્ત હોય, અભેદકર-ભેદ કરનાર ન હોય, અર્થાત્ સમાધિયુક્ત હોય, અપરિતાપનકર-પ્રાણિઓને માટે સંતાપકર ન હોય, અર્થાત્ શાંતિજનક હોય, અનુપદ્રવકર-પ્રાણિઓને ઉપદ્રવકારી ન હોય અને અભૂતોપઘાતિક-પ્રાણિઓનો ઉપઘાત કરનાર ન હોય, એવું મન પ્રશસ્તમન કહેવાય છે તેનો જે વિનય-આદર તે પ્રશસ્તમનોવિનય છે (एव चेव वइविणओवि एएहिं पएहिं चेव णेयव्वो) એ જ

विनयोऽप्येते पदैरेव वक्तव्य-प्रथम प्रशस्ताऽप्रशस्तभेदेन द्विविध विधाय, तत परम् अप्रशस्तवाग्विनये सावद्यादिविशेषणानि देयानि, प्रशस्तवाग्विनये निरवद्यादीनि विशेष-

और अप्रशस्त भेद से दो प्रकार का है। जो वचन सावद्य-पापसहित हो, सक्रिय-प्राणातिपातादिक की आरम्भक्रिया स युक्त हो, सकर्कश-कर्कशता से युक्त हो, कटुक-स्वपर को कटुकरस के समान उद्विग्न करने वाला हो, निष्ठुर-दयारहित हो, परुष-कठोर हो, आस्रवकर-आस्रवका उपादक हो, छेदकर-सयमसमाधि का विनाशक हो, भेदकर-समाधि का विनाशक हो, परितापनकर-प्राणियो के लिये सन्तापजनक हो, उपद्रवणकर-प्राणियों के लिये उपद्रवकारी हो, तथा भूतोपघातिक-प्राणियों की हिंसा करने वाला हो, ऐसा वचन अप्रशस्तवचन है। इस तरह का वचन नहीं बोलना अप्रशस्तवचनविनय है। तथा-जो वचन निरवद्य-पापरहित हो, अक्रिय-प्राणातिपातादिक क्रिया से विरत हो, अकर्कश-प्रेमसहित हो, अकटुक-स्वपर के लिये उद्वेगजनक नहीं हो, अनिष्ठुर-दया-सहित हो, अपरुष-कोमल हो, अनास्रवकर-सवरयुक्त हो, अच्छेदकर-छेदकर नहीं हो अर्थात् सयमसमाधि से युक्त हो, अभेदकर-भेदकर नहीं हो, अर्थात समाधियुक्त हो, अपरितापनकर-प्राणियों को सन्ताप देने वाला नहीं हो, अनुपद्रवणकर-प्राणियों के लिये उपद्रव करने वाला नहीं हो, और अभूतोपघातिक-प्राणियों की हिंसा करने वाला नहीं हो,

પ્રકારે વચનનો વિનય પણ પ્રશસ્ત અને અપ્રશસ્ત ભેદે કરીને બે પ્રકારનો છે જે વચન સાવદ્ય-પાપસહિત હોય, સક્રિય-પ્રાણાતિપાતાદિકની આરભ-ક્રિયાથી યુક્ત હોય, સકર્કશ-કર્કશતાવાળુ હોય, કટુક-સ્વપરના કટુ (કડવા) રસની પેઠે ઉદ્વિગ્ન કરવાવાળુ હોય, નિષ્ઠુર-દયારહિત હોય, પરુષ-કઠોર હોય, આસ્રવકર-આસ્રવનુ ઉત્પાદક હોય, છેદકર-સયમ સમાધિનુ વિનાશક હોય, ભેદકર-સમાધિનુ વિઘાતક હોય, ઉપદ્રવણકર-પ્રાણિઓને માટે ઉપદ્રવકારી હોય, તથા ભૂતોપઘાતિક-પ્રાણીઓની હિસા કરનારુ હોય, એવુ વચન અપ્રશસ્ત વચન છે એવી જાતનુ વચન બોલવુ નહિ તે અપ્રશસ્તવચનવિનય છે તથા જે વચન નિરવદ્ય-પાપરહિત હોય, અક્રિય-પ્રાણાતિપાતાદિક ક્રિયાથી વિરત હોય, અકર્કશ-પ્રેમસહિત હોય, અકટુક-સ્વપરના માટે ઉદ્વેગજનક ન હોય, અનિષ્ઠુર-દયાવાળુ હોય, અપરુષ-કોમળ હોય, અનાસ્રવકર-સવર યુક્ત હોય, અચ્છેદકર-છેદકર ન હોય, અર્થાત્ સયમ-સમાધિવાળુ હોય, અભેદકર-ભેદકર ન હોય, અર્થાત્ સમાધિયુક્ત હોય, અપરિતાપનકર-પ્રાણિઓને સતાપ આપનાર ન હોય, અનુપદ્રવકર-પ્રાણિઓને માટે ઉપદ્રવ કરનારુ ન હોય અને અભૂતોપઘાતિક-પ્રાણિઓની હિસા કરવાવાળુ ન હોય એવા

से किं तं कायविणए?, कायविणए दुविहे पण्णत्ते; तं जहा-पसत्थकायविणए १, अप्पसत्थकायविणए २। से किं तं अप्पसत्थकायविणए? अप्पसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते; तं जहा-अणाउत्तं गमणे १, अणाउत्तं ठाणे २, अणाउत्तं

णानि योजनीयानि। 'से त वइविणए' स एष वाग्विनय।

कायविनय पृच्छति-'से किं त कायविणए' अथ कोऽसौ कायविनय? उत्तरमाह-'कायविणए'-कायविनय 'दुविहे पण्णत्ते' द्विविध प्रज्ञप्त, १ 'पसत्थकायविणए' प्रशस्तकायविनय, २-'अप्पसत्थकायविणए' अप्रशस्तकायविनय। 'से किं त अप्पसत्थकायविणए' अथ कोऽसौ अप्रशस्तकायविनय? 'अप्पसत्थकायविणए' अप्रशस्तकायविनय 'सत्तविहे पण्णत्ते' सप्तविध प्रज्ञप्त। सप्तविधत्व दर्शयति-'त जहा' तद्यथा-'अणाउत्त गमणे' अनायुक्त गमनम्=ऐर्यापथिक्यामसावधानतया गमनम् ।१। 'अणाउत्त ठाणे' अनायुक्त स्थानम्=उपयोगाभावेन अवस्थानम्

ऐसे वचन को प्रशस्तवचन कहते हैं। ऐसे वचन का बोलना सो प्रशस्तवचनविनय है। (से त वइविणए) सो यह पूर्वोक्त वचनविनय है। अब कायविनय क्या है? इस बात को शिष्य पूछता-है (से किं त कायविणए) कायविनय क्या-कितने प्रकार का है? उत्तर (कायविणए दुविहे पण्णत्ते) कायविनय दो प्रकार का है (पसत्थकायविणए अप्पसत्थकायविणए) एक प्रशस्तकायविनय और दूसरा अप्रशस्तकायविनय। 'से किं त अप्पसत्थकायविणए?' अप्रशस्तकायविनय कितने प्रकार का है? 'अप्पसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते' अप्रशस्तकायविनय सात प्रकार का है, (त जहा) जैसे-(अणाउत्त गमणे) अनुपयुक्त गमन-ईर्यापथ मे विना उपयोग के गमन करना, (अणाउत्त ठाणे) विना उपयोग के खडा होना, (अणाउत्त निसीयणे)

વચનને પ્રશસ્ત વચન કહે છે એવા વચન બોલવા તે પ્રશસ્તવચનવિનય છે હવે કાયવિનય શુ છે? તે વાત શિષ્ય પૂછે છે-(से किं त कायविणए) કાયવિનય શુ છે-કેટલા પ્રકારનો છે? ઉત્તર-(कायविणए दुविहे पण्णत्ते) કાયવિનય બે પ્રકારનો છે-(पसत्थकायविणए अप्पसत्थकायविणए) એક-પ્રશસ્તકાયવિનય અને બીજો-અપ્રશસ્ત કાયવિનય (से किं त अप्पसत्थकायविणए) અપ્રશસ્તકાયવિનય કેટલા પ્રકારનો છે? (अप्पसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते) અપ્રશસ્તકાયવિનય સાત પ્રકારનો છે, (त जहा) જેમ કે (अणाउत्त गमणे) અનુપયુક્ત ગમન-ઈર્યાપથમા વિના ઉપયોગનુ ગમન કરવુ, (अणाउत्त ठाणे) વિના ઉપયોગનુ ઉભા રહેવુ (अणाउत्त निसीयणे)

निसीयणे ३, अणाउत्तं तुयट्टणे ४, अणाउत्तं उल्लंघणे ५. अणाउत्तं पल्लंघणे ६, अणाउत्तं सव्विंदियकायजोगजुंजणया ७, से तं अप्पसत्थकायविणए ?। पसत्थकायविणए एवं चेव पसत्थं भाणियव्वं। से तं पसत्थकायविणए। से तं कायविणए। से किं

।२। 'अणाउत्त निसीयणे' अनायुक्त निषदनम्=अनुपयोगनोपवेशनम् ।३। 'अणाउत्त तुयट्टणे' अनायुक्त त्वग्वर्तनम्=अनवधानतया त्वग्वर्तनं=मस्ताङ्के पार्श्वपरिवर्तनम् ।४। 'अणाउत्त उल्लंघणे' अनायुक्तमुल्लङ्घनम्=कर्दमादीनामतिक्रमणम् ।५। 'अणाउत्तं पल्लंघणे' अनायुक्त प्रोल्लङ्घनम्=पुन पुनरुल्लङ्घनम् ।६। 'अणाउत्त सव्विंदियकायजोगजुंजणया' अनायुक्त सर्वेन्द्रियकाययोगयोजनता=सर्वेषामिन्द्रियाणा काययोगस्य च योजन=प्रवर्तनम्-असावधानतया सर्वेन्द्रियकाययोगव्यापारणम् ।७। 'से त अप्पसत्थकायविणए' स एषोऽप्रशस्तकायविनय । 'से किं त पसत्थकायविणए' अथ कोऽसौ प्रशस्तकायविनय ? 'पसत्थकायविणए' प्रशस्तकायविनय -'एवं चेव पसत्थ भाणियव्व' एवमेव=अप्रशस्तवदेव प्रशस्तकायविनयो भणितव्य =वक्तव्य, यथा तत्राना-

विना उपयोग के बैठना, (अणाउत्त तुयट्टणे) विना उपयोग के विस्तर पर करवट बदलना, (अणाउत्त उल्लंघणे) विना उपयोग के कीचड़ आदि का लाघना, (अणाउत्तं पल्लंघणे) विना उपयोग के बार बार कीचड आदिका उल्लघन करना। (अणाउत्त सव्विंदियकायजोगजुंजणया) विना उपयोग के समस्त इन्द्रियों की एव काययोग की प्रवृत्ति करना, (से त अप्पसत्थकायविणए) इन सभी अप्रशस्त क्रियाओं से काय को रोकना अप्रशस्तकायविनय है। प्रश्न-(से किं त पसत्थकायविणए) प्रशस्तकायविनय क्या है ? उत्तर-(पसत्थकायविणए एवं चेव भाणियव्व से त पसत्थकायविणए) इसी तरह प्रशस्तकायविनय है, अर्थात अप्रशस्तकायविनय मे अनुपयुक्त अवस्था से होने वाली गमनादिक क्रियाएँ रोकी

વિના ઉપયોગનુ બેસવુ, (अणाउत्त तुयट्टणे) વિના ઉપયોગનુ પથારીમા પાસા બદલવા, (अणाउत्त उल्लघणे) વિના ઉપયોગે કીચડ વગેરે ટપવુ, (अणाउत्त पल्लघणे) ઉપયોગવગર વારવાર કીચડ વિગેરેનુ ઉલ્લઘન કરવુ, (अणाउत्तं सव्विंदियकायजोगजुजणया) વિના ઉપયોગનુ સમસ્ત ઇંદ્રિયોની તેમજ કાયયોગની પ્રવૃત્તિ કરવી, (से तं अप्पसत्थकायविणए) એ બધી અપ્રશસ્ત ક્રિયાઓથી કાયાને રોકવી તે અપ્રશસ્તકાયવિનય છે પ્રશ્ન-(से किं तं पसत्थकायविणए) પ્રશસ્તકાયવિનય શુ છે ? ઉત્તર-(पसत्थकायविणए-एव चेव भाणियव्व से तं पसत्थकायविणए) પ્રશસ્તકાયવિનય આ જ રીતે છે અર્થાત્ અપ્રશસ્તકાયવિનયમા અનુપયોગી અવ

तं लोगोवयारविणए? लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते; तं जहा–अब्भासवत्तियं १, परच्छंदाणुवत्तिय २, कज्जहेओ ३, कयपडिकिरिया ४, अत्तगवेसणया ५, देसकालण्णुया ६, सव्वट्ठेसु अप्पडिलोमया ७, से तं लोगोवयारविणए। से तं विणए ॥ सू० ३० ॥

युक्तमुक्तम्, अत्र सोपयोग गमनादिक वाच्यमित्यर्थ । 'से तं पसत्थकायविणए' स एष प्रशस्तकायविनय । 'से त कायविणए' स एष कायविनय । 'से किं त लोगोवयारविणए' अथ कोऽसौ लोकोपचारविनय ? लोकानामुपचरण लोकोपचार, तत्सम्बन्धी विनयो, लोकोपचारविनय, लोकव्यवहारसाधको विनय इत्यर्थ, 'लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते' लोकोपचारविनय सप्तविध प्रज्ञप्त,–'त जहा' तद्यथा–'अब्भासवत्तिय' अभ्यासवृत्तिता=कलाचार्यादिसमीपस्थितिशीलता ।१। 'परच्छंदाणुवत्तिय' परच्छन्दानुवर्तिता=पराभिप्रायानुवर्तनम् ।२। 'कज्जहेओ' कार्यहेतो =विद्यादिप्राप्तिनिमित्त–'श्रुत

जाती है और इस प्रशस्तकायविनय में ये सब ही कायसबंधी क्रियाएँ उपयुक्त होकर की जाती है। प्रश्न–(से किं त लोगोवयारविणए) लोकोपचार विनय क्या–कितने प्रकार का है? उत्तर–(लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते) लोकव्यवहारसाधक यह लोकोपचारविनय सात प्रकार का कहा गया है, (त जहा) वे सात सात प्रकार ये हैं–(अब्भासवत्तिय) अभ्यास-वर्तिता–कलाचार्य आदि के समीप मे स्थितिशीलता, अर्थात्–गुरु आदि के निकट रहने का स्वभाव होना, (परच्छदाणुवत्तिया) परच्छन्दानुवर्तिता–गुरु आदि की आज्ञा के अनुकूल अपनी प्रवृत्ति रखना, (कज्जहेओ) विद्या आदि की प्राप्ति के निमित्त भक्तपान

સ્થાથી થવાવાળી ગમનઆદિક ક્રિયાઓને રોકાય છે અને આ પ્રશસ્તકાયવિનયમા તે બધી કાયસબધી ક્રિયાઓ ઉપયોગી અવસ્થાથી કરાય છે પ્રશ્ન–(से किं त लोगोवयारविणए) લોકોપચાર વિનય શુ છે–કેટલા પ્રકારનો છે ? ઉત્તર–(लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते) લોકવ્યવહારસાધક આ લોકોપચારવિનય સાત પ્રકારનો કહેલો છે, (त जहा) તે સાત પ્રકાર આ છે–(अब्भासवत्तियं) અભ્યાસવર્તિતા–કલાચાર્યઆદિના સમીપમા સ્થિતિશીલતા, અર્થાત્ ગુરુ આદિની પાસે રહેવાનો સ્વભાવ હોવો, (परच्छदाणुवत्तिया) પરચ્છદાનુવર્તિતા–ગુરુ આદિની આજ્ઞાને અનુકૂળ પોતાની પ્રવૃત્તિ રાખવી, (कज्जहेओ) વિદ્યા આદિની પ્રાપ્તિને નિમિત્તે

मूलम्—से किं तं वेयावच्चे? वेयावच्चे दसविहे पण्णत्ते;

प्रापितोऽहमनेन'-ति हेतो शुश्रूषा ।३। 'कयपडिकिरिया' कृतप्रतिक्रिया "भक्तादिनोपचारे कृते सति प्रसन्ना गुरवो मे श्रुतदानरूपा प्रतिक्रिया-प्रत्युपकारं करिष्यन्ती"ति बुद्धचा गुरूणा शुश्रूषाकरणम् ।४। 'अत्तगवेसणया' आर्तगवेषणता—आर्तस्य=दुःखितस्य गवेषणता—औषधभैषज्यादिना पालितस्योपकारकरणम् ।५। 'देसकालण्णुया' देशकालज्ञता=देशकालोचितार्थसम्पादनम् ।६। 'सव्वट्ठेसु अप्पडिलोमया' सर्वार्थेषु अप्रतिलोमता=सर्वप्रयोजनेषु आनुकूल्यम्। 'से तं लोगोवयारविणए, से तं विणए' स एष लोकोपचारविनय, स एष विनय ॥ सू० ३०॥

टीका—आभ्यन्तरतपसस्तृतीयभेदं वैयावृत्त्यं नाम तपः पृच्छति-'से किं तं वेयावच्चे' अथ किं तद् वैयावृत्त्यम्? साधूनामाहारौषधादिभिः साहाय्यकरणं वैयावृत्त्यम्, तत्

आदि लाकर देना, (कयपडिकिरिया) कृतप्रतिक्रिया—कृत उपकार का ध्यान रखकर प्रत्युपकार करने की भावना से प्रीतियुक्त व्यवहार करना, (अत्तगवेसणया) आर्तगवेषणता—रोगादि अवस्था से युक्त गुरु महाराज आदि का औषध—भेषज द्वारा उपचार करना, (देसकालण्णुया) देशकालज्ञता—देशकाल के अनुसार प्रवृत्ति करना, (सव्वट्ठेसु अप्पडिलोमया) सब कार्यों में अप्रतिकूलता अर्थात् अनुकूलता रखना। (से तं लोगोवयारविणए) यह सब लोकोपचारविनय है। (से तं विणए) इस प्रकार विनय तप का वर्णन जानना चाहिये ॥ सू० ३० ॥

'से किं तं वेयावच्चे'।

सूत्रकार अब आभ्यन्तर तप का जो तृतीय भेद वैयावृत्त्य तप है उसका

ખાન-પાન આદિ લાવી આપવુ, (कयपडिकिरिया) કૃતપ્રતિક્રિયા-કરેલા ઉપકારને ધ્યાનમા રાખીને પ્રત્યુપકાર કરવાની ભાવનાથી પ્રીતિયુક્ત વ્યવહાર કરવો, (अत्तगवेसणया) આર્તગવેષણતા-રોગાદિ અવસ્થાવાળા ગુરુમહારાજ આદિનો ઔષધ-ભેષજથી ઉપચાર કરવો, (देसकालण्णुया) દેશકાલજ્ઞતા-દેશ કાલને અનુસરીને પ્રવૃત્તિ કરવી, (सव्वट्ठेसु अप्पडिलोमया) બધા કાર્યોમા અપ્રતિકૂલતા અર્થાત્ અનુકૂળતા રાખવી (से तं लोगोवयारविणए) એ બધા લોકોપચારવિનય છે (से तं विणए) એ પ્રકારે વિનય તપનુ વર્ણન જાણવુ જોઇએ (સૂ ૩૦)

'से किं तं वेयावच्चे' ઇત્યાદિ

સૂત્રકાર હવે આભ્યન્તર તપનો જે ત્રીજો ભેદ વૈયાવૃત્ય તપ છે તેનુ

तं जहा–आयरियवेयावच्चे १, उवज्झायवेयावच्चे २, सेहवेयावच्चे ३, गिलाणवेयावच्चे ४, तवस्सिवेयावच्चे ५, थेरवेयावच्चे ६, साहम्मिय-

‘दसविहे पण्णत्ते’ दशविधं प्रज्ञप्तम्, तं जहा–तद्यथा ‘आयरियवेयावच्चे’ आचार्यवैयावृत्यम्–आचार्यस्य वैयावृत्यम्=आहारादिभिः शुश्रूषाकरणम् ।१। ‘उवज्झायवेयावच्चे’ उपाध्यायवैयावृत्यम् ।२। ‘सेहवेयावच्चे’ शैक्षवैयावृत्यम्–नवदीक्षितो बालः शैक्षः, तस्य यथासाहाय्यदानम् ।३। ‘गिलाणवेयावच्चे’ ग्लानवैयावृत्यम्–ग्लानस्य=तपसा रुजया वा खिन्नस्य वैयावृत्यम् ।४। ‘तवस्सिवेयावच्चे’ तपस्विवैयावृत्यम्=निरन्तरं चतुर्थभक्तादिकरणशीलस्य मासक्षपणादिकरणशीलस्य वा वैयावृत्यम्, ‘थेरवेयावच्चे’ स्थविरवैयावृत्यम्–स्थवि-

वर्णन करते हैं। शिष्य पूछता है–हे भदन्त! (से किं तं वेयावच्चे) वैयावृत्य तप क्या–कितने प्रकार का है? उत्तर–(वेयावच्चे दसविहे पण्णत्ते) यह वैयावृत्यतप दस प्रकार का है। आहार औषध आदि द्वारा सहायता करना वैयावृत्य है। (तं जहा) उसके वे दस भेद इस प्रकार से हैं–(**आयरियवेयावच्चे, उवज्झायवेयावच्चे, सेहवेयावच्चे, गिलाणवेयावच्चे, तवस्सिवेयावच्चे, थेरवेयावच्चे, साहम्मियवेयावच्चे, कुलवेयावच्चे, गणवेयावच्चे, संघवेयावच्चे, से तं वेयावच्चे**) आचार्य महाराज का वैयावृत्य–आहार पानी आदि द्वारा सेवा करना, उपाध्याय का वैयावृत्य, शैक्ष–नवदीक्षित साधु का वैयावृत्य, ग्लान–तपस्या से अथवा रोग से ग्लान साधु का वैयावृत्य, तपस्वी–निरन्तर चतुर्थभक्त आदि तपस्या करने वाले अथवा मासक्षपणादि की तपस्या करनेवाले तपस्वी महाराज का वैयावृत्य, स्थविर–जरा से जर्जरित अथवा ज्ञान से वृद्ध साधु का वैयावृत्य, साधर्मिक–समान

વર્ણન કરે છે. શિષ્ય પૂછે છે–હે ભદન્ત! (से किं तं वेयावच्चे) વૈયાવૃત્ય તપ શું છે–કેટલા પ્રકારનું છે? ઉત્તર–(वेयावच्चे दसविहे पण्णत्ते) આ વૈયાવૃત્ય તપ ૧૦ પ્રકારનું છે આહાર ઔષધ આદિ દ્વારા સહાયતા કરવી તે વૈયાવૃત્ય છે (तं जहा) તેના એ દશ ભેદ આ પ્રકારે છે (आयरियवेयावच्चे, उवज्झायवेयावच्चे, सेहवेयावच्चे, गिलाणवेयावच्चे, तवस्सिवेयावच्चे, थेरवेयावच्चे, साहम्मियवेयावच्चे, कुलवेयावच्चे, गणवेयावच्चे, संघवेयावच्चे, से तं वेयावच्चे) આચાર્ય મહારાજનું વૈયાવૃત્ય–આહાર પાણી આદિ દ્વારા સેવા કરવી, ઉપાધ્યાયનું વૈયાવૃત્ય, શૈક્ષ–નવદીક્ષિત સાધુનું વૈયાવૃત્ય, ગ્લાન–તપસ્યાથી અથવા રોગથી ક્લાન્ત (દુર્બળ) સાધુનું વૈયાવૃત્ય, તપસ્વી–નિરંતર ચતુર્થભક્ત આદિ તપસ્યા કરવાવાળા અથવા માસક્ષપણ આદિની તપસ્યા કરવાવાળા તપસ્વી મહારાજનું વૈયાવૃત્ય, સ્થવિર–વૃદ્ધાવસ્થાથી જર્જરિત અથવા જ્ઞાનથી વૃદ્ધ સાધુનું વૈયા

वेयावच्चे ७, कुलवेयावच्चे ८, गणवेयावच्चे ९, संघवेयावच्चे १०, से तं वेयावच्चे। से किं तं सज्झाए? सज्झाए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा–वायणा १, पुच्छणा २ परियट्टणा ३, अणुप्पेहा ४,धम्म-

स्य=जराजीर्णस्य ज्ञानवृद्धस्य वा वैयावृत्यम् ।६। 'साहम्मियवेयावच्चे' साधर्मिकवैयावृत्यम्–समानधर्मणो वैयावृत्यम् ।७। 'कुलवेयावच्चे' कुलवैयावृत्यम्–एकाचार्यसन्ततिरूप कुल, तस्य वैयावृत्यम् ।८। 'गणवेयावच्चे' गणवैयावृत्यम्–कुलाना समूहो गणो–गच्छस्तस्य वैयावृत्यम् ।९। 'संघवेयावच्चे' सघवैयावृत्यम्–गणाना समुदाय सङ्घ तस्य वैयावृत्यम् ।१०। 'से तं वेयावच्चे' तदेतद् वैयावृत्यम्। 'से किं त सज्झाए' अथ क स स्वाध्याय? स्वाध्याय किंस्वरूप कतिविध? इति प्रश्ने–उत्तरमाह–'सज्झाए पचविहे पण्णत्ते' स्वाध्याय पञ्चविध प्रज्ञप्त, स्वाध्याय –सु=सुष्ठु आ=मर्यादया कालवेलापरिहारेण पौरुष्यपेक्षया वा अध्याय =श्रुतस्य अध्ययन स्वाध्याय । तत्पञ्चविधत्व दर्शयति–'त जहा' तद्यथा–'वायणा' वाचना–अध्यापनम्,

धर्मवालों का वैयावृत्य, कुल–एक आचार्य का सततिरूप मुनिजनों का वैयावृत्य, गण–कुलसमूहरूप गच्छ का वैयावृत्य और गण के समूहरूप सघका वैयावृत्य करना सो यह सब वैयावृत्य तप के भेद हैं। प्रश्न–(से किं त सज्झाए) स्वाध्याय तप क्या–कितने प्रकार का है? उत्तर–(सज्झाए पचविहे पण्णत्ते) स्वाध्याय तप पाच प्रकार का है। अकाल–वेला का परिहार करते हुए अपनी शक्ति के अनुसार श्रुतका अध्ययन करना स्वाध्याय है, उसके वे पाच प्रकार ये हैं-(वायणा, पुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा, धम्मकहा) वाचना, प्रच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा एव धर्मकथा। (से त सज्झाए) इस प्रकार स्वाध्याय पाच प्रकार का है। आचार्यादिक

વૃત્ય, સાધર્મિક–સમાનધર્મવાળાનું વૈયાવૃત્ય, કુળ–એક આચાર્યની સંતતિ રૂપ મુનિજનોનું વૈયાવૃત્ય, ગણ–કુળસમૂહરૂપ ગચ્છનું વૈયાવૃત્ય, અને ગણના સમૂહરૂપ સંઘનું વૈયાવૃત્ય કરવું, એ બધા વૈયાવૃત્ય તપના ભેદ છે પ્રશ્ન–(से किं त सज्झाए) સ્વાધ્યાય તપ શું છે–કેટલા પ્રકારનું છે? ઉત્તર–(सज्झाए पचविहे पण्णत्ते) સ્વાધ્યાય તપ પાચ પ્રકારનું છે અકાલવેળાનો ત્યાગ કરીને પોતાની શક્તિ અનુસાર શ્રુતનું અધ્યયન કરવું તે સ્વાધ્યાય છે તેના એ પાચ પ્રકાર આ છે-(वायणा, पुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा, धम्मकहा) વાચના, પ્રચ્છના, પરિવર્તના, અનુપ્રેક્ષા તેમજ ધર્મકથા (से तं सज्झाए) આ પ્રકારે સ્વાધ્યાય પાચ પ્રકારના છે આચાર્ય આદિક પાસેથી સૂત્ર આદિક ગ્રહણ કરવા તે 'વાચના' છે સૂત્ર આદિને પૂછવા તે 'પ્રચ્છના' છે શીખાવેલા સૂત્રનું વિસ્મરણ ન થઈ જાય તે

कहा ५, से तं सज्झाए। से किं तं झाणे? झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अट्टज्झाणे १, रुद्दज्झाणे २, धम्मज्झाणे ३, सुक्कज्झाणे ४।

'पुच्छणा' प्रच्छना, ।२। '**परियट्टणा**' परिवर्तना=अधीतस्य सूत्रस्य 'मा भूद् विस्मरण'—मिति कर्मनिर्जरार्थं पुनः पुनः कस्मिंश्चिदेकस्मिन् वस्तुनि अन्तर्मुहूर्तमात्रकालं चित्त स्थिरतास्य चिन्तन, तत्पठन, सूत्रस्य गुणनमित्यर्थः ।३। '**अणुप्पेहा**' अनुप्रेक्षा—सूत्रवदर्थेऽपि विस्मरण न भवति, अतः साऽपि परिभावनीय इत्यनुप्रेक्षण—चिन्तनमित्यर्थः ।४। '**धम्मकहा**' धर्मकथा—धर्मस्य=श्रुतरूपस्य या कथा=व्याख्या सा ।५। '**से तं सज्झाए**' स एष स्वाध्यायः । '**से किं त झाणे**' अथ किं तद् ध्यानम्? '**झाणे चउव्विहे पण्णत्ते**' ध्यान चतुर्विधं प्रज्ञप्तम्, **त जहा**—तद्यथा—१—'**अट्टज्झाणे**' आर्तध्यानम्—ऋतं=दुःख, तस्य निमित्त, यद्वा—तत्र भवम्—आर्त्तं तच्च तद् ध्यानम्, आर्तस्य=दुःखितस्य वा ध्यानम्—आर्तध्यानम्—मनोज्ञामनोज्ञवस्तुसंयोगवियोगादि-निबन्धनचित्तवैक्लव्यरूपम्। **तथा चोक्तम्**—

से सूत्रादिक का ग्रहण करना '**वाचना**' है । सूत्र आदि का पूछना '**प्रच्छना**' है । अधीत सूत्र का विस्मरण न हो जाय, इस विचार से पुनः पुनः उसकी आवृत्ति करना '**परिवर्त्तना**' है। सूत्रार्थ का पुनः पुनः चिन्तन करना '**अनुप्रेक्षा**' है। तथा धर्म की कथा करना—'**धर्मकथा**' है । प्रश्न—(**से किं त झाणे**) ध्यान का क्या स्वरूप है—वह कितने प्रकार है? उत्तर—(**झाणे चउव्विहे पण्णत्ते**) ध्यान के चार प्रकार है, (**तं जहा**) वे चार प्रकार ये हे—(**अट्टज्झाणे, रुद्दज्झाणे, धम्मज्झाणे, सुक्कज्झाणे**) आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान, एवं शुक्लध्यान। इनमे दुःख के निमित्त अथवा दुःख मे जो ध्यान होता है वह आर्त्तध्यान है, मनोज्ञ एव अमनोज्ञ वस्तु के सयोग और वियोग मे जो एक प्रकार की चित्त मे विकलता होती है वह आर्त्तध्यान है। कहा भी है—

વિચારથી ફરી ફરીને તેની આવૃત્તિ કરવી તે 'પરિવર્તના' છે સૂત્રના અર્થનુ ફરી ફરીને ચિંતન કરવુ તે 'અનુપ્રેક્ષા' છે તથા ધર્મની કથા કરવી 'ધર્મ-કથા' છે પ્રશ્ન-(से किं त झाणे) ધ્યાનનુ શુ સ્વરૂપ છે? તે કેટલા પ્રકારનુ છે? ઉત્તર (झाणे चउव्विहे पण्णत्ते) ધ્યાનના ચાર પ્રકાર છે, (त जहा) તે આ છે-(अट्टज्झाणे, रुद्दज्झाणे, धम्मज्झाणे, सुक्कज्झाणे,) આર્ત્તધ્યાન, રૌદ્રધ્યાન, ધર્મ-ધ્યાન તેમજ શુક્લધ્યાન તેમા દુખને નિમિત્તે અથવા દુખને સમયે જે ધ્યાન થાય છે તે આર્ત્તધ્યાન છે, મનોજ્ઞ તેમજ અમનોજ્ઞ વસ્તુના સયોગથી તેમજ વિયોગથી જે એક પ્રકારની ચિત્તમા વિકળતા થાય છે તે આર્ત્તધ્યાન છે કહ્યુ પણ છે—

राज्योपभोगशयनासनवाहनेषु, स्त्रीगन्धमाल्यमणिरत्नविभूषणेषु।
इच्छाभिलाषमतिमात्रमुपैति मोहाद्, ध्यानं तदार्त्तमिति सम्प्रवदन्ति तज्ज्ञाः॥१॥

२-'रुद्दज्झाणे' रौद्रध्यानम्-रोदयत्यपरान् इति रुद्रः=प्राण्युपघातादिपरिणतो जीवस्तस्य कर्म रौद्रम्-हिंसादिनिक्रूरतारूप, तद्रूपं ध्यानं रौद्रध्यानम्। तदुक्तम्—

सञ्छेदनैर्दहनभञ्जनमारणैश्च बन्धप्रहारदमनैर्विनिकृन्तनैश्च।
यो याति रागमुपयाति च नानुकम्पां ध्यानं तु रौद्रमिति तत्प्रवदन्ति तज्ज्ञाः॥२॥ इति।

राज्योपभोगशयनासनवाहनेषु, स्त्रीगन्धमाल्यमणिरत्नविभूषणेषु।
इच्छाभिलाषमतिमात्रमुपैति मोहाद्, ध्यानं तदार्त्तमिति सम्प्रवदन्ति तज्ज्ञाः" ॥ १ इति॥

राज्य का उपभोग, पलङ्ग आदि सुकोमल शय्या, सुन्दर आसन, घोडे हाथी आदि वाहन, मनोहारिणी स्त्रियाँ, इत्र आदि सुगन्धित वस्तुएँ, सुन्दर सुन्दर पुष्पों की गुम्फित मालाएँ, तथा मणिरत्नमय आभूषण, इन सबों में मोह के कारण जो मनुष्य की उत्कट अभिलाषा है, उस अभिलाषा को विज्ञ जन 'आर्त्तध्यान' कहते हैं॥ १॥

"रोदयति अपरान् इति रुद्रः" जो दूसरों को रुलाता है वह रुद्र है, अर्थात् प्राणियों की उपघात आदि क्रिया में लवलीन जो जीव है वह रुद्र है, रुद्र का जो कर्म वह रौद्र है। उसका हिंसादिक अतिक्रूरतारूप जो ध्यान है वह रौद्रध्यान है॥ कहा भी है—

सञ्छेदनैर्दहनभञ्जनमारणैश्च बन्धप्रहारदमनैर्विनिकृन्तनैश्च।
यो याति रागमुपयाति च नानुकम्पा, ध्यानं तु रौद्रमिति तत्प्रवदन्ति तज्ज्ञाः॥२॥

राज्योपभोगशयनासनवाहनेषु स्त्रीगन्धमाल्यमणिरत्नविभूषणेषु।
इच्छाभिलाषमतिमात्रमुपैति मोहाद्, ध्यानं तदार्त्तमिति सम्प्रवदन्ति तज्ज्ञाः॥१॥

રાજ્યનો ઉપભોગ, પલંગ આદિ સુકોમલ શય્યા, સુંદર આસન, ઘોડા હાથી આદિ વાહન, મનોહારિણી સ્ત્રીઓ, અત્તર આદિ સુગંધિત વસ્તુઓ, સુંદર સુંદર પુષ્પોની બનાવેલી સુલલિત માળાઓ, તથા મણિરત્નમય આભૂષણો, આ બધામાં મોહને કારણે જે મનુષ્યની ઉત્કટ અભિલાષા છે તે અભિલાષાને વિદ્વાનો 'આર્ત્તધ્યાન' કહે છે (૧)

"रोदयति अपरान् इति रुद्रः" જે બીજાને રોવરાવે તે રુદ્ર છે, અર્થાત્ પ્રાણિઓની ઉપઘાત (મારવું) આદિ ક્રિયાઓમાં લવલીન રહેતો જે જીવ છે તે રુદ્ર છે, રુદ્રનું જે કર્મ તે રૌદ્ર છે તેનું હિંસાદિક અતિક્રૂરતા-રૂપ જે ધ્યાન છે તે રૌદ્રધ્યાન છે કહ્યું પણ છે—

सञ्छेदनैर्दहनभञ्जनमारणैश्च, बन्धप्रहारदमनैर्विनिकृन्तनैश्च।
यो याति रागमुपयाति च नानुकम्पा, ध्यानं तु रौद्रमिति तत्प्रवदन्ति तज्ज्ञाः॥२॥

३–'धम्मज्झाणे' धर्मध्यानम्=सर्वज्ञाऽऽज्ञाद्यनुचिन्तनम्। उक्तञ्च—

" सूत्रार्थसाधनमहाव्रतधारणेषु,
बन्धप्रमोक्षगमनागमनेषु चिन्ता।
पञ्चेन्द्रियव्युपरमश्च दया च भूते,
ध्यानं तु धर्ममिति संप्रवदन्ति तज्ज्ञाः" ॥३॥ इति।

जो मनुष्य छेदन, दहन अर्थात् जलाना, भञ्जन–तोडना–भाँगना, मारण–प्राणरहित करना, बाँधना, प्रहार करना, दमन करना, काटना आदि क्रियाओं में आनन्द मानता है, प्राणियों पर जिसको अनुकम्पा नहीं होती है, ऐसे मनुष्य की उन दुष्प्रवृत्तियों को विज्ञ जन ' रौद्रध्यान ' कहते है ॥ २ ॥

सर्वज्ञ की आज्ञा आदि का अनुचिन्तनरूप धर्मध्यान है। कहा भी है—

सूत्रार्थसाधनमहाव्रतधारणेषु, बन्धप्रमोक्षगमनागमनेषु चिन्ता।
पञ्चेन्द्रियव्युपरमश्च दया च भूते, ध्यानं तु धर्ममिति संप्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥३॥

सूत्र और सूत्र के अर्थ का चिन्तन करना, साधन का चिन्तन करना, अर्थात् साधूपकरण की प्रतिलेखना करने में तत्परता रखना, महाव्रत धारण का चिन्तन करना अर्थात् महाव्रत जो धारण किये हैं उनमें कोई अतिचार न लगे इसके लिये सर्वदा प्रयत्नशील होना , बन्ध और मोक्ष के स्वरूप का चिन्तन करना, 'चतुर्गतिक संसार में जीव का गमनागमन किस कारण से होता है' उसका चिन्तन करना, पाँचों इन्द्रियों का निग्रह करना,

---

જે મનુષ્ય છેદન, દહન અર્થાત્ બાળવુ, ભજન=તોડવુ–ભાગવુ, મારણ–પ્રાણરહિત કરવુ, બાધવુ, પ્રહાર કરવો, દમન કરવુ, કાપવુ આદિ ક્રિયાઓમા આનદ માને છે, પ્રાણિઓ ઉપર જેને દયા નથી આવતી એવા મનુષ્યના એ દુષ્પ્રવૃત્તિઓને વિદ્વાનો 'રૌદ્રધ્યાન' કહે છે (૨)

સર્વજ્ઞની આજ્ઞા આદિનુ અનુચિતનરૂપ ધર્મધ્યાન છે કહ્યુ પણ છે –

सूत्रार्थसाधनमहाव्रतधारणेषु, बन्धप्रमोक्षगमनागमनेषु चिन्ता ।
पञ्चेन्द्रियव्युपरमश्च दया च भूते, ध्यानं तु धर्ममिति संप्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥३॥

સૂત્ર અને સૂત્રના અર્થનુ ચિતન કરવુ, સાધનનુ ચિતન કરવુ અર્થાત્ સાધુના ઉપકરણની પ્રતિલેખના કરવામા તત્પરતા રાખવી, મહાવ્રત ધારણનુ ચિતન કરવુ, અર્થાત્ મહાવ્રત જે ધારણ કર્યા છે તેમા કોઇ અતિચાર ન લાગે તે માટે સર્વદા પ્રયત્નશીલ રહેવુ, બધ અને મોક્ષના સ્વરૂપનુ ચિતન કરવુ, ચતુર્ગતિક સસારમા જીવનુ આવવા–જવાનુ શુ કારણથી થાય છે?

४-'शुच ज्ञाणे' शुक्लध्यानम्-शुच=शोक क्लमयति=अपनयतीति शुक्ल-भवक्षयकारण, शुक्ल च तद् ध्यान शुक्लध्यानम्। तथा चोक्तम्—

"यस्येन्द्रियाणि विषयेषु पराङ्मुखानि,
सङ्कल्पकल्पनविकल्पविकारदोषैः ।
योगैः स च त्रिभिरहो निभृतान्तरात्मा,
ध्यानोत्तम प्रवरशुक्लमिद वदन्ति ॥ ३ ॥ इति ।

एव सभी प्राणियो पर दया रखना, इस प्रकार की आत्मा की शुभ प्रवृत्ति को विज्ञ जन 'धर्मध्यान' कहते हैं ॥३॥

"शुचं-शोक क्लमयतीति शुक्ल" शोक को जो नष्ट करे वह 'शुक्ल' है। "शुक्लं च तद् ध्यानं च शुक्लध्यान" शुक्लरूप जो ध्यान वह शुक्लध्यान है। अर्थात् जो भवक्षय का कारण होता है अथवा जिससे शोक का अपनयन होता है, वह शुक्लध्यान है। कहा भी है—

यस्येन्द्रियाणि विषयेषु पराङ्मुखानि, सङ्कल्पकल्पनविकल्पविकारदोषैः।
योगैः स च त्रिभिरहो निभृतान्तरात्मा, ध्यानोत्तम प्रवरशुक्लमिद वदन्ति ॥

जिनकी इन्द्रिया विषयप्रवृत्तियो से रहित हैं, जो सकल्प-विकल्प-जनित विकार-दोषों से वर्जित है, कायिक, वाचिक, मानसिक तीनों योगों को वश कर लेने के कारण जिनकी आत्मा निश्चल है, ऐसे महात्माओं की प्रशस्त परिणति को विज्ञ जन 'शुक्लध्यान' कहते है ॥४॥

તેનું ચિંતન કરવું, પાંચેય ઇન્દ્રિઓનો નિગ્રહ કરવો, તેમ જ બધા પ્રાણિઓ ઉપર દયા રાખવી, એ પ્રકારની આત્માની શુભ પ્રવૃત્તિને વિદ્વાનો 'ધર્મધ્યાન' કહે છે

"शुच-शोकं क्लमयतीति शुक्लं" શોકનો જે નાશ કરે તે 'શુક્લ' છે "शुक्लं च तद् ध्यानं च-शुक्लध्यानं" શુક્લરૂપ જે ધ્યાન તે શુક્લધ્યાન છે, અર્થાત્ જે ભવક્ષયનું કારણ હોય છે અથવા જેનાથી શોકનું અપનયન થાય છે તે શુક્લધ્યાન છે કહ્યું પણ છે—

यस्येन्द्रियाणि विषयेषु पराङ्मुखानि, संकल्पकल्पनविकल्पविकारदोषैः ।
योगैः स च त्रिभिरहो निभृतान्तरात्मा, ध्यानोत्तम प्रवरशुक्लमिदं वदन्ति ॥१॥

જેની ઇંદ્રિયો વિષયપ્રવૃત્તિથી રહિત છે, જે સંકલ્પવિકલ્પજનિત વિકારદોષોથી વર્જિત છે, કાયિક, વાચિક, માનસિક, ત્રણેય યોગોને વશ કરી લેવાના કારણે જેનો આત્મા નિશ્ચલ છે, એવા મહાત્માઓની પ્રશસ્ત પરિણતિને વિદ્વાનો 'શુક્લધ્યાન' કહે છે (૧)

अट्टज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते; तं जहा–अमणुण्णसंपओग-संपउत्ते तस्स विप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ १, मणुण्ण-

एषु चतुर्विधेषु ध्यानेषु प्रथममार्तध्यानं चतुर्विधमाह–'अट्टज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते' आर्तध्यानं चतुर्विधं प्रज्ञप्तम्, 'तं जहा' तद्यथा–१–'अमणुण्णसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ' अमनोज्ञसम्प्रयोगसम्प्रयुक्तस्तस्य विप्रयोगस्मृतिसमन्वागतश्चापि भवति–अमनोज्ञ=अनिष्टो यः शब्दादिः, तस्य सम्प्रयोगः=योगस्तेन सम्प्रयुक्तो यः स तथाविधः सन् तस्य अमनोज्ञशब्दादेः विप्रयोगस्मृतिः=वियोगचिन्ता, तया समन्वागतः=अनुगतश्चापि भवति, एतद् आर्तध्यानम्, ध्यानध्यानवतोरभेदोपचाराद् ध्यानवानपि ध्यानमुच्यते, एवमग्रेऽपि बोध्यम् । २–मणुण्णसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसइस-

इन चार प्रकार के ध्यानों में प्रथम जो आर्त्तध्यान है, वह चार प्रकार का है, इसी बात को बताने के लिये सूत्रकार कहते हैं–(अट्टज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते) आर्त्तध्यान ४ प्रकार का कहा गया है। (तं जहा) वह इस प्रकार से–(अमणुण्णसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ) अमनोज्ञ–अनिष्ट शब्दादि के संबंध होने पर उसके विप्रयोग–दूर करने के लिये जो वारवार विचार किया जाता है वह अनिष्टसंयोगज आर्त्तध्यान है। यहां ध्याता को जो ध्यान कहा है वह ध्यान और ध्यानवान् में अभेद के उपचार से जानना चाहिये। इसी तरह से आगे के ध्यानों में भी अभेद का उपचार जानना। (मणुण्णसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसइसमण्णागए यावि

આ ચારેય પ્રકારના ધ્યાનોમાંથી પ્રથમ જે આર્ત્તધ્યાન છે તે ચાર પ્રકારનું છે, એ વાત કહેવા માટે સૂત્રકાર કહે છે–(अट्टज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते) આર્ત્તધ્યાન ચાર પ્રકારનાં કહેલાં છે (तं जहा) તે આ પ્રકારે છે–(अमणुण्णसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ) અમનોજ્ઞ–અનિષ્ટ શબ્દાદિકનો સંબંધ થતાં તેને વિપ્રયોગ–દૂર કરવા માટે જે વારવાર વિચાર કરવામાં આવે છે તે અનિષ્ટસંયોગજન્ય આર્ત્તધ્યાન છે અહીં ધ્યાન કરનારને જે ધ્યાન કહેવામાં આવ્યું છે તે ધ્યાન અને ધ્યાનવાન્‌માં અભેદ (એકતા)ના ઉપચારથી થયો છે તેમ જાણવું જોઈએ, એ જ રીતે આગળના ધ્યાનોમાં પણ અભેદનો ઉપચાર જાણી લેવો (मणुण्णसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ) મનોજ્ઞ–ઇષ્ટ શબ્દાદિક વિષયોની

संपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ २, आयंकसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ ३, परिजूसियकामभोगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ ४। अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि ल-

मण्णागए यावि भवइ' मनोज्ञसम्प्रयोगसम्प्रयुक्तस्तस्याऽविप्रयोगस्मृतिसमन्वागतश्चापि भवति-मनोज्ञः=इष्टो यः शब्दादिः, तस्य सम्प्रयोगः=संयोगस्तेन सम्प्रयुक्तः सन् तस्य= मनोज्ञशब्दादेरविप्रयोगस्मृतिः=अवियोगचिन्ता, तया समन्वागतः=संयुक्तश्चापि भवति। ३-'आयंकसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ' आतङ्कसम्प्रयोगसम्प्रयुक्तस्तस्य विप्रयोगस्मृतिसमन्वागतश्चापि भवति-आतङ्को रोग, तस्य सम्प्रयोगः=संयोगः, तेन सम्प्रयुक्तः सन् तस्याऽऽतङ्कस्य विप्रयोगस्मृतिः=वियोगचिन्ता, तया समन्वागतश्चापि भवति। ४-'परिजूसियकामभोगसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ' परिजुष्टकामभोगसम्प्रयोगसम्प्रयुक्तस्तस्याऽविप्रयोगस्मृतिसमन्वागतश्चापि भवति, परि=समन्तात्, जुष्टः=सेवितः—प्रीतो वा यः कामभोगस्तस्य सम्प्रयोगः सम्प्रयुक्तः सन्, तस्य कामभोगस्य अविप्रयोगस्मृतिः=अवियोगचिन्ता तया, समन्वागतः= संयुक्तश्चापि भवति। 'अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता' आर्तस्य खलु ध्या-

भवइ) मनोज्ञ-इष्ट शब्दादिक विषयों की संप्राप्ति होने पर उनके अविप्रयोग—वियोग न होने का बारबार चिन्तवन करना सो वह इष्टसंयोगज आर्त्तध्यान है। (आयंकसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ) आतङ्क—रोग के संप्रयोग—संयोग होने पर जो उसके वियोग होने का बारबार चिन्तवन करना है वह वेदनाजन्य आर्त-ध्यान है। (परिजूसियकामभोगसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ) सेवित कामभोगों की प्राप्ति होने पर उनका कभी भी वियोग न हो ऐसा विचार करना सो यह चौथा आर्त्तध्यान है। (अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा

સંપ્રાપ્તિ થતાં તેમનો અવિપ્રયોગ-વિયોગ ન થાય તેનું વારવાર ચિંતવન કરવું તે ઇષ્ટસંયોગજન્ય આર્ત્તધ્યાન છે (आयंकसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ) આતંક—રોગનો સંપ્રયોગ—સંયોગ થતાં જે તેનો વિયોગ થવાનું વારંવાર ચિંતવન કરે છે તે વેદનાજન્ય આર્ત્તધ્યાન છે (परिजूसियकामभोगसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसइसमण्णागए यावि भवइ) સેવન કરેલ કામભોગોની પ્રાપ્તિ થતાં તેમનો કદી પણ વિયોગ ન થાય

क्खणा पण्णत्ता, तं जहा-कंदणया १, सोयणया २, तिप्पणया ३, विलवणया ४। रुद्दज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते; तं जहा-हिंसाणुबंधी १, मोसाणुबंधी २, तेणाणुबंधी ३, सारक्खणा-

नस्य चत्वारि लक्षणानि प्रज्ञप्तानि, 'तं जहा' तद्यथा-१ 'कंदणया' क्रन्दनता=महाशब्दाऽश्रुप्रक्षेपरूपा। २ 'सोयणया' शोचनता=मानसग्लानिरूपा। ३ 'तिप्पणया' तेपनता=निःशब्दाश्रुमोचनम्। ४ 'विलवणया' विलपनता=पुनः पुनः स्वकृताशुभकर्मणामुच्चारणम्, "कीदृग् पूर्वजन्मनि मया दुष्कृतमाचरितं यत्फलमधुनेदृशं मया लभ्यते" इत्यादिरूपम्। 'रुद्दज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते' रौद्रध्यानं चतुर्विधं प्रज्ञप्तम्, 'तं जहा' तद्यथा-१ 'हिंसाणुबंधी' हिंसानुबन्धि-हिंसा=परप्राणहरणरूपामनुबध्नाति=करोतीति हिंसानुबन्धि,२-'मोसा

पण्णत्ता) इस आर्तध्यान के ४ चार लक्षण बतलाए गये हैं, (तं जहा) वे इस प्रकार हैं-(कंदणया सोयणया तिप्पणया विलवणया) क्रन्दनता-शब्दसहित आंसुओं को निकालते हुए रोना (१)। शोचनता-मानसिक ग्लानि करना (२)। तेपनता-ऐसा रोदन हो कि जिसमें रोने का आवाज आवे नहीं, परन्तु आँसू निकलते रहें (३)। विलपनता-बारबार अपने किये हुए कर्मों का जिसमें चिन्तवन करते हुए उच्चारण हो, जैसे-मैंने पूर्वजन्म में कैसे पाप किये, जिसका फल मुझे भोगना पड रहा है, ये सब आर्तध्यान के लक्षण हैं। इन लक्षणों से आर्तध्यान की सत्ता जानी जाती है। (रुद्दज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते) रौद्रध्यान चार प्रकार का कहा गया है, जैसे-(हिंसाणुबंधी, मोसाणुबंधी, तेणाणुबंधी, सारक्खणाणुबंधी) जिस ध्यान में हिंसा का अनुबंध हो वह हिंसानुबंधी रौद्रध्यान है।

એવો વિચાર કરવો તે આ ચોથું આર્તધ્યાન છે (अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता) આ આર્તધ્યાનના ચાર લક્ષણ બતાવેલા છે, (तं जहा) તે આ પ્રકારે છે-(कंदणया सोयणया तिप्पणया विलवणया) ક્રન્દન-શબ્દ સાથે આંસુઓ પાડતાં રડવું (૧), શોચન-માનસિક ગ્લાનિ કરવી (૨), તેપન-એવું રોદન થાય કે જેમાં રોવાનો અવાજ આવે નહિ, પરંતુ આંસુ વહેતાં રહે (૩), વિલપન-વારવાર પોતે કરેલાં કર્મોનું ચિંતવન કરતાં મોટેથી વિલાપ કરવો, જેમકે-મેં પૂર્વ જન્મમાં કેવાં પાપ કર્યાં કે જેનું ફળ મારે ભોગવવું પડે છે આ બધાં આર્તધ્યાનનાં લક્ષણ છે એ લક્ષણોથી આર્તધ્યાનની સત્તા જાણી લેવાય છે (रुद्दज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते) રૌદ્રધ્યાન ચાર પ્રકારનું કહેલું છે, (तं जहा) જેમ કે (हिंसाणुबंधी, मोसाणुबंधी,तेणाणुबंधी, सारक्खणाणुबंधी)

णुबंधी ४। रुद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा- उसण्णदोसे १, बहुदोसे २, अण्णाणदोसे ३, आमरणंतदोसे

णुबन्धी' मृषानुबन्धि-मृषा=असत्य, तदनुबध्नाति=करोतीति मृषानुबन्धि,असत्यवचनेन धर्मोपघातकुमार्गप्ररूपणनिन्दादिकारकमित्यर्थः । ३-'तेणाणुबन्धी' स्तैन्यानुबन्धि=अदत्तादानकारकम्,४ 'सारक्खणाणुबन्धी' संरक्षणानुबन्धि-विषयसाधनस्य धनादिकस्य संरक्षणे अनुबन्ध = सम्बन्धोऽस्यास्तीति तत् संरक्षणानुबन्धि । 'रुद्दस्स ण झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता' रौद्रस्य खलु ध्यानस्य चत्वारि लक्षणानि प्रज्ञप्तानि, 'त जहा' तद्यथा -'उसण्णदोसे' बाहुल्यदोष -अनुपरततया बाहुल्येन=प्राचुर्येण दोषो हिंसाऽनृताऽदत्ताऽऽदानसंरक्षणानामन्यतम -बाहुल्यदोष । 'उसन्न' इति बाहुल्यार्थे देशीयशब्द ।१। तथा-'बहुदोसे' बहुदोष -बहुषु हिंसादिषु प्रवृत्तिलक्षणो दोषो बहुदोष ।२। 'अण्णाणदोसे' अज्ञानदोष -अज्ञानात्=कुशास्त्रादिसंस्कारात् हिंसादिषु अधर्मस्वरूपेषु धर्मबुद्ध्या प्रवृत्तिलक्षणो दोषोऽज्ञानदोष ।३।

जिस ध्यान मे मृषा-झूठ का अनुबन्ध हो वह मृषानुबन्धी रौद्रध्यान है । जिस ध्यान मे चोरी करने का अनुबन्ध हो वह स्तैन्यानुबन्धी रौद्रध्यान है । जिस ध्यान मे विषय के साधनभूत धनादिक के संरक्षण का अनुबन्ध है वह संरक्षणानुबन्धी रौद्रध्यान है। (रुद्दस्स ण झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता) इस रौद्रध्यान के ४ लक्षण कहे हुए है, जैसे-(उसण्णदोसे, बहुदोसे, अण्णाणदोसे आमरणतदोसे) हिंसा, झूठ, चोरी आदि पापकर्मों मे से किसी एक पापकर्म मे जो बाहुल्येन प्रवृत्ति होना सो उसन्नदोष है। हिंसादिक सभी पाप कर्मों मे जो बाहुल्येन प्रवृत्ति होना सो बहुदोष है। कुशास्त्रादिक के संस्कारजन्य अज्ञान से हिंसादिकों मे धर्मबुद्धि से प्रवृत्त होना सो अज्ञानदोष है । मरणपर्यन्त पश्चात्ताप नहीं करते हुए हिंसा-

જે ધ્યાનમા હિંસાનો અનુબંધ હોય તે હિંસાનુબંધી રૌદ્રધ્યાન છે જે ધ્યાનમા મૃષા-જુઠાણાનો અનુબંધ હોય તે મૃષાનુબંધી રૌદ્રધ્યાન છે જે ધ્યાનમા ચોરી કરવાનો અનુબંધ હોય તે સ્તૈન્યાનુબંધી રૌદ્રધ્યાન છે જે ધ્યાનમા વિષયના સાધનભૂત ધન આદિકના સંરક્ષણનો અનુબંધ છે તે સંરક્ષણાનુબંધી રૌદ્રધ્યાન છે (रुद्दस्स ण झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता) આ રૌદ્રધ્યાનના ચાર લક્ષણ કહેલા છે,(त जहा) જેમ કે-(उसण्णदोसे, बहुदोसे, अण्णाणदोसे, आमरणतदोसे) હિંસા, જુઠાણુ, ચોરી, આદિ પાપકર્મોમાથી કોઇ પણ એક પાપકર્મમા જે બળવાન પ્રવૃત્તિ થવી તે ઉસન્નદોષ છે હિંસાદિક બધા પાપકર્મોમા જે બળવાન પ્રવૃત્તિ થવી તે બહુદોષ છે કુશાસ્ત્રઆદિકના સંસ્કારજન્ય અજ્ઞાનથી હિંસાદિકમા ધર્મબુદ્ધિથી પ્રવૃત્તિ થવી તે અજ્ઞાનદોષ છે મરણપર્યન્ત પશ્ચાત્તાપ કર્યા વગર હિંસાદિક કર્મોમા

४। धम्मज्झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते; तं जहा–आणा-

'आमरणंतदोसे' आमरणान्तदोष –मरणमेव अन्तो मरणान्त, मरणपर्यन्तम् असञ्जातानुतापस्य कालसौकरिकादेरिव या हिंसादिषु प्रवृत्ति सा प्रवृत्तिरेव आमरणान्तदोष ।४। एषु ध्यानेषु आर्तरौद्रे ध्येये धर्मशुक्ले तु ध्येये । 'धम्मज्झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते' धर्मध्यान चतुर्विधं चतुष्प्रत्यवतार प्रज्ञप्तम् । धर्मध्यान चतुर्विध–चतस्रो विधा =स्वरूपलक्षणालम्बनानुप्रेक्षारूपा प्रकारा यस्मिन् तत् तथोक्तम् । चतुष्प्रत्यवतार च–स्वरूपादिषु एकैकस्य चतुष्प्रकारतया प्रत्यवतारो=विचारणीयत्वेन अवतरण यस्मिन् तत्, प्रत्येक चतुर्विधमित्यर्थ, प्रज्ञप्तम् । तत्र स्वरूपस्य चातुर्विध्यमाह–तद्यथा–'आणाविचए' आज्ञाविचयम्–आज्ञा=जिनप्रवचन, तस्या विचय =यथाशोचन यत्र तत्तथा, आज्ञागुणाऽनुचिन्तनमित्यर्थ, आज्ञामेव चिन्तयेत्–आज्ञा भगवत सर्वज्ञस्य पूर्वापरविशुद्धा निरवद्यसर्वजीवकायहिताऽनवद्या महार्था महानुभावा निपुणजन-

दिको मे प्रवृत्तिशील रहना सो आमरणान्तदोष है । इन चार ध्यानो मे आर्त्त–रौद्र–ध्यान छोडने योग्य है, और धर्मध्यान एव शुक्लध्यान ये दो ध्यान ग्राह्य हैं । अब धर्मध्यान का भेद कहते हैं-(धम्मज्झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते) धर्मध्यान–स्वरूप, लक्षण, आलम्बन, एव अनुप्रेक्षा के भेद से चार प्रकार का है, इन चारो मे भी एक एक के चार चार भेद होते हैं । इस प्रकार कुल इसके १६ भेद हो जाते हैं । धर्मध्यान के चार स्वरूप ये हैं–(आणाविचए, अवायविचए, विवागविचए, संठाणविचए,) आज्ञाविचय, अपायविचय, विपाकविचय और संस्थानविचय । तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा का जिसमे विचार किया जाय वह आज्ञाविचय धर्मध्यान है। तीर्थंकर प्रभुकी आज्ञा का चिन्तवन इसमे इस प्रकार किया जाता है–भगवान का आज्ञारूप प्रवचन पूर्वापर मे निर्दोष है, निरवद्य जीवों का हितकर्त्ता

પ્રવૃત્તિશીલ રહેવું તે આમરણાંત દોષ છે આ ચારેય ધ્યાનોમાં આર્ત–રૌદ્ર ધ્યાન છોડવા યોગ્ય છે અને ધર્મધ્યાન તેમજ શુક્લધ્યાન એ બે ધ્યાન ગ્રહણ કરવા યોગ્ય છે હવે ધર્મધ્યાનના પ્રકાર કહે છે–(धम्मज्झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते) ધર્મધ્યાન, સ્વરૂપ, લક્ષણ, આલંબન તેમજ અનુપ્રેક્ષાના ભેદથી ચાર પ્રકારનું છે આ ચારેમાં પણ એકએકના ચાર ચાર ભેદ થાય છે એ રીતે કુલ તેના સોળ (૧૬) ભેદ થઈ જાય છે (तंजहा) ધર્મધ્યાનના ચાર ૪ સ્વરૂપ આ છે–(आणाविचए, अवायविचए, विवागविचए, संठाणविचए) આજ્ઞાવિચય, અપાયવિચય, વિપાકવિચય અને સંસ્થાનવિચય, તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાનો જેમાં વિચાર કરવામાં આવે તે આજ્ઞાવિચય ધર્મધ્યાન છે તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાનું ચિંતવન એમાં આ રીતે કરાય છે–ભગવાનનું આજ્ઞારૂપ પ્રવચન પૂર્વાપરમાં નિર્દોષ છે, તમામ જીવોને હિતકર્તા છે, અનવદ્ય છે,

विचए १ अवायविचए २. विवागविचए ३ संठाणविचए ४। धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, त जहा–आणा-

विशेषा द्रव्यपर्यायप्रपञ्चबोधिनी अनाद्यनन्ता भवप्रपञ्चमोचना नरकनिगोदादिदुःखविध्वंसिनी कर्मग्रन्थिभेदिनी चिन्त्यते । २–'अवायविचए' अपायविचयम्–अपाया=रागद्वेषादिजन्या अनर्थास्तेषां विचयो यत्र तत्तथा, विषयदोषाऽनुचिन्तनमित्यर्थः । ३ 'विवागविचए' विपाकविचयम्–विपाकः=कर्मफलं, तस्य विचयो यत्र तत्तथा कर्मफलाऽनुचिन्तनमित्यर्थः । ४–'संठाणविचए' संस्थानविचयम्–संस्थानानि=लोकद्वीपसमुद्राद्याकृतयः, तेषां विचयो यत्र तत् तथा, 'धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता' धर्मस्य खलु ध्यानस्य चत्वारि लक्षणानि प्रज्ञप्तानि, 'त जहा' तद्यथा–१–'आणारुई' आज्ञारुचि –आज्ञा=सर्वज्ञवचनरूपा, तया

है, अनवद्य है, गंभीर है, प्रभावशाली है, निपुणजनविज्ञेय है, द्रव्य एव पर्यायों का बोधक है, अनादि एव अनन्त है, संसार का अन्त करने वाला है नरक एव निगोदादिक के दुःखों का विनाशक है और कर्मग्रन्थि का उच्छेदक है ॥१॥ अपायविचय–रागद्वेष आदि से जन्य अनर्थों का नाम अपाय है। इनका विचारना जिसमें होता है–अर्थात् शब्दादि विषयों के दोषों का अनुचिन्तन जिसमें किया जाता है वह अपायविचय धर्मध्यान है ॥२॥ विपाकविचय–कर्मफल का नाम विपाक है, इसका चिन्तन करना अर्थात् कर्म से बद्ध हो आत्मा चतुर्गतिक संसार में भ्रमण करता है ऐसा जो विचारना सो विपाकविचय है ॥३॥ संस्थानविचय–चौथा भेद है, संस्थानका अर्थ लोकद्वय एव समुद्रादिक का आकार है, इनका विचार करना सो संस्थानविचय है ॥४॥ (धम्मस्स ण झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता)

ગંભીર છે, પ્રભાવશાલી છે, નિપુણ લોકોથી જાણવા યોગ્ય છે, દ્રવ્ય તેમજ પર્યાયોનું બોધક છે, અનાદિ અનંત છે, સંસારનો અંત કરવાવાળું છે, નરક તેમજ નિગોદ આદિકના દુઃખોનું વિનાશક છે, કર્મની ગ્રન્થિનું ઉચ્છેદક છે (૧) અપાયવિચય-રાગદ્વેષ આદિથી થતા અનર્થોનું નામ અપાય છે તેનો વિચાર જેમાં કરાય છે અર્થાત્ શબ્દાદિ વિષયોના દોષોનું અનુચિંતન જેમાં કરાય છે તે અપાયવિચય ધર્મધ્યાન છે (૨) વિપાકવિચય-કર્મફલનું નામ વિપાક છે તેનું ચિંતન કરવું, અર્થાત્ કર્મથી બંધાયેલો આત્મા ચતુર્ગતિ- સંસારમાં ભ્રમણ કરે છે એમ જે વિચારવું તે વિપાકવિચય છે (૩) સંસ્થાનવિચય ચોથો પ્રકાર છે સંસ્થાનનો અર્થ લોક, દ્વીપ તેમજ સમુદ્રાદિ,નો આકાર છે, તેનો વિચાર કરવો તે સંસ્થાનવિચય છે (૪) (धम्मस्स ण झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता) ધર્મધ્યાનના ચાર લક્ષણ કહ્યા છે

रुई १, णिसग्गरुई २, उवएसरुई ३, सुत्तरुई ४। धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता, तं जहा–वायणा १, पुच्छणा

धर्मानुष्ठानगता रुचि =श्रद्धानम्। २–'णिसग्गरुई' निसर्गरुचि =स्वभावतस्तत्त्वश्रद्धानम्। ३–'उवएसरुई' उपदेशरुचि =साधूपदेशात्तत्त्वश्रद्धानम्। ४–'सुत्तरुई' सूत्ररुचि सूत्रे=आगमे रुचि =श्रद्धानम्। आज्ञाऽऽगमवचनविषया रुचि –आज्ञारुचि 'आज्ञा पूर्वापरविशुद्धाऽनवद्या'–एतद्रूपा याऽऽगमविषया रुचि सा सूत्ररुचिरिति तयोर्भेदः। 'धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता' धर्मस्य खलु ध्यानस्य चत्वार्यालम्बनानि प्रज्ञप्तानि–धर्मध्यानशिखरारोहणार्थं यान्यालम्ब्यन्ते=आश्रीयन्ते तान्यालम्बनानि चतुर्विधानि कथितानि, 'तंजहा' तद्यथा–१–'वायणा'

धर्मध्यान के चार लक्षण कहे गये हैं, (तं जहा) वे इस प्रकार से हैं–(आणारुई, णिसग्गरुई, उवएसरुई, सुत्तरुई) आज्ञारुचि, निसर्गरुचि, उपदेशरुचि, सूत्ररुचि। तीर्थंकर भगवान् की आज्ञा के आराधन करने में श्रद्धा का उत्पन्न होना आज्ञारुचि है १। स्वभाव से जिन-प्ररूपित तत्त्वों में श्रद्धा होना निसर्गरुचि है २। साधु–मुनिराजों के उपदेश से तत्त्वों में श्रद्धा होना उपदेशरुचि है ३। जैनागमों में श्रद्धा होना सूत्ररुचि है ४। आज्ञारुचि और सूत्ररुचि में क्या भेद है? इसका उत्तर यह है कि तीर्थंकर भगवान की आज्ञा का आराधन करना–आज्ञारुचि है, तथा तीर्थंकर भगवान् की आज्ञा पूर्वापरविशुद्ध है अनवद्य है–इस प्रकार आगम के विषय में दृढश्रद्धा होना–सूत्ररुचि है। यही इन दोनों में भेद है। (धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता) धर्मध्यान के आलंबन ४ चार हैं। ये आलंबन धर्मध्यान के शिखर पर चढने के लिये जीवों को सहारे का काम देते हैं, (तं जहा)

(तं जहा) ते आ प्रकारे छे–(आणारुई, णिसग्गरुई, उवएसरुई, सुत्तरुई) आज्ञारुचि, निसर्गरुचि, उपदेशरुचि, सूत्ररुचि तीर्थंकर भगवाननी आज्ञानुं आराधन करवामां श्रद्धा उत्पन्न थवी ते आज्ञारुचि छे १, स्वभावथी ज जिनप्ररूपित तत्त्वोमां श्रद्धा थवी ते निसर्गरुचि छे २, साधु मुनिराजोना उपदेशथी तत्त्वोमां श्रद्धा थवी ते उपदेशरुचि छे ३, जैन आगमोमां श्रद्धा थवी ते सूत्ररुचि छे ४, आज्ञारुचि अने सूत्ररुचिमां शुं भेद छे? तेनुं उत्तर आ छे के–तीर्थंकर भगवाननी आज्ञानुं आराधन करवुं ते आज्ञारुचि छे, तथा–तीर्थंकर भगवाननी आज्ञा पूर्वापरविशुद्ध छे, अनवद्य छे ए प्रकारे आगमना विषयमां दृढ श्रद्धा थवी ते सूत्ररुचि छे आ ज ए बन्नेमां तफावत छे (धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता) धर्मध्यानना आलंबन चार छे ते आलंबन धर्मध्यानना शिखर उपर चडवा माटे जीवोने आश्रय–आधारनुं काम करी दे

२, परियट्टणा ३, धम्मकहा ४। धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–अणिच्चाणुप्पेहा १, असरणाणुप्पेहा २, एगत्ताणुप्पेहा ३, ससाराणुप्पेहा ४।

वाचना, २ 'पुच्छणा' प्रच्छना, ३–'परियट्टणा' परिवर्तना, ४–'धम्मकहा' धर्मकथा, 'धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ' धर्मस्य खलु ध्यानस्य चतस्रोऽनुप्रेक्षा प्रज्ञप्ता 'त जहा' तद्यथा–'अणिच्चाणुप्पेहा' अनित्यानुप्रेक्षा=अनित्यचिन्तनिका, तथा चोक्तम्–

"कायः सनिहितापायः, सपदः पदमापदाम्।
समागमाः सापगमाः, सर्वमुत्पादि भङ्गुरम्" ॥ १ ॥ इति ॥

वे इस प्रकार है–(वायणा) वाचना १, (पुच्छणा) प्रच्छना २, (परियट्टणा) परिवर्तना ३, (धम्मकहा) धर्मकथा ४। इनका स्वरूप पीछे कह दिया गया है। (धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ) धर्मध्यान की चार अनुप्रेक्षा कही है, (तं जहा) वे ये है–(अणिच्चाणुप्पेहा) अनित्यानुप्रेक्षा–इसमे समस्त पौद्गलिक पदार्थों का अनित्यरूप से चिन्तवन किया जाता है, जैसे–

कायः सनिहितापायः, सपदः पदमापदाम्।
समागमाः सापगमाः, सर्वमुत्पादि भङ्गुरम् ॥१॥

इस शरीर के पीछे अपाय–रोगादि लगा हुआ है। इसलिये यह नष्ट होने वाला है। यह धनधान्यादि सम्पत्ति, आपत्तियो का स्थान है। क्यो कि इसीके कारण स्त्री, पुत्र, मित्र, स्वजन, परिजन और ग्रामजन आदि से शत्रुता होता है, लडाइ होती है, अन्त मे

છે, (त जहा) તે આ પ્રકારે છે–(वायणा) વાચણા–વાચવુ ૧, (पुच्छना) પ્રચ્છના–પુછવુ ૨, (परियट्टणा) પરિવર્તના–આવૃત્તિ કરવી ૩, (धम्मकहा) ધર્મકથા ૪, એમનુ સ્વરૂપ પાછળ કહેવાઇ ગયુ છે (धम्मस्स ण झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ) ધર્મધ્યાનની ચાર અનુપ્રેક્ષા કહી છે,(त जहा) તે આ પ્રમાણે છે–(अणिच्चाणुपेहा) અનિત્યાનુપ્રેક્ષા–આમા સમસ્ત પૌદ્ગલિક પદાર્થોનુ અનિત્યરૂપથી ચિંતવન કરવામા આવે છે જેમકે–

काय सनिहितापाय, सपद पदमापदाम्।
समागमा सापगमा, सर्वमुत्पादि भङ्गरम् ॥ १ ॥

આ શરીરની પાછળ અપાય–રોગ–આદિ લાગી રહેલા છે, તે માટે તે નાશ પામવાવાળુ છે આ ધન–ધાન્યાદિ–સપત્તિ આપત્તિઓનુ સ્થાન છે

'असरणाणुप्पेहा' अशरणाऽनुप्रेक्षा—अशरणत्वपर्यालोचना यथा संसृतौ न कस्यापि रक्षक एतद्रूपा, जन्मजरामरणभयैरभिद्रुते व्याधिवेदनाग्रस्ते जिनवरवचनादन्यत् शरणं क्वचिल्लोके—इत्येवमशरणस्य=अत्राणस्य अनुप्रेक्षा=पर्यालोचना।

प्राण तक खोना पडता है। जिन जिन अभिलषित प्रिय स्त्री, पुत्र, धन आदि का स[मागम] अर्थात् प्राप्ति होती है, वे सब बिछुडने वाले हैं। क्यों कि संयोग के बाद वियोग होता है। अधिक क्या, जो जो उत्पन्न होता है, वह सब नियमतः नष्ट भी होता है, क्यों कि उत्पत्तिशील सभी पदार्थ विनश्वर अर्थात् नाशवान् होते हैं। ऐसे विनश्वर पदार्थों में फिर आसक्ति और प्रेम क्यों? उचित यह है कि जो धर्म कभी भी नष्ट होने वाला नहीं है उसी पर मुझे आकर्षण होना चाहिये, इन विनश्वर सांसारिक पदार्थों पर नहीं। इस प्रकार सांसारिक समस्त पदार्थों के प्रति अनित्यत्व का चिन्तन करना अनित्यानुप्रेक्षा है ॥१॥

(असरणाणुप्पेहा) अशरणानुप्रेक्षा—संसार में इस जीव का कोई भी शरण नहीं है। जन्म, जरा एवं मरण के भय से व्याकुल हुए एवं व्याधि और वेदना से ग्रस्त बने हुए इस प्राणी का यदि लोक में कोई शरण है तो वह एक जिनवर का धर्म ही है, और कोई नहीं। इस प्रकार से इस अनुप्रेक्षा में विचार किया जाता है। कहा भी है—

કેમકે તેના જ કારણે સ્ત્રી, પુત્ર, મિત્ર, સ્વજન, પરિજન અને ગામના લોકો આદિ સાથે શત્રુતા થાય છે, લડાઇ (ઝગડા) થાય છે, આખરે પ્રાણ સુધી ખોવો પડે છે જે જે અભિલષિત પ્રિય સ્ત્રી, પુત્ર, ધન આદિનો સમાગમ અર્થાત્ પ્રાપ્તિ થાય છે તે બધા વિખૂટા પડનાર છે, કેમકે સંયોગ પછી વિયોગ અવશ્ય થાય છે, વધારે શું ? જે જે ઉત્પન્ન થાય છે તે બધું નિયમપ્રમાણે નાશ પણ પામે છે જ, કેમકે ઉત્પત્તિશીલ તમામ પદાર્થ વિનશ્વર અર્થાત નાશવાન હોય છે, તો એવા વિનશ્વર પદાર્થોમાં વળી આસક્તિ અને પ્રેમ શા માટે ? ઉચિત તો એ છે કે–જે ધર્મ કદી પણ નાશ પામનાર નથી તે ઉપર જ મને આકર્ષણ થવું જોઇએ, આ વિનશ્વર સાંસારિક પદાર્થો પર નહિ એ પ્રકારે સાંસારિક તમામ પદાર્થો માટે અનિત્યપણાનું ચિંતન કરવું તે અનિત્યાનુપ્રેક્ષા છે (૧) (असरणाणुप्पेहा) અશરણાનુપ્રેક્ષા–સંસારમાં આ જીવનું કોઇ પણ શરણ નથી જન્મ, જરા તેમજ મરણના ભયથી વ્યાકુળ થતા તેમજ વ્યાધિ અને વેદનાથી ગ્રસ્ત બની જતા આ પ્રાણીનું જો કોઇ શરણ (આશ્રય) હોય તો તે એકમાત્ર આ લોકમાં જિનવરનો ધર્મ જ છે, બીજું કોઇ નહિ આ પ્રકારના આ અનુપ્રેક્ષામાં વિચાર કરવામાં આવે છે કહ્યું પણ છે—

कलत्रमित्रपुत्रादि-स्नेहग्रहनिवृत्तये ।
इति शुद्धमतिः कुर्यादशरण्यत्वभावनाम् ॥१॥

अशरणभावना चैवम्—

इन्द्रोपेन्द्रादयोऽप्येते यन्मृत्योर्यान्ति गोचरम् ।
अहो तदन्तकातङ्के कः शरण्यः शरीरिणाम् ॥१॥
पितुर्मातुः स्वसुर्भ्रातुस्तनयानां च पश्यताम् ।
अत्राणो नीयते जन्तुः कर्मभिर्यमसद्मनि ॥२॥

कलत्रमित्रपुत्रादि,—स्नेहग्रहनिवृत्तये ।
इति शुद्धमतिः कुर्यादशरण्यत्वभावनाम् ॥१॥

शुद्धबुद्धियुक्त भव्य प्राणी स्त्री, पुत्र, मित्र, स्वजन—सम्बन्धी आदिकों के स्नेह—बन्धन से मुक्त होने के लिये इस प्रकार से अशरणभावना की चिन्ता करे।

अशरणभावना इस प्रकार से करनी चाहिये—

इन्द्रोपेन्द्रादयोऽप्येते, यन्मृत्योर्यान्ति गोचरम् ।
अहो ! तदन्तकातङ्के, कः शरण्यः शरीरिणाम् ॥१॥

ये महापराक्रमी अजेय इन्द्र, उपेन्द्र आदियों को भी जब कालने कवलित कर-लिया, तो, अरे ! इस संसार में साधारण मनुष्य की फिर गणना ही क्या है ? उस सर्वविजयी काल के आने पर मनुष्य का क्या कोई त्राण, शरण हो सकता है ? कोई नहीं ! ॥१॥

पितुर्मातुः स्वसुर्भ्रातुस्तनयानां च पश्यताम् ।
अत्राणो नीयते जन्तुः, कर्मभिर्यमसद्मनि ॥२॥

कलत्रमित्रपुत्रादि-स्नेहग्रहनिवृत्तये ।
इति शुद्धमतिः कुर्यादशरण्यत्वभावनाम् । १॥

શુદ્ધબુદ્ધિયુક્ત ભવ્ય પ્રાણી સ્ત્રી, પુત્ર, મિત્ર, સ્વજન, સંબંધી આદિના સ્નેહ-બંધનથી મુક્ત થવા માટે આ પ્રકારે અશરણભાવનાની ચિંતા કરે

અશરણભાવના આ પ્રકારે કરવી જોઇએ—

इन्द्रोपेन्द्रादयोऽप्येते, यन्मृत्योर्यान्ति गोचरम् ।
अहो ! तदन्तकातङ्के, कः शरण्यः शरीरिणाम् ॥ १ ॥

એ મહાપરાક્રમી અજેય ઇન્દ્ર, ઉપેન્દ્ર આદિઓને પણ જ્યારે કાળ કોળિઓ કરી ગયો, તો અરે ! આ સંસારમાં સાધારણ મનુષ્યની વળી ગણત્રી જ શું છે ? તે બધાનો વિજેતા એવો કાલ આવી જતાં મનુષ્યનું શું કોઈ રક્ષણ કે શરણ થઈ શકે છે ? કોઇ જ નહિ (૧)

शोचन्ति स्वजनानन्त नीयमानान् स्वकर्मभि ।
नेष्यमाण न शोचन्ति स्वात्मान मूढबुद्धय ॥३॥
ससारे दु खदावाग्नि-ज्वलज्ज्वालाकरालिते ।
वने मृगार्भकस्येव शरण नास्ति देहिन ॥४॥

असहाय जीव अपने कर्मों के द्वारा मृत्यु के समीप पहुँचाये जाते हैं। अर्थात्-माता, पिता, भाई, बहन, पुत्र, पुत्री, स्त्री आदि के देखते हीं देखते जीव को उसका स्वकृत कर्म मृत्यु के लिये समर्पित कर देता है, उस समय उस जीव के त्राण करने में माता पिता आदि कोई भी समर्थ नहीं होते हैं, जीव अकेला ही मृत्यु प्राप्त कर स्वकृत कर्मानुसार फल भोगता है ॥२॥

शोचन्ति स्वजनानन्त, नीयमानान् स्वकर्मभिः ।
नेष्यमाण न शोचन्ति, स्वात्मान मूढबुद्धयः ॥३॥

अज्ञानी जीव स्वकृत कर्मों के द्वारा मरते हुए स्वजनों के लिये शोक करता है, परन्तु वह अज्ञानी जीव अपने लिये नहीं सोचता है, जो वह स्वय अपने कर्म के द्वारा स्वय मृत्यु के निकट पहुँच रहा है ॥३॥

ससारे दुःखदावाग्नि,-ज्वलज्ज्वालाकरालिते ।
वने मृगार्भकस्येव, शरण नास्ति देहिनः ॥४॥

पितुर्मातु स्वसुर्भ्रातु-स्तनयाना च पश्यताम् ।
अत्राणो नीयते जन्तु , कर्मभिर्यमसद्मनि ॥२॥

પિતા, માતા, બહેન, ભાઇ, પુત્ર આદિના જોતજોતામા જ અસહાય જીવ પોતાના કર્મોદ્વારા મૃત્યુની સમીપે જાય છે, અર્થાત્-માતા, પિતા, ભાઇ, બહેન પુત્ર, પુત્રી, સ્ત્રી આદિના જોતજોતામા જ જીવને તેનુ પોતાનુ કર્મ મૃત્યુને સમર્પણ કરી દે છે, તે સમયે તે જીવનુ રક્ષણ કરવામા માતા પિતા આદિ કોઇપણ સમર્થ થતા નથી જીવ એકલો જ મૃત્યુ પ્રાપ્ત કરીને સ્વકૃત (પોતે કરેલા) કર્માનુસાર ફળ ભોગવે છે (૨)

शोचन्ति स्वजनानन्त, नीयमानान् स्वकर्मभि ।
नेष्यमाण न शोचन्ति, स्वात्मान मूढबुद्धय ॥३॥

અજ્ઞાની જીવ સ્વકૃત કર્મોદ્વારા મરી જતા સ્વજનો માટે શોક કરે છે, પરતુ તે અજ્ઞાની જીવ પોતાને માટે નથી વિચાર કરતા કે તે પોતે પોતાના કર્મ દ્વારા મૃત્યુની પાસે પહોચી રહ્યા છે (૩)

ससारे दु खदावाग्नि-ज्वलज्ज्वालाकरालिते ।
वने मृगार्भकस्येव, शरण नास्ति देहिन ॥४॥

अन्यच्च—परलोकसहायार्थं पिता माता न तिष्ठत ।
न पुत्रदार न ज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठति केवल ॥१॥

३–'एगत्ताणुप्पेहा' एकत्वानुप्रेक्षा–आत्मन एकाकित्वचिन्तनम्, तथा चोक्तम्—
उपद्यते जन्तुरिहैक एव विपद्यते चैकक एव दुःखी ।
कर्मार्जयत्येकक एव चित्रम् आसेवते तत्फलमेक एव ॥१॥

जैसे प्रचण्ड दावाग्नि की ज्वाला में जलते हुए वन में मृग के बच्चे का कोई रक्षक नहीं होता है, उसी प्रकार दुःखरूपी दावाग्नि की प्रचण्ड ज्वाला से जलते हुए इस संसार में आत्मा का कोई रक्षक नहीं है ॥४॥ और भी कहा है—

परलोकसहायार्थं, पिता माता न तिष्ठतः ।
न पुत्रदार न ज्ञाति-र्धर्मस्तिष्ठति केवलः ॥

माता-पिता परलोक में जीव को सहायता के लिये नहीं जाते हैं, न स्त्री, पुत्र, स्वजन–सबंधी आदि ही जाते हैं। मात्र एक धर्म ही परलोक में जीव के साथ जाता है ॥४॥
—इस प्रकार से चिंतन करना सो अशरणानुप्रेक्षा है।

(एगत्ताणुप्पेहा) एकत्वानुप्रेक्षा–आत्मा अकेला है। इस प्रकार से चिन्तन करना–एकत्वानुप्रेक्षा है। एकत्वानुप्रेक्षा का चिन्तन इस प्रकार से करना चाहिये, जैसे–कर्म के फलों को यह जीव अकेला ही भोगता है। माता पिता आदि कोई भी इस जीव को साथ नहीं देते हैं। सब अपने २ स्वार्थ के हैं। कहा भी है—

જેમ પ્રચણ્ડ દાવાગ્નિની જ્વાલાથી બળતા વનમા મૃગના બચ્ચાઓનો કોઈ રક્ષક થતો નથી, તે જ પ્રકારે દુખરૂપી દાવાગ્નિની પ્રચણ્ડ જ્વાલાથી બળતા આ સસારમા આત્માનો કોઈ રક્ષક નથી (૪)

વળી પણ કહ્યુ છે—

परलोकसहायार्थं, पिता माता न तिष्ठत ।
न पुत्रदार न ज्ञाति,–र्धर्मस्तिष्ठति केवल ॥५॥

માતા-પિતા પરલોકમા જીવની સહાયતા માટે જતા નથી, ન સ્રી, પુત્ર, સ્વજન, સબધી આદિ પણ જાય છે માત્ર એક ધર્મ જ પરલોકમા જીવની સાથે જાય છે આ પ્રકારે ચિતન કરવુ તે અશરણાનુપ્રેક્ષા છે (૫)

(एगत्ताणुपेहा) એકત્વાનુપ્રેક્ષા–આત્મા એકલો છે એ પ્રકારે ચિતન કરવુ તે એકત્વાનુપ્રેક્ષા છે એકત્વાનુપ્રેક્ષાનુ ચિતન આ રીતે કરવુ જોઈએ, જેમકે–કર્મના ફળને આ જીવ એકલો જ ભોગવે છે, માતા પિતા આદિ કોઈ પણ આ જીવને સાથ દેતા નથી સૌ પોતપોતાના સ્વાર્થના છે

यज्जीवेन धन स्वय बहुविधै कष्टैरिहोपार्ज्यते,
तत्सभूय कलत्रमित्रतनयैर्भ्रात्रादिभिर्भुज्यते ।
तत्तत्कर्मवशाच्च नारकनरस्ववासितिर्यग्भवे—,
ष्वेकः सैप मुदु सहानि सहते दु खान्यसह्यान्यहो ॥२॥

उत्पद्यते जन्तुरिहैक एव, विपद्यते चैकक एव दुःखी ।
कर्मार्जयत्येकक एव चित्रम्, आसेवते तत्फलमेक एव ॥१॥

जीव अकेला ही इस ससार में उत्पन्न होता है, अकेला ही अपार दु ख का अनुभव करते हुए मृत्यु को प्राप्त होता है, अकेला ही वह नानाविध कर्मों का उपार्जन करता है, तथा अकेला ही उसका फल भोगता है ॥१॥

यज्जीवेन धन स्वय बहुविधैः कष्टैरिहोपार्ज्यते,
तत्सभूय कलत्रमित्रतनयैर्भ्रात्रादिभिर्भुज्यते ।
तत्तत्कर्मवशाच्च नारकनरस्वर्वासितिर्यग्भवे,—
ष्वेकः सैष मुहु सहानि सहते दुःखान्यसह्यान्यहो ॥२॥

जीव जो अनकविध कष्टों से स्वय धनोपार्जन करता है, उस धन का उपभोग स्त्री, पुत्र, भाई—बन्धु, मित्र, स्वजन—सम्बन्धी आदि करते हैं। परन्तु धनोपार्जन करनेवाला वह जीव तो स्वकृत उन उन कर्मों के अनुसार देव मनुष्य नारक तिर्यक् आदि-

કહ્યુ પણ છે—

उत्पद्यते जन्तुरिहैक एव विपद्यते चैकक एव दु खी ।
कर्मार्जयत्येकक एव चित्रम्, आसेवते तत्फलमेक एव ॥१॥

જીવ એકલો જ આ સસારમા ઉત્પન્ન થાય છે, એકલો જ અપાર દુ ખનો અનુભવ કરતો કરતો મૃત્યુને પ્રાપ્ત થાય છે, એકલો જ તે અનેક પ્રકારના કર્મોનુ ઉપાર્જન કરે છે, તથા એકલો જ તેનુ ફળ ભોગવે છે (૧)

यज्जीवेन धन स्वय बहुविधै कष्टैरिहोपार्ज्यते,
तत्संभूय कलत्रमित्रतनयैर्भ्रात्रादिभिर्भुज्यते ।
तत्तत्कर्मवशाच्च नारक–नर–स्वर्वासितिर्यग्भवे–
ष्वेक सैष मुहु सहानि सहते दु खान्यसह्यान्यहो ॥२॥

જીવ જે વિધવિધ અનેક કષ્ટોથી પોતે ધન ઉપાર્જન કરે છે તે ધનનો ઉપભોગ સ્ત્રી, પુત્ર, ભાઈ–બધુ, મિત્ર, સ્વજન–સબધી આદિ કરે છે પરતુ ધનોપાર્જન કરવાવાળો તે જીવ તો પોતે કરેલા તે તે કર્મો અનુસાર દેવ મનુષ્ય નારક તિર્યંક્ આદિ ભવોમા એકલો જ અતિદુ સહ અનત

जीवो यस्य कृते भ्रमत्यनुदिनं दैन्यं समालम्बते,
धर्माद् भ्रश्यति वञ्चयत्यतिहितान् न्यायादपक्रामति ।
देहः सोऽपि महात्मना न पदमप्येकः परस्मिन्भवे,
गच्छत्यस्य ततः कथं वदत भोः ! साहाय्यमाधास्यति ॥३॥
स्वार्थैकनिष्ठं स्वजनं स्वदेहं,-मुख्यं ततः सर्वमवेत्य सम्यक् ।
सर्वस्य कल्याणनिमित्तमेकं, धर्मं सहायं विदधीत धीमान् ॥इति॥

भवों में अकेला ही अतिदुःसह अनन्त दुःखों को सहता रहता है। अहो ! इस संसार में कोई भी अपना नहीं है ॥ २ ॥ और भी कहा है—

जीवो यस्य कृते भ्रमत्यनुदिनं दैन्यं समालम्बते,
धर्माद् भ्रश्यति वञ्चयत्यतिहितान् न्यायादपक्रामति ।
देहः सोऽपि महात्मना न पदमप्येकः परस्मिन् भवे,
गच्छत्यस्य ततः कथं वदत भोः ! साहाय्यमाधास्यति ॥३॥

जीव जिस शरीर के लिये चारों दिशाओं में घूमता-फिरता रहता है, दीनता प्रदर्शित करता है, धर्म से भ्रष्ट होता है, अपने अत्यन्त हितैषियों को भी ठगता है, न्यायमार्ग से चलित होता है, वह शरीर भी जीव के साथ परभव में एक पग भी नहीं साथ देता। हे भव्यो ! सोचो—विचारो ! यह शरीर तुम्हारी क्या सहायता कर सकता है, कुछ नहीं ॥३॥ और भी कहा है—

स्वार्थैकनिष्ठं स्वजनं स्वदेहं,-मुख्यं ततः सर्वमवेत्य सम्यक् ।
सर्वस्य कल्याणनिमित्तमेकं, धर्मं सहायं विदधीत धीमान् ॥४॥

દુઃખોને સહન કરતો રહે છે અહો ! આ સંસારમાં કોઈએ આપણું નથી (૨) બીજું પણ કહ્યું છે—

जीवो यस्य कृते भ्रमत्यनुदिनं दैन्यं समालम्बते,
धर्मात् भ्रश्यति वञ्चयत्यतिहितान् न्यायादपक्रामति ।
देहः सोऽपि महात्मना न पदमप्येकः परस्मिन् भवे,
गच्छत्यस्य ततः कथं वदत भो ! साहाय्यमाधास्यति ॥३॥

જીવ જે શરીરને માટે ચારેય દિશાઓમાં ભટકતો ફરતો રહે છે, દીનતા બતાવે છે, ધર્મથી ભ્રષ્ટ થાય છે, પોતાના અત્યંત હિતેચ્છુઓને પણ ઠગે છે, ન્યાયમાર્ગથી ચલિત થાય છે, તે શરીર પણ જીવની સાથે પરભવમાં એક ડગલુએ સાથ આપતું નથી હે ભવ્યો ! શોચો-વિચારો ! આ શરીર તમારી શું સહાયતા કરી શકશે ? કાંઈ પણ નહિ !

४—'ससाराणुप्पेहा' ससारानुप्रेक्षा—ससारस्य चतसृषु गतिषु मवानुपाती ससरणलक्षणस्य अनुप्रेक्षा—तथा चोक्तम् —

माता परभवे पुत्री सैव जन्मान्तरे स्वसा।
पुनर्भार्या भवेत् सैव प्राणिना गतिरीदृशी॥ १॥

माता, पिता, स्त्री, पुत्र, स्वजन, सबधी आदि सभी भी स्वार्थ के हैं, अपना शरीर स्वार्थ का ही है, इसलिये बुद्धिमान् मनुष्य इन सभी विषयों पर अच्छी तरह विचार कर सभी का कल्याण करने वाले धर्म का ही सहायक बनावे ॥४॥

—इस प्रकार से चिन्तन करना एकत्वानुप्रेक्षा है

(संसाराणुप्पेहा) ससारानुप्रेक्षा—चतुर्गतिकलक्षण ससार के विषय में चिन्तन करना—ससारानुप्रेक्षा है। कहा भी है—

माता परभवे पुत्री, सैव जन्मान्तरे स्वसा।
पुनर्भार्या भवेत् सैव, प्राणिना गतिरीदृशी ॥१॥

इस भव में इस जीव की जो माता होती है, वह दूसरे भव में उसकी पुत्री हो जाती है, फिर भवान्तर में उसकी बहन हो जाती है, उसके बाद अन्य जन्म में फिर वह उसकी भार्या हो जाता है। अधिक क्या कहा जाय! ससार की कुछ ऐसी ही विचित्र दशा है ॥ १ ॥ और भी कहा है—

ફરી પણ કહ્યુ છે—

स्वार्थैकनिष्ठ स्वजन स्वदेह,—मुख्य तन सर्वमवेत्य सम्यक्।
सर्वस्य कल्याणनिमित्तमेक, धर्मं सहायं विदधीत धीमान् ॥४॥

માતા, પિતા સ્ત્રી, પુત્ર, સ્વજન—સબધી આદિ બધા સ્વાર્થના છે પોતાનુ શરીર પણ સ્વાર્થનુ જ છે, તેથી બુદ્ધિમાન્ મનુષ્ય એ બધા વિષયો ઉપર સારી રીતે વિચાર કરી સર્વનુ કલ્યાણ કરવવાળા ધર્મને જ સહાયક બનાવે આ પ્રકારે ચિતન કરવુ તે એકત્વાનુપ્રેક્ષા છે (૫)

(ससाराणुप्पेहा) સસારાનુપ્રેક્ષા—ચતુર્ગતિલક્ષણવાળા સસારના વિષયમા ચિતન કરવુ તે સસારાનુપ્રેક્ષા છે કહ્યુ પણ છે—

माता परभवे पुत्री, सैव जन्मान्तरे स्वसा।
पुनर्भार्या भवेत सैव, प्राणिना गतिरीदृशी ॥१॥

આ ભવમા જે આ જીવની માતા હોય છે તે જ બીજા ભવમા તેની પુત્રી થઇ જાય છે વળી ભવાન્તરમા તેની બહેન થઈ જાય છે ત્યાર પછી બીજા જન્મમા વળી તે તેની સ્ત્રી થઈ જાય છે વધારે શુ કહેવાય! સસારની કોઇ એવી જ વિચિત્ર દશા છે (૧) ફરી પણ કહ્યુ છે—

पिता परभवे पुत्र स तु भ्राता भवान्तरे ।
पुनस्तात पुन पुत्र प्राणिना गतिरीदृशी ॥२॥
मातापितृसहस्राणि पुत्रदारशतानि च ।
संसारेष्वनुभूतानि यान्ति यास्यन्ति चापरे ॥३॥
कृच्छ्रेणामेध्यमध्ये नियमिततनुभि स्थीयते गर्भवासे,
कान्ताविश्लेषदुःखव्यतिकरविषमे यौवने चोपभोग ।

पिता परभवे पुत्रः, स तु भ्राता भवान्तरे ।
पुनस्तातः पुनः पुत्रः, प्राणिना गतिरीदृशी ॥२॥

इस ससार म जीव की पर्याय एकसी शाश्वत नहीं रहती है। जो इस भव मे पिता होता है, वही परभव म पुत्र बन जाता है, एव भवान्तर म भ्राता भी हो जाता है, पश्चात फिर पिता हो जाता है, फिर पुत्र हो जाता है । इस ससार मे प्राणियो की ऐसी ही कुछ विचित्र गति है ॥२॥ और भी कहा है—

मातापितृसहस्राणि, पुत्रदारशतानि च ।
ससारेष्वनुभूतानि, यान्ति यास्यन्ति चापरे ॥३॥

इस ससार म इस जीव के हजारो माता और पिता बन चुके है, हजारो पुत्र-कलत्र हो चुके है । इस समय भी ये माता, पिता पुत्र और कलत्र इस जीवके है, और आगे भी ये होंगे ॥३॥और भी कहा है—

कृच्छ्रेणामेध्यमध्ये नियमिततनुभिः, स्थीयते गर्भवासे,
कान्ताविश्लेषदुःखव्यतिकरविषमे यौवने चोपभोगः ।

पिता परभवे पुत्र स तु भ्राता भवान्तरे ।
पुनस्तात पुन पुत्र, प्राणिना गतिरीदृशी ॥२॥

આ સસારમા જીવની પર્યાય એક જેવી કાયમ રહેતી નથી જે આ ભવમા પિતા હોય છે તે જ પરભવમા પુત્ર થઇ જાય છે, તેમજ ભવાન્તરમા ભાઇ પણ થઈ જાય છે પછી પિતા થઈ જાય છે વળી પુત્ર થઈ જાય છે આ સ સારમા પ્રાણિઓની એવી જ કઇ વિચિત્ર ગતિ છે (૨) ફરી પણ કહ્યુ છે—

मातापितृसहस्राणि, पुत्रदारशतानि च ।
ससारेष्वनुभूतानि, यान्ति यास्यन्ति चापरे ॥३॥

આ સ સારમા આ જીવના હજારો માતાપિતા થઇ ચુકયા છે હજારો પુત્ર-કલત્ર થઇ ચુકયા છે આ સમયે પણ એ માતા, પિતા, પુત્ર અને કલત્ર આ જીવના છે, અને આગળ પણ આ માતા-પિતા આદિ આ જીવને થશે જ (૩) વળી કહ્યુ પણ છે

सुक्कज्झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, तं जहा—

नारीणामप्यवज्ञा विलसति नियत वृद्धभावेऽप्यसाधु,
ससारे रे मनुष्या! वदत यदि सुख स्वल्पमप्यस्ति किंचित् ॥४॥
—इद धर्मध्यानम् ॥

'सुक्कज्झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते' शुक्लध्यान चतुर्विध चतुष्प्र-

नारीणामप्यवज्ञा विलसति नियत वृद्धभावेऽप्यसाधुः,
ससारे रे मनुष्याः! वदत यदि सुख स्वल्पमप्यस्ति किंचित् ॥४॥

अत्यन्त अपवित्र गर्भवास में रह कर यह जीव अनेक कष्टों को सहता रहता है। वहाँ इसका शरीर सिकुडा रहता है। यौवन अवस्था में यह जीव विषय भोग के समय स्त्रीवियोगजनित दुःख से अत्यन्त दुःखी होता है। स्त्री यदि जीवित रहे तो वृद्धावस्था में यह अपनी उसी स्त्री का असह्य अपमान सहन करता है। फिर हे भव्यो! तुम ही कहो, इस ससार में किंचिन्मात्र भी सुख है? कुछ भी नहीं ॥५॥

इस प्रकार जीव को ससार के विषय में विचार करना चाहिये। इस प्रकार धर्मध्यान समझना चाहिये।

अब शुक्लध्यान कहते हैं-(सुक्कज्झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते) शुक्लध्यान चार प्रकार का है, और यह स्वरूप लक्षण, आलम्बन एव अनुप्रेक्षा के भेद से सोलह

कृच्छ्रेणामेध्यमध्ये नियमिततनुभि स्थीयते गर्भवासे,
कान्ताविश्लेषदुःखव्यतिकरविषमे यौवने चोपभोग ।
नारीणामप्यवज्ञा विलसति नियत वृद्धभावेऽप्यसाधु,
ससारे रे मनुष्या ! वदत यदि सुख स्वल्पमप्यस्ति किंचित् ॥४॥

અત્યંત અપવિત્ર ગર્ભવાસમાં રહીને આ જીવ અનેક કષ્ટોને સહન કરતો રહે છે ત્યાં તેનું શરીર સંકોચાઈને રહે છે જુવાન અવસ્થામાં આ જીવ વિષયભોગના સમયે સ્ત્રીવિયોગથી ઉત્પન્ન થતા દુખથી બહુ જ દુખી થાય છે સ્ત્રી જો જીવતી હોય તો પોતાની વૃદ્ધાવસ્થામાં તે પોતાની તે જ સ્ત્રીનું અસહ્ય અપમાન સહન કરે છે માટે હે ભવ્યો! તમે જ કહો, આ સંસારમાં જરાપણ સુખ છે? જરાય નહિ (૮)

આ પ્રકારે જીવને સંસારના વિષયમાં વિચાર કરવો જોઈએ એ પ્રકારે ધર્મ-ધ્યાન સમજવું જોઈએ

હવે શુક્લધ્યાન કહે છે (सुक्कज्झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते) શુક્લધ્યાન ચાર પ્રકારનું છે, અને તે સ્વરૂપ લક્ષણ, આલ-

पुहुत्तवियक्के सवियारी १, एगत्तवियक्के अवियारि २, सुहुमकिरिए अप्पडिवाई ३, समुच्छिन्नकिरिए अणियट्टी ४। सुक्करस णं झाणस्स

त्यवतार प्रज्ञप्तम् । यथा मलापगमेन शुचिताधर्माभिसम्बन्धात् पट शुक्ल इत्युच्यते, तथा रागद्वेषमलापनयनाच्छुचिताधर्मसम्बन्धाद् ध्यानमपि शुक्लमित्युच्यते, तच्चतुर्विध प्रज्ञप्तम्, तद् यथा-'**पुहुत्तवियक्के सवियारी**' पृथक्त्ववितर्कं सविचारि १, '**एगत्तवियक्के अवियारि**' एकत्ववितर्कमविचारि २, '**सुहुमकिरिए अप्पडिवाई**' सूक्ष्मक्रियमप्रतिपाति, ३, '**समुच्छिन्न-किरिए अणियट्टी**' समुच्छिन्नक्रियमनिवर्ति ४-इति ।

तत्र पूर्वगतश्रुतज्ञानानुसारेण ध्येयविशेषगतोत्पादादिनानापर्यायाणा द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिकादिनानानयैरर्थव्यञ्जनयोगसक्रान्तिसहितानुचिन्तन पृथक्त्ववितर्कसविचारम् ॥ १ ॥

प्रकार का कहा गया है। जिस तरह मैल के दूर होने से वस्त्र बिलकुल साफ हो जाता है और "**शुक्लः पटः**" इस प्रकार कहा जाता है, उसी तरह रागद्वेषरूपी मैल के अपगमसे ध्यान भी शुद्ध हो जाता है और इसीसे वह शुक्लध्यान कहा जाता है। (**तं जहा**) इसके वे चार प्रकार ये हैं (**पुहुत्तवियक्के सवियारी**) पृथक्त्ववितर्कसविचार, (**एगत्तवियक्के अवियारि**) एकत्ववितर्क अविचार, (**सुहुमकिरिए अप्पडिवाई**) सूक्ष्मक्रिय-अप्रतिपाती, (**समुच्छिन्नकिरिए अणियट्टी**) समुच्छिन्नक्रिय-अनिवर्त्ति । इनका वर्णन इस प्रकार है-पूर्वगत श्रुतज्ञान के अनुसार ध्येयविशेषगत उत्पाद, व्यय एव ध्रौव्य आदि पर्यायों का द्रव्यार्थिक एव पर्यायार्थिक नयों से अर्थसक्रान्ति, व्यजनसक्रान्ति एव योगसक्रान्ति युक्त होकर विचार करना सो **पृथक्त्ववितर्कसविचार शुक्लध्यान** का प्रथम भेद है ॥१॥ जिस तरह सिद्धगारुटिक आदि

વન તેમજ અનુપ્રેક્ષાના ભેદથી સોળ પ્રકારનુ કહેવાય છે જેવી રીતે મેલ ધોવાઈ જવાથી વસ્ત્ર બિલકુલ સાફ થઈ જાય છે અને "शुक्ल पट" એ પ્રકારે કહેવાય છે, એ જ રીતે રાગદ્વેષરૂપી મેલ દૂર થઈ જવાથી ધ્યાન પણ શુદ્ધ થઈ જાય છે, અને તે કારણથી તેને શુકલધ્યાન કહેવાય છે (त जहा) તેના ચાર પ્રકાર આ છે-(पुहुत्तवियक्के सवियारी) પૃથક્ત્વવિતર્ક-સવિચાર (एगत्तवियक्के अवियारि) એકત્વવિતર્ક-અવિચાર (सुहुमकिरिए अप्पडिवाई) સૂક્ષ્મક્રિય-અપ્રતિપાતી (समुच्छिन्नकिरिए अणियट्टी) સમુચ્છિન્નક્રિય-અનિવૃત્તિ

પૂર્વગત શ્રુતજ્ઞાન અનુસાર ધ્યેયવિશેષથી થતા ઉત્પાદ, વ્યય તેમજ ધ્રૌવ્ય આદિ પર્યાયોના દ્રવ્યાર્થિક નયોથી, અર્થસક્રાંતિ, વ્યજનસક્રાંતિ તેમજ યોગસક્રાંતિથી યુક્ત થઈને વિચાર કરવો તે પૃથક્ત્વવિતર્કસવિચાર શુકલ-ધ્યાનનો પ્રથમ પ્રકાર છે (૧)

यथा सिद्धगारुडिकादिमन्त्र सकलशरीरस्यापि विषम विष मन्त्रसामर्थ्येन सर्वावयवेभ्य समाकृष्य दशस्थाने समानीय स्तम्भयति, तथा पूर्वगतश्रुतानुसारतोऽर्थव्यञ्जनयोगसक्रान्तिराहित्येनाशेषविषयेभ्य सहृत्यैकस्मिन्नेव पर्याये योगस्य निवातस्थान दीपशिखावत्र स्थिरीकरणम् एकत्ववितर्कोऽविचारम् ॥२॥

यत्र जघन्ययोगस्त सञ्ज्ञिपर्याप्तस्य मनोद्रव्याणि समये निरुन्धन् असख्यातसमयै सपूर्णं मनोयोग तत्पश्चात् पर्याप्तद्वीन्द्रियस्य वाग्योगपर्यायतोऽसख्यातगुणन्यूनवाग्योगपर्यायान् प्रतिसमय निरुन्धन् असख्यातसमयै सपूर्णं वाग्योग, ततश्च प्रथमसमयसमुत्पन्ननिगोदजीवस्य जघन्यकाययोगपर्यायतोऽसख्यातगुणहीनकाययोग प्रतिसमय निरुन्धन्, असख्यात-

मत्रवाला पुरुष समस्त शरीर के अवयवों में व्याप्त विषम विष को मत्र के प्रभाव से खेचकर काटे हुए स्थानपर स्तभित कर देता है उसीतरह पूर्वगतश्रुतज्ञान के अनुसार अर्थ, व्यजन एव योगों की सक्रान्ति से रहित होने के कारण, अशेषविषयों से योगों को हटाकर एक ही पर्याय मे योग का, वातरहित स्थान मे दीपक की लौ की तरह, स्थिर करना सो एकत्ववितर्क–अविचार–नामक शुक्लध्यान का दूसरा भेद है ॥२॥ सूक्ष्मक्रिय–अप्रतिपाति शुक्लध्यान सिर्फ सूक्ष्मकाययोगवाले जीव को होता है। सूक्ष्मक्रिय-अप्रतिपाति शुक्लध्यान के सन्मुख हुआ जीव सर्वप्रथम मनोद्रव्यों का प्रतिसमय निरोध करता हुआ असख्यातसमयप्रमाणकाल में समस्तमनोयोग का, इसीतरह प्रतिसमय वाग्योगपर्यायों का निरोध करता हुआ असख्यातसमयप्रमाणकाल मे समस्तवाग्योग का, एव प्रथम समयमें समुत्पन्न निगोदजीवकी जघन्य–अवगाहनास्वरूप काययोगपर्यायों से असख्यात-

જેવી રીતે સિદ્ધ ગારુડિક આદિ મત્રવાળો પુરુષ આખા શરીરના અવયવોમા પ્રસરેલા વિષમ ઝેરને મત્રના પ્રભાવથી ખેચીને કરડેલા સ્થાન ઉપર સ્તભિત કરી દે છે, તેવી જ રીતે પૂર્વગત શ્રુતજ્ઞાન અનુસાર અર્થ, વ્યજન તેમજ યોગોની સક્રાતિથી રહિત હોવાને કારણે, બીજા વિષયોથી યોગોને હટાવીને એક જ પર્યાયમા યોગને હવા વગરના સ્થાનમા દીપકની જ્યોતની પેઠે સ્થિર કરવો તે શુકલધ્યાનના એકત્વવિર્તકઅવિચાર નામનો બીજો પ્રકાર છે (૨)

સૂક્ષ્મક્રિય–અપ્રતિપાતિ શુકલધ્યાનને સન્મુખ થયેલો જીવ સર્વપ્રથમ મનોદ્રવ્યોના હરવખત નિરોધ કરતા કરતા અસખ્યાત–સમય–પ્રમાણ કાલે સમસ્ત મનોયોગનો, તેમ જ વારવાર વાગ્યોગપર્યાયોનો નિરોધ કરતા કરતા અસખ્યાત–સમય–પ્રમાણે કાળે સમસ્ત વાગ્યોગનો, તેમ જ પ્રથમ સમયમા સમુત્પન્ન નિગોદ જીવની જઘન્યઅવગાહનાસ્વરૂપ કાયયોગની પર્યાયોથી અસખ્યાતગુણહીનકાયયોગનો વારવાર નિરોધ કરતા

समयैर्बादरकाययोगं च सर्वथा निरुणद्धि, तदेदं सूक्ष्मक्रियाऽप्रतिपातिध्यानमुपक्रमते ॥३॥ तत्र श्वासोच्छ्वासस्वरूपं सूक्ष्ममपि काययोगं निरुध्य अयोगित्वं प्राप्य शैलेशीमवस्थां प्रतिपद्यते, मध्यमकालेन 'अ इ उ ऋ लृ' इत्येवरूपं पञ्चलघ्वक्षरोच्चारणसमकालस्थितिकं समुच्छिन्नक्रियमनिवर्ति ध्यानमनुभवति ॥४॥ दशवैकालिकसूत्रस्याचारमणिमञ्जूषाटीकायामस्माभिः सविस्तरं शुक्लध्यानवर्णनं कृतम्, अतस्ततोऽवगन्तव्यम् ।

तथा-तत् शुक्लध्यानं चतुष्प्रत्यवतारं प्रज्ञप्तम् । '**सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता**' शुक्लस्य खलु ध्यानस्य चत्वारि लक्षणानि प्रज्ञप्तानि । '**तं जहा**' तद्यथा

गुणहीनकाययोग को प्रतिसमय में निरोध करता हुआ असंख्यातसमयप्रमाणकाल में बादरकाययोग का सर्वथा निरोध कर देता है, तब जाकर इसे सूक्ष्मक्रिय-अप्रतिपातिनामक शुक्लध्यान की प्राप्ति होती है, यह **सूक्ष्मक्रिय-अप्रतिपातिनामक** तीसरा भेद है ।३। इस अवस्थामें श्वासोच्छ्वासरूप सूक्ष्मकाययोगका भी निरोध कर, अयोगि-अवस्था को प्राप्त हो, शैलेशी अवस्था को प्राप्त कर लेता है, वहां 'अ इ उ ऋ लृ' इन पांच लघु अक्षरों के मध्यम काल से उच्चारण करने में जितना समय लगता है उतने समय तक वहां ठहर कर समुच्छिन्नक्रिय-अनिवर्तिनामक शुक्लध्यानका अनुभव करता है ।४। इस शुक्लध्यान का विशेष विस्तारपूर्वक वर्णन दशवैकालिक सूत्र के चौथे अध्ययन की 'आचारमणिमंजूषा' नामकी टीका में लिखा गया है, अतः विशेषार्थी को इसका विशेष वर्णन वहां से देख लेना चाहिये । (**सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता**) इस शुक्लध्यान के चार लक्षण हैं, (**तं जहा**) वे इस प्रकार हैं-(**विवेगे**) विवेक-देह से आत्माको

કરતા અસંખ્યાતસમયપ્રમાણુ કાળે બાદરકાયયોગનો સર્વથા નિરોધ કરી દે છે, ત્યારે તેને સૂક્ષ્મક્રિય-અપ્રતિપાતિ નામક શુકલધ્યાનની પ્રાપ્તિ થાય છે આ સૂક્ષ્મક્રિય-અપ્રતિપાતિ નામે ત્રીજો પ્રકાર છે (૩)

તે અવસ્થામાં શ્વાસોચ્છ્વાસરૂપ સૂક્ષ્મકાયયોગનો પણુ નિરોધ કરી, અયોગિ અવસ્થાને પ્રાપ્ત થઈ, શૈલેશી અવસ્થાને પ્રાપ્ત કરી લે છે ત્યાં અ ઇ ઉ ઋ લૃ આ પાંચ લઘુ અક્ષરોનુ મધ્યમકાલથી ઉચ્ચારણુ કરવામાં જેટલો સમય લાગે તેટલા સમયસુધી રોકાઈને સમુચ્છિન્નક્રિય-અનિવર્તિ નામક શુકલધ્યાનનો અનુભવ કરે છે (૪) આ શુકલધ્યાનનુ વિશેષ વિસ્તારપૂર્વક વર્ણુન દશવૈકાલિકસૂત્રના ચોથા અધ્યયનની આચારમણિમંજૂષા નામની ટીકામાં લખવામાં આવ્યુ છે તેથી વિશેષ જાણુવાવાળાને માટે તેનુ વિશેષ વર્ણુન ત્યાંથી જોઇ લેવુ જોઇએ

(सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता) આ શુકલધ્યાનના ચાર લક્ષણુ છે. (तं जहा) તે આ પ્રકારે છે-(विवेगे) વિવેક-દેહથી આત્માને જુદો જાણુવો,

यथा सिद्धगारुडिकादिमन्त्रि सकलशरीरव्यापि विषम विष मन्त्रसामर्थ्येन सर्वावयवेभ्य समाकृष्य दंशस्थाने समानीय स्तम्भयति, तथा पूर्वगतश्रुतानुसारतोऽर्थव्यञ्जनयोगसंक्रान्तिराहित्येनाशेषविषयेभ्य सद्दयैकस्मिन्नेव पर्याये योगस्य निर्वातस्थाने दीपशिखावत् स्थिरीकरणम् एकत्ववितर्काऽविचारम् ॥२॥

यदा जघन्ययोगवत सन्निपर्याप्तस्य मनोद्रव्याणि समये निरुन्धन् असंख्यातसमयै सपूर्णं मनोयोग तत्पश्चात् पर्याप्तद्वीन्द्रियस्य वाग्योगपर्यायतोऽसंख्यातगुणन्यूनवाग्योगपर्यायान् प्रतिसमय निरुन्धन् असंख्यातसमयै सपूर्णं वाग्योग, ततश्च प्रथमसमयसमुत्पन्ननिगोदजीवस्य जघन्यकाययोगपर्यायतोऽसंख्यातगुणहीनकाययोग प्रतिसमय निरुन्धन्, असंख्यात-

मन्त्रवाला पुरुष समस्त शरीर के अवयवों में व्याप्त विषम विष को मन्त्र के प्रभाव से खेचकर काटे हुए स्थानपर स्तभित कर देता है उसीतरह पूर्वगतश्रुतज्ञान के अनुसार अर्थ, व्यजन एव योगों की संक्रान्ति से रहित होने के कारण, अशेषविषयों से योगों को हटाकर एक ही पर्याय मे योग का, वातरहित स्थान में दीपक की लौ की तरह, स्थिर करना सो **एकत्ववितर्क–अविचार–नामक शुक्लध्यान** का दूसरा भेद है ॥२॥ सूक्ष्मक्रिय–अप्रतिपाति शुक्लध्यान सिर्फ सूक्ष्मकाययोगवाले जीव को होता है। सूक्ष्मक्रिय-अप्रतिपाति शुक्लध्यान के सन्मुख हुआ जीव सर्वप्रथम मनोद्रव्यों का प्रतिसमय निरोध करता हुआ असंख्यातसमयप्रमाणकाल में समस्तमनोयोग का, इसीतरह प्रतिसमय वाग्योगपर्यायों का निरोध करता हुआ असंख्यातसमयप्रमाणकाल मे समस्तवाग्योग का, एव प्रथम समयमें समुत्पन्न निगोदजीवकी जघन्य–अवगाहनास्वरूप काययोगपर्यायों से असंख्यात

જેવી રીતે સિદ્ધ ગારુડિક આદિ મંત્રવાળો પુરુષ આખા શરીરના અવયવોમાં પ્રસરેલા વિષમ ઝેરને મંત્રના પ્રભાવથી ખેંચીને કરડેલા સ્થાન ઉપર સ્તંભિત કરી દે છે, તેવી જ રીતે પૂર્વગત શ્રુતજ્ઞાન અનુસાર અર્થ, વ્યંજન તેમજ યોગોની સંક્રાંતિથી રહિત હોવાને કારણે, બીજા વિષયોથી યોગોને હટાવીને એક જ પર્યાયમાં યોગને હવા વગરના સ્થાનમાં દીપકની જ્યોતની પેઠે સ્થિર કરવો તે શુક્લધ્યાનના એકત્વવિતર્કઅવિચાર નામનો બીજો પ્રકાર છે (૨)

સૂક્ષ્મક્રિય–અપ્રતિપાતિ શુક્લધ્યાનને સન્મુખ થયેલો જીવ સર્વપ્રથમ મનોદ્રવ્યોના હરવખત નિરોધ કરતા કરતા અસંખ્યાત–સમય–પ્રમાણ કાલે સમસ્ત મનોયોગનો, તેમ જ વારવાર વાગ્યોગપર્યાયોનો નિરોધ કરતા કરતા અસંખ્યાત–સમય–પ્રમાણે કાળે સમસ્ત વાગ્યોગનો, તેમ જ પ્રથમ સમયમાં સમુત્પન્ન નિગોદ જીવની જઘન્યઅવગાહનાસ્વરૂપ કાયયોગની પર્યાયોથી અસંખ્યાતગુણહીનકાયયોગનો વારવાર નિરોધ કરતા

णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ; तं जहा—अवायाणुप्पेहा १ असुभाणुप्पेहा २ अणंतवत्तियाणुप्पेहा ३ विपरिणामाणुप्पेहा ४। से तं झाणे॥ सू० ३०॥

खलु ध्यानस्य चतस्रोऽनुप्रेक्षा प्रज्ञप्ता, 'त जहा' तद्यथा—'अवायाणुप्पेहा' अपायानुप्रेक्षा—अपायाना प्राणातिपाताद्याश्रवद्वारजनितानाम् अनर्थानामनुचिन्तनम् ॥१॥ 'असुभाणुप्पेहा' अशुभानुप्रेक्षा-ससारस्यैव अशुभस्वरूपतयाऽनुचिन्तनम्॥२॥ 'अणतवत्तियाणुप्पेहा' अनन्तवृत्तिताऽनुप्रेक्षा—अनन्तवृत्तिता=तैलिकचक्रयोजितस्य वृषस्य मार्गाऽनवसानवत्कदाप्यसमाप्तिशीलता तस्या अनुप्रेक्षा—अनुचिन्तनम् ॥३॥ 'विपरिणामाणुप्पेहा' विपरिणामानुप्रेक्षा—उत्पादव्ययध्रौव्यस्वभावाना पदार्थाना यो विपरिणाम—प्रतिक्षण नवनवपर्यायरूप तस्यानुचिन्तनम् ॥४॥ 'से त झाणे' तदेतद् ध्यानम् ॥सू० ३०॥

अपायों का अर्थात् प्राणातिपातादिक पाप, जो कर्मों के आस्रव के लिये द्वार जैसे है उनसे जनित अनर्थों का वारवार विचार करना सो अपायानुप्रेक्षा है १। (असुभाणुप्पेहा) अशुभानुप्रेक्षा—ससार स्वय अशुभस्वरूप है, ऐसा वारवार विचार करना सो अशुभानुप्रेक्षा है २। (अणतवत्तियाणुप्पेहा) अनन्तवर्त्तितानुप्रेक्षा—भवपरपरा की अनतवृत्ति का विचार करना, अर्थात् जिस प्रकार तेली का बैल कोल्हू मे जोता जाने पर चक्कर काटता है उसी प्रकार इस जीव के भी, जबतक यह ससार मे रहता है तबतक इसके भ्रमण की कभी भी समाप्ति नहीं होती है, इस प्रकार का अनुचिन्तन करना अनतवर्तितानुप्रेक्षा है ३। (विपरिणामाणुप्पेहा) विपरिणामानुप्रेक्षा—प्रत्येक द्रव्य, उत्पाद, व्यय एव ध्रौव्य स्वभाववाले है, अत वस्तु प्रतिसमय

અપાયાનુપ્રેક્ષા—અપાયોને અર્થાત્—પ્રાણાતિપાતાદિક પાપ જે કર્મોના આસ્રવને માટે દ્વાર જેવા છે તેમનાથી થતા અનર્થોને વારવાર વિચાર કરવો તે અપાયાનુપ્રેક્ષા છે (असुभाणुप्पेहा) અશુભાનુપ્રેક્ષા—સસાર પોતે અશુભસ્વરૂપ છે, એવો વારવાર વિચાર કરવો તે અશુભાનુપ્રેક્ષા છે (अणतवत्तियाणुप्पेहा) અનતવર્ત્તિતાનુપ્રેક્ષા—ભવપરપરાની અનતવૃત્તિતાનો વિચાર કરવો, અર્થાત્ જેવી રીતે ઘાચીનો બળદ ઘાણીમા જોડાઈને ચક્કરો—(આટા) ફર્યા કરે છે એવી રીતે આ જીવ પણ જ્યા સુધી સસારમા રહે છે ત્યા સુધી તેના ભ્રમણની કદી પણ સમાપ્તિ થતી નથી, એ પ્રકારનુ અનુચિતન કરવુ તે અનતવર્તિતાનુપ્રેક્ષા છે (विपरिणामाणुप्पेहा) વિપરિણામાનુપ્રેક્ષા—પ્રત્યેક દ્રવ્ય ઉત્પાદ, વ્યય તેમજ ધ્રૌવ્ય સ્વભાવવાળા છે, તેથી હરવખત વસ્તુ પરિણમન

चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता; तं जहा-विवेगे १, विउस्सग्गे २, अव्वहे ३, असम्मोहे ४। सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता, तं जहा-खंती १, मुत्ती २, अज्जवे ३, मद्दवे ४। सुक्कस्स

'विवेगे' विवेक -पृथक्करण,स च पृथक्कार -देहाद्या मनो बुद्ध्या विवेचनम् ॥१॥ 'विउस्सग्गे' व्युत्सर्ग -निस्सङ्गतया देहोपधित्याग ॥२॥ 'अव्वहे' अव्यथम्-देवाद्युपसर्गजनित भय व्यथा-तया रहितम् ॥३॥ 'असमोहे' असमोह -देवमायाजनितस्य मूढत्वस्य निषेध ॥४॥ 'सुकस्स ण झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता' शुक्लस्य खलु ध्यानस्य चत्वार्यालम्बनानि प्रज्ञप्तानि, 'त जहा' तद्यथा-'खंती' क्षान्ति -परकृताऽपकारसहनम् ॥१॥ 'मुत्ती' मुक्ति -निर्लोभता ॥२॥ 'अज्जवे' आर्जव-सरलता ॥३॥ 'मद्दवे' मार्दव -मृदुता ॥४॥ 'सुक्कस्स ण झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ' शुक्लस्य

भिन्न जानना १। (विउस्सग्गे) व्युत्सर्ग-देह तथा उपधि का परित्याग करना २। (अव्वहे) अव्यथ-व्यथारहित होना-देवादिकृत उपसर्गजनित भय का नाम व्यथा है, इससे रहित का नाम अव्यथ है, अर्थात्-देवादिकृत उपसर्गों का निश्चल भावसे सहन करना ३। (असंमोहे) असमोह-मोहरहित होना-देवादिक द्वारा प्रदर्शित मायाकी ओर आकृष्ट नहीं होना ४। (सुक्कस्स ण झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता) शुक्लध्यान के चार आलंबन हैं, (त जहा) वे इस प्रकार हैं-(खंती) क्षान्ति-परकृत अपकार का सहन करना १, (मुत्ती) मुक्ति-लोभका परित्याग करना २, (अज्जवे) आर्जव-चित्त मे सरलता रखना ३, और (मद्दवे) मार्दव गुणका होना ४। (सुक्कस्स ण झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ) शुक्लध्यान की चार अनुप्रेक्षा है, (त जहा) वे ये है-(अवायाणुप्पेहा) अपायानुप्रेक्षा-

---

(विउस्सग्गे) व्युत्सर्ग-देह तथा उपधिनो परित्याग करवो, (अव्वहे) अव्यथ-व्यथारहित होवु-देवादिकृत उपसर्गथी थयेल भयनु नाम व्यथा छे, तेनाथी रहितनु नाम अव्यथ छे, अर्थात्-देवादिकथी कराएल उपसर्गोने निश्चळ भावथी सहन करवा (असमोहे) असमोह मोहरहित थवु-देवादिकद्वारा प्रदर्शित माया तरफ आकर्षावु नहि (सुक्कस्स ण झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता) शुक्लध्यानना चार आलंबन छे, (त जहा) ते आ प्रकारे छे-(खंती) क्षान्ति-बीजाए करेल अपकारने सहन करवो, (मुत्ती) मुक्ति-लोभनो परित्याग करवो, (अज्जवे) आर्जव चित्तमा सरळता राखवी, अने (मद्दवे) मार्दव-मृदुता गुण थवु (सुक्कस्स ण झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ) शुक्लध्यानना चार अनुप्रेक्षा छे, (त जहा) ते आ छे (अवायाणुप्पेहा)

विउस्सग्गे, २ गणविउस्सग्गे, ३ उवहिविउस्सग्गे, ४ भत्तपाणविउस्सग्गे। से तं दव्वविउस्सग्गे। से किं तं भावविउस्सग्गे? भावविउस्सग्गे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा-१ कसायविउस्सग्गे, २ संसारविउस्स-

'गणविउस्सग्गे' गणव्युत्सर्ग ।२। 'उवहिविउस्सग्गे' उपधिव्युत्सर्ग —उपधेरुपकरणस्य त्याग ।३। 'भत्तपाणविउस्सग्गे' भक्तपानव्युत्सर्ग —अन्नजलत्याग ।४। 'से त दव्व-विउस्सग्गे' स एष द्रव्यव्युत्सर्ग । 'से किं त भावविउस्सग्गे' अथ कोऽसौ भावव्युत्सर्ग । 'भावविउस्सग्गे तिविहे पण्णत्ते' भावव्युत्सर्ग त्रिविध प्रज्ञप्त, 'त जहा' तद्यथा—'कसाय-विउस्सग्गे' कषायव्युत्सर्ग ।१। 'ससारविउस्सग्गे' संसारव्युत्सर्ग ।२। 'कम्मविउस्सग्गे' कर्मव्युत्सर्ग ।३। 'से किं त कसायविउस्सग्गे' अथ कोऽसौ कषायव्युत्सर्ग ? 'कसाय-

(सरीरविउस्सग्गे १, गणविउस्सग्गे २, उवहिविउस्सग्गे ३, भत्तपाणविउस्सग्गे ४) शरीरव्युत्सर्ग १, गणव्युत्सर्ग २, उपधिव्युत्सर्ग ३, और भक्तपानव्युत्सर्ग ४। इनमे शरीर के ममत्व का त्याग करना सो शरीरव्युत्सर्ग है १। पडिमा आदि आराधन करने के लिये गण—सम्प्रदाय से ममत्वका त्याग करना सो गणव्युत्सर्ग है २। वस्त्रादिक उपधि के ममत्व का त्याग करना सो उपधिव्युत्सर्ग है ३। भोजन एव पानी का त्याग करना सो भक्तपानव्युत्सर्ग है ४। (से त दव्वविउस्सग्गे) यह सब द्रव्यव्युत्सर्ग है। (से किं त भावविउस्सग्गे) भावव्युत्सर्ग क्या—कितने प्रकार का है? (भावविउस्सग्गे तिविहे पण्णत्ते) भावव्युत्सर्ग तीन प्रकार का है, (तं जहा) वे प्रकार ये है—(कसायविउस्सग्गे १ ससारविउस्सग्गे २ कम्मविउस्सग्गे ३) कषायव्युत्सर्ग १, ससारव्युत्सर्ग २, एव कर्मव्युत्सर्ग ३। (से किं त कसायविउस्सग्गे) कषायव्युत्सर्ग क्या कितने प्रकारका है? (कसाय-

જેમકે-(सरीरविउस्सग्गे गणविउस्सग्गे उवहिविउस्सग्गे भत्तपाणविउस्सग्गे) શરીર-વ્યુત્સર્ગ, ગણવ્યુત્સર્ગ, ઉપધિવ્યુત્સર્ગ અને ભક્તપાનવ્યુત્સર્ગ તેમા શરીરના મમત્વનો ત્યાગ કરવો તે શરીરવ્યુત્સર્ગ છે પડિમા આદિ આરાધન કરવા માટે ગણ—સપ્રદાયથી મમત્વનો ત્યાગ કરવો તે ગણવ્યુત્સર્ગ છે વસ્ત્રાદિક ઉપધિથી મમત્વનો ત્યાગ કરવો તે ઉપધિવ્યુત્સર્ગ છે ભોજન તેમજ પાણીનો ત્યાગ કરવો તે ભક્તપાનવ્યુત્સર્ગ છે આ બધા દ્રવ્યવ્યુત્સર્ગ છે (से किं त भावविउस्सग्गे) ભાવવ્યુત્સર્ગ શુ-કેટલા પ્રકારનો છે? (भावविउस्सग्गे तिविहे पण्णत्ते) ભાવવ્યુત્સર્ગ ત્રણ પ્રકારનો છે, (त जहा) તે આ પ્રકારે છે-(कसायविउस्सग्गे ससारविउस्सग्गे कम्मविउस्सग्गे) કષાયવ્યુત્સર્ગ, સસારવ્યુત્સર્ગ તેમજ કર્મવ્યુત્સર્ગ

मूलम्—से किं तं विउस्सग्गे ? विउस्सग्गे दुविहे पण्णत्ते; तं जहा–१ दव्वविउस्सग्गे, २ भावविउस्सग्गे य। से किं तं दव्वविउस्सग्गे ? दव्वविउसग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा–१ सरीर-

टीका—आभ्यन्तरतपस षष्ठभेदमाह–'से किं त विउस्सग्गे' अथ कोऽसौ व्युत्सर्ग ? व्युत्सर्ग किंस्वरूप कतिविधश्चेति प्रश्न । व्युत्सर्ग –वि=विशेषेण, उत्=उत्कृष्टभावनया सर्ग =त्याग । 'विउस्सग्गे दुविहे पण्णत्ते' व्युत्सर्गो द्विविध प्रज्ञप्त, 'त जहा' तद्यथा १–'दव्वविउस्सग्गे' द्रव्यव्युत्सर्ग, २–'भावविउस्सग्गे' भावव्युत्सर्ग । 'से किं त दव्वविउस्सग्गे ?' अथ कोऽसौ द्रव्यव्युत्सर्ग ? 'दव्वविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते' द्रव्यव्युत्सर्ग –चतुर्विध प्रज्ञप्त, 'त जहा' तद्यथा–'सरीरविउस्सग्गे' शरीरव्युत्सर्ग ।१।

परिणमती रहती है। इस प्रकार जो चिन्तन करना इसका नाम विपरिणामानुप्रेक्षा है। (से त झाणे) इस प्रकार चार ध्यानका वर्णन हुआ ॥ सू० ३० ॥

'से किं त विउस्सग्गे' इत्यादि,

अब आभ्यन्तर तपका जो छठा भेद व्युत्सर्ग है उसका वर्णन करते है–(से किं तं विउस्सग्गे) विशेष रीति से उत्कृष्ट भावनापूर्वक परित्याग करना व्युत्सर्ग है, वह व्युत्सर्गतप क्या–कितने प्रकार का है ? (विउस्सग्गे दुविहे पण्णत्ते) व्युत्सर्ग के दो भेद है, (त जहा) वे ये है–(दव्वविउस्सग्गे भावविउस्सग्गे) १–द्रव्यव्युत्सर्ग और २–भावव्युत्सर्ग। (से किं त दव्वविउस्सग्गे) द्रव्यव्युत्सर्ग क्या–कितने प्रकार का है ? (दव्वविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते) द्रव्यव्युत्सर्ग चार प्रकार का है। (त जहा) जैसे–

કરતી હોય છે, એક જ રૂપે કદી નથી રહેતી એ પ્રકારે જે ચિંતન કરવું તેનું નામ વિપરિણામાનુપ્રેક્ષા છે (से त झाणे) એ પ્રમાણે ચાર ધ્યાનનું વર્ણન થયું (સૂ૦ ૩૦)

'से किं त विउस्सग्गे?' ઇત્યાદિ

હવે સૂત્રકાર આભ્યન્તર તપનો જે છઠ્ઠો પ્રકાર વ્યુત્સર્ગ છે તેનું વર્ણન કરે છે–(से किं त विउस्सग्गे) વિશેષરીતિથી ઉત્કૃષ્ટભાવનાપૂર્વક પરિત્યાગ કરવો તે વ્યુત્સર્ગ છે વ્યુત્સર્ગ તપ કેટલા પ્રકારનું છે ? (विउस्सग्गे दुविहे पण्णत्ते) એના બે પ્રકાર છે,–(त जहा) તે આ છે–(दव्वविउस्सग्गे भावविउस्सग्गे य) ૧ દ્રવ્યવ્યુત્સર્ગ અને ૨ ભાવવ્યુત્સર્ગ દ્રવ્યવ્યુત્સર્ગ શું–કેટલા પ્રકારનું છે ? (दव्वविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते) એ દ્રવ્યવ્યુત્સર્ગ ચાર પ્રકારનું છે (त जहा)

यसंसारविउस्सग्गे, ३ मणुयसंसारविउस्सग्गे, ४ देवसंसारविउस्सग्गे। से तं संसारविउस्सग्गे। से किं तं कम्मविउस्सग्गे ? कम्मविउस्सग्गे अट्ठविहे पण्णत्ते, तं जहा, १ णाणावरणिज्जकम्मविउस्सग्गे, २ दरिसणावरणिज्जकम्मविउस्सग्गे, ३ वेयणिज्जकम्मविउस्सग्गे, ४ मोहणिज्जकम्मविउस्सग्गे, ५ आउकम्मविउस्सग्गे, ६ णामकम्मविउस्सग्गे ७, गोयकम्मविउस्सग्गे ८, अंतरायकम्मविउस्सग्गे। से त कम्मविउस्सग्गे। से तं भावविउस्सग्गे ॥ सू० ३० ॥

स्सग्गे' मनुजसंसारव्युत्सर्ग ।३। 'देवससारविउस्सग्गे' देवसंसारव्युत्सर्ग ।४। 'से त ससारविउस्सग्गे' स एष ससारव्युत्सर्ग । 'से किं त कम्मविउस्सग्गे' अथ कोऽसौ कर्मव्युत्सर्ग ''कम्मविउस्सग्गे अट्ठविहे पण्णत्ते' कर्मव्युत्सर्ग अष्टविध प्रज्ञप्त । 'त जहा' तद्यथा-'णाणावरणिज्जकम्मविउस्सग्गे' ज्ञानावरणीयकर्मव्युत्सर्ग ।१। 'दरिसिणावरणिज्जकम्मविउस्सग्गे' दर्शनाऽऽवरणीयकर्मव्युत्सर्ग ।२। 'वेयणिज्जकम्मविउस्सग्गे' वेदनीयकर्मव्युत्सर्ग ।३। 'मोहणिज्जकम्मविउस्सग्गे' मोहनीयकर्म-

---

ग्गे ३, देवससारविउस्सग्गे ४) नैरयिकसंसारव्युत्सर्ग, तिर्यक्संसारव्युत्सर्ग, मनुजसंसारव्युत्सर्ग, एव देवसंसारव्युत्सर्ग, (से त ससारविउस्सग्गे) इस प्रकार चारगतिरूप संसार का यह व्युत्सर्ग (परित्याग) संसारव्युत्सर्ग है। (से किं त कम्मविउस्सग्गे) कर्मव्युत्सर्ग क्या-कितने प्रकार का है। (कम्मविउस्सग्गे अट्ठविहे पण्णत्ते) जिसमे आठ प्रकार के कर्मोका व्युत्सर्ग—परित्याग हो वह कर्मव्युत्सर्ग आठ प्रकार का है, (त जहा) जैसे (णाणावरणिज्जकम्मविउस्सग्गे १, दरिसणावरणिज्ज कम्मविउस्सग्गे २, वेयणिज्जकम्मविउस्सग्गे ३, मोहणिज्जकम्मविउस्सग्गे

देवससारविउस्सग्गे) नैरयिकस सारव्युत्सर्ग, तिर्यक्स सारव्युत्सर्ग, मनुजस सारव्युत्सर्ग तेमज देवस सारव्युत्सर्ग (से त ससारविउस्सग्गे) ओ प्रकारे चारेय गतिरूप संसारनो आ व्युत्सर्ग (परित्याग) ते संसारव्युत्सर्ग छे (से किं त कम्मविउस्सग्गे) कर्मव्युत्सर्ग केटला प्रकारनो छे ? (कम्मविउस्सग्गे अट्ठविहे पण्णत्ते) जेमा आठेय प्रकारना कर्मोनो व्युत्सर्ग—परित्याग थई जाय छे ओवो आ कर्मव्युत्सर्ग आठ प्रकारनो छे, (त जहा) जेमके—(णाणावरणिज्ज-कम्मविउस्सग्गे, दरिसणावरणिज्जकम्मविउस्सग्गे, वेयणिज्जकम्मविउस्सग्गे, मोहणि-

गे, ३ कम्मविउस्सग्गे। से किं तं कसायविउस्सग्गे,? कसायविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते; तं जहा-कोहकसायविउस्सग्गे, २ माणकसाय विउस्सग्गे,३ मायाकसायविउस्सग्गे,४ लोहकसायविउस्सग्गे। से तं कसायविउस्सग्गे। से किं तं संसारविउस्सग्गे? संसारविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते; तं जहा—१ णेरइयसंसारविउस्सग्गे, २ तिरि-

---

विउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते' कषायव्युत्सर्गं चतुर्विध प्रज्ञप्त, 'त जहा' तद्यथा-'कोहकसायविउस्सग्गे' क्रोधकषायव्युत्सर्ग ।१। 'माणकसायविउस्सग्गे' मानकषायव्युत्सर्ग। 'मायाकसायविउस्सग्गे' मायाकषायव्युत्सर्ग ।३। 'लोहकसायविउस्सग्गे' लोभकषायव्युत्सर्ग ।४। 'से त कसायविउस्सग्गे' स एष कषायव्युत्सर्ग । 'से किं ससारविउस्सग्गे' अथ कोऽसौ ससारव्युत्सर्ग ? 'ससारविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते' ससारव्युत्सर्ग चतुर्विध प्रज्ञप्त, 'तं जहा' तद्यथा—'णेरइयससारविउस्सग्गे' नैरयिकससारव्युत्सर्ग ।१। 'तिरियससारविउस्सग्गे' तिर्यक्संसारव्युत्सर्ग ।२। 'मणुयससारविउ-

---

विउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते) कषायव्युत्सर्ग चार प्रकारका है। (त जहा) वे चार प्रकार ये हैं-(कोहकसायविउस्सग्गे१, माणकसायविउस्सग्गे २, मायाकसायविउस्सग्गे ३, लोहकसायविउस्सग्गे ४) क्रोधकषायव्युत्सर्ग१, मानकषायव्युत्सर्ग२, मायाकषायव्युत्सर्ग ३ एव लोभकषायव्युत्सर्ग ४। (से त कसायविउसग्गे) इन क्रोधादि चार कषायोंका परित्याग करना यह कषायव्युत्सर्ग है। (से किं त ससारविउस्सग्गे) ससारव्युत्सर्ग क्या—कितने प्रकार का है? (ससारविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते) ससारव्युत्सर्ग चार प्रकार का है, (तं जहा) वे चार प्रकार ये है—(णेरइयससारविउस्सग्गे १ तिरियससारविउस्सग्गे २ मणुयससारविउस्स-

---

(से किं त कसायविउस्सग्गे) કષાયવ્યુત્સર્ગ કેટલા પ્રકારનો છે? (कसायविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते) કષાયવ્યુત્સર્ગ ચાર પ્રકારનો છે (त जहा) જેમકે-(कोहकसायविउस्सग्गे माणकसायविउस्सग्गे मायाकसायविउस्सग्गे लोहकसायविउस्सग्गे) ક્રોધ-કષાયવ્યુત્સર્ગ, માનકષાયવ્યુત્સર્ગ, માયાકષાયવ્યુત્સર્ગ, તેમજ લોભકષાયવ્યુત્સર્ગ (से त कसायविउस्सग्गे) એ ક્રોધાદિ ચારેય કષાયોનો પરિત્યાગ કરવો તે આ કષાય-વ્યુત્સર્ગ છે (से किं त संसारविउस्सग्गे) સંસારવ્યુત્સર્ગ કેટલા પ્રકારનો છે? (ससारविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते) સંસારવ્યુત્સર્ગ ચાર પ્રકારનો છે, (त जहा) તે ચાર પ્રકાર આ છે-(णेरइयससारविउस्सग्गे तिरियससारविउस्सग्गे मणुयससारविउस्सग्गे

जाव विवागसुयधरा तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे देसे गच्छागच्छिं गुम्मागुम्मिं फड्डाफड्डिं अप्पेगइया वायंति, अप्पेगइया पडि-

स्तुभगवन्त आसन्, तेषु शिष्येषु 'अप्पेगइया' अप्येकके=केचित्-'आयारधरा जाव विवागसुयधरा' आचारधरा यावद् विपाकश्रुतधरा -आचाराङ्गादि-विपाकान्त-सर्वश्रुत-धारिण, इमे पूर्वं वर्णिता, 'तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे देसे' तत्र तत्र तस्मिन् तस्मिन् देशे देशे-अत्र वीप्सया स्थानबाहुल्यकथनात् साधूनामधिकता अप्रतिबन्धविचरण च सूचितम्, तथा बहवो बहुविधग्रामनगरवनादिषु गता इति च गम्यते। 'गच्छागच्छि' गच्छागच्छि-एकाचार्यपरिवारो गच्छ -गच्छेन गच्छेन विभज्य वाचनादिकं प्रवृत्तम्, इति विग्रह 'तत्र तेनेदमिति सरूपे' इत्यनेन गच्छागच्छि, इत्यस्य साधुत्वम्। एव 'गुम्मागुम्मिं' गुल्मागुल्मि-गुल्म=गच्छैकभाग, गुल्मेन गुल्मेन विभज्य इद वाचनादिक प्रवृत्तमिति गुल्मागुल्मि। 'फड्डाफड्डि' फड्डकाफड्डकि-फड्डक=लघुतरो गच्छैकभाग, फड्डकेन फड्डकेन विभज्येद वाचनादिक प्रवृत्तम्, इत्यर्थ फड्डकाफड्डकि-एषु प्रयोगेषु समासे कृते पूर्वपदस्य दीर्घ समासान्त इच्-प्रत्ययश्च। 'अप्पेगइया वायंति' अप्येकके

से अनगार भगवत थे, उनमें (अप्पेगइया) कितनेक (आयारधरा जाव विवागसुयधरा) आचारागसूत्र के धारक थे, 'यावत्' शब्द से कितनेक सूत्रकृताङ्ग से लेकर प्रश्नव्याकरण पर्यन्त सूत्रों में से एक २ सूत्र के धारक थे और कितनेक विपाकश्रुत के धारक थे, उपलक्षणसे कितनेक सबके भी धारक थे। (तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे देसे) वे उसी बगीचे में भिन्न २ जगह पर (गच्छागच्छि) गच्छ गच्छरूप में विभक्त होकर, (गुम्मागुम्मिं) गच्छ के एक २ भाग में विभक्त होकर (फड्डाफड्डि) फुटकर फुटकर रूप में विभक्त होकर विराजते थे। इनमें से (अप्पेगइया वायंति) कितनेक सूत्र की वाचना प्रदान करते थे-सूत्र पढ़ाते

અનગાર ભગવંતો હતા, તેમનામાં (अप्पेगइया) કેટલાક (आयारधरा जाव विवाग सुयधरा) આચારાંગ સૂત્રના ધારક હતા, 'यावत्' શબ્દથી કેટલાક સૂત્રકૃતાંગથી લઈને પ્રશ્નવ્યાકરણ સુધીનાં સૂત્રોમાંથી એક એક સૂત્રના ધારક હતા, અને કેટલાક વિપાકસૂત્રના ધારક હતા, ઉપલક્ષણથી કેટલાક બધા સૂત્રોના ધારક હતા (तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे देसे) તે જ બગીચામાં જુદી જુદી જગ્યાએ (गच्छागच्छि) ગચ્છ ગચ્છ રૂપમાં વિભક્ત થઈને, (गुम्मागुम्मिं) ગચ્છના એક એક ભાગમાં વિભક્ત થઈને (फड्डाफड्डि) છૂટા-છવાયા રૂપમાં વિભક્ત થઈને વિરાજતા હતા તેમનામાંથી (अप्पेगइया वायंति) કેટલાક સૂત્રની વાચના આપતા હતા-સૂત્ર ભણાવતા

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अणगारा भगवंतो अप्पेगइया आयारधरा

व्युत्सर्ग ।४। 'आउकम्मविउस्सग्गे' आयुष्कर्मव्युत्सर्गः । ।५। 'णामकम्मविउस्सग्गे' नामकर्मव्युत्सर्ग ।६। 'गोयकम्मविउस्सग्गे' गोत्रकर्मव्युत्सर्ग ।७। 'अंतरायकम्मविउस्सग्गे' अन्तरायकर्मव्युत्सर्ग ।८। 'से त कम्मविउस्सग्गे' स एष कर्मव्युत्सर्ग, 'से त भावविउस्सग्गे' स एष भावव्युत्सर्ग । इत्थमनशनादिभेदेन षड्विध बाह्य प्रायश्चित्तादिभेदेन षड्विधमाभ्यन्तर च तपो व्याख्यातम् ॥ सू० ३० ॥

टीका—'तेण कालेणं तेण समएण' इत्यादि। तस्मिन काले तस्मिन समये 'समणस्स भगवओ महावीरस्स' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'बहवे अणगारा भगवंतो' बहवोऽनगारा भगवन्त—वर्णिता पुनर्वर्ण्यमाना गिरा

४, आउकम्मविउस्सग्गे ५, णामकम्मविउस्सग्गे ६, गोयकम्मविउस्सग्गे, ७ अंतरायकम्मविउस्सग्गे ८) ज्ञानावरणीयकर्मव्युत्सर्ग १, दर्शनावरणीयकर्मव्युत्सर्ग २, वेदनीयकर्मव्युत्सर्ग ३, मोहनीयकर्मव्युत्सर्ग ४, आयुकर्मव्युत्सर्ग ५, नामकर्मव्युत्सर्ग ६, गोत्रकर्मव्युत्सर्ग ७, एव अतरायकर्मव्युत्सर्ग ८, (से तं भावविउस्सग्गे) ये सब भाव व्युत्सर्ग हैं । इस तरह यहां तक अनशनादिक के भेद से छह प्रकार बाह्यतप का और प्रायश्चित्त आदि के भेद से छह प्रकार आभ्यतर तप का वर्णन हुआ ॥ सू०३० ॥

'तेण कालेण तेण समएणं' इत्यादि।

(तेण कालेण तेणं समएण) उस काल और उस समय (समणस्स भगवओ महावीरस्स) श्रमण भगवान् महावीर प्रभु के, जो (बहवे अणगारा भगवतो) बहुत

उज्जकम्मविउस्सग्गे, आउकम्मविउस्सग्गे, णामकम्मविउस्सग्गे, गोयकम्मविउस्सग्गे, अंतरायकम्मविउस्सग्गे) જ્ઞાનાવરણીયકર્મવ્યુત્સર્ગ, દર્શનાવરણીયકર્મવ્યુત્સર્ગ, વેદનીયકર્મવ્યુત્સર્ગ, મોહનીય કર્મવ્યુત્સર્ગ, આયુકર્મવ્યુત્સર્ગ,નામકર્મવ્યુત્સર્ગ, ગોત્રકર્મવ્યુત્સર્ગ તેમજ અંતરાયકર્મવ્યુત્સર્ગ, (से त कम्मविउस्सग्गे) આ પ્રકારે આ કર્મવ્યુત્સર્ગ આઠ પ્રકારનો છે (से तं भावविउस्सग्गे) એ બધા ભાવવ્યુત્સર્ગ છે એ રીતે અહીં સુધી અનશન આદિના ભેદથી છ પ્રકારના બાહ્યતપનું અને પ્રાયશ્ચિત્ત આદિના ભેદથી છ પ્રકારના આભ્યંતર તપનું વર્ણન થયું (સૂ૦ ૩૦)

'तेण कालेण तेण समएण' ઈત્યાદિ

(तेण कालेण तेण समएण) તે કાલ અને તે સમયે (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર પ્રભુના જે (बहवे अणगारा भगवतो) ઘણા

बहुविहाओ कहाओ कहंति, अप्पेगइया उड्ढजाणू अहोसिरा झाणकोट्ठोवगया संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥ सू० ३१ ॥

=वैराग्यवान् निर्वीयते याभिरता, एतादृशा बहुविधा कथा कथयन्ति=श्रावयन्ति। या विविधा कथा शृण्वन् श्रोता मोह परित्यज्य तत्त्व प्रति आक्षिप्तो भवति, तथा विक्षिप्त =कुमार्गविमुखो भवति, एव संवदनीय =मोक्षसुखाभिलाषी, निर्विण्ण =संसारादुद्विग्नो भवति। 'अप्पेगइया उड्ढजाणू अहोसिरा' अप्येकके ऊर्ध्वजानव, अध शिरस =अधोमुखा–नोर्ध्वं तिर्यग् वा दत्तदृष्टय 'झाणकोट्ठोवगया' ध्यानकोष्ठोपगता –ध्यानरूपो य कोष्ठस्तमुपगता, संयमेन तपसाऽऽत्मान भावयन्तो विहरन्ति ॥ सू० ३१ ॥

जिस कथा के सुनने से प्राणी मोक्षसुख की अभिलाषावाला बन जाता है उस कथा का नाम 'संवेदनी कथा' है ३, जिस कथा के सुनने से प्राणी संसार से विरक्त हो जाता है उस कथा का नाम 'निर्वेदनी कथा' है ४। इन कथाओं का सुनने वाला श्रोता मोह का परित्याग कर तत्त्व के प्रति आकृष्ट होता है, कुमार्ग से विमुख होता है, मोक्ष सुखका अभिलाषी होता है और निर्विण्ण–संसारसे–उद्विग्न–होता है। (अप्पेगइया उड्ढजाणू अहोसिरा झाणकोट्ठोवगया संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति) कितनेक मुनिजन दोनों घुटनों को ऊँचा कर नीचे मस्तक किये हुए–माथा झुकाये हुए–ध्यानरूपी कोष्ठ मे प्राप्त थे। इस प्रकार संयम और तपसे अपनी आत्मा को भावित करते हुए साधुगण विचर रहे थे ॥सू० ३१॥

મોક્ષના સુખ માટે અભિલાષાવાળો બને છે તે કથાનું નામ 'સંવેદની કથા' છે, જે કથા સાંભળવાથી પ્રાણી સંસારથી વિરક્ત થાય છે તે કથાનું નામ 'નિર્વેદની કથા' છે આ કથાઓના સાંભળનાર શ્રોતા મોહનો પરિત્યાગ કરીને તત્ત્વના તરફ આકર્ષિત થાય છે, કુમાર્ગથી વિમુખ થાય છે, મોક્ષના સુખના અભિલાષવાળા થાય છે અને સંસારથી નિર્વિણ્ણ-ઉદ્વિગ્ન થાય છે (अप्पेगइया उड्ढजाणू अहोसिरा झाणकोट्ठोवगया संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति) કેટલાક મુનિજન બન્ને ઘુટણો ઉંચા રાખી, માથું નીચે રાખી–માથું નીચે કરીને–ધ્યાનરૂપી કોઠામાં પ્રાપ્ત હતા એ પ્રકારે સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા સાધુગણ વિચરતા હતા. (સૂ૦ ૩૧)

पुच्छंति, अप्पेगइया परियट्टंति, अप्पेगइया अणुप्पेहंति, अप्पेगइया अक्खेवणीओ विक्खेवणीओ संवेयणीओ णिव्वेयणीओ

वाचयन्ति—सूत्रवाचना ददते—गच्छैकदेश गणाऽवच्छेदकाभिहित निजाय सूत्रवाचना वाचयन्ति। 'अप्पेगइया पडिपुच्छंति' अप्येकके प्रतिपृच्छन्ति=सूत्रार्थौ पृच्छन्ति, 'अप्पेगइया परियट्टंति' अप्येकके परिवर्तयन्ति=सूत्रार्थौ पुनःपुनरभ्यस्यन्ति। 'अप्पेगइया अणुप्पेहंति' अप्येकके अनुप्रेक्षन्ते=परिचिन्तयन्ति। 'अप्पेगइया अक्खेवणीओ विक्खेवणीओ संवेयणीओ णिव्वेयणीओ बहुविहाओ कहाओ कहंति' अप्येकके आक्षेपणी विक्षेपणी संवेदिनी निर्वेदिनीर्बहुविधा कथा कथयन्ति, मोहापनीय तत्त्व प्रति आक्षिप्यते=आकृष्यते प्राणी याभिस्ता आक्षेपण्यस्ता—'कथा' इत्यस्य विशेषणम्। विक्षेपणी—विक्षिप्यते=कुमार्गे प्रसक्त प्राणी कुमार्गात्पृथक् क्रियते याभिस्ता विक्षेपण्यस्ता। संवेदिनी—संवेद्यते=मोक्षसुखाभिलाष क्रियते याभिस्ता। निर्वेदिनी-निर्वेद्यते=संसाराद् निर्विण्णो

थे, (अप्पेगइया) कितनेक (पडिपुच्छंति) सूत्र और अर्थ को पूछते थे, (अप्पेगइया) कितनेक (परियट्टंति) सूत्र और अर्थ की आवृत्ति करते थे, (अप्पेगइया) कितनेक (अणुप्पेहंति) सूत्र—अर्थ की अनुप्रेक्षा—परिचिन्तन करते थे, (अप्पेगइया) कितनेक (अक्खेवणीओ १, विक्खेवणीओ २, संवेयणीओ ३, णिव्वेयणीओ ४, बहुविहाओ कहाओ कहंति) आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेदिनी, और निर्वेदिनी, इन अनेक प्रकार की कथाओं को कहते थे। मोह से दूर कराकर प्राणी जिस कथा के द्वारा तत्त्व के प्रति आकृष्ट किया जाता है उस कथा का नाम 'आक्षेपणी कथा' है १, कुमार्ग में रत प्राणी जिस कथा से उस कुमार्ग की ओर से पृथक् किया जाता है उस कथा का नाम 'विक्षेपणी कथा' है २,

હતા, (अप्पेगइया) કેટલાક (पडिपुच्छंति) સૂત્ર તથા અર્થ પૂછતા હતા (अप्पेगइया) કેટલાક (परियट्टंति) સૂત્ર તથા અર્થની આવૃત્તિ કરતા હતા (अप्पेगइया) કેટલાક (अणुप्पेहंति) સૂત્ર—અર્થની અનુપ્રેક્ષા—પરિચિંતન કરતા હતા (अप्पेगइया) કેટલાક (अक्खेवणीओ, विक्खेवणीओ, संवेयणीओ णिव्वेयणीओ, बहुविहाओ कहाओ कहंति) આક્ષેપણી, વિક્ષેપણી, સંવેદની, અને નિર્વેદની, એ પ્રકારે અનેક પ્રકારની કથાઓ કરતા હતા મોહથી દૂર કરીને જે કથા તત્ત્વના તરફ આકર્ષણ કરે છે તે કથાનુ નામ 'આક્ષેપણી કથા' છે કુમાર્ગમા મગ્ન થયેલા પ્રાણીને જે કથાથી તે કુમાર્ગ તરફથી જુદો કરાવાય તે કથાનુ નામ 'વિક્ષેપણી કથા' છે જે કથા સાંભળવાથી પ્રાણી

चिंता-पसंग-पसरिय-वह-बंध-महल्ल-विउल-कल्लोल-कलुण-विलविय-लोभ-कलकलंत-बोलबहुलं अवमाणण-फेण-तिव्व-

काङ्क्षायामाह-'संजोग-विओग-वीइ-चिंता-पसंग-पसरिय वह-बंध महल्ल-विउल-कल्लोल-कलुण-विलविय-लोभ-कलकलंत-बोल-बहुलं' संयोग-वियोग वीचि-चिन्ताप्रसङ्ग-प्रसृत-वध-बन्ध-महाविपुल-कल्लोल-करुण-विलपित-लोभ-कलकलायमान-बोल-(ध्वनि)-बहुलम्-संयोग-वियोगाः=अप्रियशब्दादिसंयोग-प्रियशब्दादिवियोगा एव वीचयः=तरङ्गा यत्र सागरे स संयोग-वियोगवीचिः, चिन्ताप्रसङ्गः=पुनः पुनश्चिन्ताप्राप्तिः स एव प्रसृत=प्रसरणं यस्य स तथा, वधाः=हननानि, बन्धाः=संयमनानि, त एव महान्तो=दीर्घाः, विपुलाः=विस्तीर्णाः कल्लोलाः-महोर्मयो यत्र स वधबन्धमहाविपुलकल्लोलः, करुणानि=करुणरसजनकानि विलपितानि=विलपनवचनानि, लोभाः=लोभसम्भूताऽऽक्रोशाश्च त एव कलकलायमाना बोलाः=ध्वनयो बहुला यत्र स तथा, ततः संयोगवियोगवीचिश्चासौ चिन्ताप्रसङ्गप्रसृतश्च तथा वधबन्धमहाविपुलकल्लोलश्चासौ करुणविलपितलोभकलकलबोलबहुलश्च स तथा, तं तादृशं, संयोगादितरङ्गतरङ्गित चिन्ताविस्तीर्णं वधबन्धकल्लोलं करुणविलापलोभसंभूताक्रोशप्रचण्डनादनादितमित्यर्थः। पुनः कथंभूतम्? 'अवमाणणफेणतिव्वखिंसणपुलंपुलप्पभूयरोगवेयणपरिभवविणिवाय-

(संजोग-विओग-वीइ-चिंतापसंग-पसरिय-वह-बंध-महल्ल-विउल-कल्लोल-कलुण-विलविय लोभ-कलकलंत-बोल-बहुल) संयोग=अमनोज्ञ शब्दादिकों का संबंध, वियोग=मनोज्ञ शब्दादिकोंका अभाव, ये जिसमें वीचि-कल्लोल है, चिन्ता जिसका विस्तार है, वध एवं बंधन ही जिसमें विस्तृत तरंगे है, करुणारसजनक विलापवचन एवं लोभ से संभूत आक्रोशवचन, ये दो जिसकी बहुल कलकलायमान ध्वनियां है-गर्जना है, (अवमाणण-फेण-तिव्व-खिंसण-पुलंपुल-प्पभूय-रोगवेयण-परिभव-विणिवाय-फरस-धरिसणा-समावडिय-कढिण-कम्म-पत्थर-तरंग-रंगत-निच्चमच्चुभय-तोयपट्ठं) अपमान ही जिसमें फेनराशि है। दु सहनिंदा, निर-

(संजोग-विओग वीइ-चिंतापसंग पसरिय-वह बंध महल्ल विउल-कल्लोल-कलुण-विलविय-लोभ-कलकलंत-बोल-बहुलं) સંયોગ-મનને ન ગમે તેવા શબ્દ આદિકોનો સંબંધ, મનને ગમે તેવા શબ્દ આદિકોનો વિયોગ, એ જેમાં વીચિ-લહેરો છે, ચિંતા જેનો વિસ્તાર છે, વધ તેમજ બંધન જ જેમાં મોટા મોજા છે, કરૂણારસજનક વિલાપવચન તેમજ લોભથી ઉત્પન્ન થયેલ આક્રોશવચન એ બે જેની મોટી કલકલાટ ધ્વનિઓ છે-ગર્જના છે, (अवमाणण फेण तिव्व-खिंसण-पुलंपुल-प्पभूय-रोगवेयण-परिभव-विणिवाय-फरुस - धरिसणा - समावडिय कढिण-कम्म-पत्थर- तरंग-रंगत-निच्चमच्चुभय-तोयपट्ठं) અપમાન જ જેમાં ફીણના

मूलम्—संसारभउव्विग्गा भीया जम्मण–जर–मरण-गंभीर–दुक्ख–पक्खुभिय–पउर–सलिलं संजोग–विओग–वीइ-

टीका—भगवत श्रीमहावीरस्वामिनोऽनगारा पुन कीदृशा ? इत्याह–'ससारभउव्विग्गा' इत्यादि। ससारभयोद्विग्ना –चतुर्गतिभ्रमणरूपससारभयादुद्विग्ना =व्याकुला, 'केनोपायेन समारसागरात् तरिष्याम ' इतिचिन्ताजालाकुला इत्यर्थ । अत एव 'भीया'–भीता = भययुक्ता, अस्य तरन्ती यत्रान्वय । सूत्रकार ससारसागर वर्णयति–'जम्मण–जर–मरण-करण-गभीर-दुक्ख पक्खुभिय-पउर सलिल' जन्म-जरा-मरण करण-गम्भीर दु ख-प्रक्षुभित-प्रचुर–सलिलम्–जन्मजरामरणान्येव करणानि=साधनानि यस्य तत् तथा, तदेव गम्भीर-दु ख=प्रगाढदु ख, तदेव प्रक्षुभित=प्रचलितम्, प्रचुर=विपुल सलिल=जल यस्मिन् स जन्म-जरा–मरण–करण–गम्भीर–दु ख–प्रक्षुभित-प्रचुरसलिलस्त, पुन कीदृश ससारसागरम् ? इत्या-

' ससारभउव्विग्गा ' इत्यादि।

भगवान महावीर के अनगार और भी कैसे थे ? इस बातको प्रकट करने के लिये सूत्रकार इस सूत्रकी प्ररूपणा करते हुए कहते है कि–भगवान् महावीर स्वामी के ये अनगार (ससारभउव्विग्गा) चतुर्गति मे भ्रमण करने रूप ससार के भय से उद्विग्न थे, 'किस उपाय से हम लोग इस अथाह ससारसागर से पार होंगे ' इस प्रकार का चिन्तवन सर्वदा करते रहते थे। (भीया) इसलिये ये ससारभीरु थे। अब यहा से यह ससारसागर कैसा है ? इस बात को नीचे लिखित विशेषणों द्वारा सूत्रकार स्पष्ट करते है–(जम्मण–जर–मरण करण–गभीर–दुक्ख–पक्खुभिय–पउरसलिल) जन्म, जरा और मरण, ये ही जिसके साधन है ऐसा प्रगाढ दु ख ही जिसमे उछलता हुआ अगाध जल भरा हुआ है, तथा

' ससारभउव्विग्गा ' ઇત્યાદિ

ભગવાન્ મહાવીરના અનગાર ફરીપણ કેવા હતા ? તે વાતને પ્રકટ કરવા સૂત્રકાર આ સૂત્રની પ્રરૂપણા કરતા કહે છે કે–ભગવાન્ મહાવીર સ્વામીના તે અનગાર (ससारभउव्विग्गा) ચતુર્ગતિમા ભ્રમણ કરાવવારૂપ સસારના ભયથી ઉદ્વિગ્ન હતા, 'કયા ઉપાયથી અમે આ અગાધ સસારસાગરથી પાર થઇએ' એ પ્રકારનુ ચિંતવન સર્વદા કર્યા કરતા હતા (भीया) એથી તેઓ સસારભીરૂ હતા હવે અહીંથી આ સસારસાગર કેવો છે ? તે વાત નીચે લખેલા વિશેષણો દ્વારા સૂત્રકાર સ્પષ્ટ કરે છે–(जम्मण-जर-मरण करण गभीर-दुक्ख पक्खुभिय-पउरसलिल) જન્મ, જરા અને મરણ, એ જ જેના સાધન છે એવા પ્રગાઢ દુ ખ જ જેમા વિસ્તારથી ઉછળતા પાણીના જેમ ભરેલા છે તથા

कलुस-जल-संचयं पइभय अपरिमिय-महिच्छ-कलुसमइ-वाउवेग- उद्धुम्ममाण-दगरय-रयधआर-वरफेण-पउर-आसा-

...चयो यत्र स तथा तम्। 'पइभय' प्रतिभयम्=महाभयङ्करम्, **'अपरिमिय-महिच्छ कलुसमइ-वाउवेग-उद्धुम्ममाण-दगरय-रयधआर-वरफेण-पउर-आसा-पिवास-धवल'** अपरिमित-महेच्छ-कलुषमति-वायुवेगो-द्धूयमानो-दकरजोरयाऽन्धकार-वरफेन-प्रचुराऽऽशा-पिपासा-धवलम्-अपरिमिता =अत्यधिका ये महेच्छा -तीव्राभिलाषवन्तो लोका , तेषां कलुषा=मलिना या मति सैव वायुवेगस्तेन उद्धूयमानम्-उदकरजोरय -जलकणसमूह , तेन अन्धकार इव यत्र स तथा वरफेनेन-आशापिपासाभिर्धवल इव धवलो य स तथा त, तत्राप्राप्तार्थाना प्राप्तिभावना आशा , धनसम्बन्धिन्यत्यन्तलालसा पिपासा । **'मोहमहावत्तभोगभममाण गुप्पमाणुच्छलतपच्चोणियत्तपाणियपमायचंडबहुदुट्ठसावयसमाहयुद्धायमाणपब्भार - घोर-कंदियमहारवरवतभेरवरव'**-मोहमहावर्तभोगभ्राम्यद्गुप्यदुच्छलत्प्रत्यवनिपतत्पानीयप्रमादचण्ड-

भव रूप है। जिसमें कलुष-मलिन-जल का सचय है, (पइभय) महाभयङ्कर है। **(अपरि-मिय-महिच्छ कलुसमइ-वाउवेग-उद्धुम्ममाण दगरयरयधयार-वरफेण-पउर-आसा पिवास-धवल)** अपरिमित-अत्यधिक अभिलाषावाले मनुष्यों की जो विविध प्रकार की बुद्धियां है वे ही मानो इसके वायुके झोकों से उडाये हुए जलकण है, इनसे यह ससारसमुद्र अध-कार से युक्त जैसा हो रहा है। आशा एव पिपासारूप प्रचुर फेन से यह धवलित हो रहा है। अप्राप्त अर्थ की प्राप्ति की भावना का नाम आशा है, और धन सबधी तीव्र लालसा का नाम पिपासा है। **(मोह-महावत्त-भोग-भममाण गुप्पमाणुच्छलत-पच्चोणियत्त-पाणिय-पमाय-चंड-बहुदुट्ठ-सावयसमाहयुद्धायमाण-पब्भार घोर-कंदिय-महारवरवत-भेरव-रव)** इस ससार

स जल-सचय) લાખો ભવરૂપ જ જેમા કલુષ-મેલા પાણીનો સચય છે, (पइभय) મહાભયકર છે (अपरिमिय-महिच्छ कलुसमइ वाउवेग उद्धुम्ममाण-दगरय-रयध यार वरफेण पउर आसा पिवास धवल) અપરિમિત-બહુ જ અભિલાષાવાળી મનુષ્યોની જે વિવિધ પ્રકારની બુદ્ધિ છે તે જાણે તેના વાયુના ઝપાટાથી ઉડતા જલકણો છે તેનાથી આ સસારસમુદ્ર અધકારથી ભરેલ જેવો થઈ ગયો છે આશા તેમજ પિપાસા (તૃષ્ણા) રૂપ પ્રચુર ફીણથી તે સફેદ થઇ રહેલો છે અપ્રાપ્ત અર્થની પ્રાપ્તિની ભાવનાનુ નામ આશા છે અને ધન સબધી તીવ્ર લાલસાનુ નામ પિપાસા છે (मोह महावत्त भोग भममाण-गुप्पमाणुच्छलत-पच्चोणियत्त-पाणिय पमाय-चड बहुदुट्ठ-सावय-समाहयुद्धायमाण पब्भार-घोर-

खिंसण-पुलंपुल (पल्लुंपण)--प्पभूयरोग-वेयण--परिभव--विणिवाय-फरुस--धरिसणा--समावडिय--कढिण-कम्म--पत्थर--तरंग -रंगंत-निच्चमच्चुभयतोयपट्ठं कसाय--पायाल--संकुलं भवसयसहस्स--

फरुसधरिसणासमावडियकढिणकम्मपत्थरतरंगरंगतमच्चुभयतोयपट्ठं' अपमानन-फेन तीव्र--खिसन--पुलम्पुल-प्रभूत-रोग-वेदना-परिभव-विनिपात-परुष-धर्षणा--समापतित--कठिनकर्म-प्रस्तर-तरङ्ग-रङ्गन्नित्यमृत्युभय तोयपृष्ठम्--अपमाननमेव फेनो यत्र सोऽपमाननफेन, तथा--तीव्र-खिसनम्=दु सहनिन्दा, पुलम्पुलप्रभूता=निरन्तरमुत्पन्ना या रोगवेदना परिभवा =अनादरा, विनिपाता =नाशा, अथवा परिभवविनिपात --परिभव =पराभव पराजयो हानिर्वा, तस्य विनिपात =प्राप्ति परुषधर्षणा --निष्ठुरवचननिर्भर्त्सनानि, तथा--समापन्नानि=बद्धानि यानि कठिनानि=कठोरोदयानि कर्माणि=ज्ञानाऽऽवरणीयादीनि, एतान्येव प्रस्तरा --पाषाणास्तै कृत्वा तत्संघट्टन प्राप्य समुत्थितै, तरङ्गै, रिङ्गत=चचलत, नित्य=ध्रुव य मृत्युभय=मरणभीति तदेव तोयपृष्ठ=जलोपरितनभागो यत्र स तथा तादृशम्, पुन कीदृश 'कसायपायालसङ्कुल' कषायपातालसङ्कुलम्--कषाया एव पाताला =पातालकलशा --अधस्तलानि तै सङ्कुल --व्याप्तस्तम्। 'भवसयसहस्स--कलुस--जल--सचय' भवशतसहस्रकलुषजलसञ्चयम्--भवशतसह-

न्तर समुत्पन्न रोगवेदना, पराभव, विनिपात--विनाश, अथवा पराभव की प्राप्ति, निष्ठुर वचन, अपमान के वचन, एव कठोर उदयवाले सचित ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्म, ये ही जिसमें पाषाण हैं, और इन पाषाणों के सघट्टन से अनेक प्रकार की आधिव्याधिरूप तरङ्ग उत्पन्न होती हैं, इन तरगों द्वारा चलायमान अवश्यभावी मृत्युभय ही जिसमे तोय पृष्ठ--जल का उपरितनभाग है, ऐसा यह ससारसागर है। तथा यह (कसाय--पायाल-सकुल) कषायरूप पातालकलशों से व्याप्त है। (भव सयसहस्स-कलुस-जल-सचय) लाखों

ढगलारूप છે, દુ સહ નિંદા, નિરંતર થતી રોગવેદના, પરાભવ, વિનિપાત વિનાશ, અથવા પરાભવની પ્રાપ્તિ, નિષ્ઠુર વચન, અપમાનના વચન, તેમજ કઠોર ઉદયવાળા સચિત જ્ઞાનાવરણીય આદિ આઠ કર્મો, એ જ જેમા પાષાણ (ખડકો) છે, અને આ પાષાણો સાથે ભટકાવાથી જે અનેક પ્રકારના આધિ વ્યાધિરૂપ મોજા ઉત્પન્ન થતા રહે છે અને તે દ્વારા ચલાયમાન અવશ્યભાવી મૃત્યુ-ભય જ જેમા પાણીની સપાટીના ભાગ છે, એવો આ સસારસાગર છે તથા આ (कसायपायालसकुल) કષાયરૂપ પાતાળકળશોથી વ્યાપ્ત છે (भव सयसहस्स कलु

च्छपरिहत्थ-अणिहुयिंदिय-महामगर-तुरिय-चरिय-खोखुब्भमाण-नच्चत-चवल-चंचल-चलंत-घुम्मंत-जल-समूहं अरइ-भय-विसाय-सोग-मिच्छत्त-सेल-सकड अणाइसंताण-कम्मबंधण-किलेस-

गाहकर-त्वरितचरित-चोक्षुभ्यमाण-नृत्यचपलाचञ्चल-चलद्-घूर्णज्जल-समूहम्-अज्ञानान्येव भ्रमन्तो मत्स्या परिहस्ता जलजन्तुविशेषा, यस्मिन् संसारसागरे स तथा, अनिभृतानि-अनुपशान्तानि यानीन्द्रियाणि तान्येव महामकरास्तेषां यानि त्वरितानि=शीघ्राणि चेष्टितानि=चरितं ते-चोक्षुभ्यमाण अत्यन्तमुच्छलन्, नृत्यन्निव नृत्यन, चपलाचञ्चलं यथा स्यात तथा चलन् घूर्णन=विद्युत्समानवेगेन चलच्चक्राकारं भ्रमन् जलसमूहः, संसारपक्षे तु जडसमूहो=विवेकज्ञानरहितानां समूहो यत्र स तथा, तत पदद्वयस्य कर्मधारय, त तादृशम्। 'अरइ-भय-विसाय-सोग मिच्छत्त-सेल-संकड' अरतिभयविषादशोकमिथ्यात्वशैलसङ्कटम्-अरति, भय, विषाद, शोक, मिथ्यात्वम् एतानि प्रतिरोधकतया शैला इव तै सङ्कट=अतिनिकट, त तादृशम्, 'अणाइ-संताण-कम्म-बंधण-किलेस-चिक्खिल्ल-सुदुत्तार' अनादि सन्तान-कर्मबन्धनक्लेश-कर्दमसुदुस्तरम्-अनादिसन्तानम्=अनादिप्रवाह यत्कर्मबन्धनं तच्च, क्लेशाश्च रागादयस्तल्लक्षणं यत्

इस संसार समुद्र मे अज्ञान ही घूमते हुए मत्स्य एव परिहस्त-जलजन्तुविशेष है। अनुपशान्त इन्द्रिया ही इसमे विकराल मगर है। इन इन्द्रियरूप महामकरों के चचल चेष्टाओं से इसमे अज्ञानियो का समूहरूप जलसमूह क्षुब्ध हो रहा है, नाच रहा है, विद्युद्वेग से चक्रवत घूम रहा है। (अरइ-भय-विसाय सोग-मिच्छत्त-सेल-सकड) अरति अप्रीति, भय-भीति, विषाद, शोक एव मिथ्यात्वरूप पर्वतों से यह संसारसमुद्र अत्यत निकट बना हुआ है। (अणाइ संताणकम्मबंधणकिलेस-चिक्खिल्ल-सुदुत्तार) अनादिकाल से इस जीव के साथ

क्षुभमाण नच्चत चवलचचल-चलत घुम्मत जल समूह) આ સંસારસમુદ્રમા અજ્ઞાન જ ઘુમતા માછલા તેમજ પરિહસ્ત-જલજંતુવિશેષ છે અનુપશાંત ઈંદ્રિયો જ એમા વિકરાળ મગર છે તે ઈંદ્રિયરૂપ મહામકરોની ચચળ ચેષ્ટાઓથી તેમા અજ્ઞાનીઓના સમૂહરૂપ જલસમૂહ ક્ષુબ્ધ થઈ રહ્યો છે, નાચી રહ્યા છે, વીજળીવેગે ચક્રની પેઠે ફરી રહ્યો છે (अरइ-भय-विसाय-सोग-मिच्छत्त-सेल सकड) અરતિ-અપ્રીતિ, ભય-ભીતિ, વિષાદ-શોક, તેમજ મિથ્યાત્વરૂપ પર્વતોથી આ સંસારસમુદ્ર અત્યત વિકટ બનેલો છે (अणाइ-सताण-कम्म बधण किलेस चिक्खिल्ल सुदुत्तार) અનાદિ કાળથી આ જીવની સાથે બધન

पिवास-धवलं मोहमहावत्त-भोग-भममाण-गुप्पमाण-उच्छलंत-पच्चोणियत्त-पाणिय-पमाय-चंड-बहुदुट्ठ-सावय-समाहयुद्धाय-माण-पब्भार-घोर-कंदियमहारवरवंत-भेरवरवं अण्णाण-भमंतम-

बहुदुष्टश्वापदसमाहतोद्धायमानप्राग्भारघोरक्रन्दितमहारवरवद्भैरवरवम्-मोहरूप महावर्त्त भोग एव भ्राम्यत-चक्राकारेण भ्रमत्, गुप्यत्=चपलीभवत्, उच्छलत्=उत्पतत्, 'पच्चोणिय' प्रत्यवनिपतत-अधः पतत्, पानीय=जल यत्र स तथा, प्रमादा =मद्यादयस्त एव चण्डबहुदुष्टश्वापदा -चण्डा =क्रोधशीला बहुदुष्टा =अतिदुष्टस्वभावा, श्वापदा -हिंसक जीवास्तैर्गे 'समाहय' समाहता =प्रहता-आघात प्राप्ता 'उद्धायमाण' उद्धावन्त = उच्छलन्त विविध चेष्टमाना वा समुद्रपक्षे मत्स्यादय ससारपक्षे पुरुषादय, तेषा 'पब्भार' प्राग्भार --समूहो यत्र स तथा, तथा घोरेण क्रन्दितमहारव =रोदनमहाशब्द स एव रवन्-प्रतिनदन्-प्रतिध्वनि कुर्वन् भैरवरवो=भयानकशब्दो यत्र स तथा, ततस्त्रयाणा पदाना कर्मधारय, तम्- अण्णाण भमत मच्छ-परिहत्थ-अणिहुयिंदिय-महामगर- तुरिय-चरिय-खोखुब्भ-माण-नच्चत-चवलचवल-चलत-घुम्मत-जलसमूहं' अज्ञान-भ्रमन्मत्स्य-परिहस्तानिभृतेन्द्रिय

ममुद्र के मोहरूप महा-आवर्त्त मे भोगरूप जल चक्राकार से घूम रहा है, अयत चचल हो रहा है, उछल रहा है, उछल कर फिर नीचे गिर रहा है। तथा-इस ससार समुद्र मे प्रमाद आदि हो क्रोधी एव अतिदुष्ट स्वभाव वाले हिंसक जीव है। इन के द्वारा आघात को प्राप्त होकर समस्त ससारी जीवों-पुरुष आदि (समुद्रपक्ष में मत्स्यादिक जलचर जीवों) का समूह इधर-उधर भागता फिरता है। उन्ही ससारी जीवों के भयकर आक्रन्दन की महाभीषण प्रतिध्वनि इस ससार समुद्र मे हो रही है। तथा-(अण्णाणभमतमच्छपरिहत्थ अणिहुयिंदि-य-महासागर-तुरिय-चरिय खोखुब्भमाणनच्चतचवल चंचल-चलत-घुम्मत - जलसमूह)

कंदिय-महारव-रवंत-भेरव-रव) આ સસાર સમુદ્રના મોહરૂપ મહા આવર્ત્તમા ભોગરૂપ જલચક્રની પેઠે ઘૂમી રહ્યુ છે બહુ વેગ થઇ રહ્યો છે, ઉછળી રહ્યુ છે ઉછળીને પાછુ નીચે પડે છે તથા-આ સસારસમુદ્રમા પ્રમાદ આદિ જ ક્રોધી તેમજ અતિદુષ્ટ સ્વભાવવાળા હિસક જીવ છે, તેમના દ્વારા આઘાત પામીને સમસ્ત સસારી જીવો-પુરુષ આદિ (સમુદ્ર પક્ષમા મત્સ્યાદિક જલચર જીવો)નો સમૂહ આમતેમ ભાગનારા કરે છે તે સસારી જીવોનો ભયકર આક્રંદનનો મહાભીષણ પડઘો આ સસારસમુદ્રમા પડે છે તથા (अण्णाण-भमत मच्छ परिहत्थ अणिहुयिंदिय-महासागर-तुरिय चरिय खोखु

भीमदरिसणिज्जं तरंति, धिइ-धणिय-निप्पकंपेण तुरिय-चवलं संवर-वेरग्ग-तुंगकूवय-सुसंपउत्तेण णाण-सिय-विमल-मूसिएणं सम्मत्त-विसुद्ध-लद्ध-णिज्जामएणं धीरा संजमपोएण सीलक-

'संसारसागरम् तरन्ति,-अस्य 'संयमपोतेन' इत्यग्रे वर्तमानेन सम्बन्धः । संसारभयोद्विग्ना श्रमणा संयमपोतेन तरन्तु पारं गन्तुमर्थः । किम्भूतेन संयमपोतेनेत्याह-'धिइधणियनिप्पकंपेण' धृतिधनिकनिष्प्रकम्पेन-धृतिर्वैर्येण धनिकम्=अत्यर्थं निष्प्रकम्प=कम्पनरहितस्तेन संयमपोतेन, 'तुरियचवलं' त्वरितचपलम्=अतिशीघ्रम्,-'संवर-वेरग्ग-तुंगकूवय सुसंपउत्तेण' संवर-वैराग्य-तुङ्ग-कूपक-सुसंप्रयुक्तेन तत्र संवर=प्राणातिपातादिविरतिरूप, वैराग्य=विषयानभिष्वङ्ग एतद्रूपो यस्तुङ्ग=अत्युच्च कूपक-पोतस्य मध्यस्थित स्तम्भ, तेन सुष्ठु सम्प्रयुक्त-सम्यक्तया प्रयोजितस्तेन, 'णाण-सिय-विमल-मूसिएण' ज्ञान-सित-विमलोच्छ्रितेन, ज्ञानमेव सित=श्वेत वस्त्र तच्च विमलम् उच्छ्रित यत्र तेन, पोते मध्ये प्रायः ... । पवनप्रकम्पितस्तम्भसंलग्नोच्छ्रितपटाकर्षणेन नौका वेगगामिनी भवति । सति सारनोर्वेनेऽपि पोते कर्णधारम् आवश्यमित्याह-'सम्मत्तविसुद्धलद्धणिज्जाम-

(धिइधणियणिप्पकंपेण) धृतिरूप रज्जुबन्धन से जो अत्यंत निष्प्रकंप है। (तुरियचवल) गति जिसकी अत्यंत शीघ्रगामी है (संवर-वेरग्ग-तुंग कूवय-सुसंपउत्तेण) संवर-प्राणातिपातादि से निवृत्तिरूप विरति एवं वैराग्य-विषयों में अनभिष्वङ्गरूप वृत्ति-ये दोनों ही जिसके बीच में एक ऊँचा कूपक-स्तम्भ है। (णाण-सिय-विमल-मूसिएण) ज्ञानरूपी सफेद-वस्त्र का जिसमें पाल तना हुआ है। नौका में एक लकडी का खंभ लगा रहता है जिस पर एक कपडा तना रहता है। उससे हवा की रुकावट होने से नौका बडे वेग से चलती है। यही रूपक यहां घटित किया गया है। (सम्मत्त-विसुद्ध-लद्ध-णिज्जामएण) जिसमें

संपादन करे छे-(धिइधणियणिप्पकंपेण) धृतिरूप दोरडाना बंधनथी जे बहुज निष्प्रकंप (स्थिर) छे (तुरियचवल) गति जेनी अत्यंत वेगवाळी छे (संवर वेरग्ग तुंग कूवय सुसंपउत्तेण) संवर-प्राणातिपातादिथी निवृत्तिरूप विरति तेमज वैराग्य विषयोमां अनासक्तिरूप वृत्ति-ए बन्ने जेना वच्चमां एक ऊंचो कूपकस्तंभ छे (णाण-सिय विमल मूसिएण) ज्ञानरूपी सफेद वस्त्रनो जेमां सढ होय छे वहाणमां एक लाकडानो थांभलो लागेलो होय छे जेना पर एक कपडुं (सढ) ताणेलो होय छे तेमां हवा रोकाई जाय छे तेथी भराईने वहाणु बहु वेगथी चाले छे आ ज रूपक अहीं घटावेलुं छे (सम्मत्त-विसुद्ध लद्ध णिज्जामएण)

चिक्खिल्ल-सुदुत्तारं अमर-णर-तिरिय-णरयगइ-गमण-कुडिल-परियत्त-विउलवेलं चउरंतं महंतमणवदग्गं रुद्दं संसारसागरं

'चिक्खल्लं'-कर्दम, तेन सुष्ठु दुस्तर म तथा तम्। 'अमर-णर-तिरिय णरय-गइ-गमण-कुडिल-परियत्तविउल-वेल' अमर-नर तिर्यङ्-नारक-गतिगमन-कुटिल-परिवर्त-विपुल-वेलम्, सुर नर-तिर्यङ्नारक गतिषु चतसृषु-गमन तदेव कुटिलपरिवर्त: =वक्रमभ्रमाणं तदेव विपुला = विशाला वेला यस्मिन् स तथा त-चतुर्गतिगमनरूपकुटिलपरिवर्तविपुलवेलम्। 'चउरंत' चतुरन्तम्-चतुर्भेदगतिभेदाभ्या चतुर्विभागम्। 'महंत' महान्तम्=विशालम्। 'अणवदग्ग' अनवदग्रम्-अपर्यवसानम्। 'रुद्द' रौद्रम्-भयजनकम्। 'भीमदरिसणिज्ज' भीमदर्शनीयम्-भीम यथा भवतीत्येव दृश्यते य स भीमदर्शनीयस्तम्, यस्य दर्शनाद् भयमुत्पद्यते तमित्यर्थ।

बधन अवस्था को प्राप्त-चला आ रहा जो कर्म एव इनसे उद्भूत जो रागादिक परिणाम है, ये ही जहा चिकना कादव है। इसीसे इसका तिरना दुष्कर हो रहा है। (अमर-णर-तिरिय-णरयगइ-गमण-कुडिल परियत्त-विउल-वेल) देवगति, मनुष्यगति, तिर्यंचगति एव नरकगति इन चार गतियों मे जो निरन्तर जीव का परिभ्रमण है वह। इसका वक्र परिवर्द्धमान विस्तृत वेला है। (चउरंत) चतुर्गतिरूप चार दिशाओं के चार विभागों से जो विभक्त है। (महंत) जो बडी विशाल है। (अणवदग्ग) जिसका पार पाना बहुत ही कठिन है। (रुद्द) जो बडा ही विकरालस्वरूप वाला है। (भीमदरिसणिज्ज) जिसके देखने मात्र से ही भय का सचार होता है। ऐसा यह ससारसमुद्र है। इसका पार पाना विना सयमरूप जहाज के हो नहीं सकता है। अब यहा से सयमरूप जहाज का वर्णन सूत्रकार करते है-

અવસ્થાથી ચાલ્યા આવતા જે કર્મ તેમજ તેમનાથી પેદા થતા જે રાગાદિક પરિણામ છે તે જ ચીકણો કાદવ છે અને તેથી તેને તરવું મુશ્કેલ થાય છે (अमर णर तिरिय णरय गइ गमण कुडिल परियत्त विउल वेल) દેવગતિ, મનુષ્યગતિ, તિર્યંચગતિ તેમજ નરકગતિ આ ચાર ગતિઓમાં જે નિરંતર જીવનું પરિભ્રમણ છે તે જ તેની વાંકી, પરિવર્ધિત થતી વિશાળ વેલા છે (चउरंत) ચતુર્ગતિરૂપ ચાર દિશાઓના ચાર વિભાગોથી જે વિભક્ત છે (महंत) જે બહુ મોટી છે (अणवदग्ग) જેનો પાર પામવો બહુ જ કઠણ છે (रुद्द) જે બહુ જ વિકરાળ સ્વરૂપવાળો છે (भीमदरिसणिज्जं) જેના દર્શન માત્રથી જ ભયનો સંચાર થાય છે એવો આ સંસારસમુદ્ર છે તેનો પાર પામવો તે સંયમરૂપ નાવ વગર બની શકતો નથી હવે અહીંથી સંયમરૂપ નાવ (વહાણ)નું વર્ણન

वयवर-भंड-भरियसारा जिणवर-वयणोवदिट्ठ-मग्गेण अकुडिलेण सिद्धिमहापट्टणाभिमुहा समणवर-सत्थवाहा सुसुइ-सुसभास-

महाव्रत तदेव भाण्ड =क्रयणीयवस्तुजातम्, भृत =स्थापित सारो=रत्नादिरूप पदार्थो यैस्ते तथा, केन पथा प्रयान्तस्तरन्ता भवन्ति-'जिणवरवयणोवदिट्ठमग्गेण' जिनवरवचनोपदिष्टमार्गेण जिनवरवचनम्=आगमस्तेन उपदिष्ट =कथित -मार्ग = संयमपथ -तेन, 'अकुडिलेन' अकुटिलेन-कापट्यादिदोषवर्जितेन, 'सिद्धिपट्टणाभिमुहा' सिद्धिपत्तनाभिमुखा -सिद्धिरेव पत्तन नगरपुर तदभिमुखा -तन्मुखा । 'समणवरसत्थवाहा' श्रमणवरसार्थवाहा -श्रमण-

प्रमाद का परित्याग एव व्यवसाय अर्थात् मोक्ष प्राप्त करने का दृढ निश्चय, इन दोनों मूल्यो से खरीदे-प्राप्त करते-महाव्रतरूप-भाण्डो का क्रयणीय वस्तुओ का-कि जो निर्जरा, यतना, उपयोग, ज्ञान, दर्शन एव [चारित्र] से विशुद्ध है, जिनमे सार भरा हुआ है ऐसे मुनिजन इस ससाररूप महासमुद्र से पार होते है। किस मार्ग पर चलते हुए ये पार होते है? सो बताते है-(जिणवरवयणोवदिट्ठमग्गेण) जिनवर का जो वचन है-आगम है, उसके द्वारा उपदिष्ट जो सयमरूप मार्ग है, उस पर चलकर ही ये मुनिजन इस ससाररूप समुद्र को पार करते है। वह मार्ग कैसा है, इसके लिये सूत्रकार (अकुडिलेण) इस विशेषण से स्पष्ट करते है-वह मार्ग कपटता आदि दोषो से रहित है, अर्थात्-सरल है-आडा-टेढा नही है। ऐसे मार्ग से प्रयाण करने वाले ये मुनिजन पुन कैसे होते है यह अब यहा से स्पष्ट किया जाता है-(सिद्धिपट्टणाभिमुहा) इस प्रकार के मार्ग से प्रयाण करने वाले

પ્રમાદનો પરિત્યાગ તેમજ વ્યવસાય અર્થાત્ મોક્ષ પ્રાપ્ત કરવાનો દૃઢ નિશ્ચય, એ બન્ને મૂલ્ય (કિંમત) થી લીધેલ-વેચાતા લીધેલ ૧૨ વ્રત-મહાવ્રતરૂપ વાસણોના-વેચાતી લીધેલી વસ્તુઓના કે જે નિર્જરા, યતના, ઉપયોગ, જ્ઞાન, દર્શન તેમજ ચારિત્રથી વિશુદ્ધ છે જેમા સાર ભરેલો છે એવા મુનિજન આ સસારરૂપ મહાસમુદ્રથી પાર થઈ જાય છે કયા માર્ગ પર ચાલતા તેઓ પાર થાય છે? તે બતાવે છે- (जिणवरवयणोवदिट्ठमग्गेण) જિનવરનુ જે વચન છે-આગમ છે-તેના દ્વારા ઉપદેશાએલ જે સયમરૂપ માર્ગ છે, તેના પર ચાલીને જ તે મુનિજનો આ સસારરૂપ સમુદ્રને પાર કરે છે આ માર્ગ કેવો છે? તે માટે સૂત્રકાર (अकुडिलेण) આ વિશેષણથી સ્પષ્ટ કરે છે આ માર્ગ કપટતા આદિ દોષોથી રહિત છે-અર્થાત્ સરળ છે, આડોઅવળો નથી એવા માર્ગથી પ્રયાણ કરનારા એ મુનિજનો વળી કેવા હોય છે તે બધુ અહીંથી સ્પષ્ટ કરવામા આવે છે (सिद्धिपट्टणाभिमुहा) એ પ્રકારના માર્ગે પ્રયાણ કરવાવાળા મુનિજનો સિદ્ધિરૂપ

लिया पसत्थज्झाण–तव–वाय-पणोल्लियपहाविएणं उज्जमववसाय-ग्गहिय–णिज्जरण–जयण–उवओग-णाण-दंसण-[चरित्त] विसुद्ध-

एण' सम्यक्त्वविशुद्धलब्धनिर्यामकेन सम्यक्त्वेन विशुद्धो निर्यामक =लब्धो निर्यामक = कर्णधारः -नौकावाहको यत्र स तथा तेन, सम्यक्त्वरूपकर्णधारयुक्तेनेत्यर्थः, धीरा -स्थिरस्वभावा, 'संजमपोएण' संयमपोतेन= संयमनौकया। 'सीलकलिया' शीलकलिताः =अष्टादश-सहस्रशीलाङ्गधारकाः -शीलयुक्ताः, 'पसत्थज्झाणतववायपणोल्लियपहाविएण' प्रशस्त-ध्यानतपोवातप्रणोदितप्रधावितेन–प्रशस्तं ध्यानं धर्मशुक्लध्यानरूपं तपः तदेव वातो=वायुः, तेन प्रणोदित =प्रेरितः, अत एव प्रधावितस्तेन, ' उज्जमववसाय-ग्गहिय-णिज्जरण जयण-उवओगणाणदंसणचरित्तविसुद्धवयवरभंडभरियसारा '-उद्यमव्यवसायगृहीतनिर्जरणयतनो-पयोगज्ञानदर्शनचारित्रविशुद्धव्रतवरभाण्डभृतसाराः -उद्यम =प्रमादपरित्यागः व्यवसायो=मोक्षप्राप्ति-निश्चयः ताभ्यां मूल्यरूपाभ्यां गृहीतानि-क्रीतानि निर्जरणयतनोपयोगज्ञानदर्शनचारित्रविशुद्धव्रतवर=

विशुद्ध सम्यक्त्व ही निर्यामक-कर्णधार के स्थानापन्न है, अर्थात् विशुद्ध समकित का लाभ जिसमें खवटिया के समान है। (पसत्थ ज्झाणतववाय पणोल्लिय-पहाविएण) प्रशस्त ध्यान-रूप तपरूपी वायु से प्रेरित होकर जो आगे २ बढता रहता है। इस तरह इन पूर्वोक्त विशेषणों से विशिष्ट इस संयमरूपी जहाज के द्वारा इस संसाररूप अपार दुस्तर समुद्र को (धीरा) धीरवीर स्थिर स्वभाववाले मुनिजन ही (तरति) पार करते हैं। अब यहां से मुनिजनों के लिये प्रयुक्त विशेषणों का अर्थ स्पष्ट किया जाता है–(सीलकलिया) ये मुनिजन–शील–१८ हजार शील के भेदों को धारण करने वाले हैं। (उज्जम-ववसाय-ग्गहिय-णिज्जरण-जयण-उवओग णाण-दंसण [चरित्त]विसुद्धवयवरभंडभरियसारा) उद्यम अर्थात्

જેમાં વિશુદ્ધ સમ્યકત્વજ નિર્યામક–કર્ણધારને સ્થાને (સુકાની) છે, અર્થાત્ વિશુદ્ધ સમકિતનો લાભજ જેમાં સુકાનીના સમાન છે (पसत्थ ज्झाण तव वाय पणोल्लिय पहाविएण) પ્રશસ્ત ધ્યાનરૂપ તપરૂપી વાયુથી પ્રેરિત થઈને જે આગળ આગળ વધતો રહે છે એ રીતે તે પૂર્વોક્ત વિશેષણોથી વિશિષ્ટ આ સંયમરૂપી વહાણદ્વારા સંસારરૂપ અપાર દુસ્તર સમુદ્રને ધીર વીર સ્થિર સ્વભાવ વાળા મુનિજનોજ (तरति) પાર કરે છે હવે અહીંથી મુનિજનો માટે લગાડેલા વિશેષણોના અર્થ સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે–(सीलकलिया) એ મુનિજનો શીલ–૧૮ હજાર શીલના પ્રકારને ધારણ કરવાવાળા છે (उज्जम–ववसाय गहिय–णिज्ज रण जयण उवओग णाण–दंसण [चरित्त] विसुद्ध वयवर भंड भरिय-सारा) ઉદ્યમ અર્થાત્

जिइंदिया णिब्भया गयभया सचित्ताचित्तमीसिएसु दव्वेसु विरागयं गया सजया [विरता] मुत्ता लहुया णिरवकंखा साहू णिहुया चरंति धम्मं ॥ सू० ३२ ॥

या गयभया' निर्भया गतभया, 'सचित्ताचित्तमीसिएसु दव्वेसु' सचित्ताऽचित्तमिश्रितेषु द्रव्येषु=वस्तुषु 'विरागयं गया' विरागता गता -वैराग्य प्राप्ता । 'सजया' संयता =संयमवन्त । 'विरता' विरता =हिंसादिभ्यो निवृत्ता , 'मुत्ता' मुक्ता -लोभरहिता , 'लहुआ' लघुका - स्वल्पोपधिधारितया लघुभूता । 'णिरवकंखा' निरवकाङ्क्षा =उभयलोकसुखाभिलाषवर्जिता , यत पूर्वोक्तगुणविशिष्टा , अतएव 'साहू' साधव -मोक्षसाधका । 'णिहुया' निभृता - विनीता जात्यादिमदवर्जिता इत्यर्थ , 'धम्म' धर्म-श्रुतचारित्रलक्षणम् । 'चरंति' चरन्ति=आराधयन्ति ॥ सू० ३२ ॥

(णिब्भया गयभया) निर्भय थे, इस हेतु इन्हें कहीं भी भय नहीं लगता था, (सचित्ताचित्तमीसिएसु दव्वेसु विरागयं गया) सचित्त, अचित्त और सचित्ताचित्त द्रव्यों में ये वैराग्य युक्त थे, (सजया विरता मुत्ता) संयमशाली, हिंसादि-निवृत्त और लोभरहित थे, [लहुया] स्वल्प उपधि के धारक होने से ये लघु-लाघवगुण-सपन्न थे, (णिरवकंखा) इहलोक और परलोक के सुखों की अभिलाषा से रहित थे, अत एव ये मुनि गण (साहू) साधु, अर्थात् मोक्षसाधक थे। भगवान महावीरके ये साधु (णिहुया) निभृत-जात्यादि मद से रहित होनेके कारण विनीत होकर (धम्मं) श्रुत-चारित्रलक्षण धर्म की (चरंति) आराधना करते थे ॥ सू०३२ ॥

આ સાધુઓ જિતેન્દ્રિય હતા, (णिब्भया गयभया) નિર્ભય હતા, તેથી તેમને કોઇ ઠેકાણે ભય લાગતુ નહિ તેઓ (सचित्ताचित्तमीसिएसु दव्वेसु विरागय गया) સચિત્ત, અચિત્ત અને સચિત્તાચિત્ત દ્રવ્યોમા વૈરાગ્યવાન હતા, (सजया विरता मुत्ता) સયમશાલી, હિંસાદિથી નિવૃત્ત અને લોભરહિત હતા, (लहुया) સ્વલ્પ ઉપધિના ધારક હોવાથી તેઓ લઘુ-લાઘવગુણ સપન્ન હતા, (णिरवकखा) ઇહલોક અને પરલોકના સુખોની અભિલાષાથી રહિત હતા તેથી જ તે મુનિઓ (साहू) સાધુ એટલે મોક્ષસાધક હતા ભગવાન મહાવીરના આ સાધુઓ (णिहुआ) નિભૃત-જાત્યાદિ મદથી રહિત હોવાને કારણે વીનીત થઇને (धम्म) શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મની (चरंति) આરા-ધના કરતા હતા (સૂ ૩૨)

सुपण्ह-सासा गामे गामे एगरायं णगरे णगरे पंचरायं दूइज्जंता

श्रेष्ठा -सार्थवाहा - धार्मिकग्रामाधिपा । 'सुसुइ-सुसभास सुपण्ह सासा' सुश्रुति(सुश्रुति) सुसम्भाषा-सुप्रश्न-स्वाशा -सुष्ठु श्रुतयो येषा ते सुश्रुतय -सम्यग्दृश्रुता -सिद्धान्ता, अथवा सुशुचय -सम्यक्शुद्धिमन्त । सुभ =सुखजनक सम्भाषो येषा ते सुसम्भाषा क्वा-चिदपि कटुवारण न कुर्वन्त । शोभना प्रश्ना येषा ते सुप्रश्ना -प्रमितमशुचिनप्रश्नकारिण, शोभना आशा येषा ते स्वाशा -मुक्तिमात्रेच्छ , चतुर्णामपा कर्मधारये-सुश्रुतिसुसम्भाषासुप्रश्न-स्वाशा , एवविधा सन्त -'गामे गामे एगराग' ग्रामे ग्रामे एकरात्रम-प्रतिग्रामम एकरात्रम, अस्य 'दूइज्जता' इत्यनेन सहान्वय । 'णगरे णगरे पचराय' नगरे नगरे पञ्चरात्रम्-प्रतिनगर पञ्चरात्र, 'दूइज्जता' द्रवन्त =वसन्त , चातुर्मासमन्तरेणेत्यर्थ, 'जिइंदिया' जितेन्द्रिया 'णिब्भ

मुनिजन सिद्धिरूप पट्टण-पत्तन के सन्मुख होते हैं। (समणवरसत्यवाहा) इनके साथी श्रमणश्रेष्ठरूप सार्थवाह व्यवसायिजन होते है। (सुसुइ-सुसभास सुपण्हसासा) सतसिद्धान्तों के ये पारगत होते है, अथवा इनका सिद्धान्त समीचीन-निर्दोष होता है, अथवा ये विशिष्ट-शुद्धि-सपन्न होते है । भाषा इनकी बडी ही मनोसुखकारी होती है । कभी भी ये कटुक भाषा का उच्चारण नही करते है । ये जो भी प्रश्न करते है वह प्रमाणोपेत होता है-व्यर्थ के अक्षरों का उसमे समावेश नहीं रहता । सासारिक पदार्थो मे किसी मे भी इनकी इच्छा जागृत नहीं होती, सिर्फ मुक्ति प्राप्त करने की भावना ही एक इनकी रहा करती है । (गामे गामे एगराय णयरे पचरायं दूइज्जता) ये साधु ग्रामों मे एक रात और नगरों मे पाच रात निवास करते थे । (जिइंदिया) ये जितेन्द्रिय थे

પટ્ટણ-પત્તનની સન્મુખ હોય છે (સમણવરસત્થવાહા) તેમના સાથી શ્રમણશ્રેષ્ઠ રૂપ સાર્થવાહ-વ્યવસાયી જન હોય છે (સુસુઇસુસભાસસુપણ્હસાસા) સત્-સિદ્ધા તોમા તેઓ પારગત હોય છે અથવા-તેઓના સિદ્ધાન્તો નિર્દોષ હોય છે, અથવા તેઓ વિશિષ્ટ શુદ્ધિસપન્ન હોય છે ભાષા તેમની બહુજ મનોસુખ કરવાવાળી હોય છે કદીપણ તેઓ કડવીભાષાનો ઉચ્ચાર કરતા નથી તેઓ જે કાંઈ પ્રશ્ન કરે છે તે પ્રમાણવાળો હોય છે-વ્યર્થ અક્ષરોનો તેમા સમાવેશ રહેતો નથી સાસારિક પદાર્થોમા કોઈમા પણ તેમની ઇચ્છા જાગૃત થતી નથી માત્ર મુક્તિ પ્રાપ્ત કરવાની ભાવના જ એક તેમને રહ્યા કરે છે (गामे गामे एगराय णयरे णयरे पचराय दूइज्जता) આ સાધુઓ ગામડાઓમા એક રાત સુધી અને નગરોમા પાચ રાત સુધી નિવાસ કરતા હતા (जिइन्दिया)

सिय-सयवत्तमिव पत्तलनिम्मला-ईसी-सिय-रत्त-तंवणयणा गरुला-यय-उज्जु-तुंग-णासा ओयविय-सिलप्पवाल-बिंवफल-सण्णिभा-हरोट्ठा पंडुर-ससिसयल-विमल-णिम्मल-संख-गोखीर-फेण-दगरय-

सिय-रत्त-तंव-णयणा' पत्तल निर्मलेषत्सित-रक्त-ताम्र-नयना -पत्रलानि=पक्ष्मवन्ति-सूक्ष्मरोमयुक्तानि, तथा निर्मलानि तथा ईषत् सितानि-श्वेतानि तथा ईषद्रक्तानि तथा ईषत्ताम्राणि=अरुणानि नयनानि येषां ते तथा-विकसितशतपत्रतुल्यकिञ्चिच्छुभ्ररक्तनेत्रा इत्यर्थः । 'गरुला-यय-उज्जु-तुंग-णासा' गरुडाऽऽयतर्जुतुङ्गनासिका -गरुडस्येव आयता=दीर्घा, ऋजुः=सरला तुङ्गा=उच्चा नासिका येषां ते तथा-सरलदीर्घसुन्दरनासिकावन्तः । 'ओयविय-सिलप्पवाल-बिंवफल-सण्णिभा-हरोट्ठा' उपचित-शिलाप्रवाल-बिम्बफल-सन्निभाऽधरोष्ठाः -उपचितः=पुष्टो यः शिलाप्रवालः=विद्रुमः, बिम्बफलम्-अतीवारुणं पुष्टं वनस्थीफलम्, तत्सन्निभौ तुल्यौ अधरोष्ठौ-ओष्ठद्वयं येषां ते, तथा-विद्रुमबिम्बफलवत् अतीवरक्तोष्ठद्वयवन्तः, 'पंडुर-ससियल-विमल-णिम्मल-संख-गोखीर-फेण दगरय-मुणालिया धवल-दंतसेढी' पाण्डुर-शशिशकल-विमल-निर्मल-शङ्ख-गोक्षीर-फेन-दकरजो-मृणालिका-धवल-दन्तश्रेणयः, पाण्डुर-शशिशकल=शुभ्रचन्द्रखण्डं, तद्वद्विमलनिर्मला -विमलेष्वपि निर्मला -अतीवोज्ज्वला, अतएव-शङ्ख-

इनके नेत्र थे। (पत्तल-णिम्मला-ईसी-सिय-रत्त तंव-णयणा) ये नेत्र पक्ष्मल थे-सूक्ष्म रोमयुक्त थे, निर्मल थे, कुछ श्वेत थे, ईषद्रक्त थे, और कुछ २ लाल भी थे। (गरुला-यय-उज्जुतुंग-नासा) गरुड के समान दीर्घ, ऋजु-सरल एवं ऊँची इनकी नासिका थी। (ओयविय-सिलप्पवाल-बिंवफल-सण्णिभा हरोट्ठा) पुष्ट शिलप्रवाल-विद्रुम (मूँगा), एवं अतीव अरुण बिम्बफल के समान लाल इनके दोनों ओष्ठ थे। (पंडुर-ससि-सयल-विमल-णिम्मल-संख-गोखीर-फेण-दगरय-मुणालिया-धवल-दंतसेढी) धवलचन्द्र के खंड के

ઈન્દીવર-કમલના જેવા એમના નેત્ર હતા (पत्तल णिम्मला ईसी सिय रत्ततंवणयणा) એ નેત્ર પક્ષ્મલ હતા-સૂક્ષ્મ રોમ (વાળ) યુક્ત હતા, નિર્મળ હતા, કંઈક ધોળા હતા, ઈષદ્રક્ત હતા, અને જરા જરા લાલ પણ હતા (गरुलायय उज्जु तुंग-नासा) ગરુડના જેવી લાંબી, સરલ અને ઊંચી એમની નાસિકા હતી (ओयविय सिलप्पवाल बिंवफल-सण्णिभा हरोट्ठा) પુષ્ટ શિલપ્રવાલ વિદ્રુમ (મૂંગા) અને અતિશય લાલ વર્ણના બિમ્બફલના જેવા રાતા એમના બન્ને હોઠ હતા (पंडुर-ससिसयल-विमल णिम्मल-संख-गोखीर-फेण-दगरय-मुणालिया-धवल-दंतसेढी) ચંદ્રના ચંદ્રના કકડાના

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे असुरकुमारा देवा अंतियं पाउब्भवित्था, काल-महानील-सरिस-णील-गुलिय-गवल-अयसिकुसुम-प्पगासा विय-

टीका-'तेण कालेण तेण समएण' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'बहवे असुरकुमारा देवा अतिय पाउब्भवित्था' बहवोऽसुरकुमारा देवा अन्तिकं प्रादुरभूवन्—भगवत श्रीमहावीरस्वामिनोऽन्तिक=समीपमागत्य प्रादुर्भूता। असुरकुमाराणा वर्णनमाह—'काल-महानील-सरिस-णील-गुलिय-गवल-अयसिकुसुम-प्पगासा' काल-महानील सदृश नील-गुलिक गवलाऽतसीकुसुम प्रकाशा —कालो यो महानीलो—मणिविशेष, त सदृशा वर्णतो ये ते तथा, पुनर्नीलो मणिविशेष, गुलिका=नीली-गुटिका, गवल=माहिष शृङ्गम्, अतसीकुसुम च, एतेषा प्रकाश इव प्रकाशो येषा ते तथा। 'वियसिय-सयवत्तमिव' विकसितशतपत्रमिव=प्रफुल्लेन्दीवरतुल्य 'पत्तल-णिम्मला-ईसी-

'तेण कालेण तेण समएण' इत्यादि।

इस सूत्रद्वारा सूत्रकार श्रमण भगवान महावीर के निकट आये हुए असुरकुमार देवों का वर्णन करते हैं— (तेण कालेण तेण समएण) उस काल एव उस समय मे (समणस्स भगवओ महावीरस्स) श्रमण भगवान महावीर के (अतिय) समीप (बहवे) अनेक (असुरकुमारादेवा) असुरकुमार देव (पाउब्भवित्था) प्रकट हुए। (काल-महानील-सरिस-णील गुलिय-गवल-अयसिकुसुम-प्पगासा) कृष्ण महानील मणि, नीलमणि, गुलिका, भैस के साग के अन्दरका भाग, अल्सीका फूल, इन सबों के समान ये असुरकुमार कृष्णवर्ण थे। (वियसियसयवत्तमिव) विकसित शतपत्र क समान—अर्थात् इन्दीवर—कमल—के तुल्य

"तेण कालेण तेण समएण" ઇત્યાદિ

આ સૂત્ર દ્વારા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની પાસે આવેલા અસુર-કુમાર દેવોનુ વર્ણન કરવામા આવે છે (तेण कालेण तेण समएण) તે કાલ તે સમયને વિષે (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની (अतियं) પાસે (बहवे) અનેક (असुरकुमारा देवा) અસુરકુમાર દેવ (पाउब्भवित्था) પ્રગટ થયા તેમના શરીરનો વર્ણ કહે છે-(काल-महानील-सरिस णील गुलिय-गवल अयसिकुसुम-प्पगासा) કૃષ્ણ મહાનીલ મણિ, નીલમણિ, ગુલિકા, ભેસના શીગ-ડાની અન્દરનો ભાગ અને અળશીના ફૂલ, આ સર્વની સમાન તે અસુરકુમાર કૃષ્ણ વર્ણના હતા (वियसियसयवत्तमिव) વિકસેલા શતપત્રના સમાન, અર્થાત્

साइ असंकिलिट्ठाइं सुहुमाइं वत्थाइ पवरपरिहिया, वयं च पढमं समइक्कंता बिइय च असंपत्ता भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा, तलभंगय-

घृष्टचन्दनचर्चितगात्रा । अथ वस्त्रविशेषणान्याह-'इसी सिलिंध-पुप्फ-प्पगासाइ' ईषत् सिलीन्ध्रपुष्पप्रकाशानि मनाक्सिलीन्ध्रकुसुमप्रभाणि—ईषत्सितानीत्यर्थ, सिलीन्ध्र कुसुम—वर्षतौ भूमिं भित्वा छत्रकमिव बहिर्निस्सरति, मतान्तरे तु एतत् कुसुम रक्तवर्णमेव प्रायः यतोऽसुरा रक्तवसना प्रायो भवन्ति । पुन कीदृशानि वस्त्राणि ? अत्राऽऽह 'सुहुमाइं' सूक्ष्माणि 'असकिलिट्ठाइ' असक्लिष्टानि—दूषणरहितानि । 'वत्थाइं' वस्त्राणि—'पवरपरिहिया' प्रवरपरिहिता —प्रवरम्-उत्कृष्ट यथा तथा परिहिता =परिधृतवन्त । 'वय च पढम समइकता' वयश्च प्रथमम्=पोडशवर्षपर्य-

उनका समस्त शरीर लिप्त था । (इसी-सिलिंध-पुप्फ-प्पगासाइ) इन्होंने जो वस्त्र पहिन रखे थे वे कुछ कम सफेद थे, जैसे सिलीन्ध्र पुष्पका प्रकाश होता है वैसा ही इनका प्रकाश था। वर्षाऋतु मे जमीन को फोड कर छत्र के आकार जैसा जो पुष्प उपन्न होता है उसका नाम सिलीन्ध्र है । किन्हीं २ का मत है कि यह पुष्प रक्तवर्ण भी होता है । अत इसके ग्रहण से उनके वस्त्र रक्तवर्ण के थे ऐसा ही समझना चाहिये । क्यों कि असुर जाति के देव प्राय लालवस्त्र धारण करने वाले होते है । (सुहुमाइ) ये वस्त्र—जिन्हे इन्होंने पहिन रखे थे, अत्यन्त सूक्ष्म—पतले थे, (असकिलिट्ठाइ) और दोष रहित थे । (वत्थाइं पवरपरिहिया) ऐसे वस्त्र इन्होंने अच्छी तरह से अपने शरीर पर धारण कर रखे थे । (वयं च पढम समइक्कता) प्रथम वय को ये उल्लङ्घन कर चुके थे, अर्थात् ये सब सोलह वर्ष से ऊपर के जैसे मालूम होते

આર્દ્ર (ભીના) ચન્દન (સૂખડ) વડે તેમના આખા શરીર લિપ્ત હતા. (इसी-सिलिंध-पुप्फ-प्पगासाइ) તેઓએ જે વસ્ત્ર પહેર્યાં હતા તે કઈક ઓછા સફેદ હતા. જેવો સિલીન્ધ્ર પુષ્પનો પ્રકાશ હોય છે તેવો જ તેમનો પ્રકાશ હતો. વર્ષાઋતુમા જમીનને ફાડીને છત્રના આકાર જેવા જે પુષ્પ ઉત્પન્ન થાય છે તેનુ નામ સિલીન્ધ્ર છે કોઇ કોઈના મત છે કે આ પુષ્પ લાલ-રંગના થાય છે ત્યારે એ અર્થ ગ્રહણ કરવાથી તેમના વસ્ત્ર લાલરંગના હતા-એમ જ સમજવુ જોઈએ કેમકે અસુર જાતિના દેવ ઘાણુ કરીને લાલવસ્ત્ર ધારણ કરવાવાળા હોય છે (सुहुमाइ) આ વસ્ત્ર જે તેઓએ પહેર્યાં હતા તે અત્યત સૂક્ષ્મ—પાતળા હતા (असकिलिट्ठाइ) અને દોષરહિત હતા (वत्थाइ पवर परिहिया) એવા વસ્ત્રો તેઓએ સારી રીતે પોતાના શરીરે ધારણ કર્યાં હતા (वय च पढम समइक्कता) પ્રથમ વયનુ તેઓ ઉલ્લઘન કરી ચૂક્યા હતા, અર્થાત્

मुणालिया-धवल-दंतसेढी, हुयवह-णिद्धंत-धोय-तत्ततवणिज्ज-रत्त-तल-तालुजीहा अंजण-घणकसिण-रुयग-रमणिज्ज-णिद्ध-केसा, वामेग-कुंडलधरा अद्द-चंदणा-णुलित्त-गत्ता ईसी-सिलिंध-पुप्फ-प्पगा-

गोक्षीरफेनदकरजोमृणालिकावद् धवला दन्तश्रेणयो येषां ते तथा, तत्र दकरज—जलकण। 'हुतवह-णिद्धत-धोय-तत्ततवणिज्ज-रत्ततल-तालुजीहा' हुतवह-निर्मात-धौत-तप्ततपनीयरक्तनलताल्लुजिह्वा —हुतवहेन=वह्निना निर्मातं=प्रतापितं, धौत—जलप्रमार्जितं तप्त यत् तपनीय—सुवर्ण, तद्वद् रक्ततलम्-अरुणोपरिप्रदेशं तालुजिह्व येषां ते तथा-अतिप्रतप्तसमुज्ज्वलसुवर्णवर्णताल्लुजिह्वावन्त। 'अंजण-घणकसिण-रुयग-रमणिज्जणिद्ध केसा' अञ्जनघनकृष्णरुचकरमणीयस्निग्धकेशा — अञ्जन—कज्जल, घनो—मेघ, एतत्सदृशा कृशा कृष्णवर्णा, तथा रुचको—मणिविशेष, तद्वत् स्निग्धा —चिक्कणा —केशा येषां ते तथा, 'वामेगकुडलधरा' वामैककुण्डलधरा —वामे कर्णे—एककुण्डलधारिण, न तु दक्षिण कर्णे, तज्जातीयस्वभावात् एकस्मिन्नेव कर्णे कुण्डलधारका दक्षिणे कर्णे त्वन्याभरणधारिण इतिभाव। 'अद्दचदणाणुलित्तगत्ता आर्द्रचन्दनानुलिप्तगात्रा -सद्यो-

समान शुभ्र, एवं शङ्ख, गोक्षीर, फेन, जलकण, और मृणाल के समान अयन्त निर्मल इनकी दन्तपङ्क्ति थी।(हुतवह-णिद्धत-धोय-तत्त-तवणिज्ज-रत्ततल-तालुजीहा) पहिले वह्नि मे तपाये गये पश्चात् तेजाब मे धोये गये पुन अग्नि में तपाकर उज्ज्वल किये गये सुवर्ण के समान रक्ततलवाले इनके तालु और जिह्वा थी। (अंजण—घण—कसिण—रुयग—रमणिज्ज-णिद्ध—केसा) इनके केश अञ्जन एव काले मेघ के समान काले तथा रुचक के समान चिकने थे। (वामेगकुडलधरा) इनके वाम कर्ण मे कुण्डल शोभित हो रहा था। इनमे ऐसी प्रथा है कि, ये लोग बाये कान में कुण्डल पहनते हे और दाहिने कान मे अन्य आभूषण। दाहिने कान मे ये कभी भी कुण्डल नहीं पहनते हे। (अद्दचदणाणुलित्तगत्ता) आर्द्र चन्दन से

સમાન શુભ્ર અને શખ, ગોક્ષીર (દૂધ), ફીણ, જલકણ અને મૃણાલ (કમળ કંદ) ના જેવી અત્યન્ત નિર્મળ એમની દન્તપંક્તિઓ હતી (हुतवह णिद्धत धोय तत्त-तवणिज्ज रत्ततल तालु जीहा) પહેલા અગ્નિમા તપાવેલા પછી તેજાબમા ધોએલા સુવર્ણના જેવા લાલ તળા વાળા એમના તાળવા અને જીભ હતા (अंजण घण कसिण रुयग रमणिज्ज णिद्ध केसा) એમના વાળ આંજણ અને કાળા વાદળા જેવા કાળા તથા રુચકના જેવા ચીકણા હતા (वामेगकुडलधरा) એમના ડાબા કાનમા કુંડળ શોભી રહ્યા હતા એઓમા એવી પ્રથા છે કે એ લોક ડાબા કાનમા કુંડળ પહેરે છે અને જમણા કાનમા બીજુ ઘરેણુ આ લોકો જમણા કાનમા ક્યારે પણ કુંડળ પહેરતા નથી (अद्दचदणाणुलित्तगत्ता)

महब्बला महासोक्खा महानुभागा हार-विराइय-वच्छा कडग-तुडिय-थंभिय-भुया अंगय-कुंडल-मट्ठ-गंडयल-कण्णपीढधारी विचित्त-वत्था-भरणा विचित्त-माला-मउलि मउडा कल्लाणग-पवर-

त्वग । 'महब्बला' महाबला —विशेषबलशालिन । 'महायसा' महायशस —विशालकीर्तिमन्त, 'महासोक्खा' महासौख्या —विशिष्टसुखसम्पन्ना । 'महाणुभागा' महानुभागा —अचिन्त्यप्रभावयुक्ता । 'हारविराइयवच्छा' हारविराजितवक्षस । 'कडगतुडियथंभियभुया' कटकत्रुटिकस्तम्भितभुजा —कटकै =वलयै त्रुटिकै —बाहुरक्षकभूषणविशेषै स्तम्भिता—सज्जिता भुजा येषा ते तथा। 'अंगय कुंडल-मट्ठ-गंडयल-कण्णपीढ-धारी' अङ्गद-कुण्डल-मृष्ट-गण्डतल-कर्णपीठ-धारिण —अङ्गदानि=बाहाभरणानि कुण्डलमृष्टगण्डतलानि कर्णपीठानि—कर्णाभरणाविशेषान् धरन्ति तच्छीला । 'विचित्त-वत्था-भरणा'—विचित्र—वस्त्राभरणा —विचित्राणि=

ज्जुइया) शरीर एव आभरण आदि की विशिष्ट प्रभा से ये मण्डित थे। (महब्बला) विशेष शक्तिसम्पन्न थे। (महायसा) इनकी कीर्ति दिग्दिगन्त मे फैली हुई थी। (महासोक्खा) विशिष्ट सुख के ये भोक्ता थे। (महाणुभागा) अचिन्त्य प्रभाव के धारक थे। (हार-विराइय-वच्छा) इनका वक्षस्थल हार से शोभायमान था। (कडग-तुडिय-थभिय-भुया) कटक, वलय एव त्रुटिक—भुजबन्ध से इनकी भुजाये सज्जित थी। (अगय-कुडल मट्ठ-गडयल-कण्णपीढ-धारी) अगद-बाजूबन्ध, कुण्डल-कर्णाभरणविशेष कि जिससे इनके कपोल घर्षित हो रहे है—इन दोनों को एव और भी अन्य विशिष्ट कर्णाभरणो को ये धारण किये हुये थे। (विचित्तवत्थाभरणा) विविध प्रकार के वस्त्र एव आभरणोको ये पहन हुए थे। (विचित्त-

ऋद्धिथी आ सर्व देवो संपन्न હતા (महज्जुइया) વિશિષ્ટ શરીર અને આભરણુ આદિની પ્રભાથી તેઓ મંડિત હતા (महब्बला) વિશેષશક્તિસંપન્ન હતા (महायसा) તેમની કીર્તિ ચોતરફ ફેલાઈ ગઈ હતી (महासोक्खा) વિશિષ્ટ સુખના તેઓ ભોક્તા હતા, (महाणुभागा) અચિન્ત્ય પ્રભાવના ધારક હતા (हार-विराइय-वच्छा) તેમનું વક્ષસ્થલ (છાતી) હાર વડે શોભાયમાન હતું, (कडग तुडिय थभिय भुया) કટક—વલય અને ત્રુટિક—ભુજબન્ધથી તેમની ભુજાઓ સજ્જિત હતી (अगय कुंडल मट्ठ गडयल कण्णपीढधारी) અંગદ બાજુબન્ધ, કુંડલ—કાનોના આભરણુ વિશેષ કે જેના વડે તેમના ગાલ ઘર્ષિત થતા હતા, એ બન્ને તથા તે ઉપરાંત બીજા વિશિષ્ટ કર્ણ આભરણોને તેઓએ ધારણ કર્યાં હતા (विचित्तवत्थाभरणा) વિવિધ પ્રકારના વસ્ત્ર તથા આભરણોને તેઓએ ધારણ કર્યાં હતા

तुडिय - पवर - भूसण - णिम्मल-मणि-रयण-मंडिय-भुया दसमुद्दा-मंडिय-ग्गहत्था चूलामणि-चिंध-गया सुरूवा महड्ढिया महज्जुइया

न्तमतिक्रान्ता । 'विइय च असपत्ता' द्वितीयमप्राप्ता —द्वितीय—तरुण वय , अप्राप्ता = नाद्यापि प्राप्तवन्त । अतएव—'भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा' भद्रे यौवने वर्तमाना —सदा यौवनवयो धारिण ।'तलभगय-तुडिय-पवरभूसण-निम्मल मणि-रयण-मंडिय-भुया' तलभङ्गक तुटिक प्रवरभूषण-निर्मल-मणि-रत्नमण्डित-भुजा —तलभङ्गक=बाह्वाभरणम् ,तुटिकानि च बाहुरक्षकाणि, तान्येव भूषणानि तैर्निर्मलमणिरत्नैश्च मण्डिता भुजा येषा ते तथा—विविधवरभूषणमणिरत्नभूषित भुजा इत्यर्थ , 'दसमुद्दामडियग्गहत्था' दशमुद्रामण्डिताग्रहस्ता -दशभिर्मुद्राभि =मुद्रिकाभि मण्डिता =भूषिता -अग्रहस्ता अङ्गुलयो येषा ते तथा। 'चूलामणिचिंधगया' चूडामणिचिह्नगता - चूडामणिरूपचिह्नधारका इत्यर्थ । 'सुरूवा' सुरूपा —सुन्दराऽऽकारा 'महड्ढिया' महर्द्धिका= विशिष्टविमानपरिवारादियुक्ता । 'महज्जुइया' महाद्युतिका —विशिष्टशरीराऽऽभरणादिप्रभाभा

थे, (विइय च असपत्ता) और अभीतक ये तरुण अवस्था को जैसे प्राप्त नहीं हुए हों ऐसे दीखते थे । इसलिये ये सदा (भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा) अभिनव यौवन अवस्थासे सम्पन्न थे । (तलभगय तुडिय-पवरभूषण-णिम्मल-मणि-रयण मडिय-भुया) इनकी भुजाएँ तल-भगक—बाहु के एक आभरण एव त्रुटिक—बाहुरक्षक—भुजबध इन उत्तम दोनों आभूषणों से और निर्मल मणिरत्नों से मण्डित थीं । (दसमुद्दा-मडिय-ग्गहत्था) हाथ की सबकी सब अगुलियाँ दस मुद्रिकाओं से मण्डित थीं, अर्थात्—हाथ की दसों अगुलियों में मुद्रिकायें थीं । (चूडाम-णि-चिंध-गया) चूडामणिचिह्न के ये धारक थे। (सुरुवा) इनका रूप बडा ही सुन्दर था। (महड्ढिया) विशिष्ट विमान एव परिवारादि रूप ऋद्धि के ये सभी देव धारक थे । (मह

તેઓ બધા સોળ વર્ષથી ઉપરના હોય એવા દેખાતા હતા (विइयं च असंपत्ता) અને હજુ સુધી તેઓએ તરુણ અવસ્થાને પ્રાપ્ત ન કરી હોય એવા તેઓ દેખાતા હતા, આથી તેઓ સદા (भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा) અભિનવ યૌવન અવ સ્થાથી સમ્પન્ન હતા (तलभगय तुडिय पवर भूसण णिम्मल मणि रयण मडिय भुया) તેમની ભુજાઓ તલભગક—બાહુના આભરણ અને ત્રુટિક—બાહુરક્ષક—ભુજ બધ એ બન્ને ઉત્તમ આભૂષણોથી તથા નિર્મળ મણિરત્નોથી મડિત હતી (दस मुद्दा मडिय ग्गहत्था) હાથની તમામેતમામ આગળીઓ દશ મુદ્રિકાઓથી (વીંટી-ઓથી) મડિત હતી અર્થાત હાથની દશેય આગળીઓમા મુદ્રિકાઓ હતી, (चूलामणि चिंध गया) ચૂડામણિચિહ્નના ધારક તેઓ હતા (सुरूवा) તેમના રૂપ બહુજ સુદર હતા (महड्ढिया) વિશિષ્ટ વિમાન અને પરિવાર આદિ

एवं फासेणं संघाएणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए जुईए पभाए छायाए अच्चीए, दिव्वेण तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोयमाणा पभासेमाणा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं

रूवेण' दिव्येन रूपेण 'एवं फासेणं' एवं स्पर्शेन 'संघाएणं' संहननेन । 'संठाणेणं' संस्थानेन—समचतुरस्रलक्षणेन । 'दिव्वाए इड्ढीए' दिव्यया ऋद्ध्या—देवोचितया परिवारादिरूपया । 'दिव्वाए जुईए' दिव्यया द्युत्या, 'दिव्वाए पभाए' दिव्यया प्रभया—प्रभया=विमानदीप्त्या । 'दिव्वाए छायाए' दिव्यया छायया—शोभया । 'दिव्वाए अच्चीए' दिव्यया अर्चिषा—शरीरस्थरत्नादितेजोज्वालया । 'तेएणं' तेजसा—शरीरसम्बन्धिरोचिषा, प्रभावेण वा । 'दिव्वाए लेसाए' दिव्यया लेश्यया—शरीरकान्त्या 'दस दिसाओ उज्जोयमाणा' दश दिशा उद्द्योतयन्तः प्रकाशकरणेन, 'पभासेमाणा' प्रभासयन्तः—शोभयन्तः 'समणस्स भगवओ महावीरस्स' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'अंतियं' अन्तिकं—समीपम्— 'आगम्मागम्म' आगत्याऽऽगत्य—वारंवारमुपेत्य । 'रत्ता' रक्ताः—सानुरागाः 'समणं भगवं

जुईए पभाए छायाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेसाए) दिव्य ऋद्धि से, दिव्य द्युति से, दिव्य प्रभासे—विमान आदिकी दीप्ति से, दिव्य छाया से—शोभासे, शरीरस्थ रत्न आदि के दिव्य तेज से, दिव्य शारीरिक कान्ति से एवं दिव्यलेश्यासे (दस दिसाओ उज्जोयमाणा) दस दिशाओं को उद्द्योतयुक्त करते हुए (समणस्स भगवओ) श्रमण भगवान् (महावीरस्स) महावीर के (अंतिय) समीप (आगम्मागम्म) वारवार आ आकर (रत्ता) बडी भक्ति के साथ (समण भगवं महावीर) श्रमण भगवान महावीर को (तिक्खुत्तो) तीन

દિવ્ય વર્ણ વડે, દિવ્ય ગંધ વડે, દિવ્ય સ્વરૂપ વડે, તે જ પ્રકારે દિવ્ય સ્પર્શ વડે, દિવ્ય સંહનન વડે, સમચતુરસ્ર સમચોરસ-સંસ્થાન વડે, તથા-(दिव्वाए इड्ढीए जुईए पभाए छायाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेसाए) દિવ્ય ઋદ્ધિ વડે, દિવ્ય દ્યુતિ વડે, દિવ્ય પ્રભા વડે—વિમાન આદિની દીપ્તિ વડે, દિવ્ય છાયા એટલે શોભા વડે, શરીર ઉપરના રત્ન આદિના દિવ્ય તેજ વડે, દિવ્ય શારીરિક કાંતિ વડે, અને દિવ્ય લેશ્યા વડે (दस दिसाओ उज्जोयमाणा) દશે દિશાઓને ઉદ્દ્યોત-યુક્ત (પ્રકાશિત) કરતા થકા (समणस्स भगवओ) શ્રમણ ભગવાન્ (महावीरस्स) મહાવીરની (अंतियं) પાસે (आगम्मागम्म) વારવાર આવી આવીને (रत्ता) બહુ જ ભક્તિપૂર્વક (समण भगवं महावीर) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને (तिक्खुत्तो) ત્રણવાર (आयाहिण-पयाहिण) અંજલિપુટ બાંધીને તેને

वत्थ-परिहिया कल्लाणग-पवर-मल्ला-णुलेवणा भासुरबोंदी पलं-बवणमालधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं रूवेणं

विविधानि वस्त्राणि आभरणानि च येषां ते तथा, 'विचित्तमाला' विचित्रमाला-विचित्रा = विविधाऽऽकारा माला पुष्पस्रजो येषां ते तथा, 'मउलिमउडा' मौलिमुकुटाः -मौलिषु=मस्तकेषु मुकुटानि येषां ते तथा 'कल्लाणग पवरवत्थ परिहिया' कल्याणक प्रवरवस्त्र-परिहिता -कल्याण-कानि=माङ्गलिकानि प्रवराणि=श्रेष्ठानि वस्त्राणि परिहिता =परिधृतवन्त -परिधृतमाङ्गलिकश्रेष्ठ-वस्त्राः । 'कल्लाणग-पवर-मल्ला णुलेवणा' कल्याणक प्रवर माल्यानुलेपना -कल्याणकारागि प्रवराणि माल्यान्यनुलेपनानि च येषां त तथा, माङ्गलिकमाल्यानुलेपनवन्त । 'भासुरबोंदी' भास्वरदेहा -देदीप्यमानशरीरा 'पलंब-वणमाल-धरा' प्रलम्बवनमालाधरा, प्रलम्ब - लुम्बनक तद्युक्ता वनमाला तस्या धरा, वनमाला कण्ठतो जानुपर्यन्त लम्बमाना भवति तस्या धारका, 'दिव्वेण वण्णेण' दिव्येन वर्णेन-'दिव्वेण गंधेण' दिव्येन गन्धेन-'दिव्वेणं

माला) इन्हों ने जो मालाये धारण कर रखी थी वे विचित्र पुष्पों से गूँथी हुई थी। अत ये विचित्र-अनेक प्रकार की मालाओं को धारण किये हुए थे। (मउलिमउडा) इनके मस्तक मुकुटों से शोभित थे। (कल्लाणग-पवर-वत्थ-परिहिया) कल्याणकारी एव विशेष कीमती वस्त्रों को इन्होंने धारण कर रखा था। (कल्लाणग-पवर-मल्ला णुलेवणा) आनन्ददायक एव सुन्दर आकार युक्त मालाओं से एव विलेपनों से इनका शरीर सज्जित हो रहा था। (भासुरबोंदी) इनका शरीर विशिष्ट आभा से युक्त हो रहा था। (पलबवणमालधरा) इन्होंने जो वनमालाये धारण कर रखी थीं वे घुटनों तक लटक रही था। ये सब (दिव्वेण) रूवेण एव फासेण सघाएण सठाणेण) दिव्य वर्ण से, दिव्य गन्ध से, दिव्य स्वरूपसे, इसी प्रकार दिव्य स्पर्श से, दिव्य सहनन से, समचतुरस्र सस्थान से, तथा-(दिव्वाए इड्ढीए

(विचित्तमाला) તેઓએ જે માળાઓ ધારણ કરેલી હતી તે વિચિત્ર પુષ્પોથી ગુંથાએલી હતી આમ તેઓએ વિચિત્ર-અનેક પ્રકારની માળાઓ ધારણ કરી હતી (मउलिमउडा) તેમના મસ્તક મુકુટો વડે શોભી રહ્યા હતા (कल्लाणग पवर-वत्थ परिहिया) કલ્યાણકારી અને વિશેષ કિંમતી વસ્ત્રો તેઓએ ધારણ કરી રાખેલા હતા (कल्लाणग-पवर-मल्ला-णुलेवणा) આનંદદાયક અને સુંદર આકાર યુક્ત માળાઓથી તેમજ વિલેપનોથી તેમના શરીર સજ્જિત હતા (भासुरबोंदी) તેમના શરીર વિશિષ્ટ આભા વડે યુક્ત હતા (पलब-वणमालधरा) તેઓએ જે વનમાલાઓ ધારણ કરી હતી તે ઘુંટણ સુધી લટકી રહી હતી આ બધા (दिव्वेण वण्णेण दिव्वेणं गंधेण दिव्वेण रूवेण एवं फासेण सघाएण सठाणेण)

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे असुरिंदवज्जिया भवणवासी देवा अंतियं पाउब्भ-

टीका—अवशिष्टान् भवनवासिनो वर्णयन्नाह—'तेण कालेण तेणं समएण' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'समणस्स भगवओ महावीरस्स' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य, 'बहवे असुरिंदवज्जिया भवणवासी देवा अंतिय' बहवोऽसुरेन्द्रवर्जिता भवनवासिनो देवा अन्तिकं 'पाउब्भवित्था' प्रादुर्बभूवु—भगवत श्रीमहावीरस्य समीपं प्रादुर्भूता इत्यर्थः। भवनवासिदेवानां जातिभेदमाश्रित्य दश भेदा भवन्ति, तथाहि—असुर=असुरकुमाराः नागकुमाराः सुपर्णकुमाराः विद्युत्कुमाराः अग्निकुमाराः द्वीपकुमाराः उदधिकुमाराः दिशाकुमाराः पवनकुमाराः स्तनितकुमाराश्चेति। कुमारवत् क्रीडनपराश्चैते कुमारा उच्यन्ते। भवनेषु=पाताललोकदेवाऽऽवासविशेषेषु वसन्ति तच्छीला भवन-

भगवान के निकट आये हुए भवनवासी देवों के भेदस्वरूप असुरकुमारोंका वर्णन कर, अब सूत्रकार अवशिष्ट भवनवासी देवों का वर्णन करते हैं—'तेण कालेण' इत्यादि।

(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में (समणस्स भगवओ महावीरस्स) श्रमण भगवान महावीर के (अंतिय) पास (बहवे) अनेक (असुरिंदवज्जिया) असुरेन्द्रों को छोड़कर (भवणवासी देवा) भवनवासी देव (पाउब्भवित्था) प्रकटित हुए। इन भवनवासी देवों के दस भेद, जाति भेदको लेकर होते हैं। जैसे—असुरकुमार १, नागकुमार २, सुपर्णकुमार ३, विद्युकुमार ४, अग्निकुमार ५, द्वीपकुमार ६, उदधिकुमार ७, दिशाकुमार ८, पवनकुमार ९, स्तनितकुमार १०। कुमार की तरह ये क्रीडा करने में सदा तत्पर रहते हैं, इसलिये इनकी कुमार संज्ञा है। पाताल लोक में जो देवों के आवास-

ભગવાનની પાસે આવેલા ભવનવાસી દેવોના ભેદ-સ્વરૂપ અસુર કુમારોનુ વર્ણન કરે છે—'तेण कालेण' ઇત્યાદિ (तेण कालेणं तेण समएण) તે કાલ અને તે સમયમા (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની (अतिय) પાસે (बहवे) અનેક (असुरिंदवज्जिया) અસુરેન્દ્રો છોડીને બીજા (भवनवासी देवा) ભવનવાસી દેવો (पाउब्भवित्था) પ્રગટ થયા આ ભવનવાસી દેવોના દશ ભેદ જાતિભેદને લઇને થાય છે, જેમકે-અસુરકુમાર ૧, નાગકુમાર ૨, સુપર્ણકુમાર ૩, વિદ્યુત્કુમાર ૪ અગ્નિકુમાર ૫, દ્વીપકુમાર ૬, ઉદધિકુમાર ૭, દિશાકુમાર ૮, પવનકુમાર ૯, સ્તનિતકુમાર ૧૦ કુમાર-બાળકની પેઠે તેઓ ક્રીડા કરવામા સદા તત્પર રહે છે એ કારણથી તેમની કુમાર સંજ્ઞા છે પાતાલ લોકમા જે દેવોના આવાસ-વિશેષ છે તેમા તેઓ રહે છે તે કારણથી તેઓ ભવનવાસી કહેવાય છે સૂત્રકાર ગાથા

आगम्मागम्म रत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करित्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता साइं साइं नामगोयाइं सावेंति, णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा नमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासंति ॥ सू० ३३ ॥

महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य त्रिकृत्वः आदक्षिणप्रदक्षिणम्—अञ्जलिपुटं बद्ध्वा तं बद्धाञ्जलिपुटं दक्षिणकर्णमूलत आरभ्य ललाटप्रदेशेन वामकर्णान्तिकेन चक्राकारं त्रिः परिभ्राम्य ललाटदेशे स्थापनरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा 'वंदंति' वन्दन्ते=स्तुवन्ति, 'नमंसंति' नमस्यन्ति—नमस्कुर्वन्ति, 'वंदित्ता' वन्दित्वा 'नमंसित्ता' नमस्यित्वा 'साइं साइं णामगोयाइं सावेंति' स्वानि स्वानि नामगोत्राणि श्रावयन्ति=कथयन्ति। 'णच्चासण्णे णाइदूरे' नात्यासन्ने नातिदूरे 'सुस्सूसमाणा' शुश्रूषमाणाः—सेवां कुर्वाणाः 'नमंसमाणा' नमस्यन्तः=नमस्कुर्वन्तः 'अभिमुहा' अभिमुखाः 'विणएणं' विनयेन 'पंजलिउडा' प्राञ्जलिपुटाः—बद्धाञ्जलयः 'पज्जुवासंति' पर्युपासते=सेवन्ते ॥सू० ३३॥

बार (आयाहिणपयाहिणं) अञ्जलिपुट बाँध कर उसे दक्षिण कान से लगा कर मस्तक के पास से बायें कान तक चक्राकार घुमाते हुए पुनः मस्तक पर (करेंति) रखते थे, (करित्ता) रखकर (वंदंति नमंसंति) वन्दना करते थे, नमस्कार करते थे, (वंदित्ता नमंसित्ता) वन्दना नमस्कार करके (साइं साइं नामगोयाइं सावेंति) अपने अपने नाम एवं गोत्रों का उच्चारण करते थे। (णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा नमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासंति) न अतिसमीप और न अति दूर हो, अर्थात्—भगवान से थोड़ी दूर पर भगवान के सामने बैठ कर विनयपूर्वक दोनों हाथ जोड कर सेवा करने लगे॥ सू० ३३॥

જમણા કાનથી લઈને મસ્તકની પાસેથી ડાબા કાન સુધી ચક્રાકાર ફેરવીને, ફરીને મસ્તક પર (करेंति) રાખતા હતા (करित्ता) રાખીને (वंदंति नमंसंति) વંદન કરતા હતા, નમસ્કાર કરતા હતા (वंदित्ता नमंसित्ता) વંદના—નમસ્કાર કરીને (साइं साइं नामगोयाइं सावेंति) પોત-પોતાના નામ એવં ગોત્રના ઉચ્ચારણ કરતા હતા (णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा नमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासंति) બહુ સમીપ નહિ, તેમ બહુ દૂર નહિ, અર્થાત્ ભગવાનથી થોડે જ દૂર ભગવાનની સામે બેસીને વિનયપૂર્વક બન્ને હાથ જોડી સેવા કરવા લાગ્યા (સૂ ૩૩)

कलस-सीह-हयवर-गयंक-मयरंक-वर-मउड-वद्धमाण-णिज्जुत्त-वि-चित्त-चिंधगया सुरूवा महिड्ढिया, सेसं तं चेव जाव पज्जुवा-संति ॥ सू० ३४ ॥

ह्नानि, उदधिकुमाराणां मुकुटेष्वश्वचिह्नानि, दिक्कुमाराणां मुकुटेषु हस्तिचिह्नानि, पवनकुमाराणां नरमुकुटेषु मकरचिह्नानि, तथा स्तनितकुमाराणां मुकुटेषु वर्धमानचिह्नानि भवन्ति, तानि नागफणादीनि वर्धमानान्तानि 'निज्जुत्त' निर्युक्तानि-मुकुटेषु स्थितानि, 'विचित्त' विचित्राणि-नानाविधानि, 'चिंध' चिह्नानि गताः=प्राप्ता ये ते तथा, नागफणादीनि वर्धमानान्तानि यथास्थानस्थितानि विचित्ररूपाणि लक्षणानि तेषां मुकुटेषु भवन्तीत्यर्थः। 'सुरूवाः' सुरूपाः—सुन्दराऽऽकाराः। 'महिड्ढिया'—महर्द्धिकाः—महत्या ऋद्धया युक्ताः। 'सेसं तं चेव' शेषं तदेव—शेषम्=अवशिष्टं तदेव=पूर्ववदेव वाच्यम्, कियदवधि वाच्यम्? इत्याह—'जाव पज्जुवासंति' यावत् पर्युपासते-इति। ते नागकुमारादयः नवनिकायभवनवासिदेवा असुरकुमारवद् भगवन्तं सेवन्ते इति भावः ॥सू० ३४॥

में सिंहका चिह्न है ॥५॥ उदधिकुमारों के मुकुटों में अश्वका चिह्न है ॥६॥ दिक्कुमारों के मुकुटों में हाथीका चिह्न है ॥७॥ पवनकुमारों के उत्तम मुकुटों में मगरका चिह्न है ॥८॥ तथा स्तनितकुमारों के मुकुटों में वर्धमान (स्वस्तिक) का चिह्न है ॥९॥ ये सब चिह्न निर्युक्त-यथास्थान स्थित हैं, और विचित्र रूपवाले हैं। (सुरूवा) ये सब देव सुन्दर आकार-सम्पन्न, एवं (महिड्ढिया) महती ऋद्धि से युक्त हैं। (सेसं तं चेव जाव पज्जुवासंति) ये सब भवनवासी देवों का नौ प्रकार के निकाय असुरकुमार देवोंकी तरह भगवान की सेवा करने लगे ॥ सू० ३४ ॥

वज्रनु चिह्न छे ३ अग्निकुमारोना मुकुटमां पूर्ण-कलशनु चिह्न छे ४ द्वीपकुमारोना मुकुटमां सिंहनु चिह्न छे ५ उदधिकुमारोना मुकुटोमां अश्वनु चिह्न छे ६ दिक्कुमारोना मुकुटमां हाथीनु चिह्न छे ७ पवनकुमारोना मुकुटमां मगरनु चिह्न छे ८ तथा स्तनितकुमारोना मुकुटमां वर्धमान (स्वस्तिक)नु चिह्न छे ९ आ बधा चिह्नो निर्युक्त-यथास्थान होय छे अने विचित्र-रूपवाळा होय छे (सुरूवा) आ बधा देवो सुंदर आकार-सम्पन्न, एवं (महिड्ढिया) महान ऋद्धिथी युक्त होय छे (सेसं तं चेव जाव पज्जुवासंति) आ बधा भवन-वासी देवोना नव प्रकारना निकाय असुरकुमार देवोनी पेठे भगवाननी सेवा करवा लाग्या (सू ३४)

वित्था-णागपइणो सुवण्णा विज्जू अग्गीय दीव उदही दिसाकुमा-रा य पवणा थणिया य भवणवासी णागफडा-गरुल-वइर-पुण्ण-

वासिन इत्युच्यन्ते—भवनवासिनामेतेषु दशसु भेदेषु प्रथमभेद परित्यज्य नव भेदानत्र दर्शयति—'णागपइणो' नागपतयो—नागकुमारा । 'सुवण्णा' सुपर्णकुमारा । 'विज्जू'—विद्युत्कुमारा 'अग्गी य' अग्निकुमाराश्च । 'दीवा' द्वीपकुमारा । 'उदही' उदधिकुमारा । 'दिसा कुमारा य' दिशाकुमाराश्च 'पवणा' पवनकुमारा 'थणिया य' स्तनित-कुमाराश्च । एते 'भवणवासी' भवनवासिन । एतेषां नागकुमारादीनां नागफणादीनि चिह्नानि भवन्ति, तानि क्रमशो दर्शयन्नाह—'णागफडा—गरुल—वइर—पुण्णकलस—सीह—हयवर-गयक-मयरक-वरमउड-वद्धमाण णिज्जुत्त विचित्त-चिंधगया' नागफणा-गरुड-वज्र-पूर्णकलश सिंह-हयवर-गजाङ्क-मकराङ्क-वरमुकुट-वर्द्धमान-निर्युक्त-विचित्र-चिह्नगता - नागकुमाराणा मुकुटेषु नागफणाचिह्नानि,सुपर्णकुमाराणा मुकुटेषु गरुडचिह्नानि, विद्युत्कुमाराणा मुकुटेषु वज्रचिह्नानि, अग्निकुमाराणा मुकुटेषु पूर्णकलशचिह्नानि, द्वीपकुमाराणा मुकुटेषु सिंहचि-

---

विशेष है उनमे ये रहते है, इसलिये ये भवनवासी कहलाते है। सूत्रकार इन्हीं भवनवासियों के प्रथम भेदको छोडकर अन्य नौ भेदों को यहा बतला रहे हैं—(णागपइणो) नागपति—नागकुमार (सुवण्णा) सुपर्णकुमार (विज्जू) विद्युत्कुमार (अग्गी य) अग्निकुमार (दीवा) द्वीपकुमार (उदही) उदधिकुमार (दीसाकुमारा य) दिशाकुमार (पवणा) पवनकुमार (थणिया य) स्तनितकुमार (भवणवासी) ये इस प्रकार भवनवासी देवो के भेद है। इनमे (णागफडा—गरुल—वइर—पुण्णकलस—सिंह—हयवर—गयंक—मयरक—वरमउड—वद्धमाण—णिज्जुत्त—विचित्त—चिंध—गया) नागकुमारों के मुकुटमे नागकी फणाका चिह्न है ॥१॥ सुपर्णकुमारों के मुकुटमें गरुडका चिह्न है ॥२॥ विद्युत्कुमारों के मुकुटों मे वज्रका चिह्न है ॥३॥ अग्निकुमारों के मुकुटो मे पूर्णकलशका चिह्न है ॥४॥ द्वीपकुमारों के मुकुटों

ભવનવાસિઓના પ્રથમ ભેદ છોડીને અહીં બીજા નવ ભેદોને બતાવે છે—(णागपइणो) નાગપતિ—નાગકુમાર (सुवण्णा) સુપર્ણકુમાર (विज्जू) વિદ્યુત્કુમાર (अग्गी य) અગ્નિકુમાર, (दीवा) દ્વીપકુમાર (उदही) ઉદધિકુમાર (दिसाकुमारा य) દિશાકુમાર (पवणा) પવનકુમાર (थणिया य) સ્તનિતકુમાર, (भवणवासी) આ દશ પ્રકારે ભવનવાસી દેવોના ભેદ છે આમા (णागफडा-गरुल—वइर पुण्णकलस—सिंह—हयवर—गयक—मयरक — वरमउड—वद्धमाण — णिज्जुत्त—विचित्त—चिंध—गया) નાગકુમારોના મુકુટમા નાગની ફણાનું ચિહ્ન છે ૧ સુપર્ણકુમારોના મુકુટમા ગરુડનું ચિહ્ન છે ૨ વિદ્યુત્કુમારોના મુકુટમા

रक्खसा किंनर-किंपुरिस-भुयगपइणो य महाकाया गंधव्व-णिकाय-गणा णिउण-गंधव्वगीय-रइणो अणवण्णिय-पणवण्णिय-इसिवा-इय-भूयवाइय-कंदिय-महाकंदिया य कुहंड-पययदेवा चंचल-च-

२, 'जक्ख-रक्खसा' यक्षा ३, राक्षसा ४, 'किंनर-किंपुरिस-भुयगपइणो' किन्नर-किंपुरुष भुजगपतय –किन्नरा ५, किम्पुरुषा ६, भुजगपतय –महोरगा ७, 'महाकाया' महाकाया =विशालशरीरधारिण, ८, 'गंधव्व-णिकाय-गणा' गन्धर्वनिकायगणा –गन्धर्वसमूहगणा, गन्धर्वजातय इत्यर्थ, 'णिउण-गंधव्व-गीय-रइणो' निपुण-गान्धर्व-गीत-रतय –निपुण-प्रशस्त, गान्धर्व=नाट्योपेत गान, गानञ्च नाटयवर्जितगान, तत्र रतिर्येषा ते तथा, 'अणवण्णिय-पणवण्णिय-इसिवाइय-भूयवाइय-कंदिय-महाकंदिया य कुहंड-पयय-देवा' अणपन्निक-पणपन्निक-ऋषिवादिक-भूतवादिक-क्रन्दित-महाक्रन्दिताश्च कूष्माण्ड-पतगदेवा –एतेऽष्टौ व्यन्तरा निकायविशेषभूता रत्नप्रभापृथिव्या उपरितनयोजन

रक्खसा किंनर-किंपुरिस-भुयगपइणो य महाकाया गंधव्वणिकायगणा) पिशाच १, भूत २, यक्ष ३, राक्षस ४, किन्नर ५, किंपुरुष ६, भुजगपति ७, एवं विशाल शरीर धारण करनेवाला महोरग ८, गंधर्वनिकायगण, अर्थात्–गन्धर्व ९, ये व्यन्तर देव हैं। ये सब (णिउण-गंधव्व-गीय-रइणो) प्रशस्त नाटकीयगान में एवं नाटयवर्जित गानविद्या में रति रखनेवाले होते हैं। (अणवण्णिय-पणवण्णिय-इसिवाइय-भूयवाइय-कंदिय-महा-कंदिया य कुहंड-पययदेवा) अणपन्निक, पणपन्निक, ऋषिवादिक, भूतवादिक, क्रन्दित, महाक्रन्दित, कूष्माण्ड और पतगदेव, ये भी आठ व्यन्तरनिकाय के देव हैं। इन सब का निवास रत्नप्रभापृथिवी के ऊपरी भाग में १०० योजन तक है। ये कैसे होते हैं? सो

भूया य जक्ख-रक्खसा किन्नर-किंपुरिस-भुयगपइणो य महाकाया गंधव्वणिकाय गणा) પિશાચ ૧, ભૂત ૨, યક્ષ ૩ રાક્ષસ ૪, કિન્નર ૫, કિંપુરુષ ૬, ભુજગપતિ ૭, એવં વિશાલ શરીર ધારણ કરવાવાળા મહોરગ ૮, ગંધર્વ નિકાયગણ અર્થાત્ ગંધર્વ ૯, એ વ્યન્તર દેવ છે આ બધા (णिउण-गंधव्व-गीय-रइणो) પ્રશસ્ત નાટકીય ગાનમાં, તેમજ નાટય-વર્જિત ગાનવિદ્યામાં પ્રેમ રાખવાવાળા હોય છે (अणवण्णिय-पणवण्णिय-इसिवाइय-भूयवाइय-कंदिय-महाकंदिया य कुहंड-पयय-देवा) અણપન્નિક, પણપન્નિક, ઋષિ-વાદિક, ભૂતવાદિક, ક્રન્દિત, મહાક્રન્દિત, કૂષ્માંડ અને પતગદેવ આ પણ આઠ વ્યન્તર નિકાયના દેવ છે આ બધાનો નિવાસ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ઉપ-રના ભાગમાં ૧૦૦ યોજન સુધી છે તેઓ કેવા હોય છે? તે કહે છે-(चचल-

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे वाणमंतरा देवा अंतियं पाउब्भविस्था-पिसाय-भूया य जक्ख-

टीका—'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'बहवे वाणमंतरा देवा अंतियं पाउब्भविस्था' बहवो व्यन्तरा देवा अन्तिकं प्रादुर्बभूवुः, तत्र-व्यन्तरा-अन्तरम्=अवकाशः, तच्चाश्रयरूपम्, विविधम् अन्तर= पर्वतान्तर कन्दरान्तर वनान्तर वा आश्रयरूपं येषां ते व्यन्तरा —देवविशेषाः, यद्वा-'वाणमन्तरा' इतिच्छाया। तत्रेयं व्युत्पत्तिः —वनानामन्तराणि वनान्तराणि, तेषु भवा वानमन्तराः, पृषोदरादित्वान्मध्ये मकारागमः। भगवन्महावीरस्वामिसन्निधौ समवसरणे व्यन्तरा देवाः प्रकटीभूता इत्यर्थः, ते कतिविधाः? अत आह— 'पिसाय—भूया य' पिशाचाः १, भूताश्च

'तेणं कालेणं' इत्यादि।

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (समणस्स भगवओ महावीरस्स) श्रमण भगवान महावीर के (अंतियं) समीप (बहवे) अनेक (वाणमंतरा देवा) व्यंतर देव (पाउब्भविस्था) आये। व्यन्तर इनका नाम इसलिये है कि इनका अन्तर=अवकाश अर्थात् निवासस्थान अनेक प्रकार के हैं, जैसे—पर्वत, गिरिकन्दरा, वन आदि। अथवा—'वाणमन्तर' की संस्कृत छाया 'वानमन्तर' भी होती है। वनान्तरों में—वनों के मध्य में—जिनका रहना हो वे वानमन्तर हैं। ये वानमन्तर भगवान महावीर के समवसरण में उपस्थित हुए। ये व्यन्तर देव कितने प्रकार के हैं? इस प्रकार की आशंका होने पर सूत्रकार उसका समाधान करते हुए उनके भेदों को गिनाते हैं—(पिसाय—भूया य जक्ख-

'तेणं कालेणं' ઇત્યાદિ

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાલ અને તે સમયને વિષે (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની (अंतियं) પાસે (बहवे) અનેક (वाणमंतरा देवा) વ્યંતર દેવો (पाउब्भविस्था) આવ્યા. વ્યંતર એવું તેમનું નામ એ કારણથી છે કે તેમનું અન્તર-અવકાશ, અર્થાત્—નિવાસ સ્થાન, અનેક પ્રકારનું છે જેમકે પર્વતો, પર્વતોની ગુફા, તથા વન આદિ. અથવા 'वाणमंतर'ની સંસ્કૃત છાયા 'वानमन्तर' થાય છે. વનાન્તરોમાં—વનોના મધ્યમાં—જેમનું રહેવાનું થાય તે વાનમન્તર છે. આ વાનમન્તર ભગવાન મહાવીરના સમવસરણમાં ઉપસ્થિત થયા. આ વ્યન્તર દેવ કેટલા પ્રકારના છે? આવી શંકાનું સમાધાન કરતા સૂત્રકાર તેના ભેદો કહે છે—(पियास

विभूसण-धरा सव्वोउय-सुरभि-कुसुम-सुरइय-पलंबसोभंत-कंत-वियसंत-चित्त-वणमाल-रइय-वच्छा कामगमा कामरूवधारी णाणाविह-वण्ण-राग--वरवत्थ--चित्त-चिल्लय-णियंसणा विविह-देस-

तान्येव चारुविभूषणानि तेषां धराः । 'सव्वोउय-सुरभि-कुसुम-सुरइय-पलंब-सोभंत-कंत-वियसंत-चित्त-वणमाल-रइय-वच्छा' सर्वर्तु-सुरभि-कुसुम-सुरचित-प्रलम्ब-शोभमान-कान्त-विकसच्चित्रवनमाला-रतिद-वक्षसः -सर्वेषु ऋतुषु सुरभीणि यानि कुसुमानि तैः सुरचिता प्रलम्बा च शोभमाना च कान्ता च विकसन्ती च चित्रा=विचित्रा चासौ वनमाला=पुष्पस्रक्, तया रतिदानि=सुन्दराणि वक्षांसि येषां ते तथा, 'कामगमा' कामगामिनः-इच्छागामिनः । 'कामरूवधारी' कामरूपधारिणः -स्वेच्छानुसाररूपधारकाः । 'णाणाविह-वण्ण-राग-वरवत्थ-चित्त-चिल्लिय-णियसणा' नानाविध-वर्ण-राग-वरवस्त्र-चित्र-देदीप्यमान-निवसनाः नानाविधवर्णा रागो येषु तानि-नानाविधवर्णरागाणि तानि तथाभूतानि वरवस्त्राणि चित्राणि-विचित्राणि 'चिल्लिय' देदीप्यमानानि, निवसनानि=परिधानानि येषां ते तथा, 'चिल्लिय' इतिदेशीयशब्दः, रक्तादिबहुविधपरिधानवसनानि परिदधाना इत्यर्थः । 'विविह-देसणेवच्छ-गहिय-वेसा' विविध देश-नेपथ्य-गृहीत-वेषाः -विविधानाम्=अनेकेषां देशानां नेपथ्यैः=प्रसाधनविशेषैः गृहीत

है। (सव्वोउय-सुरभि-कुसुम-सुरइय-पलंब-सोभंत-कंत-वियसंत-चित्त-वणमाल-रइय-वच्छा) इनके वक्षःस्थल, सदा समस्त ऋतुओं के सुरभित पुष्पों द्वारा रचित लंबा २ सुन्दर विकसित चित्र-विचित्र वनमालाओं द्वारा सुहावने रहा करते हैं। (कामगमा) इनका गमन इच्छानुसार हुआ करता है। (कामरूवधारी) इच्छानुसार ये रूपों को धारण करते रहते हैं। (णाणाविह-वण्ण-राग-वरवत्थ-चित्त-चिल्लिय-णियसणा) अनेक प्रकार के रंगवाले तथा चित्र-विचित्र प्रभावाले ऐसे चमकते हुए वस्त्रों को ये पहिरा करते हैं। (विविह-देसी-णेवच्छ-गहिय-वेसा) अनेक देशों

(सव्वोउय-सुरभि कुसुम सुरइय पलंब सोभंत-कंत-वियसंत चित्त वणमाल-रइय वच्छा) તેમના વક્ષસ્થલ હમેશા સમસ્ત ઋતુઓના સુંદર પુષ્પો દ્વારા બનાવેલી લાંબીલાંબી સુંદર વિકસિત ચિત્ર-વિચિત્ર વનમાલાઓથી શોભાયમાન રહે છે (कामगमा) તેમનું ગમન ઇચ્છાનુસાર થતું હોય છે (कामरूवधारी) ઇચ્છાનુસાર તેઓ રૂપ ધારણ કરતા રહે છે (णाणाविह वण्ण राग-वरवत्थ-चित्त चिल्लिय-णियसणा) અનેક પ્રકારના રંગવાળા તથા ચિત્રવિચિત્ર પ્રભાવાળા એવા ચમકદાર વસ્ત્રો તેઓ પહેરે છે (विविह-देसी-णेवच्छगहिय वेसा) અનેક દેશોના તેઓ પોશાક પહેરે છે (पमुइय-कंदप्प कलह केली-कोलाहल प्पिया) પ્રમુદિતોના

वल-चित्त-कीलण-दवप्पिया गंभीर-हसिय-भणिय-पीयगीय-णच्च-ण-रई वणमाला-मेल-मउड-कुंडल-सच्छंद-विउव्वियाहरण-चारु-

गतदर्शिन, ते कीदृशा 'अत्राऽऽह—'चचल चवल-चित्त-कीलण-दवप्पिया' चञ्चल-चपल-चित्त-क्रीडन-द्रव प्रिया—चञ्चलादपि चपलानि चित्तानि येषा ते चञ्चलचपलचित्ता =अतिचपल-मानसा, क्रीडन—क्रीडा, द्रवश्च परिहास क्रीडाद्रवौ प्रियौ येषा ते क्रीडाद्रवप्रिया, तत पद-द्वयस्य कर्मधारय । 'गभीर-हसिय-भणिय-पीय-गीय-णच्चण-रई' गम्भीर-हसित-भणित-प्रिय-गीत-नर्तन-रतय -गाम्भीरम्=इतरैरज्ञेय हसित—हास्यम्, भणित—वाक्प्रयोग, प्रिय येषा ते गम्भीर-हसित-भणित-प्रिया, गीतनर्तनयो रतिर्येषा ते गीतनर्तनरतय, तत पदद्वयस्य कर्मधारय। 'वणमाला-मेल मउड-कुंडल-सच्छंद- विउव्विया हरण-चारु-विभूसण-धरा' वनमाला-ऽऽमेल मुकुट-कुण्डल-स्वच्छन्द-विकुर्विताऽऽभरण-चारु विभूषण धरा —वनमाला—रत्नादिमयाऽऽ-भरणविशेष, आमेल —पुष्परचितालङ्कारविशेष, मुकुट=सुवर्णमय शिरोभूषणम्, कुण्डल-कर्णाऽभ-रणम्, एतदतिरिक्तानि-स्वच्छ दविकुर्वितानि=स्वाभिप्रायानुसारा सद्य प्रकटीकृतानि आभरणानि,

कहते है–(चचल–चवल–चित्त–कीलण–दव–प्पिया) अति चपल चित्तवाले ये व्यन्तर देव, क्रीडा एव परिहास–प्रिय हुआ करते है। (गभीर–हसिय–भणिय–पीय–गीय–णच्च–णरई) दूसरा द्वारा अज्ञेय ऐसे हसित–हँसन म तथा बोलने की चतुराई में ये विशेष निपुण होते है, अथवा हसित एव भणित, ये दो बाते इन्हे विशेष प्रिय होती है। गीत और नर्तन म इन्हे विशेष अनुराग होता है। (वणमाला–मेल–मउड–कुडल–सच्छंद–विउ-व्विया–हरण–चारु–विभूसण–धरा) वनमाला–रत्नादि द्वारा निर्मित आभरणविशेष, आमेलक–पुष्पो द्वारा रचित अलकार विशेष, मुकुट–सुवर्णमयशिरोभूषण, कुडल–कर्णाभरण, एव अपनी इच्छानुसार निष्पादित और भी अन्य आभरण ये ही जिनके सुहावने आभूषण

चवल–चित्त–कीलण–दव–प्पिया) બહુ જ ચચળ ચિત્તવાળા તે વ્યન્તર દેવ ક્રીડા એવ પરિહાસપ્રિય હોય છે (गभीर हसिय–भणिय पीय–गीय णच्चण रई) બીજાથી ન જાણી શકાય એવા હસિત–હસવામા તેમ જ ભણિત–બોલવામા તેઓ વિશેષ નિપુણ હોય છે અથવા હસિત એવ ભણિત આ બે વાતો તેમને વિશેષ પ્રિય હોય છે ગીત અને નાચમા તેમને વિશેષ અનુરાગ હોય છે (वणमाला-मेल मउड कुडल सच्छद विउव्विया हरण चारु विभूसण धरा) વનમાળા-રત્નાદિ દ્વારા નિર્મિત આભરણ વિશેષ, આમેલ–પુષ્પો દ્વારા રચિત અલકાર વિશેષ, મુકુટ–સુવર્ણમય શિરોભૂષણ, કુ ડલ–કર્ણાભરણ, તેમ જ પોતાની ઈચ્છા મુજબ નિષ્પાદિત બીજા પણ આભરણો, એ જ જેમના સોહામણા આભૂષણો છે

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महा-वीरस्स जोइसिया देवा अंतियं पाउब्भवित्था—विहस्सई चंद-सूर-सुक्क-सणिच्छरा राहू धूमकेतु-बुहा य अंगारका य तत्त-तवणिज्ज-

टीका—'तेण कालेण तेण समएण' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'जोइसिया देवा अंतियं पाउब्भवित्था' ज्योतिष्का देवा अन्तिके प्रादुर्बभूवु:—श्रीमहावीरस्य समीपे प्रकटीभूता। नामभिर्ज्योतिष्कान् कथयति—'विहस्सई' बृहस्पतय:—ज्योतिष्काणामसंख्यातत्वात् प्रत्येक ते बहव सन्ति-इति। 'चद-सूर-सुक्क-सणिच्छरा' चन्द्रसूर्यशुक्रशनैश्चरा, 'राहू' राहव, 'धूमकेउ-बुहा य' धूमकेतुबुधाश्च, 'अगारका य' अङ्गारका:—मङ्गलाश्च, किंवर्णा एते? इत्याह—तत्त-तवणिज्ज—कणग-वण्णा' तप्त-तपनीय-कनक-वर्णा:—तप्ततपनीयं=रक्तसुवर्णं, कनक=पीतसुवर्णं तद्वद्वर्णो येषा ते तथा। केचिद्रक्ता केचित्पीता इत्यर्थ, तथा—जे य गहा जोइसमि चारं चरंति' ये च ग्रहा ज्योतिषे

'तेण कालेणं' इत्यादि।

(तेण कालेण तेण समएण) उस काल एव उस समय में (समणस्स भगवओ महावीरस्स) श्रमण भगवान् महावीर के (अंतिय) समीप (जोइसिया देवा) ज्योतिषी देव (पाउब्भवित्था) प्रकटित हुए। ज्योतिषी देवों के ये नाम है— (विहस्सई चद-सूर-सुक्क-सणिच्छरा राहू, धूमकेतु-बुहा य अगारका य) बृहस्पति, चन्द्र, सूर्य, शुक्र, शनैश्चर, राहु, धूमकेतु, बुध और अगारक—मगल। (तत्त-तवणिज्ज-कणग-वण्णा) ये देव तप्ततपनीय-रक्त सुवर्ण और कनक—पीत सुवर्ण इनके समान वर्णवाले होते है। (जे य गहा जोइसमि चार चरंति) उक्त से अतिरिक्त

'तेण कालेण' ઇત્યાદિ

(तेण कालेण तेण समएणं) તે કાલ તેમજ તે સમયમા (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની (अंतियं) પાસે (जोइसिया देवा) જ્યોતિષી દેવ (पाउब्भवित्था) પ્રકટ થયા જ્યોતિષી દેવોના નામ આ પ્રમાણે છે–(विहस्सई चद सूर सुक्क-सणिच्छरा राहू धूमकेतु बुहा य अगारका य) બૃહસ્પતિ, ચન્દ્ર, સૂર્ય, શુક્ર, શનૈશ્ચર, રાહુ, ધૂમકેતુ, બુધ અને અગારક–મગલ (तत्त तवणिज्ज-कणग वण्णा) તે દેવો તપ્ત તપનીય–રક્ત સુવર્ણ અને કનક–પીળા સુવર્ણના જેવા વર્ણવાળા હોય છે અર્થાત કેટલાએક લાલવર્ણવાળા તથા કેટલાએક પીળાવર્ણવાળા હોય છે (जे य गहा जोइसमि चार चरति) ઉક્ત

णेवच्छ-गहिय-वेसा पमुइय-कंदप्प-कलह-केली-कोलाहल-प्पिया हास-बोल-बहुला अणेग-मणि-रयण-विविह-णिज्जुत्त-विचित्त-चिंधगया सुरूवा महिड्ढिया जाव पज्जुवासंति ॥ सू० ३५ ॥

=कृत वेप =शरीरशोभाऽऽधायकप्रसाधन यैस्ते तथा, तत्र नेपथ्य-'पोशाक'-इतिभाषाप्रसिद्धम्, 'पमुइय कदप्प-कलह-केली-कोलाहल प्पिया' प्रमुदित-कन्दर्प-कलह-केलि-कोलाहल-प्रिया - प्रमुदिताना य कन्दर्पप्रधान· कलह केली=क्रीडा, तज्जन्य कोलाहल —कलकल प्रियो येषा ते तथा, कामकलहक्रीडाकोलाहलपरायणा इत्यर्थ । 'हास-बोल बहुला' हासध्वनिबहुला 'अणेग-मणि-रयण विविह-णिज्जुत्त-विचित्त-चिंध-गया' अनेक-मणि-रत्न-विविध निर्युक्त-विचित्र-चिह्नगता -अनेकानि-यानि मणिरत्नानि तानि विविधनिर्युक्तानि=विविधप्रकारेण यथास्थानस्थितानि, तान्येव विचित्रचिह्नानि तानि गता =प्राप्ता । 'सुरूवा' सुरूपा —सुन्दराऽऽकारा । 'महिड्ढिया' महर्द्धिका —महासम्पत्तियुक्ता । 'जाव पज्जुवासंति' याव पर्युपासते—आदक्षिणप्रदक्षिण-वन्दनादीनि पूर्ववत् कृत्वा भगवत श्रीमहावीरस्याभिमुखे स्थिता कृतप्राञ्जलिपुटा भगवन्त श्रीमहावीर सेवन्ते-इति ॥ सू० ३५ ॥

की ये पोशाक धारण किये रहते हैं। (पमुइय—कदप्प—कलह—केली—कोलाहल-प्पिया) प्रमुदितों का जो कन्दर्पप्रधान कलह एव क्रीडा होती है इससे जन्य जो कोलाहल होता है वह इन्हे अधिक प्रिय रहा करता है। (हास—बोल—बहुला) ये हँसी—मजाक करने मे बडे चतुर होते हैं। (अणेग—मणि—रयण—विविह—णिज्जुत्त—विचित्त—चिंध—गया) अनेक मणिरत्न, जो कि विविध प्रकार से यथास्थान पर निवेशित रहा करते है वे ही जिनके विचित्र चिह्न है ऐसे, (सुरूवा) सुन्दर आकार विशिष्ट, (महिड्ढिया) एव महाऋद्धियुक्त वे व्यन्तर देव (जाव पज्जुवासंति) पूर्ववर्णित असुरकुमारों की तरह दोनों हाथ जोडकर वदना एव नमस्कार करके प्रभु महावीर की सेवा मे लग्न हुए ॥ सू० ३५ ॥

જે કન્દર્પપ્રધાન કલહ એવ ક્રીડા થાય છે તેમાથી જે કોલાહલ ઉત્પન્ન થાય છે તે તેમને અધિક પ્રિય લાગે છે (हास बोल बहुला) હાસી–મજાક કરવામા આ બહુ જ ચતુર હોય છે (अणेग मणि रयण विविह णिज्जुत्त विचित्त चिंध गया) અનેક મણિરત્ન કે જે વિવિધ પ્રકારે યથાસ્થાન નિવેશિત રહે છે તે જ જેઓના વિચિત્ર ચિહ્ન છે એવા (सुरूवा) સુદર આકાર યુક્ત (महिड्ढिया) એવ મહા–ઋદ્ધિયુક્ત તે વ્યન્તરદેવ (जाव पज्जुवासंति) પૂર્વે કહેલા અસુરકુમારોની પેઠે બન્ને હાથ જોડી વદના તેમજ નમસ્કાર કરીને પ્રભુ મહાવીરની સેવામા લગ્ન થયા (સૂ ૩૫)

पंचवण्णाओ ताराओ ठियलेसा चारिणो य अविस्सामंडलगई पत्तेयं णामंकपागडियचिंधमउडा महिड्ढिया जाव पज्जुवासंति ॥ सू० ३६ ॥

एतावन्त्यस्ता एव। नक्षत्रसंख्या उक्ता एव। अष्टाशीतिर्ग्रहाः। एकस्य खलु चन्द्रमसस्तारा कोटाना कोटयः एतावन्तो भवन्ति–षट्षष्टिसहस्राणि नव च शतानि पञ्च-सप्तत्यधिकानि 'णाणा-सठाण-सठियाओ' नाना-संस्थान-संस्थिता, 'पचवण्णाओ' पञ्चवर्णा, 'ताराओ' तारा, 'ठियलेसा' स्थितलेश्या निश्चलप्रकाशा। 'चारिणो य' चारिणश्च-सञ्चरणशीला, 'अविस्साम-मंडल-गई' अविश्राम-मण्डल-गतय –निरन्तरसञ्चरणशीला, 'पत्तेय' प्रत्येकम्-पृथक् पृथक् 'णामंक-पागडिय-चिंध-मउडा' नामाऽङ्क-प्रकटित चिह्न-मुकुटा -नामाङ्कानि=नामाङ्कितानि-नामाक्षरयुक्तानि प्रकटितचिह्नानि=स्पष्टचिह्नयुक्तानि मुकुटानि येषा ते तथा, 'महिड्ढिया' महर्द्धिका –महर्द्धियुक्ता सन्तो ज्योतिष्का देवा 'जाव पज्जुवासंति' यावत्=पूर्ववत्प्रभुमभिगवन्दनादिभि पर्युपासते ॥ सू० ३६ ॥

भी इसी प्रकार समझनी चाहिये। ग्रह अठासी है। नक्षत्र की संख्या ऊपर कही गयी है। प्रकीर्णताराओं में केवल चन्द्रमा के ही परिवार के तारे ६६९७५ (छियासठ हजार नौ सौ पचहत्तर) कोटाकोटी है। इसी तरह और के भी तारों के परिवार शास्त्रान्तर से समझना।

(णाणा-संठाण-संठियाओ) इन ताराओं का आकार एकसा निश्चित नहीं है, इनका आकार अनेक प्रकार का है। (पंचवण्णाओ) ये पाँच वर्णवाले हैं। (ठियलेसा) इनकी लेश्या स्थिर है–इनकी लेश्या में कोई परिवर्तन नहीं होता है। (चारिणो य) ये सचरण-शील है। अत (अविस्साम-मंडल-गई) निरन्तर गमन

સૂર્યની સંખ્યા એકસોબત્રીસ છે ચંદ્રમાની સંખ્યા પણ એટલી જ સમજી લેવી જોઈએ ગ્રહ ૮૮ છે નક્ષત્રની સંખ્યા ઉપર કહી છે પ્રકીર્ણતારાઓમાં કેવળ ચંદ્રમાના પરિવારના તારા ૬૬૯૭૫ (છાસઠ હજાર નવસો પીંચોતેર) કોડાકોડી છે એવી જ રીતે બીજા ચંદ્રમાના પણ તારા-પરિવાર શાસ્ત્રાન્તરથી સમજી લેવા

(णाणा संठाण संठियाओ) આ તારાઓના આકાર એક જેવો નિશ્ચિત નથી. તેમના આકાર અનેક પ્રકારના છે (पंचवण्णाओ) તેઓ પાંચ વર્ણવાળા છે (ठियलेसा) તેમની લેશ્યા સ્થિર છે, તેમની લેશ્યામાં કોઈ ફેરફાર થતો નથી (चारिणो य) તેઓ સંચરણશીલ છે (अविस्साम-मंडल गई) આમ નિર-

कणग-वण्णा, जे य गहा जोइसंमि चारं चरंति केऊ य गइरइया अट्ठावीसविहा य णक्खत्तदेवगणा णाणा-संठाण-संठियाओ य

चारं चरन्ति—उक्तातिरिक्ता ये ग्रहा ज्योतिषे=ज्योतिश्चक्रे—चक्रवत्प्रतिभासमाने ज्योतिर्मण्डले भ्रमणं कुर्वन्ति। बहुत्वाद् बहुवचनम्। 'केऊ य गइरइया' केतवश्च गतिरचिता—केतवो—जलकेत्वादय, किम्भूता 'गतिरचिता—मनुष्यलोकापेक्षया गतिमन्तः। 'अट्ठावीसविहा य णक्खत्त-देव-गणा' अष्टाविंशतिविधाश्च नक्षत्रदेवगणा—अष्टाविंशतिर्नक्षत्रदेवता। अत्र प्रसङ्गादन्येषामपि ज्योतिष्कदेवानां संख्या उच्यन्ते—ज्योतिष्कदेवा पञ्चविधा भवन्ति, सूर्या १, चन्द्रमसः २, ग्रहा ३, नक्षत्राणि ४, प्रकीर्णतारकाश्च ५, तत्र द्वौ सूर्यौ जम्बूद्वीपे, लवणे चत्वारः, धातकीखण्डे द्वादश, कालोदधौ द्विचत्वारिंशत्, पुष्करार्द्धे द्विसप्तति—इत्येवं मनुष्यलोके द्वात्रिंशदधिकं शतं सूर्या सन्ति, चन्द्रमसोऽपि

जो ग्रह ज्योतिश्चक्र में—चक्र की तरह प्रतिभासमान इस ज्योतिर्मण्डलमें—भ्रमण करते है वे (केऊ य गइरइया) जलकेतु आदि केतुग्रह, जो कि मनुष्यलोक की अपेक्षा ही सदा गतिविशिष्ट हैं। अर्थात् यह समस्त ज्योतिश्चक्र इस मनुष्यलोक रूप ढाई द्वीप मे ही गति विशिष्ट है, अन्यत्र नहीं। (अट्ठावीसविहा य णक्खत्तदेवगणा) तथा जो अट्ठाईस (२८) प्रकार के नक्षत्र जाति के देवता है।

यहाँ पर प्रसगवश अन्य ज्योतिषी देवों की भी संख्या कहते है। ज्योतिषी देव पाँच प्रकार के है—सूर्य १, चन्द्रमा २, ग्रह ३, नक्षत्र ४, और प्रकीर्ण तारा ५। इन सबों में प्रत्येक की सख्या इस प्रकार है—जम्बूद्वीप मे दो सूर्य है, लवण समुद्र मे चार सूर्य है, धातकीखण्ड मे बारह सूर्य है, कालोदधि मे बयालीस सूर्य है और पुष्करार्द्ध मे बहत्तर सूर्य है। इस प्रकार मनुष्यलोक में सूर्य की संख्या एक सौ बत्तीस है। चन्द्रमा की संख्या

વર્ણવેલાથી બીજા જે ગ્રહો જ્યોતિશ્ચક્રમા–ચક્રની પેઠે પ્રતિભાસિત આ જ્યોતિર્મંડલમા-ભ્રમણ કરે છે તે (केऊ य गइरइया) જળકેતુ આદિ કેતુગ્રહ કે જે મનુષ્યલોકની અપેક્ષા જ હમેશા ગતિ–વિશિષ્ટ છે ,અર્થાત્–આ સમસ્ત જ્યોતિશ્ચક્ર આ મનુષ્યલોકરૂપ અઢી દ્વીપમા ,જ ગતિવિશિષ્ટ છે, બીજે નહિ (अट्ठावीसविहा य णक्खत्त-देवगणा) તથા જે ૨૮ પ્રકારના નક્ષત્ર જાતિના દેવતા છે

અહી પ્રસગવશ બીજા જ્યોતિષી દેવોની પણ સખ્યા કહે છે જ્યોતિષી દેવ પાચ પ્રકારના છે–સૂર્ય ૧ ચદ્રમા ૨ ગ્રહ ૩ નક્ષત્ર ૪ તથા પ્રકીર્ણ તારા ૫ આ બધામા પ્રત્યેકની સખ્યા આ પ્રકારે છે–જબૂદ્વીપમા ૨ સૂર્ય છે. લવણ સમુદ્રમા ચાર સૂર્ય છે ધાતકીખડમા ૧૨ સૂર્ય છે કાલોદધિમા ૪૨ સૂર્ય છે તથા પુષ્કરાર્દ્ધમા ૭૨ સૂર્ય છે આ પ્રકારે મનુષ્યલોકમા

अच्चुयवई पहिट्ठा देवा जिण-दंसणु-स्सुया-गमण-जणिय-हासा पालग-पुप्फग-सोमणस-सिरिवच्छ-णंदियावत्त-कामगम-पीइगम-

सौधर्मादच्युताऽन्ता कल्पा सन्ति, एषु वैमानिका देवा भवन्ति, अत एव सौधर्माद्यच्युतान्ताना देवलोकाना पतय =स्वामिन 'पहिट्ठा' प्रहृष्टा =अतिहर्षं प्राप्ता देवा =वैमानिका । 'जिण-दंसणु-स्सुया-गमण-जणिय-हासा' जिन-दर्शनोत्सुका-ऽऽगमन-जनित-हासा —जिनदर्शनार्थीत्सुकानाम् एषा, देवानामागमन, तेन जनितो हास =आनन्दो येषा ते तथा । जिनेन्द्रदर्शनोत्कण्ठाऽऽगमनजातप्रमोदा । सौधर्मादिद्वादशकल्पाना दश—इन्द्रा सन्ति, तत्र नवम-दशमयोरेक इन्द्रो भवति। शक्रादीनामच्युतान्ताना दशानामिन्द्राणा पालकादीनि सर्वतोभद्रान्तानि दश विमानानि भवन्ति, तान्याह—'पालग १, पुप्फग २, सोमणस ३, सिरिवच्छ ४, णदियावत्त ५, कामगम ६, पीइगम ७, मणोगम ८, विमल ९, सव्वओभद्द १० -सरिसणामधेज्जेहिं विमाणेहिं ओइण्णा' पालक-पुष्पक-सौमनस-श्रीवत्स-नन्द्यावर्त-काम-गम-प्रीतिगम-मनोगम-विमल-सर्वतोभद्र-सदृशनामधेयैर्विमानैरवतीर्णा =ते दश इन्द्रा पाल-

महाशुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण और अच्युत ये देवलोक हैं। ये सौधर्मादिक, वैमानिक देवताओं के रहने के स्थान है। ये देवलोक १२ हैं। इनकी कल्प सज्ञा है। ये वैमानिक देव इनके पति है। इन कल्पों मे जो उत्पन्न होते हे वे वैमानिक या कल्पवासी देव कहलाते है। (पहिट्ठा) अतिहर्ष को प्राप्त हुए (देवा) ये वैमानिक देवेन्द्र कि जिन्हे (जिण-दसणु-स्सुया-गमण-जनिय-हासा) जिनेन्द्र के दर्शन के लिये उत्सुकतापूर्वक आगमन से अति आनद हुआ है। (पालग-पुप्फग-सोमणस सिरिवच्छ-णदियावत्त कामगम-पीइगम-मणोगम-विमल-सव्वओभद्द-सरिस-णामधेज्जेहिं विमाणेहिं) वे दस वैमानिक देवेन्द्र अपने २ पालक, १ पुष्पक २ सौमनस, ३ श्रीवत्स,

૬, મહાશુક્ર ૭, સહસ્રાર ૮, આનત ૯, પ્રાણત ૧૦, આરણ ૧૧, અને અચ્યુત ૧૨, આ દેવલોક છે આ સૌધર્માદિક, વૈમાનિક દેવતાઓના રહેવાના સ્થાન છે તે દેવલોક ૧૨ છે તેમની કલ્પ સજ્ઞા છે તેમના સ્વામી ૧૦ છે આ કલ્પોમા જે ઉત્પન્ન થાય છે તે વૈમાનિક અથવા કલ્પવાસી દેવ કહેવાય છે (पहिट्ठा) બહુ હર્ષ પ્રાપ્ત થતા (देवा) આ વૈમાનિક દેવેન્દ્ર કે જેને (जिण-दसणु-स्सुया-गमण-जनिय-हासा) જિનેન્દ્રના દર્શન માટે ઉત્સુકતાપૂર્વક આગમનથી અતિ આનદ થયો છે (पालग-पुप्फग-सोमणस-सिरिवच्छ-णदिया-वत्त-कामगम-पीइगम-विमल-सव्वओभद्द-सरिसणामधेज्जेहिं विमाणेहिं) તે દશ

मूलम्—तेण कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महा-वीरस्स वेमाणिया देवा अंतियं पाउब्भवित्था, सोहम्मी-साण-सणं-कुमार-माहिंद-बंभ-लंतग-महासुक्क-सहस्सारा—णय—पाणया—रण-

टीका—'तेणं कालेण तेण समएणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'वेमाणिया देवा अंतियं पाउब्भवित्था' वैमानिका देवा अन्तिके प्रादुर्बभूवु । के ते वैमानिका देवा ? इत्याह—सोहम्मी-साण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लंतय महासुक्क-सहस्सारा-णय-पाणया-रण-अच्चुयवई' सौधर्म १-शान २-सनत्कुमार ३-माहेन्द्र ४, ब्रह्म ५-लान्तक ६-महाशुक्र ७-सहस्रारा ऽऽनत ९-प्राणता १०ऽऽरणा ११ च्युतपतय १२,

करते रहना यही इनका स्वभाव है। (पत्तेयं णामक-पागडिय-चिंध-मउडा) प्रत्येक के मुकुट अपने अपने नामों से युक्त एवं स्पष्ट चिह्न वाले हैं। (महिड्ढिया) ये सब महाऋद्धि के धारी हैं। (जाव पज्जुवासंति) पूर्व में वर्णित असुरकुमारों की तरह ये सब ज्योतिषी देव भी भगवान् महावीर की सेवा करने लगे ॥ सू० ३६ ॥

'तेण कालेण' इत्यादि।

(तेण कालेण तेण समएणं) उस काल और उस समय में (समणस्स भगवओ महावीरस्स) श्रमण भगवान् महावीर के (अंतिय) समीप (वेमाणिया देवा) वैमानिकदेव (पाउब्भवित्था) प्रकट हुए। वैमानिक देव कौन हैं? सो कहते हैं—(सोहम्मी—साण—सणकुमार—माहिंद—बंभ—लंतग—महासुक्क—सहस्सारा—णय—पाणया—रण—अच्चुय—वई) सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लान्तक

तर गमन કરતા રહેવુ એ જ તેમનો સ્વભાવ છે (पत्तेयं णामंक-पागडिय चिंध मउडा) પ્રત્યેકના મુકુટ પોતપોતાના નામોથી યુક્ત એવ સ્પષ્ટ ચિહ્નવાળા છે (महिड्ढिया) એ બધા મહાઋદ્ધિના ધારક છે. (जाव पज्जुवासंति) પૂર્વે કહેલ અસુરકુમારોની પેઠે આ બધા જ્યોતિષીદેવ પણ ભગવાન મહાવીરની સેવા કરવા લાગ્યા (સૂ૦૩૬)

'तेण कालेण' ઈત્યાદિ

(तेण कालेण तेण समएण) તે કાલ અને તે સમયમા (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની (अंतिय) પાસે (वेमाणिया देवा) વૈમાનિક દેવ (पाउब्भवित्था) પ્રગટ થયા તે વૈમાનિક દેવો કોન છે? તે કહે છે—(सोहम्मी साण-सणकुमार-महिंद बंभ लंतग-महासुक्क सहस्सारा णय पाणया-रण अच्चुय वई) સૌધર્મ ૧, ઈશાન ૨, સનત્કુમાર ૩, માહેન્દ્ર ૪, બ્રહ્મલોક ૫, લાન્તક

धारी कुंडल-उज्जोविया-णणा मउड-दित्त-सिरया रत्ताभा पउम-पम्ह-

नि येषां ते तथा । तत्र ऋषभो वृषभ, मृगमहिषादिचिह्नयुक्तमुकुटसहिता 'पसिढिल-वर-मउड-तिरीड-धारी' प्रशिथिल-वरकेशविन्यास-किरीटधारिण, प्रशिथिला ये 'वरमउड' वरकेशविन्यासा =प्रशस्तकेशविन्यासा किरीटाश्च तान् धरन्ति ये ते तथा, 'मउड' इति केश-विन्यासार्थको देशीशब्द । 'कुडल-उज्जोविया-णणा' कुण्डलो-द्द्योतिता-नना –कुण्डलैन उद्द्योतित=प्रकाशितम् आनन=मुख येषा ते तथा, कुण्डलोद्भासितमुखा इत्यर्थ । 'मउड-दित्त-सिरया' मुकुट-दीप्त-शिरस्का –मुकुटेन रत्नखचितेन दीप्ता शिरांसि = केशा येषा ते तथा, 'रत्ताभा' रक्ताऽऽभा =अरुणकान्तिमन्त । 'पउम-पम्ह-गोरा'

हय=घोडा, गजपति–गजेन्द्र, भुजग–सर्प, खड्ग और वृषभ इनके चिह्न[1] थे। (पसिढिल–वर–मउड–तिरीड–धारी) प्रशिथिल उत्तम मउड=केशविन्यास एव किरीट–मुकुट को ये धारण किये हुए थे, अर्थात् भगवान् के दर्शन करने की त्वरा मे इनके प्रशस्त केश-विन्यास और मुकुट शिथिल हो गये थे। (कुडल–उज्जोविया–णणा) कुडलों की विशिष्ट आभा से इनका मुखमण्डल प्रकाशित हो रहा था। (मउड–दित्त–सिरया)

(१) ये चिह्न १० है, देवलोक १२ हैं। पर इनके इन्द्र १० है–(१) सौधर्मका इन्द्र, (२) ईशानका इन्द्र, (३) सनत्कुमारका इन्द्र, (४) माहेन्द्र का इन्द्र, (५) ब्रह्मलोक का इन्द्र, (६) लान्तकका इन्द्र, (७) महाशुक्रका इन्द्र, (८) सहस्रारका इन्द्र, (९) आनत एव प्राणतका इन्द्र और (१०) आरण एव अच्युत देवलोकका इन्द्र, इस प्रकार ये १० इन्द्र इन १२ कल्पों के है। इन इन्द्रों के ये क्रमश पालकादिक १० विमान होते हैं। मृग महिष आदिके क्रमश ये १० चिह्न मुकुटों में इनके होते है।

પતિ [હાથી], ભુજગ-સર્પ, ખડ્ગ અને વૃષભ [બળદ], એના ચિહ્ન[1] હતા (पसिढिल–वर–मउड–तिरीड–धारी) પ્રશિથિલ ઉત્તમ મઉડ–કેશવિન્યાસ એવ કિરીટ–મુકુટ તેમણે ધારણ કર્યા હતા અર્થાત્ ભગવાનના દર્શન કરવાની ઉતાવળમા તેમના પ્રશસ્ત કેશ–વિન્યાસ અને મુકુટ શિથિલ થઇ ગયા હતા (कुडल–उज्जोविया–णणा) કુડલોની વિશિષ્ટ આભા (પ્રકાશ)થી તેમના મુખ

(૧) આ ચિહ્ન ૧૦ છે, દેવલોક ૧૨ છે, પણ તેના ઇંદ્ર ૧૦ છે (૧) સૌધર્મનો ઇંદ્ર, (૨) ઈશાનનો ઇંદ્ર, (૩) સનત્કુમારનો ઇંદ્ર, (૪) માહેન્દ્રનો ઇંદ્ર, (૫) બ્રહ્મલોકનો ઇંદ્ર, (૬) લાતકનો ઇંદ્ર, (૭) મહાશુક્રનો ઇંદ્ર, (૮) સહસારનો ઇંદ્ર, (૯) આનત એવ પ્રાણતનો ઇંદ્ર, તથા (૧૦) આરણ એવ અચ્યુત દેવલોકનો ઈંદ્ર આ પ્રકારે આ ૧૦ ઇંદ્ર આ ૧૨ કલ્પોના છે આ ઇંદ્રોના ક્રમથી પાલક

विमल-सव्वओभद्द-सरिसणामधेज्जेहिं विमाणेहिं ओइण्णा वंदगा जिणिंदं मिग-महिस-वराह-छगल-दद्दुर-हय-गयवइ-भुयग-खग्ग-उसभंक-विडिम-पागडिय-चिंध-मउडा पसिढिल-वरमउड-तिरीड-

कादिसर्वतोभद्रान्तनामकैः, तथा तत्सदृशनामकैः -पूर्णभद्र-सुभद्रादिनामकैश्चान्यैर्विमानै-रन्येऽपि देवा 'ओइण्णा'=अवतीर्णा =भुवमागता । 'वंदगा जिणिंद' वन्दका जिनेन्द्रस्य =जिनेन्द्रं वन्दितुकामा इत्यर्थः । 'मिग-महिस-वराह-छगल दद्दुर-हय-गयवइ-भुयग-खग्ग-उसभक-विडिम-पागडिय-चिंध-मउडा' मृग-महिष-वराह-छगल-दर्दुर-हय-गजपति-भुजग-खड्ग-ऋषभाङ्क-विडिमप्रकटित चिह्नमुकुटाः, मृगमहिषादि-ऋषभान्ता अङ्काः -चिह्नानि विडि-मेषु=विस्तीर्णभागेषु येषां मुकुटानां तानि मृगमहिषवराह-छगल-दर्दुरहयगजपतिभुजगखड्ग-ऋषभाङ्कविडिमानि, तानि अतएव प्रकटितचिह्नानि=रत्नादिनिर्मितप्रकाशितचिह्नयुक्तानि मुकुटा-

४ नंद्यावर्त, ५ कामगम, ६ प्रीतिगम, ७ मनोगम, ८ विमल, ९ सर्वतोभद्र १० इन नामवाले विमानों से और पूर्वोक्त विमानों से अतिरिक्त पूर्णभद्र सुभद्र आदि विमानों से दश देवेन्द्रों से भिन्न अन्य वैमानिक देव (ओइण्णा) पृथ्वी पर अवतरित हुए-आये, अर्थात्-इन पूर्वोक्त नामवाले विमानों द्वारा दस देवेन्द्र, तथा और भी अन्य देव अपने अपने विमानों द्वारा इस भूमण्डल पर अवतीर्ण हुए-उतरे। क्यों कि ये सब (वंदगा जिणिंद) जिनेन्द्र की वन्दना करने की कामना वाले थे। (मिग-महिस-वराह-छगल-दद्दुर-हय-गयवइ-भुयग-खग्ग-उसभक-विडिम-पागडिय-चिंध-मउडा) इनके मुकुटों के विडिमों-विस्तीर्ण भागों मे क्रमश मृग, महिष, वराह, छगल-बकरा, दर्दुर-मेढक,

વૈમાનિક દેવેન્દ્રો પોતપોતાના પાલક ૧, પુષ્પક ૨, સૌમનસ ૩, શ્રીવત્સ ૪, નંદ્યાવર્ત ૫, કામગમ ૬, પ્રીતિગમ ૭, મનોગમ ૮, વિમલ ૯, સર્વતોભદ્ર ૧૦, આ નામવાળા વિમાનોથી, તથા પૂર્વોક્ત વિમાનોથી અતિરિક્ત પૂર્ણભદ્ર સુભદ્ર આદિ વિમાનોથી દશ દેવેન્દ્રોથી ભિન્ન બીજા વૈમાનિક દેવો (ओइण्णा) પૃથ્વી પર આવ્યા અર્થાત્ આ પૂર્વોક્ત-નામવાળા વિમાનો દ્વારા તે દેવેન્દ્ર તથા બીજા પણ દેવ પોતપોતાના વિમાનો દ્વારા આ ભૂમંડલ પર ઉતરી આવ્યા કેમકે એ બધા (वंदगा जिणिंद) જિનેન્દ્રની વંદના કરવાની કામના વાળા હતા (मिग-महिस-वराह-छगल-दद्दुर-हय-गयवइ-भुयग-खग्ग-उसभक-विडिम पागडिय चिंध मउडा) તેમના મુકુટોના વિડિમો-વિસ્તીર્ણ ભાગોમા ક્રમશ મૃગ, મહિષ, વરાહ, છગલ-બકરા, દર્દુર-મેડક [દેડકો], હય-ઘોડા, ગજ-

मूलम्—तए णं चंपाए णयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु महया जणसद्दे इ वा जणवूहे इ वा

टीका—'तए णं' इत्यादि। तत =तदनन्तर—चतुर्निकायदेवानामागमनाऽनन्तर, खलु 'चपाए णयरीए' चम्पाया नगर्याम् 'सिंघाडग—तिग—चउक्क—चच्चर—चउम्मुह—महापह—पहेसु' शृङ्गाटक—त्रिक—चतुष्क—चत्वर—चतुर्मुख—महापथ—पथेषु—तत्र-शृङ्गाटक—'सिंगाडा' इति भाषाप्रसिद्ध जलज फल, तदाकार स्थान, त्रिकोणमित्यर्थ, त्रिक—मिलितत्रिमार्गस्थानम्, चतुष्क—यत्र चत्वारो मार्गा मिलिता सन्ति तत्—'चोराहा' इति भाषाप्रसिद्ध स्थानम्, चत्वर=बहुमार्गसमेलनस्थानम्, चतुर्मुख=चतुर्द्वार स्थानम्—आगन्तुकादीना विश्रामस्थानम्, महापथ—राजमार्ग, पन्था—रथ्यामात्रम्, तेषु सर्वेषु स्थानेषु यत्र 'महया जणसद्दे इ वा' महान् जनशब्द—परस्पराऽऽलापादिरूपो भवति 'इकारो' वाक्यालङ्कारार्थ, 'वा'—प्रकारार्थ, तथा 'जणवूहे इ वा' जनव्यूह—लोकसमूह, 'जण-

'तए ण चपाए णयरीए' इत्यादि।

(तए ण) चतुर्निकाय के देवों के आगमन के अनन्तर (चपाए णयरीए) चपा नगरी मे (सिंघाडग—तिय—चउक्क—चच्चर—चउम्मुह—महापह—पहेसु) शृगाटक—तीनकोनवाले स्थान पर, त्रिक—जहा पर तीन रास्ते आकर मिलते है ऐसे स्थान पर, चतुष्क—जहा पर चार मार्ग आकर मिले रहते है ऐसे चौराहे पर, चत्वर—अनेकमार्गोंका सम्मेलन जहाँ होता है ऐसे स्थान पर, चतुर्मुख—आगन्तुक जनों के विश्रामार्थ निर्मापित स्थान पर, महापथ—राजमार्ग पर, एव पथ अर्थात जहाँ से गली निकलती हो ऐसे स्थान पर, (महया जणसद्दे इ वा) महान् जन शब्द होने लगा—परस्पर मिलजुल कर लोग बातचीत करने लगे। (जणवूहे इ वा) एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से पूछने लगा, अथवा—

પૂર્વે કહેલા અસુરકુમારોની પેઠે ત્રણવાર અંજલિપૂર્વક સવિધિ વંદના કરીને પ્રભુની સેવા કરવા લાગ્યા (સૂ ૩૭)

'तए ण चपाए णयरीए' ઇત્યાદિ

(तए ण) ચતુર્નિકાયના દેવોના આગમન પછી (चपाए णयरीए) ચંપા નગરીમા (सिंघाडग तिय चउक्क चच्चर-चउम्मुह महापह पहेसु) શૃગાટક—ત્રણ કોણવાળા સ્થાન પર, ત્રિક—જ્યા ત્રણ રસ્તા આવીને મળે છે એવા સ્થાન પર, चतुष्क—જ્યા ચાર માર્ગ આવીને મળે છે એવા ચૌટા પર, चत्वर—અનેક માર્ગોનુ સમેલન જ્યા થાય છે એવા સ્થાન પર, चतुर्मुख—આવનાર માણસોના વિશ્રામ માટે મુકરર કરેલા સ્થાન પર, महापथ—રાજમાર્ગ પર, એવ પથ—અર્થાત્ જ્યાથી ગલી નીકળી હોય તેવા સ્થાનો પર, (महया जणसद्दे इ वा) મહાન્ જન—શબ્દ થવા લાગ્યા—પરસ્પર મેલામલાપ કરી લોકો વાતચીત

गोरा सेया सुभ-वण्ण-गंध-फासा उत्तमवेउव्विणो। विविह-वत्थ-गंध-मल्ल-धारी महिड्ढिया महज्जुइया जाव पंजलिउडा पज्जुवासंति ॥ सू०३७ ॥

पद्म पक्ष्म-गौरा पद्मकिञ्जल्कवद् गौरवर्णा । 'सेया' श्वेता -शुभ्रकान्ति-शालिन । 'सुभ वण्ण-गंध-फासा' शुभ-वर्ण-गन्ध-स्पर्शा । 'उत्तम-वेउव्विणो' उत्तम विकुर्विण = उत्तमविकुर्वणाकारिण 'विविह-वत्थ-गंध-मल्ल-धारी' विविध-वस्त्र-गन्ध-माल्य-धारिण 'महिड्ढिया' महर्द्धिका —महासम्पत्तिशालिन । 'महज्जुइया' महाद्युतिका —अतिशय द्युतिमन्त । 'जाव पंजलिउडा पज्जुवासंति' यावत्प्राञ्जलिपुटा पर्युपासते—यावच्छब्दात् -पूर्ववत् त्रिकृत्व , आदक्षिणप्रदक्षिण—वन्दन-नमनादय सृह्यन्ते, प्राञ्जलिपुटा =बद्धाञ्जलय पर्युपासते=समन्तादुपासना कुर्वते ॥ सू०३७ ॥

मस्तक की केशपंक्ति मुकुट की कांति से दीप्त हो रही थी। (रत्ताभा) इनकी कांति अरुण—लाल थी, (पउम—पम्ह—गोरा) पर इनका शरीर कमल के केशरों के समान गौर-वर्णवाला था। इसलिये (सेया) ये शुभ्रकांति से शोभित थे। (सुभ—गंध—वण्ण—फासा) इनके शरीर के गंध, वर्ण और स्पर्श शुभ थे। (उत्तमवेउव्विणो) ये उत्तम वैक्रिय शरीर करनेवाले थे। (विविह—वत्थ—गंध—मल्ल—धारी) अनेक प्रकार के उत्तमोत्तम वस्त्रों को ये धारण किये हुए थे। गले में इनके सुगंधित पुष्पों की माला सुशोभित हो रही थी। तथा ये (महिड्ढिया) महर्द्धिक थे। एवं (महज्जुइया) महा-द्युतिधारी थे। (जाव पंजलिउडा पज्जुवासंति) ये पूर्ववर्णित असुरकुमारों की तरह तीन बार अंजलिपूर्वक सविधि वन्दना कर प्रभु की सेवा करने लगे ॥ सू० ३७ ॥

મંડળ પ્રકાશિત થઈ રહ્યા હતા (मउड—दित्त—सिरया) મસ્તકની કેશપંક્તિ મુકુટની કાંતિથી દીપી ઉઠતી હતી (रत्ताभा) તેમની કાંતિ અરુણ—લાલ હતી (पउम—पम्ह—गोरा) પણ તેમના શરીર કમલના કેશરો જેવા ગૌર વર્ણના હતાં આથી (सेया) તેઓ શુભ્રકાંતિથી શોભતા હતા (सुभ—गंध—वण्ण—फासा) એમના શરીરના ગન્ધ, વર્ણ અને સ્પર્શ શુભ હતા (उत्तमवेउव्विणो) તેઓ ઉત્તમ વૈક્રિય—શરીર ધારણ કરવાવાળા હતા (विविह—वत्थ—गंध—मल्ल—धारी) અનેક પ્રકારના ઉત્તમોત્તમ વસ્ત્રો તેમણે ધારણ કર્યા હતા, તેમના ગળામાં સુગંધિત પુષ્પોની માળા શોભી રહી હતી તથા તેઓ (महिड्ढिया) મહર્દ્ધિક હતા એવં (महज्जुइया) મહાદ્યુતિધારી હતા (जाव पंजलिउडा पज्जुवासंति) તેઓ

આદિક ૧૦ વિમાન હોય છે મૃગ મહિષ, આદિના અનુક્રમે તેઓના મુકુટમાં ચિહ્નો હોય છે

मूलम्—तए णं चंपाए णयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु महया जणसद्दे इ वा जणवूहे इ वा

टीका—'तए ण' इत्यादि। तत =तदनन्तर–चतुर्निकायदेवानामागमनाऽनतर, खलु 'चपाए णयरीए' चम्पाया नगर्याम् 'सिंघाडग–तिग–चउक्क–चच्चर–चउम्मुह–महापह–पहेसु' शृङ्गाटक–त्रिक–चतुष्क–चत्वर–चतुर्मुख–महापथ–पथेषु–तत्र-शृङ्गाटक–'सिंघाडा' इति भाषाप्रसिद्ध जलज फल, तदाकार स्थान, त्रिकोणमित्यर्थ, त्रिक–मिलितत्रिमार्गस्थानम्, चतुष्क–यत्र चत्वारो मार्गा मिलिता सन्ति तत्–'चौराहा' इति भाषाप्रसिद्ध स्थानम्, चत्वर=बहुमार्गसमेलनस्थानम्, चतुर्मुख=चतुर्द्वार स्थानम्–आगन्तुकानां विश्रामस्थानम्, महापथ–राजमार्ग, पन्था–रथ्यामात्रम्, तेषु सर्वेषु स्थानेषु यत्र 'महया जणसद्दे इ वा' महान् जनशब्द –परस्पराऽऽलापादिरूपो भवति 'इकारो' वाक्यालङ्कारार्थ, 'वा'–प्रकारार्थ, तथा 'जणवूहे इ वा' जनव्यूह –लोकसमूह, 'जण-

'तए ण चपाए णयरीए' इत्यादि।

(तए ण) चतुर्निकाय के देवों के आगमन के अनन्तर (चपाए णयरीए) चपा नगरी मे (सिंघाडग–तिय–चउक–चच्चर–चउम्मुह–महापह–पहेसु) शृगाटक–तीनकोनवाले स्थान पर, त्रिक–जहा पर तीन रास्ते आकर मिलते है ऐसे स्थान पर, चतुष्क–जहा पर चार मार्ग आकर मिले रहते है ऐसे चौराहे पर, चत्वर–अनेकमार्गोंका सम्मेलन जहाँ होता है ऐसे स्थान पर, चतुर्मुख–आगन्तुक जनो के विश्रामार्थ निर्मापित स्थान पर, महापथ–राजमार्ग पर, एव पथ अर्थात जहाँ से गली निकलती हो ऐसे स्थान पर, (महया जणसद्दे इ वा) महान् जन शब्द होने लगा–परस्पर मिलजुल कर लोग बातचात करने लगे। (जणवूहे इ वा) एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से पूछने लगा, अथवा–

પૂર્વે કહેલા અસુરકુમારોની પેઠે ત્રણવાર અજલિપૂર્વક સવિધિ વદના કરીને પ્રભુની સેવા કરવા લાગ્યા (સૂ ૩૭)

'तए णं चपाए णयरीए' ઈત્યાદિ

(तए ण) ચતુર્નિકાયના દેવોના આગમન પછી (चपाए णयरीए) ચપા નગરીમા (सिंघाडग तिय चउक्क चच्चर-चउम्मुह महापह पहेसु) શૃગાટક–ત્રણ કોણવાળા સ્થાન પર, ત્રિક–જ્યા ત્રણ રસ્તા આવીને મળે છે એવા સ્થાન પર, ચતુષ્ક–જ્યા ચાર માર્ગ આવીને મળે છે એવા ચૌટા પર, ચત્વર–અનેક માર્ગોનુ સમેલન જ્યા થાય છે એવા સ્થાન પર, ચતુર્મુખ–આવનાર માણસોના વિશ્રામ માટે મુકરર કરેલા સ્થાન પર, મહાપથ–રાજમાર્ગ પર, એવ પથ–અર્થાત્ જ્યાથી ગલી નીકળી હોય તેવા સ્થાનો પર, (महया जणसद्दे इ वा) મહાન્ જન–શબ્દ થવા લાગ્યા–પરસ્પર મેલામલાપ કરી લોકો વાતચીત

गोरा सेया सुभ-वण्ण-गंध-फासा उत्तमवेउव्विणो विविह-वत्थ-गंध-मल्ल-धारी महिड्ढिया महज्जुइया जाव पंजलिउडा पज्जुवासंति ॥ सू०३७ ॥

पद्म पक्ष्म-गौरा -पद्मकिञ्जल्कवद् गौरवर्णा । 'सेया' श्वेता -शुभ्रकान्ति-शालिन । 'सुभ-वण्ण-गंध-फासा' शुभ-वर्ण-गन्ध-स्पर्शा । 'उत्तम-वेउव्विणो' उत्तम निर्विग = उत्तमनिकुर्वणाकारिण 'विविह-वत्थ-गंध-मल्ल-धारी' विविध-वस्त्र-गन्ध-माल्य धारिण 'महिड्ढिया' महर्द्धिका —महासम्पत्तिशालिन । 'महज्जुइया' महाद्युतिका —अतिशय द्युतिमन्त । 'जाव पंजलिउडा पज्जुवासंति' यावत्प्राञ्जलिपुटा पर्युपासते—यावच्छब्दात् -पूर्ववत् त्रिकृत्व , आदक्षिणप्रदक्षिण—वन्दन-नमनादय सूच्यन्ते, प्राञ्जलिपुटा =बद्धाऽञ्जलय पर्युपासते=समन्तादुपासना कुर्वते ॥ सू०३७ ॥

मस्तक की केशपक्ति मुकुट की काति से दीप्त हो रही थी। (**रत्ताभा**) इनकी काति अरुण—लाल थी, (**पउम—पम्ह—गोरा**) पर इनका शरीर कमल के केशरों के समान गौर-वर्णवाला था। इसलिये (**सेया**) ये शुभ्रकाति से शोभित थे। (**सुभ—गंध—वण्ण—फासा**) इनके शरीर के गध, वर्ण और स्पर्श शुभ थे। (**उत्तमवेउव्विणो**) ये उत्तम वैक्रिय शरीर करनेवाले थे। (**विविह—वत्थ—गंध—मल्ल—धारी**) अनेक प्रकार के उत्तमोत्तम वस्त्रों को ये धारण किये हुए थे। गले मे इनके सुगधित पुष्पों की माला सुशोभित हो रही थी। तथा ये (**महिड्ढिया**) महर्द्धिक थे। एव (**महज्जुइया**) महाद्युतिधारी थे। (**जाव पंजलिउडा पज्जुवासंति**) ये पूर्ववर्णित असुरकुमारों की तरह तीन बार अजलिपूर्वक सविधि वन्दना कर प्रभु की सेवा करने लगे ॥ सू० ३७ ॥

મ કળ પ્રકાશિત થઈ રહ્યા હતા (नउड-दित्त-सिरया) મસ્તકની કેશપક્તિ મુકુટની કાતિથી દીપી ઉઠતી હતી (रत्ताभा) તેમની કાતિ અરુણ—લાલ હતી (पउम-पम्ह-गोरा) પણ તેમના શરીર કમલના કેશરો જેવા ગૌર વર્ણના હતા. આથી (सेया) તેઓ શુભ્રકાતિથી શોભતા હતા (सुभ-गंध-वण्ण-फासा) એમના શરીરના ગન્ધ, વર્ણ અને સ્પર્શ શુભ હતા (उत्तमवेउव्विणो) તેઓ ઉત્તમ વૈક્રિય-શરીર ધારણ કરવાવાળા હતા (विविह-वत्थ-गंध-मल्ल-धारी) અનેક પ્રકારના ઉત્તમોત્તમ વસ્ત્રો તેમણે ધારણ કર્યા હતા, તેમના ગળામા સુગધિત પુષ્પોની માળા શોભી રહી હતી તથા તેઓ (महिड्ढिया) મહર્દ્ધિક હતા એવ (महज्जुइया) મહાદ્યુતિધારી હતા (जाव पंजलिउडा पज्जुवासंति) તેઓ

આદિક ૧૦ વિમાન હોય છે મૃગ મહિષ, આદિના અનુક્રમે તેઓના મુકુટમા ચિહ્નો હોય છે

समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सयंसंबुद्धे पुरिसुत्तमे जाव संपाविउकामे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते, इह समोसढे, इहेव चंपाए णयरीए बहिं

कि कथयतीति सूत्रकार आह–'एवं खलु देवाणुप्पिया' इत्यादि। एवं खलु भो देवानुप्रिया! श्रमणो भगवान् महावीरः, 'आइगरे तित्थयरे सयसबुद्धे' आदिकरस्तीर्थकरः स्वयमबुद्धः, 'पुरिसुत्तमे' पुरुषोत्तमः, 'जाव संपाविउकामे' यावत्-सम्प्राप्तुकामः–सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तुकाम इति भावः। 'पुव्वाणुपुव्विं' पूर्वानुपूर्वी–तीर्थंकरपरम्परागतमर्यादाम् 'चरमाणे' चरन्–आचरन्, 'गामाणुगामं दूइज्जमाणे' ग्रामानुग्रामं द्रवन्–प्रत्येकं ग्रामं गच्छन्–क्रमप्राप्तग्रामं व्रजन्, 'इहमागए' इहाऽऽगतः, इह–चम्पायामागत इति भावः, 'इह संपत्ते' इह सम्प्राप्तः, इह पूर्णभद्रे

कोई बिना पूछे ही दूसरे से इस प्रकार कहने लगे, (एवं परूवेइ) कोई कोई पूछे जाने पर दूसरे से इस प्रकार कहने लगे। क्या कहने लगे? इसको सूत्रकार कहते हैं– (एवं खलु देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रियो! (समणे भगवं महावीरे) श्रमण भगवान् महावीर कि, (आइगरे तित्थगरे सयसंबुद्धे पुरिसुत्तमे जाव संपाविउकामे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे) जो अपने शासन की अपेक्षा से धर्म के आदि कारक हैं, चतुर्विध संघ के संस्थापक हैं, स्वयम्बुद्ध हैं, एवं पुरुषों में उत्तम हैं, यावत् मोक्ष प्राप्त करने के कामी हैं, वे अन्य तीर्थंकरों की परम्परा से आगत मर्यादा का संरक्षण करते हुए एवं ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए आज यहाँ पधारे हुए हैं, यहां संप्राप्त हुए हैं, साधुसमाचारी के अनुसार यहाँ समवसृत

वगर ज बीजाथी आ प्रकारे कहेवा लाग्या, (एवं परूवेइ) कोई कोइ पूछवा-पर बीजाओथी कहेवा लाग्या शु कहेवा लाग्या? आ वातने सूत्रकार प्रकट करे छे–(एवं खलु देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रियो! (समणे भगवं महावीरे) श्रमण भगवान महावीर (आइगरे तित्थगरे सयसंबुद्धे पुरिसुत्तमे जाव संपाविउकामे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे) जेओ पोतानी शासननी अपेक्षाथी धर्मना आदिकारक छे, चतुर्विध संघना संस्थापक छे, स्वयंसंबुद्ध छे तेमज पुरुषोमा उत्तम छे, यावत् मोक्षप्राप्त करवानी कामनावाळा छे, तेओ अन्य तीर्थंकरोनी परंपराथी चालती मर्यादानुं संरक्षण करता करता, एवं ग्रामानुग्राम विचरता विचरता आजे अहीं पधार्या छे अहीं संप्राप्त थया छे, साधुसमाचारीने अनुसार अहीं

जणवोले इ वा जणकलकले इ वा जणुम्मी इ वा जणुक्कलिया इ वा जणसण्णिवाए इ वा; बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ; एवं खलु देवाणुप्पिया!

वोले इ वा' जनानामव्यक्तो ध्वनिर्वा, 'जणकलकले इ वा' जनकलकलो–जनाना व्यक्तवर्णात्मको नादः 'जणुम्मी इ वा' जनोर्मिः=जनसमाधः–तरङ्गवज्जनानामुपर्युपरि समागमनम्, 'जणुक्कलिया इ वा' जनोत्कलिका वा–जनाना लघुतर समुदाय, 'जणसण्णिवाए इ वा' जनसन्निपात –जनाना सघर्परूपेण संमिलन भवति, तत्र–'बहुजणो' बहुजन 'अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ' अन्योऽन्यमेवमाचष्ट–एकोऽपर वदति सामान्यरूपेण, 'एव भासइ' एव भापते–वक्ष्यमाणप्रकारेण विशेषत कथयति 'एव पण्णवेइ' प्रज्ञापयति–अपृष्ट सन् कथयति 'एव परूवेइ' एव प्ररूपयति=पृष्ट सन् कथयति,

मनुष्यों का एकत्र जमघट होने लगा। (जणवोले इ वा) मनुष्यों की अव्यक्तध्वनि होने लगी। (जणकलकले इ वा) प्रगट रूप में कहीं २ मनुष्यों का कलकल अर्थात स्पष्ट ध्वनि सुनाई देने लगी। (जणुम्मी इ वा) समुद्र के तरग समान ऊपर के ऊपर लोगों के झुड आने लगे। कहीं २ पर (जणुक्कलिया इ वा) सामान्य रूप से जनसमुदाय एकत्रित हुआ। (जणसण्णिवाए इ वा) कहीं २ पर मनुष्यों का इतना अधिक सघट्ट हुआ कि वे सब परस्पर मे एक दूसरे से सघृष्ट होने लगे। इन सब मे (बहुजणो) अनेक मनुष्य (अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ) परस्पर मे एक दूसरे से इस प्रकार सामान्यरूप मे कहने लगे, (एव भासइ) कोई २ इस प्रकार विशेषरूप से कहने लगे, (एव पण्णवेइ) कोई

કરવા લાગ્યા (जणवूहे इ वा) એક માણસ બીજાને પૂછવા લાગ્યો–અથવા માણસોનું ટોળું એકત્ર થવા લાગ્યું (जणबोले इ वा) લોકોની અવ્યક્ત ધ્વનિ થવા લાગી (जणकलकले इ वा) પ્રગટરૂપે ક્યાંક ક્યાંક મનુષ્યોની કલકલ અર્થાત સ્પષ્ટ ધ્વનિ સભળાવા લાગી (जणुम्मी इ वा) સમુદ્રના મોજાની પેઠે ઉપર-ઉપર લોકોના ટોળા આવવા લાગ્યા (जणुक्कलिया इ वा) સામાન્યરૂપે જન સમુદાય એકત્રિત થયો (जणसण्णिवाए इ वा) કોઇ કોઈ સ્થાને મનુષ્યો એટલા એકઠા થયા કે તે બધા પરસ્પરમા એક બીજાની સાથે અથડાવા લાગ્યા આ બધામા (बहुजणो) અનેક મનુષ્ય (अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ) પરસ્પરમા એક બીજાને આ પ્રકારે સામાન્યરૂપમા કહેવા લાગ્યા (एव भासइ) કોઇ કોઇ આ પ્રકારે વિશેષરૂપમા કહેવા લાગ્યા, (एव पण्णवेइ) કોઈ કોઈ પૂછ્યા

पुण अभिगमण-वंदण-णमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्सवि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग ! पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामो णं

आयुष्मन् ! तेषामभिगमनेन, वन्दनेन=स्तवेन, नमस्यनेन=नमस्कारेण, प्रतिप्रच्छनेन=प्रतिप्रश्नेन, पर्युपासनया=सेवनया पुन यत् फल भवति तत् किं वक्तव्यम् , अकथितमपि सुबुद्ध भवतीनि भाव । 'एगस्स वि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए' एकस्यापि आचार्यस्स धार्मिकस्य सुवचनस्य श्रवणतया-एकस्याऽपि आचार्यस्य-आचार्यप्रोक्तस्य, धार्मिकस्य=धर्मप्रयोजनस्य, अत एव सुवचनस्य=सदुपदेशस्य श्रवणतया=श्रवणेन महाफल भवति, 'किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए' किमङ्ग ! पुनर्विपुलस्यार्थस्य ग्रहणतया-यावदुपदिष्टस्य अर्थस्य ग्रहणेन किं वक्तव्यम्, यावप्रोक्तार्थग्रहणेन सर्वथा कृतार्थो भवतीति भाव । 'त' तत्-तस्मात् खलु 'देवाणुप्पिया' हे देवानुप्रिया । 'गच्छामो' गच्छाम =तदन्तिक व्रजाम ,

वासणयाए) हे अग-आयुष्मन ! उनके समीप जाने से, उनको वन्दना करने से-उनकी स्तुति करने से, उन्हे नमन करने से, प्रश्न पूछने से और उनकी पर्युपासना करने से जीवों को किस अनुपम फल की प्राप्ति न होती होगी, अर्थात् सब कुछ फल की प्राप्ति होगी, इसमें संदेह के लिये अल्पमात्र भी स्थान नहीं है। **(एगस्सवि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए)** जब तथारूप आचार्य अरिहन्त भगवन्त से कहे हुए धार्मिक सदुपदेशरूप एक भी वचन के सुनने से जीव महाफल का भागी होता है, तब हे आयुष्मन् ! उनके द्वारा कथित विपुल अर्थों के ग्रहण करने से जो फल होता है उसके विषय मे तो कहना ही क्या ? **(त गच्छामो ण देवा-**

જવાથી, તેમને વંદના કરવાથી, તેમની સ્તુતિ કરવાથી, તેમને નમસ્કાર કરવાથી, તેમને પ્રશ્ન પૂછવાથી તથા તેમની પર્યુપાસના કરવાથી જીવોને કયા અનુપમ ફલની પ્રાપ્તિ ન થઈ શકે ? અર્થાત્ સર્વ ફલની પ્રાપ્તિ થશે એમા સંદેહ માટે અલ્પમાત્ર પણ સ્થાન નથી (एगस्स वि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए) જ્યારે તથારૂપ અરિહન્ત ભગવન્ત તરફથી કહેવામા આવતા ધાર્મિક સદુપદેશરૂપ એક પણ વચનને સાંભળવાથી જીવ મહાફલના ભાગી થાય છે ત્યારે હે આયુષ્મન્ ! તેમના દ્વારા કહેવામા આવતા વિપુલ અર્થોનુ ગ્રહણ કરવાથી જે ફલ થાય છે તે વિષયમા તો કહેવાનુ જ શુ ? (त गच्छामो ण देवाणुप्पिया) માટે હે

पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तं महप्फलं खलु भो देवाणुप्पिया! तहारूवाणं अरहंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग

संप्राप्त इति भाव, 'इह समोसढे' इह समवसृत, साधुकल्पाश्रयमिहे समवसृत इति भाव, तदेवाह–'इहेव चंपाए णयरीए' इत्यादि, इहैव चम्पाया नगर्या, 'बहिं' बहि–नगरीभवे प्रदेशे, 'पुण्णभद्दे चेइए' पूर्णभद्रे चैत्ये–पूर्णभद्रनामक उद्याने, 'अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता' यथाप्रतिरूपमवग्रहमवगृह्य–पथमानुकूलमावासस्थान याचित्वा, 'संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ' संयमेन तपसाऽऽत्मान भावयन् विहरति।

'तं महप्फलं खलु भो देवाणुप्पिया!' तन्महत्फल खलु भो देवानुप्रिया! 'तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोत्तस्सवि सवणयाए' तथारूपाणामर्हता भगवता नामगोत्रयोरपि श्रवणतया–तादृशाना सर्वातिशयवता भगवता तीर्थंकराणा नामगोत्रश्रवणेनापि महत्फल भवति, 'किमंग पुण अभिगमण–वंदण–णमंसण–पडिपुच्छण–पज्जुवासणयाए' किमङ्ग पुनरभिगमन–वन्दन–नमस्यन–प्रतिप्रच्छन–पर्युपासनया–हे अङ्ग!–हे

हुए हैं, और (इहेव चंपाए णयरीए बहिं पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) इस चम्पा नगरी के बाहर पूर्णभद्र उद्यान में ठहरने के लिये वनपाल की आज्ञा लेकर संयम एव तप से अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचर रहे है। इसलिये (भो देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रिय! जब (तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए) तथारूप सर्वातिशय-सम्पन्न भगवान् तीर्थंकरों के नाम एवं गोत्र के श्रवण से भी (महप्फल) जीवों को महाफल प्राप्त होता है, तब (किमंग! पुण अभिगमण–वंदण–णमंसण–पडिपुच्छण–पज्जु-

સમવસત થયા છે તથા તેઓ (इहेव चंपाणयरीए बहिं पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) આ ચંપાનગરીની બહાર પૂર્ણભદ્ર ઉદ્યાનમાં ઉતરવા માટે વનપાલની આજ્ઞા લઈને સંયમ તેમજ તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા વિચરે છે આ માટે (भो देवाणुप्पिया) હે દેવાનુપ્રિય! જ્યારે (तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्सवि सवणयाए) તથારૂપ સર્વાતિશયસંપન્ન ભગવાન તીર્થંકરોના નામ તેમજ ગોત્રના શ્રવણથી પણ (महप्फलं) જીવોને મહાફલ પ્રાપ્ત થાય છે, ત્યારે (किमंग पुण अभिगमण-वंदण–णमंसण–पडिपुच्छण–पज्जुवासणयाए) હે અંગ–આયુષ્મન્! તેમના સમીપ

आणुगामियत्ताए भविस्सइ—त्ति कट्टु वहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता, एवं दुपडोयारेणं राइण्णा खत्तिया माहणा भडा जोहा

हिताय=जीवनादिनिर्वाहाय, 'सुहाए' सुखाय=भोगसम्पाद्यानन्दाय, 'खमाए' क्षमाय=समुचितसुखसामर्थ्याय, 'णिस्सेयसाए' निःश्रेयसाय=भाग्योदयाय, 'आणुगामियत्ताए' आनुगामिकतायै=अनुगमनशीलत्वेन भवपरम्पराऽनुबन्धिसुखाय भविष्यति। 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा इति=एवं कृत्वा=आख्यानं भाषणं प्रज्ञापनां प्ररूपणां च अन्योऽन्यं कृत्वा 'वहवे' बहवः, 'उग्गा उग्गपुत्ता' उग्रा उग्रपुत्राः, तत्र-उग्राः—आदिदेवावस्थापिताः रक्षकवंशजाः, उग्रपुत्राः—त एव कुमारावस्थासम्पन्नाः, 'भोगा भोगपुत्ता' भोगाः—भोगपुत्राः—भोगाः=आदिदेवावस्थापिताः गुरुवंशजाः, भोगपुत्राः—त एव कुमारावस्थासम्पन्नाः, 'एवं दुपडोयारेण' एवं द्विपदोच्चारणेन—ते च ■तत्पुत्राश्चेति द्विवारोच्चारणेन 'राइण्णा' राजन्याः—भगवद्वयस्यवंशजाः, राजन्यपुत्राः—राज-

आनन्द प्राप्ति के लिये (खमाए) समुचित सुख देने के लिये (णिस्सेयसाए) निःश्रेयस अर्थात् भाग्योदय के लिये, तथा (आणुगामियत्ताए) जन्म-जन्मान्तर मे सुख देने के लिये (भविस्सइ) होगा, (त्तिकट्टु) इस प्रकार विचार कर (वहवे) बहुत से (उग्गा) भगवान् आदिनाथ प्रभु द्वारा स्थापित रक्षकवंश मे उत्पन्न 'उग्र' कहलाते हैं, ऐसे उग्रवंशीय लोग, और (उग्गपुत्ता) उन उग्रवंशीय लोगों के पुत्र, तथा बहुत से (भोगा) भगवान आदिनाथ प्रभु द्वारा स्थापित गुरुवंश में उत्पन्न 'भोग' कहलाते है, ऐसे भोगवंशीय लोग और (भोगपुत्ता) उन भोगवंशीय लोगों के पुत्र, (एव दुपडोयारेण) इसी तरह आगे के पदों का भी दुबारा उच्चारण करना चाहिये, जैसे—'राइण्णा राइण्णपुत्ता' इत्यादि। तथा—बहुत से (राइण्णा) राजन्य—अर्थात् भगवान आदिनाथ के मित्रों के वंशज एवं उनके पुत्र, (खत्तिया)

माटे, (सुहाए) सुख माटे अर्थात् भोगजनित आनंद प्राप्ति माटे, (खमाए) समुचित सुख देवा माटे (णिस्सेयसाए) निश्रेयस् अर्थात् भाग्योदयने माटे, तथा (आणुगामियत्ताए) જન્મ-જન્માતરમા સુખ દેવા માટે (भविस्सइ) थशे. (त्ति कट्टु) આ પ્રકારે વિચાર કરીને (वहवे) ઘણા લોકો (उग्गा) ભગવાન આદિનાથ પ્રભુ દ્વારા સ્થાપિત રક્ષકવશમા ઉત્પન્ન 'ઉગ્ર' કહેવાય છે, એવા ઉગ્રવશીય લોક, તથા (उग्गपुत्ता) તે ઉગ્રવશીય લોકોના પુત્ર, (भोगा) ભગવાન આદિનાથ પ્રભુ દ્વારા સ્થાપિત ગુરુવશમા ઉત્પન્ન 'ભોગ' કહેવાય છે, એવા ભોગવશી લોક, તથા (भोगपुत्ता) તે ભોગવશી લોકોના પુત્ર, (एव दुपडोयारेण) એ રીતે આગળના પદોના પણ બીજીવાર ઉચ્ચારણ કરવુ જોઇએ, જેમકે-"राइण्णा, राइण्णपुत्ता" ઇત્યાદિ, તથા ઘણા (राइण्णा) રાજન્ય-અર્થાત્ ભગવાન આદિનાથના મિત્રોના વશજ એવ તેમના પુત્ર, (खत्तिया) ક્ષત્રિય

देवाणुप्पिया! समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासामो। एयं णे इहभवे पेच्चभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए

'समणं भगवं महावीरं वंदामो' श्रमण भगवन्त महावीरं वन्दामहे—स्तुमः गुणगानेन, 'णमंसामो' नमस्कुर्मः पञ्चाङ्गनमनेन, 'सक्कारेमो' सत्कुर्मः अभ्युत्थानादिना, 'सम्माणेमो' सम्मानयामः—परमादरेण—भक्तिबहुमानेनेत्यर्थः, 'कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासामो' कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्यं विनयेन पर्युपास्महे—कल्याणं=कल्याणप्राप्तिकारणम्, मङ्गलं=दुरितदूरीकरणकारणम्, दैवतं=देवोचितप्रभावोपचितम्, चैत्यं=केवलज्ञानयुक्तं—चित्तप्रसादहेतुं वा एतादृशं भगवन्तं पर्युपास्महे=विनयेन सेवामहे, 'एयं णे' एतन्नः—एतद्=भगवद्वन्दनादि, नः—अस्माकम्, 'इहभवे पेच्चभवे य' इहभवे प्रेत्यभवे—परभवे च 'हियाए'

णुप्पिया) इसलिये हे देवानुप्रिय! उनके पास अपने चलें, वहां जाकर (समणं भगवं महावीरं) श्रमण भगवान् महावीर को (वंदामो) वन्दना करें अर्थात् उनका गुणगान करें। (णमंसामो) पचांग—नमन—पूर्वक नमस्कार करें। (सक्कारेमो) अभ्युत्थानादिक क्रियाओं द्वारा उनका सत्कार करें। (सम्माणेमो) भक्ति बहुमान के साथ उनका सम्मान करें। (कल्लाणं) कल्याण प्राप्ति के कारणभूत, (मंगलं) पापों को दूर करने के लिये निमित्तरूप, (देवयं) देवाधिदेव के प्रभाव से युक्त, (चेइयं) केवलज्ञान युक्त, ऐसे श्री भगवान् महावीर स्वामी को (विणएणं) विनयपूर्वक (पज्जुवासामो) सेवा करें। (एयं णे इहभवे पेच्चभवे य) यह भगवान का वन्दन और नमस्कार आदि इस भव में और परभव में (हियाए) आजीवन कल्याण के लिये (सुहाए) सुख के लिये अर्थात् भोगजनित

દેવાનુપ્રિય! તેમની પાસે આપણે જઈએ, ત્યાં જઈને (समणं भगवं महावीर) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને (वंदामो) વંદના કરીએ અર્થાત્ તેમના ગુણગાન કરીએ (णमंसामो) પંચાંગ—નમનપૂર્વક નમસ્કાર કરીએ (सक्कारेमो) અભ્યુત્થાન આદિ ક્રિયાઓ દ્વારા તેમનો સત્કાર કરીએ (सम्माणेमो) ભક્તિ બહુમાન સાથે તેમનું સન્માન કરીએ (कल्लाणं) કલ્યાણ પ્રાપ્તિના કારણભૂત, (मंगलं) પાપોનો નાશ કરવા માટે નિમિત્તરૂપ, (देवयं) દેવાધિદેવના પ્રભાવથી યુક્ત, (चेइयं) કેવલજ્ઞાન યુક્ત, એવા શ્રી ભગવાન મહાવીર સ્વામીની (विणएणं) વિનયપૂર્વક (पज्जुवासामो) સેવા કરીએ (एयं णे इहभवे पेच्चभवे य) આ ભગવાનને વંદન તથા નમસ્કાર આદિ આ ભવમાં તથા પરભવમાં (हियाए) આજીવન કલ્યાણ

यद्वा-महुकुटुम्बपोषका, इभ्या=इभो हस्ती, तत्प्रमाण द्रव्यमर्हन्तीति तथा, ते च जघन्यमध्यमोत्कृष्टभेदात् त्रिप्रकारास्तत्र हस्तिपरिमितमणिमुक्ताप्रवालसुवर्णरजतादिद्रव्यराशिस्वामिनो जघन्या, हस्तिपरिमितवज्रहीरकमणिमाणिक्यराशिस्वामिनो मध्यमा, हस्तिपरिमितकेवलवज्रहीरकराशिस्वामिन उत्कृष्टा, हस्तिप्रमाणोच्छ्रितधनराशिस्वामिन इभ्या इत्यर्थः। श्रेष्ठिन = लक्ष्मीकृपाकटाक्षप्रत्यक्षलक्ष्यमाणद्रविणलक्षलक्षणविलक्षणहिरण्यपट्टसमलङ्कृतमूर्धानो नगरप्रधानव्यवहर्तार, सेनापतय =चतुरङ्गसैन्यनायका, सार्थवाहा =गणिम-धरिम-मेय-

हस्ति प्रमाण द्रव्यसम्पन्न धनिक जन, ये जघन्य, मध्यम एव उत्कृष्ट के भेद से ३ प्रकार के होते है, इनमें जिनके पास हस्तिप्रमाणपरिमित मणि, मुक्ता, प्रवाल, सुवर्ण एव रजत आदि द्रव्य की राशि होती है वे जघन्य इभ्य है, जिनके पास हस्तिप्रमाण परिमित वज्र हीर, मणि, माणिक्य की राशि होती है वे मध्यम इभ्य है, परन्तु जिनके पास केवल हस्तिप्रमाण-परिमित वज्र हीरा की राशि होती है वे उत्कृष्ट इभ्य है। श्रेष्ठी-लक्ष्मी की जिन पर पूरी २ कृपा हो, उस कृपाकोरके कारण जिनके लाखो के खजाने हों, तथा जिनके शिर पर उन्हीं को सूचित करने वाला चान्दी का विलक्षण पट्ट शोभायमान हो रहा हो, जो नगर के प्रधान व्यापारी हों, उन्हें श्रेष्ठी कहते है, ऐसे श्रेष्ठी जन, सेनापति=चतुरङ्ग सेना के नायक, सार्थवाह-जो **गणिम**=गिन कर खरीदने-वेचने योग्य नारियल, सुपारी, केला आदि वस्तुओं को, **धरिम**=तौलकर खरीदने-वेचने योग्य धान, जौ, नमक, शक्कर आदि वस्तुओं को, **मेय**=सरावा, आदि छोटे वर्तन आदि से माप कर खरीदने वेचने योग्य दूध,

વાળા, ઇભ્ય-હસ્તિ-પ્રમાણ-દ્રવ્ય-સંપન્ન ધનિક જનો, આ જઘન્ય, મધ્યમ તેમજ ઉત્કૃષ્ટના ભેદથી ૩ પ્રકારના હોય છે તેમાં જેમની પાસે હસ્તિપ્રમાણ-પરિમિત મણિ, મુક્તા, પ્રવાલ, સુવર્ણ તેમજ ચાંદી આદિ દ્રવ્યના ઢગલા હોય તે જઘન્ય ઇભ્ય છે, જેની પાસે હસ્તિપ્રમાણપરિમિત વજ્ર, હીરા, મણિ, માણેકના ઢગલા હોય તે મધ્યમ ઇભ્ય છે પરંતુ જેમની પાસે કેવલ હસ્તિ પ્રમાણપરિમિત વજ્ર હીરાના ઢગલા હોય તે ઉત્કૃષ્ટ ઇભ્ય જન છે **શ્રેષ્ઠી**-લક્ષ્મીની જેમના પર પુરેપુરી કૃપા હોય, તે કૃપાના કારણે જેના લાખોના ખજાના હોય તથા જેમના માથા ઉપર તેનું સૂચન કરવાવાળા ચાંદીના વિલક્ષણ પટ્ટ (પાઘડી) શોભી રહી હોય, જે નગરના મુખ્ય વ્યાપારી હોય તેમને શ્રેષ્ઠી કહેવાય છે એવા શ્રેષ્ઠીજન, **સેનાપતિ**-ચતુરંગ સેનાના નાયક, **સાર્થવાહ**-જે ગણિમ=ગણતરી કરીને ખરીદાય તથા વેચાય તેને યોગ્ય નારિયલ, સોપારી, કેળા આદિ વસ્તુઓ, ધરિમ=તોળીને ખરીદવા, વેચવા યોગ્ય ધાન, જવ, મીઠું, સાકર આદિ વસ્તુઓ, મેય=પાવળું કે રકેબી એવા નાના વાસણથી

पसत्थारो मल्लई लेच्छई लेच्छइपुत्ता अण्णे य बहवे राई-सर-
तलवर-माडंविय-कोडुंविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-

न्यकुमाराश्च, 'खत्तिया' क्षत्रिया, क्षत्रियकुमाराश्च, 'माहणा' ब्राह्मणा, ब्राह्मणकुमाराश्च, 'भडा' भटा -भटकुमाराश्च, 'जोहा' योधा -युद्धव्यवसायवन्त, तेषां कुमाराश्च, 'पसत्थारो' प्रशास्तार - धर्मशास्त्रपाठका, तेषां पुत्राश्च, 'मल्लई' मल्लकिन =विशिष्टक्षत्रियजातीया, तेषां पुत्राश्च, 'लेच्छई' लेच्छकिन -क्षत्रियजातिभेदवन्त, 'लेच्छइपुत्ता' लेच्छकिपुत्रा, 'अण्णे य बहवे' अन्ये च बहव 'राई-सर-तलवर-माडंविय-कोडुंविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थ-वाह-प्पभिइओ' राजे-श्वर-तलवर-माडम्बिक-कौटुम्बिके-भ्य-श्रेष्ठि-सेनापति-सार्थवाह-प्रभृतय, तत्र-राजानो=माण्डलिका नरपतय, ईश्वरा =ऐश्वर्यसम्पन्ना युवराजा, तलवरा =तुष्ट-भूपालदत्तपट्टबन्धपरिभूषिता राजकल्पा, माडम्बिका =ग्रामपञ्चशतीपतय, यद्वा-सार्धक्रोशद्वय-परिमितप्रान्तरैर्विच्छिद्य विच्छिद्य स्थितानां ग्रामाणामधिपतय, कौटुम्बिका =कुटुम्बभरणे तत्परा,

क्षत्रिय और उनके पुत्र, (माहणा) ब्राह्मण और ब्राह्मणपुत्र, (भडा) भट और भटपुत्र, (जोहा) योधा-युद्ध के व्यवसायवाले व्यक्ति और उनके पुत्र, (पसत्थारो) धर्मशास्त्रपाठक और उनके पुत्र, (मल्लई) - मल्लकी-मल्लकि जाति के क्षत्रिय और उनके पुत्र, (लेच्छई) लेच्छकी-लेच्छकी जाति के क्षत्रिय और (लेच्छइपुत्ता) लेच्छकियों के पुत्र, तथा और भी बहुत से (राई-सर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थ-वाह-प्पभिइओ) राजा-माडलिक नृपति, ईश्वर-ऐश्वर्यसम्पन्न युवराज, तलवर-सतुष्ट हुए नृपतिद्वारा प्रदत्त पट्टबध से परिभूषित राजा जैसे विशिष्ट व्यक्ति, माडविक-पाचसौ गाव के अधिपति, अथवा ढाई २ कोस पर बसे हुए ग्रामों के स्वामी, कौटुम्बिक-अपने कुटु-म्ब का भरण-पोषण करने वाले, अथवा-बहुत कुटुम्ब का पालनपोषण करने वाले, इभ्य

તથા તેમના પુત્ર, (माहणा) બ્રાહ્મણ તથા બ્રાહ્મણપુત્ર, (भडा) ભટ તથા ભટ-પુત્ર, (जोहा) યોદ્ધા-યુદ્ધમા વ્યવસાયવાળા લોક તથા તેમના પુત્ર, (पसत्थारो) ધર્મશાસ્ત્રપાઠક તથા તેમના પુત્ર, (मल्लई) મલ્લ-મલ્લજાતિના ક્ષત્રિય અને તેના પુત્ર, (लेच्छई) લેચ્છકી-લેચ્છકી જાતિના ક્ષત્રિય તથા (लेच्छइपुत्ता) લેચ્છકિઓના પુત્ર તથા બીજા પણ ઘણા (राई-सर-तलवर-माडविय-कोडुविय इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-प्पभिइओ) **રાજા**-માડલિક નૃપતિ, **ઈશ્વર**-ઐશ્વર્ય-સપન્ન યુવરાજ, **તલવર**-સતોષ પામેલા નૃપતિ દ્વારા પ્રદત્ત પટ્ટબધથી પરિભૂષિત રાજા જેવા વિશિષ્ટ લોક, **માડબિક**-પાચસો ગામના અધિપતિ, અથવા અઢી ૨ કોસ પર વસેલા ગામોના સ્વામી, **કૌટુબિક**-પોતાના કુટુબના ભરણ-પોષણ કરવાવાળા, અથવા ઘણા કુટુબના પાલન પોષણ કરવા

गइया अट्ठविणिच्छयहेउ अस्सुयाइं सुणेस्सामो सुयाइं निस्सं-किायाइं करिस्सामो, अप्पेगइया अट्ठाइं हेऊइं कारणाइं वागर-णाइं पुच्छिस्सामो, अप्पेगइया सव्वओ समंता मुंडे भवित्ता

अपूर्वदृष्टदर्शनार्थमित्यर्थः । 'अप्पेगइया' अप्येकके-केचित् 'अट्ठ-विणिच्छय-हेउ' अर्थविनिश्चयहेतु-अर्थाना=जीवाजीवादिभावाना यत् स्वरूपं तस्य विनिश्चयो हेतुर्यस्मिंस्तत्, जीवाजीवादिस्वरूपविनिश्चयार्थमित्यर्थः, 'अस्सुयाइं' अश्रुतानि आगमरहस्यानि, 'सुणेस्सामो' श्रोष्याम इत्याशया, 'सुयाइं निस्संकियाइं करिस्सामो' श्रुतानि निःशङ्कितानि करिष्याम इत्याशया, 'अप्पेगइया' अप्येकके-केचित्-'अट्ठाइं हेऊइं कारणाइं वागरणाइं' अर्थान् हेतून् कारणानि व्याकरणानि, तत्र-अर्थान्-जीवाजीवादिनवतत्त्वरूपान् भावान्, हेतून् – जीवादिस्वरूपसाधकान्, कारणानि=अन्यथाऽनुपपत्तिमात्ररूपाणि व्याकरणानि=परप्रष्टार्थोत्तररूपाणि 'पुच्छिस्सामो' प्रक्ष्यामः, 'अप्पेगइया' अप्येकके, 'सव्वओ समता मुंडे भवित्ता' सर्वतः समन्तात् मुण्डा भूत्वा-सर्वतः सावद्यव्यापार-

(अप्पेगइया) कितनेक (अट्ठविणिच्छयहेउं) जीव अजीव-आदि पदार्थों के स्वरूप को निश्चय करने के लिये, तथा (अस्सुयाइं सुणेस्सामो) आगम के रहस्य जो पहिले कभी सुनने में नहीं आये है उन्हें सुनेंगे, और (सुयाइं निस्संकियाइं करिस्सामो) जो आगम के रहस्य सुने है उन्हें शंका रहित करेंगे इस प्रकार की भावना से, (अप्पेगइया) और कितनेक (अट्ठाइं हेऊइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामो) जीव अजीव आदि नव तत्त्वरूप भावों को, जीवादिक के स्वरूप के साधकरूप हेतुओं को, अन्यथानुपपत्तिरूप कारणों को, एवं पर के द्वारा पूछे गये अर्थ के उत्तररूप व्याकरण को पूछेंगे इस प्रकार की भावना से, (अप्पेगइया) कितनेक (सव्वओ समता मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्व-

नहि तेथी तेमने जोवा माटे, (अप्पेगइया) केटलाक (अट्ठविणिच्छयहेउ) जीव-अजीव आदि पदार्थोना स्वरूपनो निश्चय करवाने माटे तथा (अस्सुयाइं सुणेस्सामो) आगमना रहस्य जे पहेलां कदी सांभळ्यां नहोतां ते सांभळशुं, तथा (सुयाइं निस्संकियाइं करिस्सामो) जे आगमनुं रहस्य सांभळ्युं छे तेने शंकारहित करशुं ए प्रकारनी भावनाथी, (अप्पेगइया) तथा केटलाक (अट्ठाइं हेऊइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामो) जीव अजीव आदि नवतत्त्वरूप भावोने, जीव आदिकना स्वरूपना साधकरूप हेतुओने, अन्यथानुपपत्ति रूप कारणोने तेमज बीजा द्वारा पूछाता अर्थना उत्तररूप व्याकरणने पूछशुं-ए प्रकारनी भाव नाथी, (अप्पेगइया) केटलाक (सव्वओ समता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगा

प्पभिइओ अप्पेगइया वंदणवत्तियं अप्पेगइया पूयणवत्तियं एवं सक्कारवत्तियं सम्माणवत्तियं दंसणवत्तियं कोऊहलवत्तियं, अप्पे-

परिच्छेद्यरूपक्रेयविक्रेयवस्तुजातमादाय लाभेच्छया देशान्तराणि व्रजता सार्थं वाहयन्ति=योगक्षेमाभ्या परिपालयन्तीति, दीनजनोपकाराय मूलधन दत्वा तान समर्द्धयन्तीति तथा, एतत्प्रभृतय, एषु–'**अप्पेगइया**' अप्येकके–केचित्–'**वंदणवत्तिय**' वन्दनवृत्तिकम्–वन्दनाय वृत्ति =प्रवृत्तिर्यस्मिन् कर्मणि तत् तथा, क्रियाविशेषणमिद, वन्दनार्थमित्यर्थ, '**अप्पेगइया**' अप्येकके–केचित् '**पूयणवत्तिय**' पूजनवृत्तिकम्–सेवाकरणार्थम्, '**सक्कारवत्तियं**' सत्कारवृत्तिकम्–सत्कारार्थम्, '**सम्माणवत्तियं**' सम्मानवृत्तिकम्–सम्मानार्थम्, '**दंसणवत्तिय**' दर्शनवृत्तिकम्–दर्शनार्थम्, '**कोऊहलवत्तिय**' कौतूहलवृत्तिकम्–कौतूहलार्थम्–

घी, तेल आदि वस्तुओं को, तथा–**परिच्छेद्य**=कसौटी आदि पर परीक्षा करके खरीदने बेचने योग्य मणि, मोती, मूगा, गहना आदि वस्तुओं को लेकर नफा के लिये देशान्तर में जाने वाले सार्थ (समूह) को ले जाते हैं, तथा योग (नयी वस्तु की प्राप्ति) और क्षेम (प्राप्त वस्तु की रक्षा) के द्वारा उनका पालन करते है, गरीबों की भलाई के लिये उन्हें पूँजी देकर व्यापार द्वारा उन्हें धनवान बनाते है, वे सार्थवाह कहलाते हैं, ऐसे सार्थवाह लोग, इनमें से–(**अप्पेगइया**) कितनेक (**वंदणवत्तिय**) वन्दना करने के लिये (**अप्पेगइया**) कितनेक (**पूयणवत्तियं**) सेवा करने के लिये, (**एव**) इसी तरह (**सक्कारवत्तिय**) सत्कार करने के लिये, (**सम्माणवत्तिय**) समान करने के लिये, (**दसणवत्तिय**) दर्शन करने के लिये, (**कोऊहलवत्तिय**) पहिले कभी भी भगवान को नहीं देखे थे, अत उनको देखने के लिये,

માપીને ખરીદવા વેચવા યોગ્ય દૂધ, ઘી, તેલ આદિ વસ્તુઓ તથા પરિચ્છેદ્ય =કસોટી આદિ ઉપર પરીક્ષા કરીને ખરીદવા વેચવા યોગ્ય મણિ, મોતી, પરવાળા, ઘરેણા આદિ વસ્તુઓ લઈને નફો કરવા માટે દેશાતરમા જવાવાળા સાર્થ (સમૂહ)ને લઇ જાય છે, તથા યોગ (નવી વસ્તુની પ્રાપ્તિ) અને ક્ષેમ (પ્રાપ્ત વસ્તુની રક્ષા) દ્વારા તેમનુ પાલન કરે છે, ગરીબોના ભલા માટે તેમને પુજી દઈને વ્યાપાર દ્વારા ધનવાન બનાવે છે તે સાર્થવાહ કહેવાય છે એવા એવા સાર્થવાહ લોક, એમાના (**अप्पेगइया**) કેટલાક (**वदणवत्तिय**) વદના કરવા માટે (**अप्पेगइया**) કેટલાક (**पूयणवत्तिय**) સેવા કરવા માટે, (**एव**) એવી રીતે (**सक्कारवत्तियं**) સત્કાર કરવા માટે (**सम्माणवत्तियं**) સન્માન કરવા માટે (**दसणवत्तियं**) દર્શન કરવા માટે (**कोऊहलवत्तिय**) પહેલા કદી પણ ભગવાનને જોયેલા

पायच्छित्ता, सिरसा कंठे मालकडा आविद्ध-मणि-सुवण्णा कप्पिय-हार-द्धहार-तिसर-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकय -सोहा-भरणा पवर- वत्थ-परिहिया चंदणो-लित्त-गाय-सरीरा, अप्पे-

कृत कौतुक=मषीपुण्ड्रादिक, मङ्गल-दध्यक्षतादि, एतद्द्वय प्रायश्चित्त दु स्वप्नादिप्रतिघातत्वेनावश्यकरणीयत्वाद् यैस्ते तथा, कौतुकमङ्गलरूप प्रायश्चित्त कृतवन्त इत्यर्थ । 'सिरसा कठे मालकडा' शिरसि कण्ठे कृतमाला 'आविद्ध-मणि-सुवण्णा' आविद्ध-मणि-सुवर्णा -परिभृतमणिकनकभूषणा , भूषणान्येव नामभिर्निर्दिशति-'कप्पिय-हार-द्धहार-तिसर-पालब-पलंबमाण-कटिसुत्त-सुकय-सोहाभरणा' कल्पित-हारा-ऽर्द्धहार-त्रिसर-प्रालम्बप्रलम्बमान-कटिसूत्र-सुकृत-शोभाऽऽभरणा , तत्र-हार अर्द्धहार त्रिसरकश्च प्रसिद्ध , तथा प्रालम्ब =झुम्बनक स एव प्रलम्बमान यत्र तत् कटिसूत्र च तानि सुकृतशोभानि आभरणानि कल्पितानि- धृतानि यैस्ते तथा, विविधभूषणभूषितशरीरा इत्यर्थ , तथा-' पवर-वत्थ-परिहिया' प्रवरवस्त्रपरिहिता -श्रेष्ठवस्त्रधारका , 'चदणो-लित्त-गाय-सरीरा' चन्दनो-लिप्त-गात्र-शरीरा -चन्दनचर्चितशरीरा । 'अप्पेगइया' अप्येकके-'हयगया एव गयगया रहगया

मषीतिलक दधि अक्षत आदि धारण किये, (सिरसा कठे मालकडा आविद्ध-मणि-सुवण्णा) मस्तक एव कठ म मालाएँ धारण किये, जिनमें मणि जडे हुए है ऐसे सुवर्णों के आभूषण पहिने, तथा (कप्पिय-हार-द्धहार-तिसर-पालंब-पलबमाण-कटिसुत्त-सुकय-सोहा भरणा) शरीरशोभावर्द्धक अठारह लर के हार, ९ लर के अर्धहार, तीन लर के तिसरक, और नीचे का ओर लटकते हुए झूमके वाले कटिसूत्र पहिरे, (पवर-वत्थ-परिहिया) अच्छे २ सुन्दर बहुमूल्य वस्त्र पहिरे, (चदणो-लित्त-गाय सरीरा) शरीर पर चन्दन लगाये, जब इस प्रकार वहाँ को जनता सज-धज कर तैयार हो चुकी तब उसमें से (अप्पेगइया) कितनेक (चलने के लिये), (हयगया) घोडों पर सवार हुए, (एव गयगया)

मालकडा आविद्ध मणि-सुवण्णा) मस्तक तेमज कठमा मालाओ धारण करी, जेमा मणि जडेला होय एवा सुवर्णना आभूषण पहेर्या, तथा (कप्पिय हार-द्ध हार-तिसर-पालब-पलबमाण-कटिसुत्त-सुकय-सोहाभरणा) शरीरशोभावर्धक अढार सर (लट)ना हार, ९ सरना अर्धहार, त्रण सरना हार, नीचेनी तरफ लटकता झूमखावाळा कटिसूत्र पहेर्या, (पवर-वत्थ-परिहिया) सारा सारा सुन्दर बहुमूल्य वस्त्रो पहेर्या, (चदणो-लित्त-गाय सरीरा) शरीर पर चदन लगाव्यु ज्यारे आ प्रकारे त्यानी जनता सजधजने तैयार थई गई त्यारे तेमाथी (अप्पेगइया) कटलाक चालवा माटे (हयगया) घोडा पर

अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामो, [अप्पेगइया] पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामो, अप्पेगइया जीयमेयंति कट्टु, ण्हाया कयवलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-

निरतिपूर्वक मुण्डिता –कृतकचलुञ्चना सन्तः 'अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामो' अगाराद्=गृहाद् अनगारिकता=साधुत्वं प्रव्रजिष्याम =प्राप्स्याम –अनगारा भविष्याम, 'अप्पेगइया' अप्येकके 'पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामो' पञ्चानुव्रतिकं सप्तशिक्षाव्रतिकं द्वादशविधं गृहिधर्मं प्रव्रजिष्याम, 'अप्पेगइया' 'जिण-भत्ति-रागेण' जिनभक्तिरागेण, 'अप्पेगइया' अप्येकके, 'जीयमेयंति कट्टु' जातमेतदिति कृत्वा–कुलाचारोऽयमिति मत्वा, 'ण्हाया' स्नाता –'कयवलिकम्मा' कृतबलिकर्माण, 'कय–कोउय–मंगल–पायच्छित्ता' कृत–कौतुक–मङ्गल–प्रायश्चित्ता –

इस्सामो) सावद्य व्यापारों से सर्वथा विरत होकर, कचलुञ्चनपूर्वक गार्हस्थिक अवस्था का परित्याग कर अनगार बनेंगे–इस प्रकार की भावना से, तथा कितनेक–(पंचाणुव्वइयं सित्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामो) पांच अणुव्रत एवं सात शिक्षाव्रत के भेद से १२ भेदरूप गृहस्थ के धर्म को स्वीकार करेंगे–इस भावना से, (अप्पेगइया) कितनेक (जिणभत्तिरागेण) जिनेन्द्र की भक्ति करेंगे इस प्रकार भक्ति के अनुराग से, (अप्पेगइया,) कितनेक (जीयमेयंति कट्टु) यह हम लोगों का कुलाचार है–इस प्रकार मान कर, (ण्हाया) स्नान किये, (कयवलिकम्मा) काक आदि को अन्नादि दानरूप बलिकर्म किये, (कय–कोउय–मंगल–पायच्छित्ता) दुःस्वप्नादि निवारण के लिये

रियं पव्वइस्सामो) सावद्य व्यापारोथी सर्वथा विरत थईने केशलुंचनपूर्वक गार्हस्थिक अवस्थानो परित्याग करीने अनगार बनशुं–ए प्रकारनी भावनाथी, तथा केटलाक (पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामो) पांच अणुव्रत तेमज सात शिक्षाव्रतना भेदथी १२ भेद रूप गृहस्थना धर्मनो स्वीकार करशुं एवी भावनाथी, (अप्पेगइया) केटलाक (जिणभत्तिरागेण) जिनेन्द्रनी भक्ति करशुं ए प्रकारनी भक्तिना अनुरागथी, (अप्पेगइया) केटलाक (जीयमेयंति कट्टु) आ अमारो कुलाचार छे–ए प्रकारनी मान्यताथी, (ण्हाया) स्नान करी (कय–वलि–कम्मा) कागडा आदिने अन्न आदि दानरूप बलिकर्म करी, (कय–कोउय–मंगल–पायच्छित्ता) दुःस्वप्नादि निवारणने माटे मसी तिलक दही चोखा आदि धारण करी, (सिरसा कंठे

मज्झेणं णिग्गच्छंति, णिग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूर-सामंते छत्ताईए तित्थयराइसेसे पासंति, पासित्ता जाणवाहणाइं ठवेंति, ठवित्ता जाणवाहणेहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता जेणेव

चम्पानगरं महाकोलाहलमयीं कुर्वन्त, 'चंपाए णयरीए' चम्पाया नगर्या 'मज्झ-मज्झेण' मध्यमध्येन-सर्वतो मध्यमार्गेण 'णिग्गच्छंति' निर्गच्छन्ति, 'णिग्गच्छित्ता' निर्गत्य 'जेणेव पुण्ण-भद्दे चेइए' यत्रैव पूर्णभद्र चैत्यम्, 'तेणेव उवागच्छंति' तत्रैवोपागच्छन्ति, 'उवागच्छित्ता' उपागत्य, 'समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य अदूरसमीपे-'छत्ताईए तित्थयराइसेसे पासंति' छत्रादीन तीर्थकरातिशेषान्=तीर्थकरातिशय-द्योतकानि कानिचिच्छत्रादीनि चिह्नानि पश्यन्ति, 'पासित्ता' दृष्ट्वा 'जाणवा-हणाइं ठवेंति' यानवाहनानि स्थापयन्ति, 'ठवित्ता' स्थापयित्वा 'जाणवाहणेहिंतो

भित महासमुद्र के महाध्वनि से मानो युक्त करते हुए, (चंपाए णयरीए) उस चंपा नगरी के (मज्झमज्झेण) ठीक बीचो बीच के मार्ग से (णिग्गच्छंति) निकले, (णिग्गच्छित्ता) ये सब निकल कर (जेणेव पुण्णभद्दे चेइए) जहां पर वह पूर्णभद्र नामका उद्यान था (तेणेव उवागच्छंति) वहाँ पर पहुँचे, (उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्ताईए तित्थयराइसेसे पासंति) वहाँ पहुँच कर उन्होंने भगवान् महावीर के न अतिदूर और न अतिनिकट तीर्थंकरों के अतिशय स्वरूप छत्र आदिकों को देखा, ये छत्रादिक तीर्थंकरों के अतिशय द्योतक चिह्न माने गये हैं, (पासित्ता जाणवाहणाइं ठवेंति) इन चिन्हों के देखते ही उन सबों ने अपने २ यानवाहनादिकों को वहाँ रोक

પ્રક્ષુભિત મહાસમુદ્રના મહાધ્વનિથી જેમ યુક્ત કરતા હોય તેમ (चंपाए णयरीए) તે ચંપા નગરીની (मज्झमज्झेण) બરાબર વચ્ચોવચ્ચના માર્ગથી (णिग्गच्छंति) નીકળ્યા, (णिग्गच्छित्ता) તે બધા નીકળીને (जेणेव पुण्णभद्दे चेइए) જ્યાં તે પૂર્ણભદ્ર નામનું ઉદ્યાન હતું (तेणेव उवागच्छंति) ત્યાં પહોચ્યા, (उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्ताईए तित्थयराइसेसे पासंति) ત્યાં પહોચીને તેઓએ ભગવાન મહાવીરથી બહુ દૂર નહિ તેમ તીર્થંકરોના અતિશયસ્વરૂપ છત્ર આદિને જોયા, આ છત્ર આદિક તીર્થંકરોના અતિશયદ્યોતક ચિહ્ન મનાય છે, (पासित्ता जाणवाहणाइं ठवेंति) એ ચિહ્નોને જોતા જ તે બધાએ પોત

गइया हयगया एवं गयगया रहगया सिवियागया संदमाणियागया, अप्पेगइया पाय-विहार-चारिणो पुरिस-वग्गुरा-परिक्खित्ता महया उक्किट्ठि-सीह-णाय-बोल-कलकल-रवेणं पक्खुब्भिय-महासमुद्द-रव-भूयं पिव करेमाणा चंपाए णयरीए मज्झं-

सिवियागया सदमाणियागया ' हयगता एव गजगता रथगता शिविकागता स्यन्दमानिकागता —तत्र शकटोपरि दत्ता शिविकैव स्यन्दमानिका, ' अप्पेगइया ' अप्येकके ' पाय-विहार-चारिणो ' पादविहारचारिण ' पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता ' पुरुषवागुरापरिक्षिप्ता — पुरुषसमूहेन परिवेष्टिता, 'महया' महता ' उक्किट्ठि-सीहणाय-बोल-कलकल-रवेण ' उत्कृष्टि-सिंहनाद-बोल-कलकल-रवेण — उत्कृष्टि =आनन्दमहाध्वनि , सिंहनाद =प्रसिद्ध , बोल =वर्णव्यक्तिसहितो ध्वनि , कलकल =वर्णव्यक्तिरहितो ध्वनि , एषा समाहार , तदेव यो रव स तथा तेन, 'पक्खुभिय-महासमुद्द-रवभूय पिव ' प्रक्षुभित-महासमुद्र-रवभूतमिव—प्रक्षुभितमहासमुद्रस्य यो रवभूत =सञ्जातशब्दस्तमिव=तद्वत् नगर 'करेमाणा' कुर्वन्त -

इसी प्रकार कितनेक हाथी पर आरूढ हुए, (रहगया) कितनेक रथों पर बैठे, (सिवियागया) कितनेक पालखियों में चढे, (सदमाणियागया) कितनेक बहेलियों—पालकीविशेष में बैठे, (अप्पेगइया) तथा कितनेक (पुरिस-वग्गुरा-परिक्खित्ता) पुरुषों के समूह से घिरे हुए होकर (पाय-विहार-चारिणो) पैदल ही निकले, ये सभी (महया) महान् (उक्किट्ठि-सीहणाय-बोल-कलकल-रवेण) 'उक्किट्ठि'—उत्कृष्टि—अतिशय आनन्द जनित ध्वनि से, (सीहणाय) सिंहनाद—सिंहनाद से, 'बोल'—व्यक्तवर्णयुक्त ध्वनिसे, तथा 'कलकलरव'—अव्यक्त ध्वनि से (पक्खुभिय-महासमुद्द-रवभूय पिव) चम्पानगरी को प्रक्षु-

સવાર થયા (एव गयगया) આ પ્રકારે કેટલાક હાથીપર આરૂઢ થયા (रहगया) કેટલાક રથ ઉપર બેઠા (सिवियागया) કેટલાક પાલખીઓમા ચઢયા (सदमाणियागया) કેટલાક પાલખીવિશેષોમા બેઠા, (अप्पेगइया) તથા કેટલાક (पुरिस-वग्गुरा-परिक्खित्ता) પુરૂષોના ટોળા સાથે ધીમે-ધીમે પગલે (पाय विहार-चारिणो) પેદલજ નીકળ્યા, આ બધા (महया) મહાન્ (उक्किट्ठि-सीह णाय-बोल-कलकलरवेण) 'उक्किट्ठि' ઉત્કૃષ્ટિ—અતિશય આનંદ જનિત ધ્વનિથી, (सीहणाय) સિંહનાદ—સિંહનાદથી, (बोल) વ્યક્તવર્ણયુક્ત ધ્વનિથી તથા (कल कलरव) અવ્યક્ત ધ્વનિથી (पक्खुभिय-महासमुद्द-रवभूय पिव) ચંપા નગરીને

मूलम्—तए णं से पवित्तिवाउए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए ण्हाए जाव अप्प-महग्घा-भरणा-

टीका—'तए ण से पवित्तिवाउए' इत्यादि ।

'तए णं से पवित्तिवाउए' तत खलु स प्रवृत्तिव्यापृत =भगवद्विहारादिवृत्तान्तनिवेदनेऽधिकृत, 'इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे' अस्या कथाया लब्धार्थ सन् 'हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए' हृष्ट-तुष्ट-यावद्धृदय 'ण्हाए जाव अप्प-महग्घा-भरणा-लंकिय-सरीरे' स्नातो यावदल्पमहार्घाभरणाऽलङ्कृतशरीर 'सयाओ गिहाओ' स्वकाद् गृहात् 'पडिणि-

कर चुकने बाद फिर उस आगत जनसमूहने (वंदंति नमंसंति) वन्दना एव नमस्कार किया, (वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा विणएण पंजलिउडा पज्जुवासंति) वंदना एव नमस्कार करने के पश्चात् भगवान से न अतिसमीप में एव न अतिदूर ही उनके सामने उचित स्थान पर बैठ कर वे सब विनय-पूर्वक हाथ जोडकर सेवा करने लगे ॥ सू ३८ ॥

'तए ण से पवित्तिवाउए' इत्यादि ।

(तए ण) इस के बाद (से पवित्तिवाउए) वह भगवान के विहार आदि के समाचार लाने में नियुक्त किया हुआ व्यक्ति, (इमीसे कहाए) इस कथासे-भगवान के आगमन के वृत्तान्त से (लद्धट्ठे समाणे) परिचित होकर, (हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए) अपने अन्त करण मे विशेषरूप से हर्षित एव सतुष्ट हुआ, फिर उसने (ण्हाए जाव अप्प-महग्घा-भरणा-लंकिय-सरीरे) स्नान किया, पश्चात् थोडे

समूहे (वंदंति णमंसंति) वंदना तेमज नमस्कार कर्या, (वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा विणएण पंजलिउडा पज्जुवासंति) वंदना तेमज नमस्कार कर्या पछी भगवानथी बहु दूर नहि तेम बहु समीप नहि एम तेमनी सामा उचित स्थान पर बेसीने ते बधा विनय-पूर्वक हाथ जोडीने सेवा करवा लाग्या (सू ३८)

'तए ण से पवित्तिवाउए' इत्यादि

(तए ण) त्यार पछी (से पवित्तिवाउए) ते भगवानना विहार आदिना समाचार लाववा माटे नियुक्त करेल माणुस (इमीसे कहाए) आ वातथी-भगवानना आगमनना वृत्तान्तथी (लद्धट्ठे समाणे) परिचित थईने (हट्ठ-तुट्ठ जाव-हियए) पोताना अंत करणमा विशेषरूपथी हर्षित तेमज संतुष्ट थयो पछी तेणे (ण्हाए जाव अप्प महग्घा भरणा-लंकिय सरीरे) स्नान कर्युं पछी थोडा भारवाळा तथा

समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति, करित्ता वंदंति णमस्संति, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासंति ॥ सू० ३८ ॥

पच्चोरुहंति' यानवाहनेभ्य प्रत्यवरोहन्ति–अधस्तादवतरन्ति, 'पच्चोरुहित्ता' प्रत्यवरुह्य, 'जेणेव समणे भगवं महावीरे' यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरः [विराजते] 'तेणेव उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता' तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य 'समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य त्रिकृत्व आदक्षिण प्रदक्षिण कुर्वन्ति–त्रिवारमादक्षिणप्रदक्षिण कुर्वन्ति, 'करित्ता' कृत्वा 'वंदंति' वन्दन्ते–स्तुवन्ति, 'णमंसंति' नमस्यन्ति=प्रणमन्ति, 'वंदित्ता णमंसित्ता' वन्दित्वा नमस्यित्वा 'णच्चासण्णे णाइदूरे' नात्यासन्ने नातिदूरे 'सुस्सूसमाणा' शुश्रूषमाणा 'णमंसमाणा' नमस्यन्त 'अभिमुहा' अभिमुखा=सम्मुखा, 'विणएणं पंजलिउडा' विनयेन प्राञ्जलिपुटा –विनय–विनम्रबद्धाञ्जलय, 'पज्जुवासंति' पर्युपासते–उपासना कुर्वन्ति ॥ सू० ३८ ॥

दिये, (ठवित्ता जाणवाहणेहिंतो पच्चोरुहंति) जब वे अच्छी तरह रुक चुके तब वे सब-के-सब अपने २ वाहनों से नीचे उतरे, (पच्चोरुहित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति) उतर कर फिर वे सब लोग जहाँ श्रमण भगवान महावीर विराजमान थे वहाँ पहुँचे, (उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति) बाद उन्होंने भगवान् महावीर को तीनबार हाथ जोडकर प्रदक्षिणा की, (करित्ता) प्रदक्षिणा

પોતાના યાનવાહનાદિકોને ત્યાંજ રોકી દીધા, (ठवित्ता जाणवाहणेहिंतो पच्चोरुहंति) જ્યારે તેઓ સારી રીતે રોકાઈ ગયા ત્યારે તે બધા પોતપોતાના વાહનોમાંથી નીચે ઉતર્યા, (पच्चोरुहित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति) ઉતરીને પછી તે લોકો બધા જ્યાં શ્રમણ ભગવાન મહાવીર બિરાજમાન હતા ત્યાં પહોંચ્યા (उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति), બાદ તેઓએ ભગવાન મહાવીરને ત્રણવાર હાથ જોડીને પ્રદક્ષિણા કરી (करित्ता) પ્રદક્ષિણા કરી લીધા પછી વળી તે

व्वया जाव णिसीयइ, णिसीइत्ता तस्स पवित्तिवाउयस्स अद्ध-तेरस-सयसहस्साइं पीइदाणं दलयइ, दलइत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू०३९ ॥

तत्रोपविश्य यावत् 'नमोऽत्थु णं' पठति 'जाव' यावत् सिंहासने 'णिसीयइ' निषीदति=उपविशति, 'णिसीइत्ता' निषद्य=उपविश्य, 'तस्स पवित्तिवाउयस्स अद्धत्तेरससयसहस्साइं पीइदाण दलयइ' तस्मै प्रवृत्तिव्यापृताय अर्द्धत्रयोदशशतसहस्राणि प्रीतिदान ददाति–सार्द्धद्वादशशतसहस्राणि रजतमुद्रा प्रीतिदान=पारितोषिक समर्पयति। 'श्रमणो भगवान महावीरस्वामी चम्पानगर्या उपनगरग्राममुपागत चम्पानगर्यां पूर्णभद्रचैत्य समवसर्तुकाम' इति निवेदित प्रवृत्तिव्यापृतेन, अतस्तदाऽद्योत्तरैकलक्षरूप्यक रजतमुद्रारूप प्रीतिदान प्रदत्तम्। अत्र तु अस्यामेव चम्पानगर्याम् अतिसन्निकृष्टे स्थाने पूर्णभद्रचैत्ये समवसृत–इति वार्ता निवेदिता, अतो हर्षातिशयादेतद्वार्तानिवेदने सार्धद्वादशलक्षराजतमुद्रारूप प्रीतिदान प्रवृत्तिव्यापृताय दत्तम्–इति भाव। 'दलइत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ' दत्त्वा सत्कारयति–वस्त्रादिदानेन, सम्मानयति–प्रियवचनेन, 'सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ' सत्कृत्य सम्मान्य प्रतिविसर्जयति ॥ सू०३९ ॥

वे एकदम सिंहासन से उठ के खडे हुए और नीचे उतरकर जिस दिशा में भगवान विराजमान थे, उस दिशा की ओर, सात आठ पग जाकर और बैठकर विधिपूर्वक "नमोत्थु णं" किये। बाद सिंहासन पर बैठे, (णिसीइत्ता तस्स पवित्तिवाउयस्स अद्धत्तेरस–सय–सहस्साइं पीइदाणं दलयइ) बैठ कर उन्होंने उस सदेशवाहक के लिये साढे बारह लाख चादी की मुद्राओं का प्रीतिदान–पारितोषिक प्रदान किया, (दलइत्ता) प्रीतिदान देकर उन्होंने (सक्कारेइ) उसका सत्कार किया (सम्माणेइ) मधुर वचनों से सन्मान किया। इस प्रकार (सक्कारित्ता समाणित्ता) सत्कार एव सन्मान करके उन्होंने उसे (पडिविसज्जेइ)

જઈ તેઓ એકદમ સિંહાસનેથી ઉઠીને ઉભા થયા તથા નીચે ઉતરીને જે દિશામાં ભગવાન વિરાજમાન હતા તે દિશાની તરફ સાત આઠ પગલાં જઈને તથા બેસીને વિધિપૂર્વક "नमोत्थु णं" દીધું બાદ સિંહાસનપર બેઠા, (णिसीइत्ता तस्स पवित्तिवाउयस्स अद्धत्तेससयसहस्साइं पीइदाणं दलयइ) બેસીને તેઓએ તે સદેશવાહકને માટે સાડાબાર લાખ ચાંદીના સિક્કાઓનું પ્રીતિ-દાન–પારિતોષિક પ્રદાન કર્યું (दलइत्ता) પ્રીતિદાન આપીને તેઓએ (सक्कारेइ) તેનો સત્કાર કર્યો, (सम्माणेइ) મધુર વચનોથી સન્માન કર્યું આ પ્રકારે

लंकिय-सरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता चंपाणयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव बाहिरिया सा चेव हेट्ठिल्ला वत्त-

क्खमइ पडिणिक्खमित्ता' प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य, 'चंपाणयरिं मज्झंमज्झेणं' चम्पानगर्या मध्यमध्येन, 'जेणेव बाहिरिया' यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला, 'सा चेव हेट्ठिल्ला वत्तव्वया' सैवाऽधस्तात् वक्तव्यता, अर्थात्—यत्रैव राज्ञः कोणिकस्य गृहं यत्र कोणिको राजा सम्भसारपुत्रस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीतं शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन वर्धयति, वर्धयित्वा एवमवादीत्=भगवतः समवसरणं सविस्तरं निगदितवान्, तदनु भूपो भगवदागमनं श्रुत्वा हृष्टतुष्टः सन् सिंहासनादुत्थाय राजचिह्नानि परित्यज्य भगवदभिमुखः सप्ताष्टपदानि गत्वा

भार वाले तथा बहुमूल्य आभरणों से अलङ्कृतशरीर होकर (सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ) अपने घर से निकला, (पडिणिक्खमित्ता) निकलकर (चंपाणयरिं मज्झंमज्झेणं) ठीक चंपा नगरी के बीचोबीच मार्ग से होता हुआ, (जेणेव बाहिरिया सा चेव हेट्ठिल्ला वत्तव्वया जाव णिसीयइ) जहां नीचे बाहिर की ओर वह उपस्थानशाला थी, एवं जहां राजा कोणिक का गृह था, तथा जहां पर वे विराजमान थे, वहां पर वह पहुँचा, पहुँचकर दोनों हाथों को जोडकर उसने कोणिक नरेशको सादर नमस्कार किया, पश्चात् आपकी जय हो और विजय हो—इस रूपसे उन्हें बधाई दी। बधाई दे चुकने के अनन्तर फिर उसने 'हे राजन्! आज श्रमण भगवान महावीर प्रभु चंपानगरी के पूर्णभद्र उद्यान में समवसृत हुए हैं'—इत्यादि विस्तृत रूप से भगवान् के समवसरण का वृत्तान्त कहा। राजा ने जब प्रभु के आगमन का वृत्तान्त सुना तब वे भी चित्त मे अधिक प्रसन्न एवं सन्तुष्ट हुए। मारे हर्ष के

બહુ મૂલ્યવાળા આભરણોથી શરીરને શણગારીને તે (सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ) પોતાના ઘેરથી નીકળ્યો, (पडिणिक्खमित्ता) નીકળીને (चंपाणयरिं मज्झंमज्झेणं) બરાબર ચંપાનગરીની વચ્ચોવચ્ચને માર્ગે થઈને (जेणेव बाहिरिया सा चेव हेट्ठिल्ला वत्तव्वया जाव णिसीयइ) જ્યાં નીચે બહારની તરફ તે ઉપસ્થાનશાલા હતી તેમજ જ્યાં રાજા કોણિકનું ગૃહ હતું તથા જ્યાં તે વિરાજમાન હતા ત્યાં પહોંચ્યો, પહોંચીને બન્ને હાથ જોડીને તેણે કોણિક નરેશને સાદર નમસ્કાર કર્યા પછી આપની જય થાવો તથા વિજય થાવો એ રૂપે તેણે વધાઈ આપી વધાઈ દઈ ચુક્યા પછી તેણે કહ્યું, હે રાજન્! આજે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુ ચંપાનગરીના પૂર્ણભદ્ર ઉદ્યાનમાં સમવસૃત થયા છે આ પ્રકારે તેણે વિસ્તૃતરૂપથી ભગવાનના સમવસરણનો વૃત્તાન્ત કહ્યો રાજાએ જ્યારે પ્રભુના આગમનનો વૃત્તાન્ત સાંભળ્યો ત્યારે તેઓ પણ મનમાં બહુ પ્રસન્ન તેમજ સંતુષ્ટ થયા આનંદમાં આવી

प्पया! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि, हय-गय-रह-पवर-जोहकलियं च चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेहि, सुभद्दापमुहाण य देवीणं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए पाडियक्कपाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं उवट्ठवेहि, चंपं च णयरिं सब्भिं-

पडिकप्पेहि' आभिषेक्य हस्तिरत्न परिकल्पय-पट्टहस्तिरत्न सज्जित कुरु, 'हय-गय-रह-पवर-जोह-कलियं च चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेहि' हय-गज-रथ-प्रवरयोध-कलिता च चतुरङ्गिणीं सेना सन्नाहय=सुसज्जिता कुरु, 'सुभद्दापमुहाण य देवीण' सुभद्राप्रमुखानाञ्च देवीनाम् 'बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए' बाह्यायामुपस्थानशालायाम्, 'पाडियक्कपाडियक्काइं' प्रत्येकप्रत्येकानि—सर्वासां पृथक् पृथक् 'जत्ताभिमुहाइं' यात्राभिमुखानि—गमनार्थमुद्यतानि, 'जुत्ताइं' युक्तानि—योजितबलीवर्दानि 'जाणाइं' यानानि=धार्मिकरथान 'उवट्ठवेहि' उपस्थापय=सज्जीकृत्य समानय, 'चंपं च णयरिं सब्भितरबाहिरियं'

मेव भो देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रिय! शीघ्र ही (आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि) तुम पट्टहस्तिरत्न को सज्जित करो, (हय-गय-रह-पवरजोह-कलियं च चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेहि) साथ में घोडों, हाथियों, रथों एवं उत्तम योधाओं से युक्त चतुरंगिणी सेना को भी सुसज्जित करना, तथा (सुभद्दापमुहाण य देवीण बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए) सुभद्राप्रमुख देवियों के लिये भी बाहिर उपस्थानशाला मे (पाडियक्कपाडियक्काइं) अलग २ रूप मे (जत्ताभिमुहाइं) चलने मे अच्छे (जुत्ताइं) एवं अच्छे बैलों वाले (जाणाइं) धार्मिक रथों को (उवट्ठवेहि) सज्जित करके ले आओ। (चंपं च णयरिं सब्भिं-

ક્ષિપ્ર-(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया) હે દેવાનુપ્રિય! શીઘ્ર જ (आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि) તમે પટ્ટહસ્તિરત્નને સજ્જિત કરો. (हय-गय-रह-पवर-जोह-कलियं च चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेहि) સાથમાં ઘોડા, હાથી, રથો, તેમજ ઉત્તમ યોદ્ધાઓથી યુક્ત ચતુરંગિણી સેનાને પણ સુસજ્જિત કરો. તથા (सुभद्दापमुहाण य देवीण बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए) સુભદ્રાપ્રમુખ દેવીઓને માટે પણ બાહરી ઉપસ્થાનશાલામાં (पाडियक्क-पाडियक्काइं) અલગ અલગ રૂપમાં (जत्ताभिमुहाइं) ચાલવામાં સારા (जुत्ताइं) તેમજ સારા બળદવાળા (जाणाइं) ધાર્મિક રથોને (उवट्ठवेहि) સજ્જિત કરીને લઈ આવો. (चंपं च णयरिं सब्भितरबाहिरियं) ચંપાનગરીને અંદર તેમજ બહારથી (आसित्त-सित्त-

मूलम्—तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते बल-वाउयं आमंतेइ, आमंतित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणु-

टीका—'तए ण से' इत्यादि। 'तए ण' ततः खलु 'से कूणिए राया भंभसारपुत्ते' स कूणिको राजा भंभसारपुत्रः 'बलवाउयं' बलव्यापृतं=सैन्यव्यापारपरायणं—सेनापतिमित्यर्थः, 'आमंतेइ' आमन्त्रयति=आह्वयति, 'आमंतित्ता' आमन्त्र्य=आहूय, 'एवं वयासी'—एवमवादीत्—'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया' क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिय! 'आभिसेक्कं हत्थिरयणं

निदा किया। श्रमण भगवान् महावीर स्वामी चंपानगरी के उपनगरग्राम में पधारे हुए हैं और वे चंपानगरी के पूर्णभद्र उद्यान में पधारनेवाले हैं—इस प्रकार का समाचार कोणिक राजा को जब इस देशवाहक ने सुनाया था तब उस समय राजाने उसे पारितोषिक रूप में १ लाख चांदी की मुद्राएँ दी थीं। परन्तु जब उसने यह खबर दी कि प्रभु चंपानगरी के पूर्णभद्र उद्यान में पधार चुके हैं तब इस बात को सुनकर उन्हें अत्यंत हर्षका आवेग बढा, और इस आवेग के प्रभाव से उन्होंने उसे १२॥ लाख चांदी की मुद्राएँ दीं॥ सू० ३९॥

'तए ण से कूणिए राया' इत्यादि।

(तए णं) इसके अनन्तर (भंभसारपुत्ते) भंभसार अर्थात् श्रेणिक का पुत्र (से कूणिए राया) उस कूणिक राजा ने (बलवाउयं) अपने बलव्यापृत—सेनापति को (आमंतेइ) बुलाया, (आमंतित्ता) बुलाकर (एवं वयासी) इस प्रकार कहा—(खिप्पा-

(सक्कारित्ता सम्माणित्ता) सत्कार तेमज सन्मान करीने तेमणे तेने (पडिविसज्जेइ) विदाय कर्यो श्रमण भगवान महावीर स्वामी चंपानगरीना उपनगर ग्राममां पधार्या छे तथा तेओ चंपानगरीना पूर्णभद्र उद्यानमां पधारवाना छे—ए प्रकारना समाचार कोणिक राजाने ज्यारे आ संदेशवाहके संभळाव्या त्यारे ते समये राजाए तेने पारितोषिकरूपमां एकलाख आठ चांदीना सिक्काओ आप्या हता परंतु ज्यारे तेणे आ खबर आपी के प्रभु चंपानगरीना पूर्णभद्र उद्यानमां पधारी चुक्या छे त्यारे आ वात सांभळी तेमने अत्यंत हर्षनो आवेग वध्यो अने आवेगना प्रभावथी तेमणे तेने १२॥ लाख चांदीनी महोरो आपी (सू ३९)

'तए ण से कूणिए राया' इत्यादि

(तए ण) त्यार पछी (भंभसारपुत्ते) भंभसार अर्थात् श्रेणिकना पुत्र (से कूणिए राया) ते कूणिक राजाए (बलवाउयं) पोताना बलव्यापृत—सेनापतिने (आमंतेइ) बोलाव्या, (आमंतित्ता) बोलावीने (एवं वयासी) आ प्रकारे

करेहि य कारवेहि य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि, णिज्जाहिस्सामि समणं भगवं महावीरं अभिवंदिउं ॥ सू. ४० ॥

लोइय' इति देशीय शब्द, गोमयादिना भूमौ यद् लेपन सेटिकादिना कुड्यादिषु च यद् धवलन तद् 'लाउल्लोइय' तेन महिताम्=पुनाहनाम्, 'गोसीस-सरस-रत्तचंदण-जाव-गंधवट्टिभूयं करेहि य' गोशीर्ष-सरस-रक्तचन्दन-यावद्-गन्धवर्तिभूता कुरु—गोशीर्षं = चन्दनविशेषं सरसरक्तचन्दनेन यावद् गन्धवर्तिभूता=समुपचितगन्धद्रव्यरूपा कुरु, 'कारवेहि य' कारय च, अन्यानपि तथा कर्तुं प्रेरय, 'करेत्ता य कारवेत्ता य' कृत्वा च कारयित्वा च 'एयमाणत्तिय पच्चप्पिणाहि' एतामाज्ञा प्रत्यर्पय, आज्ञापिताऽर्थान् सम्पाद्य मह्य कथय, 'णिज्जाहिस्सामि समणं भगवं महावीरं अभिवंदिउ' निर्यास्यामि= निर्गमिष्यामि श्रमण भगवन्त महावीरमभिवन्दितुम ॥ सू ४० ॥

और भींतों को खडी से पुतवाओ, (गोसीस-सरस-रत्तचदण-जाव-गधवट्टि-भूय) गोशीर्ष-चन्दन विशेष, एव सरस रक्तचदन से समस्त नगर को सुगधित बनवाओ ताकि वह सुगंध-पुज जैसा मालूम पडने लगे। (करेहि य कारवेहि य) यह सब काम स्वय करो तथा दूसरों को भी इस तरह करने के लिये प्रेरित करो। (करेत्ता य कारवेत्ता य) करके एव करवा करके (एयमाणत्तिय पच्चप्पिणाहि) इस मेरी आज्ञा को पुन मुझे प्रत्यर्पित करो-आपकी आज्ञा-नुसार सब काम हो चुके हैं इसकी मुझे खबर दो। (णिज्जाहिस्सामि समण भगव महावीर अभिवदिउ) बाद में मैं श्रमण भगवान महावीर की वन्दना के लिये निकलूगा ॥ सू ४० ॥

જમીનને લીપાવો અને ભીંતોને ખડીથી ધોળાવો. (गोसीस-सरस-रत्तचंदण जाव-गंधवट्टि-भूय) ગોશીર્ષ-ચન્દન વિશેષ તેમજ સરસ રક્તચંદનથી સમસ્ત નગરને સુગંધિત બનાવો જેથી તે સુગંધપુંજ જેવી જણાવા લાગે (करेहि य कारवेहि य) આ બધું કામ જાતે કરો તથા બીજાને પણ એવી રીતે કરવા પ્રેરિત કરો, (करेत्ता य कारवेत्ता य) કરીને તેમજ કરાવીને (एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि) આ મારી આજ્ઞાને પાછી મને પ્રત્યર્પિત કરો-આપની આજ્ઞાનુ-સાર બધું કામ થઈ ચૂક્યું છે એની મને ખબર દો. (णिज्जाहिस्सामि समण भगव महावीर अभिवदिउ) બાદ હું શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની વંદના માટે નીકળીશ (સૂ ૪૦)

तरबाहिरियं आसित्त-सित्त-सुइ-सम्मट्ट-रत्थंतरा-वण-वीहियं मंचा-इमंच-कलियं णाणाविह-राग-उच्छिय-ज्झय-पडागा-इपडाग-मंडियं लाउल्लोइयमहियं गोसीस-सरस-रत्तचंदण-जाव-गंधवट्टिभूयं

चम्पा च नगरीं साभ्यन्तरबाह्याम्, 'आसित्त-सित्त-सुइ-संमट्ठ-रत्थतरावण-वीहियं' आसिक्त-सिक्त-शुचि-सम्मृष्ट-रथ्यान्तरा-ऽऽपण-वीथिकाम्-आसिक्तानि=ईषत्सिक्तानि, सिक्तानि=भूयसा जलेन धौतानि अतएव शुचीनि=पवित्राणि सम्मृष्टानि=कचवरापनयनेन सशोधितानि रथ्यान्तराणि=रथ्यामध्यानि आपणवीथयश्च-हट्टमार्गा यस्या सा आसिक्त-सिक्त-शुचि-सम्मृष्ट-रथ्याऽन्तराऽऽपण-वीथिका, ताम्, 'मचा-इमच-कलियं' मञ्चा-तिमञ्च कलिताम्-मञ्चा=मालका-उर्ध्वकृजनोपवेशनयोग्या, अतिमञ्चा=मञ्चोपरिमञ्चा, तै कलिता-युक्ता ताम्, 'णाणाविह-राग-उच्छिय-ज्झय-पडागा-इपडाग-मडिय' नानाविध-रागो-च्छ्रित-ध्वज-पताकाऽतिपताका-मण्डिताम्-नानाविधरागा=विविधवर्णा ये उच्छ्रिता ध्वजा, पताका-तिपताका - पताका - ध्वजाग्रवर्तिचेलाञ्चलानि, पताकामतिक्रान्ता अतिपताका =पताकोपरिवर्त्तिन्य पताका, ताभिर्मण्डिताम्=सुशोभिताम्-नानाविधवर्णसमुच्छ्रितध्वज-पताकाऽतिपताकाभिर्मण्डितामित्यर्थ । 'लाउ-ल्लोइय-महियं' लाउल्लोइयमहिताम्-'लाउ-

---

तरबाहिरिय) चपानगरी को भीतर एव बाहिर से (आसित्त-सित्त-सुइ समट्ठ-रत्थतरा-वणवीहिय) पहिले थोडे से जल से छिडकवा कर पीछे अधिक जल से छिडकवाकर गलियों के एव बजारों के रस्ता को साफ-सूफ करवाओ और जहा भी कूडा-कर्कट पडा हो उसे झड-वाकर साफ करवाओ, (मचा-इमच-कलिय णाणाविह-राग-उच्छिय-ज्झय-पडागा-इपडाग-मडिय) मार्ग मे आजू-बाजू मचा पर मच जमवाकर लगवा दो, ताकि लोग उन पर अच्छी तरह से बैठ सके । अनेक रगों की ऊँची २ ध्वजाएँ, पताकाएँ एव अतिपताकाए नगर भर म लगाओ, (लाउल्लोइयमहिय) जगह २ पर गोबर से जमीन को लिपवाओ

सुइ-संमट्ठ-रत्थतरावण-वीहिय) પહેલા થોડાક પાણીનો છટકાવ કરીને પછી વધારે પાણી છટાવીને ગલિયોના તેમજ બજારોના રસ્તાઓને સાફસૂફ કરાવો, અને જ્યા પણ કૂડા-કર્કટ (કચરોપૂંજો) પડયો હોય તેને ઝાડુ મરાવી સાફ કરાવો (मचा-इमच-कलिय णाणाविह-राग-उच्छिय-ज्झय-पडागा-इपडाग-मडिय) માર્ગમા આજુબાજુ મચ ઉપર મચ ગોઠવાવી દો જેથી લોકો તેમનાપર સારી રીતે બેસી શકે અનેક રગોની ઉચી ઉચી ધજાઓ, પતાકાઓ તેમજ અતિ પતાકાઓ નગરભરમા લગાઓ (लाउल्लोइयमहिय) જગા જગાપર છાણથી

करेहि य कारवेहि य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि, णिज्जाहिस्सामि समणं भगवं महावीरं अभिवंदिउं ॥ सू. ४० ॥

लोइय' इति देशीय शब्द, गोमयादिना भूमौ यद् लेपन सेटिकादिना कुड्यादिषु च यद् धवलन तद् '**लाउल्लोइय**' तेन महिताम्=सुमण्डिताम्, '**गोसीस सरस-रत्तचदण-जाव-गंधवट्टिभूयं करेहि य**' गोशीर्ष-सरस-रक्तचन्दन-यावद्-गन्धवर्तिभूता कुरु—गोशीर्ष = चन्दनविशेषं सरसरक्तचन्दनेन यावद गन्धवर्तिभूता=समुपचितगन्धद्रव्यरूपा कुरु, '**कारवेहि य**' कारय च, अन्यानपि तथा कर्तुं प्रेरय, '**करेत्ता य कारवेत्ता य**' कृत्वा च कारयित्वा च, '**एयमाणत्तिय पच्चप्पिणाहि**' एतामाज्ञा प्रत्यर्पय, आज्ञापिताऽर्थान् सम्पाद्य मह्य कथय, '**णिज्जाहिस्सामि समणं भगव महावीर अभिवदिउ**' निर्यास्यामि= निर्गमिष्यामि श्रमण भगवन्त महावीरमभिवन्दितुम ॥ सू ४० ॥

और भीतों को खडी से पुतवाओ, (**गोसीस-सरस-रत्तचदण-जाव-गधवट्टि-भूय**) गोशीर्ष-चदन विशेष, एव सरस रक्तचदन से समस्त नगर को सुगधित बनवाओ ताकि वह सुगध-पुज जैसा मालूम पडने लगे। (**करेहि य कारवेहि य**) यह सब काम स्वय करो तथा दूसरों को भी इस तरह करने के लिये प्रेरित करो। (**करेत्ता य कारवेत्ता य**) करके एव करवा करके (**एयमाणत्तिय पच्चप्पिणाहि**) इस मेरी आज्ञा को पुन मुझे प्रत्यर्पित करो-आपकी आज्ञानुसार सब काम हो चुके है इसकी मुझे खबर दो। (**णिज्जाहिस्सामि समण भगव महावीर अभिवदिउ**) बाद मे मै श्रमण भगवान महावीर की वन्दना के लिये निकलूगा ॥ सू. ४० ॥

જમીનને લીપાવો અને ભીંતોને ખડીથી ધોળાવો. (गोसीस-सरस-रत्तचंदण जाव-गधवट्टि-भूय) ગોશીર્ષ-ચન્દન વિશેષ તેમજ સરસ રક્તચદનથી સમસ્ત નગરને સુગંધિત બનાવો જેથી તે સુગધપુજ જેવી જણાવા લાગે (करेहि य कारवेहि य) આ બધુ કામ જાતે કરો તથા બીજાને પણ એવી રીતે કરવા પ્રેરિત કરો, (करेत्ता य कारवेत्ता य) કરીને તેમજ કરાવીને (एयमाणत्तिय पच्चप्पिणाहि) આ મારી આજ્ઞાને પાછી મને પ્રત્યર્પિત કરો-આપની આજ્ઞાનુસાર બધુ કામ થઈ ચૂકયુ છે એની મને ખબર દો. (णिज्जाहिस्सामि समण भगव महावीर अभिवदिउ) બાદ હુ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની વદના માટે નીકળીશ (સૂ ૪૦)

तरबाहिरियं आसित्त-सित्त-सुइ-सम्मट्ठ-रत्थंतरा-वण-वीहियं मंचा-इमंच-कलिय णाणाविह-राग-उच्छिय-ज्झय-पडागा-इपडाग-मंडियं लाउल्लोइयमहियं गोसीस-सरस-रत्तचंदण-जाव-गंधवट्टिभूयं

चम्पा च नगरीं साभ्यन्तरबाह्याम्, 'आसित्त-सित्त-सुइ-समट्ठ-रत्थतरावण-वीहियं' आसिक्त-सिक्त-शुचि-सम्मृष्ट-रथ्या तरा-ऽऽपण-वीथिकाम्-आसिक्तानि=ईषत्सिक्तानि, सिक्तानि=भूयसा जलेन धौतानि अतएव शुचीनि=पवित्राणि सम्मृष्टानि=कचवरापनयनेन संशोधितानि रथ्यान्तराणि=रथ्यामध्यानि आपणवीथयश्च-हट्टमार्गा यस्यां सा आसिक्त-सिक्त-शुचि-सम्मृष्ट-रथ्याऽन्तराऽऽपण-वीथिका, ताम्, 'मचा-इमच-कलियं' मञ्चा तिमञ्च-कलिताम्-मञ्चा=मालका-दर्शकजनोपवेशनयोग्या, अतिमञ्चा=मञ्चोपरिमञ्चा, तै कलिता-युक्ता ताम्, 'णाणाविह-राग-उच्छिय-ज्झय-पडागा-इपडाग-मडिय' नानाविध-रागोच्छ्रित-ध्वज-पताकाऽतिपताका-मण्डिताम्-नानाविधरागा=विविधवर्णा ये उच्छ्रिता ध्वजा, पताका-तिपताका - पताका - ध्वजाग्रवर्तिचेलाञ्चलानि, पताकामतिक्रान्ता अतिपताका =पताकोपरिवर्तिन्य पताका, ताभिर्मण्डिताम्=सुशोभिताम्-नानाविधवर्णसमुच्छ्रितध्वज-पताकाऽतिपताकाभिर्मण्डितामित्यर्थ । 'लाउ-ल्लोइय-महियं' लाउल्लोइयमहिताम्-'लाउ-

तरबाहिरिय) चंपानगरी को भीतर एव बाहिर से (आसित्त-सित्त-सुइ-समट्ठ-रत्थतरावणवीहिय) पहिले थोड़े से जल से छिडकवा कर पीछे अधिक जल से छिडकवाकर गलियों के एव बजारों के रस्तों को साफ-सूफ करवाओ और जहा भी कूडा-कर्कट पडा हो उसे झड-वाकर साफ करवाओ, (मचा-इमच-कलिय णाणाविह-राग-उच्छिय-ज्झय-पडागा-इपडाग-मडिय) मार्ग म आजू-बाजू मचों पर मच जमवाकर लगवा दो, ताकि लोग उन पर अच्छी तरह से बैठ सके । अनेक रगों की ऊँची २ ध्वजाएँ, पताकाएँ एव अतिपता-काए नगर भर मे लगाओ, (लाउल्लोइयमहिय) जगह २ पर गोबर से जमीन को लिपवाओ

सुइ-संमट्ठ-रत्थतरावण-वीहिय) પહેલા થોડા૦ પાણીનો છટકાવ કરીને પછી વધારે પાણી છટાવીને ગલિયોના તેમજ બજારોના રસ્તાઓને સાફસૂફ કરાવો, અને જ્યા પણ કૂડા-કર્કટ (કચરોપૂજો) પડયો હોય તેને ઝાડુ મરાવી સાફ કરાવો (मचा-इमच-कलिय णाणाविह-राग-उच्छिय-ज्झय-पडागा-इपडाग-मडिय) માર્ગમા આજુબાજુ મચ ઉપર મચ ગોઠવાવી દો જેથી લોકો તેમનાપર સારી રીતે બેસી શકે અનેક રગોની ઉચી ઉચી ધજાઓ, પતાકાઓ તેમજ અતિ પતાકાઓ નગરભરમા લગાઓ (लाउल्लोइयमहिय) જગા જગાપર છાણથી

खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि, हय-गय-रह-पवरजोह-कलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेहि, सण्णाहेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ॥ सू० ४१ ॥

आमंतेइ' हस्तिव्यापृतमामन्त्रयति=महामात्रमाह्वयति, 'आमंतेत्ता' आमन्त्र्य-आहूय 'एवं वयासी' एवमवादीत्-'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि' क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिय! कूणिकस्य राज्ञो भम्भसारपुत्रस्य आभिषेक्यं हस्तिरत्नं परिकल्पय, आभिषेक्यं हस्तिरत्न=प्राप्ताभिषेकं मुख्यं हस्तिरत्नं परिकल्पय=सुसज्जितं कुरु, 'हय-गय-रह-पवरजोह-कलियं' हय-गज-रथ-प्रवरयोध-कलिताम्, 'चाउरंगिणिं सेणं' चतुरङ्गिणीं सेनाम्, 'सण्णाहेहि' =नाहय-सन्नद्धां कुरु, 'एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि' एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पय-इमा मदीयामाज्ञां सम्पाद्य मह्यं निवेदय-इत्थं राज्ञाऽऽज्ञप्तो बलव्यापृतो हस्तिव्यापृतमाज्ञापयामास ॥ सू० ४१ ॥

(पडिसुणित्ता हत्थिवाउयं आमंतेइ) राजा का आदेश प्रमाण कर उसने तुरत ही हाथियों के अधिकारी को बुलाया, (आमंतेत्ता) बुलाकर (एवं) इस प्रकार (वयासी) वह बोला-(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रिय! तुम शीघ्र ही (कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि) भंभसार अर्थात् श्रेणिक राजा के पुत्र कूणिक राजा के पट्टहस्ती को सुसज्जित करो। (हय-गय-रह-पवरजोह-कलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेहि) साथ में हय-अश्व, गज-अन्यहाथी, रथ, प्रवरभट इनसे युक्त

આદેશનો સ્વીકાર કરી લીધો. (पडिसुणित्ता हत्थिवाउयं आमंतेइ) રાજાના આદેશને પ્રમાણ કરી તેણે તત્કાળ હાથીઓના અધિકારીને બોલાવ્યો. (आमंतेत्ता) બોલાવીને (एवं) આ પ્રકારે (वयासी) તેણે કહ્યું-(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया) હે દેવાનુપ્રિય! તમે તુરત જ (कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि) ભંભસાર અર્થાત્ શ્રેણિક રાજાના પુત્ર કૂણિક રાજાના પટ્ટહસ્તિને તૈયાર કરો. (हय-गय-रह-पवरजोह-कलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेहि) સાથે સાથે હય ઘોડા, ગજ-બીજા હાથી, રથ, પ્રવરભટ એથી યુક્ત ચતુરંગિણી સેનાને પણ તૈયાર કરો. (सण्णाहेत्ता) સન્નદ્ધ કરીને (एयमाणत्तियं

मूलम्—तए णं से बलवाउए कूणिएणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ–जाव–हियए करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामित्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता हत्थिवाउयं आमंतेइ, आमंतेत्ता एवं वयासी–

टीका–'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से बलवाउए' ततः खलु स बलव्यापृतः–सेनापतिः 'कूणिएणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे' कूणिकेन राज्ञा एवमुक्तः सन्, 'हट्ठतुट्ठ जाव-हियए' हृष्टतुष्टयावद्धृदयः 'करयलपरिग्गहियं' करतलपरिगृहीत–बद्धकरतलयुगलम्, 'सिरसावत्तं' शिरआवर्त्तं 'मत्थए अंजलिं कट्टु' मस्तके अञ्जलिं कृत्वा 'एवं सामित्ति आणाए विणएण वयण पडिसुणेइ' एवं स्वामिन्! इति आज्ञाया विनयेन वचनं प्रतिशृणोति=एवं स्वामिन्! यथाज्ञापयति देवस्तत्तथैव संपादयामि–इत्युक्त्वा आज्ञाया वचनं सविनयं प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य–'हत्थिवाउयं

'तए ण से बलवाउए' इत्यादि।

(तए णं) इसके बाद (से बलवाउए) वह सेनापति (रण्णा एववुत्ते समाणे) राजा के द्वारा इस प्रकार से आज्ञापित होता हुआ (हट्ठ–तुट्ठ–जाव–हियए करयल–परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एव सामित्ति आणाए विणएण वयण पडिसुणेइ) विशेष हर्षित एव संतुष्ट हुआ, यावत् अन्तःकरण मे प्रफुल्लित हो गया। दोनों हाथों को जोडकर मस्तकपर अञ्जलिरूप मे उन्हें स्थापित करते हुए फिर वह इस प्रकार बोला कि हे स्वामिन्! आपने जिस प्रकार का आदेश प्रदान किया है वह मै उसी प्रकार से संपादित करूँगा। इस रीति से विनयपूर्वक उसने राजा के आदेश को स्वीकार कर लिया।

'तए ण से बलवाउए' ईत्यादि

(तए ण) त्यार पछी (से बलवाउए) ते सेनापति (रण्णा एव वुत्ते समाणे) राजाना द्वारा आ प्रकारे आज्ञापित थतां (हट्ठ–तुट्ठ–जाव–हियए करयल–परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एव सामित्ति आणाए विणएण वयण पडिसुणेइ) विशेष हर्षित तेमज संतुष्ट थयो, यावत् अंतःकरणमां प्रफुल्लित थई गयो. बन्ने हाथो जोडीने मस्तक उपर अंजलिरूपे तेमने स्थापित करी पछी ते आ प्रकारे बोल्यो– के हे स्वामिन्! आपे जे प्रकारनो आदेश प्रदान कर्यो छे ते हुं तेवीज रीते संपादित करीश आ रीते विनयपूर्वक तेणे राजाना

हव्व–परिवत्थियं सुसज्जं धम्मिय–सण्णद्ध–वद्ध–कवइय–उप्पी-
लिय–कच्छ–वच्छ–गेवेय–वद्ध–गलवर–भूपण-विरायंत अहिय-
तेय-जुत्तं सललिय–वर–कण्णपूर–विराइयं पलंब-ओचूल-महुयर-

णेवत्थ–हव्व–परिवत्थिय' उज्ज्वल–नेपथ्य–शीघ्र–परिवस्त्रितम्–उज्ज्वल्नेपथ्येन=निर्मल-वेषरचनया शीघ्र, परिवस्त्रित–आच्छादितम्, अलङ्कृतमित्यर्थ अतएव 'सुसज्जं' कृतसन्नाहम्, 'धम्मिय–सण्णद्ध–वद्ध–कवइय–उप्पीलिय–कच्छ–वच्छ–गेवेय–वद्ध–गलवर–भूसण–विरायंत' धार्मिक–सनद्ध–बद्ध–कवचिको–पीडित–कक्ष–वक्षो–ग्रैवेय–बद्ध–गलवर–भूषण–विराजमानम्, धार्मिक सन्नद्ध=सज्जीकृत बद्ध यत् कवच=सन्नाह-विशेष, तदस्यास्तीति–धार्मिकसन्नद्धबद्धकवचिकम्, उत्पीडिता=आकृष्य बद्धा, कक्षा=बन्धन-रज्जु, वक्षसि=वक्ष स्थले यस्य तत् तथा, ग्रैवेयक=ग्रीवाभूषण बद्ध गले=कण्ठे यस्य तत् तथा, वरभूषणै = अन्यैर्गजस्य श्रेष्ठाभरणैर्विराजमानम् 'अहियतेयजुत्त' अधिकतेजोयुक्तम्=परमतेजस्वि, 'सललिय–वरकण्णपूर–विराइय' सललित–वरकर्णपूर–

यों के शृगार करने वाले (सुणिउणेहिं) निपुण व्यक्तियों से (उज्जल-णेवत्थ-हव्व-परिवत्थिय) हाथीका शृगार करवाया, इसमें सर्वप्रथम उन कुशल पुरुषों ने उसे निर्मल भूषणों की रचना से अलकृत किया। (सुसज्जं) उस पर अच्छी तरह से झूलें वगैरह सजायीं। (धम्मिय-सण्णद्ध-वद्ध-कवइय-उप्पीलिय-कच्छ-वच्छ गेवेय-वद्ध-गलवर-भूपण-विरायत) धार्मिक उत्सव के समय जैसा हाथी का शृगार होता है ठीक वैसा ही शृगार इसका किया गया। पेट या छाती पर इसके मजबूत कवच कसकर बाधा गया। गले मे इसके आभूषण पहिनाए गये। और इसके अग–उपागों मे सुदर २ उसके योग्य आभूषण

દ્વારા વિવિધ પ્રકારેથી હાથીઓના શૃગાર કરવાવાળા (सुणिउणेहिं) નિપુણ વ્યકિતઓ દ્વારા (उज्जल णेवत्थ हव्व परिवत्थिय) હાથીના શણગાર કરાવ્યા, તેમા સર્વથી પ્રથમ તે કુશળ પુરૂષોએ તેને સુન્દર અલકારોની રચનાથી અલકૃત કર્યા, (सुसज्जं) તેના ઉપર સારી રીતે ઝૂલો વગેરે સજાવી (धम्मिय सण्णद्ध–वद्ध–कवइय–उपीलिय–कच्छ–वच्छ–गेवेय–वद्ध– गलवर – भूपण – विरायत) ધાર્મિક ઉત્સવના સમયે જેવો હાથીનો શણગાર હોય છે તેવો જ બરાબર શણગાર તેનો કર્યો પેટ અથવા છાતી ઉપર મજબૂત કવચ કસીને તેને બાધ્યુ ગળામા તેને આભૂષણો પહેરાવવામા આવ્યા તેના બીજા અગો તથા ઉપાગોમા સુન્દર સુદર તેને યોગ્ય આભૂષણો પહેરાવ્યા (अहिय–

मूलम्—तए णं से हत्थिवाउए वलवाउयस्स एयमट्ठं सोच्चा आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता छेयायरिय-उवएस-मइ-कप्पणा-विकप्पेहिं सुणिउणेहिं उज्जल—णेवत्थ-

टीका—'तए ण से' इत्यादि। 'तए णं' ततः=बलव्यापृताज्ञाऽनन्तरं खलु 'से हत्थिवाउए' स हस्तिव्यापृत—महामात्रः, 'वलवाउयस्स एयमट्ठं सोच्चा' बलव्यापृतस्य एतमर्थं=सुसज्जितगजाऽऽनयनादिरूपं वचनं श्रुत्वा, 'आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ' आज्ञाया विनयेन वचनं प्रतिशृणोति—विनयपूर्वकमाज्ञावचनं=सेनापतिनिर्देशमङ्गीकरोति, 'पडिसुणित्ता' प्रतिश्रुत्य 'छेयायरिय—उवएस—मइ—कप्पणा—विकप्पेहिं' छेकाऽऽचार्योपदेश—मति—कल्पना—विकल्पैः—छेकाचार्यस्य=पटुतरशिल्पशिक्षकस्योपदेशाज्जाता या मतिः=बुद्धिः तया या कल्पना=सज्जना—हस्तिनां शृङ्गारसमारचना, तां विविधप्रकारेण कल्पयन्ति ये ते तथा तैः सुशिक्षकोपदेशलब्धबुद्ध्या विशिष्टशिल्पकल्पनाकारकैरित्यर्थः, अतएव 'सुणिउणेहिं' सुनिपुणैः—गजादिशृङ्गाररचनाकुशलैः 'उज्जल—

चतुरंगिणी सेना को भी सुसज्जित करो। (सण्णाहेत्ता) सन्नद्ध करके (एयमाणत्तिय पञ्चप्पिणाहि) बाद में इस मेरी आज्ञा के यथावत् पालन करने की हमें पीछे खबर दो ॥सू. ४१॥

'तए ण से हत्थिवाउए' इत्यादि।

(तए ण) सेनापति के आदेश देने के बाद (से हत्थिवाउए) वह हाथियों का अधिकारी (वलवाउयस्स) सेनापति के (एयमट्ठं) इस बातको (सोच्चा) सुनकर (आणाए वयण) आज्ञा के वचन को (विणएण) विनयपूर्वक (पडिसुणेइ) स्वीकार किया। (पडिसुणित्ता) स्वीकार कर उसने (छेयायरिय-उवएस मइ-कप्पणा विकप्पेहिं) छेकाचार्य—विशिष्टनिपुणशिल्पशिक्षक के उपदेश से उद्भूत बुद्धि द्वारा विविध प्रकारकी रचना से हाथि-

पच्चप्पिणाहि) પછી આ મારી આજ્ઞાને યથાવત્ પાળી તેની અને પાછી ખબર આપો (સૂ. ૪૧)

'तए ण से हत्थिवाउए' ઈત્યાદિ

(तए ण) સેનાપતિએ આદેશ દીધા પછી (से हत्थिवाउए) તે હાથીઓના અધિકારી (वल्वाउयस्स) સેનાપતિની (एयमट्ठ) એ વાતને (सोच्चा) સાભળીને (आणाए वयण) આજ્ઞાના વચનને (विणएण) વિનયપૂર્વક (पडिसुणेइ) સ્વીકાર કર્યો, (पडिसुणित्ता) સ્વીકાર કરીને તેણે (छेयायरिय—उवएस—मइ—कप्पणा विकप्पेहिं) છેકાચાર્ય-વિશિષ્ટ નિપુણ શિલ્પ શિક્ષકના ઉપદેશથી ઉદ્ભવેલી બુદ્ધિ-

हव्व--परिवत्थियं सुसज्जं धम्मिय--सण्णद्ध--बद्ध--कवइय--उप्पी-
लिय--कच्छ--वच्छ--गेवेय--बद्ध--गलवर--भूषण-विरायंतं अहिय-
तेय-जुत्तं सललिय--वर--कण्णपूर--विराइयं पलंब-ओचूल-महुयर-

णेवत्थ--हव्व--परिवत्थिय' उज्ज्वल--नेपथ्य--शीघ्र--परिवस्त्रितम्--उज्ज्वलनेपथ्येन=निर्मल-वेषरचनया शीघ्र, परिवस्त्रित--आच्छादितम्, अलकृतमित्यर्थ अतएव 'सुसज्जं' कृतसन्नाहम्, 'धम्मिय--सण्णद्ध--बद्ध--कवइय--उप्पीलिय--कच्छ--वच्छ--गेवेय--बद्ध--गलवर--भूसण--विरायंत' धार्मिक--सन्नद्ध--बद्ध--कवचिको--पीडित--कक्ष--वक्षो--ग्रैवेय--बद्ध--गलवर--भूषण--विराजमानम्, धार्मिक सन्नद्ध=सज्जीकृत बद्ध यत् कवच=सन्नाह-विशेष, तदस्यास्तीति--धार्मिकसन्नद्धबद्धकवचिकम्, उत्पीडिता=आकृष्य बद्धा, कक्षा=बन्धन-रज्जु, वक्षसि=वक्षःस्थले यस्य तत् तथा, ग्रैवेयक=ग्रीवाभूषण बद्ध गले=कण्ठे यस्य तत् तथा, वरभूषणै = अन्यैर्गजस्य श्रेष्ठाभरणैर्विराजमानम् 'अहियतेयजुत्त' अधिकतेजोयुक्तम्=परमतेजस्वि, 'सललिय--वरकण्णपूर--विराइय' सललित--वरकर्णपूर--

यों के शृगार करने वाले (सुणिउणेहिं) निपुण व्यक्तियों से (उज्जल णेवत्थ-हव्व-परिवत्थिय) हाथीका शृगार करवाया, इसमें सर्वप्रथम उन कुशल पुरुषों ने उसे निर्मल भूषणों की रचना से अलकृत किया। (सुसज्जं) उस पर अच्छी तरह से झूले वगैरह सजाये। (धम्मिय-सण्णद्ध-बद्ध-कवइय-उप्पीलिय-कच्छ-वच्छ-गेवेय-बद्ध-गलवर-भूषण-विरायंत) धार्मिक उत्सव के समय जैसा हाथी का शृगार होता है ठीक वैसा ही शृगार इसका किया गया। पेट या छाती पर इसके मजबूत कवच कसकर बाधा गया। गले में इसके आभूषण पहिनाए गये। और इसके अग--उपागों में सुदर २ उसके योग्य आभूषण

દ્વારા વિવિધ પ્રકારોથી હાથીઓના શૃગાર કરવાવાળા (सुणिउणेहिं) નિપુણ વ્યક્તિઓ દ્વારા (उज्जल णेवत्थ हव्व परिवत्थिय) હાથીના શણગાર કરાવ્યા, તેમા સર્વથી પ્રથમ તે કુશળ પુરૂષોએ તેને સુન્દર અલકારોની રચનાથી અલકૃત કર્યો, (सुसज्जं) તેના ઉપર સારી રીતે ઝૂલો વગેરે સજાવી (धम्मिय सण्णद्ध--बद्ध--कवइय--उप्पीलिय--कच्छ--वच्छ--गेवेय--बद्ध-- गलवर -- भूषण -- विरायंत) ધાર્મિક ઉત્સવના સમયે જેવો હાથીનો શણગાર હોય છે તેવો જ બરાબર શણગાર તેનો કર્યો પેટ અથવા છાતી ઉપર મજબૂત કવચ કસીને તેને બાધ્યુ ગળામા તેને આભૂષણો પહેરાવવામા આવ્યા તેના બીજા અગો તથા ઉપાગોમા સુદર સુદર તેને યોગ્ય આભૂષણો પહેરાવ્યા (अहिय-

कयंधयारं चित्त-परित्थोम-पच्छयं पहरणा-वरण-भरिय-जुद्ध-

विराजितम्-सललितौ=लालित्ययुक्तौ यो वरकर्णपूरौ-प्रशस्तकर्णाभरणे ताभ्यां विराजितम्, 'पलंब-ओचूल-महुयर - कयधयारं' प्रलम्बाऽवचूलमधुकरकृतान्धकारम् — प्रलम्बानि अवचूलानि=गजपृष्ठादध प्रलम्बितशृङ्गारवस्त्राभरणानि यस्य तत्तथा, तथा मधुकरैर्मदजलगन्ध-लुब्धै कृत अन्धकारो यत्र तत्तथा, तत -अनयो कर्मधारय, तत, 'चित्त-परिच्छेय-पच्छय' चित्र-परिच्छेक-प्रच्छदम्-चित्रो=विचित्र परिच्छेको=लघु प्रच्छद-आच्छादन-वस्त्रविशेषो यस्य तत्तथा तत्, 'पहरणा-वरण-भरिय जुद्ध-सज्ज' प्रहरणा-वरण-भृतयुद्ध-सज्जम्-प्रहरणावरणैरायुधकवचैर्भृत=सम्भृतम्, अत एव युद्धसज्ज=युद्धाय समुद्यतम्, 'सच्छत्त'

पहिरा दिये गये। (अहियतेयजुत्त) इससे स्वाभाविकरूप से तेज सपन्न वह गजराज देखने मे और अधिक तेजस्वी दीखने लगा। (सललिय वर-कण्णपूर-विराइयं) इसके कान में जो आभूषण—कर्णपूर पहिराने में आये थे वे चलते समय इधर उधर जब हिलते थे तब उनके द्वारा यह गजराज बडा ही सुहावना लगता था। (पलंब ओचूल-महुयर-कयधयार) इस पर जो झूल डाली गई थी वह -पीठ से नीचे तक लटक रही थी। इसके कपोल स्थल से जो मदजल झर रहा था और उसकी सुगन्धि से जो भ्रमरसमूह उनके आसपास मडरा रहा था वह ऐसा मालूम होता था कि मानो इसकी शरण में अधकार ही आया है। (चित्त-परित्थोम-पच्छयं) इसकी पीठ पर झूल के ऊपर जो छोटा सा आच्छादकवस्त्र डाला गया था वह सुन्दर वेलबूटियों से युक्त था। (पहरणा-वरण-भरिय-जुद्ध-सज्ज) प्रहरण-शस्त्र और आवरण-कवच से सुसज्जित यह हाथी ऐसा मालूम पडता था कि मानो यह युद्ध के लिये ही सजाया गया है। (सच्छत्त) यह छत्रसहित था।

तेयजुत्तं) આથી સ્વાભાવિક તેજથી સપન્ન તે ગજરાજ વધારે તેજસ્વી દેખાતો હતો. (सललिय वर-कण्णपूर-विराइय) તેના કાનમા જે આભૂષણ-કર્ણપૂર પહેરાવવામા આવ્યા હતા તે ચાલતી વખતે જ્યારે આમતેમ હાલતા હતા ત્યારે તેનાથી આ ગજરાજ બહુ જ શોભાયમાન લાગતો હતો. (पलंब ओचूल-महुयर-कयधयार) તેના પર જે ઝૂલ રાખી હતી તે પીઠથી નીચે સુધી લટકી રહી હતી તેના ગડસ્થલથી જે મદજલ ઝરી રહ્યુ હતું તથા તેની સુગધથી જે ભમરાઓના સમૂહ તેની આસપાસ ફરતો રહેતો હતો તેથી એમ જણાતુ હતુ કે જાણે તેના શરણમા અધકાર જ આવ્યો છે (चित्त-परिच्छेय पच्छय) તેની પીઠ પર ઝૂલ ઉપર જે નાનુ ઢાકેલુ વસ્ત્ર નાખ્યુ હતું તે સુદર વેલ-બૂટિયોથી યુક્ત હતુ (पहरणा वरण भरिय जुद्ध-सज्ज) પ્રહરણ-શસ્ત્ર અને આવરણ-કવચથી સુસજ્જિત આ હાથી એવો લાગતો હતો કે

सज्जं सच्छत्तं सज्झयं सघंटं सपडागं पंचामेलय–परिमंडिया-भिरामं ओसारिय–जमल–जुयल–घंटं विज्जुपिणद्धं व कालमेहं उप्पाइयपव्वयं व चंकमंतं मत्तं गुलगुलंतं मण–पवण–जइण–वेगं

सच्छत्रम्–छत्रयुक्तम्, 'सज्झय' सध्वजम्–ध्वजयुक्तम् 'सघंटं' सघण्टम्–घण्टाभूषितो-भयपार्श्वम्, 'पंचामेलय–परिमंडिया–भिराम' पञ्चामेलक–परिमण्डिताऽभिरामम्–पञ्चभिरामेलकैः=पञ्चवर्णाभिः पुष्पमालाभिः परिमण्डितम्–अतएव अभिराम=सुन्दरं यत्तथा तत्, 'ओसारिय–जमल–जुयल–घंट' अवसारित–यमल–युगल–घण्टम्–अवसारितम्=अधोऽवलम्बित यमल=सम युगल=द्विक घण्टयोर्यत्र तत् तथा तत्, 'विज्जुपिणद्धं' विद्युपिनद्धम्–विद्युद्दियोतित 'कालमेहं व' कालमेघमिव–गजस्य कृष्णवर्णत्वात उच्चतया च मेघोपमा, 'उप्पाइय–पव्वय व' औत्पातिकपर्वतमिव–अकस्मान्नूतनसमुद्भूतपर्वतमिव, 'चंकमत' चङ्क्रम्यमाणम्–अतिशयेन क्राम्यत–स्वाभाविकपर्वतो हि न चङ्क्रम्यते इति भाव । 'गुलगुलतं' ध्वनन्=महामेघवद् ध्वनिं कुर्वत्–इत्यर्थ, 'मण–पवण-जइण-वेग'

(सज्झय) ध्वजासहित था (सघंट) घंटाओं से इसके उभयपार्श्व युक्त थे। (पंचामेलय–परिमडिया–भिरामं) पांचवर्ण के पुष्पमाला पहनाने के कारण यह अत्यन्त सुन्दर लगता था। (ओसारिय–जमल–जुयल–घंट) नीचे तक एक ही साथ लटकते हुए दो घंटों से यह शोभित था। (विज्जुपिणद्ध) इस पर जो भी आभरण सजाये गये थे वे बिजली के समान चमकते थे, अत यह गजराज (कालमेह व) कृष्णवर्ण होने से काला मेघ के जैसा ज्ञात होता था। (चकमत उप्पाइयपव्वय व) चलते समय यह औत्पातिक पर्वत के समान दिखायी देता था। (गुलगुलत) जब यह चिंघाडता था तो ऐसा प्रतीत होता

જાણે એ યુદ્ધને માટે જ સજાએલો છે (सच्छत्त) એ છત્રસહિત હતો. (सज्झयं) ધ્વજસહિત હતો (सघट) ઘંટાઓ બન્ને બાજુ લટકતી હતી (पंचामेलय–परिमंडिया–भिरामं) પાંચ વર્ણની પુષ્પમાલા પહેરાવવાથી એ સુંદર લાગતો હતો. (ओसारिय–जमल–जुयल–घंट) નીચે સુધી એક સાથે લટકતા બે ઘંટાઓથી તે શોભતો હતો (विज्जुपिणद्ध) તેના પર જે કોઈ આભરણ સજાએલા હતા તે વીજળીના જેવા ચમકતા હતા આથી આ ગજરાજ (कालमेह व) કૃષ્ણવર્ણ હોવાથી કાલા મેઘના જેવો જણાતો હતો. (चकमत उप्पाइयपव्वयं व) ચાલતી વખતે એ ઔત્પાતિક પર્વતના જેવો દેખાતો હતો. (गुलगुलत) જ્યારે તે ગરજતો હતો ત્યારે એમ પ્રતીત થતું હતું કે જાણે

भीमं संगामियाओज्जं आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेइ, पडिकप्पित्ता हय–गय–रह–पवरजोह–कलियं चाउरंगिणीं सेणं सण्णाहेइ, जेणेव बलवाउए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ॥ सू० ४२ ॥

मन पवनजयिवेग–गया मन पवनाधिकवेगयुक्त, 'भीमं' भयङ्करम्, 'संगामियाओज्जं' सांग्रामिकाऽऽयोग्यम्–संग्राम एव सांग्रामिकं तस्मिन् आयोज्यम्=आयोजनीय–संग्रामयोग्यमित्यर्थः, 'आभिसेक्कं हत्थिरयणं' आभिषेक्यं हस्तिरत्नम्–अभिषेकार्हं हस्तिश्रेष्ठम्, 'पडिकप्पेइ' परिकल्पयति, 'पडिकप्पित्ता' परिकल्प्य, 'हय-गय-रह-पवरजोह-कलियं' हय–गज–रथ–प्रवरयोध–कलिताम्–हयैर्गजै रथैः प्रवरयोधैः महारथिभिर्युक्ताम्, 'चाउरंगिणिं सेणं' चतुरङ्गिणीं सेनाम्=चतुरङ्गवतीं सेनाम्, 'सण्णाहेइ' सन्नाहयति, 'जेणेव बलवाउए' यत्रैव बलव्यापृत–सेनापतिः, 'तेणेव उवागच्छइ' तत्रैवोपागच्छति, 'उवागच्छित्ता' उपागत्य, 'एयमाणत्तियं' एतामाज्ञप्तिकाम्–सेनापतेराज्ञाम् 'पच्चप्पिणइ' प्रत्यर्पयति–तदीयामाज्ञां सम्पाद्य पश्चान्निवेदयति, भवदाज्ञानुसारेण सर्वं सम्पादितमस्माभिरिति ॥ ४२ ॥

कि मानो महामेघकी गर्जना हो रही है। (मण–पवण–जइण–वेग) इसकी गति मन और पवन के वेग को जीतने वाली थी, (भीम) देखने में यह बडा भयकर जैसा लगता था। (संगामियाओज्जं) इस के ऊपर जितनी भी सामग्रियाँ रखने में आई थीं वे सब संग्राम के योग्य थीं। (आभिसेक्क हत्थिरयण) इस प्रकार इस पट्टहस्ति को (पडिकप्पेइ) उन निपुण मतिवाले पुरुषों से सजवाया, (पडिकप्पित्ता) सजवाने के बाद फिर उस हाथी के अधिकारी ने उन निपुण पुरुषों से (हय–गय–रह–पवरजोह–कलिय चाउरंगिणि

મહામેઘની ગર્જના થાય છે (मण-पवण-जइण-वेग) તેની ગતિ મન તથા પવનના વેગને જીતે એવી હતી (भीम) જોવામાં એ બહુ ભયંકર જેવો લાગતો હતો (संगामियाओज्ज) તેના ઉપર જેટલીએ સામગ્રીઓ રાખવામાં આવી હતી તે બધી સંગ્રામને યોગ્ય હતી (आभिसेक्क हत्थिरयण) આ પ્રકારે એ પટ્ટહસ્તિને (पडिकप्पेइ) તે નિપુણ બુદ્ધિવાલા પુરુષોએ સજાવ્યો હતો (पडिकप्पित्ता) તૈયાર કરી લીધા પછી તે હાથીના અધિકારીએ તે નિપુણ પુરુષોદ્વારા (हय-गय रह-पवर-जोहकलिय चाउरंगिणिं सेण सण्णाहेइ) ઘોડા,

मूलम्—तए णं से वलवाउए जाणसालियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सुभद्दा-पमुहाणं देवीणं वाहिरियाए उवट्ठाणसालाए पाडियक्कपाडियक्काइं

टीका—'तए णं से' इत्यादि। 'तए ण से वलवाउए' तत खलु स बलव्यापृत –तदनन्तरम्–चतुरङ्गिणीसेनासज्जीकरणानन्तर स सेनापति 'जाणसालिय' यानशालिक=यानशालाधिकृतम्, 'सद्दावेइ' शब्दयति=आह्वयति, 'सद्दावित्ता एव वयासी' शब्दयित्वा एवमवादीत् 'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !' क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिय ! 'सुभद्दापमुहाण देवीण' सुभद्राप्रमुखाना=सुभद्रादीना देवीना 'वाहिरियाए उवट्ठाण-

सेण सण्णाहेइ) घोडा, हाथी, रथ एव सुभटों से युक्त चतुरगिणी सेना सजवायी, सज-वा कर (जेणेव वलवाउए) जहाँ पर सेनापति थे (तेणेव उवागच्छइ) वहाँ पर गया, (उवागच्छित्ता) पहुँचकर (एयमाणत्तिय पच्चप्पिणइ) उसने निवेदन किया कि आपने जो आज्ञा प्रदान की थी वह सव मैने आपकी आज्ञानुसार ठीक कर लिया है ॥ सू० ४२ ॥

'तए ण से वलवाउए' इत्यादि ।

(तए णं) चतुरगिणी सेना जब सजी जा चुकी तब (से वलवाउए) उस सेना-पतिने (जाणसालिय) यानशाला के अधिकारी को (सद्दावेइ) बुलाया, (सद्दावित्ता) बुलाकर (एव वयासी) इस प्रकार कहा–(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रिय ! तुम शीघ्र ही (सुभद्दापमुहाण देवीण) सुभद्रा आदि देवियों के लिये (वाहिरियाए उवट्ठाणसालाए) बाहिर की उपस्थानशाला मे (पाडियक्कपाडियक्काइ) एक एक रानी

હાથી, રથ તેમજ સુભટોથી યુક્ત ચતુરંગિણી સેના તૈયાર કરાવી. તૈયાર કરાવીને (जेणेव वलवाउए) જ્યા સેનાપતિ હતા (तेणेव उवागच्छई)ત્યા ગયા, (उवागच्छित्ता) તેણે ત્યા પહોચીને (एयमाणत्तिय पच्चप्पिणइ) નિવેદન કર્યું કે આપે જે આજ્ઞા આપી હતી તે બધુ મે આપની આજ્ઞાપ્રમાણે ઠીક કરી લીધુ છે (સૂ૦ ૪૨)

'तए ण से वलवाउए' ઈત્યાદિ

(तए णं) ચતુરંગિણી સેના જ્યારે તૈયાર થઈ ચુકી ત્યારે (से वलवाउए) તે સેનાપતિએ (जाणसालिय) યાનશાલાના અધિકારીને (सद्दावेइ) બોલાવ્યો, (सद्दावित्ता) બોલાવીને (एव वयासी) આ પ્રકારે કહ્યુ –(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જલદી (सुभद्दापमुहाण देवीण) સુભદ્રા આદિ દેવીઓ માટે (वाहिरियाए उवट्ठाणसालाए) બહારની ઉપસ્થાનશાલામા (पाडियक्क

जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं उवट्ठवेहि, उवट्ठवित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ॥ सू० ४३ ॥

मूलम्—तए णं से जाणसालिए बलवाउयस्स एयमट्ठं

सालाए' यानशालायामुपस्थानशालायाम्, 'पाडियक्कपाडियक्काइं' प्रत्येक प्रत्येकम्=प्रत्येकार्थम्, 'जत्ताभिमुहाइं' यात्राभिमुखानि=भगवद्दर्शनार्थगमनानुकूलानि 'जुत्ताइं' युक्तानि 'जाणाइं' यानानि 'उवट्ठवेहि' उपस्थापय—सज्जीकृत्य समानय, 'उवट्ठवित्ता' उपस्थाप्य 'एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि' एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पय—मदीयामाज्ञां पश्चात् समर्पय—सर्वं सम्पादितम् इति ब्रूहि ॥ सू० ४३ ॥

टीका—'तए णं से' इत्यादि।

ततः खलु स 'जाणसालिए बलवाउयस्स एयमट्ठं' यानशालिको बलव्यापृतस्यैतमर्थम्=यानसज्जीकरणाऽऽनयनरूपं निर्देशं श्रुत्वा, आज्ञाया विनयेन वचनं 'पडिसुणेइ'

के बैठने योग्य अलग २ रूप मे (जत्ताभिमुहाइं) यात्रा के लायक—भगवान के दर्शन करने के लिये जिसमें बैठकर जाया जाता है ऐसे (जुत्ताइं) एवं अच्छे २ बैलों से युक्त (जाणाइं) रथादिक वाहनों को (उवट्ठवेहि) उपस्थित करो, (उवट्ठवित्ता) उपस्थित करके (एयमाणत्तियं पच्चप्पिणेहि) इस मेरी आज्ञा को यथावत् पालन करने की खबर पीछे मुझे बहुत जल्दी भेजो ॥ सू० ४३ ॥

'तए णं से जाणसालिए' इत्यादि।

(तए णं) सेनापति के आदेश देने के बाद (से जाणसालिए) उस यानशाला के अधिकारी ने (बलवाउयस्स) सेनापति के (एयमट्ठं) यान को सज्जित करके लानेकी

पाडियक्काइं) એક એક રાણીને બેસવા યોગ્ય અલગ અલગ રૂપમાં (जत्ताभिमुहाइं) યાત્રાને લાયક ભગવાનના દર્શન કરવા માટે જેમાં બેસીને જવાય એવા, (जुत्ताइं) તેમજ સારા સારા બળદોથી યુક્ત (जाणाइं) રથ આદિક વાહનોને (उवट्ठवेहि) હાજર કરો (उवट्ठवित्ता) હાજર કરીને (एयमाणत्तियं पच्चप्पिणेहि) આ મારી આજ્ઞાનું પાલન કરવાની ખબર પછી મને બહુ જલ્દી મોકલો (सू० ४३)

"तए णं से जाणसालिए" ઇત્યાદિ

(तए णं) સેનાપતિના આદેશ દીધા પછી (से जाणसालिए) તે યાનશાલાના અધિકારીએ (बलवाउयस्स) સેનાપતિની (एयमट्ठं) યાનને તૈયાર કરીને લાવ

आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव जाण-साला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाणाइ पच्चुवेक्खेइ, पच्चु-वेक्खित्ता जाणाइं संपमज्जेइ,संपमज्जित्ता जाणाइं संवट्टेइ,संवट्टित्ता जाणाइं णीणेइ, णीणित्ता जाणाणं दूसे पवीणेइ, पवीणित्ता जाणाइं

प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य=आज्ञावचनं स्वीकृत्य यत्रैव यानशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'जाणाइ पच्चुवेक्खेइ' यानानि प्रत्युपेक्षते=सम्यक् पश्यति, प्रत्युपेक्ष्य=दृष्ट्वा 'जाणाइ संपमज्जेइ' यानानि सम्प्रमार्जयति—विगतरजांसि कुरुते, सम्प्रमार्ज्य, 'जाणाइं संवट्टेइ' यानानि संवर्तयति—एकस्मिन् स्थाने स्थापयति, 'संवट्टित्ता' संवर्त्य 'जाणाइं णीणेइ' यानानि नयति—शालातो बहिष्करोति, नीत्वा 'जाणाणं' यानानां 'दूसे' दूष्याणि=आच्छादनवस्त्राणि 'पवीणेइ' प्रविनयति=अपसारयति, प्रविनीय—अपसार्य,

आज्ञा को सुनकर (आणाए विणएणं वयणं) उस आज्ञावचन को विनयपूर्वक (पडिसुणेइ) स्वीकार किया, (पडिसुणित्ता) स्वीकार करके फिर वह (जेणेव जाणसाला) जहा यानशाला थी (तेणेव उवागच्छइ) वहाँ पहुँचा, (उवागच्छित्ता) पहुँचकर (जाणाइ पच्चुवेक्खेइ) उसने वहा पहिले रथ आदि यानों को अच्छी तरह से देखा। (पच्चुवेक्खित्ता) देखकर (जाणाइ संपमज्जेइ) उसने उन्हें अच्छी तरह झाड-झड कर साफ किया। (संपमज्जित्ता जाणाइं संवट्टेइ) साफ करने के बाद उसने फिर जितने चाहिये थे उतने यान एक जगह एकत्रित किये। (संवट्टित्ता) इकट्ठ करने के बाद (जाणाइ णीणेइ) वहा से उसने उन सब को बाहिर निकाला। (णीणित्ता) बाहिर

ાની આજ્ઞા સાભળીને (आणाए विणएणं वयणं) તે આજ્ઞાવચનને વિનયપૂર્વક (पडिसुणेइ) સ્વીકાર કર્યો (पडिसुणित्ता) સ્વીકાર કરીને પછી તે (जेणेव जाणसाला) જ્યા યાનશાલા હતી (तेणेव उवागच्छइ) ત્યા પહોચ્યો (उवागच्छित्ता) પહોચીને (जाणाइ पच्चुवेक्खइ) તેણે ત્યા પહેલા રથ આદિ યાનોને સારી રીતે જોયા. (पच्चुवेक्खित्ता) જોઇને (जाणाइ संपमज्जेइ) તે તેણે સારી રીતે વાળી-ઝૂડી સાફ કર્યા (संपमज्जिता जाणाइ संवट्टेइ) સાફ કરી લીધા પછી તેણે જેટલા જોઈતા હતા તેટલા યાન (વાહન) એક જગાએ એકઠા કર્યા (संवट्टित्ता) એકઠા કરી લીધા પછી (जाणाइ णीणेइ) ત્યાથી તેણે એ બધાને બહાર કાઢયા (णीणित्ता) બહાર કાઢીને (जाणाणं दूसे

जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं उवट्ठवेहि, उवट्ठवित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ॥ सू० ४३ ॥

मूलम्—तए णं से जाणसालिए वलवाउयस्स एयमहं

सालाए' नातायामुपस्थानशालायाम्, 'पाडियक्कपाडियक्काइं' प्रत्येक प्रत्येकम्=प्रत्येकार्थम्, 'जत्ताभिमुहाइ' यात्राभिमुखानि=भगवद्दर्शनार्थगमनानुकूलानि 'जुत्ताइ' युक्तानि 'जाणाइ' यानानि 'उवट्ठवेहि' उपस्थापय—सज्जीकृत्य समानय, 'उवट्ठवित्ता' उपस्थाप्य 'एयमाणत्तिय पच्चप्पिणाहि' एतामाज्ञप्तिका प्रत्यर्पय—मदीयामाज्ञा पश्चात् समर्पय—सर्वं सम्पादितम् इति ब्रूहि ॥ सू० ४३ ॥

टीका—'तए ण से' इत्यादि ।

तत खलु स 'जाणसालिए वलवाउयस्स एयमट्ठ' यानशालिको बलव्यापृतस्यैतमर्थम्=यानसज्जीकरणाऽऽनयनरूप निर्देश श्रुत्वा, आज्ञाया विनयेन वचन 'पडिसुणेइ'

के बैठने योग्य अलग २ रूप मे (जत्ताभिमुहाइ) यात्रा के लायक–भगवान के दर्शन करने के लिये जिसमे बैठकर जाया जाता है ऐसे (जुत्ताइ) एव अच्छे २ बैलों से युक्त (जाणाइ) रथादिक वाहनों को (उवट्ठवेहि) उपस्थित करो, (उवट्ठवित्ता) उपस्थित करके (एयमाणत्तिय पचप्पिणेहि) इस मेरी आज्ञा को यथावत् पालन करने की खबर पीछे मुझे बहुत जल्दी भेजो ॥ सू० ४३ ॥

'तए ण से जाणसालिए' इत्यादि ।

(तए ण) सेनापति के आदेश देने के बाद (से जाणसालिए) उस यानशाला के अधिकारी ने (वलवाउयस्स) सेनापति के (एयमट्ठ) यान को सज्जित करके लानेकी

पाडियक्काइ) એક એક રાણીને બેસવા યોગ્ય અલગ અલગ રૂપમા (जत्ताभिमुहाइ) યાત્રાને લાયક ભગવાનના દર્શન કરવા માટે જેમા બેસીને જવાય એવા, (जुत्ताइ) તેમજ સારા સારા બળદોથી યુક્ત (जाणाइ) રથ આદિક વાહનોને (उवट्ठवेहि) હાજર કરો (उवट्ठवित्ता) હાજર કરીને (एयमाणत्तिय पच्चप्पिणेहि) આ મારી આજ્ઞાનુ પાલન કરવાની ખબર પછી મને બહુ જલ્દી મોકલો (સૂ૦ ૪૩)

"तए ण से जाणसालिए" ઈત્યાદિ

(तए ण) સેનાપતિના આદેશ દીધા પછી (से जाणसालिए) તે યાનશાલાના અધિકારીએ (वलवाउयस) સેનાપતિની (एयमट्ठ) યાનને તૈયાર કરીને લાવ

आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव जाण-साला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाणाइं पच्चुवेक्खेइ. पच्चु-वेक्खित्ता जाणाइं संपमज्जेइ, संपमज्जित्ता जाणाइं संवट्टेइ, संवट्टित्ता जाणाइं णीणेइ, णीणित्ता जाणाणं दूसे पवीणेइ, पवीणित्ता जाणाइं

प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य=आज्ञावचनं स्वीकृत्य यत्रैव यानशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'जाणाइं पच्चुवेक्खेइ' यानानि प्रत्युपेक्षते=सम्यक् पश्यति, प्रत्युपेक्ष्य=दृष्ट्वा 'जाणाइं संपमज्जेइ' यानानि सम्प्रमार्जयति–विगतरजांसि कुरुते, सम्प्रमार्ज्य, 'जाणाइं संवट्टेइ' यानानि संवर्तयति–एकस्मिन् स्थाने स्थापयति, 'संवट्टित्ता' संवर्त्य 'जाणाइं णीणेइ' यानानि नयति–शालातो बहिष्करोति, नीत्वा 'जाणाणं' यानानां 'दूसे' दूष्याणि=आच्छादनवस्त्राणि 'पवीणेइ' प्रविनयति=अपसारयति, प्रविनीय–अपसार्य,

आज्ञाको सुनकर (आणाए विणएण वयण) उस आज्ञावचन को विनयपूर्वक (पडिसुणेइ) स्वीकार किया, (पडिसुणित्ता) स्वीकार करके फिर वह (जेणेव जाणसाला) जहा यानशाला थी (तेणेव उवागच्छइ) वहाँ पहुँचा, (उवागच्छित्ता) पहुँचकर (जाणाइं पच्चुवेक्खेइ) उसने वहा पहिले रथ आदि यानों को अच्छी तरह से देखा। (पच्चुवेक्खित्ता) देखकर (जाणाइं संपमज्जेइ) उसने उन्हें अच्छी तरह झाड-झूड कर साफ किया। (संपमज्जित्ता जाणाइं संवट्टेइ) साफ करने के बाद उसने फिर जितने चाहिये थे उतने यान एक जगह एकत्रित किये। (संवट्टित्ता) एकट्ठ करने के बाद (जाणाइं णीणेइ) वहा से उसने उन सब को बाहिर निकाला। (णीणित्ता) बाहिर

વાની આજ્ઞા સાભળીને (आणाए विणएण वयण) તે આજ્ઞાવચનનો વિનયપૂર્વક (पडिसुणेइ) સ્વીકાર કર્યો (पडिसुणित्ता) સ્વીકાર કરીને પછી તે (जेणेव जाणसाला) જ્યા યાનશાલા હતી (तेणेव उवागच्छइ) ત્યા પહોચ્યો (उवागच्छित्ता) પહોચીને (जाणाइ पच्चुवेक्खइ) તેણે ત્યા પહેલા રથ આદિ યાનોને સારી રીતે જોયા. (पच्चुवेक्खित्ता) જોઇને (जाणाइ संपमज्जेइ) તે તેણે સારી રીતે વાળી-ઝૂડી સાફ કર્યા (संपमज्जिता जाणाइ संवट्टेइ) સાફ કરી લીધા પછી તેણે જેટલા જોઈતા હતા તેટલા યાન (વાહન) એક જગાએ એકઠા કર્યા (संवट्टिता) એકઠા કરી લીધા પછી (जाणाइ णीणेइ) ત્યાથી તેણે એ બધાને બહાર કાઢ્યા (णीणित्ता) બહાર કાઢીને (जाणाण दूसे

समलंकरेइ, समलंकरित्ता जाणाइं वरभडगमंडियाइं करेइ, करित्ता जेणेव वाहणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वाहणसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता वाहणाइं पच्चुवेक्खेइ, पच्चुवेक्खित्ता वाहणाइं संपमज्जइ, संपमज्जित्ता वाहणाइं णीणेइ, णीणित्ता वाह-

'जाणाइं समलंकरेइ' यानानि समलङ्करोति=यथायोग्यमाभिः स्नालङ्काराणि करोति, समलङ्कृत्य 'जाणाइं वरभडगमंडियाइं' यानानि वरभाण्डकमण्डितानि=वराभरणभूषितानि 'करेइ' करोति, कृत्वा यत्रैव वाहनशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, वाहनशालामनुप्रविशति, अनुप्रविश्य 'वाहणाइं पच्चुवेक्खेइ' वाहनानि प्रत्युपेक्षते, तेषामङ्गप्रत्यङ्ग-सौन्दर्यं पश्यति, दृष्ट्वा—वाहनानि 'संपमज्जइ' सम्प्रमार्जयति=निर्मलीकरोति, सम्प्रमार्ज्य वाह-

निकालकर (जाणाइं दूसे पवीणेइ) उनके ऊपर के वस्त्रों को उसने दूर किया। (पवीणित्ता) जब वस्त्र कि जिनसे ये ढके हुए थे दूर हो चुके तब उसने (जाणाइं समलंकरेइ) उन सब यानों को अलंकृत किया। (समलंकरित्ता) जब वे अच्छी तरह अलंकृत हो चुके तब (जाणाइं वरभडगमंडियाइं करेइ) उन यानों को उसने अच्छी रीति से गादी-तकिया आदि उपकरणों से मंडित किया। (करित्ता) सुसज्जित कर (जेणेव वाहणसाला तेणेव उवागच्छइ) फिर वह जहां वाहनशाला थी वहाँ पहुँचा, (उवागच्छित्ता) पहुँच कर (वाहणसालं अणुपविसइ) वह उस वाहनशाला के भीतर प्रविष्ट हुआ। (अणुपविसित्ता) प्रविष्ट होकर (वाहणाइं पच्चुवेक्खेइ) उसने वाहनों को देखा (पच्चुवे-

पवीणेइ) तेमना उपरना वस्त्रोने तेणे दूर मूकया (पवीणित्ता) ज्यारे ते वस्त्रो के जेनाथी ते ढंकाया हता ते दूर थई गया त्यारे तेणे (जाणाइं समलंकरेइ) ते बधा यानोने शणगार्यां (समलंकरित्ता) ज्यारे ते सारी रीते अलंकृत थई चुकया त्यारे (जाणाइं वरभडगमंडियाइं करेइ) ते यानोने तेणे सारीरीतथी गादी तकिया आदि उपकरणोथी मंडित कर्यां (करित्ता) सुसज्जित करीने (जेणेव वाहणसाला तेणेव उवागच्छइ) पछी ते ज्यां वाहनशाला हती त्यां पहोंच्या (उवागच्छित्ता) पहोंचीने (वाहणसालं अणुपविसइ) ते ओ वाहनशालानी अंदर दाखल थया (अणुपविसित्ता) दाखल थईने (वाहणाइं पच्चुवेक्खेइ) तेणे वाहनोने जोया (पच्चुवेक्खित्ता) जोईने (वाह

णाइं अप्फालेइ, अप्फालित्ता दूसे पवीणेइ, पवीणित्ता वाहणाइं समलंकरेइ, समलंकरित्ता वाहणाइं वरभंडगमंडियाइं करेइ,करित्ता वाहणाइं जाणाइं जोएइ, जोइत्ता पओयलट्ठिं पओयधरए य

नानि 'णीणेइ' नयति=बहिष्करोति, नीत्वा वाहनानि 'अप्फालेइ' आस्फालयति=हस्तेन आस्फालयति, आस्फाल्य 'दूसे पवीणेइ' दूष्याणि प्रविनयति=आच्छादनवस्त्राण्यपनयति, प्रविनीय 'वाहणाइं समलंकरेइ' वाहनानि समलङ्करोति, समलङ्कृत्य वाहनानि 'वरभंडगमंडियाइं करेइ' वरभाण्डकमण्डितानि करोति, कृत्वा 'वाहणाइं जाणाइं जोएइ' वाहनानि यानेषु योजयति, योजयित्वा यानशालिक 'पओयलट्ठिं' प्रतोदयष्टिं वाहनचालनार्थां यष्टिं 'पराणी' इति भाषाप्रसिद्धां 'पओयधरए य' प्रतोदधरान्= शकटवाहकान् समं=युगपत्=एकस्मिन् काले 'आडहइ' आहरति=एकस्मिन् स्थाने सबा-

खित्ता) देखकर (वाहणाइं संपमज्जइ) उसने उन्हें साफ किया। (सपमज्जित्ता) साफ-सूफ कर (वाहणाइं णीणेइ) वाहनों को उसने वहां से बाहिर निकाला, (णीणित्ता) बाहिर निकालकर (वाहणाइं अप्फालेइ) उसने फिर उनके पीठ पर हाथ फिराया, (अप्फालित्ता) हाथ फिराकर (दूसे पवीणेइ) फिर उसने उनकी खोलियों को अलग किया। (पवीणित्ता) जब खोलिया उनकी अलग हो चुकीं तब फिर उसने (वाहणाइं समलंकरेइ) उन वाहनोंको शृंगारित किया। (समलंकरित्ता) जब वे अच्छी तरह से सजा दिये गये तब (वाहणाइं वरभंडगमंडियाइं करेइ) उसने उनको उपकरणों से मंडित किया, (करित्ता) करने के बाद (वाहणाइं जाणाइं जोएइ) फिर उसने उन वाहनों—बैलों को रथों मे जोते, (जोइत्ता) जोतने के बाद (पओयलट्ठिं पओयधरए य समं आडहइ) उसने

णाइं सपमज्जइ) तेणे तेमने साफ कर्या (सपमज्जित्ता) साफ-सूफ करीने (वाहणाइं णीणेइ) वाहनोने तेणे त्याथी बहार काढया (णीणित्ता) बहार काढीने (वाहणाइं अप्फालेइ) तेणे करीने तेमनी पीठ उपर हाथ फेरव्यो। (अप्फालित्ता) हाथ फेरवीने (दूसे पवीणेइ) पछी तेणे तेमनी खोळोने जुदी करी, (पवीणित्ता) ज्यारे खोळो तेमनी जुदी करवाई गई त्यार पछी तेणे (वाहणाइं समलंकरेइ) ते वाहनोने शणगार्या, (समलंकरित्ता) ज्यारे ते सारी रीते तैयार थई (सजाई) गया त्यारे (वाहणाइं वरभंडगमंडियाइं करेइ) तेणे तेमने उपकरणोथी मंडित कर्या (करित्ता) कर्या पछी (वाहणाइं जाणाइं जोएइ) तेणे ते वाहनोना बळदोने रथोमा जोडाव्या, (जोइत्ता) जोडाव्या पछी (पओयलट्ठिं

समं आडहइ, आडहित्ता वट्टमग्गं गाहेइ, गाहित्ता जेणेव वलवाउए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वलवाउयस्स एयमाणत्तियं पच्च-प्पिणइ ॥ सू० ४४॥

मूलम्—तए णं से वलवाउए णयरगुत्तियं आमंतेइ,

हनयानानि तेषु प्रतोदयष्टी प्रतोदधरान्=शकटवाहकांश्च स्थापयति । 'आडहित्ता' आहृत्य, 'वट्टमग्ग' वर्तमार्गम्=शकटादिगम्यमार्ग-राजमार्गं 'गाहेइ' माहयति, माहयित्वा यत्रैव वलव्यापृतस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'वलवाउयस्स एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ' वलव्यापृताय एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयति=आज्ञां सम्पाद्य पश्चान्निवेदयतीत्यर्थः ॥ सू०४४ ॥

टीका—'तए णं' इत्यादि । 'तए णं से वलवाउए' ततः खलु स बलव्यापृतो

उन यानों मे हाकने का चाबुकों एव हाकने वालों को एक ही साथ स्थापित कर दिया, (आडहित्ता) चाबुक लेकर हाकने वाले जब अच्छी तरह उन यानों पर जमकर बैठ चुके तब (वट्टमग्गं गाहेइ) उसने उन यानों को राजमार्ग पर उपस्थित किये । (गाहित्ता जेणेव वलवाउए तेणेव उवागच्छइ) उन्हें राजमार्ग पर उपस्थित कर फिर वह यान शालाधिकारी जहा सेनापति थे वहा पहुचा । (उवागच्छित्ता वलवाउयस्स एयमाणत्तिय पच्चप्पिणइ) पहुँचकर उसने कहा कि हे स्वामिन् ! आपके आज्ञानुसार सभी यान तैयार है ॥ सू० ४४ ॥

'तए ण से वलवाउए' इत्यादि ।

(तए ण) इसके बाद (से वलवाउए) उस सेनापतिने (णयरगुत्तिय) नगर की रक्षा

पओयधरए य समं आडहइ) तेणे ते यानोमा હાંકવાની ચાબુકો તેમજ હાંકવાવાળાને એક જ સાથે સ્થાપિત કરી દીધા (आडहित्ता) ચાબુક લઈને હાંકવાવાળા જ્યારે સારી રીતે તે યાનો ઉપર બેસી ચુક્યા ત્યારે (वट्टमग्ग गाहेइ) તેણે તે યાનોને રાજમાર્ગ પર હાજર કર્યા, (गाहित्ता जेणेव वलवाउए तेणेव उवागच्छइ) તેમને રાજમાર્ગ પર હાજર કરીને પછી તે યાનશાળાધિકારી સેનાપતિની પાસે પહોંચ્યો. (उवागच्छित्ता वलवाउयस्स एयमाणत्तिय पच्चप्पिणइ) પહોંચીને તેણે કહ્યું કે હે સ્વામિન્ ! આપની આજ્ઞાપ્રમાણે બધા યાન તૈયાર છે (સૂ० ४४)

"तए ण से वलवाउए" ઈત્યાદિ

(तए ण) ત્યાર પછી (से वलवाउए) તે સેનાપતિએ (णयरगुत्तियं) નગરની

आमंतित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चंपं णयरिं सब्भिंतरबाहिरियं आसित्त जाव कारवेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ॥ सू० ४५ ॥

'णयरगुत्तिय' नगरगुत्तिक=नगरगोमागम् 'आमंतेइ' आमन्त्रयति=आह्वयति,–'आमतित्ता 'एव वयासी' आमन्त्र्यैवमवादीत् 'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया' क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिय! 'चप णयरिं' चम्पा नगरी 'सब्भिंतरबाहिरिय' साभ्यन्तर-बाह्याम् 'आसित्त जाव कारवेत्ता' आसिक्तशुचिसम्मृष्टरथ्यान्तरापणवीथिका यावद्गन्ध वर्तिभूता कुरु, कारय, कृत्वा, कारयित्वा 'एयमाणत्तिय' एतामाज्ञप्तिका 'पच्चप्पिणाहि' प्रत्यर्पय ॥ सू०४५ ॥

करने वाले कोटवाल को (आमतेइ) बुलाया, और (आमतित्ता) बुलाकर (एवं वयासी) इस प्रकार कहा–(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रिय! तुम शीघ्र ही (चप णयरिं) इस चपा नगरी की (सब्भिंतरबाहिरिय) भीतर बाहिर से सफाई कराओ। पानी से इसमें छिडकाव कराओ। जगह २ इसे पानी से धुलवाओ। कहा भी कूडा–करकट का नाम न मिले, इस तरह से इसकी सफाई हो जाना चाहिये। प्रत्येक गली एवं बाजारों के मार्ग सब बहुत ही अच्छी तरह से साफसूफ किये जावे। जगह २ सुगंधित जल का, गोरोचन का एव सरस लाल चदन का छिडकाव हो, जिससे यह नगरी सुगंधित द्रव्य जैसी बन जावे। तुम से यही कहना है, जाओ और इस आदेश की शीघ्र से शीघ्र पूर्ति करो और उन कामों को पूरा कर के मुझे शीघ्र सूचित करो ॥ सू० ४५ ॥

રક્ષા કરવાળા કોટવાલને (आमतेइ) બોલાવ્યા અને (आमतित्ता) બોલાવીને (एव वयासी) આ પ્રકારે કહ્યુ (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया) હે દેવાનુપ્રિય! તમે જલદીથી (चप णयरिं) આ ચપાનગરીની (सब्भिंतरबाहिरिय) અદર તથા બહારથી સફાઈ કરાવો, તેમા પાણીનો છટકાવ કરાવો, ઠેક–ઠેકાણે તેને પાણીથી ધોવરાવો ક્યાય પણ કડાકરકટનુ નામ ન રહે એમ તેની સફાઈ થવી જોઇએ પ્રત્યેક ગલી તેમજ બજારના રસ્તા ખૂબજ સારી રીતે સાફસૂફ કરવા ઠેકઠેકાણે સુગધિત જલનો, ગોરીર્ષ–સુખડનો તેમજ સરસ રક્ત ચદનનો છટકાવ હોય, જેથી આ નગરી સુગધિત ચીજ જેવી બની જાય તમને એજ કહેવાનુ છે જાઓ અને આદેશને જલ્દી પૂર્ણ કરો અને તે કામો પૂરા કરીને મને જલ્દી ખબર કરો (સૂ० ૪૫)

समं आडहइ, आडहित्ता वट्टमग्गं गाहेइ, गाहित्ता जेणेव बलवाउए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बलवाउयस्स एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ॥ सू० ४४ ॥

मूलम्—तए णं से बलवाउए णयरगुत्तियं आमंतेइ,

हनयानानि तेषु प्रतोदयष्टी प्रतोदधरान्=शकटवाहकांश्च स्थापयति । 'आडहित्ता' आहृत्य, 'वट्टमग्ग' वर्तमार्गम्=शकटादिगम्यमार्गं–राजमार्गं 'गाहेइ' ग्राहयति, ग्राहयित्वा यत्रैव बलव्यापृतस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'बलवाउयस्स एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ' बलव्यापृताय एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयति=आज्ञा सम्पाद्य पश्चान्निवेदयतीत्यर्थः ॥ सू० ४४ ॥

टीका—'तए णं' इत्यादि । 'तए णं से बलवाउए' ततः खलु स बलव्यापृतो

उन यानों मे हाकने की चाबुकों एवं हाकने वालों को एक ही साथ स्थापित कर दिया, (आडहित्ता) चाबुक लेकर हाकने वाले जब अच्छी तरह उन यानों पर जमकर बैठ चुके तब (वट्टमग्गं गाहेइ) उसने उन यानों को राजमार्ग पर उपस्थित किये । (गाहित्ता जेणेव बलवाउए तेणेव उवागच्छइ) उन्हें राजमार्ग पर उपस्थित कर फिर वह यानशालाधिकारी जहा सेनापति थे वहा पहुचा । (उवागच्छित्ता बलवाउयस्स एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ) पहुँचकर उसने कहा कि हे स्वामिन् ! आपके आज्ञानुसार सभी यान तैयार है ॥ सू० ४४ ॥

'तए णं से बलवाउए' इत्यादि ।

(तए णं) इसके बाद (से बलवाउए) उस सेनापतिने (णयरगुत्तियं) नगर का रक्षा

पओयधरए य समं आडहइ) तेणे ते यानोमां हांकवानी चाबुको तेमज हांकवावाळाने એક જ સાથે સ્થાપિત કરી દીધા (आडहित्ता) ચાબુક લઈને હાંકવાવાળા જ્યારે સારી રીતે તે યાનો ઉપર બેસી ચુકયા ત્યારે (वट्टमग्गं गाहेइ) તેણે તે યાનોને રાજમાર્ગ પર હાજર કર્યા, (गाहित्ता जेणेव बलवाउए तेणेव उवागच्छइ) તેમને રાજમાર્ગ પર હાજર કરીને પછી તે યાનશાળાધિકારી સેનાપતિની પાસે પહોંચ્યો (उवागच्छित्ता बलवाउयस्स एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ) પહોંચીને તેણે કહ્યું કે હે સ્વામિન્ ! આપની આજ્ઞાપ્રમાણે બધા યાન તૈયાર છે (સૂ० ४४)

"तए णं से बलवाउए" ઈત્યાદિ

(तए णं) ત્યાર પછી (से बलवाउए) તે સેનાપતિએ (णयरगुत्तियं) નગરની

आमंतित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चंप णयरिं सब्भिंतरबाहिरियं आसित्त जाव कारवेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ॥ सू० ४५ ॥

'णयरगुत्तिय' नगरगुत्तिक=नगरगोनाम्म् 'आमतेइ' आमन्त्रयति=आहयति,–'आमतित्ता' 'एव वयासी' आमन्त्र्यैवमवादीत 'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया' क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिय! 'चप णयरिं' चम्पा नगरा 'सब्भिंतरबाहिरिय' साभ्यन्तर-बाह्याम् 'आसित्त जाव कारवेत्ता' आसिकशुचिसम्मष्टरथ्यान्तरापणवीथिका यावद्गन्ध-वर्तिभूता कुरु, कारय, कृत्वा, कारयित्वा 'एयमाणत्तिय' एतामाज्ञप्तिका 'पच्चप्पिणाहि' प्रत्यर्पय ॥ सू०४५ ॥

करने वाले कोटवाल को (आमतेइ) बुलाया, और (आमतित्ता) बुलाकर (एवं वयासी) इस प्रकार कहा–(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रिय! तुम शीघ्र ही (चप णयरिं) इस चपा नगरी को (सब्भिंतरबाहिरिय) भीतर बाहिर से सफाई कराओ। पानी से इसमें छिडकाव कराओ। जगह २ इसे पानी से धुलवाओ। कहा भी कूडा–करकट का नाम न मिले, इस तरह से इसकी सफाई हो जानी चाहिये। प्रत्येक गली एव बाजारो के मार्ग सब बहुत ही अच्छी तरह से साफसूफ किये जावे। जगह २ सुगधित जल का, गोरोचन का एव सरस लाल चदन का छिडकाव हो, जिससे यह नगरी सुगन्धित द्रव्य जैसी बन जावे। तुम से यही कहना है, जाओ और इस आदेश की आज्ञा से शीघ्र पूर्ति करो और उन कामों को पूरा कर के मुझे शीघ्र सूचित करो ॥ सू० ४५ ॥

રક્ષા કરવાળા કોટવાલને (आमतेइ) બોલાવ્યા અને (आमतित्ता) બોલાવીને (एव वयासी) આ પ્રકારે કહ્યુ (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया) હે દેવાનુપ્રિય! તમે જલદીથી (चप णयरि) આ ચપાનગરીની (सब्भिंतरबाहिरिय) અદર તથા બહારથી સફાઈ કરાવો, તેમા પાણીના છટકાવ કરાવો, ઠેક–ઠેકાણે તેને પાણીથી ધોવરાવો ક્યાય પણ કડાકરકટનુ નામ ન રહે એમ તેની સફાઈ થવી જોઈએ પ્રત્યેક ગલી તેમજ બજારના રસ્તા ખૂબજ સારી રીતે સાફસૂફ કરવા ઠેકઠેકાણે સુગધિત જલનો, ગોશીર્ષ–સુખડનો તેમજ સરસ રક્ત ચદનનો છટકાવ હોય, જેથી આ નગરી સુગધિત ચીજ જેવી બની જાય તમને એજ કહેવાનુ છે જાઓ અને આદેશને જલ્દી પૂર્ણ કરો અને તે કામો પૂરા કરીને મને જલ્દી ખબર કરો (સૂ૦ ૪૫)

मूलम्—तए णं से णयरगुत्तिए बलवाउयस्स एयमट्ठं (सोच्चा) आणाए विणएण वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता चंपं णयरिं सब्भितरबाहिरियं आसित्त जाव कारवेत्ता जेणेव

टीका—'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से णयरगुत्तिए' ततः खलु स नगरगुप्तिकः 'बलवाउयस्स एयमट्ठं' बलव्यापृतस्य एतमर्थं 'सोच्चा' श्रुत्वा 'आणाए विणएण वयणं पडिसुणेइ' आज्ञाया विनयेन वचनं प्रतिशृणोति 'पडिसुणित्ता चंपं णयरिं सब्भितरबाहिरियं आसित्त जाव कारवेत्ता' प्रतिश्रुत्य चम्पां नगरीं साभ्यन्तरबाह्यामासिक्त यावत् कारयित्वा 'जेणेव बलवाउए तेणेव उवागच्छइ' यत्रैव बलव्यापृतस्त

'तए णं से णयरगुत्तिए' इत्यादि।

(तए णं) इसके बाद (से णयरगुत्तिए) उस नगररक्षक कोटवाल ने (बल-वाउयस्स) सेनापति के (एयमट्ठं) नगर की सफाई कराने के आदेश को (सोच्चा) सुनकर (आणाए वयणं विणएण) आज्ञा के वचन को बड़े विनय के साथ (पडि-सुणेइ) स्वीकार किया। (पडिसुणित्ता चंपं णयरिं सब्भितरबाहिरियं) स्वीकार करने बाद उसने चंपानगरी के भीतर बाहिर सब तरफ से (आसित्त जाव कारवेत्ता) सफाई करवाई। पहिले उसने उस सब जगह पानी के छिड़काव से सिंचवाया। गली-कूचों में जो कूड़ा कर्कट पड़ा हुआ था उसकी सफाई कराई। बाजार के रास्तों को तथा नालियों को अच्छी तरह से झाड़ पोंछकर साफ करवाया, मतलब यह कि सफाई में किसी भी तरह की त्रुटि नहीं रही। जब नगरी अच्छी तरह भीतर—बाहिर से साफ हो

'तए णं से णयरगुत्तिए' इत्यादि

(तए णं) त्यार पछी (से णयरगुत्तिए) ते नगररक्षक कोटवाले (बलवाउयस्स) सेनापतिना (एयमट्ठं) नगरनी सफाई करावनाना आदेशने (सोच्चा) सांभळीने (आणाए वयणं विणएण) आज्ञाना वचनोने बहु विनयपूर्वक (पडिसुणेइ) स्वीकार कर्यो, (पडिसुणित्ता चंपं णयरिं सब्भितरबाहिरियं) स्वीकार कर्या पछी ज तेणे चंपानगरीनी अंदर अने बहार बधी तरफथी (आसित्त जाव कारवेत्ता) सफाई करावी दीधी. पहेलां तो तमाम बधी जग्याए पाणीना छंटकाव कराव्या. गलीकूचीमां जे कचरो पूंजो पड्यो हतो तेनी सफाई करावी. बजारना रस्ता तथा नाळांओ ने झाडझूड करी साफ कराव्या. मतलब ए के सफाईमां कोई पण प्रकारनी त्रुटि राखी नहि ज्यारे नगरी सारी रीते अंदर अने

वलवाउए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ॥ सू० ४६ ॥

मूलम्—तए णं से वलवाउए कोणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पियं पासइ, हय–गय-

त्रैवोपागच्छति 'उवागच्छित्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणइ' उपागत्य एतामाज्ञप्तिका प्रत्यर्पयति ॥ सू० ४६ ॥

टीका—'तए ण' इत्यादि। 'तए ण से वलवाउए' ततः खलु स बलव्यापृत 'कोणियस्स रण्णो भभसारपुत्तस्स' कूणिकस्य राज्ञो भभसारपुत्रस्य 'आभिसेक्क हत्थिरयणं पडिकप्पियं' आभिषेक्य हस्तिरत्न परिकल्पित 'पासइ' पश्यति, 'हयगय जाव सण्णाहियं' हय-गज यावत् सन्नाहिता 'पासइ' पश्यति, अत्र यावच्छन्देन

चुकी तब फिर वह कोटवाल (जेणेव वलवाउए तेणेव उवागच्छइ) जहाँ सेनापति था वहाँ पर पहुँचा। पहुँच कर उसने नगरी साफ हो चुकी है इस बात की उसे खबर दी ॥ सू० ४६ ॥

'तए ण से वलवाउए' इत्यादि।

(तए ण) इसके बाद (से वलवाउए) उस सेनापतिने (भभसारपुत्तस्स) भभसार अर्थात श्रेणिक के पुत्र (कोणियस्स रण्णो) कूणिक राजा के (आभिसेक्क) अभिषिक्त-पट्ट (हत्थिरयण) हस्तिरत्नको (पडिकप्पिय) अच्छी तरह से शृंगारित किया हुआ (पासइ) देखा। (हयगय जाव सण्णाहिय पासइ) तथा–हय–गज आदि से युक्त चतुरंगिणी सेना को भी सन्नद्ध देखा। (सुभद्दापमुहाण देवीण

બહારથી સાફ થઈ ત્યારે વળી તે કોટવાલ (जेणेव वलवाउए तेणेव उवागच्छइ) જ્યાં સેનાપતિ હતા ત્યાં પહોંચ્યો અને પહોંચીને તેણે નગરી સાફ થઈ ગઈ છે, એ વાતની તેને ખબર દીધી (સૂ૦ ૪૬)

'तए ण से वलवाउए' ઇત્યાદિ

(तए ण) ત્યારપછી [से वलवाउए] તે સેનાપતિએ [भभसारपुत्तस्स] ભભસાર અર્થાત્ શ્રેણિકના પુત્ર (कोणियस्स रण्णो) કૂણિક રાજાના [आभिसेक्क] આભિષેક્ય–પટ્ટ (हत्थिरयण) હાથીરત્નને (पडिकप्पिय) સારી રીતે શણગારેલો (पासइ) જોયો. (हयगय जाव सण्णाहिय पासइ) તથા–હય ગજ આદિથી યુક્ત ચતુરંગિણી

जाव-सण्णाहिय पासइ. सुभद्दापमुहाणं देवीणं पडिजाणाइं उवट्ठवियाइं पासइ, चंपं णयरिं सब्भितर जाव गंधवट्टिभूयं कयं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए पीयमणे जाव हियए जेणेव कूणिए राया भभसारपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

'रथ-प्रवरयोध-कलिता च चतुरङ्गिणी सेनाम्' इति द्रव्यम्, 'सुभद्दापमुहाण देवीण' सुभद्राप्रमुखाणां-सुभद्रादीनां देवीनां 'पडिजाणाइ उवट्ठवियाइ' प्रतियानानि=शकटानि उपस्थापितानि 'पासइ' पश्यति, 'चंप णयरिं सब्भितर जाव गंधवट्टिभूय कय पासइ' चम्पा नगरी साऽभ्यन्तरा यावद् गन्धवर्तिभूता कृता पश्यति, दृष्ट्वा 'हट्ठ-तुट्ठ-चित्त-माणंदिए' हृष्टतुष्टचित्ताऽऽनन्दित 'पीयमणे जाव हियए' प्रीतमना यावद् हृदयो 'जेणेव कूणिए राया भभसारपुत्ते' यत्रैव कूणिको राजा भभसारपुत्र, 'तेणेव उवागच्छइ' तत्रैवोपागच्छति, 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'करयल जाव एव वयासी'

पडिजाणाइं उवट्ठवियाइं पासइ) सुभद्राप्रमुख देवियों के लिये आये हुए रथों को भी देखा। (चंप णयरिं सब्भितर जाव गंधवट्टिभूयं कय पासइ) और यह भी देखा कि चंपानगरी भीतर बाहिर से अच्छी तरह से स्वच्छ हो चुकी है, एवं उससे सुगंधि की महक उठ रही है। (पासित्ता हट्ठ-तुट्ठ-चित्त-माणंदिए पीयमणे जाव हियए जेणेव कूणिए राया भभसारपुत्ते तेणेव उवागच्छइ) यह सब देखकर वह बहुत ही खुश हुआ हर्ष के मारे वह फूला नहीं समाया। प्रसन्न मन होकर वह शीघ्र ही जहां श्रेणिक के पुत्र कूणिक राजा थे वहां पहुँचा। (उवागच्छित्ता करयल जाव एव वयासी) पहुँचकर उसने सर्वप्रथम राजा को दो हाथ जोडकर प्रणाम किया और

રથોને પણ પાછે જોઈ (सुभद्दापमुहाण देवीण पडिजाणाइ उवट्ठवियाइ पासइ) સુભદ્રાપ્રમુખ દેવીઓને માટે આવેલા રથોને પણ જોયા (चप णयरिं सब्भितर जाव गधवट्टिभूय कय पासइ) અને એ પણ જોયું કે ચંપાનગરી અંદર અને બહારથી સારી રીતે સ્વચ્છ થઈ ગઈ છે, તેમજ તેમાથી સુગંધીની મહક ચાલી રહી છે (पासित्ता हट्ठ-तुट्ठ-चित्त-माणदिए पीयमणे जाव हियए जेणेव कूणिए राया भभसारपुत्ते तेणेव उवागच्छइ) આ બધું જોઈને તે બહુ જ ખુશ થયો અને અત્યંત હર્ષિત થઈ ગયો. મન પ્રસન્ન થવાથી તુરત જ જ્યાં શ્રેણિકના પુત્ર કૂણિક રાજા હતા ત્યાં પહોંચ્યો. (उवागच्छित्ता करयल जाव

करयल जाव एवं वयासी—कप्पिए णं देवाणुप्पियाणं आभिसेक्के हत्थिरयणे, हय-गय-जाव-पवर-जोह-कलिया य चाउरंगिणी सेणा सण्णाहिया, सुभद्दापमुहाण य देवीणं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए पाडियक्कपाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं उवट्ठावियाइं,

करतल यावदेवम् अवादीत्—'कप्पिए णं देवाणुप्पियाण आभिसेक्के हत्थिरयणे' कल्पितं खलु देवानुप्रियाणामाभिषेक्यं हस्तिरत्नम् 'हयगयरहपवरजोहकलिया य' हयगजरथप्रवरयोधकलिता च 'चाउरंगिणी सेणा सण्णाहिया' चतुरङ्गिणी सेना सन्नाहिता, 'सुभद्दापमुहाण य देवीणं' सुभद्राप्रमुखाना च देवीना 'बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए' बाह्यायामुपस्थानशालाया 'पाडियक्कपाडियक्काइ' प्रत्येक प्रत्येक 'जत्ताभिमुहाइ जुत्ताइ जाणाइ उवट्ठावियाइ' यात्राभिमुखानि युक्तानि यानानि उपस्थापितानि,

फिर इस प्रकार कहने लगा कि (**कप्पिए णं देवाणुप्पियाणं आभिसेक्के हत्थिरयणे**) हे देवानुप्रिय! आपका आभिषेक्य हस्तिरत्न शृंगारित हो चुका है। (**हय-गय-रह-पवरजोह-कलिया य चाउरंगिणी सेणा सण्णाहिया**) घोडे, हाथी, रथ एवं सुभटों से युक्त चतुरंगिणी सेना भी सजा-बजाकर तैयार की जा चुकी है। (**सुभद्दापमुहाण य देवीणं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए पाडियक्कपाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं उवट्ठावियाइं**) सुभद्राप्रमुख देवियों के भी बाहिर की उपस्थानशाला में अलग २ बैठने के लिये, यात्रा के योग्य एवं अच्छे २ बैलों से युक्त ऐसे रथ लाकर उपस्थित कर दिये

एवं वयासी) પહોંચીને તેણે સર્વથી પહેલા રાજાને બન્ને હાથ જોડી પ્રણામ કર્યાં અને પછી તે આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યો કે (कप्पिए ण देवाणुप्पियाण आभिसेक्के हत्थिरयणे) હે દેવાનુપ્રિય! આપનો આભિષેક્ય હાથીરત્ન શણગારાઈ ગયો છે (हय-गय-रह-पवरजोह-कलिया य चाउरगिणी सेणा सण्णाहिया) ઘોડા, હાથી, રથ તેમજ સુભટોથી યુક્ત ચતુરંગિણી સેના પણ સજ્જ થઈ ગઇ છે (सुभद्दापमुहाण य देवीण बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए पाडियक्कपाडियक्काइ जत्ताभिमुहाइ जुत्ताइ जाणाइ उवट्ठावियाइ) સુભદ્રાપ્રમુખ દેવીઓને માટે પણ બહારની ઉપસ્થાનશાલામાં અલગ અલગ બેસવાને સારૂ, યાત્રાને યોગ્ય તેમજ સારા સારા બળદથી યુક્ત એવા રથ લઈ આવી હાજર રાખેલા છે (चपा णयरी सब्भितरबाहिरिया आसित्त-जाव गधवट्टिभूया कया)

चंपा णयरी सब्भितरबाहिरिया आसित्त जाव गंधवट्टिभूया कया, त णिज्जंतु णं देवाणुप्पिया! समणं भगवं महावीरं अभिवंदिउं ॥ सू० ४७ ॥

मूलम्—तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते बल-

'चपा णयरी सब्भितरबाहिरिया' चम्पा नगरी साऽभ्यन्तरबाह्या 'आसित्त जाव गधवट्टिभूया कया' आसिक्त यावद् गन्धवर्तिभूता कृता, 'त णिज्जतु ण देवाणुप्पिया' तन्निर्यान्तु खलु देवानुप्रियाः! 'समण भगव महावीर अभिवदिउ' भगवन्त महावीरमभिवन्दितुम् ॥ सू० ४७ ॥

टीका—'तए ण' इत्यादि। 'तए ण' ततः=सेनापतिनिवेदनानन्तर खलु 'से कूणिए राया भभसारपुत्ते' स कूणिको राजा भभसारपुत्र 'बलवाउयस्स अतिए' बलव्यापृतस्याऽन्तिके=बलव्यापृतमुखात 'एयमट्ठ' एतमर्थं—'भवदाज्ञानुसारेण सर्वे सम्पा-

है। (चपा णयरी सब्भितरबाहिरिया आसित्त जाव गधवट्टिभूया कया) तथा चपानगरी भी भीतर बाहिर से अच्छी तरह झटवाकर साफ करा दी गई है। उसमे जल भी छिडकवा दिया गया है, यावत् वह सुगधित द्रव्य जैसी बन चुकी है, (त देवाणुप्पिया) अतः हे देवानुप्रिय! (समण भगव महावीर अभिवदिउं णिज्जतु) अब आप श्रमण भगवान महावीर को वन्दना करने के लिये पधारे ॥ सू० ४७ ॥

'तए ण से कूणिए राया भभसारपुत्ते' इत्यादि।

(तए ण) इसके बाद (भभसारपुत्ते से कूणिए राया) भभसार अथात श्रेणिक के पुत्र कूणिक राजा (बलवाउयस्स) सेनापति के मुख से (एयमट्ठं सोच्चा) हाथी आदि का

तथा चपानगरी पण अदर-બહારથી સારી રીતે વાળીઝૂડી સાફ કરાવી દીધી છે તેમાં પાણી પણ છટાવ્યુ છે જેવી તે સુગધિત દ્રવ્ય જેવી બની ગઇ છે (त देवाणुप्पिया) માટે હે દેવાનુપ્રિય! (समण भगव महावीर अभिवंदिउ णिज्जतु) હવે આપ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વદના કરવા માટે પધારો (સૂ ૪૭)

'तए ण से कूणिए राया भभसारपुत्ते' ઇત્યાદિ

(तए ण) ત્યાર પછી (भभसारपुत्ते से कूणिए राया) ભભસાર અર્થાત્ શ્રેણિકના પુત્ર કૂણિક રાજા (बलवाउयस्स) સેનાપતિના મુખથી [एयमट्ठ सोच्चा] હાથી

वाउयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अट्टणसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता अणेग-वायाम-जोग्ग-वग्गण-वामद्दण-मल्लजुद्ध-करणेहिं संते परिस्संते सयपागसहस्सपागेहिं सुगंध-

---

रितम्-एतद्रूपां वार्तां 'सोच्चा' श्रुत्वा 'णिसम्म' निशम्य-हृदि कृत्वा, 'हट्ठ-तुट्ठ जाव हियए' हृष्ट-तुष्ट-यावद्धृदय-परमप्रसन्नमानस सन् 'जेणेव' यत्रैव 'अट्टणसाला' अट्टनशाला-व्यायामशाला 'तेणेव उवागच्छइ' तत्रैवोपागच्छति, 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'अट्टणसालं अणुप्पविसइ' अट्टनशालामनुप्रविशति, 'अणुप्पविसित्ता' अनुप्रविश्य 'अणेग-वायाम-जोग्ग-वग्गण-वामद्दण-मल्लजुद्ध-करणेहिं' अनेक-व्यायाम-योग्य-वल्गन-व्यामर्दन-मल्लयुद्ध-करणैः-अनेके ये व्यायामाः=शारीरिकपरिश्रमाः तद्योग्य=तदनुकूल, वल्गन=कूर्दन, व्यामर्दन=परस्परबाह्वाद्यङ्गमोटन, मल्लयुद्ध-मल्लक्रीडनम्, करणानि=मुद्गरादिचालनानि तैः सर्वैः 'संते' श्रान्त-सामान्यतः, 'परिस्संते'

पूरी तयारी के समाचार को सुनकर (णिसम्म) एवं अच्छी तरह से विचार कर (हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए) अपने मनमें बहुत ही अधिक हर्षित हुए एवं संतुष्ट हुए। (जेणेव अट्टण-साला तेणेव उवागच्छइ) पश्चात् वे जहां व्यायामशाला थी वहाँ पर पहुँचे। (उवा-गच्छित्ता अट्टणसालं अणुपविसइ) पहुँचते ही वे उसमें प्रविष्ट हुए। (अणुपविसित्ता अणेग-वायाम-जोग्ग-वग्गण-वामद्दण-मल्लजुद्ध-करणेहिं संते परिस्संते) प्रविष्ट होकर उन्होंने वहां पर अनेक प्रकार का व्यायाम-शारीरिक परिश्रम किया, शारीरिक परि-श्रम के योग्य दौडना-कूदना प्रारंभ किया। अपने अंग उपांगों का अच्छी तरह से मर्दन

આદિની પુરેપુરી તૈયારીના સમાચારને સાંભળીને (णिसम्म) તેમજ સારી રીતે વિચાર કરીને (हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियए) પોતાના મનમાં બહુજ હર્ષિત થયા, તેમજ સંતુષ્ટ થયા (जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ) પછી તેઓ જ્યાં વ્યાયામશાળા હતી ત્યાં પહોંચ્યા (उवागच्छित्ता अट्टणसालं अणुपविसइ) પહોં-ચતાંજ તે તેમાં દાખલ થયા (अणुपविसित्ता अणेग-वायाम-जोग्ग-वग्गण-वाम द्दण-मल्लजुद्ध-करणेहिं संते परिस्संते) દાખલ થઈને તેમણે ત્યાં અનેક પ્રકારના વ્યાયામ-શારીરિક કસરત કરી શારીરિક પરિશ્રમને યોગ્ય દોડવા-કૂદવાનો પ્રારંભ કર્યો પોતાના અંગ-ઉપાંગોને આમ તેમ વાળ્યા મલ્લોની સાથે કુસ્તી કરી ત્યાં રાખવામાં આવેલ મુદ્ગરો ફેરવ્યા આ ક્રિયાઓથી તેઓ પહેલાં

तेल्लमाइएहिं पीणणिज्जेहिं दप्पणिज्जेहिं मयणिज्जेहिं विंहणिज्जेहिं सव्विंदियगायपल्हायणिज्जेहिं अब्भिंगेहिं अब्भिंगिए

परिश्रान्त —अङ्गप्रत्यङ्गापेक्षया, 'सयपाग-सहस्सपागेहिं' शतपाकसहस्रपाकैः, शतकृत्व पाको येषु ते शतपाकाः, शतसंख्यकौषधिमिश्रणेन वा पाको येषु ते, शतकार्षापणमूल्यक-द्रव्यमिश्रणेन वा पाको येषु ते शतपाकास्तैलविशेषाः, एवं सहस्रपाका अपि, ततस्तयो द्वन्द्वः, तैस्तैलविशेषैः, सुगन्धितैलादिकैः 'पीणणिज्जेहिं' प्रीणनीयैः=रसरुधिरादिधातुसमवर्द्धकैः, 'दप्पणिज्जेहिं' दर्पणीयैः=बलवर्द्धकैः, 'मयणिज्जेहिं' मदनीयैः=कामवर्द्धकैः, 'विंहणिज्जेहिं' बृंहणीयैः—मांसोपचयकारिभिः, 'सव्विंदिय-गाय-पल्हायणिज्जेहिं' सर्वेन्द्रिय—गात्र—प्रह्लादनीयैः, सर्वेषाम् इन्द्रियाणाम्, गात्राणां प्रह्लादनीयैः—प्रह्लादजनकैः,

किया। मल्लों के साथ कुस्ती लडी। वहा पर रखे हुए मुद्गरों को भी फिराया। इन क्रियाओं से वह पहिले साधारण श्रान्त हुए एवं बाद में अधिक परिश्रान्त हुए। इस तरह जब अच्छी रीति से वे खूब व्यायाम कर चुके तब (सयपागसहस्सपागेहिं) उन्हों ने शत *पाकवाले एवं सहस्रपाकवाले तैलों से (पीणणिज्जेहिं दप्पणिज्जेहिं) जो तेल प्रीणनीय—रस—रुधिर आदिवर्धक एवं दर्पणीय—बलवर्द्धक होते हैं, (मयणिज्जेहिं) कामवर्द्धक होते हैं, (विंहणिज्जेहिं) बृंहणीय—मांसवढानेवाले होते हैं, (सव्विंदिय—गाय—पल्हायणिज्जेहिं) समस्त इन्द्रिय एवं समस्त शरीर को आनन्द देनेवाले होते हैं ऐसे तेलों से तथा (अब्भिंगेहिं)

* सौ वार पकाये गये, अथवा सौ प्रकार का औषधियों को मिश्रित कर पकाये गये, अथवा सौ रुपये मूल्यवाली औषधियों को गलाकर पकाये गये ऐसे तैलों से। इसी प्रकार सहस्र-पाक मे भी समझना चाहिये।

સાધારણ થાક્યા, તેમજ ત્યાર પછી વધારે થાક લાગ્યો. આવી રીતે જ્યારે બહુ કસરત કરી લીધી ત્યારે (सयपागसहस्सपागेहिं) તેમણે શતપાક[1]વાળા તેમજ સહસ્રપાકવાળા તેલોથી કે જે તેલો (पीणणिज्जेहिं दप्पणिज्जेहिं) પ્રીણનીય રસ રૂધિર આદિ વર્ધક તેમજ દર્પણીય—બલવર્ધક હોય છે, (मयणिज्जेहिं) કામવર્ધક હોય છે, (विंहणिज्जेहिं) બૃહણીય—માંસવર્ધક હોય છે, (सव्विंदिय-गाय-पल्हायणिज्जेहिं) સમસ્ત ઇંદ્રિયો તેમજ સમસ્ત શરીરને આનંદ

[१] સોવાર પકાવેલું અથવા સો પ્રકારની ઓષધીઓથી મિશ્રિત કરી પકાવેલું અથવા સો રૂપિયાની કિંમતની ઓષધીઓને ગાળીને પકાવેલ એવા તેલો. આજ રીતે સહસ્રપાકમાં પણ સમજવું જોઇએ.

समाणे तेल्लचम्मंसि पडिपुण्ण-पाणि-पाय-सुउमाल-कोमल-तलेहिं पुरिसेहिं छेएहिं दक्खेहिं पट्ठेहिं कुसलेहिं मेहावीहिं निउण-

'अब्भिंगेहिं' अभ्यङ्ग —स्नेहनै 'अब्भिंगिए समाणे' अभ्यङ्गित —कृताभ्यङ्ग सन् 'तेल्लचम्मंसि' तैलचर्मणा, अत्र तृतीयार्थे सप्तमी, तैलानुलिप्तशरीरस्य मर्दनसाधनरूप चर्म 'तैलचर्म' इत्युच्यते, 'संवाहिए समाणे' संवाहित सन्—इत्युत्तरेण अन्वय, कै संवाहित इत्याह—'पुरिसेहिं' पुरुषै —अङ्गसंवाहननियुक्तभृत्यै, ते कीदृशैरित्याह— 'पडिपुण्ण-पाणिपाय-सुउमाल-कोमल-तलेहिं' प्रतिपूर्ण—पाणिपाद—सुकुमार—कोमल—तलै —प्रतिपूर्णानाम्=अविकलानां, पाणिपादानां सुकुमारकोमलानि=अतिमृदुलानि तलानि येषां ते तथा तै, 'छेएहिं' छेकै =मर्दनकलानिपुणै, 'दक्खेहिं' दक्षै =अविलम्बित-कारिभि, मर्दनकार्येऽग्रेसरै, 'पट्ठेहिं' प्रष्ठै, 'कुसलेहिं' कुशलै =मर्दनविधिज्ञै, 'मेहावीहिं' मेधाविभि —प्रतिभाशालिभि, 'निउण-सिप्पो-वगएहिं' निपुणशिल्पोपगतै,

उबटनों से (अब्भिंगिए समाणे) शरीर की खूब मालिश कराई। *(तेल्लचम्मंसि) तैल-चर्ममे मालिश करनेवाले (पुरिसेहिं) पुरुषों न कि जिनके (पडिपुण्ण—पाणि—पाय—सुउ-माल—तलेहिं) हाथ और पैर के तलवे अधिक सुकुमार थे, (छेएहिं) मर्दन करनेकी कला में जो अधिक निपुण थे, (दक्खेहिं) इसीलिये जो इस कला के जाननेवालों में सर्वप्रथम गिने जाते थे, (पट्ठेहिं) मर्दन करने की विधि क्या है और किस ढग से किस समय कैसा मर्दन करना चाहिये—इत्यादि बातों में जो विशेष पटु थे, (मेहावीहिं) नवीन २ रीति से

* यहा तृतीया के अर्थ में सप्तमी विभक्ति हुई है, तैल से चिकने हुए शरीर को मर्दन करने का साधनरूप चर्म तैलचर्म कहलाता है।

देवावाळा होय छे, એવા તેલોથી, તથા (अब्भिंगेहिं) ઉવટનોથી (अब्भिंगिए समाणे) શરીરની ખૂબ માલિશ કરાવી [१](तेल्लचम्मसि) તૈલચર્મથી માલિશ કરવાવાળા (पुरिसेहिं) પુરુષો કે જેના (पडिपुण्ण—पाणि—पाय—सुउमाल—तलेहिं) હાથ તથા પગના તળા બહુ સુકુમાર કોમળ હતા, (छेएहिं) મર્દન કરવાની કળામા જે બહુ નિપુણ હતા, (दक्खेहिं) આથી જે આ કળાના જાણકારમા સર્વપ્રથમ ગણાતા હતા, (पट्ठेहिं) મર્દન કરવાની વિધિ શુ છે અને કેવી રીતે કેવા સમયે કેમ મર્દન કરવુ જોઈએ—ઈત્યાદિ વાતોમા જે વિશેષ કુશળ હતા, (मेहावीहिं) નવી નવી રીતે જે મર્દન કરવાની કલાના આવિ

[२] અહી તૃતીયાના અર્થમા સપ્તમી વિભક્તિ થઇ છે તેલથી ચીકણા થયેલ શરીરને મર્દન કરવાનુ સાધનરૂપ ચર્મ તૈલચર્મ કહેવાય છે

सिप्पो-वगएहिं अब्भिगण-परिमद्दणु-व्वलण-करणगुण-णिम्मा-एहिं अट्ठिसुहाए मंससुहाए तयासुहाए रोमसुहाए चउव्विहाए

निपुणानि=सूक्ष्माणि यानि शिल्पानि=अङ्गमर्दनादीनि तान्युपगतानि=अधिगतानि यस्ते तथा ते, अङ्गमर्दनक्रियाज्ञानसम्पन्नैरित्यर्थः। 'अब्भिगण-परिमद्दणु-व्वलण-करण-गुण-णिम्माएहिं' अभ्यञ्जन-परिमर्दनो द्वलन-करण गुण निर्मातृभिः-अभ्यञ्जनम्=अभ्यङ्ग -तैलमर्दनम्, परिमर्दनम्=अङ्गसंवाहनम्, उद्वलनम्=उद्वर्तनम् तेषां करणे ये गुणाः शरीरस्वास्थ्यकान्तितुष्टिपुष्टिस्फूर्त्यादिरूपाः, तेषां निर्मातृभिः=विधायकैः, कया संवाहित इत्यत्राऽऽह-'अट्ठिसुहाए' अस्थिसुखया=अस्थिसुखकारिण्या, 'मंससुहाए' मांससुखया=मांससुखकारिण्या, 'तयासुहाए' त्वक्सुखया, 'रोमसुहाए' रोमसुखया, 'चउव्विहाए' चतुर्विधया, 'संवाहणाए'

जो मर्दन करने की कला के आविष्कारक थे, (निउण-सिप्पो-वगएहिं) सूक्ष्म से सूक्ष्म भी अंगमर्दन आदि क्रियाओं के जो पूर्णरूप से ज्ञाता थे, अथवा जिन्होंने इस क्रिया को निपुण कलाचार्य से सीखा था। (अब्भिगण-परिमद्दणु-व्वलण-करण-गुण-निम्माएहिं) अभ्यंगन-तैलमर्दन, परिमर्दन-अंग के संवाहन एवं उद्वलन-उबटन करने से जो शरीरस्वास्थ्य, कान्ति, तुष्टि-पुष्टि तथा हर एक कार्य में स्फूर्ति आदि गुण होते हैं, उन गुणों को वे अपने अभ्यङ्गन आदि कला के द्वारा प्रत्यक्ष कर देते थे। इनलोगों ने राजा का किस प्रकार से संवाहन किया सो कहते हैं-(अट्ठिसुहाए) हड्डियों में सुखकारी (मंससुहाए) मांस में सुखकारी (तयासुहाए) चमडी में सुखकारी (रोमसुहाए) रोम २ में सुखकारी, इस प्रकार अस्थिसुखजनक, मांससुखजनक, चर्मसुखजनक एवं रोमसुखजनक रूप से (चउव्विहाए) चार प्रकार की (संवाहणाए) मालिश क्रिया से (संवाहिए समाणे)

કારક હતા, (निउण-सिप्पो-वगएहिं) સૂક્ષ્મમાં સૂક્ષ્મ પણ અંગમર્દન આદિ ક્રિયાઓના જે સંપૂર્ણ જ્ઞાતા હતા, અથવા જેઓ આ ક્રિયાઓ નિપુણ કલાચાર્ય પાસેથી શીખેલા હતા, (अब्भिगण-परिमद्दणु-व्वलण-करण-गुण निम्माएहिं) અભ્યંગન તેલમર્દન, પરિમર્દન-અંગનું સંવાહન તેમજ ઉદ્‌વલન ઉબટન કરવાથી જે શરીરસ્વાસ્થ્ય, કાંતિ, તુષ્ટિ-પુષ્ટિ તથા હરેક કાર્યમાં સ્ફૂર્તિ આદિ ગુણ હોય છે તે ગુણોને તેઓ પોતાના અભ્યંગન આદિ કલાઓ દ્વારા પ્રત્યક્ષ કરી દેતા હતા તે લોકોએ રાજાનું કેવા પ્રકારે સંવાહન કર્યું તે કહે છે-(अट्ठिसुहाए) હાડકામાં સુખકારી (मंससुहाए) માંસમાં સુખકારી (तयासुहाए) ચામડીમાં સુખકારી (रोमसुहाए) રોમ રોમમાં સુખકારી, એ રીતે અસ્થિસુખજનક, માંસસુખજનક, ચર્મસુખજનક તેમજ રોમસુખ-

संवाहणाए संवाहिए समाणे अवगय-खेय-परिस्समे अट्टण-सालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समुत्त-जाला-उला-भिरामे विचित्तमणि-रयण-

संवाहनया=मर्दनेन 'संवाहिए समाणे' संवाहितो=मर्दितः सन, 'अवगय-खेय-परिस्समे' अपगत-खेद-परिश्रम =समपनीतखेदपरिश्रम, 'अट्टणसालाओ' अट्टनशालात =व्यायामशालात 'पडिनिक्खमइ' प्रतिनिष्क्रामति, 'पडिणिक्खमित्ता' प्रतिनिष्क्रम्य, 'जेणेव मज्जणघरं तेणेव उवागच्छइ' यत्रैव मज्जनगृहं तत्रैवोपागच्छति, 'उवागच्छित्ता' उपागत्य, 'मज्जणघरं अणुपविसइ' मज्जनगृहमनुप्रविशति, 'अणुपविसित्ता' अनुप्रविश्य 'समुत्त-जाला-उला-भिरामे' समुक्त-जाल-ऽऽकुला-ऽभिरामे-समुक्त-जालेन=मुक्तासहितेन जालेन=गवाक्षेण आकुलो=व्याप्त, अतएव अभिराम =सुन्दरस्तस्मिन्, 'विचित्त-मणि-रयण-कुट्टिम-तले' विचित्र-मणि-रत्न-कुट्टिम-तले-विचित्रमणिर-

राजा की खूब मालिश की। जब राजा की अच्छी तरह से मालिश हो चुकी तब वे (अवगय-खेय-परिस्समे) परिश्रम एव खेद से रहित हो (अट्टणसालाओ) उस व्यायामशाला से (पडिणिक्खमइ) बाहर निकले, (पडिणिक्खमित्ता) निकल कर (जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ) जहा स्नान घर था वहाँ पहुँचे। (उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ) पहुँच कर स्नानघर मे प्रविष्ट हुए। (अणुपविसित्ता) वहाँ प्रविष्ट होकर (समुत्त-जाला-उला-भिरामे) मोतियों की लडियों वाले गोखलो से युक्त होने के कारण अति सुन्दर (विचित्त-मणिरयण-कुट्टिम-तले) तथा विविध मणियों से जटित

જનરૂપી (चउव्विहाए) ચાર પ્રકારની (सवाहणाए) માલિશથી (सवाहिए समाणे) રાજાની ખૂબ માલિશ કરી જ્યારે રાજાની સારી રીતે માલિશ થઇ રહી ત્યારે તેઓ (अवगय-खेय परिस्समे) પરિશ્રમ તેમજ ખેદથી મુક્ત થઇ (अट्टण सालाओ) તે વ્યાયામશાલામાંથી (पडिणिक्खमइ) બહાર નીકળ્યા (पडिणिक्खमित्ता) નીકળીને (जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ) જ્યા સ્નાનઘર હતુ ત્યા પહોચ્યા (उवागच्छित्ता मज्जणघर अणुपविसइ) પહોચીને સ્નાનઘરમા દાખલ થયા (अणुपविसित्ता) તેમા દાખલ થઇને (समुत्त जाला उला भिरामे) મોતિઓની લટિઓવાળા ગોખલાઓથી યુક્ત હોવાના કારણે અતિસુંદર, (विचित्त

कुट्टिमयले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि णाणा-मणि-रयणभत्ति-चित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहणिसण्णे सुद्धोदएहिं गंधोदएहिं पुप्फोदएहिं सुहोदएहिं पुणो पुणो कल्लाणग-पवर-मज्जण-विहीए मज्जिए, तत्थ कोउयसएहिं बहुविहेहिं कल्लाणग-पवर-मज्जणा-

लै रचित कुट्टिमतल=भूभागो यस्य स तथा तस्मिन्, 'रमणिज्जे' रमणीये=मनोहरे, 'ण्हाणमडवंसि' स्नानमण्डपे, 'णाणा-मणि-रयण-भत्ति-चित्तंसि' नाना-मणि-रत्न-भक्ति-चित्रे=विविध-मणि-रत्न-रचनाविचित्रे, 'ण्हाणपीढंसि' स्नानपीठे 'सुहणिसण्णे' सुखनिषण्ण =सुखाऽऽसीन, 'सुद्धोदएहिं' शुद्धोदकै =निरवद्यजलै 'गंधोदएहिं' गन्धोदकै =श्रीखण्डादिमिश्रितै जलै, 'पुप्फोदएहिं' पुष्पोदकै =पुष्पमिश्रितजलै, 'सुओदएहिं' सुखोदकै =नातिशीतोष्णै 'पुणो पुणो' पुन पुन 'कल्लाणग पवर-मज्जण-विहीए' कल्याणक-प्रवर-मज्जन-विधिना=कल्याणकारक-श्रेष्ठस्नान-विधानेन, 'मज्जिए' मज्जित -स्नपित', 'तत्थ' तत्र=स्नानानन्तरं, 'कोउयसएहिं' कौतुकशतै, कौतुकाना=दृष्टिदोषनिवारणार्थं

आगन वाले (रमणिज्जे) मनोहर (ण्हाणमडवंसि) स्नानमडप मे रक्खे हुए (णाणा-मणि-रयण-भत्ति-चित्तंसि) अनेक मणि और रत्नों की रचना से युक्त (ण्हाणपीढंसि) ऐसे स्नान करने के पीठ (बाजोट) पर (सुहणिसण्णे) सुख से बैठे, और वहा बैठ कर (सुद्धोदएहिं) शुद्ध-निर्मल जलसे, (गंधोदएहिं) गधोदक-चन्दनमिश्रित जल से (पुप्फोदएहिं) पुष्पमिश्रितजल से, (सुहोदएहिं) किंचितुष्ण जल से (पुणो पुणो) बार बार (कल्लाणग-पवर-मज्जण-विहीए मज्जिए) उन्होने कल्याणकारक श्रेष्ठ स्नानविधि-से स्नान किया। (तत्थ कोउयसएहिं बहुविहेहिं) उस अवसर मे विविध प्रकार के अनेक कौतुकों से दृष्टि-

मणि रयण कुट्टिम तले) तथा विविध मणिओथी जडित आंगणावाळा, (रमणिज्जे) मनोहर (ण्हाणमंडवंसि) स्नानमंडपमां राखेला (णाणा-मणि-रयण-भत्ति-चित्तंसि) अनेकमणि तथा रत्नोनी बनावटथी युक्त (ण्हाणपीढंसि) एवी स्नान करवानी पीठ (बाजोठ) उपर (सुहणिसण्णे) सुखेथी बेठा अने बेसीने (सुद्धोदएहिं) शुद्ध-निर्मळ जळ वडे, (गंधोदएहिं) गंधोदक-चंदन-मिश्रित जलवडे, (पुप्फोदएहिं) पुष्पमिश्रित जल वडे, (सुहोदएहिं) जरा उष्ण जलवडे, (पुणो पुणो) वारंवार (कल्लाणग-पवर-मज्जण-विहीए मज्जिए) तेमणे कल्याणकारक श्रेष्ठ स्नानविधिथी स्नान कर्युं (तत्थ कोउयसएहिं

वसाणे पम्हल-सुकुमाल-गंध-कासाइय-लूहियंगे सरस-सुरहि-गोसीस-चंदणा-णुलित्त-गत्ते अहय-सुमहग्घ-दूस-रयण-सुसंवुए

रक्षाबन्धनादीना शतैः=बहुविधैर्युक्त 'कल्लाणग-पवर-मज्जणा-वसाणे' कल्याणक-प्रवरमज्जनावसाने, स्नानानन्तरमित्यर्थः, 'पम्हल-सुकुमाल-गंध-कासाइय-लूहियंगे' पक्ष्मल-सुकुमार-गन्धकाषायिका-रूक्षिताङ्गः, पक्ष्मला=उत्थितरोमतन्तुगमहयुक्ता, सा च सुकुमारा=सुकोमला गन्धवती च एतादृशी या काषायिका=कषायरक्तशाटिका-अङ्गप्रोञ्छनिका तया रूक्षिताङ्गः-निर्जलीकृतशरीरः, 'सरस-सुरहि-गोसीस-चंदणा-णुलित्त-गत्ते' सरस-सुरभि-गोशीर्ष-चन्दना-नुलिप्त-गात्रः, तत्र-गोशीर्षचन्दन=गोशीर्षनाम्ना प्रसिद्ध चन्दनम्। 'अहय-सुमहग्घ-दूस-रयण-सुसंवुए' अहत-सुमहार्घ-दूष्य-रत्न-सुसंवृतः-अहतम्-अखण्डितं=कीटमूषिकादिभिरकर्तितं नूतनमिति भावः, सुमहार्घं=बहुमूल्यं यद् दूष्यरत्नं=प्रधानवस्त्रं तेन सुसंवृतः=सुष्ठु आच्छादितः, परिहितनूतनबहुमूल्यवस्त्र इत्यर्थः।

दोष निवारणार्थ रक्षाबंधनादिकों के अनेक प्रकारों से युक्त उन राजा ने (कल्लाणग-पवर-मज्जणा-वसाने) जब उस कल्याणकारक श्रेष्ठ स्नान की समाप्ति हो चुकी तब (पम्हल-सुकुमाल-गंध-कासाइय-लूहियंगे) पक्ष्मल-उठे हुए कोमल ततु वाले सुकुमार एवं सुगंधित कषाय रंग की तोलिया से अपने समस्त शरीर को पोंछा। पश्चात् (सरस-सुरहि-गोसीसचंदणा-णुलित्त-गत्ते) समस्त शरीर पर सरस सुगंधित गोशीर्षचंदन का लेप किया। (अहय-सुमहग्घ-दूसरयण-सुसंवुए) जब लेप अच्छी तरह से शुष्क हो चुका तब अहत-कीटमूषक आदि से नहीं काटे गये, नवीन-ऐसे बहुमूल्य प्रधान वस्त्रों को उन्होंने शरीर पर धारण किया। (सुइ-माला-वण्णग-विलेवणे) पश्चात शुद्धपुष्पों की माला

बहुविहेहिं) ते अवसरे विविध प्रकारना अनेक कौतुको वडे-दृष्टिदोष-निवारणार्थ रक्षाबंधनादि अनेक प्रकारयुक्त ते राजाओ (कल्लाणग-पवर-मज्जणा-वसाने) ज्यारे ते कल्याणकारक श्रेष्ठ स्नाननी समाप्ति थई चुकी त्यारे (पम्हल सुकुमाल-गंधकासाइय-लूहियंगे) पक्ष्मल-उपजी आवेला सुंवाळा सुतरवाळा कोमळ तेमज सुगंधित कषाय रंगना टुवाल वडे पोताना समस्त शरीरने लुई नाख्युं पछी (सरस-सुरहि गोसीस चंदणा णुलित्त गत्ते) समस्त शरीर पर सरस तेमज सुगंधित गोशीर्ष चंदननो लेप कर्यो (अहय सुमहग्घ दूसरयण सुसंवुए) ज्यारे लेप सारी रीते सुकाई गयो त्यारे अहत-कीटमूषक (कीडा के उंदर) आदिथी कपायेलां नहि एवां, नवीन-एवां बहुकिंमती वस्त्रोने तेमणे शरीर उपर धारण कर्यो (सुइ-माला-वण्णग-विलेवणे) पछी शुद्ध पुष्पोनी

सुइ-माला-वण्णग-विलेवणे आविद्ध-मणि-सुवण्णे कप्पिय-हार-द्धहार-तिसरय-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकय-सोभे पिणद्ध-गेविज्ज-अंगुलिज्जग-ललियंगय-ललिय-कयाभरणे वर-

'सुइ-माला-वण्णग-विलेवणे' शुचि-माला-वर्णक-विलेपन:-शुचि=शुद्ध यत् माला-वर्णकविलेपन -तत्र-माला=पुष्पमाला, वर्णक =अङ्गरागविशेष तस्य विलेपन, एतद्द्वय यस्य स तथा, 'आविद्ध-मणि-सुवण्णे' आविद्ध-मणि-सुवर्ण =परिहितमणिकनक-भूषण 'कप्पिय-हार-द्धहार-तिसरय-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकय-सोभे' कल्पित हारा-र्द्धहार-त्रिसरक-प्रालम्ब-प्रलम्बमान-कटिसूत्र-सुकृत - शोभ, कल्पित =परिभृत, हार =अष्टादशसरिक, अर्धहार =नवसरिक, त्रिसरिकश्च-'तिलडीहार' इति प्रसिद्ध येन स तथा, प्रालम्ब -झुम्बनक, प्रलम्बमानो यस्मिन् कटिसूत्रे तत् तेन कटिसूत्रेण='कन्दोरा' इति भाषाप्रसिद्धेन सुकृता=सुष्ठु रचिता शोभा येन स तथा, पदद्वयस्य कर्मधारय, हारादिधारणेन परमशोभासम्पन्न इत्यर्थ । 'पिणद्ध-गेविज्जग-अंगुलिज्जग-ललियंगय-ललिय-कयाभरणे' पिनद्ध-ग्रैवेयका-ङ्गुलीयक-ललिताऽ-ङ्गक-ललित-कृताऽऽभरण, पिनद्धानि ग्रैवेयकाणि=ग्रीवाभूषणानि, अङ्गुलीयकानि च, येन स तथा, ललिताङ्गके=सुन्दरशरीरे ललित यथा स्यात् तथा कृत=विन्यस्तमाभरण येन स तथा,

पहनी, एव शुद्ध सुगंधित द्रव्य का विलेपन किया । (आविद्ध-मणि-सुवण्णे) पुन सुवर्ण के आभूषण कि जिनमें मणि जडे हुए थे पहिने । (कप्पिय-हार-द्धहार-तिसरय-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकय-सोभे) अठारह लरका हार पहिरा, नव लर का हार पहिरा, तीन लर का हार पहिरा और लम्बा लटकता हुआ कटिसूत्र (कन्दोरा) पहिरा । (पिणद्ध-गेविज्जग-अंगुलिज्जग-ललियंगय-ललिय-कयाभरणे) गले में और भी सुन्दर आभूषण धारण किये । हाथों की अंगुलियों में मुद्रिकाएँ पहिरीं तथा शरीर पर उस समय के

માળા પહેરી તેમજ શુદ્ધ સુગંધિત દ્રવ્યનું વિલેપન કર્યું (आविद्ध-मणि-सुवण्णे) વળી સુવર્ણના ઘરેણા કે જેમા મણિ જડેલા હતા તે પહેર્યા (कप्पिय-हार द्धहार-तिसरय-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकय-सोभे) અઢાર સરનો હાર પહેર્યો, નવ સરનો હાર પહેર્યો, ત્રણ સરનો હાર પહેર્યો તથા લાંબો લટકતો કટિ-સૂત્ર (કંદોરો) કમરમા ધારણ કર્યો (पिणद्ध-गेविज्जग-अंगुलिज्जग-ललियंगय-ललिय-कयाभरणे) ગળામા બહુ જ સુંદર આભૂષણ ધારણ કર્યા હાથોના આગળામા વીંટીઓ પહેરી તથા શરીર ઉપર તે સમયને ઉચિત બીજા પણ

कडग-तुडिय-थंभिय-भुए अहिय-रूव-सस्सिरीए मुद्दिया-पिंगलंगुलीए कुंडल-उज्जोविया-णणे मउड-दित्त-सिरए हारोत्थय-सुकय-रइय-वच्छे पालंब-पलंबमाण-पड-सुकय-उत्तरिज्जे णाणा-

ततस्तयो कर्मधारय । यद्वा–पिनद्धानि यानि ग्रैवेयकाणि अङ्गुलीयकानि च तैर्ललिताङ्गक, तत्र ललित कनमाभरणम=अन्यद् भूषणजात येन स तथा। 'वरकडग-तुडिय-थभिय-भुए' वरकटक–त्रुटिक–स्तम्भित – भुज, वरकटकत्रुटिकै =श्रेष्ठवलयवाहुरक्षकाख्यैर्भूषणैर्भूषित-बाहु, 'अहिय-रूव-सस्सिरीए' अधिकरूपसश्रीक –अधिकसौन्दर्येण शोभासम्पन्न, 'मुद्दिया-पिंगल-गुलीए' मुद्रिका–पिङ्गला–ङ्गुलीक –मुद्रिकाभि =अङ्गुलीयकै पिङ्गला अङ्गुल्यो यस्य स तथा, 'कुडलउज्जोवियाणणे' कुण्डलोद्योतिताऽऽनन –कुण्डलदीप्त्या विद्योतितमुख, 'मउड–दित्त–सिरए' मुकुट–दीप्त–शिरस्क, 'हारो–त्थय–सुकय–रइय–वच्छे' हारा–वस्तृत–सुकृत–रतिद–वक्षा –हारेण अवस्तृतम=आच्छादित सुकृत= शोभनीकृतम् अतएव रतिद=दृष्टिसुखद वक्षो यस्य स तथा, 'पालंव–पलवमाण–पड–सुकय–उत्तरिज्जे' प्रालम्ब – प्रलम्बमान – पट – सुकृतो – त्तरीय – प्रालम्बेन=दीर्घेण

उचित और भी आभूषण धारण किये। (वर–कडग–तुडिय–थभिय–भुए) दोनों हाथों में सुन्दर कडे पहिने एव बाहुओं पर भुजबध बाधे, (अहियरूवसस्सिरीए) इस प्रकार उनके शरीर की शोभा और भी अधिक द्विगुणित हो गई। (मुद्दिया–पिंगलं–गुलीए) उनने जो मुद्रिकाएँ अगुलियों में पहिर रक्खी थीं उनसे उनकी अगुलिया सब पीली झायीं से चमकने लगीं। (कुडलउज्जोवियाणणे) कुण्डलों से मुख चमकने लगा। (मउड–दित्त-सिरए) मुकुट से मस्तक शोभित होने लगा। (हारोत्थय–सुकय–रइय–वच्छे) हार से अच्छादित उनका वक्षस्थल बडा ही मनोहर मालूम होने लगा, अत देखनेवालों को आनन्द होता था। (पालव–पलवमाण–पड–सुकय–उत्तरिज्जे) अधिक लबे वस्त्र का इनने

આભૂષણુ ધારણુ કર્યાં (वर-कडग-तुडिय-थंभिय-भुए) બન્ને હાથમા સુદર કડા પહેર્યા, તેમજ બાહુઓ ઉપર ભુજબધ બાધ્યા (अहिय-रूव-सस्सिरीए) આ પ્રકારે તેના શરીરની શોભા બહુ વધારે થઈ ગઈ (मुद्दिया-पिंगल-गुलीए) તેમણે જે વીટીઓ આગળામા પહેરી હતી તેનાથી તેમની બધી આગળાઓ પીળી ઝાઇથી ચમકવા લાગી (कुडल-उज्जोविया-णणे) કુડળોથી મુખ ચમકવા લાગ્યુ (मउड-दित्त-सिरए) મુકુટથી મસ્તક શોભવા લાગ્યુ (हारोत्थय-सुकय-रइय-वच्छे) હારથી ઢકાયેલ તેનુ વક્ષસ્થલ (છાતી) બહુજ મનોહર દેખાતુ

मणि-कणग-रयण-विमल-महरिह-णिउणो-विय-मिसिमिसत-विर-इय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-संठिय-पसत्थ-आविद्ध-वीर-वलए,

प्रलम्बमानेन पटेन=वस्त्रेण सुकृतम्=सुविन्यस्तम् उत्तरीयम्=उत्तरासङ्गवस्त्र येन स तथा, 'णाणा-मणि-कणग-रयण-विमल-महरिह-णिउणो-विय-मिसिमिसत-विरइय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-संठिय-पसत्थ-आविद्ध-वीर-वलए' नाना-मणि-कनक-रत्न-विमल-महार्ह-निपुण-परिकर्मित-देदीप्यमान-विरचित-सुश्लिष्ट-विशिष्ट-लष्ट-संस्थित-प्रशस्ता-ऽऽविद्ध-वीर-वलय - नानाविधानि मणिकनकरत्नानि = चन्द्रकान्तादिमणि-सुवर्ण-कर्केतनादि-रत्नानि यस्मिन् स, अत एव विमल =निर्मल महार्ह = महता योग्यश्च, तथा-निपुणपरकर्मितदेदीप्यमान -निपुणेन=शिल्पकलादक्षेण शिल्पिना 'उविय' परिकर्मित =संस्कारमापादित, तत एव 'मिसिमिसंत' देदीप्यमान = दीप्तिसम्पन्नश्च, पुन -विरचित - सुश्लिष्ट-विशिष्ट-संस्थित -विरचित=निर्मित-सुश्लिष्ट, शोभनसन्धिक विशिष्टम्=उत्कृष्टम् लष्ट=मनोहर संस्थित=संस्थानम्-आकारो यस्य स तथा, अत एव-प्रशस्त =प्रशंसनीय, एतादृश आविद्ध =परिधृत वीरवलयो=विजयवलयो येन

उत्तरासंग किया था। (णाणा-मणि-कणग-रयण-विमल-महरिह-निउणो-विय-मिसमिसत-विरइय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-संठिय-पसत्थ-आविद्ध-वीरवलये) देदीप्यमान तथा निपुण कारीगरों द्वारा सुसंस्कारित एव बडे भाग्यशालियों के धारण करने योग्य ऐसे निर्मल अनेक मणियों एव रत्नों से युक्त सुवर्ण के बने हुए वीरवलय को कि जो सुसंधि से संपन्न, उत्कृष्ट, मनोहर और सुन्दर आकार से विशिष्ट तथा प्रशंसनीय था इनने धारण कर रक्खा था। जिस वलय (कडे) को धारण कर शत्रु पर विजय प्राप्त की जाती है उस वलय का नाम वीरवलय है अथवा-जो इस वलय को धारण करता है वह

હતુ, આથી જોનારને આનંદ થતો હતો. (पालंब पलंबमाण पड-सुकय-उत्तरिज्जे) ઘણા લાંબા વસ્ત્રનું તેમણે ઉત્તરાસંગ (પછેડી) કર્યું હતું (णाणा-मणि-कणग रयण विमल महरिह निउणो विय मिसमिसत-विरइय सुसिलिट्ठ विसिट्ठ-लट्ठ सठिय पसत्थ आविद्ध-वीरवलये) દેદીપ્યમાન અને નિપુણ કારીગરો દ્વારા સુસંસ્કારિત, તેમજ ભાગ્યશાળીઓને ધારણ કરવા યોગ્ય એવા નિર્મળ, અનેક મણિઓ તથા રત્નોવડે યુક્ત સોનાનું બનાવેલું વીરવલય જે સુસંધિથી સંપન્ન, ઉત્કૃષ્ટ, મનોહર અને સુંદર આકારથી વિશિષ્ટ તથા પ્રશંસનીય હતું તે તેણે ધારણ કર્યું હતું જે વલય (કડા)ને ધારણ કરવાથી શત્રુ ઉપર વિજય મેળવાય છે તે વલયનું નામ વીરવલય છે અથવા જે આ વલયને ધારણ

किं बहुणा ! कप्परुक्खए चेव अलंकिय-विभूसिए णरवई सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं उभओ चउ-चामर-वाल-वीइ-

स तथा, य वलय धृत्वा विजयते तादृशवलयधारक इत्यर्थ । यद्वा—यदि कश्चिदस्ति वीरस्तदाऽसौ मा विजित्य मम हस्तादवहिष्करोतु वलयमिति स्पर्धयन् य कटक हस्ते परिधत्ते स वीरवलय इत्युच्यते । '**किं बहुणा**' किम्बहुना—किमधिकेन वर्णनेन ? '**कप्परुक्खए चेव अलंकियविभूसिए णरवई**' कल्पवृक्ष इवाऽलङ्कृतविभूषितो नरपति - अलङ्कृतो मणिरत्नाऽऽभूषणै, विभूषितश्च महार्हपरिधानायादिविचित्रवसनै नरपति कूणिको राजा साक्षात्कल्पवृक्ष इव शोभते इति भाव । स नरपति '**सकोरंट—मल्ल—दामेण**' सकोरण्ट—माल्य—दाम्ना—कोरण्टस्य माल्यानि=कुसुमानि तेषा दामानि=मालास्तै सहितेन '**छत्तेण धरिज्जमाणेण**' छत्रेण ध्रियमाणेन शोभमान, '**उभओ चउ—चामर—वाल—वीइयगे**' उभयत चतुश्चामरवालवीजिताङ्ग, '**मंगल-जयसद्द-कया-लोए**' मङ्गल-जयशब्द-कृताऽऽलोक -

इस बात की घोषणा करता है कि जो भी कोई वीर हो वह मेरे हाथ से इस वलय को खींचे-छुडावे, इस प्रकार की स्पर्धा से वीरों द्वारा जो वलय धारण किया जाता है वह भी वीरवलय कहा गया है। (**किं बहुणा**) अधिक क्या कहा जाय ? (**अलंकिय–विभूसिए**) मणिरत्नादिक के आभूषणों से अलकृत एव बहुमूल्य अनेक प्रकार के सुन्दर सुन्दर वस्त्रों से विभूषित (**णरवई**) वे राजा (**कप्परुक्खए चेव**) कल्पवृक्षकी तरह शोभित होने लगे। उनके ऊपर (**सकोरंट–मल्ल–दामेणं छत्तेण धरिज्जमाणेणं**) कोरंट के पुष्पों की मालाओं से युक्त छत्र धरा हुआ था, एव उनके ऊपर (**उभओ चउ–चामर–वाल–वीइयगे**) दोनों ओर से चार चामर ढोरे जा रहे थे, (**मगल–जयसद्द-कया-लोए**) तथा उनके देखते ही मनुष्यों ने 'मगल हो, जय

કરે છે તે એ વાતની ઘોષણા કરે છે કે જે કોઈ પણ વીર હોય તે મારી પાસેથી હાથમાંથી આ વલયને ખેંચીને છોડાવી જાય આ પ્રકારની સ્પર્ધાથી વીરો દ્વારા જે વલય ધારણ કરવામાં આવે છે તેને વીરવલય કહેવામાં આવે છે (किं बहुणा) વધારે શું કહેવું હોય ! (अलंकिय–विभूसिए) મણિરત્નોયુક્ત આભૂષણોથી અલંકૃત તેમજ બહુમૂલ્ય (ઘણી કિંમતી) અનેક પ્રકારના સુંદર વસ્ત્રોથી વિભૂષિત (णरवई) તે રાજા (कप्परुक्खए चेव) કલ્પવૃક્ષની પેઠે શોભવા લાગ્યા તેમના ઉપર (सकोरंट मल्ल दामेणं छत्तेण धरिज्जमाणेण) કોરંટના પુષ્પોની માલા વડે યુક્ત છત્ર ધારણ કરાયેલ હતુ તેમજ તેમના ઉપર (उभओ चउ–चामर–वालवीइयंगे) બન્ને બાજુએ મળી ચાર ચામર ઢોળાઈ રહ્યા હતા (मंगल–जयसद्द–कया–लोए) તથા તેમને

यंगे, मंगल-जयसद्द-कयालोए मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता अणेग-गणनायग-दंडनायग-राई-सर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवाल सद्धिं संपडिवुडे धवल-महामेह-णिग्गए इव गहगण-दिप्पंत-

मङ्गलरूपो जयशब्द कृतो जनेन आलोके=दर्शने यस्य स तथा, 'मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ' मज्जनगृहात्प्रतिनिष्क्रामति=बहिर्निर्गच्छति, 'पडिणिक्खमित्ता' प्रतिनिष्क्रम्य 'अणेग-गणनायग-दंडनायग-राई-सर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवाल सद्धिं संपडिवुडे' अनेक-गणनायक-दण्डनायक-राजेश्वर-तलवर-माडम्बिक-कौटुम्बिकेभ्य-श्रेष्ठि-सेनापति-सार्थवाह-दूत-सन्धिपालैः सार्द्धं सम्परिवृत –अत्र यानि पदानि प्राग् व्याख्यातानि, मज्जनगृहान्निष्क्रान्तो नरपतिः क इव शोभते ? इत्याह–'धवल' इत्यादि। 'धवल-महामेह-णिग्गए इव' धवल महामेघनिर्गत इव-धवलमहामेघतो निर्गत =मेघावरणविनिर्मुक्त इव 'गहगण-दिप्पंत-रिक्ख-तारागणाण मज्झे

हो' इस प्रकार का शब्द करने लगे। इस प्रकार वे राजा (मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ) स्नान घर से निकले। (पडिणिक्खमित्ता) निकलते ही (अणेग-गणनायग-दंडनायग राई-सर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवाल सद्धिं संपडिवुडे) अनेक गणनायकों, अनेक दंडनायकों, राजा, ईश्वर, तलवर, माडंबिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह, दूत एवं संधिपालों से घिरे हुए वे राजा (धवल-महामेह-णिग्गए इव) धवल महामेघ के आवरण से रहित (गहगण दिप्पंत-रिक्ख-तारागणाण मज्झे ससिव्व) ग्रहगणों के बीच में वर्तमान तथा दीप्यमान ऐसे

જોતાજ મનુષ્યો 'મંગલ હો જય હો' એ પ્રકારના શબ્દ બોલવા લાગ્યા આવી રીતે તે રાજા (मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ) સ્નાન ઘરમાંથી નીકળ્યા (पडिणिक्खमित्ता) નીકળતા જ (अणेग-गणनायग-दंडनायग-राई-सर-तलवर-माडबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवाल सद्धिं संपडिवुडे) અનેક ગણનાયકો, અનેક દંડનાયકો, રાજા, ઈશ્વર, તલવર, માડંબિક, કૌટુંબિક, ઈભ્ય, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ, સાર્થવાહ, દૂત તેમજ સંધિપાલકોથી ઘેરાએલા (नरवई) તે રાજા (धवल-महामेह-णिग्गए इव) ધવલ મહામેઘના આવરણથી મુક્ત (गहगण-दिप्पंत-रिक्ख-तारागणाण मज्झे ससिव्व) ગ્રહગણોના વચ્ચમાં વર્તમાન તથા

रिक्ख-तारागणाण मज्झे ससिव्व पियदंसणे णरवई जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अंजण-गिरिकूड-सण्णिभं गयवइं णरवई दुरूढे ॥ सू० ४८ ॥

ससिव्व' ग्रहगण दीप्यमान-ऋक्ष तारागणाना मध्ये गणीप=दीप्यमानानाम् ऋक्षाणा=नक्षत्राणा तारागणाना च मध्ये चन्द्र इव, 'पियदसणे' प्रियदर्शन 'णरवई' नरपति 'जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला' यत्रैव बाह्योपस्थानशाला, 'जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे' यत्रैवाऽभिषेक्य=पट्ट हस्तिरत्नम्, 'तेणेव उवागच्छइ' तत्रैवोपागच्छति, 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'अंजणगिरि-कूड-सण्णिभ गयवइ णरवई दुरूढे' अञ्जनगिरिकूटसन्निभ गजपतिं नरपतिर्दुरूढ =अञ्जनपर्वतशिखराऽऽकार गजेन्द्र नरेन्द्रो दुरूढ =आरूढवान् ॥ सू० ४८ ॥

नक्षत्र एव तारागणों के मध्य में सुशोभित चद्रमा के समान (पियदसणे) देखने में बहुत ही सुन्दर मालूम होते थे। मतलब इसका यह है कि यहाँ पर राजा को चद्रमा की और उनके स्नान घर को शुभ्र मेघों की, तथा गणनायक आदि को नक्षत्र और ताराओं की उपमा दी गई है। इस प्रकार से वे राजा (जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ) जहा पर बाहिर की ओर उपस्थानशाला थी और जहा वह आभिषेक्य हस्तिरत्न खडा हुआ था वहा पहुँचे। (उवागच्छित्ता अजण-गिरि-कूड-सण्णिभ गयवइ णरवई दुरूढे) पहुँचते ही वे अंजनगिरि के शिखर के समान उस हाथी पर आरूढ हो गये ॥ सू० ४८ ॥

દીપ્યમાન એવા નક્ષત્ર તેમજ તારાગણોના મધ્યમા સુશોભિત ચદ્રમા જેવા (पियदसणे) જોવામા બહુજ સુદર લાગતા હતા મતલબ એ છે કે અહી રાજાને ચદ્રમાની અને તેમના સ્નાનઘરને શુભ્રમેઘોની તથા ગણનાયક આદિને નક્ષત્ર અને તારાઓની ઉપમા આપી છે આ પ્રકારે તે રાજા (जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ) જ્યા બહારની બાજુએ ઉપસ્થાનશાલા હતી અને જ્યા તે આભિષેક્ય હાથીરત્ન ઉભો રહ્યો હતો ત્યા પહોચ્યા (उवागच्छित्ता अजणगिरि-कूड-संनिभं गयवइं णरवई दुरूढे) પહોચતા જ અજનગિરિના શિખરના જેવા તે હાથી ઉપર આરૂઢ થઇ ગયા (સૂ૦ ૪૮)

मूलम्—तए णं तस्स कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठ मंगलया पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, तंजहा-सोवत्थिय-

टीका—गजेन्द्राधिरूढो नरेन्द्रो भगवदभिमुखं यियासतीति तस्य पुरतः प्रयाणम् अष्टमङ्गलादिप्रयाणीकान्तं कान्तं राजोचितवस्तुजातं वर्णयति—'तए णं' इत्यादि। 'तए णं' ततः=तदनन्तरम्—सेनापतिसमानीतपट्टगजरत्नसमधिरोहणानन्तरं 'तस्स कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूढस्स समाणस्स' तस्य कूणिकस्य राज्ञो भंभसारपुत्रस्याऽऽभिषेक्यं हस्तिरत्नमधिरूढस्य सतः 'तप्पढमयाए इमे अट्ठ मंगलया पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया' तत्प्रथमतया इमान्यष्टाष्ट मङ्गलानि पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितानि, 'तंजहा'–तद्यथा–' सोवत्थिय–सिरिवच्छ–णंदियावत्त–वद्धमाणग–भद्दासण–कलस–मच्छ–दप्पणा'–सौवस्तिक–श्रीवत्स–नन्द्यावर्त – वर्द्धमानक–भद्रासन–कलश–मत्स्य–दर्पणाः, तत्र–मत्स्यः–चित्रपटलिखितमत्स्यरूपः। एते

'तए णं तस्स कूणियस्स' इत्यादि।

(तए णं) इसके बाद (भंभसारपुत्तस्स) भंभसार अर्थात् श्रेणिक के पुत्र (तस्स कूणियस्स रण्णो) उस कूणिक राजा के (आभिसेक्कं हत्थिरयणं) आभिषेक्य हस्तिरत्न के ऊपर (दुरूढस्स समाणस्स) सवार होते ही (तप्पढमयाए) सर्वप्रथम उनके (पुरओ) आगे आगे (इमे अट्ठट्ठ मंगलया अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया) ये आठ आठ मांगलिक द्रव्य अनुक्रम से संप्रतिष्ठित हुए–चलने लगे, (तं जहा) वे मांगलिक द्रव्य ये हैं, (सोवत्थिय–सिरिवच्छ–णंदियावत्त-वद्धमाणग–भद्दासण–कलस–मच्छ–दप्पणा) स्वस्तिक, श्रीवत्स, नन्द्यावर्त, वर्धमानक, भद्रासन, कलश, मत्स्य और दर्पण। इनमें से स्वस्तिक, श्रीवत्स, नन्द्यावर्त

"तए णं तस्स कूणियस्स" ઇત્યાદિ

(तए णं) ત્યાર પછી (भंभसारपुत्तस्स) ભંભસાર અર્થાત્ શ્રેણિકના પુત્ર (तस्स कूणियस्स रण्णो) તે કૂણિક રાજાના (आभिसेक्कं हत्थिरयणं) આભિષેક્ય હસ્તિરત્નના ઉપર (दुरूढस्स समाणस्स) સવાર થઈ જતા જ (तप्पढमयाए) સર્વથી પહેલા તેમની (पुरओ) આગળ આગળ (इमे अट्ठट्ठ मंगलया अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया) આ આઠ આઠ માંગલિક દ્રવ્ય અનુક્રમથી ગોઠવામાં આવ્યા, (तंजहा) તે માંગલિક દ્રવ્ય આ હતા (सोवत्थिय–सिरिवच्छ–णंदियावत्त वद्धमाणग भद्दासण–कलस मच्छ दप्पणा) १ સ્વસ્તિક, २ શ્રીવત્સ, ૩ નન્દ્યાવર્ત, ૪ વર્ધ-

सिरिवच्छ-णंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पणा । तयाणंतरं च णं पुण्ण-कलस-भिंगारं दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसण-रइय-आलोय-दरिसणिज्जा वाउ-द्धूय-विजय-

माङ्गल्किकतया यात्रायामुपयुक्ता । तदनन्तरं च खलु 'पुण्ण-कलस-भिंगार' पूर्ण-कलश-भृङ्गार,जलपरिपूर्णा घटा भृङ्गाराश्च, तत्र भृङ्गार -'झारी' इति प्रसिद्ध , एते पुर प्रस्थिता । 'दिव्वा य' दिव्या-शोभना च 'छत्तपडागा' छत्रपताका-छत्रेण सहिता पताका-छत्र-पताका 'सचामरा' सचामरा=चामराभ्यां युक्ता च, 'दसण-रइय-आलोय-दरिसणिज्जा' दर्शनरचिता-लोक-दर्शनीया दर्शने=राज्ञो दृष्टिविषये रचिता=कृता, आ=समन्तात् लोकै =जनै-र्दर्शनीया=दृश्या च, 'वाउ-द्धूय-विजय-वेजयंती य ' वातो-द्भूत-विजय-वैजयन्ती च-वातोद्भूता = पवनप्रकम्पिता चासौ विजयवैजयन्ती च = विजयसूचिका ध्वजपताका

और वर्धमानक ये साथिये कहलाते हैं। मत्स्य से यहा चित्रपट में लिखित मत्स्य का ग्रहण किया हुआ समझना चाहिये। ये आठ मगलरूप होने से प्रस्थान में उपयुक्त गिने जाते हैं। **(तयाणतरं च ण)** इसके बाद **(पुण्णकलसभिंगारं दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दसण-रइय-आलोय-दरिसणिज्जा वाउ-द्धूय-विजय-वेजयती य ऊसिया गगणतलमणु-लिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया)** कितनेक लोग पूर्णकलश=जल से भरे हुए कलश, तथा जल से भरी हुई झारियाँ लेकर आगे २ चलने लगे। कितनेक चामरसहित सुन्दर छत्र-पताकाओं को लेकर आगे २ चलने लगे। और कितनेक तो राजा की दृष्टि में आ सके इस प्रकार से रची हुई, देखने में सुन्दर ऊँची अत एव आकाश को छूती हुई ऐसी विजय-

માનક, ૫ ભદ્રાસન, ૬ કલશ, ૭ મત્સ્ય અને ૮ દર્પણ એમાંથી સ્વસ્તિક, શ્રીવત્સ, નન્દ્યાવર્ત અને વર્ધમાનક એ સાથિયા કહેવાય છે મત્સ્ય એટલે અહીં ચિત્રપટમાં આળેખેલા માછલાનુ ચિત્ર સમજી લેવુ આ આઠ મગલ સ્વરૂપ હોવાથી પ્રસ્થાન (બહાર જતી વખતે) ઉપયોગી ગણાય છે (तयाणतर च ण) ત્યાર પછી (पुण्णकलसभिंगार दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दसण-रइय-आलोय-दरिसणिज्जा वाउ-द्धूय-विजय-वेजयती य ऊसिया गगणतलमणुलिहती पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया) કેટલાક લોક પૂર્ણ કલશ-જલથી ભરેલા કળશ તથા જલથી ભરેલી ઝારીઓ લઈને આગળ આગળ ચાલવા લાગ્યા કેટલાંક ચામર સહિત સુદર છત્ર પતાકાઓને લઈને આગળ આગળ ચાલવા લાગ્યા, અને કેટલાક તો રાજાની નજર પડી શકે એમ રાખેલી, જોવામાં સુંદર

वेजयंती य ऊसिया गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया । तयाणंतरं च णं वेरुलिय-भिसंत-विमल-दंडं पलंब-कोरंट-मल्लदामो-वसोभियं चंदमंडलणिभं समूसियं विमलं आयवत्तं पवरं सीहासणं वरमणिरयणपादपीढं सपाउयाजोयसमा-

'ऊसिया' उच्छ्रिता-उत्थापिता, अतएव 'गगणतलमणुलिहन्ती' गगनतलमनुलिखन्ती=व्योमतलं स्पृशन्ती-अत्युच्चा, पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थिता=प्रचलिता । छत्रं वर्णयन्नाह-'वेरुलिय' इत्यादि। तदनन्तरं खलु 'वेरुलिय-भिसंत-विमल-दंड' वैडूर्यभासमान-विमल-दण्डम्-वैडूर्यस्य=रत्नविशेषस्य भासमानो=दीप्यमानो विमलो दण्डो यत्र तत् तादृशम्,-'पलंब-कोरंट-मल्ल-दामोवसोभियं' प्रलम्बमान-कोरण्ट-माल्यदामोपशोभितम्' प्रलम्बमानेन कोरण्टाख्यमाल्योपयोगिकुसुमानां दाम्ना=मालया उपशोभितम् । अतएव-'चंद-मंडलणिभं' चन्द्रमण्डलनिभ-चन्द्रमण्डलेन समानम्, 'समूसियं' समुच्छ्रितम्=विस्तारितम्, 'विमलं आयवत्तं' विमलम् आतपत्रम्, सिंहासनं वर्णयन्नाह-'पवर-सीहासणं' इति, प्रवरसिंहासनम्, तत् कीदृशम्? इत्याह-'वर-मणि-रयण-पाद-पीढं' वर-मणि-रत्न-पाद-

वैजयन्ती-विजयध्वजों को लेकर आगे २ चलने लगे। (तयाणंतरं च णं) इसके बाद (वेरुलिय-भिसंत-विमल-दंड पलंब-कोरंट-मल्ल-दामो-वसोभियं चंदमंडलणिभं समूसियं विमलं आयवत्तं पवरं सीहासणं वर-मणि-रयण-पादपीढं सपाउयाजोयसमाउत्तं बहु-किंकर-कम्मकर-पुरिस-पायत्त-परिक्खित्तं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिय) कितनेक लोग वैडूर्य मणि की प्रभा से प्रकाशित दण्डवाले, लटकती हुई कोरंटमाला से सुशोभित, चन्द्रमण्डलसदृश तथा ऊँचे उठाये हुए ऐसे छत्र को लेकर आगे २ चले। तथा बहुत से नौकर-चाकर और सैनिक लोग श्रेष्ठ सिंहासनको तथा पादुकासहित, उत्तम मणि-

ઉંચી એટલે કે આકાશને અડતી હોય તેવી વિજયવૈજયન્તી વિજયધ્વજાઓને લઈને આગળ આગળ ચાલવા લાગ્યા (तयाणंतरं च णं) ત્યાર પછી (वेरुलिय-भिसंत-विमल-दंड पलंब-कोरंट-मल्ल-दामो-वसोभियं चंद-मंडल-णिभं समूसियं विमलं आयवत्तं पवरं सीहासणं वर-मणि-रयण-पाद-पीढं सपाउया-जोय-समाउत्तं बहु-किंकर-कम्मकर-पुरिस-पायत्त-परिक्खित्तं पुरओ अहापुणुव्वीए संपट्ठिय) કેટલાક લોક વૈડૂર્યમણિની પ્રભાથી પ્રકાશિત દંડવાળા, લટકતી કોરંટમાળાથી શોભતા, ચન્દ્રમંડલ જેવા, તથા ઉંચે ઉપાડેલા છત્રને લઈ

उत्तं वहु-किंकर-कम्मकर-पुरिस-पायत्त-परिक्खित्तं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं। तयाणंतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा चावग्गाहा चामरग्गाहा पासग्गाहा पोत्थयग्गाहा फलगग्गाहा पीढग्गाहा वीणग्गाहा कूवग्गाहा हडप्पयग्गाहा पुरओ अहाणुपुव्वीए संप-

पीठम्-श्रेष्ठ-मणि-रत्न-खचित-पादस्थापनपाठ-सहितम्, 'सपाउया-जोय-समाउत्तं' स्व-पादुकायोग-समायुक्तम्-स्वपादुकयोर्यो योग =सम्बन्ध, तेन समायुक्तम्, 'वहु-किंकर-कम्मकर-पुरिस-पायत्त-परिक्खित्तं' वहु-किङ्कर-कर्मकर-पुरुष-पादात-परिक्षिप्तम्-बहुभि =अनेकै किङ्करै =स्वामिन पृष्ट्वा कार्यकरै, कर्मकरै =भृत्यै, पुरुषै =साधारणजनै, पादातेन=पदातिसमूहेन परिक्षिप्तम्=उत्थापितम्, पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितम्। 'तयाणतर च ण' तदनन्तरञ्च खलु 'वहवे लट्ठिग्गाहा' वहवो यष्टिग्राहिण, 'कुतग्गाहा' कुन्तग्राहिण =भल्लधारका 'चावग्गाहा' चापग्राहिण =धनुर्धारिण, 'चामरग्गाहा' चामरग्राहिण, 'पासग्गाहा' पाशग्राहिण -उद्धतगजाश्वादिबन्धनसाधन पाशस्तस्य धारका। 'पोत्थयग्गाहा' पुस्तकग्राहिण, 'फलगग्गाहा' फलकग्राहिण -फलक ='ढाल' इतिख्यातस्तस्य धारका, 'पीढग्गाहा' पीठग्राहिण -पीठानि=आसनविशेषास्तेषा धारका इत्यर्थ। 'वीणग्गाहा' वीणाग्राहिण -वीणा=वाद्य-

रत्नों के बने हुए पादपीठ को लेकर आगे २ चलने लगे। इसके बाद (बहवे लट्ठिग्गाहा) अनेक लाठीधारी चलने लगे। (कुतग्गाहा) अनेक भल्लधारी (चावग्गाहा) धनुर्धारी (चामरग्गाहा) चामरधारी (पासग्गाहा) उद्धत हाथी और घोडों को जिसके द्वारा वश मे किया जाये ऐसे पाश को धारण करने वाले, (पोत्थयग्गाहा) पुस्तकधारी, (फलगग्गाहा) ढाल को धारण करन वाले (पीढग्गाहा) आसनविशेष के धारी (वीणग्गाहा) वीणाधारी (कुतु-

આગળ આગળ ચાલ્યા, તથા ઘણા નોકર-ચાકર અને સૈનિક લોક શ્રેષ્ઠ સિંહાસનને તથા પાદુકાસહિત ઉત્તમ મણિરત્નોની બનેલી પાદપીઠને લઈને આગળ આગળ ચાલ્યા ત્યાર પછી (बहवे लट्ठिग्गाहा) અનેક લાઠીધારી ચાલવા લાગ્યા (कुंतग्गाहा) અનેક ભાલાધારી, (चावग्गाहा) ધનુર્ધારી, (चामरग्गाहा) ચામરધારી, (पासग्गाहा) ઉદ્ધત હાથી અને ઘોડાને જેના દ્વારા વશમાં લઈ શકાય એવા પાશને ધારણ કરવાવાળા, (पोत्थयग्गाहा) પુસ્તકધારી, (फलगग्गाहा) ઢાલને ધારણ કરવાવાળા, (पीढग्गाहा) આસન વિશેષના ધારણ કરવાવાળા, (वीणग्गाहा) વીણાધારી, (कुतुवग्गाहा) કુતુપ અર્થાત્ ચામડાના તેલ પાત્રને

ट्ठिया। तयाणंतरं च णं बहवे दंडिणो मुंडिणो सिहंडिणो जडिणो पिच्छिणो हासकरा डमरुयकरा चाडुकरा वादकरा कंदप्पकरा दवकरा कोकुइया किड्डुकरा य वायंता य गायंता य हसंता य णच्चंता य भासं-

विशेषस्तस्या धारका इत्यर्थः, 'कुतुवग्गाहा' कुतुपग्राहिणः—तैलादीना चर्ममयं पात्रं कुतुपस्तस्य धारकाः, 'हडप्पयग्गाहा' हडप्फग्राहिणः—ताम्बूलादिभाजनं हडप्फस्तस्य धारका इत्यर्थः, 'पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया' पुरतो यथानुपूर्व्या संप्रस्थिताः। 'तयाणतरं च णं' तदनन्तरं च खलु 'बहवे' बहवो 'दंडिणो' दण्डिनः 'मुंडिणो' मुण्डिनः 'सिहंडिणो' शिखण्डिनः=शिखाविशेषधारिणः, 'जडिणो' जटिनः=जटावन्तः, 'पिच्छिणो'-पिच्छिनः=मयूरादिपिच्छवन्तः 'हासकरा' हास्यकराः 'डमरुयकरा' डमरुकराः='डुगडुगी'-तिप्रसिद्धवाद्यवादिनः, 'चाडुकरा' चाटुकारिणः=प्रियवचनवादिनः, 'वादकरा' वादकारिणः, 'कंदप्पकरा' कन्दर्पकारिणः=कामकथाकारिणः, 'दवकरा' द्रवकराः=परिहासकारिणः 'कोकुइया' कौतुकिकाः=कुतूहलकारिणः, 'कीड्डकरा' क्रीडाकराः, 'वायंता य' वादयन्तश्च—मृदङ्गादिक

वग्गाहा) कुतुप अर्थात् चमडे के तैलपात्र को धारण करने वाले, (हडप्पयग्गाहा) तथा हडप्फ—ताम्बूल पात्र को धारण करने वाले अनुक्रम से आगे २ चलने लगे। (तयाणतरं च णं) इसके बाद (बहवे) बहुत से (दंडिणो) दंडी, (मुंडिणो) मुण्डी, (सिहंडिणो) शिखाधारी, (जडिणो) जटाधारी, (पिच्छिणो) मयूर आदि पिच्छ के धारी (हासकरा) हँसाने वाले (डमरुयकरा) डुगडुगी बजाने वाले, (चाडुकरा) प्रिय वचन बोलने वाले, (वादकरा) वादविवाद करने वाले, (कंदप्पकरा) कामकथा करने वाले, (दवकरा) हँसी मजाक करने वाले, (कोकुइया) कुतूहल करने वाले, (किड्डकरा य) खेल-तमाशा करने वाले, (वायंता य) मृदंगादिक बाजे बजाने वाले (गायंता य) गाना गाने वाले, (हसंता य) बिना कारण

(कुपीओने) धारण करवावाळा, (हडप्पयग्गाहा) तथा हडप्फ-(ताम्बूलपात्र)ने धारण करवावाळा अनुक्रमथी आगळ आगळ चालवा लाग्या (तयाणतरं च णं) त्यार पछी (बहवे) अनेक (दंडिणो) दंडी (मुंडिणो) मुंडी (सिहंडिणो) शिखाधारी (जडिणो) जटाधारी (पिच्छिणो) मयूर आदि पीछाना धारण करनारा (हासकरा) हसावनारा (विदूषको) (डमरुयकरा) डुगडुगी वगाडनारा (चाडुकरा) प्रियवचन बोलनारा, (वादकरा) वादविवाद करनारा, (कंदप्पकरा) कामकथा करनारा, (दवकरा) हांसीमजाक करनारा, (कोक्कुइया) कुतूहल करनारा, (किड्डकरा) खेल तमासा करनारा, (वायंता य) मृदंगादिक (ढोल) वाजां वगाडनारा, (ग[illegible] य)

ता य सावेंता य रक्खंता य आलोयं च करेमाणा जयसद्द पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया । तयाणंतरं च णं जच्चाणं तर-मल्लिहायणाणं हरिमेला-मउल-मल्लिय-च्छाणं चंचुच्चिय-ललिय-

नाटयन्त, 'गायंता' गायन्त =गान्धर्वमनुतिष्ठन्त, 'हसता' हसन्त, च-पुन 'णच्चंता' नृत्यन्त, 'भासंता' भाषमाणा 'सावेंता' श्रावयन्त =भूत-भविष्यद्-वादिन, 'रक्खंता' रक्षन्त -राज्ञो देहरक्षा कुर्वन्त, 'आलोयं च करेमाणा' आलोकं च कुर्वन्त -राजादिदर्शनं कुर्वन्त, 'जयसद्द पउंजमाणा' जयशब्द प्रयुञ्जाना =वदन्त । 'पुरओ' पुरत -अग्रत, 'अहाणुपुव्वीए' यथानुपूर्व्या=क्रमेण 'संपट्ठिया' सम्प्रस्थिता -प्रचलिता । 'तयाणतर च णं' तदनन्तरञ्च खलु 'जच्चाण' जात्यानाम्-उत्तमजाति-भवानाम्, 'तर-मल्लि-हायणाण' तरोमल्लिहायनाना-तरो=वेग तस्य मल्लि =धारक - 'मल्ल मल्ल धारणे' इति धातुपाठे स्थितान्मल्लधातो कर्तरि ड, ततश्च तरोमल्लि =वेगधारक हायन =सवत्सरो येषां ते तरोमल्लिहायना -यौवनवय स्थितास्तेषाम्, तुरगाणामित्यग्रेण अन्वय, पुन कीदृशानाम् ? अत्राऽऽह- 'हरिमेला-मउल-मल्लिय-च्छाण' हरिमेला-मुकुल-मल्लिका-क्षाणाम्-हरिमेला=वृक्षविशेष तस्य मुकुल=कलिका, मल्लिका=वसन्तज

हँसने वाले, (णच्चंता य) नाचने वाले, (भासंता य) भाषण करने वाले, (सावेंता य) भूत-भविष्यत् कहने वाले, (रक्खंता य) राजा के आत्मरक्षक, (आलोयं च करेमाणा) राजा का दर्शन करने वाले पुरुष, तथा-(जयसद्द पउंजमाणा) 'जय जय' शब्द करने वाले, ये सभी (पुरओ) आगे २ (अहाणुपुव्वीए) यथाक्रम से (संपट्ठिया) चलने लगे। (तयाण-तरं च णं) इसके बाद (जच्चाणं तरमल्लिहायणाणं) उत्तम जाति के, वेगवाले नौजवान घोडे चलने लगे। (हरिमेला-मउल-मल्लिय-च्छाण) ये घोडे हरिमेला-वृक्षविशेष की

ગાયન ગાનારા, (हसता य) વિનાકારણ હસનારા, (णच्चंता य) નાચનારા, (भासंता य) ભાષણ કરનારા, (सावेंता य) ભૂત ભવિષ્ય કહેનારા, (रक्खंता य) રાજાના આત્મ રક્ષક, (आलोयं च करेमाणा) રાજાના દર્શન કરનારા, તથા (जयसद्द पउंजमाणा) 'જય જય' શબ્દ કરવાવાળા, એ બધા (पुरओ) આગળ આગળ (अहाणु पुव्वीए) યથાક્રમથી (संपट्ठिया) ચાલવા લાગ્યા (तयाणतरं च णं) ત્યાર પછી (जच्चाणं तरमल्लिहायणाणं) ઉત્તમ જાતિના વેગવાળા નવજુવાન ઘોડા ચાલવા લાગ્યા (हरिमेला-मउल-मल्लिय-च्छाणं) આ ઘોડા હરિમેલા-વૃક્ષવિશેષની કળી તેમજ મલ્લિકાપુષ્પ-વેલાના ફૂલ જેવી આંખો-

पुलिय-चल-चवल-चंचल-गईणं लंघण-वग्गण-धावण-धोरण-तिव-ई-जइण-सिक्खिय-गईणं ललंत-लाम-गललाय-वर-भूसणाणं मुह-

कुसुमविशेष 'वेली' इतिख्यातस्तद्वदक्षिणी येषा ते तथा तेषा, 'चचु-चिय-ललिय-पुलिय-चल-चवल-चचल-गईण' चञ्चु-चित-ललित-पुलित-चल-चपल चञ्चल-गतीनाम्, चञ्चु=शुकचञ्चु-तद्वद्वक्रतया उचित=चरणयोरुत्थापन तेन ललित=सविलास यत् पुलित=गमनविशेष-तद्रूपा-चलाना=गतिमता चपलचञ्चला=अतिचञ्चला, यद्वा-चपला-विद्युत्, तद्वच्चञ्चला गतिर्येषा ते तथा तेषा, वक्रपदक्षेपगमनविशेषाऽतिशयचञ्चलगमनवताम्, 'लघण-वग्गण-धावण-धोरण-तिवई-जइण-सिक्खिय-गईण' लङ्घन वल्गन धावन-धोरण-त्रिपदी-जयिनी-शिक्षित-गतीनाम लङ्घन-गर्त्तादिरुल्लङ्घनम्, वल्गनम्=उत्कूर्दनम्, धावन=शीघ्रमृजुगमनम्, धोरण=गतिचातुर्यम्, त्रिपदी=भूमौ पदत्रयन्यास, जयिनी=जयिन्याख्या अतितीव्रगति, एता शिक्षिता=अभ्यस्ता गतयो यैस्ते तथा तेषाम्। 'ललत-लाम-गललाय-वर-भूसणाण' लल-ल्लामद्-गललात-वर-भूषणानाम्-ललन्ति=दोलायमानानि, लामन्ति=रम्याणि, गललातानि=ग्रीवास्थितानि वरभूषणानि येषा ते तथा तेषा,-चञ्चलसुन्दरग्रीवाभरण-

कली एव मल्लिकापुष्प-वेला के फूल-के समान आखोंवाले थे। (चचु-चिय-ललिय-पुलिय-चल-चवल-चचल-गईणं) शुक की चचु के समान वक्र पैर उठा कर सविलास चलने के कारण वे बहुत भले मालूम होते थे, तथा चलने में बिजली के समान चचल थे। (लंघण वग्गण-धावण-धोरण-तिवई-जइण-सिक्खियगईण) लघन-खड्डे आदि का लाघना, वल्गन-कूदना, धावन-शीघ्रतापूर्वक दौडना, धोरण-सूगर के समान नीचे सिर कर के दौडना, त्रिपदी-तीन पैरों से खडा होना, जयिनी-अतितीव्र चालका चलना,-इन सबों में ये अति-निपुण थे। (ललत-लाम-गललाय-वर-भूसणाणं) इनके गले में जो आभूषण थे वे इधर उधर हिलते डुलते थे और बहुत ही सुन्दर थे। (मुहभंडग-ओचूलग-थासग-अहि-

વાળા હતા (चंचु चिय-ललिय पुलिय चल चवल चचल गईणं) પોપટની ચાંચની જેમ વાંકા પગ ઉપાડીને વિલાસ કરતા ચાલવાના કારણે તેઓ બહુ ભલા લાગતા હતા, તથા ચાલવામાં વિજળીની પેઠે ચચળ હતા (लघण-वग्गण धावण-धोरण तिवई जइण सिक्खिय गईण) લ ઘન-ખડ્ડ આદિને લાઘવુ (ટપવુ) વલ્ગન-કૂદવુ, ધાવન-ઝડપથી દોડવું, ધોરણ-સૂકરની પેઠે નીચુ માથુ રાખી દોડવુ, ત્રિપદી-ત્રણ પગે ઉભા રહેવુ, જયિની-અતિ' ઝડપવાળા ચાલથી ચાલવુ આ બધામા તેઓ નિપુણ હતા (ललत-लाम गललाय-वर भूसणाण) તેમના ગળામા જે આભૂષણ હતા તે આમતેમ હાલતા-ડોલતા હતા અને

मंडग-ओचूलग-थासग-अहिलाण-चामर-गड - परिमंडिय - कडीणं किंकर-वर-तरुण-परिग्गहियाणं अट्ठसयं वरतुरगाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं। तयाणंतरं च णं ईसीदंताणं ईसीमत्ताणं ईसीतुंगाणं

भूषितानाम्। 'मुहभडग–ओचूलग–थासग–अहिलाण–चामरगड–परिमडिय-कडीण' मुखभाण्डका ऽवचूलक–स्थासका-भिलान-चामरगण्ड-परिमण्डित-कटीनाम्–मुखभाण्डक=मुखाभरणम्, अवचूला =प्रलम्बमानगुच्छा, स्थासका =दर्पणाऽकारा अलङ्कारा, अभिलाना =मुखबन्धविशेषाश्च, येषा ते, तथा चामरगण्डै =चामरसमूहै, परिमण्डिता कटिर्येषा ते तथा, तत पदद्वयस्य कर्मधारय, तेषा तथाभूतानाम्। 'किंकर–वर–तरुण–परिग्गहियाण' किङ्करवरतरुण–परिगृहीतानाम्–किङ्करवराश्च ते तरुणा -तरुणकिङ्करश्रेष्ठा, तै परिगृहीतानाम्, 'अट्ठसय वरतुरगाण' अष्टशत वरतुरगाणा=श्रेष्ठहयानामष्टाऽधिक शतम्, 'पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिय' पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितम्। 'तयाणतरं च ण' तदनन्तर च खलु- 'ईसीदताण' ईषदन्तानाम्=अल्पदन्तवताम् 'ईसीमत्ताण' ईषन्मत्तानाम्=किञ्चिन्मदशालिनाम्,

लाण–चामरगड–परिमडिय–कडीण) मुखभाण्डक–मुख का आभूषण, अवचूल–प्रलम्बमान गुच्छे जो मस्तक के ऊपर मुर्गे की कलगी के समान लगाये जाते है, स्थासक-दर्पण के आकार जैसे आभरणविशेष, तथा–अहिलाण–मुखबन्धविशेष से ये शोभित हो रहे थे, तथा चामरगड – चामरसमूह–से इनका कटिभाग विशेष अलकृत हो रहा था। (किंकर–वरतरुण–परिग्गहियाणं) इनको पकडने वाले सईस उत्तम एव तरुण अवस्था वाले थे। (अट्ठसय वर तुरगाण पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठियं) इस प्रकार १०८ घोडे आगे आगे अनुक्रम से चलने लगे। (तयाणतर च ण ईसीदताण ईसीमत्ताणं ईसीतुंगाणं

બહુજ સુદર હતા. (मुहभडग ओचूलग थासग-अहिलाण चामरगड परिमडिय-कडीण) મુખભાડક-મુખનુ આભૂષણ, અવચૂલ-પ્રલબમાન ગુચ્છા જે મસ્તકના ઉપર કુકડાની કલગીના જેમ લગાવાય છે, સ્થાસક-દર્પણના આકાર જેવા આભરણ વિશેષ, તથા અહિલાણ-મુખબધનવિશેષ, એ બધાથી તેઓ શોભિત થઈ રહ્યા હતા, અને ચામરગડ-ચામરસમૂહથી તેમનો કેડનો ભાગ વિશેષ અલકૃત થઈ રહ્યો હતો (किंकर–वर–तरुण–परिग्गहियाण) તેમને પકડનારા સઈસ ઉત્તમ તેમજ તરુણ અવસ્થાના હતા (अट्ठ सय वर तुरगाण पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिय) આ પ્રકારના ૧૦૮ ઘોડા અનુક્રમથી આગળ આગળ ચાલવા લાગ્યા (तयाणतर च ण ईसीदताण ईसी

ईसी-उच्छंग-विसाल-धवल-दंताणं कंचण-कोसी-पविट्ठ-दंताणं कंचण-मणि-रयण-भूसियाणं वर-पुरिसा-रोहग-संपउत्ताणं अट्ठसयं गयाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं । तयाणंतरं च णं सच्छ-

'ईसीतुंगाण' ईषत्तुङ्गानाम्=मनागुन्नतानाम्, 'ईसी-उच्छंग-विसाल-धवल-दंताण' ईष दुत्सङ्ग-विशाल-धवल-दन्तानाम्-ईषदुत्सङ्गे=मध्यभागे विशाला अल्पतरत्वात्, तथा धवला दन्ता येषां ते धवलदन्ता, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, तेषाम्, 'कंचण-कोसी-पविट्ठ-दंताण' काञ्चन-कोश-प्रविष्ट-दन्तानाम्, 'कंचण-मणि-रयण-भूसियाण' काञ्चनमणि-रत्न-भूषितानाम्, 'वर-पुरिसा-रोहग-संपउत्ताण' वर-पुरुषा-ऽऽरोहक-सम्प्रयुक्तानाम् वर पुरुषाः=श्रेष्ठपुरुषाश्रामी-आरोहकाः तैः सम्प्रयुक्तानाम्=युक्तानाम्, एतादृशा-'गयाण' गजानाम्=हस्तिनाम्, 'अट्ठसयं' अष्टशतम्=अष्टाधिकं शतम्, 'पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं' पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितम् । अथ रथानां वर्णनमाह-'तयाणंतरं' इत्यादि । 'तयाणंतर

ईसी-उच्छंग-विसाल-धवल-दंताण कंचण-कोसी-पविट्ठ-दंताण कंचण-मणि-रयण-भूसियाण वर-पुरिसा-रोहग-संपउत्ताणं अट्ठसयं गयाण पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं) इनके बाद आगे आगे १०८ हाथी चले, ये हाथी अल्पदंतवाले थे, पूरे दांत इनके बाहिर नहीं निकल पाये थे । किंचित् मदशाली थे । थोड़े ही ऊँचे थे, अधिक नहीं, इनका मध्यभाग भी अधिक विशाल नहीं था । दांत इनके अत्यंत धवल थे । इनके दांतों में सोने की खोलियाँ पहनायी गयी थीं । ये सुवर्ण एवं मणिरत्नों से विभूषित हो रहे थे । इनके ऊपर श्रेष्ठ पुरुष बैठे हुए थे । (तयाणंतरं च णं सच्छत्ताणं सज्झयाणं सघंटाणं सपडागाणं सतोरणवराणं सणंदिघोसाणं स-खिंखिणी-जाल-परिक्खित्ताणं हेमवय-चित्त-

मत्ताणं ईसीतुंगाणं ईसी-उच्छंग विसाल धवल दंताणं कंचण कोसी पविट्ठ दंताणं कंचण-मणि-रयण भूसियाणं वर पुरिसा-रोहग संपउत्ताणं अट्ठसयं गयाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं) त्यारंपछी આગળ આગળ ૧૦૮ હાથી ચાલ્યા આ હાથી અલ્પ દાંત વાળા હતા-તેના દાંત પૂરા બહાર નીકળેલા નહોતા કિંચિત્ મદશાળી હતા થોડાક ઉંચા હતા બહુ નહિ તેમનો પીઠનો ભાગ વધારે પહોળો નહોતો તેમના દાંત બહુ ધોળા હતા તેમના દાંતમાં સોનાની ખોળો પહેરાવી હતી તેઓ સુવર્ણ તેમજ મણિરત્નો વડે વિભૂષિત બન્યા હતા તેમના ઉપર શ્રેષ્ઠ પુરુષ બેઠા હતા (तयाणंतरं च णं सच्छत्ताणं सज्झयाणं सघंटाणं सपडागाणं सतोरणवराणं सणंदिघोसाणं स-खिंखिणी-जाल-परिक्खित्ताणं हेमवय-चित्त-तिणिस-कणग-

त्ताणं सज्झयाणं सघंटाणं सपडागाणं सतोरणवराणं सणंदि-

च ण' तदनन्तरञ्च खलु 'सच्छत्ताण' सच्छत्राणा=छत्रयुक्तानाम्, 'सज्झयाण' सध्वजानाम्-ध्वजयुक्तानाम् 'सघंटाणं' सघण्टानाम्, 'सपडागाण' सपताकानाम्-ध्वजो गरुडादिचिह्न-युक्तस्तदन्या तु पताका तद्वताम्. 'सतोरणवराण' सतोरणवराणाम्=श्रेष्ठतोरणवताम्, 'सणंदिघोसाण' सनन्दिघोषाणाम्--नन्दी=द्वादशविधवाद्यनिर्घोष, तद् यथा--१ भभा, २ मउद, ३ मद्दल, ४ कडव, ५ झल्लरि, ६ हुडुक्क, ७ कसाला। ८ काहल, ९ तलिमा, १० वसो, ११ संखो, १२ पणवो य बारसमो ॥ १ ॥ तत्र-'भभा' भम्भा=भेरी १, 'मउद' मुकुन्द = वाद्यविशेष २, 'मद्दल' मर्दल =मृदङ्ग ३, 'कडव' कडम्ब =वाद्यविशेष ४, 'झल्लरि' झल्लरी-'झालर' इति ख्यातो वाद्यविशेष ५, 'हुडुक्क' हुडुक्क =वाद्यविशेष, अय देशीय शब्द ६, 'कसाला' कास्याल =वाद्यविशेष ७, 'काहल' काहल =वाद्यविशेष ८, 'तलिमा' तलिमा=

तिगिस-कणग-णिज्जुत्त-दारुयाण कालायस-सुकय-णेमि-जत-कम्माण) इनके बाद आगे आगे १०८ रथ चल रहे थे, ये रथ छत्रसहित थे, ध्वजासहित थे, इनके ऊपर ध्वजाएँ फहरा रही थीं, इनमें घण्टे लटक रहे थे, जिससे चलते समय इनकी मधुर आवाज आती थी। पताकासहित थे। (गरुड आदि के चिह्नों से युक्त का नाम ध्वजा है और चिह्नरहित का नाम पताका है।) इन रथों पर तोरण बंधे हुए थे। ये रथ नन्दिघोष सहित थे। बारह प्रकार के वाद्यों का नाम नंदिघोष है, वे १२ बारह प्रकार के बाजे ये है-भभा-भेरी, मउद-मुकुंद (यह एक जात का बाजा होता है), मद्दल-मृदग, कडब-(यह भी एक जात का बाजा होता है), झल्लरी-झालर, हुडुक्क (यह भी एक जात का बाजा विशेष होता है), कसाल-(यह भी एक जातका बाजाविशेष है), काहल-(यह भी एक जात का बाजा विशेष है), तलिमा-वाद्यविशेष, वश-वाद्यविशेष, शख, एव १२वा पवण-

णिज्जुत्त-दारुयाण कालायस-सुकय-णेमि-जत-कम्माण) त्यार पछी आगळ आगळ १०८ रथ चालता हता आ रथ छत्रवाळा हता ध्वजावाळा हता तेमना उपर ध्वज फरकी रही हती तेमा घट लटकी रह्या हता जेथी चालती वखते तेमनो मधुर अवाज आवतो हतो पताकावाळा हता (गरुड आदिना चिह्नो जेमा होय ते ध्वजा कहेवाय अने जे चिह्नविनानी े पताका कहेवाय) आ रथो उपर तोरण बांधेला हता नदिघोषवा रना वाद्यो (वाजा)ना नाम नदिघोष छे तेओ १२ छे-भभा-भेरी, मउद-मुकुद (आ एक जातनु वाजु हुडुक्क (आ पण एक अमुक जातनु वाजु होय छे) क वाजु विशेष छे) काहल-आ पण एक अमुक जातनु वा

ईसी उच्छंग-विसाल-धवल-दंताणं कंचण-कोसी-पविट्ट-दंताणं कंचण-मणि-रयण-भूसियाणं वर-पुरिसा-रोहग-संपउत्ताणं अट्ठसयं गयाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं । तयाणंतरं च णं सच्छ-

'ईसीतुगाण' ईषत्तुङ्गानाम्=मनागुन्नतानाम्, 'ईसी-उच्छंग-विसाल-धवल-दताण' ईषदुत्सङ्ग-विशाल-धवल-दन्तानाम्-ईषदुत्सङ्गे=मध्यभाग विशाला अल्पतरत्वात्, तथा धवला दन्ता येषा ते धवलदन्ता, तत पदद्वयस्य कर्मधारय, तेषाम्, 'कंचण-कोसी पविट्ठ-दताण' काञ्चन-कोश प्रविष्ट-दन्तानाम्, कचण-मणि-रयण-भूसियाण' काञ्चनमणि-रत्न-भूषितानाम्, 'वर-पुरिसा-रोहग-सपउत्ताण' वर-पुरुषा-ऽऽरोहक-सम्प्रयुक्तानाम् वर पुरुषा =श्रेष्ठपुरुषाश्चामी-आरोहका तै सम्प्रयुक्तानाम्=युक्तानाम्, एतादृशा-'गयाण' गजानाम्=हस्तिनाम्, 'अट्ठसय' अष्टशतम्=अष्टाधिक शतम्, 'पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिय' पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितम् । अथ रथाना वर्णनमाह-'तयाणतर' इत्यादि । 'तयाणतर

ईसी-उच्छग-विसाल-धवल-दताण कचण-कोसी-पविट्ठ-दताण कचण-मणि-रयण-भूसियाण वर-पुरिसा-रोहग-सपउत्ताणं अट्ठसय गयाण पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठियं) इनके बाद आगे आगे १०८ हाथी चले, ये हाथी अल्पदतवाले थे, पूरे दात इनके बाहिर नहीं निकल पाये थे । किंचित् मदशाली थे । थोडे ही ऊँचे थे, अधिक नहीं, इनका मध्यभाग भी अधिक विशाल नहीं था । दात इनके अत्यत धवल थे । इनके दातों मे सोने की खोलियाँ पहनायी गयी थीं । ये सुवर्ण एव मणिरत्नों से विभूषित हो रहे थे । इनके ऊपर श्रेष्ठ पुरुष बैठे हुए थे । (तयाणतर च ण सच्छत्ताणं सज्झयाण सघटाण सपडागाण सतोरणवराण सणदिघोसाण स-खिंखिणी-जाल-परिक्खित्ताण हेमवय-चित्त-

मत्ताण ईसीतुगाण ईसी-उच्छग विसाल धवल दताण कंचण कोसी पविट्ठ दताण कचण-मणि-रयण भूसियाण वर पुरिसा-रोहग सपउत्ताण अट्ठसय गयाण पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिय) त्यारपछी आगळ आगळ १०८ હાથી ચાલ્યા આ હાથી અલ્પ દાતવાળા હતા-તેના દાત પૂરા બહાર નીકળેલા નહોતા કિંચિત્ મદશાળી હતા થોડાક ઉચા હતા બહુ નહિ તેમનો વચલો ભાગ વધારે પહોળો નહોતો તેમના દાત બહુ ધોળા હતા તેમના દાતમા સોનાની ખોળો પહેરાવી હતી તેઓ સુવર્ણ તેમજ મણિરત્નો વડે વિભૂષિત બન્યા હતા તેમના ઉપર શ્રેષ્ઠ પુરુષ બેઠા હતા (તયાણતરં ચ ણ સચ્છત્તાણં સજ્ઝયાણ સઘટાણ સપડાગાણ સતોરણવરાણ સણદિઘોસાણ સ-ખિંખિણી-જાલ-પરિક્ખિત્તાણ હેમવય-ચિત્ત-તિણિસ-કણગ-

लिट्ठ-वट्ट-मंडल-धुराणं आइण्ण-वर-तुरग-संपउत्ताणं कुसल-नर-च्छेय-सारहि-सुसंपग्गहियाणं बत्तीस-तोरण-परिमंडियाणं सकंकड-वडेंसगाणं सचाव-सर-पहरणा-वरण-भरिय-जुद्ध-सज्जाणं अट्ठसयं

वृत्तमण्डलधुराणाम्। 'आइण्ण - वर - तुरग - संपउत्ताणं' आकीर्ण-वर-तुरग-सम्प्रयुक्तानाम् - योजितोत्तमजातिमद्घोटकानाम्, 'कुसल-नर-च्छेय-सारहि-सुसंपग्गहियाणं' कुशल-नर-च्छेक-सारथि-सुसम्प्रगृहीतानाम्-कुशलनरा=विज्ञपुरुषा एव ये छेका=निपुणाः सारथयः तैः सुसम्प्रगृहीतानाम्=सञ्चालितानाम्। 'बत्तीस-तोरण-परिमंडियाणं' द्वात्रिंशत्तोरणपरिमण्डितानाम्-तोरणानि=अर्धवर्तुलाऽऽकाराणि द्वाराणि-तैर्द्वात्रिंशत्प्रत्येकं तोरणैः=वन्दनवारैः परिमण्डितानाम्, प्रतिरथं द्वात्रिंशद्वन्दनवाराणि सन्तीति भावः। 'सकंकडवडेंसगाणं' सकङ्कटावतंसकानाम्-कङ्कटाः=कवचाः, अवतंसकाः=शिरस्त्राणानि 'टोप' इति प्रसिद्धाः, तैर्युक्ताः सकङ्कटावतंसकाः तेषाम्-'सचाव-सर-पहरणा-वरण-भरिय-जुद्ध-सज्जाणं' सचाप-शर-प्रहरणा-ऽऽवरण-भृत-युद्ध-सज्जानाम्-चापेन सहिताः शराः, सचापशराः प्रहरणानि=खड्गादीनि, आवरणानि='ढाल'

(आइण्ण-वर-तुरग-संपउत्ताणं) इनमें जो घोड़े जोतने में आये थे वे बहुत ही उत्तम जाति के थे। (कुसल-नर-च्छेय-सारहि-सुसंपग्गहियाणं) इनके जो सारथी थे वे अश्व चालन क्रिया में विशेष निपुण थे। वे ही इन्हें चला रहे थे। (बत्तीस-तोरण-परिमंडियाणं) प्रत्येक रथों पर बत्तीस २ वन्दनवारें बंधी हुई थीं। (सकंकडवडेंसगाणं) इनमें कवच और शिरस्त्राण-लोह के टोप भी रखे हुए थे। (सचाव-सर-पहरणा-वरण-भरिय-जुद्ध-सज्जाणं) ये सब रथ चाप-धनुष, शर-बाण, प्रहरण-हथियार एवं आवरण-ढाल आदिकों से भरे हुए थे, अतः देखने वालों को ऐसे मालूम पड़ते थे कि मानो

તેમના ધોરણ બહુજ મજબૂત તેમજ ગોળ આકારના હતા (आइण्णवरतुरग-संपउत्ताणं) તેમાં જે ઘોડા જોડવામાં આવ્યા હતા તે બહુજ ઉત્તમ જાતિના હતા (कुसल-नर-च्छेय-सारहि-सुसंपग्गहियाणं) તેના જે સારથી હતા તે અશ્વસંચાલન ક્રિયામાં વિશેષ નિપુણ હતા, તેઓજ તેમને ચલાવતા હતા (बत्तीस-तोरण-परिमंडियाणं) પ્રત્યેક રથોના ઉપર બત્રીસ બત્રીસ વંદનવારો બાંધી હતી (सकंकडवडेंसगाणं) તેમાં કવચ અને શિરસ્ત્રાણ-લોઢાના ટોપ પણ રાખેલા હતા (स-चाव-सर-पहरणा-वरण-भरिय-जुद्ध-सज्जाणं) એ બધા રથ ચાપ-ધનુષ, શર-બાણ, પ્રહરણ-હથિયાર તેમજ આવરણ-ઢાલ આદિથી

घोसाणं सखिंखिणीजालपरिक्खित्ताणं हेमवय-चित्त-तिणिस-कणग-णिज्जुत्त-दारुयाणं कालायस-सुकय-णेमि-जंत-कम्माणं सुसि-

वाद्यविशेष ९, 'रसो' वंश=वाद्यविशेष १०, 'सङ्खो' शङ्ख प्रसिद्ध, 'पणवो य वारसमो' पणवश्च द्वादश -तत्र पणव -पटह 'ढोल' इति प्रसिद्ध । 'स-खिंखिणी-जाल-परिक्खित्ताणं' सकिङ्किणी-जाल-परिक्षिप्तानाम्-सह किङ्किणीभि =क्षुद्रघण्टिकाभि सहित यज्जालक=आभरणविशेष तेन जालकेन परिक्षिप्ता =सुशोभितास्तेषाम्, 'हेमवय-चित्त-तेणिस-कणग-णिज्जुत्त-दारुयाणं' हैमवत-चित्र-तैनिश-कनक-निर्युक्त-दारुकाणाम् हैमवतानि=हिमवद्गिरिसम्भूतानि, चित्राणि=विचित्राणि, तैनशानि=तिनशनामकतरुसम्बन्धीनि, कनकनिर्युक्तानि=सुवर्णरचितानि, दारुकाणि=काष्ठानि येषु रथेषु तेषाम्, 'कालायस-सुकय-णेमि-जतकम्माणं' कालायस-सुकृत-नेमि-यन्त्र-कर्मणाम्-कालायसेन=कर्कशलोहेन सुष्ठु कृत नेमे =चक्रधाराया यन्त्रकर्म=बन्धनक्रिया येषा ते तथा तेषा कर्कशलोहसम्पादितनेमिबन्धनबद्धानाम्, 'सुसिलिट्ठ-वत्त-मंडलधुराण' सुश्लिष्ट-वृत्त-मण्डल-धुराणाम्-सुष्ठु श्लिष्टा वृत्तमण्डला -अत्यन्तगोलाकारा धुर्येषा ते तथा तेषा दृढघटित-

पटह-ढोल। इन बारह प्रकार के वादित्रों से विशिष्ट ये रथ थे। इन पर जो जालक-आभरणविशेष सजाने मे आये थे, अथवा इन रथों में जो जालिया थीं वे सब क्षुद्र-छोटी छोटी घटियों से युक्त थीं। इनसे रथों की शोभा मे अधिक वृद्धि हो रही थी। ये रथ जिस काष्ठ के बने हुए थे, वह काष्ठ तिनश नामका था। यह हिमवत्त गिरि से मगाया गया था और बहुत सुन्दर था। इस काष्ठ के ऊपर सुवर्ण का काम किया हुआ था। ये रथ इन्हीं काष्ठों के बने हुए थे। इनके पहियों पर मजबूत लोहे के पट्टे चढाये हुए थे। (सुसिलिट्ठ-वत्त मडल धुराण) इनका धुराये बहुत ही मजबूत एव गोल आकार का थीं।

વાદ્યવિશેષ-એક જાતનુ વાજુ, વંશ-વાસનુ વાદ્યવિશેષ, શખ, અને બારમુ પણવ-પટહ-ઢોલ આ બારેય પ્રકારના વાજિંત્રોથી વિશિષ્ટ આ રથ હતા તેના ઉપર જે જાલક-આભરણવિશેષ સજાવવામા આવ્યા હતા, અથવા આ રથોમા જે જાળીઓ હતી તે બધી ક્ષુદ્ર-નાની નાની ઘટડીઓવાળી હતી એનાથી રથોની શોભામા અધિક વૃદ્ધિ થતી રહેતી હતી આ રથ જે લાકડાનો બનાવ્યા હતા તે લાકડા તિનશ નામના હતા એ હિમવત ગિરિથી મગાવેલા હતા અને બહુ જ સુદર હતા આ લાકડાની ઉપર સુવર્ણનુ કામ કરવામા આવેલુ હતુ એ રથ આ જ લાકડાના બનાવ્યા હતા તેમના પૈડા ઉપર મજબૂત લોઢાના પટ્ટા ચડાવ્યા હતા (સુસિલિટ્ઠ-વત્ત-મડલ-ધુરાણ)

मूलम्—तए णं से कूणिए राया हारोत्थय-सुकय-रइय-वच्छे कुंडलउज्जोइयाणणे मउडदित्तसिरए णरसीहे णरवई णरिंदे णरवसहे मणुयरायवसहकप्पे अब्भहियं रायतेयलच्छी-

टीका—'तए ण से' इत्यादि। 'तए ण' ततस्तदनन्तरम्=अष्टमङ्गलगृङ्गा-ग्निहयगजादिप्रस्थानानन्तरं खलु 'से कूणिए राया' स कूणिको राजा 'हारोत्थय-सुकय-रइय-वच्छे' हारावस्तृत-सुकृत-रतिद-वक्षा-हारावस्तृत=हारप्रावृत, सुकृत=सुरचितम् अतएव रतिदम्-प्रीतिप्रदं वक्षः=हृदयदेशो यस्य स तथा, 'कुंडल-उज्जोइया-णणे' कुण्डलोद्योतिताऽऽनन, मुकुटदीप्तशिरस्क, 'णरसीहे' नरसिंहो, 'णरवई' नरपति, 'णरिंदे' नरेन्द्र 'णरवसहे' नरवृषभ-अङ्गीकृतकार्यभारनिर्वाहकत्वात्। 'मणुय-

'तए ण से कूणिए राया' इत्यादि।

(तए णं) इसके बाद (से कूणिए राया) वह कूणिक राजा कि जिनका वक्षस्थल (हारोत्थय-सुकय-रइय वच्छे) हारों से व्याप्त, सुरचित और रतिद-प्रीतिप्रद था, (कुंडल-उज्जोइया-णणे) जिनका मुख कुंडलों की आभा से अधिक दीप्तिसंपन्न हो रहा था। (मउड-दित्त-सिरए) मुकुट धारण करने से जिनका मस्तक सुशोभित हो रहा था। (णरसीहे) जो मनुष्यों में सिंह जैसे थे। (णरवई) जो मनुष्यों के स्वामी थे, क्यों कि हर तरह से उनका पालन-पोषण करते थे। इसीलिये (णरिंदे) जो नरों में इन्द्र जैसे थे। (णरवसहे) जो नरों में वृषभसमान थे, क्यों कि ये अपने ऊपर जो कार्य लेते थे उसे अवश्यमेव पूरा करते थे। (मणुयराय-वसह-कप्पे) मानवों के राजाओं के भी जो राजा-चक्रवर्ती-जैसे

'तए ण से कूणिए राया' इत्यादि

(तए णं) त्यार पछी (से कूणिए राया) ते कूणिक राजा के जेनुं वक्ष-स्थल (छाती) (हारोत्थय-सुकय-रइय-वच्छे) हारोथी व्याप्त, सुरचित अने प्रीतिप्रद हतुं (कुडल-उज्जोइया-णणे) जेमनुं मुख कुंडळोनी आभा-प्रकाश वडे अधिक दीप्तिसंपन्न थई रह्युं हतुं (मउड-दित्त-सिरए) मुकुट धारण करवाथी जेनुं मस्तक सुशोभित थई रह्युं हतुं (णरसीहे) जे मनुष्योमां सिंह जेवा हता, (णरवई) जे मनुष्योना स्वामी हता, केमके दरेक तरहथी तेमनुं पालन-पोषण करता हता आथी (णरिंद) तेओ नरोना इंद्र जेवा हता (णरवसहे) जे पुरुषोमां वृषभ-समान हता, केमके तेओ पोताना उपर जे कार्य लेता हता ते अवश्यमेव पूरुं करता हता (मणुयराय-वसह-

रहाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं। तयाणंतरं च णं असि-सत्ति-कुंत-तोमर-सूल-लउल-भिंडिमाल-धणु-पाणि-सज्जं पायत्ताणीयं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ॥ सू० ४९ ॥

इति प्रसिद्धानि, तैर्भृता, अतएव युद्धाय इव सज्जास्तेषां 'रहाणं' रथानाम् 'अट्ठसयं' अष्टशतम्=अष्टाधिकशतं 'पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं' पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितम्। अथ पदातिसैन्यवर्णनमाह-'तयाणंतरं च णं' इत्यादि। तदनन्तरञ्च खलु 'असि-सत्ति-कुंत-तोमर-सूल-लउल-भिंडिमाल-धणु-पाणि-सज्जं' असि-शक्ति-कुन्त-तोमर-शूल-लकुट-भिन्दिपाल-धनुः-पाणि-सज्जम्-असिः=खड्ग, शक्तिः=अस्त्रविशेषः, कुन्तः=भल्लः, तोमरः=बाणविशेषः, शूलम्=एकशूलम्-'बरछी' इति प्रसिद्धम्, 'लउल' लकुटः=यष्टिः, 'भिंडिमाल' भिन्दिपालः-अस्त्रविशेषः, 'गोफण' इति भाषाप्रसिद्धः, धनुः-प्रसिद्धम्, एतानि पाणौ हस्ते यस्य तत् तथा, तच्च तत् सज्जं चेति समासः, तादृशम्, 'पायत्ताणीयं' पदात्यनीकम्=पदातिसैन्यम्, 'पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं' पुरतः यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितम् ॥ सू० ४९ ॥

ये युद्ध के मैदान में जाने के लिये ही तैयार किये गये हैं, ऐसे (रहाणं अट्ठसयं) १०८ एक सौ आठ रथ (पुरओ) आगे २ (अहाणुपुव्वीए) यथाक्रम से (संपट्ठियं) चलने लगे। (तयाणंतरं च णं असि-सत्ति-कुंत-तोमर-सूल-लउल-भिंडिमाल-धणु-पाणि-सज्जं पायत्ताणीयं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं) इनके आगे २ असि-तलवार, शक्ति-अस्त्रविशेष, कुन्त-भाला, तोमर-अस्त्रविशेष, शूल-बरछी, लकुट-लाठियाँ, भिंडिमाल-भिन्दिपाल-गोफण और धनुष ये सब जिनके हाथों में थे, ऐसे पदातिसैन्य अनुक्रम से चलने लगे ॥सू० ४९॥

ભરેલા હતા આથી જોનારને એમજ લાગે કે જાણે યુદ્ધના મેદાનમા જવા માટે જ તૈયાર કર્યા છે એવા (रहाणं अट्ठसयं) એકસો આઠ ૧૦૮ રથ (पुरओ) આગળ આગળ (अहाणुपुव्वीए) યથાક્રમથી (संपट्ठियं) ચાલવા લાગ્યા (तयाणंतरं च णं असि सत्ति-कुंत-तोमर-सूल लउल-भिंडिमाल-धणु-पाणि-सज्जं पायत्ताणीयं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं) તેમની આગળ આગળ અસિ-તલવાર, શક્તિ-અસ્ત્રવિશેષ, કુન્ત ભાલા, તોમર-અસ્ત્રવિશેષ, શૂલ-બરછી, લકુટ-લાકડીઓ, ભિંડિમાલ-ભિંદિપાલ-ગોફણ અને ધનુષ એ બધા જેના હાથોમા હતા એવા પદાતિસૈન્ય અનુક્રમે ચાલવા લાગ્યા (સૂ ૪૯)

लियाए चाउरंगिणीए सेणाए समणुगम्ममाणमग्गे जेणेव पुण्ण-भद्दे चेइए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ५० ॥

मूलम्—तए णं तस्स कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स

प्रथितकीर्ति, 'हय-गय-पवर-जोह-कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए' हयगजरथ-प्रवरयोधकलितया चतुरङ्गिण्या सेनया-हयैर्गजै रथै प्रवरयोधै रथिभिर्महारथिभि कलितया=युक्तया, चत्वारि अङ्गानि यस्या सा चतुरङ्गिणी तया-हयगजरथपदातिरूपैश्चतुर्भिरङ्गै समेतया सेनया 'समणुगम्ममाणमग्गे' समनुगम्यमानमार्ग-समनुगम्यमानो मार्गो यस्य स तथा, 'जेणेव पुण्णभद्दे चेइए' यत्रैव पूर्णभद्र चैत्य 'तेणेव' तत्रैव 'पहारेत्थ' प्रधारितवान् 'गमणाए' गमनाय=पूर्णभद्रोद्यान गन्तु मनसि निश्चय कृतवान् ॥सू० ५०॥

'तए ण' इत्यादि । 'तए ण तस्स कूणियस्स रण्णो भभसारपुत्तस्स पुरओ' तत खलु तस्य कूणिकस्य राज्ञो भभसारपुत्रस्य पुरत 'मह' महान्त=उच्चा, 'आसा' अश्वा=तुरङ्गमा, 'आसवरा' अश्ववरा-जात्या शृङ्गारेण च वरा=श्रेष्ठा अश्वा

समान ऋद्धि के कारण विख्यात कीर्तिवाले ये (हय-गय-पवरजोह-कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए समणुगम्ममाणमग्गे जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) घोडा, हाथी और श्रेष्ठ योद्धाओं से युक्त चतुरगिणी सेना से युक्त हो जहाँ पूर्णभद्र नामका उद्यान था उस ओर चले ॥ सू. ५० ॥

'तए णं तस्स कूणियस्स रण्णो' इत्यादि ।

(तए णं) इसके बाद (तस्स कूणियस्स रण्णो भभसारपुत्तस्स) भभसार के पुत्र उन कूणिक राजा के (पुरओ) आग आगे (महं आसा) बडे ऊँचे २ घोडे एव (आसवरा) जाति और शृगार से उत्तम घोडे चलने लगे । (उभओ पासिं णागा णाग-

गय-पवरजोह-कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए समणुगम्ममाणमग्गे जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) ઘોડા, હાથી અને શ્રેષ્ઠ યોદ્ધાઓથી યુકત ચતુરંગિણી સેનાથી યુક્ત થઇ જ્યાં પૂર્ણભદ્ર નામનું ઉદ્યાન હતું તે તરફ ચાલ્યા (સૂ ૫૦)

'तए णं तस्स कूणियस्स रण्णो' ઇત્યાદિ

(तए णं) ત્યાર પછી (तस्स कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्स) ભંભસારના પુત્ર તે કૂણિક રાજાની (पुरओ) આગળ આગળ (मह आसा) બહુ ઉંચા ઉંચા ઘોડા તેમજ (आसवरा) જાતિ તથા શણગારથી ઉત્તમ ઘોડા ચાલવા

ए दिप्पमाणे हत्थिक्खंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं २ वेसमणे चेव णरवई अमरवइसण्णिभाए इड्ढीए पहियकित्ती हय-गय-पवरजोहक-

राय-वसहकप्पे' मनुजराज-वृषभ-कल्प -मनुजराजाना=राज्ञां वृषभाः=नायकाश्चक्रवर्तिनस्तैस्तुल्य -मनाङ्न्यूनतया समान, उत्तरभरतार्धस्यापि साधने प्रवृत्तत्वादिति भाव । 'अब्भहिय' अभ्यधिक-यथा स्यात् तथा-'राय-तेय-लच्छीए' राजतेजोलक्ष्म्या, 'दिप्पमाणे' दीप्यमान, 'हत्थि-क्खंध-वर-गए' हस्ति-स्कन्ध-वर-गत, 'सकोरंट-मल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं' सकोरण्ट-माल्य-दाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन, 'सेय-वर-चामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं उद्धुव्वमाणीहिं' श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैरुद्धूयमानै शोभमान 'वेसमणे चेव' वैश्रवण इव=लोकपाल कुबेर इव 'णरवई' नरपति, 'अमरवइसण्णिभाए इड्ढीए' अमरपतिसन्निभया=इन्द्रसदृशया ऋद्ध्या, 'पहियकित्ती'

थे। 'चक्रवर्ती जैसे थे'-इसका मतलब यह है कि उत्तर भरतार्ध के साधन मे प्रवृत्त होने से चक्रवर्ती जैसे थे। (अब्भहिय रायतेयलच्छीए दिप्पमाणे) जो राजसी तेज से और राजलक्ष्मी से अधिक देदीप्यमान थे। ऐसे ये कूणिक राजा (हत्थि-क्खंध-वर-गए) जब हाथी पर बैठे तब इन्हों ने अपने ऊपर (सकोरंट-मल्ल-दामेणं छत्तेण धरिज्जमाणेण) कोरंट पुष्पों की मालाओं से युक्त छत्र धारण किया, और इनके ऊपर (सेय-वर-चामराहि उद्धुव्वमाणीहिं २) सफेद चमर दुलने लगे। इनसे ये (णरवई) राजा (वेसमणे चेव) कुबेर के समान दिखने लगे। तथा (अमरवइसण्णिभाए इड्ढीए पहियकित्ती) इन्द्र के

कप्पे) માણસોના રાજાઓના પણ રાજા-ચક્રવર્તી જેવા હતા 'ચક્રવર્તી જેવા હતા'-એની મતલબ એ છે કે ઉત્તર ભરતાર્ધને સ્વાધીન કરવામાં પ્રવૃત્ત હોવાથી ચક્રવર્તી જેવા હતા (अब्भहिय रायतेयलच्छीए दिप्पमाणे) જેઓ રાજસી તેજથી તથા રાજલક્ષ્મીથી અધિક દેદીપ્યમાન હતા એવા આ કૂણિક રાજા (हत्थि-क्खंध-वरगए) જ્યારે હાથી ઉપર બેઠા ત્યારે તેમણે પોતાના ઉપર (सकोरंट-मल्ल-दामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण) કોરંટપુષ્પોની માળાઓથી યુક્ત છત્ર ધારણ કર્યું, અને તેમના ઉપર (सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं २) સફેદ ચામર ઢોળાવા લાગ્યા તેનાથી તેઓ (णरवई) રાજા (वेसमणे चेव) કુબેરના જેવા દેખાવા લાગ્યા તથા (अमरवइसण्णिभाए इड्ढीए पहियकित्ती) ઇંદ્રના જેવી ઋદ્ધિના કારણથી વિખ્યાત કીર્તિવાળા તેઓ (हय-

वाल-वीयणीए सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए सव्वबलेणं सव्वसमु-दएणं सव्वादरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेण सव्व-पुप्फ-गंध-मल्ला-लंकारेणं सव्व-तुडिय-सद्द-सण्णिणा-

यस्मै स तथा। 'पवीइय-वाल-वीयणीए' प्रवीजित-वाल-व्यजनिकः-प्रवीजिता=प्रचालिता वालव्यजनिका यस्मै स तथा, 'सव्विड्ढीए' सर्वर्द्ध्या=सर्वया ऋद्ध्या। 'सव्वज्जुईए' सर्वद्युत्या=सकलवस्त्राभरणानां प्रभया, 'सव्वबलेण' सर्वबलेन=सर्व-सैन्येन, 'सव्वसमुदएण' सर्वसमुदयेन = सर्वपरिवारादिसमुदायेन, 'सव्वादरेण' सर्वादरेण=सर्वप्रयत्नेन, 'सव्वविभूईए' सर्वविभूत्या=सर्ववैभवेन, 'सव्वविभूसाए' सर्वविभूषया = सर्ववस्त्रनेपथ्यादिधारणेन, 'सव्वसंभमेण' सर्वसम्भ्रमेण = सर्वेण औत्सु-क्येन=स्नेहमयेन चाञ्चल्येनेत्यर्थः, 'सव्व-पुप्फ-गंध-मल्ला-लंकारेण' सर्व-पुष्प-गन्ध-माल्या-ऽलङ्कारेण, 'सव्व-तुडिय-सद्द-सण्णिणाएण' सर्व-त्रुटित-शब्द-सन्नि-नादेन-सर्वनिशाना त्रुटितानां=वाद्यानां यो शब्द तस्य सन्निनादेन=प्रतिध्वनिना। 'महया

ऐसे वे कूणिक राजा (सव्विड्ढीए) अपनी समस्त राज्य ऋद्धिसे (सव्वज्जुईए) समस्त वस्त्र और आभरणों की प्रभासे (सव्वबलेण) अपनी समस्त सेनाओं से (सव्वसमुदएण) अपने समस्त परि-जनों से, (सव्वादरेण) आदरसत्काररूप सभी प्रयत्नों से (सव्वविभूईए) अपने समस्त ऐश्वर्य से (सव्वविभूसाए) सभी प्रकार के वस्त्राभरणों की शोभा से, (सव्वसंभमेणं) भक्तिजनित अत्यधिक उत्सुकता से (सव्व-पुप्फ-गंध-मल्ला-लंकारेण) सब तरह के पुष्पों से, सब तरह के गन्ध द्रव्यों से, सब तरह की मालाओं से, एवं सब तरह के अलंकारों से (सव्व-तुडिय-सद्द-सण्णिणाएण) सभी प्रकार के वादित्रों की मधुर ध्वनि से, तथा-(महया

णीए) જેના ઉપર વાળવ્યજન અર્થાત્ ચમર ઢોળાઈ રહ્યા હતા, એવા તે કૂણિક રાજા (सव्विड्ढीए) પોતાની સમસ્ત રાજ્ય ઋદ્ધિથી, (सव्वज्जुईए) સમ-સ્ત વસ્ત્ર તથા આભરણોના પ્રભાવ વડે, (सव्वबलेण) પોતાની સમસ્ત સેનાઓ વડે, (सव्वसमुदएण) પોતાના સમસ્ત પરિજનો વડે, (सव्वादरेण) આદર સત્કાર રૂપ સઘળા પ્રયત્નો વડે (सव्वविभूईए) પોતાના સમસ્ત ઐશ્વર્ય વડે, (सव्वविभूसाए) તમામ પ્રકારના વસ્ત્રાભરણોની શોભા વડે, (सव्वसंभमेण) ભક્તિજનિત અત્યંત ઉત્સુકતા વડે, (सव्व-पुप्फ-गंध-मल्ला लंकारेण) સર્વ પ્રકારના પુષ્પો વડે, સર્વ પ્રકારના ગંધદ્રવ્યો વડે, સર્વ પ્રકારની માળાઓ વડે તેમજ સર્વ પ્રકારના અલંકારો વડે, (सव्व तुडिय-सद्द-सण्णिणाएण) સર્વ પ્રકારના વાજિંત્રોના મધુર ધ્વનિ વડે, તથા (महया इड्ढीए) પોતાની વિશિષ્ટ

पुरओ महं आसा आसवरा उभओ पासिं णागा णागवरा पिट्ठओ रहसंगेल्ली ॥ सू० ५१ ॥

मूलम्—तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते अब्भुगयभिंगारे पग्गहियतालयंटे ऊसविय-सेय-च्छत्ते पवीइय-

सम्प्रस्थिता, 'उभओ पासिं' उभयो पार्श्वयो=वामदक्षिणयो 'णागा' नागा=महान्तो गजा 'णागवरा' नागवरा=जात्या शृङ्गारेण च वरा=श्रेष्ठा गजा सम्प्रस्थिता, तथा-'पिट्ठओ' पृष्ठत='रहसगेल्ली' रथसंगेल्ली=रथसमूह सम्प्रस्थित । 'सगेल्ली' इति समूहवाचको देशीय शब्द ॥ सू० ५१ ॥

टीका—'तए णं से' इत्यादि । 'तए णं से कूणिए राया भमसारपुत्ते' तत खलु स कूणिको राजा भमसारपुत्र 'अब्भुग्गयभिंगारे' अभ्युद्गतभृङ्गार —अभ्युद्गत=पुरत प्रस्थित भृङ्गार='झारी' इति प्रसिद्ध जलपात्र यस्य स तथा 'पग्गहियतालयंटे' प्रगृहीततालवृन्त —प्रगृहीत तालवृन्त यस्मै स प्रगृहीततालवृन्त । 'ऊसविय-सेय-च्छत्ते' उच्छ्रितश्वेतच्छत्र —'ऊसविय' उच्छ्रितम्=उपरि वितानित श्वेत=धवल छत्र

वरा) तथा उनके दोनों तरफ बडे २ हाथी एव जाति से और शृगार से श्रेष्ठ गजराज चलने लगे, और (पिट्ठओ) उनके पीछे २ (रहसगेल्ली) रथका समूह चला ॥ ५१ ॥

'तए णं से कूणिए राया' इत्यादि ।

(तए ण) उसके बाद (से कूणिए राया भभसारपुत्ते) भभसार के पुत्र वे कूणिक राजा कि, जिनके आगे (अब्भुग्गयभिंगारे) जल से भरी हुई झारियाँ थीं, (पग्गहियतालयंटे) जिनके दोनों ओर पवनपखे हो रहे थे, (ऊसविय-सेय-छत्ते) जिनके ऊपर श्वेत छत्र धरा हुआ था, तथा (पवीइय-वाल-वीयणीए) जिनके ऊपर वाल-व्यजन अर्थात् चमर ढोरा जा रहा था,

લાગ્યા (उभओ पासिं णागा णागवरा) તથા તેમની બન્ને તરફ મોટા મોટા હાથી તેમજ જાતિથી શણગારથી શ્રેષ્ઠ ગજરાજ ચાલવા લાગ્યા તથા (पिट्ठओ) તેમની પાછળ પાછળ (रहसगेल्ली) રથનો સમૂહ ચાલ્યો (સૂ. ૫૧)

"तए ण से कूणिए राया" ઇત્યાદિ

(तए ण) ત્યાર પછી (से कूणिए राया भमसारपुत्ते) ભભસારના પુત્ર તે કૂણિક રાજા કે જેના આગળ (अब्भुग्गयभिंगारे) જલથી ભરેલી ઝારીઓ હતી, (पग्गहियतालयंटे) જેની બન્ને બાજુએ પવનપંખા થઈ રહ્યા હતા, (ऊसविय-सेय-छत्ते) જેના ઉપર શ્વેત છત્ર ધરેલુ હતુ, તથા (पवीइयवालवीय

मूलम्—तए णं तस्स कूणियस्स रण्णो चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं निगच्छमाणस्स बहवे अत्थत्थिया कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया किव्विसिया कारोडिया कारवाहिया संखिया चक्किया नंगलिया मुहमंगलिया वद्धमाणा पूसमाणया

टीका—'तए ण' इत्यादि। 'तए ण' तत =चम्पानगरीमध्येन निर्गमनाऽनन्तर खलु 'तस्स कूणियस्स रण्णो' तस्य कूणिकस्य राज्ञ, 'चपाए णयरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छमाणस्स' चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छत 'बहवे' बहव =अनेके 'अत्थत्थिया' अर्थोऽर्थिका =धनार्थिका, 'कामत्थिया' कामार्थिका =सुखार्थिका। 'भोगत्थिया' भोगार्थिका, 'लाभत्थिया' लाभार्थिका =लाभाऽभिलाषिण, 'किव्विसिया' किल्बिषिका =भाण्डचेष्टाकारिण —हास्यकरा इत्यर्थ, 'कारोडिया' कापालिका, 'कारवाहिया' कारवाधिता —कर एव कार, तेन बाधिता =राजकरपीडिता, 'संखिया' शाङ्खिका =शङ्खवादका 'चक्किया' चाक्रिका =चक्रधारका 'नंगलिया'

'तए ण तस्स कूणियस्स' इत्यादि।

(तए ण) उसके बाद (तस्स कूणियस्स रण्णो) उस कूणिक राजा के (चपाए णयरीए मज्झमज्झेण) चपा नगरी के मध्यभाग से होकर निकलते समय (बहवे अत्थत्थिया कामत्थिया) अनेक धनार्थियों ने—सुखार्थियों ने—(भोगत्थिया लाभत्थिया) अनेक भोगार्थियों ने, अनेक लाभार्थियो ने, (किव्विसिया) भण्डचेष्टा करने वालोंने-हँसी-मजाक करने वालों ने, (कारोडिया) अनेक कापालिको ने—एक प्रकार के भिक्षुकोंने, (कारवाहिया) अनेक राजकरपीडितों ने, (संखिया) अनेक शख बजाने वालों ने (चक्किया) अनेक चक्रधारियोंने, (नंगलिया) अनेक कृषकों ने, (मुहमंगलिया) अनेक शुभाशीर्वाद

'तए णं तस्स कूणियस्स' ઇત્યાદિ

(तए ण) ત્યાર પછી (तस्स कूणियस्स रण्णो) તે કૂણિક રાજાના (चपाए णयरीए मज्झमज्झेण) ચંપા નગરીના મધ્યભાગમાંથી નીકળતી વખતે (बहवे अत्थत्थिया कामत्थिया) અનેક ધનાર્થિઓએ, અનેક કામાર્થિઓએ-સુખાર્થિઓએ (भोगत्थिया लाभत्थिया) અનેક ભોગાર્થિઓએ, અનેક લાભાર્થિઓએ, (किव्विसिया) ભંડચેષ્ટા કરવાવાળાઓએ—હાંસી મજાક કરવાવાળાઓએ, (कारोडिया) અનેક કાપાલિકોએ-એક પ્રકારના ભિક્ષુઓએ, (कारवाहिया) અનેક રાજકરપીડિતોએ, (संखिया) અનેક શંખ બજાવવાવાળાઓએ, (चक्किया)

एणं महया इड्ढीए महया जुईए महया बलेणं महया समुद-एणं महया वर-तुडिय-जमगसमग-प्पवाइएणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुअंग-दुंदुहि-णिग्घोस-णाइय-रवेणं चंपाए णयरीए मज्झं-मज्झेणं णिग्गच्छइ ॥ सू० ५२ ॥

इड्ढीए' महत्या ऋद्धया 'महया जुईए' महत्या द्युत्या, 'महया बलेणं' महता बलेन-विपुलसैन्येन, 'महया समुदएण' महता समुदायेन=समूहेन। 'महया वर-तुडिय-जमग-समग-प्पवाइएण' महता वर-त्रुटित-यमकसमक-प्रवादितेन-महता=बृहता, वरत्रुटितानां = श्रेष्ठविविधवाद्यानां-यमकसमकं = युगपत्प्रवादितेन 'संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुअंग-दुंदुहि-णिग्घोस-णाइय-रवेण' शङ्ख-पणव-पटह-भेरी-झल्लरी-खरमुखी-हुडुक्क-मुरज-मृदङ्ग-दुन्दुभि-निर्घोष-नादित-रवेण-शङ्खादिदुन्दुभ्यन्तानां वाद्यविशेषाणां निर्घोषस्य नादितरवेण=प्रतिध्वनिना चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन 'णिग्गच्छइ' निर्गच्छति ॥ सू० ५२ ॥

इड्ढीए) अपनी विशिष्ट ऋद्धि से, (महया जुईए) अपनी विशिष्ट द्युति से, (महया बलेण) अपनी विशिष्ट सेना से (महया समुदएणं) अपने विशिष्ट परिजनों से (महया-वर-तुडिय-जमग-समग-पवाइएण) एक ही साथ बजने वाले बाजों की मनोहर महाध्वनि से, तथा (संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुअंग-दुंदुहि-णिग्घोस-णाइय-रवेण) शंख, पणव, पटह, भेरी, झल्लरी, खरमुखी, हुडुक्क, मुरज, मृदङ्ग एवं दुन्दुभि के निर्घोष की प्रतिध्वनि से शोभित होते हुए (चंपाए णयरीए मज्झमज्झेण णिग्गच्छइ) चम्पा नगरी के बीचो-बीच से होकर चले ॥ सू० ५२ ॥

ऋद्धि वडे, (महया जुईए) પોતાની વિશિષ્ટ દ્યુતિ વડે, (महया बलेण) પોતાની વિશિષ્ટ સેના વડે, (महया समुदएण) પોતાના વિશિષ્ટ પરિજનો વડે, (महया वर-तुडिय-जमगसमग-पवाइएण) એકસાથે વગાડતા વાજાના મનોહર મહાધ્વનિ વડે, તથા (संख पणव पडह-भेरी झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुअंग दुंदुहि-णिग्घोस णाइय रवेण) શંખ, પણવ, પટહ, ભેરી, ઝલ્લરી, ખરમુખી, હુડુક્ક, મુરજ, મૃદંગ, તેમજ દુંદુભિના નિર્ઘોષની પ્રતિધ્વનિ વડે શોભતા (चंपाए णयरीए मज्झ-मज्झेण णिग्गच्छइ) ચંપા નગરીના વચ્ચો-વચ્ચ થઈને ચાલ્યા (સૂ. ૫૨)

जय जय णंदा ! जय जय भद्दा ! भद्दं ते, अजियं जिणाहि, जियं च पालेहि, जियमज्झे वसाहि । इंदो इव देवाणं, चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाणं, चंदो इव ताराणं, भरहो इव

नन्दान्-इति नन्द, तत्सम्बोधने हे नन्द ! जय जय=त्वं विजयवान् भव । 'जय जय भद्दा' जय जय भद्र ! हे भद्र !=कल्याणस्वरूप ! विजयस्व । 'भद्दं ते' भद्रं तुभ्यमस्तु । 'अजियं जिणाहि' अजितं जय=अजितं देशादिकं जय, 'जियं च पालेहि' जितं च पालय, 'जियमज्झे वसाहि' जितमध्ये वस । तथा त्वम् 'इंदो इव देवाणं' इन्द्र इव देवानाम्, 'चमरो इव असुराणं' चमर इव=एतन्नामक इन्द्र इव असुराणाम्=सुरविरोधिनाम्, 'धरणो इव नागाणं' धरणेन्द्र इव नागानाम्, 'चंदो इव ताराणं' चन्द्र इव ताराणाम्, 'भरहो इव मणुयाणं' भरत इव मनुजानाम्, 'बहूइं वासाइं' बहूनि वर्षाणि, 'बहूइं वाससयाइं' बहूनि वर्षशतानि, 'बहूइं वाससहस्साइं' बहूनि वर्षसहस्राणि,

जय भद्दा) हे नन्द-मनुष्यों को अपार आनंद प्रदान करनेवाले स्वामिन् ! आपकी जय हो जय हो । हे भद्र !-कल्याणस्वरूप ! आप सदा विजयशाली रहें। (भद्दं ते) आपका सदा कल्याण हो ! (अजियं जिणाहि) आपने जिसको नहीं जीता हो, उस पर विजय करें। (जियं च पालेहि) जिसको आपने जीता है उसका पालन करें। (जियमज्झे वसाहि) जीते हुए प्रदेश में सदा आपका निवास रहे ! (इंदो इव देवाणं, चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाणं, चंदो इव ताराणं, भरहो इव मणुयाणं) देवों में इन्द्र की तरह, असुरों में चमरेन्द्र की तरह, नागकुमारों में धरणेन्द्र की तरह, ताराओं में चन्द्र की तरह और मनुष्यों में भरत की तरह आप (बहूइं वासाइं बहूइं वाससयाइं बहूइं

स्तुति करता आ प्रकारे कहेवानो प्रारंभ कर्यो (जय जय णंदा जय जय भद्दा) हे नंद-मनुष्योने अपार आनंद आपवावाळा स्वामिन् ! आपनी जय हो जय हो ! हे भद्र !-कल्याणस्वरूप ! आप सदा विजयशाळी रहो ! (भद्दं ते) आपनुं सदा कल्याण हो. (अजियं जिणाहि) आपे जेने न जीत्या होय तेना उपर विजय मेळवो. (जियं च पालेहि) जेने आपे जीत्या होय तेमनुं पालन करो. (जियमज्झे वसाहि) जीतेला प्रदेशमां सदा आपनो निवास रहे (इंदो इव देवाणं, चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाणं, चंदो इव ताराणं, भरहो इव मणुयाणं) देवोमां इन्द्रनी जेम, असुरोमां चमरेन्द्रनी जेम, नागकुमारोमां धरणेन्द्रनी जेम, ताराओमां चन्द्रनी जेम अने मनुष्योमां भरतनी जेम, आप (बहूइं वासाइं बहूइं वाससयाइं बहूइं वाससहस्साइं) घणां वरसो सुधी,

खंडियगणा ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहिं हिययगमणिज्जाहिं वग्गूहिं जय-विजय-मंगल-सएहिं अणवरयं अभिणंदंता य अभित्थुणंता य एवं वयासी-

लाङ्गलिका =कर्षका 'मुहमंगलिया' मुखमङ्गलिका -मुखे मङ्गलं येषामस्ति ते मुखमङ्गलिका =शुभवचनवाचका, 'वद्धमाणा' वर्द्धमाना =स्कन्धेष्वारोपिता पुरुषा, 'पूसमाणवा' पुष्यमानवा =मागधा, 'खंडियगणा' खण्डिकगणा =छात्रसमुदाया । एते सर्वे 'ताहिं' ताभि =विवक्षिताभिः, 'इट्ठाहिं' इष्टाभिर्वाञ्छिताभिः, 'कंताहिं' कान्ताभिः-कमनीयाभिः, 'पियाहिं' प्रियाभिः, 'मणुण्णाहिं' मनोज्ञाभिः =सुन्दरतया मनोऽनुकूलाभिः, 'मणामाहिं' मनोऽमाभिः -मनसा अम्यन्ते=गम्यन्ते इति मनोऽमास्ताभिः-मनसाऽवगमनीयाभिः -हृदयाह्लादकत्वात्, 'मणाभिरामाहिं' मनोऽभिरामाभिः, 'वग्गूहिं' वाग्भिः 'जय-विजय-मंगल-सएहिं' 'जय-विजय' इत्यादिभिर्मङ्गलकारकवचनशतैः 'अणवरयं' अनवरतम्, 'अभिणंदंता य' अभिनन्दयन्तश्च, 'अभित्थुणंता य' अभिष्टुवन्तश्च ते पूर्वोक्ता अर्थाऽर्थिकादयो विरुदावलीपाठादिना राजानं प्रसादयन्त 'एवं वयासी' एवमवादिषुः-'जय जय णंदा' जय जय नन्द ! नन्दयति=आनन्दयति

देने वालों ने, (वद्धमाणा) कंधों पर बैठे हुए अनेक पुरुषों ने, (पूसमाणया) बिरुदावली बोलने वालों ने (खंडियगणा) छात्रगणोंने (ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहिं) अपनी २ भाषा के अनुसार इष्ट, कमनीय, प्रिय, मनोज्ञ, हृदयाह्लादक, मनोभिराम (हिययगमणिज्जाहिं) एवं हृदयंगम (वग्गूहिं) वचनों से (जयविजयमंगलसएहिं) कि जिनमें जय और विजय के ही मंगलकारक शब्दों का समावेश था, (अणवरयं) अच्छी तरह (अभिणंदंता य अभित्थुणंता य एवं वयासी) अभिनन्दन एवं स्तुति करते हुए इस प्रकार कहना प्रारंभ किया-(जय जय णंदा जय

અનેક ચક્રધારીઓએ (नंगलिया) અનેક ખેડુતોએ (मुहमंगलिया) અનેક શુભાશીર્વાદ દેવાવાળાઓએ (वद्धमाणा) કાંધ ઉપર બેઠેલા અનેક પુરૂષોએ (पूसमाणया) બિરદાવલી બોલનારાઓએ (खंडियगणा) છાત્રગણોએ (ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहिं) પોતપોતાની ભાષા-અનુસાર ઇષ્ટ, કમનીય, પ્રિય, મનોજ્ઞ, હૃદયાહ્‌લાદક, મનોભિરામ, (हियय-गमणिज्जाहिं) તેમજ હૃદયંગમ (वग्गूहिं) વચનો દ્વારા (जय विजय मंगलसएहिं) કે જેમાં જય અને વિજયના મંગલકારક શબ્દોનો સમાવેશ હતો, (अणवरयं) સારી રીતે (अभिणंदंता य अभित्थुणंता य एवं वयासी) અભિનંદન તેમજ

कव्वड–दोणमुह–मडंब–पट्टण–आसम–निगम–संवाह-संनिवे-साणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा–ई-

द्रोणमुख=जलस्थलपथोपेतम्, मडम्बम=अविद्यमानासन्नग्रामान्तरम्, 'पट्टण' पत्तनम्=जलप-थेन स्थलपथेन वा निर्गमप्रवेशौ यत्र तत् पत्तनम्, यथा काञ्चीतो मुम्बापुरी, यद्वा–जलपथे-नैव निर्गमप्रवेशौ न तु स्थलपथेन, यथा–भारताद् आंग्लराजधानी 'इङ्लेण्ड' इति प्रसिद्धा, तत्, किंच–स्थलपथेनैव निर्गमप्रवेशौ न तु जलपथेन तत, एतत् सर्वं पत्तनमुच्यते। यद्वा–यत्र सर्वं वस्तु लभ्यते तत् पत्तनम्। आश्रम =तापसाद्यावास, निगम =वाणिज्यप्रधान नगरम्, संवाह =कृषीवलाना धान्यरक्षणस्थानम्, संनिवेश =सार्थकटकादीनामुत्तरणस्थानम्। तेषाम्–'आहेवच्च' आधिपत्यम्, 'पोरेवच्च' पौरोवृत्त्यम्=पुरोवर्तित्वम्–अग्रेसरत्वम् 'सा-

ऐसी बस्तियों के, खेटों के–धूलि के प्राकार से परिवेष्टित बस्तियों के, कर्बटों के–सामान्य नगरों के, द्रोणमुखों–जलमार्ग एवं स्थलमार्ग से युक्त प्रदेशों के, मडम्बों–जिनके आसपास दूसरे ग्राम नहीं होते हैं ऐसे प्रदेशों के, पत्तनों के–जहा जलपथ से भी एवं स्थलपथ से भी आना–जाना होता है, जैसे करॉची से बम्बई, अथवा जहा सिर्फ जलमार्ग से ही आना-जाना होता है, जैसे भारत से इङ्गलैन्ड, अथवा स्थलमार्ग से ही जहा आना–जाना होता है, ये सभी पत्तन कहलाते हैं। अथवा समस्त वस्तुओं का लाभ जहा होता है वह भी पत्तन है, ऐसे पत्तनों के आश्रमों के अर्थात् तापस आदि के आवासों के, निगमों के अर्थात् व्यापारिक नगरों के, संवाहों के अर्थात् किसानों के धान्य आदि रखने के स्थलों के, तथा संनिवेशों के अर्थात् सार्थवाह और सेना आदि के उतरने के स्थानों के आधिपत्य को, पौर-वृत्य को–अग्रेसरत्व को, स्वामित्व को–प्रभुत्व को, उनके भर्तृत्व को–पोषकत्व को, उनमें मह-

ખેટોના–ધૂળ (માટી)ના પ્રાકારથી પરિવેષ્ટિત વસ્તીઓના, કર્બટોના–સામાન્ય નગરોના, દ્રોણમુખોના–જલમાર્ગ તેમજ સ્થલમાર્ગથી યુક્ત પ્રદેશોના, મડ-બોના–જેની આસપાસ બીજા ગામો ન હોય તેવા પ્રદેશોના, પત્તનોના–જ્યા જલમાર્ગથી તેમજ સ્થલમાર્ગથી પણ આવી જઈ શકાતુ હોય જેમકે કરાંચીથી મુંબઈ, અથવા જ્યા માત્ર જલમાર્ગથી જ આવી જઈ શકાય, જેમકે ભારતથી ઇંગલાંડ, અથવા માત્ર સ્થલ માર્ગથી જ જ્યા જઈ આવી શકાય તે બધા પત્તન કહેવાય છે, અથવા સમસ્ત વસ્તુઓની પ્રાપ્તિ જ્યા થઈ શકે તે પણ પત્તન છે એવા પત્તનોના, આશ્રમોના અર્થાત્ તાપસ આદિના આવાસોના, નિગમોના અર્થાત્ વ્યાપારિક નગરોના, સંવાહોના અર્થાત્ ખેડુ-તોના ધાન્ય આદિ રાખવાના સ્થળોના, તથા સંનિવેશોના અર્થાત્ સાર્થવાહ અને સેના આદિના ઉતરવાના સ્થાનોના આધિપત્યને, પૌરવૃત્યને – અગ્રેસર

मणुयाणं, वहूइं वासाइं बहूइं वाससयाइं वहूइं वाससहस्साइं अणहसमग्गो हट्टतुट्टो परमाउं पालयाहि, इट्ठजणसंपडिवुडो चंपाए णयरीए अण्णेसिं च वहूणं गामा-गर-णयर-खेड-

'**अणहसमग्गो**' अनघसमग्र, अनघश्चासौ समग्रश्चेति विग्रह, निष्पाप परिपूर्णसम्पत्तिपरिवारादिभि सम्पन्नश्च, यद्वा-अनघेन=पुण्येन समग्र=पूर्ण, यद्वा-न अघसमग्र=अनघसमग्र=सर्वविधपापरहित इत्यर्थ, '**हट्टतुट्टो**' हृष्टतुष्ट सन् '**पालयाहि**' पालय '**परमाउं**' परमायु-परमम्=उत्कृष्टम्-अपमृत्युवर्जितमखण्डित पूर्णमायु, तथा-'**इट्ठ-जण-संपरिवुडो**' इष्टजनसम्परिवृत=परिवारादिसमेत, चम्पाया नगर्या, '**अण्णेसिं च वहूणं गामा-गर-णयर-खेड-कव्वड-दोणमुह-मडव-पट्टण-आसम-निगम-संवाह - सन्निवेसाण**' अन्येषाञ्च बहूना ग्रामा-ऽऽकर-नगर-खेट-कर्वट-द्रोणमुख-मडम्ब-पट्टना-ऽऽश्रम-निगम-संवाह-सन्निवेशानाम्-तत्र-ग्राम=साधारणजनवासस्थानम्, आकर = लवणादिसम्भवस्थानम्, नगरम्=अविद्यमानकरम्, खेट=धूलीप्राकारवेष्टितम्, कर्वट=कुनगरम्,

वाससहस्साइं) बहुत वर्षोंतक, बहुत सैकडो वर्षों तक, बहुत हजार वर्षों तक (**अणहसमग्गो**) पूर्ण पुण्यशाली रहते हुए अथवा परिपूर्ण सम्पत्ति एव परिवार आदि से सपन्न अथवा सर्वविधपापरहित होते हुए (**हट्टतुट्टो परमाउं पालयाहि**) सदा आनद और सतोष के साथ अखण्ड आयु भोगवे। (**इट्ठ-जण-संपडिवुडो चंपाए णयरीए अण्णेसिं च बहूण गामा-गर-णयर-खेड-कव्वड-दोणमुह-मडव-पट्टण-आसम-निगम-संवाह-सन्निवेसाण आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत्त आणाईसरसेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे**) इष्ट जनों से परिवृत होते हुए आप चपानगरी के तथा और भी बहुत से गावों के, आकर-लवण आदि के उत्पत्ति स्थानों के, नगरों-जिनमे कर नहीं लगता हो

घणुा सेंकडा वरसो सुधी, घणुा हजार वरसो सुधी (अणहसमग्गो) पूर्ण पुण्यशाली रहेता अथवा परिपूर्ण संपत्ति तेमज परिवार आदिथी संपन्न अथवा सर्वरीते पापरहित रहेता (हट्टतुट्टो परमाउं पालयाहि) सदा आनंद तथा संतोषपूर्वक अखंड आयु भोगवो, (इट्ठजणसंपडिवुडो चंपाए णयरीए अण्णेसिं च बहूण गामा गर-णयर-खेड-कव्वड-दोणमुह-मडव-पट्टण-आसम निगम संवाह-सन्निवेसाण आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त भट्टित्तं महत्तरगत्त आणाईसर सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे) ईष्ट माणुसो वडे परिवृत (विंटायेला) आप चंपानगरीना तथा बीजा पणु घणुा गामोना, आकरोना-लवणु आदिना उत्पत्तिस्थानोना, नगरोना-जेमां कर न लेवातो होय एवी वस्तीओना

कव्वड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संवाह-संनिवे-
साणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ई-

द्रोणमुख=जलस्थलपथोपेतम्, मडम्बम्=अविद्यमानासन्नग्रामान्तरम्, 'पट्टण' पत्तनम्=जलपथेन स्थलपथेन वा निर्गमप्रवेशौ यत्र तत् पत्तनम्, यथा कराचीतो मुम्बापुरी, यद्वा-जलपथेनैव निर्गमप्रवेशौ न तु स्थलपथेन, यथा-भारताद् आङ्ग्लराजधानी 'इङ्ग्लैण्ड' इति प्रसिद्धा, तत्, किंच-स्थलपथेनैव निर्गमप्रवेशौ न तु जलपथेन तत्, एतत् सर्वं पत्तनमुच्यते। यद्वा-यत्र सर्वं वस्तु लभ्यते तत् पत्तनम्। आश्रम=तापसाद्यावास, निगम=वाणिज्यप्रधान नगरम्, संवाह=कृषीवलानां धान्यरक्षणस्थानम्, संनिवेश=सार्थकटकादीनामुत्तरणस्थानम्। तेषाम्-'आहेवच्च' आधिपत्यम्, 'पोरेवच्च' पौरोवृत्यम्=पुरोवर्तित्वम्-अग्रेसरत्वम् 'सा-

ऐसी वस्तियों के, खेटों के-धूलि के प्राकार से परिवेष्टित वस्तियों के, कर्वटों के-सामान्य नगरों के, द्रोणमुखों-जलमार्ग एवं स्थलमार्ग से युक्त प्रदेशों के, मडम्बों-जिनके आसपास दूसरे ग्राम नहीं होते हैं ऐसे प्रदेशों के, पत्तनों के-जहां जलपथ से भी एवं स्थलपथ से भी आना-जाना होता है, जैसे करांची से बम्बई, अथवा जहां सिर्फ जलमार्ग से ही आना-जाना होता है, जैसे भारत से इङ्गलैण्ड, अथवा स्थलमार्ग से ही जहां आना-जाना होता है, ये सभी पत्तन कहलाते हैं। अथवा समस्त वस्तुओं का लाभ जहां होता है वह भी पत्तन है, ऐसे पत्तनों के, आश्रमों के अर्थात् तापस आदि के आवासों के, निगमों के अर्थात् व्यापारिक नगरों के, संवाहों के अर्थात् किसानों के धान्य आदि रखने के स्थलों के, तथा सन्निवेशों के अर्थात् सार्थवाह और सेना आदि के उतरने के स्थानों के आधिपत्य को, पौरवृत्य को-अग्रेसरत्व को, स्वामित्व को-प्रभुत्व को, उनके भर्तृत्व को-पोषकत्व को, उनमें मह-

ખેટોના-ધૂળ (માટી)ના પ્રાકારથી પરિવેષ્ટિત વસ્તીઓના, કર્બટોના-સામાન્ય નગરોના, દ્રોણમુખોના-જલમાર્ગ તેમજ સ્થલમાર્ગથી યુક્ત પ્રદેશોના, મડંબોના-જેની આસપાસ બીજા ગામો ન હોય તેવા પ્રદેશોના, પત્તનોના-જ્યાં જલમાર્ગથી તેમજ સ્થલમાર્ગથી પણ આવી જઇ શકાતું હોય જેમકે કરાંચીથી મુંબઇ, અથવા જ્યાં માત્ર જલમાર્ગથી જ આવી જઇ શકાય, જેમકે ભારતથી ઇંગલાંડ, અથવા માત્ર સ્થલ માર્ગથી જ જ્યાં જઇ આવી શકાય તે બધાં પત્તન કહેવાય છે, અથવા સમસ્ત વસ્તુઓની પ્રાપ્તિ જ્યાં થઈ શકે તે પણ પત્તન છે એવા પત્તનોના, આશ્રમોના અર્થાત્ તાપસ આદિનાં આવાસોના, નિગમોના અર્થાત્ વ્યાપારિક નગરોના, સંવાહોના અર્થાત્ ખેડુતોના ધાન્ય આદિ રાખવાના સ્થળોના, તથા સંનિવેશોના અર્થાત્ સાર્થવાહ અને સેના આદિના ઉતરવાના સ્થાનોના આધિપત્યને, પૌરવૃત્યને – અગ્રેસર-

सर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महया-हय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुअंग-पडु-प्पवाइय-रवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहराहित्ति कट्टु जय जय सद्दं पउंजंति ॥ सू. ५३ ॥

मित्त भट्टित्त महत्तरगत्त' स्वामित्व=प्रभुत्वम्, भर्तृत्वम्=पोषकत्वम्, महत्तरकत्वम्=नायकत्वम्, 'आणा-ईसर-सेणावच्च' आज्ञेश्वर-सेनापत्यम्-आज्ञेश्वर =आज्ञाप्रद सेनापतिर्यः स आज्ञेश्वरसेनापति, यस्याज्ञामुपादाय सेनापति स्वकार्ये प्रवर्तते स इत्यर्थ, तस्य भावस्तत्त्व तत् 'कारेमाणे' कारयन् 'पालेमाणे' पालयन्=प्रजाजनान् रक्षन् 'महया-हय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल ताल-तुडिय-घण-मुअंग-पडु-प्पवाइय-रवेण' महता अहत-नाट्य-गीत-वादित्र-तन्त्री-तल-ताल-तौर्यिक-घन-मृदङ्ग-पटु-प्रवादित-रवेण-महता=दीर्घेण, अहतम्=अव्यवच्छिन्न यन्नाट्य=नाटकम् तत्र यद् गीत=गेयम्, वादित्र-वाद्यम्, तथा तन्त्री=वीणा, तलताल =हस्तास्फोटा, तौर्यिकम्=शेषवाद्यसमुदाय, घनमृदङ्ग =मेघनद् ध्वनिकारको मर्दल -एतत्सर्वं समुदित पटुप्रवादित=दक्षपुरुषप्रवादित तस्य रवेण=नादेन-आनन्दित इति गम्यते, तथाभूत सन् 'विउलाइं' विपुलानि=अत्यधि-

त्तरकत्व-नायकत्व को, एव आज्ञेश्वरसेनापत्य को-सेनापतियों के आज्ञाप्रदत्वरूप अधिकार को (कारेमाणे पालेमाणे) कराते हुए, पालते हुए एव सदा (महया-ऽहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तलताल-तुडिय-घणमुअंग-पडु-प्पवाइयरवेण) व्यवधानरहित-अव्यवच्छिन्न-निरन्तर प्रवर्तित-नाटक मे गाये गये गीतों के, चतुरपुरुषों द्वारा बजाये गये वादित्रों के, तथा तन्त्री-वीणा के, तलताल=हस्तस्फोटशब्द-तालियों के, तौर्यिक-और भी अवशिष्ट बाजों के समूह के, घनमृदगों-मेघकी तरह गरजने वाले ढोलों के एव मर्दलों के अविरल शब्दों से आनंदित

त्वने, स्वामित्वने-प्रभुत्वने, भर्तृत्वने-पोषकत्वने, तेमा महत्तरकत्वने-नायकत्वने तेमज आज्ञेश्वरसेनापत्यने - सेनापतिओना आज्ञाप्रदत्वरूप अधिकारने (कारेमाणे पालेमाणे) करावता अने पालता थका, तेमज सदा (महयाऽहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तलताल-तुडिय-घणमुअग-पडु-प्पवाइय-रवेण) व्यवधानरहित-अव्यवच्छिन्न-निरतर प्रवर्तित-नाटकमा गवाता गीतोना तेमज चतुर पुरुषो द्वारा वगाडाता वाजित्रोना, तथा तत्री-वीणाना, तलताल-तालिओना, तौर्यिक-बीजा बाकीना वाजाओना समूहना, घनमृदगो-मेघनी पेठे गर्जनारा ढोलोना, तेमज मर्दलोना अविरल शब्दो द्वारा आनदित थता

मूलम्—तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते नयण-मालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे पेच्छिज्जमाणे, हिययमालासहस्सेहिं

कानि, 'भोगभोगाइ' भोगभोगान् 'भुजमाणे विहराहित्ति कट्टु' भुञ्जन् विहर इति कृत्वा=उक्त्वा, 'जय जय सद्दं पउजंति' जयजयशब्द प्रयुञ्जते—जय जयेति शब्दानुचारयन्ति ॥ सू. ५३ ॥

टीका—'तए ण से' इत्यादि । 'तए ण से कूणिए राया भभसारपुत्ते' तत. खलु स कूणिको राजा भभसारपुत्र 'नयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे पेच्छिज्जमाणे' नयनमालासहस्रै प्रेक्ष्यमाण प्रेक्ष्यमाण बहुविधदर्शकजननयनपङ्क्तिभिर्वार वार निरीक्ष्यमाण, 'हिययमालासहस्सेहिं अभिणंदिज्जमाणे अभिणंदिज्जमाणे' हृदयमालासहस्रैरभिनन्द्यमान अभिनन्द्यमान —धन्योऽय कृतपुण्योऽय सफलजन्माऽयमित्यादि-

होते हुए (विउलाइं भोगभोगाइ भुजमाणे विहराहि) विपुल—अयधिक-भोगभोगों को भोगते हुए अपना समय निर्विघ्नरीति से व्यतीत करें, (त्तिकट्टु) इस प्रकार (जय जय सद्द पउंजति) वे पूर्वोक्त अर्थाभिलापी आदि समस्त जय जय शब्द बोलते थे ॥ सू० ५३ ॥

'तए णं से' इत्यादि ।

(तए णं) इसके बाद (भंभसारपुत्ते) भभसार के पुत्र (से) वे (कूणिए) कूणिक (राया) राजा (णयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे पेच्छिज्जमाणे) हजारों दर्शकजनों की हजारों नयनपंक्तियों द्वारा निरीक्षित होते हुए, (हियमालासहस्सेहिं अभिणंदिज्जमाणे अभिणंदिज्जमाणे) हजारों मनुष्यों के हृदयसहस्रों द्वारा अभिनदित होते हुए, अर्थात्-"इस राजा को धन्यवाद है, यह बडा पुण्यशाली है, इसका जन्म सफल है" इत्यादि–रीति से बार-

(विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहराहि) विपुल–અતિશય ભોગભોગોને ભોગવતા આપનો સમય નિર્વિઘ્ન રીતે વ્યતીત કરો (त्ति कट्टु) આ પ્રકારે (जय जय सद्द पउजति) તે ઉપર કહેલા અર્થાભિલાપી આદિ બધા જય જય શબ્દ બોલતા હતા (सू. ५३)

'तए णं से' ઇત્યાદિ

(तए णं) ત્યાર પછી (भंभसारपुत्ते) ભભસારના પુત્ર (से) તે (कूणिए) કૂણિક (राया) રાજા (णयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे पेच्छिज्जमाणे) હજારો જોનારા લોકોની હજારો આંખો દ્વારા જોવાતા, (हिययमालासहस्सेहि अभिणदिज्ज माणे अभिणदिज्जमाणे) હજારો મનુષ્યોના હજારો હૃદય દ્વારા અભિનંદિત થતા, અર્થાત્–"આ રાજાને ધન્યવાદ છે તેઓ બહુ બહુ પુણ્યશાલી છે તેમનો જન્મ સફલ છે" ઈત્યાદિ રીતથી વારવાર હજારો લોકો દ્વારા હાર્દિક ભાવના-

अभिणंदिज्जमाणे अभिणंदिज्जमाणे, मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे विच्छिप्पमाणे, वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे अभिथुव्वमाणे, कंति-दिव्व-सोहग्ग-गुणेहिं पत्थिज्जमाणे पत्थिज्ज-

रीयाऽसकृत् सहस्राऽधिकजनहृदयैः स्तूयमान, '**मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे विच्छिप्पमाणे**' मनोरथमालासहस्रैर्विस्पृश्यमान विस्पृश्यमान =हीनदीनरक्षणपूर्वक सकलमनोरथपूरकत्वात्—जनाना मनोरथमालासहस्रैर्मुहुर्मुहुः स्पृश्यमान —'नृपोऽयमस्माकमापदुद्धारक पालकश्च, अतोऽय शत वर्षाणि जीवतु' इत्यादि मनोरथसहस्रविपयीभवन् इत्यर्थ । '**वयणमालासहस्सेहिं**' वचनमालासहस्रै —मञ्जुलोदारवचनरचनानिचयै, '**अभिथुव्वमाणे अभिथुव्वमाणे**' अभिष्टूयमान' अभिष्टूयमान, '**कंति-दिव्व-सोहग्ग-गुणेहिं पत्थिज्जमाणे पत्थिज्जमाणे**' कान्तिदिव्यसौभाग्यगुणै प्रार्थ्यमान प्रार्थ्यमान, कान्त्या=देहदीप्त्या, प्रशस्तसौभाग्यादिगुणैश्च हेतुना जनै सातिशयम् अभिलष्यमाण अभिलष्यमाण, '**बहूण नरनारीसहस्साणं दाहिणहत्थेण अंजलिमालासहस्साइ**

बार सहस्राधिक जनों द्वारा हार्दिक भावना से स्तुत होते हुए, (**मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे विच्छिप्पमाणे**) हजारों जनों के मनोरथ सहस्ररूपी मालाओं द्वारा स्पृष्ट होते हुए, अर्थात्—हीनदीन जनों के रक्षापूर्वक समस्त मनोरथों का पूरक होने से "ये राजा हम लोगों की आपत्ति से रक्षा करने वाले हैं, एव पालक हैं, इसलिये ये सौ वर्ष तक जीवित रहें" इस प्रकार से जनों के हजारों मनोरथ का पात्र होते हुए, (**वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे अभिथुव्वमाणे**) मजुल एव उदार वचनों की रचनाओं द्वारा अभिष्टुत होते हुए, (**कंति—दिव्व—सोहग्ग—गुणेहिं पत्थिज्जमाणे पत्थिज्जमाणे**) देह की दीप्ति से एव दिव्य—असाधारण सौभाग्यादिक गुणों से जनों द्वारा प्रार्थित होते हुए, (**बहूण नरनारि-**

પૂર્વક સ્તુતિ કરાતા, (मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे विच्छिप्पमाणे) હજારો લોકોના હજારો મનોરથરૂપી માલાઓ દ્વારા સ્પર્શાતા, અર્થાત્ હીનદીનજનોની રક્ષાપૂર્વક સમસ્ત મનોરથો પરિપૂર્ણ કરતા હોવાથી આ રાજા અમારી આપત્તિથી રક્ષા કરવાવાળા છે તેમજ પાલક છે, તેથી તેઓ સો વર્ષ સુધી જીવતા રહે—આ પ્રકારના લોકોના હજારો મનોરથોને પાત્ર થતા, (वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे अभिथुव्वमाणे) મજુલ તેમજ ઉદાર વચનોની રચના દ્વારા અભિષ્ટુત થતા, (कंति-दिव्व सोहग्ग गुणेहिं पत्थिज्जमाणे पत्थिज्जमाणे) દેહની દીપ્તિથી તેમજ દિવ્ય—અસાધારણ સૌભાગ્ય આદિક ગુણોથી લોકો દ્વારા પ્રાર્થિત થતા, (बहूण नरनारिसहस्साण अंजलिमालासहस्साइ

माणे; बहूणं नरनारीसहस्साणं दाहिणहत्थेण अंजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे पडिच्छमाणे, मजुमंजुणा घोसेण पडिबुज्झमाणे पडिबुज्झमाणे, भवणपंतिसहस्साइं समइच्छमाणे समइच्छमाणे, चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स

पडिच्छमाणे पडिच्छमाणे' बहूनां नरनारीसहस्राणां दक्षिणहस्तेनाञ्जलिमालासहस्राणि-बहूनां नरनारीसहस्राणां यानि अञ्जलिमालासहस्राणि=राज सत्काराय विरचितानि मालारूपाणि सहस्राणि प्राञ्जलिपुटानि तानि उत्थापितेन दक्षिणहस्तेन प्रतीच्छन् प्रतीच्छन्=वारंवार स्वी-कुर्वन्, 'मजुमंजुणा घोसेण पडिबुज्झमाणे पडिबुज्झमाणे' मञ्जुमञ्जुना घोषेण=अति-कोमलेन शब्देन प्रतिबुध्यमान २=अनुमोदयन् २, 'भवण-पति सहस्साइं समइच्छमाणे समइच्छमाणे' भवनपङ्क्तिसहस्राणि समतिक्रामन् समतिक्रामन्, 'चंपाए नयरीए मज्झ-मज्झेणं' चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन, 'निग्गच्छइ' निर्गच्छति=निस्सरति, 'निग्गच्छित्ता' निर्गत्य, 'समणस्स भगवओ महावीरस्स' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'अदूरसामंते'

सहस्साणं दाहिणहत्थेणं अंजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे पडिच्छमाणे) हजारों नरनारियों की अंजलिरूप माला के सहस्रों को जो राजा के सत्कारार्थ विरचित हुई थीं, अपने दक्षिण (दाहिने) हाथ से स्वीकृत करते हुए, (मजुमंजुणा घोसेण पडिबुज्झमाणे पडिबुज्झमाणे) अत्यन्त मधुर स्वर से उनलोगों के द्वारा किये हुए सत्कार–सम्मान का अनुमोदन करते हुए, (भवण-पंति-सहस्साइं समइच्छमाणे समइच्छमाणे) एवं हजारों महलों की पंक्ति को पार करते हुए (चंपाए णयरीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ) चंपा नगरी के बीचमार्ग से होकर निकले, (निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवाग-

---

माणे) હજારો નરનારીઓના હાથની હજારો અંજલીરૂપ માલાઓ જે રાજાના સત્કારાર્થ રચાઈ હતી તેનો પોતાના જમણા હાથથી સ્વીકાર કરતા, (मजुमंजुणा घोसेण पडिबुज्झमाणे पडिबुज्झमाणे) અત્યંત મધુર સ્વરથી તે લોકો દ્વારા કરેલા સત્કાર–સમ્માનનું અનુમોદન કરતા, (भवणपतिसहस्साइं समइच्छमाणे समइच्छमाणे) તેમજ હજારો મહેલોની હારને પસાર કરતા (चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेण निग्गच्छइ) ચંપા નગરીના વચ્ચેના માર્ગમાં થઈને નીકળ્યા (निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ) નીકળીને જ્યાં પૂર્ણભદ્ર

भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्ताईए तित्थयराइसेसे पासइ, पासित्ता अभिसेक्कं हत्थिरयणं ठवेइ, ठवित्ता आभिसे-क्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता अवहट्टु पंच रायककुहाइं, तंजहा—खग्गं छत्तं उप्फेसं वाहणाओ वालवीयणि; जेणेव समणे

अदूरसामंते=नातिदूरे नातिसमीपे, किंचिद्दूरे इत्यर्थः। 'छत्ताईए तित्थयराइसेसे' छत्रादिकान् तीर्थकरातिशेषान्=तीर्थकरातिशयान् 'पासइ' पश्यति, 'पासित्ता' दृष्ट्वा, 'आभिसेक्क हत्थिरयण' आभिषेक्यं हस्तिरत्नम् 'ठवेइ, ठवित्ता' स्थापयति, स्थापयित्वा, 'आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ' आभिषेक्यात् हस्तिरत्नात् 'पच्चोरुहइ' प्रत्यवरोहति=अवतरति, 'पच्चोरुहित्ता' प्रत्यवरुह्य, 'अवहट्टु पच रायककुहाइ' अपहृत्य पञ्च राजककुदानि—त्यक्त्वा पञ्च राजचिह्नानि=राजाऽयमिति ज्ञापकानि चिह्नानि, 'तजहा' तद्यथा—तानि चिह्नानि यथा—'खग्ग' खड्गम्, 'छत्त' छत्रम्, 'उप्फेस' मुकुटम् 'उप्फेस' इति

चइ) निकल कर जहाँ पूर्णभद्र उद्यान था वहाँ आये, (उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते छत्ताईए तित्थयराइसेसे पासइ) आकर उन्होंने श्रमण भगवान् महावीर के न -अतिसमीप -और न अतिदूर—किन्तु कुछ ही दूर पर तीर्थंकरों के अतिशयस्वरूप छत्रादिकों को देखा, (पासित्ता आभिसेक्क हत्थिरयण ठवेइ) देखते ही उन्होंने अपने हाथी को खडा करवाया, (ठवित्ता आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ) हाथी के खडे होते ही वे उस हाथी से नीचे उतरे, (पच्चोरुहित्ता अवहट्टु पच रायककुहाइ) नीचे उतरते ही उन्होंने इन पाच राजचिह्नों का परित्याग किया, (त जहा) वे पाच राजचिह्न ये हैं—(खग्ग छत्त उप्फेस वाहणाओ वालवीयणि) खड्ग-

ઉદ્યાન હતુ ત્યા આવ્યા, (उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते छत्ताइए तित्थयराइसेसे पासइ) આવીને તેઓએ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરથી બહુ દૂર નહિ તેમ બહુ સમીપ નહિ, પણ જરા દૂરે, તીર્થંકરોના અતિશય સ્વરૂપ છત્રાદિકોને જોયા, (पासित्ता आभिसेक्क हत्थिरयण ठवेइ) જોતાજ તેઓએ પોતાના હાથીને ઉભો રખાવ્યો, (ठवित्ता आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ) હાથી ઉભો રહેતા જ તેઓ તે હાથી ઉપરથી નીચે ઉતર્યા, (पच्चोरुहित्ता अवहट्टु पच रायककुहाइ) નીચે ઉતરીને જ તેઓએ પાચ રાજચિહ્નોનો ત્યાગ કર્યો (तजहा) તે પાચ રાજચિહ્નો આ છે—(खग्ग छत्त उप्फेस वाहणाओ वालवीयणि) ખડ્ગ=તલવાર, છત્ર, ઉપ્ફેસ-મુ...

भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, तंजहा-(१) सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए, (२) अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए, (३) एगसाडियं उत्तरासंगकरणेणं, (४)

देशीय शब्द, 'वाहणाओ' उपानहौ 'वालवीयर्णि' वाल्यजनीम्-चामरम्, एतानि त्यक्त्वा, 'जेणेव समणे भगवं महावीरे' यत्रैव श्रमणो भगवान महावीर, 'तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता' तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, 'समणं भगवं महावीरं' श्रमणं भगवन्तं महावीरं 'पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ' पञ्चविधेनाऽभिगमेनाभिगच्छति-पञ्चप्रकारेण अभिगमेन=सत्कारविशेषेण अभिमुखं गच्छति, 'तंजहा' तद्यथा-तत्पञ्चविधाभिगमनं यथा-'सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए' सचित्तानां द्रव्याणां व्युत्सर्जनतया-हरितफलकुसुमादीनां वस्तूनां त्यागेन १, 'अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए' अचित्तानां द्रव्याणामव्युत्सर्जनतया, अचित्तानां वस्त्राभरणादीनाम् अत्यागेन २, 'एगसाडियमुत्त-

---

तलवार, छत्र, मुकुट, उपानत्-पगरखे, एव वालव्यजनी-चामर। फिर वे (जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ) जहां श्रमण भगवान महावीर विराजमान थे वहाँ पर आये, (उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ) जाते ही वे पांच प्रकार के अभिगमन-सत्कारविशेष से युक्त होकर प्रभु के सन्मुख पहुँचे। वे पांच प्रकार के सत्कारविशेष इस प्रकार हैं-(सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए) हरित फल फूल आदि सचित्त द्रव्यों का परित्याग करना, (अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए) वस्त्र आभरण आदि अचित्त द्रव्यों का परित्याग नहीं करना, (एगसाडियमुत्तरासंगकरणेणं) भाषा की यतना के लिये अखण्ड अर्थात् जो सांधा हुआ न हो

पगरखा, तेमज बालव्यजनी-चामर पछी तेओ (जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ) ज्यां श्रमण भगवान महावीर बिराजता हता त्यां आव्या (उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ) आवतां ज तेओ पांच प्रकारना अभिगमन-सत्कारविशेषथी युक्त थईने प्रभुना सन्मुख पहोंच्या ते पांच प्रकारना सत्कारविशेष आ प्रकारना छे-(सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए) लीलां फळ फूल आदि सचित्त द्रव्योनो परित्याग करवो, (अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए) वस्त्र-आभरण आदि अचित्त द्रव्योनो परित्याग न करवो, (एगसाडियमुत्तरासंगकरणेणं) भाषानी यतना

भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्ताईए तित्थयराइसेसे पासइ, पासित्ता अभिसेकं हत्थिरयणं ठवेइ, ठवित्ता आभिसेकाओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता अवहट्टु पंच रायकउहाइं, तंजहा—खग्गं छत्तं उप्फेसं वाहणाओ वालवीयणिं; जेणेव समणे

अदूरसमीपे=नातिदूरे नातिसमीपे, किंचिद्दूरे इत्यर्थः । 'छत्ताईए तित्थयराइसेसे' छत्रादिकान् तीर्थंकरातिशेषान्=तीर्थकरातिशयान् 'पासइ' पश्यति, 'पासित्ता' दृष्ट्वा, 'आभिसेक्क हत्थिरयणं' आभिषेक्यं हस्तिरत्नम् 'ठवेइ, ठवित्ता' स्थापयति, स्थापयित्वा, 'आभिसेकाओ हत्थिरयणाओ' आभिषेक्यात् हस्तिरत्नात् 'पच्चोरुहइ' प्रत्यवरोहति=अवतरति, 'पच्चोरुहित्ता' प्रत्यवरुह्य, 'अवहट्टु पंच रायककुहाइं' अपहृत्य पञ्च राजककुदानि—त्यक्त्वा पञ्च राजचिह्नानि=राजाऽयमिति ज्ञापकानि चिह्नानि, 'तंजहा' तद्यथा—तानि चिह्नानि यथा—'खग्गं' खड्गम्, 'छत्तं' छत्रम्, 'उप्फेसं' मुकुटम् 'उप्फेसं' इति

च्छइ) निकल कर जहाँ पूर्णभद्र उद्यान था वहाँ आये, (उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्ताईए तित्थयराइसेसे पासइ) आकर उन्होंने श्रमण भगवान् महावीर के न अतिसमीप और न अतिदूर—किन्तु कुछ ही दूर पर तीर्थंकरों के अतिशयस्वरूप छत्रादिकों को देखा, (पासित्ता आभिसेक्कं हत्थिरयणं ठवेइ) देखते ही उन्होंने अपने हाथी को खडा करवाया, (ठवित्ता आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ) हाथी के खडे होते ही वे उस हाथी से नीचे उतरे, (पच्चोरुहित्ता अवहट्टु पंच रायककुहाइं) नीचे उतरते ही उन्हों ने इन पांच राजचिह्नों का परित्याग किया, (तं जहा) वे पांच राजचिह्न ये हैं—(खग्गं छत्तं उप्फेसं वाहणाओ वालवीयणिं) खड्ग-

ઉદ્યાન હતું ત્યાં આવ્યા, (उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्ताइए तित्थयराइसेसे पासइ) આવીને તેઓએ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરથી બહુ દૂર નહિ તેમ બહુ સમીપ નહિ, પણ જરા દૂરે, તીર્થંકરોના અતિશય સ્વરૂપ છત્રાદિકોને જોયા, (पासित्ता आभिसेक्कं हत्थिरयणं ठवेइ) જોતાજ તેઓએ પોતાના હાથીને ઉભો રખાવ્યો, (ठवित्ता आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ) હાથી ઉભો રહેતા જ તેઓ તે હાથી ઉપરથી નીચે ઉતર્યા, (पच्चोरुहित्ता अवहट्टु पंच रायककुहाइं) નીચે ઉતરીને જ તેઓએ પાંચ રાજચિહ્નોનો ત્યાગ કર્યો (तंजहा) તે પાંચ રાજચિહ્નો આ છે—(खग्गं छत्तं उप्फेसं वाहणाओ वालवीयणिं) ખડ્ગ=તલવાર, છત્ર, ઉપ્ફેસ=મુકુટ, ઉપાનત-

भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, तंजहा-(१) सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए, (२) अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए, (३) एगसाडियं उत्तरासंगकरणेणं, (४)

देशीय शब्द, 'वाहणाओ' उपानहौ 'वालवीयणि' वालव्यजनीम्-चामरम्, एतानि त्यक्त्वा, 'जेणेव समणे भगवं महावीरे' यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीर, 'तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता' तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, 'समणं भगवं महावीरं' श्रमणं भगवन्तं महावीरं 'पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ' पञ्चविधेनाऽभिगमेनाभिगच्छति-पञ्चप्रकारेण अभिगमेन=सत्कारविशेषेण अभिमुखः गच्छति, 'तंजहा' तद्यथा-त पञ्चविधाभिगमनं यथा-'सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए' सचित्तानां द्रव्याणां व्युत्सर्जनतया-हरितफलकुसुमादीनां वस्तूनां त्यागेन १, 'अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए' अचित्तानां द्रव्याणामव्युत्सर्जनतया, अचित्तानां वस्त्राभरणादीनाम् अत्यागेन २, 'एगसाडियमुत्त-

तलवार, छत्र, मुकुट, उपानत्-पगरख, एवं वालव्यजनी-चामर। फिर वे (जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ) जहां श्रमण भगवान महावीर विराजमान थे वहाँ पर आये, (उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ) जाते ही वे पांच प्रकार के अभिगमन-सत्कारविशेष से युक्त होकर प्रभु के सन्मुख पहुँचे। वे पांच प्रकार के सत्कारविशेष इस प्रकार हैं-(सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए) हरित फल फूल आदि सचित्त द्रव्यों का परित्याग करना, (अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए) वस्त्र आभरण आदि अचित्त द्रव्यों का परित्याग नहीं करना, (एगसाडियमुत्तरासंगकरणेणं) भाषा की यतना के लिये अखण्ड अर्थात् जो सांधा हुआ न हो

પગરખા, તેમજ બાલવ્યજની-ચામર પછી તેઓ (जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ) જ્યાં શ્રમણ ભગવાન મહાવીર બિરાજતા હતા ત્યાં આવ્યા (उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ) આવતાં જ તેઓ પાંચ પ્રકારના અભિગમન-સત્કારવિશેષથી યુક્ત થઈને પ્રભુના સન્મુખ પહોંચ્યા તે પાંચ પ્રકારના સત્કારવિશેષ આ પ્રકારના છે-(सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए) લીલાં ફળ ફૂલ આદિ સચિત્ત દ્રવ્યોનો પરિત્યાગ કરવો, (अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए) વસ્ત્ર-આભરણ આદિ અચિત્ત દ્રવ્યોનો પરિત્યાગ ન કરવો, (एगसाडियमुत्तरासंगकरणेणं) ભાષાની યતના

चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं, (५) मणसो एगत्तभावकरणेण, समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासण-

रासगकरणेण' एकशाटिकोत्तराऽऽसङ्गकरणेन—मायायतनार्थम् अस्यूतेन एकपटेन उत्तरासङ्गकरणं तेन ३, 'चक्खुप्फासे' चक्षुःस्पर्शे—श्रीमहावीरे दृष्टिमागते, 'अंजलिपग्गहेण' अञ्जलिप्रग्रहेण=कृताऽञ्जलिपुटेन ४, 'मणसो एगत्तभावकरणेण' मनस एकत्रभावकरणेन—मनसः चित्तस्यैकत्र=भगवद्विषये भावकरणेन=स्थिरीकरणेन, एवं पञ्चविधाभिगमेन 'समणं भगवं महावीरं' श्रमणं भगवन्तं महावीरम् अभिगम्य, तस्य श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'तिक्खुत्तो' त्रिः च 'आयाहिणपयाहिणं' आदक्षिणप्रदक्षिणम्=अञ्जलिपुटं बद्ध्वा, तं बद्धाञ्जलिपुटं दक्षिणकर्णमूलत आरभ्य ललाटप्रदेशेन वामकर्णान्तिकेन चक्राकारं त्रिः परिभ्राम्य ललाटदेशे स्थानरूपं, 'करेइ' करोति, 'करित्ता' कृत्वा 'वंदइ नमंसइ' वन्दते नमस्यति—स्तौति नमस्करोति, 'वंदित्ता नमंसित्ता' वन्दित्वा नमस्यित्वा, 'तिवि-

ऐसे वस्त्र का उत्तरासङ्ग करना, (चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेण) जब से भगवान दिखायी दे, तभी से दोनों हाथों को जोडना, और (मणसो एगत्तभावकरणेण) मन को एकाग्र करके भगवान में लगाना। इस प्रकार इन पाँच अभिगमनों से युक्त होकर राजाने भगवान् महावीर प्रभु को तीन बार (आयाहिणपयाहिण) आदक्षिणप्रदक्षिण-अञ्जलिपुट को दाहिने कान से लेकर शिर पर घुमाते हुए बाये कान तक ले जाकर फिर उसे घुमाते हुए दाहिने कान पर ले जाना और बाद में उसे अपने ललाट पर स्थापन करना—रूप आदक्षिणप्रदक्षिण (करेइ) किया, (करित्ता) आदक्षिणप्रदक्षिण कर के (वंदइ नमंसइ) वन्दना और नमस्कार किया। (वंदित्ता नमंसित्ता) वन्दना नमस्कार कर के (तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ)

માટે અખંડ અર્થાત્ જે સીવેલા ન હોય તેવા વસ્ત્રનું ઉત્તરાસંગ કરવું, (चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेण) જ્યારથી ભગવાન દેખાય ત્યારથી જ બન્ને હાથને જોડવા, અને (मणसो एगत्तभावकरणेण) મનને એકાગ્ર કરીને ભગવાનમાં જોડવું આ પ્રકારે આ પાંચ અભિગમનોથી યુક્ત થઈને રાજાએ ભગવાન મહાવીર પ્રભુને ત્રણ વાર (आयाहिणपयाहिण) આદક્ષિણપ્રદક્ષિણ—અંજલિપુટને જમણા કાનથી લઈને શિર ઉપર ઘુમાવતા ડાબા કાન સુધી લઈ જઈને પાછો તેને ઘુમાવીને જમણા કાને લઈ જવો અને પછી તેને પોતાના કપાળે સ્થાપન કરવારૂપ આદક્ષિણ—પ્રદક્ષિણ (करेइ) કર્યું, (करित्ता) આદક્ષિણ—પ્રદક્ષિણ કરીને (वंदइ नमंसइ) વંદના અને નમસ્કાર કર્યા (वंदित्ता नमंसित्ता) વંદના

ज्जुवासइ, तंजहा-काइयाए वाइयाए माणसियाए। ए-ताव संकुइयग्गहत्थपाए सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अ-हे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ। वाइयाए-जं जं भगवं

ज्जुवासणयाए पज्जुवासइ' त्रिविधया पर्युपासनया पर्युपास्ते-भगवत पर्युपासना 'तजहा' तद्यथा-तत् त्रिविध दर्शयति-'काइयाए वाइयाए माणसियाए' कायिक्या वाचिक्या मानसिक्या, पर्युपास्ते इति पूर्वेणान्वय। तत्र कायिक्या पर्युपासनया तावत् 'सकुइयग्गहत्थपाए' सङ्कुचिताऽग्रहस्तपाद, 'सुस्सूसमाणे' शुश्रूषमाण = सेवमान, 'णमंसमाणे' नमस्यन-अभिमुखे विनयेन प्राञ्जलिपुट पर्युपास्ते, 'वाइयाए-ज ज भगव वागरेइ' वाचिक्या पर्युपासनया-यद् यद् भगवान् व्याकरोति=व्याख्याति,

त्रिविध पर्युपासना से उनकी उपासना की। वह त्रिविध उपासना इस प्रकार है-(काइयाए वाइयाए माणसियाए) काय से उपासना करना, वचन से उपासना करना एव मन से उपासना करना। (काइयाए ताव) कायिक उपासना इस प्रकार से उसने की-(सकुइयग्गहत्थपाए सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलिउडे पज्जुवासइ) प्रभु क समीप वे हाथपावों को सकुचित करके उचित आसन से बैठे। उनसे धर्म सुनने की इच्छा करने लगे, उन्हे वारवार नमस्कार करने लगे, पुन नम्र होकर प्रभु के सम्मुख दोनों हाथों को जोडते हुए प्रभु की सेवा करने लगे। (वाइयाए) वचन से उपासना उन्होंने इस प्रकार की-(ज जं भगवं वागरेइ) जो जो भगवान् कहते थे, उस पर राजा इस प्रकार कहते थे, हे भगवान! (से जहेयं तुब्भे वदह) आप जैसा कहते हैं, (एवमेय भते!) हे

नमस्કાર કરીને (तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ) ત્રિવિધ પર્યુપાસના વડે તેમની ઉપાસના કરી તે ત્રિવિધ ઉપાસના આ પ્રકારે છે-(काइयाए वाइयाए माणसियाए) કાયાથી ઉપાસના કરવી, વચનથી ઉપાસના કરવી તેમજ મનથી ઉપાસના કરવી (काइयाए ताव) કાયિક ઉપાસના તેણે આ પ્રકારે કરી-(सकुइयग्गहत्थपाए सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएण पजलिउडे पज्जुवासइ) પ્રભુની પાસે તેઓ હાથ-પગને સકુચિત કરીને ઉચિત આસન પર બેઠા તેઓ પાસેથી ધર્મ સાભળવાની ઇચ્છા કરવા લાગ્યા, તેમને વારવાર નમસ્કાર કરવા લાગ્યા, અને નમ્ર થઇને પ્રભુના સન્મુખ બન્ને હાથ જોડીને પ્રભુની સેવા કરવા લાગ્યા (वाइयाए) વચનથી તેમણે આ પ્રમાણે ઉપાસના કરી-(ज ज भगव वागरेइ) જે જે ભગવાન કહેતા હતા તે ઉપર રાજા આ પ્રકારે બોલતા હતા-હે ભગવાન્! (से जहेय तुब्भे वदह) આપ જેમ કહો છો

वागरेइ, एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भं
संदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं
इच्छियपडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह–अपडिकूल-

तत्र तत्र–'एवमेयं भते !' एवमेतद् भदन्त !=हे भगवन् ! यद् भवानुपदिशति तद् एवमे-वास्ति, 'तहमेयं भते !' तथैतद् भदन्त !=हे भगवन् ! भवता यदुपदिष्ट तत्तथैव । 'अवितहमेय भते !' अवितथमेतद् भदन्त !=हे भगवन् ! भवदुक्तमेतत् सर्वं सत्यमेव । 'असदिद्धमेयं भते !' असन्दिग्धमेतद् भदन्त !=हे भगवन् ! एतत् सन्देहरहित=देश-शङ्कासर्वशङ्कावर्जितम् । 'इच्छियमेय भते !' इष्टमेतद् भदन्त !=हे भगवन् ! एतद्भव द्वचनमस्माभिर्वाञ्छितमेव, 'पडिच्छियमेय भते !' प्रतीष्टमेतद् भदन्त !=हे भगवन् ! पुनः पुनरिष्टमेतद् भवद्वचनम्, 'इच्छियपडिच्छियमेय भते !' इष्टप्रतीष्टमेतद् भदन्त !=हे भगवन् ! एतद् वचनम् इष्टप्रतीष्टोभयरूप वर्तते । 'से जहेय तुब्भे वदह' तद्यथैतद् यूय वदथ–तदेतद् यथा भवन्त कथयन्ति तत्तथैवेति वदन् 'अपडिकूलमाणे पज्जुवासइ' अप्रतिकूलयन=प्रतिकूलाचरण वर्जयन् पर्युपास्ते । 'माणसियाए' मानसिक्या=मन-

भगवन् ! यह ऐसा ही है, (तहमेय भते !) हे भगवन् ! यह वैसा ही है, (अवितहमेय भते !) हे भगवन् ! आपने जो कहा सो सत्य है, (असदिद्धमेय भंते !) हे भगवन् ! यह देश-शङ्का और सर्वशङ्का से सर्वथा रहित है, (इच्छियमेय भते !) हे भगवन् ! आपका यह वचन हम लोगों के लिए सर्वदा वाञ्छनीय है, (पडिच्छियमेय भते !) हे भगवन् ! यह आपका वचन हम लोगों के लिये सर्वथा वाञ्छनीय है, (इच्छियपडिच्छियमेयं भंते !) हे भगवन् ! यह आपका वचन हम लोगों के लिये सर्वदा और सर्वथा वाञ्छनीय है। इस प्रकार राजा–(अपडिकूलमाणे) भगवान के साथ अनुकूल आचरण करते हुए (पज्जुवासइ) उनकी उपासना करने लगे। (माणसियाए) राजा ने भगवान् की मानसिक उपा-

(एवमेय भते !) હે ભગવન્ ! એ એમજ છે, (तहमेय भते !) હે ભગવન્ ! એ એમજ છે, (अवितहमेयं भते !) હે ભગવન્ ! આપે જે કહ્યુ તે સત્ય છે (असदिद्धमेय भते !) હે ભગવન્ ! આ તમારૂ વચન દેશશકા અને સર્વ-શકાઓથી સર્વથા રહિત છે (इच्छियमेय भते !) હે ભગવન્ ! આપના આ વચન અમારા માટે સર્વદા વાછનીય છે (पडिच्छियमेय भते !) હે ભગવન્ ! આ આપના વચન અમારા માટે સર્વથા વાછનીય છે, (इच्छिय-पडिच्छियमेय भते !) હે ભગવન્ ! આ આપના વચન અમારા માટે સર્વદા અને સર્વથા વાછનીય છે આ પ્રકારે રાજા (अपडिकूलमाणे) ભગવાનની સાથે અનુકૂલ

माणे पज्जुवासइ । माणसियाए-महयासंवेगं जणइत्ता तिव्वध-म्माणुरागरत्ते पज्जुवासइ ॥ सू० ५४ ॥

मूलम्—तए णं ताओ सुभद्दप्पमुहाओ देवीओ अंतो अंतेउरंसि ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ सव्वालंकारविभूसि-

सम्बधिन्या पर्युपासनया, 'महयासवेग' महासवेग=महद्वैराग्य 'जणइत्ता' जनयित्वा 'तिव्व-धम्मा-णुराग-रत्ते' तीव्र-धमा-नुराग-रक्त सन् 'पज्जुवासइ' पर्युपास्ते अनेन वीतरागाण पुष्पधूपादिभि सावद्यपूजा निराकृता ॥ सूत्र ५४ ॥

टीका—'तए ण ताओ' इत्यादि । 'तए ण' तत खलु 'ताओ सुभद्दप्प-मुहाओ' तत तदनन्तरम्-सुभद्राप्रमुखा 'देवीओ' देव्य=राज्य 'अतो अतेउरंसि' अन्तरन्त पुरस्य स्त्रीभवनमध्ये, 'ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ' स्नाता यावत् प्राय-

सना इस प्रकार की-(महयासंवेग जणइत्ता तिव्व-धम्मा-णुराग-रत्ते पज्जुवासइ) प्रभु के मुख से धर्म का उपदेश सुन कर राजा के हृदय में परम वैराग्य उत्पन्न हुआ और धर्मानुराग से प्रेरित होकर वे प्रभु की उपासना करने लगे। इस सूत्र से वीतरागों की पुष्प-धूप आदि से सावद्य पूजा करना सर्वथा निषिद्ध है-यह सूचित होता है ॥ सू० ५४ ॥

'तए ण ताओ इत्यादि ।

(तए ण) इसके बाद (ताओ सुभद्दप्पमुहाओ देवीओ) वे सुभद्राप्रमुख देवियां भी (अतो अतेउरसि) अत पुरस्थ स्त्रीभवन के मध्यवर्ती स्नानागार में (ण्हायाओ जाव

આચરણુ કરતા (पज्जुवासइ) તેમની ઉપાસના કરવા લાગ્યા (माणसियाए) રાજાએ ભગવાનની માનસિક ઉપાસના આ પ્રકારે કરી-(महयासवेगं जणइत्ता तिव्व-धम्मा-णुराग-रत्ते पज्जुवासइ) પ્રભુના મુખથી ધર્મનો ઉપદેશ સાંભ-ળીને રાજાના હૃદયમા પરમ વૈરાગ્ય ઉત્પન્ન થયુ, અને ધર્માનુરાગથી પ્રેરિત થઈને તેઓ પ્રભુની ઉપાસના કરવા લાગ્યા આ સૂત્રથી વીતરાગોની પુષ્પ ધૂપ આદિ વડે સાવદ્યપૂજા કરવી એ સર્વથા નિષિદ્ધ છે તે સૂચિત થય છે (સૂ૦ ૫૪)

"तए ण ताओ" ઇત્યાદિ

(तए ण) ત્યાર પછી (ताओ सुभद्दप्पमुहाओ देवीओ) તે સુભદ્રા પ્રમુખ દેવીઓ પણ (अतो अतेउरसि) અંત પુરમા સ્ત્રીભવનના મધ્યવર્તી સ્નાના-ગારમા (ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ) સ્નાન કરીને કૌતુક તથા બલિકર્મથી

याओ वहूहिं खुज्जाहिं चिलाईहिं वामणीहिं वडभीहिं बब्बरीहिं वउसियाहिं जोणियाहिं पल्हवियाहिं ईसणियाहिं चारुइणियाहिं

श्चित्ता -यावत्-शब्दात्-'कृतबलिकर्माण कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता' इति सग्रह, तथा 'सव्वालकार-विभूसियाओ' सर्वा-ऽलङ्कार-विभूषिता -सर्वैरलङ्कारैरलङ्कृता 'वहूहिं खुज्जाहिं' वह्वीभि कुब्जाभि -वक्रशरीराभि 'कूबडी' इति प्रसिद्धाभि, 'चिलाईहिं' किरातीभि =किरात देशोत्पन्नाभि, 'वामणीहिं' वामनाभि -अतिहूस्व शरीराभि, 'वडभीहिं' वटभिकाभि =वक्राऽध कायाभि, 'बब्बरीहिं' बर्बरीभि =बर्बरदेशोपन्नाभि, 'वउसियाहिं' बकुशिकाभि, 'जोणियाहिं' योनिकाभि =योनिकदेशोपन्नाभि, 'पल्हवियाहिं' पह्लविकाभि =पह्लवदेशोत्पन्नाभि, 'ईसिणियाहिं' 'ईसिन' नामकोऽनार्यदेशस्तत्रोपन्नाभि 'चारुइणियाहिं' चारकिनिकाभि, 'चारुकिनिक' देशविशेषोत्पन्नाभि, 'लासियाहिं' लासिकाभि =लासकदेशो

पायच्छित्ताओ) स्नान करके कौतुक तथा बलिकर्म से निवृत्त होकर, (**सव्वा-लकार-विभूसियाओ**) एव समस्त अलकारों को धारण कर (**वहूहिं खुज्जाहिं चिलाईहिं**) अनेक कुबडी दासियों से, अनेक किराततिनियों-किरात देशमें उत्पन्न दासियों से, (**वामणीहिं**) अनेक वामनियोंसे-जिनका शरीर अत्यत हूस्व-छोटा था ऐसी दासियों से, (**वडभीहिं**) अनेक वटभियों-जिनकी कमर बिल्कुल झुक गई थी ऐसी दासियों से, (**बब्बरीहि**) बर्बर देशोद्भव अनेक दासियों से, (**वउसियाहिं**) बकुश देश की दासियों से, (**जोणियाहिं**) यूनान देश की दासियों से, (**पल्हवियाहिं**) अनेक पह्लविकाओं-पह्लवदेश की दासियों से, (**ईसिणियाहिं**)-इसिन नाम का एक अनार्यदेश है इस देश की दासियों से, (**चारुइणियाहिं**) चारुकिनिक देश की दासियों से, (**लासियाहिं**) लासकदेश की दासियों से, (**लउसियाहिं**)

निवृत्त थईने (सव्वालकारविभूसियाओ) तेमज सर्व अलकारोने धारण करीने (वहूहिं खुज्जाहिं चिलाईहिं) अनेक कुबडी दासीओथी, अनेक किरातीओ-किरात देशमा उत्पन्न थयेली दासीओथी, (वामणीहिं) अनेक वामनिओ-जेना शरीर अत्यत नाना-(ठीगणा) हता एवी दासीओथी, (वडभीहिं) अनेक वटभीओ-जेमनी कमर छेक वळी गई हती एवी दासीओथी (बब्बरीहिं) बर्बर-देशोत्पन्न अनेक दासीओथी, (बउसियाहिं) बकुश देशनी दासीओथी, (जोणियाहिं) यूनान देशनी दासीओथी, (पल्हवियाहिं) अनेक पहलविकाओ-पहलव देशनी दासीओथी, (ईसिणियाहिं) इसिन नामनो एक अनार्य देश छे ते देशनी दासीओथी, (चारुइणियाहिं) चारुकिनिक देशनी दासीओथी, (लासियाहिं) लासक देशनी दासीओथी, (लउसियाहिं) लकुशदेशनी दासीओथी (सिंहलीहिं) सिंहल देशनी

लासियाहिं लउसियाहिं सिंहलीहिं दमलीहिं, आरबीहिं पुलिं-दीहिं पक्कणीहिं वहलीहिं मरुंडीहिं सवरीहिं पारसीहिं णाणादे-सीहिं विदेस-वेस-परिमंडियाहिं इंगिय-चिंतिय-पत्थिय-वियाणियाहिं सदेसणेवत्थ-ग्गहिय-वेसाहिं चेडिया-चक्कवाल-व-

त्पन्नाभि, 'लउसियाहिं' लकुशिकाभि =लकुशदेशोत्पन्नाभि, 'सिंहलीहिं' सिंहलीभि = सिंहलदेशोपन्नाभि 'दमिलीहिं' द्रविडीभि =द्रविडदेशोपन्नाभि, 'आरबीहिं' आरबीभि = अरबदेशोपन्नाभि, 'पुलिन्दीहिं' पुलिन्दीभि =पुलिन्ददेशोपन्नाभि, 'पक्कणीहिं' पक्कणीभि = पक्कणदेशोपन्नाभि, 'वहलीहिं' वहलीभि =वहलनामकोऽनार्यदेशस्तत्रोत्पन्नाभि, 'मुरुंडीहिं' मुरुण्डाभि =मुरुण्डदेशोपन्नाभि, 'सवरीहिं' शबरीभि =शबरदेशोपन्नाभि, 'पारसीहिं' पारसाभि =पारसदेशोपन्नाभि, किरातादय सर्वेऽनार्यदेशा, 'णाणादेसीहिं' नानादेशीयाभि, 'वि-देस-वेस-परिमडियाहिं' विदेश-वेष-परिमण्डताभि =विविध-देशपरिमण्डनयुक्ताभि, 'इंगिय-चिंतिय-पत्थिय-वियाणियाहिं'इङ्गित-चिन्तित-प्रार्थित विज्ञाभि ,इङ्गितम्=अभिप्रायानुरूप-

लकुशदेश की दासियों से, (सिंहलीहिं) सिंहलदेश की दासियों से, (दमिलीहिं) द्रविड-देश की दासियों से, (आरबीहिं) अरबदेश की दासियो से, (पुलिंदीहिं) पुलिन्ददेश की दासियों से, (पक्कणीहिं) पक्कणदेश की दासियों से, (वहलीहिं) वहल नाम के अनार्य देश की दासियों से, (मुरुंडीहिं) मुरण्डदेश की दासियों से, (सवरीहिं) शबरदेश की दासियों से, (पारसीहिं) पारसदेश की दासियों से, (ये किरात आदि जितने भी देश है वे सब अनार्य देश है) इन (णाणादेसीहिं) अनेक देश की दासियाँ, जो (विदेस-वेस-परिमंडियाहिं) विदेशी वेष भूषा से सज्जित थीं, (इंगिय-चिंतिय-पत्थिय-वियाणियाहिं) इंगित को अर्थात् अभिप्राय के अनुरूप चेष्टा को, चिन्तित को अर्थात् मनोगत भावको,

દાસીઓથી, (दमिलीहिं) દ્રવિડ દેશની દાસીઓથી, (आरबीहिं) અરબ દેશની દાસીઓથી (पुलिंदीहिं) પુલિંદ દેશની દાસીઓથી (पक्कणीहिं) પક્કણ દેશની દાસીઓથી, (वहलीहिं) બહલ નામના અનાર્ય દેશની દાસીઓથી, (मुरुंडीहिं) મુરુંડ દેશની દાસીઓથી, (सवरीहिं) શબર દેશની દાસીઓથી, (पारसीहिं) પારસ દેશની દાસીઓથી, આ કિરાત આદિ જેટલા દેશ છે તે બધા અનાર્ય દેશ છે, આ (णाणादेसीहिं) અનેક દેશની દાસીઓ જે (विदेस-वेस-परि-मंडियाहिं) વિદેશી વેષ ભૂષાથી સજ્જિત હતી, (इंगिय-चिंतिय पत्थिय वियाणियाहिं) ઇંગિતને એટલે અભિપ્રાયને અનુરૂપ ચેષ્ટાને, ચિન્તિતને એટલે મનોગત ભાવને,

रिसवर–कंचुइज्ज–महत्तर–वंद-परिक्खित्ताओ अंतेउराओ णिग्गच्छन्ति,णिग्गच्छित्ता जेणेव पाडियक्कजाणाइं तेणेव उवागच्छंति,उवागच्छित्ता पाडियक्कपाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइ जुत्ताइ जाणाइं दुरू-

चेष्टितम्, चिंतित=मनोगत, प्रार्थितम्=अभिलषित तेषा विज्ञाभि, 'सदेस–णेवत्थ–गहिय–वेसाहिं' स्वदेश–नेपथ्य–गृहीत–वेषाभि –स्वदेशस्य यानि नेपथ्यानि=वस्त्रभूषण धारणरीतय, तैर्गृहीता वेषा याभि तास्तथा ताभि, 'चेडिया–चक्कवाल–वरिसवर–कंचुइज्ज–महत्तर–वंद–परिक्खित्ताओ' चेटिका–चक्रवाल–वर्षवर–कञ्चुकीय–महत्तर–वृन्द-परिक्षिप्ता —चेटिकाना=दासीना चक्रवाल मण्डलम्, वर्षवरा,=क्लीबा, कञ्चुकीया =अन्त पुरबहि प्रदेशरक्षका, तदन्ये ये महत्तरा =प्रामाणिका अन्त पुररक्षका, तेषा यद् वृन्द तेन परिक्षिप्ता =परिवेष्टिता यास्तास्तथा सुभद्राप्रमुखा देव्यो=राज्य 'अतेउराओ णिग्गच्छति' अन्त पुरात्–स्त्रीगृहान्निर्गच्छन्ति, 'णिग्गच्छित्ता' निर्गत्य, 'जेणेव पाडियक्कजाणाइ' यत्रैव प्रत्येकयानानि=पृथक् २ यानानि सन्ति, तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य 'पाडियक्क–पाडि-

प्रार्थित को अर्थात्–अभिलषित को जानने मे विज्ञ थीं, (सदेस-णेवत्थ-गहिय-वेसाहिं) अपने २ देश की रीति के अनुसार वेषभूषा धारण की हुई थीं, ऐसी इन विदेशी दासियों से, तथा–(चेडिया–चक्कवाल-वरिसवर–कंचुइज्ज–महत्तर–वंद–परिक्खित्ताओ) विदेशी दासियों से भिन्न दासियों के समूह से, वर्षवरों से-नपुसकों से, कंचुकियों से तथा और भी अन्य प्रामाणिक अन्त पुर रक्षकों से परिक्षिप्त-घिरी हुईं होकर (अतेउराओ णिग्गच्छंति) अत पुर से निकलीं, (णिग्गच्छित्ता) निकलकर (जेणेव पाडियक्कजाणाइ) जहा अपने २ योग्य अलग २ यान रखे हुए थे, (तेणेव उवागच्छंति) वहा पर पहुँची, (उवागच्छित्ता, पाडियक्कपाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं दुरूहंति) पहुँच कर उन पृथक् २

પ્રાર્થિતને એટલે અભિલાષાને જાણી લેવામા નિપુણ હતી, (सदेसणेवत्थ-गहियवेसाहिं) જેઓએ પોતપોતાના દેશની રીત પ્રમાણે વેષ ધારણ કરેલો હતો એવી આ વિદેશી દાસીઓથી, તથા (चेडिया–चक्कवाल–वरिसवर–कंचुइज्ज–महत्तर–वंद-परिक्खित्ताओ) વિદેશી દાસીઓથી જુદી દાસીઓના સમૂહથી, તથા વર્ષવર–નપુસકોથી, કંચુકીઓથી, તથા બીજા પણ પ્રામાણિક અ ત પુરરક્ષકોથી પરિક્ષિપ્ત–વીંટાએલી બનીને (अतेउराओ णिग्गच्छति) અ ત પુરથી નીકળી, (णिग्गच्छित्ता) નીકળીને (जेणेव पाडियक्कजाणाइ) જ્યા પોતપોતાને યોગ્ય જુદા જુદા યાન (વાહનો) રાખવામા આવ્યા હતા (तेणेव उवागच्छति) ત્યા પહોંચી (उवागच्छित्ता पाडियक्कपाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइ जुत्ताइ जाणाइ दुरू

हंति, दुरूहित्ता णियग-परियाल सद्धिं संपरिवुडाओ चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छंति, णिग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्तादीए तित्थयराइसेसे पासंति,

यक्काइ' प्रत्येकप्रत्येकानि=पृथक् २ कल्पितानि 'जत्ताभिमुहाइ जुत्ताइं जाणाइं'—यात्राभिमुखानि युक्तानि यानानि—यात्राभिमुखानि=भगवद्दर्शनार्थगमनाय सज्जितानि युक्तानि=बलीवर्दै योजितानि, यानानि=रथान् 'दुरूहंति' अधिरोहन्ति, 'दुरूहित्ता' अधिरुह्य, 'णियग-परियाल सद्धिं' निजकपरिवारैः सार्द्धम्, 'संपरिवुडाओ' सम्परिवृता =समन्ताद्वेष्टिता, चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन, 'णिग्गच्छंति' निर्गच्छन्ति, 'णिग्गच्छित्ता' निर्गत्य, 'जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छंति' यत्रैव पूर्णभद्र चैत्य तत्रैवोपागच्छन्ति, 'उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते' उपागत्य श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यादूरसमीपे 'छत्तादीए तित्थयराइसेसे' छत्रादिकान् तीर्थकरातिशेषान्=तीर्थकरातिशयान्

यानों पर, जो भगवान के दर्शन के लिये ले जाने के निमित्त पहिले से सज्जित कर रखे हुए एव बलीवर्द आदिकों से युक्त थे, सवार हुईं। (दुरूहित्ता णियग-परियाल सद्धिं) सवार होकर अपने २ परिवारों के साथ (संपरिवुडाओ) परिवेष्टित होती हुई वे सब देवियां (चंपाए णयरीए मज्झमज्झेण) चंपा नगरी के ठीक बीचों बीच के मार्ग से होकर (णिग्गच्छंति) निकलीं, (णिग्गच्छित्ता) निकलकर (जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छंति) जिस ओर पूर्णभद्र चैत्य (उद्यान) था, उस ओर आयीं, (उवागच्छित्ता) आकर (समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते छत्तादीए तित्थयराइसेसे पासंति) उन्होंने श्रमण भगवान् महावीर से कुछ दूर पर रहे हुए तीर्थंकरों के अतिशय

हुंति) पहोंचीने ते जुदा जुदा यानो-रथो पर जे भगवानना दर्शने लई जवा माटे पहेलाथी तैयार करी राखवामा आव्या हता तेमज बळदो जोडी राखेला हता तेमा बेठा, (दुरूहित्ता णियग-परियाल सद्धिं) बेसीने पोतपोताना परिवारनी साथे (संपरिवुडाओ) युक्त थईने ते बधी देवीओ (चंपाए णयरीए मज्झमज्झेण) चंपानगरीना बरोबर वच्चो-वच्चना मार्गे थईने (णिग्गच्छंति) नीकळी, (णिग्गच्छित्ता) नीकळीने (जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छंति) जे तरफ पूर्णभद्र चैत्य (उद्यान) हतुं ते तरफ आवी, (उवागच्छित्ता) आवीने (समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते छत्तादीए तित्थयराइसेसे पासंति) तेमणे

पासित्ता पाडियक्कपाडियक्काइं जाणाइं ठवेंति, ठवित्ता जाणेहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता, वहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ताओ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छंति;

'पासंति' पश्यन्ति, 'पासित्ता' दृष्ट्वा, 'पाडियक्क पाडियक्काइं जाणाइ ठवेंति' प्रत्येकप्रत्येकानि यानानि स्थापयन्ति, स्थापयित्वा, 'जाणेहिंतो पच्चोरुहति' यानेभ्य प्रत्यवरोहन्ति=अवतरन्ति, 'पच्चोरुहित्ता' प्रत्यवरुह्य, 'वहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ताओ' बह्वीभि कुब्जिकाभिर्याव परिक्षिप्ता =परिवेष्टिता ,यावच्छब्दात्पूर्वोक्ता विविधदेशजातिसमुद्भूता ग्राह्या ,'जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति' यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरस्तत्रैवोपागच्छन्ति, 'उवागच्छित्ता' उपागत्य ' समण भगव महावीरं पचविहेण अभिगमेणं अभिगच्छति ' श्रमण भगवन्त महावीर पञ्चविधेनाऽभिगमेनाभिगच्छन्ति, पञ्चविधमभिगमन स्फुटीकरोति-' त जहा ' तद्यथा

स्वरूप छत्रादिकों को देखा, (पासित्ता) देख कर उन सबोंने (पाडियक्कपाडियक्काइ जाणाइ ठवेंति) अपने २ (पृथक् २) यानों को रोक दिया और वे (जाणेहिंतो पच्चोरुहति) उन यानों से नीचे उतरीं, (पच्चोरुहित्ता) उतर कर (वहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ताओ जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति) उन अनेक कुब्जादिक दासियों से परिवृत होती हुईं वे जहा श्रमण भगवान् महावीर थे वहा पर आयीं, (उवागच्छित्ता) आकर उन्हों ने (समण भगवं महावीर पंचविहेण अभिगमेणं अभिगच्छति) प्रभु के निकट जाने के लिये पाच प्रकार के अभिगमनों को अच्छी तरह धारण किया। वे पाँच प्रकार के अभिगमन ये है-(सचित्ताण दव्वाण विओसरणयाए, अचित्ताण दव्वाण अवि

શ્રમણ ભગવાન મહાવીરથી જરા દૂર રહેલા તીર્થંકરોના અતિશય સ્વરૂપ છત્રાદિકોને જોયા, (पासित्ता) જોઈને બધી (पाडियक्कपाडियक्काइ जाणाइ ठवेंति) પોતપોતાના (જુદા જુદા) યાનો-રથોને રોકી દીધા, અને તેઓ (जाणेहिंतो पच्चोरुहति) તે યાનોમાંથી નીચે ઉતરી, (पच्चोरुहित्ता) ઉતરીને (बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ताओ जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति) તે અનેક કુબ્જા આદિક દાસીઓના પરિવાર સહિત જ્યાં શ્રમણ ભગવાન મહાવીર હતા ત્યાં આવી, (उवागच्छित्ता) આવીને તેઓએ (समण भगव महावीर पंचविहेण अभिगमेण अभिगच्छति) પ્રભુની પાસે જવા માટે પાંચ પ્રકારના અભિગમનોને સારી રીતે ધારણ કર્યાં તે પાંચ પ્રકારના અભિગમન આ છે-(सचित्ताण दव्वाण

तंजहा-१ सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए, २-अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए, ३-विणओणयाए गायलट्ठीए, ४-चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं, ५-मणसो एगत्तीभावकरणेणं समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति,

'सचित्ताण दव्वाण विओसरणयाए' सचित्ताना द्रव्याणा व्युत्सर्जनतया-सचित्तद्रव्यत्यागेन,१, 'अचित्ताण दव्वाण अविओसरणयाए' अचित्ताना द्रव्याणामव्युत्सर्जनतया-अचित्तद्रव्याणा=वस्त्राभरणादीनामपरित्यागेन २, 'विणओणयाए गायलट्ठीए' विनयावनतया गात्रयष्ट्या ३, 'चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेण' चक्षु स्पर्शेऽञ्जलिप्रग्रहेण=श्रीवर्धमाने महावीरे चक्षुर्विषये सति अञ्जलिविरचनेन ४, 'मणसो एगत्तीभावकरणेणं' मनस एकत्रीभावकरणेन-मनस=चित्तस्य एकत्रीभावकरण-एकत्र=भगवद्विषये स्थिरीकरण तेन ५, एतद्रूपेण पञ्चप्रकारेण अभिगमेन, 'समण भगव महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेंति, करित्ता वदति णमसति, वंदित्ता णमसित्ता' श्रमणस्य

ओसरणयाए, विणओणयाए गायलट्ठीए, चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेण, मणसो एगत्तीभावकरणेण) सचित्त द्रव्यों का परित्याग करना-प्रभु के दर्शन करने के लिये जाते समय अपने पास सचित्त वस्तुओं को नहीं रखना, अचित्तवस्त्रादिकों का त्याग नहीं करना, विनय से अवनत गात्र-शरीर होना-विनयभार से नम्रीभूत होना, प्रभु के दिखते ही दोनों हाथों को जोडना, एव प्रभु की भक्ति मे मन को एकाग्र करना। इन पाच अभिगमनों से युक्त सपरिवार उन रानियों ने (समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति) श्रमण भगवान महावीर को तीन बार आदक्षिणप्रदक्षिण किया, (करित्ता वदति नमसति)

विओसरणयाए, अचित्ताण दव्वाण अविओसरणयाए, विणओणयाए गायलट्ठीए, चक्खुप्फासे अजलिपग्गहेण, मणसो एगत्तीभावकरणेण) सचित्त द्रव्योनो परित्याग करवो-प्रभु दर्शन करवा माटे जती वखते पोतानी पासे सचित्त वस्तुओ न राखवी १, अचित्त वस्त्रादिकोनो त्याग करवो २, विनयथी नमावेल गात्र-शरीर राखवु-विनयभारथी नम्रीभूत थवु ३, प्रभुने जोताज बन्ने हाथ जोडवा ४, तेमज प्रभुनी भक्तिमा मनने एकाग्र करवु ५, आ पाच अभिगमनोथी युक्त सपरिवार ते राणीओए (समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेंति) श्रमण भगवान महावीरने त्रणवार आदक्षिणप्रदक्षिण कर्या, (करित्ता वदति णमसति) पछी वदना तेमज नमस्कार कर्या,

करित्ता वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता कूणियरायं पुरओ कट्टु ठिइयाओ चेव सपरिवाराओ अभिमुहाओ विणएणं पंजलिउडाओ पज्जुवासंति ॥ सू० ५५ ॥

मूलम्—तए णं समणे भगवं महावीरे कूणियस्स रण्णो भंभसारपुत्तस्य सुभद्दापमुहाणं देवीणं तीसे य महइमहा-

भगवतो महावीरस्य त्रिकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिण कुर्वन्ति, कृत्वा वन्दन्ते नमस्यन्ति, वन्दित्वा नमस्यित्वा, 'कूणियराय पुरओ कट्टु ठिइयाओ चेव' कूणिकराज पुरत कृत्वा स्थिता एव 'सपरिवाराओ' सपरिवारा —परिजनसमेता, 'अभिमुहाओ' अभिमुखा भगवद्दृष्टिपथे, 'विणएणं पजलिउडाओ पज्जुवासति' विनयेन प्राञ्जलिपुटा =कृताञ्जलिपुटा पर्युपासते ॥ सू० ५५ ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए ण' तत =द्वादशविधपरिषदुपस्थितिसमनन्तर खलु 'समणे भगव महावीरे' श्रमणो भगवान् महावीर 'कूणियस्स रण्णो भभसारपुत्तस' कूणिकस्य राज्ञो भभसारपुत्रस्य 'सुभद्दापमुहाण देवीण' सुभद्राप्रमुखाणा देवीनाम्—'तीसे

पर्थात् वदना एव नमस्कार किया, (वदित्ता णमसित्ता कूणियराय पुरओ कट्टु ठिइयाओ चेव सपरिवाराओ अभिमुहाओ विणएण पजलिउडाओ पज्जुवासंति) वंदना नमस्कार कर चुकने के बाद फिर वे, कूणिक राजा को आगे कर के खडी खडी विनयपूर्वक हाथ जोड कर भगवान की सेवा करने लगीं ॥ सू ५५ ॥

'तए ण' इत्यादि।

(तए ण) बारह प्रकार के परिषद जम जाने पर (समणे भगव महावीरे) श्रमण भगवान् महावीर ने (कूणियस्स रण्णो भभसारपुत्तस्स) भभसार अर्थात् श्रेणिक

(वदित्ता णमसित्ता कूणियराय पुरओ कट्टु ठिइयाओ चेव सपरिवाराओ अभिमुहाओ विणएणं पजलिउडाओ पज्जुवासति) વંદના નમસ્કાર કરી લીધા પછી વળી તે કૂણિક રાજાને આગળ કરીને ઉભી ઉભી વિનયપૂર્વક હાથ જોડીને ભગવાનની સેવા કરવા લાગી (સૂ ૫૫)

"तए ण" ઇત્યાદિ

(तए ण) બાર પ્રકારની પરિષદ ભરાઇ જતા (समणे भगव महावीरे) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે (कूणियस्स रण्णो भभसारपुत्तस्स) ભભસાર અર્થાત્ શ્રેણિ

लियाए परिसाए इसिपरिसाए मुणिपरिसाए जइपरिसाए देव-परिसाए अणेगसयाए अणेगसयवंदाए अणेगसयवंदपरिवाराए

य महइमहालियाए' तस्याश्च महातिमहत्या 'परिसाए' परिषद =सभाया, 'इसिपरिसाए' ऋषिपरिषद --ऋषन्ति=जानन्ति अवधिज्ञानादिनेति ऋषय --अतिशयज्ञानवन्त, तेषा परिषत्-सभा तस्या, 'मुणिपरिसाए' मुनिपरिषद --मुणन्ति--मन्यन्ते वा=प्रतिजानन्ति सर्वसावद्य-व्यापारोपरतिम इति मुणयो--मुनयो वा--सर्वविरतिमन्त, तेषा परिषत् तस्या मुणिपरिषदो, मुनिपरिषदो वा, 'जइपरिसाए' यतिपरिषद --यतन्ते दशविधयतिधर्मे इति यतय। तथा चोक्तम्---

> एवं यः शुद्धयोगेन, परित्यज्य गृहाऽऽश्रमान्।
> संयमे रमते नित्य, स यतिः परिकीर्तितः ॥ १ ॥

इति तेषा यतीना परिषत--तस्या, 'देवपरिसाए' देवपरिषद --देवाना=भवन-पत्यादिचतुर्विधदेवाना परिषत्--तस्या, 'अणेगसयाए' अनेकशताया --अनेकानि शतानि यस्या साऽनेकशता तस्या, 'अणेगसयवंदाए' अनेकशतवृन्दाया =अनेकशतानि वृन्दानि= समूहा यस्या साऽनेकशतवृन्दा तस्या, 'अणेगसयवंदपरिवाराए' अनेकशतवृन्दपरि-

के पुत्र कूणिक राजा को, तथा--(सुभद्दापमुहाण देवीण) सुभद्राप्रमुख राजरानियों को, (तीसे य महइमहालियाए) तथा उस बडी भारी (परिसाए) सभा को, (इसि-परिसाए) ऋषियों--अवधिज्ञान से पदार्थों को जानने वालों की सभा को, (मुणिपरिसाए) मुनियों--सर्वसावद्य व्यापारों के मन वचन एव काय आदि से त्यागियों की सभा को, (जइपरिसाए) गृहाश्रम का परित्याग कर जो मन, वचन, काय के शुद्धयोग से संयम में अर्थात दश प्रकार के यतिधर्म में नित्य यत्नवान होते हे वे यति है, उनकी सभा को, (देवपरिसाए) भवनपति आदि चतुर्निकाय के देवों की सभा को, (अणेगसयाए) अनेकशतसंख्यावाली (अणेगसयवंदाए) अनेकशत वृन्द (समूह) वाली (अणेग-

ઠના પુત્ર કૂણિક રાજાને, તથા-(सुभद्दापमुहाणं देवीण) સુભદ્રા-પ્રમુખ રાજરાણીઓને (तीसे य महइमहालियाए) તથા તે બહુ મોટી (परिसाए) સભાને, (इसिपरिसाए) ઋષિઓ-અવધિજ્ઞાનથી પદાર્થોને જાણવાવાળાઓની સભાને, (मुणि-परिसाए) મુનિઓ સર્વસાવદ્યવ્યાપારોને મન વચન તેમજ કાયા આદિથી ત્યાગ કરનારની સભાને, (जइपरिसाए) ગૃહસ્થાશ્રમનો પરિત્યાગ કરી જે મન, વચન, કાયના શુદ્ધયોગથી સંયમમાં અર્થાત્ દશ પ્રકારના યતિધર્મમાં નિત્ય યત્નવાન રહે છે તે યતિ છે તેમની સભાને, (देवपरिसाए) ભવનપતિ આદિ ચતુર્નિકાયના દેવોની સભાને, (अणेगसयाए) અનેક શત (સો) સંખ્યા-

ओहबले अइबले महब्बले अपरिमिय-बल-वीरिय-तेय-माह-प्प-कंति-जुत्ते सारय-णवत्थणिय-महुर-गंभीर-कोंच-णि-

वाराया -अनेकशतवृन्द परिवारो यस्या सा तथा तस्या, इ धम्मसूताया त्रिविधाया परिषद, अत्र कर्मण सम्बन्धमात्रविवक्षाया षष्ठी, 'ओहबले' ओघबल =अप्रतिबद्धबलशाली,' अइ-बले' अतिबल =अतिशयबलवान्, 'महब्बले' महाबल =अनुपमप्रशस्तशक्तिमान्, 'अप रिमिय-बल-वीरिय-तेय-माहप्प-कंति-जुत्ते' अपरिमित-बल-वीर्य-तेजो-माहात्म्य कान्ति-युक्त, अपरिमितम्=अत्यधिक बल=शारीरिकम्, वीर्यं=जीवसम्भृतम्, तेजो=दीप्ति, माहात्म्यम्=प्रभाव, कान्ति =सौन्दर्यम्, एतैर्युक्त, 'सारय-णव-त्थणिय-महुर-गंभीर-कोंच-णिग्घोस-दुदुभि-स्सरे' शारद-नव-स्तनित मधुर गम्भीर-क्रौञ्च-निर्घोष-दुन्दुभि-स्वर -शारद=शरत्कालिक यन्नवस्तनित-नवघनगर्जित तद्वन्मधुरो गम्भीरश्च तथा क्रौञ्चनि

सय-वंद-परिवाराए) अनेकशत-समूह-युक्त परिवार वाली उस सभा को, (अरहा) अर्हत प्रभु (धम्म) श्रुतचारित्ररूप धर्म का (भासइ) उपदेश देते है-इस शाश्वत नियम के अनुसार (अद्धमागहाए भासाए) अर्धमागधी भाषा द्वारा (धम्म) श्रुत चारित्ररूप धर्म का (परिकहेइ) उपदेश दिया। भगवान् कैसे थे? सो कहते हैं-भगवान् महावीर प्रभु (ओहबले अइबले महब्बले अपरिमिय-बल-वीरिय-तेय-माहप्प-कंति-जुत्ते) अप्रतिबद्धबलशाली थे। अतिशयबलिष्ठ थे। अनुपम-प्रशस्त शक्ति-सपन्न थे। अपरिमित बल, वीर्य, तेज, माहात्म्य एव काति से युक्त थे। बल से यहा पर शारीरिक शक्ति का सग्रह हुआ है। वीर्य से जीव की असाधारण शक्ति का ग्रहण किया गया है। प्रभाव का नाम माहात्म्य है, शारीरिक सुन्दरता का नाम काति है। (सारय-णव-

વાળી (અણેગસયવંદાए) અનેકશત વૃન્દ (સમૂહ) વાળી (अणेग सय वंद परिवाराए) અનેક-શત-સમૂહ યુક્ત પરિવારવાળી તે સભાને, (अरहा) અર્હત પ્રભુ (धम्म) શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનો (भासइ) ઉપદેશ આપે છે-આ શાશ્વત નિયમને અનુસરીને (अद्धमागहाए भासाए) અર્ધ-માગધી ભાષા દ્વારા (धम्म) શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો (परिकहेइ) ઉપદેશ આપ્યો ભગવાન કેવા હતા ? તે કહે છે-ભગવાન મહાવીર પ્રભુ (ओहबले, अइबले, महब्बले, अपरिमिय बल-वीरिय तेय माहप्प-कंति-जुत्ते) અપ્રતિબદ્ધ બલશાળી હતા, અતિશય બળવાન હતા અનુપમ પ્રશસ્ત-શક્તિ-સપન્ન હતા અપરિમિત બલ, વીર્ય, તેજ, માહાત્મ્ય તેમજ કાતિથી યુક્ત હતા બલથી અહીં શારીરિક શક્તિનો સગ્રહ સમજવુ વીર્યથી જીવની અસાધારણ શક્તિનો અર્થ ગ્રહણ કર્યો છે પ્રભાવનો અર્થ માહાત્મ્ય છે શારીરિક સુદરતા એટલે કાતિ છે (सारय-णव-त्थणिय-महुर-गभीर-कोंच-

ग्घोस-दंदुभि-स्सरे उरे वित्थडाए कंठे वट्टियाए सिरे समाइ-ण्णाए अगरलाए अमम्मणाए सव्व-क्खर-सण्णिवाइयाए

घोंपवत्-क्रौञ्च=पक्षिविशेषस्तस्य मञ्जुलकूजनवत्, दुन्दुभिस्वरवच्च स्वरो यस्य स तथा-शारदजलधरध्वनिवत् क्रौञ्चकलकूजनवद् दुन्दुभिस्वरवन्मधुरगम्भीरदूरगामिध्वनियुक्त इत्यर्थ । 'उरे वित्थडाए' उरसि विस्तृतया-वक्षःस्थलस्य विस्तीर्णत्वात् तत्र विस्तारमुपगतया, 'कंठे वट्टयाए' कण्ठे वृत्ततया, स्वार्थे तल्, वृत्तया इत्यर्थ, कण्ठस्य वर्तुलत्वात् तत्र वृत्तरूपेण स्थितया, 'सिरे समाइण्णाए' शिरसि समाकीर्णया-शिरसि=मूर्ध्नि समाकीर्णया=व्याप्तया, तत 'अगरलाए' अगरलया=व्यक्तया-मूर्ध्न परावृत्य वक्रभागत्य तान्वादितत्तत्स्थान प्राप्य वर्णसमुदायस्वरूप प्राप्तया इति भाव, 'अमम्मणाए' अमन्मनया=वर्णपदवैकल्यरहितया, 'सव्वक्खरसन्निवाइयाए' सर्वाक्षरसन्निपातिकया-सर्वे अक्षरसन्निपाता=वर्णसंयोगा सन्ति यस्या सा तथा-सकलवाङमयस्वरूपा तया, भगवत सर्वज्ञतया सर्वार्थवाचकशब्दप्रयोगकरणादिति भाव, 'पुण्णरत्ताए' पूर्णरक्तया-पूर्णा=स्वरकलादि-

त्थणिय-महुर-गभीर-कोंच-णिग्घोस-दुदुभि-स्सरे) भगवान् की ध्वनि शरत्कालीन नवीन मेघ की गर्जना जैसी मधुर एव गभीर थी। तथा क्रौञ्चपक्षी के मजुल निर्घोष की तरह मीठी एव दुदुभि के स्वर की तरह बहुत दूर तक जानेवाली थी। (उरे वित्थडाए) वक्षस्थल के विस्तीर्ण होने से वहाँ पर विस्तार को प्राप्त हुई ऐसी (कठे वट्टयाए) कठ के वृर्तुल होने के कारण वहाँ पर गोलरूप से स्थित, (सिरे समाइण्णाए) मस्तक में व्याप्त, (अगरलाए) मस्तक से वक्ररूप मे आकर उन २ तान्वादिकस्थानों में प्राप्त होकर वर्णसमुदायस्वरूप को प्राप्त, अत एव स्पष्ट उच्चारणवाली, (अमम्मणाए) मण-मण शब्द से रहित अर्थात् वर्ण एव पद की विकलता से रहित, (सव्वक्खरसण्णिवाइयाए) सकलवाङ्मयस्वरूप-समस्त अक्षरों के संयोगवाली-सकल

णिग्घोस-दुदुभि-स्सरे) ભગવાનનો ધ્વનિ, શરદ કાળના નવીન મેઘની ગર્જના જેમ મધુર તેમજ ગભીર હોય તેવો હતો તથા ક્રૌંચ પક્ષીના મંજુલ નિર્ઘોષના જેમ મીઠો તેમજ દુદુભિના સ્વરના જેમ બહુ દૂર સુધી જાય તેવો હતો. (उरे वित्थडाए) વક્ષસ્થલ વિસ્તીર્ણ (પહોળુ) હોવાથી ત્યા વિસ્તારને પ્રાપ્ત થયેલી, (कंठे वट्टयाए) કંઠ ગોળ હોવાના કારણે ત્યા ગોળ રૂપથી સ્થિત, (सिरे समाइण्णाए) મસ્તકમા વ્યાપ્ત, (अगरलाए) મસ્તકથી વક્રરૂપમા આવી તે તે તાલુ આદિક સ્થાન પ્રાપ્ત કરી વર્ણસમુદાયસ્વરૂપને પ્રાપ્ત હોવાથી સ્પષ્ટ ઉચ્ચારણ વાળી, (अमम्मणाए) મણુ-મણુ શબ્દ રહિત અર્થાત્ વર્ણ તેમજ પદની વિકલતાથી રહિત (सव्व-क्खर-सण्णिवाइयाए) સકલ વાઙ્મયસ્વરૂપ સમસ્ત અક્ષ-

पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयणणीहा-
रिणा सरेणं अद्धमागहाए भासाए भासइ, अरिहा धम्मं
परिकहेइ । तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं अगिलाए धम्मं
आइक्खइ, सावि य णं अद्धमागहा भासा तेसिं सव्वेसिं आरिय-

भिरुपपन्ना रक्ता च गेयरागेण मालकोशाख्येन युक्ता च तया, 'सव्वभासाणुगामिणीए' सर्वभाषानुगामिन्या=सर्वभाषापरिणमनशील्या, 'सरस्सईए' सरस्वत्या=वाण्या, 'जोय-णणीहारिणा' योजननिर्हारिणा=योजनप्रमाणदूरगामिना 'सरेणं' स्वरेण=ध्वनिना, अर्द्ध-मागध्या भाषया भाषते । 'अरिहा धम्मं परिकहेइ' अर्हन् धर्मं परिकथयति । 'तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं' तेषां सर्वेषामार्याऽनार्याणाम्—आर्याणाम्=आर्यदेशोत्पन्नाम्, अनार्याणाम्=अनार्यदेशोत्पन्नाम्, 'अगिलाए' अग्लायन्=ग्लानिरहितो 'धम्मं' धर्मं=श्रुत-चारित्रलक्षणम्, 'आइक्खइ' आख्याति=कथयति । 'सावि य अद्धमागहा भासा' साऽपि च अर्द्धमागधी भाषा—प्राकृतभाषालक्षणबहुला, 'तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं' तेषां

भाषामय, (पुण्णरत्ताए) स्वर एवं कलादिकों से उत्पन्न तथा मालकोश नामक गेयराग से युक्त, (सव्वभासाणुगामिणीए) और सर्वभाषापरिणमनस्वभाववाली ऐसी (सरस्सईए) सरस्वती—वाणी से, जो (जोयणणीहारिणा) एक योजन तक दूर जाने वाले स्वर से युक्त थी और जिसका दूसरा नाम अर्धमागधी भाषा था, (तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं अगिलाए धम्मं आइक्खइ) उन समस्त आर्यदेशोत्पन्न एवं अनार्यदेशोत्पन्न मानवों को श्रुतचारित्र रूप धर्म का विना किसी खेद के प्रभु ने उपदेश दिया । (सा वि य णं अद्धमागहा भासा तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं अप्पणो सभासाए परिणामेणं परिणमइ) प्रभु ने जिस अर्द्धमागधी भाषा द्वारा उन

રોના સંયોગવાળી—સકલભાષામય, (पुण्णरत्ताए) સ્વર તેમજ કલાદિકોથી ઉત્પન્ન માલકોશ નામક ગેયરાગથી યુક્ત, (सव्वभासाणुगामिणीए) સર્વભાષા–પરિણમન-સ્વભાવવાળી એવી (सरस्सईए) સરસ્વતી–વાણીથી, કે જે (जोयणणीहारिणा) એક યોજન સુધી દૂર જાય તેવા સ્વરથી યુક્ત હતી તથા જેનું બીજું નામ અર્ધ માગધી ભાષા હતું, (तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं अगिलाए धम्मं आइक्खइ) તે સમસ્ત આર્ય–અનાર્ય–દેશોત્પન્ન માનવોને શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો કંઈ પણ ખેદ વિના પ્રભુએ ઉપદેશ આપ્યો. (सा वि य णं अद्धमागहा भासा तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं अप्पणो सभासाए परिणामेणं परिणमइ) પ્રભુએ જે અર્ધમાગધી

मणारियाणं अप्पणो सभासाए परिणामेणं परिणमइ। तंजहा-अत्थि लोए, अत्थि अलोए, एवं जीवा अजीवा वंधे मोक्खे पुण्णे

सर्वेषाम् आर्याणामनार्याणाम्, 'अप्पणो' आत्मन =स्वस्य, 'सभासाए' स्वभाषाया, 'परिणामेणं परिणमइ' परिणामेन परिणमति, यादृग धर्मं कथयति तद्दर्शयति-'तं जहा' तद्यथा-'अत्थि लोए' अस्ति लोक -इत्यादि 'सफले कल्लाणपावए' इत्यन्तो ग्रन्थो धर्मस्वरूपप्रदर्शक। लोक -पञ्चास्तिकायमय। 'अत्थि अलोए' अस्त्यलोक -अलोक =केवलाकाशरूप -एतयोरस्तित्वाभिधान शून्यवादनिरासार्थम्। 'एवं जीवा' "अत्थि जीवा" सन्ति जीवा -जीवा =उपयोगलक्षणा। इद नास्तिकमतनिराकरणार्थम्। 'अस्ति अजीवा' सन्ति अजीवा =जडलक्षणा, एतत्कथनमद्वैतवादनिराकरणार्थम्। 'अत्थि बंधे' अस्ति बन्ध -

समस्त आर्य और अनार्यों को श्रुतचारित्ररूप धर्म का उपदेश दिया वह प्रभु की भाषा, उन समस्त आर्य-अनार्यों की अपनी २ भाषा मे परिणमित होने के स्वभाववाली थी। भगवान् ने जिस तरह धर्म का उपदेश दिया सूत्रकार उसे यहा प्रकट करते हैं—

(अत्थि लोए) पंच-अस्तिकायमय यह लोक अस्ति-स्वरूप है। (अत्थि अलोए) केवल आकाशस्वरूप अलोक भी अस्तिस्वरूप है। लोक और अलोक मे अस्तित्वस्वरूपता का कथन बौद्धों द्वारा समत शून्यवाद के निराकरण करने के लिये जानना चाहिये। (एवं जीवा) इसी तरह उपयोगलक्षणवाला जीव भी अस्तित्वविशिष्ट है। जीव में अस्तित्वविधान नास्तिकमत के परिहारनिमित्त जानना चाहिये। (अजीवा) जिसका लक्षण जड है ऐसा अजीव पदार्थ भी भावस्वभावविशिष्ट है। अजीव पदार्थ की सत्ता का वह निरूपण अद्वैतवाद के निराकरण के लिये जानना चाहिये। (बंधे) जीव और कर्मोंका बंध

ભાષા દ્વારા તે સમસ્ત આર્ય અને અનાર્ય લોકોને શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો, પ્રભુની તે ભાષા તે સમસ્ત આર્યો અનાર્યોની પોતપોતાની ભાષામા પરિણામ પામવાવાળા (સમજાય તેવા)-સ્વભાવવાળી હતી ભગવાને જેવી રીતે ધર્મનો ઉપદેશ દીધો તે અહી સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે-(अत्थि लोए) પંચઅસ્તિકાયમય આ લોક અસ્તિસ્વરૂપ છે (अत्थि अलोए) કેવલ આકાશ-સ્વરૂપ અલોક પણ અસ્તિસ્વરૂપ છે લોક અને અલોકમા અસ્તિસ્વરૂપતાનુ કથન બૌદ્ધો દ્વારા સંમત શૂન્યવાદનુ નિરાકરણ કરવા માટે જાણવુ જોઈએ (एव जीवा) આ રીતે ઉપયોગલક્ષણવાળા જીવ પણ અસ્તિત્વ-વિશિષ્ટ છે જીવમા અસ્તિત્વનુ વિધાન નાસ્તિકમતના પરિહારનિમિત્ત જાણવુ જોઈએ (अजीवा) જેનુ લક્ષણ જડ છે તેવા અજીવ પદાર્થ પણ ભાવ-સ્વભાવ-વિશિષ્ટ છે અજીવ પદાર્થની સત્તાનુ આ નિરૂપણ અદ્વૈતવાદના નિરાકરણ (પરિહાર)

कर्मणा जीवसम्बन्धोऽस्ति, बन्धन बन्ध =आत्मप्रदेशाना ज्ञानावरणीयादिकर्मपुद्गलाना च परस्पर क्षीरोदकवत् सम्बन्ध इत्यर्थ । एतत्कथन साख्यादिमतनिराकरणार्थम्। 'अत्थि मोक्खे' अस्ति मोक्ष =जीवस्य अखिलकर्मक्षयो मोक्ष सोऽस्ति । सकलकर्मणा क्षय =आत्मप्रदेशेभ्योऽपगम, तथासति सकलकर्मविमुक्तस्य ज्ञानदर्शनोपयोगलक्षणस्यात्मन स्वस्वरूपेऽवस्थान मोक्ष इत्यर्थ । सकलकर्मक्षयसमकालमेव औदारिकशरीरात्यन्तवियुक्तस्यास्य मनुष्यजन्मन समुच्छेद, बन्धहत्वभावाच्चोत्तरजन्मन पुनरप्रादुर्भाव, आत्मा ज्ञानाद्युपयोगलक्षण

स्वरूप बध भी है। जिस प्रकार दूध और पानी का परस्पर एकक्षेत्रावगाहरूप सबध होता है उसी प्रकार ज्ञानावरणीय आदि कर्मपुद्गलो का आत्मप्रदेशो के साथ एक क्षेत्रावगाहरूप जो सबध है उसका नाम बध है। बध के अस्तित्व का विधान सदा आत्मा को एकान्त शुद्ध माननेवाले साख्य आदि की मान्यता को निराकरण करने के लिये जानना चाहिये। (मोक्खे) मोक्ष है। जब बध है तो उसके अत्यताभावस्वरूप जीव के समस्त कर्मोका क्षयस्वरूप मोक्ष भी है। आत्मा जब समस्त कर्मो से बिल्कुल रिक्त हो जाता है तब ज्ञानदर्शनरूप अपने स्वरूप मे इसका शाश्वतिक अवस्थान हो जाता है। इसीका नाम आत्मा की मुक्ति है। मतलब इसका यह है कि आत्मा से जिस समय शुक्लध्यान के प्रभाव से समस्त कर्मो का क्षय हो जाता है उसी समय इसके गृहीत औदारिक शरीर का अत्यन्त वियोग हो जाता है। इस औदारिक शरीरका अत्यन्त वियोग होना ही मनुष्यजन्मका समुच्छेद है। बन्ध के हेतुओंका अभाव होने से इस आत्मा को फिर उत्तरकाल में जन्मकी प्राप्ति होती नहीं है।

માટે જાણવુ જોઇએ (બધે) જીવ અને કર્મોના સબધસ્વરૂપ બધ પણ છે જેવી રીતે દૂધ અને પાણીનો પરસ્પર એકક્ષેત્ર-અવગાહ રૂપ સબધ થાય છે તેજ પ્રકારે જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મપુદ્ગલોના આત્મપ્રદેશોની સાથે એકક્ષેત્રાવગાહ રૂપ જે સબધ છે તેનુ નામ બધ છે બધના અસ્તિત્વનુ વિધાન, સદા આત્માને એકાન્ત શુદ્ધ માનવાવાળા સાખ્ય આદિની માન્યતાનુ નિરાકરણ કરવા માટે જાણવુ જોઇએ (મોક્ખે) મોક્ષ છે જ્યારે બધ છે ત્યારે તેના અત્યત અભાવ સ્વરૂપ-જીવના સમસ્ત કર્મોના ક્ષય સ્વરૂપ મોક્ષ પણ છે આત્મા જ્યારે સમસ્ત કર્મોથી બિલકુલ રિક્ત (મુક્ત) થઈ જાય છે ત્યારે જ્ઞાન-દર્શન-સ્વરૂપ પોતાના સ્વરૂપમા શાશ્વતિક તેનુ અવસ્થાન થઈ જાય છે આનુ જ નામ આત્માની મુક્તિ છે એની મતલબ એ છે કે આત્મામાથી જે વખતે શુક્લધ્યાનના પ્રભાવથી સમસ્ત કર્મોનો ક્ષય થઇ જાય છે તેજ વખતે તેનાથી ગ્રહણ કરાયેલા ઔદારિક શરીરનો અત્યત વિયોગ થઈ જાય છે આ ઔદારિક શરીરનો અત્યત વિયોગ થવો એ જ મનુષ્ય જન્મનો સમુચ્છેદ છે બધના હેતુઓનો અભાવ થવાથી આ આત્માને ઉત્તરકાળમા ફરી જન્મની પ્રાપ્તિ થતી નથી આ માટે આ આત્મા, પોતાના-જ્ઞાન-દર્શન ઉપ-

पावे आसवे संवरे वेयणा णिज्जरा अरिहंता चक्कवट्टी बलदेवा

केवलः शुद्ध इत्येषाऽवस्था मोक्ष इत्याख्यायते इति भावः। 'अत्थि पुण्णे' अस्ति पुण्यम्-पूयते=पवित्रीक्रियते आत्मा अनेनेति, पुनाति आत्मानमिति वा पुण्यं=शुभकर्म, 'पूञ् पवने' इत्यस्माद्धातोः 'पूञो यण्णुक् ह्रस्वश्च' इत्यौणादिकसूत्रेण सिद्धिः, पुण्यं हि संसारपारावारोत्तरणे तरणिभूतम्। अनेनैवार्यजनपदाभिजनकुलयोनिवंशानजन्मादिप्राप्तिर्जायते। किं बहुना तीर्थकरगोत्रमपि पुण्येनैव बध्यते, यो हि पुण्यं सर्वथा हेयं मन्यमानस्तत् त्यजति, असौ समुद्देऽपितततरिणिमिवाऽप्राप्तपरतीरो मध्येसमुद्रं मज्जनवसीदति। 'अत्थि पावे' अस्ति पापम्-पातयति=शुभपरिणामाद् ध्वंसयत्यात्मानमिति पापम्, पापमेवाऽपचीयमानं सुखं जन-

इसलिये यह आत्मा अपने ज्ञानदर्शनोपयोगरूप स्वभाव में मग्न होता हुआ केवल शुद्ध अवस्थावाला हो जाता है। आत्माकी इसी अवस्थाका नाम मोक्ष है। (पुण्णे) पुण्य है। आत्मा जिसके द्वारा पवित्र किया जाय उसका नाम पुण्य है, अथवा जो आत्मा को पवित्र करे ऐसा जो शुभकर्म है उसका नाम पुण्य है। यह पुण्यकर्म जीव को संसाररूप पारावार से पार करने के लिये नौकास्वरूप है। इसीके प्रभाव से आर्यदेश, उच्चकुल में जन्म, बोधिबीज-इत्यादि समस्त उत्तमोत्तम वस्तु की प्राप्ति इस जीव को होती है। ज्यादा और क्या कहा जाय ? तीर्थंकरगोत्रकर्म का बंध भी तो साक्षात् इसी पुण्य का फल है। जो व्यक्ति इस पुण्य कर्म को सर्वथा हेय समझकर उसका परित्याग कर देते हैं वे, जिसने दूसरे तीर को प्राप्त किये विना समुद्र के बीच में ही जहाज का परित्याग कर दिया है उस मनुष्य के समान है। (पावे) पाप है। जो इस जीव को शुभपरिणाम से गिरा देता है उसका नाम पाप है। शंका-पाप जब अपचीयमान होता जाता है तब इस जीव को सुख की

યોગરૂપ સ્વભાવમાં મગ્ન રહીને, કેવલ શુદ્ધ અવસ્થાવાળો થઈ જાય છે આત્માની આ અવસ્થાનું જ નામ મોક્ષ છે (पुण्णे) પુણ્ય છે આત્મા જેના દ્વારા પવિત્ર કરાય તેનું નામ પુણ્ય છે અથવા જે આત્માને પવિત્ર કરે એવા જે શુભ કર્મ છે તેનું નામ પુણ્ય છે આ પુણ્યકર્મ જીવને સંસારરૂપ પારાવાર (સમુદ્ર)થી પાર કરવા માટે હોડી રૂપ છે તેના પ્રભાવ વડે જીવને આર્ય દેશ, ઉચ્ચ કુળમાં જન્મ, બોધિબીજ ઇત્યાદિ સમસ્ત ઉત્તમોત્તમ વસ્તુની પ્રાપ્તિ થાય છે વધારે બીજું શું કહેવું, તીર્થંકરગોત્રકર્મનો બંધ પણ સાક્ષાત્ એજ પુણ્યકર્મનું ફલ છે જે વ્યક્તિ આ પુણ્ય કર્મને સર્વથા હેય સમજીને તેનો પરિત્યાગ કરી દે છે તેઓ જેમ કોઈ સામે કાંઠે પહોંચ્યા વિનાજ સમુદ્રની વચમાં વહાણનો પરિત્યાગ કરી દીએ એવા મનુષ્ય જેવા છે (पावे) પાપ છે જે આ જીવને શુભપરિણામથી પાડી દે છે તેનું નામ પાપ છે શંકા-પાપ જ્યારે અપચીયમાન (સ્વલ્પ) થઈ જાય છે ત્યારે આ જીવને

यति, उपचीयमान तदेव दु ख जनयति न पुण्य पृथगस्ति, अथवा पुण्यमेवोपचीयमान सुख जनयति, तदेवापचीयमान दु ख जनयति, न पाप विद्यते–इत्येतद्वादिमतनिराकरणार्थं पुण्यपापयो पृथगभिधानम्, केवलैकस्वभाववादिनिरासार्थं वा सर्वेषां पृथक् पृथगुक्ति । 'अत्थि आसवे' अस्त्यास्रव –आ=समन्तात् स्रवति=प्रविशति आत्मनि ज्ञानावरणीयाद्यष्टविधं कर्म येन स आस्रव, आश्रव इतिच्छायापक्षे तु–आश्रीयते=समुपार्ज्यते कर्म येन स, पृषोदरादित्वाद् यस्य व, सर्वथा जीवतडागे कर्मसलिलप्रवेशाय नालिका–

प्राप्ति होती है एव पाप जब उपचीयमान होता है तब दु ख की प्राप्ति होती है, इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पाप के अपचय और उपचय के अधीन ही जीवों को सुख–दु ख की प्राप्ति होती है, अत सुख का कारण पुण्य एव दु ख का कारण पाप इस प्रकार से दो स्वतत्र तत्त्व मानना ठीक नहीं है, या तो पुण्य ही मानो या पाप ही मानो, दोनों को एक साथ मत मानो। इसी तरह पुण्य का ह्रास जब होने लगता है तब जीवों को दु ख की प्राप्ति होती है और जब पुण्य का उपचय होता है तब जीवों को सुखकी प्राप्ति होती है। इस कथन से भी यही निष्कर्ष निकलता है कि सुखदु ख, पुण्य के उपचय और अपचय के आधीन हैं। अत इनका कारण उसका ही उपचय एव अपचय है। इससे यह एक पुण्य तत्त्व ही मानना चाहिये–सो ऐसा कहने वाले वादियों के मन्तव्य को निराकरण के लिये दोनों तत्त्वों की स्वतत्ररूप से सत्ता प्रतिपादित की है। अथवा जो वस्तुका एक ही स्वभाव मानते हैं उन वादियों के मत को निराकरण करने के लिये भिन्न २ रूप से समस्तपदार्थों का यह निरूपण हुआ है। (आसवे) आस्रव तत्त्व है। जिसके कारण से ज्ञानावरणीय

સુખની પ્રાપ્તિ થાય છે તેમજ પાપ જ્યારે ઉપચીયમાન (सचित) થાય છે ત્યારે દુ ખની પ્રાપ્તિ થાય છે આથી એ નિષ્કર્ષ (સાર) નીકળે છે કે પાપના અપચય અને ઉપચયને આધીન જીવોને સુખ દુ ખની પ્રાપ્તિ થાય છે. આથી સુખનુ કારણ પુણ્ય તેમજ દુ ખનુ કારણ પાપ આ પ્રકારના બે સ્વતત્ર તત્ત્વ માનવા ઠીક નથી કા તો પુણ્યને માનો અગર તો પાપને માનો બન્નેને એક સાથે ન માનો આવી રીતે પુણ્યનો હ્રાસ જ્યારે થવા લાગે છે ત્યારે જીવોને દુ ખની પ્રાપ્તિ થાય છે, અને જ્યારે પુણ્યનો ઉપચય થાય છે ત્યારે જીવોને સુખની પ્રાપ્તિ થાય છે આ કથનની પણ એજ નિષ્કર્ષ નીકળે છે કે સુખ દુ ખ, પુણ્યના ઉપચય અને અપચયને આધીન છે આથી આનુ કારણ તેનોજ ઉપચય તેમજ અપચય છે તેથી એ એક પુણ્ય તત્ત્વજ માનવુ જોઈએ આમ કહેવાવાળા વાદિઓના મતવ્યના નિરાકારણને માટે બન્ને તત્ત્વોની સ્વતત્ર રૂપે સત્તાનુ પ્રતિપાદન કર્યુ છે અથવા જે વસ્તુનો કેવળ એકજ સ્વભાવ માને છે તેવા વાદિઓના મતનુ નિરાકરણ કરવા માટે જુદા જુદા રૂપથી સમસ્ત પદાર્થોનુ આમ નિરૂપણ કર્યુ છે (आसवे) આસ્રવ ત [illegible] જેના

रूप इति यावत्। कर्मबन्धहेतुत्वात्, स च मिथ्यात्वादि। 'अत्थि संवरे' अस्ति संवर=आस्रवनिरोध, संव्रियते=निरुध्यते आस्रवत=आगच्छत् कर्म येन स—संवर, एष च द्रव्यभावभेदाभ्यां द्विविध, तत्र द्रव्यतस्तथाविधद्रव्येण (चिक्कणमृदादिना) सलिलोपरि तरण्यादावनवरतप्रविशज्जलगणस्य निरोध, भावत आस्रवतरण्या प्रविशत्कर्मजलाना समितिगुप्तिप्रभृतिभिर्निरोध। इह भावसंवरस्य ग्रहणम्। एतत्कथन बन्धमोक्षयोर्निष्कारणत्वप्रति-

आदिक अष्ट-प्रकार का कर्म आत्मा में प्रविष्ट होता है उसका नाम आस्रव है। (आसवे) इस पद की 'आश्रव' जब इस प्रकार की संस्कृत छाया रखी जायगी तब इसका अर्थ होगा जिसके द्वारा जीव कर्मों का आश्रय-समुपार्जन करे वह आश्रव है। जिस प्रकार तालाब में पानी का आना नालों द्वारा होता है इसी प्रकार इस जीव में जिसके द्वारा कर्मरूपी पानी आता रहता है वह आस्रव है। यह आस्रव ही नवीन कर्मों के बन्ध का कारण होता है। यह आस्रव तत्त्व मिथ्यात्वादिक के भेद से अनेक प्रकार का है, क्यों कि ये जो मिथ्यात्वादिक हैं वे कर्मों के आगमन के कारण हैं। (संवरे) संवर तत्त्व है। आस्रव का रुकना इसका नाम संवर है। द्रव्यसंवर और भावसंवर इस प्रकार से संवर के दो भेद हैं। द्रव्यकर्मों के आगमन को रोकने में आत्मा का जो परिणाम कारण होता है वह परिणाम भावसंवर है, एवं जो कर्मपुद्गलों का रुकना है वह द्रव्यसंवर है। नौका में पानी के आगमन का रुकना इसे द्रव्यसंवर के स्थानापन्न, एवं जिस छिद्र से वह आता था उसको बंद कर

દ્વારેણે જ્ઞાનાવરણીય આદિક આઠ પ્રકારના કર્મ આત્મામાં પ્રવિષ્ટ થાય છે તેનું નામ આસ્રવ છે (आसवे) આ પદની (आश्रव) આ પ્રકારની જો સસ્કૃત છાયા રાખવામાં આવે તો એનો અર્થ એમ થાય કે જેના દ્વારા જીવ, કર્મોનો આશ્રય (સમુપાર્જન) કરે તે આશ્રવ છે જેમ તળાવમાં પાણીનુ આવવુ નાળા દ્વારા થાય છે તેમ આ જીવમાં જેના દ્વારા કર્મરૂપી પાણી આવે છે તે આસ્રવ છે આ આસ્રવ જ નવીન કર્મોના બધનુ કારણ થાય છે એવું તે આસ્રવ તત્ત્વ મિથ્યાત્વ આદિકના ભેદથી અનેક પ્રકારનુ છે, કેમકે આ જે મિથ્યાત્વ આદિક છે તે કર્મોના આગમનનુ કારણ છે (संवरे) સવર તત્ત્વ છે. આસ્રવને રોકવુ તેનુ નામ સંવર છે દ્રવ્યસવર અને ભાવસવર આ પ્રકારના સવરના બે ભેદ છે દ્રવ્યકર્મોના આગમનને રોકવામાં આત્માનુ જે પરિણામ કારણ હોય છે તે પરિણામ ભાવસવર છે તેમજ જે કર્મપુદ્ગલોને રોકે તે દ્રવ્યસવર છે વહાણમાં પાણીના આવવાને રોકવુ એ દ્રવ્યસવરનુ સ્થાનાપન્ન તેમજ જે છિદ્રમાંથી તે આવતુ હતું તેને બધ કરી દેવુ તે ભાવસવરનુ સ્થાનાપન્ન સમજવું જોઈએ સમિતિગુપ્તિ આદિ એ બધા

पेधार्थम् । 'अत्थि वेयणा' अस्ति वेदना–वेदना=वेदनम्–स्वभावात् उदीरणां कृत्वा वा उदयावलिकामनुप्रविष्टस्य कर्मणो योऽनुभवः=कर्मफलभूतसुखदुःखानुभवः, तत्स्वरूपा। 'अत्थि णिज्जरा' अस्ति निर्जरा–निर्जरा=देशतः कर्मक्षयः, 'अत्थि अरिहंता' सन्त्यर्हन्तः, 'अत्थि चक्कवट्टी' सन्ति चक्रवर्तिनः, 'अत्थि बलदेवा' सन्ति बलदेवाः, 'अत्थि वासुदेवा' सन्ति वासुदेवाः–अर्हदादीनां चतुर्णामभिधानं तु तेषां भुवनातिशायित्व-प्रतिपादनार्थं तेषामतिशयचमत्कृतानां श्रद्धाविधानार्थं च । 'अत्थि नरगा' सन्ति नरकाः–

देना इसे भावसंवर के स्थानापन्न जानना चाहिये । समितिगुप्ति आदि ये सब भावसंवर के ही भेद है । इनसे ही आत्मा में आते हुए कर्म रुकते हैं[1] । यहां पर भावसंवर का ग्रहण हुआ है । भावसंवर का कथन बंध और मोक्ष को जो निष्कारणक मानने वाले हैं उनकी धारणा का प्रतिषेध करने के निमित्त समझना चाहिये । (वेयणा) वेदना है । कर्म की स्वभावतः उदीरणा करके अथवा उदयावलि में उसे लाकर उसके सुखदुःखादिक रूप फल का अनुभव करना इसका नाम वेदना है । (णिज्जरा) निर्जरा है । एकदेश से कर्मों का क्षय होना सो निर्जरा है । (अत्थि अरिहंता अत्थि चक्कवट्टी) अर्हंत हैं, चक्रवर्ती है । (अत्थि बलदेवा अत्थि वासुदेवा) बलदेव हैं, वासुदेव है । इन चार अर्हंत आदिका प्रतिपादन त्रिभुवन में इनकी सर्वोत्कृष्टता जाहिर करने के निमित्त है । अथवा जो इनमें अतिशयत्व नहीं मानते हैं, वे इस प्रतिपादन से उनके विषय में अपनी श्रद्धा जाग्रत करें इसके लिये भी यह अर्हंत आदि चार का प्रतिपादन किया गया जानना चाहिये । (अत्थि

ભાવસંવરના ભેદ છે એનાથી જ આત્મામાં આવતાં કર્મ[1] રોકાય છે અહીં ભાવસંવરનું ગ્રહણ થયું છે ભાવસંવરનું કથન બંધ અને મોક્ષને જેઓ નિષ્કારણક માને છે તેમની ધારણાનો પ્રતિષેધ કરવા નિમિત્તે સમજવું જોઈએ (वेयणा) વેદના છે કર્મની સ્વભાવતઃ ઉદીરણા કરીને અથવા ઉદયાવલિમાં તે લાવીને તેના સુખ દુઃખ આદિક રૂપ ફલનો અનુભવ કરવો તેનું નામ વેદના છે (णिज्जरा) નિર્જરા છે એકદેશથી કર્મોનો ક્ષય થવો તે નિર્જરા છે (अत्थि अरिहंता अत्थि चक्कवट्टी) અર્હંત છે ચક્રવર્તી છે (अत्थि बलदेवा अत्थि वासुदेवा) બલદેવ છે, વાસુદેવ છે આ ચાર અર્હંત આદિનું પ્રતિપાદન, ત્રિભુવનમાં તેમની સર્વોત્કૃષ્ટતા જાહેર કરવાને નિમિત્તે છે અથવા તેઓમાં જે અતિશયત્વ ન માનતા હોય તેઓ આ પ્રતિપાદનથી તેમના વિષયમાં પોતાની શ્રદ્ધા જાગ્રત કરે તે માટે પણ આ અર્હંત આદિ ચારનું પ્રતિપાદન કરેલું

(१) चेदणपरिणामो जो कम्मस्सासवणिरोहणे हेऊ ।
सो भावसंवरो खलु दव्वासवरोहणे अण्णो ॥
वदसमिदीगुत्तीओ धम्माणुपिहा परीसहजओ य ।
चारित्तं बहुभेयं णायव्वा, भावसंवरविसेसा ॥ द्रव्यसंग्रह गाथा ३४–३५ ॥

वासुदेवा नरगा णेरइया तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ माया पिया रिसओ देवा देवलोया सिद्धी सिद्धा परिणिव्वुया,

अनेकविधनरकस्थानानि सन्ति। '**अत्थि णेरइया**' सन्ति नैरयिकाः=नरकनिवासिनः सन्ति, '**अत्थि तिरिक्खजोणिया**' सन्ति तिर्यग्योनिकाः, '**तिरिक्खजोणिणीओ**' सन्ति तिर्यग्योनिजाताः स्त्रियः, नरकनैरयिकादीनामदृश्यानां सत्तास्थापनाय कथनम्। '**अत्थि माया अत्थि पिया**' अस्ति माता अस्ति पिता, कचिदेव मन्यन्ते–मातापितृव्यवहारो न वास्तविकः, यतो हि–यूकाकृमिगण्डोलकादयः स्वजनकं विनैवोत्पद्यन्ते, तन्मतनिराकरणार्थमिदं भगवता प्रोक्तमिति भावः। '**अत्थि रिसओ**' सन्ति ऋषयः–ऋषयः= अतीन्द्रियाऽर्थद्रष्टारः सन्ति। केचित्त्वेवं वदन्ति–अतीन्द्रियार्थस्य द्रष्टारो न सम्भवन्ति,

नरगा अत्थि णेरइया अत्थि तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ) अनेक विध नरकस्थान हे और उनमे रहने वाले जीव नारकी हे, तिर्यंचयोनि के जीव हे, तिर्यंच योनि मे उत्पन्न तिर्यञ्च स्त्रिया भी हे। नरक एवं नारकी आदि अदृश्य जीवों का जो कथन किया है वह उनकी सत्ता प्रदर्शित करने के लिये जानना चाहिये। (**अत्थि माया अत्थि पिया**) माता है, पिता है। कोई २ ऐसे मानते हे कि माता–पिता यह व्यवहार वास्तविक नहीं हैं, क्यों कि ऐसे भी कई जीव है कि जो माता–पिता के विना भी उत्पन्न होते रहते है। उनकी इस कल्पना को निराकरण करने के लिये भगवान् ने यह कहा है। (**अत्थि रिसओ**) अतीन्द्रिय अर्थ को देखने वाले ऋषिजन है। इस कथन का तात्पर्य यह है कि बहुत से वादी ऐसा कहते है कि अतीन्द्रियार्थ द्रष्टा कोई नहीं है, कारण कि पुरुष रागादि से कभी निर्मुक्त नहीं हो सकता। अत जैसे हमलोग रागादिसम्पन्न होने से अतीन्द्रियार्थ के

જાણવુ જોઇએ (अत्थि नरगा अत्थि णेरइया अत्थि तिरिक्खजोणिया तिरिक्ख जोणिणीओ) અનેકવિધ નરકસ્થાન છે, અને તેમા રહેવાવાળા જીવ નારકી છે તિર્યંચયોનિના જીવ છે, તિર્યંચયોનિમા ઉત્પન્ન તિર્યંચ સ્ત્રીઓ પણ છે નરક તેમજ નારકી આદિ અદૃશ્ય જીવોનુ જે કથન કર્યું છે તે તેમની સત્તા પ્રદર્શિત કરવા માટે જાણવુ જોઈએ (अत्थि माया अत्थि पिया) માતા છે પિતા છે કોઈ કોઇ એમ માને છે કે માતા પિતા એ વ્યવહાર વાસ્તવિક નથી, કેમકે એવા પણ કેટલાય જીવ છે કે જે માતાપિતા વિના પણ ઉત્પન્ન થતા રહે છે તેમની આ કલ્પનાનુ નિરાકરણ કરવા માટે ભગવાને એમ કહ્યુ છે તથા (अत्थि रिसओ) અતીન્દ્રિય અર્થને જોવાવાળા ઋષિજન છે આ કથનનુ તાત્પર્ય એ છે કે ઘણા વાદિઓ એમ કહે છે કે અતીન્દ્રિય–અર્થ–દ્રષ્ટા કોઈ છે નહિ, કારણ કે પુરુષ રાગાદિથી કદી પણ નિર્મુક્ત થઇ શકતો નથી.

पुरुषाणां रागादिदोषवत्त्वात् अस्मदादिवत् इति, तन्मतनिरासार्थमिदमुक्तम्। 'अत्थि देवा अत्थि देवलोया' सन्ति देवा=भवनपत्यादय, सन्ति देवलोका—देवाना लोका= स्थानानि सौधर्मादीनि। यत्त्वाहु—न सन्ति देवादयोऽप्रत्यक्षत्वात् इति, तन्मतव्युदासार्थमिदमुक्तम्, 'अत्थि सिद्धी अत्थि सिद्धा' अस्ति सिद्धि, सन्ति सिद्धा—सिद्धि=सिध्यन्ति-निष्ठितार्था भवन्ति यस्या सा तथा, सिद्धिमन्त सिद्धा। 'परिणिव्वाणे' परिनिर्वाण-मस्ति—परिनिर्वाण=कर्मकृतसन्तापोपशान्त्या सुस्थत्वम्। निःशेषन सकलकर्मक्षयजन्यमात्यन्तिकं सुखमित्यर्थ। 'अत्थि परिणिव्वुया' सन्ति परिनिर्वृता=अपुनरावृत्त्या सकलसन्ताप-

दर्शक नहीं हो सकते ह उसी प्रकार कोई भी व्यक्ति रागादिक से विशिष्ट होने के कारण अतीन्द्रियार्थ पदार्थों का द्रष्टा नहीं हो सकता है। इस प्रकार जो यह मीमासकों की मान्यता है उस मान्यता को दूर करने के लिये अतीन्द्रियार्थ द्रष्टा की यह स्थापना की है। (अत्थि देवा अत्थि देवलोया) पुण्यजनित अलौकिक क्रीडा का जो अनुभव करते हैं उनका नाम देव है। वे देव भवनपति आदि के भेद से ४ प्रकार के हैं। इनके रहने के स्थान भी हैं। जिन्हे स्वर्ग या देवलोक कहते हैं। जो यह कहते हैं कि अप्रत्यक्ष होने से देवादिक नहीं है उनके इस मत का निराकरण करने के लिये देवों का स्वरूप कहा है। (अत्थि सिद्धी अत्थि सिद्धा) सिद्धि है, और सिद्धि जिन्हे प्राप्त हो चुकी है ऐसे सिद्ध भी हैं। (परिणिव्वाणे) परिनिर्वाण—मुक्ति है। कर्मकृत सन्ताप की उपशाति से उद्भूत सुस्थत्व का नाम परिनिर्वाण है। समस्त कर्मों के अत्यत विनाश से जन्य जो आत्यतिक सुख है उसका नाम सुस्थत्व है। (अत्थि परिणिव्वुया) अपुनरावृत्तिविशिष्ट होने से सकलसताप

આથી જેમ આપણે રાગ આદિ સપન્ન હોવાથી અતીન્દ્રિયાર્થના દર્શક બની શકતા નથી તેજ પ્રકારે કોઈ પણ વ્યક્તિ રાગ આદિકોથી વિશિષ્ટ હોવાના કારણે અતીન્દ્રિય પદાર્થોના દ્રષ્ટા બની શકે નહિ એવી જે આ મીમાંસકોની માન્યતા છે તે માન્યતાને દૂર કરવાને માટે અતીન્દ્રિયાર્થ દ્રષ્ટાની આ સ્થાપના કરી છે (अत्थि देवा अत्थि देवलोया) પુણ્યજનિત અલૌકિક ક્રીડાનો જે અનુભવ કરે છે તેમનુ નામ દેવ છે તે દેવો ભવનપતિ આદિના ભેદથી ૪ પ્રકારના છે તેમના રહેવાના લોક એટલે સ્થાન પણ છે જે એમ કહે છે કે અપ્રત્યક્ષ હોવાથી દેવ આદિક નથી તેમના આ મતનુ નિરાકરણ કરવા માટે દેવોનુ સ્વરૂપ કહેલુ છે (अत्थि सिद्धी अत्थि सिद्धा) સિદ્ધિ છે અને સિદ્ધિ જેને પ્રાપ્ત—થઈ ગઈ છે એવા સિદ્ધ પણ છે (परिणिव्वाणे) પરિનિર્વાણ—મુક્તિ છે કર્મકૃત જે સતાપ તેની ઉપશાંતિથી ઉત્પન્ન થતુ જે સુસ્થત્વ તેનુ નામ પરિનિર્વાણ છે સમસ્ત કર્મોના અત્યત વિનાશથી પેદા થતુ જે આત્યતિક સુખ છે તેનુ નામ સુસ્થત્વ છે अत्थि परि-

१ पाणाइवाए, २ मुसावाए, ३ अदिण्णादाणे, ४ मेहुणे, ५

कल्पपरिवर्जिता । 'अत्थि पाणाइवाए' अस्ति प्राणातिपात -प्राणा =उच्छ्वास-निश्वासादयस्तेषामतिपात =वियोजन-प्राणातिपात -प्राणिहिंसनमिति यावत्, तदुक्तम्—

पञ्चेन्द्रियाणि त्रिविध बल च, उच्छ्वासनिश्वासमथान्यदायु ।
प्राणा दशैते भगवद्भिरुक्ता-स्तेषा वियोगीकरण तु हिंसा ॥ १ ॥ इति ।

'अत्थि मुसावाए' अस्ति मृषावाद -मृषा=मिथ्या, वाद =वदनम्-असद्भूतार्थभाषण-मिति यावत् । 'अदिण्णादाणे' अदत्ताऽऽदानमस्ति-न दत्तमदत्तम्=देवगुरुभूपगाथापति-साधर्मिकैरननुज्ञात, तस्याऽऽदान=ग्रहणम् । 'अत्थि मेहुणे' अस्ति मैथुनम्-मिथुनेन=स्त्री-पुसाभ्या निर्वृत्त कर्म मैथुन-कामक्रीडेत्यर्थ । 'अत्थि परिग्गहे' अस्ति परिग्रह -परि=

के कलापों से परिवर्जित ऐसे जीव है। (अत्थि पाणाइवाए) प्राणिहिंसा पाप है, उच्छ्वास-निश्वास आदि प्राण है, इनका अतिपात करना अर्थात् प्राणियों के प्राण का वियोग करना प्राणातिपात है। कहा भी है—

"पञ्चेन्द्रियाणि त्रिविध बल च उच्छ्वासनिश्वासमथान्यदायुः ।
प्राणा दशैते भगवद्भिरुक्तास्तेषा वियोगीकरण तु हिंसा ॥

शास्त्रों में पाच इन्द्रिय, तीन बल, आयु, श्वासोच्छ्वास इस प्रकार से ये १० प्राण भगवानने बतलाये है। इनका वियोग करना इसका नाम हिंसा है। (अत्थि मुसावाए) मृषावाद पाप है। असद्भूत अर्थ का कथन करना इसका नाम मृषावाद है। (अदिण्णादाणे) अदत्तादान पाप है। देव, गुरु, भूप, गाथापति एव साधर्मिक आदि की कोई वस्तु को उनकी आज्ञा के विना लेना सो अदत्तादान है। (अत्थि मेहुणे) मैथुन पाप है। (अत्थि परिग्गहे) परिग्रह भी पाप है। जो मूर्च्छापूर्वक ग्रहण किया जाय उसका नाम परिग्रह है, अर्थात्

णिव्वुया) અપુનરાવૃત્તિવિશિષ્ટ થવાથી તમામ સતાપના કલાપોથી પરિવર્જિત એવા જીવ છે (अत्थि पाणाइवाए) પ્રાણિહિંસા પાપ છે ઉચ્છ્વાસનિશ્વાસ આદિ પ્રાણ છે તેનો અતિપાત કરવો અર્થાત્ પ્રાણિઓનો પ્રાણથી વિયોગ કરવો પ્રાણાતિપાત છે કહ્યુ પણ છે —

"पञ्चेन्द्रियाणि त्रिविध बल च उच्छ्वासनिश्वासमथान्यदायु ।
प्राणा दशैते भगवद्भिरुक्तास्तेषा वियोगीकरण तु हिंसा ॥

શાસ્ત્રોમા પાચ ઇન્દ્રિય, ત્રણ બલ, આયુ, શ્વાસોચ્છ્વાસ આ પ્રકારથી ૧૦ પ્રાણ ભગવાને બતાવ્યા છે તેનો વિયોગ કરવો તેનુ નામ હિંસા છે (अत्थि मुसावाए) મૃષાવાદ પાપ છે અસદ્ભૂત અર્થનુ કથન કરવુ તે મૃષાવાદ છે (अदिण्णादाणे) અદત્તાદાન પાપ છે દેવ, ગુરુ, ભૂપ, ગાથાપતિ તેમજ સાધર્મિક આદિની કોઈ વસ્તુને તેમની આજ્ઞા વગર લેવી તે અદત્તાદાન છે

परिग्गहे, ६ अत्थि कोहे, ७ माणे, ८ माया, ९ लोभे, अत्थि

सर्वतो भावेन गृह्यते=जन्मजरामरणादिदुःखैर्वेष्ट्यते आत्मा अनेनेति, यद्वा परिगृह्यते=सम्मूर्च्छं स्वीक्रियत इति । 'अत्थि कोहे माणे माया लोभे' अस्ति क्रोध, अस्ति मान, अस्ति माया, अस्ति लोभ । क्रोध=क्रोधमोहनीयप्रकृत्युदयेन स्वपरचित्तप्रज्वलनरूपविकृतिजनक आत्मन परिणामविशेष । मान=स्वापेक्षयाऽन्यं हीनं मन्यते जनो येन स, मानमोहनीयोदयसमुत्थोऽन्यहीनतामननलक्षण आत्मन परिणामविशेष । माया=मायामोहनीयोदयसमुत्थो जीवस्य वञ्चनपरिणतिविशेष –स्वपरव्यामोहोत्पादकमाचरणमिति यावत् । लोभः=लोभप्रकृत्युदयवशात् द्रव्याद्यभिलाषलक्षणो जीवस्य परिणतिविशेष । 'अत्थि जाव मिच्छादंस-

जन्म, जरा एव मरणादि दुःखों से जिसके द्वारा आत्मा वेष्टित होता है उसका नाम परिग्रह है । (ममेदं) भाव का नाम मूर्च्छा है । ('अत्थि कोहे माणे माया लोभे) ये चार कषाय हैं–क्रोध, मान, माया और लोभ । क्रोधमोहनीय प्रकृति के उदय से स्व और पर की चित्तवृत्ति म प्रज्वलन रूप विकारजनक जो आत्मा का परिणामविशेष होता है, उसका नाम क्रोध है । मानमोहनीय के उदय से अन्य को हीन समझने का जो आत्मा का परिणामविशेष होता है वह मान है । इसके सद्भाव मे जीव अपनी अपेक्षा अन्य जन को हीन समझता है । मायामोहनीय के उदय से पर को वंचित करने का जो आत्मा का परिणामविशेष होता है वह माया है । इसके वश में रहा हुआ जीव स्व और पर का व्यामोहक आचरण किया करता है । लोभप्रकृति के उदय के वश से द्रव्यादिक को चाहने की जो आत्मा की परिणतिविशेष है उसका नाम लोभ है ।

(अत्थि मेहुणे) મૈથુન પાપ છે (अत्थि परिग्गहे) પરિગ્રહ પણ પાપ છે, જે મૂર્ચ્છાપૂર્વક ગ્રહણ કરાય તેનુ નામ પરિગ્રહ છે, અર્થાત્ જન્મ જરા તેમજ મરણ આદિ દુઃખોથી આત્મા જેના દ્વારા વેષ્ટિત થઈ (વીંટળાઈ) જાય છે તેનુ નામ પરિગ્રહ છે મૂર્ચ્છાભાવનુ નામ પણ પરિગ્રહ છે (ममेद) ભાવનુ નામ મૂર્ચ્છા છે (अत्थि कोहे माणे माया लोभे) આ ચાર કષાય છે–ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ ક્રોધમોહનીય પ્રકૃતિના ઉદયથી સ્વ અને પરની ચિત્તવૃત્તિમા પ્રજ્વલનરૂપ વિકારજનક જે આત્માનુ પરિણામ–વિશેષ હોય છે તેનુ નામ ક્રોધ છે માન–મોહનીયના ઉદયથી એક બીજાને હીન સમજવાનુ જે આત્માનુ પરિણામવિશેષ થાય છે તે માન છે આના સદ્ભાવમા જીવ પોતાના કરતા બીજા માણસને હીન સમજે છે માયામોહનીયના ઉદયથી બીજાની વંચના કરવાનુ જે આત્માનુ પરિણામવિશેષ થાય છે તે માયા છે, તેને વશ થયેલો જીવ સ્વ તથા પરનુ વ્યામોહક આચરણ કર્યા કરે છે

जाव मिच्छादंसणसल्ले। अत्थि पाणाइवायवेरमणे मुसावाय-

णसल्ले' अस्ति यावत् मिथ्यादर्शनशल्यम्, अत्र यावच्छब्दात्–'पेज्जे, दोसे, कलहे, अब्भक्खाणे, पेसुण्णे, परपरिवाए, अरइरई, मायामोसे' इत्येषां संग्रह। अस्ति प्रेम–प्रेम=राग –पुत्रकलत्रादिविषयाभिष्वङ्गपरिणामविशेष। 'अत्थि दोसे' अस्ति द्वेष–द्वेष =आत्मनोऽप्रातिलक्षणपरिणाम, अस्ति कलह –कल =आनन्दस्त हन्तीति कलह -वाचिक-द्वन्द्व, 'अत्थि अब्भक्खाणे' अस्त्यभ्याख्यानम्–अभ्याख्यानम्=असद्दोषारोपणम्। 'अत्थि पेसुण्णे' अस्ति पैशुन्यम्–पैशुन्य=प्रच्छन्नतया परदोषाऽऽविष्करणम्, 'अत्थि परपरिवाए' अस्ति परपरिवाद –परेषा काक्वादिभिर्दोषकथनम्, 'अत्थि अरइरई' स्त अरतिरती–अरति =अरतिमोहनीयोदयाचित्तोद्वेगरूप आमन परिणतिविशेष, रति =

(जाव मिच्छादंसणसल्ले) यावत मिथ्यादर्शन आदि शल्य है। यहा "यावत्" शब्द से "पेज्जे, दोसे, कलहे, अब्भक्खाणे, पेसुण्णे, परपरिवाए, अरइरई, मायामोसे" इस पाठ का संग्रह हुआ है। पुत्रकलत्रादिकों में जो आसक्तिरूप परिणामविशेष है उसका नाम प्रेम है। अप्रीतिलक्षण जो आत्माका परिणाम है वह द्वेष है। आनन्द जिससे नष्ट होता है उसका नाम कलह है। असत्य दोषोंका आरोपण करना इसका नाम अभ्याख्यान है। पीठ पाछे दूसरे के दोषोंको प्रकट करना इसका नाम पैशुन्य है। दूसरे की निंदा करना इसका नाम परपरिवाद है। अरति एव रति ये दोनों पाप है। अरतिमोहनीय के उदय होने से सयम के अन्दर जो चित्तोद्वेग होता है उसको 'अरति' कहते है। सासारिक विषयोंकी अभिलाषा को 'रति' कहते है। कपटसहित मिथ्याभाषण करना इसका नाम मायामृषा

લોભપ્રકૃતિના ઉદયને વશ થવાથી દ્રવ્યાદિકને ચાહવાની જે આત્માની પરિણતિ-વિશેષ છે તેનું નામ લોભ છે (जाव मिच्छादंसणसल्ले) યાવત્ મિથ્યાદર્શન-શલ્ય છે અહીં "यावत्" શબ્દથી "पेज्जे दोसे कलहे अब्भक्खाणे पेसुण्णे परपरिवाए अरइरई मायामोसे" આ પાઠનો સંગ્રહ કર્યો છે તેમાં પુત્રકલત્ર આદિમાં જે આસક્તિરૂપ પરિણામવિશેષ છે તેનું નામ પ્રેમ છે અપ્રીતિ-લક્ષણ જે આત્માનું પરિણામ છે તે દ્વેષ છે આનંદ જેનાથી નષ્ટ થાય છે તેનું નામ કલહ છે, અને અસત્ય દોષોનું આરોપણ કરવું તેનું નામ અભ્યાખ્યાન છે કોઇની ગેરહાજરીમાં (પીઠપાછળ) તેના દોષો પ્રકટ કરવા તેનું નામ પૈશુન્ય (ચાડી) છે બીજાની નિંદા કરવી તેનું નામ પરપરિવાદ છે અરતિ તેમજ રતિ એ બન્ને પાપ છે અરતિ–મોહનીયનો ઉદય થવાથી સંયમની અંદર જે ચિત્તને ઉદ્વેગ થાય છે તેને 'अरति' કહે છે સાંસારિક વિષ-યોની અભિલાષાને 'रति' કહે છે કપટવાળું મિથ્યાભાષણ કરવું તેનું નામ

वेरमणे आदिण्णादाणवेरमणे मेहुणवेरमणे परिग्गहवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे। सव्वं अत्थिभावं अत्थित्ति वयइ,

विपयाभिरुचि । 'अत्थि मायामोसे' अस्ति मायामृषा–मायया सह मृपा–मायामृषा=सकपटमिथ्याभाषणम्, 'मिच्छादंसणसल्ले' मिथ्यादर्शनशल्यम्–मिथ्यादर्शन शल्यमिव, प्रतिक्षण विविधव्यथाविधायकत्वात्। 'अत्थि पाणाइवायवेरमणे मुसावायवेरमणे अदिण्णादाणवेरमणे मेहुणवेरमणे परिग्गहवेरमणे' अस्ति प्राणातिपातविरमणम्, मृषावादविरमणम्, अदत्तादानविरमणम्, मैथुनविरमणम्, परिग्रहविरमणम्। केषाञ्चिन्मते प्राणातिपातादिविरमणस्याशक्यत्व प्रतिपादित तन्निरासार्थं तत्सत्ताऽभिधानम्। 'जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे' यावन्मिथ्यादर्शनशल्यविवेक –मिथ्यादर्शनशल्यस्य विवेक = पृथग्भाव, तस्मान्निवृत्तिरित्यर्थ, सोऽप्यस्ति। 'सव्वं अत्थिभावं अत्थित्ति वयइ' सर्वमस्तिभावमस्तीति वदति–सर्वं=समस्तम् अस्तिभाव–सत्तारूपक्रियासहितो भाव =वस्तुसत्त्वम्

है। तथा कुदेव कुगुरु कुधर्म मे श्रद्धा रखना मिथ्यादर्शन है। शल्य की तरह प्रतिक्षण अत्यन्त दुःखदायी होने के कारण यह मिथ्यादर्शन शल्य कहलाता है। (**अत्थि पाणाइवायवेरमणे परिग्गहवेरमणे जाव मिच्छादसणसल्लविवेगे**) जो लोग हिंसादिक पाच पापों से विरक्त होने म अशक्यता प्रतिपादित करते ह उनके लिये प्रभु कहते है कि ऐसी बात नहीं है, प्राणातिपात से जीव विरक्त होता है, मृषावाद से जीव विरक्त होता है, एव परिग्रह से जीव विरक्त होता है, यावत् मिथ्यादर्शनशल्य से भी जीव विरक्त होता है। (**सव्वं अत्थिभाव अत्थित्ति वयइ सव्वं णत्थिभाव णत्थित्ति वयइ**) "अस्ति" यह पद सब को "अस्ति" इस रूपसे कहता है और "नास्ति" यह पद समस्त भाव को

'मायामृपा' છે, અને કુદેવ, કુગુરુ, કુધર્મમા શ્રદ્ધા રાખવી તે મિથ્યાદર્શન છે, તે શલ્યની માફક પ્રતિક્ષણ દુ ખદાયી હોવાથી 'मिथ्यादर्शनशल्य' કહેવાય છે (अत्थि पाणाइवायवेरमणे, मुसावायवेरमणे, अदिण्णादाणवेरमणे, मेहुणवेरमणे, परिग्गहवेरमणे, जाव मिच्छादसणसल्लविवेगे) જે લોક હિસા આદિક પાચ પાપોથી વિરક્ત હોવામા અશક્યતા પ્રતિપાદિત કરે છે તેમના માટે પ્રભુ કહે છે કે એવી વાત કોઈ છે નહિ પ્રાણાતિપાતથી જીવ વિરક્ત થાય છે, મૃષાવાદથી જીવ વિરક્ત થાય છે, અદત્તાદાનથી જીવ વિરક્ત થાય છે, મૈથુનથી જીવ વિરક્ત થાય છે તેમજ પરિગ્રહથી જીવ વિરક્ત થાય છે, યાવત્ મિથ્યાદર્શનશલ્યથી પણ જીવ વિરક્ત થાય છે (सव्व अत्थिभाव अत्थित्ति वयइ सव्व णत्थिभाव णत्थित्ति वयइ) "अस्ति" એ પદ બધાને અસ્તિ (છે) એ રૂપે કહે છે, અને "नास्ति" એ પદ

सव्वं णत्थिभावं णत्थित्ति वयइ, सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णफला भवंति, दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णफला भवंति, फुसइ पुण्णपावे,

'जीवोऽस्त्यजीवोऽस्ति, पुण्यमस्ति, पापमस्ति' इत्यादिरूपेण वस्तुयथार्थस्वरूपनिरूपणमिति यावत्, तम् 'अस्ति' इति कृत्वा वदति, यथा जीवत्वे सति जीव, अजीवत्वे सति अजीव इत्यादि। 'सव्वं णत्थिभावं णत्थित्ति वयइ' सर्वं नास्तिभावं नास्तीति वदति-सर्वं नास्तिभावम्-अजीवत्वे सति अजीव, अपटत्वे सति अपट इत्येवरूपो भावो नास्तिभावस्त नास्तीतिपदेन वदति। 'सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णफला भवंति' सुचीर्णानि कर्माणि सुचीर्णफलानि भवन्ति-सुचीर्णानि-सु=प्रशस्ततया चीर्णानि= पालितानि कर्माणि= दानादीनि, सुचीर्णफलानि-सुचीर्णं फल येषां तानि, सुचरितमूलकत्वात् पुण्यकर्मबन्धादिफलन्तीत्यर्थ। 'दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णफला भवंति' दुश्चीर्णानि कर्माणि दुश्चीर्णफलानि भवन्ति-दुश्चीर्णानि=कुत्सितानीत्यर्थ, दुश्चीर्णफलानि=कुत्सितफलवन्ति-नरकनिगोदादिगमनादिरूपफलदायकानि भवन्तीत्यर्थ। 'फुसइ पुण्णपावे' स्पृशति

"नास्ति" इस रूप से कहता है। स्वसत्तारूप क्रिया से युक्त का नाम अस्तिभाव है एव पररूप से असत्ता का नाम नास्तिभाव है। मतलब इसका यह है कि प्रत्येक पदार्थ स्व-द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा से ही अस्तित्वविशिष्ट है और पर-द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की अपेक्षा प्रत्येक द्रव्य नास्तित्वविशिष्ट है। इससे स्याद्वादसिद्धान्त का कथन किया गया है। (**सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णफला भवंति**) प्रशस्तभावों से सपादित दानादिक सत्कर्म पुण्य कर्म के बन्ध करनेवाले होते हे। पुण्यकर्म का बन्ध कराना ही इनका फल माना गया है। (**दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णफला भवंति**) कुत्सितभावों से किये कार्य कुत्सित-नरकनिगोदादि-फलवाले होते हे, अर्थात् कुत्सित कर्मों को करनेवाला

બધા ભાવને નાસ્તિ (નથી) એ રૂપે કહે છે સ્વસત્તારૂપ ક્રિયાથી યુક્તનુ નામ અસ્તિ-ભાવ છે તેમજ પરરૂપથી અસત્તાનુ નામ નાસ્તિભાવ છે આનો મતલબ એ છે કે પ્રત્યેક પદાર્થ સ્વ-દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ તથા ભાવની અપેક્ષાથી જ અસ્તિત્વવિશિષ્ટ છે અને પર-દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ અને ભાવની અપેક્ષા તેજ પદાર્થ નાસ્તિત્વવિશિષ્ટ છે આથી સ્યાદ્વાદસિદ્ધાંતનુ કથન કરવામા આવેલુ છે (सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णफला भवंति) પ્રશસ્તભાવોથી સપાદિત દાન આદિક સત્કર્મ પુણ્ય કર્મનુ બધ કરવાવાળા થાય છે પુણ્યકર્મનો બધ કરવો એજ એનુ ફળ કહેવામા આવ્યુ છે (दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णफला भवंति) કુત્સિત ભાવોથી કરેલુ કાર્ય કુત્સિત-નરક-નિગોદ આદિ ફળવાળા થાય છે.

पच्चायंति जीवा, सफले कल्लाणपावए। धम्ममाइक्खइ-इणमेव

पुण्यपापे-जीव सुचरितक्रियाभि पुण्यम्, असुचरितक्रियाभि पाप च स्पृशति=बध्नाति। 'पच्चायंति जीवा' प्रत्यायान्ति जीवा -तेनैव स्पृष्टेन=बद्धेन-शुभाऽशुभकर्मसन्तानेन पुनर्जीवा उत्पद्यन्ते, 'भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमन कुत'-इति नास्तिकवचन न सत्यम् इति भाव। तत उत्पत्तौ सत्याम् 'सफले कल्लाणपावए' सफले कल्याणपापके-सौभाग्य-दौर्भाग्यहेतुत्वात् पुण्य पापञ्च शुभाशुभ कर्म सफल भवतीति भाव। प्रकारान्तरेणापि धर्मो पदेश भगवान् ददाति, तदेव प्रत्याह-'धम्ममाइक्खइ' इत्यारभ्य 'पडिरूवे'

प्राणी नरकनिगोदादिक का पात्र बनता है। (फुसइ पुण्णपावे) जीव सुचरित क्रियाओं द्वारा पुण्य एव असुचरित क्रियाओं द्वारा पाप का बंध करनेवाला होता है। (पच्चायंति जीवा) शुभाशुभ कर्मों से बद्ध हुआ जीव इस ससार मे जन्ममरण के दुखों को प्राप्त करता है, अर्थात् जबतक कर्मसन्तति जीव मे अस्तित्वविशिष्ट रहती है-जीव कर्मों से जबतक बधा रहता है तबतक ही वह ससार मे उत्पन्न होता रहता है। इस कथन से नास्तिक के इस वाद का कि-"भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमन कुत" अर्थात् जब देह भस्मीभूत हो जाता है तो पुन उसकी प्राप्ति नहीं होती है-निराकरण हो जाता है। (सफले कल्लाणपावए) सौभाग्य एव दौर्भाग्य के हेतु होने से पुण्य और पाप सफल है।

प्रकारान्तर से भी प्रभुने श्रुतचारित्र रूप धर्म का उपदेश दिया-इस बात को सूत्रकार-'धम्ममाइक्खइ' से लेकर 'पडिरूवे' यहाँ तक के मूलपाठ से प्रदर्शित करते

कुत्सित कर्मो करवावाळा प्राणी नरक-निगोद आदिकना पात्र बने छे (फुसइ पुण्णपावे) जीव सुचरित क्रियाओ द्वारा पुण्य तेमज असुचारत क्रियाओ द्वारा पापना बध करवावाळा थाय छे (पच्चायति जीवा) शुभाशुभ कर्मोथी बधा एला जीव आ ससारमा जन्म-मरणना दुखोने प्राप्त करे छे अथात् ज्या सुधी कर्मसतति जीवमा अस्तित्वविशिष्ट रहेती होय छे-जीव ज्या सुधी कर्मोथी बधायेल रहे छे त्या सुधी ज ते ससारमा उत्पन्न थया करे छे आ कथननी नास्तिकनो एवो वाद के "भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमन कुत" अर्थात् ज्यारे देह भस्मीभूत थई जाय छे तो पछी वळी फरी तेनी प्राप्ति थती नथी आनु निराकरण थई जाय छे (सफले कल्लाणपावए) सौभाग्य तेमज दौर्भाग्यना हेतुभूत होवाना कारणे पुण्य अने पाप सफळ (फळ आप-नारा) छे

बीजी रीते पण प्रभुए श्रुतचारित्ररूप धर्मनो उपदेश आप्यो-ए वातने सूत्रकार-'धम्ममाइक्खइ'थी लईने 'पडिरूवे' अही सुधीना मूळपाठ

णिग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए ससुद्धे पडिपुण्णे णेया-

दयन्तेन ग्रन्थेन। ' धम्ममाइक्खइ ' धर्ममाख्याति-' इणमेव णिग्गंथे पावयणे सच्चे ' इदमेव नैर्ग्रन्थ प्रवचन सत्यम्-इदं=प्रत्यक्षतया विद्यमान, नैर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थाना=द्रव्यभाव-ग्रन्थिरहिताना संयमिना सम्बन्धि प्रवचनम्=आगम, सत्य=सद्भ्यो हित वास्तविकञ्च। ' अणुत्तरे ' अनुत्तरम्-नास्त्युत्तर यस्मात, नास्मात्प्रधानतममन्यदस्तीति भाव, 'केवलिए' कैवलिक=केवलिप्रणीतम्-अद्वितीय वा, ' ससुद्धे ' संशुद्धम्=कषादिभि संशुद्ध सुवर्णमिव निर्दोषम्, ' पडिपुण्णे ' प्रतिपूर्णम्-सर्वथा समग्र-सूत्रापेक्षया मात्राबिन्द्वादिभि, अर्थापेक्षया चाकाङ्क्षाऽध्याहारादिभिर्वर्जितम्, ' णेयाउए ' नैयायिकम्=न्यायानुगत=प्रमाणाऽबाधितम्, ' सल्लकत्तणे ' शल्यकर्त्तनम्=मायादिशल्यच्छेदनक्षमम्-तद्भावभावितानां

है। ' धम्माइक्खइ ' भगवान ने प्रकारान्तर से भी धर्मोपदेश किया। जैसे-(इणमेव णिग्गंथे पावयणे सच्चे) प्रत्यक्षतया विद्यमान यह निर्ग्रन्थो-द्रव्य एव भावरूप ग्रन्थि से रहित संयमियों का प्रवचन-आगम सत्य-भव्यों का हितकारक एव यथार्थ है। (अणुत्तरे) यह अनुत्तर है-इससे उत्तर-प्रधान और दूसरा कोई नहीं है। (केवलिए) कारण कि यह केवलज्ञानी द्वारा प्रणीत हुआ है, इसलिये यह अद्वितीय है। (संसुद्धे) कषादिक द्वारा शुद्ध किये हुए सोने के समान यह शुद्ध है। (पडिपुण्णे) यह सर्वथा प्रतिपूर्ण है, न तो सूत्र की अपेक्षा से इसमें मात्रा एव बिंदु आदि के अध्याहार की आवश्यकता है और न अर्थ की अपेक्षा से इसमे आकांक्षा आदि के अध्याहार का आवश्यकता है, अथात् सब प्रकार से यह पूर्ण है। (णेयाउए) इस भगवदुपदिष्ट आगम में किसी भी प्रमाण से बाधा नहीं आती है। (सल्लकत्तणे) मायामिथ्यात्व एव निदान शल्यों का

द्वारा प्रदर्शित करे छे 'धम्ममाइक्खइ' भगवाने प्रकारान्तरथी पण धर्मोपदेश कर्यो जेमके (इणमेव णिग्गथे पावयणे सच्चे) प्रत्यक्षतया (नजरनी सामेज) विद्यमान (मोजुद) आ निर्ग्रन्थो-द्रव्य तेमज भाव रूप ग्रन्थिथी रहित संयमीओना प्रवचन-आगम सत्य-भव्योने माटे हितकारक तेमज यथार्थ छे (अणुत्तरे) आ अनुत्तर छे आनाथी उत्तर-प्रधान (मुख्य) बीजु कोई नथी (केवलिए) कारण के आ केवळज्ञानी द्वारा प्रणीत थयेलु (रचायेलु) छे ते माटे आ अद्वितीय छे (ससुद्धे) कषादिक द्वारा शुद्ध करेला सोना जेवु ते शुद्ध छे (पडिपुण्णे) ए सर्वदा परिपूर्ण छे-सूत्रनी अपेक्षाए तेमा मात्रा तेमज बिंदु आदिना अध्याहारनी आवश्यकता नथी अने अर्थनी अपेक्षाथी तेमा आकांक्षा आदिना अध्याहारनी पण आवश्यकता नथी तमाम प्रकारे ए पूर्ण छे (णेयाउए) आ भगवद्-उपदिष्ट आगममा कोई पण प्रमाणथी

उए सल्लकत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे णिज्जाणमग्गे अवितहम-
विसंधि सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे इहट्ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति

भावशल्यानि निच्छेदमायातानि। 'सिद्धिमग्गे' सिद्धिमार्ग –सिद्धि =कृतकृत्यता–तस्या मार्ग =उपाय, 'मुत्तिमग्गे' मुक्तिमार्ग =सकलकर्मवियोगस्य हेतु, 'णिव्वाणमग्गे' निर्वाणमार्ग –निर्वाणस्य=सकलकर्मक्षयजन्यस्य पारमार्थिकसुखस्य मार्ग, 'णिज्जाणमग्गे' निर्याणमार्ग –निर्याणम्=अपुनरावृत्त्या संसारात् प्रस्थान तस्य मार्ग, 'अवितह' अवितथम्–वितथ=मिथ्या तद्विपरीत–त्रिकालाबाधितमित्यर्थ। 'अविसंधि' अविसन्धि= अव्यवच्छिन्न–न कदाचिदपि विच्छेदमुपगतम्। 'सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे' सर्वदुःखप्रहाण-मार्ग –सर्वाणि=जन्ममरणादीनि दुःखानि प्रहीणानि यत्र स सर्वदुःखप्रहीणो मोक्षस्तस्य

कर्त्तन (छेदन) इसी आगम से होता है। (सिद्धिमग्गे) यह आगम ही सिद्धि–कृतकृत्यता का एक मार्ग है। (मुत्तिमग्गे) समस्त कर्मों के क्षय का यही एक उपाय है। (णिव्वाणमग्गे) समस्त कर्मों के क्षय से उद्भूत पारमार्थिक सुख का यही एक रास्ता है। (णिज्जाणमग्गे) ससार में जीव का पुन आगमन न हो इस रूप से जो जीव का ससार से प्रस्थान होता है उसका प्रधान कारण एक यही आगम है। (अवितह) यह आगम त्रिकाल मे भी कुतर्कों द्वारा बाधित नहीं है। (अविसधि) महाविदेह क्षेत्र की अपेक्षा से–न इसका कभी विच्छेद होता है, और न कभी विच्छेद होगा। (सव्व-दुक्खप्पहीणमग्गे) समस्त दु खो का जिसमे सर्वथा अभाव है ऐसे मोक्ष का यही एक उत्तम मार्ग है। जिस लिये यह प्रभु द्वारा प्रतिपादित आगम पूर्वोक्त प्रकार से इन सद्गुणों

બાધા આવતી નથી (सल्लकत्तणे) માયા, મિથ્યાત્વ તેમજ નિદાન શલ્યોના કર્તન (છેદન) આ આગમથી થાય છે (सिद्धिमग्गे) આ આગમજ સિદ્ધિ–કૃત-કૃત્યતાનો એક માર્ગ છે (मुत्तिमग्गो) સમસ્ત કર્મોના ક્ષયનો આ એક ઉપાય છે (णिव्वाणमग्गे) સમસ્ત કર્મોના ક્ષયથી ઉત્પન્ન થતા પારમાર્થિક સુખનો આજ એક રસ્તો છે (णिज्जाणमग्गे) સ સારમા જીવનુ પુન આગમન ન થાય એ રૂપથી જે જીવનુ સ સારથી પ્રસ્થાન થાય છે તેનુ પ્રધાન કારણ એક આજ આગમ છે (अवितह) આ આગમ ત્રણુ કાળમા પણુ કુતર્કો દ્વારા બાધિત નથી (अविसंधि) મહાવિદેહ ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી નથી આનો કદી વિચ્છેદ થયો, નથી વિચ્છેદ થાતો અને નથી કદી વિચ્છેદ થવાનો. (सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे) સમસ્ત દુ ખોનો જેમા અભાવ છે એવા મોક્ષનો આ એક ઉત્તમ માર્ગ છે જેથી પ્રભુ દ્વારા પ્રતિપાદન કરેલુ આ આગમ પૂર્વોક્ત એવા સદ્ગુણોથી યુક્ત

मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति। एगच्चा पुण

मार्ग, यत एव सद्गुणगुम्फित नैर्ग्रन्थ प्रवचनम्, अतएव 'इहट्ठिया जीवा सिज्झति' इह स्थिता जीवा सिध्यन्ति-इह=नैर्ग्रन्थप्रवचने स्थिता=एतदाराधका जीवा सिध्यन्ति=सिद्धिपद प्राप्नुवन्ति, अणिमादिसिद्धिं वा 'बुज्झति' बुध्यन्ते-कवलज्ञानप्राप्त्या नि शेप-विशेष जानन्ति, 'मुच्चति' मुच्यन्ते-भवोपग्राहिणा कर्मणा निरवनष्टत्वात्, 'परिणिव्वायति' परिनिर्वान्ति-कर्मजन्यसकलसन्तापविरहात्, वक्तव्यसार वक्ति-'सव्वदुक्खाणमंत करेंति' सर्वदु खानामन्त कुर्वन्ति-सर्वेषा शारीरिकमानसिकाना दु खानाम् अन्त=नाश कुर्वन्ति।

'एगच्चा पुण एगे भयतारो' एकार्चा पुनरेके भदन्ता - एकैव अर्चा=भविष्यन्ती मनुष्यतनुर्येषा ते एकार्चा सन्त, पुनरेके=केचिद् भदन्ता =नैर्ग्रन्थप्रव-

से युक्त है। इसीलिये (इहट्ठिया जीवा सिज्झंति) जो जीव इसकी आराधना मे अपने जीवन का उत्सर्ग कर देते है वे नियमत सिद्धिपद के प्रापक होते हे, (अणिमादि-सिद्धिं वा) अथवा इस लोक मे अणिमादि सिद्धि के धारक होते ह। (बुज्झति) केवलज्ञान की प्राप्ति से सभी वस्तुओं को जानते है। (मुच्चति) भवोपग्राहिकर्मों का सम्पूर्णरूप से नाश होने के कारण वे मुक्त हो जाते हे। (परिणिव्वायति) कर्मजन्य समस्त सताप के विरह से वे शीतलीभूत हो जाते है। (सव्वदुक्खाणमत करेंति) शारीरिक एव मानसिक समस्त दु खों का वे ही अन्त करनेवाले होते है। (एगच्चा पुण एगे भयंतारो) इस निर्ग्रन्थ प्रवचन की आराधना करनेवाले भव्य जीव वर्तमान शरीर के छूट जाने के बाद मात्र एक बार मनुष्य शरीर धारण करते ह, अर्थात् वे एकावतारी होते हैं। वे भव्य जीव इस शरीर के छूटने पर (पुव्वकम्मावसेसेण) पूर्वकर्मों के बाँकी

છે તેથી જ (इहट्ठिया जीवा सिज्झंति) જે જીવ આની આરાધનામા પોતાના જીવનનો ઉત્સર્ગ કરી દે છે તેઓ નિયમત -નિશ્ચયથી-સિદ્ધિપદને પ્રાપ્ત થાય છે, (अणिमादिसिद्धिं वा) આ લોકમા અણિમાદિ-સિદ્ધિને પામે છે (बुज्झंति) કેવળજ્ઞાનની પ્રાપ્તિથી બધી વસ્તુઓ જાણે છે (मुच्चति) ભવોપગ્રાહિ કર્મોનો સપૂર્ણ રૂપે નાશ થવાના કારણે તેઓ મુક્ત થઇ જાય છે (परिणिव्वायति) કર્મ-જન્ય સમસ્ત સતાપના વિરહથી (ત્યાગથી) તેઓ શીતલીભૂત બની જાય છે (सव्वदुक्खाणमत करेति) શારીરિક તેમજ માનસિક સમસ્ત દુ ખોના તેઓ અત કરવાવાળા હોય છે (एगच्चा पुण एगे भयतारो) આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનની આરા-ધના કરવાવાળા ભવ્ય જીવ વર્તમાન શરીર છૂટી જવા બાદ માત્ર એકવાર મનુષ્ય શરીરને ધારણ કરે છે અર્થાત્ તેઓ એકાવતારી થાય છે તે ભવ્ય

उए सल्लकत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे णिज्जाणमग्गे अवितहम-
विसंधि सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे इहट्ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति

भावशल्यानि निच्छेदमायातानि । 'सिद्धिमग्गे' सिद्धिमार्ग –सिद्धि =कृतकृत्यता–तस्या मार्ग =उपाय, 'मुत्तिमग्गे' मुक्तिमार्ग =सकलकर्मवियोगस्य हेतु, 'णिव्वाणमग्गे' निर्वाणमार्ग –निर्वाणस्य=सकलकर्मक्षयजन्यस्य पारमार्थिकसुखस्य मार्ग, 'णिज्जाणमग्गे' निर्याणमार्ग –निर्याणम्=अपुनरावृत्त्या ससारात प्रस्थान तस्य मार्ग, 'अवितहं' अवितथम्–वितथ=मिथ्या तद्विपरीत–त्रिकालाबाधितमित्यर्थ । 'अविसंधि' अविसन्धि= अव्यवच्छिन्न–न कदाचिदपि विच्छेदमुपगतम् । 'सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे' सर्वदु खप्रहीण-मार्ग –सर्वाणि=जन्ममरणादीनि दु खानि प्रहीणानि यत्र स सर्वदु खप्रहीणो मोक्षस्तस्य

कर्तन (छेदन) इसी आगम से होता है। (सिद्धिमग्गे) यह आगम ही सिद्धि–कृत कृत्यता का एक मार्ग है। (मुत्तिमग्गे) समस्त कर्मों के क्षय का यही एक उपाय है। (णिव्वाणमग्गे) समस्त कर्मों के क्षय से उद्भूत पारमार्थिक सुख का यही एक रास्ता है। (णिज्जाणमग्गे) ससार में जीव का पुन आगमन न हो इस रूप से जो जीव का ससार से प्रस्थान होता है उसका प्रधान कारण एक यही आगम है। (अवितह) यह आगम त्रिकाल मे भी कुतर्को द्वारा बाधित नहीं है। (अविसंधि) महाविदेह क्षेत्र की अपेक्षा से–न इसका कभी विच्छेद होता है, और न कभी विच्छेद होगा। (सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे) समस्त दु खो का जिसमें सर्वथा अभाव है ऐसे मोक्ष का यही एक उत्तम मार्ग है। जिस लिये यह प्रभु द्वारा प्रतिपादित आगम पूर्वोक्त प्रकार से इन सद्गुणों

બાધા આવતી નથી (सल्लकत्तणे) માયા, મિથ્યાત્વ તેમજ નિદાન શલ્યોના કર્તન (છેદન) આ આગમથી થાય છે (सिद्धिमग्गे) આ આગમજ સિદ્ધિ-કૃત-કૃત્યતાનો એક માર્ગ છે (मुत्तिमग्गे) સમસ્ત કર્મોના ક્ષયનો આ એક ઉપાય છે (णिव्वाणमग्गे) સમસ્ત કર્મોના ક્ષયથી ઉત્પન્ન થતા પારમાર્થિક સુખનો આજ એક રસ્તો છે (णिज्जाणमग्गे) સ સારમા જીવનુ પુન આગમન ન થાય એ રૂપથી જે જીવનુ સ સારથી પ્રસ્થાન થાય છે તેનુ પ્રધાન કારણ એક આજ આગમ છે (अवितह) આ આગમ ત્રણુ કાળમા પણ કુતર્કો દ્વારા બાધિત નથી (अविसधि) મહાવિદેહ ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી નથી આનો કદી વિચ્છેદ થયો, નથી વિચ્છેદ થાતો અને નથી કદી વિચ્છેદ થવાનો. (सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे) સમસ્ત દુ ખોનો જેમા અભાવ છે એવા મોક્ષનો આ એક ઉત્તમ માર્ગ છે જેથી પ્રભુ દ્વારા પ્રતિપાદન કરેલુ આ આગમ પૂર્વોક્ત એવા સદ્ગુણોથી યુક્ત

मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति। एगच्चा पुण

मार्ग, यत एव सद्गुणगुम्फित नैर्ग्रन्थ प्रवचनम्, अतएव 'इहट्ठिया जीवा सिज्झति' इह स्थिता जीवा सिध्यन्ति-इह=नैर्ग्रन्थप्रवचने स्थिता=एतदाराधका जीवा सिध्यन्ति=सिद्धिपद प्राप्नुवन्ति, अणिमादिसिद्धिं वा 'बुज्झति' बुध्यन्ते-केवलज्ञानप्राप्त्या निःशेष-विशेष जानन्ति, 'मुचति' मुच्यन्ते-भवोपग्राहिणा कर्मणा निरवशेषनाशात्, 'परिणि-व्वायति' परिनिर्वान्ति-कर्मजन्यसकलसन्तापविरहात्, वक्तव्यसार वक्ति-'सव्वदुक्खाण-मत करेंति' सर्वदुःखानामन्त कुर्वन्ति-सर्वेषा शारीरिकमानसिकाना दुःखानाम् अन्त=नाश कुर्वन्ति।

'एगच्चा पुण एगे भयतारो' एकाचा पुनरेके भदन्ता - एकैव अर्चा=भविष्यन्ती मनुष्यतनुर्येषा ते एकार्चा सन्त, पुनरेके=केचिद् भदन्ता=नैर्ग्रन्थप्रव-

से युक्त है। इसीलिये (इहट्ठिया जीवा सिज्झंति) जो जीव इसकी आराधना मे अपने जीवन का उत्सर्ग कर देते है वे नियमत सिद्धिपद के प्रापक होते हे, (अणिमादि-सिद्धिं वा) अथवा इस लोक में अणिमादि सिद्धि के धारक होते है। (बुज्झंति) केवलज्ञान की प्राप्ति से सभी वस्तुओं को जानते है। (मुचति) भवोपग्राहिकर्मों का सम्पूर्णरूप से नाश होने के कारण वे मुक्त हो जाते है। (परिणिव्वायति) कर्मजन्य समस्त सताप के विरह से वे शीतलीभूत हो जाते हे। (सव्वदुक्खाणमत करेंति) शारीरिक एव मानसिक समस्त दुःखों का वे ही अन्त करनेवाल होते है। (एगच्चा पुण एगे भयंतारो) इस निर्ग्रन्थ प्रवचन की आराधना करनेवाले भव्य जीव वर्तमान शरीर के छूट जाने के बाद मात्र एक बार मनुष्य शरीर धारण करते है, अर्थात् वे एकावतारी होते है। वे भव्य जीव इस शरीर के छूटने पर (पुव्वकम्मावसेसेण) पूर्वकर्मों के बाँकी

છે તેથી જ (इहट्ठिया जीवा सिज्झति) જે જીવ આની આરાધનામા પોતાના જીવનનો ઉત્સર્ગ કરી દે છે તેઓ નિયમત -નિશ્ચયથી-સિદ્ધિપદને પ્રાપ્ત થાય છે, (अणिमादिसिद्धिं वा) આ લોકમા અણિમાદિ-સિદ્ધિને પામે છે (बुज्झति) કેવળજ્ઞાનની પ્રાપ્તિથી બધી વસ્તુઓ જાણે છે (मुच्चति) ભવોપગ્રાહિ કર્મોનો સપૂર્ણ રૂપે નાશ થવાના કારણે તેઓ મુક્ત થઇ જાય છે (परिणिव्वायत्ति) કર્મ-જન્ય સમસ્ત સતાપના વિરહથી (ત્યાગથી) તેઓ શીતલીભૂત બની જાય છે (सव्वदुक्खाणमत करेंति) શારીરિક તેમજ માનસિક સમસ્ત દુખોના તેઓ અત કરવાવાળા હોય છે (एगच्चा पुण एगे भयतारो) આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનની આરા-ધના કરવાવાળા ભવ્ય જીવ વર્તમાન શરીર છૂટી જવા બાદ માત્ર એકવાર મનુષ્ય શરીરને ધારણ કરે છે અર્થાત્ તેઓ એકાવતારી થાય છે તે ભવ્ય

एगे भयंतारो पुव्वकम्मावसेसेणं अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, महड्ढिएसु जाव महासुक्खेसु दूरंगइएसु चिरट्ठिइएसु। ते णं तत्थ देवा भवंति—महिड्ढिया जाव चिर-

चनस्याराधका भूत्वा, 'पुव्वकम्मावसेसेण' पूर्वकर्मावशेषेण, 'अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति' अन्यतमेषु देवलोकेषु देवत्वेनोपपत्तारो भवन्ति, 'महड्ढिएसु जाव महासुक्खेसु दूरंगइएसु चिरट्ठिइएसु' महर्द्धिकेषु यावन्महासौख्येषु—अत्र यावच्छब्दात्='महज्जुइएसु, महाबलेसु, महायसेसु, महाणुभागेसु' इति द्रष्टव्यम्। प्राग्व्याख्यातमेतत्। दूरगतिकेषु=अनुत्तरविमानादिषु चिरस्थितिकेषु—चिर=बहुसागरोपमा स्थितिर्येषु तेषु। 'ते ण तत्थ देवा भवंति' ते खलु तत्र देवा भवन्ति, कीदृशा देवा भवन्ति? यथाऽऽह—'महिड्ढिया' महर्द्धिका=महर्द्धिसम्पन्ना, यावत्—'चिरट्ठिइया' चिर-

रहने के कारण (अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति महड्ढिएसु जाव महासुक्खेसु दूरंगइएसु चिरट्ठिइएसु) महर्द्धिक—विमान आदि महासम्पत्तिवाले, महाद्युतिक=विविध रत्न आदि की महाकान्तिवाले, महाबल—अत्यन्त स्थिर अर्थात् द्रव्यरूप से शाश्वत, महायशस्वी—शास्त्रों द्वारा प्रशंसित, महानुभाग—महाप्रभावशाली, महासौख्य—अत्यन्त सुख के निधानरूप, चिरस्थितिक—बहुत सागरोपमकी स्थितिवाले, दूरगतिक—मनुष्यलोक आदि से अत्यन्त दूरवर्ती, ऐसे अनुत्तर विमानादिक देवलोकों मे से किसी एक देवलोक मे उत्पन्न होते है। (ते ण तत्थ देवा) वे देव वहाँ पर (भवंति महिड्ढिया जाव चिरट्ठिइया) महर्द्धिक—विमान आदि की महासम्पत्तिवाले, महाद्युति—शरीर और आभरण की महा-

આ શરીર છૂટી જતા (पुव्वकम्मावसेसेण) પૂર્વ કર્મો બાકી રહેવાના કારણે (अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति महड्ढिएसु जाव महासुक्खेसु दूरगइएसु चिरट्ठिइएसु) મહર્દ્ધિક—વિમાન આદિ મહાસંપત્તિવાળા, મહાદ્યુતિક વિવિધ રત્નઆદિની મહાકાન્તિવાળા, મહાબલ—અત્યંત સ્થિર અર્થાત્ દ્રવ્યરૂપથી શાશ્વત, મહાયશસ્વી—શાસ્ત્રો દ્વારા પ્રશંસિત, મહાનુભાગ-મહાપ્રભાવશાલી, મહા-સૌખ્ય—અત્યંત સુખના નિધાન રૂપ, ચિરસ્થિતિક—ઘણા સાગરોપમની સ્થિતિ વાળા, દૂરગતિક—મનુષ્ય લોક આદિથી અત્યંત દૂરવર્તી, એવા અનુત્તર વિમાનાદિક દેવલોકમાંના કોઈ એક દેવલોકમાં ઉત્પન્ન થાય છે (ते ण तत्थ देवा) તે દેવ ત્યાં (भवंति महिड्ढिया जाव चिरट्ठिइया) મહર્દ્ધિક—વિમાન આદિની મહાસંપત્તિ વાળા, મહાદ્યુતિ—શરીર અને આભરણની મહાકાન્તિવાળા, મહાબલ-

हिडया हार-विराइय-वच्छा जाव पभासमाणा कप्पोवगा गति-

स्थितिका =चिरकालस्थितिका, 'हारविराइयवच्छा' हारविराजितवक्षस्का'=हारभूषितहृदया', 'जाव पभासमाणा' यावत् प्रभासमाना --यावच्छब्दादिदं दृश्यम्--'कडय--तुडिय--थंभिय--भुया' कटक--त्रुटित--स्तम्भित--भुजा 'अगय--कुंडल--मट्ठ--गंडयल--कण्णपीढ--धारी' अङ्गद--कुण्डल--मृष्टगण्डतल--कर्णपीठ--धारिणः 'विचित्त--वत्था--भरणा' विचित्र--वस्त्रा-ऽऽभरणा, 'विचित्तमाला' विचित्रमाला, 'मउलिमउडा' मौलिमुकुटा, 'कल्लाणग-पवर--वत्थ--परिहिया' कल्याणक--प्रवर--वस्त्र--परिहिता, 'कल्लाणग--पवर--मल्ला--णुलेवणा' कल्याणक--प्रवर--माल्या--नुलेपना, 'भासुरबोंदी' भास्वरदेहा, 'पलंब-वणमालधरा' प्रलम्बवनमालाधरा 'दिव्वेण संघाएण' दिव्येन संघातेन, 'दिव्वेण संठाणेण' दिव्येन संस्थानेन=सुन्दरेणाऽऽकारेण, 'दिव्वाए इड्ढीए' दिव्यया ऋद्ध्या, 'दिव्वाए जुईए' दिव्यया द्युत्या, 'दिव्वाए पभाए' दिव्यया प्रभया 'दिव्वाए छायाए' दिव्यया छायया, 'दिव्वाए अच्चीए' दिव्येन अर्चिषा=दिव्येन तेजसा, 'दिव्वाए लेसाए' दिव्यया लेश्यया, 'दस दिसाओ उज्जोयमाणा' दश दिशा उद्योतयन्त --समन्तात्सर्वान् दिगाभोगान् विभासयन्त इति। 'पभासमाणा' प्रभा-

कान्तिवाले, महाबल--शरीर से अत्यन्त बलवान्, महायशस्वी--अत्यन्त यशवाले, महानुभाग--अत्यन्त प्रभावशाली, महासौख्य--सुखपुंज को भोगनेवाले और चिरस्थितिक--अनेक सागरोपमस्थितिवाले होते हैं। इनका वक्षःस्थल सदा हारों की मालाओं से सुशोभित रहा करता है। (जाव पभासमाणा) यहाँ 'जाव' शब्द से (कडय--तुडिय--थंभिय--भुया अगय--कुंडल--गंडयल--कण्णपीढ--धारी विचित्त--वत्था--भरणा विचित्तमाला मउलिमउडा कल्लाणग--पवर--वत्थ--परिहिया कल्लाणग--पवर--मल्ला--णुलेवणा भासुरबोंदी पलंब--वणमाल--धरा दिव्वेण संघाएणं दिव्वेण संठाणेण दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वाए

शरीरे घणा બળવાન્, મહાયશસ્વી--અત્યંત યશવાળા, મહાનુભાગ--અત્યંત પ્રભાવશાળી, મહાસૌખ્ય--સુખપુંજને ભોગવવાવાળા અને ચિરસ્થિતિક--અનેક સાગરોપમ સ્થિતિવાળા થાય છે એમનું વક્ષ-સ્થલ સદા હારોની માલાઓથી સુશોભિત રહ્યા કરે છે (जाव पभासमाणा) અહીં 'जाव' શબ્દથી (कडय-तुडिय-थंभिय-भुया अगय-कुंडल-गंडयल-कण्णपीढ-धारी विचित्त-वत्था-भरणा विचित्त-माला मउलिमउडा कल्लाणग-पवर-वत्थ-परिहिया कल्लाणग-पवर-मल्ला-णुलेवणा भासुर-बोंदी पलंब-वणमाल-धरा दिव्वेण संघाएण दिव्वेण संठाणेण दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए, दिव्वाए पभाए, दिव्वाए छायाए, दिव्वाए अच्चीए, दिव्वाए लेसाए दस

कल्लाणा ठिइकल्लाणा आगमेसिभद्दा जाव पडिरूवा। तमाइक्खइ-

समाना =प्रकर्षेण शोभमाना 'कप्पोवगा' कल्पोपगाः-कल्प =इन्द्र-सामानिक-त्रायस्त्रिंश पारिषद्यात्मरक्ष-लोकपालानीक-प्रकीर्णकाभियोग्य-किल्बिषिक-व्यवहाररूप आचारस्तमुपगता =प्राप्ताः, सौधर्मादिदेवलोकवासिवैमानिकदेवाश्च प्राप्ताः, 'गइकल्लाणा' गतिकल्याणाः- कल्याणा गतिर्येषां ते तथा, अथवा-गत्या=चतुर्गतिकलोके देवगतिरूपया कल्याणाः=

लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासमाणा) इस पाठ का संग्रह हुआ है, इस का अर्थ इस प्रकार है-इनकी भुजाएँ कटक-कडे और त्रुटित-भुजबन्ध इन आभूषणों से विभूषित रहा करती है। बाकी के इन समस्त पदों का अर्थ पीछे जहां पर देवों के आगमन का वर्णन किया गया है उस ३३वें सूत्र में लिखा जा चुका[१] है। (कप्पोवगा) इन्द्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंश, पारिषद, आत्मरक्षक, लोकपाल, अनीकाधिपति, प्रकीर्णक, आभियोग्य, किल्बिषिक, ये दश प्रकार के देव जहाँ होते हैं उन देवलोकों का नाम कल्प है। इन कल्पों मे जो उत्पन्न होते हैं उनका नाम कल्पोपग है। सौधर्मादिक देवलोक से अच्युत देवलोक तक के देव कल्पोपग कहलाते है, क्यों कि यहां तक इन्द्रादिक १० प्रकार के देवों का व्यवहार होता है, इनके बाद नहीं। (गइकल्लाणा) इनकी गति कल्याणकारी होती है, अथवा चतुर्गतिक इस लोक में ये देवगति में रहनेवाले होने के कारण उत्तम होते है, इस अपेक्षा ये गतिकल्याण कहे गये है। (ठिइकल्लाणा) अनेक पल्योपम-

(१) असुरकुमारों के वर्णन में इन समस्त पदों का अर्थ लिखा गया है।

दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासमाणा) આ પાઠનો સંગ્રહ કર્યો છે આનો અર્થ આ પ્રકારે છે એમની ભુજાઓ કટક (કડા) અને ત્રુટિત-ભુજબંધ એ આભૂષણોથી શણગારેલી રહે છે બાકીના આ બધા પદોનો અર્થ અગાઉ જ્યા દેવોના આગમનનુ વર્ણન કર્યુ છે તે ૩૩મા સૂત્રમા લખાઇ ગયુ છે[૧] (कप्पोवगा) ઈંદ્ર, સામાનિક, ત્રાયસ્ત્રિંશ, પારિષદ્, આત્મરક્ષક, લોકપાલ, અનીકાધિપતિ, પ્રકીર્ણક, આભિયોગ્ય, કિલ્બિષિક, આ દશ પ્રકારના દેવ જ્યા હોય છે તે દેવલોકનુ નામ કલ્પ છે આ કલ્પોમા જે ઉત્પન્ન થાય છે તેમના નામ કલ્પોપગ છે સૌધર્માદિક દેવલોકથી લઈને અચ્યુત દેવલોક સુધીના દેવ કલ્પોપગ કહેવાય છે કેમકે અહી સુધી ઇન્દ્રાદિક ૧૦ પ્રકારના દેવોનો વ્યવહાર થાય છે ત્યાર પછી નહિ (गइकल्लाणा) તેમની ગતિ કલ્યાણ-કારી હોય છે અથવા ચતુર્ગતિક આ લોકમા તેઓ દેવગતિમા રહેવાવાળા હોવાને કારણે ઉત્તમ હોય છે આ અપેક્ષાથી તેઓ ગતિકલ્યાણ કહેવાય છે

(૧) અસુરકુમારોના વર્ણનમા આ બધા પદોનો અર્થ લખાઈ ગયો છે

एवं खलु चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइयत्ताए कम्मं पकरेंति,

भद्ररूपा, 'ठिइकल्लाणा' स्थितिकल्याणा=अनेकपल्योपमसागरोपमरूपचिरस्थितिका 'आगमेसिभद्दा' आगमिष्यद्भद्रा—आगमिष्यत्=आगामिकालभावि भद्र=कल्याण—निर्वाणरूप येषा ते तथा, 'जाव पडिरूवा' यावत्प्रतिरूपा=अतिरमणीयाऽऽकारा, यावच्छब्दात्—'प्रासादीया दर्शनीया अभिरूपा' इति बोध्यम्। पुनरपि 'तमाइक्खइ' तदाचष्टे=तत्प्रवचन कथयति—'एवं खलु चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइयत्ताए कम्मं पकरेंति' एवं खलु चतुर्भिः स्थानैर्जीवा नैरयिकतायाः कर्माणि प्रकुर्वन्ति, तत्र नैरयिकतायाः=नारकित्वस्य,

सागरोपम तक देवलोक मे इनकी स्थिति होने के कारण ये देव स्थितिकल्याण कहे गये है। इनमे से आकर ही तो मनुष्यपर्याय लेकर जीव निर्वाण—मुक्ति का लाभ करते हैं, अत वे (आगमेसिभद्दा) आगमिष्यद्भद्र कहे गये हैं। (जाव पडिरूवा) यहाँ पर 'यावत्' शब्द से "प्रासादीयाः, दर्शनीयाः, अभिरूपाः" इन पदों का भी सग्रह हुआ है। 'प्रासादीयाः' इन्हे देखने से मन प्रसन्न हो जाता है। अत एव ये 'दर्शनीयाः' दर्शनीय हैं। 'अभिरूपाः' इनके रूप की सुन्दरता प्रतिक्षण नवीन नवीन भाव से बढती रहती हो ऐसे ये माछम होते हैं, इसलिये ये अभिरूप हैं। 'प्रतिरूपाः' इनके रूप की तुलना नही हो सकती है, क्यों कि इनका रूप असाधारण होता है, अर्थात् ये अनुपम सुन्दर होते हैं। अब इस प्रवचन का क्या फल है? इसको कहते हैं—

(एवं खलु चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइयत्ताए कम्मं पकरेंति) यह जीव चार कारणों द्वारा नरक में ले जानेवाले कर्मों को करते है, अब इस बात को प्रभु प्रकट

(ठिइकल्लाणा) અનેક પલ્યોપમ સાગરોપમ સુધી દેવલોકમાં તેમની સ્થિતિ હોવાના કારણે તે દેવો સ્થિતિકલ્યાણ કહેવાય છે તેમાંથી આવીને જ મનુષ્યપર્યાય પ્રાપ્ત કરી જીવ નિર્વાણ-મુક્તિનો લાભ કરે છે, માટે તેઓ (आगमेसिभद्दा) આગમિષ્યદ્ભદ્ર કહેવાય છે (जाव पडिरूवा) અહીં યાવત્ શબ્દથી 'प्रासादीया, दर्शनीया, अभिरूपा' એ પદોનો પણ સંગ્રહ થયો છે "प्रासादीया"-એમને જોતાં મન પ્રસન્ન થઇ જાય છે આ માટે જ તેઓ 'दर्शनीया' દર્શનીય છે 'अभिरूपाः' એમના રૂપની સુંદરતા પ્રતિક્ષણ નવીન નવીન ભાવથી વધતી જતી હોય તેમ તેઓ જણાય છે, તે માટે તેઓ અભિરૂપ છે 'प्रतिरूपा' તેમના રૂપની તુલના ન થઇ શકે, કેમકે તેમનું રૂપ અસાધારણ હોય છે, અર્થાત્ તેઓ અનુપમ સુંદર હોય છે હવે આ પ્રવચનનું શું ફલ છે? તે કહે છે-

(एवं खलु चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइयत्ताए कम्मं पकरेंति) આ જીવ ચાર

णेरइयत्ताए कम्मं पकरेत्ता णेरइएसु उववज्जंति, तं जहा—महारंभयाए १ महापरिग्गहयाए २ पंचिंदियवहेणं ३ कुणिमाहारेणं ४, एवं एएणं अभिलावेणं। तिरिक्खजोणिएसु—१ माइल्लयाए

'णेरइयत्ताए कम्म पकरेत्ता णेरइएसु उववज्जन्ति' नैरयिकतायै कर्माणि प्रकृत्य=प्रकर्षेण विधाय नैरयिकेषु उपपद्यन्ते=नारकजीवाना मध्ये जायन्ते, तजहा—तद्यथा=येन प्रकारेण नैरयिकेषु जायन्ते तत् कथयति सूत्रकार—१ 'महारंभयाए' महारम्भतया=सावद्याऽऽरम्भबाहुल्येन,—२ 'महापरिग्गहयाए' महापरिग्रहतया=परिग्रहातिशयेन, ३ 'पंचिंदियवहेण' पञ्चेन्द्रियवधेन=पञ्चेन्द्रियप्राणिना हिंसया, ४ 'कुणिमाहारेण' कुणपाहारेण=मासाहारेण, 'एव एएणं अभिलावेणं' एवमेतेनाभिलापेन=कथनेन 'तिरिक्खजोणिएसु' तिर्यग्योनिषु—तिरश्चां योनय =उत्पत्तिस्थानानि तत्र, १—'माइल्लयाए णियडिल्लयाए' मायावितया निकृतिमत्तया—माया=परवञ्चना सैषामस्तीति मायाविन तेषा भावस्तत्ता तया, निकृति —मायाच्छादनार्थं मायान्तरकरण सैषामस्तीति निकृतिमन्त , तद्भावो निकृतिमत्ता तया, २ 'अलियवयणेण'

करते हैं—(त जहा) वे चार कारण ये हैं—(महारंभयाए) महा—आरम्भ, (महापरिग्गहयाए) महापरिग्रह, (पंचिंदियवहेण) पचेन्द्रिय जीवों का वध करना, (कुणिमाहारेण) मास का आहार करना। इन चार कारणों से (णेरइयत्ताए कम्म पकरेत्ता णेरइएसु उववज्जति) नरक में ले जाने के योग्य कर्मों का उपार्जन होता है, इसलिये ये जीव नरक में उत्पन्न होते है। (एव एएण अभिलावेणं) इसी प्रकारका चार कारण रूप कथन (तिरिक्खजोणिएसु) तिर्यञ्च गति मे उत्पन्न कराने वाले कर्मों का भी है। वे चार कारण ये हैं—(माइल्लयाए) मायाचारी करना (णियडिल्लयाए) एव माया को संवरण करने के लिये और अधिक मायाचारी करना १, (अलियवयणेण) असत्य-

કારણો દ્વારા નરકમા લઈ જનારા કર્મો કરે છે, (तंजहा) તે ચાર કારણ આ છે—(महारंभयाए) મહા આરંભ, (महापरिग्गहयाए) મહાપરિગ્રહ, (पंचिंदियवहेण) પંચેન્દ્રિય જીવોનો વધ કરવો, (कुणिमाहारेण) માંસનો આહાર કરવો. આ ચાર કારણોથી (णेरइयत्ताए कम्म पकरेत्ता णेरइएसु उववज्जंति) નરકમા લઈ જવા યોગ્ય કર્મોનું ઉપાર્જન થાય છે તેથી તે જીવ નરકમા જાય છે (एव एएण अभिलावेण) આ પ્રકારના ૪ ચાર કારણ રૂપ કથન (तिरिक्खजोणिएसु) તિર્યંચ ગતિમા ઉત્પન્ન કરાવનારા કર્મોનું પણ છે તે ચાર કારણ આ છે—(माइल्लयाए) માયાચારી કરવું, (णियडिल्लयाए) તેમજ માયાનું સંવરણ કરવા માટે—ઢાંકવા માટે અન્ય માયાચારી કરવું (૧)

णियडिल्लयाए, २ अलियवयणेण, ३ उक्कंचणयाए, ४ वंचणयाए। मणुस्सेसु—पगइभद्दयाए १, पगइविणीययाए २, साणुक्को-

अलीकवचनेन=असत्यभाषणेन, ३ 'उक्कंचणयाए' उत्कञ्चनतया—उत्कञ्चनता नाम कञ्चन सरलहृदयं वञ्चयितुं प्रवृत्तस्य परं चतुरतरं नरं पार्श्वस्थं विलोक्य क्षणं वञ्चनानिवृत्ततयाऽवस्थानं तया, कपटवृत्त्या, ४ 'वंचणयाए' वञ्चनतया। एतैश्चतुर्भिः स्थानैर्जीवास्तिर्यग्योनिषु यान्ति। मनुष्ययोनिषु पुनः कैश्चतुर्भिः स्थानैरुत्पद्यन्ते ? तद्दर्शयितुमाह—'मणुस्सेसु'-इत्यादि। मनुष्येषु, 'पगइभद्दयाए' प्रकृतिभद्रतया=स्वभावसरलतया १, 'पगइविणीययाए' प्रकृतिविनीततया=स्वभावतो विनयशीलतया २, 'साणुक्कोसयाए' सानुक्रोशतया—अनुक्रोशो=दया तेन सह वर्तते इति सानुक्रोशस्तस्य भावः सानुक्रोशता तया—सदयतया ४, 'अमच्छरियाए' अमत्सरितया—मत्सरोऽन्यशुभद्वेषस्तदभावोऽमत्सरः = परगुणग्राहित्वं सोऽस्त्येषामित्यमत्सरिणस्तद्भावोऽमत्सरिता तया—ईर्ष्याराहित्येन। एतैश्चतुर्भिः

भाषण करना २, (उक्कंचणयाए) किसी सरल हृदयवाले व्यक्ति को ठगने के लिये प्रवृत्त हुए ठगिया—मायाचारी वाले का, उस सरल पुरुष के पास किसी चतुर पुरुष की स्थिति देखकर कुछ समयतक वचनामय अपनी प्रवृत्ति को स्थगित कर ठहर जाना—कपटवृत्ति को रोक रखना ३, (वंचणयाए) दूसरों को ठगना ४। इन चार कारणों से जीव तिर्यंचगति में ले जाने वाले कर्मों का उपार्जन करते है। (मणुस्सेसु) मनुष्यगति मे जीव चार कारणों से जाते हैं। वे कारण ये है—(पगइभद्दयाए) प्रकृति से भद्र होना १, (पगइविणीययाए) प्रकृति से विनीत होना २, (साणुक्कोसयाए) दयालु होना ३, एवं (अमच्छरियाए) मत्सरभाव नहीं रखना अर्थात् गुणग्राही होना ४। इन चार कारणों से ये जीव मनुष्यगति मे उत्पन्न

(अलियवयणेण) અસત્ય ભાષણ કરવુ (૨) (उक्कंचणयाए) કોઈ સરલ હૃદયવાળા માણસને ઠગવા—છેતરવા—માટે પ્રવૃત્ત થનારા ઠગ—માયાચારીવાળાનુ, તે સરળ પુરુષની પાસે કોઈ ચતુર પુરુષની હાજરી જોઈ થોડા સમય માટે વચનામય પોતાની પ્રવૃત્તિને સ્થગિત કરી રોકાઈ જવુ—પોતાની કપટવૃત્તિને રોકી રાખવુ (૩) (वंचणयाए) બીજાને ઠગવા (૪) આ ચાર કારણોથી જીવ તિર્યંચ ગતિમા લઈ જવા જેવા કર્મોનુ ઉપાર્જન કરે છે (मणुस्सेसु) મનુષ્યગતિમા આ જીવ ૪ કારણોથી જાય છે તે કારણો આ છે—(पगइभद्दयाए) પ્રકૃતિથી ભદ્ર હોવુ (૧), (पगइविणीययाए) પ્રકૃતિથી વિનીત હોવુ (૨), (साणुक्कोसयाए) દયાળુ હોવુ (૩), તેમજ (अमच्छरियाए) મત્સરભાવ ન રાખવો અર્થાત ગુણગ્રાહી થવુ (૪) આ ચાર કારણોથી આ જીવ મનુષ્ય

सयाए ३, अमच्छरियाए ४। देवेसु–सरागसंजमेणं १, संजमासंजमेणं २, अकामणिज्जराए ३, वालतवोकम्मेणं ४। तमाइक्खइ–

स्थानैर्जीवा मनुजत्व प्राप्नुवन्ति । देवत्वप्राप्तिहेतुभूतानि चत्वारि स्थानानि दर्शयति–'देवेसु' इत्यादि । देवेसु–'सरागसंजमेणं' सरागसंयमेन–रागेण=आसक्त्या सहित सराग स चासौ संयमश्च सरागसंयमस्तेन–सकषायचारित्रेण १, 'संजमासंजमेण' संयमासंयमेन= देशसंयमेन २, 'अकामणिज्जराए' अकामनिर्जरया–अकामेन=अभिलापमन्तरेण निर्जरा= क्षुधादिसहन तया ३, 'वालतवोकम्मेण' वालतप कर्मणा=बालसादृश्याद् बाला = मिथ्यादृश , तेषा तप कर्म वालतप कर्म, तेन ४, एतै स्थानैर्जीवा देवभव प्राप्नुवन्तीति भाव । पुन प्रकारान्तरेण 'तमाइक्खइ' तदाख्याति=तत् कथयति 'जह णरगा गम्मती'

कराने वाले कर्मों का उपार्जन करते है । (देवेसु) चार कारणों से जीव देवगति में उत्पन्न होते है । वे चार कारण ये है–(सरागसंजमेणं) सरागसंयम का पालन करना १, (संजमासंजमेण) देशविरति पालन करना २, (अकामणिज्जराए) अकामनिर्जरा ३, एव (वाल-तवोकम्मेण) वाल तपस्या ४ । जिस संयम मे राग (आसक्ति) विद्यमान होता है उस का नाम सरागसंयम है । मतलब–कषायसहित चारित्र का पालना सरागसंयम है । १२-वारह व्रतों का–देशविरति का धारण करना इसका नाम संयमासंयम है । अभिलाषा–इच्छा के विना क्षुधा आदि का सहन करना इसका नाम अकामनिर्जरा है । मिथ्यादृष्टियों के तप का नाम बालतप है। इन कामों के करने से जीव देवगति में जाने योग्य कर्मों का उपार्जन करते है । (जह णरगा गम्मती जे णरगा जा य वेयणा णरए। सारीरमाणसाइ दुक्खाइ

ગતિમા ઉત્પન્ન કરાવવાવાળા કર્મોનુ ઉપાર્જન કરે છે (देवेसु) ચાર કારણોથી જીવ દેવગતિમા ઉત્પન્ન થાય છે–(सरागसंजमेणं) સરાગ સંયમનુ પાલન કરવુ ૧, (संजमासंजमेणं) દેશવિરતિનુ પાલન કરવુ ૨, (अकामणिज्जराए) અકામ-નિર્જરા ૩, તેમજ (वालतवोकम्मेणं) બાલ તપસ્યા૪ જે સંયમમા રાગ–આસક્તિ વિદ્યમાન હોય છે તેનુ નામ સરાગ–સંયમ છે મતલબ–કષાય સહિત ચારિ-ત્રનુ પાલન કરવુ તે સરાગસંયમ છે (૧) ૧૨ બાર વ્રતો–દેશવિરતિ ધારણ કરવા તેનુ નામ સંયમાસંયમ છે (૨) અભિલાષા–ઇચ્છા–વિના ભૂખ આદિ સહન કરવુ તેનુ નામ અકામ નિર્જરા છે (૩) મિથ્યાદષ્ટિના તપનુ નામ બાલતપ છે (૪) આ કામો કરવાથી જીવ દેવગતિમા જવા યોગ્ય કર્મોનુ

" जह णरगा गम्मंती, जे णरगा जा य वेयणा णरए।
सारीरमाणसाइं दुक्खाइं तिरिक्खजोणीए ॥ १ ॥
माणुस्सं च अणिच्चं, वाहि-जरा-मरण-वेयणा-पउरं।
देवे य देवलोए, देविड्ढिं देवसोक्खाइं ॥ २ ॥

इत्यादिगाथाभि । 'जह णरगा गम्मती' यथा नरका गम्यन्ते—आर्त्तयेन प्रकारेण नरका =नरकस्थानानि गम्यन्ते=प्राप्यन्ते, 'जे णरगा' ये नरका —यद्रूपा नरका = नारकिग सन्ति, 'जा य वेयणा णरए' याश्च वेदना नरके—या =याद्दश्यो वेदना = यातनाश्च नरके भवन्ति, तत्सर्वं कथयतीति पूर्वेगान्वय । 'सारीरमाणसाइ दुक्खाइ तिरिक्खजोणीए' शारीरमानसानि दु खानि तिर्यग्योन्याम्—यथा च शरीरसम्बन्धीनि मन सम्बन्धीनि च दु खानि भवन्ति प्राणिनामिति शेषस्तथा भगवान् परिकथयति ॥ १ ॥ एव 'माणुस्स च अणिच्च वाहि–जरा–मरण–वेयणा–पउर' मानुष्यश्चाऽनित्य व्याधि–जरा–मरण–वेदना–प्रचुरम्–व्याधयो=ज्वरादय जरा=वार्धक,मरण=प्रसिद्ध, वेदना = शारीरोगादिस्वरूपा , प्रचुरा =निबिडा यस्मिंस्तादृशम्, अतएव अनित्य=क्षणभङ्गुर मानुष्य=मनुष्यभव परिकथयति । 'देवे य देवलोए देविड्ढिं देवसोक्खाइ' देवान च देवलोकान् देवर्द्धिं देवसौख्यानि—तथा देवान , च पुन देवलोकान, देवर्द्धि=देवसमृद्धि, देवसौख्यानि=देवसम्बन्धीनि सुखानि कथयतीति शेष ॥ २ ॥ एतान्येव नरकादीनि

तिरिक्खजोणीए) जीव जिस प्रकार नरकों में जाते हैं, और वहा जैसे नारकी हैं, एव उन्हें जिस प्रकार की वेदना भोगनी पडती है यह सब प्रभु न (आइक्खइ) बतलाया। तिर्यग्गति मे पहुँचने पर इस जीव को जितने भी शारीरिक एव मानसिक कष्ट भोगने पडते हैं, यह भी भगवानने स्पष्ट किया । (माणुस्स च अणिच्च वाहि–जरा-मरण–वेयणा-पउर) यह मानवपर्याय अनित्य है, व्याधि, जरा, मरण एव वेदना से प्रचुर–भरा है । (देवे य

ઉપાર્જન કરે છે (जह णरगा गम्मती जे णरगा जा य वेयणा णरए । सारीरमाणसाइ दुक्खाइ तिरिक्खजोणीए) જીવ જે પ્રકારે નરકોમા જાય છે, અને ત્યા જેવા નારકી હોય છે, તેમજ તેમને જે પ્રકારની વેદના ભોગવવી પડે છે, એ બધુ પ્રભુએ (आइक्खइ) બતાવ્યુ तिर्य च–ગતિમા પહોચતા આ જીવને જેટલા શારીરિક તેમજ માનસિક દુ ખ હોય છે તે બધા ભોગવવા પડે છે, એ પણ ભગવાને સ્પષ્ટ કર્યું (माणुस्स च अणिच्च वाहि–जरा–मरण–वेयणा–पउर) આ

णरगं तिरिक्खजोणिं, माणुसभावं च देवलोगं च।
सिद्धे य सिद्धवसहिं, छज्जीवणियं परिकहेइ ॥ ३ ॥
जह जीवा बज्झंती मुच्चंती जह य संकिलिस्संति।
जह दुक्खाणं अंतं, करेंति केई अपडिबद्धा ॥ ४ ॥

सगृह्य मूले—'णरग' नरक=नरकावासं, 'तिरिक्खजोणि' तिर्यग्योनिं, 'माणुसभाव' मनुष्यभाव=मनुष्यत्व च 'देवलोग' देवलोकञ्च कथयति। तथा 'सिद्धे य' सिद्धांश्च 'सिद्धवसहिं'—सिद्धवसतिं=सिद्धक्षेत्र, 'छज्जीवणियं' षड्जीवनिका परिकथयति ॥ ३ ॥
एव 'जह जीवा बज्झती' यथा जावा बध्यन्ते=बन्ध प्राप्नुवन्ति, 'मुचंती' मुच्यन्ते=मुक्ता भवन्ति, 'जह य संकिलिस्सति' यथा च संक्लिश्यन्ति, 'जह दुक्खाण अंत करेंति केई अपडिबद्धा' यथा दु खानामन्त कुर्वन्ति केऽपि अप्रतिबद्धा —केऽपि=कतिचिज्जीवा अप्रतिबद्धा =प्रतिबन्धरहिता —मुक्ता सन्तो दु खानामन्त=नाश कुर्वन्ति, तत्सर्व

देवलोए देविड्ढि देवसोक्खाइ) एव देवगति मे देवताओं को देवसबधी अनेक ऋद्धिया एव देवपर्यायसबधी अनेक सौख्यों की प्राप्ति होती है—यह सब भी प्रभुने अच्छी तरह स्पष्ट करके अपनी दिव्यध्वनि द्वारा प्रदर्शित किया। (णरग तिरिक्खजोणि माणुसभाव च देवलोग च। सिद्धे य सिद्धवसहिं छज्जीवणिय परिकहेइ) इस प्रकार प्रभु ने नरक, तिर्यच, मनुष्य एव देवगति का कथन किया, साथ में यह भी बतलाया कि सिद्ध कैसे होते है और सिद्धस्थान कैसा है, एव षड्जीवनिकाय कौन २ हैं। (जह जीवा बज्झती मुचती जह य सकिलिस्संति। जह दुक्खाण अंत करेंति केई अपडिबद्धा) जीव जिस प्रकार कर्मो

માનવપર્યાય અનિત્ય છે વ્યાધિ, જરા, મરણ તેમજ વેદનાથી પ્રચુર-ભરેલી છે (देवे य देवलोए देविड्ढि देवसोक्खाइ) તેમજ દેવગતિમા દેવતાઓને દેવ-સ બ ધી અનેક ઋદ્ધિઓ તેમજ દેવપર્યાય-સ બ ધી અનેક સૌખ્યની પ્રાપ્તિ થાય છે એ બધુ પણ પ્રભુએ સારી રીતે સ્પષ્ટ કરીને પોતાના દિવ્ય ધ્વનિ દ્વારા પ્રદર્શિત કર્યુ (णरग तिरिक्खजोणि माणुसभाव च देवलोय च। सिद्धे य सिद्धवसहिं छज्जीवणिय परिकहेइ) આ પ્રકારે પ્રભુએ નરક, તિર્ય ચ, મનુષ્ય તેમજ દેવગતિનુ કથન કર્યું, તે સાથે એ પણ બતાવ્યુ કે સિદ્ધ કેવા હોય છે, અને સિદ્ધસ્થાન કેવુ છે, તેમજ ષડ્જીવનિકાય કોણ કોણ છે (जह जीवा बज्झती मुच्चती जह य सकिलिस्सति। जह दुक्खाण अत करेंति केई अपडिबद्धा) જીવ જે પ્રકારે કર્મોથી

अट्टा अट्टियचित्ता जह जीवा दुक्खसागरमुवेति ।
जह वेरग्गमुवगया कम्मसमुग्गं विहाडेंति ॥ ५ ॥
जह रागेण कडाणं कम्माणं पावगो फलविवागो ।
जह य परिहीणकम्मा सिद्धा सिद्धालयमुवेंति ॥ ६ ॥सू० ५६॥

कथयति ॥ ४ ॥ 'अट्टा अट्टियचित्ता' आर्ता आर्तितचित्ता -आर्तात्=आर्तध्यानाद् आर्तित= पीडितं चित्तं येषां ते तथा, 'जह जीवा' यथा जीवा 'दुक्खसागरमुवेंति' दुःख- सागर=दुःखरूपं समुद्रमुपयन्ति=प्राप्नुवन्ति, तत् कथयति । 'जह वेरग्गमुवगया कम्म- समुग्गं विहाडेंति' यथा च वैराग्यमुपगताः=प्राप्ताः कर्मसमुद्गं-कर्मणां समुद्गं=मञ्जूषां कर्मराशिमिति यावत् विघाटयन्ति=त्रोटयन्ति-नाशयन्तीति यावत्, तत् कथयति । 'जह रागेण कडाणं कम्माणं पावगो फलविवागो' यथा रागेण=पुत्रकलत्रादिष्वभिष्वङ्गरूपेण कृतानाम्= उपार्जितानां कर्मणां=ज्ञानावरणीयादीनां पापकः=पापमयः फलविपाकः=फलपरिणामो भवति ।

से बंधते हैं और जिस प्रकार उनसे छूटते हैं तथा जिस प्रकार से अनेक सक्लेशों को भोगते हैं और फिर अप्रतिबद्ध होकर जिस प्रकार से कितनेक भव्यजीव समस्त प्रकार के दुःखों का विनाश करते हैं यह विषय भी प्रभु ने आगत जनता को अच्छी तरह समझाया । (अट्टा अट्टियचित्ता जह जीवा दुक्खसागरमुवेंति । जह वेरग्गमुवगया कम्मसमुग्गं विहाडेंति) प्रभु ने यह भी बतलाया कि आर्तध्यान से पीडित चित्तवाले प्राणी-जीव किस तरह दुःख सागर में गोते खाते रहते हैं और किस प्रकार से वैराग्य को प्राप्त कर जीव कर्म- राशि को विनष्ट कर देते हैं । (जह रागेण कडाणं कम्माणं पावगो फलविवागो ।

બંધાય છે, અને જે પ્રકારે તેથી છૂટે છે, તથા જે પ્રકારે અનેક સંકલેશોને ભોગવે છે, અને પાછા અપ્રતિબદ્ધ થઇને જે પ્રકારે કેટલાક ભવ્ય જીવ સમસ્ત પ્રકારના દુઃખનો વિનાશ કરે છે એ વિષય પણ પ્રભુએ આવેલ જનતાને સારી રીતે સમજાવ્યો. (अट्टा अट्टियचित्ता जह जीवा दुक्खसागरमुवेंति । जह वेरग्गमुवगया कम्मसमुग्गं विहाडेंति) પ્રભુએ એ પણ બતાવ્યું કે આર્ત્ત- ધ્યાનથી પીડાતા ચિત્તવાળા પ્રાણી-જીવ કેવી રીતે દુઃખસાગરમાં ગોથાં ખાધા કરે છે, અને કેવી રીતે વૈરાગ્ય પ્રાપ્ત કરીને જીવ કર્મરાશિનો નાશ કરે છે (जह रागेण कडाणं कम्माणं पावगो फलविवागो । जह य परिहीण कम्मा सिद्धा सिद्धालयमुवेंति) પુત્ર-કલત્ર આદિમાં આસક્તિ રૂપ રાગથી ઉપા-

मूलम्—तमेव धम्मं दुविहं आइक्खइ, तं जहा—अगार-

'जइ य' यथा च—येन प्रकारेण 'परिहीणकम्मा' परिहीनकर्माणः—परिहीणानि=विनष्टानि कर्माणि येषां ते, सिद्धाः—'सिद्धालयमुवेंति' सिद्धालयमुपयन्ति—लोकान्तक्षेत्रलक्षणं स्थानं प्राप्नुवन्ति, तथा भगवान् परिकथयतीति पूर्वेणान्वयः ॥ सू० ५६ ॥

टीका—'तमेव' इत्यादि। 'तमेव धम्मं दुविहं आइक्खइ' तमेव=पूर्वोक्तमेव धर्मं द्विविधं=द्विप्रकारम्, आख्याति=कथयति, 'तं जहा' तद्यथा—'अगारधम्मं अणगारधम्मं च' अगारधर्मम्, अनगारधर्मं च—अगार=गृहं तात्स्थ्यादगारा गृहस्थाः, गृहा दारा इत्यादिवत्, यद्वा—अगारमस्त्येषामित्यर्थे 'अर्श आदिभ्योऽच्' इति मत्वर्थीयाच् प्रत्ययः, तेषां धर्मः—वक्ष्यमाणस्वरूपस्तम्, तथा—अनगारधर्मं=न विद्यतेऽगार-गृहं येषां तेऽनगाराः साधवस्तेषां धर्मस्तं च आख्याति। तत्र प्राधान्यात् प्रथमं

जइ य परिहीणकम्मा सिद्धा सिद्धालयमुवेंति) पुत्रकलत्रादिकों में आसक्तिरूप राग से उपार्जित ज्ञानावरणीय आदिक कर्मों का पापमय फल जैसे होता है और कर्मों को नष्ट कर जीव सिद्धावस्थापन्न हो सिद्धालय में जैसे पहुँचते हैं यह सब भी प्रभु ने अपनी देशना में स्पष्ट किया ॥ सू ५६ ॥

'तमेव धम्मं दुविहं आइक्खइ' इत्यादि

प्रभु ने (तमेव धम्मं दुविहं आइक्खइ) इस धर्म को दो प्रकार से कहा है। ([1]अगारधम्मं अणगारधम्मं च) १ गृहस्थ का धर्म और दूसरा अनगार–मुनि का धर्म।

(१) 'अगार' नाम घर का है। परन्तु इस पद से यहाँ उनमें रहने वाले गृहस्थों का ग्रहण हुआ है, अथवा "अर्श आदिभ्योऽच्" इस सूत्र से अस्त्यर्थ मे अच् प्रत्यय करने से भी उनमें रहने वाले गृहस्थों का ग्रहण हो जाता है।

જન કરેલા જ્ઞાનાવરણીય આદિક કર્મોના પાપમય ફલ જેમ થાય છે અને કર્મોનો નાશ કરી જીવ સિદ્ધ–અવસ્થા પ્રાપ્ત કરી સિદ્ધાલય (મુક્તિ સ્થાનમાં) જેમ પહોંચે છે તે બધુ પણ પ્રભુએ પોતાની દેશનામાં સ્પષ્ટ કર્યું (સૂ ૫૬)

"तमेव धम्मं दुविहं आइक्खइ" ઇત્યાદિ

પ્રભુએ (तमेव धम्मं दुविहं आइक्खइ) આ ધર્મ બે પ્રકારનો કહ્યો ([1]अगारधम्मं अणगारधम्मं च) ૧–ગૃહસ્થના ધર્મ અને બીજા અનગાર–મુનિના

(૧) અગાર એટલે ઘર પરંતુ આ પદથી અહીં તેમાં રહેવાવાળા ગૃહસ્થો એવો અર્થ ગ્રહણ કર્યો છે, અથવા "अर्श आदिभ्योऽच्" આ સૂત્રથી 'अस्ति' અર્થમાં અચ્ પ્રત્યય લગાડવાથી પણ તેમાં રહેવાવાળા ગૃહસ્થો–એવો અર્થ થાય છે

धम्मं अणगारधम्मं च। अणगारधम्मो ताव—इह खलु सव्वओ सव्वत्ताए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइयस्स सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं मुसावाय—अदिण्णादाण-मेहुण-परिग्गह-

अनगारधर्ममेव व्याचष्टे—'अणगारधम्मो ताव' इति। अनगारधर्मस्तावत्—तावत्= प्रथमम् अनगारधर्म उच्यते—'इह खलु सव्वओ सव्वत्ताए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइयस्स सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं' इह खलु सर्वतः सर्वात्मना मुण्डो भूत्वाऽगारादनगारितां प्रव्रजितस्य सर्वस्मात्प्राणातिपाताद्विरमणम्—इह जगति खलु सर्वतः=द्रव्यतो भावतश्चेत्यर्थ, सर्वाऽऽत्मना=परमवैराग्येण मुण्डो भूत्वा—द्रव्यतो मुण्डो मस्तके लुञ्चितकेश, भावतस्तु कषायाणामपनयनमिति मुण्डलक्षणधर्मयोगात् पुरुषो मुण्ड उच्यते, अत्र 'अर्श आदिभ्योऽच्' इत्यच्प्रत्यय, तादृशो भूत्वेत्यर्थ, अगारात्=गृहात्—गृह

(अणगारधम्मो ताव) अनगार का धर्म वे ही जीव पालन करते हैं जो (इह खलु सव्वओ सव्वत्ताए [1]मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइयस्स सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं मुसावाय—अदिण्णादाण-मेहुण—परिग्गह—राईभोयणवेरमण) यहा सर्व प्रकार से—द्रव्य एव भावरूप से, सर्वात्मना—परमवैराग्य सपन्न होकर मुडित हो जाते हैं। यह मुडित अवस्था द्रव्य एव भाव के भेद से दो प्रकार का है—केशों का लुचन करना द्रव्यमुडन है, एव कषायों का त्याग करना भावमुडन है, मुडित होकर जो अपने गृह का परित्याग कर साधु की दीक्षा से दीक्षित हो जाता है। इसका नाम अनगार है। इस अनगार अवस्था में

(१) मुड पद से मुडित पुरुष का मत्वर्थीय अच्प्रत्यय करने से ग्रहण हुआ है।

ધર્મ. (અણગારધમ્મો તાવ) અનગારના ધર્મ તેજ જીવ પાલન કરે છે જે (इह खलु सव्वओ सव्वत्ताए [1]मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइयस्स सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण मुसावाय—अदिण्णादाण—मेहुण—परिग्गह—राईभोयण-वेरमण) અહીં સર્વ પ્રકારથી-દ્રવ્ય તેમજ ભાવ રૂપથી સર્વ પ્રકારે પરમ-વૈરાગ્ય-સપન્ન થઈ જાય છે આ મુંડિત અવસ્થા દ્રવ્ય તેમજ ભાવ ના ભેદથી બે પ્રકારની છે-'કેશલુંચન કરવું' એ દ્રવ્યમુંડન છે, તેમજ કષાયોનો ત્યાગ કરવો' એ ભાવમુંડન છે મુંડિત થઈ ને પોતાના ઘરનો ત્યાગ કરી સાધુની દીક્ષાથી દીક્ષિત થઈ જાય છે તેમનું નામ અનગાર છે આ અનગાર અવ-

(१) मुड શબ્દથી મુંડિત પુરુષનો મત્વર્થીય अच् પ્રત્યય લગાડવાથી ગ્રહણ કર્યો છે.

मूलम्—तमेव धम्मं दुविहं आइक्खइ, तं जहा—अगार-

'जह य' यथा च—येन प्रकारेण 'परिहीणकम्मा' परिहीनकर्माण —परिहीणानि=विनष्टानि कर्माणि येषां ते, सिद्धा —'सिद्धालयमुवेंति' सिद्धालयमुपयन्ति—लोकान्तक्षेत्रलक्षण स्थानं प्राप्नुवन्ति, तथा भगवान् परिकथयतीति पूर्वेणान्वय ॥ सू० ५६ ॥

टीका—'तमेव' इत्यादि। 'तमेव धम्मं दुविहं आइक्खइ' तमेव= पूर्वोक्तमेव धर्मं द्विविध=द्विप्रकारम्, आख्याति=कथयति, 'तं जहा' तद्यथा—'अगारधम्मं अणगारधम्मं च' अगारधर्मम्, अनगारधर्मं च—अगार=गृह तात्स्थ्यादगारा गृहस्था, गृहा दारा इत्यादिवत्, यद्वा—अगारमस्त्येषामित्यर्थे 'अर्श आदिभ्योऽच्' इति मत्वर्थीयाच् प्रत्यय, तेषा धर्म—वक्ष्यमाणस्वरूपस्तम्, तथा—अनगारधर्मं=न विद्यतेऽगार-गृह येषा तेऽनगारा साधवस्तेषा धर्मस्त च आख्याति। तत्र प्राधान्यात् प्रथम-

जह य परिहीणकम्मा सिद्धा सिद्धालयमुवेंति) पुत्रकलत्रादिकों मे आसक्तिरूप राग से उपार्जित ज्ञानावरणीय आदिक कर्मों का पापमय फल जैसे होता है और कर्मों को नष्ट कर जीव सिद्धावस्थापन्न हो सिद्धालय में जैसे पहुँचते है यह सब भी प्रभु ने अपनी देशना में स्पष्ट किया ॥ सू ५६ ॥

'तमेव धम्म दुविह आइक्खइ' इत्यादि

प्रभु ने (तमेव धम्म दुविह आइक्खइ) इस धर्म को दो प्रकार से कहा है। ([1]अगारधम्म अणगारधम्म च) १ गृहस्थ का धर्म और दूसरा अनगार—मुनि का धर्म।

(१) 'अगार' नाम घर का है। परन्तु इस पद से यहाँ उनमे रहने वाले गृहस्थों का ग्रहण हुआ है, अथवा "अर्श आदिभ्योऽच्" इस सूत्र से अस्त्यर्थ मे अच् प्रत्यय करने से भी उनमे रहने वाले गृहस्थों का ग्रहण हो जाता है।

જન કરેલા જ્ઞાનાવરણીય આદિક કર્મોના પાપમય ફલ જેમ થાય છે અને કર્મોનો નાશ કરી જીવ સિદ્ધ—અવસ્થા પ્રાપ્ત કરી સિદ્ધાલય (મુક્તિ સ્થાનમા) જેમ પહોચે છે તે બધુ પણ પ્રભુએ પોતાની દેશનામા સ્પષ્ટ કર્યું (સૂ. ૫૬)

"तमेव धम्म दुविह आइक्खइ" ઈત્યાદિ

પ્રભુએ (तमेव धम्म दुविह आइक्खइ) આ ધર્મ બે પ્રકારનો કહ્યો છે ([1]अगारधम्म अणगारधम्म च) ૧—ગૃહસ્થના ધર્મ અને બીજા અનગાર—મુનિના

(૧) અગાર એટલે ઘર પરંતુ આ પદથી અહીં તેમા રહેવાવાળા ગૃહસ્થો એવો અર્થ ગ્રહણ કર્યો છે, અથવા "अर्श आदिभ्योऽच्" આ સૂત્રથી 'अस्ति' અર્થમા અચ્ પ્રત્યય લગાડવાથી પણ તેમા રહેવાવાળા ગૃહસ્થો—એવો અર્થ થાય છે

राइभोयण–वेरमणं। अयमाउसो! अणगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए णिग्गंथे वा णिग्गंथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवति।

अर्थात् परिगृह्यते=समन्तैः स्वीक्रियत इति परिग्रहः–धर्मोपकरणभिन्नं सर्वमित्यर्थस्तस्माद् विरमणम् ॥ ५ ॥ रात्रिभोजन–रात्रौ भोजनं तस्माद् विरमणम् ॥ ६ ॥ 'अयमाउसो ? अणगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते' अयमायुष्मन्! अनगारसामयिकः–अनगाराणां=साधूनां समये=सिद्धान्ते, यद्वा आचारे भवः, धर्मः प्रज्ञप्तः=कथितः। 'एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए' एतस्य धर्मस्य शिक्षायाम्=आसेवने उपस्थितः=उद्युक्तः, 'णिग्गथे वा' निर्ग्रन्थः=साधुर्वा 'णिग्गथी वा' निर्ग्रन्थी वा उपस्थिता साध्वी वा–'विहरमाणे' विहरमाणः=विचरन् 'आणाए आराहए भवइ' आज्ञायाः=सर्वज्ञोपदेशस्य आराधको भवति। इत्थमनगारधर्ममुपदिश्य सम्प्रत्यगारधर्ममुपदिशति, तदेवाह–'अगारधम्मं' इत्यादि।

गया है। क्यों कि प्राणियों को इनमें 'ममेदभाव' होता है। इस परिग्रह से विरक्त होना परिग्रहविरमण महाव्रत है। रात्रि में भोजन नहीं करना–इसका नाम रात्रिभोजनविरमण व्रत है। (अयमाउसो! अणगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते) हे आयुष्मन्! सिद्धान्त में यह साधुओं का आचारजन्य धर्म प्रतिपादित किया गया है। (एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए) इस साधु के धर्म के आसेवन में उपस्थित (तत्पर) चाहे निर्ग्रन्थ–साधु हो, चाहे निर्ग्रन्थी–साध्वी हो, (विहरमाणे) जो इसे अपने आचरण में लाता है वह (आणाए आराहए भवइ) प्रभु सर्वज्ञ के आज्ञा का आराधक माना जाता है। इस प्रकार अनगार-धर्म की प्ररूपणा कर के प्रभुने 'गृहस्थ का क्या धर्म है?' इसकी प्ररूपणा इस प्रकार की

બધા ધન ધાન્ય આદિકની, પરિગ્રહમા ગણુના થાય છે કેમકે પ્રાણિઓને એમા 'ममेदंभाव' થાય છે એ પરિગ્રહથી વિરક્ત થવુ એ પરિગ્રહ–વિરમણ મહાવ્રત છે રાત્રિમા ભોજન ન કરવુ તેનુ નામ રાત્રિભોજન વિરમણ વ્રત છે (अयमाउसो! अणगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते) હે આયુષ્યમાન્! સિદ્ધાતમા સાધુ-ઓના આચાર જન્ય આ ધર્મનુ પ્રતિપાદન કરેલ છે (एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए) સાધુના આ ધર્મને પાળવામા ઉપસ્થિત–તત્પર, ચાહે તે નિર્ગ્રન્થ સાધુ હોય કે ચાહે તે નિર્ગ્રન્થી–સાધ્વી હોય (विहरमाणे) જે આને આચરણમા લાવે તે (आणाए आराहए भवइ) પ્રભુ સર્વજ્ઞની આજ્ઞાના આરાધક મનાય છે આ પ્રકારે અનગાર ધર્મની પ્રરૂપણા કરીને પ્રભુએ 'ગૃહસ્થનો શુ ધર્મ છે?' તેની

परित्यज्ये यथं, अनगारिता=साधुत्व प्राजिनस्य=प्रकर्षेण समस्तममत्वपरित्यागपूर्वक स्वीकृतवत, सर्वस्मात्=त्रिकरणत्रियोगतो जायमानात् अस्मात् प्राणातिपातात्-प्राणा= स्पर्शेन्द्रियादय सन्त्येषामिति प्राणा -एकेन्द्रियादयो जीवास्तेषामतिपातो=वियोजन-हिंसन मित्यर्थस्तस्माद् विरमण=निवर्त्तनम् ॥ १ ॥ 'मुसावाय-अदिण्णादाण-मेहुण-परिग्गह-राइभोयणाओ वेरमण' मृषावादा-ऽदत्ताऽऽदान-मैथुन-परिग्रह-रात्रिभोजनाद्विरमणम्-मृषावाद=असत्यभाषण तस्माद् विरमण=निवृत्ति ॥ २ ॥ अदत्तादान-न दत्तमदत्त=देव-गुरु-भूप-गाथापति-साधर्मिकैरननुज्ञात, तस्यादान=ग्रहण तस्माद् विरमणम्, ॥ ३ ॥ मैथुन-मिथुनेन=स्त्रीपुमाभ्या निर्वृत्त कर्म--कामक्रीडालक्षण, तस्माद् विरमणम् ॥ ४ ॥ परिग्रह -परि=सर्वतो भावेन गृह्यते=जन्मजरामरणादिजनितैर्दु खैर्वेष्ट्यत आत्मा अनेनेति,

कृत, कारित, अनुमोदना एव मन, वचन और काय इस प्रकार त्रिकरण और त्रियोग से प्राणातिपातादिक पापों का सर्वथा त्याग कर दिया जाता है। प्राणातिपात का त्याग करना-इसीका नाम प्राणातिपातविरमण है। 'प्राण' शब्द से प्राणवाले एकेन्द्रियादिक जीवों का ग्रहण हुआ है। 'अतिपात' शब्द का अर्थ वियोग करना है। एकेन्द्रियादिक प्राणियों की हिंसा से विरक्त-सर्वथा दूर-होना इसका नाम प्राणातिपातविरमण-अहिंसा-महाव्रत है। इसी तरह त्रियोग-त्रिकरण से मृषावाद से विरक्त होना इसका नाम मृषावादविरमण-सत्य-महाव्रत है। देव, गुरु, भूप, साधर्मिक एव गाथापति द्वारा अदत्त का ग्रहण करना इसका नाम अदत्तादान है, उससे निवृत्त होना उसका नाम अदत्तादानविरमण महाव्रत है। तीन करण तीन योग से जो मैथुन से निवृत्त होना उसका नाम मैथुनविरमण महाव्रत है। जिसके ग्रहण से आत्मा, जन्म, जरा एव मरण आदि जनित दु खों से वेष्टित होती है उसका नाम परिग्रह है। धर्मोपकरण सिवाय अन्य सब धन-धान्यादिक को परिग्रह मे परिगणित किया

સ્થામા કૃત, કારિત અનુમોદના તેમજ મન, વચન અને કાય એ પ્રકારે ત્રિકરણ અને ત્રિયોગથી પ્રાણાતિપાત આદિક પાપોનો સર્વથા ત્યાગ કરાય છે પ્રાણાતિપાતનો ત્યાગ કરવો એનુ જ નામ પ્રાણાતિપાત-વિરમણ છે 'પ્રાણ' શબ્દથી પ્રાણવાળા એકેન્દ્રિયાદિક પ્રાણિઓની હિંસાથી વિરક્ત-સર્વથા દૂર થવુ એનુ નામ પ્રાણાતિપાતવિરમણ-અહિંસામહાવ્રત છે એવી જ રીતે ત્રિયોગત્રિકરણથી મૃષાવાદથી વિરક્ત થવુ એનુ નામ મૃષાવાદવિરમણ સત્ય મહાવ્રત છે દેવ, ગુરુ, ભૂપ, સાધર્મિક તેમજ ગાથાપતિ દ્વારા અદત્તનુ ગ્રહણ કરવુ તેનુ નામ અદત્તાદાન છે, તેથી નિવૃત્ત થવુ અદત્તાદાનવિરમણ મહાવ્રત છે ત્રણ કરણ ત્રણ યોગથી મૈથુનથી નિવૃત્ત રહેવુ એનુ નામ મૈથુન-વિરમણ મહાવ્રત છે જેના ગ્રહણથી આત્મા, જન્મ, જરા તેમજ મરણ આદિ દુ ખોથી ઘેરાઇ જાય છે તેનુ નામ પરિગ્રહ છે ધર્મોપકરણ સિવાય અન્ય

थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं २, थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं ३, सदारसंतोसे ४, इच्छापरिमाणे ५। तिण्णि गुणव्व-

'मुसावायाओ वेरमण' स्थूलान्मृपावादाद्विरमणम्=स्थूलासत्यवचनकथनान्निवृत्ति । 'थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमण' स्थूलाददत्तादानाद्विरमणम्—अदत्तस्य आदानं=ग्रहण तस्माद्विरमण=निवृत्ति ३। 'सदारसतोसे' स्वदारसन्तोप =परदारवेश्यादिविवर्जनम् ॥४॥ 'इच्छापरिमाणे' इच्छापरिमाण —इच्छाया =धनाद्यभिलापरूपाया परिमाण=नियमनम्—इच्छापरिमाणम्-देशत परिग्रहनिवृत्ति , यद्वा-इच्छा=परिग्राह्यवस्तुविपया वाञ्छा तस्या परिमाणम्=इयत्ता। इदमेतावदेव मया धार्यमुपार्जनीय नेति नियमनमिच्छापरिमाणम् ॥५॥ 'तिण्णि गुणव्वयाइ' त्रीणि

तिपात से विरमण होना ही अहिंसा अणुव्रत है। (थूलाओ मुसावायाओ वेरमण) स्थूल मृषावाद से विरक्त होना—स्थूल असत्य वचनों के कहने से दूर रहना सो स्थूलमृषावाद-विरमण अणुव्रत है। (थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमण) स्थूल अदत्तादान से विरमण होना सो अचौर्य अणुव्रत है। (सदारसतोसे) अपनी स्त्री मे ही सतोष रखना—परदारा (परस्त्री) एव वेश्या आदि का परित्याग कर देना—सो स्वदारसन्तोष अणुव्रत है। (इच्छापरिमाणे) धन एव धान्यादिक की अभिलापा रूप इच्छा का प्रमाण करना—एक देशसे परिग्रह का त्याग करना, अथवा परिग्राह्यवस्तुविपयक वान्छा का नाम इच्छा है, उसका परिमाण इस प्रकार करना कि मै अमुक वस्तु इतनी रखूगा, इतनी कमाऊँगा, इससे अधिक नहा। यह इच्छा-परिमाण नामका अणुव्रत है (तिण्णि गुणव्वयाइ) गुणव्रत तीन है—ये गुणव्रत अणुव्रतों के

थवु એ જ 'અહિંસા અણુવ્રત' છે (थूलाओ मुसावायाओ वेरमण) સ્થૂલ-મૃષાવાદથી વિરક્ત થવુ-સ્થૂલ અસત્ય વચનો કહેવાથી દૂર રહેવુ તે 'સ્થૂલ-મૃષાવાદ-વિરમણ અણુવ્રત' છે (थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमण) સ્થૂલ અદત્તાદાનથી વિરમણ થવુ એ 'અચૌર્ય અણુવ્રત' છે (सदारसतोसे) પોતાની સ્ત્રીમા જ સતોષ રાખવો-પરદારા-પરસ્ત્રી તેમજ વેશ્યા આદિનો પરિત્યાગ કરી દેવો તે 'સ્વદાર-સતોષ અણુવ્રત' છે (इच्छापरिमाणे) ધન તેમજ ધાન્ય આદિકની અભિલાષા રૂપ ઈચ્છાનુ પ્રમાણ કરવુ (હદ રાખવી)-દેશ થકી પરિગ્રહનો ત્યાગ કરવો અથવા પરિગ્રહ કરવાની વસ્તુ બાબતની જે વાછા તેનુ નામ ઈચ્છા છે, તેનુ પરિમાણ (માપ-મર્યાદા) આ પ્રકારે કરવુ કે હુ અમુક વસ્તુ આટલી રાખીશ, આટલી કમાઈશ, આથી વધારે નહિ આ ઈચ્છાપરિમાણ નામનુ અણુવ્રત છે (तिण्णि गुणव्वयाइ) ગુણવ્રત ત્રણ છે આ ગુણવ્રત અણુવ્રતોના ઉપકારક

अगारधम्मं दुवालसविहं आइक्खइ, तं जहा-पंच अणुव्वयाइं १, तिण्णि गुणव्वयाइं २, चत्तारि सिक्खावयाइं ३। पंच अणुव्वयाइं, तं जहा-थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं १,

'अगारधम्म दुवालसविह आइक्खइ' अगारधर्मं द्वादशविधमाख्याति, 'त जहा' तद्यथा, 'पंच अणुव्वयाइं' पञ्चाऽणुव्रतानि 'तिण्णि गुणव्वयाइ' त्रीणि गुणव्रतानि 'चत्तारि सिक्खावयाइ' चत्वारि शिक्षाव्रतानि, शिक्षा=अभ्यास –पुन पुनरभ्यसन तत्प्रधानानि व्रतानि–शिक्षाव्रतानि। यद्यपि पुन पुनरासेवनायोग्यानि शिक्षाव्रतानि पुरो वक्ष्यमाणानि चत्वार्येव, तथापि त्रयाणा गुणव्रताना शिक्षाव्रतेष्वेवान्तर्भावात सप्त शिक्षाव्रतानि-इत्यप्युच्यते ३। स्वरूपख्यापनाय आह–'पंच अणुव्वयाइ' पञ्चाऽणुव्रतानि–'त जहा' तद्यथा–'थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमण' स्थूला प्राणातिपाताद्विरमणम्–प्राणाना=प्राणिनामतिपातो=हिंसन–तस्मात् स्थूलात् विरमण=निवृत्ति, न तु सूक्ष्मात् ॥ १ ॥ 'थूलाओ

है–(अगारधम्म दुवालसविह आइक्खइ) प्रभुने कहा कि गृहस्थ धर्म १२ प्रकार का है, (त जहा) उसके वे १२ प्रकार इस तरह से है–(पच अणुव्वयाइ तिण्णि गुणव्वयाइ चत्तारि सिक्खावयाइ) ५ अणुव्रत, ३ गुणव्रत, एव ४ शिक्षाव्रत। कहा २ पर शिक्षाव्रत-सात भी कहे गये है सो उसका कारण यह है कि उनमे ३ गुणव्रतों को सम्मिलित कर लिया गया है। शिक्षाप्रधान व्रतों का नाम शिक्षाव्रत है। (पंच अणुव्वयाइ तं जहा) पाच अणुव्रत ये है–(थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमण) स्थूल प्राणातिपात से विरक्त होना सो अहिंसा अणुव्रत है। 'स्थूल' शब्द यहा यह बतलाता है कि सूक्ष्म से नहीं, किन्तु स्थूल प्राणा-

પ્રરૂપણા આ પ્રકારે કરી છે–(अगारधम्म दुवालसविह आइक्खइ) પ્રભુએ કહ્યુ કે ગૃહસ્થ ધર્મ ૧૨ બાર પ્રકારના છે (तजहा) તેના એ ૧૨ બાર-પ્રકાર આવી રીતના છે–(पच अणुव्वयाइ तिण्णि गुणव्वयाइ चत्तारि सिक्खावयाइ) ૫ અણુવ્રત, ૩ ગુણવ્રત, તેમજ ૪ શિક્ષાવ્રત ક્યાક ક્યાક શિક્ષાવ્રત, સાત પણ કહેવામા આવ્યા છે, તેનુ કારણ એ છે કે તેમા ત્રણ ગુણવ્રતોને સમ્મિલિત કરી લેવામા આવ્યા છે શિક્ષાપ્રધાન વ્રતોનુ નામ શિક્ષાવ્રત છે (पच अणुव्वयाइ तजहा) પાચ અણુવ્રત આ છે–(थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमण) સ્થૂલ પ્રાણાતિપાતથી વિરક્ત થવુ તે 'અહિંસા અણુવ્રત' છે 'સ્થૂલ', શબ્દ અહીં એ બતાવે છે કે સૂક્ષ્મથી નહિ પણ સ્થૂલ પ્રાણાતિપાતથી વિરમણ

परिभोगपरिमाणं ८। चत्तारि सिक्खावयाइं, तं जहा–सामाइयं ९, देसावयासियं १०, पोसहोववासे ११, अतिहिसंविभागे,

परतस्तदधिके इयेनम्भूत दिग्व्रतम् ॥ ७ ॥ '**उवभोग–परिभोग–परिमाण**' उपभोग–परिभोग–परिमाणम्–उपभोग =सकृद्भोगोऽशनपानानुलेपनादीनाम्, परिभोगस्तु पुनः पुनर्भोग आसनशयनवसनादीनाम्, तयोः परिमाणम् ॥ ८ ॥ '**सामाइय**' सामायिकम्–समाना= ज्ञानदर्शनचारित्राणामायो=लाभः समायः–तत्र भवं सामायिकम् ॥ ९ ॥ '**देसावयासिय**' देशाऽवकाशिकम्–देशे=दिग्व्रतगृहीतदिक्परिमाणस्य विभागे अवकाशो=गमनाद्यवस्थान

नहीं, इस प्रकार १० दिशाओं मे आने–जाने का मर्यादा करना सो '**दिग्व्रत**' है। एक बार जो भोगने मे आता है उसका नाम उपभोग है, जैसे–अशन, पान एव अनुलेपन आदि। जो वार २ भोगने मे आते हे ऐसे आसन, शयन, वसन आदि को परिभोग कहा गया है। इन दोनों का प्रमाण करना सो '**उपभोग–परिभोग–परिमाण**' है। (**चत्तारि सिक्खावयाइं**) शिक्षाव्रत चार ह, (त जहा) वे ये ह–(**सामाइय देसावयासिय पोसहोववासे अतिहिसंविभागे**) सामायिक, देशावकाशिक, पौषधोपवास एव अतिथिसंविभाग। दर्शन, ज्ञान एव चारित्र का नाम सम है। इस सम के आय (लाभ) का नाम समाय है। इसमे जो समतापरिणाम होता हे उसका नाम सामायिक है। '**दिग्व्रत**' मे जो मर्यादारूप से आने–जाने के लिये जीवनपर्यन्त दिशारूपी क्षेत्र रख लिया था उसीके भीतर २ प्रतिदिन संकोच करना सो '**देशावकाशिक**' है, जैसे–मै आज इस दिशा के

એનાથી આગળ–બહાર નહિ આ પ્રકારે ૧૦ દિશાઓમા આવવા–જવાની મર્યાદા કરવી તે દિગ્વ્રત છે એક વાર જે ભોગવવામા આવે છે તેનુ નામ ઉપભોગ છે, જેમકે–અશન, પાન તેમજ અનુલેપન આદિ જે વારવાર ભોગવવામા આવે છે એવા આસન, શયન, વસન આદિને પરિભોગ કહેવાય છે આ બન્નેનુ પ્રમાણ રાખવુ તે 'ઉપભોગ–પરિભોગ–પરિમાણ' છે (चत्तारि सिक्खावयाइ) શિક્ષાવ્રત ચાર છે (त जहा) તે આ છે–(सामाइय देसावयासिय पोसहोववासे अतिहिसविभागे) સામાયિક ૧, દેશાવકાશિક ૨, પૌષધોપવાસ ૩, તેમજ અતિથિસંવિભાગ ૪ દર્શન, જ્ઞાન તેમજ ચારિત્રનુ નામ સમ છે આ સમના આય (લાભ)નુ નામ સમાય છે એમા જે સમતા–પરિણામ થાય છે તેનુ નામ સામાયિક છે ૧ દિગ્વ્રતમા જે મર્યાદારૂપથી આવવા–જવાને માટે જીવનપર્યંત દિશારૂપી ક્ષેત્ર રાખ્યુ હતુ તેમાજ પ્રતિદિવસ ન્યૂનતા કરવી તે દેશાવકાશિક છે જેમકે હુ આજ આ દિશામા આ સ્થાન સુધી

याइं, तं जहा—अणत्थदंडवेरमणं ६, दिसिव्वयं ७, उवभोग-

गुणव्रतानि, 'त जहा' तद्यथा 'अणत्थदंडवेरमणं' अनर्थदण्डविरमणम्—अर्थ =प्रयोजन गृहस्थस्य क्षेत्र-वास्तु-धन-शरीरपरिपालनादिविषय, तदर्था दण्ड =आरम्भ प्राण्युपमर्दोऽर्थदण्ड । दण्डो निग्रहो यातना विनाश इति पर्याया । दण्ड =निष्प्रयोजन हिंसादिकरणमित्यर्थ , तस्माद्विरमण=निवर्तनम् १, 'दिसिव्वयं' दिग्व्रतम्—दिश पूर्वदक्षिणादय ऊर्ध्वमधश्चेति दशविधा, तत्र दिशा सम्बन्धि व्रत दिग्व्रतम्—एतावत्सु पूर्वादिदिग्विभागेषु मया गमनागमन विधेय न

उपकारक है, (त जहा) वे तीन प्रकार ये हैं (अणत्थदंडवेरमण दिसिव्वयं उवभोगपरिभोगपरिमाण) अनर्थदडविरमण व्रत, दिग्व्रत, उपभोग–परिभोग–परिमाणव्रत । क्षेत्र, वास्तु, धन, धान्य, एव शरीर के परिपालन आदि के निमित्त जो आरभ किया जाता है इसका नाम अर्थ है । इस आरभ मे प्राणिवध अवश्यभावी है । अत इसमे जो दड–प्राणियों का विनाश होता है उससे पाप का वध जीव को होता है । अत यह वध अर्थदड है । अर्थात् प्रयोजन को लेकर जो प्राण्युपमर्दनरूप दड किया जाता है उसका नाम अर्थदड है । दण्ड, निग्रह, यातना एव विनाश ये सब पर्यायवाची शब्द है । इससे जो विपरीत है उसका नाम अर्थदड है । अर्थात् निष्प्रयोजन हिंसादिक पाप करना सो अनर्थदड है । इससे विरक्त होना सो 'अनर्थदंडविरमण' है। दश दिशाओं में आने–जाने का प्रमाण करना सो 'दिग्व्रत' है । चारदिशा और विदिशा तथा उर्ध्व एव अध इस प्रकार ये १० दिशाएँ हैं। मैं अमुक दिशा की ओर इतनी दूर तक जाऊँगा और आऊँगा, इससे आगे बाहिर

છે, (तजहा) તે ત્રણ પ્રકાર આ છે (अणत्थ दड वेरमण दिसिव्वय उवभोगपरिभोगपरिमाण) અનર્થદંડ–વિરમણ વ્રત, દિગ્વ્રત, ઉપભોગપરિભોગપરિમાણ વ્રત ક્ષેત્ર, વાસ્તુ, ધન, ધાન્ય, તેમજ શરીરના પરિપાલન આદિના નિમિત્તે જે આરભ કરવામા આવે છે તેનુ નામ અર્થ છે આ આરભમા પ્રાણિવધ અવશ્યભાવી છે આથી એમા જે દંડ–પ્રાણિઓનો વિનાશ થાય છે તેનાથી પાપનો બધ જીવોને થાય છે તેથી આ વધ અર્થદંડ છે, અર્થાત પ્રયોજનને લઇને જે પ્રાણિ–ઉપમર્દનરૂપ દંડ કરાય છે તેનુ નામ અર્થદંડ છે દંડ, નિગ્રહ, યાતના તેમજ વિનાશ એ બધા પર્યાયવાચી શબ્દો છે તેનાથી જે વિપરીત (ઉલટા) છે તેનુ નામ અનર્થદંડ છે અર્થાત્ નિષ્પ્રયોજન હિંસા આદિ પાપ કરવા તે અનર્થદંડ છે તેનાથી વિરક્ત થવુ તે અનર્થદંડ વિરમણ છે દશ દિશાઓમા આવવા–જવાનુ પ્રમાણ રાખવુ તે દિગ્વ્રત છે ચાર દિશા અને વિદિશા તથા ઉપર અને નીચે એ પ્રકારે આ દશ ૧૦ દિશાઓ છે હુ અમુક દિશા તરફ આટલે દૂર સુધી જઇશ કે આવીશ

परिभोगपरिमाणं ८। चत्तारि सिक्खावयाइं, तं जहा-सामाइयं ९, देसावयासियं १०, पोसहोववासे ११, अतिहिसंविभागे,

परतस्तदधिके इयेनम्मून दिग्व्रतम् ॥ ७ ॥ **'उवभोग-परिभोग-परिमाण'** उपभोग-परिभोग-परिमाणम्-उपभोग =सकृद्भोगोऽशनपानानुलेपनादीनाम्, परिभोगस्तु पुन पुनर्भोग आसनशयनवसनादीनाम्, तयो परिमाणम् ॥ ८ ॥ **'सामाइय'** सामायिकम्-समाना=ज्ञानदर्शनचारित्राणामायो=लाभ समाय -तत्र भव सामायिकम् ॥ ९ ॥ **'देसावयासिय'** देशावकाशिकम्-देशे=दिग्व्रतगृहीतदिक्परिमाणस्य विभागे अवकाशो=गमनाद्यवस्थान

नहीं, इस प्रकार १० दिशाओं म आने-जाने की मर्यादा करना सो **'दिग्व्रत'** है। एक वार जो भोगने मे आता है उसका नाम उपभोग है, जैसे-अशन, पान एव अनुलेपन आदि। जो वार २ भोगने म आते हैं ऐसे आसन, शयन, वसन आदि को परिभोग कहा गया है। इन दोनों का प्रमाण करना सो **'उपभोग-परिभोग-परिमाण'** है। (**चत्तारि सिक्खावयाइं**) शिक्षाव्रत चार ह, (**त जहा**) वे ये ह-(**सामाइय देसावयासिय पोसहोववासे अतिहिसंविभागे**) सामायिक, देशावकाशिक, पौषधोपवास एव अतिथि-संविभाग। दर्शन, ज्ञान एव चारित्र का नाम सम है। इस सम के आय (लाभ) का नाम समाय है। इसमें जो समतापरिणाम होता है उसका नाम सामायिक है। **'दिग्व्रत'** मे जो मर्यादारूप स आने-जाने के लिये जीवनपर्यन्त दिशारूपी क्षेत्र रख लिया था, उसीके भीतर २ प्रतिदिन संकोच करना सो **'देशावकाशिक'** है, जैसे-मैं आज इस दिशा के

એનાથી આગળ-બહાર નહિ આ પ્રકારે ૧૦ દિશાઓમા આવવા-જવાની મર્યાદા કરવી તે દિગ્વ્રત છે એક વાર જે ભોગવવામા આવે છે તેનુ નામ ઉપભોગ છે, જેમકે-અશન, પાન તેમજ અનુલેપન આદિ જે વારવાર ભોગ-વવામા આવે છે એવા આસન, શયન, વસન આદિને પરિભોગ કહેવાય છે આ બન્નેનુ પ્રમાણુ રાખવુ તે 'ઉપભોગ-પરિભોગ-પરિમાણુ' છે (चत्तारि सिक्खावयाइ) શિક્ષાવ્રત ચાર છે (त जहा) તે આ છે-(सामाइय देसावयासिय पोसहोववासे अतिहिसंविभागे) સામાયિક ૧, દેશાવકાશિક ૨, પૌષધોપવાસ ૩, તેમજ અતિથિસંવિભાગ ૪ દર્શન, જ્ઞાન તેમજ ચારિત્રનુ નામ સમ છે આ સમના આય (લાભ)નુ નામ સમાય છે એમા જે સમતા-પરિણામ થાય છે તેનુ નામ સામાયિક છે ૧ દિગ્વ્રતમા જે મર્યાદારૂપથી આવવા-જવાને માટે જીવનપર્યંત દિશારૂપી ક્ષેત્ર રાખ્યુ હતુ તેમાજ પ્રતિદિવસ ન્યૂનતા કરવી તે દેશાવકાશિક છે જેમકે હુ આજ આ દિશામા આ સ્થાન સુધી

याइं, तं जहा–अणत्थदंडवेरमणं ६, दिसिव्वयं ७, उवभोग-

गुणव्रतानि, 'तं जहा' तद्यथा 'अणत्थदंडवेरमणं' अनर्थदण्डविरमणम्–अर्थ =प्रयोजन गृहस्थस्य क्षेत्र-वास्तु-धन शरीरपरिपालनादिविषय, तदर्थो दण्ड =आरम्भ प्राण्युपमर्दोऽर्थदण्ड । दण्डो निग्रहो यातना विनाश इति पर्याया । दण्ड =निष्प्रयोजन हिंसादिकरणमित्यर्थ, तस्माद्विरमण=निवर्तनम् १, 'दिसिव्वयं' दिग्व्रतम्–दिश पूर्वदक्षिणाद्य ऊर्ध्वमधश्चेति दशविधा, तत्र दिशा सम्बन्धि व्रत दिग्व्रतम्–एतावत्सु पूर्वादिदिग्विभागेषु मया गमनागमन विधेय न

उपकारक हैं, (त जहा) वे तीन प्रकार ये है (अणत्थदंडवेरमण दिसिव्वय उवभोगपरिभोगपरिमाण) अनर्थदडविरमण व्रत, दिग्व्रत, उपभोग–परिभोग–परिमाणव्रत । क्षेत्र, वास्तु, धन, धान्य, एव शरीर के परिपालन आदि के निमित्त जो आरभ किया जाता है, इसका नाम अर्थ है । इस आरभ में प्राणिवध अवश्यभावी है । अत इसमे जो दड–प्राणियों का विनाश होता है उससे पाप का बध जीव को होता है । अत यह वध अर्थदड है । अर्थात् प्रयोजन को लेकर जो प्राण्युपमर्दनरूप दड किया जाता है उसका नाम अर्थदड है । दण्ड, निग्रह, यातना एव विनाश ये सब पर्यायवाची शब्द है । इससे जो विपरीत है उसका नाम अर्थदड है । अर्थात् निष्प्रयोजन हिंसादिक पाप करना सो अनर्थदड है । इससे विरक्त होना सो '**अनर्थदंडविरमण**' है। दश दिशाओं मे आने–जाने का प्रमाण करना सो '**दिग्व्रत**' है। चारदिशा और विदिशा तथा उर्ध्व एव अध इस प्रकार ये १० दिशाएँ हैं। मैं अमुक दिशा की ओर इतनी दूर तक जाऊँगा और आऊँगा, इससे आगे बाहिर

છે, (तजहा) તે ત્રણ પ્રકાર આ છે (अणत्थ दड वेरमण दिसिव्वय उवभोगपरिभोगपरिमाण) અનર્થદડ-વિરમણ વ્રત, દિગ્વ્રત, ઉપભોગપરિભોગપરિમાણ વ્રત ક્ષેત્ર, વાસ્તુ, ધન, ધાન્ય, તેમજ શરીરના પરિપાલન આદિના નિમિત્તે જે આરભ કરવામા આવે છે તેનુ નામ અર્થ છે આ આરભમા પ્રાણિવધ અવશ્યભાવી છે આથી એમા જે દડ–પ્રાણિઓનો વિનાશ થાય છે તેનાથી પાપનો બધ જીવોને થાય છે તેથી આ વધ અર્થદડ છે, અર્થાત્ પ્રયોજનને લઇને જે પ્રાણિ–ઉપમર્દનરૂપ દડ કરાય છે તેનુ નામ અર્થદડ છે દડ, નિગ્રહ, યાતના તેમજ વિનાશ એ બધા પર્યાયવાચી શબ્દો છે તેનાથી જે વિપરીત (ઉલટા) છે તેનુ નામ અનર્થદડ છે અર્થાત્ નિષ્પ્રયોજન હિંસા આદિ પાપ કરવા તે અનર્થદડ છે તેનાથી વિરક્ત થવુ તે અનર્થદડ વિરમણ છે દશ દિશાઓમા આવવા–જવાનુ પ્રમાણ રાખવુ તે દિગ્વ્રત છે ચાર દિશા અને વિદિશા તથા ઉપર અને નીચે એ પ્રકારે આ દશ ૧૦ દિશાઓ છે હુ અમુક દિશા તરફ આટલે દૂર સુધી જઈશ કે આવીશ

परिभोगपरिमाणं ८। चत्तारि सिक्खावयाइं, तं जहा–सामाइयं ९, देसावयासियं १०, पोसहोववासे ११, अतिहिसंविभागे,

परतस्तदधिके इत्येवम्भूतं दिग्व्रतम् ॥ ७ ॥ 'उवभोग-परिभोग-परिमाण' उपभोग-परिभोग-परिमाणम्–उपभोगः=सकृद्भोगोऽशनपानानुलेपनादीनाम्, परिभोगस्तु पुनः पुनर्भोगः आसनशयनवसनादीनाम्, तयोः परिमाणम् ॥ ८ ॥ 'सामाइय' सामायिकम्–समानाः=ज्ञानदर्शनचारित्राणामायो=लाभः समायः–तत्र भवं सामायिकम् ॥ ९ ॥ 'देसावयासिय' देशाऽवकाशिकम्–देशे=दिग्व्रतगृहीतदिक्परिमाणस्य विभागे अवकाशो=गमनाद्यवस्थानं

नहीं, इस प्रकार १० दिशाओं में आने–जाने की मर्यादा करना सो 'दिग्व्रत' है। एक बार जो भोगने में आता है उसका नाम उपभोग है, जैसे–अशन, पान एवं अनुलेपन आदि। जो वार २ भोगने में आते हैं ऐसे आसन, शयन, वसन आदि को परिभोग कहा गया है। इन दोनों का प्रमाण करना सो 'उपभोग-परिभोग-परिमाण' है। (चत्तारि सिक्खावयाइं) शिक्षाव्रत चार हैं, (तं जहा) वे ये हैं–(सामाइय देसावयासिय पोसहोपवासे अतिहिसंविभागे) सामायिक, देशावकाशिक, पौषधोपवास एवं अतिथिसंविभाग। दर्शन, ज्ञान एवं चारित्र का नाम सम है। इस सम के आय (लाभ) का नाम समाय है। इसमें जो समतापरिणाम होता है उसका नाम सामायिक है। 'दिग्व्रत' में जो मर्यादारूप से आने–जाने के लिये जीवनपर्यन्त दिशारूपी क्षेत्र रख लिया था, उसीके भीतर २ प्रतिदिन संकोच करना सो 'देशावकाशिक' है, जैसे–मैं आज इस दिशा के

એનાથી આગળ–બહાર નહિ આ પ્રકારે ૧૦ દિશાઓમાં આવવા–જવાની મર્યાદા કરવી તે દિગ્વ્રત છે એક વાર જે ભોગવવામાં આવે છે તેનું નામ ઉપભોગ છે, જેમકે–અશન, પાન તેમજ અનુલેપન આદિ જે વારવાર ભોગવવામાં આવે છે એવાં આસન, શયન, વસન આદિને પરિભોગ કહેવાય છે આ બન્નેનું પ્રમાણ રાખવું તે 'ઉપભોગ–પરિભોગ–પરિમાણ' છે (चत्तारि सिक्खावयाइ) શિક્ષાવ્રત ચાર છે (तं जहा) તે આ છે–(सामाइय देसावयासिय पोसहोपवासे अतिहिसंविभागे) સામાયિક ૧, દેશાવકાશિક ૨, પૌષધોપવાસ ૩, તેમજ અતિથિસંવિભાગ ૪ દર્શન, જ્ઞાન તેમજ ચારિત્રનું નામ સમ છે આ સમના આય (લાભ)નું નામ સમાય છે એમાં જે સમતા–પરિણામ થાય છે તેનું નામ સામાયિક છે ૧ દિગ્વ્રતમાં જે મર્યાદારૂપથી આવવા–જવાને માટે જીવનપર્યંત દિશારૂપી ક્ષેત્ર રાખ્યું હતું તેમાજ પ્રતિદિવસ ન્યૂનતા કરવી તે દેશાવકાશિક છે જેમકે હું આજ આ દિશામાં આ સ્થાન સુધી

याइं, तं जहा—अणत्थदंडवेरमणं ६, दिसिव्वयं ७, उवभोग-

गुणव्रतानि, 'तं जहा' तद्यथा 'अणत्थदंडवेरमणं' अनर्थदण्डविरमणम्—अर्थः=प्रयोजनं गृहस्थस्य क्षेत्र-वास्तु-धन-शरीरपरिपालनीयादिविषयं, तदर्थं दण्डः=आरम्भः प्राण्युपमर्दोऽर्थदण्डः। दण्डो निग्रहो यातना विनाश इति पर्यायाः। दण्डः=निष्प्रयोजनं हिंसादिकरणमित्यर्थः, तस्माद्विरमणं=निवर्तनम् १, 'दिसिव्वयं' दिग्व्रतम्—दिशः पूर्वदक्षिणाद्यः ऊर्ध्वमधश्चेति दशविधाः, तत्र दिशासम्बन्धि व्रतं दिग्व्रतम्—एतावत्सु पूर्वादिदिग्विभागेषु मया गमनागमनं विधेयं न

उपकारक है, (तं जहा) वे तीन प्रकार ये हैं (अणत्थदंडवेरमणं दिसिव्वयं उवभोगपरिभोगपरिमाणं) अनर्थदंडविरमण व्रत, दिग्व्रत, उपभोग–परिभोग–परिमाणव्रत। क्षेत्र, वास्तु, धन, धान्य, एवं शरीर के परिपालन आदि के निमित्त जो आरंभ किया जाता है इसका नाम अर्थ है। इस आरंभ में प्राणिवध अवश्यभावी है। अतः इसमें जो दंड–प्राणियों का विनाश होता है उससे पाप का बंध जीव को होता है। अतः यह वध अर्थदंड है। अर्थात् प्रयोजन को लेकर जो प्राण्युपमर्दनरूप दंड किया जाता है उसका नाम अर्थदंड है। दण्ड, निग्रह, यातना एवं विनाश ये सब पर्यायवाची शब्द हैं। इससे जो विपरीत है उसका नाम अर्थदंड है। अर्थात् निष्प्रयोजन हिंसादिक पाप करना सो अनर्थदंड है। इससे विरक्त होना सो 'अनर्थदंडविरमण' है। दश दिशाओं में आने–जाने का प्रमाण करना सो 'दिग्व्रत' है। चारदिशा और विदिशा तथा ऊर्ध्व एवं अधः इस प्रकार ये १० दिशाएँ हैं। मैं अमुक दिशा की ओर इतनी दूर तक जाऊँगा और आऊँगा, इससे आगे बाहिर

છે, (तं जहा) તે ત્રણ પ્રકાર આ છે (अणत्थदंडवेरमणं दिसिव्वयं उवभोगपरिभोगपरिमाणं) અનર્થદંડ-વિરમણ વ્રત, દિગ્વ્રત, ઉપભોગપરિભોગપરિમાણ વ્રત ક્ષેત્ર, વાસ્તુ, ધન, ધાન્ય, તેમજ શરીરના પરિપાલન આદિના નિમિત્તે જે આરંભ કરવામાં આવે છે તેનું નામ અર્થ છે આ આરંભમાં પ્રાણિવધ અવશ્યભાવી છે આથી એમાં જે દંડ-પ્રાણિઓનો વિનાશ થાય છે તેનાથી પાપનો બંધ જીવોને થાય છે તેથી આ વધ અર્થદંડ છે, અર્થાત્ પ્રયોજનને લઇને જે પ્રાણિ-ઉપમર્દનરૂપ દંડ કરાય છે તેનું નામ અર્થદંડ છે દંડ, નિગ્રહ, યાતના તેમજ વિનાશ એ બધા પર્યાયવાચી શબ્દો છે તેનાથી જે વિપરીત (ઉલટા) છે તેનું નામ અનર્થદંડ છે અર્થાત્ નિષ્પ્રયોજન હિંસા આદિ પાપ કરવા તે અનર્થદંડ છે તેનાથી વિરક્ત થવું તે અનર્થદંડ વિરમણ છે દશ દિશાઓમાં આવવા-જવાનું પ્રમાણ રાખવું તે દિગ્વ્રત છે ચાર દિશા અને વિદિશા તથા ઉપર અને નીચે એ પ્રકારે આ દશ ૧૦ દિશાઓ છે હું અમુક દિશા તરફ આટલે દૂર સુધી જઇશ કે આવીશ

माउसो ! अगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते। एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए वा समणोवासिया वा विहर-माणे आणाए आराहए हवइ ॥ सू० ५७ ॥

कर्मधारये—अपश्चिममारणान्तिकसंलेखना, तस्या जूषणा=सेवना—मरणकाले संलेखनानाम्ना तपसा शरीरस्य कषायादीनाञ्च कृशीकरणं, तस्या आराधना=निरवद्यतया संपादनम् ॥ १२ ॥ 'अयमाउसो' अयमायुष्मन् ! 'अगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते' अगार-सामयिको धर्मः प्रज्ञप्तः 'एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए वा समणो-

फिर भी यहा जो उसे अपश्चिम कहा है वह अमंगलपरिहार के निमित्त से जानना चाहिये। क्यों कि "अन्तक्रियाधिकरण तप फल सकलदर्शिन स्तुवते" तप का फल संलेखनापूर्वक प्राणों का विसर्जन करना प्रभुने बतलाया है, अत यदि यह अन्तिम समय आचरित नहीं होती है तो जीवनभर की गई व्रताराधना तपस्या आदि एक प्रकार से निष्फल ही समझना चाहिये। अत इस अपेक्षा से यह अपश्चिम—सर्वोत्कृष्ट कही गई है। यह संलेखना (**मारणान्तिकी**) मरण के समय धारण की जाती है। काय और कषाय आदि जिसके द्वारा अथवा जिसमें कृश किये जाते है उसका नाम संलेखना है। यह संलेखना भी एक तप—विशेष है। इसे प्रेम से धारण करना चाहिये इस अर्थ को द्योतित करने के लिये ही "**जूषणा**" यह पद दिया गया है। (**अयमाउसो !**) इस प्रकार हे आयुष्मन् ! यह (**अगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते**) गृहस्थ का धर्म सिद्धान्त मे कहा गया है। (**एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए**

છે તે અમંગલ પરિહારનું નિમિત્ત જાણવું જોઈએ કેમકે "अन्तक्रियाधिकरण तप फल सकलदर्शिन स्तुवते" તપનું ફલ સંલેખના—પૂર્વક પ્રાણોનું વિસર્જન કરવું એમ પ્રભુએ બતાવ્યું છે આથી જો આ અંતિમ સમયે આચરવામાં નથી આવતી તો જીવનભર કરેલી વ્રત—આરાધના તપસ્યા આદિ એક પ્રકારે નિષ્ફલ જ માનવી જોઈએ આમ આની અપેક્ષાએ આ અપશ્ચિમ—સર્વોત્કૃષ્ટ કહેલી છે આ સંલેખના (मारणान्तिकी) મરણના સમયે ધારણ કરાય છે કાય અને કષાય આદિ જેના દ્વારા અથવા જેમાં કૃશ કરાય છે તેનું નામ સંલેખના છે આ સંલેખના પણ એક તપવિશેષ છે તેને પ્રેમથી ધારણ કરવી જોઈએ આ અર્થને દ્યોતિત (પ્રકાશિત) કરવા માટે જ "जूषणा" એ પદ આપેલું છે (अयमाउसो) આ પ્રકારે હે આયુષ્મન્ ! આ (अगारसामा

अपच्छिमा-मारणंतिया-संलेहणा-झूसणा-राहणा १२। अय-

तेन निर्वृत्त देशावकाशिकम्-निवृत्तगृहीतपरिमाणस्य प्रतिदिनं संक्षेपकरणम् ॥ १० ॥ 'पोसहोपवासे' पोषधोपवास-पोषणं पोषः=पुष्टिरित्यर्थस्तं धत्ते=गृह्णातीति पोषधः, स चासावुपवासश्चेति पोषधोपवासः, एतत्तु अस्य व्युत्पत्तिमात्रम्, प्रवृत्तिनिमित्तं तु-आहारादि-चतुष्टयपरित्याग एवेति बोध्यम्, अष्टमीचतुर्दश्यमावास्यापौर्णमासीषु अनुष्ठेयो व्रतविशेषः। तदुक्तम्—

'आहार-तनुसत्कारा-ऽब्रह्म-सावद्य-कर्मणाम्।
त्यागः पर्वचतुष्टय्यां, तद्विदुः पोषधव्रतम् ॥ ११ ॥ इति।

'अतिहिसविभागे' अतिथिसंविभाग-अतिथिः=साधुस्तस्मै संविभागः=स्वात्म-कल्याणभावनया समर्पणम्। 'अपच्छिमा-मारणंतिया-संलेहणा-झूसणा-राहणा' अपश्चिम-मारणान्तिक-संलेखना-जूषणा-ऽऽराधना=अपश्चिमा-पश्चिमैवाऽमङ्गलपरिहारार्थ-मपश्चिमेत्युच्यते, मरणं=प्राणत्यागलक्षणम्, तदेवान्तो मरणान्तः, तत्र भवा मारणान्तिकी, संलिख्यते=कृशीक्रियतेऽनया शरीरकषायादि-इति संलेखना=तपोविशेषलक्षणा, एतत्पदत्रयस्य

इस स्थान तक जाऊँगा, इस गली तक जाऊँगा, आगे नहीं। इत्यादि। चारों प्रकार के आहार का परित्याग करना इसका नाम 'पोषधोपवास' है। यह व्रत प्रत्येक महिने की प्रत्येक अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या एवं पूर्णमासी के दिन किया जाता है। कहा भी है-पर्वचतुष्टय में-चारपर्वों में आहारका परित्याग, शारीरिक संस्कार का परित्याग, कुशील का परित्याग आदि सावद्य कर्मोंका जो त्याग है सो 'पोषधव्रत' है। अतिथि नाम साधु का है। साधु के लिये जो संविभाग-अपनी आत्मा के कल्याण की भावना से आहार पानी आदि समर्पण करना-सो 'अतिथिसंविभाग' है। (अपच्छिमा-मारणंतिया-संले-हणा-झूसणा-राहणा) संलेखना यद्यपि पश्चिम है-अर्थात्-अन्त में धारण की जाती है,

જઈશ, આ ગલી સુધી જઈશ આગળ નહિ જાઉં ! ઇત્યાદિ ચારેય પ્રકારના આહારનો પરિત્યાગ કરવો. તેનું નામ પોષધોપવાસ છે આ વ્રત પ્રત્યેક માસની પ્રત્યેક અષ્ટમી, ચતુર્દશી, અમાવાસ્યા તેમજ પૂર્ણિમાને દિવસ કરાય છે કહ્યું પણ છે-પર્વચતુષ્ટયમાં-ચાર પર્વમાં આહારનો પરિત્યાગ, શારીરિક સંસ્કારનો પરિત્યાગ, કુશીલનો પરિત્યાગ આદિ સાવદ્ય કર્મોનો જે ત્યાગ છે તે પોષધવ્રત છે અતિથિ નામ સાધુનું છે સાધુ માટે જે સંવિભાગ-પોતાના આત્માના કલ્યાણની ભાવનાથી આહાર પાણી આદિ સમર્પણ કરવું તે અતિથિસંવિભાગ છે ૪ (अपच्छिमा-मारणंतिया-संलेहणा-झूसणा-राहणा) સંલેખના જો કે પશ્ચિમ હોય છે-અંતમાં ધારણ કરાય છે, તો પણ તેને અપશ્ચિમ કહેવાય

माउसो! अगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते। एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए वा समणोवासिया वा विहर-माणे आणाए आराहए हवइ ॥ सू० ५७ ॥

कर्मधारये—अपश्चिममारणान्तिकसलेखना, तस्या जूषणा=सेवना—मरणकाले सलेखनानाम्ना तपसा शरीरस्य कपायादीनाञ्च कृशीकरण, तस्या आराधना=निरवच्छिन्नतया सपादनम् ॥ १२ ॥ 'अयमाउसो' अयमायुष्मन्! 'अगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते' अगार-सामयिको धर्म प्रज्ञप्त 'एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए वा समणो-

फिर भी यहा जो उसे अपश्चिम कहा है वह अमगलपरिहार के निमित्त से जानना चाहिये। क्यों कि "अन्तक्रियाधिकरण तप फल सकलदर्शिन स्तुवते" तप का फल सलेखनापूर्वक प्राणों का विसर्जन करना प्रभुने बतलाया है, अत यदि यह अन्तिम समय आचरित नहीं होती है तो जीवनभर की गई व्रताराधना तपस्या आदि एक प्रकार से निष्फल ही समझना चाहिये। अत इस अपेक्षा से यह अपश्चिम—सर्वोत्कृष्ट कही गई है। यह सलेखना (मारणान्तिकी) मरण के समय धारण की जाती है। काय और कपाय आदि जिसके द्वारा अथवा जिसमें कृश किये जाते हे उसका नाम सलेखना है। यह सलेखना भी एक तप—विशेप है। इसे प्रेम से धारण करना चाहिये इस अर्थ को द्योतित करने के लिये ही "जूषणा" यह पद दिया गया हे। (अयमाउसो!) इस प्रकार हे आयुष्मन्! यह (अगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते) गृहस्थ का धर्म सिद्धान्त मे कहा गया है। (एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए

છે તે અમંગલ પરિહારનુ નિમિત્ત જાણવુ જોઈએ કેમકે "अन्तक्रियाधिकरण तप फल सकलदर्शिन स्तुवते" તપનુ ફલ સલેખના—પૂર્વક પ્રાણોનુ વિસર્જન કરવુ એમ પ્રભુએ બતાવ્યુ છે આથી જો આ અંતિમ સમયે આચરવામા નથી આવતી તો જીવનભર કરેલી વ્રત—આરાધના તપસ્યા આદિ એક પ્રકારે નિષ્ફલ જ માનવી જોઇએ આમ આની અપેક્ષાએ આ અપશ્ચિમ—સર્વોત્કૃષ્ટ કહેલી છે આ સલેખના (मारणान्तिकी) મરણના સમયે ધારણ કરાય છે કાય અને કષાય આદિ જેના દ્વારા અથવા જેમા કૃશ કરાય છે તેનુ નામ સલેખના છે આ સલેખના પણ એક તપવિશેષ છે તેને પ્રેમથી ધારણ કરવી જોઇએ આ અર્થને દ્યોતિત (પ્રકાશિત) કરવા માટે જ "जूपणा" એ પદ આપેલુ છે (अयमाउसो) આ પ્રકારે હે આયુષ્મન્! આ (अगारसामा

तए णं सा महतिमहालिया मणूसपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठ-

वासिया वा ' एतस्य धर्मस्य शिक्षायाम् उपस्थित श्रमणोपासको वा श्रमणोपासिका वा, 'विहरमाणे' विहरन् 'आणाए आराहए भवइ' आज्ञाया आराधको भवति। अगारधर्मस्य विस्तरतो व्याख्या उपासकदशाङ्गसूत्रस्यागारधर्मसंजीवन्याख्याया व्याख्याया प्रथमाध्ययनेऽस्माभि कृता ॥ सू० ५७ ॥

टीका—' तए ण ' इत्यादि। ' तए ण ' तत खलु ' सा महतिमहालिया ' सा महातिमहती=अतिविशाला—' मणूसपरिसा ' मनुष्यपरिषद् ' समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए ' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्याऽन्तिके=समीपे ' धम्मं सोच्चा

आराहए हवइ) इस धर्म की शिक्षा में उपस्थित चाहे श्रमण का उपासक—गृहस्थ हो, चाहे श्रमण की उपासिका—श्राविका हो, कोई भी क्यों न हो, जो भी प्राणी इस धर्म की छत्रच्छाया मे अपने आपको विसर्जित कर देता है, अर्थात्—इन व्रतों की आराधना करता है वह तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा का आराधक माना गया है। अगारधर्म की विस्तृतरूप से व्याख्या उपासकदशाग सूत्र के ऊपर विरचित अगारधर्मसंजीवनीनामकी टीका में प्रथम अध्ययन में की गई है। अत विशेषार्थी विषय को वहा से विस्ताररूप मे देख ले ॥ सू० ५७॥

'तए णं सा महतिमहालिया' इत्यादि।

(तए णं) तदन्तर (सा महतिमहालिया) वह अतिविशाल (मणूसपरिसा) मनुष्यों की सभा (समणस्स) श्रमण (भगवओ) भगवान (महावीरस्स) महावीर के

इए धम्मे पण्णत्ते) ગૃહસ્થના ધર્મ સિદ્ધાતમા કહેલા છે (एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए हवइ) આ ધર્મની શિક્ષામા ઉપસ્થિત, ચાહે શ્રમણના ઉપાસક–ગૃહસ્થ હોય, ચાહે શ્રમણની ઉપાસિકા–શ્રાવિકા હોય, જે કોઇ પણ પ્રાણી આ ધર્મની છત્ર-છાયામા પોતાની જાતનુ વિસર્જન કરી દે છે–આ વ્રતોની આરાધના કરે છે, તે તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાના આરાધક મનાય છે અગાર ધર્મની વિસ્તૃતરૂપથી વ્યાખ્યા ઉપાસકદશાગસૂત્રના ઉપર બનાવેલી અગારધર્મ-સ જીવની નામની ટીકામા પ્રથમ અધ્યયનમા કરવામા આવેલી છે, માટે વિશેષ જિજ્ઞાસુઓએ આ વિષયને ત્યાથી વિસ્તારરૂપે જોઈ લેવો. (સૂ૦ ૫૭)

'तए ण सा महतिमहालिया' ઇત્યાદિ

(तए ण) ત્યાર પછી (सा महितमहालिया) તે અતિવિશાલ (मणूस

जाव–हियया उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता अत्थेगइया मुंडे भवित्ता अगाराओ अण-

---

णिसम्म ' धर्मं श्रुत्वा=आकर्ण्य, निशम्य=हृदि धृत्वा, 'हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियया' हृष्ट-तुष्ट-यावद्-हृदया 'उट्ठाए उट्ठेइ' उत्थया=उत्थानशक्त्या उत्तिष्ठति 'उट्ठित्ता' उत्थाय, 'समणस्स भगवओ महावीरस्स' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'तिक्खुत्तो' त्रिकृत्व, 'आयाहिणपयाहिणं करेइ' आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, 'करित्ता' कृत्वा, 'वंदइ णमंसइ' वन्दते नमस्यति, 'वंदित्ता णमंसित्ता' वन्दित्वा नमस्यित्वा, तत्र–'अत्थेगइया' सन्त्येकके=केचित् 'मुंडे भवित्ता' मुण्डा भूत्वा 'अगाराओ' अगाराद्=गृहात्-गृहं परित्यज्येत्यर्थः, 'अणगारियं' अनगारिता=साधुतां प्रव्रजिता=प्राप्ता, 'अत्थेगइया'

(अंतिए) समीप (धम्म) धर्म का व्याख्यान (सोच्चा) सुनकर, एवं अच्छी तरह उसे (णिसम्म) हृदयंगम कर (हट्ठ–तुट्ठ–जाव–हियया) बहुत ही अधिक हर्षित एवं सन्तुष्ट-चित्त हुई, (उट्ठाए उट्ठेइ) पश्चात् अपने २ आसन से उठी, (उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ करित्ता वंदइ णमंसइ) उठ कर फिर उसने श्रमण भगवान महावीर को तीनवार आदक्षिणप्रदक्षिणपूर्वक वन्दन–नमस्कार किया, (वंदित्ता णमंसित्ता अत्थेगइया मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया) वंदना–नमस्कार कर के कितनेक मनुष्योंने मुंडित होकर, अपने २ घर को छोडकर उनके पास अनगार बने, अर्थात् दीक्षा धारण की। (अत्थेगइया पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहि-

---

परिसा) मनुष्योनी सभा (समणस्स) श्रमण (भगवओ) भगवान (महावीरस्स) महावीरना (अंतिए) समीपे (धम्म) श्रुतचारित्ररूप धर्मनी देशना (सोच्चा) सांभळीने तेमज सारी रीते तेने (णिसम्म) हृदयगम करीने (हट्ठ–तुट्ठ–जाव हियया) बहुज हर्षित तेमज संतोष पामी, (उट्ठाए उट्ठेइ) पछी पोतपोताना आसनेथी उठी, (उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ णमंसइ) उठीने, पछी तेमणे श्रमण भगवान महावीरने त्रणवार आदक्षिण–प्रदक्षिण–पूर्वक वंदन नमस्कार कर्या, (वंदित्ता णमंसित्ता अत्थेगइया मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया) वंदना–नमस्कार करीने केटलाक मनुष्योए मुंडित थईने पोतपोताना घर छोडीने तेमना पासे अनगार थया, अर्थात् दीक्षा लीधी (अत्थेगइया पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवाल-

गारियं पव्वइया, अत्थेगइया पचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइय दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवण्णा ॥ सू० ५८॥

मूलम्—अवसेसा णं परिसा समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–सुअक्खाए ते

सन्त्येकके 'पंचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवण्णा' पञ्चाणुव्रतिक सप्तशिक्षाव्रतिक द्वादशविध गृहिधर्म प्रतिपन्ना ॥ सू०५८॥

टीका—'अवसेसा ण परिसा' इत्यादि। 'अवसेसा ण परिसा समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी' अवशेषा=अवशिष्टा खलु परिषत् श्रमण भगवन्त महावीर वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्–'सुअक्खाए ते भते! णिग्गथे पावयणे' स्वाख्यात=सुष्ठु कथित सामान्यतस्त्वया भदन्त! निर्ग्रन्थ प्रवचनम्, 'एव सुप्पण्णत्ते' एव सुप्रज्ञप्तम्–विशेषकथनात्, 'सुभासिए'

धम्मं पडिवण्णा) कितनेकों ने पाँच अणुव्रत, सात शिक्षाव्रत–इस तरह १२ प्रकार का गृहस्थधर्म स्वीकार किया ॥ सू ५८ ॥

'अवसेसा ण परिसा' इत्यादि।

(अवसेसा ण परिसा) अवशिष्ट परिषत्ने (समण भगव महावीर) श्रमण भगवान् महावीर को (वंदइ णमसइ) वन्दना एव नमस्कार किया, (वदित्ता णमसित्ता एव वयासी) वदना नमस्कार करने के बाद फिर उन्होंने इस प्रकार कहा–(सुअक्खाए ते भते! णिग्गथे पावयणे) हे भदन्त! आपने निर्ग्रन्थ प्रवचन बहुत अच्छा कहा, (एव सुप्पण्णत्ते) और आपने इसका बहुत अच्छा तरह से प्ररूपण किया, (सुभासिए) आपने खूब

सविहं गिहिधम्म पडिवण्णा) કેટલાકે પાંચ અણુવ્રત સાત શિક્ષાવ્રત એમ ૧૨ પ્રકારનો ગૃહસ્થ ધર્મ સ્વીકાર કર્યો (સૂ. ૫૮)

'अवसेसा ण परिसा' ઈત્યાદિ

(अवसेसा ण परिसा) બાકીની પરિષદે (समण भगव महावीर) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને (वदइ णमसइ) વંદના તેમજ નમસ્કાર કર્યો, (वदित्ता णमसित्ता एव वयासी) વંદના નમસ્કાર કર્યા પછી તેઓએ આ પ્રમાણે કહ્યું–(सुअक्खाए ते भते! णिग्गथे पावयणे) હે ભદન્ત! આપે નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન બહુ સારૂં કહ્યું, (एव सुप्पण्णत्ते) અને આપે તેનું બહુ સારી રીતે પ્રરૂપણ કર્યું (सुभासिए)

भंते! णिग्गंथे पावयणे, एवं सुप्पण्णत्ते, सुभासिए, सुविणीए, सुभाविए। अणुत्तरे ते भंते! निग्गंथे पावयणे। धम्म णं आइक्खमाणा तुब्भे उवसमं आइक्खह, उवसमं आइक्खमाणा विवेगं आइक्खह, विवेगं आइक्खमाणा वेरमणं आइक्खह, वेर-

सुभाषितम्-भावव्यञ्जनात्, 'सुविणीए' सुविनीतम्-शिष्येषु सुष्टु विनियोजितत्वात्, 'सुभाविए' सुभावितम्=सुष्टु भावितम्-तत्त्वकथनात्, 'अणुत्तरे' अनुत्तर-नास्त्युत्तर यस्मात् तद्-अनुत्तर-सर्वश्रेष्ठ, तव भदन्त निर्ग्रन्थ प्रवचनम्। 'धम्म ण आइक्खमाणा तुब्भे उवसम आइक्खह' धर्मं समाचक्षाणा यूयमुपशमम्=क्रोधादिनिरोधम् आख्याथ=कथयथ, 'उवसमं आइक्खमाणा विवेग आइक्खह' उपशममाचक्षाणा विवेकमाख्याथ, क्रोधादिनिरोध कथयन्तो यूय विवेक=हेयोपादेयविवेचन कथयथ, 'विवेग आइक्खमाणा वेरमण आइक्खह'-विवेकमाचक्षाणा विरमणमाख्याथ, विरमणम्=प्राणातिपातादिनिवर्त-

सुन्दर रूप से पदार्थों के स्वरूप को प्रकट किया, (सुविणीए) आपने शिष्यों को खूब समझाया, (सुभाविए) जीवादि सभी तत्त्वों को आपने अच्छी तरह से समझाया। (अणुत्तरे ते भंते! णिग्गंथे पावयणे) हे भदन्त! आपका यह निर्ग्रन्थ प्रवचन सर्वोत्कृष्ट है। हे भदन्त! (धम्म ण आइक्खमाणा तुब्भे उवसम आइक्खह) धर्मका उपदेश करते समय आप उपशम भाव क्रोधादिनिरोध का उपदेश करते हैं, (उवसम आइक्खमाणा विवेग आइक्खह) क्रोधादिक के निरोध का उपदेश करते समय हेयोपादेयरूप विवेक का उपदेश देते है, (विवेग आइक्खमाणा वेरमण आइक्खह) विवेक का उपदेश करते समय प्राणातिपातादिक से विरक्त होने का भी उपदेश करते है, (वेरमण आइक्खमाणा अकरण पावाण कम्माण आइ-

આપે ખૂબ સુંદર રૂપથી પદાર્થોના સ્વરૂપને પ્રકટ કર્યાં (सुविणीए) આપે શિષ્યોને ખૂબ સમજાવ્યા (सुभाविए) જીવાદિ બધા તત્વોને સારી રીતે સમજાવ્યા. (अणुत्तरे ते भंते! णिग्गंथे पावयणे) હે ભદન્ત! આપનું આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન સર્વોત્કૃષ્ટ છે હે ભદન્ત! (धम्म ण आइक्खमाणा तुब्भे उवसम आइक्खह) ધર્મનો ઉપદેશ કરતી વખતે આપે ઉપશમભાવ-ક્રોધાદિનિરોધનો ઉપદેશ કર્યો છે (उवसम आइक्खमाणा विवेग आइक्खह) ક્રોધાદિકના નિરોધનો ઉપદેશ કરતી વખતે હેય-ઉપાદેય રૂપ વિવેકનો ઉપદેશ કર્યો છે (विवेग आइक्खमाणा वेरमण आइक्खह) વિવેકનો ઉપદેશ કરતી વખતે પ્રાણાતિપાતાદિકથી

मणं आइक्खमाणा अकरणं पावाणं कम्माणं आइक्खह। णत्थि णं अण्णे केइ समणे वा माहणे वा जे एरिसं धम्ममाइक्खित्तए, किमंग ! एत्तो उत्तरतरं ?, एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥ सू०५९ ॥

नम्, 'वेरमणं आइक्खमाणा अकरणं पावाणं कम्माणं आइक्खह' विरमणमाचक्षाणा अकरणं पापानां कर्मणामाख्याथ=पापरूपाणां कर्मणामकरणम्=अनाचरणं कथयथ, 'णत्थि णं अण्णे केइ समणे वा माहणे वा जे एरिसं धम्ममाइक्खित्तए' नास्ति खल्वन्यः कोऽपि श्रमणो वा ब्राह्मणो वा यः ईदृशं धर्ममाख्यायात्, 'किमंग पुण एत्तो उत्तरतरं' किमङ्ग ! पुनरेतस्मात् उत्तरतरम्—अस्माद्धर्मोपदेशादुत्कृष्टं कथयिष्यतीति का सम्भावना ! न कापीत्यर्थः, 'एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया' एवम् उदित्वा यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतास्तामेव दिशं प्रतिगता ॥ सू०५९ ॥

क्खह) प्राणातिपातादिक के विरमण का उपदेश देते हुए आप पापरूप कर्मों को नहीं करने का उपदेश भी देते है। अतः (णत्थि णं अण्णे केइ समणे वा माहणे वा जे एरिसं धम्ममाइक्खित्तए) इस संसार मे हे नाथ ! ऐसा और कोई दूसरा श्रमण वा ब्राह्मण उपदेष्टा नहीं है जो इस प्रकार के धर्म का उपदेश दे सके, (किमंग ! पुण एत्तो उत्तरतरं) फिर इससे उत्कृष्ट धर्म का उपदेश कौन दे सकता है ? अर्थात् कोई नहीं ! (एवं वदित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया) इस प्रकार कह कर वे सब जिस दिशा से आये थे उसी दिशा की ओर चले गये ॥ सू० ५९ ॥

विरक्त थवानो उपदेश कर्यो छे (वेरमणं आइक्खमाणा अकरणं पावाणं कम्माणं आइक्खह) प्राणातिपातादिकना विरमणनो उपदेश देती वखते आपे पापरूप कर्मो न करवानो पण उपदेश कर्यो छे माटे (णत्थि णं अण्णे केइ समणे वा माहणे वा जे एरिसं धम्ममाइक्खित्तए) आ संसारमां, हे नाथ ! एवो बीजो कोई श्रमण के ब्राह्मण उपदेष्टा नथी के जे आ प्रकारना धर्मनो उपदेश आपी शके (किमंग ! पुण एत्तो उत्तरतरं) तो पछी आनाथी उत्कृष्ट धर्मनो उपदेश कोण आपी शके ! अर्थात् कोई नहि (एवं वदित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया) आ प्रकारे कहीने ते बधा जे दिशाएथी आव्या हता ते ज दिशा तरफ पाछा चाल्या गया (सू ५९)

मूलम्—तए णं से कूणिए राया भंभसारपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ–तुट्ठ–जाव–हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ, णमंसइ,

टीका—'तए ण से' इत्यादि। 'तए ण से कूणिए राया भभसारपुत्ते' तत खलु स कूणिको राजा भभसारपुत्र, 'समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्याऽन्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य, 'हट्ठ–तुट्ठ–जाव–हियए' हृष्ट–तुष्ट–यावद्धृदय 'उट्ठाए उट्ठेइ' ऊर्ध्वयोत्तिष्ठति, 'उट्ठित्ता' उत्थाय श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ' त्रिकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिण करोति, 'करित्ता' कृत्वा 'वदइ णमसइ' वन्दते नमस्यति, 'वदित्ता

'तए ण से कूणिए राया' इत्यादि।

(तए ण) अनन्तर (से कूणिए राया भभसारपुत्ते) भभसार के पुत्र उन कूणिक राजाने (समणस्स भगवओ महावीरस्स) श्रमण भगवान् महावीर के (अतिए) पास मे (धम्म सोच्चा) धर्मोपदेश सुनकर, (णिसम्म) एव उसका अच्छी तरह पूर्वापररूप से विचार कर, (हट्ठ–तुट्ठ–जाव–हियए) चित्त में अधिक से अधिक आनद एव सतोष प्राप्त किया, (उट्ठाए उट्ठेइ) बाद में अपने स्थान से उठे और (उट्ठित्ता) उठकर (समण भगव महावीरं तिक्खुत्तो अयाहिणपयाहिण करेइ करित्ता वदइ णमसइ) उन्होंने श्रमण भगवान महावीर की तीनवार आदक्षिणप्रदक्षिणपूर्वक वदना एव नमस्कार किया, (वदित्ता णमसित्ता एव

"तए ण से कूणिए राया" ઈત્યાદિ

(तए ण) ત્યાર પછી (से कूणिए राया भभसारपुत्ते) ભભસારના પુત્ર તે કૂણિક રાજાએ (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની (अतिए) પાસે (धम्म सोच्चा) ધર્મોપદેશ સાભળીને, (णिसम्म) તેમજ તેને સારી રીતે પૂર્વાપરરૂપથી વિચાર કરીને, (हट्ठ–तुट्ठ–जाव–हियए) મનમા બહુ જ આનદ તેમજ સતોષ પ્રાપ્ત કર્યો, (उट्ठाए उट्ठेइ) ત્યાર પછી પોતાના સ્થાનેથી ઉઠયા, અને (उट्ठित्ता) ઉઠીને (समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ करित्ता वदइ णमसइ) તેમણે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ત્રણ-વાર આદક્ષિણ-પ્રદક્ષિણપૂર્વક વદના તેમજ નમસ્કાર કર્યા (वदित्ता णमसित्ता

वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–सुअक्खाए ते भंते! णिग्गंथे पावयणे जाव किमग! पुण एत्तो उत्तरतरं? एवं वंदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥ सू०६० ॥

णमसित्ता एव वयासी' वदित्वा नमस्थित्वा एवमवादीत्–' **सुअक्खाए ते भते! णिग्गंथे पावयणे जाव किमग! पुण एत्तो उत्तरतर'** स्वाख्यात तव भदन्त! निर्ग्रन्थ प्रवचनम् यावत् किमङ्ग! पुनरेतस्मादुत्तरतरम्! '**एव वंदित्ता जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए'** एवम् उदित्वा यस्या एव दिश प्रादुर्भूत, तामेव दिश प्रतिगत ॥ सू० ६० ॥

वयासी) वदना एव नमस्कार कर फिर उन्हाने प्रभु से इस प्रकार कहा–**(सुअक्खाए ते भते! णिग्गथे पावयणे)** हे भदन्त! आपने निर्ग्रथ प्रवचन का उपदेश बहुत ही सुदर-पूर्वापरविरोधरहित–सर्वोत्कृष्ट किया है। **(जाव किमग पुण एत्तो उत्तरतरं)** इस निर्ग्रथ प्रवचन में ऐसा कोई सा भी विषय बाकी नहीं बचा जिस पर आपने प्रकाश न डाला हो–अच्छी तरह से विवेचन नहीं किया हो। आपने सब कुछ एक ही साथ बहुत ही अच्छी तरह मीठे शब्दों में समझा दिया है, हमने तो ऐसा उपदेश आजतक नहीं सुना, कल्याण एव जीवनके उपयोगी सब विषय आपने कहे है।–इत्यादि। **एव वंदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए)** इस प्रकार प्रभु की स्तुति रूप में कह कर कूणिक राजा जिस दिशा से आये थे उसी दिशा की ओर वहा से वापिस चले गये ॥ सू० ६० ॥

एव वयासी) वदना तेमज नमस्कार करीने पछी तेओ प्रभुने आ प्रकारे कह्युं–(सुअक्खाए ते भते! णिग्गथे पावयणे) हे भदन्त! आपणो आ निर्ग्रन्थ प्रवचननो उपदेश बहुज सुंदर–पूर्वापरविरोधरहित–सर्वोत्कृष्ट थयो छे (जाव किमग! पुण एत्तो उत्तरतर) आ निर्ग्रन्थ प्रवचनमा एवो कोई पण विषय बाकी रह्यो नथी जेना उपर आपे प्रकाश न नाख्यो होय–सारी रीतथी विवेचन न कर्युं होय आपे तमामे–तमाम एक साथेज बहुज सारी पेठे मीठा शब्दोमा समजावी दीधु छे अमे तो एवो उपदेश आज सुधी साभळ्यो नथी कल्याण तेमज जीवनमा उपयोगी बधा विषय आपे कह्या छे ईत्यादि (एव वंदित्ता जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए) आ प्रकारे प्रभुनी स्तुतिरूपमा कहीने कूणिक राजा जे दिशाएथी आव्या हता ते दिशा तरफ पाछा चाल्या गया (सू ६०)

मूलम्—तए णं ताओ सुभद्दापमुहाओ देवीओ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ–तुट्ठ–जाव–हिययाओ उट्ठेंति. उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति, करित्ता वंदंति णमंसंति,

टीका—'तए णं ताओ' इत्यादि। 'तए णं ताओ सुभद्दापमुहाओ देवीओ' ततः खलु ताः सुभद्राप्रमुखा देव्यः 'समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्याऽन्तिके 'धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ–तुट्ठ–जाव–हिययाओ' धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्ट–तुष्ट यावद्हृदयाः 'उट्ठाए उट्ठेंति' उत्थयोत्तिष्ठन्ति, 'उट्ठित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स' उत्थाय श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति' त्रिकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणं कुर्वन्ति, 'करित्ता वंदति णमंसति'

'तए णं ताओ सुभद्दापमुहाओ' इत्यादि।

(तए णं) इस के बाद (ताओ सुभद्दापमुहाओ देवीओ) वे सुभद्राप्रमुख देवियाँ भी (समणस्स भगवओ महावीरस्स) श्रमण भगवान महावीर के (अंतिए) समीप (धम्मं सोच्चा) धर्म श्रवण कर, एवं (णिसम्म) उसे हृदयंगम कर, (हट्ठ–तुट्ठ–जाव–हिययाओ) बहुत ही अधिक खुश एवं संतुष्ट होती हुई जहाँ वे खडी थीं वहाँ से (उट्ठाए उट्ठेंति) चल कर भगवान के समीप आयीं, (उट्ठित्ता) आकर उन्होंने (समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण–पयाहिणं करेंति करित्ता वंदति णमंसति) श्रमण भगवान् महावीर की तीन-

"तए णं ताओ सुभद्दापमुहाओ" ઇત્યાદિ

(तए णं) ત્યાર પછી (ताओ सुभद्दापमुहाओ देवीओ) તે સુભદ્રા–પ્રમુખ દેવીઓ પણ (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરના (अंतिए) સમીપે (धम्मं सोच्चा) ધર્મ–શ્રવણ કરીને, તેમજ (णिसम्म) તેને હૃદયંગમ કરીને (हट्ठ–तुट्ठ–जाव–हिययाओ) બહુજ ખુશ તેમજ સંતોષ પામતી જ્યાં તેઓ ઊભી હતી ત્યાંથી (उट्ठाए उट्ठेंति) ચાલીને ભગવાનની પાસે આવી, (उट्ठित्ता) આવીને તેઓએ (समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति, करित्ता वंदति णमंसति) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ત્રણવાર આદક્ષિણ

वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–सुअक्खाए ते भंते! णिग्गंथे पावयणे जाव किमंग! पुण एत्तो उत्तरतरं? एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए ॥ सू०६० ॥

णमंसित्ता एवं वयासी' वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्–'सुअक्खाए ते भंते! णिग्गंथे पावयणे जाव किमंग! पुण एत्तो उत्तरतरं' स्वाख्यातं तव भदन्त! निर्ग्रन्थ प्रवचनम् यावत् किमङ्ग! पुनरेतस्मादुत्तरतरम्! 'एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए' एवम् उदित्वा यस्या एव दिशः प्रादुर्भूत, तामेव दिशं प्रतिगत ॥ सू० ६० ॥

वयासी) वंदना एवं नमस्कार कर फिर उन्होंने प्रभु से इस प्रकार कहा–(सुअक्खाए ते भंते! णिग्गंथे पावयणे) हे भदन्त! आपने निर्ग्रन्थ प्रवचन का उपदेश बहुत ही सुंदर पूर्वापरविरोधरहित–सर्वोत्कृष्ट किया है। (जाव किमंग पुण एत्तो उत्तरतरं) इस निर्ग्रन्थ प्रवचन में ऐसा कोई सा भी विषय बाकी नहीं बचा जिस पर आपने प्रकाश न डाला हो–अच्छी तरह से विवेचन नहीं किया हो। आपने सब कुछ एक ही साथ बहुत ही अच्छी तरह मीठे शब्दों में समझा दिया है, हमने तो ऐसा उपदेश आजतक नहीं सुना, कल्याण एवं जीवनके उपयोगी सब विषय आपने कहे हैं।–इत्यादि। (एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए) इस प्रकार प्रभु की स्तुति रूप में कह कर कूणिक राजा जिस दिशा से आये थे उसी दिशा की ओर वहां से वापिस चले गये ॥ सू० ६० ॥

एवं वयासी) वंदना तेमज नमस्कार करीने पछी तेओ प्रभुने आ प्रकारे कह्युं–(सुअक्खाए ते भंते! णिग्गंथे पावयणे) हे भदन्त! आपणो आ निर्ग्रन्थ प्रवचननो उपदेश बहुज सुंदर–पूर्वापरविरोधरहित–सर्वोत्कृष्ट थयो छे (जाव किमंग! पुण एत्तो उत्तरतरं) आ निर्ग्रन्थ प्रवचनमां एवो कोई पण विषय बाकी रह्यो नथी जेना उपर आपे प्रकाश न नाख्यो होय–सारी रीतथी विवेचन न कर्युं होय आपे तमामे–तमाम एक साथेज बहुज सारी पेठे मीठा शब्दोमां समजावी दीधुं छे अमे तो एवो उपदेश आज सुधी सांभळ्यो नथी कल्याण तेमज जीवनमां उपयोगी बधा विषय आपे कह्या छे ईत्यादि. (एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए) आ प्रकारे प्रभुनी स्तुतिरूपमां कहीने कूणिक राजा जे दिशाएथी आव्या हता ते दिशा तरफ पाछा चाल्या गया (सू. ६०)

मूलम्—तए णं ताओ सुभद्दापमुहाओ देवीओ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हिययाओ उट्ठेति, उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति, करित्ता वंदंति णमंसंति,

टीका—'तए णं ताओ' इत्यादि। 'तए णं ताओ सुभद्दापमुहाओ देवीओ' ततः खलु ताः सुभद्राप्रमुखा देव्यः 'समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्याऽन्तिके 'धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हिययाओ' धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्ट-तुष्ट यावद्धृदयाः 'उट्ठाए उट्ठेंति' उत्थयोत्तिष्ठन्ति, 'उट्ठित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स' उत्थाय श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति' त्रिकृत्वः आदक्षिणप्रदक्षिणं कुर्वन्ति, 'करित्ता वंदति णमंसति'

'तए णं ताओ सुभद्दापमुहाओ' इत्यादि।

(तए णं) इस के बाद (ताओ सुभद्दापमुहाओ देवीओ) वे सुभद्राप्रमुख देवियाँ भी (समणस्स भगवओ महावीरस्स) श्रमण भगवान महावीर के (अंतिए) समीप (धम्मं सोच्चा) धर्म श्रवण कर, एवं (णिसम्म) उसे हृदयंगम कर, (हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हिययाओ) बहुत ही अधिक खुश एवं संतुष्ट होती हुई जहाँ वे खड़ी थीं वहाँ से (उट्ठाए उट्ठेंति) चल कर भगवान के समीप आयीं, (उट्ठित्ता) आकर उन्होंने (समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति करित्ता वंदति णमंसति) श्रमण भगवान् महावीर की तीन-

"तए णं ताओ सुभद्दापमुहाओ" ઇત્યાદિ

(तए णं) ત્યાર પછી (ताओ सुभद्दापमुहाओ देवीओ) તે સુભદ્રા-પ્રમુખ દેવીઓ પણ (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરના (अंतिए) સમીપે (धम्मं सोच्चा) ધર્મ-શ્રવણ કરીને, તેમજ (णिसम्म) તેને હૃદયગમ કરીને (हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हिययाओ) બહુજ ખુશ તેમજ સંતોષ પામતી જ્યાં તેઓ ઉભી હતી ત્યાંથી (उट्ठाए उट्ठेंति) ચાલીને ભગવાનની પાસે આવી, (उट्ठित्ता) આવીને તેઓએ (समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति, करित्ता वंदति णमंसति) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ત્રણવાર આદક્ષિણ

वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–सुअक्खाए ते भंते! णिग्गंथे पावयणे जाव किमंग! पुण एत्तो उत्तरतरं? एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥ सू०६० ॥

णमसित्ता एव वयासी' वन्दित्वा नमस्थित्वा एवमवादीत्–' सुअक्खाए ते भंते! णिग्गंथे पावयणे जाव किमंग! पुण एत्तो उत्तरतर' स्वाख्यात तव भदन्त! निर्ग्रन्थ प्रवचनम् यावत् किमङ्ग! पुनरेतस्मादुत्तरतरम्! ' एव वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए' एवम् उदित्वा यस्या एव दिश प्रादुर्भूत, तामेव दिश प्रतिगत ॥ सू० ६० ॥

वयासी) वदना एव नमस्कार कर फिर उन्होंने प्रभु से इस प्रकार कहा–(सुअक्खाए ते भते! णिग्गथे पावयणे) हे भदन्त! आपने निर्ग्रन्थ प्रवचन का उपदेश बहुत ही सुदर पूर्वापरविरोधरहित–सर्वोत्कृष्ट किया है। (जाव किमग पुण एत्तो उत्तरतरं) इस निर्ग्रन्थ प्रवचन में ऐसा कोई सा भी विषय बाकी नहीं बचा जिस पर आपने प्रकाश न डाला हो–अच्छी तरह से विवेचन नहीं किया हो। आपने सब कुछ एक ही साथ बहुत ही अच्छी तरह मीठे शब्दों में समझा दिया है, हमने तो ऐसा उपदेश आजतक नहीं सुना, कल्याण एव जीवनके उपयोगी सब विषय आपने कहे है।–इत्यादि। एव वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए) इस प्रकार प्रभु की स्तुति रूप में कह कर कूणिक राजा जिस दिशा से आये थे उसी दिशा की ओर वहा से वापिस चले गये ॥ सू० ६० ॥

एव वयासी) વદના તેમજ નમસ્કાર કરીને પછી તેઓ પ્રભુને આ પ્રકારે કહ્યું–(सुअक्खाए ते भते! णिग्गथे पावयणे) હે ભદન્ત! આપણો આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનનો ઉપદેશ બહુજ સુંદર–પૂર્વાપરવિરોધરહિત–સર્વોત્કૃષ્ટ થયો છે (जाव किमग! पुण एत्तो उत्तरतर) આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનમા એવો કોઈ પણ વિષય બાકી રહ્યો નથી જેના ઉપર આપે પ્રકાશ ન નાખ્યો હોય–સારી રીતથી વિવેચન ન કર્યું હોય આપે તમામે–તમામ એક સાથેજ બહુજ સારી પેઠે મીઠા શબ્દોમા સમજાવી દીધુ છે અમે તો એવો ઉપદેશ આજ સુધી સાભળ્યો નથી કલ્યાણ તેમજ જીવનમા ઉપયોગી બધા વિષય આપે કહ્યા છે ઇત્યાદિ. (एव वदित्ता जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए) આ પ્રકારે પ્રભુની સ્તુતિરૂપમા કહીને કૂણિક રાજા જે દિશાએથી આવ્યા હતા તે દિશા તરફ પાછા ચાલ્યા ગયા (સૂ ૬૦)

वदित्ता जामेव दिस पाउब्भूयाओ तामेव दिस पडिगयाओ ' एवम् उदित्वा यस्या एव दिश प्रादुर्भूता , तामेव दिश प्रतिगता ॥ सू० ६१ ॥

इति श्री–विश्वविख्यात–जगद्वल्लभ – प्रसिद्धवाचक – पञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक–प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक–वादिमानमर्दक–श्रीशाहूछत्रपति–कोल्हापुरराज–प्रदत्त–जैनशास्त्राचार्य–पदभूषित–कोल्हापुरराजगुरु–बालब्रह्मचारि–जैनाचार्य–जैन-धर्मदिवाकर–पूज्यश्रीघासीलालव्रतिविरचितायाम् औपपातिकसूत्रस्य पीयूषवर्षिण्याख्याया व्याख्याया समवरणनामक पूर्वार्द्ध सम्पूर्णम् ।

तामेव दिस पडिगयाओ) इस प्रकार भक्तिभाव से प्रभु की स्तुति करके वे सब रानियाँ जहा से आई थीं वहीं वापिस चली गयीं ॥ सू० ६१ ॥

॥इति औपपातिक सूत्रका समवसरणनामक पूर्वार्द्ध सपूर्ण ॥

जामेव दिस पाउब्भूयाओ तामेव दिस पडिगयाओ) આ પ્રકારે ભક્તિભાવથી પ્રભુની સ્તુતિરૂપે નિવેદન કરીને તેઓ બધી રાણીઓ જ્યાથી આવી હતી ત્યા પાછી ચાલી ગઇ (સૂ ૬૧)

ઈતિ ઔપપાતિક સૂત્રનુ સમવસરણ નામક પૂર્વાર્દ્ધ સ પૂર્ણ



वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–सुयक्खाए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे जाव किमंग ! पुण एत्तो उत्तरतरं ?, एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूयाओ तामेव दिसं पडिगयाओ ॥ सू०६१ ॥

॥ समोसरणं नाम पुव्वद्ध समत्त ॥

कृत्वा वन्दन्ते नमस्यन्ति, '**वंदित्ता णमसित्ता एव वयासी**' वन्दित्वा नमस्यि वैवमवादिषु - '**सुयक्खाए ते भते ! निग्गथे पावयणे जाव किमग ! पुण एत्तो उत्तरतर ?**' स्वाख्यात तव भदन्त ! निर्ग्रन्थ प्रवचनम् यावत् किमङ्ग ! पुनरेतस्मादुत्तरतरम् ? ' एव

वार आदक्षिणप्रदक्षिणपूर्वक वदना एव नमस्कार किया, (**वदित्ता णमंसित्ता एव वयासी**) वदना नमस्कार करने के अनन्तर फिर वे प्रभु से इस प्रकार बोलीं कि (**सुयक्खाए ते भंते ! णिग्गथे पावयणे**) आपने हे भदन्त ! इस निर्ग्रन्थ प्रवचन का उपदेश बहुत ही सुन्दर पूर्वापरविरोधरहित–सर्वोत्कृष्टरूप से किया है। (**जाव किमग ! पुण एत्तो उत्तरतर**) हे प्रभो ! आपने इस निर्ग्रन्थ प्रवचन में सब ही विषयों को अच्छी तरह समझाया है। कोइ भी विषय ऐसा नहीं रहा कि जिस पर आपकी वाणी का अविरल प्रवाह न बहा हो। सब कुछ आपने बहुत सरल भाषा में समझा दिया है। हमने तो आजतक इतना मार्मिक उपदेश नहीं सुना, इससे उत्तम उपदेश की बात ही कहाँ ' (**एव वदित्ता जामेव दिस पाउब्भूयाओ**

પ્રદક્ષિણપૂર્વક વદના તેમજ નમસ્કાર કર્યાં, (वदित्ता णमसित्ता एव वयासी) વદના–નમસ્કાર કરી લીધા પછી તેઓએ પ્રભુને આ પ્રકારે કહ્યુ કે (सुयक्खाए ते भते ! णिग्गथे पावयणे) આપે હે ભદન્ત ! આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનનો ઉપદેશ બહુજ સારીરીતે, પૂર્વાપરવિરોધરહિત તેમજ સર્વોત્કૃષ્ટ કર્યો છે (जाव किमंग ! पुण एत्तो उत्तरतर) હે પ્રભો ! આપે આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનમા બધાએ વિષયોને સારી રીતથી સમજાવ્યા છે કોઈ પણ વિષય એવો નથી રહ્યો કે જેના ઉપર આપની વાણીનો અવિરલ પ્રવાહ વહ્યો ન હોય, બધુય આપે બહુ સરલ ભાષામા સમજાવી દીધુ છે અમે તો આજ સુધીમા આટલો માર્મિક ઉપદેશ સાભળ્યો નથી આથી ઉત્તમ ઉપદેશની તો વાત જ કયા ? (एव वदित्ता

सत्तुस्सेहे सम-चउरंस-संठाण-संठिए वइर-रिसह-णाराय-संघयणे कणग-पुलग-णिघस-पम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे

समचतुरस्रम्-मानोन्मानप्रमाणानामन्यूनानधिकत्वात् अङ्गोपाङ्गाना चाविकलत्वात् ऊर्ध्वं तिर्यक् च तुल्यत्वात् सम, चतुरस्र चाविकलावयवत्वात्, सम च तच्चतुरस्र चेति समचतुरस्र-स्वाङ्गुलाष्टशतोच्छ्रायाङ्गोपाङ्गयुक्त, युक्तिनिर्मितलेप्यकवदवा, सस्थानम्=आकारविशेष, तेन सस्थित =युक्त, 'वइर-रिसह-णाराय-सघयणे' वज्र-र्षभ-नाराच-सहनन -वज्र= कीलिका, ऋषभ =पट्ट, नाराच =मर्कटबन्ध -उभयपार्श्वयोरस्थिबन्धविशेष, वज्रर्षभनाराचा सहनने=अस्थि बन्धविशेषे यस्य स वज्रर्षभनाराचसहनन, 'कणग-पुलग-णिघस-पम्ह-गोरे' कनक-पुलक-निकष-पद्मगौर -कनकस्य=सुवर्णस्य पुलको=लव -प्रफुल्लवर्तुलकणरूप, तस्य निकष =कषपट्टे कृष्टो रेखारूपो लक्षणया लक्ष्यते, पुलकस्य सशुद्धतया निकषे कृष्टा रेखाऽतीव चाकचिक्ययुक्ता भवति,अतएव तेनोपमानेनोपमित पद्मगौर -पद्मगर्भ =किञ्जल्क, तद्वद्गौर =कमनीयकान्ति, 'उग्गतवे' उग्रतपा, 'दित्ततवे' दीप्ततपा -दीप्त =प्रदीप्तो

स्सेहे) सात हाथ की अवगाहनायुक्त (वइर-रिसह-णाराय-सघयणे) [१]वज्र-ऋषभ-नाराचसहननधारी (कणग-पुलग-णिघस-पम्हगोरे) विशुद्ध सुवर्ण के खण्ड की शाण पर घसी हुई रेखा के समान चमकीली कान्ति वाले तथा कमल के केसर के समान गौरवर्ण (इदभूई णाम अणगारे) ऐसे गौतम नाम से प्रसिद्ध इन्द्रभूति नाम के अनगार गणधर थे। (उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे घोरतवे उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबभचेरवासी उच्छूढसरीरे सखित्तविउलतेयलेस्से) इनकी तपस्या बडी उग्र थी।

(१) इस सहनन में वज्र की सी कीले, वज्र के से हाड एव वज्र का सा पट्टबन्ध होता है।

सस्थान-स पन्न (सत्तुस्सेहे) सात हाथनी अवगाहनायुक्त (वइर-रिसह-णाराय-सघयणे) वज्र-[१]ऋषभ नाराच-सहनन धारी (कणग-पुलग-णिघस-पम्हगोरे) विशुद्ध सुवर्णना खडनी शाण पर घसेली रेखा जेवी चमकीली कांतिवाळा तथा कमळना केसरना जेवा गौरवर्ण (इदभूई णाम अणगारे) एवा गौतमनामथी प्रसिद्ध इद्रभूति नामना अनगार गणधर हता (उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे घोरतवे उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबभचेरवासी उच्छूढसरीरे सखित्त-विउल-तेयलेस्से) तेमनी तपस्या बहु उग्र हती कर्मरूपी वनने बाळवावाळा होवाथी तेमनु तप अग्निना जेवु प्र-

(१) आ सहननमा वज्रना जेवा खीला, वज्र जेवा हाड तेमज व[illegible] जेवा पट्टबध होय छे

अथ उत्तरार्द्धम्—

मूलम्—तेणं कालेण तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णाम अणगारे गोयमगोत्ते णं

टीका—'तेणं कालेण' इत्यादि। (तेणं कालेण तेणं समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स) तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य (जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णाम अणगारे) ज्येष्ठोऽन्तेवासीन्द्रभूतिनामा अनगार, ज्येष्ठः=प्रथमपर्यायेण सर्वश्रेष्ठत्वात्, 'अन्तेवासी=शिष्य, इन्द्रभूतिरितिनामक, अनगार=साधु, स कीदृश' इत्याह—'गोयमगोत्ते ण' गौतमगोत्र—गौतम=गौतमाख्य गोत्र यस्य स तथा 'ण' इति वाक्यालङ्कारे, 'सत्तुस्सेहे' सप्तोत्सेध—सप्तहस्त उत्सेध=उच्छ्रयो यस्य स तथा, 'सम-चउरस-सठाण-सठिए' सम—चतुरस्र—सस्थान—सस्थित—सम च तच्चतुरस्र चेति

उत्तरार्ध का अनुवाद प्रारंभ—

'तेण कालेण' इत्यादि।

(तेण कालेण तेण समएण) उस काल एव उस समय में (समणस्स भगवओ महावीरस्स) श्रमण भगवान् के महावीर के (जेट्ठे अतेवासी) 'बडे शिष्य (गोयमगोत्ते ण) गौतमगोत्री (सम—चउरस—सठाण—सठिए) समचतुरस्रसस्थानसपन्न (सत्तु-

(१) जिसमें अग एव उपाग की रचना सम—प्रमाणोपेत (जिसका जितना प्रमाण होना चाहिये उस माफिक) होती है, कमती बढती नहीं होती, उसका नाम 'समचतुरस्र-सस्थान' है। इसमें एक सौ आठ अगुल के उच्छ्राय वाले अग और उपाग होते है। आकार बडा ही सौम्य होता है।

ઉત્તરાર્ધના અનુવાદનો પ્રારભ—

'तेण कालेण' ઇત્યાદિ

(तेण कालेण तेण समएण) તે કાલ તેમજ તે સમયમા (समणस्स भगवओ महावीरस्स) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરના (जेट्ठे अतेवासी) મોટા શિષ્ય (गोयमगोत्ते ण) ગૌતમગોત્રી (समचउरस—सठाण—सठिए) 'સમચતુરસ્ર—

(૧) જેમા અગ તેમજ ઉપાગની રચના સમ—પ્રમાણોપેત (જેવુ જેટલુ પ્રમાણ હોવુ જોઈએ તે પ્રમાણે) હોય, વધુ ઘટ્ટ ન હોય તેનુ નામ 'સમચતુરસ્ર—સસ્થાન' છે આમા એકસો આઠ આગળ (તસુ) ના ઉચ્છ્રાયવાળા અગ તથા ઉપાગ હોય છે આકાર બહુજ સૌમ્ય હોય છે

सत्तुस्सेहे सम-चउरंस-संठाण-संठिए वइर-रिसह-णाराय-संघयणे कणग-पुलग-णिघस-पम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे

समचतुरस्रम्-मानोन्मानप्रमाणानामन्यूनानधिकत्वात् अङ्गोपाङ्गानां चाविकलत्वात् ऊर्ध्वं तिर्यक् च तुल्यत्वात् समं, चतुरस्रं चाविकलावयवत्वात्, समं च तच्चतुरस्रं चेति समचतुरस्रं-स्वाङ्गुलाष्टशतोच्छ्रायाङ्गोपाङ्गयुक्तं, युक्तिनिर्मितलेप्यकवद्वा, संस्थानम्=आकारविशेषः, तेन संस्थितः=युक्तः, 'वइर-रिसह-णाराय-संघयणे' वज्र-ऋषभ-नाराच-संहनन:-वज्रं=कीलिका, ऋषभः=पट्टः, नाराचः=मर्कटबन्धः-उभयपार्श्वयोरस्थिबन्धविशेषः, वज्रर्षभनाराचाः संहनने=अस्थ्नां बन्धविशेषे यस्य स वज्रर्षभनाराचसंहननः, 'कणग-पुलग-णिघस-पम्ह-गोरे' कनक-पुलक-निकष-पक्ष्मगौरः-कनकस्य=सुवर्णस्य पुलकः=लवः-प्रफुल्लवर्तुल-कणरूपः, तस्य निकषः=कषपट्टे कृष्टो रेखारूपो लक्षणया लक्ष्यते, पुलकस्य सद्युक्ततया निकषे कृष्टा रेखाऽत्यन्तं चाकचिक्ययुक्ता भवति, अतएव तेनोपमानेनोपमितः पक्ष्मगौरः-पद्मगर्भः=किञ्जल्कः, तद्वद्गौरः=कमनीयकान्तिः, 'उग्गतवे' उग्रतपाः, 'दित्ततवे' दीप्ततपाः-दीप्तः=प्रदीप्तो

स्सेहे) सात हाथ की अवगाहनायुक्त (वइर-रिसह-णाराय-संघयणे) [१]वज्र-ऋषभ-नाराचसंहननधारी (कणग-पुलग-णिघस-पम्हगोरे) विशुद्ध सुवर्ण के खण्ड की शाण पर घसी हुई रेखा के समान चमकीली कान्ति वाले तथा कमल के केसर के समान गौरवर्ण (इंदभूई णामं अणगारे) ऐसे गौतम नाम से प्रसिद्ध इन्द्रभूति नाम के अनगार गणधर थे। (उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे घोरतवे उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेस्से) इनकी तपस्या बडी उग्र थी।

(१) इस संहनन में वज्र की सी कीले, वज्र के से हाड एवं वज्र का सा पट्टबन्ध होता है।

संस्थान-सम्पन्न (सत्तुस्सेहे) सात हाथनी अवगाहनायुक्त (वइर-रिसह-णाराय-संघयणे) वज्र-[१]ऋषभ नाराच-संहनन धारी (कणग-पुलग-णिघस-पम्हगोरे) विशुद्ध सुवर्णना खंडनी शाण पर घसेली रेखा जेवी चमकीली कांतिवाळा तथा कमळना केसरना जेवा गौरवर्ण (इंदभूई णामं अणगारे) एवा गौतमनामथी प्रसिद्ध इंद्रभूति नामना अनगार गणधर हता (उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे घोरतवे उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउल-तेयलेस्से) तेमनी तपस्या बहु उग्र हती. कर्मरूपी वनने बाळवावाळा होवाथी तेमनुं तप अग्निना जेवुं बहु

(१) आ संहननमां वज्रना जेवा खीला, वज्र जेवा हाड तेमज वज्र जेवा पट्टबंध होय छे.

तत्ततवे घोरतवे उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी

हुताशन इव कर्मवनदाहकत्वेन जाज्वल्यमान तपो यस्य स तथा, 'तत्ततवे' तप्ततपा – तप्त=सविधि सेवित तपो येन स तप्ततपा, 'महातवे' महातपा =बृहत्तपोयुक्त, 'घोरतवे' घोरतपा =अतिकठिनतपोयुक्त, 'उराले' उदार, 'घोरे' घोर =भीम, अत्र कश्चिच्छङ्कते-य उदार स भीम कथम्? अस्योत्तरमाह–अतिकष्ट तप कुर्वन् अल्पशक्तिमता भयानको भवतीति निसर्ग । कश्चिद् वक्ति–उदार =प्रधान, घोरस्तु परीषहेन्द्रियकषायाऽऽख्याना रिपूणा विनाशे कठोर । केचिदात्मनिरपेक्षतया तपस्सु प्रवर्तमानत्वाद् घोर इत्याहु । 'घोरगुणे'

कर्मरूपी वन को जलाने वाला होने से इनका तप अग्नि की तरह अधिक जाज्वल्यमान था। तपस्या की आराधना ये विधिपूर्वक बडी सावधानी से करते थे। ये महातपस्वी थे। दूसरे मुनिजन जिन तपों को करना अति कठिन मानते थे, उन तपों को ये तपते थे। ये उदार एव घोर अर्थात् भयानक थे। प्रश्न–उदारता और भयानकता ये दोनों धर्म परस्परविरोधी हैं, क्यों कि जो उदार होता है वह भयानक नहीं होता और जो भयानक होता है वह उदार नहीं होता, अत इन दोनों बातों का यहा निर्वाह कैसे हो सकता है? उत्तर—ये अति-कठिन तपस्याओं को करते थे, अत अल्पशक्ति वालों को ये देखने में बडे भयानक-जैसे माल्रम देते थे, अर्थात् अल्पशक्ति वालों को इनसे डर लगता था, इस अपेक्षा इन्हे भयानक कहा गया है। कोई २ ऐसा भी कहते हैं कि 'उदार' शब्द का अर्थ 'प्रधान' है, एव 'घोर' शब्द का अर्थ 'कठोर' है। ये कठोर इसलिये थे कि परीषह, इन्द्रिय एव कषाय इन

જાજ્વલ્યમાન હતુ તપસ્યાની આરાધના તેઓ વિધિપૂર્વક બહુ સાવધાનીથી કરતા હતા તેઓ મહાતપસ્વી હતા બીજા મુનિજનો જે તપોને કરવાનુ બહુ કઠણુ માનતા હતા તેવા તપોને આ કરતા હતા તેઓ ઉદાર તેમજ ઘોર અર્થાત્ ભયાનક હતા

પ્રશ્ન—ઉદારતા અને ભયાનકતા એ બન્ને ધર્મ પરસ્પર વિરોધી છે, કેમકે જે ઉદાર હોય છે તે ભયાનક હોતા નથી અને જે ભયાનક હોય છે તે ઉદાર હોતા નથી, તો પછી આ બન્ને વાતોનો અહીં મેળ કેવી રીતે થઇ શકે?

ઉત્તર—આ અતિ કઠણુ તપસ્યાઓ કરતા હતા તેથી અલ્પશક્તિવા-ળાઓને તેઓ જોવામા ભયાનક જેવા દેખાતા હતા, અર્થાત્ અલ્પશક્તિ-વાળાઓને તેમનો ડર લાગતો હતો આ અપેક્ષાથી તેમને ભયાનક કહેલા છે કોઈ કોઇ એમ પણ કહે છે કે 'ઉદાર' શબ્દનો અર્થ 'પ્રધાન' છે, તેમજ 'ઘોર' શબ્દનો અર્થ 'કઠોર' છે તેઓ કઠોર એ માટે હતા કે પરિષહ.

उच्छूढसरीरे संखित्त-विउल-तेयलेस्से समणस्स भगवओ

घोरगुण –घोरा=अन्यैर्दुरद्वहा गुणा =मूलगुणादयो यस्य स तथा। 'घोरतवस्सी' घोरतपस्वी=दुष्करतपश्चरणशील,पारणादौ नानाविधाभिग्रहधारकत्वात्, 'घोर-बंभचेर-वासी' घोर-ब्रह्मचर्य-वासी-घोर=दारुणमल्पसत्त्वैर्दुर्वहत्वाद् यद् ब्रह्मचर्यं तत्र वसति तच्छील। 'उच्छूढसरीरे' उच्छूढशरीर –उच्छूढम्=उज्झितमिव संस्कारपरित्यागात् शरीरं येन स उच्छूढशरीर –शरीरसंस्कार प्रति नि स्पृहत्वात् त्यक्तशरीरसंस्कार। 'संखित्त-विउल-तेयलेस्से' संक्षिप्त-विपुल-तेजोलेश्य –संक्षिप्ता=निजशरीरान्तर्निहिता, विपुला=

रिपुओं के विनाश करने में निरत थे। कठोर बन बिना शत्रुओं का निवारण करना बडा ही मुश्किल होता है। कोई २ ऐसा भी कहते हैं कि तपस्याओं के तपने में ये अपनी निज आत्मा की परवाह ही नहीं करते थे, अत घोर थे। 'घोरगुणवाले' ये इसलिये थे कि इनके द्वारा धृत मूलगुण आदि अन्यजनों के लिये दुर्धारणीय थे, 'घोरतपस्वी' ये इसलिये थे कि जिस दिन पारणा का अवसर होता था उस दिन ये अनेक प्रकार के अभिग्रहों को धारण करते थे। 'घोर-ब्रह्मचर्य-वासी' ये इसलिये थे कि ये अल्पशक्ति वाले प्राणियों द्वारा दुर्वह होने से कठिनतर ऐसे ब्रह्मचर्य की आराधना में पूर्णनिष्ठ हो चुके थे। 'उच्छूढशरीर' ये इसलिये कहा है कि इन्हों ने अपने शरीर का संस्कार करना ही छोड दिया था। अत उनका शरीर ऐसा ज्ञात होता था कि मानो इन्होंने इसका परित्याग जैसा कर रखा है। 'संक्षिप्त-विपुल-तेजोलेश्य' ये इसलिये थे कि यद्यपि विशिष्ट तपस्या की

ઇન્દ્રિય તેમજ કષાય એ રિપુઓના વિનાશ કરવામા નિરત હતા કઠોર બન્યા વિના શત્રુઓનુ નિવારણ કરવુ બહુજ મુશ્કેલ થાય છે કોઈ કોઈ એમ પણ કહે છે કે તપસ્યા તપવામા તેઓ ખુદ પોતાના આત્માની પરવાહ પણ કરતા નહોતા આવી રીતે ઘોર હતા 'ઘોરગુણવાળા' તેઓ એ કારણથી હતા કે તેમના દ્વારા ગ્રહણ કરાયેલા મૂલગુણ આદિ ગુણો બીજાજનો માટે દુર્ધારણીય (ગ્રહણ ન કરી શકાય એવા) હતા 'ઘોરતપસ્વી' તેઓ એ માટે હતા કે જે દિવસે પારણાનો અવસર આવતો તે દિવસે તેઓ અનેક પ્રકારના અભિગ્રહોને ધારણ કરતા હતા 'ઘોર-બ્રહ્મચર્ય-વાસી' તેઓ એ માટે હતા કે તેઓ અલ્પશક્તિવાળા પ્રાણિઓ દ્વારા દુર્વહ (સહન ન થાય એવા) હોવાથી બહુ કઠણ એવી બ્રહ્મચર્યની આરાધનામા પૂર્ણનિષ્ઠ થઇ ચુક્યા હતા 'ઉચ્છૂઢશરીર' એમને એ માટે કહેતા કે તેમણે પોતાના શરીરના સંસ્કારો જ છોડી દીધા હતા આથી તેમનુ શરીર એવુ જણાતુ હતુ કે જાણે તેઓએ તેનો પરિત્યાગ જ કરી નાખ્યો હોય 'સંક્ષિપ્ત-

महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ सू. १ ॥

अनेकयोजनप्रमाणक्षेत्राऽन्तर्वर्तिवस्तुदहनसमर्थत्वाद् विशाला तेजोलेश्या=विशिष्टतपः-सम्भूतलब्धिविशेषोद्भवा तेजोज्वाला यस्य स तथाभूत सन् '**समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते**' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्याऽदूरसमीपे-अदूरसमीपे=नातिदूरे नातिसमीपे-उचितदेशे, '**उड्ढजाणू**' ऊर्ध्वजानु-ऊर्ध्वे जानुनी यस्य स ऊर्ध्वजानु-उत्कुटुकाऽऽसनवान्, '**अहोसिरे**' अधःशिरा=अधोमुखो, नोर्ध्वं न तिर्यग् वा क्षिप्तदृष्टि, '**झाण-कोट्ठो-वगए**' ध्यान-कोष्ठो-पगत-ध्यान कोष्ठ इव ध्यानकोष्ठस्तमुपगत, यथा कोष्ठगत धान्यं विकीर्णं न भवति तथैव ध्यानगता इन्द्रियान्त करणवृत्तयो बहिर्न यान्तीति

आराधना से इन्हे तेजोलेश्या प्राप्त हो चुकी थी, जिसकी इतनी सामर्थ्य होती है कि अनेक-योजनप्रमाण क्षेत्र के भीतर रही हुई वस्तुओं को वह क्षणमात्र में दग्ध कर डालती है, परन्तु ऐसी विपुल तेजोलेश्या को भी इन्होंने अपने शरीर के भीतर ही अन्तर्हित कर रखी थी, उसका उपयोग नहीं करते थे, और ये (**समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूर-सामते**) श्रमण भगवान् महावीर के न अतिदूर और न अतिनिकट, किन्तु पास ही कुछ दूरी पर (**उड्ढजाणू**) घुटनों को ऊँचाकर (**अहोसिरे**) शिर को नीचे कर के (**झाण-कोट्ठो-वगए**) ध्यानरूपी कोठे मे विराजमान थे, अर्थात् ध्यान म बैठे थे। ध्यान को जो कोष्ठ की उपमा दी है उसका हेतु यह है कि जिस प्रकार कोठे मे रहा हुआ धान्यादिक इतस्तत (**इधर-उधर**) नहीं बिखरता है उसी प्रकार ध्यानगत इन्द्रिय एव अन्त करण की वृत्तिया

વિપુલતેજોલેશ્ય' એ આથી હતા કે તેમને જે કે વિશિષ્ટ તપસ્યાની આરા-ધનાથી તેજોલેશ્યા પ્રાપ્ત થઈ ચૂકી હતી, જેનુ એટલુ સામર્થ્ય હોય છે કે અનેક યોજનના પ્રમાણ ક્ષેત્રની અદર રહેલી વસ્તુઓને તેઓ ક્ષણ માત્રમા બાળીને ભસ્મ કરી નાખે છે, પરતુ એવી વિપુલ તેજોલેશ્યાને પણ તેઓએ પોતાના શરીરની અદર જ અન્તર્હિત કરી રાખી હતી, તેનો ઉપયોગ કરતા નહોતા (समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते) તેઓ શ્રમણ ભગવાન મહા-વીરની બહુ દૂર નહિ તેમ બહુ પાસે નહિ પણ તેમની પાસે જ થોડે જ દૂર પર (उड्ढजाणू) ઘુટણો ઊચા કરીને (अहोसिरे) શિરને નમાવીને (झाण-कोट्ठो वगए) ધ્યાનરૂપી કોઠામા વિરાજમાન હતા-અર્થાત્ ધ્યાનમા બેઠા હતા ધ્યા નને જે કોઠાની ઉપમા આપી છે તેનો હેતુ એ છે કે જેમ કોઠામા ભરેલા ધાન્ય આદિક આમતેમ વિખરાઇ જતા નથી તેમ ધ્યાનમા ચોટેલી ઇન્દ્રિયો

मूलम्—तए णं से भगवं गोयमे जायसड्ढे जायसंसए

भाव, नियन्त्रितचित्तवृत्तिमानित्यर्थः, 'संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ' संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन्=वासयन् विहरति ॥ सू० १ ॥

टीका—'तए णं से' इत्यादि। 'तए णं से भगवं गोयमे' ततः खलु स भगवान् गौतमः 'जायसड्ढे' जातश्रद्धः—जाता=प्रागभूता संप्रति सामान्येन प्रवृत्ता श्रद्धा=तत्त्वनिर्णयविषयिका वाञ्छा यस्य स जातश्रद्धः, वक्ष्यमाणतत्त्वपरिज्ञानेच्छावानित्यर्थः, 'जायसंसए' जातसंशयः—जातः=प्रवृत्तः संशयो यस्य स तथोक्तः, संशयोत्पत्तिप्रकारस्त्वित्थम्—औपपातिकसूत्रं हि—आचाराङ्गस्योपाङ्गम्, तेनाचाराङ्गप्रथमश्रुतस्कन्धस्य प्रथमाध्ययनप्रथमोद्देशके य आत्मन उपपात उक्तः, तस्मिन् विषये वक्ष्यमाणसंशयोपस्या जात-

---

बाहर इधर-उधर नहीं हो सकती हैं। मानसिक प्रत्येक वृत्तियां इस अवस्था में नियंत्रित हो जाती हैं। ऐसे ये गौतम नामसे प्रसिद्ध इन्द्रभूति गणधर (संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) संयम एवं तप से सदा अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरते थे ॥सू. १॥

'तए णं से' इत्यादि।

(तए णं) परिषत् चले जाने के बाद (से भगवं गोयमे) वे भगवान् गौतम (जायसड्ढे) कि जिनके चित्तमें तत्त्व को निर्णय करने के लिये वाञ्छा हुई, कारण कि इन्हें (जायसंसए) इस प्रकार का संशय उद्भूत हुआ था कि यह औपपातिक सूत्र, आचारांग सूत्र का उपांग है, आचारांग सूत्र के प्रथम अध्ययन के प्रथम उद्देशक में जो आत्मा का उपपात कहा है सो किस प्रकार से कहा है? (जायकोऊहल्ले) अतः भगवान् मेरे संशयित

તેમજ અંતઃકરણની વૃત્તિઓ બહાર આમતેમ જઈ શકતી નથી માનસિક પ્રત્યેક વૃત્તિઓ આ અવસ્થામાં નિયંત્રિત થઈ જાય છે એવા આ ગૌતમ નામે પ્રસિદ્ધ ઇંદ્રભૂતિ ગણધર (संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) સંયમ તેમ જ તપથી સદા પોતાની આત્માને ભાવિત કરતા કરતા વિચરતા હતા (સૂ. ૧)

'तए णं से' ઈત્યાદિ

(तए णं) પરિષદ્ ચાલી ગયા પછી (से भगवं गोयमे) તે ભગવાન ગૌતમ (जायसड्ढे) કે જેના ચિત્તમાં તત્ત્વનો નિર્ણય કરવાની વાંછા થઈ, કારણ કે તેમને (जायससए) આ પ્રકારનો સંશય ઉત્પન્ન થયો હતો કે આ ઔપપાતિક સૂત્ર, આચારાંગ સૂત્રનું ઉપાંગ છે આચારાંગ સૂત્રના પ્રથમ અધ્યયનના પ્રથમ ઉદ્દેશકમાં જે આત્માનો ઉપપાત વર્ણવ્યો છે તે કેવા પ્રકારથી કહ્યો છે? (जायकोऊहल्ले) હવે ભગવાન મારા આ સંશયના પ્રશ્નનો ઉત્તર ન જાણે

जायकोऊहल्ले, उप्पण्णसड्ढे उप्पण्णसंसए उपण्णकोऊहल्ले, संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोऊहल्ले, समुप्पण्णसड्ढे समु-

मशय इति भाव । 'जायकोऊहल्ले' जातकुतूहल –जात कुतूहलम्=औत्सुक्यं यस्य स जातकुतूहल, मत्कृतप्रश्नस्य कीदृगुत्तरं भगवान् वक्ष्यति तच्छ्रोतुमौत्सुक्यवानित्यर्थ, 'उप्पण्णसड्ढे' उत्पन्नश्रद्ध –उपन्ना=विशेषेण जाता श्रद्धा यस्य स तथा, यद्वा–श्रद्धाया स्वरूपस्य तिरोहितत्वे जातश्रद्ध, तस्या स्वरूपस्य प्रादुर्भावे तु उत्पन्नश्रद्ध –इति भाव । 'उप्पण्णसंसए' उत्पन्नसंशय, 'उप्पण्णकोऊहल्ले' उत्पन्नकुतूहल, 'सजायसड्ढे' सजातश्रद्ध, प्रकर्षादिवाचक सशब्द, ततश्च सजाता=विशेषतरेण उत्पन्ना श्रद्धा यस्य स सजातश्रद्ध, 'सजायससए' सजातसशय, 'सजायकोऊहल्ले' सजातकुतूहल, 'समुप्पण्णसड्ढे' समुत्पन्नश्रद्ध –समुत्पन्ना=सर्वथा सजाता श्रद्धा यस्य स तथा,

प्रश्न का उत्तर न मालूम किस तरह का देगे? इस बात को जानने की उत्कण्ठा उनके चित्त मे बढ़ी, क्यों कि (उप्पण्णसड्ढे) भगवान के ऊपर ही उनके चित्त मे अतिशय श्रद्धा थी, अत उनसे ही निर्णय करने के लिये श्रद्धा उत्पन्न हुई। (उप्पण्णससए उप्पण्णकोऊहल्ले सजायसड्ढे सजायससए सजायकोऊहल्ले समुप्पण्णसड्ढे समुप्पण्णससए समुप्पण्णकोऊहल्ले) उत्पन्नसंशय, उत्पन्नकौतुहल'–इत्यादि पदों द्वारा वाच्यार्थ मे, अवग्रह, ईहा, अवाय, और धारणा ज्ञान की तरह उत्तरोत्तररूप से विशेषता द्योतन करने के लिए सूत्रकार ने 'जात, उत्पन्न, सजात, समुत्पन्न' इन पदों का प्रयोग किया है। भगवान् गौतम को जो चित्त में तत्त्व के निर्णय करने की इच्छा जागृत हुई वह पहिले सामान्यरूप में ही हुइ, कारण कि उन्हें संशय जो उत्पन्न हुआ था वह भी सामान्यरूप से ही हुआ था, इसी

કેવી રીતે આપશે? એ વાતને જાણવાની ઉત્કંઠા તેમના ચિત્તમા વધી, કેમકે (उप्पण्णसड्ढे) ભગવાનના ઉપરજ તેમના ચિત્તમા અતિશય શ્રદ્ધા હતી, હવે તેમની જ પાસેથી નિર્ણય કરવા માટે શ્રદ્ધા ઉત્પન્ન થઈ (उप्पण्णससए उप्पण्णकोऊहल्ले सजायसड्ढे सजायससए सजायकोऊहल्ले समुप्पण्णसड्ढे समुप्पण्णससए समुप्पण्णकोऊहल्ले) 'ઉત્પન્નસંશય ઉત્પન્નકૌતુહલ' ઇત્યાદિ પદો દ્વારા વાચ્યાર્થમા, અવગ્રહ, ઈહા, અવાય અને ધારણા જ્ઞાનની પેઠે ઉત્તરોત્તરરૂપથી વિશેષતાનો પ્રકાશ લાવવામાટે સૂત્રકારે 'जात उत्पन्न सजात समुत्पन्न' એ પદોનો પ્રયોગ કર્યો છે ભગવાન ગૌતમને જે ચિત્તમા તત્ત્વનો નિર્ણય કરવાની ઇચ્છા જાગ્રત થઈ તે પહેલા સામાન્યરૂપમાં જ થઇ હતી કારણ તેમને જે સંશય

प्पण्णसंसए समुप्पण्णकोऊहल्ले उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ करित्ता

'समुप्पण्णसंसए' समुत्पन्नश्रद्धा, 'समुप्पण्णकोऊहल्ले' समुत्पन्नकुतूहलः, श्रद्धा-दय शब्दा व्याख्याता एव। अत्रैव श्रद्धादौ कार्यकारणभाव । प्रश्नज्ञानेच्छारूपा श्रद्धा जाता, तस्या कारण-संशय कुतूहल चेति। 'उट्ठाए उट्ठेइ' उत्थया=उत्थानशक्त्या स्वासनात् उत्तिष्ठति, उत्थाय, 'जेणेव समणे भगवं महावीरे' यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरो विराजत इति शेष, 'तेणेव उवागच्छइ' तत्रैवोपागच्छति, 'उवागच्छित्ता' उपागत्य, 'समणं भगवं महावीरं' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य, 'तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ' त्रिकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, 'करित्ता' कृत्वा 'वंदइ णमंसइ'

तरह अपने प्रश्न के उत्तर को सुनने के लिये जो उनके चित्त में उत्कण्ठा जागृत हुई वह भी सामान्यरूप से ही। फिर बाद में 'उत्पन्नसड्ढे' आदि पदों द्वारा जो सूत्रकार ने श्रद्धा को उत्पन्न आदिरूप में प्रकट किया है उसमें श्रद्धा आदि में उत्तरोत्तर विशेषता जाननी चाहिये। इस प्रकार के वे गौतमप्रभु (उट्ठाए उट्ठेइ) उत्थानशक्ति द्वारा अपने स्थान से उठे और (उट्ठित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ) उठकर जहा प्रभु श्रमण भगवान् महावीर विराजमान थे वहाँ पहुँचे, (उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ) पहुँचते ही उन्होंने श्रमण भगवान् महावीर प्रभु को तीन बार आदक्षिण-प्रदक्षिण किया, (करित्ता वंदइ णमंसइ) फिर बाद में वन्दना एवं

ઉત્પન્ન થયો તે પણ સામાન્યરૂપથી જ થયો હતો. આવી જ રીતે પોતાના પ્રશ્નનો ઉત્તર સાંભળવાને માટે તેમના ચિત્તમાં જે ઉત્કંઠા જાગ્રત થઈ તે પણ સામાન્યરૂપની જ હતી પણ ત્યાર પછી (उप्पण्णसड्ढे) આદિ પદો દ્વારા જે સૂત્રકારે શ્રદ્ધાને ઉત્પન્ન આદિ રૂપથી પ્રકટ કરી છે તેવી શ્રદ્ધા આદિમા ઉત્તરોત્તર વિશેષતા જાણવી જોઈએ. આ પ્રકારના તે ગૌતમ પ્રભુ (उट्ठाए उट्ठेइ) ઉત્થાનશક્તિ દ્વારા પોતાના સ્થાનથી ઉઠયા, અને (उट्ठित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ) ઉઠીને જ્યાં પ્રભુ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર બિરાજમાન હતા ત્યાં પહોંચ્યા (उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ) પહોંચતાં જ તેમણે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુને ત્રણ

जायकोऊहल्ले, उप्पण्णसड्ढे उप्पण्णसंसए उपण्णकोऊहल्ले, संजायसड्ढे संजायसंसए सजायकोऊहल्ले, समुप्पण्णसड्ढे समु-

सशय इति भाव । '**जायकोऊहल्ले**' जातकुतूहल—जात कुतूहलम्=औत्सुक्य यस्य स जातकुतूहल, मत्कृतप्रश्नस्य कीदृगमुत्तरं भगवान वक्ष्यति त श्रोतुमौत्सुक्यवानित्यर्थ, '**उप्पण्णसड्ढे**' उत्पन्नश्रद्ध—उत्पन्ना=विशेषेण जाता श्रद्धा यस्य स तथा, यद्वा—श्रद्धाया स्वरूपस्य तिरोहितत्वे जातश्रद्ध, तस्या स्वरूपस्य प्रादुर्भावे तु उत्पन्नश्रद्ध—इति भाव । '**उप्पण्णससए**' उत्पन्नसंशय, '**उप्पण्णकोऊहल्ले**' उत्पन्नकुतूहल, '**सजायसड्ढे**' सजातश्रद्ध, प्रकर्षादिवाचक सशब्द, ततश्च सजाता=विशेषतरेण उत्पन्ना श्रद्धा यस्य स सजातश्रद्ध, '**सजायससए**' सजातसशय, '**सजायकोऊहल्ले**' सजातकुतूहल, '**समुप्पण्णसड्ढे**' समुत्पन्नश्रद्ध—समुत्पन्ना=सर्वथा सजाता श्रद्धा यस्य स तथा,

---

प्रश्न का उत्तर न मालूम किस तरह का देगे ? इस बात को जानने का उत्कण्ठा उनके चित्त मे बढी, क्यों कि (**उप्पण्णसड्ढे**) भगवान के ऊपर ही उनके चित्त मे अतिशय श्रद्धा थी, अत उनसे ही निर्णय करने के लिये श्रद्धा उत्पन्न हुई। (**उप्पण्णससए उप्पण्णकोऊहल्ले सजायसड्ढे सजायससए सजायकोऊहल्ले समुप्पण्णसड्ढे समुप्पण्णससए समुप्पण्णकोऊहल्ले**) उत्पन्नसशय, उत्पन्नकौतुहल'—इत्यादि पदों द्वारा वाच्यार्थ मे, अवग्रह, ईहा, अवाय, और धारणा ज्ञान की तरह उत्तरोत्तररूप से विशेषता द्योतन करने के लिए सूत्रकार ने '**जात, उत्पन्न, सजात, समुत्पन्न**' इन पदों का प्रयोग किया है। भगवान् गौतम को जो चित्त में तत्त्व के निर्णय करने की इच्छा जागृत हुई वह पहिले सामान्यरूप में ही हुई, कारण कि उन्हे सशय जो उत्पन्न हुआ था वह भी सामान्यरूप से ही हुआ था, इसी

કેવી રીતે આપશે? એ વાતને જાણવાની ઉત્કંઠા તેમના ચિત્તમા વધી, કેમકે (ઉપ્પણ્ણસડ્ઢે) ભગવાનના ઉપરજ તેમના ચિત્તમા અતિશય શ્રદ્ધા હતી, હવે તેમની જ પાસેથી નિર્ણય કરવા માટે શ્રદ્ધા ઉત્પન્ન થઈ (उप्पण्णससए उप्पण्णकोउहल्ले सजायसड्ढे सजायससए सजायकोउहल्ले समुप्पण्णसड्ढे समुप्पण्णससए समुप्पण्णकोउहल्ले) 'ઉત્પન્નસંશય ઉત્પન્નકૌતુહલ' ઇત્યાદિ પદો દ્વારા વાચ્યાર્થમા, અવગ્રહ, ઇહા, અવાય અને ધારણા જ્ઞાનની પેઠે ઉત્તરોત્તરરૂપથી વિશેષતાનો પ્રકાશ લાવવામાટે સૂત્રકારે 'जात उत्पन्न सजात समुत्पन्न' એ પદોનો પ્રયોગ કર્યો છે ભગવાન ગૌતમને જે ચિત્તમા તત્ત્વનો નિર્ણય કરવાની ઇચ્છા જાગ્રત થઈ તે પહેલા સામાન્યરૂપમા જ થઈ હતી કારણ તેમને જે સશય

हय-पच्चक्खाय-पावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंत-वाले एगंतसुत्ते पावकम्मं अण्हाइ ?, हंता ! अण्हाइ ॥ सू०३ ॥

निरहित, तथा-'अ-प्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे' अ-प्रतिहत-प्रत्याख्यात-पापकर्मा-प्रतिहतानि अतीतकालकृतानि निन्दाद्वारेण, प्रत्याख्यातानि भविष्यत्कालभावीनि निवृत्तिद्वारेण, पापकर्माणि=प्राणातिपातादिरूपाणि येन स प्रतिहत-प्रत्याख्यात पापकर्मा, भूतभाविपापनिषेधाभावेन यस्तथा न भवति स -अ-प्रतिहत प्रत्याख्यात पापकर्मा, अतएव-'सकिरिए' सक्रिय =कायिक्यादिक्रियायुक्त, 'असवुडे' असंवृत =अनिरुद्धेन्द्रिय, 'एगंतदंडे' एकान्तदण्ड -एकान्तेनैव= सर्वथैव दण्ड- यत्यात्मान पर वा पापप्रवृत्तितो य स एकान्तदण्ड, 'एगंतवाले' एकान्त-बाल -सर्वथा मिथ्यादृष्टि, अतएव-'एगंतसुत्ते' एकान्तसुप्त =सर्वथा मिथ्यात्वनिद्रया प्रसुप्त, 'पावकम्म' पापकर्म=प्राणातिपातादिकर्म 'अण्हाइ' आस्रवति=बध्नाति किम् ?, भगवानाह-'हंता अण्हाइ' हन्ताऽऽस्रवति-हन्त इति स्वीकारे, आस्रवति=बध्नाति इदमुत्तरवाक्यम् ॥सू० ३॥

अनुष्ठान करने मे लगा हुआ है, (अविरए) प्राणातिपातादिक से जिसने विरति धारण नहीं की है, तथा (अ-प्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे) लगे हुए पापकर्मों का निंदा द्वारा तथा भविष्यत् काल मे बधनेवाले पापकर्मो का प्रत्याख्यान-निवृत्ति-द्वारा जिसने परित्याग नहीं किया है, (सकिरिए) कायिकी आदि क्रियाओं से जो युक्त है, इसलिये (असवुडे) असंवृत-अनिरुद्धेन्द्रिय बना हुआ है, (एगंतदडे) अपने को अथवा परको जो पापमय प्रवृत्ति से दडित-दुखित करता रहता है, जो (एगतवाले) एकान्तमिथ्यादृष्टि है और (एगतसुत्ते) सर्वथा मिथ्यात्व की निद्रा मे गाढ सुप्त बना हुआ है, वह (पावकम्मं) पापकर्म-प्राणातिपातादिक कर्मो का (अण्हाइ) बन्ध करता है क्या ? तब भगवान् ने कहा, (हता) हा गौतम ! (अण्हाइ) बन्ध करता है।

सर्व सावद्य अनुष्ठान करवामा तत्पर रहेलो छे, (अविरए) प्राणातिपात आदिकथी जेणे विरति धारण करी नथी, तथा (अ-प्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे) लागी रहेला पापकर्मोनो निंदा द्वारा, तथा भविष्य काळमा बधानारा पापकर्मोनो प्रत्याख्यान-निवृत्ति-द्वारा, जेणे परित्याग कर्यो नथी, (सकिरिए) कायिकी आदि क्रियाओथी जे युक्त छे, तेथी (असवुडे) असंवृत-अनिरुद्ध इंद्रियोवाळो बन्यो छे, (एगतदडे) पोताने अथवा परने जे पापमय प्रवृत्तिथी दंडित-दुखित कर्या करे छे एवो ते (एगतवाले) एकांत मिथ्यादृष्टि के जे (एगतसुत्ते) सर्वथा मिथ्यात्वनी घोर निद्रामा सुतेलो छे, ते (पावकम्म) पापकर्म- प्राणातिपात आदिक कर्मोनो (अण्हाइ) बंध करे छे के शुं ? त्यारे भगवाने कह्युं-(हता) हा गौतम ! (अण्हाइ) बंध करे छे

वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता नच्चासण्णे नाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी ॥ सू०२ ॥

मूलम्—जीवे णं भंते ! असंजए अविरए अ-प्पडि-

वन्दते नमस्यति, 'वंदित्ता णमंसित्ता' वन्दित्वा नमस्यित्वा, 'नच्चासण्णे नाइदूरे' नात्यासन्ने नातिदूरे 'सुस्सूसमाणे णमंसमाणे' शुश्रूषमाणो नमस्यन् 'अभिमुहे विणएण पंजलिउडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी' अभिमुखे विनयेन प्राञ्जलिपुटः पर्युपासीन एवमवादीत् । प्राग् व्याख्यातम् ॥ सू०२ ॥

टीका—अथात्मन उपपातस्य कर्मबन्धपूर्वकत्वात् कर्मबन्धविषये पृच्छति-'जीवे णं भंते!' इत्यादि । 'जीवे णं भंते !' जीवः खलु भदन्त !=भगवन् ! 'असंजए' असंयतः=असंयमवान्—सर्वसावद्यानुष्ठानयुक्तः, 'अविरए' अविरतः=प्राणातिपातादिनिर-

नमस्कार किया, (वंदित्ता णमंसित्ता नच्चासण्णे नाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी) वंदना नमस्कार करने के बाद फिर वे प्रभु के निकट सामने ही, न उनसे अति दूर न उनके अतिनिकट ही, किन्तु उचित स्थान पर विनयावनत होकर दोनों हाथों को जोडकर बैठ गये, पश्चात् इस प्रकार बोले ॥सू २॥

'जीवे णं भंते !' इत्यादि ।

गौतमने भगवान् से क्या पूछा ? इस बात को इस सूत्र द्वारा सूत्रकार प्रदर्शित करते है—(भंते) हे भदंत ! जो (जीवे) जीव (असंजए) असंयमी है—सर्व सावद्य

वार આદક્ષિણપ્રદક્ષિણ કર્યું, (करित्ता वंदइ णमंसइ) પછી વંદના નમસ્કાર કર્યા (वंदित्ता णमंसित्ता नच्चासण्णे नाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी) વંદના નમસ્કાર કર્યા પછી તેઓ પ્રભુની પાસે સામે જ, ન બહુ દૂર કે ન બહુ પાસે પણ—ઉચિત સ્થાને, વિનયથી નમ્ર બનીને બન્ને હાથ જોડીને બેસી ગયા પછી આ પ્રકારે બોલ્યા (સૂ. ૨)

'जीवे णं भंते' ઈત્યાદિ

ગૌતમે ભગવાનને શું પૂછયું ?—એ વાતને આ સૂત્રદ્વારા સૂત્રકાર પ્રદર્શિત કરે છે—(भंते) હે ભદન્ત ! જે (जीवे) જીવ (असंजए) અસંયમી છે-

मूलम्—जीवे णं भंते ! मोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे किं मोहणिज्जं कम्मं बंधइ ?, वेयणिज्जं कम्मं बंधइ ? गोयमा ! मोहणिज्जं पि कम्मं बंधइ, वेयणिज्जं पि कम्मं बंधइ, णण्णत्थ चरिम-

टीका—'जीवे णं भंते !' इत्यादि । 'जीवे णं भंते !' जीव खलु भदन्त ! 'मोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे' मोहनीय कर्म वेदयन्=अनुभवन् 'किं मोहणिज्जं कम्मं बंधइ' किं मोहनीय कर्म बध्नाति ?, अथवा—'वेयणिज्जं कम्मं बंधइ ?' वेदनीय कर्म बध्नाति किम् ? इति प्रश्ने भगवानुत्तरमाह—'गोयमा ! मोहणिज्जं पि कम्मं बंधइ वेयणिज्जं पि कम्मं बंधइ' गौतम ! मोहनीयमपि कर्म बध्नाति वेदनीयमपि कर्म बध्नाति, 'णण्णत्थ चरिममोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे' केवल चरममोहनीय कर्म वेदयन्, 'णण्णत्थ' इति नवरं—केवलमित्यर्थः, सूक्ष्मसम्परायदशमगुणस्थानके लोभमोहनीयसूक्ष्मकि-

'जीवे णं भंते' इत्यादि ।

(भंते) हे भदन्त ! (मोहणिज्जं कम्मं) मोहनीय कर्म का (वेदेमाणे) अनुभव करने वाला (जीवे णं) जीव (किं) क्या (मोहणिज्जं कम्मं) मोहनीय कर्म का (बंधइ) बन्ध करता है ? (वेयणिज्जं कम्मं बंधइ) अथवा वेदनीय कर्म का बंध करता है ? इन दो प्रश्नों का उत्तर प्रभु इस प्रकार देते है—(गोयमा) हे गौतम ! (मोहणिज्जं पि कम्मं बंधइ वेयणिज्जं पि कम्मं बंधइ) मोहनीय कर्म का अनुभव करनेवाला जीव मोहनीय कर्म का भी बंध करता है और वेदनीय कर्म का भी बंध करता है, (णण्णत्थ चरिममोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे वेयणिज्जं कम्मं बंधइ) केवल सूक्ष्मसंपराय नामके १० वे गुणस्थान में चरम—मोहनीय—सूक्ष्मलोभ—को वेदन करनेवाला जीव वेदनीय कर्म का बंध करता है, क्यों कि अयोगी-

'जीवे णं भंते' ઇત્યાદિ

(भंते) હે ભદન્ત ! (मोहणिज्जं कम्मं) મોહનીય કર્મનો (वेदेमाणे) અનુભવ કરવાવાળો (जीवे) જીવ (किं) શું (मोहणिज्जं कम्मं) મોહનીય કર્મનો (बंधइ) બંધ કરે છે ? (वेयणिज्जं कम्मं बंधइ) અથવા વેદનીય કર્મનો બંધ કરે છે? આ બે પ્રશ્નોના ઉત્તર પ્રભુ આ પ્રકારે આપે છે—(गोयमा) હે ગૌતમ ! (मोहणिज्जं पि कम्मं बंधइ वेयणिज्जं पि कम्मं बंधइ) મોહનીય કર્મનો અનુભવ કરનારા જીવ મોહનીય કર્મનો પણ બંધ કરે છે અને વેદનીય કર્મનો પણ બંધ કરે છે (णण्णत्थ चरिममोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे वेयणिज्जं कम्मं बंधइ) કેવલ સૂક્ષ્મ સંપરાય નામના ૧૦ દશમા ગુણસ્થાનમાં ચરમ મોહનીય—સૂક્ષ્મલોભનું વેદન

मूलम्—जीवे णं भंते ! असंजए जाव एगंतसुत्ते मोहणिज्जं पावकम्मं अण्हाइ ? हंता ! अण्हाइ ॥ सू०४ ॥

टीका—'जीवे णं भंते !' इत्यादि। 'जीवे णं भंते !' जीवः खलु भदन्त ! 'असंजए जाव एगंतसुत्ते' असंयतो यावदेकान्तसुप्तः 'मोहणिज्जं पावकम्मं' मोहनीयं पापकर्म 'अण्हाइ' आस्रवति=बध्नाति किम् ?—इति प्रश्ने, उत्तरमाह—'हंता ! अण्हाइ' हन्त ! आस्रवति=बध्नातीत्यर्थः ॥ सू० ४ ॥

भावार्थ—जो जीव असंयमी है, सावद्य अनुष्ठानों से निवृत्त नहीं हुआ है, पूर्वकृत पापकर्मों की जिसने निंदा नहीं की, तथा भविष्यत्–काल में मैं ऐसे पापकर्म नहीं करूँगा–इस प्रकार अकरणभाव से जिसने उनका परित्याग नहीं किया, कायिकी आदि क्रियाओं में जो मग्न है, स्वयं दुःखित होता है और दूसरों को भी अपनी कुत्सित प्रवृत्ति से दुःखित करता रहता है ऐसा मिथ्यात्व की गाढ अंधेरी में रहा हुआ मिथ्यादृष्टि जीव पापकर्मों का बंधक होता है या नहीं ?—इस प्रकार गौतम के प्रश्न को सुनकर प्रभु ने कहा–हां ! होता है ॥ सू० ३ ॥

'जीवे णं भंते !' इत्यादि।

(जीवे णं भंते ! असंजए जाव एगंतसुत्ते) हे भदंत ! वही पूर्वोक्त असंयम आदि अवस्था से लेकर सर्वथा मिथ्यात्वरूपी गाढनिद्रा में प्रसुप्त असंयमी मिथ्यादृष्टि जीव (मोहणिज्जं) मोहनीय कर्म का (अण्हाइ) बंध करता है क्या ? (हंता) हां गौतम ! (अण्हाइ) बन्ध करता है ॥ सू० ४ ॥

ભાવાર્થ—જે જીવ અસંયમી છે, સાવદ્ય અનુષ્ઠાનોથી નિવૃત્ત થતો નથી, પૂર્વે કરેલા પાપ કર્મોની જેણે નિંદા કરી નથી, તથા ભવિષ્ય કાલમાં એવા પાપ કર્મ હું નહિ કરૂં—એ પ્રકારના અકરણભાવથી જેણે તેનો પરિત્યાગ કર્યો નથી, કાયિકી આદિ ક્રિયાઓમાં જે મગ્ન છે, પોતે દુઃખિત થાય છે અને બીજાને પણ પોતાની કુત્સિત પ્રવૃત્તિથી દુઃખિત કરે છે એવા મિથ્યાત્વના ગાઢ અંધારામાં રહેલો એવો મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવ પાપકર્મોનો બંધક થાય છે યા નહિ ? આ પ્રકારના ગૌતમનો પ્રશ્નને સાંભળીને પ્રભુએ કહ્યું—હા ! થાય છે (સૂ. ૩)

'जीवे णं भंते' ઇત્યાદિ

(जीवे णं भंते ! असंजए जाव एगंतसुत्ते) હે ભદન્ત ! ઉપર કહેલ અસંયમ આદિ અવસ્થાથી લઈને સર્વથા મિથ્યાત્વરૂપી ગાઢ નિદ્રામાં સુતેલા અસંયમી–મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવ (मोहणिज्जं) મોહનીય કર્મનો (अण्हाइ) બંધ કરે છે શું ? (हंता) હા ગૌતમ ! (अण्हाइ) બંધ કરે છે (સૂ. ૪)

मूलम्—जीवे णं भंते ! असंजए जाव एगंतसुत्ते उस्सण्ण-तस-पाण-घाई कालं किच्चा णेरइएसु उववज्जइ ?, हंता ! उववज्जइ ॥ सू० ६ ॥

मूलम्—जीवे णं भंते ! असंजए अविरए अ-प्पडिहय-प-

टीका—अथोपपात पृच्छति-'जीवे ण भते ! ' इत्यादि। 'जीवे ण भते" जीव खलु हे भदन्त ! 'असजए जाव एगतसुत्ते' असयतो यावदेकान्तसुप्त-प्राग्-व्याख्यात, 'उस्सण्ण-तस-पाण-घाई' प्रायस्त्रस-प्राण-घाती-'उस्सण्ण' इतिप्रा य= बाहुल्येन त्रसप्राणान्=त्रसप्राणिनो हन्ति तच्छील, 'कालमासे' मरणसमये, 'काल किच्चा' कालं कृत्वा-मरण निधाय, 'णेरइएसु उववज्जइ' नैरयिकेषूत्पद्यते किम् ? इति प्रश्ने, उत्तरमाह भगवान्-'हता ! उववज्जइ' हन्त ! उपपद्यते=नारकेषु जायते ॥ सू०६ ॥

टीका—'जीवे ण भते' इत्यादि। 'जीवे ण भते ! ' जीव खलु हे

'जीवे ण भंते !' इत्यादि !

गौतम उपपात के विषय में पूछते हैं-(जीवे ण भते ! असजए जाव एगतसुत्ते उस्सण्ण-तसपाण-घाई) हे भदत ! वही पूर्वोक्त असयम आदि अवस्था से लेकर सर्वथा मिथ्यात्वरूपी गाढनिद्रा में प्रसुप्त मिथ्यादृष्टि जीव जो बहुलता से त्रसजीवों की हिंसा करने में लवलीन रहा करता है वह (कालमासे) मृत्यु के समय में (काल किच्चा) मर कर (णेरइएसु) नारकियों में (उववज्जइ) उत्पन्न होता है क्या ? उत्तर-(हता) हा गौतम ! (उववज्जइ) उत्पन्न होता है ॥ सू ६ ॥

'जीवे ण भते' ईत्यादि

ગૌતમ ઉપપાતના વિષયમા પૂછે છે-(जीवेण भने ! असजए जाव एगत सुत्ते उस्सण्ण-तस-पाण-घाई) હે ભદન્ત ! ઉપર કહેલ અસયમ આદિ અવસ્થાથી લઈને સર્વથા મિથ્યાત્વ રૂપી ગાઢનિદ્રામા સુતેલે મિથ્યાદષ્ટિ જીવ જે ઘણેખરે ત્રસ જીવોની હિંસા કરવામા મચ્યો રહે છે, તે (कालमासे) મૃત્યુ-સમયે (काल किच्चा) મરીને (णेरइएसु) નારકીઓમા (उववज्जइ) ઉત્પન્ન થાય છે શુ ? ઉત્તર-(हता) હા ગૌતમ ! (उववज्जइ) ઉત્પન્ન થાય છે. (સૂ ६)

मोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे वेयणिज्जं कम्मं बंधइ, णो मोहणिज्जं कम्मं बंधइ ॥ सू०५ ॥

ट्टिकारूप चरममोहनायमियुच्यते, तद्वेदयन् जीव, 'वेयणिज्जं कम्मं बधइ' वेदनीय कर्म वध्नाति, यतो हि अयोगिन एव वेदनीयकर्मणो बन्धाभाव, 'णो मोहणिज्ज कम्म बधइ' नो मोहनाय कर्म बध्नाति–सूक्ष्मसपरायस्य मोहनीयायुष्कवर्जाना पण्णामेव प्रकृतीना बन्धकत्वादिति ॥ सू० ५ ॥

नामक चौदहवें गुणस्थान मे ही वेदनीयकर्म के बन्ध का अभाव है, (णो मोहणिज्ज कम्मं बधइ) इसलिये सूक्ष्मसपराय वाला जीव मोहनीय एव आयुकर्म को छोडकर शेष ज्ञानावरणीयादि छ प्रकृतियों का बन्धक होता है।

भावार्थ—प्रश्न इस प्रकार है कि मोहनीय कर्म का वेदन करने वाला जीव मोहनीय कर्म का बध करता है कि वेदनीय कर्म का बन्ध करता है? उत्तर–वेदनीय कर्म का भी बध करता है और मोहनीय कर्म का भी बध करता है, परन्तु अन्तिम मोहनीय–सूक्ष्मलोभ का क्षय करते समय (बारहवें गुणस्थान में) वेदनीय कर्म का तो बध करता है परन्तु मोहनीय कर्म का बध नहीं करता। कारण कि मोहनीय कर्म का क्षय १० वे गुणस्थान मे ही हो जाता है, आगे सिर्फ ११ वेदनीय कर्म का बध होता है सो यह भी केवल तेरहवे गुणस्थान तक ही जानना चाहिये, क्यों कि १४ वें गुणस्थान में वेदनीय कर्म के बध का अभाव है ॥ सू ५ ॥

કરનારા જીવ વેદનીય કર્મનો બધ કરે છે કેમકે અયોગી નામના ચૌદમા ગુણસ્થાનમા જ વેદનીય કર્મના બધનો અભાવ છે (णो मोहणिज्ज कम्म बधइ) આ માટે સૂક્ષ્મસપરાયવાળા જીવ મોહનીય તેમજ આયુકર્મને છોડીને બાકીની જ્ઞાનાવરણીય આદિ છ પ્રકૃતિઓના બધક થાય છે

ભાવાર્થ–પ્રશ્ન એવા પ્રકારનો છે કે મોહનીયકર્મનુ વેદન કરવાવાળો જીવ મોહનીય કર્મનો બધ કરે છે કે વેદનીય કર્મનો બધ કરે છે?

ઉત્તર–વેદનીય કર્મનો બધ કરે છે અને મોહનીય કર્મનો પણ બધ કરે છે પરતુ અતિમ મોહનીય સૂક્ષ્મલોભનો ક્ષય કરતી વખતે (બારમા ગુણસ્થાનમા) વેદનીય કર્મનો તો બધ કરે જ છે, પરતુ મોહનીય કર્મનો બધ કરતા નથી, કારણ કે મોહનીય કર્મનો ક્ષય ૧૦ મા ગુણસ્થાનમા જ થઈ જાય છે આગળ માત્ર ૧ વેદનીય કર્મનો જ બધ થાય છે, અને તે પણ કેવળ તેરમા ગુણસ્થાન સુધી જ જાણવો જોઈએ, કેમકે ૧૪ મા ગુણસ્થાનમા વેદનીય કર્મના બધનો અભાવ છે (સૂ ૫)

देवे सिया, अत्थेगइया णो देवे सिया? गोयमा! जे इमे जीवा गामा-गर-णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणा-सम-संवाह सण्णिवेसेसु अकामतण्हाए अकाम-

कश्चो देवः स्यात्, अथ एकको न देवः स्यात्?—अत्र यदुच्यते यदेको देवो भवति एको न भवतीति किंनिमित्तकोऽयं भेद? इति प्रश्नः, भगवानुत्तरमाह—'गोयमा!' जे इमे जीवा गामा-गर-णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणा-सम-संवाह-सण्णिवेसेसु' गौतम! ये इमे जीवा ग्रामा-ऽऽकर-नगर-निगम-राजधानी-खेट-कर्वट-मडम्ब-द्रोणमुख-पत्तनाऽऽश्रम-संवाह-सन्निवेशेषु-प्रागुक्तस्वरूपेषु 'अकामतण्हाए' अकामतया-अकामाना=निर्जराद्यनभिलाषिणा सता तृष्णा=तृट्-अकामतृष्णा तया, 'अ-

'से केणट्ठेण भंते!' इत्यादि।

प्रश्न—(भंते!) हे भदन्त! (से केणट्ठेण एवं वुच्चइ अत्थेगइया देवे सिया अत्थेगइया देवे णो सिया) आप ऐसा किस कारण से कहते हैं कि कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न हो सकते हैं और कितनेक नहीं हो सकते हैं? उत्तर—(गोयमा) गौतम! सुनो, (जे इमे जीवा गामा-गर-णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणा-सम-संवाह-सण्णिवेसेसु अकामतण्हाए अकामछुहाए अकामबंभचेरवासेणं अकाम-अण्हाणग-सीया-यव-दंस-मसग-सेय-जल्ल-मल्ल-पंक-परितावेण अप्पतरो वा भुज्जतरो कालं अप्पाणं परिकिलेसंति, परिकिलेसित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति) जो जीव प्रकोट सहित ग्राम में, सुवर्णादिक की खानों में, कर-

'से केणट्ठेण भंते!' इत्यादि।

प्रश्न—(भंते) हे भदन्त! (से केणट्ठेण एवं वुच्चइ अत्थेगइया देवे सिया अत्थेगइया देवे णो सिया) आप એમ શું કારણથી કહો છો કે કેટલાક જીવ દેવલોકમાં ઉત્પન્ન થઇ શકે છે અને કેટલાક નથી થઇ શકતા? ઉત્તર-(गोयमा) ગૌતમ! સાંભળો (जे इमे जीवा गामा-गर-णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणा-सम-संवाह-सण्णिवेसेसु अकामतण्हाए अकामछुहाए अकामबंभचेरवासेण अकाम-अण्हाणग-सीया-यव-दंस-मसग-सेय-जल्ल-मल्ल-पंक-परितावेण अप्पतरो वा भुज्जतरो वा कालं अप्पाणं परिकिलेसंति, परिकिलेसित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति) જે જીવ કોટ બાંધેલા ગામમાં, સુવર્ણની ખાણોમાં, કર વગરના નગરમાં, વ્યાપારીઓની વસ્તીવાળા નિગમમાં, રાજ-

च्चक्खाय-पावकम्मे इओ चुए पेच्च देवे सिया ?, गोयमा ! अत्थेगइया देवे सिया, अत्थेगइया णो देवे सिया ॥ सू० ७ ॥

मूलम्—से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया

भदन्त ! 'असजए अविरए अ-प्पडिहय-पचक्खाय-पावकम्मे' असयत अविरत अ-प्रतिहत-प्रत्याख्यात-पापकर्मा-प्रत्याख्यातपूर्व, 'इओ चुए' इत =मर्त्यलोकात्, च्युत = मृत, 'पेच्च देवे सिया' प्रेत्य देव स्यात्-प्रेत्य=जन्मान्तरे देव =देवगतिसमापन्न स्यात किम् ? इति प्रश्ने भगवानुत्तर कथयति-'गोयमा ! अत्थेगइया देवे सिया' गौतम ! अस्त्येकको देव स्यात्-कश्चिद्देव स्यात्, 'अत्थेगइया णो देवे सिया' अस्त्येकको नो देव स्यात्-कश्चिद्देवगतिसमापन्नो न भवेत् ॥ सू० ७ ॥

टीका—'से केणट्ठेण भते !' इत्यादि। 'से केणट्ठेण भते ! 'एव वुच्चइ-अत्थेगइया देवे सिया अत्थेगइया णो देवे सिया ?' त केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ऽस्त्ये-

'जीवे णं भते !' इत्यादि।

(भंते) हे भदत ! (असजए अविरए अ-प्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे जीवे) जो जीव असयमी है, अविरतिसपन्न है, पापकर्मों का जिसने निंदाद्वारा एव विनिवृत्तिद्वारा प्रत्याख्यान नहीं किया है ऐसा वह जीव, (इओ चुए) इस मर्त्यलोक से मर कर (पेच्च) परलोक में-जन्मान्तर मे (देवे सिया) क्या देवलोक में उत्पन्न हो सकता है ? उत्तर-(गोयमा) हे गौतम ! (अत्थेगइया देवे सिया अत्थेगइया णो देवे सिया) कितनेक जीव देवलोक म उत्पन्न होते है और कितनेक जीव देवलोक मे उत्पन्न नहीं भी होते है ॥ सू ७ ॥

'जीवे ण भते' ઈત્યાદિ

(भते) હે ભદત ! (असजए अविरए अ-प्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे जीवे) જે જીવ અસયમી છે, અવિરતિસપન્ન છે, પાપકર્મોનુ જેણે નિદા દ્વારા તેમજ વિનિવૃત્તિ દ્વારા પ્રત્યાખ્યાન કર્યું નથી એવા તે જીવ (इओ चुए) આ મર્ત્યલોકમાથી મરીને (पेच्च) પરલોકમા-જન્માતરમા (देवे सिया) શુ દેવ લોકમા ઉત્પન્ન થઇ શકે છે ? (गोयमा) ઉત્તર-હે ગૌતમ ! (अत्थेगइया देवे सिया अत्थेगइया णो देवे सिया) કેટલાક જીવ દેવલોકમા ઉત્પન્ન થાય છે અને કેટલાક જીવ દેવલોકમા ઉત્પન્ન નથી પણ થતા (સૂ ૭)

भुज्जतरो वा कालं अप्पाणं परिकिलेसंति, परिकिलेसित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तहिं तेसिं गई, तहि तेसि ठिई, तेहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते । तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! दसवाससहस्साइं ठिई

भूयस्तर वा कालमात्मानं परिक्लेशयन्ति–'अप्पतरो भुज्जतरो' इत्युभयत्र द्वितीयार्थे प्रथमा, 'परिकिलेसित्ता' परिक्लेश्य 'कालमासे' कालमासे=कालावसरे 'कालं किच्चा' कालं कृत्वा 'अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति' अन्यतमेषु व्यन्तरेषु देवलोकेषु देवत्वेनोपपत्तारो भवन्ति–अन्यतमेषु=बहूनां मध्ये एकतरेषु देवलोकेषु उपपातं प्राप्नुवन्ति, 'तहिं तेसिं गई तहिं तेसिं ठिई तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते' तत्र=देवलोके तेषां गतिः, तत्र तेषां स्थितिः, तत्र तेषामुपपातः प्रज्ञप्तः । 'तेसिं णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता' तेषां खलु भदन्त ! देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ?, 'गोयमा ! दसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता' हे गौतम ! दशवर्षसहस्राणि स्थितिः प्रज्ञप्ता–वर्षाणां दशसहस्राणि

से, चाहे ये सब कष्ट जीव अल्पकाल तक सहे या बहुतकाल तक सहे, परन्तु इन कष्टों से जो अपनी आत्मा को क्लेशित करते हैं वे मरणकाल प्राप्त होने पर मर कर किसी एक व्यन्तर-देवों के देवलोक में देवरूप से उत्पन्न होते हैं, (तहिं तेसिं गई तहिं तेसिं ठिई तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते) इसलिये वहीं पर उनकी गति, वहीं पर उनकी स्थिति और वहां पर उनका उपपात होता है। (तेसिं णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता) हे भदंत ! वहां पर उन देवों की कितने काल तक की स्थिति होती है ? (गोयमा ! दसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता) गौतम ! सुनो, वहां पर उनकी स्थिति दसहजार वर्ष की होती

परितापने सहन करीने–चाहे ते बधा कष्ट जीव थोडो वखत सहन करे अथवा लांबा काळ सुधी सहन करे परन्तु आ कष्टोथी जे पोताना आत्माने क्लेशित करे छे ते मरणकाल प्राप्त थतां मरीने कोई एक व्यन्तर देवोना देवलोकमां देवरूपे उत्पन्न थाय छे, (तहिं तेसिं गई तहिं तेसिं ठिई तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते) आथी त्यां तेमनी गति, त्यां तेमनी स्थिति, अने त्यांज तेमनो उपपात थाय छे (तेसिं णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?) हे भदंत ! त्यां ते देवोनी केटलो काळ स्थिति होय छे ? (गोयमा ! दसवास

छुहाए अकाम-बंभचेर-वासेणं अकाम-अण्हाणग-सीया-यव-दंस-मसग-सेय-जल्ल-मल्ल-पंक-परितावेणं अप्पतरो वा

कामछुहाए' अकामक्षुधया-अकामाना=निर्जरायनभिप्रायिणा सता क्षुधा-अकामक्षुधा तया, 'अकाम-बंभचेर-वासेणं' अकाम-ब्रह्मचर्य-वासेन-अकामाना=निर्जरायनपेक्षाणां-ब्रह्मचर्ये वास तेन, 'अकाम-अण्हाणग-सीया-यव-दंस-मसग-सेय-जल्ल-मल्ल-पंक-परितावेण' अकामा-ऽस्नानक-शीता-ऽऽतप-दंश-मशक-स्वेद-जल्ल-मल्ल-पङ्क परितापेन-अकामानां=निर्जरायनपेक्षमाणानां यानि स्नानाऽभावादीनि पदानि तानि तेषां परितापेन=सन्तापेन, 'अप्पतरो वा भुज्जतरो वा कालं अप्पाणं परिकिलेसंति' अल्पतर वा

रहित नगर में, व्यापारियों की बस्तीवाले निगम में, राजा की राजधानी में, धूल के कोट से युक्त खेडे में, कुत्सित जन की बस्तीवाले कर्वट में, नजदीक २ ग्रामवाले मडंब में, जल और स्थल इन दोनों प्रकार के मार्ग वाले द्रोणमुख (बंदर) में, सर्ववस्तु जहां मिलती हों ऐसे पाटण में, तापसों के आश्रमों में, पर्वत के नजदीक वाले संवाह में, एव गोपालों की प्रधान बस्तीवाले सन्निवेश में, अकामनिर्जरासे-मनविना परवश हो कर खाने पीने की वस्तु न मिल सकने के कारण क्षुधा-तृषा सहन करने से, अकामब्रह्मचर्य से-इच्छा होने पर भी स्त्री आदि की अप्राप्ति से ब्रह्मचर्य पालन करने से, अकामस्नान से-इच्छा होने पर भी पानी न मिल सकने के कारण स्नान नहीं करने से, वस्त्रादिक न मिल सकने के कारण शीत-आतप जन्य दुःख सहने से, दंशमशक के द्वारा काटे जाने का कष्ट सहन करने से, स्वेद, जल्ल, मल्ल एव पंक आदि को शरीर से दूर नहीं करने से, अर्थात् इन के द्वारा उत्पन्न परिताप के सहन करने

युक्त राजधानीमां, धूळना कोटवाळा गामडांमां, कुत्सित जनोना निवासरूप कर्बटमां, पासे पासे गामवाळा मडंबमां, जल अने स्थल ए बन्ने प्रकारना मार्गवाळा द्रोणमुख (बंदर)मां, सर्व वस्तु ज्यां मळती होय एवा पाटणमां, तपस्वीओना आश्रमोमां, पर्वतनी पासेना संबाधमां, तेमज गोवाळनी मुख्य वस्तीवाळा सन्निवेशमां, अकामनिर्जराथी-मनविना परवश थईने-खावापीवानी वस्तु मळी न शकवाथी भूखतरस सहन करीने, अकाम-ब्रह्मचर्यथी-ईच्छा होवा छतां स्त्री आदिनी अप्राप्तिथी ब्रह्मचर्य पालन करीने, अकामस्नानथी-ईच्छा होवा छतां पाणी न मळी शकवाना कारणे स्नान नहि करीने, वस्त्रादिक न मळी शकवाना कारणे ठंडी-गरमीथी थतां दुःख सहन करीने, दंशमशकथी करडाई जवानुं कष्ट सहन करीने, स्वेद, जल्ल, मल्ल तेमज पंक आदिने शरीरथी दूर नहि करीने एटले, आथी उत्पन्न थता

मूलम्—से जे इमे गामा–गर–णयर–णिगम–रायहाणि–खेड–कब्बड–मडंब–दोणमुह–पट्टणा–सम–संवाह–सणिवेसेसु मणुया भवंति, तंजहा–अंडुवद्धगा णियलवद्धगा हडिव-

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे' अथ य इमे 'गामा–गर–णयर–णिगम–रायहाणि–खेड–कब्बड–मडंब–दोणमुह–पट्टणा–सम–संवाह–सणिवेसेसु मणुया भवंति' ग्रामा–ऽऽकर–नगर–निगम–राजधानी–खेड–कर्वट–मडम्ब–द्रोणमुख–पत्तनाऽऽ–श्रम–संवाध–सन्निवेशेषु मनुजा भवन्ति–ग्रामादय प्राग् व्याख्याता, तेषु य इमे मनुष्या भवन्ति, 'तंजहा' तद्यथा– 'अडुवद्धगा' अण्डुबद्धका –अण्डूनि=अन्दु-

से देव होते हैं वे ही जीव आराधक होकर नियम से, आगामी एक ही मनुष्य भव से अथवा परम्परा से सात आठ भव से मुक्ति का लाभ करनेवाले होते है, अन्य नहीं। परन्तु जो अकामनिर्जरा करके देवता होते है वे सभी निर्वाणानुकूल भवान्तर प्राप्त करे ही यह नियम नहीं है ॥ सू० ८ ॥

'से जे इमे गामागर' इत्यादि।

(से जे इमे) जो ये जीव (गामा–गर–णयर–णिगम–रायहाणि–खेड-कब्बड–मडंब–दोणमुह–पट्टणा–सम–संवाह–सणिवेसेसु मणुया भवंति) ग्राम में, आकर मे, नगर मे, निगम मे, राजधानी में, खेडे मे, कर्वट मे, मडम्ब में, द्रोणमुख में, पट्टण में, आश्रम मे, संवाध में, एव सन्निवेश मे मानव की पर्याय से उत्पन्न होते है और वे किसी अपराधवश (अडुवद्धया) लोह एव काष्ठ के बधनों से हाथ पैरों को बाधकर

તેમજ સમ્યક્ચારિત્રપૂર્વક અનુષ્ઠાનથી દેવ થાય છે તેજ જીવ આરાધક થઈને નિયમથી આગામી એક જ મનુષ્યના ભવથી અથવા પરંપરાથી સાત–આઠ ભવોથી મુક્તિનો લાભ મેળવનાર થાય છે પરંતુ જે અકામનિર્જરા કરીને દેવતા થાય છે તે નિર્વાણ–અનુકૂલ ભવાંતર પ્રાપ્ત કરેજ એવો નિયમ નથી (સૂ. ૮)

'से जे इमे गामागर–' ઇત્યાદિ

(से जे इमे) જે આ જીવ (गामा–गर–णयर–णिगम–रायहाणि–खेड–कब्बड-मडंब–दोणमुह–पट्टणा–सम–संवाह–सणिवेसेसु मणुया भवंति) ગામમાં, આકરમાં, નગરમાં, નિગમમાં, રાજધાનીમાં, ખેડામાં, કર્બટમાં, મડંબમાં, દ્રોણમુખમાં, પાટણમાં, આશ્રમમાં, સંબાધમાં, તેમજ સન્નિવેશમાં માનવની પર્યાયમાં ઉત્પન્ન

पण्णत्ता । अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ?, हंता ! अत्थि । ते णं भंते ? देवा परलोगस्स आराहगा ?, णो इणट्ठे समट्ठे ॥ सू० ८ ॥

यावत् तत्र तेषां स्थितिः प्रज्ञप्ता । 'अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा ?' अस्ति खलु हे भदन्त ! तेषां देवानामृद्धिरिति वा, द्युतिरिति वा, यश इति वा, बलमिति वा, वीर्यमिति वा, पुरुषकारपराक्रम इति वा, ?, तेषां देवानामृद्ध्यादयो विद्यन्ते नवेति प्रश्नः, उत्तरमाह-'हंता ! अत्थि' हन्त ! अस्ति-तेषामृद्ध्यादयो वर्तन्ते इति भावः । पुनः-पृच्छति-'ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ?' ते खलु हे भदन्त ! देवाः परलोकस्याऽऽराधकाः=परलोकसाधकाः सन्ति किम् ?, उत्तरमाह-'णो इणट्ठे समट्ठे' नाऽयमर्थः समर्थः=सङ्गतः-इत्युत्तरम्, अयमभिप्रायः-ये हि जीवाः सम्यग्दर्शनज्ञानपूर्वकानुष्ठानेन देवा भवन्ति, त एव नियमतयाऽऽन्तर्येण पारम्पर्येण वा निर्वाणाकूलं भवान्तरं प्राप्नुवन्ति तदन्ये तु भाज्याः ॥ सू० ८ ॥

है । (**अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा**) प्रभो ! वहां उन देवों में परिवार आदि ऋद्धियाँ, शारीरिक कांति, यश, बल, वीर्य और पुरुषकार-पराक्रम ये सब बातें हैं या नहीं ?, (**हंता ! अत्थि**) उत्तर-हां है । (**ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा**) हे भदंत ! वे देव परलोक के आराधक होते हैं क्या ? उत्तर-(**णो इणट्ठे समट्ठे**) यह अर्थ समर्थित नहीं है, क्योंकि जो जीव सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यकचारित्र-पूर्वक अनुष्ठान

सहस्साइं ठिई पण्णत्ता) ગૌતમ ! સાંભળો, ત્યાં તેમની સ્થિતિ દસ હજાર વર્ષની હોય છે (अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा) પ્રભો ! ત્યાં તે દેવોમાં પરિવાર આદિ ઋદ્ધિઓ, શારીરિક કાંતિ, યશ, બલ, વીર્ય અને પુરુષકાર-પરાક્રમ આ બધું હોય કે નહિ ? (हंता अत्थि) હા છે (ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा) હે ભદંત ! તે દેવો પરલોકના આરાધક હોય છે કે ? (णो इणट्ठे समट्ठे) આ અર્થ સમર્થિત નથી, કેમકે જે જીવ સમ્યગ્દર્શન સમ્યગ્જ્ઞાન

मूलम्—से जे इमे गामा–गर–णयर–णिगम–राय-
हाणि–खेड–कब्बड–मडंव–दोणमुह–पट्टणा–सम–संवाह–स-
ण्णिवेसेसु मणुया भवंति, तजहा–अंडुबद्धगा णियलबद्धगा हडिब-

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे' अथ य इमे 'गामा–गर–णयर–णिगम–रायहाणि–खेड–कब्बड–मडव–दोणमुह–पट्टणा–सम–सवाह–सण्णिवेसेसु मणुया भवति' ग्रामा–ऽऽकर–नगर–निगम–राजधानी–खेट–कर्बट–मडम्ब–द्रोणमुख–पट्टणाऽऽ–श्रम–सबाध–सन्निवेशेषु मनुजा भवन्ति–ग्रामादय प्राग् व्याख्याता, तेषु य इमे मनुष्या भवन्ति, 'तजहा' तद्यथा– 'अडुबद्धगा' अण्डुबद्धका –अण्डुनि=अन्दु-

से देव होते हे वे ही जीव आराधक होकर नियम से, आगामी एक ही मनुष्य भव से अथवा परम्परा से सात आठ भव से मुक्ति का लाभ करनेवाले होते हे, अन्य नहीं। परन्तु जो अकामनिर्जरा करके देवता होते हैं वे सभी निर्वाणानुकूल भवान्तर प्राप्त करे ही यह नियम नही है ॥ सू० ८ ॥

'से जे इमे गामागर' इत्यादि।

(से जे इमे) जो ये जीव (गामा–गर–णयर–णिगम–रायहाणि–खेड-कब्बड–मडव–दोणमुह–पट्टणा–सम–सवाह–सण्णिवेसेसु मणुया भवति) ग्राम में, आकर मे, नगर मे, निगम मे, राजधानी मे, खेडे मे, कर्बट म, मडम्ब में, द्रोणमुख में, पट्टण म, आश्रम म, सबाध में, एव सन्निवेश मे मानव की पर्याय से उत्पन्न होते है और वे किसी अपराधवश (अडुबद्धया) लोह एव काष्ठ के बधनों से हाथ पैरो को बाधकर

તેમજ સમ્યક્ચારિત્રપૂર્વક અનુષ્ઠાનથી દેવ થાય છે તેજ જીવ આરાધક થઈને નિયમથી આગામી એક જ મનુષ્યના ભવથી અથવા પરપરાથી સાત–આઠ ભવોથી મુક્તિનો લાભ મેળવનાર થાય છે પરતુ જે અકામનિર્જરા કરીને દેવતા થાય છે તે નિર્વાણ–અનુકૂલ ભવાતર પ્રાપ્ત કરેજ એવો નિયમ નથી (સૂ ૮)

'से जे इमे गामागर–' ઇત્યાદિ

(से जे इमे) જે આ જીવ (गामा–गर–णयर–णिगम–रायहाणि–खेड–कब्बड-मडब–दोणमुह–पट्टणा–सम–सवाह–सण्णिवेसेसु मणुया भवति) ગામમા, આકરમા, નગરમા, નિગમમા, રાજધાનીમા, ખેડામા, કર્બટમા, મડબમા, દ્રોણમુખમા, પાટણમા, આશ્રમમા, સબાધમા, તેમજ સન્નિવેશમા માનવની પર્યાયમા ઉત્પન્ન

द्धगा चारगवद्धगा हत्थच्छिण्णगा पायच्छिण्णगा कण्णच्छिण्णगा नक्कच्छिण्णगा ओट्टच्छिण्णगा जिब्भच्छिण्णगा सीसच्छिण्णगा मुहच्छिण्णगा मज्झच्छिण्णगा वइकच्छच्छिण्णगा हियउप्पाडियगा

कानि काष्ठमयानि लोहमयानि वा हस्तयो पादयोर्वा बन्धनविशेषा, तेषु बद्धका =बद्धा एव बद्धका, स्वार्थे क, '**णिअलबद्धगा**' निगडबद्धका –निगडा =लोहमया पादयोर्बन्धविशेषा 'बेडी' इति प्रसिद्धा तेषु बद्धका –निगडबद्धा इत्यर्थ, '**हडिबद्धगा**' हडिबद्धका –हडि =खोटक, तत्र बद्धका, '**चारगबद्धगा**' चारकबद्धका –चारका =कारागाराणि, तत्र बद्धका, '**हत्थच्छिण्णगा**' हस्तच्छिन्नका –हस्तौ छिन्नौ येषा ते तथा, '**पायच्छिण्णगा**' पादच्छिन्नका '**कण्णच्छिण्णगा**' कर्णच्छिन्नका, '**नक्कच्छिण्णगा**' नासिकाच्छिन्नका, '**ओट्ठच्छिण्णगा**' ओष्ठच्छिन्नका, '**जिब्भच्छिण्णगा**' जिह्वाच्छिन्नका, '**सीसच्छिण्णगा**' शीर्षच्छिन्नका, '**मुहच्छिण्णगा**' मुखच्छिन्नका, '**मज्झच्छिण्णगा**' मध्यच्छिन्नका, मध्य =उदरदेश, '**वइकच्छच्छिण्णगा**' वैकक्षच्छिन्नका –उत्तरासङ्गाऽऽकारेण नि-

---

एक स्थान पर रोककर रख दिये जाते है, (**णिअलबद्धगा**) बेडी से जकड दिये जाते है, (**हडिबद्धगा**) काष्ठ के खोडे में पैर डलवाकर रोक दिये जाते है, (**चारगबद्धगा**) जेलखाने मे बद कर दिये जाते है, (**हत्थच्छिण्णगा**) तथा उनके दोनों हाथ काट दिये जाते है, (**पायच्छिण्णगा**) दोनों पैर छिन्नभिन्न कर दिये जाते है, (**कण्णच्छिण्णगा**) कान छेद दिये जाते है, (**नक्कच्छिण्णगा**) नाक छेद दी जाती है, (**ओट्ठच्छिण्णगा**) ओष्ठ छेद दिये जाते है, (**जिब्भच्छिण्णगा**) जिह्वा छेद दी जाती है, (**सीसच्छिण्णगा**) शिर छेद दिया जाता है, (**मुहच्छिण्णगा**) मुख छेद दिया जाता है, (**मज्झच्छिण्णगा**)

થાય છે અને તેઓ કોઇ અપરાધવશ (अडुबद्धगा) લોઢાના તેમજ લાકડાના બધનોથી હાથ–પગને બાધીને એક સ્થાન પર રોકી રખાય છે, (णिअलबद्धगा) બેડીથી જકડી દેવાય છે, (हडिबद्धगा) લાકડાના ખોડા (પકડ)મા પગ નખાવીને રોકી રખાય છે (चारगबद्धगा) જેલખાનામા પુરી દેવામા આવે છે, (हत्थच्छिण्णगा) તથા તેમના બન્ને હાથ કાપી નાખવામા આવે છે, (पायच्छिण्णगा) બન્ને પગ છિન્ન ભિન્ન કરી નાખવામા આવે છે, (कण्णच्छिण्णगा) કાન છેદી નાખવામા આવે છે (नक्कच्छिण्णगा) નાક છેદી નખાય છે, (ओट्ठच्छिण्णगा) હોઠ છેદી નખાય છે (जिब्भच्छिण्णगा) જીભ છેદી નખાય છે (सीसच्छिण्णगा) શિર છેદી નખાય છે (मुहच्छिण्णगा) મુખ છેદી નખાય છે (मज्झच्छिण्णगा)

णयणुप्पाडियगा दसणुप्पाडियगा वसणुप्पाडियगा गेवच्छिण्णगा तंडुलच्छिण्णगा कागणिमंसक्खावियगा ओलंबियगा लंबियगा

दारिता, 'हियउप्पाडियगा' हृदयोपाटितका –उत्पाटितहृदया इत्यर्थ, 'णयणुप्पाडियगा' नयनोपाटितका –उत्पाटितनयना =पृथक्कृतनेत्रा, 'दसणुप्पाडियगा' दशनोत्पाटितका –उत्पाटितदशना =पृथक्कृतदन्ता, 'वसणुप्पाडियगा' वृषणोपाटितका –पृथक्कृताण्डकोशा, 'गेवच्छिण्णगा' ग्रीवाच्छिन्नका =छिन्नग्रीवाप्रदेशा, 'तडुलच्छिण्णगा' तण्डुलच्छिन्नका –तण्डुलवत् कणशश्छिन्ना, 'कागणिमसक्खावियगा' काकणीमासखादितका –काकणीमासानि=देहोत्कृत्तमासखण्डानि खादितानि येषा ते तथा, 'ओलंबियगा' अवलम्बितका =रज्ज्वा बद्ध्वा कूपादौ पातिता, 'लंबियगा' लम्बितका =तरुशाखादौ बद्ध्वा लम्बिता, 'घसियगा' घर्षितका =चन्दनवत् पाषाणादौ घृष्टा, 'घोलि-

---

मध्यभाग–पेट का भाग छेद दिया जाता है, (वद्धकच्छच्छिण्णगा) बायें कन्धे से लेकर दाहिने कॉख के नीचे के भाग सहित मस्तक छेद दिया जाता है, (हियउप्पाडियगा) हृदय फाड दिया जाता है, (णयणुप्पाडियगा) दोनों आखे फोड दी जाती है, (दसणुप्पाडियगा) अण्डकोष निकाल लिये जाते है, (गेवच्छिण्णगा) गर्दन तोड–मरोड दी जाती है, (तडुलच्छिण्णगा) तन्दुल की तरह कण२ करके उनके शरीर के खड २ कर दिये जाते है, (कागणि–मस–क्खावियगा) उनकी देह से मास काट २ कर कौओं को खिला दिया जाता है, (ओलंबियगा) रस्सी से बाधकर कुए मे डाल दिये जाते हैं, (लंबियगा) वृक्ष की शाखा आदि पर बाधकर लटका दिये जाते है, (घंसियगा) चदन की तरह पत्थर आदि पर घिसे जाते है, (घोलियगा) भाण्ड में स्थित दही की

મધ્યભાગ–પેટનો ભાગ છેદી નખાય છે (वद्धकच्छच्छिण्णगा) ડાબી કાંધથી લઇને જમણી બગલના નીચેના ભાગ સહિત મસ્તક છેદી નખાય છે (हियउप्पाडियगा) હૃદય ફાડી નખાય છે (णयणुप्पाडियगा) બન્ને આંખો ફોડી–દેવાય છે (दसणुप्पाडियगा) દાંત પાડી નખાય છે (वसणुप्पाडियगा) અંડકોષ કાઢી નખાય છે (गेवच्छिण्णगा) ગર્દન તોડી–મરડી નખાય છે (तडुलच्छिण्णगा) તન્દુલની પેઠે કણકણ કરીને તેના શરીરના કટકે–કટકા કરી નાખવામા આવે છે (कागणि–मस–क्खावियगा) તેના દેહમાથી માંસ કાપી કાપીને કાગડાને ખવરાવાય છે (ओलंबियगा) દોરડાથી બાંધીને કૂવામા નાખી દેવાય છે (लंबियगा) ઝાડની ડાળીએ બાંધીને લટકાવવામા આવે છે (घसियगा) ચંદનની પેઠે

घंसियगा घोलियगा फालियगा पीलियगा सूलाइयगा सूलभि-
ण्णगा खारवत्तिया वज्झवत्तिया सीहपुच्छियगा दवग्गिदड्ढगा
पंकोसण्णगा पंके खुत्तगा वलयमयगा वसट्टमयगा णियाणम-

यगा ' घोलितका =भाण्डस्थितदधिवदूर्ध्वाऽध क्रमेणाऽऽघूर्णिता, 'फालियगा' स्फाटिता-शुष्ककाष्ठवत्कुठारेण द्विधा कृता, 'पीलियगा' पीडितका —यन्त्रक्षिप्तेक्षुयष्टिवत् पीडिता, 'सूलाइयगा' शूलाचितका =शूले समारोपिता, 'सूलभिण्णगा' शूलभिन्नका =शूलेन विदारिता, 'खारवत्तिया' क्षारवर्तिता =क्षारे क्षिप्ता, 'वज्झवत्तिया' वध्यवर्तिता = वध्यस्थाने पातिता, 'सीहपुच्छियगा' सिंहपुच्छितका =छिन्नजननेन्द्रियका, यद्वा—सिंह-पुच्छे बद्ध्वा समाकृष्टा 'दवग्गिदड्ढगा' दावाग्निदग्धका —दावाग्निना=वनाग्निना दग्धा, 'पंकोसण्णगा' पङ्काऽवसन्नका =सर्वथा पङ्के निमग्ना, 'पंके खुत्तगा' पङ्के निमग्ना = उत्तरीतुमसमर्था, 'वलयमयगा' वलन्मृतका —संयमयोगाद् भ्रष्टाना परीषहाद्यसहनतया

तरह ऊँचे नीचे करके मथ दिये जाते है, अथवा घुमाये जाते हैं, (फालियगा) शुष्क-काष्ठ की तरह दो टुकडों के रूप में कर दिये जाते है, (पीलियगा) कोल्हू में क्षिप्त इक्षु की तरह पील दिये है, (सूलाइयगा) शूली पर चढा दिये जाते है, (सूलाभिण्णगा) शूल से विदारित कर दिये जाते है, (खारवत्तिया) क्षार में पटक दिये जाते है, (वज्झवत्तिया) वध्यस्थान में रख दिये जाते है, (सीहपुच्छियगा) उनका लिङ्ग काट दिया जाता है, अथवा वे सिंह की पूँछ में बाँधकर घसीटे जाते हैं, (दवग्गिदड्ढगा) दावाग्नि द्वारा दग्ध कर दिये जाते हैं, (पंकोसण्णगा) कीचड मे बिलकुल धसा दिये जाते हैं, (पंके खुत्तगा) कीचड में इस प्रकार खड़े कर दिये जाते है कि जिससे फिर

પત્થર ઉપર ઘસી નાખવામા આવે છે (घोलियगा) વાસણમા રાખેલા દહીંની પેઠે ઉચે-નીચે કરી મથન કરવામા આવે છે. અથવા ઘુમાવવામા આવે છે (फालियगा) સુકેલા લાકડાની પેઠે બે ટુકડાના રૂપમા કરી નાખવામા આવે છે (पीलियगा) કોલૂમા નાખવામા આવતી શેરડીની પેઠે પીલી નખાય છે (सूलाइयगा) શૂળી ઉપર ચડાવી દેવાય છે (सूलाभिण्णगा) શૂલથી ફાડી નાખવામા આવે છે (खारवत्तिया) ક્ષારમા નાખી દેવાય છે (वज्झवत्तिया) વધસ્થાનમા રખાય છે (सीहपुच्छियगा) લિંગ કાપી નખાય છે, અથવા—સિંહની પુછડીમા બાધીને ઘસેડાય છે (दवग्गिदड्ढगा) દાવાગ્નિ દ્વારા બાળી નખાય છે (पकोसण्णगा) કાદવમા નાખી દેવાય છે તેથી ત્યાજ મરી જાય છે, (पके खुत्तगा)

यगा अंतोसल्लमयगा गिरिपडियगा तरुपडियगा गिरिपक्खंदो-

मरण—वल्न्मरण तद्वन्तो वल्न्मृतका, यद्वा—बुभुक्षादिना आर्ता भूत्वा मृतास्ते वल्न्मृतका, 'वसट्टमयगा' वशार्तमृतका—इन्द्रियविषयवशगता आर्ता मृता शब्दादिवशवर्तिमृगा-दिवन्मृता इत्यर्थः, 'णियाणमयगा' निदानमृतका—ऋद्धिभोगादिप्रार्थना निदान, तत्पूर्वक मरण निदानमरणम्, तद्वन्त इत्यर्थः, 'अंतोसल्लमयगा' अन्त शल्यमृतका—अन्त-शल्या=अनुद्धृतभावशल्या अन्त स्थितभल्लादिशल्या वा मृता, 'गिरिपडियगा' गिरि पतितका—गिरे=पर्वतात्पतिता, 'तरुपडियगा' तरुपतितका=वृक्षात्पतिता, 'मरुप-डियगा' मरुपतितका—मरौ=निर्जले देशे पतिता, 'गिरिपक्खंदोलगा' गिरिपक्षान्दो-लका—गिरिपक्षे=पर्वतपार्श्वे आत्मानमान्दोलयन्ति ये ते तथा, गिरिपरिसरान्मरणायैव दत्तझम्पा

वे वहा से पार नहीं आ सके, (वलयमयगा) परीषह आदि को सहन करने में असमर्थ होने की वजह से गृहीत सयम से जो भ्रष्ट होना उसका नाम वलन्मरण है, अथवा दुःखित होकर जो मरना है उसका नाम भी वलन्मरण है, इस मरण से जो युक्त हों वे वलन्मृतक हैं, ऐसे जो वलन्मृतक हैं, (वसट्टमयगा) शब्दादिक के वशवर्ती मृग की तरह जो इन्द्रियों के विषयों में फँसकर दुरवस्था से प्राणों का त्याग करते हैं, (णियाणमयगा) जो इन्द्रिय-भोगादिकों की चाहनारूप निदान से मरण करते हैं, (अंतोसल्लमयगा) हृदय में शल्य धारण कर जो मरण करते हैं, अथवा भल्लादिक शस्त्रों से विदारित होकर जो मरण करते हैं, (गिरिपडियगा) पहाड से गिरकर जो मरण करते हैं, (तरुपडियगा) पेड से गिरकर जो मरण करते हैं, (मरुपडियगा) जो मरुस्थल में पड कर मर जाते हैं, (गिरि-पक्खंदोलगा) पर्वत से जो झपापात कर के मर जाते हैं, (तरुपक्खंदोलगा) वृक्षों से

ગારામા એવી રીતે ઉભા કરી દેવાય છે કે જેથી પાછા તે ત્યાથી નીકળી શકે નહિ (વલયમયગા) પરિષહ આદિના સહન કરવામા અસમર્થ હોવાથી લીધેલા સયમથી ભ્રષ્ટ થવુ તેનુ નામ વલન્મરણ છે આ મરણથી જે યુક્ત હોય અથવા દુ ખી થઈને જે મરણ થાય તેવા મરણથી જે યુક્ત હોય તે વલન્મૃતક છે, (વસટ્ટમયગા) શબ્દ આદિકને વશ થઈ મૃગની પેઠે જે ઇન્દ્રિયોના વિષયમા ફસાઇ જઈ પ્રાણનો ત્યાગ કરે છે, (ણિયાણમયગા) જે ઇન્દ્રિયભોગ આદિકની ચાહના રૂપ નિદાનથી મરણ પામે છે, (અંતોસલ્લમયગા) હૃદયમા શલ્ય ધારણ કરીને (ઠગી મારીને) જે મરણ પામે છે, અથવા ભાલા વિગેરે શસ્ત્રોથી જે મરણ પામે છે, (ગિરિપડિયગા) પહાડ ઉપરથી પડીને જે મરણ પામે છે, (તરુપડિયગા) ઝાડેથી પડીને જે મરણ પામે છે, (મરુપડિયગા) જે મરુસ્થલમા પડીને મરી જાય છે, (ગિરિપક્ખંદોલગા) પર્વત ઉપરથી

लगा तरुपक्खंदोलगा मरुपक्खंदोलगा जलपवेसी (जलणपवे-
सिगा) विसभक्खियगा सत्थोवाडियगा वेहाणसिया गेद्धपट्ठगा
कंतारमयगा दुब्भिक्खमयगा असंकिलिट्ठपरिणामा ते कालमासे

मृताश्च तथाभिधीयन्ते, '**तरुपक्खदोल्गा**' तरुपक्षान्दोलका =तरुपक्षाग्झम्पादानेन मृता '**मरुपक्खदोल्गा**' मरुपक्षान्दोलका —मरुपक्षे=मरुभूमौ आत्मानमान्दोलयन्ति ये ते तथा, मरुभूमौ मृता इत्यर्थ, '**जलपवेसी**' जलप्रवेशिन —जले निमज्य मृता इत्यर्थ, '**जलण-पवेसिगा**' ज्वलनप्रवेशिका —अग्नौ मृता इत्यर्थ, '**विसभक्खियगा**' विषभक्षितका —विषभक्षणेन मृता इत्यर्थ, '**सत्थोवाडियगा**' शस्त्रोत्पाटितका —शस्त्रेण=क्षुरिकादिना विदारिता सन्तो मृता, '**वेहाणसिया**' वैहायसिका —वृक्षशाखाद्यावुद्वन्धनाद् विहायसि=आकाशे यन्मरण भवति तद्वैहायस, तदस्ति येषा ते वैहायसिका, '**गेद्धपट्ठगा**' गृध्रस्पृष्टका —गृध्रै =पक्षिविशेषै स्पृष्टस्य=विदारितस्य करिकरभरासभादिमृतकलेवरस्याभ्यन्तरे गत्वा ये मृतास्ते गृध्रस्पृष्टका '**कंतारमयगा**' कान्तारमृतका =अरण्ये मृता, '**दुब्भिक्खम-यगा**' दुर्भिक्षमृतका —दुर्भिक्षे मृता इत्यर्थ, '**असंकिलिट्ठपरिणामा**' असंक्लिष्टपरिणामा,

झंपापात कर के मर जाते हैं, (**मरुपक्खदोलगा**) मरुस्थल में मार्ग भूलकर जो उसी में मर जाते है, (**जलपवेसी**) जल में डूब कर जो मर जाते हे, (**जलणपवेसिगा**) अग्नि से जलकर जो मर जाते है, (**विसभक्खियगा**) विष खाकर जो मर जाते है, (**सत्थो-वाडियगा**) शस्त्रों से आहत होकर जो मर जाते है, (**वेहाणसिया**) वृक्षों पर लटक कर जो मर जाते हैं, (**गेद्धपट्ठगा**) गृद्धों द्वारा विदारित ऐसे करि–हाथी एव करभ–ऊँट आदि के कलेवर में प्रविष्ट होकर जो मरते हैं, (**कतारमयगा**) जो जगल में ही मर जाते है, (**दुब्भिक्खमयगा**) दुर्भिक्ष से पीडित होकर जो मौत के घाट उतर जाते है, (**अस-**

ઝંપાપાત કરીને (કૂદીને) મરણ પામે છે, (तरुपक्खदोलगा) વૃક્ષ પરથી ઝંપાપાત કરીને જે મરણ પામે છે, (मरुपक्खदोलगा) મરુસ્થલમાં રસ્તો ભૂલીને તેમાંજ જે મરી જાય છે, (जलपवेसी) જલમાં ડૂબીને જે મરણ પામે છે, (जलणपवेसिगा) અગ્નિથી બળીને જે મરી જાય છે, (विसभक्खियगा) ઝેર ખાઈને જે મરણ પામે છે, (सत्थोवाडियगा) શસ્ત્રોના ઘાતથી જે મરી જાય છે, (वेहाणसिया) વૃક્ષો પર લટકીને જે મરણ પામે છે, (गेद्धपट्ठगा) ગીધો દ્વારા વિદારિત હાથી તેમજ કરભ–ઉંટ આદિના શરીરમાં પ્રવિષ્ટ થઈને જે મરણ પામે છે, (कतारमयगा) જે જંગલમાં જ મરણ પામે છે, (दुब्भिक्खमयगा) દુર્ભિક્ષથી પીડાઈને

काल किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तहि तेसिं गई तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते। तेसिं ण भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा !

सक्लिष्टपरिणामा महार्त्तरौद्रध्यानाऽऽवेशन देवत्व न लभन्ते, अत असक्लिष्टपरिणामा इति विशिष्य प्रदर्शिता, ते कालमासे काल कृत्वा, 'अण्णयरेसु वाणमतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति' अन्यतमेषु व्यन्तरेषु देवलोकेषु देवत्वेनोपपत्तारो भवन्ति, 'तहिं तेसिं गई' तत्र तेषा गति, 'तहिं तेसिं ठिई' तत्र तेषा स्थिति, 'तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते' तत्र तेषामुपपात प्रज्ञप्त । 'तेसिं ण भते ! देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?' तेषा खलु भदन्त ! देवाना कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ?, 'गोयमा ! बार-

[1]किलिट्ठपरिणामा) और जिनके परिणाम सक्लिष्ट नहीं होते है, ऐसे जीव (अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति) किसी एक व्यन्तर देव का पर्याय से उत्पन्न होते हे। (तहिं तेसिं गई, तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते) वहीं पर उनकी गति, वहीं पर उनकी स्थिति एव वहीं पर उनका उपपात कहा गया है, (तेसिं ण भते ! देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता) हे भदत ! वहा उन जीवों की

(१) सक्लिष्टपरिणामों के सद्भाव मे जीवों को देवगति का बध नहीं होता है। महा आर्तरौद्रध्यान के परिणाम सक्लिष्ट परिणाम है, असक्लिष्ट परिणाम ही देवगति की प्राप्ति मे कारण है, इस बात को प्रदर्शित करने के लिये "असकिलिट्ठपरिणाम" इस पद का प्रयोग किया है।

જે મોતને ભેટે છે, [1](असकिलिट्ठपरिणामा) અને જેનું પરિણામ—અસ સક્લિષ્ટ ન થાય એવા જીવ (अण्णयरेसु वाणमतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति) કોઈ એક વ્યંતર દેવલોકમાં વ્યંતર—દેવની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે (तहिं तेसि गई तहिं तेसिं ठिई तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते) ત્યાં તેમની ગતિ, ત્યાં તેમની સ્થિતિ, તેમજ ત્યાં તેમના ઉપપાત કહેવામાં આવ્યો છે (तेसिं णं भते ! देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता) હે ભદંત ! ત્યાં તે જીવોની સ્થિતિ કેટલા કાળની બતાવી

(૧) સંક્લિષ્ટ પરિણામના સદ્ભાવમાં જીવોને દેવગતિનો બંધ થતો નથી મહા—આર્તરૌદ્રધ્યાનના પરિણામ સંક્લિષ્ટપરિણામ છે અસંક્લિષ્ટ પરિણામ પણ દેવગતિની પ્રાપ્તિમાં કારણભૂત છે એ વાત પ્રદર્શિત કરવા "असकिलिट्ठपरिणाम" એ પદનો પ્રયોગ કર્યો છે

वारसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता। अत्थि णं भंते! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा, जुईइ वा, जसेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा ?, हंता! अत्थि। ते णं भंते! देवा परलोगस्स आराहगा ?, णो इणट्ठे समट्ठे ॥ सू० ९ ॥

सवाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता' गौतम! द्वादशवर्षसहस्राणि स्थितिः प्रज्ञप्ता। 'अत्थि ण भते! तेसिं देवाण इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कार परक्कमेइ वा ?' अस्ति खलु भदन्त! तेषा देवानामृद्धिरिति वा द्युतिरिति वा यश इति वा बलमिति वा वीर्यमिति वा पुरुषकारपराक्रम इति वा ? इति प्रश्न भगवानुत्तर वक्ति– 'हंता! अत्थि' हन्त! अस्ति, 'ते ण भते! देवा परलोगस्स आराहगा ?' ते खलु भदन्त! देवा परलोकस्याऽऽराधका भवन्ति किम् ? 'णो इणट्ठे समट्ठे' नाऽयमर्थ समर्थ ॥ सू० ९ ॥

स्थिति कितने काल की बतलाई गई है ?, (गोयमा! वारसवाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता) गौतम! उन जीवों की वहा स्थिति बारह हजार वर्ष की बतलाई गई है। (अत्थि ण भते! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा) हे भदत! वहा उन देवों में ऋद्धि, द्युति, कीर्ति, बल, वीर्य एव पुरुषकारपराक्रम है या नहीं ? (हंता अत्थि) हा है। (ते ण भते देवा! परलोगस्स आराहगा) हे भदत! वे देव परलोक के आराधक होते हैं क्या ? (णो इणट्ठे समट्ठे) हे गौतम! वे आराधक नहीं होते हैं।

भावार्थ—जो जीव ग्राम आदि में उत्पन्न होकर पूर्वोक्तरूप से प्रदर्शित विषम-

છે ? (गोयमा! वारसवाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता) હે ગૌતમ! તે જીવોની ત્યા સ્થિતિ બાર હજાર વરસની બતાવી છે (अत्थि ण भते! तेसिं देवाण इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कार–परक्कमेइ वा) હે ભદત! ત્યા તે દેવોમા ઋદ્ધિ, દ્યુતિ, કીર્તિ, બલ, વીર્ય, તેમજ પુરુષકાર–પરાક્રમ છે કે નહિ ? (हता अत्थि) હા છે (ते ण भते! देवा परलोगस्स आराहगा) હે ભદત! આ દેવ પરલોકના આરાધક હોય છે શું ? (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ગૌતમ! આરાધક નથી હોતા

ભાવાર્થ—જે જીવ ગામ આદિમા ઉત્પન્ન થઈને પૂર્વોક્ત રૂપે બતાવેલી

मूलम्—से जे इमे गामागर जाव संनिवेसेसु मणुया भवंति, तं जहा- पगइभद्दगा पगइउवसंता पगइ-पतणु-कोह-माण-

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे' अथ य इमे वक्ष्यमाणा 'गामागर जाव सनिवेसेसु मणुया भवंति' ग्रामाकर यावत्सन्निवेशेषु मनुजा भवन्ति—ग्रामे आकरे नगरे निगमे यावत् सन्निवेशे मनुष्या भवन्ति, तान् वर्णयति—'त जहा' तद्यथा 'पगइभद्दगा' प्रकृतिभद्रका—प्रकृत्या=स्वभावेन भद्रका=परोपकारपरायणा, 'पगइउवसंता' प्रकृत्युपशान्ता=क्रोधोदयाऽभावादुपशान्तिमुपगता, 'पगइ-पतणु-कोह-माण-माया-लोहा' प्रकृति-प्रतनु-क्रोध-मान-माया-लोभा—सत्यपि कषायोदये प्रकृत्या प्रतनुक्रोधादिभावा, 'मिउ-मद्दव-संपण्णा' मृदु-मार्दव-सम्पन्ना—मृदु यन्मार्दवं तत् सम्पन्ना=प्राप्ता, अय-

स्थिति को अकामनिर्जरा के बल से भोगते हैं वे जीव मरकर व्यन्तर पर्याय से उत्पन्न होते हैं। वहा पर उनकी स्थिति १२ हजार वर्ष की होती है, द्युति ऋद्धि आदि समस्त देवोचित गुणों से ये सपन्न रहते है। वे परलोक के आराधक नहीं होते है ॥ सू. ९ ॥

'से जे इमे गामागर जाव' इत्यादि।

(से जे इमे) जो जीव (गामागर जाव संनिवेसेसु) पूर्वोक्त ग्राम, आकर से लेकर सन्निवेश आदि स्थानों में (मणुया भवंति) मनुष्य होते है और उनमें जो (पगइभद्दगा पगइउवसंता पगइ-पतणु-कोह-माण-माया-लोहा) प्रकृति से भद्रक होते हैं, क्रोधादिक कषायों के उदय के अभाव से जिनके परिणाम शांतियुक्त बने रहते ह, स्वभाव से ही जिनकी क्रोध, मान, माया एव लोभ ये चार कषायें पतली रहा करती हे,

વિષમ સ્થિતિને અકામનિર્જરાના બલથી ભોગવે છે તે જીવ મરી જઈને વ્યતર-પર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે ત્યા તેમની સ્થિતિ ૧૨ બાર હજાર વર્ષની હોય છે દ્યુતિ, ઋદ્ધિ આદિ સમસ્ત દેવોચિત ગુણોથી તેઓ સપન્ન રહે છે તેઓ પરલોકના આરાધક હોતા નથી (સૂ ૯)

"से जे इमे गामागर जाव" ઇત્યાદિ

(से जे इमे) જે જીવ (गामागर—जाव—सनिवेसेसु) પૂર્વે કહેલ ગામ, આકરથી લઈને સન્નિવેશ આદિ સ્થાનોમા (मणुया भवंति) મનુષ્ય થાય છે અને તેમા જે (पगइभद्दगा पगइउवसंता पगइ—पतणु—कोह—माण—माया—लोहा) પ્રકૃતિથી ભદ્રક હોય છે, ક્રોધ આદિક કષાયોના ઉદયના અભાવથી જેના ફલરૂપે શાંતિયુક્ત રહ્યા કરે છે, સ્વભાવથી જ જેના ક્રોધ, માન, માયા

माया–लोहा मिउ–मद्दव–संपण्णा अल्लीणा विणीया अम्मा-पिउ–सुस्सूसगा अम्मापिईणं अणइक्कमणिज्जवयणा अप्पिच्छा अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा अप्पेणं आरंभेणं अप्पेणं समारंभेणं

र्थमहकारजयशीला इत्यर्थ, 'अल्लीणा' आलीना =गुरुमाश्रित्य वर्तनशीला, 'विणीया' विनीता =विनयवन्त, 'अम्मा–पिउ–सुस्सूसगा' अम्बा–पितृ–शुश्रूषका =मातापित्रो सेवका, 'अम्मापिईण अणइक्कमणिज्जवयणा' अम्बापित्रोरनतिक्रमणीयवचना =मातापित्रो-र्नीतिवचनपरायणा, 'अप्पिच्छा' अल्पेच्छा =अल्पाभिलाषवन्त, 'अप्पारंभा' अल्पारम्भा -अल्प =स्वल्प, आरम्भ =पृथिव्याद्युपमर्दनरूपो येषा तेऽल्पारम्भा, 'अप्पपरिग्गहा' अल्प परिग्रहा –अल्प परिग्रहो=धनधान्यादिरूपो येषा ते तथा, एतदेव वाक्यान्तरेणाऽऽह-'अप्पेण आरभेण अप्पेण समारंभेण' अल्पेनारम्भेण अल्पेन समारम्भेण-इहाऽऽरम्भ =प्राणिनामुपघात,

(**मिउ–मद्दव–सपण्णा**) मृदुमार्दव से जिनकी आत्मा अत्यत वासित होती है, अहकार का सर्वथा जिनमें अभाव रहा करता है, (**अल्लीणा**) गुरु की आज्ञानुसार जो अपनी प्रकृति को सुचारु बनाये रहा करते है, (**विणीया**) जो प्रकृति से ही अत्यत विनीत होते है, (**अम्मा–पिउ–सुस्सूसगा**) मातापिता के जो सेवा करते हैं, (**अम्मा–पिईण अणइक्कमणिज्जवयणा**) मातापिता के वचनों के अनुसार जो चलते है, (**अप्पिच्छा**) जिनकी इच्छाएँ–आवश्यकताएँ बहुत थोडी होती है, (**अप्पारंभा**) आरभ जिनका अल्प होता है, (**अप्पपरिग्गहा**) धनधान्यादिरूप परिग्रह जिनका अल्प होता है, (**अप्पेण आरभेण अप्पेण समारभेण अप्पेण आरंभसमारंभेण वित्तिं कप्पेमाणा**) एव जो अल्प आरभ से, अल्प समारम्भ से और अल्प आरभ–समारभ से आजीविका चलाया करते

તેમજ લોભ એ ચાર કષાયો નબળા રહ્યા કરે છે (मिउ–मद्दव–सपण्णा) મૃદુ-માર્દવથી જેમનો આત્મા અત્યત વાસિત (પ્રફુલ્લ) હોય છે, અહકારનો જેમનામા સર્વથા અભાવ રહ્યા કરે છે (अल्लीणा) ગુરુની આજ્ઞા–અનુસાર જે પોતાની પ્રકૃતિને સુદર બનાવ્યા કરે છે, (विणीया) જે પ્રકૃતિથી જ અત્યત વિનીત હોય છે, (अम्मा–पिउ–सुस्सूसगा) માતા–પિતાની જે સેવા કરે છે, (अम्मापिईण अणइक्कमणिज्जवयणा) માતાપિતાના વચનો અનુસાર જે ચાલે છે (વર્તે છે), (अप्पिच्छा) જેની ઈચ્છાઓ–આવશ્યકતાઓ બહુ જ થોડી હોય છે, (अप्पारभा) આરભ જેના અલ્પ હોય છે, (अप्पेण आरभेण अप्पेण समार भेण अप्पेण आरभसमारभेण वित्तिं कप्पेमाणा) તેમજ જે અલ્પ આરભથી,

अप्पेणं आरंभसमारंभेणं वित्तिं कप्पेमाणा वहूइं वासाइं आउय पालेंति, पालित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु, तंचेव सव्वं, णवरं ठिई चउद्दसवाससहस्साइं ॥ सू० १० ॥

समारम्भस्तु तेषा परितापकरणम् 'अप्पेण आरंभसमारभेण' अल्पेन आरम्भसमारम्भेण-आरम्भश्च समारम्भश्चेति-आरम्भसमारम्भ तेन, अल्पेनारम्भेण अल्पेन समारम्भेण चेत्यर्थ, 'वित्तिं कप्पेमाणा' वृत्तिं कल्पयन्त =जीविका कुर्वाणा, 'वहूइ वासाइं आउय पालेंति' बहूनि वर्षाणि आयूषि=जीवितानि पालयन्ति, 'पालित्ता' पालयित्वा, 'कालमासे काल किच्चा' कालमासे काल कृत्वा 'अण्णयरेसु वाणमतरेसु' अन्यतरेषु व्यन्तरेषु, अतोऽग्रे 'त चेव सव्वं' तदेव=पूर्ववदेव सर्वं वर्णन ज्ञेयम्। 'णवर' नवरं=विशेषस्तु-' ठिई चउद्दस-वास-सहस्साइ' स्थितिश्चतुर्दशवर्षसहस्राणि-चतुर्दशवर्षसहस्राणि यावत् स्थिति प्रज्ञप्ता ॥ सू० १० ॥

हैं, ऐसे जीव (वहूइ वासाइ आउय पालेंति) बहुत वर्षोंतक जीवित रहा करते है, (पालित्ता कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु वाणमतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति) पश्चात् काल अवसर काल करके किसी एक व्यन्तरों के देवलोक में देवतारूप से उत्पन्न होते हैं। (त चेव सव्व) यहा पूर्ववर्णित प्रकार के अनुसार स्थिति आदि सब कुछ समझ लेना चाहिये। (णवर) विशेषता सिर्फ इतनी ही है कि वहा पर उनकी स्थिति १२ हजार वर्ष की प्रतिपादित की गई है, और यहा पर उनकी (ठिई चउद्दसवाससहस्साइ) १४ हजार वर्ष की स्थिति जाननी चाहिये ॥ सू० १० ॥

અલ્પ સમારભથી અને અલ્પ આરભ-સમારભથી પોતાની આજીવિકા ચલાવ્યા કરે છે એવા જીવ (वहूइ वासाइ आउय पालेंति) ઘણા વરસો સુધી જીવતા રહ્યા કરે છે (पालित्ता कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु वाणमतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति) પછી કાલ અવસરે કાલ કરીને કોઈ એક વ્યતરોના દેવલોકમા દેવતારૂપે ઉત્પન્ન થાય છે (तं चेव सव्व) અહી અગાઉ વર્ણન કરેલા પ્રકાર અનુસાર સ્થિતિ આદિ બધુ સમજી લેવુ જોઇએ (णवर) વિશેષતા માત્ર એટલી જ છે કે ત્યા તેમની સ્થિતિ ૧૨ બાર હજાર વરસની પ્રતિપાદિત કરેલી છે, અને અહી તેમની (चउद्दस-वास-सहस्साइं) ૧૪ ચૌદ હજાર વરસની સ્થિતિ સમજવી જોઇએ, (સૂ૦ ૧૦)

माया-लोहा मिउ-मद्दव-संपण्णा अल्लीणा विणीया अम्मा-पिउ-सुस्सूसगा अम्मापिईणं अणइक्कमणिज्जवयणा अप्पिच्छा अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा अप्पेणं आरंभेणं अप्पेणं समारंभेणं

र्थमहकारजयशीला इत्यर्थ, 'अल्लीणा' आलीना=गुरुमाश्रित्य वर्तनशाला, 'विणीया' विनीता=विनयवन्त, 'अम्मा-पिउ-सुस्सूसगा' अम्बा-पितृ-शुश्रूषका=मातापित्रो सेवका, 'अम्मापिईण अणइक्कमणिज्जवयणा' अम्बापित्रोरनतिक्रमणीयवचना=मातापित्रोर्नातिवचनपरायणा, 'अप्पिच्छा' अल्पेच्छा=अल्पाभिलाषवन्त, 'अप्पारभा' अल्पारम्भा-अल्प=स्वल्प, आरम्भ=पृथिव्याद्युपमर्दनरूपो येषा तेऽल्पारम्भा, 'अप्पपरिग्गहा' अल्प पारग्रहा -अल्प परिग्रहो=धनधान्यादिरूपो येषा ते तथा, एतदेव वाक्यान्तरेणाऽऽह-'अप्पेण आरभेण अप्पेण समारंभेण' अल्पेनारम्भेण अल्पेन समारम्भेण-इहाऽरम्भ=प्राणिनामुपघात,

(मिउ-मद्दव-सपण्णा) मृदुमार्दव से जिनकी आत्मा अत्यत वासित होती है, अहकार का सर्वथा जिनमे अभाव रहा करता है, (अल्लीणा) गुरु की आज्ञानुसार जो अपनी प्रकृति को सुचारु बनाये रहा करते है, (विणीया) जो प्रकृति से ही अयत विनीत होते है, (अम्मा-पिउ-सुस्सूसगा) मातापिता के जो सेवा करते हैं, (अम्मा-पिईण अणइक्कमणिज्जवयणा) मातापिता के वचनों के अनुसार जो चलते है, (अप्पिच्छा) जिनकी इच्छाएँ-आवश्यकताएँ बहुत थोडी होती है, (अप्पारंभा) आरभ जिनका अल्प होता है, (अप्पपरिग्गहा) धनधान्यादिरूप परिग्रह जिनका अल्प होता है, (अप्पेण आरभेण अप्पेण समारभेण अप्पेण आरंभसमारंभेण वित्तिं कप्पेमाणा) एव जो अल्प आरभ से, अल्प समारम्भ से और अल्प आरभ-समारभ मे आजीविका चलाया करते

તેમજ લોભ એ ચાર કષાયો નબળા રહ્યા કરે છે (मिउ-मद्दव-सपण्णा) મૃદુ-માર્દવથી જેમનો આત્મા અત્યત વાસિત (પ્રફુલ્લ) હોય છે, અહકારનો જેમનામા સર્વથા અભાવ રહ્યા કરે છે (अल्लीणा) ગુરુની આજ્ઞા-અનુસાર જે પોતાની પ્રકૃતિને સુદર બનાવ્યા કરે છે, (विणीया) જે પ્રકૃતિથી જ અત્યત વિનીત હોય છે, (अम्मा-पिउ-सुस्सूसगा) માતા-પિતાની જે સેવા કરે છે, (अम्मापिईण अणइक्कमणिज्जवयणा) માતાપિતાના વચનો અનુસાર જે ચાલે છે (વર્તે છે), (अप्पिच्छा) જેની ઈચ્છાઓ-આવશ્યકતાઓ બહુ જ થોડી હોય છે, (अप्पारभा) આરભ જેના અલ્પ હોય છે, (अप्पेण आरभेण अप्पेण समार भेण अप्पेण आरभसमारभेण वित्तिं कप्पेमाणा) તેમજ જે અલ્પ આરભથી,

पियरक्खियाओ भायरक्खियाओ पइरक्खियाओ कुलघररक्खि-याओ ससुरकुलरक्खियाओ परूढ-णह-केस-कक्खरोमाओ वव-गय-धूव-पुप्फ-गंध-मल्ला-लंकाराओ अण्हाणग-सेय-जल्ल-मल्ल-

भ्रातृरक्षिता, 'पइरक्खियाओ' पतिरक्षिता, 'कुलघररक्खियाओ' कुलगृहरक्षिता -कुल-गृहे=पितृगृह रक्षिता -पितृवंशोद्भवै पालिता इत्यर्थ, 'ससुरकुलरक्खियाओ' श्वशुरकुल-रक्षिता, 'परूढ-णह-केस-कक्खरोमाओ' प्ररूढ-नख-केश-कक्षरोमाण -प्ररूढानि=सजातानि नखकेशकक्षरोमाणि यासा तास्तथा, 'ववगय-धूव-पुप्फ-गंध-मल्ला-लंकाराओ' व्यपगत-धूप-पुष्प-गन्ध - माल्याऽ - लङ्कार -व्यपगता =त्यक्ता धूपपुष्पगन्धमाल्यानाम-लङ्कार याभिस्तास्तथा, 'अण्हाणग-सेय-जल्ल-मल्ल-पङ्क-परिताविओ' अस्नानक-

हुई अपने शील की रक्षा करती रहती हैं, (भायरक्खियाओ) कितनीक अपने भाइयों से सुरक्षित रहा करती है, (पइरक्खियाओ) कितनीक अपने २ पतिद्वारा सुरक्षित रहा करती हैं, (कुलघररक्खियाओ) कितनीक कुलगृह में पिता के वंशजों द्वारा पाली-पोषी जाकर सुरक्षित रहा करती हैं, (ससुर-कुल-रक्खियाओ) कितनीक ससुरपक्ष के लोगों द्वारा सुरक्षित की जाती है, (परूढ-णह-केस-कक्खरोमाओ) कितनीक ऐसी होती हैं कि जिनके कक्ष, काखरा के वाल एव नख बढे रहा करते हे, (ववगय धूव-पुप्फ-गंध-मल्ला-लंकाराओ) कितनीक एसी होती हैं जो धूप-खुशबूदार तैल आदि के लेने से तथा पुष्पों एव सुगंधित पुष्पों की मालारूप अलंकारों से सदा परित्यक्त रहा करती हैं, (अण्हाणग-सेय-जल्ल-मल्ल-पङ्क-परिताविओ) कितनीक ऐसी होती हैं जो स्नान नहीं करने से

કોઈક પિતાથી સુરક્ષિત રહેતા પોતાના શીલની રક્ષા કરતી હોય છે, (भायरक्खियाओ) કેટલીક પોતાના ભાઈઓથી સુરક્ષિત રહ્યા કરે છે, (पइरक्खियाओ) કેટલીક પોતપોતાના પતિ દ્વારા સુરક્ષિત રહ્યા કરે છે, (कुलघररक्खियाओ) કેટલીક કુલગૃહમાં પિતાના વંશજો દ્વારા પાલન-પોષણ લઈ સુરક્ષિત રહ્યા કરે છે, (ससुरकुलरक्खियाओ) કેટલીક સાસરા પક્ષના લોકો દ્વારા સુરક્ષિત કરાય છે, (परूढ-णह-केस-कक्खरोमाओ) કેટલીક એવી હોય છે કે જેના નખ, કેશ, તેમજ કાખરી (બગલ)ના વાળ, વધતા જતા હોય છે, (ववगय-धूव-पुप्फ-गंध-मल्ला-लंकाराओ) કેટલીક એવી હોય છે કે જે ધૂપ-સુગંધિત તેલ આદિના લેપથી તથા પુષ્પો તેમજ સુગંધિત પુષ્પોની માલારૂપ અલંકારોથી સદા પરિત્યક્ત રહ્યા કરે છે, (अण्हाणग-सेय-जल्ल-मल्ल-पङ्क-

मूलम्—से जाओ इमाओ गामागर जाव संनिवेसेसु इत्थियाओ भवंति, तं जहा–अंतो अंतेउरियाओ गयपइयाओ मयपइयाओ बालविहवाओ छड्डियल्लियाओ माइरक्खियाओ

टीका–'से जाओ इमाओ' इत्यादि। 'से जाओ इमाओ' अथ या इमा'-उद्दिश्य 'गामागर जाव संनिवेसेसु इत्थियाओ भवंति' ग्रामाऽऽकर यावत् सन्निवेशेषु स्त्रियो भवन्ति, 'तं जहा' तद्यथा–'अंतो अंतेउरियाओ' अन्तरन्तःपुरिका =अन्तःपुरान्तर्वर्तिन्यः, 'गयपइयाओ' गतपतिका –गता =क्वापि प्रोषिताः पतयो यासां तास्तथा, 'मयपइयाओ' मृतपतिका –मृता पतयो यासां तास्तथा, विधवा इत्यर्थः, 'बालविहवाओ' बालविधवा –बालाऽऽस्थाम् विधवा –बाल्ये वैधव्यं गता, 'छड्डियल्लियाओ' छर्दिता =पत्यादिभिः परित्यक्ता, 'माइरक्खियाओ' मातृरक्षिता =अपररक्षकाभावाज्जनन्या रक्षिता, मातृकृतरक्षया शीलरक्षणकारिका इत्यर्थः, एवमग्रेऽपि बोध्यम्, 'पियरक्खियाओ' पितृरक्षिता, 'भायरक्खियाओ'

'से जाओ इमाओ' इत्यादि।

(से जाओ इमाओ) जो ये जीव (गामागर जाव संनिवेसेसु) ग्राम आकर आदि से लेकर सनिवेशतक के स्थानों में स्त्रीपर्याय से उत्पन्न होते है, जैसे कि उनमे कितनीक स्त्रियां तो (अंतो अंतेउरियाओ) राजा के अंतःपुर की रानियां होती हैं, कितनीक (गयपइयाओ) प्रोषितभर्तृका होती है, जिनके पति प्रवासी अर्थात् परदेश गये हों उनको प्रोषितभर्तृका कहते है, कितनीक (मयपइयाओ) विधवा होती हैं, (बालविहवाओ) बालविधवा होती है, (छड्डियल्लियाओ) कितनीक पतिद्वारा परित्यक्त होती हे, कितनीक (माइरक्खियाओ) मातृरक्षिता होती है, (पियरक्खियाओ) कितनीक पिता से सुरक्षित होती

'से जाओ इमाओ' ઈત્યાદિ

(से जाओ इमाओ) જે આ જીવ (गामागर जाव संनिवेसेसु) ગામ આકર આદિથી લઇને સંનિવેશ સુધીના સ્થાનોમાં સ્ત્રીપર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે, જેમકે તેઓમાં કેટલીક સ્ત્રીઓ તો (अंतो अंतेउरियाओ) રાજાના અંતઃપુરની રાણીઓ હોય છે, કેટલીક (गयपइयाओ) પ્રોષિતભર્તૃકા હોય છે, (જેના પતિ પ્રવાસી અર્થાત્ પરદેશ ગયા હોય તેમને પ્રોષિતભર્તૃકા કહે છે), કેટલીક (मयपइयाओ) વિધવા હોય છે, કેટલીક (बालविहवाओ) બાલ-વિધવા હોય છે, (छड्डियल्लियाओ) કેટલીક પતિદ્વારા પરિત્યક્તા હોય છે, કેટલીક (माइरक्खियाओ) માતૃરક્ષિતા હોય છે, (पियरक्खियाओ) કેટ

रंभेणं अप्पेणं आरंभसमारंभेणं वित्तिं कप्पेमाणीओ अकामबंभ-चेरवासेणं तामेव पइसेज्जं णाइक्कमंति। ताओ णं इत्थियाओ एया-रूवेणं विहारेणं विहरमाणीओ बहूइं वासाइं, सेसं तं चेव, जाव चउसट्ठि वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ॥ सू० ११ ॥

समारम्भेण अल्पेन आरम्भसमारम्भेण, 'वित्तिं कप्पेमाणीओ' वृत्तिं कल्पयन्त्य –वृत्तिं=जीविका कुर्वाणा, अकामब्रह्मचर्यवासेन-अकामाना=निर्जराद्यनपेक्षाणा ब्रह्मचर्यवासस्तेन 'तामेव पइसेज्ज' तामेव पतिशय्या–पत्या सह सेविता शय्या-पतिशय्या 'णाइक्कमंति' नातिक्रामन्ति, परपुरुष-परिहारेण सर्वथा पतिव्रतधर्मपालिका इत्यर्थ, 'ताओ ण इत्थियाओ एयारूवेण विहारेण विहरमाणीओ' ता खलु स्त्रिय एतद्रूपेण विहारेण विहरन्त्य, 'बहूइ वासाइ आउय पालेंति' बहूनि वर्षाणि आयुष्य पालयन्ति, पालयित्वा, शेष तदेव यावत्-अत्र यावच्छब्देनेद दृश्यम् कालमासे काल कृत्वाऽन्यतमेषु व्यन्तरेषु देवलोकेषु देवत्वेनोपपात प्राप्ता भवन्ति, तत्र–देवलोके तासा

अल्प समारभ से, और अल्प आरम्भ-समारभसे अपनी आजीविका चलाती है, (अकाम–बंभ-चेर–वासेणं तामेव पइसेज्ज णाइक्कमति) और परवशता मे ब्रह्मचर्य का पालन करती हुई अपने पति की शय्या का उल्लघन नहीं करती है-पातिव्रत्य धर्म के पालन मे निरत रहा करती हैं, इस प्रकार जो स्त्रिया अपने जीवन को व्यतीत करती है, (ताओ ण इत्थियाओ एया-रूवेण विहारेण विहरमाणीओ बहूइ वासाइ आउय पालेंति) वे स्त्रिया इस प्रकार की अपनी नैतिक प्रवृत्ति से युक्त बनी रह कर बहुत वर्षों की आयु पालती है, (सेस त चेव) एव जब उनका मरने का अवसर आ जाता है तब वे उस अवसर मे मर कर अन्यतम व्य-

समारभेण अप्पेण आरभसमारभेण वित्तिं कप्पेमाणीओ) तेओ અલ્પ આરભથી, અલ્પ સમારભથી અને અલ્પ આરભ-સમારભથી પોતાની આજીવિકા ચલાવે છે (अकामबंभचेरवासेण तामेव पइसेज्ज णाइक्कमति) અને પરવશતાથી બ્રહ્મચર્યનુ પાલન કરતી થકી પોતાના પતિની શય્યાનુ ઉલ્લઘન કરતી નથી–પાતિવ્રત્ય ધર્મના પાલનમા નિરત રહ્યા કરે છે આ પ્રકારે જે સ્ત્રીઓ પોતાના જીવનને વ્યતીત કરે છે (ताओ ण इत्थियाओ एयारूवेण विहारेण विहरमाणीओ बहूइ वासाइ आउय पालेंति) તે સ્ત્રીઓ આ પ્રકારની પોતાની નૈતિક પ્રવૃત્તિ કરતી રહીને ઘણા વરસોની આયુ ભોગવે છે (सेस त चेव) તેમજ જ્યારે તેમના મરવાનો અવસર આવે છે ત્યારે તે અવસરમા મરીને બીજા વ્યતરોના

पंक-परितावियाओ ववगय-खीर-दहि-णवणीय-सप्पि-तेल्ल-गुल-लोण-महु-मज्ज-मंस-परिचत्त-कया-हाराओ अप्पिच्छाओ अप्पारंभाओ अप्पपरिग्गहाओ अप्पेणं आरंभेणं अप्पेणं समा-

स्वेद-जल्ल-मल्ल-पङ्क-परितापिता -अस्नानकेन=स्नानाऽभावेन हेतुना स्वेदजल्लमल्लपङ्कैः, -स्वेद = प्रस्वेद, जल्ल =शुष्क प्रस्वेद, मल्ल =रजोमात्र कठिनीभूतम्, पङ्क =आर्द्रीभूत रज', तै परितापिता =क्लेशिता -मलिनता इत्यर्थ, 'ववगय-खीर-दहि-णवणीय-सप्पि-तेल्ल-गुल-लोण-महु-मज्ज-मस-परिचत्त-कया-हाराओ' व्यापगत-क्षीर-दधि-नवनीत-सर्पि-स्तैल-गुड-लवण-मधु-मद्य-मास-परित्यक्त-कृताऽऽहारा -व्यपगतानि क्षीरदधिनवनीत-सर्पींषि यस्मात् स व्यपगतक्षीरदधिनवनीतसर्पि, तैलगुडलवणमधुमद्यमासै परित्यक्त, तत पदद्वयस्य कर्मधारय, क्षीरादिमासपर्यन्तरहित इत्यर्थ, तादृश कृत =सेवित आहारो याभि-स्तास्तथा, 'अप्पिच्छाओ' अल्पेच्छा, 'अप्पारभाओ' अल्पारम्भा -अल्प आरम्भ =पृथि-व्याद्युपमर्दनव्यापारो यासा तास्तथा, 'अप्पपरिग्गहाओ' अल्पपरिग्रहा -अल्पधनधान्यसग्रहा, 'अप्पेण आरभेण अप्पेण समारभेण अप्पेण आरंभसमारभेण' अल्पेनाऽऽरम्भेण अल्पेन

पसीना से लथपथ रहा करती है, एव पसीना के शुष्क हो जाने से उस पर बैठी हुई धूलि, काले कठिन मैल के रूप में परिणमित होकर उनके शरीर को मलिन बनाये रहती है। (ववगय-खीर-दहि-णवणीय-सप्पि-तेल्ल-गुल-लोण-महु-मज्ज-मस-परिचत्त-कया-हाराओ) कितनीक ऐसी होती हैं कि जो दूध, दही, मक्खन, सर्पि-घृत, तैल, गुड, नमक, मधु, मद्य, एव मास से वर्जित आहार किया करती हैं, (अप्पिच्छाओ) और जिनकी इच्छाएँ स्वभावत अल्प हुआ करती हे, (अप्पारभाओ अप्पपरिग्गहाओ अप्पेण आरं-भेणं अप्पेण समारभेण अप्पेण आरभसमारभेण वित्तिं कप्पेमाणीओ) वे अल्प आरभ से,

परितावियाओ) કેટલીક એવી હોય છે કે જે સ્નાન ન કરવાથી પસીનાથી લથપથ રહ્યા કરે છે, તેમજ પસીનો સુકાઇ જવાથી તેના પર ઉડીને પડેલી ધૂળ કાળા અને કઠણ મેલના રૂપે પરિણામ પામીને તેમના શરીરને મલિન બનાવ્યા કરે છે (ववगय-खीर-दहि-णवणीय-सप्पि-तेल्ल-गुल-लोण-महु-मज्ज-मस-परिचत्त-कया-हाराओ) કેટલીક એવી હોય છે કે જે દૂધ, દહીં, માખણ, સર્પિ-ઘી, તેલ, ગોળ, મીઠું, મધ, મદ્ય, તેમજ માંસથી વર્જિત આહાર કર્યા કરે છે, (अप्पिच्छाओ) અને જેમની ઇચ્છાઓ સ્વભાવથી જ અલ્પ રહ્યા કરે છે (अप्पारभाओ अप्पपरिग्गहाओ अप्पेण आरभेण अप्पेण

गोयमा गोव्वइया गिहिधम्मा धम्मचितगा अविरुद्ध-विरुद्ध-वुड्ढ-

पद्द्रव्याणि दश च सप्तम भोजने येषा ते दशसप्तमा, 'दगएक्कारसमा' दशैकादशा –ओद-नादीनि दशद्रव्याणि दशस्वैकादशपूरणाय भोजने येषा ते दशैकादशा, 'गोयमा' गौतमा - वृषभ पुरस्कृत्य तत्क्रीडा दर्शयित्वा येऽन्न याचन्ते, तेन च जीवन निर्वाहयन्ति त इत्यर्थ । 'गोव्वइया' गोव्रतिका –गोव्रतमस्ति येषा ते गोव्रतिका, ते हि गोषु ग्रामान्निर्गच्छन्तीषु निर्ग-च्छन्ति, चरन्तीषु चरन्ति, पिबन्तीषु पिबन्ति, आयान्तीषु आयान्ति, शयानासु च शेरते, उक्तञ्च–

"गावीहिं सम निग्गमपवेससयणासणाइ पकरेंति।
भुंजति जहा गावी तिरिक्खवास विहाविंता ॥ १ ॥"

तथा सातवा पानी हो, (दगएक्कारसमा) दस द्रव्य दाल भात आदि अन्य हों, एव ११ वा पानी हो, (गोयमा) तथा जो बैल को आगे कर के जनता को उसकी क्रीडा दिखाकर उससे अन्न की याचना कर अपना जीवन निर्वाह करने वाले हों, (गोव्रतिका) [1]गोव्रती हों, (गिहि-

(१) गोव्रती पुरुष, जब गायें गाव से बाहर निकलती है तब अपने घर से बाहर निकलते है, जब वे चरती है तब वे भोजन करते हैं, जब वे पानी पीती हैं तब ही ये पानी पीते है। जब ये घर आती ह तब येभी अपने घर आते है। और जब ये सोती हैं तब ये भी सो जाते हैं।

"गावीहिं सम निग्गमपवेससयणासणाइ पकरेंति। भुजति जहा गावी तिरिक्ख-वास विहाविंता ॥ १ ॥

(दगसत्तमा) छ द्रव्य (अन्न)–ચોખા દાળ આદિ હોય તથા સાતમુ પાણી હોય, (दगएक्कारसमा) દશ દ્રવ્ય–દાળ ભાત આદિ અન્ન હોય તેમજ ૧૧ મુ પાણી હોય, (गोयमा) તથા જે બળદોને આગળ લાવીને લોકોને તેની ક્રીડા દેખાડીને તેમની પાસેથી અન્ન માગી પોતાનુ જીવન નિર્વાહ કરવાવાળા હોય, (गोव्रतिका) [1]ગોવ્રતી હોય, (गिहिधम्मा) ગૃહસ્થ ધર્મને કલ્યાણકારક

(૧) ગોવ્રતી પુરુષ, જ્યારે ગાયો ગામથી બહાર નીકળે છે ત્યારે પોતાના ઘેરથી બહાર નીકળે છે જ્યારે તેઓ ચરે છે ત્યારે તે ભોજન કરે છે, જ્યારે તેઓ પાણી પીએ છે ત્યારેજ તે પાણી પીએ છે જ્યારે તેઓ ઘેર આવે છે ત્યારે તે પણ ઘેર આવે છે, અને જ્યારે તેઓ સુવે છે ત્યારે તે પણ સુઇ જાય છે

"गावीहिं सम निग्गमपवेससयणासणाइ पकरेंति। भुजति जहा गावी तिरि-क्खवास विहाविंता" ॥ १ ॥

मूलम्—से जे इमे गामागर जाव सन्निवेसेसु मणुया भवंति, तं जहा–दगबिइया दगतइया दगसत्तमा दगएक्कारसमा

गतिस्तासा स्थितिस्तासामुपपात प्रज्ञप्त, तासा खलु हे भदन्त! देवत्र प्रामाना कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता? इति प्रश्ने भगवानाह–'गोयमा!' हे गौतम! इति। 'चउसट्ठिं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता' चतु षष्टि वर्षसहस्राणि स्थिति प्रज्ञप्ता ॥ सू० ११ ॥

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे' अथ य इमे=ईदृशा, 'गामागर-जाव सन्निवेसेसु मणुया भवंति' ग्रामाऽऽकर यावत् सन्निवेशेषु-ग्रामाऽऽकर-नगर-निगम-राजधानी-खेट-कर्वट-पत्तन-मडम्ब-द्रोणमुखा-ऽऽश्रम-सबाध-सन्निवेशेषु प्रागुच्यारयात स्वरूपेषु मनुजा भवन्ति, 'त जहा' तद्यथा–'दगबिइया' दकद्वितीया –ओदनापेक्षया दकम्= उदक द्वितीय भोजने येषा ते दकद्वितीया, 'दगतइया' दकतृतीया –ओदनसूपरूपद्रव्य-द्वयाऽपेक्षया दकम्=उदक तृतीय येषा ते दकतृतीया, 'दगसत्तमा' दकसप्तमा –ओदनादीनि

न्तरों के देवलोक मे देवता की पर्याय से उत्पन्न होती है। वहीं पर उनकी गति, वहीं पर उनकी स्थिति एव वहीं पर उनका उपपात होता है। हे भदन्त! वहाँ पर उनकी स्थिति कितनी है? हे गौतम! (चउसट्ठिं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता) वहा उनकी स्थिति ६४ हजार वर्ष की है ॥ सू० ११ ॥

'से जे इमे गामागर जाव' इत्यादि।

(से जे इमे गामागर जाव सन्निवेसेसु मणुया भवंति) ये जो इन ग्राम आकर आदि पूर्वोक्त स्थानोंमे इस प्रकार के मनुष्य होते है, (त जहा) जैसे कि (दगबिइया) जिनके आहार में अन्न एव द्वितीय पानी ये दो ही द्रव्य हों, (दगतइया) अन्न–चावल, दाल एव तृतीय पानी ये तीन द्रव्य हों, (दगसत्तमा) छह द्रव्य अन्न–चावल–दाल आदि हों

દેવલોકમા દેવતાની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે અહી જ તેમની ગતિ, અહી જ તેમની સ્થિતિ તેમજ અહી જ તેમનો ઉપપાત થાય છે હે ભદન્ત! ત્યા તેમની સ્થિતિ કેટલી હોય છે? હે ગૌતમ! (चउसट्ठिं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता) ત્યા તેમની સ્થિતિ ૬૪ ચોસઠ હજાર વરસની છે (સૂ૦ ૧૧)

'से जे इमे गामगर जाव' ઇત્યાદિ

(से जे इमे गामगर जाव सन्निवेसेसु मणुया भवंति) જેઓ આ ગામ, આકર આદિ ઉપર કહેલા સ્થાનોમા આ પ્રકારે મનુષ્ય થાય છે, (त जहा) જેમકે (दगबिइया) જેના આહારમા અન્ન તેમજ બીજુ પાણી એ બે જ દ્રવ્ય–પદાર્થ હોય, (दगतइया) અન્ન–ચોખા, દાળ, તેમજ ત્રીજુ પાની ત્રણ દ્રવ્ય હોય,

फाणियं महुं मज्जं मंसं. णो अण्णत्थ एक्काए सरिसवविगईए, ते णं मणुया अप्पिच्छा, त चेव सव्वं, णवरं चउरासीइं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ॥ सू० १२ ॥

ता इमा नवम्मविकृतय प्रदर्श्यन्ते–'त जहा' तद्यथा–'खीर दहि णवणीय सप्पि तेल्ल फाणिय महु मज्ज मास' क्षीर दधि नवनीत सर्पि तैल फाणित मधु मद्य मासम्-तत्र-नवनीत='मक्खन' इति प्रसिद्ध, फाणित=गुड, अन्यानि प्रसिद्धानि, आहर्तुं न कल्पन्ते इत्यर्थ । 'णो अण्णत्थ एक्काए सरिसवविगईए' नो अन्यत्रैकस्या सार्षपविकृते-सार्षपतैलरूपामेका विकृतिं वर्जयित्वा अन्या उक्ता विकृतयो न कल्पन्तेऽभ्यवहर्तुमिति शेष । 'ते ण मणुया अप्पिच्छा' ते खलु मनुजा अल्पेच्छा, 'सेस त चेव' शेष तदेव=अवशिष्ट सर्वं पूर्ववदेव बोध्यम । 'णवर' नवर=विशेषस्तु–'चउरासीइ वाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता' चतुरशीतिं वर्षसहस्राणि स्थिति प्रज्ञप्ता–व्यन्तरेषु देवत्वेनोत्पन्नाना तेषा तत्रावस्थान चतुरशीतिवर्षसहस्राणि यावत ॥ सू० १२ ॥

गय) खाने योग्य नहीं हैं। वे विकृतिया ये हैं–(खीर दहि णवणीय सप्पि तेल्ल फाणिय महुं मज्ज मास) क्षीर, दधि, नवनीत, सर्पि, तैल, फाणित, मधु, मद्य, एव मास । गुड का नाम फाणित है। नवनीत नाम मक्खन का है। (णो अण्णत्थ एक्काए सरिसवविगईए) एक सरसों के तैलरूप विकृति का परिहार नहीं बतलाया गया है। नवरूप विकृति का परिहार करने वाले व्यक्ति सरसों का तैल खा सकते हैं। (ते ण मणुया अप्पिच्छा, त चेव सव्व, णवर चउरासीइ वाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता) ये मनुष्य अल्प-इच्छावाले होते हैं। अवशिष्ट समस्त पूर्व की तरह यहा जान लेना चाहिये। विशेषता

નથી તે વિકૃતિઓ આ છે–(खीर दहिं णवणीय सप्पि तेल्ल फाणिय महु मज्ज मास) ક્ષીર (દૂધ), દહીં, નવનીત, સર્પિ–(ઘૃત), તેલ, ફાણિત, મધ, મદ્ય, તેમજ માસ ગોળનું નામ ફાણિત છે નવનીત એટલે માખણ (णो अण्णत्थ एक्काए सरिसवविगईए) એક સરસવના તેલરૂપ વિકૃતિના પરિહાર નથી બતાવ્યો નવરસરૂપ વિકૃતિનો પરિહાર કરવાવાળા માણસ સરસવનું તેલ ખાઇ શકે છે (ते णं मणुया अप्पिच्छा, त चेव सव्व, णवर चउरासीइ वाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता) આ મનુષ્યો અલ્પ–ઇચ્છાવાળા હોય છે બાકીનું બધું પૂર્વ કહ્યા પ્રમાણે જાણી લેવુ જોઇએ વિશેષમા વિશેષતા

सावग-प्पभितयो, तेसिं ण मणुयाणं णो कप्पंति इमाओ नव रस-विगईओ आहारेत्तए, तं जहा—खीरं दहिं णवणीयं सप्पिं तेल्लं

छाया —गोभि सम निर्गमप्रवेशशयनाऽऽसनादि प्रकुर्वन्ति ।
भुञ्जते यथा गावस्तिर्यग्वाम विभावयन्त ॥ १ ॥ इति ।

'गिहिधम्मा' गृहिधर्माण —'गृहस्थधर्म एव श्रेयस्कर'- इति मत्वा दानादिधर्माराधका **'धम्मचिंतगा'** धर्मचिन्तका =धर्मशास्त्रपाठका , **'अविरुद्ध—विरुद्ध—वुड्ढसावग—प्पभितओ'** अविरुद्ध-विरुद्ध वृद्धश्रावक—प्रभृतय , अविरुद्धा वैनयिका , उक्तञ्च—

" अविरुद्धो विणयकरो, देवाईण पराए भत्तीए ।
जह वेसियायणसुओ, एव अन्ने वि नायव्वा ॥ १ ॥ "

छाया—अविरुद्धो विनयकरो, देवादीना परया भक्त्या ।
यथा वैश्यायनसुत,एवमन्येऽपि ज्ञातव्या ॥ १ ॥ इति ।

विरुद्धा =अक्रियावादिन , आत्माद्यनभ्युपगमेन बाह्याभ्यन्तरविरुद्धत्वात्, वृद्धश्रावका =ब्राह्मणा , एते प्रभृतिरादिर्येषा ते तथा । **'तेसिं ण मणुयाण णो कप्पति इमाओ नव रसविगईओ आहारेत्तए'** तेषा खलु मनुजाना नो कल्पन्ते इमा नव रसविकृतीराहर्तुम्,

धम्मा) गृहस्थ धर्म को श्रेयस्कर मानकर दानादिक धर्म के आराधक हों, **(धम्मचिंतगा)** धर्मशास्त्र के पाठक हों, **(अविरुद्ध—विरुद्ध—वुड्ढसावग—प्पभितयो)** [1]अविरुद्ध—वैनयिक हों, विरुद्ध—अक्रियावादी हों—आत्मादिक पदार्थों के नहीं मानने से बाह्य एव आभ्यन्तर क्रियाओं के विरोधी हों वृद्धश्रावक हों-ब्राह्मण हों—इत्यादि। **(तेसिं ण मणुयाण नो कप्पति इमाओ नव रसविगईओ आहारेत्तए)** इन समस्त जनों को ये नवरस विकृतिया (नौ वि-

(१) अविरुद्धो विणयकरो देवाईण पराए भत्तीए । जह वेसियायणसुओ एवं अन्ने वि नायव्वा ॥ १ ॥

માનીને દાન-આદિક ધર્મના આરાધક હોય, (धम्मचिंतगा) ધર્મશાસ્ત્રના પાઠ કરનારા હોય, (अविरुद्ध-विरुद्ध-वुड्ढसावग-प्पभितयो) [1]અવિરુદ્ધ-વૈનયિક હોય વિરુદ્ધ-અક્રિયાવાદી હોય-આત્મા-આદિક પદાર્થોને ન માનવાથી બાહ્ય તેમજ અભ્યન્તર ક્રિયાઓના વિરોધી હોય, વૃદ્ધશ્રાવક હોય-બ્રાહ્મણ હોય-ઇત્યાદિ (तेसिं णं मणुयाण णो कप्पति इमाओ नव रसविगईओ आहारेत्तए) આ સમસ્ત લોકોને એ નવરસવિકૃતિઓ (નૌ વિગયો) ખાવા યોગ્ય

(१) अविरुद्धो विणयकरो देवाईण पराए भत्तीए । जह वेसियायणसुओ एवं अन्ने वि नायव्वा ॥ १ ॥

दक्खिणकूलगा उत्तरकूलगा संखधमगा कूलधमगा मिगलुद्धगा हत्थितावसा उद्दडगा दिसापोक्खिणो वक्कवासिणो बिलवासिणो

एव ये क्षण तिष्ठन्ति ते, **'सपक्खालगा'** सप्रक्षालका —ये मृत्तिकादिघर्षणपूर्वकमङ्गानि प्रक्षालयन्ति ते सप्रक्षालका, **'दक्खिणकूलगा'** दक्षिणकूलका —ये गङ्गाया पूर्वाभिमुखगमनशीलाया दक्षिणतट एव वसन्ति ते, **'उत्तरकूलगा'** उत्तरकूलका —उत्तरतट एव ये वसन्ति ते, **'संखधमगा'** शङ्खध्मायका =शङ्खवादका —शङ्ख वादयित्वा ये भुञ्जते ते इत्यर्थ, **'कूलधमगा'** कूलध्मायका —ये कूले स्थित्वा शब्द कृत्वा भुञ्जते ते, **'मियलुद्धगा'** मृगलुब्धका —व्याधवन्मृगमासमजीविन, **'हत्थितावसा'** हस्तितापसा —ये हस्तिन मारयित्वा तेनैव बहुकाल भोजनतो यापयन्ति ते, **'उद्दडगा'** उद्दण्डका —उत्=ऊर्ध्वं दण्डा येषा ते उद्दण्डका, दण्डमूर्ध्वं कृत्वा ये सञ्चरन्ति ते इत्यर्थ, **'दिसापोक्खिणो'** दिशाप्रोक्षिण =उदकेन दिश प्रोक्ष्य ये फलपुष्पादि समुच्चिन्वन्ति ते, **'वक्कवासिणो'** वल्कवासस —वल्कानि=तरुत्वच एव वासासि येषा ते तथा, **'बिलवासिणो'** बिलवासिन =

डुबकी लगाकर स्नान करनेवाले, **(निमज्जगा)** पानी में कुछ देर तक डूबकर स्नान करने वाले, **(सपक्खालगा)** मिट्टी आदि से अग को घर्षण कर स्नान करने वाले, **(दक्खिणकूलगा)** गगा के दक्षिण तट पर वसने वाले, **(उत्तरकूलगा)** गगा के उत्तर तट पर वसने वाले, **(संखधमगा)** शखों को बजाकर भोजन करने वाले, **(कूलधमगा)** नदी के तट पर बैठ कर शब्द कर के भोजन करने वाले, **(मियलुद्धगा)** व्याधोंकी तरह मृग के मास को खाने वाले, **(हत्थितावसा)** हाथी को मारकर उसके मास का भोजन करने वाले, **(उद्दडगा)** दण्डे को ऊचा करके फिरने वाले, **(दिसापोक्खिणो)** दिशाओं को जल से सिंचन करने वाले, **(वक्कवासिणो)** वृक्षों की छाल को पहिरने वाले, **(बिलवासिणो)** भूमिगृह मे निवास

સ્નાન કરવાવાળા, (निमज्जगा) પાણીમા થોડીવાર સુધી ડૂબીને સ્નાન કરવાવાળા, (संपक्खालगा) માટી આદિ વડે અગને ઘસીને સ્નાન કરવા વાળા, (दक्खिणकूलगा) ગગાના દક્ષિણ તટ ઉપર વસવાવાળા, (उत्तरकूलगा) ગગાના ઉત્તર તટ ઉપર વસવાવાળા, (संखधमगा) શખ વગાડીને ભોજન કરવાવાળા, (कूलधमगा) નદીના તટ ઉપર બેસીને બ્દ કરતા કરતા (બોલતા બોલતા) ભોજન કરવાવાળા, (मियलुद्धगा) શિકારીની પેઠે મૃગનુ માસ ખાવાવાળા, (हत्थितावसा) હાથીને મારીને તેના માસનુ ભોજન કરવાવાળા, (उद्दडगा) ડડાને ઉચો કરી ફરવાવાળા, (दिसापोक्खिणो) દિશાઓમા પાણી છાટવા વાળા, (वक्कवासिणो) વૃક્ષની છાલ પહેરવા વાળા, (बिलवासिणो) ભૂમિગૃહમા

मूलम्—से जे इमे गंगाकूलगा वाणपत्था तावसा भवंति, तं जहा—होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जण्णई सड्ढई थालई हुंवउट्ठा दंतुक्खलिया उम्मज्जगा संमज्जगा निमज्जगा सपक्खालगा

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे' अथ ये इमे 'गंगाकूलगा' गङ्गाकूलका =गङ्गातटाश्रिता 'वाणपत्था' वानप्रस्था =वानप्रस्थाश्रमवर्तिन 'तावसा भवंति' तापसा भवन्ति 'तं जहा' तद्यथा–'होत्तिया' होत्रिका =अग्निहोत्रिका, 'पोत्तिया' पोत्रिका = वस्त्रधारका, 'कोत्तिया' कौत्रिका =भूमिशायिन, 'जण्णई' यज्ञकिनः=यज्ञकारका, 'सड्ढई' श्राद्धकिन =श्राद्धकारका, 'थालई' स्थालकिन =भोजनपात्रधारका, 'हुंवउट्ठा' कुण्डिकाधारिणा, 'हुंवउट्ठा' इति देशीय शब्द, 'दंतुक्खलिया' दन्तोद्खलिका =फलभोजिन, 'उम्मज्जगा' उन्मज्जका –उन्मज्जनमात्रेण=जलोपरि तरणमात्रेण ये स्नान्ति ते, 'सम्मज्जगा' सम ज्जका -उन्मज्जनस्यैवाऽसकृत् करणेन ये स्नान्ति ते, 'निमज्जगा' निमज्जका —स्नानार्थं निमग्ना

सिर्फ यहा इतनी ही है कि ऐसे जीव जो व्यन्तर देवों मे उत्पन्न होते हैं उनकी वहा स्थिति चौरासी हजार वर्ष की बतलाई गई है ॥सू १२॥

'से जे इमे' इत्यादि

(से जे इमे) जो ये (गंगाकूलगा वणपत्था तावसा भवति) गगा के तट पर रहनेवाले वानप्रस्थ तापस है, जैसे (होत्तिया) अग्निहोत्रिक, (पोत्तिया) पोत्रिक वस्त्रधारक, (कोत्तिया) कौत्रिक–भूमिशायी–भूमि पर सोने वाले, (जण्णई) यज्ञकारक (सड्ढइ) श्राद्धकारक, (थालई) भोजनपात्रधारक, (हुंवउट्ठा) कुण्डिकाधारी, (दतुक्खलिया) फलभोजी, (उम्मज्जगा) एक बार पानी मे डुबकी लगाकर स्नान करने वाले, (सम्मज्जगा) बार बार

માત્ર અહી એટલીજ છે કે જીવ જે વ્યન્તર દેવોમા ઉત્પન્ન થાય છે તેની ત્યા સ્થિતિ ચોર્યાસી હજાર વરસની બતાવવામા આવી છે (સૂ ૧૨)

'से जे इमे' ઈત્યાદિ

(से जे इमे) જે આ (गंगाकूलगा वाणपत्था तावसा भवति) ગગાના તટ પર વસનારા વાનપ્રસ્થ તાપસ હોય છે, જેવા કે-(होत्तिया) આગ્નિહોત્રિક, (पोत्तिया) પોત્રિક-વસ્ત્રધારક, (कोत्तिया) કૌત્રિક–ભૂમિશાયી–ભૂમિ ઉપર સુવાવાળા, (जण्णई) યજ્ઞકારક, (सड्ढई) શ્રાદ્ધકારક, (थालई) ભોજનપાત્રધારક, (हुंवउट्ठा) કુડિકાધારી, (दतुक्खलिया) ફલભોજી, (उम्मज्जगा) એકવાર પાણીમા ડુબકી મારીને સ્નાન કરવાવાળા, (सम्मज्जगा) વારવાર ડુબકી મારીને

परिसडिय-कंद-मूल-तय-पत्त-पुप्फ-फलाहारा जला-भिसेय-कढिण-गायभूया आयावणाहि पंचग्गितावेहि इगालसोल्लियं कंडुसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा वहूडं वासाइं परियागं पाउणंति, पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेण जोइ-

---

भुञ्जते कन्दमूलत्वचामपि तथाविधानामेवोपयोग कुर्वते ते, 'जलाभिसेय-कढिण-गाय-भूया' जलाभिषेक-कठिन-गात्र-भूता -जलाभिषेकेण कठिन यद् गात्र तत् प्राप्ता ये ते तथा, '.,यावणाहिं' आतपनाभि -प्रखररविकराऽऽसेवनाभि, 'पचग्गितावेहिं' पञ्चाग्नितापै -चतसृपु दिक्षु प्रज्वालितैश्चतुर्भिरग्निभि उपरिभागे सूर्यकिरणपञ्चमैर्ये तापास्तै, 'इगालसोल्लिय' अङ्गारपक्वम्-प्राकृते-'पच्' धातो स्थाने 'सोल्ल' आदेशो भवति। अङ्गारैर्निर्धूम-वल्दनलपिण्डैरिव पक्वम्, 'कडुसोल्लिय' कन्दुपक्वम्-कन्दु =चणकादि-भर्जनपात्र, तत्र पक्वम्, 'अप्पाण करेमाणा' आत्मान=शरीर कुर्वाणा, 'वहूडं वासाइ परियाग पाउणति' वहूनि वर्षाणि पर्याय=वानप्रस्थपर्याय पालयन्ति, पालयित्वा,

---

गिरे हुए या किसी के द्वारा लाये गये कद, मूल, त्वक्, पत्र, पुष्प एव फलों का आहार करने वाले, (जलाभिसेय-कढिण-गाय भूया) जलाभिषेक करने से जिनका शरीर कठिन हो गया है ऐसे, (आयावणाहिं पचग्गितावेहिं इगालसोल्लिय कडुसोल्लिय पिव अप्पाण करेमाणा) तथा आतापना-प्रखर सूर्य की किरणों के सेवन से, पचाग्नि के बीच बैठकर तापों के सहन करने से अगार मे पक्व हुए जैसे एव भाड में भुजे हुए जैसे अपने शरीर को करन वाले ये वानप्रस्थ तापस जन (वहूइं वासाइ परियाग पाउणति) बहुत वर्ष पर्यन्त वानप्रस्थ तापस की पर्याय का पालन करते हुए (कालमासे काल किच्चा)

લાવી આપેલા કંદ, મૂલ, છાલ, પત્ર, પુષ્પ, તેમજ ફળનો આહાર કરવાવાળા, (जलाभिसेय-कढिण-गाय-भूया) જલનો અભિષેક કરવાથી જેના શરીર કઠણ થઈ ગયા હોય એવા, (आयावणाहिं पचग्गितावेहिं इगालसोल्लिय कडुसोल्लिय पिव अप्पाण करेमाणा) તથા આતાપના-પ્રખર સૂર્યના કિરણોના સેવનથી, પંચાગ્નિના વચ્ચે બેસીને તાપ સહન કરવાથી, અંગારમાં પકાવેલ હોય તેવા તેમજ હાડલામાં ભૂંજેલ જેવા પોતાના શરીરને કરી નાખવાવાળા તે વાન-પ્રસ્થ તાપસજન (તપસ્વીઓ) (बहूइ वासाइ परियाग पाउणति) ઘણાં વરસો સુધી વાનપ્રસ્થ તાપસની પર્યાયનું પાલન કરતા કરતા (कालमासे काल किच्चा)

जलवासिणो रुक्खमूलिया अंबुभक्खिणो वाउभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुप्फाहारा बीयाहारा

भूमिगृहवासिनः, 'जलवासिणो' जलवासिनः—ये जले प्रविष्टा एव निवसन्ति ते, 'रुक्खमूलिया' वृक्षमूलकाः—तरुतले ये निवसन्ति ते, 'अंबुभक्खिणो' अम्बुभक्षिणः= जलाहारकारिणः, 'वाउभक्खिणो' वायुभक्षिणः=पवनाहाराः, 'सेवालभक्खिणो' शैवालभक्षिणः—शैवालं=जललता भक्षन्ति तच्छीलाः—जलोपरिस्थितहरितवनस्पतिविशेषभोजिन इत्यर्थः, 'मूलाहारा' मूलाहाराः—मूलानि आहरन्ति तच्छीलाः 'कंदाहारा' कन्दाऽऽहाराः= सूरणादिकन्दभक्षिणः, 'तयाहारा' त्वगाहाराः=निम्बादित्वग्भक्षिणः, 'पत्ताहारा' पत्राऽऽहाराः=बिल्वादिपत्रभक्षिणः, 'पुप्फाहारा' पुष्पाऽऽहाराः=कुन्दशोभाञ्जनादिपुष्पभक्षिणः, 'बीयाहारा' बीजाऽऽहाराः—कूष्माण्डादिबीजभोजिनः, 'परिसडिय-कंद-मूल-तय-पत्त-पुप्फ-फला-हारा' परिशटित-कन्द-मूल-त्वक्-पत्र-पुष्प-फला-ऽऽहाराः— परिशटितं=केनचिदानीतं स्वयं पतितं च परिशटितम्, तादृशं कन्दमूलत्वक्पत्रपुष्पफलम् आहरन्ति तच्छीलाः—केन चित् आनीतानि तरुभ्यः स्वयं पतितानि वा पत्रपुष्पफलान्येव

करने वाले, (जलवासिणो) जल में खडे रहने वाले, (रुक्खमूलिया) वृक्ष के नीचे निवास करने वाले, (अंबुभक्खिणो) मात्र जल का आहार करने वाले, (वाउभक्खिणो) मात्र वायु का ही आहार करने वाले, (सेवालभक्खिणो) मात्र शैवालका ही आहार करने वाले, (मूलाहारा) मात्र मूल का ही आहार करने वाले, (कंदाहारा) सूरणादिक कंदों का आहार करने वाले, (तयाहारा) त्वक्–छालका आहार करने वाले, (पत्ताहारा) बिल्व आदि के पत्तों का आहार करने वाले, (पुप्फाहारा) पुष्पों का आहार करने वाले, (परिसडिय-कंद-मूल-तय-पत्त-पुप्फ-फला-हारा) तोड कर या स्वयं लाये हुए नहीं, किन्तु स्वयं

निवास करवावाळा, (जलवासिणो) જલમાજ ઉભા રહેવાવાળા, (रुक्खमूलिया) વૃક્ષની નીચે નિવાસ કરવાવાળા, (अंबुभक्खिणो) માત્ર પાણીનો આહાર કરવાવાળા, (वाउभक्खिणो) માત્ર વાયુનોજ આહાર કરવાવાળા, (सेवालभक्खिणो) માત્ર શૈવાળનોજ આહાર કરવાવાળા, (मूलाहारा) માત્ર મૂળનો જ આહાર કરવાવાળા, (कंदाहारा) સૂરણ આદિ કંદનો આહાર કરવાવાળા, (तयाहारा) ત્વક્ છાલનો આહાર કરવાવાળા, (पत्ताहारा) બીલી આદિ પાનનો આહાર કરવાવાળા, (पुप्फाहारा) પુષ્પોનો આહાર કરવાવાળા, (बीयाहारा) કૂષ્માંડ આદિના બીજનો આહાર કરવાળા, (परिसडिय-कंद-मूल-तय-पत्त-पुप्फ-फलाहारा) તોડીને અથવા પોતે લાવેલ ન હોય પરંતુ પોતાની મેળે પડી ગયેલા અ કોઈએ

भवंति, तं जहा–कंदप्पिया कुक्कुइया मोहरिया गीयरइप्पिया नच्चणसीला, ते णं एएणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियायं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणा-

सेसु पव्वइया समणा भवंति' याव सन्निवेशेषु प्रव्रजिता श्रमणा भवन्ति, 'तं जहा' तद्यथा–'कंदप्पिया' कान्दर्पिका –हास्यकारका भाण्डाद्य, 'कुक्कुइया' कौकुचिका –कुकुचेन=कुत्सितचेष्टया चरन्तीति कौकुचिका ये च भ्रूनयनवदनकरचरणाऽऽदिभिर्भण्डा इव तथा चेष्टन्ते यथा स्वयमहसन्त एव परान हासयन्ति ते। 'मोहरिया' मौखरिका =वाचाला –नानाविधाऽसम्बद्धभाषिण इत्यर्थ। 'गीय–रइ–प्पिया' गीत–रति–प्रिया –गीतेन या रति =क्रीडा सा प्रिया येषा ते तथा, 'नच्चणसीला' नर्तनशीला 'ते ण एएण विहारेणं विहरमाणा' ते खलु एतेन विहारेण विहरन्त=उक्तमाचरणमाचरन्त, 'बहूइ वासाइ सामण्णपरियायं पाउणति' बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्याय=चारित्रपर्याय पालयन्ति, 'पाउणित्ता' पालयित्वा 'तस्स ठाणस्स' तस्य स्थानस्य=

समणा) प्रव्रजित श्रमण होते हैं, (त जहा) जैसे–(कदप्पिया कुक्कुइया मोहरिया गीयरइप्पिया) कादर्पिक–हास्यकारक भाड आदि, कौकुचिक–भ्रू, नयन, वदन, कर एव चरण आदिकों से कुत्सित चेष्टाएँ करके भाडों की तरह स्वय न हँसकर दूसरों को हँसाने वाले, गीतपूर्वक क्रीडा को अधिक पसद करने वाले, (नच्चणसीला) नृत्य करने के स्वभाव वाले, ये सब (एएण विहारेण विहरमाणा बहूइ वासाइ सामण्णपरियाय पाउणति) अपने २ पद के अनुसार उक्त आचरण को आचरण करते हुए बहुत वर्षों तक श्रमणपर्याय को पालते हैं, (पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय–अपडिक्कता कालमासे काल

समणा) પ્રવ્રજિત શ્રમણુ થાય છે, (त जहा) જેવાકે (कदप्पिया कुक्कुइया मोहरिया गीय–रइ–प्पिया) કાદર્પિક–હાસ્યકારક (ભવાયા) આદિ, કૌકુચિક–ભ્રૂ, નયન, વદન, કર તેમજ પગ આદિ વડે કુત્સિત ચેષ્ટાઓ કરી ભવૈયાની પેઠે સ્વય (પોતે) ન હસતા બીજાને હસાવવાવાળા, મૌખરિક–અનેક પ્રકારના અસબદ્ધ પ્રલાપ કરવાવાળા, ગીતયુક્ત ક્રીડાને વધારે પસદ કરવાવાળા, (नच्चणसीला) નૃત્ય કરવાના સ્વભાવવાળા, આ બધા (एएण विहारेण विहरमाणा बहूइं वासाइ सामण्णपरियाय पाउणति) પોત પોતાના પદ પ્રમાણે ઉક્ત આચરણને આચરતા આચરતા ઘણા વરસો સુધી શ્રમણુ–પર્યાયને પાળે છે (पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय–अपडिक्कता कालमासे काल किच्चा उक्कोसेण

सिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति। पलिओवम वास-
सहस्समब्भहियं ठिई। आराहगा? णो इणट्ठे समट्ठे। सेसं
तं चेव ॥ सू० १३ ॥

मूलम्—से जे इमे जाव सन्निवेसेसु पव्वइया समणा

'कालमासे काल किच्चा' कालमासे काल कृत्वा 'उक्कोसेण जोइसिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति' उत्कर्षेण ज्योतिषिकेषु देवेषु देवत्वेनोपपत्तारो भवन्ति, 'पलिओवम वाससयसहस्समब्भहिय ठिई' पल्योपम वर्षशतसहस्राभ्यधिक स्थिति – वर्षशतसहस्राणि अभ्यधिकानि यत्र तत्–वर्षशतसहस्राभ्यधिकम्=एकलक्षवर्षाधिक पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्तेति। शिष्य पृच्छति–एते ज्योतिषिका देवा 'आराहगा?' आराधका= परलोकस्याराधका भवन्ति किम्?, उत्तरमाह–'णो इणट्ठे समट्ठे' नाऽयमर्थ समर्थ=सगत, परलोकस्याराधका न भवन्ति। अस्यार्थस्तु–अग्रेोत्तरार्द्धेऽष्टमे सूत्रे व्याख्यात ॥ सू० १३ ॥

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे' अथ य इमे 'जाव सन्निवे-

मरण के अवसर मे मृत्यु के वशवर्ती हो, (उक्कोसेण जोइसिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवति) उत्कृष्ट रूप से ज्योतिषी देवों मे देवरूप से उत्पन्न हो जाते हैं। (पलिओवम वाससयसहस्समब्भहिय ठिई) वहा पर उनकी स्थिति १ लाख वर्ष अधिक एक पल्यप्रमाण होती है। गौतम पूछते है–हे नाथ। (आराहगा) ये परलोक के आराधक होते है या नहीं? उत्तर–(णो इणट्ठे समट्ठे) ये परलोक के आराधक नहीं होते है ॥ सू १३ ॥

'से जे इमे जाव' इत्यादि

(से जे इमे) जो ये (जाव सन्निवेसेसु) ग्राम नगर आदि स्थानों मे (पव्वइया

કાલ અવસરે કાલ કરીને (उक्कोसेण जोइसिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवति) ઉત્કૃષ્ટરૂપથી જ્યોતિષી દેવોમાં દેવરૂપે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે (पलिओवम वास-सयसहस्समब्भहिय ठिई) ત્યાં તેમની સ્થિતિ ૧ લાખ વરસ ઉપર એક પલ્ય–પ્રમાણુ હોય છે ગૌતમ પૂછે છે કે હે નાથ! (आराहगा) તેઓ પરલોકના આરાધક હોય છે કે નહિ? ઉત્તર–(णो इणट्ठे समट्ठे) તેઓ પરલોકના આરાધક હોતા નથી (સૂ. ૧૩)

"से जे इमे जाव" ઇત્યાદિ

(से जे इमे) જે (जाव सन्निवेसेसु) ગામ નગર આદિ સ્થાનોમાં (पव्वइया

मूलम्—से जे इमे जाव सन्निवेसेसु परिव्वायगा भवंति, तं जहा—संखा जोगी काविला भिउव्वा हंसा परमहंसा

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे' अथ य इमे=ईदृशा 'जाव सन्निवेसेसु' यावत् सन्निवेशेषु, 'परिव्वायगा भवंति' परिव्राजका=सन्यासिनो भवन्ति, 'त जहा' तद्यथा—'सखा जोगी काविला भिउव्वा हसा परमहसा बहुउदगा कुडिव्वया कण्हपरिव्वायगा' साख्या योगिन कापिला भार्गवा हसा परमहसा बहूदका कुटीव्रता कृष्णपरिव्राजका, तत्र साख्या=साख्यमतानुयायिन, योगिन—योगश्चित्तवृत्तिनिरोध सोऽस्त्येषा ते योगिन, 'कापिल शास्त्र साख्य द्विविधम्—सेश्वर निरीश्वर च। तत्र सेश्वर साख्यं भगवदवतार कपिल प्रणीतत्वात्, निरीश्वर साख्य तु अग्न्यवतार कपिल इति साख्यशास्त्रानुयायिन' इति वाचस्पत्याभिधानकोश। निरीश्वरसाख्यमतानुयायिन इति भाव। 'भिउव्वा'

'से जे इमे जाव' इत्यादि।

(से जे इमे) जो ये (जाव सन्निवेसेसु) ग्राम आकर आदिसे लेकर सन्निवेश तक के स्थानों में (परिव्वायगा) [1]परिव्राजक रहते है, जैसे (सखा जोगी काविला भिउव्वा हंसा परमहंसा) साख्य—साख्यमतानुयायी साधु, योगी—चित्तवृत्ति-निरोधरूप योग को पालन करने वाले साधु, कापिल—निरीश्वर साख्यमतानुयायी साधु,

(१) साख्य दो प्रकार के है—१ सेश्वरसाख्य, २ निरीश्वरसाख्य। सेश्वरसाख्य-ईश्वर को मानता है। निरीश्वर साख्य ईश्वर को नहीं मानता है। वाचस्पत्याभिधानकोष में ऐसा लिखा है कि भगवदवतारस्वरूप कपिलने ईश्वरवादी साख्य को, एव अग्न्यवतारविशिष्ट उसी कपिलने निरीश्वरवादी साख्य को रचा है।

"से जे इमे जाव" ઇત્યાદિ

(से जे इमे) જેઓ (जाव सन्निवेसेसु) ગામ આકર આદિથી લઈને સન્નિવેશ સુધીના સ્થાનોમા (परिव्वायगा) પરિવ્રાજક રહે છે, જેવા કે (सखा जोगी काविला भिउव्वा हसा परमहसा) સાખ્ય—સાખ્યમતના અનુયાયી સાધુ, યોગી—ચિત્તવૃત્તિનિરોધરૂપ યોગનુ પાલન કરવાવાળા સાધુ, કાપિલ—નિરીશ્વર [1]સાખ્યમત અનુયાયી સાધુ, ભાર્ગવ—ભૃગુ ઋષિના વશજ, (हंसा) હસ

(૧) સાખ્ય બે પ્રકારના છે ૧ સેશ્વરસાખ્ય- ૨ નિરીશ્વરસાખ્ય સેશ્વર-સાખ્ય ઈશ્વરને માને છે નિરીશ્વરસાખ્ય ઈશ્વરને માનતા નથી. વાચસ્પત્ય-અભિધાન કોષમા એમ લખ્યુ છે કે ભગવાનના અવતારસ્વરૂપ કપિલે ઈશ્વરવાદી સાખ્યને તેમજ અગ્નિ—અવતાર—વિશિષ્ટ તેજ કપિલે નિરીશ્વરવાદી સાખ્ય રચ્યુ છે

लोइय–अपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे कंदप्पिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तहिं तेसिं गई, सेसं तं चेव, णवरं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई ॥ सू० १४ ॥

उक्तस्य पापस्थानस्य, '**अणालोइयअपडिक्कंता**' अनालोचिताऽप्रतिक्रान्ता —अनालोचिताश्च ते अप्रतिक्रान्ता —गुरूणा समीपे अकृताऽऽलोचनका अतएव दोषादनिवृत्ता इत्यर्थः । '**कालमासे कालं किच्चा**' कालमासे कालं कृत्वा, '**उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे कंदप्पिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति**' उत्कर्षेण सौधर्मे कल्पे कान्दर्पिकेषु=हास्यक्रीडाकारकेषु देवेषु देवत्वेनोपपत्तारो भवन्ति, '**तहिं तेसिं गई**' तत्र तेषां गतिः '**सेसं तं चेव**' शेषं तदेव=पूर्वोक्तमेव बोध्यम् । '**पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई**' पल्योपमं वर्षशतसहस्राऽभ्यधिकं स्थितिः —लक्षवर्षाधिकं पल्योपमं स्थितिः ॥ सू० १४ ॥

किच्चा उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे कंदप्पिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति) पालन करते हुए अंत समय वे अपने उक्त पापस्थानों की गुरु के समीप आलोचना नहीं करके उनसे निवृत्त नहीं होते हैं, इसलिए जब वे काल–अवसर में काल करते हैं, तब अधिक से अधिक सौधर्मकल्प में जो हास्यक्रीडाकारक देव हैं उनमें देवरूप से उत्पन्न होते हैं। (**तहिं तेसिं गई सेसं तं चेव**) वहीं पर उनकी गति आदि बतलाई गई है। यहां पर और भी जो कुछ वक्तव्य है वह इसी आगमके उत्तरार्ध मे आठवें सूत्र की तरह समझ लेना चाहिये। (**पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई**) उस कल्प मे उनकी स्थिति उस पर्याय में १ लाख वर्ष अधिक १ पल्य की जाननी चाहिये ॥ सू० १४ ॥

सोहम्मे कप्पे कंदप्पिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति) પાલન કરતા કરતા અંત સમયે તેઓ પોતાના ઉક્ત પાપસ્થાનોની ગુરુની પાસે આલોચના ન કરવાથી તેનાથી નિવૃત્ત થતા નથી તેથી જ્યારે તેઓ કાલ અવસરે કાલ કરે છે ત્યારે વધારેમાં વધારે સૌધર્મ કલ્પમાં જે હાસ્યક્રીડાકારક દેવ છે તેમાં દેવરૂપે ઉત્પન્ન થાય છે (तहिं तेसिं गई सेसं तं चेव) ત્યાં તેમની ગતિ આદિ બતાવવામાં આવેલ છે અહીં બીજું પણ જે કાંઈ વર્ણન છે તે આ આગમના ઉત્તરાર્ધના આઠમા સૂત્રની પેઠે સમજી લેવું જોઈએ (पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई) એ કલ્પમાં તેમની સ્થિતિ તે પર્યાયમાં ૧ લાખ વરસ ઉપરાંત ૧ પલ્યની જાણવી જોઈએ (સૂ ૧૪)

तत्थ खलु इमे अट्ठ खत्तियपरिव्वायया भवंति। तं जहा-
सीलही ससिहारे नग्गई भग्गईति य ॥
विदेहे राया रामे वलेति य अट्ठमे ॥सू० १५॥

मूलम्—ते णं परिव्वाया रिउवेय-यजुव्वेय-सामवेय-

परासरे। कण्हे दीवायणे चेव देवगुत्ते य नारए॥ कर्णश्च करकण्टश्च अम्बडश्च पराशर। कृष्णो द्वैपायनश्चैव देवगुप्तश्च नारद। एतेऽष्टौ ब्राह्मणपरिव्राजका। 'तत्थ खलु इमे अट्ठ खत्तियपरिव्वायगा भवंति' तत्र खल्विमेऽष्टौ क्षत्रियपरिव्राजका भवन्ति, 'त जहा' तद्यथा-'सीलही ससिहारे नग्गई भग्गईति य। विदेहे राया रामेवलेति य अट्ठमे।' शीलधी शशिधारो नग्नको भग्नक इति च। विदेहो राजा रामो बल इति च अष्टम। एते षोडश परिव्राजका लोकतो ज्ञेया ॥ सू० १५ ॥

टीका—'ते ण परिव्वाया' इत्यादि। 'ते ण परिव्वाया' ते खलु

परिव्वायगा भवति) ब्राह्मण की जाति के परिव्राजक होते हैं-(त जहा) सो जैसे (कण्णे य करकडे य अवडे य परासरे। कण्हे दीवायणे चेव, देवगुत्ते य नारए) १ कर्ण, २ करकड, ३ अवट, ४ पारासर, ५ कृष्ण, ६ द्वैपायन, ७ देवगुप्त एव नारद। (तत्थ खलु इमे अट्ठ खत्तियपरिव्वायगा) तथा ये आठ क्षत्रिय जाति के परिव्राजक होते हैं, (त जहा) सो जैसे-(सीलही ससिहारे य नग्गई भग्गई ति य। विदेहे राया रामे बलेति य अट्ठमे) शीलधी, शशिधार, नग्नक, भग्नक, विदेह, राजा राम और बल ॥ सू १५ ॥

'तेण परिव्वाया रिउवेय' इत्यादि।

(ते ण परिव्वाया) ये १६ साधु-परिव्राजक-आठ ब्राह्मण जाति के आठ क्षत्रिय

व्वायगा भवति) બ્રાહ્મણની જાતિના પરિવ્રાજક થાય છે, (त जहा) જેમકે (कण्णे य करकडे य अवडे य परासरे। कण्हे दीवायणे चेव, देवगुत्ते य नारए) ૧ કર્ણ, ૨ કરકડ, ૩ અબડ, ૪ પારાસર, ૫ કૃષ્ણ, ૬ દ્વૈપાયન, ૭ દેવગુપ્ત, તેમજ ૮ નારદ (तत्थ खलु इमे अट्ठ खत्तियपरिव्वायगा भवति) તથા આ આઠ ક્ષત્રિયજાતિના પરિવ્રાજક હોય છે (त जहा) જેમ કે (सीलही ससिहारे नग्गई भग्गईति य। विदेहे राया रामे वलेति य अट्ठमे) ૧ શીલધી, ૨ શશિધાર, ૩ નગ્નક, ૪ ભગ્નક, ૫ વિદેહ, ૬ રાજા, ૭ રામ તથા ૮ બલ (સૂ. ૧૫)

'तेण परिव्वाया रिउवेय' ઇત્યાદિ

(ते ण परिव्वाया) આ ૧૬ સાધુ-પરિવ્રાજક આઠ બ્રાહ્મણ જાતિ અને

वहुउदगा कुडिव्वया कण्हपरिव्वायगा। तत्थ खलु इमे अट्ठ माहणपरिव्वायगा भवंति, तं जहा—

कण्णे य करकंडे य, अंबडे य परासरे।
कण्हे दीवायणे चेव, देवगुत्ते य नारए॥

भार्गवा—भृगुर्लोकप्रसिद्ध ऋषिस्तद्वंशजा भार्गवा। 'हंसा'—हंसा =पर्वतकुहरपथ्याऽऽश्रमाऽऽरामवासिनो भिक्षार्थं च ग्रामं प्रविशन्ति। 'परमहंसा' परमहंसा, एतेषु नदीपुलिनसमागमप्रदेशेषु वसन्ति मरणसमये चीरकौपीनकुशांश्च त्यक्त्वा प्राणान् परित्यजन्ति। 'वहुउदगा' बहूदका, इमे तु ग्रामे एकरात्रिका, नगरे पञ्चरात्रिका प्राप्तभोगाश्च भुञ्जते इति। 'कुडिव्वया' कुटीव्रता =कुटीचरा, ते च कुट्यां वर्तमाना व्यपगतक्रोधलोभमोहा अहङ्कारं वर्जयन्ति। 'कण्हपरिव्वायगा' कृष्णपरिव्राजका —परिव्राजकविशेषा एव, नारायणभक्तिका इति केचित्। 'तत्थ खलु इमे अट्ठ माहणपरिव्वायगा भवंति' तत्र खलु इमेऽष्टौ ब्राह्मणपरिव्राजका भवन्ति। 'तं जहा' तद्यथा—'कण्णे य करकंडे य अंबडे य

भार्गव—भृगु ऋषि के वंशज (शिष्य), हंस—पर्वतकी गुफा, आश्रम, देवमन्दिर तथा बगीचा आदि में निवास करने वाले साधु, जो सिर्फ भिक्षा के लिये ही ग्राम में आते है, (परमहंसा) नदी के तट पर नग्नरूप में रहने वाले साधु, जो मरण काल में चीर, कौपीन और कुशा को त्याग कर मरण करते हैं। (वहुउदगा) एक रात ग्राम में पांच राततक नगर में रहे तथा जो मिले सो खावें ऐसे बहूदक साधु, (कुडिव्वया) कुटीव्रत—कुटीचर—क्रोध, लोभ एवं मोह तथा अहंकार से रहित होकर पर्णकुटी में रहने वाले, (कण्हपरिव्वायगा) नारायण के भक्त परिव्राजक—अथवा कृष्ण के भक्त परिव्राजक, (तत्थ) इनमें (अट्ठ) आठ (इमे) ये (माहण-

પર્વતની ગુફા, આશ્રમ તથા બગીચા આદિમાં નિવાસ કરવાવાળા સાધુ, જે માત્ર ભિક્ષા માટે જ ગામમાં આવે છે (परमहंसा) નદીના તટ ઉપર નગ્ન રૂપમાં રહેનારા સાધુ, જે મરણકાલમાં ચીર, કૌપીન (લંગોટી) અને કુશાનો ત્યાગ કરી મરણ પામે છે (वहुउदगा) એક રાત ગામમાં, પાંચ રાત સુધી નગરમાં રહે તથા જે મળે તે ખાય એવા બહૂદક સાધુ, (कुडिव्वया) કુટીવ્રત-કુટીચર-ક્રોધ, લોભ તેમજ મોહ તથા અહંકારથી રહિત થઈને પર્ણ કુટીમાં રહેવાવાળા, (कण्हपरिव्वायगा) નારાયણના ભક્ત પરિવ્રાજક, અથવા કૃષ્ણના ભક્ત પરિવ્રાજક, (तत्थ) એમાં (अट्ठ) આઠ (इमे) આ (माहणपरि-

सामयणे अण्णेसु य वहूसु वंभणएसु य सत्थेसु सुपरिणिट्ठिया यावि होत्था ॥ सू० १६ ॥

मूलम्—ते णं परिव्वायगा दाणधम्मं च सोयधम्मं

'अक्षरस्वरूपनिरूपक शास्त्र शिक्षा, तथाविधसमाचारप्ररूपक शास्त्रमेव कल्पस्तस्मिन्, 'वागरणे' व्याकरणे=शब्दशास्त्रे, 'छंदे' छन्दसि=वृत्तबोधके शास्त्रे, 'निरुत्ते' निरुक्ते= शब्दार्थबोधके, 'जोइसामयणे' ज्योतिषामयने ज्योतिश्शास्त्रे, 'अण्णेसु य वहूसु वभणएसु य सत्थेसु' अन्येषु च बहुषु ब्राह्मण्येषु च शास्त्रेषु—ब्राह्मणेभ्यो हितानि ब्राह्मण्यानि—वेदव्याख्यारूपाणि ब्राह्मणादीनि शास्त्राणि तेषु च बहुषु शास्त्रेषु, 'सुपरिणिट्ठिया यावि होत्था' सुपरिनिष्ठिता =परिपक्वज्ञानाश्चापि भवन्ति ॥ सू० १६ ॥

टीका—'ते ण परिव्वाया' इत्यादि। 'ते ण परिव्वाया' ते खलु परिव्राजका, 'दाणधम्म च सोयधम्म च तित्थाभिसेय च' दानधर्मं च शौचधर्मं च

कप्पे वागरणे छदे निरुत्ते जोइसामयणे अण्णेसु य वहूसु वभणएसु य सत्थेसु सुपरिणिट्ठिया यावि होत्था) तथा गणित के विषय मे, शिक्षा—अक्षर के स्वरूप को निरूपण करने वाले शास्त्र मे, कल्प मे, व्याकरण शास्त्र मे, छद शास्त्र मे, निरुक्त—शब्दार्थबोधक शास्त्र मे, एव ज्योतिष शास्त्र मे और भी अनेक बहुत से ब्राह्मणशास्त्रों मे ये परिपक्व ज्ञानशाली होते है ॥ सू १६ ॥

'तेण परिव्वायगा' इत्यादि

(ते ण परिव्वायगा) ये समस्त परिव्राजक (दाणधम्म च सोयधम्मं च) दानधर्म की, शौचधर्म का, (तित्थाभिसेय च) तीर्थाभिषेक की (आघवेमाणा) जनता मे

જાણુનારા હોય છે (सरखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छदे निरुत्ते जोइसामयणे अण्णेसु य वहूसु बभणएसु य सत्थेसु सुपरिणिट्ठिया यावि होत्था) તથા ગણિતના વિષયમા, શિક્ષા—અક્ષરના સ્વરૂપને નિરૂપણ કરવાવાળા શાસ્ત્રમા, કલ્પમા, વ્યાકરણ શાસ્ત્રમા, છદ શાસ્ત્રમા, નિરુક્ત-શબ્દાર્થબોધક શાસ્ત્રમા, તેમજ જ્યોતિષ-શાસ્ત્રમા અને બીજા પણ અનેક બ્રાહ્મણ શાસ્ત્રોમા તેઓ જ્ઞાનશાલી હોય છે (સૂ. ૧૬)

'तेण परिव्वायगा' ઇત્યાદિ

(ते ण परिव्वायगा) આ સમસ્ત પરિવ્રાજક (दाणधम्म च सोयधम्म च) દાનધર્મની, શૌચધર્મની, (तित्थाभिसेय च) તીર્થઅભિષેકની (आघवेमाणा)

अहव्वणवेय-इतिहासपंचमाणं निघंटुछट्ठाणं संगोवंगाणं सर-
हस्साणं चउण्हं वेदाणं सारगा पारगा धारगा सडंगवी सट्ठितंत-
विसारया, संखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोइ-

परिव्राजका:-प्रागुर्वर्णिता अष्टौ ब्राह्मणपरिव्राजका:, अष्टौ क्षत्रियपरिव्राजका:, ते कीदृशा? अत्राऽऽह-'रिउवेय-यजुव्वेय-सामवेय-अहव्वणवेय-इतिहासपंचमाणं' ऋग्वेद-यजुर्वेद-सामवेदाऽथर्ववेदेतिहासपञ्चमानाम्-ऋग्वेदादयश्चत्वारो वेदा:, तथा इतिहास: पञ्चमो येषां ते इतिहासपञ्चमा: तेषाम्, 'निघंटुछट्ठाणं' निघण्टुषष्ठानाम्-निघण्टुर्नाम कोशः षष्ठ:=षट्संख्यापूरको येषां तेषां 'संगोवंगाणं' साङ्गोपाङ्गानाम्-अङ्गैरुपाङ्गैः सहितानाम्, 'सरहस्साणं' सरहस्यानां=रहस्ययुक्तानाम्, 'चउण्हं' चतुर्णाम्, 'वेदाणं' वेदानाम्, 'सारगा' सारका:=अध्यापनद्वारेण प्रवर्तका:, अथवा स्मारका:=अन्येषां विस्मृतस्य स्मारणात्, 'पारगा' पारगा:=सम्पूर्णवेदार्थज्ञानवन्त:, 'धारगा' धारका:=धारयितुं क्षमा:, 'सडंगवी' षडङ्गविद:, 'सट्ठितंतविसारया' षष्ठितन्त्रविशारदा:-षष्ठितन्त्र=कपिलसिद्धान्त:-तत्र विशारदा:=पण्डिता:, 'संखाणे' संख्याने=गणितविषये 'सिक्खाकप्पे' शिक्षाकल्पे-

जाति के (रिउवेय-यजुव्वेय-सामवेय-अहव्वणवेय-इतिहासपंचमाणं निघंटुछट्ठाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं चउण्हं वेदाणं) ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, इतिहास, निघंटु इन छह शास्त्रों के तथा इन शास्त्रों के और भी जितने अंग और उपांग हैं उनके एवं रहस्य सहित चार वेदों के (सारगा) पाठन द्वारा प्रचारक होते हैं, या दूसरों के लिये विस्मृत हुए इन के स्मारक होते हैं (पारगा) स्वयं भी इन सब शास्त्रों के ज्ञाता होते हैं, (धारगा) इन सबकी धारणा वाले होते हैं। इसलिये ये (सडंगवी) षडंगवेदवित् कहे जाते हैं। ये (सट्ठितंतविसारया) षष्ठितंत्र-कपिलशास्त्र के भी वेत्ता होते हैं, (संखाणे सिक्खा

આઠ ક્ષત્રિય જાતિના (રિઉવેય-યજુવ્વેય-સામવેય-અહવ્વણવેય-ઇતિહાસ-પંચમાણં નિઘંટુછટ્ઠાણં સંગોવંગાણં સરહસ્સાણં ચઉણ્હં વેદાણં) ઋગ્વેદ, યજુર્વેદ, સામવેદ, અથર્વવેદ, ઇતિહાસ, નિઘંટુ આ છ શાસ્ત્રોના, તથા આ શાસ્ત્રોના બીજા પણ જેટલા અંગ અને ઉપાંગ છે તેમના, રહસ્યસહિત ચાર વેદોના (સારગા) પઠનદ્વારા પ્રચારક હોય છે, અથવા બીજાને વિસ્મરણ થયેલ હોય તો તેમને યાદ કરાવનારા હોય છે, (પારગા) પોતે પણ તે શાસ્ત્રો જાણનારા હોય છે, તેથી તેઓ (ધારગા) આ બધાની ધારણાવાલા હોય છે, તેથી તેઓ (સડંગવી) ષડંગ વેદવિત્ કહેવાય છે તેઓ (સટ્ઠિતંતવિસારયા) ષષ્ટિતંત્ર-કપિલશાસ્ત્રના પણ

मूलम्—तेसि णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ, अगडं वा तलायं वा नइं वा वाविं वा पुक्खरिणिं वा दीहियं वा गुंजालियं

शुचय =शुद्धा' 'सुइसमायारा' शुचिसमाचारा =सर्वथा शुद्धाचारा 'भवित्ता' भूत्वा 'अभिसेय-जल-पूय-प्पाणो' अभिषेक-जल-पूताऽऽत्मान -अभिमन्त्रितजलैं पूता = पवित्रा आत्मानो येषा ते तथा, 'अविग्घेण सग्ग गमिस्सामो' अविघ्नेन स्वर्गं गमिष्याम — अस्माकं स्वर्गगमन-निर्बाधमस्ति—इत्यर्थ ॥ सू० १७ ॥

टीका—'तेसिं ण परिव्वायगाण' इत्यादि। 'तेसिं णं परिव्वायगाणं' तेषा खलु परिव्राजकानाम्, 'णो कप्पइ अगडं वा तलायं वा नइ वा वाविं वा पुक्खरिणिं वा दीहियं वा गुंजालियं वा सरं वा सागरं वा ओगाहित्तए' नो कल्पतेऽवट वा तडाग वा नदीं वा वापीं वा पुष्करिणीं वा दीर्घिका वा गुञ्जालिका वा सरो

हम शुचि हैं और हमारा आचार-विचार भी शुचि है। इस तरह शुचि होकर, अभिमंत्रित जल से सर्वथा आत्मा को पवित्र कर हम लोग विना किसी विघ्न के स्वर्ग में जावेंगे—हम लोगों को स्वर्गप्राप्ति निर्बाध है ॥ सू १७ ॥

'तेसिं ण परिव्वायगाणं' इत्यादि।

(तेसिं ण परिव्वायगाण) इन परिव्राजकों को (णो कप्पइ) इतनी बातें कल्पित नहीं है—(अगड वा तलाय वा नइ वा वाविं वा पुक्खरिणिं वा दीहियं वा गुंजालियं वा सरं वा सागर वा ओगाहित्तए) कूए में प्रवेश करना, तालाब में प्रवेश करना, नदी में प्रवेश करना, बावडी में प्रवेश करना, पुष्करिणी में प्रवेश करना, दीर्घिका मे प्रवेश करना, गुंजालिका में प्रवेश करना, सरोवर में प्रवेश करना, एव समुद्र में प्रवेश करना।

પવિત્ર છે અમે શુચિ છીએ, અને અમારા આચારવિચાર પણ શુચિ છે આવી રીતે શુચિ થઈને, અભિમંત્રિત જલથી સર્વથા આત્માને પવિત્ર કરીને અમે કોઈ જાતના વિઘ્ન વિના સ્વર્ગમા જશુ—અમને સ્વર્ગની પ્રાપ્તિ નિર્બાધ છે (સૂ ૧૭)

'तेसिं णं परिव्वायगाण' ઇત્યાદિ.

(तेसिं ण परिव्वायगाण) આ પરિવ્રાજકોની (णो कप्पइ) આટલી વાતો કલ્પિત નથી (अगड वा तलाय वा नइ वा वाविं वा पुक्खरिणिं वा दीहिय वा गुंजालिय वा सर वा सागर वा ओगाहित्तए) કૂવામા પ્રવેશ કરવો, તળાવમા પ્રવેશ કરવો, નદીમા પ્રવેશ કરવો, વાવમા પ્રવેશ કરવો, પુષ્કરિણીમા પ્રવેશ કરવો, દીર્ઘિકામા પ્રવેશ કરવો, ગુંજાલિકામા પ્રવેશ કરવો, સરોવરમા પ્રવેશ-

च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणा पण्णवेमाणा परूवेमाणा विहरंति। जं णं अम्हं किंचि असुई भवइ तं णं उदएण य मट्टियाए य पक्खालियं सुई भवइ। एवं खलु अम्हे चोक्खा चोक्खायारा सुई सुइसमायारा भवित्ता अभिसेयजलपूयप्पाणो अविग्घेणं सग्गं गमिस्सामो॥ सू० १७॥

तीर्थाभिषेकञ्च, 'आघवेमाणा' आख्यान्त=कथयन्त, 'पण्णवेमाणा' प्रज्ञापयन्त=बोधयन्त, 'परूवेमाणा' प्ररूपयन्त=उपपत्तिभि स्वसिद्धान्त स्थापयन्तो विहरन्ति। 'ज णं अम्ह किंचि असुई भवइ' यत् खल्वस्माक किञ्चिदशुचि भवति, 'त ण उदएण य मट्टियाए य पक्खालिय सुई भवइ' तत्खलु उदकेन च मृत्तिकया च प्रक्षालित शुचि भवति=पवित्र भवति, 'एव खलु अम्हे' एव खलु वय, 'चोक्खा' चोक्षा=कृतप्रमार्जना—विमलदेहनेपथ्या, 'चोक्खायारा' चोक्षाचारा=पवित्राचारा, अतएव—'सुई'

पुष्टि करते हुए (पण्णवेमाणा) जनता को ये सब बाते अच्छी तरह समझाते हुए (परूवेमाणा विहरति) जनता मे इनकी युक्तिपूर्वक प्ररूपणा करते हुए विचरते रहते हैं। (ज ण अम्ह किंचि असुई भवइ त ण उदएण य मट्टियाए य पक्खालिय सुई भवइ) वे कहते हैं—कि जो कुछ भी हम लोगों की दृष्टि मे अपवित्र ज्ञात होता है वह पानी से या मिट्टी से जब प्रक्षालित हो जाता है तब वह शुचि हो जाता है। (एव खलु अम्हे चोक्खा चोक्खायारा सुई सुइसमायारा भवित्ता अभिसेयजलपूयप्पाणो अविग्घेण सग्ग गमिस्सामो) इस प्रकार हम लोग चोखे हैं और हमारा आचारविचार भी चोखा—पवित्र है।

જનતામા પુષ્ટિ (પ્રચાર) કરતા થકા, (पण्णवेमाणा) જનતાને આ બધી વાતો સારી રીતે સમજાવતા થકા, (परूवेमाणा विहरति) જનતામા તેમની યુક્તિ પૂર્વક પ્રરૂપણા કરતા થકા વિચરતા રહે છે (ज ण अम्ह किंचि असुई भवइ त ण उदएण य मट्टियाए य पक्खालिय सुई भवइ) તેઓ કહે છે કે જે કાઈ પણ આપણી દૃષ્ટિમા અપવિત્ર જણાય છે તે પાણીથી અથવા માટીથી જો ધોવામા આવે તો તે શુચિ-પવિત્ર થઈ જાય છે (एव खलु अम्हे चोक्खा चोक्खायारा सुई सुइसमयारा भवित्ता अभिसेयजलपूयप्पाणो अविग्घेण सग्ग गमिस्सामो) આ પ્રકારે આપણે ચોકખા છીએ, અને આપણા આચારવિચાર પણ ચોકખા—

तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ आसं वा हत्थिं वा उट्टं वा गोणिं वा महिसं वा खरं वा दुरूहित्ता णं गमित्तए, णण्णत्थ बलाभिओगेणं। तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ नडपेच्छाइ वा जाव मागहपेच्छाइ वा पेच्छित्तए। तेसिं णं परिव्वायगाणंणो

व्राजकाना-न कल्पते इत्यन्वय, 'तेसिं ण परिव्वायगाणं नो कप्पइ आस वा हत्थि वा उट्टं वा गोणिं वा महिसं वा खरं वा दुरूहित्ताणं गमित्तए णण्णत्थ बलाभिओगेण' तेषा खलु परिव्राजकाना न कल्पतेऽश्व वा हस्तिन वोष्ट्रं वा गा वा महिष वा खर वाऽधिरुह्य खलु गन्तुम्—नान्यत्र बलाऽभियोगात्—बलेन=बलात्कारेण य अभियोग =नियोजन—बलवत्पारन्त्र्य-नियोग इत्यर्थ, तस्मात्, अन्यत्र तेषा परिव्राजकाना गन्तु न कल्पते। 'तेसिं णं परि-व्वायगाण णो कप्पइ नडपेच्छाइ वा जाव मागहपेच्छाइ वा पेच्छित्तए' तेषा खलु परिव्राजकाना नो कल्पते नटप्रेक्षणमिति वा यावन्मागधप्रेक्षणमिति वा प्रेक्षितुम्—

डोली पर, अथवा झोल्लिका-यानविशेष पर, प्रवहण-पालकी पर, बग्घी पर, एव स्यन्दमानिका-ताम-जाम पर चढ़कर भी जाना साधुओं के लिए वर्जित है। (तेसिं ण परिव्वायगाणं णो कप्पइ आस वा हत्थि वा उट्ट वा, गोणि वा, महिस वा, खर वा दुरूहित्ताण गमित्तए) उन परिव्राजकों को घोडे पर, हाथी पर, ऊँट पर, बैल पर, भैसा पर, एव गधे पर चढ कर भी चलना वर्जित है, (णण्णत्थ बलाभिओगेण) बलाभियोग को छोड कर। यदि कोई हठ करके अर्थात् जबर्दस्ती से बैठावे तो दोष नहीं है। (तेसिं ण परिव्वायगाण णो कप्पइ नडपेच्छाइ वा जाव मागहपेच्छाइ वा पेच्छित्तए) उन परिव्राजकों को यह भी उचित नहीं है, अर्थात् उनके आचारके अनुसार यह भी उन्हे वर्जित है कि वे

લઈને ઉપાડીને ચાલે છે એવી ડોલી પર અથવા ઝોલ્લિકા નામના યાનવિશેષ પર, પ્રવહણ–પાલખી પર, બગ્ગી પર તેમજ સ્યન્દમાનિકા—તામજામ પર ચઢીને પણ જવુ સાધુઓને માટે વર્જિત છે (तेसिं ण परिव्वायगाण णो कप्पइ आस वा हत्थिं वा उट्ट वा गोणिं वा महिसं वा खरं वा दुरूहित्ताण गमित्तए) તે–પરિવ્રાજકોને ઘોડા પર, હાથી પર, ઊંટ પર, બળદ પર, ભેંસા પર, તેમજ ગધેડા પર ચઢીને ચાલવુ વર્જિત છે (णण्णत्थ बलाभिओगेण) બલાભિયોગ છોડીને, જો કોઈ હઠ કરીને જબરદસ્તીથી બેસાડી દે તો દોષ નથી (तेसिं ण परिव्वा-यगाण णो कप्पइ नडपेच्छाइ वा जाव मागहपेच्छाइ वा पेच्छित्तए) તે પરિવ્રાજકોના

वा सरं वा सागरं वा ओगाहित्तए, णण्णत्थ अद्धाणगमणेणं। णो कप्पइ सगडं वा जाव संदमाणियं वा दुरूहित्ताणं गच्छित्तए।

वा सागर वाऽवगाहितुम्, तत्रावट=कूप, वापी=चतुष्कोणजलाशयविशेष, पुष्करिणी=वर्तुलाकारजलाशय, दीर्घिका=आयताकारजलाशय, गुञ्जालिका=वक्रजलाशय, सर=कृत्रिमपद्मयुक्तजलाशय, तेषु प्रवेष्टुं सन्यासिना न कल्पते, '**णण्णत्थ अद्धाणगमणेणं**' नान्यत्राध्वगमनात्=न इति यो निषेध सोऽध्वगमनादन्यत्र, मार्गे जलाशयप्रवेशो न निषिद्ध इत्यर्थ । '**णो कप्पइ सगडं वा जाव संदमाणियं वा दुरूहित्ता णं गच्छित्तए**' नो कल्पते शकट वा यावत् स्यन्दमानिका वाऽधिरुह्य खलु गन्तुम्—शकटमधिरुह्य गन्तु न कल्पते इत्यन्वय, यावच्छब्दादिद बोध्यम्—रथ वा यान वा युग्य वा गिल्लि वा=पुरुषद्वयोत्क्षिप्त-दोलिका वा 'झोलिका वा' यानविशेष वा प्रवहण वा शिबिकाम् वा इति, थिल्लिवा=अश्व-द्वयवाह्य यानविशेष वा, तथा—स्यन्दमानिका=शिबिकाविशेष वा, आरुह्य गन्तु तेषां परि-

चार कोने वाले जलाशय का नाम बावड़ी, गोल मुहवाले जलाशय का नाम पुष्करिणी, एव विस्तृत आकारवाले जलाशय का नाम दीर्घिका है, जो जलाशय टेढा होता है उसका नाम गुञ्जालिका है । इन सब में प्रवेश करना सन्यासियों के लिये निषिद्ध है । हाँ (**णण्णत्थ अद्धागमणेण**) मार्ग में चलते समय यदि कोई तालाब नदी आदि जलाशय बीच में पड जाय तो अगत्या उसमें होकर जाना निषिद्ध नहीं है। (**णो कप्पइ सगडं वा जाव संदमाणियं वा दुरूहित्ता गच्छित्तए**) इसी तरह शकट-बैलगाडी पर चढ़कर भी जाना निषिद्ध है । यहा '**यावत्**' शब्द से-"**रथ वा यान वा युग्य वा गिल्लिं वा**" इत्यादि पाठ गृहीत हुआ है। इसका मतलब इस प्रकार है—रथ पर, यान पर, घोडे पर, दो पुरुष जिसे लेकर चलते हैं ऐसी

કરવો, તેમજ સમુદ્રમા પ્રવેશ કરવો ચારે કોરેથી ઘેરાયેલુ જલાશય હોય તેનુ નામ વાવ, ગોળ મુખવાળુ જલાશય હોય તે પુષ્કરિણી, તેમજ વિસ્તૃત આકારવાળા જલાશયને દીર્ઘિકા કહે છે જે જલાશય વાકાચુકા હોય છે તેનુ નામ ગુંજાલિકા છે આ બધામા પ્રવેશ કરવો એ સન્યાસીઓને માટે નિષિદ્ધ છે હા (णण्णत्थ अद्धाणगमणेण) માર્ગમા ચાલતી વખતે જો કોઈ તળાવ નદી આદિ જલાશય વચમા આવી જાય તો અગત્યા તેમા થઈને જવુ નિષિદ્ધ નથી (णो कप्पइ सगडं वा जाव संदमाणियं वा दुरूहित्ता गच्छित्तए) આવી જ રીતે શકટ-બળદનુ ગાડુ પર ચઢીને પણ જવુ નિષિદ્ધ છે અહી यावत શબ્દથી "रथ वा यान वा युग्य वा गिल्लि वा" ઈત્યાદિ પાઠ ગ્રહણ કર્યો છે એની મતલબ એ છે કે-રથ પર, યાન પર, ઘોડા પર, બે માણસો જેને

कहाइ वा जणवयकहाइ वा अणत्थदंडं करित्तए। तेसिं णं परि-
व्वायगाणं णो कप्पइ अयपायाणि वा तउयपायाणि वा तंब-
पायाणि वा जसदपायाणि वा सीसगपायाणि वा रुप्पपायाणि
वा सुवण्णपायाणि वा अण्णयराणि वा बहुमुल्लाणि धारित्तए,

'कथा' इति वा, 'चोरकथा' इति वा, 'जनपदकथा' इति वाऽनर्थदण्डं कर्तुम्-स्त्र्यादीनां कथा कर्तुं न कल्पन्ते, तथा-अनर्थदण्डमपि कर्तुं न कल्पते। 'तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ अयपायाणि वा तउयपायाणि वा तंबपायाणि वा जसदपायाणि वा सीसगपायाणि वा रुप्पपायाणि वा सुवण्णपायाणि वा अण्णयराणि वा बहुमुल्लाणि धारित्तए' तेषां खलु परिव्राजकानां नो कल्पन्ते-अय पात्राणि वा त्रपुकपात्राणि वा ताम्रपात्राणि वा जसदपात्राणि वा सीसकपात्राणि वा रूप्यपात्राणि वा सुवर्णपात्राणि वा अन्यतराणि वा बहुमूल्यानि धारयितुम्, तत्र-अय पात्राणि-लोहपात्राणि, त्रपुकपात्राणि-त्रप्वेव त्रपुकं 'रांगा' इति ख्यातं तस्य पात्राणि, अन्यत् सर्वं सुगमम्। 'णण्णत्थ अलाउपाएण वा

वा) चोरकथा एवं जनपदकथा, (तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ) ये कथाएँ भी उन परिव्राजकों के लिये कल्पित नहीं है, कारण कि इन कथाओं के करने से (अणत्थदंडं करित्तए) अनर्थदंड का बंध होता है-ये कथाएँ अनर्थदंड करानेवाली हैं। (अयपायाणि वा तउयपायाणि वा तंबपायाणि वा जसदपायाणि वा सीसगपायाणि वा रुप्पपायाणि वा सुवण्णपायाणि वा अण्णयराणि वा बहुमुल्लाणि धारित्तए तेसिं परिव्वायगाणं णो कप्पइ) लोह के पात्र, त्रपु के पात्र, तांबे के पात्र, जसद के पात्र, सीसे के पात्र, चांदी के पात्र, सुवर्ण के पात्र तथा और भी धातु के बहुमूल्य पात्र उन साधुओं को

णो कप्पइ) आ कथाओ पण ते परिव्राजकोने माटे कल्पित नथी, कारण के ओ कथाओ करवाथी (अणत्थदंडं करित्तए) अनर्थदंडनो बंध थाय छे-आ कथाओ अनर्थदंड करावनारी छे (अयपायाणि वा तउयपायाणि वा तंबपायाणि वा जसदपायाणि वा सीसगपायाणि वा रुप्पपायाणि वा सुवण्णपायाणि वा अण्णयराणि वा बहुमुल्लाणि धारित्तए तेसिं परिव्वायगाणं णो कप्पइ) लोढानुं पात्र त्रपु-(कासा)नुं पात्र, तांबानुं पात्र, जसतनुं पात्र, सीसानुं पात्र, चांदीनुं पात्र, सुवर्णनुं पात्र, तथा बीजी धातुनां बहुमूल्य पात्र राखवां ए साधुओने पोताना आहार विहार माटे कल्पित नथी (णण्णत्थ अलाउपाएण वा

कप्पइ हरियाणं लेसणया वा घट्टणया वा थंभणया वा लूसणया वा उप्पाडणया वा करित्तए। तेसिं परिव्वायगाणं णो कप्पइ इत्थिकहाइ वा भत्तकहाइ वा देसकहाइ वा रायकहाइ वा चोर-

नटादीनां गीतनृत्यादिकानि प्रेक्षितुं तेषां परिव्राजकानां न कल्पते। 'तेसिं परिव्वायगाणं णो कप्पइ हरियाण लेसणया वा घट्टणया वा थमणया वा लूसणया वा उप्पाडणया वा करित्तए' तेषां खलु परिव्राजकानां नो कल्पते हरितानां=वनस्पतीनां श्लेषणता वा घट्टनता वा स्तम्भनता वा लूषणता वोत्पाटनता वा, श्लेषणतादौ सर्वत्र स्वार्थे तल्, श्लेषणादिकमित्यर्थः। श्लेषणं=स्पर्शः, घट्टनता=घट्टनं=संघर्षणम्, स्तम्भनता=स्तम्भनं=हस्तादिनाऽवरोधः, शाखा-पल्लवादीनां मोटनम्, ऊर्ध्वीकरणं च, लूषणता=लूषणं=हस्तादिना पनकादेः समार्जनम्, 'तेसिं परिव्वायगाणं णो कप्पइ इत्थिकहाइ वा भत्तकहाइ वा देसकहाइ वा रायकहाइ वा चोरकहाइ वा जणवयकहाइ वा अणत्थदंडं करित्तए' तेषां परिव्राजकानां नो कल्पते–'स्त्रीकथा' इति वा, 'भक्तकथा' इति वा 'देशकथा' इति वा, 'राज-

नटों का एवं मागध आदिकों का खेल–तमासा नहीं देखें और उनके गीत नृत्य आदि नहीं सुनें। (हरियाण लेसणया वा घट्टणया वा थंभणया वा लूसणया वा उप्पाडणया वा करित्तए) हरितवनस्पति का स्पर्श करना, संघर्षण करना, हस्तादिक द्वारा अवरोध करना, शाखा एवं उनके पत्ते आदिकों को ऊँचा करना अथवा उन्हें मोडना, हस्त आदि के द्वारा पनक आदि का समार्जन करना, ये सब बातें भी (तेसिं परिव्वायगाणं णो कप्पइ) उन परिव्राजकों के लिये कल्पित नहीं है (इत्थिकहाइ वा भत्तकहाइ वा देसकहाइ वा रायकहाइ वा) स्त्रीकथा, भक्तकथा, देशकथा, राजकथा (चोरकहाइ वा जणवयकहाइ

આચારે અનુસાર એ પણ તેમને વર્જિત છે, કે તેઓ નટોના તેમજ માગધ આદિકોના ખેલ-તમાસા જુએ નહીં, અને તેમના ગીત નૃત્ય આદિ સાંભળે નહીં (हरियाण लेसणया वा घट्टणया वा थंभणया वा लूसणया वा उप्पाडणया वा करित्तए) લીલી વનસ્પતિનો સ્પર્શ કરવો, સંઘર્ષણ કરવું, હાથેથી અવરોધ કરવો, શાખા તેમજ તેનાં પાંદડાં આદિકોને ઉંચા કરવા, અથવા મરડવા, હાથ આદિથી લીલ-ફૂલ આદિનું સમાર્જન કરવું, આ બધી વાતો પણ (तेसिं परिव्वायगाणं णो कप्पइ) તે પરિવ્રાજકો માટે કલ્પિત નથી (इत्थिकहाइ वा भत्तकहाइ वा देसकहाइ वा रायकहाइ वा) સ્ત્રીકથા, ભક્તકથા, દેશકથા, રાજકથા, (चोरकहाइ वा जणवयकहाइ वा) ચોરકથા તેમજ જનપદકથા (तेसिं णं परिव्वायगाणं

व्वायगाणं णो कप्पइ हारं वा अद्धहारं वा एगावलिं वा मुत्तावलिं वा कणगावलिं रयणावलिं वा मुरविं वा कंठमुरविं वा पालंवं वा तिसरयं वा कडिसुत्तं वा दसमुद्दियाणंतगं वा कडयाणि वा

नो कल्पन्ते नानाविध–वर्ण–राग–रक्तानि वस्त्राणि धारयितुम्, 'णण्णत्थ एगाए धाउरत्ताए' ना यत्रैकस्माद्धातुरक्तात्–केवल गैरिकादिधातुरक्त कल्पते इत्यर्थ,। 'तेसिं ण परिव्वायगाण णो कप्पइ हारं वा अद्धहार वा एगावलिं वा मुत्तावलिं वा कणगावलिं वा रयणावलिं वा मुरविं वा कंठमुरविं वा पालव वा तिसरयं वा कडिसुत्त वा दसमुद्दियाणंतगं वा कडयाणि वा तुडियाणि वा अगयाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा मउडं वा चूलामणिं वा पिणद्धित्तए' तेषा खलु परिव्राजकाना नो कल्पन्ते–हार वाऽर्द्धहार वा, एकावलिं वा, मुक्तावली वा, कनकावली वा, रत्नावली वा, मुरविं=कर्ण–भूषणविशेष वा, कण्ठमुरविं=कण्ठभूषणविशेष वा, प्रालम्ब वा, त्रिसरक वा, कटिसूत्र वा, दशमुद्रिकानन्तक वा, रूढोऽयं शब्दस्तेन–हस्ताङ्गुलीमुद्रिकादशकमित्यर्थ, कटकानि वा,

के रगों मे रजित वस्त्र भी इन्हें धारण करना उचित नहीं बतलाया गया है। सिर्फ एक गैरिक रग से रगा हुआ वस्त्र ही इन्हें धारण करना बतलाया है। (तेसिं ण परिव्वायगाण णो कप्पइ हार वा अद्धहारं वा एगावलिं वा मुत्तावलिं वा कणगावलिं वा रयणावलिं वा मुरविं वा कठमुरविं वा तिसरय वा कडिसुत्त वा दसमुद्दियाणतग वा कडयाणि वा तुडियाणि वा अगयाणि वा केऊराणि वा कुडलाणि वा मउडं वा चूडामणिं वा पिणद्धित्तए, णण्णत्थ एगेण तविएणं पवित्तएण) हार, अर्द्ध-हार, एकावलि, मुक्तावलि, कनकावलि, रत्नावलि, मुरवी, कण्ठमुरवी (ये कठ के आभ-

અનેક પ્રકારના રંગથી રંગાએલા વસ્ત્ર પણ તેઓએ ધારણ કરવા ઉચિત નથી માત્ર એક ગેરૂના રંગથી રંગાયેલ વસ્ત્ર જ તેમણે ધારણ કરવાનું બતાવ્યું છે (तेसिं ण परिव्वायगाण णो कप्पइ हार वा अद्धहार वा एगावलिं वा मुत्तावलिं वा कणगावलिं वा रयणावलिं वा मुरविं वा कठमुरविं वा पालव वा तिसरय वा कडिसुत्त वा दसमुद्दियाणतग वा कडयाणि वा तुडियाणि वा अगयाणि वा केऊराणि वा कुडलाणि वा मउड वा चूडामणिं वा पिणद्धित्तए, णण्णत्थ एगेण तविएण पवित्तएण) હાર, અર્ધહાર, એકાવલિ, મુક્તાવલિ, કનકાવલિ, રત્નાવલિ, મુરવી, કઠમુરવી, (આ બધા કઠના આભરણો છે) પ્રાલબ, ત્રણ સરનો

णण्णत्थ अलाउपाएण वा दारुपाएण वा मट्टियापाएण वा। तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ अयबंधणाणि जाव बहुमुल्लाणि धारित्तए। तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ णाणाविह-वण्ण-राग-रत्ताइं वत्थाइं धारित्तए, णण्णत्थ एगाए धाउरत्ताए। तेसिं णं परि-

दारुपाएण वा मट्टियापाएण वा' नाऽन्यत्राऽलाबुपात्राद वा दारुपात्राद्वा मृत्तिकापात्राद्वा, 'न'इति पूर्वोक्तो निषेध:—तुम्बीपात्रात् काष्ठनिर्मितपात्रात्, मृत्तिकापात्राद्वाऽन्यत्र। तुम्बी-काष्ठ-मृत्तिकापात्राणि तु संन्यासिना कल्पन्ते इति भाव.। 'तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ अयबंधणाणि वा जाव बहुमुल्लाणि धारित्तए' तेषां खलु परिव्राजकानाम् अयोबन्धनानि-लोहबन्धनयुक्तानि पात्राणि, यावच्छब्दात्—त्रपुताम्रादिबन्धनयुक्तानि पात्राणि, तथा, बहुमूल्यानि अन्यान्यपि बन्धनानि धारयितुं तेषां सन्यासिना न कल्पन्ते। 'तेसिं णं परिव्वाय-गाणं णो कप्पइ णाणाविह-वण्ण-राग रत्ताइं वत्थाइं धारित्तए' तेषां खलु परिव्राजकाना

अपने आहार—निहार आदि के लिये रखना कल्पित नहीं है। (णण्णत्थ अलाउपाएण वा मट्टियापाएण वा) तूंबड़ी, काष्ठनिर्मित कमण्डलु, अथवा मिट्टीका पात्र, ये ही उन्हें रखना कल्पता है। (अयबंधणाणि जाव बहुमुल्लाणि धारित्तए तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ) तथा—लोह के बंधन से युक्त पात्र, त्रपु के बंधन से युक्त पात्र, तांबे के बंधन से युक्त पात्र, जसद के बंधन से युक्त पात्र, सीसे के बंधन से युक्त पात्र, चांदी के बंधन से युक्त पात्र, सुवर्ण के बंधन से युक्त पात्र तथा और भी बहुमूल्य बंधन से युक्त पात्र इन साधुओं को कल्पित नहीं बतलाया गया है। (तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ णाणा-विह—वण्ण—राग—रत्ताइं वत्थाइं धारित्तए णण्णत्थ एगाए धाउरत्ताए) अनेक प्रकार

दारुपाएण वा मट्टियापाएण वा) तूंबडी, લાકડાનું બનેલુ કમંડળ અથવા માટીનુ પાત્ર એજ તેઓએ રાખવુ કલ્પિત છે (अयबंधणाणि जाव बहुमुल्लाणि धारित्तए तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ) તથા લોઢાના બંધનથી યુક્ત પાત્ર, ત્રપુના બંધનથી યુક્ત પાત્ર, તાંબાના બંધનથી યુક્ત પાત્ર, જસતના બંધનથી યુક્ત પાત્ર, સીસાના બંધનથી યુક્ત પાત્ર, ચાંદીના બંધનથી યુક્ત પાત્ર, સુવર્ણના બંધનથી યુક્તપાત્ર તથા બીજા પણ બહુમૂલ્ય (કીમતી) ધાતુના બંધનથી યુક્ત પાત્ર સાધુઓને માટે કલ્પિત બતાવેલ નથી (तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ णाणाविह-वण्णराग-रत्ताइं वत्थाइं धारित्तए, णण्णत्थ एगाए धाउरत्ताए)

परिव्वायगाणं णो कप्पइ अगलुएण वा चंदणेण वा कुंकुमेण वा गायं अणुलिंपित्तए, णण्णत्थ एक्काए गंगामट्टियाए ॥ सू० १८ ॥

मूलम्—तेसि णं परिव्वायगाणं कप्पइ मागहए पत्थए

'तेसि णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ—अगलुएण वा चदणेण वा कुकुमेण वा गाय अणुलिंपित्तए' तेषां खलु परिव्राजकाना नो कल्पतेऽगरुणा वा चन्दनेन वा कुङ्कुमेन वा गात्रमनुलेप्तुम्—सुगन्धितद्रव्येण गात्राऽनुलेपन सन्यासिना न कल्पते इत्यर्थ, 'णण्णत्थ एक्काए गगामट्टियाए' नाऽन्यत्रैकस्या गङ्गामृत्तिकाया—एकां गङ्गामृत्तिका वर्जयित्वाऽस्य निषेध इत्यर्थ ॥ सू० १८ ॥

टीका—'तेसिं णं' इत्यादि। 'तेसिं ण' तेषा खलु 'परिव्वायगाणं कप्पइ मागहए पत्थए जलस्स पडिग्गाहित्तए' परिव्राजकाना कल्पते मागध प्रस्थ जलस्य परिग्रहीतुम्, प्रस्थ परिमाणविशेष, तथाहि—'दो असईओ पसई, दोहिं पसईहिं

उनके लिये पहिरना अवर्जित है। (तेसिं ण परिव्वायगाण णो कप्पइ अगलुएण वा चदणेण वा कुकुमेण वा गाय अणुलिंपित्तए णण्णत्थ एक्काए गगामट्टियाए) तथा उन परिव्राजकों के लिये अगुरु से, चंदन एवं कुंकुम से शरीर पर लेप करना भी निषिद्ध है। सिर्फ यदि वे लेप करना चाहे तो एक मात्र गगा की मिट्टी का लेप कर सकते हैं ॥ सू १८ ॥

'तेसिं ण' इत्यादि।

(तेसिं णं परिव्वायगाण) उन प्रत्येक परिव्राजकों को अपने उपयोग में लाने के वास्ते (मागहए पत्थए जलस्स पडिग्गाहित्तए कप्पइ) केवल मगधदेश—प्रचलित प्रस्थप्रमाणमात्र जल लेना कल्पता है। प्रस्थ एक माप का नाम है। कहा भी है—दो

चदणेण वा कुकुमेण वा गाय अणुलिंपित्तए णण्णत्थ एक्काए गगामट्टियाए) तथा ते परिव्राजकोने माटे अगुरुथी, चदनथी तेमज कुकुथी शरीर पर लेप करवो पण निषिद्ध छे जो ते लेप करवा चाहे तो एकमात्र गगानी माटीनो लेप करी शके छे (सू १८)

"तेसिं ण" ईत्यादि

(तेसिं ण परिव्वायगाण) ते प्रत्येक परिव्राजकोए पोताना उपयोगमा लेवा माटे (मागहए पत्थए जलस्स पडिग्गाहित्तए कप्पइ) मगध देशमा प्रचलित प्रस्थप्रमाणमात्र जल लेवु कल्पे छे 'प्रस्थ' एक मापनु नाम छे

तुडियाणि वा अंगयाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा मउडं वा चूलामणिं वा पिणद्धित्तए, णण्णत्थ एगेणं तंबिएणं पवित्तएणं। तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमे चउव्विहे मल्ले धारित्तए, णण्णत्थ एगेणं कण्णपूरेणं। तेसिं णं

त्रुटिकानि वा, अङ्गदानि=केयूरान् वा, कुण्डलानि वा, मुकुटं वा, चूडामणिं वा पिनद्धुम्, हारादीनि तेषां परिव्राजकानां न कल्पन्ते परिधातुमित्यर्थः। 'णण्णत्थ एगेणं तंबिएणं पवित्तएणं' नाऽन्यत्रैकस्मात्ताम्रमयात्पवित्रकात्—ताम्रमयमङ्गुलीयकं पवित्रकनामकं तु तेषां परिधर्तुं कल्पत इति भावः। 'तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमे चउव्विहे मल्ले धारित्तए' तेषां खलु परिव्राजकानां नो कल्पन्ते ग्रन्थिम-वेष्टिम-पूरिम-सङ्घातिमानि चतुर्विधानि माल्यानि धारयितुम्—ग्रन्थेन=ग्रन्थनेन निर्वृत्तं=निर्मितं मालारूपं ग्रन्थिमम्; वेष्टेन=वेष्टनेन निर्वृत्तं वेष्टिमम्, पूरिम=पूरणेन निर्वृत्तम्, संघातेन निर्वृत्तं सङ्घातिमम्, एतानि चतुर्विधानि माल्यानि धारयितुं न कल्पन्ते इत्यर्थः, 'णण्णत्थ एगेणं कण्णपूरेणं' नान्यत्रैकस्मात्कर्णपूरकात्—एकं पुष्पमयं कर्णपूरं तेषां न निषिद्धमिति भावः।

रण विशेष हैं), प्रालंब, तीन लरका हार, कटिसूत्र, दशमुद्रिकाएँ, कटक, त्रुटिक—बाजूबंध, अंगद, केयूर, कुंडल, मुकुट, चूडामणि, इनका पहिरना भी इन साधुओं को कल्पता नहीं है। एक तांबे की अंगूठी ही इन्हें हाथ की अंगुली में धारण करना कल्पता है। (तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमे चउव्विहे मल्ले धारित्तए, णण्णत्थ एगेणं कण्णपूरेणं) इन परिव्राजकों को गूंथ कर बनाई गई, वेष्टित कर बनाई गई, एवं परस्पर दो फूलों को संयुक्त करके बनाई गई, ऐसी चार प्रकार की मालाओं का पहिरना भी कल्पता नहीं है। एक पुष्पों का रचित कर्णफूल ही कान में

હાર, કટિસૂત્ર, દશ મુદ્રિકાઓ (વીંટી), કટક, ત્રુટિક—બાજુબંધ, અંગદ કેયૂર, કુંડલ, મુકુટ, ચૂડામણિ, એ પહેરવું પણ આ સાધુઓને કલ્પતું નથી એક તાંબાની અંગૂઠી જ તેણે હાથની આંગળીમાં ધારણ કરવી કલ્પે છે (तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ-गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमे चउव्विहे मल्ले धारित्तए णण्णत्थ एगेणं कण्णपूरेणं) આ પરિવ્રાજકોને ગુંથીને બનાવેલી, વેષ્ટિત કરીને બનાવેલી, સંચા ઉપર પૂરીને બનાવેલી તેમજ પરસ્પર બે પુષ્પોને જોડીને બનાવેલી એવી ચાર પ્રકારની માલાઓ પહેરવી કલ્પતી નથી; ફક્ત પુષ્પોનું એક કર્ણફૂલ જ તેમને કલ્પનીય છે (तेसिं णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ अगलुएण वा

चेव णं अपरिपूए, से वि य णं दिण्णे णो चेव णं अदिण्णे, से वि य पिबित्तए, णो चेव णं हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठाए सिणाइत्तए वा। तेसिं णं परिव्वायगाणं कप्पइ मागहए

स्वच्छं कल्पते, नो चैव खलु अबहुप्रसन्नम्, 'से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए' तदपि च जलं परिपूतं=वस्त्रेण गालितं कल्पते, नो चैव खल्वपरिपूतम्, 'से वि य णं दिण्णे णो चेव णं अदिण्णे' तदपि च खलु दत्तं कल्पते, न चैव खल्वदत्तम्, 'से वि य पिबित्तए णो चेव णं हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठाए सिणाइत्तए वा' तदपि च पातुं कल्पते नो चैव खलु हस्तपादचरुचमसप्रक्षालनार्थम्, तत्र-हस्तौ पादौ च प्रसिद्धौ। चरुः= अन्नपात्रं, यस्मिन् भिक्षान्नं स्थाप्यते। चमसो-दर्विका-परिवेषणपात्रं 'चमचा' इति प्रसिद्धम्,

है, अतिनिर्मल नहीं होने पर ग्राह्य नहीं हो सकता। (से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए) अतिनिर्मल होने पर भी वस्त्र से छाना जाने पर ही कल्पित कहा गया है, अनछना पानी अपने उपयोग में लाने का निषेध है। (से वि य णं दिण्णे णो चेव णं अदिण्णे) छना हुआ होने पर भी किसी दाता के द्वारा दिया गया ही ग्रहण करने के योग्य कहा है, विना दिया हुआ नहीं। (से वि य पिबित्तए णो चेव हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठाए) दिया गया भी जल का उपयोग केवल पीने के लिये ही करने की आज्ञा है, हाथ-पैर, चरु-भाजन पात्र एवं चमचा धोने के लिये उसका उपयोग विहित नहीं है, अर्थात् हाथ पैर आदि धोने के काम में उसको नहीं ला सकते, (सिणाइत्तए वा)

अबहुप्पसण्णे) સ્વચ્છ હોવા છતાં પણ અતિનિર્મળ હોય તો જ ગ્રાહ્ય થઈ શકે છે, અતિનિર્મળ ન હોય તો ગ્રાહ્ય થઈ શકતું નથી (से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए) અતિનિર્મળ હોવા છતાં પણ વસ્ત્રથી ગળાએલું હોય તો જ કલ્પિત કહેલું છે વગર ગળાયેલું પાણી પોતાના ઉપયોગમાં લેવાનું નિષિદ્ધ છે (से वि य णं दिण्णे णो चेव णं अदिण्णे) ગાળેલું હોય છતાં પણ કોઈ દાતા દ્વારા અપાએલું જ ગ્રહણ કરવા યોગ્ય કહેવામાં આવ્યું છે, વગર દીધેલું નહિ (से वि य पिबित्तए णो चेव हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठाए) આપેલું હોય તેવા જલનો ઉપયોગ પણ કેવળ પીવા માટે જ કરવાની આજ્ઞા છે, હાથ-પગ, ચરૂ-ભોજન પાત્ર, તેમજ ચમચા ધોવા માટે તેનો ઉપયોગ કરવો વિહિત નથી, અર્થાત્ હાથ પગ આદિ ધોવાના કામમાં તેનો ઉપયોગ કરી શકાય નહિ (सिणाइत्तए वा) તેમજ તેનો ઉપયોગ સ્નાન

जलस्स पडिग्गाहित्तए, से वि य वहमाणे णो चेव णं अवह-माणे, से वि य थिमिओदए णो चेव णं कद्दमोदए, से वि य वहुप्पसण्णे णो चेव णं अवहुप्पसण्णे, से वि य परिपूए णो

सेइया होइ। चउसेइओ उ कुलओ चउकुलओ पत्थओ होइ ॥ १ ॥ चउपत्थमाढय तह चत्तारि य आढया भवे दोणो।' छाया-द्वे असती प्रसृति, द्वाभ्या प्रसृतिभ्या सेतिका भवति। चतुर्सेतिकस्तु कुलवश्चतुष्कुलव प्रस्थो भवति ॥ १ ॥ चतुप्रस्थमाढक तथा चत्वारि आढकानि भवेद् द्रोण ॥ इति। मागधप्रस्थपरिमित जलं सन्यासिना परिग्रहीतुं कल्पते इत्यर्थ। '**से वि य वहमाणे णो चेव ण अवहमाणे**' तदपि च जल वहमान=नद्यादिस्रोतोवर्त्ति व्याप्रियमाण वा परिग्रहीतु कल्पते, नो चैवाऽवहमानम्। '**से वि य थिमिओदए णो चेव ण कद्दमोदए**' तदपि च स्तिमितोदकं नो चैव खलु कर्दमोदकम्, स्तिमितोदकं=पङ्कसम्पर्करहित कल्पते, यत्र तु कर्दमसम्पर्कोऽस्ति तज्जल न कल्पते-इत्यर्थ, '**से वि य वहुप्पसण्णे णो चेव णं अवहुप्पसण्णे**' तदपि च जल बहुप्रसन्नम्=अति-

असती की एक प्रसृति होती है। दो प्रसृति की एक सेतिका, चार सेतिकाओं का एक कुलव और चार कुलवों का एक प्रस्थ होता है। यह पहिले समय में काष्ठ का बनता था। चार प्रस्थों का एक आढक और चार आढकों का एक द्रोण होता है। इनके लिये प्रस्थप्रमाण जल उपयोग मे लेने का विधान किया गया है (**से वि य वहमाणे णो चेव ण अवहमाणे**) वह भी वहती हुई नदी आदि का होना चाहिए, विना वहता हुआ जल लेना उन्हें निषिद्ध है। (**से वि थिमिओदए णो चेव ण कद्दमोदए**) वह भी यदि स्वच्छ हो तब ही ग्रहण करने योग्य कहा गया है, कर्दम से मिश्रित नहीं। (**से वि य बहुप्प-सण्णे णो चेव ण अवहुप्पसण्णे**) स्वच्छ होने पर भी निर्मल हो तब ही ग्राह्य हो सकता

કહ્યું પણ છે-બે અસતીની એક-પ્રસતિ થાય છે બે પ્રસતિની એક સેતિકા, ચાર સેતિકાઓનો એક કુલવ અને ચાર કુલવનો એક પ્રસ્થ થાય છે આ અગાઉના સમયમાં લાકડાનો બનતો હતો ચાર પ્રસ્થોનો એક આઢક અને ચાર આઢકોનો એક દ્રોણ થાય છે પ્રસ્થપ્રમાણ જલના ઉપયોગનું વિધાન જે કરેલું છે (से वि य वहमाणे णो चेव ण अवहमाणे) તે જળ પણ વહેતી નદી આદિનું હોવું જોઈએ, વિના વહેતું જલ લેવું તેમને નિષિદ્ધ છે (से वि य थिमिओदए णो चेव ण कद्दमोदए) તે પણ જો સ્વચ્છ હોય તો જ ગ્રહણ કરવા યોગ્ય કહેલું છે, કર્દમથી મિશ્રિત નહિ (से वि य वहुप्पसण्णे णो चेव णं

मूलम्—ते णं परिव्वायगा एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइ वासाइं परियायं पाउणंति, पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति।

टीका—'ते णं परिव्वायगा' इत्यादि। 'ते ण परिव्वायगा' ते खलु परिव्राजका 'एयारूवेणं विहारेण विहरमाणा' एतद्रूपेण=उक्तरूपेण विहारेण विहरन्त, 'बहूइ वासाइ परियाय पाउणति' बहूनि वर्षाणि पर्याय पालयन्ति, 'पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा' पालयित्वा कालमासे काल कृत्वा 'उक्कोसेण बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति' उत्कर्षेण ब्रह्मलोके कल्पे देवत्वेनोपपत्तारो भवन्ति, 'तहिं

इस निमित्त प्राप्त किये गये जल को पान अथवा स्नान के काम में लाने का निषेध है ॥ सू १९ ॥

'ते ण परिव्वायगा' इत्यादि।

(ते णं परिव्वायगा) ये परिव्राजक (एयारूवेण विहारेण विहरमाणा) इस प्रकार के विहार से विचरण करते हुए अर्थात् इस प्रकार की परिस्थिति में रहते हुए (बहूइ वासाइ परियाय पाउणति) अपने जीवन के बहुत वर्षों को इसी पर्याय का पालन करते २ जब व्यतीत करते हैं, तब (कालमासे काल किच्चा) कालमास के उपस्थित होने पर मर कर वे (उक्कोसेण) ज्यादा से ज्यादा (बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति) ब्रह्मलोक नामक पंचमकल्प में देवता की पर्याय से उत्पन्न हो जाते हैं। (तहिं तेसिं गई तहिं तेसिं ठिई) वहीं पर उनकी गति एवं वहीं पर उनकी स्थिति शास्त्रों में वर्णित की

येલ જલને પીવા અથવા સ્નાન કરવાના કામમા લેવાનો નિષેધ છે (સૂ. ૧૯)

"ते ण परिव्वायगा" ઇત્યાદિ

(ते ण परिव्वायगा) એ પરિવ્રાજક (एयारूवेण विहारेण विहरमाणा) આ પ્રકારના વિહારથી વિચરણ કરતા કરતા, અર્થાત્–આ પ્રકારની પરિસ્થિતિમા રહેતા (बहूइ वासाइ परियायं पाउणति) પોતાના જીવનના ઘણા વરસોને એજ પર્યાયના પાલનમા વ્યતીત કરે છે ત્યારે (कालमासे काल किच्चा) કાળ અવસરે કાળ કરીને તેઓ (उक्कोसेण) વધારેમા વધારે (बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवति) બ્રહ્મલોક નામના પાચમા કલ્પમા દેવતાની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઇ જાય છે, (तहिं तेसिं गई तहिं तेसिं ठिई) ત્યા તેમની ગતિ તેમજ ત્યા

आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए, से वि य वहमाणे णो चेव ण अवहमाणे, जाव णं अदिण्णे, सेवि य हत्थपायचरुचमसपक्खालणट्ठयाए, णो चेव णं पिवित्तए सिणाइत्तए वा ॥ सू० १९ ॥

एतेषा प्रक्षालनार्थं स्नातु वा न कल्पते इति। '**तेसिं ण परिव्वायगाण कप्पइ मागहए आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए**' तेषा खलु परिव्राजकाना कल्पते मागधमाढकं जलस्य परिग्रहीतुम्, '**से वि य वहमाणे णो चेव णं अवहमाणे जाव ण अदिण्णे**' तदपि च वहमान नो चैव खल्ववहमान यावत्खलु अदत्तम्, यावच्छब्दात्कर्दमरहित, स्वच्छ, वस्त्रगालित च कल्पते, अवहमानादिक तु न कल्पते इति बोध्यम्। '**से वि य हत्थ–पाय–चरु–चमस–पक्खालणट्ठयाए**' तदपि च हस्त–पाद–चरु–चमस–प्रक्षालनार्थम्, '**णो चेव ण पिवित्तए सिणाइत्तए वा**' नो चैव खलु पातु स्नातु वा ॥ सू० १९ ॥

और न उसका उपयोग स्नान करने में ही किया जाता है। इसी प्रकार (**तेसिं ण परिव्वायगाण कप्पइ मागहए आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए से वि य वहमाणे णो चेव ण अवहमाणे जाव णं अदिण्णे, से वि य हत्थ–पाय–चरु–चमस–पक्खालणट्ठयाए, णो चेव ण पिवित्तए सिणाइत्तए वा**) इन साधुओं के लिये मगधदेशीय प्रस्थ प्रमाणमात्र जल ही हाथ, पैर, पात्र, चम्मच आदि धोने के लिये ग्राह्य बतलाया गया है। वह भी बहता हुआ ही होना चाहिये–स्थिर नहीं। उसमें भी वह अतिस्वच्छ, एव वस्त्र से छना हुआ तथा दाता के द्वारा दिया गया होना चाहिये, इससे भिन्न नहीं। ऐसा जल ही हस्त, पाद, चरु एव चमचा के धोने के काम में आ सकता है, अन्यथा नहीं। अत

કરવામા પણ કરી શકાય નહિ એ પ્રકારે (तेसिं ण परिव्वायगाण कप्पइ मागहए आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए से वि य वहमाणे णो चेव ण अवहमाणे जाव ण अदिण्णे से वि य हत्थ–पाय–चरु–चमस–पक्खालणट्ठयाए णो चेव ण पिवित्तए सिणाइत्तए वा) આ સાધુઓને માટે મગધદેશીય પ્રસ્થપ્રમાણ માત્ર જલ જ હાથ પગ પાત્ર ચમચા આદિ ધોવાને માટે ગ્રાહ્ય બતાવવામા આવ્યુ છે તે પણ વહેતુ હોય તે જ હોવુ જોઈએ, ન વહેતુ હોય તે નહિ તેમા પણ તે અતિસ્વચ્છ તેમજ વસ્ત્રથી ગાળેલુ તથા દાતા દ્વારા અપાએલુ હોવુ જોઈએ, તેનાથી બીજુ નહિ એવુ જલજ હાથ, પગ, ચરૂ તેમજ ચમચાને ધોવાના કામમા આવી શકે છે, બીજુ નહિ આમ એ નિમિત્તે પ્રાપ્ત કરા

पुरिमतालं णयरं संपट्टिया विहाराए ॥ सू० २१ ॥

मूलम्—तए णं तेसिं परिव्वायगाणं तीसे अगामियाए छिण्णोवायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसंतरमणुपत्ताणं

कूलेण ' गङ्गाया महानद्या उभयत कूलेन=उभयतटाभ्याम्, ' कपिल्लपुराओ णयराओ पुरिमताले णयरं संपट्टिया विहाराए ' काम्पिल्यपुरनगरात् पुरिमतालं नगरं सम्प्रस्थिता विहाराय=विहर्तुम् ॥ सू० २१ ॥

टीका—' तए ण ' इत्यादि । ' तए णं ' ततः खलु ' तेसिं परिव्वायगाणं ' तेषां परिव्राजकानाम्, ' तीसे अगामियाए ' तस्या अगामिकाया=ग्रामसम्बन्धरहिताया — ग्रामाद्दूरवर्तिन्या इत्यर्थः, ' छिण्णोवायाए ' छिन्नापाताया=जनागमनिर्गमरहिताया — निर्जनाया इत्यर्थः, ' दीहमद्धाए ' दीर्घाऽध्वाया=दीर्घमार्गाया—प्रान्तरावस्थिताया इत्यर्थः, ' अडवीए ' अटव्या=वनस्य ' कंचि देसतरमणुपत्ताण ' किञ्चिद्देशान्तरमनुप्राप्तानाम्=

महाणईए उभओ कूलेणं) गंगा नदी के दोनों तटों से होकर, (कपिल्लपुराओ णयराओ पुरिमतालणयरं संपट्टिया) काम्पिल्यपुर नगर से पुरिमताल नगर की ओर विहार के लिये निकले ॥ सू० २१ ॥

'तए ण ' इत्यादि ।

(तए ण) इसके बाद (तेसिं परिव्वायगाणं) उन परिव्राजकों का (तीसे अगामियाए अडवीए) जब कि वे चलते २ एक भयंकर अटवी में आ पहुँचे, जो ग्राम के सम्बंध से सर्वथा रहित थी—ग्राम से बहुत दूर थी, (छिन्नोवायाए) इसलिये यहा पर मनुष्यों का संचार बिलकुल ही नहीं था, अर्थात् वह अटवी निर्जन थी, (दीहमद्धाए) रास्ते इसके बडे विकट थे, (कंचि देसंतरमणुप्पत्ताण) इसका थोडा सा ही भाग इन्होंने तय कर पाया

ઉપર થઈને (कपिल्लपुराओ णयराओ पुरिमतालणयरं संपट्टिया) કાંપિલ્યપુર નગરથી પુરિમતાલ નગરની તરફ વિહાર માટે નીકળ્યા (સૂ ૨૧)

" तए ण " ઇત્યાદિ

(तए ण) ત્યાર પછી (तेसिं परिव्वायगाणं) તે પરિવ્રાજકો, (तीसे अगामियाए अडवीए) જ્યારે ચાલતા ચાલતા એક ભયંકર અટવી (વન)મા આવી પહોંચ્યા કે જે વન ગામના સબંધથી સર્વથા રહિત હતુ—ગામથી બહુ દૂર હતુ (छिन्नोवायाए) તેથી અહીં મનુષ્યોનો સંચાર બિલકુલ જ નહોતો એટલે કે તે વન નિર્જન હતુ (दीहमद्धाए) તેના રસ્તા બહુ વિકટ હતા (कंचि

तहिं तेसिं गई, तहिं तेसि ठिई। दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। सेसं तं चेव ॥ सू० २० ॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं अम्मडस्स परिव्वायगस्स सत्त अंतेवासिसयाइं गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलमासंमि गंगाए महानईए उभओकूलेणं कंपिल्लपुराओ णयराओ

तेसिं गई, तहिं तेसिं ठिई' तत्र तेषा गति, तत्र तेषा स्थिति। 'दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता' दश सागरोपमानि स्थिति प्रज्ञप्ता, 'सेस त चेव' शेष तदेव॥ सू० २० ॥

टीका—तेणं कालेण तेण समएण' इत्यादि। 'तेण कालेण समएणं' तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'अम्मडस्स परिव्वायगस्स सत्त अतेवासिसयाइ' अम्बडस्य परिव्राजकस्य सप्तान्तेवासिशतानि=सप्तशतमन्यका अन्तेवासिन—शिष्या, 'गिम्हकालसमयसि जेट्ठामूलमासमि' ग्रीष्मकालसमये ज्येष्ठामूलमासे=ज्येष्ठानक्षत्रे मूलनक्षत्रे वा पूर्णिमा यस्मिन् तस्मिन्, ज्येष्ठमासे इत्यर्थ। 'गगाए महाणईए उभओ-

गई है। इस स्थिति का प्रमाण (दस सागरोवमाइ) वहा १० दस सागर है, (सेस त चेव) यावत् ये आराधक नहीं होते है ॥ सू० २० ॥

'तेणं कालेण तेण समएण' इत्यादि।

(तेण कालेण समएण) उस काल में एव उस समय में (अम्मडस्स परिव्वायगस्स) अम्बड नामक परिव्राजक (सन्यासी) के (सत्त अतेवासिसयाइ) सात सौ शिष्य (गिम्हकालसमयसि) ग्रीष्म काल के समय (जेट्ठामूलमासमि) ज्येष्ठ मास में (गगाए

તેમની સ્થિતિ શાસ્ત્રોમા વર્ણન કરેલી છે આ સ્થિતિનુ પ્રમાણ (दस सागरोवमाइ) ત્યા ૧૦ દસ સાગરનુ છે (सेस त चेव) યાવત્ તેઓ આરાધક હોતા નથી (સૂ ૨૦)

"तेण कालेण तेण समएण" ઇત્યાદિ

(तेण कालेण तेण समएण) તે કાળમા તેમજ તે સમયમા (अम्मडस्स परिव्वायगस्स) અમ્બડ નામના પરિવ્રાજક (સન્યાસી)ના (सत्त अतेवासिसयाइ) સાતસો શિષ્ય (गिम्हकालसमयसि) ગ્રીષ્મ કાળના સમયમા (जेट्ठामूलमासमि) જેઠ મહિનામા (गगाए महाणईए उभओ कूलेण) ગગા નદીના બન્ને તટ

मूलम्—एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमीसे अगामियाए जाव अडवीए कंचि देसंतरमणुपत्ताणं से उदए जाव झीणे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमीसे अगामियाए

टीका—ते परिव्राजकाः परस्पर यदचादिपुरस्तन्निर्दिशति-'एवं खलु देवाणुप्पिया' इत्यादि। 'एव खलु देवाणुप्पिया!' एव खलु हे देवानुप्रिया! 'अम्हं इमीसे अगामिआए जाव अडवीए' अस्माकमस्या अग्रामिकाया यावदटव्या, 'कंचिदेसतरमणुपत्ताण से उदए जाव झीणे' किञ्चिद्देशान्तरमनुप्राप्ताना तत् उदकं यावत् क्षीणम्, 'त सेय खलु देवाणुप्पिया' तत्-तस्मात् श्रेय खलु हे देवानुप्रिया! 'अम्ह इमीसे अगामियाए जाव अडवीए' अस्माकमस्यामग्रामिकाया यावदटव्याम्,

नहीं देखकर, (अण्णमण्ण सद्दावेंति) परस्पर मे एक दूसरे का आह्वान करने लगे, (सद्दावित्ता एवं वयासी) और आह्वान करके इस प्रकार बोले ॥ सू० २३ ॥

एवं खलु देवाणुप्पिया!' इत्यादि।

(एव खलु देवाणुप्पिया!) हे देवानुप्रियो! यह बात बिलकुल ठीक है कि (अम्ह इमीसे अगामियाए जाव अडवीए कंचिदेसतरमणुपत्ताण से उदए जाव झीणे) हम लोगों का, इस अग्रामिक अटवी मे कि अभी जिसे थोडी ही तय की है, वह अपने २ स्थान से लाया हुआ जल अब समाप्त हो चुका है, (त सेय खलु देवाणुप्पिया! अम्ह इमीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगदायारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करित्तए) ऐसी हालत में हमारे-तुम्हारे लिये यही एक कल्याणकारक मार्ग है कि हम इस अग्रामिक एव निर्जन अटवी मे सर्व प्रकार से चारों ओर किसी जल-

બોલાવવા લાગ્યા, (सद्दावित्ता एव वयासी) અને બોલાવી આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યા (સૂ૦ ૨૩)

"एव खलु देवाणुप्पिया!" ઇત્યાદિ

(एव खलु देवाणुप्पिया!) હે દેવાનુપ્રિયો! એ વાત બિલકુલ ઠીક છે કે (अम्ह इमीसे अगामियाए जाव अडवीए कंचि देसतरमणुपत्ताण से उदए जाव झीणे) આપણે આ વનમા થોડીક દૂર ચાલીને આવ્યા છીએ, અને હમણા જરાક જ રોકાયા છીએ, ત્યા તો પોતાના સ્થાનેથી લાવેલુ પાણી સમાપ્ત થઈ ગયુ (त सेय खलु देवाणुप्पिया! अम्ह इमीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगदायारस्स सव्वओ समता मग्गणगवेसण करित्तए) એવી હાલતમા અમારા

से पुव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुंजमाणे झीणे ॥ सू० २२॥

मूलम्—तए णं ते परिव्वायगा झीणोदगा समाणा तण्हाए पारब्भमाणा २ उदगदायारमपस्समाणा अण्णमण्णं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी ॥ सू० २३ ॥

कश्चित् प्रदेशमागताना 'से' तत् 'पुव्वग्गहिए' पूर्वगृहीतम् 'उदए' उदकम् 'अणुपुव्वेण' आनुपूर्व्येण 'परिभुजमाणे' परिभुज्यमान 'झीणे' क्षीण=क्षय प्राप्तम् ॥ सू० २२ ॥

टीका—'तए ण ते परिव्वाया' इत्यादि। 'तए णं ते परिव्वाया' तत खलु ते परिव्राजका 'झीणोदगा समाणा' क्षीणोदका सन्त, 'तण्हाए' तृष्णया=पिपासया, 'पारब्भमाणा २' प्रारभ्यमाणा २=पीड्यमाना २—व्याकुलीभवन्त, व्याकुलीभावेहेतुगर्भविशेषणमाह—'उदगदायारमपस्समाणा' उदकदातारमपश्यन्त, तेषाम-दत्ताग्राहित्वादिति भाव, 'अण्णमण्णं सद्दावेति' अन्योऽन्य शब्दयन्ति=परस्परमाह्वयन्ति, शब्दयित्वा=आहूय 'एव वयासी' एवमवादिषु—एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण वदन्ति स्म ॥ सू० २३ ॥

था कि इतने में (से पुव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेण परिभुजमाणे झीणे) चलते समय अपने स्थान से लाया हुआ जल क्रमश पीते २ खतम हो गया ॥ सू० २२ ॥

'तए ण से परिव्वाया' इत्यादि।

(तए ण) इस के बाद (ते परिव्वाया झीणोदगा समाणा) वे परिव्राजक कि जिनका पानी बिलकुल समाप्त हो चुका है, (तण्हाए पारब्भमाणा २) पुन तृषा से अत्यंत पीडित—व्याकुल होते हुए (उदगदायारमपस्समाणा) उस समय किसी पानी दाता को

देसंतरमणुपत्ताणं) તેના થોડો ભાગ જ તેઓ ચાલ્યા કે એટલામાં (से पुव्वग्ग-हिए उदए अणुपुव्वेण परिभुजमाणे झीणे) ચાલતી વખતે પોતાના સ્થાનેથી લાવેલ જલ હળવે હળવે પીતા પીતા પૂરૂં થઇ ગયું (સૂ. ૨૨)

"तए ण ते परिव्वाया" ઇત્યાદિ

(तए ण) ત્યાર પછી (ते परिव्वाया झीणोदगा समाणा) તે પરિવ્રાજકો કે જેમના પાણી બિલકુલ સમાપ્ત થઇ ચૂકયા છે, (तण्हाए पारब्भमाणा २) તેઓ તરસથી બહુ જ પીડિત—વ્યાકુળ થઇને (उदगदायारमपस्समाणा) તે સમયે કોઈ પાણીના દાતાને ન જોવાથી (अण्णमण्ण सद्दावेंति) પરસ્પર એક બીજાને

मलभमाणा दोच्चंपि अण्णमण्णं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी ॥ सू० २४ ॥

मूलम्—इह णं देवाणुप्पिया! उदगदातारो णत्थि, तं णो खलु कप्पइ अम्ह अदिण्णं गिण्हित्तए, अदिण्णं साइ-

अण्णमण्ण सद्दावेंति' द्वितीयमपि=द्वितीयवारमपि अन्योऽन्य शब्दयन्ति, 'सद्दावित्ता' शब्दयित्वा 'एव वयासी' एवमवादिषु ॥ सू० २४ ॥

टीका—'इह ण देवाणुप्पिया!' इत्यादि। 'इह णं देवाणुप्पिया!' इह खलु हे देवानुप्रिया! 'उदगदातारो णत्थि' उदकदातारो न सन्ति। 'त णो खलु कप्पइ अम्ह अदिण्ण गिण्हित्तए' तत्=तस्मात् नो खलु कल्पतेऽस्माकमदत्तम् उदक ग्रहीतुम्, 'अदिण्ण साइज्जित्तए' अदत्तम् उदक स्वादयितु=पातुम्, 'त मा ण अम्हे इयाणिं' तन्मा खलु वयमिदानीम्, 'आवइकालपि' आयतिकालमपि=आगामिनि

भी पानी का दाता नहीं मिला तब उन्होंने द्वितीयवार भी परस्पर में एक-दूसरे का आह्वान किया, और आह्वान करके इस प्रकार बोले ॥ सू० २४ ॥

'इह णं देवाणुप्पिया' इत्यादि।

(इह णं देवाणुप्पिया! उदगदायारो णत्थि) हे देवानुप्रियो! प्रथम तो इस अटवी में एक भी उदकदातार नहीं है, (तं णो खलु कप्पइ अम्ह अदिण्णं गिण्हित्तए) दूसरे-हम लोगों को अदत्त जल ग्रहण करना उचित नहीं है, (अदिण्णं साइज्जित्तए) कारण कि अदत्त जल का पान करना हम लोगों की मर्यादा से सर्वथा विरुद्ध है। (त मा णं अम्हे इयाणिं आवइकालं पि अदिण्ण गिण्हामो अदिण्णं साइज्जामो मा ण

દાતાર મળ્યો નહિ ત્યારે તેઓએ બીજી વાર પણ પરસ્પર એકબીજાને બોલાવ્યા, બોલાવીને આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યા (સૂ૦ ૨૪)

"इह ण देवाणुप्पिया" ઇત્યાદિ

(इह ण देवाणुप्पिया) હે દેવાનુપ્રિયો! પ્રથમ તો આ અટવીમા એકેય પાણીનો દાતાર નથી, (त णो खलु कप्पइ अम्ह अदिण्णं गिण्हित्तए) બીજુ આપણુને અદત્ત જલ ગ્રહણ કરવુ ઉચિત નથી (अदिण्ण साइज्जित्तए) કારણ કે અદત્ત જલને પીવુ તે આપણી મર્યાદાથી સર્વથા વિરુદ્ધ છે (त मा ण अम्हे इयाणिं आवइकालपि अदिण्ण गिण्हामो अदिण्ण साइज्जामो मा

जाव अडवीए उदगदायारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करित्तए–त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता तीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगदायारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेपणं करेंति, करित्ता उदगदायार-

'उदगदायारस्स सव्वओ समता मग्गणगवेसण करित्तएत्ति कट्टु' उदकदातु सर्वत समन्तात् मार्गणगवेषण कर्तुम् इति कृत्वा, 'अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठ पडिसुणेंति' अन्योऽन्यस्य अन्तिके एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, 'पडिसुणित्ता' प्रतिश्रुत्य 'तीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगदायारस्स सव्वओ समता मग्गणगवेसणं करेंति' तस्याम् अग्रामिकाया यावदटव्याम् उदकदातु सर्वत समन्ताद् मार्गणगवेषण कुर्वन्ति, 'करित्ता' कृत्वा, 'उदगदायारमलभमाणा' उदकदातारम् अलभमाना, 'दोच्चपि

दाता की मार्गणा एव गवेषणा करें, (त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति) इस प्रकारकी की गई सलाह सबने एकमत होकर मान ली। (पडिसुणित्ता तीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगदायारस्स सव्वओ समता मग्गणगवेसण करेंति) पश्चात् उस सलाह के अनुसार वे सब उस अग्रामिक अटवी में सर्व प्रकार से चारों ओर पानी के देने वाले दाता की गवेषणा करने मे सलग्न हो गये। (करित्ता उदगदायारमलभमाणा दोच्चपि अण्णमण्ण सद्दावेंति सद्दावित्ता एवं वयासी) गवेषणा करते २ जब उन्हें कोइ

તમારા માટે એ જ એક કલ્યાણકારક માર્ગ છે કે આપણે આ અગ્રામિક તેમજ નિર્જન વનમા સર્વ પ્રકારથી ચારે કોરે કોઈ જલના દાતારની માર્ગણા તેમજ શોધ કરીએ (त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठ पडिसुणेंति) આ પ્રકારની કરેલી સલાહ બધાએ એકમત થઈને માની લીધી પછી (पडिसुणित्ता तीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगदायारस्स सव्वओ समता मग्गण गवेसण करेंति) તે સલાહને અનુસરીને તે બધા તે અગ્રામિક અટવી (વન)મા સર્વ પ્રકારથી ચારે કોર પાણી દેવાવાળા દાતારની શોધ કરવામા સલગ્ન થઈ ગયા (करित्ता उदगदायारमलभमाणा दोच्चपि अण्णमण्ण सद्दावेंति सद्दा-वित्ता एव वयासी) શોધ કરતા કરતા પણ તેમને જ્યારે કોઈ પણ પાણીનો

णियाओ य, करोडियाओ य, भिसियाओ य, छण्णालए य, अंकुसए य, केसरियाओ य, पवित्तए य, गणेत्तियाओ य, छत्तए य, वाहणाओ य, पाउयाओ य, धाउरत्ताओ य एगंते एडित्ता, गंगं महाणइं ओगाहित्ता, वालुयासंथारए संथरित्ता, संलेहणा–

य' करोटिकाश्च=मृण्मयभाजनविशेषान्, 'भिसियाओ य' वृषिकाश्च=उपवेशनपट्टिका, 'छण्णालए य' षण्णालिकानि च=त्रिकाष्ठिका, 'अंकुसए य' अङ्कुशकाश्च=आकर्षणिका–वृक्षपल्लवाद्याकर्षणसाधनविशेषान्, देवार्चने पत्रपुष्पफलानां सङ्ग्रहार्थमङ्कुशका उपयुज्यन्ते, 'केसरियाओ य' केशरिकाश्च=प्रमार्जनार्थानि वस्त्रखण्डानि, 'पवित्तए य' पवित्रकाणि=ताम्रमयमुद्रिका, 'गणेत्तियाओ य' हस्तधार्या रुद्राक्षमाला, 'गणेत्तिया' इति हस्तधार्यरुद्राक्षमालार्थे देशीयशब्द, 'छत्तए य' छत्राणि च 'वाहणाओ य' उपानहश्च, 'पाउयाओ य' पादुकाश्च=काष्ठपादुका, 'धाउरत्ताओ य' धातुरक्ताश्च=गैरिकोपरञ्जिता, शाटिका =व्यासिपरिधानीयवस्त्राणि, एतानि सर्वाणि 'एगंते एडित्ता' एकान्ते त्यक्त्वा, 'गंगं महाणइं ओगाहित्ता' गङ्गामहानदीमवगाह्य=गङ्गाया महानद्यामवतीर्य–'वालुयासंथारए संथरित्ता' वालुकासंस्तारकान् संस्तीर्य, 'संलेहणाझूसियाणं' संलेखना-

मिट्टी के बने हुए पात्रविशेषों को, वृषिकाओं–बैठने के पाटियों को, तिपाइयों को, देवों की पूजा के लिये पत्र–पुष्पादिकों के गिराने के वास्ते सदा पास में रहनेवाली छोटी सी अंकुशिका को, केशरिका को–प्रमार्जन करने के काम मे आनेवाले वस्त्र के खंडों को, तांबे की मुद्रिकाओं को, सुमरिनियों को, छत्रों को, जूतों को, काष्ठ की पादुकाओं को एवं गैरिकधातु से रक्त पहिरने की धोतियों को एकान्त में छोड़कर महानदी गंगा को पारकर (वालुयासंथारए संथरित्ता) उसके तट पर वालुका का संथारा बिछावें और उस पर

माળાઓને, કરોટિકાઓ–માટીના બનેલા પાત્ર વિશેષોને, વૃષિકાઓ–બેસવાના પાટલાઓને, ત્રિપાઈઓને (ઘોડીને), દેવોને પૂજા નિમિત્ત પત્ર, પુષ્પ આદિ રાખવા માટે સદા પાસે રહેવાવાળી નાની સરખી અંકુશિકાને, કેશરિકાઓને–પ્રમાર્જન કરવાના કામમા આવવાવાળા વસ્ત્રના કટકાઓને, તાંબાની મુદરિઓને, સુમરિનિઓને, છત્રોને, જોડાને, લાકડાની પાદુકાઓને, તેમજ ગેરૂ રંગેલા પહેરવાના ધોતિયાઓને એક ઠેકાણે રાખી દઈને મહાનદી ગંગાને ઉતરીને (वालुयासंथारए संथरित्ता) તેના તટ ઉપર રેતીના

जित्तए, तं मा णं अम्हे इयाणिं आवइकालं पि अदिण्णं गिण्हामो, अदिण्णं साइज्जामो, मा णं अम्हं तवलोवे भविस्सइ। तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! तिदंडं, कुंडियाओ य, कंच-

समयेऽपि 'अदिण्णं गिण्हामो' अदत्तं गृह्णीम=अन्तमुदकं न स्वीकुर्म, 'अदिण्णं साइज्जामो' अदत्तं स्वादयाम=अदत्तं जलं मा स्वादयाम इत्यर्थः, 'मा णं अम्हं तवलोवे भविस्सइ' मा खलु अस्माकं तपोलोपो भविष्यति, अदत्तस्याग्रहणेऽनास्वादने चास्माकं तपोलोपो न भविष्यतीत्यर्थः । 'तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया!' तत्= तस्मात् श्रेयः खलु अस्माकं हे देवानुप्रिया ! 'तिदंडयं' त्रिदण्डकं 'कुंडियाओ य' कुण्डिकाश्च=कमण्डलून्, 'कंचणियाओ य' काञ्चनिकाश्च=रुद्राक्षमालिकाः, 'करोडियाओ

अम्हं तवलोवे भविस्सइ) तथा हम सब लोगों का यह भी दृढ निश्चय है कि आगामी काल में भी हम सब विना दिया हुआ जल न ग्रहण करें और न उसे पियें, क्यों कि इस प्रकार के आचरण से हमारी तपस्या का लोप हो जायगा, अतः वह भी सुरक्षित रहे इस अभिप्राय से हममें से किसी को भी अदत्त जल ग्रहण नहीं करना चाहिये और न उसे पीना ही चाहिये। (तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! तिदंडं कुंडियाओ य, कंचणियाओ य, करोडियाओ य, भिसियाओ य, छण्णालए य, अंकुसए य, केसरियाओ य, पवित्तए य, गणेत्तियाओ य, छत्तए य, वाहणाओ य, पाउयाओ य, धाउरत्ताओ य, एगंते एडित्ता गंगं महानइं ओगाहित्ता) इसलिये हे देवानुप्रियो! अब हम सब की भलाई इसी में है कि हम सब त्रिदण्डों को, कमण्डलुओं को, रुद्राक्ष की मालाओं को, करोटिकाओं-

णं अम्हं तवलोवे भविस्सइ) તથા આપણે દૃઢનિશ્ચયી છીએ કે ભવિષ્યકાળમાં પણ દીધેલું ન હોય એવું જલ ગ્રહણ કરવું નહિ અને પીવું નહિ, કેમકે એ પ્રકારના આચરણથી આપણી તપસ્યાનો લોપ થઈ જશે માટે તે સુરક્ષિત રહે એવા અભિપ્રાયથી આપણામાના કોઈએ પણ અદત્ત જલ ગ્રહણ ન કરવું જોઈએ અને તે પીવું પણ ન જોઈએ (तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! तिदंडं, कुंडियाओ य, कंचणियाओ य, करोडियाओ य, केसरियाओ य, पवित्तए य, गणेत्तियाओ य, छत्तए य, वाहणाओ य, पाउयाओ य, धाउरत्ताओ य एगंते एडित्ता गंगं महानइं ओगाहित्ता) એ માટે હે દેવાનુપ્રિયો! હવે આપણી ભલાઈ એમાં જ છે કે આપણે ત્રિદંડોને, કમંડલુઓને, રુદ્રાક્ષની

पियाओ य, करोडियाओ य, भिसियाओ य, छण्णालए य, अंकुसए य, केसरियाओ य, पवित्तए य, गणेत्तियाओ य, छत्तए य, वाहणाओ य, पाउयाओ य, धाउरत्ताओ य एगंते एडित्ता, गंगं महाणइं ओगाहित्ता, वालुयासंथारए संथरित्ता, संलेहणा-

य' करोटिकाश्च=मृण्मयभाजनविशेषान्, 'भिसियाओ य' वृषिकाश्च=उपवेशनपट्टिका, 'छण्णालए य' षण्णालिकानि च=त्रिकाष्ठिका, 'अंकुसए य' अङ्कुशकाश्च=आकर्षणिका-वृक्षपल्लवाद्याकर्षणसाधनविशेषान्, देवार्चने पत्रपुष्पफलाना संग्रहार्थमङ्कुशका उपयुज्यन्ते, 'केसरियाओ य' केशरिकाश्च=प्रमार्जनार्थानि वस्त्रखण्डानि, 'पवित्तए य' पवित्रकाणि=ताम्रमयमुद्रिका, 'गणेत्तियाओ य' हस्तधार्या रुद्राक्षमाला, 'गणेत्तिया' इति हस्तधार्यरुद्राक्षमालार्थे देशीयशब्द, 'छत्तए य' छत्राणि च 'वाहणाओ य' उपानहश्च, 'पाउयाओ य' पादुकाश्च=काष्ठपादुका, 'धाउरत्ताओ य' धातुरक्ताश्च=गैरिकोपरञ्जिता, शाटिका=संन्यासिपरिधानीयवस्त्राणि, एतानि सर्वाणि 'एगंते एडित्ता' एकान्ते त्यक्त्वा, 'गंगं महाणइं ओगाहित्ता' गङ्गामहानदीमवगाह्य=गङ्गाया महानद्यामवतार्य-'वालुयासंथारए संथरित्ता' वालुकासंस्तारकान् संस्तीर्य, 'संलेहणाझूसियाणं' संलेखना-

मिट्टी के बने हुए पात्रविशेषों को, वृषिकाओं-बैठने के पाटियों को, तिपाइयों को, देवों की पूजा के लिये पत्र-पुष्पादिकों के गिराने के वास्ते सदा पास में रहनेवाली छोटी सी अंकुशिका को, केशरिका को-प्रमार्जन करने के काम में आनेवाले वस्त्र के खंडों को, तांबे की मुद्रिकाओं को, सुमरिनियों को, छत्रों को, जूतों को, काष्ठ की पादुकाओं को एवं गैरिकधातु से रक्त पहिनने की धोतियों को एकान्त में छोडकर महानदी गंगा को पारकर (वालुयासंथारए संथरित्ता) उसके तट पर वालुका का संथारा बिछाके और उस पर

માળાઓને, કરોટિકાઓ-માટીના બનેલા પાત્ર વિશેષોને, વૃષિકાઓ-બેસવાના પાટલાઓને, ત્રિપાઈઓને (ઘોડીને), દેવોને પૂજા નિમિત્ત પત્ર, પુષ્પ આદિ રાખવા માટે સદા પાસે રહેવાવાળી નાની સરખી અંકુશિકાને, કેશરિકાઓને-પ્રમાર્જન કરવાના કામમા આવવાવાળા વસ્ત્રના કટકાઓને, તાંબાની મુદ્રિકાઓને, સુમરિનિઓને, છત્રોને, જોડાને, લાકડાની પાદુકાઓને, તેમજ ગેરૂ રંગેલા પહેરવાના ધોતિયાઓને એક ઠેકાણે રાખી દઈને મહાનદી ગંગાને ઉતરીને (वालुयासंथारए संथरित्ता) તેના તટ ઉપર રેતીના

जित्तए, तं मा णं अम्हे इयाणिं आवइकालं पि अदिण्णं गिण्हामो, अदिण्णं साइज्जामो, मा णं अम्हं तवलोवे भविस्सइ। तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! तिदंडं, कुंडियाओ य, कंच-

समयेऽपि 'अदिण्ण गिण्हामो' अदत्तं गृह्णीम=अदत्तमुदकं न स्वीकुर्मः, 'अदिण्ण साइज्जामो' अदत्तं स्वादयाम=अदत्तं जलं मा स्वादयाम इत्यन्वयः, 'मा णं अम्ह तवलोवे भविस्सइ' मा खलु अस्माकं तपोलोपो भविष्यति, अदत्तस्याग्रहणेऽनास्वादने चास्माकं तपोलोपो न भविष्यतीत्यर्थः। 'त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया!' तत्= तस्मात् श्रेयः खलु अस्माकं हे देवानुप्रियाः! 'तिदडय' त्रिदण्डकं 'कुडियाओ य' कुण्डिकाश्च=कमण्डलून्, 'कचणियाओ य' काञ्चनिकाश्च=रुद्राक्षमालिकाः, 'करोडियाओ

अम्हं तवलोवे भविस्सइ) तथा हम सब लोगों का यह भी दृढ निश्चय है कि आगामी काल में भी हम सब विना दिया हुआ जल न ग्रहण करें और न उसे पियें, क्यों कि इस प्रकार के आचरण से हमारी तपस्या का लोप हो जायगा, अतः वह भी सुरक्षित रहे इस अभिप्राय से हममें से किसी को भी अदत्त जल ग्रहण नहीं करना चाहिये और न उसे पीना ही चाहिये। (त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया! तिदड कुडियाओ य, कचणियाओ य, करोडियाओ य, भिसियाओ य, छण्णालए य, अकुसए य, केसरियाओ य, पवित्तए य, गणेत्तियाओ य, छत्तए य, वाहणाओ य, पाउयाओ य, धाउरत्ताओ य, एगते एडित्ता गग महानइ ओगाहित्ता) इसलिये हे देवानुप्रियो! अब हम सब की भलाई इसी में है कि हम सब त्रिदण्डों को, कमण्डलुओं को, रुद्राक्ष की मालाओं को, करोटिकाओं-

ण अम्ह तवलोवे भविस्सइ) तथा આપણે દૃઢનિશ્ચયી છીએ કે ભવિષ્યકાળમા પણ દીધેલુ ન હોય એવુ જલ ગ્રહણ કરવુ નહિ અને પીવુ નહિ, કેમકે એ પ્રકારના આચરણથી આપણી તપસ્યાનો લોપ થઈ જશે માટે તે સુરક્ષિત રહે એવા અભિપ્રાયથી આપણામાના કોઈએ પણ અદત્ત જલ ગ્રહણ ન કરવુ જોઈએ અને તે પીવુ પણ ન જોઈએ (त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया! तिदड, कुडियाओ य, कचणियाओ य, करोडियाओ य, केसरियाओ य, पवित्तए य, गणेत्तियाओ य, छत्तए य, वाहणाओ य, पाउयाओ य, धाउरत्ताओ य एगते एडित्ता गग महानइ ओगाहित्ता) એ માટે હે દેવાનુપ્રિયો! હવે આપણી ભલાઈ એમા જ છે કે આપણે ત્રિદંડોને, કમંડલુઓને, રુદ્રાક્ષની

संथरित्ता वालुयासंथारयं दुरूहिंति, दुरूहित्ता पुरत्थाभिमुहा संपलियंकनिसण्णा करयल जाव कट्टु एवं वयासी ॥ सू० २५ ॥

मूलम्—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव सपत्ताणं, नमोत्थु ण

अवतीर्य 'वालुयासथारए' वालुकासंस्तारकान 'सथरति' स्तृणन्ति, 'सथरित्ता' संस्तीर्य 'वालुयासथारय' वालुकासंस्तारकं 'दुरूहिंति' दूरोहन्ति=आरोहन्ति, 'दुरूहित्ता' दूरुह्य=आरुह्य 'पुरत्थिमाभिमुहा' पौरस्त्याभिमुखा =पूर्वदिङ्मुखा, 'सपलियंकनिसण्णा' संपर्यङ्कनिषण्णा —संपर्यङ्क =पद्मासन तेन निषण्णा —पद्मासनेनोपविष्टा, 'करयल जाव कट्टु एवं वयासी' करतल यावत्कृत्वा=मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवदन् ॥ सू० २५ ॥

टीका—'नमोत्थु ण' इत्यादि।'नमोत्थु ण अरहंताणं जाव सपत्ताण' नमोऽस्त्वर्हद्भ्यो यावत् सम्प्राप्तेभ्य, यावच्छब्दात्—आदिकरेभ्य, तीर्थङ्करेभ्य स्वय सम्बुद्धेभ्य —इत्यादीनि विशेषणानि पूर्वाधिगतविंशतितमप्रश्नसूत्राद् बोध्यानि। सिद्धगतिनामधेय स्थान सम्प्राप्तेभ्य ।

हित्ता वालुआसंथारए सथरति) उस पार कर इन लोगोंने वालुकाका संथारा बिछाया, (सथरित्ता वालुयासथारय दुरूहिंति) बिछाकर उसपर वे फिर चढ गये, (दुरूहित्ता) चढकर (पुरत्थाभिमुहा सपलियंकनिसण्णा करयल जाव कट्टु एव वयासी) पूर्व दिशा की ओर मुँह कर पर्यङ्कासन से बैठ गये और दोनों हाथों को जोडकर मस्तक पर लगा इस प्रकार कहने लगे ॥ सू० २५ ॥

'णमोत्थु णं अरिहंताणं जाव सपत्ताणं' इत्यादि।

(णमोत्थु णं अरिहताण जाव सपत्ताण) यावत् मुक्ति प्राप्त हुए श्री अर्हंतप्रभु को नमस्कार हो। (समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव सपाविउकामस्स नमोत्थु णं)

ઓધાય તે મહાનદી ગંગામાં પ્રવિષ્ટ થયા (ओगाहित्ता वालुआसथारए सथरति) તેને પાર કરીને તેઓએ બાલુકા (રેતી) ના સંથારા બિછાવ્યા (सथरित्ता वालुयासथारय दुरूहिंति) બિછાવીને તેના ઉપર તેઓ બેઠા (दुरूहित्ता) બેસીને (पुरत्थाभिमुहा सपलियकनिसण्णा करयल जाव कट्टु एव वयासी) પૂર્વ દિશાની તરફ મોઢા રાખી પર્યંક—આસનથી બેસી ગયા અને બન્ને હાથોને જોડીને મસ્તક ઉપર રાખીને આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યા (સૂ. ૨૫)

'णमोत्थु ण अरिहताण जाव संपत्ताण' ઇત્યાદિ

(णमोत्थु ण अरिहताण जाव सपत्ताण) મુક્તિને પ્રાપ્ત થયેલા શ્રી અર્હંત પ્રભુને નમસ્કાર હો. (समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव सपाविउकामस्स नमो-

झूसियाण भत्तपाणपडियाइक्खियाणं पाओवगयाणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तएत्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता तिदंडए य जाव एगंते एडेंति, एडित्ता गंगं महाणइं ओगाहेंति, ओगाहित्ता वालुआसंथारए संथरंति,

जुषानाम्-तपसा शरीरस्य कृशीकरणं संलेखना तया जुष्टाना=सेविताना-युक्तानाम्, 'भत्त-पाण-पडियाइक्खियाणं' भक्तपान-प्रत्याख्यातानाम्' 'पाओवगयाण' पादपोपगतानाम्=छिन्नवृक्षवन्निष्पन्दतयाऽवस्थितानाम्, 'कालं अणवकंखमाणाण विहरित्तए त्ति कट्टु' कालमनवकाङ्क्षता=मरणमनिच्छता विहर्तुमिति कृत्वा, 'अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति' अन्योऽन्यस्याऽन्तिके एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, 'पडिसुणित्ता' प्रतिश्रुत्य 'तिदंडए य जाव एगते एडेंति' त्रिदण्डकाथ यावत् सर्वोपकरणानि एकान्ते त्यजन्ति, 'गंग महाणइ ओगाहेंति' गङ्गा महानदीमवगाहन्ते=अवतरन्ति, 'ओगाहित्ता' अवगाह्य=

(भत्तपाणपडियाइक्खियाण) भक्तपान का प्रत्याख्यान कर (पाओवगयाण) छिन्न-वृक्ष की तरह निश्चेष्ट होते हुए (काल अणवकंखमाणाण) मरण की इच्छा से रहित होकर (सलेहणाझूसियाण विहरित्तए) सलेखनापूर्वक मरण को प्रेम के साथ सेवन करें। (त्तिकट्टु) इस प्रकार विचारकर (अण्णमण्णस्स अतिए एयमट्ठ पडिसुणेंति) उन लोगोंने इस निर्धारित बात को स्वीकार कर लिया, (पडिसुणित्ता) स्वीकार करने के बाद (तिदडए य जाव एगते एडेंति) फिर उन सबने अपने २ त्रिदड आदि उपकरणों को एकान्त में परित्यक्त कर दिया, (एडित्ता गंग महाणइ ओगाहेंति) परित्यक्त कर चुकने पर फिर वे सब के सब उस महानदी गगा में प्रविष्ट हुए, (ओगा-

સથારા બિછાવીએ, અને તેના પર (भत्तपाण-पडियाइक्खियाण) ભક્તપાનના પ્રત્યાખ્યાન કરીને (पाओवगयाण) પાદપોપગમન સથારા કરીને (काल अणवकंखमाणाण) મરણની ઇચ્છાથી રહિત થઈને (सलेहणाझूसियाण विहरित्तए) સલેખના-પૂર્વક મરણનુ પ્રેમથી સેવન કરીએ (त्ति कट्टु) આ પ્રકારનો વિચાર કરી (अण्णमण्णस्स अतिए एयमट्ठ पडिसुणेति) તે લોકોએ આ નિર્ધારિત કરેલી વાતનો સ્વીકાર કરી લીધો (पडिसुणित्ता) સ્વીકાર કર્યા પછી (तिदडए य जाव एगते एडेति) તે બધાએ પોતપોતાના ત્રિદડ આદિ ઉપકરણોને એકાન્ત સ્થાનમા પરિત્યક્ત કરી દીધા, (एडित्ता गग महनइ ओगाहेंति) છોડી દીધા પછી તે

जीवाए, थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, इयाणिं अम्हे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामो जावज्जीवाए, एवं जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामो जावज्जीवाए, सव्वं कोहं माणं मायं लोहं पेज्जं दोसं कलहं अब्भक्खाणं

मृषावादोऽदत्ताऽऽदान प्रत्याख्यात यावज्जीवम्, 'सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए सर्वं मैथुन प्रत्याख्यात यावज्जीवम्, 'थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए' स्थूल परिग्रह प्रत्याख्यातो यावज्जीवम्। 'इयाणिं अम्हे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवाय पच्चक्खामो जावज्जीवाए' इदानीं वय श्रमणस्य भगवतो महावीरस्याऽन्तिके सर्वं प्राणातिपात प्रत्याख्यामो यावज्जीवम्, 'एव जाव सव्व परिग्गह पच्चक्खामो जावज्जीवाए' एव यावत् सर्वं परिग्रह प्रत्याख्यामो यावज्जीवम्, 'सव्व कोह माण माय लोहं पेज्ज दोस कलहं अब्भक्खाण पेसुण्ण परपरिवाय अरइरइ मायामोसं

समस्त मृषावाद का समस्त अदत्तादान का जीवनपर्यन्त परित्याग कर दिया है, समस्त मैथुन का यावज्जीवन परित्याग कर दिया है। स्थूल परिग्रह का भी यावज्जीवन परित्याग कर दिया है। (इयाणिं अम्हे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामो जावज्जीवाए) अब इस समय हम सब लोग श्रमण भगवान् महावीर के समीप पुन समस्त प्राणातिपात का जीवनपर्यन्त प्रत्याख्यान करते है, (एव जाव सव्व परिग्गह पच्चक्खामो जावज्जीवाए) इसी तरह समस्त परिग्रह आदि का भी जीवनपर्यन्त प्रत्याख्यान करते है, (सव्व कोह माण मायं लोहं पेज्जं दोस कलहं

पच्चक्खाए जावज्जीवाए) એવી રીતે સમસ્ત મૃષાવાદનો અને સમસ્ત અદત્તાદાનનો જીવનપર્યન્ત પરિત્યાગ કરી દીધો છે, સમસ્ત મૈથુનનો જીવનપર્યન્ત પરિત્યાગ કરી દીધો છે સ્થૂલ પરિગ્રહનો પણ યાવજ્જીવન પરિત્યાગ કરી દીધો છે (इयाणिं अम्हे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्व पाणाइवायं पच्चक्खामो जावज्जीवाए) હવે આ સમયે અમે બધાય લોકો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની પાસે વળી પાછા સમસ્ત પ્રાણાતિપાતનું જીવનપર્યન્ત પ્રત્યાખ્યાન કરીએ છીએ (एव जाव सव्वं परिग्गह पच्चक्खामो जावज्जीवाए) એવી જ રીતે સમસ્ત પરિગ્રહ આદિનું પણ જીવનપર્યન્ત પ્રત્યાખ્યાન કરીએ છીએ (सव्व कोह माण माय लोह पेज्ज दोस कलह अब्भक्खाण पेसुण्ण परपरिवाय अरइ-

समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स, नमो- त्थु णं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अम्हं धम्मायरियस्स धम्मोवदे- सगस्स। पुव्विं णं अम्हेहिं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अंतिए थूलगपाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, सव्वे मुसावाए अदि- ण्णादाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जाव-

'नमोत्थु ण समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स' नमोऽस्तु खलु श्रमणाय भगवते महावीराय यावत् सम्प्राप्तुकामाय, 'नमोत्थु णं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अम्ह धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स' नमोऽस्तु अम्बडाय परिव्राजकाय अस्माकं धर्माचार्याय धर्मोपदेशकाय। धर्माचार्यत्वं प्रकटयति-'पुव्विं ण अम्हेहिं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अंतिए थूलगपाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए' पूर्वं खल्वस्माभिरम्बडस्य परि- व्राजकस्याऽन्तिके स्थूलप्राणातिपात प्रत्याख्यातो यावज्जीवम्—जीवनपर्यन्तं स्थूलप्राणातिपात- विरमणमस्माभिरङ्गीकृतम्। 'मुसावाए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए'

श्रमण भगवान् महावीर को जो मुक्ति प्राप्त करने के कामी हैं नमस्कार हो। (धम्मोवदेसगस्स धम्मायरियस्स अम्ह परिव्वायगस्स अम्मडस्स नमोत्थु ण) धर्म के उपदेशक धर्माचार्य ऐसे हमारे गुरु अम्मड परिव्राजक को नमस्कार हो। (पुव्वि ण अम्हेहिं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अंतिए थूलगपाणाइवाए जावज्जीवाए पच्चक्खाए) पहिले हम लोगों ने अम्मड परिव्राजक के समीप स्थूलप्राणातिपातका यावज्जीव प्रत्याख्यान किया है। (सव्वे मुसावाए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए थूलपरिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए) इसी तरह

त्थु ण) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર કે જે મુક્તિ પ્રાપ્ત કરવાની કામનાવાળા છે તેમને નમસ્કાર હો. (धम्मोवदेसगस्स धम्मायरियस्स अम्ह परिव्वायगस्स अम्म- डस्स नमोत्थु ण) ધર્મના ઉપદેશક ધર્માચાર્ય એવા અમારા ગુરુ અમ્મડ પરિ વ્રાજકને નમસ્કાર હો. (पुव्वि ण अम्हेहिं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अंतिए थूलगपा- णाइवाए जावज्जीवाए पच्चक्खाए) પહેલા અમે લોકોએ અમ્મડ પરિવ્રાજકની પાસે સ્થૂલ પ્રાણાતિપાતનું યાવજ્જીવ પ્રત્યાખ્યાન કર્યું છે, (सव्वे मुसावाए अदिण्णा दाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, थूलपरिग्गहे

सरीरं इट्टं कंतं पियं मणुण्णं मणामं पेज्जं थेज्जं वेसासियं संमयं वहुमय अणुमयं भंडकरंडगसमाणं, मा णं सीयं मा णं उण्हं मा णं

चोरा मा ण दंसा मा ण मसगा मा ण वाइयपित्तियसिंभियसन्निवाइय विविहा रोगायका परिसहोवसग्गा फुसन्तु ' इद=पुरतो वर्तमान शरीरम् इष्ट=वल्लभम, कान्त=कमनीयम, प्रिय=सदा प्रेमाऽऽस्पदम , मनोज्ञ=सुन्दरम , मनोऽम=मनसाऽम्यते=प्राप्यते पुन पुन =स्मरणतो यत्तन्मनोऽमम्, प्रेय =सर्वपदार्थेष्वतिशयेन प्रियमिति प्रेय , अथवा कालान्तर-नयना प्रेयम , स्थैर्य=स्थैर्ययुक्त–स्थिरम इत्यर्थं , वैश्वासिकम–विश्वास प्रयोजनम्-अस्येति वैश्वासिकम्–प्राणिना परशरीरमेव प्राचुर्येणा ऽविश्वासहेतु ,निजशरीरं तु प्रतीतिपात्रमेव भवति, ममत–त इतकार्याणा सम्मतत्वात, वहुमत-वहुशो वहूना वा मध्ये मतम् इष्ट यत्त वहुमतम्, अनुमत=वैगुण्यदर्शनेऽपि अनु=पश्चात्=मतम् अनुमतम्, अतएव भाण्डकरण्डकसमान भाण्डानाम्=भूषणाना करण्डकसमान--भूषणमञ्जूषातुल्यमुपादेयमित्यर्थ , एतादृश शरीर मा शीत=शैत्य स्पृशतु, मा-

पिवासा मा ण वाला मा ण चोरा मा ण दसा मा णं मसगा मा णं वाइयपित्तियसिंभियसंनिवाइय विविहा रोगायका परीसहोवसग्गा फुसतु) यहा पर सर्वत्र "मा" शब्द निषेध अर्थ मे, एव "ण" शब्द वाक्यालकार मे प्रयुक्त हुआ समझना चाहिये। इष्ट–वल्लभ, कान्त–कमनीय, प्रिय–सदा प्रेमास्पद, मनोज्ञ–सुन्दर, मनोम–समस्त की अपेक्षा अयत प्रिय, स्थैर्य–स्थिरतायुक्त, वैश्वासिक–पर शरीर की अपेक्षा जीवों को अपना शरीर अतिशय प्रीति का स्थान होता है इस अपेक्षा अतिशय प्रीतिका पात्र, शारीरिक कार्यों के समत होने से समत, वहुत करके अथवा वहुतों के मध्य मे इष्ट होने से वहुमत, अनुमत–विगुणता के दिखने पर भी प्रेम का स्थानभूत, जिस प्रकार भूषणों का करडक प्रिय

समाण मा ण सीय मा ण उण्ह मा ण खुहा मा ण पिवासा मा ण वाला मा ण चोरा मा ण दसा मा ण मसगा मा ण वाइयपित्तियसिंभियसंनिवाइय विविहा रोगायका परीसहोवसग्गा फुसतु) અહીં સર્વત્ર 'મા' શબ્દ નિષેધના અર્થમા તેમજ 'ण' શબ્દ વાક્યાલ કારમા વાપરેલો સમજવો જોઈએ ઇષ્ટ–વલ્લભ, કાન્ત–કમનીય, પ્રિય–સદા પ્રેમાસ્પદ, મનોજ્ઞ–સુદર, મનોમ–સમસ્તની અપેક્ષા અત્યત પ્રિય, સ્થૈર્ય–સ્થિરતાયુક્ત, વૈશ્વાસિક–બીજાના શરીરની અપેક્ષાએ જીવોને પોતાના શરીર અતિશય પ્રીતિનુ સ્થાન હોય છે–એ દૃષ્ટિએ અતિશય પ્રીતિને પાત્ર, શારીરિક કાર્યો માટે સમત હોવાથી સમત, ઘણુ કરીને અથવા ઘણા-ઓની વચમા ઇષ્ટ તેથી બહુમત, અનુમત–વિગુણતા જોવા છતા પણ પ્રેમના સ્થાનભૂત, જે પ્રકારે ઘરેણાનો કરડીયો પ્રિય હોય છે તેવી રીતે પ્રિય હોવાને

पेसुण्णं परपरिवायं अरइरइं मायामोसं मिच्छादंसणसल्लं अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामो जावज्जीवाए, सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामो जावज्जीवाए, जं पि य इमं

मिच्छादंसणसल्लं अकरणिज्ज जोग पच्चक्खामो जावज्जीवाए ' सर्वं क्रोध मान माया लोभं प्रिय द्वेष कलहम् अभ्याख्यान पैशुन्य परपरिवादम् अरतिरती मायामृषा मिथ्यादर्शनशल्यमकरणीयं योग प्रत्याख्यामो यावज्जीवम्—अत्र यानि सर्वाणि पदानि प्राग् व्याख्यातानि। ' सव्वं असणं पाणं खाइम साइम चउव्विहपि आहार पच्चक्खामो जावज्जीवाए ' सर्वमशन पान खाद्य स्वाद्य चतुर्विधमपि आहार प्रत्याख्यामो यावज्जीवम्। ' जपि य इम सरीर इट्ठ कत पिय मणुण्ण मणाम पेज्ज थेज्ज वेसासिय संमय वहुमय अणुमयं भडकरंडगसमाण, मा ण सीय मा ण उण्ह मा णं खुहा मा णं पिवासा मा णं वाला मा ण

अब्भक्खाणं पेसुण्ण परपरिवाय अरइरइ) इसी तरह उन्हीं की साक्षीपूर्वक समस्त क्रोध का, समस्त मान का, समस्त माया का, समस्त लोभ का, समस्त प्रिय का, समस्त द्वेष का, कलह का, अभ्याख्यान का, पैशुन्य का, परपरिवाद का, अरति—रति का (माया-मोस) मायामृषा का, (मिच्छादसणसल्ल) मिथ्यादर्शन शल्य का, (अकरणिज्ज जोग) एव अकरणीय योग का (पच्चक्खामो जावज्जीवाए) यावज्जीव प्रत्याख्यान करते है। (सव्वं असण पाण खाइम साइम चउव्विहपि आहार पच्चक्खामो जावज्जीवाए) समस्त, अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य इन चार प्रकार के आहारों का यावज्जीव प्रत्याख्यान करते है। (ज पि य इम सरीरं इट्ठ कत पिय मणुण्ण मणामं पेज्जं थेज्ज वेसासिय समयं वहुमय अणुमय भडकरंडगसमाण, मा णं सीय मा ण उण्ह मा ण खुहा मा ण

रइ) એવી રીતે તેમની જ સાક્ષીપૂર્વક સમસ્ત ક્રોધનું, સમસ્ત માનનું, સમસ્ત માયાનુ, સમસ્ત લોભનુ, સમસ્ત પ્રિયનુ, સમસ્ત દ્વેષનુ, કલહનુ અભ્યાખ્યાનનુ (આળનુ), પૈશુન્યનુ, પરપરિવાદનુ, અરતિનુ, રતિનુ, (मायामोस) માયામૃષાનુ, (मिच्छादसणसल्ल) મિથ્યાદર્શનશલ્યનુ, (अकरणिज्ज जोग) તેમજ અકરણીય યોગનુ (पचक्खामो जावज्जीवाए) જીવનપર્યન્ત પ્રત્યાખ્યાન કરીએ છીએ (सव्व असण पाण खाइम साइम चउव्विहपि आहार पच्चक्खामो जावज्जीवाए) સમસ્ત અશન, પાન, ખાદ્ય, સ્વાદ્ય વગેરે ચાર પ્રકારના આહારોનુ યાવજ્જીવન પ્રત્યાખ્યાન કરીએ છીએ (ज पि य इम सरीर इट्ठ कत पिय मणाम मणुण्ण पेज्ज थेज्ज वेसासिय समय वहुमय अणुमय भडकरडग-

रामि–त्ति कट्टु सलेहणाझूसणाझूसिया भत्तपाणपडियाइक्खिया पाओवगया कालं अणवकंखमाणा विहरंति ॥ सू० २६ ॥

मूलम्—तए णं ते परिव्वायगा वहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता आलोइयपडिकंता समाहिपत्ता कालमासे कालं

शरीरकृशीकरणे या जोषणा=प्रीति तया जुष्टा =सेविता, 'भत्तपाणपडियाइक्खिया' प्रत्याख्यातभक्तपाना, 'पाओवगया' पादपोपगता =वृक्षवन्निष्पन्दतया स्थिता, 'काल अणवकखमाणा' कालमनवकाङ्क्षन्त, केचिद वेदनाविकला मरणमिच्छन्ति तेषा निषेधार्थमेतद्वाक्यम्, एवम्भूता विहरन्ति–अम्बडपरिव्राजकशिष्या इति ॥ सू० २६ ॥

टीका—'तए ण ते परिव्वायगा' इत्यादि। 'तए ण ते परिव्वायगा' तत खलु ते परिव्राजका–अम्बडशिष्या कृतकायोत्सर्गा–'वहुइ भत्ताइं अणसणाए छेदेंति' वहूनि भक्तानि अनशनेन छिन्दन्ति, 'छेदित्ता' छित्वा 'आलोइयपडिक्कता' आलोचितप्रतिक्रान्ता =गुरुजनस्य समीपे कृताऽऽलोचना, प्रतिक्रान्ता –पापस्थानात्पश्चा-

सब के सब (भत्तपाणपडियाइक्खिया) भक्त एव पान का प्रत्याख्यान करके (पाओवगया) वृक्ष की तरह निश्चेष्ट होकर (काल अणवकखमाणा विहरति) मरन की इच्छा नहीं करते हुए स्थित हो गये ॥ सू० २६ ॥

'तए ण ते परिव्वायगा', इत्यादि ।

(तए ण) इसके बाद (ते परिव्वायगा) उन समस्त परिव्राजकोंने (वहूइं भत्ताइ) चारों प्रकार के आहार का (अणसणाए) अनशन द्वारा (छेदेंति) छेद कर दिया, (छेदित्ता) छेद करने के बाद (आलोइयपडिक्कता) अपने अतिचारों की

પાનનુ પ્રત્યાખ્યાન કરીને (પાઓવગયા) વૃક્ષની પેઠે નિશ્ચલ થઈને(કાલ અણવક-ખમાણા વિહરતિ) મરવાની ઇચ્છા નહી કરતા સ્થિત થઈ ગયા (સૂ ૨૬)

'तए ण ते परिव्वायगा' ઈત્યાદિ

(तए ण) ત્યાર પછી (ते परिव्वायगा) તે બધા પરિવ્રાજકોએ (वहूइ भत्ताइ) ચારેય પ્રકારના આહારના (अणसणाए) અનશન દ્વારા (छेदेंति) છેદ કરી દીધો (छेदित्ता) છેદ કરી દીધા પછી (आलोइयपडिक्कता) પોતાના અતિચારોની આલોચના કરી પછી તેઓ તેનાથી નિવૃત્ત થયા (समाहिपत्ता)

खुहा मा णं पिवासा मा णं वाला मा णं चोरा मा णं मसगा मा णं वाइयपित्तियसिंभियसंनिवाइय विविहा रोगायंका परिसहोवसग्गा फुसंतु–त्ति कट्टु एयंपि णं चरमेहिं ऊसासणीसासेहिं वोसि-

शब्दो निषेधार्थ, 'णं' शब्दो वाक्यालङ्कारार्थ, शैत्य कर्तृ शरीरकर्मक स्पर्शन न करोतु, एवमेवोष्ण–क्षुधा–पिपासा–व्याल–चौर दंश-मशक वातिक पैत्तिक श्लैष्मिक-सान्निपातिकादयो विविधा रोगातङ्का परीषहा उपसर्गाश्चैतच्छरीरं न स्पृशन्तु। अत्र व्याला=सर्पा, रोगा=महाव्याधय, आतङ्का=सद्योघातिनो रोगा एव, परीषहा क्षुधादयो द्वाविंशति, उपसर्गा=दिव्यादय, अन्यत् सुगमम्। 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा 'एय पि णं चरमेहिं ऊसासणीसासेहिं वोसिरामि त्तिकट्टु' एतदपि खलु चरमैरुच्छ्वासनि श्वासैर्व्युत्सृजामि–एतदपि शरीर त्यजामि इति कृत्वा=इत्थ विचार्य 'सलेहणाझूसणाझूसिया' सलेखना–जूषणा–जुष्टा –सलेखनाया=कषाय-

होता है उसी प्रकार से प्रिय होने कारण भाण्टकण्डक के तुल्य (इम) इस मेरे (सरीर) शरीरको शीत स्पर्श न करे, उष्ण स्पर्श न करे, क्षुधा स्पर्श न करे, पिपासा स्पर्श न करे, व्याल-सर्प स्पर्श न करे, चोर उपद्रव न करे, दस-डास स्पर्श न करे, मशक-मच्छर स्पर्श न करे, वातसबधी, पित्तसबधी, कफसबधी, सन्निपातसबधी आदि विविध रोग–महाव्याधिया, आतक–सद्य-प्राणहर रोग, परीषह–क्षुधाआदि एव उपसर्ग–देवादिक कृत उपद्रव, कोई भी इस शरीर को स्पर्श न करे, (त्तिकट्टु) इस प्रकार की विचारधारा को (चरमेहिं ऊसासणीसासेहिं वोसिरामि) अब चरम उच्छ्वासनि श्वास तक छोडते है। (त्तिकट्टु) इस तरह करके (सलेहणाझूसणाझूसिया) सलेखना में–कषाय एव शरीर के कृश करने में प्रीति से युक्त वे

કારણે ભાડકર ડકના તુલ્ય (इम) આ મારા (सरीरं) શરીરને ઠંડી સ્પર્શ ન કરે, ગરમી સ્પર્શ ન કરે, ભૂખ સ્પર્શ ન કરે, તરસ સ્પર્શ ન કરે, વ્યાલ–સર્પ સ્પર્શ ન કરે, ચોર ઉપદ્રવ ન કરે, દશ–ડાસ સ્પર્શ ન કરે, મશક–મચ્છર સ્પર્શ ન કરે, વાતસબધી, પિત્તસબધી, કફસબધી, સન્નિપાત–સબધી આદિ વિવિધ રોગ–મહાવ્યાધિઓ, આતક–તીવ્રપ્રાણહર રોગ, પરીષહ–ક્ષુધાઆદિ તેમજ ઉપસર્ગ–દેવાદિકૃત ઉપદ્રવ, એવું કાંઈ પણ આ શરીરને સ્પર્શ ન કરે (त्ति कट्टु) આ પ્રકારની વિચારધારાને (चरमेहिं ऊसासणीसासेहिं वोसिरामि) હવે ચરમ ઉચ્છ્વાસનિ શ્વાસ સુધી છોડુ છુ (त्तिकट्टु) આવી રીતે કરીને (सलेहणाझूसणाझूसिया) સલેખનામા–કષાય તેમજ શરીરને કૃશ કરવામા પ્રીતિથી યુક્ત, તે બધા (भत्तपाणपडियाइक्खिया) ભક્ત તેમજ

क्खइ एवं भासइ एवं पन्नवेइ एवं परूवेइ । एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे णयरे घरसए आहारमाहारेइ, घरसए वसहिं उवेइ । से कहमेवं भंते ! एवं ॥ सू० २८ ॥

मूलम्—गोयमा ! जं णं से बहुजणे अण्णमण्णस्स

'अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ' अन्योन्यमेवमाख्याति=हे भगवन् ! जनसमूह परस्परमित्थं वक्ति, 'एवं भासइ' एवं भाषते, 'एवं पन्नवेइ' एवं प्रज्ञापयति, 'एवं परूवेइ' एवं प्ररूपयति, 'एवं खलु अंम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे णयरे' एवं खल्वम्बड परिव्राजक काम्पिल्यपुरे नगरे, 'घरसए आहारमाहारेइ' गृहशतादाहारमाहरति=भिक्षा गृह्णाति, 'घरसए वसहिं उवेइ' गृहशते वसतिमुपैति, 'से कहमेयं भंते एवं' तत् कथमेतद् भगवन् ! एवम्–इति भगवन्तं प्रति शिष्यप्रश्न ॥ सू० २८ ॥

टीका—भगवानाह–'गोयमा !' इत्यादि । 'जं णं से बहुजणे अण्णमण्ण-

जणे णं) बहुत से लोग (अण्णमण्णस्स) परस्पर जो (एवमाइक्खइ) इस प्रकार कहते हैं, (एवं भासइ) इस प्रकार भाषण करते है, (एवं पन्नवेइ) इस प्रकार अच्छी तरह ज्ञापित करते हैं, (एवं परूवेइ) इस प्रकार प्ररूपित करते है कि (एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे णयरे घरसए आहारमाहारेइ) ये अम्बडपरिव्राजक कपिल्लपुर नगर में सौ घरो में आहार करते हैं, एवं (घरसए वसहिं उवेइ) सौ घरों में निवास करते हैं, (से) सो (भंते !) हे भदंत ! (कहमेयं) यह बात कैसे है ? ॥ सू० २८ ॥

'गोयमा ! जं णं से बहुजणे' इत्यादि ।

प्रभु गौतम के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहते है कि (गोयमा !) हे गौतम !

(बहुजणे णं) घणा લોકો (अण्णमण्णस्स) પરસ્પર જે (एवमाइक्खइ) આ પ્રકારે કહે છે, (एवं भासइ) આ પ્રકારે ભાષણ કરે છે, (एवं पन्नवेइ) આ પ્રકારે સારી રીતે જ્ઞાપિત કરે છે (જણાવે છે), (एवं परूवेइ) આ પ્રકારે પ્રરૂપિત કરે છે કે (एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे णयरे घरसए आहार-माहारेइ) અમ્બડ પરિવ્રાજક કપિલ્લપુર નગરમાં સો ઘરમાં આહાર કરે છે તેમજ (घरसए वसहिं उवेइ) સો ઘરોમાં નિવાસ કરે છે, (से) તો (भंते !) હે ભદન્ત ! (कहमेयं) આ વાત કેવી છે? (સૂ ૨૮)

'गोयमा ! जं णं से बहुजणे' ઇત્યાદિ

પ્રભુ ગૌતમના પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા કહે છે કે (गोयमा !) હે

किच्चा बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववण्णा। तहिं तेसिं गई। दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, परलोगस्स आराहगा, सेसं तं चेव ॥ सू० २७ ॥

मूलम्—बहुजणे णं भंते! अण्णमण्णस्स एवमाइ-

त्पराबृत्ता, 'समाहिपत्ता' समाधिप्राप्ता=उपशान्तदृष्ट्या, 'कालमासे कालं किच्चा' कालमासे कालं कृत्वा, 'बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववण्णा' ब्रह्मलोके कल्पे देवत्वेनोपपन्ना, देशविरतिफले त्वेषा परलोकाऽऽराधकत्वमेव। परिव्राजकक्रियाफलं ब्रह्मलोकगमनम्। 'तहिं तेसिं गई' तत्र तेषां गतिः, 'दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता' दशसागरोपमाणि स्थितिः प्रज्ञप्ता, 'परलोगस्स आराहगा' परलोकस्याऽऽराधकाः सन्तीत्यर्थः, 'सेसं तं चेव' शेषं तदेव ॥ सू० २७ ॥

टीका—'बहुजणे णं भंते!' इत्यादि। बहुजनः=जनसमूहः खलु हे भदन्त!

आलोचना की, पश्चात् वे उनसे परावृत्त हुए। फिर (समाहिपत्ता) समाधि प्राप्त कर (कालमासे कालं किच्चा बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववण्णा) काल-अवसर में काल करके ब्रह्मलोक कल्प मे देव की पर्याय से उत्पन्न हुए। (तहिं तेसिं गई, दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, परलोगस्स आराहगा, सेसं तं चेव) वहाँ पर उनकी गति प्ररूपित करने में आई है। स्थिति इनकी १० सागर प्रमाण है। ये परलोक के नियम से आराधक कहे गये है। और पहिले की तरह समझना चाहिये ॥ सू० २७ ॥

'बहुजणे णं भंते' इत्यादि।

पुनः गौतमस्वामी ने भक्तिपूर्वक प्रभु से पूछा कि (भंते) हे भगवन्! (बहु-

અને સમાધિ પ્રાપ્ત કરીને (कालमासे कालं किच्चा बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववण्णा) કાલ-અવસરે કાલ કરીને બ્રહ્મલોક કલ્પમાં દેવની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થયા (तहिं तेसिं गई, दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, परलोगस्स आराहगा, सेसं तं चेव) ત્યાં જ તેમની ગતિ પ્રરૂપિત કરવામાં આવી છે તેમની સ્થિતિ ૧૦ સાગર પ્રમાણ છે તેઓને નિશ્ચિતરૂપથી પરલોકના આરાધક કહેવામાં આવ્યા છે બાકીનું અગાઉની પેઠે સમજી લેવું જોઈએ (સૂ. ૨૭)

'बहुजणे णं भंते' ઇત્યાદિ

વળી ગૌતમ સ્વામીએ ભક્તિપૂર્વક પ્રભુને પૂછયું કે (भंते!) હે ભગવન્!

मूलम्---से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-अम्मडे परिव्वायए जाव वसहिं उवेइ ॥ सू० ३० ॥

मूलम्---गोयमा ! अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स पगइभद्दयाए जाव विणीययाए छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं

टीका--पुनर्गौतम पृच्छति-'से केणट्ठेण' इत्यादि। 'से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ' तत् केनार्थेन हे भदन्त ! एवमुच्यते-'अम्मडे परिव्वायए जाव वसहिं उवेइ' अम्बड परिव्राजको यावद् वसतिमुपैति, गृहशताद्भिक्षा करोति, गृहशते वसतिं स्वीकरोति, इति ॥ सू० ३० ॥

टीका---भगवानाह-'गोयमा !' इत्यादि। हे गौतम ! 'अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स पगइभद्दयाए' अम्बडस्य खलु परिव्राजकस्य प्रकृतिभद्रतया-प्रकृते = स्वभावस्य भद्रतया=सरलतया 'जाव विणीययाए' यावद्विनीततया-यावच्छब्दादिद दृश्यं-प्रकृत्युपशान्ततया प्रकृतितनुक्रोधमानमायालोभतया मृदुमार्दवसम्पन्नतयाऽऽलीनतया इति,

'से केणट्ठेणं' इत्यादि।

(भंते) हे भदन्त ! (से केणट्ठेणं एवं वुच्चइ) आप यह किस आशय से कहते हैं कि-(अम्मडे परिव्वायए जाव वसहिं उवेइ) अम्बड परिव्राजक सौ घरों मे आहार करते हैं और सौ घरों में निवास करते हैं ॥ सू ३० ॥

'गोयमा ! अम्मडस्स ण' इत्यादि।

(गोयमा) हे गौतम ! यह अम्बड परिव्राजक (पगइभद्दयाए जाव विणीययाए) प्रकृति से भद्र है, अल्प क्रोध, मान, माया एवं लोभ--कषायवाला है स्वभावत

'से केणट्ठेण' ઇત્યાદિ

(भंते !) હે ભદન્ત ! (से केणट्ठेण एव वुच्चइ) આપ એ કયા હેતુથી કહો છો કે--(अम्मडे परिव्वायए जाव वसहिं उवेइ) અમ્બડ પરિવ્રાજક સો ઘરમા આહાર કરે છે અને સો ઘરમા નિવાસ કરે છે? (સૂ ૩૦)

'गोयमा ! अम्मडस्स ण' ઇત્યાદિ

(गोयमा !) હે ગૌતમ ! આ અમ્બડ પરિવ્રાજક (पगइभद्दयाए जाव विणीययाए) પ્રકૃતિથી ભદ્ર છે, અલ્પ ક્રોધ, માન, માયા, તેમજ લોભ કષાયવાળા છે, સ્વભાવત મૃદુ-માર્દવ ગુણથી યુક્ત છે, તથા અત્યત વિનીત

एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे जाव घरसए वसहिं उवेइ। सच्चे णं एसमट्ठे, अहंपि णं गोयमा! एवमाइक्खामि जाव एवं परूवेमि—एवं खलु अम्मडे परिव्वायए जाव वसहिं उवेइ ॥ सू० २९ ॥

रस एवमाइक्खइ' हे गौतम ! यत्खलु स बहुजनोऽन्योऽन्यम् एवमाख्याति, यावदेवं प्ररूपयति, 'एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे जाव घरसए वसहिं उवेइ' एवं खल्वम्बड परिव्राजकः काम्पिल्यपुरे यावद् गृहशते वसतिमुपैति—इति यत्त्वया पृच्छ्यते। 'सच्चे णं एसमट्ठे' सत्य खल्वेषोऽर्थः। 'अहंपि णं गोयमा! एवमाइक्खामि' अहमपि खलु गौतम! एवमाख्यामि, 'जाव एवं परूवेमि' यावदेवं प्ररूपयामि=प्ररूपणां करोमि, 'एवं खलु अम्मडे परिव्वायए जाव वसहिं उवेइ' एवं खलु अम्बड परिव्राजको यावद् वसतिमुपैति—गृहशताद् भिक्षां गृह्णाति, गृहशते वसतिं करोति, इति ॥ सू० २९ ॥

(ज) जो (से) वे (बहुजणे) बहुत से लोग (अण्णमण्णस्स) परस्पर दूसरे से (एवमाइक्खइ जाव परूवेइ) इस प्रकार कहते हे यावत् इस प्रकार प्ररूपित करते हैं कि (एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे) ये अम्बड परिव्राजक कपिल्लपुर नगर मे (जाव घरसए वसहिं उवेइ) सौ घरों में भिक्षा लेते हैं और सौ घरों में निवास करते हैं, सो (सच्चे णं एसमट्ठे) यह बात बिलकुल ठीक है। (अहं पि णं गोयमा! एवमाइक्खामि) गौतम! मै भी इसी तरह कहता हू (जाव एवं परूवेमि) यावत् इसी तरह प्ररूपित करता हू कि (एवं खलु अम्मडे परिव्वायए जाव वसहिं उवेइ) ये अम्बड परिव्राजक सौ घरों मे आहार करते हैं और सौ घरों में निवास करते हैं ॥ सू० २९ ॥

ગૌતમ! (ज) જે (से) તેઓ (बहुजणे) ઘણા લોકો (अण्णमण्णस्स) પરસ્પર એક બીજાને (एवमाइक्खइ जाव परूवेइ) આ પ્રકારે કહે છે યાવત્ આ પ્રકારે પ્રરૂપિત કરે છે કે (एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे) તે અમ્બડ પરિવ્રાજક કંપિલ્લપુર નગરમાં (जाव घरसए वसहिं उवेइ) સો ઘરોથી ભિક્ષા લે છે અને સો ઘરોમાં નિવાસ કરે છે તો (सच्चे णं एसमट्ठे) આ વાત બિલકુલ ઠીક છે। (अहंपि णं गोयमा! एवमाइक्खामि) ગૌતમ! હું પણ એજ રીતે કહું છું (जाव एवं परूवेमि) યાવત્ એવી જ રીતે પ્રરૂપિત કરૂં છું કે (एवं खलु अम्मडे परिव्वायए जाव वसहिं उवेइ) એ અમ્બડ પરિવ્રાજક સો ઘરોમાં આહાર કરે છે અને સો ઘરોમાં નિવાસ કરે છે (સૂ. ૨૯)

खओवसमेणं ईहावूहामग्गणगवेसण करेमाणस्स वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी ओहिणाणलद्धी समुप्पण्णा। तए णं से अम्मडे परिव्वायगे तीए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहीणाणलद्धीए

'खओवसमेण' तदावरणीयानां=कर्मणां वीर्यवैक्रियलब्ध्यवधिज्ञानावरणीयानां क्षयोपशमेन, 'ईहा-वूहा-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स' ईहा-व्यूह-मार्गण-गवेषणं कुर्वत - तत्र-ईहा= मतिज्ञानभेद -नामजात्यादिविशेषकल्पनारहितसामान्यज्ञानोत्तरं विशेषनिश्चयार्थं विचारणा इत्यर्थ, व्यूह =अपोह -सामान्यज्ञानोत्तरकाले विशेषनिश्चयार्थं विचारणायां प्रवृत्ताया तदनु गुणदोष-विचारणाजनितो निश्चय । मार्गण=जीवादिपदार्थस्य यथावस्थितस्वरूपान्वेषणम्, गवेषण= मार्गणानन्तरमनुपलभ्यस्य जीवादिपदार्थस्य सर्वत परिभावनम्, एषां समाहारस्तत् तथा, तत् कुर्वत अम्बडस्य परिव्राजकस्येत्यन्वय । 'वीरियलद्धी' वीर्यलब्धि, 'वेउव्वियलद्धी' वैक्रियलब्धि 'ओहिणाणलद्धी समुप्पण्णा' अवधिज्ञानलब्धिश्च समुत्पन्ना। 'तए णं

आवरण कर्मों के (खओवसमेण) क्षयोपशम से (ईहा-वूहा-मग्गण-गवेसण करेमाणस्स) ईहा-नाम एव जात्यादिरूप कल्पना से रहित सामान्य ज्ञान के बाद विशेषरूप से निश्चय करने की चेष्टा-विचारधारा, व्यूह-सामान्य ज्ञान के बाद विशेष निश्चय के लिये विचारणा करने पर गुणदोष के विचार से होनेवाला निश्चय-अवायरूप ज्ञान, मार्गण-यथावस्थित जीवादिक पदार्थ के स्वरूपका अन्वेषण, एव गवेषण-मार्गण के बाद अनुपलभ्य जीवादिक पदार्थों के सभी प्रकार से निर्णय करने की तरफ तत्परतारूप गवेषण (करेमाणस्स) करने से (वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी ओहिणाणलद्धी समुप्पण्णा) वीर्यलब्धि, वैक्रियलब्धि, तथा अवधिज्ञानलब्धि उत्पन्न हो गई। (तए ण से

આવરણ કર્મોના (खओवसमेण) ક્ષયોપશમથી (ईहा-वूहा-मग्गण-गवेसण करेमाणस्स) ઇહા-નામ તેમજ જાતિ આદિની કલ્પનાથી રહિત સામાન્ય જ્ઞાન થયા પછી વિશેષરૂપથી નિશ્ચય કરવાની ચેષ્ટા-વિચારધારા, વ્યૂહ-સામાન્યજ્ઞાન બાદ વિશેષ નિશ્ચય કરવા માટે વિચારણા કર્યા પછી ગુણદોષના વિચારથી થનારા નિશ્ચય-અવાયરૂપ જ્ઞાન, માર્ગણ-યથાવસ્થિત જીવ-આદિક પદાર્થના સ્વરૂપનું અન્વેષણ, તેમજ ગવેષણ-માર્ગણ પછી અનુપલભ્ય જીવ આદિક પદાર્થોનો સર્વ પ્રકારથી નિર્ણય કરવાની તરફ તત્પરતારૂપ ગવેષણ (करेमाणस्स) કરવાથી (वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी ओहिणाणलद्धी समुप्पण्णा) વીર્યલબ્ધિ, વૈક્રિયલબ્ધિ, તથા અવધિજ્ઞાનલબ્ધિ

उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं पसत्थाहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं अन्नया कयाइं तदावरणिज्जाणं कम्माणं

विनयशीलतया, 'छट्ठछट्ठेण अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेण' षष्ठषष्ठेन अनिक्षिप्तेन तपःकर्मणा-सुहुर्दिनद्वयाऽनशनरूपेण अविश्रान्तेन तपोरूपेण कर्मणा, 'उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय२' ऊर्ध्वं बाहू प्रगृह्य२=बाहू ऊर्ध्वं कृत्वा 'सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स' सूर्याभिमुखस्याऽऽतापनाभूमावातापयत 'सुभेण परिणामेण' शुभेन परिणामेन=शुभ-रूपयाऽऽत्मपरिणत्या, 'पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं' प्रशस्तैरध्यवसानैः–उत्तममनोविशेषैः, 'पसत्थाहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं' प्रशस्ताभिर्लेश्याभिः विशुध्यमानाभिः 'अन्नया कयाइ' अन्यदा कदाचित् 'तदावरणिज्जाणं कम्माणं

मृदुमार्दव गुण से युक्त है, तथा अत्यंत विनीत भी है। (अनिक्खित्तेण) तथा लगातार (छट्ठ छट्ठेण तवोकम्मेणं) छठ छठ–बेला–की तपस्या करनेवाला है। एवं (उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय२) बाहुओं को ऊपर उठा कर, (सूराभिमुहस्स) सूर्य के सन्मुख (आयावणभूमीए आयावेमाणस्स) आतापना के योग्य प्रदेश में आतापना लेता है। अतः (अम्मडस्स परिव्वायगस्स) इस अम्बड परिव्राजक को (सुभेण परिणामेण) शुभ परिणाम से–शुभरूप आत्मा की परिणति से, (पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं) प्रशस्त अध्यवसानों से–उत्तम विचारधाराओं से, (पसत्थाहिं लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं) प्रशस्त लेश्याओं की विशुद्धि होने से, (अण्णया कयाइ) किसी एक समय (तदावरणिज्जाण कम्माण) तदावरणीय कर्मों–वीर्य के, वैक्रियलब्धि के एवं अवधि ज्ञान के

યુક્ત છે (अनिक्खित्तेण) તથા લગાતાર (छट्ठछट्ठेण तवोकम्मेण) છઠ છઠ–બેલા–ની તપસ્યા કરવાવાળા છે તેમજ (उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय२) હાથને ઉંચા કરીને (सूराभिमुहस्स) સૂર્યની સન્મુખ (आयावणभूमीए आयावेमाणस्स) આતાપનાને યોગ્ય પ્રદેશમાં આતાપના લે છે આથી (अम्मडस्स परिव्वायगस्स) એ અમ્બડ પરિવ્રાજકને (सुभेण परिणामेण) શુભ પરિણામથી, શુભરૂપ આત્માની પરિણતિથી, (पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं) પ્રશસ્ત અધ્યવસાનોથી–ઉત્તમ વિચારધારાઓથી, (पसत्थाहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं) પ્રશસ્ત લેશ્યાઓની વિશુદ્ધિ થવાથી (अण्णया कयाइ) કોઈ એક સમય (तदावरणिज्जाण कम्माण) તદાવરણીય કર્મો–વીર્ય, વૈક્રિયલબ્ધિ અને અવધિજ્ઞાનના

खओवसमेणं ईहावूहामग्गणगवेसणं करेमाणस्स वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी ओहिणाणलद्धी समुप्पण्णा। तए णं से अम्मडे परिव्वायगे तीए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहीणाणलद्धीए

खओवसमेण' तदावरणीयानां=कर्मणां वीर्यवैक्रियलब्ध्यवधिज्ञानावरणीयानां क्षयोपशमेन, 'ईहा-वूहा-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स' ईहा-व्यूह-मार्गण-गवेषणं कुर्वतः-तत्र-ईहा= मतिज्ञानभेदः-नामजात्यादिविशेषकल्पनारहितसामान्यज्ञानोत्तरं विशेषनिश्चयार्थं विचारणा इत्यर्थः, व्यूहः=अपोहः-सामान्यज्ञानोत्तरकालं विशेषनिश्चयार्थं विचारणायां प्रवृत्तायां तदनु गुणदोष-विचारणाजनितो निश्चयः। मार्गणं=जीवादिपदार्थस्य यथावस्थितस्वरूपान्वेषणम्, गवेषणं= मार्गणानन्तरमनुपलभ्यस्य जीवादिपदार्थस्य सर्वतः परिभावनम्, एषां समाहारस्तत् तथा, तत् कुर्वतः अम्मडस्य परिव्राजकस्येत्यन्वयः। 'वीरियलद्धी' वीर्यलब्धिः, 'वेउव्वियलद्धी' वैक्रियलब्धिः 'ओहिणाणलद्धी समुप्पण्णा' अवधिज्ञानलब्धिश्च समुत्पन्ना। 'तए णं

आवरण कर्मों के (खओवसमेण) क्षयोपशम से (ईहा-वूहा-मग्गण-गवेसण करेमाणस्स) ईहा-नाम एवं जात्यादिरूप कल्पना से रहित सामान्य ज्ञान के बाद विशेषरूप से निश्चय करने की चेष्टा-विचारधारा, व्यूह-सामान्य ज्ञान के बाद विशेष निश्चय के लिये विचारणा करने पर गुणदोष के विचार से होनेवाला निश्चय-अवायरूप ज्ञान, मार्गण-यथावस्थित जीवादिक पदार्थ के स्वरूपका अन्वेषण, एवं गवेषण-मार्गण के बाद अनुपलभ्य जीवादिक पदार्थों के सभी प्रकार से निर्णय करने की तरफ तत्परतारूप गवेषण (करेमाणस्स) करने से (वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी ओहिणाणलद्धी समुप्पण्णा) वीर्यलब्धि, वैक्रियलब्धि, तथा अवधिज्ञानलब्धि उत्पन्न हो गई। (तए ण से

આવરણ કર્મોના (खओवसमेण) ક્ષયોપશમથી (ईहा-वूहा-मग्गण-गवेसण करेमाणस्स) ઈહા-નામ તેમજ જાતિ આદિની કલ્પનાથી રહિત સામાન્ય જ્ઞાન થયા પછી વિશેષરૂપથી નિશ્ચય કરવાની ચેષ્ટા-વિચારધારા, વ્યૂહ-સામાન્યજ્ઞાન બાદ વિશેષ નિશ્ચય કરવા માટે વિચારણા કર્યા પછી ગુણદોષના વિચારથી થવાવાળા નિશ્ચય-અવાયરૂપ જ્ઞાન, માર્ગણ-યથાવસ્થિત જીવ-આદિક પદાર્થના સ્વરૂપનું અન્વેષણ, તેમજ ગવેષણ-માર્ગણ પછી અનુપલભ્ય જીવ આદિક પદાર્થોનો સર્વ પ્રકારથી નિર્ણય કરવાની તરફ તત્પરતારૂપ ગવેષણ (करेमाणस्स) કરવાથી (वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी ओहिणाणलद्धी समुप्पण्णा) વીર્યલબ્ધિ, વૈક્રિયલબ્ધિ, તથા અવધિજ્ઞાનલબ્ધિ

समुप्पण्णाए जणविम्हावणहेउं कंपिल्लपुरे णयरे घरसए जाव वसहिं उवेइ। से तेणट्टेणं गोयमा! एवं वुच्चइ-अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे णयरे घरसए जाव वसहिं उवेइ ॥ सू० ३१ ॥

से अम्मडे परिव्वायगे' तत खलु स अम्बड परिव्राजक, 'तीए वीरियलद्धीए वेउव्विय-लद्धीए ओहिणाणलद्धीए समुप्पण्णाए' तया वीर्यल ्या वैक्रियल ्याऽवधिज्ञानल ्या च समुत्पन्नया 'जणविम्हावणहेउ' जनविस्मापनहेतो, 'कपिल्लपुरे णयरे घरसए जाव वसहिं उवेइ' काम्पिल्यपुरे नगरे गृहशते यावद्वसतिमुपैति, 'से तेणट्ठेणं गोयमा! एव वुच्चइ' तत् तेनार्थेन गौतम! एवमुच्यते-' अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे णयरे घरसए जाव वसहिं उवेइ' अम्बड परिव्राजक काम्पिल्यपुरे नगरे गृहशते यावद्वसति मुपैति ॥ सू० ३१ ॥

अम्मडे परिव्वायगे तीए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिणाणलद्धीए समुप्पणाए) इसके बाद उत्पन्न हुई उन वीर्यलब्धि, वैक्रियलब्धि एव अवधिज्ञानलब्धि द्वारा यह (जणविम्हावणहेउ) मनुष्यों को आश्चर्यचकित करने के लिये (कपिल्लपुरे णयरे घरसए जाव वसहिं उवेइ) कपिल्ल नगर मे सौ घरों से भिक्षा करता है, एव उन्हीं मे विश्राम करता है। (से तेणट्ठेणं गोयमा! एव वुच्चइ) इस आशय से, हे गौतम! मै ऐसा कहता हू (अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे णयरे घरसए जाव वसहिं उवेइ) कि अम्बड परिव्राजक कपिल्लपुर नगर में सौ घरों में आहार करता है और सौ घरों मे निवास करता है ॥ सू० ३१ ॥

ઉત્પન્ન થઈ (तए ण से अम्मडे परिव्वायगे तीए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिणाणलद्धीए समुप्पणाए) ત્યાર પછી ઉત્પન્ન થયેલી તે વીર્યલબ્ધિ, વૈક્રિયિકલબ્ધિ તેમજ અવધિજ્ઞાનલબ્ધિ દ્વારા એ (जणविम्हावणहेउ) મનુષ્યોને આશ્ચર્યચકિત કરવા માટે (कपिल्लपुरे णयरे घरसए जाव वसहिं उवेइ) કપિલ્લપુરનગરમા સો ઘરોથી ભિક્ષા કરે છે તેમજ તેમા જ વિશ્રામ કરે છે, (से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ) આ આશયથી હે ગૌતમ! હુ એમ કહુ છુ (अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे घरसए जाव वसहिं उवेइ) કે અમ્બડ પરિવ્રાજક કપિલ્લપુર નગરમા સો ઘરોમા આહાર કરે છે અને સો ઘરોમા નિવાસ કરે છે (સૂ૦ ૩૧)

मूलम्—पहू णं भंते! अम्मडे परिव्वायए देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ॥ सू० ३२ ॥

मूलम्—णो इणट्ठे समट्ठे गोयमा! अम्मडे णं परि-

गौतम पृच्छति—'पहू ण भंते' इत्यादि। 'भंते!' हे भदन्त! 'अम्मडे परिव्वायए देवाणुप्पियाण अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए' अम्बड परिव्राजको देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्ड=लुञ्चितकेशो भूत्वाऽगारादनगारिता=साधुत्व प्रव्रजितु=प्राप्तुं 'पभू ण' प्रभु=समर्थ किम्? 'ण' इति वाक्यालङ्कारे ॥ सू० ३२ ॥

टीका—भगवानाह—'णो इणट्ठे समट्ठे गोयमा?' इत्यादि। 'णो इणट्ठे समट्ठे गोयमा!' नाऽयमर्थ समर्थो गौतम! 'अम्मडे ण परिव्वायए समणोवासए' अम्बड खलु

'पहू णं भंते! अम्मडे परिव्वायए' इत्यादि।

(भंते) हे भदन्त! (अम्मडे परिव्वायए) यह अम्बड परिव्राजक (देवाणुप्पियाण अंतिए) आप के पास (मुंडे भवित्ता) मुंडित होकर (अगाराओ) आगार अवस्था से (अणगारियं) अनगार अवस्था को (पव्वइत्तए) धारण करने के लिये (पहू ण) समर्थ है क्या? ॥ सू० ३२ ॥

'णो इणट्ठे समट्ठे' इत्यादि।

प्रभु ने कहा—(गोयमा) हे गौतम! (णो इणट्ठे समट्ठे) यह अर्थ समर्थ नहीं है। क्यों कि (अम्मडे ण परिव्वायए) यह अम्बड परिव्राजक (समणोवासए) श्रमणोपासक

'पहू ण भंते! अम्मडे परिव्वायए' ઇત્યાદિ

(भंते) હે ભદન્ત! (अम्मडे परिव्वायए) આ અમ્બડ પરિવ્રાજક (देवाणुप्पियाण अंतिए) આપની પાસે (मुंडे भवित्ता) મુંડિત થઇને (अगाराओ) અગાર અવસ્થાથી (अणगारियं) અનગાર અવસ્થાને (पव्वइत्तए) ધારણ કરવાને માટે (पहू ण) સમર્થ છે કે કેમ? (સૂ૦ ૩૨)

"णो इणट्ठे समट्ठे" ઇત્યાદિ

પ્રભુએ કહ્યુ (गोयमा) હે ગૌતમ! (णो इणट्ठे समट्ठे) આ અર્થ સમર્થ નથી, કેમકે (अम्मडे ण परिव्वायए) આ અમ્બડ પરિવ્રાજક (समणो-

न्वायए समणोवासए अभिगयजीवाऽजीवे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, णवरं ऊसियफलिहे अवंगुदुवारे चियत्तंतेउर-घरदारपवेसी एयं णं वुच्चइ ॥ सू० ३३ ॥

परिव्राजक श्रमणोपासक, 'अभिगयजीवाऽजीवे' अभिगतजीवाऽजीव =जीवाजीवज्ञातावन्, 'जाव' यावत्–अत्र यावच्छब्दादिद द्वयम्–उपलब्धपुण्यपाप, आस्रवसवरनिर्जरा क्रियाऽधिकरणबन्धमोक्षकुशल इति, 'अप्पाण भावेमाणे' आत्मान भावयन् विहरति= विचरति। 'णवर'–अयमत्र विशेष –'ऊसियफलिहे' उच्छ्रितस्फटिक =स्फटिकराशिरिव निर्मल, 'अवगुदुवारे' अपावृतद्वार –'अवगु' इतिदेशीय शब्द, उद्घाटितकपाट द्वार –अतिधार्मिकतयाऽस्य प्रवेशकाले जनै कपाट उद्घाट्यते इति भाव । 'चियत्ततेउरघर-दारपवेसी' त्यक्ताऽन्त पुरगृहद्वारप्रवेश –त्यक्त =प्रीत्या जनैर्दत्त अन्त पुरगृहद्वारेषु प्रवेशो यस्य स तथा, अतिधार्मिकतया सर्वत्र प्रवेशेऽनागङ्कनीय इति भाव । 'एय ण वुच्चइ' एव खलूच्यते=एतादृग सोऽम्बड उच्यते ॥ सू० ३३ ॥

होकर (अभिगयजीवाजीवे जाव अप्पाण भावेमाणे विहरइ) जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, सवर, निर्जरा, बध एव मोक्ष इनका ज्ञाता होता हुआ अपनी आत्मा को भावित करता हुआ विचर रहा है। (णवर) परन्तु (एवं ण वुच्चइ) इतना मै अवश्य कहता हू कि यह अम्बड परिव्राजक (ऊसियफलिहे) स्फटिकमणि की राशि के समान निर्मल, (अवगुदुवारे) जिसके लिये सभी के घरों का दरवाजा हर वख्त खुला रहता है, ऐसा है, और (चियत्ततेउरघरदारपवेसी) यह विश्वस्त होने के कारण राजाके अन्त -पुर मे भी बे–रोकटोक आता जाता है ॥ सू० ३३ ॥

वासए) श्रमणोपासक थईने (अभिगयजीवाजीवे जाव अप्पाण भावेमाणे विहरइ) જીવ, અજીવ, પુણ્ય, પાપ, આસ્રવ, સવર, નિર્જરા તેમજ બધ, મોક્ષ એના જ્ઞાતા થઈને પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા વિચરે છે (णवर) પરન્તુ (एवं ण वुच्चइ) એટલું તો હું અવશ્ય કહુ છુ કે આ અમ્બડ પરિવ્રાજક (ऊसियफलिहे) સ્ફટિકમણિની રાશિ (ઢગલાની)) પેઠે નિર્મલ (अवगुदुवारे) જેના માટે બધાના ઘરના દરવાજા હર વખત ખુલ્લા રહે છે એવા છે, અને (चियत्ततेउरघरदारपवेसी) એ વિશ્વાસુ હોવાના કારણે રાજાના અત પુરમા પણ કોઈ જાતની રોકટોક વિના આવે જાય છે (સૂ० ૩૩)

मूलम्—अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव परिग्गहे, णवरं सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए ॥ सू० ३४ ॥

मूलम्—अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ

टीका—'अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स' इत्यादि। 'अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स' अम्बडस्य परिव्राजकस्य 'थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव परिग्गहे' स्थूलः प्राणातिपातः प्रत्याख्यातो यावज्जीवम्, यावत्पदेन मृषावाद-अदत्तादानयोः परिग्रहः, 'णवरं' नवरं 'सव्वे' सर्वमपि 'मेहुणे' मैथुनं 'पच्चक्खाए जावज्जीवाए' प्रत्याख्यातं यावज्जीवम् ॥ सू० ३४ ॥

टीका—'अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स' इत्यादि। 'अम्मडस्स णं परि-

'अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स' इत्यादि।

(अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स) उस अम्बड परिव्राजक ने (थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए) स्थूल प्राणातिपात का यावज्जीव परित्याग किया है (जाव परिग्गहे) इसी तरह स्थूल मृषावाद का, स्थूल अदत्तादान का, स्थूल परिग्रह का भी यावज्जीव परित्याग किया है। (णवरं) परन्तु (सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए) स्थूलरूप से ही मैथुन का परित्याग नहीं किया है किन्तु इसका तो उसने समस्त प्रकार से जीवनभर परित्याग किया है ॥ सू० ३४ ॥

'अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स' इत्यादि।

(अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स) उस अम्बड परिव्राजक के लिये विहार करते

'अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स' इत्यादि

(अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स) આ અમ્બડ પરિવ્રાજકે (थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए) સ્થૂલ પ્રાણાતિપાતનો યાવજ્જીવ પરિત્યાગ કર્યો છે. (जाव परिग्गहे) તેવી જ રીતે સ્થૂલ મૃષાવાદનો, સ્થૂલ અદત્તાદાનનો, સ્થૂલ પરિગ્રહનો પણ યાવજ્જીવ પરિત્યાગ કર્યો છે (णवरं) પરન્તુ (सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए) સ્થૂલરૂપથી જ મૈથુનનો પરિત્યાગ નથી કર્યો પરન્તુ તેનો તો તેણે સમસ્ત પ્રકારથી જીવનપર્યન્ત પરિત્યાગ કર્યો છે (સૂ૦ ૩૪)

'अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स' इत्यादि

(अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स) આ અમ્બડ પરિવ્રાજકને માટે વિહાર

अक्खसोयप्पमाणमेत्तंपि जलं सयराहं उत्तरित्तए, णण्णत्थ अद्धाण-गमणेणं। अम्मडस्स णं णो कप्पइ सगडं वा एवं तं चेव भाणियव्वं णण्णत्थ एगाए गंगामट्टियाए। अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स

व्वायगस्स' अम्बडस्य खलु परिव्राजकस्य, 'णो कप्पइ अक्खसोयप्पमाणमेत्तंपि जलं सयराहं उत्तरित्तए' अक्षस्रोत प्रमाणमात्रमपि—अक्षस्रोत =चक्रधू प्रवेशरन्ध्रं तदेव प्रमाणं तेन प्रमाणेन मात्रा=परिमाणम् अवगाहनतो यस्य तत्तथा तत्, चक्रस्य छिद्रपर्यन्तं जलमपि 'सयराहं' शीघ्र, 'सयराह' इतिदेशीयशब्द, 'उत्तरित्तए' उत्तरीतुं नो कल्पते=तत्र प्रवेष्टुं न कल्पते, तस्मान्न्यूनपरिमाणं जलमुत्तरीतुं कल्पत इति भाव। 'णण्णत्थ अद्धाणगमणेणं' नाऽन्यत्राऽध्वगमनात्—अध्वगमनादन्यत्राऽयं निषेध—अध्वगमने तु जलमुत्तरीतुं कल्पते, 'अम्मडस्स णं णो कप्पइ सगडं वा एवं तं चेव भाणियव्वं जाव' अम्बडस्य खलु नो कल्पते शकटं वा एवं तदेव भणितव्यं यावत्, यावच्छब्देन 'सदमाणियं वा दुरूहित्ताणं गच्छित्तए' इत्यारभ्य 'कुंकुमेण वा गायं अणुलिंपित्तए' इति पर्यन्त पाठोऽस्यैवोत्तरार्धगताष्टादशसूत्रगतोऽनुसन्धेय इति। 'णण्णत्थ एगाए गंगामट्टियाए'

समय मार्ग में (सयराहं) अकस्मात् (अक्खसोयप्पमाणमेत्तंपि) गाडी की धुरा प्रमाण जल आ जाय तो भी उसमें (उत्तरित्तए णो कप्पइ) उतरना नहीं कल्पता है। (णण्णत्थ अद्धाणगमणेणं) परंतु विहार करते हुए अन्य रास्ता नहीं हो तो बात अलग। (अम्मडस्स णं णो कप्पइ सगडं वा एवं तं चेव भाणियव्वं जाव) इसी तरह इस अम्बड परिव्राजक को शकट आदि पर चढना भी कल्पता नहीं है। यहा 'यावत्' शब्द से 'सदमाणियं वा दुरूहित्ता णं गमित्तए' यहा से लेकर 'कुंकुमेण वा गायं अणुलिंपित्तए' यहा तक का पाठ इसी आगम के उत्तरार्ध के अठारहवे सूत्र से समझ लेना

કરતી વખતે માર્ગમા (सयराहं) અકસ્માત્ (अक्खसोयप्पमाणमेत्तंपि) ગાડીના ધોસરાના પ્રમાણ જેટલું જલ આવી જાય તો પણ તેમા (उत्तरित्तए णो कप्पइ) ઉતરવુ કલ્પતું નથી (णण्णत्थ अद्धाणगमणेणं) પરંતુ વિહાર કરતા કરતા બીજો રસ્તો ન હોય તો વાત જુદી (अम्मडस्स णं णो कप्पइ सगडं वा एवं तं चेव भाणियव्वं जाव) એવી રીતે તે અમ્બડ પરિવ્રાજકને શકટ (ગાડા) આદિ પર ચઢવુ પણ કલ્પતુ નથી અહી (यावत्) શબ્દથી 'सदमाणियं दुरूहित्ता णं गच्छित्तए' અહીથી લઇને 'कुंकुमेण वा गायं अणुलिंपित्तए' અહી સુધીનો પાઠ આ આગમના ઉત્તરાર્ધના અઢારમા સૂત્રથી જાણી લેવો જોઇએ (णण्णत्थ

णो कप्पइ आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा मीसजाए इ वा अज्झो-यरए इ वा पूइकम्मे इ वा कीयगडे इ वा पामिच्चे इ वा अणिसि-

नान्यत्रैकस्या गङ्गामृत्तिकाया—एका गङ्गामृत्तिका कल्पते ग्रहीतुमित्यर्थः । '**अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ आहाकम्मिए वा**' अम्बडस्य खलु परिव्राजकस्य नो कल्पते—आधाकर्मिकं=षट्कायोपमर्दनपूर्वकं साध्वर्थकृतमशनादिकं वा '**उद्देसिए वा**' औद्देशिकं=साधुमुद्दिश्य यत् कृतं तद् वा न कल्पते, '**मीसजाए इ वा**' मिश्रजात—मिश्रेण=गृहस्थ-साध्वादिप्रणिधानलक्षणभावेन निष्पन्नं=पाकादिभावमुपगतं मिश्रजातमन्नाद्येव, तदपि न कल्पते, '**इ वा**' इति सर्वत्र वाक्यालङ्कारे, '**अज्झोयरए इ वा**' अध्यवतरम्=साध्वर्थमधिकप्रक्षेपणेन निष्पादितम्, एतदप्यकल्पनीयम्, '**पूइकम्मे इ वा**' पूतिकर्म—आधाकर्माद्यविशुद्धलेशसम्पृक्तभक्तादि, तदपि न कल्पते, '**कीयगडे इ वा**' क्रीतकृतम्—क्रीत=क्रयण—सा-

चाहिये। (**णण्णत्थ एगाए गंगामट्टियाए**) इसे सिर्फ एक गंगा की मिट्टी ही कल्पित है। (**अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स**) इस अम्बड परिव्राजक के लिये (**णो कप्पइ आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा मीसजाए इ वा अज्झोयरए इ वा पूइकम्मे इ वा कीयगडे इ वा पामिच्चे इ वा अणिसिट्ठे इ वा अभिहडे इ वा**) षट्कायोपमर्दनपूर्वक साधु के निमित्त निष्पादित आधाकर्मिक एवं औद्देशिक—साधु के उद्देश्य करके बनाया गया अशनादिक ग्रहण करना परिवर्जित है। तथा मिश्रजात—साधु एवं गृहस्थ के उद्देश्य से तैयार किया गया अन्नादिक का भी ग्रहण करना निषिद्ध है। इन पदों में "इ" "वा" ये दोनों वर्ण वाक्यालंकार में प्रयुक्त हुए हैं। इसी तरह अध्यवतर—साधु के लिये अधिक मात्रा में बनाया गया आहार, पूतिकर्म—आधाकर्मिक आहार के अंश से मिश्रित

एगाए गंगामट्टियाए) तेने माटे मात्र એક ગંગાની માટીજ કલ્પિત બતાવી છે (अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स) આ અંબડ પરિવ્રાજકને માટે (णो कप्पइ आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा मीसजाए इ वा अज्झोयरए इ वा पूइकम्मे इ वा कीयगडे-इ वा पामिच्चे इ वा अणिसिट्ठे इ वा अभिहडे इ वा) ષટ્ (૭) કાયા ઉપમર્દનપૂર્વક સાધુને નિમિત્ત નિષ્પાદિત આધાકર્મિક તેમજ ઔદ્દેશિક—સાધુને ઉદ્દેશ્ય કરીને બનાવેલું અશન આદિક ગ્રહણ કરવું પરિવર્જિત છે તથા મિશ્રજાત—સાધુ તેમજ ગૃહસ્થના ઉદ્દેશ્યથી તૈયાર કરેલા અન્ન—આદિકનું ગ્રહણ કરવું પણ નિષિદ્ધ છે આ પદોમાં 'इ' અને 'वा' એ બન્ને વર્ણ વાક્યાલંકારમાં વપરાયેલા છે તેવી જ રીતે અધ્યવતર—સાધુને માટે અધિક માત્રામાં બનાવેલા આહાર, પૂતિકર્મ—આધાકર્મિક આહારના અંશથી મિશ્રિત આહાર, ક્રીતકૃત—

ट्ठे इ वा अभिहडे इ वा ठइत्तए वा रइत्तए वा, कंतारभत्ते इ वा दुब्भिक्खभत्ते इ वा गिलाणभत्ते इ वा वद्दलियाभत्ते इ वा पाहुण-

ध्यादिनिमित्त तेन कृत=निष्पादितम्, तदपि न कल्प्यम्। 'पामिच्चे इ वा' प्रामित्यम्=यदन्नवस्त्रादिक साध्वर्थमुच्छिद्यानीयते तत् प्रामित्यम्। 'अणिसिट्ठे इ वा' अनिसृष्टम्-सर्वै स्वामिभि साधवे दातु न निसृष्ट=नानुज्ञात यत् तदनिसृष्टम्, यद्वा त्रिचाणा पुरुषाणा साधारणे आहारे एकोऽन्याननापृच्छ्य साधवे ददाति, तदा तदन्नमनिसृष्ट, तदपि न कल्पते। 'अभिहडे इ वा' अभ्याहृतम्—साधु समुखमानीतं न कल्पते। 'ठइत्तए वा' स्थापित-स्वनिमित्त स्थापित न कल्पते। 'रइत्तए वा' रचितम्—औद्देशिकभेद, तच्च मोदकचूर्णादि पुनर्मोदकतया रचित, तदपि न कल्प्यम्। 'कंतारभत्ते इ वा' कान्तारभक्तम्—कान्तारम्=अरण्यम्—तत्समुल्लङ्घनार्थं नीयमान भक्तम्। यद्वा अरण्ये भिक्षुकाणा निर्वाहाय यत् सस्क्रियते तत् कान्तारभक्तम्—तदप्यकल्पनीयम्। 'दुब्भिक्खभत्ते इ वा' दुर्भिक्षभक्तमिति वा—दुर्भिक्षे भिक्षुकाणा कृते यत् सस्क्रियते तदप्यकल्पनीयम्। 'गिलाणभत्ते इ वा' ग्लान-

आहार, क्रीतकृत—मोल लाकर दिया गया आहार, प्रामित्य-उधार लेकर अथवा किसी दूसरे से झपट कर दिया हुआ आहार, अनिसृष्ट—जिस आहार के ऊपर अनेक का स्वामित्व है उन सभी को पूछे विना सिर्फ एक के द्वारा दिया गया आहार, अभ्याहृत—साधु के समुख लाकर दिया गया आहार, स्थापित—साधु के निमित्त रखा हुआ आहार, रचित—मोदक-चूर्ण आदि को फोडकर पुन मोदकरूप में बनाया गया आहार, कान्तारभक्त—अटवी को उल्लघन करने के लिये घर से लाया हुआ पाथेयस्वरूप आहार, अथवा जंगल मे भिक्षुकों के निर्वाह के लिये तैयार करवाया गया आहार, दुर्भिक्षभक्त—दुर्भिक्ष के समय भिक्षुकों को देने के लिये बनवाया गया आहार, ग्लानभक्त—रोगी के लिये बनाया गया आहार, वार्दलिका-

વેચાતો લઈને દીધેલો આહાર, પ્રામિત્ય—ઉધાર લઈને અથવા કોઈ બીજા પાસેથી ઝુંટવી લઇને દીધેલો આહાર, અનિસૃષ્ટ—જે આહારના ઉપર અનેકનું સ્વામિત્વ હોય એવા બધાને પૂછયા વિના માત્ર એકના દ્વારા અપાયેલો આહાર, અભ્યાહૃત—સાધુની સામે લઈ આવીને આપેલો આહાર, સ્થાપિત—સાધુના નિમિત્તે રાખી મુકેલો આહાર, રચિત લાડુને તોડીને ભૂકા કરી પછી તે ભૂકામાથી લાડુ—રૂપમા બનાવેલો આહાર, કાન્તારભક્ત—અટવીને ઉલ્લઘન કરવા માટે ઘરથી લાવી રાખેલો પાથેયસ્વરૂપ આહાર, અથવા જગલમા ભિક્ષુકોના નિર્વાહને માટે તૈયાર કરાવેલો આહાર, દુર્ભિક્ષભક્ત—દુષ્કાળ સમયમા ભિક્ષુકોને દેવા માટે બનાવેલો આહાર, ગ્લાનભક્ત—રોગીને માટે બનાવેલો

गभत्ते इ वा भोत्तए वा पाइत्तए वा। अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ मूलभोयणे वा जाव वीयभोयणे वा भोत्तए वा पाइत्तए वा ॥ सू० ३५ ॥

भक्तम्—ग्लान सन् निजाऽऽरोग्याय यत्प्रदीयते तद्—ग्लानभक्तम्, 'वद्दलियाभत्ते इ वा' वार्दलिकाभक्तम्—वृष्टौ यद्दातु क्रियते एतदप्यकल्प्यम्। 'पाहुणगभत्ते इ वा' प्राघुणकभक्तम्—प्राघुणक =कोऽपि कस्य चिद् गृहे समागत तस्य कृते यत् क्रियते तत् प्राघुणकभक्तम्, एतदप्यकल्पनीयम। एतत्पूर्वोक्तम्—'भोत्तए वा पाइत्तए वा' भोक्तु वा पातु वा न कल्पते इत्युक्तमेव। 'अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स णो कप्पइ मूलभोयणे वा जाव वीयभोयणे वा भोत्तए वा पाइत्तए वा' अम्बटस्य खलु परिव्राजकस्य न कल्पते मूलभोजन वा यावद् बीजभोजन वा भोक्तु वा पातु वा—मूलानि कमलादीना, यावच्छब्दा कन्दभोजन फलभोजन हरितभोजनमेतानि त्रीणि पदानि गृह्यन्ते, तत्र—कन्दा =सूरणादय, फलानि=आम्रफलादीनि, हरितानि=मधुरतृणादीनि, बीजानि=शाल्यादीनि, एतानि भोक्तु न कल्पन्ते, तथा—आधाकर्मादिपानकानि पातु न कल्पन्ते इति ॥ सू ३५ ॥

भक्त—वृष्टि में देने के लिये बनाया गया आहार, प्राघुणकभक्त—पाहुनों के लिये राधा गया आहार, उस अम्बड परिव्राजक के लिये नहीं कल्पता है, और इसी प्रकार का पेय भी उसे नहीं कल्पता है। (**अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स णो कप्पइ मूलभोयणे वा जाव वीयभोयणे वा भोत्तए वा पाइत्तए वा**) इसी प्रकार इस अम्बड परिव्राजक के लिये कमलादिकों के मूल, सूरणादिक कन्द, आम्र आदि फल का भोजन एव अपक्व शाल्यादिक एव मधुर तृण आदि हरित सचित्त वस्तु का भोजन भी अकल्पित है ॥ सू ३५ ॥

આહાર, વાર્દલિકાભક્ત-વૃષ્ટિમા દેવા માટે બનાવેલો આહાર, પ્રાઘુણકભક્ત-પરોણાઓને માટે રધાવવામા આવેલો આહાર તે અમ્બડ પરિવ્રાજકને માટે નથી કલ્પતો, અને આવા પ્રકારનુ પેય પણ તેને નથી કલ્પતુ (अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स णो कप्पइ मूलभोयणे वा जाव वीयभोयणे वा भोत्तए वा पाइत्तए वा) આ પ્રકારે એ અમ્બડ પરિવ્રાજકને માટે કમળ આદિકના મૂળ, સૂરણ આદિક કદ, આમ્ર આદિક ફળનુ ભોજન તેમજ અપકવ શાલિ આદિક તેમજ મધુર તૃણ આદિ લીલી સચિત્ત વસ્તુનુ ભોજન પણ અકલ્પિત છે (સૂ ૩૫)

मूलम्—अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स चउव्विहे अणट्ठादंडे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, तं जहा—अवज्झाणायरिए पमायायरिए हिंसप्पयाणे पावकम्मोवएसे ॥ सू० ३६ ॥

टीका—'अम्मडस्स ण' इत्यादि ।

'अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स' अम्बडस्य खलु परिव्राजकस्य 'चउव्विहे अणट्ठादंडे पच्चक्खाए जावज्जीवाए' चतुर्विध अनर्थदण्ड —अर्थ=प्रयोजन गृहस्थस्य क्षेत्रवास्तुधनधान्य शरीरपरिपालनादिविषय—तदर्थं आरम्भो=भूतोपमर्दोऽर्थदण्ड । दण्डो निग्रहो यातना विनाश इति पर्याया । अर्थेन=प्रयोजनेन दण्डोऽर्थदण्ड, स चैवभूत उपमर्दनलक्षणो दण्ड क्षेत्रादिप्रयोजनमपेक्षमाणोऽर्थदण्ड उच्यते, तद्विपरीतोऽनर्थदण्ड प्रत्याख्यातो यावज्जीवम् । अयमनर्थदण्ड किंस्वरूप ? इति बोधयितुमाह—'त जहा' तद्यथा—'अवज्झाणायरिए' अपध्यानाऽऽचरित —अपध्यानम्=आर्तरौद्ररूप, तेनाचरित = आसेवितो योऽनर्थदण्ड स तथा । 'पमायायरिए' प्रमादाऽऽचरित —प्रमादेन=मद्यविषय

'अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स' इत्यादि ।

(अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स) इस अम्बड परिव्राजक के (चउव्विहे) चारों प्रकार के (अणट्ठादंडे) अनर्थ दडों को (जावज्जीवाए पच्चक्खाए) जीवनपर्यन्त परित्याग है । वे चार अनर्थदड इस प्रकार है—(अवज्झाणायरिए पमायायरिए हिंसप्पयाणे पावकम्मोवएसे) अपध्यानाचरित, प्रमादाचरित, हिंसाप्रदान, एव पापकर्मोपदेश । विना प्रयोजन जीवों का उपमर्दन जिन कार्यों के करने से होता है उसका नाम अनर्थदड है । आर्तरौद्ररूप ध्यान का नाम अपध्यान है । इस ध्यानसे उद्भूत अथवा क्रियमाण दड का नाम अपध्यानाचरित अनर्थ दड है । मद्य, विषय, कषाय, निद्रा एव विकथारूप प्रमाद से

" अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स " ઇત્યાદિ

(अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स) આ અમ્બડ પરિવ્રાજકને (चउव्विहे) ચારેય પ્રકારના (अणट्ठादंडे) અનર્થ દંડોનો (जावज्जीवाए पच्चक्खाए) જીવનપર્યન્ત પરિત્યાગ છે એ ચાર અનર્થદંડ આ પ્રકારના છે (अवज्झाणायरिए पमायायरिए हिंसप्पयाणे पावकम्मोवएसे) અપધ્યાનાચરિત, પ્રમાદાચરિત, હિંસાપ્રદાન—હિંસાકારક શસ્ત્ર કોઇને દેવું, તેમજ પાપકર્મનો ઉપદેશ વિના પ્રયોજન જીવોનું ઉપમર્દન જે કાર્યો કરવાથી થાય તેનું નામ અનર્થદંડ છે આર્ત-રૌદ્રરૂપ ધ્યાનનું નામ અપધ્યાન છે આ ધ્યાનથી ઉદ્ભવેલા અથવા થનારા દંડનું નામ અપધ્યાનાચરિત—અનર્થદંડ છે મદ્ય, વિષય, કષાય, નિદ્રા તેમજ

मूलम्—अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स कप्पइ मागहए अद्धाढए जलस्स परिग्गाहित्तए, से वि य वहमाणए णो चेव

कषायनिद्राविकथालक्षणेन आचरितं 'हिंसप्पयाणे' हिंसाप्रदानम्—हिंसाहेतुत्वादग्निविष-शस्त्रादिकं हिंसोच्यते, कारणे कार्योपचारात, तत्प्रदानमन्यस्मै क्रोधाभिभूताय अनभिभूताय वा। यद्वा—हिंस्रप्रदानमितिच्छाया—हिंस्र=हिंसाकारि शस्त्रादि, तत्प्रदान=परेषां समर्पणम्, अयं तृतीयोऽनर्थदण्ड, 'पावकम्मोवएसे' पापकर्मोपदेश—पातयति नरकादाविति पापम्, तत्प्रधानं कर्म पापकर्म, तस्योपदेश, कृष्यादिसावद्यव्यापारे प्रवर्तनम्, अयं चतुर्थ ॥ सू० ३६ ॥

टीका—'अम्मडस्स' इत्यादि।

'अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स कप्पइ' अम्मडस्य खलु परिव्राजकस्य कल्पते 'मागहए अद्धाढए जलस्स परिग्गाहित्तए' मागधमर्धाढकं जलस्य परिग्रहीतुम्, 'से वि य

किये गये कार्य का नाम प्रमादाचरित अनर्थदण्ड है। हिंसा के हेतु होने से अग्नि, विष एवं शस्त्र आदि, कारण में कार्य के उपचार से हिंसास्वरूप कहे गये हैं। इन हिंसा के कारणों को किसी क्रोधयुक्त व्यक्ति के लिये अथवा क्रोधरहित व्यक्ति के लिये देना सो हिंसाप्रदान नाम का अनर्थदंड है। आत्मा को जो नरक मे डाले उसका नाम पाप है, इस पापप्रधान कर्म करने का उपदेश देना अथवा स्वयं भी कृष्यादि सावद्यरूप व्यापार में प्रवृत्ति करना सो पापोपदेश नामका अनर्थदंड है ॥ सू ३६ ॥

'अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स' इत्यादि।

(अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स) इस अम्बड परिव्राजक को (मागहए अद्धाढए) मगधदेश प्रसिद्ध अर्ध—आढक—प्रमाण (जलस्स परिग्गाहित्तए कप्पइ) जल

વિકથારૂપ પ્રમાદથી આચરેલા-કરેલા કાર્યનુ નામ પ્રમાદાચરિત-અનર્થદંડ છે હિંસાના હેતુ થાય તેવા અગ્નિ, વિષ તેમજ શસ્ત્ર આદિ, કારણમા કાર્યનો ઉપચાર થવાથી હિંસાસ્વરૂપ કહેવાય છે આ હિંસાના કારણોને કોઈ ક્રોધાયમાન વ્યક્તિને કે વિના ક્રોધવાળા વ્યક્તિને માટે આપવા તે હિંસાપ્રદાન નામનો અનર્થદંડ છે આત્માને જે નરકમા નાખે તેનુ નામ પાપ છે આ પાપપ્રધાન કર્મ કરવાનો ઉપદેશ દેવો અથવા પોતે પણ કૃષિ આદિ સાવદ્યરૂપ વ્યાપારમા પ્રવૃત્તિ કરવી તે પાપોપદેશ નામનો અનર્થદંડ છે (સૂ ૩૬)

'अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स' ઇત્યાદિ

(अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स) આ અંબડ પરિવ્રાજકે (मागहए अद्धाढए) મગધદેશપ્રસિદ્ધ અર્ધઆઢક પ્રમાણ (जलस्स परिग्गाहित्तए कप्पइ)

ण अवहमाणए, एवं थिमिए पसन्ने जाव से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए, से वि य सावज्जे त्ति काउं णो चेव णं अणवज्जे, से वि य जीवत्ति काउं णो चेव णं अजीवे, से वि

वहमाणए णो चेव ण अवहमाणए ' तदपि च वहमानं नो चैव खलु अवहमानम्, ' एव थिमिए पसन्ने जाव ' एव स्तिमित प्रसन्न यावत् ' से वि य परिपूए णो चेव ण अपरिपूए ' तदपि च परिपूत नो चैव खलु अपरिपूतम्, कस्मात् कारणात् परिपूत गृह्णातीयत आह–' से वि य सावज्जे त्ति काउ ' तदपि च सावद्यमिति कृत्वा–इति । इद जल सावद्यमस्तीति ज्ञात्वा वस्त्रगालित कृत्वा गृह्णातीति भाव । ' णो चेव ण अणवज्जे ' न चैव खलु अनवद्यम्–न तु निरवद्यमिति कृत्वा परिपूतं करोति । सावद्यमित्यपि कथ ज्ञातम् ? इत्यत आह–' से वि य जीवत्ति काउ ' तदपि च जीवा इति कृत्वा, इह पुतरकादिजीवा सन्तीति कृत्वेति भाव', ' णो, चेव ण अजीवे त्ति काउ ' नो चैव खलु अजीव=जीवरहितम् इति कृत्वा, ' से वि य दिण्णे णो चेव ण अदिण्णे ' तदपि च दत्त नो चैव खल्वदत्तम्,

ग्रहण करना कल्पता है। (से वि य वहमाणए णो चेव ण अवहमाणए) जितना अर्ध–आढक–प्रमाण जल लेना इसे कल्पता है सो भी वहता हुआ ही कल्पता है, अवहता हुआ नहीं। (एव थिमिए पसन्ने जाव से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए) वह भी कर्दम से रहित, स्वच्छ, प्रसन्न–निर्मल यावत् परिपूत–छाना हुआ ही कल्पता है, इससे विपरीत नहीं। (से वि य सावज्जत्ति काउ णो चेव ण अणवज्जे) सोभी सावद्य समझ कर छाना हुआ ही कल्पता है, निरवद्य समझ कर नहीं। (से वि य जीवत्ति काउ णो चेव ण अजीवे) सावद्य भी उसे वह जीवसहित समझकर ही मानता है, अजीव समझकर नहीं। (से वि य दिण्णे णो चेव ण अदिण्णे)

જલ ગ્રહણ કરવું કલ્પે છે (से वि य वहमाणए णो चेव ण अवहमाणए) જેટલું અર્ધઆઢક પ્રમાણ જલ લેવું તેને કલ્પે છે તે પણ વહેતું હોય તેવું જ કલ્પે છે, ન વહેતું હોય તે નહિ (एव थिमिए पसन्ने जाव से वि य परिपूए णो चेव ण अपरिपूए) તે પણ કર્દમ (કચરા)થી રહિત, સ્વચ્છ, પ્રસન્ન–નિર્મળ યાવત્ પરિપૂત–ગાળેલું જ કલ્પે છે, તે વિનાનું નહિ (તેનાથી ઉલટું નથી કલ્પતું) (से वि य सावज्जेत्ति काउ णो चेव ण अणवज्जे) તે પણ સાવદ્ય સમજીને ગાળેલું જ કલ્પે છે, નિરવદ્ય સમજીને નહિ (से वि य जीवत्ति काउ णो चेव ण अजीवे) સાવદ્ય પણ તેને તે જીવસહિત સમજીને જ માને છે, અજીવ સમજીને નહિ (से वि य दिण्णे णो चेव ण अदिण्णे) તે પણ કોઈએ આપેલું હોય તે જ કલ્પે છે દીધા વગરનું નહિ (से वि

य दिण्णे णो चेव णं अदिण्णे, से वि य हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठयाए पिवित्तए वा, णो चेव णं सिणाइत्तए। अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स कप्पइ मागहए य आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए, से वि य वहमाणए जाव णो चेव णं अदिण्णे,

'से वि य हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठयाए पिवित्तए वा' तदपि च हस्त-पाद-चरु-चमस-प्रक्षालनार्थाय पातु वा, चरु पात्रविशेष, 'णो चेव ण सिणाइत्तए' नो चैव खलु स्नातुम्। 'अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स कप्पइ' अम्बडस्य खलु परिव्राजकस्य कल्पते 'मागहए य आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए' मागध चाढक जलस्य प्रतिग्रहीतुम्, 'से वि य वहमाणए जाव णो चेव ण अदिण्णे' तदपि वहमानं यावत् नो चैव खल्वदत्तम्, 'से वि य सिणाइत्तए' तदपि च स्नातुम्, 'णो चेव ण हत्थ-पाय-चरु-चमस-

वह भी दिया हुआ ही कल्पता है, विना दिया हुआ नहीं। (से वि य हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठयाए पिवित्तए वा) दिया हुआ भी वह जल हस्त, पाद, चरु (पात्र विशेष) एवं चमस के प्रक्षालन के लिये अथवा पीने के लिये ही कल्पता है, (णो सिणाइत्तए) स्नान के लिये नहीं। (अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स कप्पइ मागहए य आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए) इस अम्बड परिव्राजक को मगधदेशसंबंधी आढकप्रमाण जल ग्रहण करना कल्पता है (से वि य वहमाणए जाव णो चेव णं अदिण्णे) वह भी बहता हुआ यावत् दिया हुआ ही कल्पता है, विना दिया हुआ नहीं। (से वि य सिणाइत्तए णो चेव ण हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठयाए) वह भी स्नान के लिये

य हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठयाए पिवित्तए वा) दीधेलु होय ते पण पाणी, हाथ पग, चरु, तेमज चमसने धोवा माटे अथवा पीवा माटे ज कल्पे छे (चरु, चमस ए पात्रविशेषना नामो छे) (णो सिणाइत्तए) स्नान माटे नहि (अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स कप्पइ मागहए य आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए) आ अंबड परिव्राजकने मगधदेश-संबंधी आढकप्रमाणु जल ग्रहणु करवु कल्पे छे (से वि य वहमाणए जाव णो चेव ण अदिण्णे) ते पण वहेतु होय तेज कल्पे छे, (यावत्) आपेलु होय ते कल्पे छे आपेलु न होय तेवु नहि (से वि य सिणाइत्तए णो चेव ण हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठयाए) ते पण स्नान माटे ज कल्पे छे

से वि य सिणाइत्तए, णो चेव णं हत्थ-पाय-चरु-चमस-प-क्खालणट्ठयाए पिवित्तए वा ॥ सू० ३७ ॥

मूलम्—अम्मडस्स णो कप्पइ—अण्णउत्थिया वा अ-ण्णउत्थियदेवयाणि वा अण्णउत्थियपरिग्गहियाणि वा चेइयाइं

पक्खालणट्ठयाए पिवित्तए वा' नो चैव खलु हस्त-पाद-चरु-चमस-प्रक्षालनाऽर्थं पातु वा, शेषपदव्याख्याऽस्यैवागमस्योत्तरार्धे एकोनविंशतितमे सूत्रे प्रदर्शिता, अत्र सूत्रे जलस्य परिमाणं प्रदर्शितमस्ति ॥ सू ३७ ॥

टीका—'अम्मडस्स णो कप्पइ' इत्यादि।

'अम्मडस्स णो कप्पइ' अम्बडस्य न कल्पते, अस्य 'नन्दितुम्' इत्यनान्वय। कान् नन्दितु न कल्पते? अत्राऽऽह—'अण्णउत्थिया वा' अन्ययूथिकान् वा—अन्यत्=तीर्थंकरसघापेक्षया भिन्न यद् यूथ=सघस्तदन्ययूथ तदस्त्येषामित्यन्ययूथिका =शाक्यादिभिक्षव तान्, 'अण्णउत्थियदेवयाणि वा' अन्ययूथिकदैवतानि वा—अन्ययूथिकाना दैवतानि अन्ययूथिकदैवतानि—अर्हद्भिन्नान देवान वा, 'अण्णउत्थियपरिग्गहियाणि वा चेइयाइं'

ही कल्पता है, हाथ, पैर, चरु एव चमचा को धोने के लिये नहीं, और न पान क लिये ही। 'आढक' आदि का अर्थ इसी आगम के उत्तरार्ध मे उन्नीसवे सूत्र का व्याख्या में प्रदर्शित किया गया है॥ सू ३७ ॥

'अम्मडस्स णो कप्पइ' इत्यादि।

(अम्मडस्स) इस अम्बड को (अण्णउत्थिया) अन्ययूथिक—तीर्थंकरसघ की अपेक्षा शाक्यादिक भिक्षुओं का सघ, एव (अण्णउत्थियदेवयाणि वा) अन्यसघ द्वारा उपास्यरूप से समत अर्हंत—प्रभु सिवाय दूसरे देवता, (अण्णउत्थियपरिग्गहिया

હાથ, પગ, ચરુ તેમજ ચમચા ધોવા માટે નહિ અને પીવા માટે પણ નહિ 'આઢક' આદિનો અર્થ એજ આગમના ઉત્તરાર્ધમા ઓગણીશમા સૂત્રની વ્યાખ્યામા કરવામા આવ્યો છે (સૂ. ૩૭)

'अम्मडस्स णो कप्पइ' ઈત્યાદિ

(अम्मडस्स) એ અમ્બડને (अण्णउत्थिया) બીજા યૂથવાળા—તીર્થંકરસઘની અપેક્ષા શાકય ભિક્ષુઓના સઘ, તેમજ (अण्णउत्थियदेवयाणि वा) બીજા સઘ દ્વારા ઉપાસ્યરૂપથી સમત અર્હંત પ્રભુ સિવાય બીજા દેવ, (अण्ण-उत्थियपरिग्गहियाणि वा चेइयाइं) તથા બીજા યૂથમા ભળી ગયેલા જૈન સાધુ

वंदित्तए वा णमंसित्तए वा जाव पज्जुवासित्तए वा, णण्णत्थ अरिहंते वा अरिहंतचेइयाइं वा ॥ सू० ३८ ॥

मूलम्—अम्मडे णं भंते ! परिव्वायए कालमासे कालं

अन्ययूथिकपरिगृहीतान् वा चैत्यान्, आर्षत्वात् क्लीबनिर्देशः, चिति=ज्ञान, तत्र साधव= कुशलाः चित्याः=अर्हत्साधवः, त एव चैत्याः, प्रज्ञादित्वात् स्वार्थेऽण्, तान्, अयमत्र पिण्डि-तोऽर्थः, तैर्थिकान्तरसाधून् वा तैर्थिकान्तरदेवान् वा, यथाकथञ्चित्तैर्थिकान्तरसम्मिलितान् जिनसाधून् वा 'वंदित्तए वा' वन्दितुं=स्तोतुं वा, 'णमंसित्तए वा' नमस्यितुं=नमस्कर्तुं वा 'जाव पज्जुवासित्तए वा' यावत् पर्युपासितुम्=आराधयितुं वा, 'णण्णत्थ अरिहंते वा अरिहंतचेइयाइं वा' नान्यत्र अर्हतो वा अर्हच्चैत्यान् वा । अयं निषेधोऽर्हद्विषये, अर्हत्साधुविषये वा न घटते, किन्तु ततोऽन्यत्राऽयं निषेध इति भावः । 'चैत्य' शब्दस्य विस्तृतोऽर्थः 'उपासकदशाङ्ग'-सूत्रस्यागारधर्मसञ्जीवनीटीकायां मया प्रदर्शितः स ततोऽवसेयः ॥ सू० ३८ ॥

टीका—गौतमः पृच्छति-'अम्मडे णं भंते ! परिव्वायए' इत्यादि । 'भंते' हे भदन्त ! 'अम्मडे णं परिव्वायए' अम्बडः खलु परिव्राजकः

णि वा चेइयाइं) तथा अन्य यूथ में सम्मिलित जैन साधु भी (वंदित्तए वा णमंसित्तए वा जाव पज्जुवासित्तए वा) वंदना करने, नमस्कार करने एवं पर्युपासना करने के लिये (णो कप्पइ) कल्पते नहीं है। (णण्णत्थ अरिहंते वा अरिहंतचेइयाइं वा) परंतु यदि नमस्कार आदि के लिये उसे कोई कल्पते हे तो वे एकमात्र अरिहंत एवं अरिहंत के साधुजन ही कल्पते हैं। 'चैत्य' शब्द का विस्तृत अर्थ, जिज्ञासुओं को 'उपासकदशांग' की अगारधर्मसंजीवनी टीका में देखना चाहिये ॥ सू. ३८ ॥

'अम्मडे णं भंते' इत्यादि ।

(भंते) हे भदंत ! (अम्मडे णं परिव्वायए) यह अम्बड परिव्राजक (कालमासे

પણ (वंदित्तए वा णमंसित्तए वा जाव पज्जुवासित्तए वा) વંદના કરવા, નમસ્કાર કરવા તેમજ પર્યુપાસના કરવા માટે (णो कप्पइ) નથી કલ્પતા (णण्णत्थ अरिहंते वा अरिहंतचेइयाइं वा) પરંતુ નમસ્કાર આદિ યોગ્ય જો કોઈ એને માટે હોય તો તે એકમાત્ર અરિહંત તેમજ અરિહંતના સાધુજન જ છે 'चैत्य' શબ્દનો વિસ્તૃત અર્થ જિજ્ઞાસુઓએ 'उपासकदशांग'ની અગારધર્મસંજીવની ટીકામા જોવો જોઈએ (સૂ ૩૮)

"अम्मडे णं भंते !" ઈત્યાદિ

(भंते) હે ભદન્ત ! (अम्मडे णं परिव्वायए) આ અમ્બડ પરિવ્રાજક (काल-

किच्चा कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति? गोयमा! अम्मडे णं परिव्वायए उच्चावएहिं सील–व्वय–गुण–वेरमण–पच्चक्खाण–पोसहो–ववासेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं

'कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति?' कालमासे कालं कृत्वा कुत्र गमिष्यति? कुतोत्पत्स्यते? भगवानाह–'गोयमा! अम्मडे णं परिव्वायए' हे गौतम! अम्बडः खलु परिव्राजकः 'उच्चावएहिं' उच्चावचैः=नानाविधैः, 'सील–व्वय–गुण–वेरमण–पच्चक्खाण–पोसहोववासेहिं' शील–व्रत–गुण–विरमण–प्रत्याख्यान–पोषधोपवासैः, शीलानि–"शील समाधौ" अस्माद् घञ्, नपुंसकत्वं लोकात्, शीलति–आत्मचिन्तनरूपं समाधिं प्राप्नोति एभिस्तानि शीलानि। तानि चत्वारि–सामायिक–देशावकाशिक–पोषधा–तिथिसंविभागाख्यानि, व्रतानि–पञ्चाणुव्रतानि, गुणाः–त्रीणि गुणव्रतानि, विरमणं मिथ्यात्वान्निवर्तनम्, प्रत्याख्यानं–पर्वदिनेषु त्याज्यानां परित्यागः, पोषधोपवासः–पोष=पुष्टिं धर्मस्य वृद्धिमिति यावद् धत्ते इति पोषधः, पोषधशब्दो रूढ्या पर्वसु वर्तते, पर्वाणि चाष्टमी–चतुर्दशी–पौर्णमास्यमावास्यातिथयः, पूरणात् पर्वेत्युच्यते, पूरणत्वं धर्मवृद्धिकारकत्वात्, पोषधे उप-

(कालमासे काल किच्चा) काल अवसर मे काल करके (कहिं गच्छहिति) कहा जायगा? (कहिं उववज्जिहिति) कहा उत्पन्न होगा? प्रभु ने कहा–(गोयमा) हे गौतम! (अम्मडे णं परिव्वायए उच्चावएहिं सील–व्वय–गुण–वेरमण–पच्चक्खाण–पोसहोववासेहिं) यह अम्बड परिव्राजक अनेक प्रकार के शीलव्रत–जिनके द्वारा आत्मा के चिंतन रूप समाधि जीव प्राप्त करता है उनका नाम शीलव्रत है, गुणव्रत, मिथ्यात्वविरमण, प्रत्याख्यान–पर्वदिनों मे त्याग करने योग्य वस्तुओं का त्याग करना, पोषधोपवास–अष्टमी, चतुर्दशी, पौर्णमासी एवं अमावास्या ये तिथियाँ धर्म का पोषण करती है इसलिये ये पौषध है, इनमे चतुर्विध आहार का

(कालमासे काल_किच्चा) કાલ અવસરે કાલ કરીને (कहिं गच्छिहिति) ક્યા જશે? (कहिं उववज्जिहिति) ક્યા ઉત્પન્ન થશે? પ્રભુએ ઉત્તરમા કહ્યુ–(गोयमा) હે ગૌતમ! (अम्मडे णं परिव्वायए उच्चावएहिं सील–व्वय–गुण–वेरमण–पच्चक्खाण–पोसहोववासेहिं) એ અંબડ પરિવ્રાજક, અનેક પ્રકારના શીલવ્રત (જેના દ્વારા આત્માના ચિન્તનરૂપ સમાધિ જીવ પ્રાપ્ત કરે છે તેનુ નામ શીલવ્રત છે), ગુણવ્રત, વેરમણ–મિથ્યાત્વવિરમણ, પ્રત્યાખ્યાન–પર્વના દિવસોમા ત્યાગ કરવા યોગ્ય વસ્તુઓનો ત્યાગ કરવો, પોષધોપવાસ–અષ્ટમી, ચતુર્દશી, પૌર્ણમાસી તેમજ અમાવાસ્યા એ તિથિઓ ધર્મનુ પોષણ કરે છે તે માટે

समणोवासगपरियायं पाउणिहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता,

वास =नियमविशेष पोषधोपवास, स चतुर्विध –आहारत्यागस्स्कारत्यागब्रह्मचर्यसावद्यव्यापारपरित्यागभेदात्। एषा शीलादिपोषधोपवासान्तानामितरेतरयोगद्वन्द्वस्तैरतथोक्तैः 'अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासयपरियायं पाउणिहिति' आत्मानं भावयन् बहूनि वर्षाणि श्रमणोपासकपर्यायं पालयिष्यति, 'पाउणित्ता' पालयित्वा 'मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता' मासिक्या संलेखनयाऽऽत्मानं जुषित्वा=सेवित्वा, 'सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता' षष्टिं भक्तानि अनशनेन छित्वा, 'आलोइयपडिक्कंते'

त्याग करना। इन सबका भेद इस प्रकार है, शीलव्रत का भेद–सामायिक, देशावकाशिक, पौषध और अतिथिसंविभाग इस प्रकार से ४ हैं। गुणव्रत तीन हैं। पौषधोपवास भी ४ प्रकार का है–आहार का त्याग, शारीरिक सत्कार का त्याग, ब्रह्मचर्य का पालन एवं सावद्य व्यापार नहीं करना। इन सब नियमों–व्रतों से (अप्पाणं भावेमाणे) अपनी आत्मा को भावित करता हुआ (बहूइं वासाइं समणोवासगपरियायं पाउणिहिति) अनेक वर्षों तक श्रमणोपासक – श्रावक की पर्याय का पालन करेगा। (पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता) इस प्रकार श्रावक की पर्याय को पालन करके फिर वह १ मास की संलेखना से अपनी आत्मा को युक्त कर–अर्थात् एक मास की संलेखना धारण कर (सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता) साठ भक्त का अनशन से छेदकर (आलोइयपडिक्कंते) पापकर्मों की आलोचना–प्रतिक्रमण करके (समाहिपत्ते) समाधि

એ પોષધ છે તેમા ઉપવાસ એટલે વસવું એ પોષધોપવાસ કહેવાય છે એ બધાનો ભેદ આ પ્રકારે છે, શીલવ્રતના ભેદ–સામાયિક, દેશાવકાશિક, પોષધ, અને અતિથિસંવિભાગ, આ ચાર પ્રકારના છે ગુણવ્રત ત્રણ પ્રકારના છે પોષધોપવાસ ચાર ૪ પ્રકારના છે–આહારનો ત્યાગ, શારીરિક સત્કારનો ત્યાગ, બ્રહ્મચર્યનું પાલન તેમજ સાવદ્ય વ્યાપાર ન કરવો આ બધા નિયમો–વ્રતોથી (अप्पाणं भावेमाणे) પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા (बहूइं वासाइं समणोवासगपरियायं पाउणिहिति) અનેક વર્ષો સુધી શ્રમણોપાસક–શ્રાવકની પર્યાયનું પાલન કરશે (पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता) આ પ્રકારે શ્રાવકની પર્યાયનું પાલન કરીને પછી તે એક માસની સંલેખના ધારણ કરીને (सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता) સાઠ ભક્તનું અનશનથી છેદન કરીને (आलोइयपडिक्कंते) પાપ કર્મોની

आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं अम्मडस्स वि देवस्स दस सागरोवमाइं ठिई ॥ सू० ३९ ॥

मूलम्---से णं भंते! अम्मडे देवे ताओ देवलोगाओ

आलोचितप्रतिक्रान्त=प्रतिनिवृत्त, 'समाहिपत्ते' समाधिप्राप्त, 'कालमासे कालं किच्चा' कालमासे कालं कृत्वा 'बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति' ब्रह्मलोके कल्पे देवत्वेनो-त्पत्स्यते, 'तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता' तत्र खलु अस्ति एकेषां=केषाञ्चिद् देवानां दश सागरोपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता। 'तत्थ णं अम्मडस्स वि देवस्स दस सागरोवमाइं ठिई' तत्र खलु अम्मडस्यापि देवस्य दश सागरोपमानि स्थितिः ॥ सू० ३९ ॥

टीका—गौतम पृच्छति-'से णं भंते!' इत्यादि।

'से णं भंते! अम्मडे देवे' स खलु भदन्त! अम्मडो देवः, 'ताओ देव-

को प्राप्त करेगा। पश्चात् (कालमासे कालं किच्चा) काल अवसर में काल कर के (बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति) ब्रह्मलोक नामक पांचवे देवलोक में उत्पन्न होगा। (तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता) वहां कितनेक देवों की स्थिति १० सागर की है। (तत्थ णं) वहां पर (अम्मडस्स वि देवस्स दस सागरोवमाइं ठिई) इस अम्मड देव की भी दश सागर प्रमाण स्थिति होगी ॥ सू० ३९ ॥

'से णं भंते अम्मडे देवे' इत्यादि।

गौतम पूछते है-(भंते) हे भदन्त! (से अम्मडे देवे) वह अम्मड देव (ताओ

આલોચના તથા પ્રતિક્રમણ કરીને (समाहिपत्ते) સમાધિને પ્રાપ્ત કરશે પછી (कालमासे कालं किच्चा) કાલ-અવસરે કાલ કરીને (बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति) બ્રહ્મલોક નામના પાંચમા દેવલોકમાં ઉત્પન્ન થશે (तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता) ત્યાં કેટલાક દેવોની સ્થિતિ દશ ૧૦ સાગરની છે, (तत्थ णं) ત્યાં (अम्मडस्स वि देवस्स दससागरोवमाइं ठिई) આ અમ્મડદેવની પણ દસ સાગર પ્રમાણુ સ્થિતિ થશે (સૂ૦ ૩૯)

'से णं भंते! अम्मडे देवे' ઈત્યાદિ

ગૌતમ પૂછે છે-(भंते) હે ભદન્ત! (से णं अम्मडे देवे) તે અમ્મડ દેવ

आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ ? ॥ सू० ४० ॥

मूलम्—गोयमा ! महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं

लोगाओ' तस्माद्देवलोकात 'आउक्खएण' आयु क्षयेण=देवसम्बन्ध्यायु कर्मदलिक-निर्जरणेन, 'भवक्खएण' भवक्षयेण=देवभवहेतुगत्यादिकर्मनिर्जरणेन, 'ठिइक्खएण' स्थिति क्षयेण=ब्रह्मलोके दशसागरोपमस्थितिक्षयेण 'अणतरं' अनन्तर चय=शरीर 'चइत्ता' त्यक्त्वा, 'कहिं गच्छिहिइ' कुत्र गमिष्यति, 'कहिं उववज्जिहिइ' कुत्रोत्पत्स्यते ? ॥ सू ४० ॥

टीका—गौतमेन पृष्ट सन् भगवानाह—'गोयमा !' इत्यादि ।

'गोयमा !' हे गौतम ! 'महाविदेहे वासे जाइ कुलाइ भवति' महाविदेहे वर्षे यानि कुलानि भवन्ति=सन्ति, कानि तानि ? इत्याह—'अड्ढाइ' आढ्यानि=समृद्धानि,

देवलोगाओ) उस देवलोक से (आउक्खएणं भवक्खएण ठिइक्खएण) आयु के क्षय-देवसबधी आयुकर्म के दलिकों की निर्जरा से, भव के क्षय-देवभव के हेतु गत्यादिक कर्म की निर्जरा से तथा स्थिति के क्षय-ब्रह्मलोक सबधी १० सागर की स्थिति के समाप्त होने से (चय चइत्ता) देवपर्याय से च्यवकर (अणतर) इसके बाद (कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ) कहा जायगा ? कहा उत्पन्न होगा ? ॥ सू ४० ॥

'गोयमा ! महाविदेहे वासे' इत्यादि ।

गौतमस्वामीने पूर्वोक्त प्रकार से जब प्रभु से पूछा तब उन्होंने कहा—(गोयमा) हे गौतम ! (महाविदेहे वासे) महाविदेह क्षेत्र मे (जाइ) जितने (अड्ढाइं दित्ताइ वित्ताइ) आढ्य—समृद्ध दीप्त—उज्ज्वल तथा प्रशसित, एव वित्त—प्रसिद्ध, (कुलाइ भवति)

(ताओ देवलोगाओ) ते देवलोकथी (आउक्खएण भवक्खएणं ठिइक्खएण) आयुनो क्षय-देवसंबंधी आयुकर्मदलिकोनी निर्जराथी, भवनो क्षय-देवभवना हेतु गति आदिक कर्मनी निर्जराथी तथा स्थितिनो क्षय-ब्रह्मलोक संबंधी दश सागरनी स्थिति समाप्त होवाथी (चय चइत्ता) देवपर्यायथी च्युत थईने (अणतर) त्यार पछी (कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ ?) क्या जशे ? क्या उत्पन्न थशे ? (सू० ४०)

"गोयमा ! महाविदेहे वासे" ईत्यादि

गौतमे उपर कह्या प्रकारे ज्यारे प्रभुने पूछ्यु त्यारे तेओए कह्यु-(गोयमा) हे गौतम ! (महाविदेहे वासे) महाविदेह क्षेत्रमा (जाइ) जेटला (अड्ढाइ दित्ताइ वित्ताइ) आढ्य-समृद्ध, दीप्त-उज्ज्वल तथा प्रशसित, तेमज वित्त-प्रसिद्ध, (कुलाइ भवति) कुळो छे. (विच्छिण्ण-विउल-भवण-सयणा-सण-जाण-

भवंति अड्ढाइं दित्ताइं वित्ताइं वित्थिण्ण-विउल-भवण-स-यणा-सण-जाण-वाहणाइं वहुधण-जायरूव-रययाइं आओ-ग-पओग-संपउत्ताइं विच्छड्डिय-पउर-भत्तपाणाइं वहु-दासी-

'दित्ताइ' दीप्तानि=उज्ज्वलानि-प्रगमितानि, 'वित्ताइं' वित्तानि=प्रसिद्धानि 'वित्थिण्ण-विउल-भवण-सयणा-सण-जाण-वाहणाइं' विस्तीर्ण-विपुल-भवन-शयना-ऽऽसन-यान-वाहनानि-विस्तीर्णानि=विस्तृतानि विपुलानि=विशालानि भवनानि शयनादीनि च येषु कुलेषु तानि तथा, 'वहुधण-जायरूव-रययाइ' वहुधन-जातरूप-रजतानि-बहूनि धनानि जातरूपाणि=सुवर्णानि रजतानि च येषु तानि तथा, 'वहु-दासी दास गो-महिस-गवेलग-प्पभूयाइ' वहु-दासी-दास-गो-महिष-गवेलक-प्रभूतानि-बह्व्यो दास्य बहवो दासा, गाव=वृषभा धेनवश्च, महिषा=महिषा महिष्यश्च, गवेलका=मेषा ते प्रभूतानि=सहितानि, 'आओग-पओग-सपउत्ताइं' आयोग-प्रयोग-सम्प्रयुक्तानि-विविधदानाऽऽ-

कुल हैं। जो कि (वित्थिण्ण-विउल-भवण-सयणा-सण-जाण-वाहणाइ) विस्तृत एव विपुल भवनों के अधिपति है। जिनके पास अनेक प्रकार के शयन, आसन एव यान-वाहनादिक है। (वहुधनजायरूवरययाइ) जो वहुत अधिक धन के स्वामी हैं। सोने एव चादीकी जिनके पास कमी नहीं है। (आओग-पओग-सपउत्ताइ) आदान-प्रदान अर्थात् लाभ के लिये लेन-देन का काम करते हैं, (विच्छड्डिय-पउर-भत्त-पाणाइं) याचक आदि जनों के लिये जो प्रचुरमात्रा में भक्तपान आदि देते हैं, (वहु-दासी-दास-गो-महिस-गवेलग-प्पभूयाइ) जिनकी सेवामे रातदिन अनेक दासी एव दास उपस्थित रहा करते है, जिनकी गोशालाए अनेक वैलोंसे, गायों से, महपियों से, महिषा से, एव मेषों से, सदा भरपूर रहा करती हैं, (वहुजणस्स अपरिभूयाइ) और जो किसी के द्वारा भी पराभव

वाहणाइ) જે વિશાળ તેમજ વિપુળ ભવનોના અધિપતિ છે, જેમની પાસે અનેક પ્રકારના શયન, આસન, તેમજ યાન-વાહન આદિક છે, (वहु-धन-जायरूव-रययाइ) જે ઘણુંજ ધનના સ્વામી છે, સુવર્ણ તેમજ ચાદી જેમની પાસે ઓછી નથી, (आओग-पओग-सपउत्ताइ) આદાન-પ્રદાન અર્થાત્ લાભને માટે લેણુદેણુ કામ કરે છે, (विच्छड्डिय-पउर-भत्त-पाणाइं) યાચક આદિ જનોને માટે જે પ્રચુર માત્રામા ભક્ત-પાન આદિ આપે છે, (वहु-दासी-दास-गो-महिस-गवेलग-प्पभूयाइ) જેની સેવામા રાતદિવસ અનેક દાસી દાસ ઉપસ્થિત રહ્યા કરે છે જેમની ગૌશાળાઓ અનેક બેલોથી, ગાયોથી ભેંસોથી, પાડાઓથી, તેમજ ઘેટાથી સદા ભરપૂર રહ્યા કરે છે, (वहुजणस्स

दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूयाइं बहुजणस्स अपरिभूयाइं तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाहिइ ॥ सू. ४१ ॥

मूलम्—तए णं तस्स दारगस्स गब्भत्थस्स समाणस्स अम्मापिईणं धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ ॥ सू. ४२ ॥

दान-कर्मोपयुक्तानि, 'विच्छड्डिय-पउर-भत्तपाणाइं' विच्छर्दित-प्रचुर-भक्तपानानि-विच्छर्दितानि=दत्तानि प्रचुराणि भक्तानि पानानि=पेयानि यैः कुलैस्तानि तथा, 'बहुजणस्स अपरिभूयाइं' बहुजनस्याऽपरिभूतानि, कैरप्यपराजितानीत्यर्थः । 'तहप्पगारेसु' तथाप्रकारेषु=तादृशेषु कुलेषु, 'पुमत्ताए' पुंस्तया=पुरुषतया, 'पच्चायाहिइ' प्रत्यायास्यति=उत्पत्स्यते इत्यर्थः ॥ सू. ४१ ॥

टीका—'तए णं' इत्यादि । 'तए णं' ततः खलु-तत्पश्चात् 'तस्स दारगस्स' तस्य दारकस्य=बालस्य 'गब्भत्थस्स चेव' गर्भस्थस्यैव=गर्भाऽऽगतस्यैव सतः पुण्यशालितया तत्प्रभावात् 'अम्मापिईणं धम्मे' मातापित्रोर्धर्मे 'दढा पइण्णा' दृढा प्रतिज्ञा 'भविस्सइ' भविष्यति-धर्माराधनाय दृढनिश्चयो भविष्यतीत्यर्थः ॥ सू. ४२ ॥

नहा पा सकते हैं, (तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाहिइ) ऐसे विशिष्ट कुलों में से किसी एक कुल में यह अम्बड परिव्राजक पुरुषरूप से उत्पन्न होगा ॥ सू० ४१ ॥

'तए णं तस्स दारगस्स' इत्यादि ।

(तए णं) इसके पश्चात् (तस्स दारगस्स) उस लड़के के (गब्भत्थस्स समाणस्स) गर्भ में आते ही पुण्य के प्रभाव से (अम्मापिईणं) मातापिता को (धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ) धर्म में दृढ आस्था उत्पन्न होगी ॥ सू० ४२ ॥

अपरिभूयाइं) અને જે કોઇથી પણ પરાભવ પામતા નથી (तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाहिइ) એવા વિશિષ્ટ કુળોમાંથી કોઇ એક કુળમાં એ અમ્બડ પરિવ્રાજક પુરુષરૂપથી ઉત્પન્ન થશે (સૂ ૪૧)

'तए णं तस्स दारगस्स' ઇત્યાદિ

(तए णं) ત્યાર પછી (तस्स दारगस्स) તે છોકરાના (गब्भत्थस्स समाणस्स) ગર્ભમાં આવતા જ પુણ્યના પ્રભાવ વડે (अम्मापिईणं) માતા-પિતાની (धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ) ધર્મમાં દૃઢ આસ્થા ઉત્પન્ન થશે (સૂ ૪૨)

मूलम्---से णं तत्थ णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण राइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमालपाणिपाए जाव ससि-सोमाकारे कंते पियदंसणे सुरूवे दारए पयाहिए ॥ सू. ४३ ॥

मूलम्---तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे

टीका---'से ण तत्थ' इत्यादि। 'से ण तत्थ' स खलु तत्र 'णवण्हं मासाण' नवसु मासेषु, अत्र सप्तम्यर्थे षष्ठी, एवमग्रेऽपि, 'बहुपडिपुण्णाण' बहुप्रतिपूर्णेषु=सर्वथा व्यतीतेषु, 'अद्धट्ठमाणं' अर्धाष्टमेषु-सार्धसप्तसु 'राइन्दियाणं' रात्रिन्दिवेषु 'वीइक्कताण' व्यतिक्रान्तेषु=व्यतीतेषु 'जाव ससिसोमाकारे' यावत् शशिसौम्याकार=चन्द्रवत्सुन्दर, 'कते' कान्त =कमनीय, 'पियदसणे' प्रियदर्शन, 'सुरूवे' सुरूप, 'दारए' दारक =पुत्र 'पयाहिए' प्रजनिष्यते=उत्पत्स्यते ॥ सू ४३ ॥

टीका---'तए ण' इत्यादि।

'तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे' तत खलु तस्य दारकस्य अम्बापितरौ प्रथमे दिवसे 'ठिइवडिय' स्थितिपतित=कुलमर्यादाप्राप्त-पुत्रजन्मोत्सव

'से ण तत्थ णवण्ह मासाण' इत्यादि।

(तत्थ) गर्भ मे (णवण्ह मासाणं बहुपडिपुण्णाण अद्धट्ठमाण राइंदियाण वीइक्कताण) नौ महीने साढे सात दिनरात बीतने पर (सुकुमालपाणिपाए जाव ससिसोमा कारे कते पियदंसणे सुरूवे दारए पयाहिइ) यह सुकुमार पाणिपादवाला यावत् चद्रमा के समान सौम्य आकारवाला, कात, प्रियदर्शन एव सुन्दररूप से विशिष्ट ऐसा पुत्र उत्पन्न होगा ॥ सू ४३ ॥

'तए ण तस्स दारगस्स' इत्यादि।

(तए ण) इसके बाद (तस्स दारगस्स) इस बालक के (अम्मापियरो) माता-

'से णं तत्थ णवण्ह मासास' ઇત્યાદિ

(तत्थ) ગર્ભમાં (णवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण अद्धट्ठमाण राइंदियाण वीइक्कताण) નવ મહિના અને સાડા સાત દિનરાત વીત્યા પછી (सुकुमाल-पाणि-पाए जाव ससिसोमाकारे कते पियदसणे सुरूवे दारए पयाहिइ) એ સુકુમાર હાથપગવાળો, યાવત્ ચદ્રમા જેવો સૌમ્ય આકારવાળો, કાંત, પ્રિયદર્શન, તેમજ સુદર રૂપથી વિશિષ્ટ એવો પુત્ર ઉત્પન્ન થશે (સૂ. ૪૩)

'तए ण तस्स दारगस्स' ઇત્યાદિ

(तए ण) ત્યાર પછી (तस्स दारगस्स) આ બાલકનો (अम्माप्पियरो) માતા-

दिवसे ठिइवडियं काहिति. विइयदिवसे चंदसूरदंसणियं काहिंति, छट्ठे दिवसे जागरियं काहिति, एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते णिव्वत्ते असुइ-जाय-कम्मकरणे संपत्ते बारसाहे दिवसे अम्मापियरो इमं एयारूवं गोणं गुणणिप्फण्णं णामधेज्जं काहिंति-

'काहिंति' करिष्यत 'विइयदिवसे' द्वितीयदिवसे 'चंदसूरदसणिय' चन्द्रसूर्यदर्शनिकानामक पुत्रजन्मोत्सवविशेष करिष्यत, 'छट्ठे दिवसे' षष्ठे दिवसे 'जागरिय' जागरिका=रात्रिजागरिका-सुतजन्मोत्सवरूपा करिष्यत 'एक्कारसमे दिवसे' एकादशे दिवसे 'वीइक्कते' व्यतिक्रान्ते=व्यतीते, 'णिव्वत्ते' निवृत्ते=व्यतीते 'असुइजायकम्मकरणे' अशुचिजातकर्मकरणे-अशुचीनाम्=अशौचवता जातकर्मणो=जातकर्मसस्कारस्य यत करण=विधान तस्मिन्, निवृत्ते सति पूर्वेणान्वय 'सपत्ते बारसाहे दिवसे' सम्प्राप्ते द्वादशाहे दिवसे=द्वादशाहरूपे दिने समागते इत्यर्थ, 'अम्मापियरो इमं एयारूव गोणं गुणणिप्फण्ण नामधेज्ज काहिंति' अम्बापितरौ इद=वक्ष्यमाणम् एतद्रूप=वक्ष्यमाणस्वरूप गौण=

पिता (पढमे दिवसे) प्रथम दिवस में (ठिइवडिय) अपनी स्थिति के अनुसार पुत्र-जन्म के उत्सव को (काहिंति) मनावेंगे। (विइयदिवसे चदसूरदसणिय काहिंति) द्वितीय दिवसमें पुत्र-जन्म के उत्सव के अवसर पर मनाये जाने वाले 'चद्रसूर्यदर्शनिका' नाम के उत्सव को करेंगे। (छट्ठे दिवसे जागरिय काहिंति) छठवे दिन जागरण करेंगे (एक्कारसमे दिवसे वीइक्कते णिव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे सपत्ते बारसाहे दिवसे) ग्यारहवें दिवस जननाशौच समाप्त होने पर फिर बारहवें दिवस के लगने पर (अम्मापियरो) इसके मातापिता (इम एयारूव गोण गुणणिप्फण्ण णामधेज्ज काहिंति) इसका गुणसबधयुक्त एव सार्थक

પિતા (પઢમે દિવસે) પહેલા દિવસે (ઠિઇવડિય) પોતાની સ્થિતિ અનુસાર પુત્રજન્મનો ઉત્સવ (काहिंति) મનાવશે, (विइयदिवसे चदसूरदसणिय काहिंति) બીજે દિવસે પુત્રજન્મના ઉત્સવ અવસરે મનાવવામાં આવતો 'ચન્દ્રસૂર્ય-દર્શનિકા' એ નામનો ઉત્સવ કરશે, (छट्ठे दिवसे जागरिय काहिंति) છટ્ઠા દિવસે જાગરણ કરશે (एक्कारसमे दिवसे वीइक्कते णिव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे सपत्ते बारसाहे दिवसे) અગીયારમે દિવસે જન્મ-અશૌચ (સૂતક) સમાપ્ત થઈ ગયા પછી બારમો દિવસ થતાં (अम्मापियरो) તેના માતાપિતા (इम एयारूव गोण गुणणिप्फण्ण णामधेज्ज काहिंति) તેના ગુણસંબંધને અનુલક્ષીને તેમજ

जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि गब्भत्थंसि चेव समाणंसि धम्मे दढपइण्णा, तं होउ णं अम्हं दारए दढपइण्णे णामेणं। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्ज करेहिंति-दढपइण्णत्ति ॥ सू. ४४ ॥

मूलम्—तं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो साइरेगट्ठ-

गुणसम्बन्धयुक्त, गुणनिष्पन्न–गुणै =धर्मविषयकदाढर्चादिगुणैर्निष्पन्न=सिद्ध नामधेय करिष्यत । 'जम्हा ण अम्ह इमंसि दारगंसि गब्भत्थसि चेव समाणसि' यस्मात्खल्वावयोरस्मिन् दारके गर्भस्थ एव सति 'धम्मे' धर्मे=धर्माराधन 'दढपइण्णा' दृढप्रतिज्ञा=दृढनिश्चयो जात, 'त होउ ण अम्ह दारए दढपइण्णे णामेण' तद् भवतु खल्वावयोर्दारको दृढप्रतिज्ञो नाम्ना–तस्मादस्य बालकस्य 'दृढप्रतिज्ञ' इति नामास्तु–इत्यर्थ । 'तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्ज करेहिंति दढपइण्णेत्ति' तत खलु अम्बापितरौ तस्य दारकस्य नामधेय करिष्यतो दृढप्रतिज्ञ इति ॥ सू ४४ ॥

टीका—'त दढपइण्ण' इत्यादि। 'त दढपइण्ण' त दृढप्रतिज्ञ=दृढप्रतिनामक

नामकरणसस्कार करेंगे। वह इस बात को विचार कर इसका नाम रखेंगे कि (जम्हा ण अम्ह इमसि दारगसि गब्भत्थसि चेव समाणसि धम्मे दढइण्णा, त होउ णं अम्हं दारए दढपइण्णे नामेण) हमारा यह बालक जब गर्भ मे आया था तब से ही हम लोगों की प्रतिज्ञा–आस्था धर्म मे दृढ हुई, अत हमारे इस बालक का नाम दृढप्रतिज्ञ हो। (तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्ज करेहिंति दढपइण्णत्ति) उस समय उस बालक के मातापिता उसका नाम दृढप्रतिज्ञ रखेंगे ॥ सू ४४ ॥

સાર્થક નામકરણસંસ્કાર કરશે તેઓ એ વાતનો વિચાર કરીને તેનુ નામ રાખશે કે (जम्हा ण अम्ह इमसि दारगसि गब्भत्थसि चेव समाणसि धम्मे दढपइण्णा त होउ ण अम्ह दारए दढपइण्णे नामेण) અમારો આ બાળક જ્યારે ગર્ભમા આવ્યો હતો ત્યારથીજ અમારા લોકોની પ્રતિજ્ઞા–આસ્થા ધર્મમા દૃઢ થઇ, તેથી અમારા આ બાળકનુ નામ દૃઢપ્રતિજ્ઞ રહો (तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्ज करेहिंति दढपइण्णत्ति) તે સમયે તે બાળકના માતા-પિતા તેનુ નામ દૃઢપ્રતિજ્ઞ રાખશે (સૂ ૪૪)

वासजायगं जाणित्ता सोभणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तं-
सि कलायरियस्स उवेणहिंति ॥ सू ४५ ॥

मूलम्—तए णं से कलायरिए तं दढपइण्णं दारगं लेहाइयाओ

'दारय' दारकं=कुमारम्, 'अम्मापियरो' अम्बापितरौ 'साइरेगट्ठवासजायग' सातिरेकाष्टवर्षजातकं=किंचिदधिकाष्टवर्षाणि जातानि यस्य स तथा तं, किंचिदधिकाष्टवर्षवयस्कमित्यर्थः, 'जाणित्ता' ज्ञात्वा 'सोभणंसि'=शोभने-शुभकारके 'तिहिकरणदिवसनक्खत्तमुहुत्तंसि' तिथिकरणदिवसनक्षत्रमुहूर्ते 'कलायरियस्स' कलाचार्यस्य 'उवणेहिंति' उपनेष्यतः—द्वासप्ततिकलाज्ञानप्राप्तये कलाशिक्षकस्य समीपं नेष्यत इत्यर्थः ॥ सू० ४५ ॥

टीका—'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से कलायरिए' ततः खलु स कलाचार्यः 'तं दढपइण्णं' तं दृढप्रतिज्ञं दृढप्रतिज्ञनामकं 'दारगं' दारकं 'लेहाइयाओ' लेखादिकाः,

'तं दढपइण्णं दारगं' इत्यादि।

(तं दढपइण्णं दारगं) पश्चात् उस दृढप्रतिज्ञ नामक बालक को (अम्मापियरो) उसके माता-पिता (साइरेगट्ठवासजायग जाणित्ता) जब आठ वर्ष से कुछ अधिक वय का जानेंगे तब वे उसे (सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-णक्खत्त-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेहिंति) शुभ तिथि, शुभ करण, शुभ नक्षत्र एवं शुभ मुहूर्त में कलाचार्य के पास ७२ कलाओं का ज्ञान प्राप्त कराने के निमित्त ले आवेंगे ॥ सू ४५ ॥

'तए णं से कलायरिए' इत्यादि।

(तए णं) इसके बाद (से कलायरिए) वह कलाचार्य (तं दढपइण्णं

'तं दढपइण्णं दारगं' ઇત્યાદિ

(तं दढपइण्णं दारगं) ત્યાર પછી તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ નામના બાળકને (अम्मा-पियरो) તેના માતા-પિતા (साइरेग-ट्ठवास-जायग जाणित्ता) જ્યારે આઠ વરસથી કંઈક વધારે ઉમરનો જાણશે ત્યારે તેઓ તેને (सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-णक्खत्त-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेहिंति) શુભતિથિ, શુભ કરણ, શુભ દિવસ, શુભ નક્ષત્ર, તેમજ શુભ મુહૂર્તમાં કલાચાર્યની પાસે ૭૨ કળાઓનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરાવવા નિમિત્તે લઈ જશે (સૂ. ૪૫)

'तए णं से कलायरिए' ઇત્યાદિ

(तए णं) ત્યાર પછી (से कलायरिए) તે કલાચાર્ય (तं दढपइण्णं दारगं)

गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिकलाओ सुत्त-
ओ य अत्थओ य करणओ य सेहाविहिति सिक्खाविहिति, त
जहा—लेहं १, गणियं २, रूवं ३, णट्टं ४, गीयं ५, वाइयं ६, सर-

'गणियप्पहाणाओ' गणितप्रधाना , 'सउणरुयपज्जवसाणाओ' शकुनरुतपर्यवसाना ,'बाव त्तरिकलाओ' द्वासप्ततिकला , 'सुत्तओ य' सूत्रत =सूत्ररूपपदपाठनात् , 'अत्थओ य' अर्थत =पदार्थबोधनात् , 'करणओ य' करणत =प्रयोगत —कलाव्यापारप्रदर्शनात् , 'सेहावि-हिति' साधयिष्यति=प्रापयिष्यति, 'सिक्खावहिति' शिक्षयिष्यति=अभ्यास कारयिष्यति ।

ता कला नामत प्रदर्शयति– 'त जहा' तद्यथा–'लेहं' लेख–लेखन लेख – अक्षरविन्यासस्तद्विषयकलाविज्ञानं लेख एवोच्यते तम् , 'गणिय' गणित=सख्यान सकलिता धनेकभेदम् २, 'रूवं' रूप=लेप्यशिलासुवर्णमणिवस्त्रचित्रादिषु रूपनिर्माणम् ३, 'णट्ट' नाट्य= साभिनयनिरभिनयपूर्वक नर्तनम् ४, 'गीय' गीत=गान्धर्वकलाज्ञानविज्ञानम् ५, 'वाइय' वाद्य=वीणापटहादिवादनकलाज्ञानम् ६, 'सरगय' स्वरगत=गीतमूलभूताना षड्जऋषभादि-

दारग) उस दृढप्रतिज्ञ कुमार को (लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ) लिखने आदि की, गणित की, तथा पक्षी के शब्द आदि जानने की (बावत्तरिकलाओ) ७२ कलाओं में (सुत्तओ य) सूत्ररूप से (अत्थओ य) एव अर्थरूप से तथा (करणओ य) प्रयोगरूप से (सेहाविहिति) प्राप्त करायेगा, (सिक्खाविहिति) अभ्यास करायेगा । (त जहा) वह-त्तर कलाओं के नाम ये हैं– (१ लेह) लेख लिखने की, (२ गणिय) गणित की, (३ रूव) रूप की–अर्थात् लेप्य, शिला, सुवर्ण, मणि, वस्त्र एव चित्र इत्यादिकों में रूपनिर्माण करने की, (४ णट्ट) नृत्य की–साभिनय एव निरभिनयपूर्वक नाचने की, (५ गीय) गाने की, (६ वाइय) वीणा एव पटह–ढोल आदि बाजे बजाने की, (७ सरगय)

તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કુમારને (लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ) લેખન આદિની, ગણિ-તની તથા પક્ષીના શબ્દ આદિ જાણવાની (बावत्तरिकलाओ) ૭૨ કળાઓ (सुत्तओ य) સૂત્રરૂપથી (अत्थओ य) તેમજ અર્થ રૂપથી, તથા (करणओ य) પ્રયોગ રૂપથી (सेहाविहिति) પ્રાપ્ત કરાવશે, (सिक्खाविहिति) અભ્યાસ કરાવશે (त जहा) બહોતેર કળાઓના નામ આ પ્રમાણે છે–૧ (लेह) લેખ લખવાની, ૨ (गणिय) ગણિતની, ૩ (रूव) રૂપની અર્થાત્ લેપ્ય, શિલા, સુવર્ણ, મણિ, વસ્ત્ર તેમજ ચિત્ર ઇત્યાદિમા રૂપ નિર્માણ કરવાની, ૪ (णट्ट) નૃત્યની–સાભિનય તેમજ નિરભિનય-પૂર્વક નાચવાની, ૫ (गीय) ગાવાની, ૬ (वाइय) વીણા તેમજ પટહ ઢોલ આદિ વાજિંત્ર વગાડવાની, ૭ (सरगय) સ્વરોની–ગીતના મૂળભૂત

गयं ७, पुक्खरगयं ८. समतालं ९, जूयं १०. जणवायं ११, पासगं १२. अट्ठावयं १३, पोरेकव्वं १४. दगमट्टियं १५, अण्णविहिं १६, पाणविहिं १७, आभरणविहिं १८. सयणविहिं १९, अज्जं २०,

स्वगणा परिज्ञानम ७, 'पोक्खरगय' पुष्करगत=मृदङ्गविषयक विज्ञानम , वाद्यान्तर्गतत्वेऽपि मृदङ्गादे पृथक्कथन परमसंगीताङ्गत्वद्योतनार्थम ८, 'समताल' समताल-गीतादिमानकाल-रताल स सम =न्यूनाधिकमात्रारहितो जायते यस्मात तत समतालविज्ञानम ९, 'जूयं' द्यूत-'जुगार' इति भाषायाम १०, 'जणवाय' जनवाद=जनेषु वादप्रतिवादकरणरूपम् ११, 'पासय' पाशक=द्यूतोपकरणविशेष, 'पासा' इति भाषायाम १२, 'अट्ठावय' अष्टापद-द्यूत-विशेषखेलनम १३, 'पोरेकव्व' पुर काव्य=पुरत पुरत काव्य-काव्यरूपरागाणि सारणं =आशुकवित्वमित्यर्थ १४, 'दगमट्टिय' दकमृत्तिकाम्=उदकयुक्तमृत्तिकाप्रयोगविधि दक-मृत्तिका=कुम्भकारविधेयर्थ , ताम् १५, 'अन्नविहिं' अन्नविधिम=अन्ननिष्पादनविज्ञानम् । 'अन्नविहिं' इत्यत्र समवायाङ्गोक्तस्य 'मधुसित्थ' इत्यस्य समावेश १६, पाणविहिं' पानविषयविज्ञानम् १७, 'आभरणविहिं' आभरणविधिम=भूषणनिर्माणधारणविज्ञानम् ।

स्वरों की-गात के मूलभूत षड्ज-ऋषभ आदि स्वरों का, (८ पुक्खरगय) मृदग बजाने की (९ समताल) समताल की-तान के अनुसार ताल बजाने का, (१० जूयं) जुआ खेलने की, (११ जणवाय) लोकों के साथ प्रतिवाद करने का, (१२ पासग) पासा फेंकने की, (१३ अट्ठावय) अष्टापद-चौपड खेलने का, (१४ पोरेकव्व) आशुकवि होने की, (१५ दगमट्टिय) मिट्टी से अनेक प्रकार के बर्तन बनाने की, (१६ अण्णविहिं) धान्य आदि को बो कर अन्नादिक उत्पन्न करने की-भोजन बनाने का, समवायाङ्ग में उक्त 'मधुसित्थ'-मधुसिक्थ का इसीमें समावेश किया गया है (१७ पाणविहिं) पेयपदार्थ की विधि जानने

षड्ज-ऋषभ आदि स्वरोनी, ८ (पुक्खरगय) मृदग वगाडवानी, ९ (समताल) समतालनी-तानने अनुसार ताल बजाववानी, १० (जूय) जुगार रमवानी, ११ (जणवाय) लोकोनी साथे प्रतिवाद करवानी, १२ (पासग) पासा फेंकवानी, १३ (अट्ठावय) अष्टापद-चोपाट रमवानी, १४ (पोरेकव्व) आशुकवि थवानी, १५ (दगमट्टिय) माटीमाथी अनेक प्रकारना ठाम बनाववानी, १६ (अण्ण-विहिं) धान्य आदिने वावीने अन्न आदिकने उत्पन्न करवानी-भोजन बना-ववानी, समवायागमा उक्त 'मधुसित्थ' मधुसिकथनो समावेश अही ज कर-वामा आव्यो छे, १७ (पाणविहिं) पीवाना पदार्थनी विधि जाणवानी, १८

पहेलियं २१, मागहियं २२, गाहं २३, गीइयं २४, सिलोयं २५,

'आभरणविहिं' इत्यत्र समवायाङ्ग–ज्ञाता–राजप्रश्नीय–जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवर्णितस्य 'वत्थविहिं' इत्यस्य, तथा ज्ञाता–राजप्रश्नीय–जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिकथितस्य 'विलेवणविहिं' इत्यस्य च समावेश १८, 'सयणविहिं' शयनविधि=शय्याशयनादिविधिविज्ञानम् १९, 'अज्ज' आर्यो=मात्राछन्दोरूपा, मात्रासम्मेलनेन छन्दोनिर्माणविज्ञानम् २०, 'पहेलिय' प्रहेलिका = गूढाशयगद्यपद्यमयीं रचनाम् २१, 'मागहिय' मागधिका=मगध-देशीयभाषाकवित्वम् २२, 'गाह' गाथा=संस्कृतेतरभाषानिबद्धामार्यामेव, कलिङ्गादिदेशभाषा-निबद्धकवित्वविज्ञानं वा २३, 'गीइय' गीतिका=पूर्वार्धसदृशोत्तरार्धलक्षणरूपाम् २४, 'सिलोय' श्लोकम्=अनुष्टुबादिलक्षणम् २५, 'हिरण्णजुत्ति' हिरण्ययुक्तिं=रजतनिर्माण-

की, (१८ आभरणविहिं) आभरण आदि को बनाने एव उन्हें यथास्थान धारण करने की, समवायाङ्ग ज्ञाता, राजप्रश्नीय और जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति में उक्त 'वत्थविहिं' वस्त्रविधि का, ज्ञाता, राजप्रश्नीय तथा जम्बूद्वीप में उक्त 'विलेवणविहिं' विलेपनविधि का समावेश यहीं पर हो जाता है, (१९ सयणविहिं) शय्या आदि बनाने का, (२० अज्ज) आर्याछन्द-मात्रिक छंदों को रचने की, (२१ पहेलिय) प्रहेलिका की, अर्थात् गूढ आशयवाला गद्यपद्यमयी रचना करने का (२२ मागहिय) मागधिकाकी अर्थात् मगध–देशकी भाषा मे कविता रचने की, (२३ गाह) संस्कृत से भिन्न भाषा में मात्रिक छन्दो में कविता रचने की, अथवा कलिंग आदि देशों की भाषा में निबद्ध कविता के विज्ञान की, (२४ गीइय) पूर्वार्ध के सदृश उत्तरार्ध लक्षणरूप गीतिका छन्द मे काव्य रचन का, (२५ सिलोय) अनुष्टुप् आदि छन्दों में श्लोकों को रचन की, (२६ हिरण्णजुत्ति) चाँदी बनाने का विधि की (२७ सुव

(आभरणविहिं) આભરણ આદિ બનાવવાની, સમવાયાગ, જ્ઞાતા, રાજપ્રશ્નીય અને જબૂદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિમા ઉક્ત 'वत्थविहिं' વસ્ત્રવિધિનો, અને જ્ઞાતા, રાજ-પ્રશ્નીય અને સમવાયાગમા ઉક્ત 'विलेवणविहिं' વિલેપનવિધિનો સમાવેશ અહી જ કરવામા આવ્યો છે ૧૯ (सयणविहिं) શય્યા આદિ બનાવવાની, ૨૦ (अज्ज) આર્યા છદ–માત્રિક–છદો રચવાની, ૨૧ (पहेलिय) પ્રહેલિકાની અર્થાત ગૂઢ આશયવાળી ગદ્યપદ્યમયી રચના કરવાની, ૨૨ (मागहिय) માગધી અર્થાત્ મગધ દેશની ભાષામા કવિતા રચવાની, ૨૩ (गाह) સસ્કૃતથી જુદી ભાષામા માત્રિક છદોમા કવિતા રચવાની, અથવા કલિગ આદિ દેશોની ભાષામા રચિત કવિતાના વિજ્ઞાનની, ૨૪ (गीइय) પૂર્વાર્ધના જેમ ઉત્તરાર્ધલક્ષણ રૂપ ગીતિકા છદમા કાવ્ય રચવાની, ૨૫ (सिलोयं) અનુષ્ટુપ આદિ છદોના શ્લોકો રચવાની, ૨૬ (हिर

हिरण्णजुत्ति २६, सुवण्णजुत्ति २७, गंधजुत्ति २८, चुण्णजुत्ति २९, तरुणीपडिकम्म ३० इत्थिलक्खणं ३१, पुरिसलक्खणं ३२ हयलक्खणं ३३, गयलक्खणं ३४ गोणलक्खण ३५, कुक्कुडलक्खण

विधिम् २६, 'सुवन्नजुत्ति' सुवर्णयुक्तिः=सुवर्णनिर्माणोपायम् २७, 'गंधजुत्ति' गन्धयुक्तिः=गन्धद्रव्यनिर्माणविधिम् २८, 'चुन्नजुत्ति' चूर्णयुक्तिः=वशीकरणान्तर्धानार्थं तत्तदुचितद्रव्याण्येकत्रीकृत्य तत्पिष्टीकरणविधिम् २९, 'तरुणीपडिकम्म' तरुणीपरिकर्म=युवतीरूपशोभापरिवर्धनविधिम् ३०, 'इत्थिलक्खण' स्त्रीलक्षणम्=पद्मिनीहस्तिन्यादियुवतीनां लक्षणम् ३१, 'पुरिसलक्खण' पुरुषलक्षणम्=उत्तमाधमादिपुरुषाणां लक्षणविज्ञानम् ३२, 'हयलक्खण' हयलक्षण-दीर्घग्रीवादिकृताश्वलक्षणविज्ञानम्, 'हयलक्खण' इत्यत्र समवायाङ्गोक्तस्य 'आससिक्ख' इत्यस्य समावेशः ३३ 'गयलक्खण' गजलक्षण=हस्तिशुभाऽशुभलक्षणविज्ञानम्, 'गयलक्खण' इत्यत्र समवायाङ्गोक्तस्य 'हत्थिसिक्ख' इत्यस्य समावेशः ३४, 'गोणलक्खण' गोलक्षण- सास्नाविकला अतिरूक्षा मूषिकनयनाश्च न शुभदा गावः' इत्यादिविज्ञानम् ३५, 'कुक्कुडलक्खण' कुक्कुटलक्षणम्, 'कुक्कुडलक्खण

न्नजुत्ति) सुवर्णनिर्माण करने की विधि की, (२८ गंधजुत्ति) गंधद्रव्य को बनाने की विधि की, (२९ चुन्नजुत्ति) वशीकरण आदि चूर्ण को बनाने वाली औषधियों को एकत्रित कर उनकी पिष्टी करने की विधि की (३० तरुणीपडिकम्म) युवती के रूप की शोभा बढाने की विधि की (३१ इत्थिलक्खण) पद्मिनी, हस्तिनी आदि युवतियों को जानने के लक्षणों की, (३२ पुरिसलक्खण) पुरुषों को पहिचानने के लक्षणों की, (३३ हयलक्खणं) अश्वों के लक्षणों को जानने की तथा उनको चलाने की (३४ गयलक्खण) हाथी के लक्षणों को जानने की, यहाँ पर समवायाग में उक्त 'हत्थिसिक्ख' हस्तिशिक्षा कला का समावेश हुआ है (३५ गोणलक्खण) गाय के लक्षणों को जानने की, (३६ कुक्कुडलक्खण) कुक्कुट-

ण्णजुत्ति) चांदी બનાવવાની વિધિની, ૨૭ (सुवन्नजुत्ति) સુવર્ણ નિર્માણ કરવાની વિધિની, ૨૮ (गंधजुत्ति) ગંધદ્રવ્ય બનાવવાની વિધિની, ૨૯ (चुन्नजुत्ति) વશીકરણ આદિ ચૂર્ણ બનાવવાની ઔષધીઓને એકઠી કરી તેને પીસવા (વાટી નાખવા)ની વિધિની, ૩૦ (तरुणीपडिकम्म) યુવતીના રૂપની શોભા વધારવાની વિધિની, ૩૧ (इत्थिलक्खण) પદ્મિની, હસ્તિની આદિ યુવતીઓને જાણવાના લક્ષણોની, ૩૨ (पुरिसलक्खण) પુરુષોને જાણવાના લક્ષણોની, ૩૩ (हयलक्खण) ઘોડાના લક્ષણો જાણવાની તથા તેમને ચલાવવાની, ૩૪ (गयलक्खण) હાથીના લક્ષણો જાણવાની, અહીં સમવાયાગમા ઉક્ત 'हत्थि-

३६, चक्कलक्खणं ३७, छत्तलक्खणं ३८, चम्मलक्खणं ३९, दंड-लक्खणं ४०, असिलक्खणं ४१, मणिलक्खणं ४२, कागणिल-क्खण ४३, वत्थुविज्ज ४४, खंधारमाणं ४५, नगरमाणं ४६, चारं

इत्यत्र समवायाङ्गोक्तस्य 'मिंढयलक्खण' इत्यस्य समावेश, उपस्करगतो मर्वारेण सादृश्यात् ३६, 'चक्कलक्खण' चक्रलक्षण=चक्ररत्नगुणदोपविज्ञानम् ३७, 'छत्तलक्खण' छत्रल क्षण=छत्रस्य शुभाशुभविज्ञानम् ३८, 'चम्मलक्खण' चर्मलक्षण, चर्म—ढाल इति प्रसिद्ध तस्य शुभाशुभलक्षणज्ञानम् ३९, 'दंडलक्खण' दण्डलक्षणम्=दण्डस्य शुभाशुभलक्षणवि-ज्ञानम् ४०, 'असिलक्खणं' असिलक्षणम्='अङ्गुलीशताधे उत्तम खड्ग' इत्यादिविज्ञानम् ४१, 'मणिलक्खणं' मणिलक्षण=रत्नपरीक्षाविज्ञानम् ४२, 'कागणिलक्खण' काकणी-लक्षणम्—चक्रवर्तिनो रत्नविशेष काकणो, तस्या विपापहरणमानोन्मानादियोगप्रवर्तकत्वादिज्ञा-नम् ४३, 'वत्थुविज्ज' वास्तुविद्याम्—वसति अस्मिन्निति वास्तु=गृहादिक तस्य विद्या= वास्तुशास्त्रप्रसिद्ध गृहभूमिगतदोपगुणविज्ञानम्, 'वत्थुविज्ज' इत्यत्र समवायाङ्गोक्तयो 'वत्थुमाण' 'वत्थुनिवास' इत्यनयो समावेश ४४, 'खधारमाण'

मुर्गे के लक्षणों को जानने की, समवायाङ्ग में उक्त 'मिंढयलक्खणं' (मेंढेका लक्षण) का समावेश यहीं हो जाता है। (३७ चक्कलक्खणं) चक्ररत्न के गुणदोष जानने की, (३८ छत्तलक्खण) छत्र के शुभाशुभ जानने की, (चम्मलक्खण) ढाल के खोटे—खरे लक्षणों को जानने की, (४० दडलक्खण) दड के अच्छे—बुरे लक्षणों को जानने की, (४१ असिलक्खण) तलवार के लक्षणों की, (४२ मणिलक्खणं) मणिलक्षण जानने की—रत्नकी परीक्षा करने की, (४३ कागणीलक्खण) चक्रवर्ती के काकणी रत्न को जानने की, (४४ वत्थुविज्ज) वास्तु (घर) शास्त्र की, समवायाङ्ग में उक्त 'वत्थुमाण' वास्तुमान और 'वत्थुनिवेश' वास्तुनिवेश इन दोनों का यहीं समावेश होता है, (४५ खधारमाण) शत्रु को

सिक्ख' હસ્તિશિક્ષા કળાનો સમાવેશ થયો છે ૩૫ (गोणलक्खण) ગાયના લક્ષણો જાણવાની, ૩૬ (कुक्कुडलक्खण) કુકકુટ—કુકડાના લક્ષણો જાણવાની, સમવાયાગમા ઉક્ત 'मिंढयलक्खण' (ઘેટાનુ લક્ષણનો સમાવેશ અહી થાય છે ૩૭ (चक्कलक्खण) ચક્રરત્નના ગુણદોષ જાણવાની, ૩૮ (छत्तलक्खण) છત્રના શુભ અશુભ જાણવાની, ૩૯ (चम्मलक्खण) ઢાલના ખોટા તથા ખરા લક્ષણો જાણવાની, ૪૦ (दडलक्खण) દડના સારા—નરસા લક્ષણો જાણવાની, ૪૧ (असिलक्खणं) તરવારના લક્ષણોની, ૪૨ (मणिलक्खण) મણિના લક્ષણો જાણ વાની, ૪૩ (कागणीलक्खण) ચક્રવર્તીના કાકણી રત્નને જાણવાની, ૪૪ (वत्थुविज्ज)

४७, पडिचारं ४८, वूहं ४९, पडिवूह ५०, चक्कवूह ५१ गरुलवूहं

स्कन्धावारमानं-शत्रु विजेतु कत्ति कियपरिमित सैन्य निवर्तनीयमिति प्रमाणविज्ञानम्। 'खंधारमाण' इत्यत्र समवायाङ्गोक्तस्य 'खंधारणिवेस' इत्यस्य समावेश 'नगरमाण' नगरमानम्-अस्मिन् प्रदेशे कीदृग्आयामदैर्घ्योपलक्षित नगर निर्मापणीय, येन विजयशाली भवेयम्, कस्य वर्णस्य कस्मिन् स्थाने निवेश श्रेष्ठ इति विज्ञानम्, 'नगरमाण' इत्यत्र समवायाङ्गोक्तस्य 'नगरणिवेस' इत्यस्य समावेश ४६, 'चारं' चार=ज्योतिश्चारविज्ञानम्। 'चार' इत्यत्र समवायाङ्गोक्ताना 'चदलक्खण' सूरचरियं, राहुचरियं, गहचरियं' इत्येतेषा चतुर्णां समावेश ४७, 'पडिचारं' प्रतिचार=प्रतिवर्तितचारम्-इष्टानिष्टफलजनकशान्तिकर्मादिक्रियाविशेषविज्ञानम, 'पडिचार' इत्यत्र 'सोभागकरं, दोभागकर, विज्जागयं, मंतगयं, रहस्सगय, सभासचारं' इत्येतेषा समवायाङ्गोक्ताना षण्णा समावेश ४८, 'वूहं' व्यूहं-शकटव्याकृतिसैन्यरचनम् ४९, 'पडि-

जीतने के लिये कितनी सेना होनी चाहिये इस प्रकार सेना के परिमाण को जानने की, यहाँ पर समवायाङ्ग में उक्त 'खंधावारणिवेसं' स्कन्धावारनिवेश का समावेश होता है। (४६ नगरमाण) इस प्रदेश मे कितना लंबा कितना चौडा नगर बसाना चाहिये जिससे मैं विजयशाली हो सकूं तथा किस वर्ण को किस स्थान में बसाना श्रेष्ठ होगा इन सब बातों के विज्ञान की, समवायाङ्ग में उक्त 'नगरनिवेस' नगरनिवेश का अन्तर्भाव यहीं पर हो जाता है। (४७ चार) ज्योतिश्चक्र की, समवायाङ्ग मे कथित (चदलक्खण) चद्रमा के लक्षण, (सूरचरियं राहुचरियं गहचरियं) सूर्य की चाल, राहु की चाल एवं ग्रहों की-चाल, इन सबों का समावेश 'चार' मे समझना चाहिए।(४९ पडिचार) इष्टानिष्टफलजनक शान्तिकर्म आदि क्रियाविशेषों के विज्ञान की, यहाँ समवायाग कथित "सोभागकरं दोभागकर विज्जागय मत-

वास्तु (घर) शास्त्रनी, समवायागमा उक्त "वत्थुमाण वत्थुनिवेस" वास्तुमान तेमज वास्तुनिवेशनो समावेश अही थाय छे ४५ (खधारमाण) शत्रुने जीतवा माटे केटली सेना होवी जोईए, ओ रीते सेनाना परिमाणुने (गणुतरी) जाणुवानी, समवायागमा उक्त 'खधावारनिवेस' स्कधावारनिवेशनो अही पर समावेश थाय छे, ४६ (नगरमाण) आ प्रदेशमा केवडु लाबु अने केटलु पहोळु नगर वसाववु जोईओ के जेथी हु विजयशाळी थई शकु तथा कया वर्णु (जात) ने कया स्थानमा वसाववु श्रेष्ठ थशे ओ बधी वातोना विज्ञाननी, समवायागमा उक्त 'नगरनिवेस' नगरनिवेशकळानो समावेश अही थयो छे ४७ (चार) ज्योतिश्चक्रनी, समवायागमा कहेल

५२, सगडवूहं ५३, जुद्धं ५४, निजुद्धं ५५, जुद्धाइजुद्धं ५६, मुट्ठि-

वूहं' प्रतिव्यूहम्=व्यूहप्रतिपक्षिभूत व्यूह-सैन्यरचनाविशेषम् ५०, 'चक्कवूह' चक्रव्यूहम्= सैन्यस्य चक्राकाररचनाविशेषम् ५१, 'गरुलवूह' गरुडव्यूह=गरुडाकृतिसैनानिवशपरि- ज्ञानम् ५२, 'सगडवूह' शकटव्यूह=शकटाकृतिसैन्यरचनम् ५३, 'जुद्ध' युद्ध=संग्रा- मम्, 'जुद्ध' इत्यत्र ज्ञाता-समवायाङ्गोक्तस्य 'अट्ठिजुद्ध' इत्यस्य, तथा-समवायाङ्गोक्तस्य 'दंडजुद्ध' इत्यस्य, तथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिकथितस्य 'दिट्ठिजुद्धं' इत्यस्य, तथा-राजप्रश्नीय सूत्रोक्तस्य 'असिजुद्ध' इत्यस्य च समावेश ५४, 'निजुद्ध' नियुद्ध=मल्लयुद्धम् ५५, 'जुद्धाइजुद्ध' युद्धातियुद्धम्=खड्गादिप्रक्षेपपूर्वक महायुद्धम् ५६, 'मुट्ठिजुद्ध' मुष्टियुद्धम्, योधयो परस्पर मुष्ट्या हननम् ५७, 'बाहुजुद्ध' बाहुयुद्धम् ५८, 'लयाजुद्धं' लतायुद्ध

गय रहस्सगय सभासचार" इस पाठ का समावेश हुआ है। (४९ वूह) शकट आदि के आकार में सैन्य स्थापित करने की, (५० पडिवूहं) व्यूह के प्रतिपक्षी व्यूह की रचना करने की, (५१ चक्कवूहं) चक्रव्यूह की-सैन्य को चक्राकार रचने की, (५२ गरुलवूह) गरुडव्यूह की-गरुड़ की आकृति के समान सैन्य को रचने की, (५३ सगडवूह) शकट की आकृति के समान सैन्य को रचने की, (५४जुद्ध) संग्राम करने की, यहाँ पर ज्ञाता, समवायाङ्ग मे कथित (अट्ठिजुद्धं) अस्थियुद्ध का, (दंडजुद्ध) दंडयुद्ध का, तथा जम्बूद्वीप- प्रज्ञप्ति में प्रतिपादित (दिट्ठिजुद्ध) दृष्टियुद्ध का और राजप्रश्नीयसूत्र में बताया गया (असिजुद्ध) तलवार से युद्ध करने का समावेश हुआ है, (५५ निजुद्धं) मल्लयुद्ध की, (५६ जुद्धाइजुद्ध) खड्गादिप्रक्षेपपूर्वक महायुद्ध करने की, (५७ मुट्ठिजुद्ध) मुष्टियुद्ध करने की, (५८ बाहुजुद्ध) बाहु से युद्ध करने की, (५९ लयाजुद्ध) लतायुद्ध की, जिस प्रकार लता

'चंदलक्खण' चंद्रमाना लक्षण 'सूरचरियं राहुचरियं गहचरियं' सूर्यनी चाल, राहुनी चाल तेमज ग्रहोनी चाल ए बधानो समावेश 'चार' मा सम- जवो जोईए ४८ (पडिचारं) इष्ट-अनिष्ट फळजनक शान्तिकर्म आदि क्रिया- विशेषना विज्ञाननी, अही समवाय अगमा कहेल "सोभागकर, दोभागकर, विज्जागय, मतगयं, रहस्सगय, सभासचार" आ पाठनो समावेश थयो छे, ४९ (वूह) शकट [गाडु] आदिना आकारमा सैन्य स्थापित करवानी, ५० (पडिवूह) व्यूहना प्रतिपक्षी व्यूहनी रचना करवानी, ५१ (चक्कवूह) चक्र- व्यूहनी-सैन्यने चक्राकार रचवानी, ५२ (गरुलवूह) गरुडव्यूहनी-गरुडनी आकृतिना जेवी सैन्यरचना करवानी, ५३ (सगडवूह) शकटनी आकृति ना समान सैन्य रचवानी, ५४ (जुद्ध) संग्राम करवानी, अही 'ज्ञाता अने समवा- याग' मा कहेल (अट्ठिजुद्ध) अस्थियुद्धनो, (दंडजुद्ध) दंडयुद्धनो तथा जंबुद्वीप

जुद्धं ५७, बाहुजुद्धं ५८, लयाजुद्धं ५९, ईसत्थं ६०, छरुप्पवायं ६१, धणुव्वेयं ६२, हिरण्णपागं ६३, सुवण्णपागं ६४, सुत्तखेडं ६५,

यथा लता वृक्षमारोहन्ती आमूलमाशिरो वृक्षमावेष्टयति, तथा यत्र योध प्रतियोधशरीरं गाढं निपीड्य भूमौ पातयति तल्लतायुद्धम् ५९, 'ईसत्थ' इषुशास्त्र=नागबाणादिदिव्यास्त्रसूचकं शास्त्रम्, 'ईसत्थ' इति प्राकृतशैल्या इषुशास्त्रम् ६०, 'छरुप्पवाय' क्षुरप्रपातम्, क्षुर='क्षुरा' इति प्रसिद्ध छेदनशस्त्रविशेष, तस्य प्रपात =पातनम् ६१, 'धणुव्वेय' धनुर्वेद=धनुशास्त्रम् ६२, 'हिरण्णपाग' हिरण्यपाक=रजतसिद्धि ६३, 'सुवण्णपाग' सुवर्णपाक=कनकसिद्धिम्, 'सुवण्णपाग' इ यत्र समवायाङ्गराजप्रश्नीयसूत्रोक्तयो 'मणिपाग धातुपागं' इत्यनयो समावेश ६४, 'सुत्तखेड' सूत्रखेल=सूत्रक्रीडाम् ६५, 'वट्टखेड' वृत्तखेलम् ६६, एतत्कलाद्वय लोकतो बोध्यम्। 'वट्टखेड' इ यत्र 'चम्मखेड' चर्मखेलम्—इत्यस्य समवायाङ्गोक्तस्य समावेश।

वृक्ष पर चढ कर नीचे से ऊपर तक वृक्ष को लपेट लेती है उसी प्रकार योधा जिस युद्ध म प्रतियोधा के शरीर को अत्यन्त पीडित कर जमीन पर पटक देते हैं और उसके ऊपर चढ बैठते हैं वह लतायुद्ध है उसकी, (६० ईसत्थ) इषुशास्त्र की, 'ईसत्थं' यहा पर प्राकृतशैली से इषुशास्त्र समझना चाहिये। नागबाण आदि दिव्य अस्त्र आदि का सूचक जो शास्त्र है उसका नाम इषुशास्त्र है उस की, (६१ छुरप्पवाय) छुरा से युद्ध करने की, (६२ धणुव्वेय) धनुर्वेद की, (६३ हिरण्णपाग) रजतसिद्धि की, (६४ सुवण्णपाग) सुवर्णसिद्धि की, राजप्रश्नीय एव समवायाग में कथित मणिपाक और धातुपाक का समावेश यहीं करना चाहिये। (६५ सुत्तखेड) सूत्र—डोरा से खेलने की, (६६ वट्टखेडं) वर्त्त-रस्सी पर खेलने की, यहाँ पर समवायाङ्गोक्त—(चम्मखेड) चमडा से खेलना—इसका भी समावेश

प्रज्ञप्ति मां प्रतिपादन કરેલ (हिट्ठिजुद्धं) हस्तियुद्धनो અને 'राजप्रश्नीय' સૂત્રમાં બતાવેલ (असिजुद्ध) તલવારથી યુદ્ધ કરવાનો સમાવેશ થયેલો છે ૫૫ (निजुद्ध) મલ્લયુદ્ધની, ૫૬ (जुद्धाइजुद्ध) ખડ્ગ આદિ પ્રક્ષેપપૂર્વક [ઘા મારીને] મહાયુદ્ધ કરવાની, ૫૭ (मुट्ठिजुद्ध) મુષ્ટિયુદ્ધ કરવાની, ૫૮ (बाहुजुद्ध) બાહુથી યુદ્ધ કરવાની, ૫૯ (लयाजुद्ध) લતાયુદ્ધની, જે રીતે લતા [વેલ] વૃક્ષ ઉપર ચડીને નીચેથી ઉપર સુધી વૃક્ષને લપેટી લે છે તેની જ રીતે યોધા જે યુદ્ધમા સામેના યોધાના શરીરને ગાઢ-રૂપથી પીડા કરી જમીન ઉપર પાડી દે છે અને તેના ઉપર ચડી બેસે છે તે લતાયુદ્ધ છે, તેની, ૬૦ (ईसत्थं) ઈષુશાસ્ત્રની, 'ईसत्थ' અહીં પ્રાકૃત શૈલીથી ઈષુશાસ્ત્ર સમજી લેવુ જોઈએ નાગબાણ આદિ દિવ્ય અસ્ત્ર આદિનુ સૂચક જે શાસ્ત્ર છે તેનુ નામ ઈષુશાસ્ત્ર છે તેની, ૬૧ (छुरप्पवायं) છરાથી યુદ્ધ કરવાનો, ૬૨ (धणुव्वेय) ધનુર્વેદની, ૬૩ (हिरण्णपाग) રજતસિદ્ધિની, ૬૪ (सुवण्णपाग) સુવર્ણસિદ્ધિની, 'राजप्रश्नीय'

वट्टखेडं ६६, णालियाखेडं ६७, पत्तच्छेज्जं ६८, कडच्छेज्जं ६९, सज्जीवं ७०, निज्जीवं ७१, सउणरुय ७२-मिति वावत्तरिकलाओ सेहावित्ता सिक्खावेत्ता अम्मापिईणं उवणेहिति ॥ सू० ४६ ॥

'नालियाखेड' नालिकाखेलम्=द्यूतविशेषम्-मामूदिष्टदायाद विपरीतपाशकनिपतन मिति नालिकाया यत्र पाशक पात्यते । यद्यपि द्यूते एवास्य समावेशो भवितुमर्हति तथापि नालिकाखेलप्राधान्यज्ञापनार्थं भेदेन ग्रहणम् ६७, **'पत्तच्छेज्जं'** पत्रच्छेद्यम्=अष्टोत्तरशतपत्राणा मध्ये विवक्षितमत्र्याकपत्रच्छेदने हस्तलाघवम् ६८, **'कडच्छेज्जं'** कडच्छेद्यम्-कट (चटाई)-वत् क्रमाच्छेद्यं वस्तु यत्र विज्ञाने तत्तथा तत् ६९, **'सज्जीवं'** सजीव=सजीवकरण-मृतधात्वादीना सहजस्वरूपापादनम् ७०, **'निज्जीव'** निर्जीव=निर्जीवकरणम्-हेमादिधातुमारण पारदमारण वा ७१, **'सउणरुय'** शकुनरुतम्, अत्र शकुनपद रुतपद चोपलक्षणम्, तेन सर्वशकुनसग्रह, गतिचेष्टादिगवलोकनादिपरिग्रहश्च ७२, **'इति वावत्तरिकलाओ'** इति द्वासप्ततिकला=द्वासप्ततिपुरुषकला **'सेहावित्ता सिक्खावेत्ता'** सेधयित्वा शिक्षयित्वा च **'अम्मापिईणं उवणेहिति'** मातापित्रोरुपनेष्यति=समर्पयिष्यति ॥ सू ४६ ॥

हुआ है । (**६७ नालियाखेड**) द्यूतविशेष खेलने की-नालिका में पासे डालकर जुआ खेलने की, (**६८ पत्तच्छेज्ज**) पत्र छेदन करने की, १०८ पत्रों में से विवक्षित पत्र को छेदन करने मे हाथ की कुशलता की, (**६९ कडच्छेज्ज**) कट की अर्थात् चटाई की तरह क्रम २ से छेदन करने की, (**७० सज्जीव**) मारी हुई धातुओं को पुन प्रकृतिस्थ करने की, (**७१ निज्जीव**) निर्जीव करने की-हेमादिक धातुओं को मारने की, अथवा पारे को मारने की, (**७२ सऊणरुय**) पक्षियों के शब्द पहिचानने की उनकी गति, चेष्टा एव अवलोकन आदि जानने की कला, (**इति वावत्तरिकलाओ सेहावित्ता सिक्खावेत्ता अम्मापिईणं**

તેમજ 'સમવાયાંગ'મા કહેલ મણિપાક અને ધાતુપાકનો સમાવેશ અહીં કરવો જોઇએ ૬૫ (सुत्तखेड) સૂત્ર-દોરાથી રમવાની, ૬૬ (वट्टखेड) વર્ત-દોરડા પર રમવાની, અહીં સમવાયાંગમા કહેલ (चम्मखेड) 'ચામડાથી ખેલવુ' એનો પણ સમાવેશ કર્યો છે ૬૭ (नालियाखेड) દ્યુતવિશેષ રમવાની-નાલિકામા પાસા નાખીને જુગાર રમવાની, ૬૮ (पत्तच्छेज्ज) પત્ર કાપવાની, ૧૦૮ પત્રોમાથી વિવક્ષિત પત્રો કાપવામા હાથની કુશળતા ની, ૬૯ (कडच्छेज्ज) કટની-અર્થાત્ ચટાઈની પેઠે ક્રમક્રમથી છેદન કરવાની, ૭૦ (सज्जीव) મારેલી ધાતુઓને ફરીને પ્રકૃતિસ્થ કરવાની, ૭૧ (निज्जीव) નિર્જીવ કરવાની-હેમ આદિક ધાતુઓને મારવાની, અથવા પારાને મારવાની ૭૨ (सउणरुय) પક્ષિઓના શબ્દ સમજવાની, તેમની ગતિ, ચેષ્ટા તેમજ અવલોકન આદિ જાણવાની કળા (इति वावत्तरिकलाओ सेहावित्ता सिक्खावित्ता

मूलम्—तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स अम्मा-पियरो तं कलायरियं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्ला-लंकारेण य सक्कारेहिंति सम्माणेहिंति, सक्का-

टीका—'तए ण' इत्यादि। 'तए ण तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स अम्मापियरो त कलायरियं' ततः खलु तस्य दृढप्रतिज्ञस्य दारकस्य अम्बापितरौ त कलाचार्यं 'विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेण' विपुलेनाऽशनपानखाद्यस्वाद्येन 'वत्थ-गध-मल्ला-लंकारेण य सक्कारेहिंति सम्माणेहिंति' वस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण च सत्कारयिष्यतः सम्मानयिष्यतः—सुगमानि पदानि वाक्यानि च। 'सक्कारित्ता सम्माणित्ता' सत्कृत्य सम्मान्य 'विउलं जीवियारिहं पीइदाण दलइस्सति' विपुल जीवि-

उवणेहिंति) ये ७२ कलायें पुरुषकी हैं, इन कलाओं की शिक्षा कलाचार्य उसे देगा, पश्चात् वह उसे उसके मातापिता के पास लाकर सौंप देगा ॥ सू. ४६ ॥

'तए णं तस्स' इत्यादि।

(तए ण) इसके बाद (तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स) उस दृढ प्रतिज्ञकुमार के (अम्मापियरो) मातापिता (त कलायरियं) उस कलाचार्य का (विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-गंध-मल्ला-लंकारेण य सक्कारेहिंति) विपुल, अशन, पान, खादिम, स्वादिम, वस्त्र, गध, एव माला तथा अलकारों के प्रदान से खूब सत्कार करेंगे। (सम्माणेहिंति) खूब सन्मान करेंगे। (सक्कारित्ता सम्माणित्ता) सत्कार एव सन्मान करके पश्चात् वे उसे (विउलं जीवियारिहं पीइदाण दलइस्सति)

अम्मापिईणं उवणेहिंति) આ ૭૨ કળાઓ પુરુષની છે એ કળાઓની કલાચાર્ય તેને શિક્ષા આપશે પછી તે તેને તેના માતાપિતાની પાસે લાવીને સોંપી દેશે (સૂ૦ ૪૬)

'तए ण तस्स' ઇત્યાદિ

(तए णं) ત્યાર પછી (तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स) તે દઢપ્રતિજ્ઞ કુમારના (अम्मापियरो) માતાપિતા (त कलायरियं) તે કલાચાર્યને (विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-गध-मल्ला-लंकारेण य सक्कारेहिंति) વિપુલ અશન, પાન, ખાદિમ, સ્વાદિમ, વસ્ત્ર, ગંધ તેમજ માલા તથા અલંકારો આપીને ખૂબ સત્કાર કરશે, (सम्माणेहिंति) ખૂબ સન્માન કરશે (सक्कारित्ता सम्माणित्ता) સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને પછી તેઓ તેને (विउलं जीवियारिहं पीइदाण

रित्ता सम्माणित्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलइस्संति, दल-इत्ता पडिविसज्जेहिंति ॥ सू० ४७ ॥

मूलम्—तए णं से दढपइण्णे दारए बावत्तरिकला-पंडिए नवंगसुत्तपडिबोहिए अट्ठारसदेसभासाविसारए गीयरई

काऽऽर्हं प्रीतिदान दास्यत, 'दलइत्ता' दत्त्वा 'पडिविसज्जेहिंति' प्रतिविसर्जयिष्यत ॥ सू० ४७ ॥

टीका—'तए णं' इत्यादि। 'तए ण से दढपइण्णे दारए' तत खलु स दृढप्रतिज्ञो दारक 'बावत्तरिकलापंडिए' द्वासप्ततिकलापण्डित 'नवंगसुत्तपडिबोहिए' नवाङ्गसुप्तप्रतिबोधित -नवाङ्गानि=द्वे श्रोत्रे, द्वे नेत्रे, द्वे घ्राणे, एका च जिह्वा, त्वगेका, मनश्चैकमिति, तानि सुप्तानीव सुप्तानि—बाल्यादव्यक्तचेतनानि, तानि प्रतिबोधितानि=यौवनेन व्यक्तचेतनावन्ति कृतानि यस्य स तथा। 'गीयरई' गीतरति =गानप्रिय, 'गंधव्व-णट्ट-

विपुल रूप में जीविका के योग्य प्रीतिदान देंगे, (दलइत्ता पडिविसज्जेहिंति) और देकर उसे विसर्जित कर देंगे ॥ सू ४७ ॥

'तए णं से दढपइण्णे दारए' इत्यादि।

(तए ण) इस के बाद (से) वह (दढपइण्णे) दृढप्रतिज्ञ (दारए) कुमार (बावत्तरिकलापंडिए) बहत्तर कलाओं मे पडित (नवंगसुत्तपडिबोहिए) एव सुप्त नवांगों--२ कान, २ नेत्र, २ नासिका के छिद्र, १ जिह्वा, १ स्पर्शन इन्द्रिय और मन के प्रतिबोध—जागृति से युक्त—यौवनावस्था सपन्न होकर, (अट्ठारसदेसभासाविसारए) १८ देशों की भाषा का ज्ञाता होगा, (गीयरई गंधव्वणट्टकुसले) यह कुमार गीत मे

दलइस्सति) વિપુલ રૂપમાં જીવિકાને યોગ્ય પ્રીતિદાન આપશે (दलइत्ता पडिविसज्जेहिंति) અને આપીને તેમનુ વિસર્જન કરી દેશે (સૂ ४७)

'तए णं से दढपइण्णे दारए' ઇત્યાદિ

(तए ण) ત્યાર પછી (से) તે (दढपइण्णे) દૃઢપ્રતિજ્ઞ (दारए) કુમાર (बावत्तरिकलापडिए) બોતેર કળાઓમા પડિત (नवगसुत्तपडिबोहिए) તેમજ સુપ્ત નવ અંગો--૨ કાન, ૨ નેત્ર, ૨ નાસિકાના છિદ્ર, ૧ જીભ ૧ સ્પર્શન ઇંદ્રિય અને મનના પ્રતિબોધ—જાગૃતિથી યુક્ત—યૌવનાવસ્થા સપન્ન થઇને (अट्ठारसदेसभासाविसारए) ૧૮ દેશોની ભાષાનો જ્ઞાતા થશે (गीयरई

गंधव्वणट्टकुसले हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही बाहुप्पमद्दी वियालचारी साहसिए अलं भोगसमत्थे यावि भविस्सइ ॥ सू० ४८ ॥

मूलम्—तए णं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो बाव-

कुसले' गान्धर्व-नाट्यकुशल -गान्धर्वे=गीतविद्यायां नाट्ये=नाट्यशास्त्रे च कुशल =निपुण, 'अट्ठारस-देसभासा-विसारए' अष्टादश-देश-भाषा-विशारद, 'हयजोही' हय-योधी-हयेन=अश्वेन युध्यते तच्छीलो हययोधी, एव 'गयजोही रहजोही बाहुजोही' गजयोधी रथयोधी बाहुयोधी-ज्ञातव्य 'बाहुप्पमद्दी' बाहुप्रमर्दी-बाहुभ्यां प्रमृद्नाति तच्छीलो बाहुप्रमर्दी, 'वियालचारी' विकालचारी-निर्भयत्वाद्विकाले रात्रावपि चरति तच्छीलो विकालचारी, अत एव 'साहसिए' साहसिक =अतिशूर, 'अलं भोगसमत्थे' अलम्भोगसमर्थ -अलम्=अत्यर्थं भोगानुभवसमर्थ 'यावि भविस्सइ' चापि भविष्यति ॥ सू० ४८ ॥

टीका—'तए णं' इत्यादि। 'तए णं दढपइण्णं दारगं' तत खलु दृढ-

अनुराग वाला तथा गान्धर्वविद्या मे और नृत्यकला मे कुशल होगा। (हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही) यह अश्वयोधी, गजयोधी, रथयोधी और बाहुयोधी होगा। (बाहुप्पमद्दी वियालचारी साहसिए) यह बाहुप्रमर्दी होगा और अति शूर होगा, इस लिये इसे विकाल रात्रि मे भी आने-जाने में कोई भय नहीं होगा। (अलं भोगसमत्थे यावि भविस्सइ) तथा यह भोगसमर्थ भी होगा॥ सू ४८ ॥

'तए णं दढपइण्णं दारगं' इत्यादि।

(तए णं) बाद मे (दढपइण्णं दारगं) इस अपने दृढप्रतिज्ञ बालक को

गंधव्व-णट्ट-कुसले) એ કુમાર ગીતમાં, ગાંધર્વવિદ્યામાં અને નૃત્યકળામાં કુશળ થશે (हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही) એ અશ્વયોધી, ગજયોધી, રથયોધી, અને બાહુયોધી થશે (बाहुप्पमद्दी वियालचारी साहसिए) એ બાહુપ્રમર્દી થશે અને અતિ શૂરવીર થશે આ માટે તેને વિકાળ રાત્રિમાં પણ આવવા-જવામાં કોઈ જાતનો ભય થશે નહિ (अलं भोगसमत्थे यावि भविस्सइ) તથા આ ભોગસમર્થ પણ થશે (સૂ ૪૮)

'तए णं दढपइण्णं दारगं' ઇત્યાદિ

(तए णं) ત્યાર પછી (दढपइण्णं दारगं) આ પોતાના દૃઢપ્રતિજ્ઞ બાળકને

त्तरिकलापंडियं जाव अलं भोगसमत्थं वियाणित्ता विउलेहिं अण्णभोगेहिं पाणभोगेहिं वत्थभोगेहिं सयणभोगेहिं उवणिमंतेहिंति ॥ सू० ४९ ॥

मूलम्—तए णं से दढपइण्णे दारए तेहिं विउलेहिं अण्ण-

प्रतिज्ञ दारकम् 'अम्मापियरो' मातापितरौ 'बावत्तरिकलापडियं' द्वासप्ततिकलापण्डित 'जाव' यावत्—अत्र—यावच्छब्दाद्—अष्टादशदेशभाषाविशारद गीतरतिं गान्धर्वनाट्यकुशल हययोधिनम्—इत्यादीनि विशेषणानि द्वितीयैकवचनान्तानि ज्ञेयानि। 'अल भोगसमत्थ' अल भोगसमर्थम्—अलम्=अत्यर्थ भोगानुभवसमर्थ 'वियाणित्ता' विज्ञाय 'विउलेहिं अण्णभोगेहिं' विपुलैरन्नभोगै 'पानभोगेहिं' पानभोगैं 'लेणभोगेहिं' लयनभोगै.—चित्रशालाद्यावासनवनवाभोगै 'वत्थभोगेहिं' वस्त्रभोगै, 'सयणभोगेहिं' शयनभोगै 'उवणिमंतेहिंति' उपनिमन्त्रयिष्यत =भोगान् भुङ्क्ष्व—इति कथयिष्यत ॥ सू० ४९ ॥

टीका—'तए णं' इत्यादि। 'तए ण से दढपइण्णे दारए' तत खलु

(अम्मापियरो) मातापिता (बावत्तरिकलापडिय जाव अलभोगसमत्थ) ७२ कलाओं में पारगत तथा नवयौवनशाली एव भोग भोगने में समर्थ जानकर उसे (विउलेहिं) विपुल (अण्णभोगेहिं) अन्न के भोगों से, (पाणभोगेहिं) पान करने योग्य द्रव्यों के भोगों से, (लेणभोगेहिं) विविध चित्रों से सुशोभित प्रासाद के भोगों से, (वत्थभोगेहिं) सुन्दर २ वस्त्रों को इच्छानुसार पहरने रूप भोगों से एव (सयणभोगेहिं) शय्या आदि के भोगों से (उवणिमतेहिंति) आमन्त्रित करेंगे, अर्थात 'भोगों को भोगो' ऐसा उससे कहेंगे ॥ सू ४९ ॥

(अम्मापियरो) માતાપિતા (बावत्तरिकलापडिय जाव अल भोगसमत्थ) ૭૨ કળાઓમા પારગત અને નવયૌવનશાળી તેમજ ભોગ ભોગવવામા સમર્થ જાણીને તેને (विउलेहिं) વિપુલ (अण्णभोगेहिं) અન્નના ભોગોથી (पाणभोगेहिं) પાન કરવાને યોગ્ય દ્રવ્યના ભોગોથી (लेणभोगेहिं) વિવિધ ચિત્રોથી સુશોભિત પ્રાસાદ (મહેલ)ના ભોગોથી (वत्थभोगेहिं) સુદર સુદર વસ્ત્રોને ઈચ્છાનુસાર પહેરવા રૂપ ભોગોથી તેમજ (सयणभोगेहिं) શય્યા આદિના ભોગોથી (उवणिमतेहिंति) આમત્રિત કરશે, અર્થાત્ 'ભોગોને ભોગવો' એમ તેને કહેશે (સૂ ૪૯)

भोगेहिं जाव सयणभोगेहिं णो सज्जिहिति, णो रज्जिहिति, णो गिज्झिहिति, णो मुज्झिहिति, णो अज्झोववज्जिहिति ॥ सू० ५० ॥

मूलम्—से जहाणामए उप्पले इ वा पउमे इ वा कुसु-

स दृढप्रतिज्ञो दारक 'तेहिं विउलेहिं अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं' तैर्विपुलैरन्नभोगैर्यावच्छयनभोगै –अत्र यावच्छब्दात्पानलयनवस्त्रभोगैरिति ग्राह्यम्, 'णो सज्जिहिति' नो सङ्क्ष्यति–न सङ्ग=सम्बन्ध करिष्यति, 'णो रज्जिहिति' नो रङ्क्ष्यति–न राग=प्रेम भोगसम्बन्धहेतु करिष्यति, 'णो गिज्झिहिति' नो गर्द्धिष्यते=नो गृद्धिभाव करिष्यति, 'णो मुज्झिहिति' नो मोहिष्यति=मोह न करिष्यति 'णो अज्झोववज्जिहिति' नो अध्युपपत्स्यते=न तदेकाग्रमना भविष्यति ॥ सू० ५० ॥

टीका—'से जहाणामए' इत्यादि। 'से जहाणामए' अथ यथा नाम

'तए ण से दढपइण्णे' इत्यादि।

(तए ण) माता–पिता के इन वचनों को सुनने के बाद (से दढपइण्णे दारए) वह दृढप्रतिज्ञ कुमार (तेहिं विउलेहिं अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं णो सज्जिहिति) उन अन्न आदि विपुल भोगों मे बिलकुल ही आसक्तचित्त नहीं होगा। (णो रज्जिहिति) अनुरक्त नहीं होगा। (णो गिज्झिहिति) उनमें गृद्ध नहीं होगा, (णो मुज्झिहिति) मूर्च्छित नहीं होगा, और (णोअज्झोववज्जिहिति) न उनमे सर्वथा एकाग्रमन ही होगा ॥ सू ५० ॥

'से जहाणामए' इत्यादि।

इस सूत्र में "इ वा" ये शब्द वाक्यालंकार मे प्रयुक्त हुए हैं। (से जहाणा-

'तए ण से दढपइण्णे' ઇત્યાદિ

(तए णं) માતાપિતાના એવા વચન સાભળ્યા પછી, (से दढपइण्णे दारए) તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કુમાર (तेहिं विउलेहिं अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं णो सज्जिहिति) તે અન્ન આદિ વિપુલ ભોગોમા બિલકુલ જ મનની આસક્તિ રાખશે નહિ, (णो रज्जिहिति) અનુરક્ત થશે નહિ, (णो गिज्झिहिति) તેમા ગૃદ્ધ થશે નહિ, (णो मुज्झिहिति) મૂર્ચ્છિત થશે નહિ અને તેમા (णोअज्झोववज्जिहिति) સર્વથા એકાગ્રમન પણ થશે નહિ (સૂ ૫૦)

'से जहाणामए' ઇત્યાદિ

આ સૂત્રમા "इ वा" એ શબ્દ વાક્યાલ કારરૂપે વપરાયો છે. (से जहा-

मे इ वा नलिणे इ वा सुभगे इ वा सुगंधे इ वा पोंडरीए इ वा महापोंडरीए इ वा सयसपत्ते इ वा सहस्सपत्ते इ वा सयसहस्सपत्ते इ वा पंके जाए जले संवुड्ढे णोवलिप्पइ पंकरएणं, णोवलिप्पइ

'उप्पले इ वा' उत्पल—रक्तकमलम्, 'इवा' इति वाक्यालङ्कारे 'पउमे इ वा' पद्मम्—कमलमेव, 'कुसुमे इ वा' कुसुमम्, 'नलिणे इ वा' नलिनम्, 'सुभगे इ वा' सुभग—कमलविशेष, 'सुगधे इ वा' सुगन्धम्=सन्ध्याविकासिकमलविशेष, 'पोंडरीए इ वा' पुण्डरीक=श्वेतकमलम्, 'महापोंडरीए इ वा' महापुण्डरीक=विशाल श्वेतकमलम्, 'सयपत्ते इ वा' शतपत्रम्=कमलम्, 'सहस्सपत्ते इ वा' सहस्रपत्रम्, 'सयसहस्सपत्ते इ वा' शतसहस्रपत्रम्, एतानि सर्वाणि कमलजातीयान्येव। एतत्प्रत्येकम्—'पके जाये' पङ्के जातम्=कर्दमे समुत्पन्न 'जले सवुड्ढे' जले सवृद्धम्, 'णोवलिप्पइ पकरएण' नोपलिप्यते पङ्करजसा—पङ्क =कर्दम स एव रजो रेणुतुल्यत्वात्, तेन नोपलिप्यते=उपलिप्त न भवतीत्यर्थ । 'णोवलिप्पइ जल-

मए) जैसे (उप्पले इ वा) रक्त कमल, (पउमे इ वा) पद्मकमल (कुसुमे इ वा) कुसुम—पुष्प, (नलिणे इ वा) नलिन—कमलविशेष, (सुभगे इ वा) सुभग कमल, (सुगधे इ वा) सुगधकमल—सन्ध्याकालविकासी सौगन्धिक कमल, (पोंडरीए इ वा), पुण्डरीक—श्वेतकमल, (महापोंडरीए इ वा) महापुडरीक—विशाल श्वेतकमल, (सयपत्ते इ वा) शतपत्र कमल, (सहस्सपत्ते इ वा) सहस्रपत्र कमल, (सयसहस्सपत्ते इ वा) लक्षपत्र कमल, ये सब कमल की जातिया है। (पके जाए) ये कीचड उत्पन्न होते हैं, (जले सवुड्ढे) तथा जल मे बढते है, तो भी (णोवलिप्पइ पकरएण णोवलिप्पइ जलरएण) पक की रज से वे लिप्त नही होते है और न जल की रज से—बिन्दुओं से लिप्त

णामए) જેમકે (उप्पले इ वा) રક્ત કમળ, (पउमे इ वा) પદ્મ કમળ, (कुसुमे इ वा) કુસુમ-પુષ્પ, (नलिणे इ वा) નલિન—કમળવિશેષ, (सुभगे इ वा) સુભગ કમળ, (सुगधे इ वा) સુગંધ કમળ—સધ્યાકાળે વિકાસ પામે તેવુ સુગધવાળુ કમળ, (पोंडरीए इ वा) પુડરીક-શ્વેત કમળ, (महापोंडरीए इ वा) મહાપુડરીક-વિશાળ-શ્વેત કમળ (सयपत्ते इ वा) શતપત્ર કમળ, (सहस्सपत्ते इ वा) સહસ્રપત્ર કમળ, (सयसहस्सपत्ते इ वा) લક્ષપત્ર કમળ, એ બધી કમળની જાતિઓ છે (पके जाए) તે કીચડમા ઉત્પન્ન થાય છે, (जले सवुड्ढे) તથા જલમા વધે છે, તે પણ (णोवलिप्पइ पंकरएण व णालिप्पइ जलरएण) કીચડની રજથી તેઓ લિપ્ત થતા નથી, તેમજ જલના ટીપાથી એ લિપ્ત થતા નથી, (एवामेव से दढप

जलरएणं, एवामेव दढपइण्णेवि दारए कामेहिं जाए भोगेहिं संवुड्ढे णोवलिप्पिहिति कामरएणं,णोवलिप्पिहिति भोगरएणं, णोवलिप्पिहिति मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणेणं ॥ सू० ५१ ॥

मूलम्—से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं

रएण' नोपलिप्यते जलरजसा 'एवामेव दढपइण्णेवि दारए' एवमेव दृढप्रतिज्ञोऽपि दारक, 'कामेहिं जाए भोगेहिं संवुड्ढे' कामैर्जातो भोगै संवृद्ध 'णोवलिप्पिहिति' नोपलेप्स्यते, 'कामरएण' कामरजसा—काम =शब्दो रूप च, स एव रज कामरजस्तेन, 'णोवलिप्पिहिति' नोपलेप्स्यते 'भोगरएणं' भोगरजसा—भोग =गन्धो रस स्पर्शश्च, स एव रजो भोगरजस्तेन, 'णोवलिप्पिहिति मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-परिजणेण' नोपलेप्स्यते मित्र-ज्ञाति-निजक-स्वजन-सम्बन्धि परिजनेन—मित्राणि=सुहृद, ज्ञातय =सजातीया, निजका =भ्रातुष्पुत्रादय, स्वजना =मातुलादय, सम्बन्धिन =श्वशुरादय, परिजना =भृत्यादय, एतैर्न लिप्तो भविष्यति ॥ सू ५१ ॥

होते हैं, (एवामेव से दढपइण्णे वि दारए) इस तरह वह दृढप्रतिज्ञ कुमार भी (कामेहिं) कामों से—काम सेवन से (जाए) उत्पन्न होगा, (भोगेहिं संवुड्ढे) भोगों से वृद्धिंगत होगा, तो भी वह (कामरएण) काम रजसे (णोवलिप्पिहिति) उपलिप्त नहीं होगा, (भोगरएण णोवलिप्पिहिति) भोगरज से उपलिप्त नहीं होगा। गंध, रस, स्पर्श इन गुणों का नाम भोग है। शब्द तथा रूप का नाम काम है। भोगरज एवं कामरज इनमें रूपकालंकार है। (णोवलिप्पिहिति मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं) इसी तरह वह मित्र—सुहृद्, ज्ञाति—सजातीय, निजक—भतीजा आदि, स्वजन—मामा आदि, संबंधी—श्वशुर आदि एवं परिजन—भृत्य आदि परिकरों के साथ भी मोह को प्राप्त नहीं होगा ॥ सू ५१ ॥

इण्णे वि दारए) तेवीज रीते ते दृढप्रतिज्ञ कुमार पणु (कामेहिं) कामोथी—काम सेवनथी (जाए) उत्पन्न थशे, (भोगेहि संवुड्डे) भोगोथी वृद्धिगत थशे, तो पणु ते (कामरएण) कामरजथी (णोवलिप्पिहिति) उपलिप्त थशे नहि (भोगरएण णोवलिप्पिहिति) भोगरजथी उपलिप्त थशे नहि गंध, रस, स्पर्श ए गुणोनुं नाम भोग छे शब्द तथा रूपनुं नाम काम छे भोगरज तेमज कामरज एमां रूपक—अलंकार छे (णोवलिप्पिहिति मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-परिजणेण) आवी रीते ते मित्र—सुहृद, ज्ञाति—सजातीय, निजक—भ्रातृपुत्र (भत्रिजो) आदि, स्वजन—मामा आदि, संबंधी—श्वशुर आदि तेमज परिजन—नोकर आदि परिकरो—परिवारो साथे पणु मोहने प्राप्त करशे नहि (सू. ५१)

बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइ-हिति ॥ सू० ५२ ॥

मूलम्—से णं भविस्सइ अणगारे भगवंते ईरियास-मिए जाव गुत्तवंभयारी ॥ सू० ५३ ॥

टीका—'से णं' इत्यादि। 'से णं' स दृढप्रतिज्ञ खलु 'तहारूवाण' तथारूपाणा=सम्यग्ज्ञानादिसम्पन्नानां 'थेराण' स्थविराणाम्, 'अतिए' अन्तिके=समीपे 'केवल बोहिं' केवला बोधिं=विशुद्धं सम्यग्दर्शनं 'बुज्झिहिति' भोत्स्यते=ज्ञास्यति, अनुभविष्यतीत्यर्थ, 'बुज्झित्ता' बुद्ध्वा 'अगाराओ' अगारात्=गृहात्—गृह परित्यज्ये यर्थ, 'अणगारियं' अनगारिता=साधुत्व 'पव्वइहिति' प्रव्रजिष्यति=प्राप्स्यति ॥ सू ५२ ॥

टीका—'से णं' इत्यादि। 'से ण' स खलु दृढप्रतिज्ञो दारक 'भविस्सइ अणगारे' अनगारो भविष्यतीत्यन्वय, स कीदृशो भविष्यतीत्याह 'भगवते' भगवान्=अतिशयधारी, 'ईरियासमिए' ईर्यासमित =गमनक्रियाया यतनायुक्त, 'जाव' यावत्—यावच्छब्दात्—भाषासमित, एषणासमित, इत्यादि पञ्चसमितियुक्त, 'गुत्तबंभयारी' गुप्तब्रह्मचारी=गुप्तब्रह्मचर्यवान् ॥ सू ५३ ॥

'से ण तहारूवाण' इत्यादि।

(से ण) वह दृढप्रतिज्ञ कुमार नियम से (तहारूवाण थेराण) तथारूप-सम्यग्ज्ञान आदि गुणों से युक्त स्थविरों के (अतिए) पास (केवलं बोहिं) केवल बोधि को—विशुद्ध सम्यग्दर्शन को (बुज्झिहिति) प्राप्त करेगा—उसका अनुभव करेगा, (बुज्झित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति) अनुभव करने के बाद फिर वह अगार—अवस्था से विरक्त हो कर साधु अवस्था को प्राप्त करने वाला होगा ॥ सू ५२ ॥

'से ण भविस्सइ' इत्यादि।

(से ण) वह दृढप्रतिज्ञ कुमार (अणगारे भगवते) अनगार भगवंत

'से ण तहारूवाण' ઇત્યાદિ

(से ण) તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કુમાર નિયમથી (तहारूवाण थेराणं) તથારૂપ, સમ્યગ્જ્ઞાન આદિ ગુણોથી યુક્ત સ્થવિરોની (अतिए) પાસે (केवलं बोहिं) એક કેવળ વિશુદ્ધ સમ્યગ્દર્શનને (बुज्झिहिति) પ્રાપ્ત કરશે—તેનો અનુભવ કરશે, (बुज्झित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइहिति) અનુભવ કરી લીધા પછી તે અગાર—અવસ્થાથી વિરક્ત થઈને સાધુ—અવસ્થાને પ્રાપ્ત કરવાવાળો થશે (સૂ. ૫૨)

'से ण भविस्सइ' ઇત્યાદિ

(से ण) તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કુમાર (अणगारे भगवते) અનગાર ભગવન્ત (भवि

मूलम्—तस्स णं भगवंतस्स एएणं विहारेणं विहर-माणस्स अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडि-पुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जिहिति ॥ सू० ५४॥

टीका—'तस्स ण' इत्यादि। 'तस्स णं भगवंतस्स' तस्य खलु भगवतो दृढप्रतिज्ञस्याऽनगारस्य, 'एएण विहारेण विहरमाणस्स' एतेन विहारेण विहरत— 'अणंते' अनन्तम्=अनन्तार्थविषयम्, 'अणुत्तरे' अनुत्तर=सर्वोत्तमम्, 'णिव्वाघाए' निर्व्याघातं=व्याघाताद्बहिर्भूतम्—अप्रतिहतमित्यर्थः, 'निरावरणं' क्षायिकत्वादावरणरहितम्, 'कसिणे' कृत्स्नं=सकलार्थग्राहकम्, 'पडिपुण्णे' प्रतिपूर्णं=सकलस्वकीयांशयुक्तम्, 'केवलवरणाणदंसणे' केवलवरज्ञानदर्शनम्—केवलम्=असहायम् अतएव वरं=श्रेष्ठ ज्ञान

(भविस्सइ) होगा, अर्थात् उत्कृष्ट मुनिराज बनेगा, वह (इरियासमिए जाव गुत्तब-भयारी) ईर्यासमिति आदि पाच समितियों और तीन गुप्तियों का आराधक एव यावत् गुप्तब्रह्मचारी होगा ॥ सू० ५३ ॥

'तस्स णं भगवतस्स' इत्यादि।

(तस्स ण भगवंतस्स) उन अतिशय प्रभावविशिष्ट दृढप्रतिज्ञ मुनि को (एएण विहारेण विहारमाणस्स) इस प्रकार के विहार से विचरते हुए (अणंते) अनन्त पदार्थों के युगपत् जानने के साधक होने से अनन्त, (अणुत्तरे) सर्वोत्कृष्ट, (णिव्वा-घाए) निर्व्याघात, (णिरावरणे) आवरणरहित, (कसिणे) ज्ञान के पूर्ण विकास से सकलार्थग्राहक, (पडिपुण्णे) तथा अपने समस्त अविभागी अंशों में से किसी

स्सइ) થશે, અર્થાત્ ઉત્કૃષ્ટ મુનિરાજ બનશે, તે (इरियासमिए जाव गुत्तबभयारी) ઈર્યાસમિતિ આદિ પાચ સમિતિઓ અને ત્રણ ગુપ્તિઓના આરાધક તેમજ ગુપ્તબ્રહ્મચારી થશે (સૂ. ૫૩)

'तस्स ण भगवतस्स' ઇત્યાદિ

(तस्स ण भगवतस्स) તે અતિશય-પ્રભાવ-વિશિષ્ટ દૃઢપ્રતિજ્ઞ મુનિને (एएणं विहारेण विहरमाणस्स) એ પ્રકારના વિહારથી વિચરતા (अणते) અનત પદાર્થોને એકી સાથે જાણવામા સાધક હોવાથી અનત, (अणुत्तरे) સર્વોત્કૃષ્ટ, (णिव्वाघाए) નિર્વ્યાઘાત, (णिरावरणे) આવરણરહિત, (कसिणे) જ્ઞાનના વિકા-સથી સકળ અર્થોને જાણવા વાળા, (पडिपुण्णे) તથા પોતાના સમસ્ત અવિ-ભાગી અંશોમાથી કોઇ પણ અંશથી હીન નહિ એવા (केवलवरणाणदसणे)

मूलम्—तए णं दढपइण्णे केवली बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणिहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता, जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए अदंतवणए केसलोए

च दर्शनं चेति ज्ञानदर्शने, तत्र ज्ञानं विशेषाऽवबोधरूपम्, दर्शनं सामान्यावबोधरूपं 'समुपज्जिहिति' समुत्पत्स्यते=उदेष्यति ॥ सू० ५४ ॥

टीका—'तए णं' इत्यादि । 'तए णं से दढपइण्णे केवली' ततः खलु स दृढप्रतिज्ञः केवली 'बहूइं वासाइं केवलिपरियायं' बहूनि वर्षाणि केवलिपर्यायं 'पाउणिहिति' पालयिष्यति, 'पाउणित्ता' पालयित्वा, 'मासियाए सलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता' मासिक्या संलेखनयाऽऽत्मानं जूषित्वा=सेवित्वा 'सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता' षष्टिं भक्तानि अनशनेन छित्त्वा 'जस्सट्ठाए' यस्यार्थाय=यन्निमित्तं 'कीरइ'

भी अंश से हीन नहीं ऐसे (केवलवरणाणदंसणे) इन्द्रियों की सहायता आदि से रहित होने के कारण केवल—असहाय उत्तम ज्ञान एवं उत्तमदर्शन उत्पन्न होंगे ॥सू० ५४॥

'तए णं से दढपइण्णे केवली' इत्यादि।

(तए णं) इस के बाद (से दढपइण्णे केवली) वे दृढप्रतिज्ञ केवली भगवान् (बहूइं वासाइं) बहुत वर्षों तक (केवलिपरियागं) केवलिपर्याय का (पाउणिहिति) पालन करेंगे, (पाउणित्ता) पालन करके (मासियाए सलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता) एक मास की संलेखना से आत्मा को झोसकर (सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता) एवं साठ भक्तों का अनशन से छेदकर (जस्सट्ठाए) जिसके निमित्त (नग्गभावे) नग्न

ઇંદ્રિઓની સહાયતા આદિથી રહિત હોવાને કારણે કેવળ—અસહાય એવા ઉત્તમ જ્ઞાન તેમજ દર્શન ઉત્પન્ન થશે (સૂ ૫૪)

'तए णं से दढपइण्णे केवली' ઇત્યાદિ

(तए णं) ત્યાર પછી (से दढपइण्णे केवली) તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કેવલી ભગવાન (बहूइं वासाइं) ઘણાં વરસો સુધી (केवलिपरियागं) કેવલીપર્યાયનું (पाउणिहिति) પાલન કરશે, (पाउणित्ता) પાલન કરીને (मासियाए सलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता) એક માસની સંલેખનાથી આત્માને સેવીને, (सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता) તેમજ સાઠ ભક્તોને અનશનથી છેદન કરીને (जस्सट्ठाए) જેના નિમિત્ત

वंभचेरवासे अच्छत्तगं अणोवाहणगं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा परघरपवेसो लद्धावलद्धं, परेहिं हीलणाओ खिंसणाओ

क्रियते, 'नग्गभावे' नग्नभाव 'मुंडभावे' मुण्डभाव, 'अण्हाणए' अस्नानम्=स्नानवर्जनम्, 'अदंतवणए' अदन्तधावनम्=दन्तधावनवर्जनम्, 'केसलोए' केशलोच=केशानां लुञ्चनम्, 'वंभचेरवासे' ब्रह्मचर्यवास=ब्रह्मचर्यपालन, 'अच्छत्तगं' अच्छत्रकम्=छत्रधारणवर्जनम्, 'अणोवाहणगं' अनुपानत्क=पादत्राणराहित्य, अश्वशिबिकादिवाहनराहित्य च, 'भूमिसेज्जा' भूमिशय्या, 'फलहसेज्जा' फलकशय्या, 'कट्ठसेज्जा' काष्ठशय्या, 'परघरपवेसो' परगृहप्रवेश -भिक्षार्थमपि यथ्याहार्यमपि यर्थ, 'लद्धावलद्ध' लब्धापलब्धम्-सत्कारादिना लब्ध=लाभ -प्राप्ति, अपलब्धम्-अपमानेन प्राप्ति क्रियते इति पूर्वेण सम्बन्ध। तथा-'परेहिं हीलणाओ' परेषा हेलना=अवज्ञा -परकृता जन्मकर्ममर्मोद्घाटना, यथा-

भाव, (मुंडभावे) मुण्डभाव, (अण्हाणए) स्नान का परित्याग, (अदंतवणए) दाँतो के प्रक्षालन करने का परित्याग, (केसलोए) केशों का लोच करना, (वंभचेरवासे) ब्रह्मचर्य का पालन, (अच्छत्तग) छत्र धारण नहीं करना, (अणोवाहणग) विना जूतों के चलना, अश्व पर, शिबिका पर, वाहन पर नहीं बैठना, (भूमिसेज्जा) भूमि पर शयन करना, (फलहसेज्जा) काष्ठ के पाटिये पर सोना, (कट्ठसेज्जा) साधारण काष्ठ पर सोना, (परघरपवेसो) दूसरों के घर भिक्षावृत्ति के लिये जाना, (लद्धावलद्धं) मान और अपमान-पूर्वक प्राप्त भिक्षा मे समभाव रखना, ये सव (कीरइ) किये जाते हैं, और जिसके निमित्त (परेहिं हीलणाओ) परकृत अवज्ञाओं को-जैसे 'अरे ! तू जारजात (दोगला) है' इस प्रकार के अनादर वचनों का, (खिंसणाओ) लोगों के द्वारा खिजाने का-लोकों

(नग्गभावे) नग्नभाव, (मुंडभावे) मुंडभाव, (अण्हाणए) स्नानने परित्याग, (अदंतवणए) दातोनु प्रक्षालन करवाने परित्याग, (केसलोए) केशोनु लुंचन करवु, (वंभचेरवासे) ब्रह्मचर्यनु पालन करवु, (अच्छत्तग) छत्र धारण न करवु, (अणोवाहणग) जोडा पहेर्या विना चालवु, अश्वपर, शिबिकापर (पालखी पर), वाहन पर न बेसवु, (भूमिसेज्जा) भूमिपर शयन करवु, (फलहसेज्जा) लाकडाना पाटिया पर सुवु, (कट्ठसेज्जा) साधारण लाकडा पर सुवु, (परघरपवेसो) बीजाने घेर भिक्षावृत्ति माटे जवु, (लद्धावलद्ध) मान-अपमानमा समभाव राखवो, ए बधु (कीरइ) करवामा आवे छे, अने जेना निमित्ते (परेहिं हीलणाओ) बीजाए करेली अवज्ञाओ. जेवी के 'अरे ! तु जारजात छे' आ प्रकारना अनादरना वचनो, (खिंसणाओ) लोकोना

निंदणाओ गरहणाओ तालणाओ तज्जणाओ परिभवणाओ पव्वहणाओ उच्चावया गामकंटगा बावीसं परिसहोवसग्गा अहि-

'जारजातोऽसि' इत्यादिरूपा इत्यर्थः। 'खिंसणाओ' खिंसना=लोकसमक्ष मर्मोद्घाटनम्, 'निंदणाओ' निन्दना=मनसा जुगुप्सा, 'गरहणाओ' गर्हणा=समक्षे क्रियमाणा जुगुप्सा, 'तालणाओ' ताडना=चपेटादिदानानि, 'तज्जणाओ' तर्जना=अङ्गुल्यादिप्रदर्शनपूर्वक कटुवचनकथनानि, 'परिभवणाओ' परिभावनास्तिरस्कारा, 'पव्वहणाओ' प्रव्यथना=पीडोत्पादना, 'उच्चावया' उच्चावचा=अनेकविधा, 'गामकंटगा' ग्रामकण्टका,-ग्राम=समूह, स चेन्द्रियाणामिह प्रकरणवशाद् गृह्यते, इन्द्रियाणां प्रतिकूलाः शब्दादय इत्यर्थः, 'बावीस परीसहोवसग्गा' द्वाविंशति परीषहोपसर्गाः 'अहियासिज्जंति' अधिसह्यन्ते, 'तमट्ठमाराहित्ता' तमर्थमाराध्य=आत्मकल्याणरूप तमर्थं साधयित्वा 'चरिमेहिं उस्सासणिस्सासेहिं' चरमैरुच्छ्वासनिःश्वासैः 'सिज्झिहिति' सेत्स्यति=

के समक्ष अपने मर्मों के उद्घाटनों का, (णिंदणाओ) अपने प्रति लोगों के मानसिक घृणाओं का, (गरहणाओ) लोगों द्वारा प्रत्यक्षरूप से की गयी घृणाओं का, (तालणाओ) थप्पड़ आदि की ताडना का, (तज्जणाओ) अंगुली-निर्देश-पूर्वक कहे हुए कटु वचनों का, (परिभवणाओ) तिरस्कारों का, (पव्वहणाओ) पीडाजनक परिस्थितियों का, (उच्चावया) अनेक प्रकार के, (गामकंटगा) इन्द्रियों के प्रतिकूल शब्दादिकों का, (बावीस परीसहोवसग्गा) बाईस प्रकार के परीषहों का, एवं परकृत उपसर्गों का (अहियासिज्जंति) सहन किया जाता है, (तमट्ठमाराहित्ता) वे दृढप्रतिज्ञ केवली भगवान् उस आत्मकल्याण रूप अर्थ को आराधित करके (चरिमेहिं उस्सासणिस्सासेहिं)

દ્વારા થતી ખીજવણીનુ-લોકો સમક્ષ પોતાની મार्मिક વાતોનો પ્રકાશ થાય તેનુ, (णिंदणाओ) પોતાના પ્રતિ લોકોની માનસિક ઘૃણાઓનુ, (गरहणाओ) લોકોથી પ્રત્યક્ષરૂપે કરાયેલી ઘૃણાઓનુ, (तालणाओ) થપ્પડ-આદિથી માર ખાવાનુ, (तज्जणाओ) આગળી ચીધીને કહેલા કટુ વચનોનુ (परिभवणाओ) તિરસ્કારોનુ, (पव्वहणाओ) પીડાજનક પરિસ્થિતિઓનુ, (उच्चावया) અનેક પ્રકારના (गामकटगा) ઇદ્રિયોને પ્રતિકૂળ શબ્દ આદિનુ, તથા (बावीस परीसहोवसग्गा) બાવીસ પ્રકારના પરીષહોનુ તેમજ બીજાએ કરેલા ઉપસર્ગોનુ (अहियासिज्जति) સહન કરાય છે (तमट्ठमाराहित्ता) તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કેવલી ભગવાન તે આત્મકલ્યાણરૂપ અર્થને આરાધિત કરીને (चरमेहिं उस्सास-निस्सासेहिं) અન્તિમ ઉચ્છવાસ-નિશ્વાસોથી (सिज्झिहिति) કૃતકૃત્ય થઈ જશે

यासिज्झंति, तमट्ठमाराहित्ता चरिमेहिं उस्सासणिस्सासेहिं सिज्झिहिति, बुज्झिहिति, मुच्चिहिति, परिणिव्वाहिति, सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ॥ सू० ५४ ॥

मूलम्—से जे इमे गामा-गर-जाव-सण्णिवेसेसु पव्वइया समणा भवंति, तं जहा-आयरियपडिणीया उवज्झाय-

कृतकृत्यो भविष्यति, 'बुज्झिहिति' भोत्स्यते=समस्तानर्थान् केवलज्ञानेन ज्ञास्यति, 'मुच्चिहिति' मोक्ष्यते-सकलकर्मांशैः, 'परिणिव्वाहिति' परिनिर्वास्यति=कर्मकृतसन्तापाऽभावेन शीतलीभविष्यति, 'सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति' सर्वदुःखानाम्=शारीरमानसानां सकलदुःखानामन्तं करिष्यतीति ॥ सू० ५५ ॥

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। "से जे इमे' अथ य इमे 'गामा-गर-जाव-सण्णिवेसेसु' ग्रामाऽऽकर-यावत्-सन्निवेशेषु, 'पव्वइया समणा भवंति' प्रव्रजिता श्रमणा भवन्ति, ते कीदृशाः सन्तीत्यत्राऽऽह-'तंजहा' तद्यथा-'आयरियपडिणीया' आचार्यप्रत्यनीका=आचार्यविरोधिन, 'उवज्झायपडिणीया' उपाध्यायप्रत्यनीका,

अन्तिम उच्छ्वासनिश्वासों से (सिज्झिहिति) कृतकृत्य हो जायेंगे, (बुज्झिहिति) समस्त चराचर पदार्थों को केवलज्ञानरूपी आलोक-प्रकाश से जान जायेंगे, (मुच्चिहिति) समस्त कर्मांशों से छूट जायेंगे, (परिणिव्वाहिति) कर्मकृत सन्ताप के अभाव से शीतलीभूत हो जायेंगे, (सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति) समस्त शारीरिक, मानसिक दुःखों का अन्त कर देंगे ॥ सू ५५ ॥

'से जे इमे' इत्यादि।

(से जे इमे) वे जो (गामा-गर-जाव सन्निवेसेसु) ग्राम, आकर से लेकर सन्निवेश तक के स्थानों में (पव्वइया समणा) प्रव्रजित साधु होते हैं, जैसे-(आयरियपडिणीया) आचार्य के प्रत्यनीक-विरोधी, (उवज्झायपडिणीया) उपाध्याय के विरोधी,

(मुच्चिहिति) સમસ્ત કર્મોના અંશોથી છૂટી જશે, (परिणिव्वाहिति) કર્મથી થતા સંતાપના અભાવથી શીતલીભૂત થઇ જશે, (सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति) સમસ્ત શારીરિક, માનસિક દુઃખોનો અન્ત કરી દેશે (સૂ ૫૫)

'से जे इमे' ઇત્યાદિ

(से जे इमे) તેઓ કે જે (गामा-गर-जाव-सन्निवेसेसु) ગામ આકર આદિથી લઇને સન્નિવેશ સુધીના સ્થાનોમાં (पव्वइया समणा) પ્રવ્રજિત સાધુ હોય છે, જેવા કે (आयरियपडिणीया) આચાર્યના પ્રત્યનીક-વિરોધી,

पडिणीया कुलपडिणीया गणपडिणीया आयरियउवज्झायाणं अयसकारगा अवण्णकारगा अकित्तिकारगा बहूहिं असब्भावु-ब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा विहरित्ता बहूइं वासाइं सामण्ण-

'कुलपडिणीया' कुलप्रत्यनीकाः, 'गणपडिणीया' गणप्रत्यनीकाः, 'आयरियउव-ज्झायाणं अयसकारगा' आचार्योपाध्यायानामयशस्कारकाः, 'अवण्णकारगा' अवर्ण-कारकाः=निन्दकाः 'अकित्तिकारगा' अकीर्तिकारकाः, "बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य' बह्वीभिरसद्भावोद्भावनाभिः मिथ्यात्वाभिनिवेशैश्च—असद्भावानाम्=अविद्यमानार्थानाम् असद्भावना=आरोपणास्ताभिः, तथा च—मिथ्यात्वाभिनिवेशैश्च=आशात-नाजनितैर्मिथ्याग्रहैः, 'अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा' आत्मानं च परञ्च तदुभयञ्च व्युद्ग्राहयन्तः=आशातनारूपे पापे नियोजयन्तः, 'वुप्पाएमाणा' व्युत्पा-दयन्तः=आशातनारूपं पापमुपार्जयन्तः, 'विहरित्ता' विहृत्य, 'बहूइं वासाइं सामण्ण

(कुलपडिणीया) कुल के प्रत्यनीक, (गणपडिणीया) गण के प्रत्यनीक, (आयरिय-उव-ज्झायाणं अयसकारगा अवण्णकारगा) आचार्य एवं उपाध्यायों के अयशस्कारक, तथा अव-र्णवादकारक—निंदा करने वाले, (अकित्तिकारगा) अकीर्तिकारक, (बहूहिं असब्भावुब्भाव-णाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य) अनेक असद्भावों की उद्भावना—दोषों के अभाव में भी दोषों को उनमें प्रकट करने—से, मिथ्यात्व के अभिनिवेशों—आशातनाजनित मिथ्याग्रहों—से (अप्पाणं परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा) अपने आपको एवं दूसरों को तथा साथ में दोनों को आशातनारूप पाप में नियोजित करते हुए, स्वयं आशातना रूप

(उवज्झायपडिणीया) ઉપાધ્યાયના વિરોધી, (कुलपडिणीया) કુલના વિરોધી, (गणपडिणीया) ગણના વિરોધી, (आयरियउवज्झायाणं अयसकारगा अवण्णकारगा) આચાર્ય તેમજ ઉપાધ્યાયોના અયશકારક, અવર્ણવાદકારક—નિંદા કરવાવાળા, (अकित्तिकारगा) અકીર્તિકારક, તેઓ (बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभि णिवेसेहि य) અનેક અસદ્‌ભાવોની ઉદ્‌ભાવનાથી—દોષો ન હોય તેમાં પણ દોષો પ્રકટ કરવાથી, મિથ્યાત્વના અભિનિવેશોથી—આશાતનાજનિત મિથ્યા-આગ્ર-હોથી, (अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा) પોતે પોતાને તેમજ બીજાને તથા બન્નેને સાથે જ આશાતનારૂપ પાપમાં નિયોજિત કરતા કરતા,

परियागं पाउणति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय-अप्पडिकंता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं लंतए कप्पे देवकिव्विसिएसु देवकिव्विसियत्ताए उववत्तारो भवंति, तहिं तेसिं गई,

परियायं पाउणंति, पाउणित्ता' बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयन्ति, पालयित्वा 'तस्स ठाणस्स' तस्य स्थानस्य=तस्य प्रत्यनीकताजिन्जातस्य पापस्थानस्य, 'अणालोइय-अप्पडिकत्ता' अनालोचिताऽप्रतिक्रान्ता=गुरुसमीप आलोचनाया प्रतिक्रमणस्य चाकरणेन दोषादनिवृत्ता सन्त 'कालमासे काल किच्चा', कालमासे काल कृत्वा 'उक्कोसेणं लंतए कप्पे देवकिव्विसिएसु' उत्कर्षेण लान्तके कल्पे=लान्तकनामके षष्ठे देवलोके देवकिल्बिषिकेषु 'देवकिव्विसियत्ताए उववत्तारो भवंति' देवकिल्बिषिकतया उत्पत्तारो

पाप का उपार्जन करते हुए (विहरित्ता बहूइं वासाइं) इस भूमडल पर विचरण करते रहते है, और इतस्तत उसका प्रचार करते २ ही अनेक वर्षों तक उस साधुपर्याय को पालते है, वे (तस्स ठाणस्स अणालोइय-अप्पडिकंता) उन पापस्थानों की आलोचना नहीं कर के, उन पापस्थानों का प्रतिक्रमण नहीं करके (कालमासे काल किच्चा) काल अवसर में काल कर (उक्कोसेणं) उत्कृष्ट (लंतए कप्पे देवकिव्विसिएसु देवकिव्विसियत्ताए उववत्तारो भवंति) लान्तक नामके छठवें देवलोक में किल्बिषिक देवों में किल्बिषिक जाति के देव होते हैं। इनको जो देवपर्याय मिलती है वह विशिष्ट श्रामण्यजन्य है, अर्थात् बालतप के प्रभाव से प्राप्त होती है, परंतु वहा किल्बिषिक देवों मे जो जन्म होता है वह तो आचार्यादिक की प्रत्यनीकता के फल से होता हे। जिस प्रकार लोक में चांडाल आदि हुआ करते हैं उसी

(विहरित्ता बहूइं वासाइं) આ ભૂમંડળ ઉપર વિચરણ કરતા રહે છે, અને આમ-તેમ તેનો પ્રચાર કરતા કરતા જ અનેક વરસો સુધી તે સાધુપર્યાયનું પાલન કરે છે, તેઓ (तस्स ठाणस्स अणालोइय-अप्पडिक्कंता) તે પાપ-સ્થાનોની આલોચના ન કરતા, તે પાપસ્થાનનું પ્રતિક્રમણ ન કરતા (कालमासे कालं किच्चा) કાલ અવસરે કાલ કરીને (उक्कोसेणं) ઉત્કૃષ્ટ (लंतए कप्पे देवकिव्विसिएसु देवकिव्विसियत्ताए उववत्तारो भवंति) લાન્તક નામના છઠ્ઠા દેવ-લોકમાં કિલ્બિષિક દેવોમાં કિલ્બિષિક જાતિના દેવ થાય છે તેમને જે દેવ-પર્યાય મળે છે, તે વિશિષ્ટ શ્રમણ્ય ધર્મ પાળવાથી જ મળે છે, અર્થાત્ બાલ-તપના પ્રભાવથી પ્રાપ્ત થાય છે, પરંતુ ત્યાં જે કિલ્બિષિક દેવોમાં જન્મ થાય છે એ તો આચાર્ય આદિકની પ્રત્યનીકતાના ફળથી થાય છે

तेरस सागरोवमाइं ठिई, अणाराहगा, सेसं तं चेव ॥ सू० ५६ ॥

मूलम्—से जे इमे सण्णि–पंचिंदिय–तिरिक्ख–जोणिया पज्जत्तया भवंति, तं जहा–जलयरा थलयरा खहयरा,

भवन्ति=उपयन्ते, एतेषा निशिष्टश्रामण्यजन्य देवत्व, प्रत्यनीकताजन्य किल्बिषिकत्व, तेन ते देवेषु चाण्डालतुल्या भवन्ति। 'तहिं तेसिं गई' तत्र तेषा गतिः, 'तेरस सागरोवमाइ ठिई' त्रयोदश सागरोपमाणि स्थिति। 'अणाराहगा' अनाराधका भवन्ति। 'सेस त चेव' शेष तदेव ॥ सू० ५६ ॥

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे' अथ य इमे 'सण्णि–पंचिंदिय–तिरिक्खजोणिया पज्जत्तया भवंति' संज्ञि–पञ्चेन्द्रिय–तिर्यग्योनिका पर्याप्ता भवन्ति, के ते? इत्याह–'त जहा' तद्यथा–'जलयरा थलयरा खहयरा' जलचरा स्थलचरा खेचरा 'तेसिं णं अत्थेगइयाणं सुभेणं परिणामेण पसत्थेहिं अज्झ-'

प्रकार देवों में किल्बिषिक जाति के देव होते हैं। (तहिं तेसिं गई) वहाँ पर उनकी गति होती है। वहा (तेरस सागरोवमाइ ठिई) १३ सागर की उनकी स्थिति होती है, (अणाराहगा सेस त चेव) ये जीव अनाराधक होते हैं। इस विषयमें अवशिष्ट पूर्ववत् समझना चाहिये ॥ सू ५६ ॥

'जे इमे' इत्यादि।

(जे इमे सण्णि–पंचिंदिय–तिरिक्ख–जोणिया) जो ये संज्ञि–पंचेन्द्रिय–तिर्यञ्च–योनि के पर्याप्त जीव हैं, (त जहा) जैसे–(जलयरा थलयरा खहयरा) जलचर, स्थलचर और खेचर। (तेसिं ण अत्थेगइयाण सुभेणं परिणामेण पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं)

જેવી રીતે લોકમા ચાડાલ આદિ હોય છે તેવી જ રીતે દેવોમા કિલ્બિષિક જાતિના દેવ હોય છે (तहिं तेसिं गई) ત્યા તેમની ગતિ હોય છે ત્યા (तेरस सागरोवमाइ ठिई) ૧૩ સાગરની તેમની સ્થિતિ હોય છે (अणाराहगा सेस त चेव) આ વિષયમા બાકીનુ બધુ અગાઉ પ્રમાણે સમજવું જોઇએ એ જીવ અનારાધક હોય છે (સૂ ૫૬)

'से जे इमे' ઇત્યાદિ

(से जे इमे सण्णि–पंचिंदिय–तिरिक्ख–जोणिया) જે આ સંજ્ઞી–પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ–યોનિના પર્યાપ્ત જીવો છે, (त जहा) જેવા કે (जलयरा थलयरा खहयरा) જલચર, સ્થલચર અને ખેચર (तेसिं ण अत्थेगइयाण सुभेणं परिणामेण

तेसिं णं अत्थेगइयाणं सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहा-वूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणाणं सण्णि-पुव्वजाई- सरणे समुप्पज्जइ ॥ सू० ५७ ॥

मूलम्—तए णं समुप्पण्णजाइसरणा समाणा सयमेव

वसाणेहिं लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं ' तेषा खलु अस्ति एकेषा शुभेन परिणामेन प्रशस्तैर-ध्यवसानैर्लेश्याभिर्विशुद्धयमानाभि, तदावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण ' तदा-वरणीयाना कर्मणा क्षयोपशमेन, अतएव ' ईहा-वूह-मग्गण-गवेसण करेमाणाणं ' ईहा-व्यूह-मार्गण-गवेषण कुर्वताम्, एषा पदाना व्याख्या अत्रैवोत्तरार्धे एकत्रिंशत्तमसूत्रे गता। ' सण्णिपुव्वजाईसरणे ' सज्ञिपूर्वजातिस्मरण=पूर्वसज्ञिभवस्मरण, ' समुप्पज्जइ ' समुत्पद्यते ॥ सू० ५७ ॥

टीका—' तए ण ' इत्यादि। ' तए णं समुप्पण्णजाइसरणा समाणा '

उनमें कितनेक जीव, शुभ परिणामों से, प्रशस्त अध्यवसायों से, (विसुज्झमाणीहिं लेस्साहिं) विशुद्ध लेश्याओं—लेश्या की विशुद्धि से, तथा-(तयावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण) तदावरणीय—ज्ञानावरणीय एव वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम से (ईहा-वूह-मग्गण-गवेसण करेमाणाण) ईहा, व्यूह, मार्गण एव गवेषण करते हैं, करते करते, (सण्णि-पुव्व-जाई-सरणे समुप्पज्जइ) सज्ञित्व अवस्था के पूर्वभवों की स्मृति—जाति-स्मरण ज्ञान—पाते हैं। (ईहा) आदि पदों की व्याख्या यहीं उत्तरार्ध के एकतीसवें सूत्र में देखें ॥ सू ५७ ॥

पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं) तेमा केटलाक જીવોને કે જે શુભ પરિણામોથી, પ્રશસ્ત અધ્યવસાયોથી (विसुज्झमाणीहिं लेस्साहिं) વિશુદ્ધ લેશ્યાઓ-લેશ્યાઓની પવિત્રતાથી, તથા (तयावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेणं) તદાવરણીય-જ્ઞાનાવરણીય તેમજ વીર્યાન્તરાય કર્મના ક્ષયોપશમથી, (ईहा-वूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणाणं) ઈહા, વ્યૂહ, માર્ગણ તેમજ ગવેષણ કરતા કરતા (सण्णिपुव्वजाईसरणे समुप्पज्जइ) સંજ્ઞિત્વ અવસ્થાના પૂર્વ ભવોની સ્મૃતિ-જાતિસ્મરણજ્ઞાન-ઉત્પન્ન થાય છે 'ईहा' આદિ પદોનો અર્થ એ જ સૂત્રના ઉત્તરાર્ધમા એકત્રીશમા સૂત્રમા જુઓ (સૂ ૫૭)

पंचाणुव्वयाइं पडिवज्जंति, पडिवज्जित्ता बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहो-ववासेहिं अप्पाणं भावेमाणा बहूइं वासाइं आउयं पालेंति, पालित्ता भत्तं पच्चक्खंति, बहूइं भत्ताइं

तत खलु समुत्पन्नजातिस्मरणा सन्त 'सयमेव' स्वयमेव, 'पंचाणुव्वयाइं' पञ्चाणुव्रतानि 'पडिवज्जंति' प्रतिपद्यन्ते=स्वीकुर्वन्ति, 'पडिवज्जित्ता' प्रतिपद्य 'सीलव्वय-गुण-विरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं' शीलव्रत-गुण-विरमण-प्रत्याख्यान-पोषधोपवासैः; 'अप्पाणं भावेमाणा' आत्मानं भावयन्तः; 'बहूइं वासाइं' बहूनि वर्षाणि 'आयुयं' आयुष्कं 'पालेंति' पालयन्ति, 'पालित्ता' पालयित्वा 'भत्तं' भक्तं 'पच्चक्खंति' प्रत्याख्यान्ति, 'बहूइं भत्ताइं' बहूनि भक्तानि 'अणसणाए' अनशनेन 'छेदेंति'

'तए णं समुप्पण्णजाइसरणा' इत्यादि।

(तए णं) तब (समुप्पण्णजाइसरणा समाणा) जातिस्मरणज्ञानयुक्त वे जीव, उस ज्ञान के प्रभाव से (सयमेव) स्वयं ही (पंचाणुव्वयाइं) पांच अणुव्रतों को स्वीकार कर लेते है। (पडिवज्जित्ता बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण पच्चक्खाण-पोसहो-ववासेहिं) स्वीकार कर शीलव्रतों से, गुणव्रतों से, हिंसादिक पापों के त्याग से, प्रत्याख्यानों से एवं पोषधोपवासों से (अप्पाणं भावेमाणा) अपनी आत्मा को भावित करते हुए (बहूइं वासाइं) अनेक वर्षों तक (आउयं पालेंति) आयुष पालते हैं, (पालित्ता) आयुष पालकर वे (भत्तं पच्चक्खंति) भक्तप्रत्याख्यान करते है। (बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति) अनशन से अनेक भक्तों का छेदन करते हैं, (छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे

'तए णं समुप्पण्णजाइसरणा' ઇત્યાદિ

(तए णं) ત્યારે (समुप्पण्णजाइसरणा समाणा) જાતિ-સ્મરણ-જ્ઞાનયુક્ત તે જીવ એ જ્ઞાનના પ્રભાવ વડે (सयमेव) પોતે જ (पंचाणुव्वयाइं) પાંચ અણુવ્રતોનો સ્વીકાર કરી લે છે (पडिवज्जित्ता बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहो-ववासेहिं) સ્વીકાર કરીને શીલવ્રતોથી, ગુણવ્રતોથી, હિંસા આદિક પાપોના ત્યાગથી, પ્રત્યાખ્યાનોથી તેમજ પૌષધોપવાસોથી (अप्पाणं भावेमाणा) પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા કરતા (बहूइं वासाइं) અનેક વરસો સુધી (आउयं पालेंति) આયુષ્ય પાળે છે, (पालित्ता) આયુષ્ય પાળીને તેઓ (भत्तं पच्चक्खंति) ભક્તપ્રત્યાખ્યાન કરે છે, (बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति) અનશનથી અનેક ભક્તોનું છેદન કરે છે, (छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहि-

अणसणाए छेदेति, छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता काल-मासे कालं किच्चा उक्कोसेणं सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तहिं तेसिं गई, अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, परलोयस्स आराहगा, सेसं तं चेव ॥ सू० ५८ ॥

मूलम्—से जे इमे गामागर जाव संनिवेसेसु आजी-

छिन्दन्ति, 'छेदित्ता' छित्वा 'आलोइयपडिक्कंता' आलोचितप्रतिक्रान्ता, 'समाहिपत्ता' समाधिप्राप्ता, 'कालमासे कालं किच्चा' कालमासे=कालावसरे कालं कृत्वा, 'उक्कोसेणं' उत्कर्षेण 'सहस्सारे कप्पे' सहस्रारे कल्पे–सहस्रारनामके अष्टमे देवलोके 'देवत्ताए' देवत्वेन 'उववत्तारो भवंति' उपपत्तारो भवन्ति=उपपद्यन्ते, 'तहिं तेसिं गई' तत्र तेषां गतिः, 'अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता' अष्टादश सागरोपमाणि स्थितिः प्रज्ञप्ता, 'परलोगस्स आराहगा' परलोकस्याराधकाः, 'सेसं तं चेव' शेषं तदेव ॥ सू० ५८ ॥

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे' अथ ये इमे 'गामा–गर–

काल किच्चा) छेदन कर वे अपने पापों की आलोचना करते हैं, प्रतिक्रमण करते हैं, समाधि को प्राप्त होते हैं। तथा काल अवसर काल कर के (उक्कोसेणं सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति) उत्कृष्ट आठवें देवलोक सहस्रार कल्प में देवरूप से उत्पन्न होते हैं। (तहिं तेसिं गई) वहीं पर उनकी गति कही गयी है। (अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता) इस आठवें देवलोक में १८ सागर की स्थिति है। (परलोगस्स आराहगा, सेसं तं चेव) ये परलोक के आराधक होते हैं। अवशिष्ट पूर्ववत् समझना चाहिये ॥ सू. ५८ ॥

पत्ता कालमासे कालं किच्चा) छेदन करीने तेओ पोते करेला पापोनी आलोचना करे छे, प्रतिक्रमण करे छे, समाधिने प्राप्त थाय छे, तथा काल अवसरे काल करीने (उक्कोसेणं सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति) उत्कृष्ट आठमा सहस्रार देवलोकमां देवरूपथी उत्पन्न थाय छे (तहिं तेसिं गई) त्यां तेमनी गति बतावबामां आवी छे (अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता) आ आठमा देवलोकमां १८ सागरनी उत्कृष्ट स्थिति छे (परलोगस्स आराहगा, सेसं तं चेव) एओ परलोकना आराधक होय छे बाकीनुं बधुं पूर्वप्रमाणे समजी लेवुं जोईए (सू. ५८)

विया भवंति, त जहा–दुघरंतरिया तिघरंतरिया सत्तघरंतरिया उप्पलवेंटिया घरसमुदाणिया विज्जुयंतरिया उट्टियासमणा, ते

जाव–सनिवेसेसु ' ग्रामाऽऽ–कर–यावत्संनिवेशेषु ' आजीविया भवंति ' आजीविका = गोशालकमताऽनुवर्तिनो भवन्ति । ते किंस्वरूपा ? अत्राऽऽह–' तं जहा ' तद्यथा–' दुघरंतरिया ' द्विगृहाऽन्तरिका –एकस्मिन् गृहे भिक्षा गृहीत्वा अभिग्रहविशेषेण गृहद्वय मतिक्रम्य पुनर्भिक्षा गृहृणन्ति, न निरंतर न एकान्तर वा भिक्षा गृहृणन्तीति भाव, ' तिघरतरिया ' त्रिगृहाऽन्तरिका – त्रीन् गृहानतिक्रम्य भिक्षा गृहृणन्तीति त्रिगृहाऽन्तरिका, एव ' सत्तघरंतरिया ' सप्तगृहान्तरिका –सप्तगृहान् परित्यज्य भिक्षा गृहृणन्तीति, ' उप्पलवेंटिया ' उत्पलवृन्तिका –उत्पलवृन्तानि नियमविशेषात् प्राधान्यतया भैक्षत्वेन येषा ते उत्पलवृन्तिका, ' घरसमुदाणिया ' गृहसमुदानिका –गृहसमुदानम्=अनेकगृहे भिक्षा येषा ते गृहसमुदानिका, ' विज्जुयतरिया ' विद्युदन्तरिका –विद्युत्सम्पातेऽन्तर=भिक्षाग्रहणस्यावरोधो येषा ते विद्युदन्तरिका, विद्युति दीप्यमानाया भिक्षार्थं नाटन्तीति भाव, ' उट्टियासमणा ' उष्ट्रिकाश्रमणा –उष्ट्रिका=मृत्तिकामयो भाजनविशेष, तत्र प्रविष्टा ये श्राम्यन्ति=तपस्यन्ति त

'से जे इमे' इत्यादि ।

(से जे इमे) ये जो (गामा–गर–जाव–सनिवेसेसु) ग्राम आकर आदि स्थानों से लेकर सनिवेश तक मे (आजीविया) गोशालक के मतानुयायी (भवंति) होते हैं, (त जहा) जैसे–(दुघरतरिया) दो घर के अन्तर से जो भिक्षा लेते हैं, (तिघरतरिया) तीन घर के अन्तर से जो भिक्षा लेते है, (सत्तघरतरिया) सात घरों के अन्तर से जो भिक्षा लेते है, (उप्पलवेंटिया) कमल के नालों की जो भिक्षा करते है, (घरसमुदाणिया) बहुत घरों से जो भिक्षा लेते हैं, (विज्जुयतरिया) बिजली चमकने पर जो भिक्षा नहीं लेते हैं, (उट्टियासमणा) मिट्टी के किसी बडे बर्तन–नाँद आदि मे प्रविष्ट हो कर जो तपश्चर्या करते

'से जे इमे' ઈત્યાદિ

(से जे इमे) તેઓ કે જે (गामा–गर–जाव–सनिवेसेसु) ગામ આકર આદિ સ્થાનોથી લઇને સનિવેશ સુધીમા (आजीविया) ગોશાલકના મતાનુયાયી (भवति) હોય છે, (तजहा) જેવાકે (दुघरतरिया) બે ઘરને અતર રાખી જે ભિક્ષા લે છે, (तिघरतरिया) ત્રણ ઘરને અતર રાખી જે ભિક્ષા લે છે (सत्त घरतरिया) સાત ઘરોના અતરથી જે ભિક્ષા લે છે (उप्पलवेंटिया) કમળના નાળની જે ભિક્ષા કરે છે, (घरसामुदाणिया) ઘણા ઘરોથી જે ભિક્ષા લે છે, (विज्जुयतरिया) વિજળી ચમકે ત્યારે જે ભિક્ષા લેતા નથી, (उट्टियासमणा) માટીના

णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं परियायं पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति। तहिं तेसिं गई, बावीसं सागरोवमाइं ठिई, अणाराहगा, सेसं तं चेव ॥ सू० ५९ ॥

उष्ट्रिकाश्रमणा, 'ते णं एयारूवेण विहारेण विहरमाणा' ते खलु एतद्रूपेण विहारेण विहरन्त, 'बहूइ वासाइं परियाय पाउणित्ता' बहूनि वर्षाणि पर्याय पालयित्वा, 'कालमासे काल किच्चा' कालमासे काल कृत्वा, 'उक्कोसेण अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति' उत्कर्षेण अच्युते कल्पे देवत्वेनोपपत्तारो भवन्ति, 'तहिं तेसिं गई' तत्र तेषा गति, 'बावीस सागरोवमाइ ठिई' द्वाविंशति सागरोपमाणि स्थिति। 'अणाराहगा' अनाराधका, 'सेस तं चेव' शेष तदेव ॥ सू० ५९ ॥

है, इस प्रकार जो अभिग्रह वाले है, (ते ण एयारूवेण विहारेण विहरमाणा बहूइं वासाइ परियाय पाउणित्ता कालमासे काल किच्चा उक्कोसेण अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति) ये सब इस प्रकार विहार करते हुए बहुत वर्षो तक इस पर्याय को पालकर काल अवसर मे काल करके उत्कृष्ट बारहवें देवलोक अच्युत कल्प मे देव की पर्याय से उत्पन्न होते है। (तहिं तेसिं गई) वहाँ पर उनकी गति होती है। (बावीस सागरोवमाइं ठिई) २२ सागर की इनकी स्थिति वहा होती है। (अणाराहगा) ये सब अनाराधक होते है। (सेसं तं चेव) अवशिष्ट पूर्ववत् समझना चाहिये ॥ सू ५९ ॥

કોઈ મોટા વાસણ-કોઠી આદિમા પ્રવિષ્ટ થઇને જે તપશ્ચર્યા કરે છે, આ પ્રકારના અભિગ્રહવાળા જે છે, (ते ण एयारूवेण विहारेण विहरमाणा बहूइ वासाइ परियायं पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेण अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवति) આ બધા આ પ્રકારે વિહાર કરતા કરતા ઘણા વરસો સુધી આ પર્યાયને પાળીને કાલ અવસરે કાલ કરીને ઉત્કૃષ્ટ બારમા અચ્યુત કલ્પમા દેવની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે (तहिं तेसिं गई) ત્યા તેમની ગતિ થાય છે, (बावीस सागरोवमाइ ठिई) બાવીશ સાગરની તેમની સ્થિતિ ત્યા હોય છે (अणाराहगा) આ બધા અનારાધક હોય છે (सेस त चेव) બાકીનુ બધુ પૂર્વ પ્રમાણે સમજવુ જોઈએ (સૂ ૫૯)

मूलम्—से जे इमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु पव्वइया समणा भवंति, तं जहा–अत्तुक्कासिया परपरिवाइया भूइकम्मिया भुज्जो भुज्जो कोउयकारगा, ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहर-

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु पव्वइया समणा भवंति' अथ य इमे ग्रामाऽऽकर यावत्सन्निवेशेषु प्रव्रजिता श्रमणा भवन्ति। तद्भेदान् दर्शयितुमाह–'त जहा' तद्यथा 'अत्तुक्कासिया' आत्मोत्कर्षिका–आत्मन उत्कर्ष =श्रेष्ठत्व सोऽस्त्येषामित्यात्मोत्कर्षिका–आत्मगौरवदर्शका, 'परपरिवाइया' परपरिवादिका–परेषा परिवादो=निन्दाऽस्ति येषा ते परपरिवादिका–परनिन्दका इत्यर्थ, 'भूइकम्मिया' भूतिकर्मिका–भूतिकर्म=ज्वरिताना बाधाप्रशमनार्थं भस्मदानं तदस्ति येषा ते भूतिकर्मिका, 'भुज्जो भुज्जो कोउयकारगा' भूयोभूय कौतुककारका–भूयोभूय = पुन पुन कौतुक=परेषा सौभाग्यादिनिमित्त स्नपनादि तत्कर्त्तार, यद्वा–कुतूहलकारका। 'ते ण एयारूवेणं विहारेण विहरमाणा' ते खल्वेतद्रूपेण विहारेण विहरन्त 'बहूइं

'से जे इमे गामागर' इत्यादि।

(से जे इमे) जो ये (गामागर–जाव सनिवेसेसु) ग्राम आकर आदि से लेकर सन्निवेश तक के स्थानों मे प्रव्रजित सयमी श्रमण है, जैसे–(अत्तुक्कासिया) अपनी आत्मा के गौरव को दिखाने वाले, (परपरिवाइया) स्वमत को अच्छा समझकर दूसरों की निंदा करने वाले, (भूइकम्मिया) भूतिकर्म करने वाले–ज्वरित व्यक्तियों की बाधा को शमन करने के लिये भस्म को देने वाले, (भुज्जो २ कोउयकारगा) पुन पुन अनेक प्रकार के कौतुक करने वाले, (ते ण एयारूवेण विहारेण विहरमाणा) वे सब इस प्रकार के आचार मे रहते हुए (बहूइं वासाइ सामण्णपरियाग पाउणति) बहुत वर्षों तक श्राम-

'से जे इमे गामागर' ઇત્યાદિ

(से जे इमे) આ કે જેઓ (गामा–गर–जाव–सन्निवेसेसु) ગામ આકર આદિથી લઈને સનિવેશ સુધીના સ્થાનોમા પ્રવ્રજિત સયમી શ્રમણ છે, જેવા કે–(अत्तुक्कासिया) પોતાના આત્માના ગૌરવને દેખાડવાવાળા, (परपरिवाइया) પોતાના મતને સારો સમજીને બીજાની નિદા કરવાવાળા, (भूइकम्मिया) ભૂતિકર્મ કરવાવાળા–જ્વરથી પીડાતા માણસોના દુ ખ શમન કરવા માટે ભસ્મ આપવાવાળા, (भुज्जो भुज्जो कोउयकारगा) વારવાર અનેક પ્રકારના કૌતુક કરવા વાળા, (ते ण एयारूवेण विहारेण विहरमाणा) તેઓ બધા આવા પ્રકારના

माणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे आभिओगिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तहिं तेसिं गई, बावीसं सागरोवमाइं ठिई, परलोगस्स अणाराहगा, सेसं तं चेव ॥ सू० ६० ॥

वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति' बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयन्ति '**पाउणित्ता**' पालयित्वा '**तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता**' तस्य स्थानस्य अनालोचितप्रतिक्रान्ता '**कालमासे कालं किच्चा**' कालमासे कालं कृत्वा '**उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे आभिओगिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति**' उत्कर्षेणाच्युते कल्पे आभियोगिकेषु—अभियोगे=आज्ञाकर्मणि नियुक्ता अभियोगिकास्तेषु—आज्ञाकारिषु देवेषु देवत्वेनोपपत्तारो भवन्ति, एतेषां देवत्वं चारित्राराधकत्वेन, आभियोगिकत्वं चात्मोत्कर्षादिस्थापनात्, '**तहिं तेसिं गई**' तत्र तेषां गतिः, '**बावीसं सागरोवमाइं ठिई**' द्वाविंशतिं सागरोपमानि स्थितिः, '**परलोगस्स अणाराहगा**' परलोकस्याऽनाराधकाः '**सेसं तं चेव**' शेषं तदेव ॥ सू० ६० ॥

ण्यपर्याय को पालते है, (**पाउणित्ता**) पालकर (**तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता**) उन पापस्थानों की आलोचना एवं प्रतिक्रमण किये विना (**कालमासे कालं किच्चा**) काल अवसर मे कालकर (**उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे आभिओगिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति**) अधिक से अधिक अच्युतदेवलोक के आभियोगिक देवों मे—जो इन्द्र आदि के आज्ञाकारी होते है, उत्पन्न हो होते हैं, । चारित्र की आराधना करने वाले होने से ये देवपर्याय तो पालते है, परंतु आत्मोत्कर्ष आदि स्थापन करने के कारण इन्हे आभियोगिक

આચારમા રહીને (बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति) ઘણા વરસો સુધી શ્રામણ્ય-પર્યાયને પાળે છે, (पाउणित्ता) પાળીને (तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता) તે પાપસ્થાનોની આલોચના તેમજ પ્રતિક્રમણ કર્યા વગર (कालमासे काल किच्चा) કાલ અવસરમા કાલ કરીને (उक्कोसेण अच्चुए कप्पे आभिओगिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति) વધારેમા વધારે અચ્યુત દેવલોકના આભિયોગિક દેવોમા, જે ઇંદ્ર આદિના આજ્ઞાકારી હોય છે, ઉત્પન્ન થાય છે ચારિત્રની આરાધના કરવાવાળા હોવાથી તેઓ દેવપર્યાય તો પામે છે, પરન્તુ આત્મોત્કર્ષ

मूलम्—से जे इमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु पव्वइया समणा भवंति, तं जहा—अत्तुक्कासिया परपरिवाइया भूइकम्मिया भुज्जो भुज्जो कोउयकारगा, ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहर-

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु पव्वइया समणा भवंति' अथ य इमे ग्रामाऽऽकर यावत्सन्निवेशेषु प्रव्रजिता श्रमणा भवन्ति। तद्भेदान् दर्शयितुमाह—'तं जहा' तद्यथा 'अत्तुक्कासिया' आत्मोत्कर्षिका—आत्मन उत्कर्ष=श्रेष्ठत्व सोऽस्त्येषामित्यात्मोत्कर्षिका—आत्मगौरवदर्शका, 'परपरिवाइया' परपरिवादिका—परेषा परिवादो=निन्दाऽस्ति येषा ते परपरिवादिका—परनिन्दका इत्यर्थः, 'भूइकम्मिया' भूतिकर्मिका—भूतिकर्म=ज्वरितानां बाधाप्रशमनार्थं भस्मदानं तदस्ति येषा ते भूतिकर्मिका, 'भुज्जो भुज्जो कोउयकारगा' भूयोभूय कौतुककारका—भूयोभूय=पुन पुन कौतुक=परेषा सौभाग्यादिनिमित्त स्नपनादि तत्कर्त्तार, यद्वा—कुतूहलकारका। 'ते ण एयारूवेण विहारेणं विहरमाणा' ते खल्वेतद्रूपेण विहारेण विहरन्त 'बहूइं

'से जे इमे गामागर' इत्यादि।

(से जे इमे) जो ये (गामागर—जाव सनिवेसेसु) ग्राम आकर आदि से लेकर सन्निवेश तक के स्थानों मे प्रव्रजित सयमी श्रमण हैं, जैसे—(अत्तुक्कासिया) अपनी आत्मा के गौरव को दिखाने वाले, (परपरिवाइया) स्वमत को अच्छा समझकर दूसरों की निंदा करने वाले, (भूइकम्मिया) भूतिकर्म करने वाले—ज्वरित व्यक्तियों की बाधा को शमन करने के लिये भस्म को देने वाले, (भुज्जो २ कोउयकारगा) पुन पुन अनेक प्रकार के कौतुक करने वाले, (ते ण एयारूवेण विहारेण विहरमाणा) वे सब इस प्रकार के आचार म रहते हुए (वहूइं वासाइ सामण्णपरियाग पाउणंति) बहुत वर्षों तक श्राम-

'से जे इमे गामागर' ईत्यादि

(से जे इमे) આ કે જેઓ (गामा-गर-जाव-सनिवेसेसु) ગામ આકર આદિથી લઈને સનિવેશ સુધીના સ્થાનોમા પ્રવ્રજિત સયંમી શ્રમણ છે, જેવાં કે-(अत्तुक्कासिया) પોતાના આત્માના ગૌરવને દેખાડવાવાળા, (परपरिवाइया) પોતાના મતને સારો સમજીને બીજાની નિંદા કરવાવાળા, (भूइकम्मिया) ભૂતિ-કર્મ કરવાવાળા-જ્વરથી પીડાતા માણુસોના દુ ખ શમન કરવા માટે ભસ્મ આપવાવાળા, (भुज्जो भुज्जो कोउयकारगा) વારવાર અનેક પ્રકારના કૌતુક કરવાવાળા, (ते ण एयारूवेण विहारेण विहरमाणा) તેઓ બધા આવા પ્રકારના

२, सामुच्छेइया ४, दोकिरिया ५, तेरासिया ६, अवद्धिया ७,

इत्येवमादिनो बहुरता –जमालिमतानुयायिन १, ' जीवपएसिया ' जीवप्रदेशिका –एक एव चरमप्रदेशो जीव इत्यभ्युपगमाज्जीवप्रदेशो विद्यते येषा ते तथा, एकेनाऽपि प्रदेशेन न्यूनो जीवो न भवति, अतो येनैकेन प्रदेशेन पूर्ण सन् जीवो भवति, स एवैक प्रदेशो जीवो भवतीत्येव-विधवादिन तिष्यगुप्ताचार्यमतानुयायिन , २, ' अव्वत्तिया ' अव्यक्तिका –अव्यक्त समस्त-मिद जगत्, साध्वादिविषये श्रमणोऽय देवो वाऽयम् इत्यादिविविक्तप्रतिभासोदयाऽभावात्, ततश्चाऽव्यक्तम्=अस्फुट वस्तु–इति मतमस्ति येषा तेऽव्यक्तिका , अथवा अविद्यमाना साध्वादि-व्यक्तिरेषामित्यव्यक्तिका , आषाढाचार्यशिष्यमताऽन्तर्वर्तिन ३, ' सामुच्छेइया ' सामुच्छे-दिका –प्रतिक्षण नारकादिभावाना समुच्छेद=क्षय वदन्तीति सामुच्छेदिका –क्षणक्षयिभाव–प्ररूपका अश्वमित्रमतानुयायिन ४, 'दोकिरिया' द्वैक्रिया – द्वेक्रिये=शीतवेदनोष्णवेदनादि-

---

है, एक समय में नहीं। ये जमालिमत के अनुयायी होते हे १ । जीवप्रदेशिक का ऐसा कहना है कि जीव एक चरमप्रदेशस्वरूप ही है। जीव यदि एक भी प्रदेश से न्यून हो तो वह जीवसज्ञा प्राप्त नहीं कर सकता, अत जिस एक प्रदेश से परिपूर्ण होकर वह जीव कहलाता है वह उस एकप्रदेशस्वरूप ही है। ये तिष्यगुप्त आचार्य के मतानुयायी होते हैं २। अव्यक्तिक का यह कहना हे कि यह समस्त जगत साधु आदि के विषय में सर्वथा अव्यक्त है, क्यों कि ये देव ह, ये श्रमण हैं–इस प्रकार का भिन्न २प्रतिभास नहीं होता है। इसलिए वास्तविक क्या है यह सब अव्यक्त–अस्फुट है। अथवा ये अव्यक्तिक जन किसी को भी साधुव्यक्ति नहीं मानते ह। ये आषाढाचार्य के शिष्यों के मत के अन्तर्वर्ती माने जाते हैं ३। सामुच्छेदिक–मतवादी प्रत्येक पदार्थ को क्षणविनश्वर मानते हैं। ये अश्वमित्र के मत के अनुयायी हैं ४। द्वैक्रिय–मतवादी की ऐसी मान्यता है कि एक ही समय में

समयमा नहि आ जमालिमतना अनुयायी होय छे (२) जीवप्रदेशिक–એમનુ એવુ કહેવુ છે કે જીવ એક ચરમ–પ્રદેશ–સ્વરૂપ જ છે જીવ જો એક પ્રદેશથી ન્યૂન (કમ) હોય તો તે જીવસજ્ઞા પ્રાપ્ત કરી શકે નહિ આથી જે એક પ્રદેશથી પરિપૂર્ણ હોય તે જીવ કહેવાય છે, તે એક પ્રદેશસ્વરૂપ જ છે આ તિષ્યગુપ્ત આચાર્યના મતાનુયાયી હોય છે (૩) अव्यक्तिक–એમનુ એમ કહેવુ છે કે આ સમસ્ત જગત સાધુ આદિના વિષયમા સર્વથા અવ્યક્ત છે, કેમકે તેઓ દેવ છે, આ શ્રમણ છે, આ પ્રકારનો જુદો જુદો પ્રતિભાસ હોતો નથી એથી વાસ્તવિક શુ છે એ બધુ અવ્યક્ત–અસ્ફુટ છે અથવા આ અવ્યક્તિક જનો કોઈને પણ સાધુ વ્યક્તિ મનતા નથી આ અષાઢાચાર્યના શિષ્યોના મતના અતર્વર્તી મનાય છે. (૪) सामुच्छेदिक–આ પ્રત્યેક પદાર્થને ક્ષણભગુર માને છે, તેઓ અશ્વમિત્રના મતના અનુયાયી છે.

मूलम्—से जे इमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु णिण्हगा भवंति, तं जहा—बहुरया १, जीवपएसिया २, अव्वत्तिया

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु' अथ य इमे ग्रामाकर यावत्-सन्निवेशेषु 'णिण्हगा' निह्नवा —निह्नुवते=अपलपन्ति= अन्यथा प्ररूपयन्तीति निह्नवा =मिथ्याभिनिवेशाज्जिनोक्तार्थस्यापलापका इत्यर्थ, यथा जमाल्यादय, ते कतिविधा भवन्ति ? इत्याकाङ्क्षायां दर्शयति—'तं जहा' तद्यथा—'बहुरया' बहुरता —बहुषु समयेषु रता =आसक्ता —बहुभिरेव समयै कार्यं सम्पद्यते, नैकेन समयेन—

जाति के देवों में जन्म धारण करना पडता है। (तहिं तेसिं गई) वहीं पर इनकी गति, एव (बावीस सागरोवमाइ ठिई) स्थिति २२ सागर की कही गई है। (परलोगस्स अणाराहगा) ये परलोक के अनाराधक कहे गये हैं। (सेस त चेव) अवशिष्ट पूर्ववत् समझना चाहिये ॥ सू ६० ॥

'से जे इमे गामागर' इत्यादि।

(से जे इमे) जो ये (गामागर-जाव-सण्णिवेसेसु) ग्राम आकर आदि स्थानों से लेकर सन्निवेश तक कथित स्थानों में रहने वाले (णिण्हगा भवंति) जमालि आदि निह्नव—मिथ्यात्व के अभिनिवेश से जिनोक्त अर्थ के अपलापक होते हैं, जैसे—(बहुरया जीवपएसिया अव्वत्तिया सामुच्छेइया दोकिरिया तेरासिया अबद्धिया इच्चेते सत्तपवयणणिण्हगा) बहुरत—बहुरतों का ऐसा सिद्धान्त है कि कार्य अनेक समयों में ही होता

આદિ ખ્યાપન કરવાના કારણે તેમને આભિયોગિક જાતિના દેવોમા જન્મ ધારણ કરવો પડે છે (तहिं तेसिं गई) ત્યા તેમની ગતિ, તેમજ (बावीस सागरोवमाइं ठिई) સ્થિતિ ૨૨ સાગરની કહેલી છે (परलोगस्स अणाराहगा) તેઓ પરલોકના અનારાધક કહેવાય છે (सेस त चेव) બાકીનુ બધુ પૂર્વ પ્રમાણે સમજવુ જોઇએ (સૂ ૫૯)

'जे इमे गामागर' ઇત્યાદિ

(जे इमे) તેઓ કે જે (गामागर जाव सण्णिवेसेसु) ગામ, આકર આદિ સ્થાનોથી લઇને સનિવેશ સુધીના કહેલા સ્થાનોમા રહેવાવાળા (णिण्हगा भवंति) જમાલિ જેવા નિહ્નવ-મિથ્યાત્વના અભિનિવેશથી જિન ભગવાને કહેલા અર્થના અપલાપક હોય છે, જેવા કે-(बहुरया जीवपएसिया अव्वत्तिया सामुच्छेइया दोकिरिया तेरासिया अबद्धिया इच्चेते सत्त पवयणणिण्हगा) (૧) બહુરત-બહુરતોનો એવો સિદ્ધાત છે કે કાર્ય અનેક સમયોમા જ થાય છે એક

दिट्ठी बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा विहरित्ता बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता कालमासे

इत्यमाह-' मिच्छादिट्ठी ' मिथ्यादृष्टय -मिथ्या=विपरीता दृष्टि =मत येषां ते तथा, एते सप्त निह्नवा ' बहूहिं ' बहुभि ' असब्भावुब्भावणाहिं ' असद्भावोद्भावनाभि - असद्भावानाम्=अविद्यमानार्थानाम् उद्भावना =उत्प्रेक्षणानि-आरोपणानि, ताभि, ' मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य ' मिथ्यात्वाभिनिवेशैश्च-मिथ्यात्वोदये अभिनिवेशा =स्वमतस्थापनाऽऽग्रहास्तै ' अप्पाणं च परं च तदुभयं च ' आत्मानञ्च परञ्च तदुभयञ्च ' वुग्गाहेमाणा ' व्युद्ग्राहयन्त =स्वमते स्थापयन्त, ' वुप्पाएमाणा ' व्युत्पादयन्त =जिनवचनविरुद्धप्ररूपणाजनितपापमुपार्जयन्त, ' विहरित्ता ' विहृत्य, ' बहूइं वासाइं ' बहूनि वर्षाणि ' सामण्णपरियागं ' श्रामण्यपर्याय ' पाउणंति ' पालयन्ति, ' पाउणित्ता ' पालयित्वा ' कालमासे

है। (मिच्छादिट्ठी) ये सातों ही निह्नव मिथ्यादृष्टि हैं। (बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा) ये अनेक प्रकार के असद्भावों की उद्भावनाओं से-अविद्यमान पदार्थों की कल्पनाओं से, तथा मिथ्यात्वादिक में अभिनिवेशों से-अपने मत को स्थापन करने रूप आग्रहों से अपनी आत्मा को, दूसरों को तथा स्व-पर इन दोनों को अपने मत में स्थापित करते हुए एवं जिनमत के विरुद्ध प्ररूपणा करने से उत्पन्न पाप का उपार्जन करते हुए (विहरित्ता) विचरते हैं। इस

લિંગ-રજોહરણ આદિ સાધુના ચિહ્નોની અપેક્ષાએ તેઓમાં સમાનતા છે (मिच्छादिट्ठी) એ સાતેય નિહ્નવ મિથ્યાદષ્ટિ છે (बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा) તેઓ અનેક પ્રકારના અસદ્ભાવોની ઉદ્ભાવનાથી-અવિદ્યમાન પદાર્થોની કલ્પનાઓ કરવાથી તથા મિથ્યાત્વ આદિકમાં અભિનિવેશોથી-પોતાના મતનુ સ્થાપન કરવા રૂપી આગ્રહોથી, પોતાના આત્માને, બીજાઓને તથા પોતાના ઉપરાંત આ બન્નેને પોતાના મતમાં સ્થાપિત કરતા તેમ જ જિનમતની વિરુદ્ધ પ્રરૂપણા કરવાથી ઉત્પન્ન થતા પાપનુ ઉપાર્જન કરતા (विहरित्ता) વિચરે છે આ પ્રકારે તે (बहूइं वासाइं सामण्णपरियायं पाउणंति) અનેક વરસો સુધી આવા જ પ્રકારના આચાર-વિચારોમાં તન્મય બનીને શ્રામણ્યપર્યાયનુ પાલન

इच्चेते सत्त पवयणणिण्हगा केवलं चरियालिंगसमाणा मिच्छ-

स्वरूपे एकस्मिन् समये जीवोऽनुभवति इत्येव वदन्ति ये ते द्वैक्रिया =क्रियाद्वयानुभव प्ररूपिणो गङ्गाचार्यमतानुयायिन ५, 'तेरासिया' त्रैराशिका –त्रीन् राशीन्–जीवाऽजीव–नोजीवरूपान् वदन्ति ये ते त्रैराशिका –राशित्रयस्थापका इत्यर्थ –रोहगुप्ताचार्यमतानुसारिण ६, 'अबद्धिया' अबद्धिका –जीव कर्मणा बद्धो न भवति, किंतु कञ्चुकवत्स्पृष्टो भवति–इत्येव वदन्ति ये तेऽबद्धिका, गोष्ठामाहिलमतावलम्बिन ७, उपलक्षण चैतद्–वान्तसम्यक्त्वानामन्येषामपि । 'इच्चेते सत्त पवयणणिण्हगा' इत्येते सप्त प्रवचननिह्नवा –प्रवचन=जिनागम निह्नुवते=अपलपन्ति, अन्यथा तदेकदेशस्य चाऽभ्युपगमात् ते प्रवचननिह्नवा, केवल–'चरियालिङ्गसमाणा' चर्यालिङ्गसमाना –चर्यया=भिक्षाटनादिक्रियया लिङ्गेन=रजोहरणादिना च समाना =साधुतुल्या, ते पुन कीदृशा ?

एक जीव दो विरुद्ध क्रियाओं का भी अनुभव करता है। शीतवेदना एवं उष्णवेदना ये दो परस्पर में एक समय में विरुद्ध हैं। इन्हें जीव एक समय मे भोगता है। ये गगाचार्य के मत के अनुयायी होते हैं ५। त्रैराशिक मतवाले का ऐसा कहना है कि जीवों की तीन राशियाँ हैं–(१) जीव, (२) अजीव एव (३) नोजीव। ये रोहगुप्त के मत के अनुयायी है ६। अबद्धिक लोग ऐसी प्ररूपणा करते हैं कि जीव और कर्म का बध नहीं होता है। सिर्फ जीव के साथ कर्म कचुक की तरह स्पृष्ट रहा करते हैं। ये गोष्ठमाहिल के मत को मानने वाले होते है ७। यह उपलक्षणस्वरूप है, इससे सम्यक्त्वरहित क्रिया करने वालों का भी ग्रहण हुआ है। इस प्रकार ये सात प्रवचन–जिनागम के निह्नव है। (केवल चरियालिंगसमाणा) मात्र चर्या–भिक्षा याचना आदि क्रिया तथा लिङ्ग–रजोहरणादि साधु के चिह्नों की अपेक्षा इनमे समानता

(५) द्वैक्रिय–એમની એવી માન્યતા છે કે એકજ સમયમા એક જીવ બે વિરુદ્ધ ક્રિયાઓના પણ અનુભવ કરે છે શીતવેદના–તેમજ ઉષ્ણવેદના આ બે પરસ્પરમા એક સમયમા વિરુદ્ધ છે તેમને જીવ એક સમયમા ભોગવે છે તેઓ ગગાચાર્યના મતના અનુયાયી હોય છે (૬) ત્રૈરાશિક–તેઓ એમ કહે છે કે જીવોની ૩ રાશિઓ છે, (૧) જીવ (૨) અજીવ તેમજ (૩) નોજીવ' તેઓ રોહગુપ્તના મતના અનુયાયી છે (૬) અબદ્ધિક–તેઓ એમ પ્રરૂપણા કરે છે કે જીવ અને કર્મનો બધ થતો નથી માત્ર જીવની સાથે કર્મ કચુકની પેઠે સ્પૃષ્ટ રહેલા (ચોટી રહેલા–લાગી રહેલા) છે આ ગોષ્ઠમાહિલના મતને માનવાવાળા હોય છે આ ઉપલક્ષણસ્વરૂપ છે, માટે સમ્યક્ત્વરહિત ક્રિયા કરવાવાળાનુ પણ ગ્રહણ થાય છે આ પ્રકારે આ સાત પ્રવચન–જિનાગમના નિહ્નવ (केवल चरियालिंगसमाणा) માત્ર ચર્યા–ભિક્ષા યાચના આદિ ક્રિયા તથા

भवंति, तं जहा—अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मप्पलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा

'तं जहा' तद्यथा—'अप्पारभा' अल्पारम्भा —अल्प आरम्भ =कृष्यादिना पृथिव्यादि-जीवोपमर्दो येषा ते तथा, 'अप्पपरिग्गहा' अल्पपरिग्रहा अल्प —परिग्रह =धनधान्यादि-स्वीकाररूपो येषा ते तथा, 'धम्मिया' धार्मिका —धर्मेण=प्राणातिपातादिविरमणरूपेण चरन्ति ये ते धार्मिका , 'धम्माणुया' धर्मानुगा —धर्ममनुगच्छन्ति ये ते धर्माऽनुगा', कुत इत्थम्' अत्राऽऽह—'धम्मिट्ठा' धर्मेष्टा —धर्म एवेष्टो=वल्लभो येषा ते धर्मेष्टा । अथवा—धर्मिष्ठा =धर्मोऽस्ति येषा ते धर्मिण', त एवातिशययुक्ता धर्मिष्ठा । 'धम्मक्खाई' धर्म-ख्यातय —धर्मात् ख्याति =प्रसिद्धिर्येषा ते धर्मख्यातय । अथवा धर्माऽऽख्यायिन —धर्म-माख्यान्ति=भव्येभ्य प्रतिपादयन्तीति धर्माख्यायिन । 'धम्मप्पलोई' धर्मप्रलोकिन ।

धम्मिया धम्माणुया) अल्प आरभी—जो पृथिव्यादिक जीवों के उपमर्दन वाले कृष्यादिक रूप आरभ को अल्प करते है वे, अल्पपरिग्रही अथात् जिनके धनधान्यादिक के स्वीकाररूप मम-त्वभाव अल्प होता है वे, धार्मिक—प्राणातिपातादिक विरमणरूप धर्म से जो युक्त होते हैं वे, तथा—धर्मानुग- धर्मपद्धति के अनुसार जो चलते है वे, (धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मप्पलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा) धर्मेष्ट—धर्म ही जिन्हें प्रिय है वे, अथवा धर्मिष्ठ—धर्म के अतिशय से जो युक्त हैं वे, धर्मख्याति धर्म से जिनकी ख्याति हुई है वे, अथवा-धर्मख्यायी-भव्यजनों के लिये जो श्रुतचारित्ररूप धर्म का कथन करने वाले होते है वे, धर्मप्रलोकी धर्म को जो उपादेयरूप से मानते है वे, धर्मप्ररञ्जन—धर्म के सेवन करने मे जो अधिक

ગામ, આકર તેમજ સન્નિવેશોમા મનુષ્ય રહે છે, (तं जहा) જેવા કે (अप्पारभा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया) અલ્પ આરભી—જે પૃથિવી આદિક જીવોને દુ:ખ દેવાવાળા કૃષિ આદિક રૂપ આરભને અલ્પ (ઓછા) કરે છે તેઓ, અલ્પ પરિગ્રહી—જેના ધન ધાન્ય આદિકના સ્વીકાર રૂપ મમત્વભાવ અલ્પ હોય છે તેઓ, ધાર્મિક—પ્રાણાતિપાતઆદિકના વિરમણરૂપ ધર્મથી જે યુક્ત હોય છે તેઓ, તથા ધર્માનુગ—ધર્મપદ્ધતિને અનુસરીને જે ચાલે છે તેઓ, (धम्मिट्ठा धम्मक्खाई, धम्मप्पलोई, धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा) ધર્મેષ્ટ—ધર્મ જ જેમને ઈષ્ટ—પ્રિય છે તેઓ, અથવા ધર્મિષ્ઠ—ધર્મના અતિશયથી જેઓ યુક્ત છે તેઓ, ધર્મખ્યાતિ—ધર્મથી જેઓની ખ્યાતિ (પ્રસિદ્ધિ) થઈ છે તેઓ, અથવા ધર્મખ્યાયી—ભવ્ય જનોને માટે જે શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનુ કથન કરવાવાળા હોય છે તેઓ, ધર્મપ્રલોકી—ધર્મને જે ઉપાદેયરૂપથી માને છે તેઓ, ધર્મ-

कालं किच्चा उक्कोसेणं उवरिमेसु गेवेज्जेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति। तहिं तेसिं गई, एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई, परलोगस्स अणाराहगा, सेसं तं चेव ॥ सू० ६१ ॥

मूलम्—से जे इमे गामागार जाव सण्णिवेसेसु मणुया

कालं किच्चा' कालमासे कालं कृत्वा 'उक्कोसेण' उत्कर्षेण 'उवरिमेसु गेवेज्जेसु' उपरितनेषु ग्रैवेयकेषु 'देवत्ताए उववत्तारो भवति' देवत्वेनोपपत्तारो भवन्ति। 'तहिं तेसिं गई' तत्र तेषां गतिः, 'एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई' एकत्रिंशत्सागरोपमानि स्थितिः, 'परलोगस्स अणाराहगा' परलोकस्याऽनाराधकाः, 'सेसं तं चेव' शेषं तदेव ॥ सू० ६१ ॥

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे' अथ ये इमे 'गामा—गर—जाव—सण्णिवेसेसु' ग्रामाऽऽ—कर—यावत्सन्निवेशेषु 'मणुया भवंति' मनुजा भवन्ति,

इस प्रकार ये (बहूइं वासाइं सामण्णपरियाय पाउणंति) अनेक वर्षों तक इसी प्रकार के आचार—विचारों मे तन्मय बने हुए श्रामण्यपर्याय का पालन करते रहते हैं। (पाउणित्ता कालमासे काल किच्चा उक्कोसेण उवरिमेसु गेवेज्जेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति) पालकर काल अवसर काल करके अधिक से अधिक उपरिम ग्रैवेयकों मे देव की पर्याय से उत्पन्न होते है। (तहिं तेसिं गई, एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई, परलोगस्स अणाहारगा, सेसं तं चेव) वहीं पर उनकी गति एवं ३१ सागर प्रमाण स्थिति होती है। ये परलोक के अनाराधक कहे गये है। अवशिष्ट सब पूर्ववत् समझना चाहिये ॥ सू. ६१ ॥

'से जे इमे' इत्यादि।

(से जे इमे) जो ये (गामा—गर—जाव—सण्णिवेसेसु मणुया भवंति) ग्राम आकर यावत् सन्निवेशों मे मनुष्य रहते है, (तं जहा) जैसे—(अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा

કર્યા કરે છે (पाउणित्ता कालमासे काल किच्चा उक्कोसेण उवरिमेसु गेवेज्जेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति) પાળીને કાલ અવસરે કાલ કરીને વધારેમા વધારે ઉપરિમ ગ્રૈવેયકોમા દેવની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે (तहिं तेसिं गई एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई परलोगस्स अणाहारगा सेसं तं चेव) ત્યાં તેમની ગતિ, તેમજ ૩૧ સાગર પ્રમાણુ સ્થિતિ હોય છે તેઓ પરલોકના અનારાધક કહેવાય છે બાકીનું બધુ પૂર્વ પ્રમાણે સમજવું જોઇએ (સૂ ૬૦)

'से जे इमे' ઇત્યાદિ

(से जे इमे) તેઓ કે જે (गामागर जाव सण्णिवेसेसु मणुया भवंति)

माणाओ मायाओ लोहाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भ-क्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडि-विरया, एगच्चाओ आरंभसमारंभाओ पडिविरया जावज्जीवाए,

याव परिग्रहात्, यावच्छब्देन—मृषावादाऽदत्तादान—मैथुनानि बोद्धव्यानि। 'एगच्चाओ' एकस्मात्=स्थूलात् 'कोहाओ' क्रोधात्, 'माणाओ' मानात्, 'मायाओ' मायाया, 'लोहाओ' लोभात्, 'पेज्जाओ' प्रेयस, 'दोसाए' द्वेषात् 'कलहाओ' कलहात् 'अब्भक्खा-णाओ' अभ्याख्यानात्=पैशुन्यात्, 'परपरिवायाओ' परपरिवादात् 'अरइरईओ' अरतिरतिभ्याम् 'मिच्छादंसणसल्लाओ' मिथ्यादर्शनशल्यात् 'पडिविरया' प्रतिविरता = भावतो विरता 'जावज्जीवाए' यावज्जीव=जीवनपर्यन्तम्, 'एगच्चाओ अपडिविरया' एकस्मात्—सूक्ष्मात् अप्रतिविरता 'एगच्चाओ आरंभसमारंभाओ पडिविरया जावज्जीवाए एगच्चाओ अपडिविरया' एकस्मादारम्भसमारम्भात्प्रतिविरता यावज्जीवमेकस्मादप्रति-

पडिग्गहाओ) तथा इसी तरह स्थूल मृषावाद, स्थूल अदत्तादान, स्थूल मैथुन एवं स्थूल परिग्रह से विरक्त रहते हैं वे, (एगच्चाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोहाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ माया-मोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ पडिविरया जावज्जीवाए) इसी प्रकार स्थूल क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, परपरिवाद, अरति, रति, मायामृषा, एवं मिथ्यादर्शनशल्य से जीवनपर्यन्त प्रतिविरत रहा करते है, (एगच्चाओ अपडिविरया) किन्तु सूक्ष्म क्रोधादिकों से प्रतिविरत नहीं रहते है, (एगच्चाओ आरंभसमारंभाओ पडि-

पडिग्गहाओ) तथा એવી જ રીતે સ્થૂલ મૃષાવાદ, સ્થૂલ અદત્તાદાન, સ્થૂલ મૈથુન, તેમજ સ્થૂલ પરિગ્રહથી જે વિરક્ત રહે છે તેઓ, (एगच्चाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोहाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ पडिविरया जावज्जीवाए) એજ પ્રકારે સ્થૂલ ક્રોધ, માન, માયા, લોભ, રાગ, દ્વેષ, કલહ, અભ્યાખ્યાન, પૈશુન્ય, પરપરિવાદ, અરતિ, રતિ, માયામૃષા, તેમજ મિથ્યાદર્શન-શલ્યથી જીવનપર્યન્ત પ્રતિવિરત રહ્યા કરે છે, (एगच्चाओ अपडिविरया) પરંતુ સૂક્ષ્મ ક્રોધ આદિકોથી પ્રતિવિરત રહેતા નથી. (एगच्चाओ आरंभ-

धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणंदा साहूहिं एगच्चाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया, एवं जाव पडिग्गहाओ, एगच्चाओ कोहाओ

'धम्मपलज्जणा' धर्मप्ररञ्जना –धर्मे प्ररज्यति=आसज्जन्ति–परायणा भवति ये ते धर्मप्ररञ्जना । 'धम्मसमुदायारा' धर्मसमुदाचारा –धर्मं समुदाचार =सदाचारो येषा ते धर्मसमुदाचारा । 'धम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणा' धर्मणैव वृत्ति कल्पयन्त –धार्मिक–जीविकया निर्वहन्त, 'सुसीला' सुशीला =शोभनाचारवन्त 'सुव्वया' सुव्रता =शोभनव्रतवन्त 'सुप्पडियाणदा' सुप्रत्यानन्दा –सुष्टु प्रत्यानन्द =चित्ताऽऽह्लादो येषा ते तथा, 'साहूहिं' साधुभ्य =साधुसमीपात्–साध्वन्तिके प्रत्याख्याय 'एगच्चाओ' एकस्मात्=स्थूलरूपात् न तु सर्वस्मात् 'पाणाइवायाओ' प्राणातिपातात्=परप्राणव्यपरोपणत, 'पडिविरया' प्रतिविरता =निवृत्ता, 'जावज्जीवाए' यावज्जीव–जीवनपर्यन्तमित्यर्थ, 'एगच्चाओ अपडिविरया' एकस्मात्=सूक्ष्मरूपात् अप्रतिविरता =अनिवृत्ता । 'एव जावपरिग्गहाओ' एवं

अनुराग सपन्न होते है वे, **धर्मसमुदाचार**–धर्म ही जिनका उत्तम आचार हैं वे, (**धम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणा**) तथा जो धर्म से ही अपनी जीविका चलाते हैं वे, (**सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणदा**) शोभन आचार जिनका है वे, सुव्रत–निरतिचार व्रतों के जो पालन करने वाले हैं वे, सुप्रत्यानन्द–जिनका चित्त सदा अच्छी तरह से आनदसपन्न रहा करता है वे, तथा जो (**साहूहिं एगच्चाओ**) साधु के समीप प्रत्याख्यान लेकर केवल एक (**पाणाइवायाओ**) स्थूल प्राणातिपातरूप से (**जावज्जीवाए पडिविरया**) जीवनपर्यन्त प्रतिविरत –निवृत्त रहते हैं, (**एगच्चाओ अपडिविरया**) परतु सूक्ष्मरूप प्राणातिपात से विरक्त नहीं रहते है वे, (**एव जाव**

પ્રરજન–ધર્મનું સેવન કરવામા જે અધિક અનુરાગસંપન્ન હોય છે તેઓ, ધર્મસમુદાચાર–ધર્મજ જેમનો ઉત્તમ આચાર છે તેઓ, (धम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणा) તથા જે ધર્મથી જ પોતાનુ જીવન ચલાવે છે તેઓ, (सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणदा) શોભન આચાર જેના છે તેઓ, સુવ્રત–નિરતિચાર વ્રતોનુ જેઓ પાલન કરવાવાળા છે તેઓ, સુપ્રત્યાનદ–જેમનુ ચિત્ત હમેશા સારી રીતે આનદસંપન્ન રહ્યા કરે છે તેઓ, તથા જેઓ (साहूहि एगच्चाओ) સાધુની પાસે પ્રત્યાખ્યાન લઈને કેવલ એક (पाणाइवायाओ) સ્થૂલપ્રાણાતિપાતરૂપ પાપથી (जावज्जीवाए पडिविरया) જીવનપર્યન્ત પ્રતિવિરત–નિવૃત્ત રહે છે, (एगच्चाओ अपडिविरया) પરંતુ સૂક્ષ્મ પ્રાણાતિપાતથી વિરક્ત રહેતા નથી તેઓ, (एव जाव

वंध-परिकिलेसाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया, एगच्चाओ ण्हाण-मद्दण-वण्णग-विलेवण-सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध-मल्ला-लंकाराओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ

-वध-बन्ध-परिक्लेशात्-तत्र कुट्टनम्=छेदनम्, पिट्टन=बलादेरिव मुद्गरादिना हननम्, तर्जनम्=' ज्ञास्यसि रे जाल्म ! ' एतद्रूप भर्त्सन, ताडन=चपेटादिना हननम्, वध=प्राणव्यपरोपणं, बन्ध=रज्जुपाशादिना बन्धनम्, परिक्लेशो=बाधोत्पादन तेषा समाहार' तस्मात् ' पडिविरया ' प्रतिविरता = निवृत्ता ' जावज्जीवाए ' यावज्जीवम्, ' एगच्चाओ अपडिविरया ' एकस्मात् अप्रतिविरता = अनिवृत्ता । ' एगच्चाओ ण्हाण-मद्दण-वण्णग-विलेवण-सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध-मल्ला-लंकाराओ पडिविरया जावज्जीवाए ' एकस्मात् स्नान-मर्दन-वर्णक-विलेपन-शब्द-स्पर्श-रस-

---

कोट्टण-पिट्टण-तज्जण-तालण-वह-वध-परिकिलेसाओ पडिविरया जावज्जीवाए) कोई २ ऐसे है जो कुट्टन-छेदन, पिट्टन-पीटना-वस्त्रादिक का जिस प्रकार मुद्गरादिक से कूटना होता है उसी प्रकार मुद्गर-मूसल आदि से पीटना-कूटना, तर्जन-खोटे वचनों द्वारा भर्त्सना करना, ताडन-चपेटा थप्पड-आदि मारना, वध-प्राणव्यपरोपण करना, बन्ध-रज्जुपाश आदि से किसी को बाधना, एव परिक्लेश-किसी को बाधा आदि उत्पन्न करना, इन सब कार्यों से यावज्जीवन प्रतिविरत है, (एगच्चाओ अपडिविरया) कोई २ ऐसे है जो इन क्रियाओं से प्रतिविरत नहीं है । (एगच्चाओ ण्हाण-मद्दण-वण्णग-विलेवण-सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध-मल्ला-लंकाराओ पडिविरया जावज्जीवाओ)

जावज्जीवाए) કોઈ કોઈ એવા છે કે જે કુટ્ટન-છેદન, પિટ્ટન-પીટવુ-વસ્ત્રાદિને જે પ્રકારે મુદ્ગર આદિથી કૂટે છે તે પ્રકારે મુદ્ગર (ધોકા) મૂસલ (સાબેલા) આદિથી પીટવા-કૂટવા, તર્જન-ખોટા ખરાબ વચનો દ્વારા ભર્ત્સના કરવી, તાડન-તમાચા કે થપ્પડ આદિ મારવુ, વધ-પ્રાણવ્યપરોપણ કરવુ (મારી નાખવુ), બધ-દોરડાના પાશ આદિથી કોઇને બાધવુ, તેમજ પરિક્લેશ-કોઈને બાધા (દુ ખ) આદિ પહોચાડવુ આ બધા કાર્યોથી જીવનપર્યન્ત પ્રતિવિરત છે (एगच्चाओ अपडिविरया) કોઈ કોઈ એવા છે કે જે આ ક્રિયાઓથી અતિવિરત નથી (एगच्चाओ ण्हाण-मद्दण-वण्णग-विलेवण-सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध-मल्ला-लंकाराओ

एगच्चाओ अपडिविरया, एगच्चाओ करणकारावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया, एगच्चाओ पयणपयावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ पयणपयावणाओ अपडिविरया, एगच्चाओ कोट्टण–पिट्टण–तज्जण–तालण–वह–

विरता ' एगच्चाओ करणकारावणाओ ' एकस्मा करणकारणात् =स्वयमनुष्ठान - करण, प्रेरणया परहस्तात्कारणम्, तयो समाहार, तस्मात् ' पडिविरया ' प्रतिविरता, ' जावज्जीवाए ' यावज्जीवम्, ' एगच्चाओ अपडिविरया ' एकस्मादप्रतिविरता =राजाज्ञादिभि कारणै । ' एगच्चाओ पयणपयावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए ' एकस्मा पचनपाचनात्–पचनं=स्वहस्तात्पाककरण, पाचन=परद्वारेण, तस्मात्प्रतिविरता यावज्जीव, ' एगच्चाओ पयणपयावणाओ अपडिविरया ' एकस्मात् पचनपाचनादप्रतिविरता । ' एगच्चाओ कोट्टण–पिट्टण–तज्जण–तालण–वह–वध–परिकिलेसाओ ' एकस्मात्कुट्टन–पिट्टन–तर्जन–ताडन

विरया जावज्जीवाए) ऐसे ही वे स्थूल आरभ–समारंभ से ही जीवनपर्यंत विरक्त रहते हैं, सूक्ष्म आरभसमारभ से नहीं। (एगच्चाओ करणकारावणाओ पडिविरया) कोई ऐसे है जो केवल स्वयं करने से एव दूसरों से कराने से जीवनपर्यन्त विरत रहते है, (एगच्चाओ अपडिविरया) कोई ऐसे है जो राजाकी आज्ञा–आदि के कारण इनसे प्रतिविरत नहीं हैं, (एगच्चाओ पयण–पयावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए) कोई २ ऐसे हैं जो पचन–पाचन क्रिया से जीवन पर्यन्त विरत है। (एगच्चाओ पयणपयावणाओ अपडिविरया) कोई २ ऐसे हैं जो इन पचन–पाचनादि क्रियाओ से विरत नहीं है। (एगच्चाओ

समारंभाओ पडिविरया जावज्जीवाए) तेमज तेओ स्थूल आरंभ–समारंभथी पण जीवनपर्यन्त विरक्त रहे छे, सूक्ष्म आरंभ–समारंभथी विरक्त नथी रहेता (एगच्चाओ करणकारावणाओ पडिविरया) कोई एवा छे के जे करवा–कराववाथी जीवनपर्यंत विरत होय छे (एगच्चाओ अपडिविरया) कोई एवा छे के जे राजानी आज्ञा आदिना कारणे तेनाथी प्रतिविरत होता नथी, (एगच्चाओ पयणपयावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए) कोई कोई एवा छे के जे पचन–पाचन क्रियाथी जीवनपर्यंत विरत छे (एगच्चाओ पयणपयावणाओ अपडिविरया) कोई कोई एवा छे के जे आ पचन–पाचन आदि क्रियाओथी विरत नथी (एगच्चाओ कोट्टण–पिट्टण–तज्जण–तालण–वह–वध–परिकिलेसाओ पडिविरया

मूलम्—तं जहा—समणोवासगा भवंति, अभिगय-जीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा आसव—संवर—निज्जर—किरिया—अहिगरण—बंध—मोक्ख—कुसला असहेज्जा देवा—सुर—नाग—

टीका—ये पूर्वं सामान्येन कथितास्त एव विशेषेण कथ्यन्ते—'तं जहा' तद्यथा—ते मनुजा, 'समणोवासगा भवति' श्रमणोपासका =साधुसेवका—श्रावका भवन्ति, ते कीदृशा सन्ति? अत्राऽऽह—'अभिगयजीवाजीवा' अभिगतजीवाजीवा —अभिगता —यथावस्थितस्वरूपेण ज्ञाता जीवा अजीवाश्च यैस्ते तथा, जीवाजीवतत्त्वज्ञानवन्त इत्यर्थ, 'उवलद्धपुण्णपावा' उपलब्धपुण्यपापा —उपलब्धे=यथावस्थितस्वरूपेण विज्ञाते पुण्यपापे यैस्ते तथा, तत्त्वतो विज्ञातपुण्यपापस्वरूपा इत्यर्थ, 'आसव—संवर—निज्जर—किरिया—अहिगरण—बंध—मोक्ख—कुसला' आस्रव—सवर—निर्जरा—क्रिया—धिकरण—बन्ध—मोक्ष—कुशला —तत्रास्रव —आस्रवति=प्रविशति अष्टविध कर्मसलिल येन आत्मसरसि स आस्रव =

जीवनपर्यंत प्रतिविरत हैं, तथा कितनक ऐसे है जो (एगच्चाओ अपडिविरया) इनसे प्रतिविरत नहीं हैं ॥ सू० ६२ ॥

'तं जहा समणोवासगा' इत्यादि।

(त जहा) इसी प्रकार (समणोवासगा भवति) अन्य श्रमणोपासक होते हैं, जो कि (अभिगयजीवाजीवा) जीव और अजीव के यथार्थ स्वरूप के ज्ञाता होते है, (उवलद्धपुण्णपावा) पुण्य एव पाप का यथावस्थित स्वरूप जिन्होंने अच्छी तरह जान लिया है, (आसव—सवर—निज्जर—किरिया—अहिगरण—बंध—मोक्ख—कुसला) आस्रव, सवर, निर्जरा, क्रिया, अधिकरण, बध, मोक्ष इनमे हेय कौन २ हे और उपादेय कौन २ है इस प्रकार हेय और उपादेय के ज्ञान से जिनका भाव परिपक्व हो चुका है।

પ્રતિવિરત છે, તથા કેટલાક એવા છે કે જે (एगच्चाओ अपडिविरया) તેનાથી પ્રતિવિરત નથી. (સૂ ૬૨)

'त जहा समणोवासगा' ઇત્યાદિ

(त जहा) એજ રીતે (समणोवासगा भवति) જે શ્રમણોપાસક હોય છે, (अभिगयजीवाजीवा) જે જીવ અને અજીવના યથાર્થ સ્વરૂપના જ્ઞાતા હોય છે, (उवलद्धपुण्णपावा) પુણ્ય તેમજ પાપનુ યથાવસ્થિત સ્વરૂપ જેઓએ સારી રીતે સમજી લીધેલુ છે, (आसव-सवर-निजर-किरिया-अहिगरण-बध-मोक्ख-कुसला) આસ્રવ, સવર, નિર્જરા, ક્રિયા, અધિકરણ, બધ, મોક્ષ, તેમા હેય

अपडिविरया, जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जजोगोवहिया कम्मंता परपाणपरियावणकरा कज्जंति तओ वि एगच्चाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया ॥ सू० ६२ ॥

रूप-गन्ध-माल्याऽ-लङ्कारात्प्रतिविरता यावज्जीवम्, 'एगच्चाओ अपडिविरया' एकस्मादप्रतिविरता -तत्र वर्णक =अङ्गराग, अन्यत् स्पष्टम्। तथा-'जे यावण्णे तहप्पगारा' ये यावन्तस्तथाप्रकारा 'सावज्जजोगोवहिया' सावद्ययोगौपधिका -सावद्ययोगा =सावद्ययोगयुक्ताश्च ते औपधिका =मायाप्रयोजनाश्चेति तथा, 'पर-पाण-परियावणकरा' परप्राणपरितापनकरा 'कम्मंता' कर्मान्ता =कृष्यादिव्यापाराश्च 'कज्जंति' क्रियन्ते, 'तओ वि एगच्चाओ पडिविरया' ततोऽपि एकस्मात् प्रतिविरता =प्रतिनिवृत्ता, 'एगच्चाओ अपडिविरया' एकस्मात् अप्रतिविरता =अनिवृत्ता' सन्ति ॥ सू० ६२ ॥

कोई २ ऐसे हैं जो जीवनपर्यन्त स्नान से, मर्दन से, विलेपन से, शब्द, रूप, गंध, रस, स्पर्श इन इन्द्रियों के भोगों से, माला एव अलकार आदि से निवृत्त हैं। (एगच्चाओ अपडिविरया) कोई २ ऐसे भी हैं जो इनसे बिलकुल ही प्रतिविरत नहीं हैं। (जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जजोगोवहिया कम्मता परपाणपरियावणकरा कज्जति) इसी प्रकार के और भी जितने सावद्ययोगोपधिक अर्थात्-सावद्ययोगयुक्त और मायाकषायजन्य तथा-दूसरों के प्राणों को परिताप पहुँचाने वाले जो कृष्यादि व्यापार हैं, (तओ वि) उनसे भी कितनेक ऐसे मनुष्य हैं जो (एगच्चाओ पडिविरया जावज्जीवाए) एकान्ततः

पडिविरया जावज्जीवाओ) કોઈ કોઈ એવા હોય છે કે જે જીવનપર્યંત સ્નાનથી, મર્દનથી, અંગરાગથી, વિલેપનથી, શબ્દ-સ્પર્શ-રૂપ-ગંધ-રસ એ ઇન્દ્રિયોના ભોગોથી અને માળા તેમજ અલંકાર આદિથી નિવૃત્ત છે (एगच्चाओ अपडिविरया) કોઈ કોઈ એવા પણ છે કે જે તેનાથી બિલકુલ જ પ્રતિવિરત હોતા નથી (जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जजोगोवहिया कम्मता परपाण-परियावणकरा कज्जति) એજ પ્રકારે બીજા પણ જેટલા સાવદ્યયોગૌપધિક એટલે સાવદ્યયોગયુક્ત અને માયાકષાયજનિત તથા બીજા જીવોના પ્રાણોને પરિતાપ પહોંચાડનાર જે કૃષિ આદિ વ્યાપાર છે, (तओवि) તેનાથી પણ બીજા કેટલાક એવા મનુષ્ય છે કે જે (एगच्चाओ पडिविरया जावज्जीवाए) જીવનપર્યંન્ત

सकलकर्मक्षये सति जीवस्य कर्मसंयोगापादितरूपरहितस्य साद्यपर्यवसानम् अव्याबाधमवस्थानम्, उक्तं च-

नीसेसकम्मविगमो मुक्खो जीवस्स सुद्धरुवस्स।
साइणपज्जवसाणं अव्वाबाहं अवत्थाणं ॥ १ ॥
छाया-निःशेषकर्मविगमो मोक्षो जीवस्य शुद्धरूपस्य।
साद्यपर्यवसानम् अव्याबाधम् अवस्थानम् ॥ इति ॥

तेषां द्वन्द्वः, तत्र कुशलाः, आस्रवादीनां हेयोपादेयतास्वरूपज्ञानिन इत्यर्थः, 'असहेज्जा' असाहाय्याः-अविद्यमानं साहाय्यं=देवादिसाहाय्यं स्वस्यैव धर्मजनितसामर्थ्यातिशयात् येषां ते तथा, यद्वा-स्वयं कृतं कर्म स्वयमेव भोक्तव्यमिति ज्ञात्वा मनोदौर्बल्याभावात् परसाहाय्यानपेक्षा इत्यर्थः। 'देवा-सुर-नाग-जक्ख-रक्खस-किंनर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं' देवा-सुर-नाग-यक्ष-राक्षस-

---

अत्यन्त-आत्यन्तिक-क्षय का नाम मोक्ष है। समस्त कर्मों के क्षय होने पर उनके संयोग से आपादित मूर्तित्व का शीघ्र ही पर्यवसान जीव में हो जाता है, इससे अमूर्तिस्वरूप स्वभाव का प्राचुर्य होने से उसका अव्याबाधरूप से अवस्थान हो जाता है। कहा भी है-समस्त कर्मों का विगम ही मोक्ष है और वही जीव का शुद्ध स्वरूप है, इस स्वरूप के प्राप्त होते ही जीव का अवस्थान अव्याबाधरूप से आत्मा में हो जाता है। जो "असाहाय्या" हैं अर्थात् धर्मजनित सामर्थ्य के अतिशय से देवादिकों की सहायता की स्वप्न में भी इच्छा नहीं रखते हैं, अथवा अपने द्वारा कृत शुभाशुभ कर्म आत्मा स्वयं ही भोग करता है दूसरों की सहायता इसमें कार्यकारी नहीं हो सकती-इस प्रकार की मानसिक दृढता के कारण जो दूसरों की सहायता की थोडी सी भी परवाह नहीं करते हैं। (देवा-सुर-नाग-जक्ख-

---

સમસ્ત કર્મોના ક્ષય થવાથી તેમના સંયોગથી આપાદિત મૂર્તિત્વનું તરત જ પર્યવસાન જીવમાં થઈ જાય છે તેથી અમૂર્તિસ્વરૂપ પોતાના સ્વભાવનું પ્રાચુર્ય થવાથી તેનું અવ્યાબાધરૂપથી અવસ્થાન થઈ જાય છે કહ્યું પણ છે-સમસ્ત કર્મોનું વિગમ એજ મોક્ષ છે, અને એજ જીવનું શુદ્ધ સ્વરૂપ છે આ સ્વરૂપને પ્રાપ્ત થતાં જ જીવનું અવસ્થાન આવ્યાબાધ રૂપથી આત્મામાં થઈ જાય છે 'असाहाय्या' છે અર્થાત્ ધર્મથી ઉત્પન્ન થતા સામર્થ્યના અતિશયથી દેવ આદિકોની સહાયતાની સ્વપ્નમાં પણ ઈચ્છા રાખતા નથી અથવા પોતાના દ્વારા કરાયેલાં શુભ અશુભ કર્મ આત્મા પોતે જ ભોગવે છે, બીજાની સહાયતા એમાં કામ આવી શકતી નથી આ પ્રકારની માનસિક દૃઢતાના કારણે જે બીજાની સહાયતાની જરા પણ પરવાહ કરતા નથી (देवा-सुर-नाग-जक्ख-रक्खस-किंनर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ

मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकषाययोगरूप, संवरः—संव्रियते=निरुध्यते आस्रवकर्म येन परिणामेन स संवर, समितिगुप्तिप्रभृतिभिरात्मसरसि आगच्छत्कर्मसलिलानां स्थगनमित्यर्थः, निर्जरा—निर्जरणं=कर्मणां जीवप्रदेशेभ्यः परिशटन—विशरण, सा च—देशतः कर्मक्षयरूपा, क्रिया=कायिक्यादिका, अधिकरणम्—अधिक्रियते नरकगतियोग्यतां प्राप्यते आत्माऽनेनेत्यधिकरणम्—द्रव्यतो यन्त्रीयन्त्रादि, भावतः क्रोधादिकम्, बन्ध—जीवस्य कर्मपुद्गलसम्बन्ध, मोक्ष—

जिस प्रकार नौका मे छिद्रों द्वारा जल का प्रवेश होता रहता है इसी प्रकार इस आत्मारूप सरोवर में जिसके द्वारा अष्टविध कर्मरूप जल का आगमन होता है उसका नाम आस्रव है। मिथ्यादर्शन, अविरति, प्रमाद, कषाय एव योग के भेद से यह आस्रव अनेक प्रकार का है। छिद्रों के बंद करने से जिस प्रकार नौका मे पानी का आना रुक जाता है उसी प्रकार जिन परिणामों से आते हुए कर्म रुक जाते हैं उन परिणामों का नाम संवर है। गुप्ति, समिति एव परीषह आदि के भेद से यह संवर अनेक प्रकार का बतलाया गया है। जीव-प्रदेश से कर्मों के एकदेश का नाश होना इसका नाम निर्जरा है। काय आदि संबधी व्यापारों का नाम क्रिया है। नरकगति में जाने की योग्यता जीव जिसके द्वारा प्राप्त करता है वह अधिकरण है। द्रव्य और भाव के भेद से यह दो प्रकार का है। यहा पर भाव अधिकरण का कथन है, अतः वह क्रोधादिक कषायरूप जानना चाहिये। जीव का एव कर्मपुद्गलों का परस्पर में एकक्षेत्रावगाहरूप संबध का नाम बंध है। समस्त कर्मों के

શું છે અને ઉપાદેય શું છે આવી રીતે હેય અને ઉપાદેયના જ્ઞાનથી જેના ભાવ પરિપક્વ થઇ ગયા હોય છે જેવી રીતે નૌકામા છિદ્રો દ્વારા જળનો પ્રવેશ થયા કરે છે તેવી જ રીતે આ આત્મારૂપ સરોવરમા જેના દ્વારા, આઠ પ્રકારના કર્મરૂપી જલનુ આગમન થાય છે તેનુ નામ આસ્રવ છે મિથ્યાદર્શન, અવિરતિ, પ્રમાદ, કષાય તેમજ યોગના ભેદથી આ આસ્રવ અનેક પ્રકારના થાય છે છિદ્રોને બધ કરવાથી જેવી રીતે નૌકામા પાણીનુ આવવુ રોકાઈ જાય છે તેવી જ રીતે જે પરિણામોથી આવનારા કર્મ રોકાઈ જાય એવા પરિણામોનુ નામ સવર છે ગુપ્તિ, સમિતિ તેમજ પરીષહ આદિના ભેદથી આ સવર અનેક પ્રકારના બતાવવામા આવ્યા છે જીવ-પ્રદેશથી કર્મોના એક દેશ નષ્ટ થાય તેનુ નામ નિર્જરા છે કાય આદિ સબધી વ્યાપારોનુ નામ ક્રિયા છે નરકગતિમા જવાની યોગ્યતા જીવ જેના દ્વારા પ્રાપ્ત કરે છે તે અધિકરણ છે દ્રવ્ય તથા ભાવના ભેદથી તે બે પ્રકારના છે અહી ભાવ-અધિકરણનુ કથન છે તેથી તે ક્રોધ આદિક કષાયરૂપ જાણવુ જોઈએ જીવનો તેમજ કર્મપુદ્ગલોનો પરસ્પરમા એકક્ષેત્રાવગાહરૂપ સબધ છે, તેનુ નામ બધ છે. સમસ્ત કર્મોના અત્યત-આત્યતિક ક્ષયનુ નામ મોક્ષ છે

पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठि-मिंज-पेमा-णुराग-रत्ता, अयमाउसो! निग्गंथे पावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठे, सेसं अणट्ठे, ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा चियत्त-तेउर-घरप्पवेसा बहूहि

यट्ठा' पृष्टार्था -सन्दिग्धार्थस्य प्रश्नकरणात, 'अभिगयट्ठा' अभिगतार्था -पृष्टार्थस्याभिगमात् 'विणिच्छियट्ठा' विनिश्चितार्था -पदार्थानां विनिश्चयात, 'अट्ठि-मिंज-पेमा-णुराग-रत्ता' अस्थिमज्जाप्रेमानुरागरक्ता अस्थीनि='हड्डी' इति प्रसिद्धानि, मज्जा-अस्थिमध्यगतो धातुविशेष, तासु अस्थिमज्जासु प्रवचनस्य प्रेमानुरागेण=प्रेमरूपेणानुरागेण रक्ता ये ते तथा, ते श्रावकाः पुत्रादीन् सम्बोध्य वदन्ति 'अयमाउसो' इत्यादि। इदं हे आयुष्मन्! 'निग्गंथे पावयणे' नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, 'अट्ठे' अर्थ =मोक्षस्य कारणम्, अतएव-'अयं परमट्ठे' इदं परमार्थ =सारभूत, 'सेसे अणट्ठे' शेषमनर्थम्-शेष=नैर्ग्रन्थप्रवचनभिन्नं कुप्रवचनं धनधान्यपुत्रकलत्रादिकं च अनर्थ=व्यर्थम्, 'ऊसियफलिहा' उच्छ्रितस्फटिका -उच्छ्रितम्=उन्नतं स्फटिक=स्फटिकमिव चित्तं येषां ते तथा, स्फटिकवन्निर्मलहृदया इत्यर्थ,

हैं, पृष्टार्थ हे, अभिगतार्थ हैं, (विणिच्छियट्ठा) विनिश्चितार्थ हैं, (अट्ठि-मिंज-पेमा-णुराग-रत्ता) प्रवचन के प्रति अनुराग जिनकी नस-नस में भरा हुआ है। ऐसे ये श्रावक जन वार्तालाप के प्रसंग में अपने २ पुत्रादिकों को अथवा अन्यजनों को इस प्रकार कह कर समझाते-बुझाते हैं-(अयमाउसो! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे) हे आयुष्मन्! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन ही मोक्ष का कारण है इसलिए यही परमार्थभूत है। इससे भिन्न जो कुप्रवचन है-मिथ्यादृष्टियों द्वारा उपदिष्ट प्रवचन है वह, तथा धन, धान्य, पुत्र एवं कलत्रादि, अनर्थ के कारण हैं। इन व्यक्तियों का (ऊसियफलिहा) हृदय स्फटिक

જેમની અસંદિગ્ધ શ્રદ્ધા છે, જે લબ્ધાર્થ છે, ગૃહીતાર્થ છે, પૃષ્ટાર્થ છે, અભિગતાર્થ છે, (विणिच्छियट्ठा) વિનિશ્ચિતાર્થ છે, (अट्ठि-मिंज-पेमा-णुराग-रत्ता) જેની નસે-નસમાં પ્રવચન પ્રતિ અનુરાગ ભરેલો હોય છે એવા એ શ્રાવક જન વાર્તાલાપના પ્રસંગમાં પોતપોતાના પુત્રાદિકોને અથવા બીજા લોકોને આ પ્રકારે કહીને સમજાવે-બુઝાવે છે-(अयमाउसो! निग्गंथे पावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठे, सेसे अणट्ठे) હે આયુષ્મન્! આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન જ મોક્ષનું કારણ છે માટે એજ પરમાર્થભૂત છે તેનાથી બીજા જે કાંઈ પ્રવચન છે તે મિથ્યાદૃષ્ટિઓ દ્વારા ઉપદેશાયેલા પ્રવચન છે, તે, તથા ધન, ધાન્ય પુત્ર તેમજ કલત્ર આદિ, અનર્થના કારણ છે આ વ્યક્તિઓના હૃદય (ऊसियफलिहा) સ્ફટિક

जक्ख-रक्खस-किन्नर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिया णिक्कंखिया निव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा

किंनर-किंपुरुष-गरुड-गन्धर्व-महोरगादिकैः-सर्वैः देवा =वैमानिका असुरा =असुरकुमाराः, नागा =नागकुमाराः, असुरा नागा इमे उभये भवनपतयः, यक्षा राक्षसा किंनरा किंपुरुषा -एते चत्वारो व्यन्तरविशेषाः, गरुडा -गरुडध्वजा - सुपर्णकुमाराः भवनपतिविशेषाः, गन्धर्वा महोरगाश्च व्यन्तरविशेषाः, तत्प्रभृतिभिः देवगणैः '**निग्गंथाओ पावयणाओ**' नैर्ग्रन्थात् प्रवचनात् '**अणइक्कमणिज्जा**' अनतिक्रमणीया =अचालनीया -निर्ग्रन्थप्रवचनात् तान् चालयितुं देवादयोऽप्यसमर्था इति भावः। '**निग्गंथे पावयणे**' नैर्ग्रन्थे प्रवचने '**निस्संकिया**' निःशङ्किता =शङ्कारहिताः, '**निक्कंखिया**' निष्काङ्क्षिता = परमतानभिलाषिणः, '**निव्वितिगिच्छा**' निर्विचिकित्सा - फलं प्रति संदेहवर्जिताः, '**लद्धट्ठा**' लब्धार्था -अर्थश्रवणात्, '**गहियट्ठा**' गृहीतार्था -अर्थावधारणात्, '**पुच्छि-**

रक्खस-किंनर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा) देव, असुरकुमार, नागकुमार, यक्ष, राक्षस, किंनर, किंपुरुष, गरुड, सुपर्णकुमार, गन्धर्व एवं महोरग इत्यादिक देवगणों द्वारा भी जो निर्ग्रन्थ प्रवचन से एक बाल भी विचलित नहीं किये जा सकते है, **(निग्गंथे पावयणे णिस्संकिया णिक्कंखिया णिव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा)** निर्ग्रन्थप्रवचन में जिनको श्रद्धा निःशंकित है, निष्कांक्षित है-परमत की ओर जिनके हृदय में जाने की अथवा उसे सराहने आदि की थोड़ी सी भी अभिलाषा नहीं है, निर्विचिकित्सागुण से जो भरपूर हैं, फल के प्रति जिनकी श्रद्धा संदेह से सर्वथा रिक्त है, जो लब्धार्थ है, गृहीतार्थ

पावणयाओ अणइक्कमणिज्जा) દેવ, અસુરકુમાર, નાગકુમાર, યક્ષ, રાક્ષસ, કિંનર, કિંપુરુષ, ગરુડ, સુપર્ણકુમાર, ગંધર્વ તેમજ મહોરગ ઇત્યાદિક દેવગણો દ્વારા પણ જે નિર્ગ્રંથ પ્રવચન વડે એક વાળ જેટલા પણ વિચલિત કરી શકાતા નથી, (निग्गथे पावयणे णिस्संकिया, णिक्कंखिया णिव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा) નિર્ગ્રંથ પ્રવચનમાં જેમની શ્રદ્ધા નિઃશંકિત છે, કાંક્ષા વગરના છે-પરમતની તરફ જવાની જેમના હૃદયમાં અભિલાષા જરા પણ નથી, અથવા પરમતની પ્રશંસા આદિ કરવાની કિંચિત પણ અભિલાષા નથી, નિર્વિચિકિત્સા-ગુણથી જે ભરપૂર છે. ફળના તરફ

पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठि-मिंज-पेमा-णुराग-रत्ता, अयमाउसो! निग्गंथे पावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठे, सेसं अणट्ठे, ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा चियत्त-तेउर-घरप्पवेसा बहूहिं

यट्ठा' पृष्टार्था-सन्दिग्धार्थस्य प्रश्नकरणात्, 'अभिगयट्ठा' अभिगतार्था-पृष्टार्थस्याभिगमात् 'विणिच्छियट्ठा' विनिश्चितार्था-पदार्थाना विनिश्चयात, 'अट्ठि-मिंज-पेमा-णुराग-रत्ता' अस्थिमज्जाप्रेमानुरागरक्ता अस्थीनि='हड्डी' इति प्रसिद्धानि, मज्जा-अस्थिमध्यगतो धातुविशेष, तासु अस्थिमज्जासु प्रवचनस्य प्रेमानुरागेण=प्रेमरूपेणानुरागेण रक्ता ये ते तथा, ते श्रावका पुत्रादीन् मनोध्य वदन्ति 'अयमाउसो' इत्यादि। इदं हे आयुष्मन्! 'निग्गंथे पावयणे' नैर्ग्रन्थ प्रवचनम्, 'अट्ठे' अर्थ =मोक्षस्य कारणम्, अतएव-'अय परमट्ठे' इद परमार्थ=सारभूत, 'सेसे अणट्ठे' शेषमनर्थम्-शेष=नैर्ग्रन्थप्रवचनभिन्न कुप्रवचन धनधान्यपुत्रकलत्रादिक च अनर्थ=व्यर्थम्, 'ऊसियफलिहा' उच्छ्रितस्फटिका-उच्छ्रितम्=उन्नत स्फटिक=स्फटिकमिव चित्त येषा ते तथा, स्फटिकनिर्मलहृदया इत्यर्थ,

हैं, पृष्टार्थ है, अभिगतार्थ है, (विणिच्छियट्ठा) विनिश्चितार्थ हैं, (अट्ठि-मिंज-पेमा-णुराग-रत्ता) प्रवचन के प्रति अनुराग जिनकी नस-नस में भरा हुआ है। ऐसे ये श्रावक जन वार्तालाप के प्रसग म अपने २ पुत्रादिकों को अथवा अन्यजनों को इस प्रकार कह कर समझाते-बुझाते हे-(अयमाउसो! निग्गथे पावयणे अट्ठे अय परमट्ठे सेसे अणट्ठे) ह आयुमन्! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन ही मोक्ष का कारण है इसलिए यही परमार्थभूत है। इससे भिन्न जो कुप्रवचन है-मिथ्यादृष्टियों द्वारा उपदिष्ट प्रवचन है वह, तथा धन, धान्य, पुत्र एव कलत्रादि, अनर्थ के कारण हे। इन व्यक्तियों का (ऊसियफलिहा) हृदय स्फटिक

જેમની અસંદિગ્ધ શ્રદ્ધા છે, જે લબ્ધાર્થ છે, ગૃહીતાર્થ છે, પૃષ્ટાર્થ છે, અભિગતાર્થ છે, (विणिच्छियट्ठा) વિનિશ્ચિતાર્થ છે, (अट्ठि-मिंज-पेमा-णुराग-रत्ता) જેની નસે-નસમા પ્રવચન પ્રતિ અનુરાગ ભરેલો હોય છે એવા એ શ્રાવક જન વાર્તાલાપના પ્રસંગમા પોતપોતાના પુત્રાદિકોને અથવા બીજા લોકોને આ પ્રકારે કહીને સમજાવે-બુઝાવે છે-(अयमाउसो! निग्गंथे पावयणे अट्ठे, अय परमट्ठे, सेसे अणट्ठे) હે આયુષ્મન્! આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન જ મોક્ષનુ કારણ છે માટે એજ પરમાર્થભૂત છે તેનાથી બીજા જે કાઈ પ્રવચન છે તે મિથ્યા-દૃષ્ટિઓ દ્વારા ઉપદેશાયેલા પ્રવચન છે, તે, તથા ધન, ધાન્ય, પુત્ર તેમજ કલત્ર આદિ, અનર્થના કારણ છે આ વ્યક્તિઓના હૃદય (ऊसियफलिहा) સ્ફટિક

सील–व्वय–गुण–वेरमण–पच्चक्खाण–पोसहो–ववासेहिं चउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेत्ता

'अवगुयदुवारा' अपावृतद्वारा =दानार्थमभिमुख उद्घाटितद्वारा इत्यर्थ, 'अवगुय' इति देशीय शब्द, 'चियत्ततेउरघरप्पवेसा' त्यक्तान्त पुरगृहप्रवेशा –त्यक्त =प्रीत्या प्रदत्त, अन्त पुरे वा गृहे वा प्रवेशो येषा ते तथा, अतिधार्मिकतया सर्वत्रानाशङ्कनीया इत्यर्थ । ते कथभूता विहरन्ती त्याह–'चउद्दस–ट्ठमु–दिट्ठ–पुण्णमासिणीसु' चतुर्दश्यष्टम्युद्दिष्टपौर्णमासीषु 'बहूहिं' बहुभि, 'सील–व्वय–गुण–वेरमण–पच्चक्खाण–पोसहो–ववासेहिं' शील–व्रत–गुण–विरमण–प्रत्याख्यान–पोषधो–पवासै –अस्य व्याख्याऽत्रैवोत्तरार्धे त्रिषष्टितमे सूत्रेऽवलोकनीया । चतुर्दश्यष्टम्युद्दिष्टापौर्णमासीषु–इह–'उद्दिष्टा' इत्यनेन अमावास्या गृह्यते ।

मणि के समान निर्मल रहा करता है । (अवगुयदुवारा) इनके घर के दरवाजे सदा दान के लिये खुले रहा करते हैं, (चियत्त–तेउर–घर–प्पवेसा) राजा क अत पुर में भी इनको आने–जाने की कोई भी रोक–टोक नहीं होती है । (बहूहिं सील–व्वय–गुण–वेरमण–पच्चक्खाण–पोसहोववासेहिं चउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु) 'शील' शब्द से सामायिक, देशावकाशिक, पोषध, अतिथिसविभाग ये चार लिये जाते है। 'व्रत' से पाच अणुव्रत, गुण से तीन गुणव्रत लिये जाते हैं। विरमण–मिथ्यात्व से निवृत्त होना, प्रत्याख्यान–पर्वदिनों में निषिद्धवस्तुका त्याग करना । पोषधोपवास–(पोष धत्ते) इस व्युत्पत्ति से धर्म की वृद्धि को जो करता है वह पोषध कहलाता है, अर्थात् चतुर्दशी, अमावास्या, अष्टमी, पूर्णिमा, ये पोषध कहलाते है, इन पर्वदिनों मे आहार, शरीरसत्कार, अब्रह्मचर्य, और सावद्यव्यापार इन चारों

મણિના જેવા નિર્મળ રહ્યા કરે છે, (अवगुयदुवारा) તેમના ઘરના દરવાજા સદા દાન માટે ઉઘાડા રહ્યા કરે છે (चियत्तेउरघरप्पवेसा) રાજાના અંત–પુરમાં પણ તેમને આવવા–જવાની કોઈ પણ જાતની રોક–ટોક થતી નથી, (बहूहिं सील–व्वय–गुण–वेरमण–पच्चक्खाण–पोसहोववासेहिं चउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु) 'शील' શબ્દથી સામાયિક, દેશાવકાશિક, પોષધ, અતિથિસંવિભાગ, એ ચાર સમજવાના છે 'व्रत'થી પાચ અણુવ્રત, 'ગુણ'થી ત્રણ ગુણવ્રત લેવાના છે, વિરમણ–મિથ્યાત્વથી નિવૃત્ત થવુ, પ્રત્યાખ્યાન–પર્વના દિવસોમા નિષિદ્ધ વસ્તુનો ત્યાગ કરવો પોષધોપવાસ–(पोष धत्ते) આ વ્યુત્પત્તિથી ધર્મની વૃદ્ધિને જે કરે છે તે પોષધ કહેવાય છે, અર્થાત્ ચતુર્દશી, અમાવાસ્યા, અષ્ટમી, પૂર્ણિમા, એ પોષધ કહેવાય છે આ દિવસોમા–પર્વદિવસોમા આહાર, શરીરસત્કાર, અબ્રહ્મચર્ય અને સાવદ્યવ્યાપાર એ ચારેયનો ત્યાગ

समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंवल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणा विहरंति, विह-

चतुर्दश्यादिषु तिथिषु 'पडिपुण्ण' प्रतिपूर्ण 'पोसह' पोषध, 'सम्म' सम्यक् 'अणुपालेत्ता' अनुपाल्य 'समणे निग्गथे' श्रमणान् निर्ग्रन्थान् 'फासुएसणिज्जेण' प्रासुकैषणीयेन, 'असण-पाण-खाइम-साइमेण' अशन-पान-खाद्य-स्वाद्येन, 'वत्थ-पडिग्गह-कबल-पायपुंछणेण' वस्त्रपतद्ग्रहकम्बलपादप्रोञ्छनेन, तत्र पतद्ग्रह=पात्र, पादप्रोञ्छन=रजोहरणम्, 'ओसहभेसज्जेण' औषधभैषज्येन 'पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण' प्रातिहारिकेण च पीठफलकशय्यासस्तारकेण-तत्र पीठम्=आसन, फलकम्=अवष्टम्भनफलक, शय्या=वसति, यद्वा बृहत्सस्तारक, सस्तारक=लघुतर, एषा समाहारद्वन्द्व, ततस्तेन, 'पडिलाभेमाणा' प्रतिलम्भयन्त=ददत, 'विहरति'

का त्याग करना पोषधोपवास है, इस तरह बारह प्रकार के श्रावक धर्म को (सम्म अणुपालेत्ता) अच्छी तरह पालन करते है। (समणे निग्गथे) श्रमणनिर्ग्रन्थों को (फासुएसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण) प्रासुक-एषणीय अशन, पान, खाद्य तथा स्वाद्य ऐसे चारों प्रकार के आहारों से (वत्थ-परिग्गह-कबल-पायपुछणेण ओसहभेसज्जेण) एव वस्त्र, पात्र, कम्बल, रजोहरण, औषध, (पाडिहारिएण य पीढफलगसेज्जा-सथारएण पडिलाभेमाणा विहरति) एव प्रातिहारिक (पडिहारा) पीठ (बाजोट) फलक (पाट) शय्या (वसति) और सस्तारक आदि से, मुनियों को प्रतिलाभित करते हुए विचरते है, अर्थात् उन्हें इन पूर्वोक्त वस्तुओं को आवश्यकतानुसार प्रदान करते है, (विहरित्ता भत्त

કરવો તે પોષધોપવાસ છે આ રીતે બાર પ્રકારના શ્રાવક ધર્મને (सम्म अणुपालेत्ता) સારી રીતે પાલન કરે છે (समणे निग्गथे) શ્રમણ નિર્ગ્રંથોને (फासुएसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण) પ્રાસુક-એષણીય અશન, પાન, ખાદ્ય તથા સ્વાદ્ય એવા ચારેય પ્રકારના આહારથી, (वत्थ-परिग्गह-कबल-पायपुछणेण ओसहभेसज्जेण) તેમજ વસ્ત્ર, પાત્ર, કંબલ, રજોહરણ, ઔષધ, ભેષજ, (पाडिहारिएण य पीठ-फलग-सेज्जा-सथारएण पडिलाभेमाणा विहरति) તેમજ પ્રાતિહારિક (પડિહારા) પીઠ (બાજોઠ) ફલક-પાટ, શય્યા (વસતિ) અને સસ્તારક આદિથી મુનિયોને પ્રતિલાભિત કરતા વિચરે છે, અર્થાત્ તેઓ આ ઉપર કહેલી વસ્તુઓને આવશ્યકતા પ્રમાણે પ્રદાન કરે છે (विहरित्ता भत्त पच्चक्खति)

सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहो-ववासेहिं चउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेत्ता

'अवगुयदुवारा' अपावृतद्वारा =दानार्थमर्थिभ्य उद्घाटितद्वारा इत्यर्थ, 'अवगुय' इति देशीय शब्द, 'चियत्ततेउरघरप्पवेसा' त्यक्तान्त पुरगृहप्रवेशा -त्यक्त =प्रीत्या प्रदत्त, अन्त पुरे वा गृहे वा प्रवेशो येषा ते तथा, अतिधार्मिकतया सर्वजनानाशङ्कनीया इत्यर्थ। ते कथभूता विहरन्ती याह-'चउद्दस-ट्ठमु-दिट्ठ-पुण्णमासिणीसु' चतुर्दश्यष्टम्युद्दिष्टपौर्णमासीषु 'बहूहिं' बहुभि, 'सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहो-ववासेहिं' शील-व्रत-गुण-विरमण-प्रत्याख्यान-पोषधो-पवासै -अस्य व्याख्याऽत्रैवोत्तरार्धे त्रिषष्टितमे सूत्रेऽवलोकनीया। चतुर्दश्यष्टम्युद्दिष्टपौर्णमासीषु-इह-'उद्दिष्टा' इत्यनेन अमावास्या गृह्यते।

मणि के समान निर्मल रहा करता है। (अवगुयदुवारा) इनके घर के दरवाजे सदा दान-के लिये खुले रहा करते हैं, (चियत्त-तेउर-घर-प्पवेसा) राजा के अत पुर में भी इनको आने-जाने की कोई भी रोक-टोक नहीं होती है। (बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं चउद्दसट्ठमुदिट्ठपुण्णमासिणीसु) 'शील' शब्द से सामा-यिक, देशावकाशिक, पोषध, अतिथिसविभाग ये चार लिये जाते है। 'व्रत' से पाच अणु-व्रत, गुण से तीन गुणव्रत लिये जाते है। विरमण-मिथ्यात्व से निवृत्त होना, प्रत्याख्यान-पर्वदिनों में निषिद्धवस्तुका त्याग करना। पोषधोपवास-(पोष धत्ते) इस व्युत्पत्ति से धर्म की वृद्धि को जो करता है वह पोषध कहलाता है, अर्थात् चतुर्दशी, अमावास्या, अष्टमी, पूर्णिमा, ये पोषध कहलाते है, इन पर्वदिनों में आहार, शरीरसत्कार, अब्रह्मचर्य, और सावद्यव्यापार इन चारों

મણિના જેવા નિર્મળ રહ્યા કરે છે, (अवगुयदुवारा) તેમના ઘરના દરવાજા સદા દાન માટે ઉઘાડા રહ્યા કરે છે (चियत्तंतेउरघरप्पवेसा) રાજાના અત-પુરમા પણ તેમને આવવા-જવાની કોઇ પણ જાતની રોક-ટોક થતી નથી, (बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं चउद्दसट्ठमुदिट्ठपुण्ण-मासिणीसु) 'શીલ' શબ્દથી સામાયિક, દેશાવકાશિક, પોષધ, અતિથિસવિભાગ, એ ચાર સમજવાના છે 'વ્રત'થી પાચ અણુવ્રત, 'ગુણ'થી ત્રણ ગુણ-વ્રત લેવાના છે, વિરમણ-મિથ્યાત્વથી નિવૃત્ત થવુ, પ્રત્યાખ્યાન-પર્વના દિવ-સોમા નિષિદ્ધ વસ્તુનો ત્યાગ કરવો. પોષધોપવાસ-(पोष धत्ते) આ વ્યુત્પત્તિથી ધર્મની વૃદ્ધિને જે કરે છે તે પોષધ કહેવાય છે, અર્થાત્ ચતુર્દશી, અમા-વાસ્યા, અષ્ટમી, પૂર્ણિમા, એ પોષધ કહેવાય છે આ દિવસોમા-પર્વદિવસોમા આહાર, શરીરસત્કાર, અબ્રહ્મચર્ય અને સાવદ્યવ્યાપાર એ ચારેયનો ત્યાગ

मूलम्—से जे इमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु मणुया भवंति, तं जहा-अणारंभा अपरिग्गहा धम्मिया जाव कप्पेमाणा

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे गमागर जाव सण्णिवेसेसु' अथ य इमे ग्रामाऽऽकर यावत् सन्निवेशेषु 'मणुया भवंति' मनुजा भवन्ति, 'तं जहा' तद्यथा-'अणारंभा अपरिग्गहा धम्मिया जाव कप्पेमाणा' अनारम्भा अपरिग्रहा धार्मिका यावत् कल्पयन्त, अत्र-यावच्छब्देन 'धम्माणुया, धम्मिट्ठा, धम्मक्खाई, धम्मप्पलोई, धम्मपल्लज्जणा, धम्मसमुदायारा, धम्मेणं चेव वित्तिं' धर्मानुगा धर्मिष्ठा धर्माख्यायिनो धर्मप्रलोकिनो धर्मप्ररञ्जना धर्मसमुदाचारा धर्मेणैव वृत्तिम्-इति पाठो

में उत्कृष्ट बाईस सागरोपम स्थिति कही गयी है। अवशिष्ट पहले के समान समझना चाहिये ॥ सू. ६३ ॥

'से जे इमे' इत्यादि।

(से जे इमे) जो ये (गामागर जाव सण्णिवेसेसु) ग्राम आकर आदि निवासस्थानों से लेकर सन्निवेश तक के निवासस्थानों में (मणुया भवंति) मनुष्य निवास करते हैं और उनमें जो कई एक मनुष्य (साहू) साधु होते है वे (अणारंभा) आरंभ से रहित होते है, (अपरिग्गहा) परिग्रहवर्जित होते है, (धम्मिया) धार्मिक होते हैं, (जाव धम्मेणेव वित्तिं कप्पेमाणा) एव निर्दोष भिक्षा से अपनी सयमयात्रा का निर्वाह करते है। यहाँ 'जाव' शब्द से "धम्माणुया, धम्मिट्ठा, धम्मक्खाई, धम्मपलोई, धम्मपल्लज्जणा, धम्मसमुदायारा, धम्मेण चेव वित्तिं" इस पाठ का ग्रहण हुआ है। इसकी

બાવીસ સાગરોપમ સ્થિતિ કહેવાય છે બાકી બધુ પહેલા પ્રમાણે સમજવુ જોઈએ. (સૂ ૬૩)

'से जे इमे' ઇત્યાદિ

(से जे इमे) તેઓ જે (गामागर जाव सण्णिवेसेसु) ગ્રામ આકર આદિ નિવાસસ્થાનોથી લઈને સન્નિવેશ સુધીના નિવાસસ્થાનોમા (मणुया भवंति) મનુષ્ય નિવાસ કરે છે અને તેમા જે કેટલાએક મનુષ્ય (साहू) સાધુ હોય છે તેઓ (अणारभा) આરભથી રહિત હોય છે, (अप्परिग्गहा) પરિગ્રહવર્જિત હોય છે, (धम्मिया) ધાર્મિક હોય છે (जाव धम्मेणेव वित्तिं कप्पेमाणा) તેમજ નિર્દોષ-ભિક્ષાવડે પોતાની સયમયાત્રાનો નિર્વાહ કરે છે અહી 'जाव' શબ્દથી "धम्माणुया, धम्मिट्ठा, धम्मक्खाई, धम्मपलोई, धम्मपलज्जणा, धम्मसमुदायारा, धम्मेण चेव वित्तिं" આ પાઠને ગ્રહણ કરવામા આવ્યો છે આની વ્યાખ્યા

रित्ता भत्तं पच्चक्खंति, ते बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तहिं तेसिं गई, बावीसं सागरोवमाइं ठिई, आराहगा, सेसं तहेव ॥ सू० ६३ ॥

विहरन्ति, 'विहरित्ता' विहृत्य 'भत्त पच्चक्खंति' भक्त प्रत्याख्यान्ति=परित्यजन्ति, 'अणसणाए छेदेंति' अनशनया छिन्दन्ति, 'छेइत्ता' छित्वा 'आलोइयपडिक्कंता' आलोचितप्रतिक्रान्ता, 'समाहिपत्ता' समाधिप्राप्ता, 'कालमासे' कालमासे 'काल किच्चा' काल कृत्वा 'उक्कोसेण अच्चुए कप्पे' उत्कर्षतोऽच्युते कल्पे 'देवत्ताए उववत्तारो भवति' देवत्वेन उपपत्तारो भवन्ति। 'तहिं तेसिं गई' तत्र तेषा गति, 'बावीस सागरोवमाइ ठिई' द्वाविंशति सागरोपमानि स्थिति, 'आराहगा' आराधका, 'सेस तहेव' शेष तथैव ॥ सू० ६३ ॥

पच्चक्खंति) पश्चात् अन्तिम समय में भक्तप्रत्याख्यान करते है, (ते बहूइं भत्ताइ अणसणाए छेदेंति) वे अनेक भक्तों का अनशन द्वारा छेदन करते है, (छेदित्ता आलोइय-पडिकता सामाहिपत्ता कालमासे काल किच्चा) छेदन कर अपने पापस्थानों की आलोचना एव प्रतिक्रमण करके वे समाधिसहित काल अवसर में काल कर (उक्कोसेण अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति) जघन्य पहले देवलोक उत्कृष्ट बारहवें देवलोक अच्युतकल्प में देवपर्याय से उत्पन्न होते हैं। (तहिं तेसिं गई, बावीसं सागरोवमाइ ठिई, आरहगा, सेस तहेव) प्रथम देवलोक मे इनकी उत्कृष्ट दो सागरोपम और बारहवें देवलोक

પછી અંત સમયે ભક્ત-પ્રત્યાખ્યાન કરે છે (ते बहूइं भत्ताइ अणसणाए छेदेंति) તેઓ અનેક ભક્તોનું અનશન દ્વારા છેદન કરે છે (छेदित्ता आलोइयपडिक्कता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा) છેદન કરીને પોતાના પાપસ્થાનોની આલોચના તેમજ પ્રતિક્રમણ કરીને તેઓ સમાધિ-સહિત કાલ અવસરમાં કાલ કરીને (उक्कोसेण अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवति) જઘન્ય પહેલા દેવલોક, ઉત્કૃષ્ટ બારમા દેવલોક અચ્યુત કલ્પમાં દેવપર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે (तहिं तेसिं गई, बावीस सागरोवमाइ ठिई, आराहगा, सेस तहेव) પ્રથમ દેવલોકમાં તેમની ઉત્કૃષ્ટ બે સાગરોપમ અને બારમા દેવલોકમાં ઉત્કૃષ્ટ

पडिविरया, सव्वाओ आरंभसमारंभाओ पडिविरया, सव्वाओ करणकारावणाओ पडिविरया, सव्वाओ पयणपयावणाओ पडिविरया, सव्वाओ कोट्टण–पिट्टण–तज्जण–तालण–वह–बंध–किलेसाओ पडिविरया, सव्वाओ ण्हाण–मद्दण–वण्णग–विलेवण–सद्द–फरिस–रस–रूव–गंध–मल्ला–लंकाराओ पडिविरया,

भसमारंभाओ पडिविरया' सर्वस्मादारम्भसमारम्भात् प्रतिविरता 'सव्वाओ करणकारावणाओ पडिविरया' सर्वस्मात् करणकारणात् प्रतिविरता, 'सव्वाओ पयणपयावणाओ पडिविरया' सर्वस्मात्पचनपाचनात् प्रतिविरता, 'सव्वाओ कुट्टण–पिट्टण–तज्जण–तालण–वह–बंध–परिकिलेसाओ पडिविरया' सर्वस्मात्कुट्टन–पिट्टन–तर्जन–ताडन–वध–बन्ध–परिक्लेशात् प्रतिविरता, 'सव्वाओ ण्हाण–मद्दण–वण्णग–विलेवण–सद्द–फरिस–रस–रूव–गंध–मल्ला–लंकाराओ पडिविरया' सर्वस्मात् स्नान–मर्दन–वर्णक–विलेपन–शब्द–स्पर्श–रस–रूप–गन्ध–माल्याऽ–लङ्कारात्प्रतिविरता, तथा 'जे यावण्णे

आरंभसमारंभ से प्रतिविरत होते हैं, (सव्वाओ करणकारावणाओ पडिविरया) समस्त करण एवं करावणमें–करने–कराने से विरक्त होते हैं, (सव्वाओ पयणपयावणाओ पडिविरया) सर्व प्रकार की पचन एवं पाचन क्रिया से प्रतिविरत होते हैं, (सव्वाओ कोट्टण–पिट्टण–तज्जण–तालण–वह–बंध–परिकिलेसाओ पडिविरया) समस्त प्रकार के कुट्टण, पिट्टण, तर्जन, ताडन, वध, बंध, परिक्लेश से विरक्त होते हैं, (सव्वाओ ण्हाण–मद्दण–वण्णग–विलेवण–सद्द–फरिस–रस–रूव–गंध–मल्ला–लंकाराओ पडिविरया) संपूर्ण स्नान, मर्दन, वर्णक, विलेपन, शब्द, रूप, गंध, रस, स्पर्श, माल्य एवं अलंकारों से रहित

રંભથી પ્રતિવિરક્ત હોય છે (સવ્વાઓ કરણકારાવણાઓ પડિવિરયા) સમસ્ત કરણું તેમજ કરાવણુથી–કરવા–કરાવવાથી વિરક્ત હોય છે (સવ્વાઓ પયણપયાવણાઓ પડિવિરયા) સર્વપ્રકારની પચન તેમજ પાચન ક્રિયાથી વિરક્ત હોય છે (સવ્વાઓ કોટ્ટણ–પિટ્ટણ–તજ્જણ–તાલણ–વહ–બંધ–પરિકિલેસાઓ પડિવિરયા) સમસ્ત પ્રકારના કુટ્ટણ, પિટ્ટણ, તર્જન, તાડન, વધ, બંધ, પરિક્લેશથી વિરક્ત હોય છે (સવ્વાઓ ણ્હાણ–મદ્દણ–વણ્ણગ–વિલેવણ–સદ્દ–ફરિસ–રસ–રૂવ–ગંધ–મલ્લા–લંકારાઓ પડિવિરયા) સંપૂર્ણ સ્નાન, મર્દન, વર્ણક, વિલેપન, શબ્દ, સ્પર્શ, રસ,

सुसीला सुव्वया सुपडियाणंदा साहू सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया, सव्वाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोहाओ जाव मिच्छादंसणसल्लाओ

ऽनुसन्धेय । सर्वेषा व्याख्याऽत्रैव द्विषष्टितमे सूत्रे गता । नवर—धर्मेणैव वृत्तिं कल्पयन्त—निरवद्यभिक्षया यथायथारूपा वृत्तिं निर्वहन्त इत्यर्थो बोध्य । शेषपदानामपि व्याख्या तस्मिन्नेव सूत्रे कृताऽस्माभि । 'सुसीला सुव्वया' सुशीला सुव्रता 'सुपडियाणदा' सुप्रत्यानन्दा—सुष्ठु प्रत्यानन्दश्चित्ताह्लादो येषा ते तथा, आज्ञाविचयधर्मध्यानानन्दयुक्ता 'साहू' साधव, 'सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया' सर्वस्मात् प्राणातिपाताप्रतिविरता यावत्सर्वस्मात् परिग्रहात्प्रतिविरता, 'सव्वाओ कोहाओ माणाओ लोभाओ जाव मिच्छादसणसल्लाओ पडिविरया' सर्वस्मात् क्रोधान्मानान्मायाया लोभाद् यावन्मिथ्यादर्शनशल्यात्प्रतिविरता, 'सव्वाओ आर-

व्याख्या इसी उत्तरार्ध के बासठवे (६२) सूत्र मे की जा चुकी है । (सुसीला) ये सुशील तथा (सुव्वया) निर्दोष रीति से व्रतों की आराधना करने वाले होते हैं । (सुपडियाणदा) आज्ञाविचयनामक धर्मध्यान के ध्याने से इनका चित्त सदा अह्लादयुक्त बना रहता है। ये सब (सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया) सर्व प्रकार के प्राणातिपात से विरक्त रहते है, (जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया) यावत् समस्त परिग्रह से विरक्त रहा करते हैं, (सव्वाओ कोहाओ) समस्त प्रकार के क्रोध से, (माणाओ) मान से, (मायाओ) माया से, (लोहाओ) लोभ से, (जाव मिच्छादसणसल्लाओ) यावत् मिथ्यादर्शन शल्य से, (पडिविरया) विरक्त रहा करते है, (सव्वाओ आरभसमारभाओ पडिविरया) समस्त

આ આગમના ઉત્તરાર્ધના બાસઠ (૬૨)મા સૂત્રમા કરવામા આવી છે (सुसीला) સુશીલ તથા (सुव्वया) નિર્દોષ રીતિથી વ્રતોની આરાધના કરવાવાળા હોય છે (सुपडियाणदा) આજ્ઞાવિચય નામના ધર્મધ્યાન ધ્યાવવાથી તેમના ચિત્ત સદા આનદી બનેલા રહે છે તે બધા (सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया) સર્વ પ્રકારના પ્રાણાતિપાતથી વિરક્ત રહે છે (जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया) તેમજ સમસ્ત પરિગ્રહથી વિરક્ત રહ્યા કરે છે (सव्वाओ कोहाओ) સમસ્ત પ્રકારના ક્રોધથી, (माणाओ) માનથી, (मायाओ) માયાથી, (लोहाओ) લોભથી, (जाव मिच्छादसणसल्लाओ) તેમજ મિથ્યાદર્શન શલ્યથી (पडिविरया) વિરક્ત રહ્યા કરે છે. (सव्वाओ आरम-समारभाओ पडिविरया) સમસ્ત આરભમા-

पडिविरया, सव्वाओ आरंभसमारंभाओ पडिविरया, सव्वाओ करणकारावणाओ पडिविरया, सव्वाओ पयणपयावणाओ पडि-विरया, सव्वाओ कोट्टण–पिट्टण–तज्जण–तालण–वह–बंध–किलेसाओ पडिविरया, सव्वाओ ण्हाण–मद्दण–वण्णग–विले-वण–सद्द–फरिस–रस–रूव–गंध–मल्ला–लंकाराओ पडिविरया,

भसमारंभाओ पडिविरया' सर्वस्मादारम्भसमारम्भात्प्रतिविरता 'सव्वाओ करणकारा-वणाओ पडिविरया' सर्वस्मात्करणकारणात्प्रतिविरता, 'सव्वाओ पयणपयावणाओ पडिविरया' सर्वस्मात्पचनपाचनात्प्रतिविरता, 'सव्वाओ कुट्टण–पिट्टण–तज्जण–तालण–वह–वध–परिकिलेसाओ पडिविरया' सर्वस्मात्कुट्टन–पिट्टन–तर्जन–ताडन–वध–बन्ध–परिक्लेशात्प्रतिविरता, 'सव्वाओ ण्हाण–मद्दण–वण्णग–विलेवण–सद्द–फरिस–रस–रूव–गंध–मल्ला–लंकाराओ पडिविरया' सर्वस्मात् स्नान–मर्दन–वर्णक–विलेपन–शब्द–स्पर्श–रस–रूप–गन्ध–माल्याऽ–लङ्कारात्प्रतिविरता, तथा 'जे यावण्णे

आरंभसमारंभ से प्रतिविरत होते है, (सव्वाओ करणकारावणाओ पडिविरया) समस्त करण एवं करावणसे–करने–कराने से विरक्त होते है, (सव्वाओ पयणपयावणाओ पडि-विरया) सर्व प्रकार की पचन एवं पाचन क्रिया से प्रतिविरत होते हैं, (सव्वाओ कोट्टण-पिट्टण–तज्जण–तालण–वह–बंध–परिकिलेसाओ पडिविरया) समस्त प्रकार के कुट्टण, पिट्टण, तर्जन, ताडन, वध, बंध, परिक्लेश से विरक्त होते है, (सव्वाओ ण्हाण–मद्दण–वण्णग–विलेवण–सद्द–फरिस–रस–रूव–गंध–मल्ला–लंकाराओ पडिविरया) संपूर्ण स्नान, मर्दन, वर्णक, विलेपन, शब्द, रूप, गंध, रस, स्पर्श, माल्य एवं अलंकारों से रहित

રંભથી પ્રતિવિરક્ત હોય છે (सव्वाओ करणकारावणाओ पडिविरया) સમસ્ત કરણ તેમજ કરાવણથી–કરવા–કરાવવાથી વિરક્ત હોય છે (सव्वाओ पयणपयावणाओ पडिविरया) સર્વ પ્રકારની પચન તેમજ પાચન ક્રિયાથી વિરક્ત હોય છે (सव्वाओ कोट्टण–पिट्टण–तज्जण–तालण–वह–बंध–परिकिलेसाओ पडिविरया) સમસ્ત પ્રકારના કુટ્ટણ, પિટ્ટણ, તર્જન, તાડન, વધ, બંધ, પરિક્લેશથી વિરક્ત હોય છે (सव्वाओ ण्हाण–मद्दण–वण्णग–विलेवण–सद्द–फरिस–रस–रूव–गंध–मल्ला–लंकाराओ पडिविरया) સંપૂર્ણ સ્નાન, મર્દન, વર્ણક, વિલેપન, શબ્દ, સ્પર્શ, રસ,

सुसीला सुव्वया सुपडियाणंदा साहू सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया, सव्वाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोहाओ जाव मिच्छादंसणसल्लाओ

ऽनुसन्धेय । सर्वेषां व्याख्याऽत्रैव द्विषष्टितमे सूत्रे गता । नवरं—धर्मेणैव वृत्तिं कल्पयन्त—निरवद्यभिक्षया संयमयात्रारूपां वृत्तिं निर्वहन्त इत्यर्थो बोध्य । शेषपदानामपि व्याख्या तस्मिन्नेव सूत्रे कृताऽस्माभिः । 'सुसीला सुव्वया' सुशीलाः सुव्रताः 'सुपडियाणंदा' सुप्रत्यानन्दा—सुष्ठु प्रत्यानन्दश्चित्ताह्लादो येषां ते तथा, आज्ञाविचयधर्मध्यानानन्दयुक्ताः 'साहू' साधवः, 'सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया' सर्वस्मात् प्राणातिपातात्प्रतिविरता यावत्सर्वस्मात् परिग्रहात्प्रतिविरताः, 'सव्वाओ कोहाओ माणाओ लोभाओ जाव मिच्छादंसणसल्लाओ पडिविरया' सर्वस्मात् क्रोधान्मानान्मायाया लोभाद् यावन्मिथ्यादर्शनशल्यात्प्रतिविरताः, 'सव्वाओ आर-

व्याख्या इसी उत्तरार्ध के बासठवे (६२) सूत्र मे की जा चुकी है। (सुसीला) ये सुशील तथा (सुव्वया) निर्दोष रीति से व्रतों की आराधना करने वाले होते हैं। (सुपडियाणंदा) आज्ञाविचयनामक धर्मध्यान के ध्याने से इनका चित्त सदा अह्लादयुक्त बना रहता है। ये सब (सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया) सर्व प्रकार के प्राणातिपात से विरक्त रहते हैं, (जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया) यावत् समस्त परिग्रह से विरक्त रहा करते हैं, (सव्वाओ कोहाओ) समस्त प्रकार के क्रोध से, (माणाओ) मान से, (मायाओ) माया से, (लोहाओ) लोभ से, (जाव मिच्छादंसणसल्लाओ) यावत् मिथ्यादर्शन शल्य से, (पडिविरया) विरक्त रहा करते है, (सव्वाओ आरम्भसमारंभाओ पडिविरया) समस्त

આ આગમના ઉત્તરાર્ધના બાસઠ (૬૨)મા સૂત્રમા કરવામા આવી છે (सुसीला) સુશીલ તથા (सुव्वया) નિર્દોષ રીતિથી વ્રતોની આરાધના કરવાવાળા હોય છે (सुपडियाणंदा) આજ્ઞાવિચય નામના ધર્મધ્યાન ધ્યાવવાથી તેમના ચિત્ત સદા આનંદી બનેલા રહે છે તે બધા (सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया) સર્વ પ્રકારના પ્રાણાતિપાતથી વિરક્ત રહે છે (जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया) તેમજ સમસ્ત પરિગ્રહથી વિરક્ત રહ્યા કરે છે (सव्वाओ कोहाओ) સમસ્ત પ્રકારના ક્રોધથી, (माणाओ) માનથી, (मायाओ) માયાથી, (लोहाओ) લોભથી, (जाव मिच्छादंसणसल्लाओ) તેમજ મિથ્યાદર્શન શલ્યથી (पडिविरया) વિરક્ત રહ્યા કરે છે (सव्वाओ आरम्भ-समारंभाओ पडिविरया) સમસ્ત આરંભસમા-

पडिविरया, सव्वाओ आरंभसमारंभाओ पडिविरया, सव्वाओ करणकारावणाओ पडिविरया, सव्वाओ पयणपयावणाओ पडिविरया, सव्वाओ कोट्टण–पिट्टण–तज्जण–तालण–वह–बंध–किलेसाओ पडिविरया, सव्वाओ ण्हाण–मद्दण–वण्णग–विलेवण–सद्द–फरिस–रस–रूव–गंध–मल्ला–लंकाराओ पडिविरया,

---

भसमारंभाओ पडिविरया' सर्वस्मादारम्भसमारम्भात्प्रतिविरता 'सव्वाओ करणकारावणाओ पडिविरया' सर्वस्मात्करणकारणात्प्रतिविरता, 'सव्वाओ पयणपयावणाओ पडिविरया' सर्वस्मात्पचनपाचनात्प्रतिविरता, 'सव्वाओ कुट्टण–पिट्टण–तज्जण–तालण–वह–बंध–परिकिलेसाओ पडिविरया' सर्वस्मात्कुट्टन–पिट्टन–तर्जन–ताडन–वध–बन्ध–परिक्लेशात्प्रतिविरता, 'सव्वाओ ण्हाण–मद्दण–वण्णग–विलेवण–सद्द–फरिस–रस–रूव–गंध–मल्ला–लंकाराओ पडिविरया' सर्वस्मात् स्नान–मर्दन–वर्णक–विलेपन–शब्द–स्पर्श–रस–रूप–गन्ध–माल्या–ऽलङ्कारात्प्रतिविरता, तथा 'जे यावण्णे

आरंभसमारंभ से प्रतिविरत होते हैं, (सव्वाओ करणकारावणाओ पडिविरया) समस्त करण एवं कराने से–करने–कराने से निवृत्त होते हैं, (सव्वाओ पयणपयावणाओ पडिविरया) सर्व प्रकार की पचन एवं पाचन क्रिया से प्रतिविरत होते हैं, (सव्वाओ कोट्टण–पिट्टण–तज्जण–तालण–वह–बंध–परिकिलेसाओ पडिविरया) समस्त प्रकार के कुट्टण, पिट्टण, तर्जन, ताडन, वध, बंध, परिक्लेश से विरक्त होते हैं, (सव्वाओ ण्हाण–मद्दण–वण्णग–विलेवण–सद्द–फरिस–रस–रूव–गंध–मल्ला–लंकाराओ पडिविरया) संपूर्ण स्नान, मर्दन, वर्णक, विलेपन, शब्द, रूप, गंध, रस, स्पर्श, माल्य एवं अलंकारों से रहित

રંભથી પ્રતિવિરક્ત હોય છે (सव्वाओ करणकारावणाओ पडिविरया) સમસ્ત કરણુ તેમજ કરાવણુથી–કરવા–કરાવવાથી વિરક્ત હોય છે (सव्वाओ पयणपयावणाओ पडिविरया) સર્વપ્રકારની પચન તેમજ પાચન ક્રિયાથી વિરક્ત હોય છે (सव्वाओ कोट्टण–पिट्टण–तज्जण–तालण–वह–बंध–परिकिलेसाओ पडिविरया) સમસ્તપ્રકારના કુટ્ટણુ, પિટ્ટણુ, તર્જન, તાડન, વધ, બંધ, પરિક્લેશથી વિરક્ત હોય છે (सव्वाओ ण्हाण–मद्दण–वण्णग–विलेवण–सद्द–फरिस–रस–रूव–गंध–मल्ला–लंकाराओ पडिविरया) સંપૂર્ણ સ્નાન, મર્દન, વર્ણક, વિલેપન, શબ્દ, સ્પર્શ, રસ,

सुसीला सुव्वया सुपडियाणंदा साहू सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया, सव्वाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोहाओ जाव मिच्छादंसणसल्लाओ

ऽनुसन्धेय । सर्वेषा व्याख्याऽत्रैव द्विषष्टितमे सूत्रे गता । नवर–धर्मेणैव वृत्ति कल्पयन्त –निरवद्यभिक्षया समयानुरूपा वृत्ति निर्वर्त्त इत्यर्थो बोध्य । शेषपदानामपि व्याख्या तस्मिन्नेव सूत्रे कृताऽस्माभि । 'सुसीला सुव्वया' सुशीला सुव्रता 'सुपडियाणदा' सुप्रत्यानन्दा –सुष्टु प्रत्यानन्दश्चित्ताह्लादो येषा ते तथा, आज्ञाविचयधर्मध्यानानन्दयुक्ता 'साहू' साधव, 'सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया' सर्वस्मात् प्राणातिपातात्प्रतिविरता यावत्सर्वस्मात् परिग्रहात्प्रतिविरता, 'सव्वाओ कोहाओ माणाओ लोभाओ जाव मिच्छादसणसल्लाओ पडिविरया' सर्वस्मात् क्रोधान्मानान्मायाया लोभाद् यावन्मिथ्यादर्शनशल्यात्प्रतिविरता, 'सव्वाओ आर-

व्याख्या इसी उत्तरार्ध के बासठवे (६२) सूत्र मे की जा चुकी है । (सुसीला) ये सुशील तथा (सुव्वया) निर्दोष रीति से व्रतों की आराधना करने वाले होते हैं । (सुपडियाणदा) आज्ञाविचयनामक धर्मध्यान के ध्याने से इनका चित्त सदा अह्लादयुक्त बना रहता है। ये सब (सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया) सर्व प्रकार के प्राणातिपात से विरक्त रहते हैं, (जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया) यावत् समस्त परिग्रह से विरक्त रहा करते है, (सव्वाओ कोहाओ) समस्त प्रकार के क्रोध से, (माणाओ) मान से, (मायाओ) माया से, (लोहाओ) लोभ से, (जाव मिच्छादसणसल्लाओ) यावत् मिथ्यादर्शन शल्य से, (पडिविरया) विरक्त रहा करते है, (सव्वाओ आरभसमारभाओ पडिविरया) समस्त

આ આગમના ઉત્તરાર્ધના બાસઠ (૬૨)મા સૂત્રમા કરવામા આવી છે (सुसीला) સુશીલ તથા (सुव्वया) નિર્દોષ રીતિથી વ્રતોની આરાધના કરવાવાળા હોય છે (सुपडियाणदा) આજ્ઞાવિચય નામના ધર્મધ્યાન ધ્યાવવાથી તેમના ચિત્ત સદા આનદી બનેલા રહે છે તે બધા (सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया) સર્વ પ્રકારના પ્રાણાતિપાતથી વિરક્ત રહે છે (जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया) તેમજ સમસ્ત પરિગ્રહથી વિરક્ત રહ્યા કરે છે (सव्वाओ कोहाओ) સમસ્ત પ્રકારના ક્રોધથી, (माणाओ) માનથી, (मायाओ) માયાથી, (लोहाओ) લોભથી, (जाव मिच्छादंसणसल्लाओ) તેમજ મિથ્યાદર્શન શલ્યથી (पडिविरया) વિરક્ત રહ્યા કરે છે. (सव्वाओ आरभ–समारभाओ पडिविरया) સમસ્ત આરભસમા-

मूलम्—तेसि णं भगवंताणं एएणं विहारेणं विहरमाणाणं अत्थेगइयाणं अणंते जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जइ। ते बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता भत्तं पच्च-

मिता =गमनागमनादिषु समितियुक्ता 'भासासमिया' भाषासमिता सन्त, यावच्छब्दाद् गुप्तिगुप्ता इति दृश्यम्, 'इणमेव' इदमेव 'णिग्गथ पावयण' नैर्ग्रन्थ प्रवचनं 'पुरओ-काउ' पुरस्कृत्य=प्रधानीकृत्य 'विहरति' विहरन्ति ॥ सू० ६५ ॥

टीका—'तेसि ण' इत्यादि। 'तेसि णं भगवताण' तेषा खलु भगवताम्=अनगारभगवताम् 'एएणं' एतेन पूर्वोक्तेन 'विहारेण विहरमाणाणं' विहारेण विहरताम् 'अत्थेगइयाण' अस्त्येकेषाम्, 'अणते' अनन्तम्=अन्तरहित 'जाव' यावत् 'केवलवरणाणदसणे' केवलवरज्ञानदर्शन 'समुप्पज्जइ' समुत्पद्यते=अचिरेण प्रादुर्भवति। 'ते बहूइं वासाइं' ते अनगारा भगवन्तो बहूनि वर्षाणि 'केवलिपरियायं' केवलिपर्याय

समिति आदि समितियो को तथा तीन गुप्तियो को पालन करते हैं। एव इन समस्त क्रिया-स्वरूप जो निर्ग्रन्थप्रवचन हे उसके अनुसार ही अपनी समस्त प्रवृत्ति चलाते है ॥ सू. ६५ ॥

'तेसिं ण भगवताण' इत्यादि।

(तेसिं णं भगवताण एएण विहारेण विहरमाणाण) इस प्रकार के इन अनगार भगवन्तो में जो निर्ग्रन्थ प्रवचन को आगे करके विचरते हैं, (अत्थेगइयाणं) उन में से कितनेक अनगार भगवन्तो को (अणते जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जइ) अनत केवलज्ञान एव अनत केवलदर्शन उत्पन्न होता हे। (ते बहूइ वासाइं केवलिपरियाग पाउणति) वे इसी पर्याय मे बहुत वर्षो तक इस पृथ्वीमडल को पावन करते हैं,

ભાષાસમિતિ આદિ સમિતિઓનુ તથા ત્રણ ગુપ્તિઓનુ પાલન કરે છે તેમજ સમસ્ત ક્રિયાસ્વરૂપ જે નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન છે તેને અનુસરીને જ પોતાની સમસ્ત પ્રવૃત્તિઓ ચલાવે છે (સૂ ૬૫)

'तेसिं णं भगवताण' ઇત્યાદિ

(तेसिं ण भगवताण एएण विहारेण विहरमाणाण) આ પ્રકારના આ અનગાર ભગવાનોમા જે નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનને મુખ્ય કરીને વિચરે છે, (अत्थेगइयाण) તેમાથી કેટલાક અનગાર ભગવાનોને (अणते जाव केवल-वर-नाण-दसणे समुप्पज्जइ) અનત કેવળજ્ઞાન તેમજ અનત કેવળદર્શન ઉત્પન્ન થાય છે. (ते बहूइ वासाइ केवलिपरियाग पाउणंति) તેઓ આ જ પર્યાયમા ઘણા

जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जजोगोवहिया कम्मंता परपाणपरि-यावणकरा कज्जंति तओ वि पडिविरया जावज्जीवाए ॥ सू० ६४ ॥

मूलम्—से जहानामए अणगारा भवंति—ईरिया-समिया भासासमिया जाव इणमेव निग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरंति ॥ सू० ६५ ॥

तहप्पगारा ' ये यावन्तस्तथाप्रकारा , ' सावज्जजोगोवहिया ' सावद्ययोगौपधिका —सावद्ययोगा =सावद्ययोगयुक्ताश्च ते औपधिका =मायाप्रयोजनाश्चेति तथा, ' परपाणपरियावणकरा ' परप्राणपरितापनकरा , ' कम्मता ' कर्मांशा =व्यापारांशा ' कज्जंति ' क्रियन्ते ' तओ वि पडिविरया जावज्जीवाए ' ततोऽपि प्रतिविरता यावज्जीवम् ॥ सू ६४ ॥

टीका—' से जहानामए ' इत्यादि। ' से जहानामए अणगारा भवंति ' अथ यथानाम केचित् अनगारा भवन्ति, कीदृशास्तेऽनगारा ' इत्याह ' ईरियासमिया ' ईर्यास-

---

होते है, (जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जजोगोवहिया कम्मता परपाणपरियावणकरा कज्जंति तओ वि पडिविरया जावज्जीवाए) तथा इसी प्रकार के और भी जो सावद्ययोगवाले मायाकषायजनित कार्य हैं कि जिनमें प्राणियों के प्राणों को परिताप जन्य कष्ट भोगना पडता है उन सब से ये प्रतिविरत होते हैं ॥ सू ६४ ॥

' से जहानामए ' इत्यादि ।

(से जहानामए अणगारा भवति) ये जो अनगार होते है, वे (ईरियासमिया भासासमिया जाव इणमेव निग्गथ पावयण पुरओ काउ विहरंति) ईर्यासमिति, भाषा-

---

રૂપ, ગંધ, માલા તેમજ અલંકારોથી રહિત હોય છે (जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जजोगोवहिया कम्मता पर–पाण–परियावण–करा कज्जति तओ वि पडिविरया जावज्जीवाए) તથા એ પ્રકારના બીજા પણ જે સાવદ્યયોગવાળા માયાકષાયજનિત કાર્ય છે કે જેમાં પ્રાણિયોના પ્રાણોને પરિતાપજનિત કષ્ટ ભોગવવા પડે છે, તેવા બધા કાર્યોથી તેઓ વિરક્ત હોય છે (સૂ ૬૪)

' से जहानामए ' ઇત્યાદિ

(से जहानामए अणगारा भवति) આ જે અનગાર હોય છે, તેઓ (ईरियासमिया भासासमिया जाव इणमेव निग्गथ पावयण पुरओ काउ विहरति) ઈર્યાસમિતિ,

पाउणित्ता आबाहे उप्पण्णे वा अणुप्पण्णे वा भत्तं पच्चक्खंति । ते बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव तमट्ठमाराहित्ता चरमेहिं ऊसासणीसासेहिं

प्रादुर्भवति, 'ते बहूइं वासाइं' तेऽनगारा भगवन्तो बहूनि वर्षाणि 'छउमत्थपरियाय पाउणंति' छद्मस्थपर्याय पालयन्ति=छद्मस्थावस्था पालयन्ति, 'पाउणित्ता' पालयित्वा 'आबाहे' आबाधायां=रोगादिबाधायाम 'उप्पण्णे वा अणुप्पण्णे वा' उत्पन्नायां वा अनुत्पन्नायां वा सत्यां 'भत्तं पच्चक्खंति' भक्तं प्रत्याख्यान्ति, 'ते बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति' ते बहूनि भक्तानि अनशनया छिन्दन्ति, 'छेदित्ता' छित्वा 'जस्सट्ठाए' यस्मै अर्थाय 'कीरइ नग्गभावे' क्रियते नग्नभाव —अकिञ्चन्य क्रियते, 'जाव तमट्ठमाराहित्ता' यावत् तमर्थमाराध्य, 'चरमेहिं ऊसासणीसासेहिं' चरमैरुच्छ्वासनिश्वासै 'अणतं' अनन्तम्=अन्तरहितम्, 'अणुत्तरं' अनुत्तरम्=उत्कृष्टम्,

लाभ शीघ्र नहीं होता है, (ते बहूइं वासाइं छउमत्थपरियाग पाउणित्ता) वे अनगार भगवान् छद्मस्थ पर्याय को ही बहुत वर्षों तक पालते रहते हैं, (पाउणित्ता) और उस पर्याय के पालन करते २ भी यदि (आबाहे उप्पण्णे वा अणुप्पण्णे वा) किसी प्रकार की चाहे उन्हें रोगादिक बाधा उत्पन्न हो, चाहे न भी हो तो भी वे, (भत्तं पच्चक्खंति) भक्तप्रत्याख्यान करते हैं। (ते बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति) वे अनेक भक्तों का अनशन द्वारा छेदन करते हैं, (छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव तमट्ठमाराहित्ता) छेदन करके उन्होंने जिस की प्राप्ति के लिये नग्नभाव धारण किया था, उस प्रयोजन की सिद्धि प्राप्त कर (चरमेहिं ऊसासणीसासेहिं अणतं अणुत्तरं णिव्वाघाय निरावरण कसिण पडिपुण्णं

દર્શનનો લાભ જલદી મળતો નથી, (ते बहूइं वासाइं छउमत्थपरियागं पाउणंति) તે અનગાર ભગવાન છદ્મસ્થપર્યાયનું જ ઘણાં વરસો સુધી પાલન કરે છે, (पाउणित्ता) અને તે પર્યાયનું પાલન કરતા કરતા પણ જો (आबाहे उप्पण्णे वा अणुप्पण्णे वा) કોઈ પ્રકારની રોગ આદિની પીડા ઉત્પન્ન થાય કે ચાહે ન પણ થાય તો પણ તેઓ (भत्त पच्चक्खंति) ભકતપ્રત્યાખ્યાન કરે છે (ते बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति) તેઓ અનેક ભકતોનું અનશન દ્વારા છેદન કરે છે (छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव तमट्ठमाराहित्ता) છેદન કરીને તેઓએ જેની પ્રાપ્તિ માટે નગ્નભાવ ધારણ કર્યો હતો તે પ્રયોજનની સિદ્ધિ પ્રાપ્ત કરીને (चरमेहिं ऊसासणीसासेहिं अणतं अणुत्तरं णिव्वा-

क्खंति, पच्चक्खित्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता जस्सट्टाए कीरइ नग्गभावे जाव अंतं करेंति ॥ सू० ६६॥

मूलम्—जेसिं पि य णं एगइयाणं णो केवलवरनाण-दंसणे समुप्पज्जइ ते बहूइ वासाइं छउमत्थपरियागं पाउणंति,

'पाउणति' पालयन्ति, 'पाउणित्ता' पालयित्वा, 'भत्त पच्चक्खति' भक्त प्रत्याख्यान्ति, 'भत्त पच्चक्खित्ता' भक्त प्रत्याख्याय 'बहूइ' बहूनि 'भत्ताइ अणसणाए' भक्तानि अनशनया 'छेदति' छिन्दन्ति, 'छेदित्ता' छित्वा 'जस्सट्टाए' यस्मै अर्थाय 'कीरइ' क्रियते 'नग्गभावो' नग्नभाव=आकिञ्चन्य क्रियते इत्यर्थः, 'जाव अत' यावत्-सर्वदु खानामन्त 'करति' कुर्वन्ति ॥ सू० ६६ ॥

'जेसिं पि य ण' इत्यादि। 'जेसिं पि य ण एगइयाण णो केवलवर-नाणदसणे समुप्पज्जइ' येषामपि च खलु एकेषा नो केवलवरज्ञानदर्शन समुत्पद्यते=

(पाउणित्ता भत्त पच्चक्खति) इस पर्याय को प्राप्त कर वे भक्त का प्रत्याख्यान कर देते है। (पच्चक्खित्ता बहूइ भत्ताइ अणसणाए छेदति) प्रत्याख्यान करके अनेक भक्तों का अनशन द्वारा छेदन कर देते है। (छेदित्ता जस्सट्टाए कीरइ नग्गभावे जाव अत करेंति) छेदन करके जिस प्रयोजन के लिये नग्नभाव उन्होंने धारण किया था वे उस प्रयोजन को प्राप्त करते हैं, अर्थात् समस्त दु खों का अत करते हे ॥ सू ६६ ॥

'जेसिं पि य ण' इत्यादि।

(जेसिं पि य ण) इन साधुओं म से भी (एगइयाण) जिन किन्हीं साधु मुनिराजों को (णो केवलवरनाणदसणे समुप्पज्जइ) निर्मल केवलज्ञान एव केवल दर्शन का

वरसो सुधी आ पृथ्वीमंडळने पावन करे छे (पाउणित्ता भत्त पच्चक्खति) आ पर्यायने प्राप्त करीने भक्तप्रत्याख्यान करी दे छे (पच्चक्खित्ता बहूइ भत्ताइ अणसणाए छेदति) प्रत्याख्यान करीने अनेक भक्तोनु अनशन द्वारा छेदन करे छे (छेदित्ता जस्सट्टाए कीरइ नग्गभावे जाव अत करेंति) छेदन करीने जे प्रयोजन माटे नग्नभाव तेमणे धारण करेलो हतो ते प्रयोजनने प्राप्त करे छे, अर्थात् समस्त दु खोनो अत करे छे (सू ६६)

'जेसिं पि य ण' ईत्यादि

(जेसिं पि य ण) आ साधुओमांथी पण (एगइयाण) जे कोई साधु मुनिराजोने (णो केवलवरनाणदसणे समुप्पज्जइ) निर्मळ केवळज्ञान तेमज केवळ

कालमासे कालं किच्चा, उक्कोसेणं सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तहिं तेसिं गई, तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई, आराहगा, सेसं तं चेव ॥ सू० ६८ ॥

मनुजभवभाविनी या अर्चा=तनुर्येषां ते एकार्चाः 'पुण' पुनः, अत्र पुनः शब्दः उक्तार्थापेक्षया वैलक्षण्यद्योतनार्थः, 'एगे' एके—अन्ये तु 'भयंतारो' भदन्ताः=भगवन्तोऽपि, 'भवंतारो' इत्यनुस्वार आर्षत्वात् 'पुव्वकम्मावसेसेणं' पूर्वकर्मावशेषेण पूर्वकृतकर्मावशेषेण 'कालमासे कालं किच्चा' कालमासे कालं कृत्वा—'उक्कोसेणं सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे' उत्कर्षेण सर्वार्थसिद्धे महाविमाने 'देवत्ताए' देवत्वेन 'उववत्तारो भवंति' उपपत्तारो भवन्ति=उत्पद्यन्ते, 'तहिं तेसिं गई तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई' तत्र तेषां गतिः, त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिः। 'आराहगा' आराधकाः=परलोकस्याऽऽराधकाः, 'सेसं तं चेव' शेषं तदेव ॥ सू ६८॥

हैं कि जिन्हें उसी भव में केवलज्ञान एवं केवलदर्शन का लाभ नहीं होता है तो ऐसे वे अनगार भगवान् (एगच्चा) एकभवावतारी होते हैं। ये (भयंतारो) संयम की आराधना करते २ ही (पुव्वकम्मावसेसेण) पूर्वकर्म के अवशिष्ट होने के कारण (कालमासे कालं किच्चा) काल अवसर में काल कर (उक्कोसेण) उत्कर्ष से (सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवंति) सर्वार्थसिद्ध नामके महाविमान में देवपर्याय से उत्पन्न हो जाते हैं। (तहिं तेसिं गई, ठिई तेत्तीसं सागरोवमाइं) वहाँ पर उनकी गति और स्थिति होती है। इनकी स्थिति वहाँ पर तेंतीस सागर प्रमाण है। (आराहगा सेसं तं चेव) ये नियम से परलोक के आराधक होते हैं। अवशिष्ट पूर्ववत् समझना चाहिये॥ सू ६८॥

ભગવાન હોય છે કે જેમને તેજ ભવમાં કેવળજ્ઞાન તેમજ કેવળદર્શનનો લાભ મળતો નથી તો એવા તે અનગાર ભગવાન (एगच्चा) એકભવાવતારી હોય છે તેઓ (भयंतारो) સંયમની આરાધના કરતા કરતા જ (पुव्वकम्मावसेसेणं) પૂર્વકર્મના બાકી રહેવાના કારણે (कालमासे कालं किच्चा) કાલ-અવસરે કાલ કરીને (उक्कोसेण) ઉત્કર્ષ વડે (सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवंति) સર્વાર્થસિદ્ધ નામના મહાવિમાનમાં દેવપર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે ત્યાં તેમની ગતિ અને સ્થિતિ હોય છે તેમની ત્યાં સ્થિતિ તેત્રીસ સાગર પ્રમાણ છે (आराहगा सेसं त चेव) તેઓ નિયમથી પરલોકના આરાધક હોય છે, બાકી બધું અગાઉ પ્રમાણે સમજવું જોઈએ (સૂ. ૬૮)

अणंतं अणुत्तरं निव्वाघायं निरावरणं कसिणं पडिपुण्णं केवल-वरनाणदंसणं उप्पादेंति, तओ पच्छा सिज्झिहिंति जाव अंतं करेहिंति ॥ सू० ६७ ॥

मूलम्—एगच्चा पुण एगे भयंतारो पुव्वकम्मावसेसेणं

'निव्वाघायं' निर्व्याघात=सूक्ष्मव्यवहितविप्रकृष्टविषयेषु अप्रतिहत, 'निरावरणं' निरावरण=कर्मावरणरहित 'कसिणं' कृत्स्न=सकल, 'पडिपुण्णं' प्रतिपूर्ण=सपूर्ण, 'केवलवरनाणदंसणं' केवलवरज्ञानदर्शनम् 'उप्पादेंति' उत्पादयन्ति, 'तओ पच्छा सिज्झिहिंति' ततः पश्चात् सेत्स्यन्ति, 'जाव अंतं' यावत् अन्त=सर्वदु खानामन्तं 'करेहिंति' करिष्यन्ति ॥ सू० ६७ ॥

'एगच्चा' इत्यादि । 'एगच्चा' एकाऽर्चा —एका=असाधारणगुणत्वात् अद्वितीया–

केवलवरनाणदंसणं उप्पादेंति) चरम उच्छ्वास–नि श्वासों में अन्तरहित, अनुपम, निर्व्याघात–सूक्ष्म, व्यवहित एव विप्रकृष्ट विषय को हस्तामलकवत् जानने के लिये समर्थ, निरावरण–कर्मावरणरहित, कृत्स्न–सकल, एवं प्रतिपूर्ण–सपूर्ण केवलज्ञान एव केवलदर्शन की उत्पत्ति से विशिष्ट हो जाते है । (तओ पच्छा सिज्झिहिंति जाव अंतं करेहिंति) इसके पश्चात् वे सिद्ध हो जाते हैं और उस अवस्था में उनके समस्त दु खों का एव उनके कारणभूत कर्मों का सर्वथा अभाव हो जाता है ॥ सू० ६७ ॥

'एगच्चा पुण' इत्यादि ।

इन अनगार भगवन्तों के बीच (एगे) कितनेक ऐसे भी अनगार भगवान होते

घायं निरावरणं कसिणं पडिपुण्णं केवलवरनाणदंसणं उप्पादेंति) ચરમ ઉચ્છ્વાસ–નિ શ્વાસોમા અ તરહિત, અનુપમ, નિર્વ્યાઘાત–સૂક્ષ્મ, વ્યવહિત તેમજ વિપ્રકૃષ્ટ વિષયને હસ્તામલકવત્ જાણવા માટે સમર્થ, નિરાવરણ–કર્માવરણરહિત, કૃત્સ્ન–સકળ, તેમજ પરિપૂર્ણ–સ પૂર્ણ કેવળજ્ઞાન તેમજ કેવળદર્શનની ઉત્પત્તિથી વિશિષ્ટ થઈ જાય છે (तओ पच्छा सिज्झिहिंति जाव अंतं करेहिंति) ત્યાર પછી તેઓ સિદ્ધ થઈ જાય છે, અને તે અવસ્થામા તેમના સમસ્ત દુ ખોનો તેમજ તેમના કારણભૂત કર્મોનો સર્વથા અભાવ થઈ જાય છે (સૂ ૬૭)

'एगच्चा पुण' ઇત્યાદિ

આ અનગાર ભગવન્તોની વચમા (एगे) કેટલાક એવા પણ અનગાર

मायालोहा अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपयडीओ खवेत्ता उप्पिं लोयग्गपइट्ठाणा भवंति ॥ सू० ६९ ॥

मूलम्—अणगारे णं भंते! भावियप्पा केवलिसमु-

'णिक्कोहा' निष्क्रोधा =क्रोधान्निष्क्रान्ता, 'खीणक्कोहा' क्षीणक्रोधा—क्रोध क्षीणो येषा ते क्षीणक्रोधा —मोहनीयकर्मणा क्षयाकरणात् क्षीणक्रोधमोहनीयकर्माण, 'एव माणमायालोहा' एव मानमायालोभा =एव क्षीणमानमायालोभा, 'अणुपुव्वेण' आनुपूर्व्या=क्रमशो यथानक्रम, 'अट्ठकम्मपयडीओ' अष्टकर्मप्रकृती 'खवेत्ता' क्षपयित्वा 'उप्पिं लोयग्गपइट्ठाणा' उपरि लोकाग्रप्रतिष्ठाना =लोकाग्रावस्थिता 'भवंति' भवन्ति ॥ सू ६९ ॥

टीका—'अणगारे णं भंते' इत्यादि। 'अणगारे ण भंते!' अनगार खलु हे भदन्त! 'भावियप्पा' भाविताऽऽत्मा=कृताऽऽत्मसाक्षात्कार, 'केवलिसमुग्घाएण' केवलि-

कोहा एवं माणमायालोहा) जिनका क्रोध नष्ट हो गया है, अत एव जो निष्क्रोध हैं, मोहनीय कर्म नष्ट हो जाने के कारण क्रोध जिनकी आत्मा से क्षीण हो चुका है, इसी तरह से मान, माया एव लोभ भी जिनकी आत्मा से सर्वथा नष्ट हो चुके हैं, वे (अणुपुव्वेण अट्ठ कम्मपयडीओ खवेत्ता उप्पिं लोयग्गपइट्ठाणा भवंति) क्रम २ से पूर्वबद्ध अष्टकर्मों की प्रकृति को सर्वथा नष्ट कर नियमसे लोक के अग्रभागमे निवास करनेवाले होते हैं, अर्थात् मोक्षको प्राप्त करते है ॥ सू ६९ ॥

'अणगारे ण भंते!' इत्यादि।

(भंते!) हे भगवन्! (भावियप्पा अणगारे ण) भावितात्मा अनगार (साधु) (केवलिसमुग्घाएण) केवलिसमुद्घात द्वारा (समोहणित्ता) आत्मप्रदेशों को शरीर से

ગયેલો છે, તેથી જેઓ ક્રોધરહિત છે, મોહનીય કર્મ નષ્ટ થઈ જવાના કારણથી ક્રોધ જેમના આત્મામાથી ક્ષીણ થઈ ગયેલો છે, તેવી જ રીતે માન, માયા તેમજ લોભ પણ જેમના આત્મામાથી સર્વથા નષ્ટ થઈ ગયેલા છે, તેઓ (અણુપુવ્વેણ અટ્ઠ કમ્મપયડીઓ ખવેત્તા ઉપ્પિં લોયગ્ગપઇટ્ઠાણા ભવંતિ) અનુક્રમથી પૂર્વબદ્ધ આઠ કર્મોની પ્રકૃતિને સર્વથા નષ્ટ કરીને નિયમથી લોકના ઉપરના ભાગમા નિવાસ કરવાવાળા થાય છે, અર્થાત્ મોક્ષને પ્રાપ્ત કરે છે (સૂ ૬૯)

'અણગારે ણ ભંતે!' ઈત્યાદિ

(ભંતે!) હે ભગવન્! (ભાવિયપ્પા અણગારે ણ) ભાવિતાત્મા અનગાર (સાધુ) (કેવલિસમુગ્ઘાએણં) કેવલિસમુદ્ઘાત દ્વારા (સમોહણિત્તા) આત્મ

मूलम्—से जे इमे गमागर जाव सण्णिवेसेसु मणुया भवंति, तं जहा–सव्वकामविरया सव्वरागविरया सव्वसंगातीता सव्वसिणेहाइक्कंता अक्कोहा निक्कोहा खीणक्कोहा एवं माण-

टीका—'से जे इमे' इत्यादि। 'से जे इमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु मणुया भवंति' अथ य इमे ग्रामाऽऽकर यावत् सन्निवेशेषु मनुजा भवन्ति, 'तं जहा' तद्यथा 'सव्वकामविरया' सर्वकामविरता – सर्वकामेभ्य =ममत्वशब्दादिविषयेभ्यो विरता = निवृत्ता, शब्दादिविषयेषु वा विरता=निर्गतौत्सुक्या, 'सव्वरागविरया' सर्वरागविरता = सर्वरागात्–समस्ताद् विषयाभिमुखहेतुभूताऽऽत्मपरिणामविशेषात् निवृत्ता, 'सव्वसंगातीता' सर्वसङ्गाऽतीता –सर्वसङ्गात्=मातापित्रादिसम्बन्धादतीता =विनिर्गता –सर्वसङ्गरहिता इत्यर्थ, 'सव्वसिणेहाइक्कंता' सर्वस्नेहातिक्रान्ता =स्नेहरहिता, 'अक्कोहा' अक्रोधा,

'से जे इमे' इत्यादि।

(से जे इमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु) ये जो ग्राम आकर आदि से लेकर सन्निवेश तक के निवासस्थानों मे (मणुया भवंति) मनुष्य रहते है, (तं जहा) जैसे (सव्वकामविरया सव्वरागविरया सव्वसंगातीता सव्वसिणेहाइक्कंता) जो समस्त शब्दादिक विषयों से निवृत्त है, अथवा शब्दादिक विषयों मे जिन्हें उत्सुकता नहीं है, समस्त विषयों की ओर झुकाने वाले आत्मा के रागरूप परिणाम से जो निवृत्त है, माता–पिता आदि समस्त सबंधिजनों से अथवा समस्तप्रकार के परिग्रह से जो दूर हो चुके हैं, जिन्हों ने सम्पूर्णप्रकार का स्नेहभाव परिवर्जित कर दिया है। (अक्कोहा णिक्कोहा खीण-

'से जे इमे' ઈત્યાદિ

(से जे इमे) આ કે જે (गामागर जाव सण्णिवेसेसु) ગામ આકર આદિથી લઈને સન્નિવેશ સુધીના નિવાસસ્થાનોમા (मणुया भवंति) મનુષ્ય રહે છે, (तं जहा) જેવા કે–(सव्वकामविरया सव्वरागविरया सव्वसंगातीता सव्वसिणेहाइक्कंता) જેઓ સમસ્ત શબ્દાદિક વિષયોથી નિવૃત્ત છે, અથવા શબ્દાદિક વિષયોમા જેમને ઉત્સુકતા નથી હોતી, સમસ્ત વિષયોની તરફ એ ચવાવાળા આત્માના રાગરૂપ પરિણામથી જેઓ નિવૃત્ત છે, માતાપિતા આદિ સમસ્ત સંબંધી જનોથી અથવા સમસ્ત પ્રકારના પરિગ્રહોથી જેઓ દૂર થઈ ગયેલા છે, જેઓએ સંપૂર્ણ પ્રકારના સ્નેહભાવને પરિવર્જિત કરી દીધેલ છે, (अक्कोहा णिक्कोहा खीणक्कोहा एवं माणमायालोहा) જેમનો ક્રોધ નષ્ટ થઈ

मूलम्—से नूणं भंते! केवलकप्पे लोए तेहिं निज्जरापोग्गलेहिं फुडे? हंता! फुडे ॥ सू० ७१ ॥

मूलम्—छउमत्थे णं भंते! मणुस्से तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं किंचि वण्णेणं वण्णं, गंधेणं गंधं, रसेणं रसं, फासेणं

टीका—'से नूण भंते!' इत्यादि। 'से नूण भते!' अथ नून हे भदन्त! 'केवलकप्पे लोए' केवलकल्पो लोक, 'तेहिं' तै 'निज्जरापोग्गलेहिं' निर्जरापुद्गलै—निर्जरा प्रधाना पुद्गला निर्जरापुद्गला—जीवेन अकर्मतामापादिता कर्मपुद्गलास्तै 'फुडे' स्पृष्ट=व्याप्त किम्? इति प्रश्न। उत्तरमाह 'हंता! फुडे' हन्त! स्पृष्ट ॥ सू. ७१ ॥

टीका—'छउमत्थे ण भते!' इत्यादि। 'छउमत्थे ण भते!' छद्मस्थ खलु भदन्त!'=हे भदन्त! छद्मस्थ खलु मनुष्य, छद्मस्थ इह निरतिशयज्ञानयुक्तो ज्ञेय, यतश्छद्मस्थोऽपि विशिष्टावधिज्ञानयुक्तो निर्जरापुद्गलान् जानात्येव। 'तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं' तेषा निर्जरापुद्गलाना 'किंचि' किञ्चिद् 'वण्णेण' वर्णेन—वर्णतया यथावस्थितस्वरूपेण 'वण्ण' वर्ण=

'से नूण भते!' इत्यादि।

(से नूण भंते!) हे भदन्त! क्या अवश्यतया (तेहिं निज्जरापोग्गलेहिं) उनके निर्जराप्रधान पुद्गलों द्वारा (केवलकप्पे लोए) यह समस्त लोक (फुडे) स्पृष्ट होता है? (हता! फुडे) हाँ! स्पृष्ट होता है ॥ ॥ सू. ७१ ॥

'छउमत्थे ण' इत्यादि।

(छउमत्थे ण भते! मणुस्से) हे भदन्त! विशिष्टज्ञानी छद्मस्थ मनुष्य (तेसिं णिज्जरापोग्गलाण) उन निर्जराप्रधान पुद्गलों को (किंचि) किंचित् (वण्णेण वण्ण

'से नूण भते!' ઇત્યાદિ

(से नूण भते!) હે ભદન્ત! શું અવશ્યતયા (तेहिं निज्जरापोग्गलेहिं) તેમના નિર્જરાપ્રધાન પુદ્ગલો દ્વારા (केवलकप्पे लोए) આ સમસ્ત લોકને (फुडे) સ્પર્શ થાય છે? (हता! फुडे) હા! થાય છે (સૂ ૭૧)

'छउमत्थे ण' ઇત્યાદિ

(छउमत्थे ण भंते! मणुस्से) હે ભદન્ત! વિશિષ્ટજ્ઞાની છદ્મસ્થ મનુષ્ય (तेसि णिज्जरापोग्गलाण) તે નિર્જરાપ્રધાન પુદ્ગલોને (किंचि) કિંચિત્ (वण्णेण वण्ण गंधेण गध रसेण रस फासेण फास जाणइ पासइ) વર્ણથી

घाएणं समोहणित्ता केवलकप्पं लोयं फुसित्ता णं चिट्ठई, हंता! चिट्ठइ ॥ सू० ७० ॥

समुद्घातेन, तत्र प्रथम समुद्घातस्वरूपमुच्यते—यथास्वभावस्थितानामात्मप्रदेशाना समुद्घातन=समन्तादुद्घातन—स्वभावादन्यभावेन परिणमन समुद्घात, स च सप्तविध —वेदनासमुद्घात १, कषायसमुद्घात २, मरणसमुद्घात ३, वैक्रियसमुद्घात ४, तैजससमुद्घात ५, आहारकसमुद्घात ६, केवलिसमुद्घातश्च ७। एषु सप्तसु समुद्घातेषु चरम केवलिसमुद्घात। तत्र को नाम केवलिसमुद्घात ? उच्यते—यस्यान्तर्मुहूर्तकाले परमपद भावि, तस्मिन् केवलिनि भव समुद्घात केवलिसमुद्घातस्तेन, **'समोहणित्ता'** समवहत्य=आत्मप्रदेशान् प्रसार्य **'केवलकप्प'** केवलकल्प=सपूर्णं **'लोय'** लोक **'फासित्ता ण'** स्पृष्ट्वा खलु **'चिट्ठइ'** तिष्ठति किम् ?। उत्तरमाह—**'हता'** इत्यादि। **'हन्त'** इतिपद कोमलाऽऽमन्त्रणपूर्वकस्वीकारार्थकम्, **'चिट्ठइ'** तिष्ठति ॥ सू ७० ॥

बाहर निकालकर **(केवलकप्प लोय)** क्या समस्त लोकका **(फुसित्ता)** स्पर्श करके **(चिट्ठइ)** ठहरते है ? उत्तर—**(हता! चिट्ठइ)** हा! ठहरते है। यथास्वभाव से स्थित आत्मप्रदेशों का अन्य भाव मे परिणमन करना उसका नाम समुद्घात है। समुद्घात ७ प्रकार का है—वेदनासमुद्घात १, कषायसमुद्घात २ मरणसमुद्घात ३, वैक्रियसमुद्घात ४, तैजससमुद्घात ५, आहारकसमुद्घात ६, केवलिसमुद्घात ७। इनमे अन्तिम समुद्घात केवलिसमुद्घात है। जिसको अन्तर्मुहूर्तकाल मे निर्वाण पदकी प्राप्ति होती है ऐसे केवली भगवान का दण्ड, कपाट, मन्थान और लोकपूरण क्रिया द्वारा आत्मप्रदेशों का मूल शरीर को न छोडकर शरीर से बाहर फैलना इसका नाम केवलिसमुद्घात है ॥ सू ७० ॥

પ્રદેશોને શરીરથી બહાર કાઢીને (केवलकप्प लोय) શુ સમસ્ત લોકનો (फुसित्ता) સ્પર્શ કરીને (चिट्ठइ) રહે છે? (हता! चिट्ठइ) હા! રહે છે. યથાસ્વભાવમા રહેલા આત્મપ્રદેશોને અન્યભાવમા ફેરવી નાખવુ તેનુ નામ સમુદ્ઘાત છે સમુદ્ઘાત ૭ પ્રકારના છે—૧ વેદનાસમુદ્ઘાત, ૨ કષાયસમુદ્ઘાત, ૩ મરણસમુદ્ઘાત, ૪ વૈક્રિયસમુદ્ઘાત, ૫ તૈજસસમુદ્ઘાત, ૬ આહારકસમુદ્ઘાત, ૭ કેવલિસમુદ્ઘાત તેમા છેલ્લો સમુદ્ઘાત કેવલિસમુદ્ઘાત છે જેને અન્તર્મુહૂર્ત કાળમા નિર્વાણપદની પ્રાપ્તિ થાય છે એવા કેવલી ભગવાનના દડ, કપાટ, મન્થાન, અને લોકપૂરણ ક્રિયાદ્વારા આત્મપ્રદેશોનો, મૂળ શરીરને નહિ છોડતા શરીરથી બહાર ફેલાવો થયો તેનુ નામ કેવલિસમુદ્ઘાત છે (સૂ ૭૦)

मूलम्—गोयमा! अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लापूय-संठाण-संठिए

टीका—भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि। 'गोयमा! अय ण जंबुद्दीवे दीवे' हे गौतम! अय खलु जम्बूद्वीपो द्वीप 'सव्वदीवसमुद्दाण सव्वब्भतराए' सर्वद्वीपसमुद्राणा सर्वाभ्यन्तरक =सर्वद्वीपसमुद्रमध्यवर्ती, 'सव्वखुड्डाए' सर्वक्षुल्लक =सर्वद्वीपसमुद्रापेक्षया लघु, 'वट्टे' वृत्त =गोलाकार, मोदकवद् घनवृत्तोऽपि भवेत तद्व्यवच्छेदार्थं प्रतरवृत्ततामाह—'तेल्लापूय-संठाण-संठिए' तैलाऽपूप-संस्थान-संस्थित – तैलमिति घृतस्योपलक्षणम्, तेन तैलादिपक्वाऽपूपाऽऽकारसंस्थित, 'वट्टे' वृत्त, 'रहचक्कवाल-संठाण-संठिए' रथचक्रवाल-

जाता है कि (छउमत्थे ण मणुस्से तेसिं णिज्जरापोग्गलाण णो किंचि वण्णेणं वण्ण जाव जाणइ पासइ) छद्मस्थ मनुष्य, उन केवली भगवान् के उन निर्जराप्रधान पुद्गलों के वर्ण गंध रस स्पर्श को न जान सकता है न देख सकता है। ॥ सू ७३ ॥

'गोयमा! अय ण' इत्यादि।

(गोयमा!) हे गौतम! (अय ण जंबुद्दीवे दीवे) यह जम्बूद्वीप नामका द्वीप (सव्वदीवसमुद्दाणं) समस्त द्वीप और समुद्रों का (सव्वब्भतराए) सर्वप्रकार से मध्यवर्ती है। अत यह (सव्वखुड्डाए) सब से छोटा है। (वट्टे) यह वलय के समान वृत्ताकार-गोल है। (तेल्ला-पूय-संठाण-संठिए) तेलपक्व पुआ के आकार जैसा गोल है। (वट्टे रहचक्कवाल-संठाण-संठिए) रथके पहिये जैसा गोल है। (वट्टे पुक्खर-

કારણથી એમ કહેવાય છે કે (છઉમત્થે ણ મણુસ્સે તેસિં ણિજ્જરાપોગ્ગલાણ ણો કિંચિ વણ્ણેણ વણ્ણ જાવ જાણઇ પાસઇ) છદ્મસ્થ મનુષ્ય તે કેવલી ભગવાનના તે નિર્જરાપ્રધાન પુદ્ગલોના વર્ણ, ગંધ, રસ, સ્પર્શને નથી જાણી શકતા કે નથી દેખી શકતા? (સૂ. ૭૩)

'ગોયમા! અય ણ' ઇત્યાદિ

(ગોયમા!) હે ગૌતમ! (અય ણ જંબુદ્દીવે દીવે) આ જંબૂદ્વીપ નામનો દ્વીપ (સવ્વદીવસમુદ્દાણ) સમસ્ત દ્વીપો અને સમુદ્રોની (સવ્વબ્ભતરાએ) સર્વ પ્રકારથી મધ્યવર્તી છે આથી તે (સવ્વખુડ્ડાએ) બધાથી નાનો છે (વટ્ટે) તે વલયના (બંગડી) જેવો વૃત્તાકાર ગોળ છે (તેલ્લાપૂય-સઠાણ સઠિએ) પુડલાના આકાર જેવો ગોળ છે (વટ્ટે રહચક્કવાલ-સઠાણ-સઠિએ) રથના પૈડા જેવો ગોળ છે (વટ્ટે પુક્ખરકણ્ણિયા-સઠાણ-સઠિએ) કમળની કર્ણિકા જેવો ગોળ છે (વટ્ટે પડિપુણ્ણ-ચદ-સઠાણ-સઠિએ) પૂર્ણચન્દ્રમ કળ

फासं जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ सू० ७२ ॥

मूलम्—से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–छउमत्थे णं मणुस्से तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं णो किंचि वण्णेणं वण्णं जाव जाणइ पासइ ? ॥ सू० ७३ ॥

कालादिरूप, 'गंधेन गंध' गन्धेन गन्धम्, 'रसेन रसं' रसेन रसम्, 'फासेण फास' स्पर्शेन स्पर्शं 'जाणइ' जानाति विशेषत, 'पासइ' पश्यति सामान्यत किम् ?, उत्तरमाह–'गोयमा ' हे गौतम ! 'णो इणट्ठे समट्ठे' नायमर्थ समर्थ =सगत, कर्मपुद्गलाना सातिशयज्ञानगम्यत्वात् । अत्र छद्मस्थशब्देनातिशयज्ञानरहितस्य विवक्षितत्वादिति भाव । एव गन्धादयोऽपि ज्ञेया ॥ सू० ७२ ॥

टीका—'से केणट्ठेण भते !' इत्यादि । 'से केणट्ठेण भते !' अथ केनार्थेन भदन्त ! 'एव वुच्चइ' एवमुच्यते–'छउमत्थे ण मणुस्से' छद्मस्थ खलु मनुष्य 'तेसिं णिज्जरापुग्गलाण' तेषा निर्जरापुद्गलाना 'णो किंचि वण्णेणं वण्ण जाव जाणइ पासइ' नो किञ्चिद्वर्णेन वर्णं यावज्जानाति पश्यति ॥ सू० ७३ ॥

गधेण गध रसेण रस फासेण फास जाणइ पासइ) वर्ण से वर्ण को, गध से गंध को, रस से रस को और स्पर्श से स्पर्श को जानता है देखता है ? उत्तर–(गोयमा !) हे गौतम ! (णो इणट्ठे समट्ठे) यह अर्थ सिद्धान्त से समर्थित नहीं है। अर्थात् छद्मस्थ केवली भगवान् के निर्जराप्रधान पुद्गलों के रूप, रस, गध, और स्पर्श को किंचिन्मात्र भी नहीं जान सकता है, न देख सकता है ॥ सू ७२ ॥

'से केणट्ठेण भते ! ' इत्यादि ।

(भते !) हे भदत ! (से) यह बात (केणट्ठेण एव वुच्चइ) किस–कारण ऐसी कही

વર્ણને, ગધથી ગધને, રસથી રસને અને સ્પર્શથી સ્પર્શને જાણે છે ? જુએ છે ? ઉત્તર–(गोयमा !) હે ગૌતમ ! (णो इणट्ठे समट्ठे) આ અર્થ સિદ્ધાતથી સમર્થન પામેલો નથી, અર્થાત્ છદ્મસ્થ પુરુષ કેવલી ભગવાનના નિર્જરાપ્રધાન પુદ્ગલોના રૂપ, રસ, ગધ તથા સ્પર્શને કિંચિત્ માત્ર પણ જાણી શકતા નથી, તેમ જોઇ શકતા પણ નથી (સૂ ૭૨)

'से केणट्ठेण भते ! ' ઇત્યાદિ

(भते !) હે ભદન્ત ! (से) આ વાત (केणट्ठेण एव वुच्चइ) શા

मूलम्—देवे णं महड्ढिए महज्जुइए महव्वले महाजसे महासोक्खे महाणुभावे सविलेवणं गंधसमुग्गयं गिण्हइ, गिण्हित्ता तं अवदालेइ, अवदालित्ता जाव इणामेवत्ति कट्टु केवल-

टीका—'देवे णं' इत्यादि। 'देवे णं' देव खलु 'महड्ढिए' महर्द्धिक = विपुलैश्वर्ययुक्त, 'महज्जुइए' महाद्युतिक =महातेजस्वी, 'महव्वले महाजसे' महाबलो महायशा 'महासोक्खे' महासौख्य =महासुखी, 'महाणुभावे' महानुभाव, 'सविलेवण' सविलेपन 'गंधसमुग्गय' गन्धसमुद्गक=गन्धसम्पुटक 'गिण्हइ' गृह्णाति, 'गिण्हित्ता' गृहीत्वा त=गन्धसमुद्गकम् 'अवदालेइ' अवदालयति=उद्घाटयति, 'अवदालित्ता' अवदाल्य= उद्घाट्य, 'जाव इणामेवत्ति कट्टु' यावत् इदमेवमिति कृत्वा, इह यावच्छब्द परिमाणा-र्थकस्तानदित्यस्य सापेक्ष, इद=गमनम्, एवम्=छोटिकात्रय यावता कालेन भवति तावत्का-

विष्कम्भवाला है। इसकी परिधि तीन लाख सोलह हजार दो सौ सत्ताईस योजन तीन कोश एकसौ अट्ठाईस धनुष साडे तेरह अगुल से कुछ अधिक है। उससे यह परिवेष्टित है ॥ सू. ७४॥

'देवे ण महड्ढिए' इत्यादि।

(महड्ढिए) महाऋद्धि का धारी (महव्वले) महाबलिष्ठ (महाजसे) अतिशय यशस्वी (महासोक्खे) अत्यन्तसौख्यवाले (महाणुभावे) एवं अत्यत प्रभावशाली ऐसा कोई (देवे ण) देव (सविलेवण गंधसमुग्गय) विलेपनसहित एक गध के समुद्गक (पेटी) को (गिण्हइ) लेवे, (गिण्हित्ता) और लेकर उसे (अवदालेइ) वहीं पर खोले, (अवदालित्ता) खोलकर (जाव इणामेवत्ति कट्टु केवलकप्प जबुद्दीव दीव)

પોળો છે તેનો પરિધ ત્રણ લાખ સોળ હજાર બસો સત્તાવીશ યોજન ત્રણ કોશ એકસો અઠ્ઠાવીસ ધનુષ અને સાડા તેર આગળથી જરા વધારે છે તે એટલા ઘેરાવામા છે (સૂ ૭૪)

'देवे ण महड्ढिए' ઇત્યાદિ

(महड्ढिए) મહાઋદ્ધિના ધારી (महव्वले) મહાબલિષ્ઠ (महाजसे) અતિશય યશસ્વી (महासोक्खे) અત્યત સૌખ્યવાળા (महाणुभावे) તેમજ અત્યત પ્રભાવશાળી એવા કોઈ (देवे ण) દેવ (सविलेवण गंधसमुग्गय) વિલેપન સહિત એક ગધસમુદ્ગક (સુગધદ્રવ્યની પેટી) ને (गिण्हइ) લીએ, (गिण्हित्ता) અને લઈને તેને (अवदालेइ) ત્યાજ ઉઘાડે, (अवदालित्ता) ઉઘાડીને (जाव इणामेवत्ति कट्टु केवलकप्प जबुद्दीव दीव) તે સમસ્ત જબૂદ્વી-

वट्टे रहचक्कवाल-संठाण-संठिए वट्टे पुक्खर-कण्णिया-संठाण-संठिए वट्टे पडिपुण्ण-चंद-संठाणसंठिए एक्कं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलस सहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस य अगुलाइं अद्धंगुलियं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ॥ सू० ७४ ॥

संस्थान-संस्थित -चक्रवाल=मण्डल, मण्डलत्वधर्मयोगाच्च रथचक्रमपि रथचक्रवाल, तत्संस्थानेन संस्थित -रथचक्राऽऽकारसंस्थित इत्यर्थः 'वट्टे' वृत्त **'पुक्खर-कण्णिया सठाण सठिए वट्टे'** पुष्करकर्णिका-संस्थान-संस्थित -पद्मराजकोशसदृशाकारयुक्त, **'एक्कं जोयणसयसहस्स आयामविक्खंभेण'** एक योजनशतसहस्रम् आयामविष्कम्भेण=दैर्ध्यपरिणाहाभ्यामेकलक्षयोजनप्रमाण, **'वट्टे'** वृत्त, **'पडिपुण्ण-चद-सठाण सठिए'** प्रतिपूर्ण-चन्द्र-संस्थान-संस्थित, **'तिण्णि जोयणसयसहस्साइ'** त्रीणि योजनशतसहस्राणि=त्राणि लक्षाणि योजनानि, **'सोलस सहस्साइ'** षोडश सहस्राणि, **'दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए'** द्वे च सप्तविंशे योजनशते=सप्तविंशत्यधिके द्वे शते योजनानि **'तिण्णि य कोसे'** त्रींश्च क्रोशान **'अट्ठावीस च धणुसय'** अष्टाविंश च धनुःशतम्=अष्टाविंशत्यधिकशतधनूंषि, **'तेरस य अगुलाइ'** त्रयोदश चाङ्गुलानि **'अद्धगुलिय च'** अर्द्धाङ्गुलिकञ्च **'किंचि विसेसाहिए'** किञ्चिद्विशेषाऽधिक **'परिक्खेवेण'** परिक्षेपेण=परिधिना **'पण्णत्ते'** प्रज्ञप्तम् ॥ सू० ७४

कण्णिया-सठाण-सठिए) कमलकी कर्णिका के जैसा गोल है। (वट्टे पडिपुण्ण-चद-सठाण-सठिए) पूर्णचद्रमडल के जैसा गोल है। (एक्क जोयणसयसहस्स आयामविक्खभेण तिण्णि जोयणसयसहस्साइ सोलससहस्साइ दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीस च धणुसय तेरस य अगुलाइ अद्धगुलिय च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते) यह जम्बूद्वीप एक लाख योजनका आयाम एव

ગોળ છે (एक्क जोयण सयसहस्स आयामविक्खभेण तिण्णि जोयण सयसहस्साइ सोलससहस्साइ दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीस च धणुसय तेरस य अगुलाइ अद्धगुलिय च किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते) આ જબૂદ્વીપ ૧ લાખ યોજનના આયામ તેમજ વિષ્કંભવાળો લાંબો-

मूलम्—देवे णं महड्ढिए महज्जुइए महब्बले महाजसे महासोक्खे महाणुभावे सविलेवणं गंधसमुग्गयं गिण्हइ, गिण्हित्ता तं अवदालेइ, अवदालित्ता जाव इणामेवत्ति कट्टु केवल—

टीका—'देवे णं' इत्यादि। 'देवे णं' देव खलु 'महड्ढिए' महर्द्धिक= विपुलैश्वर्ययुक्त, 'महज्जुइए' महाद्युतिक=महातेजस्वी, 'महब्बले महाजसे' महाबलो महायशा 'महासोक्खे' महासौख्य=महासुखी, 'महाणुभावे' महानुभाव, 'सविलेवणं' सविलेपन 'गंधसमुग्गयं' गन्धसमुद्गकं=गन्धसम्पुटकं 'गिण्हइ' गृह्णाति, 'गिण्हित्ता' गृहीत्वा तं=गन्धसमुद्गकम् 'अवदालेइ' अवदालयति=उद्घाटयति, 'अवदालित्ता' अवदाल्य= उद्घाट्य, 'जाव इणामेवत्ति कट्टु' यावत् इदमेवमिति कृत्वा, इह यावच्छब्द परिमाणा-र्थकस्तावदित्यस्य सापेक्ष, इद=गमनम्, एवम्=छोटिकात्रय यावता कालेन भवति ताव का-

विष्कंभवाला है। इसकी परिधि तीन लाख सोलह हजार दो सौ सत्ताईस योजन तीन कोश एकसौ अट्ठाईस धनुष साडे तेरह अंगुल से कुछ अधिक है। उससे यह परिवेष्टित है ॥ सू. ७४ ॥

'देवे णं महड्ढिए' इत्यादि।

(महड्ढिए) महाऋद्धि का धारी (महब्बले) महाबलिष्ठ (महाजसे) अतिशय यशस्वी (महासोक्खे) अत्यन्तसौख्यवाले (महाणुभावे) एवं अत्यंत प्रभावशाली ऐसा कोई (देवे णं) देव (सविलेवणं गंधसमुग्गयं) विलेपनसहित एक गंध के समुद्गक (पेटी) को (गिण्हइ) लेवे, (गिण्हित्ता) और लेकर उसे (अवदालेइ) वहीं पर खोले, (अवदालित्ता) खोलकर (जाव इणामेवत्ति कट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं)

મોળો છે તેનો પરિધિ ત્રણ લાખ સોળ હજાર બસો સત્તાવીશ યોજન ત્રણ કોશ એકસો અટ્ઠાવીશ ધનુષ અને સાડા તેર આગળથી જરા વધારે છે તે એટલા ઘેરાવામાં છે (સૂ ૭૪)

'देवे णं महड्ढिए' ઇત્યાદિ

(महड्ढिए) મહાઋદ્ધિના ધારી (महब्बले) મહાબલિષ્ઠ (महाजसे) અતિશય યશસ્વી (महासोक्खे) અત્યંત સૌખ્યવાળા (महाणुभावे) તેમજ અત્યંત પ્રભાવશાળી એવા કોઈ (देवे णं) દેવ (सविलेवणं गंधसमुग्गयं) વિલેપન સહિત એક ગંધસમુદ્ગક (સુગંધદ્રવ્યની પેટી) ને (गिण्हइ) લીએ, (गिण्हित्ता) અને લઈને તેને (अवदालेइ) ત્યાંજ ઉઘાડે, (अवदालित्ता) ઉઘાડીને (जाव इणामेवत्ति कट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं) તે સમસ્ત જંબૂદ્વી-

कप्पं जबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छराणिवाएहिं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छेज्जा ॥ सू० ७५ ॥

मूलम्—से णूणं भंते ! से केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे तेहिं घाणपोग्गलेहि फुडे ? हंता ! फुडे ॥ सू० ७६ ॥

लिकम्—सत्वरमित्यर्थ, इति कृत्वा, 'केवलकप्प' केवलकल्प=सपूर्णं, 'जबुद्दीवं' जम्बूद्वीप 'दीवं' द्वीप 'तिहिं' त्रिभि 'अच्छराणिवाएहिं' अच्छराशब्दो देशीयः छोटिकावाचक, छोटिकाभिरित्यर्थ, 'तिसत्तखुत्तो' त्रिसप्तकृत्व =एकविंशतिवारान् 'अणुपरियट्टित्ता णं' अनुपर्यट्य=परिभ्रम्य खलु 'हव्वमागच्छेज्जा' शीघ्रमागच्छेत्। छोटिकात्रयकालसमकाले एव सपूर्णं जम्बूद्वीपमेकविंशतिवारान् परिभ्रम्य शीघ्रमागच्छेदित्यर्थ ॥ सू०७५ ॥

टीका—गौतम पृच्छति—'से णूण भते !' इत्यादि। 'से णूण भंते !' अथ नून हे भदन्त ! 'से केवलकप्पे जबुदीवे दीवे' स केवलकल्पे जम्बूद्वीपे द्वीपे 'तेहिं' ते, 'घाणपोग्गलेहिं' घ्राणपुद्गलै =गन्धपुद्गलै 'फुडे' स्पृष्ट किम्, ? भगवानाह—'हता ! फुडे' हन्त ! स्पृष्ट ॥ सू ७६ ॥

उस समस्त जबूद्वीप की (तिहिं अच्छराणिवाएहिं) तीन चुटकी बजाने में जितना समय लगे उतने समय मे (तिसत्तखुत्तो) तीनगुणित सात—इक्कीस वार (अणुपरियट्टित्ता) प्रदक्षिणा देकर (हव्वमागच्छेज्जा) वहीं पर शीघ्र आजावे ॥ सू ७५ ॥

'से णूणं भते !' इत्यादि।

गौतम पूछते है—(से णूणं भते ! से केवलकप्पे जबुदीवे दीवे) हे भदन्त ! वह समस्त जबूद्वीप (तेहिं घाणपोग्गलेहिं फुडे ?) क्या उन समस्त सुगधित पुद्गलों से स्पृष्ट हो जाता है ? उत्तर—(हता ! फुडे) हा ! हो जाता है ॥ सू ७६ ॥

પની (तिहिं अच्छराणिवाएहिं) ત્રણ ચપટી વગાડવામા જેટલો સમય લાગે તેટલા સમયમા (तिसत्तखुत्तो) એકવીસવાર (अणुपरियट्टित्ता) પ્રદક્ષિણા દઈને (हव्वमागच्छेज्जा) ત્યા પાછા જલ્દી આવી જાય (સૂ ૭૫)

'से णूण भते !' ઇત્યાદિ

ગૌતમ પૂછે છે—(से णूण भते ! से केवलकप्पे जबुदीवे दीवे) હે ભદન્ત ! આ સમસ્ત જબૂદ્વીપ (तेहिं घाणपोग्गलेहिं फुडे) શુ તે સમસ્ત સુગધિત પુદ્ગલોથી સ્પૃષ્ટ થઈ જાય છે ? ઉત્તર—(हता ! फुडे) હા, થઈ જાય છે (સૂ ૭૬)

मूलम्—छउमत्थे णं भंते! मणुस्से तेसिं घाणपोग्गलाणं किंचि वण्णेणं वण्णं जाव जाणइ पासइ? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ सू० ७७ ॥

मूलम्—से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ-छउमत्थे

टीका—पुनर्गौतम पृच्छति-'छउमत्थे ण' इत्यादि। 'भते!' हे भदन्त! 'छउमत्थे ण मणुस्से' छद्मस्थ खलु मनुष्य, 'तेसिं घाणपोग्गलाण' तेषा घाणपुद्गलाना 'किंचि वण्णेण वण्ण जाव जाणइ पासइ' किञ्चिद्वर्णेन वर्णं यावज्जानाति पश्यति किम्? भगवानाह-'गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे' गौतम! नाऽयमर्थ समर्थ ॥ सू ७७ ॥

टीका—'से तेणट्ठेण' इत्यादि। 'से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ' अथ

'छउमत्थे ण भते! मणुस्से' इत्यादि।

पुन गौतम ने पूछा-(छउमत्थे ण भंते! मणुस्से) हे भदन्त! क्या छद्मस्थ मनुष्य, (तेसिं घाणपुग्गलाणं) उन सुगधित पुद्गलों को (किंचि वण्णेण वण्ण जाव) वर्ण से यावत् गध स्पर्शादि से थोडा भी (जाणइ पासइ) जान सकता है? देख सकता है? प्रभु ने कहा कि (गोयमा!) हे गौतम! (णो इणट्ठे समट्ठे) यह अर्थ समर्थ नहीं है ॥ सू ७७ ॥

'से तेणट्ठेण' इत्यादि।

(से तेणट्ठेण गोयमा! एवं वुचइ) हे गौतम! छद्मस्थ उन निर्जरापुद्गलों को गधादिगुणों द्वारा थोड़ा भी नहीं जान सकता है—यह जो बात कही गई है सो इसलिये

'छउमत्थे ण भते! मणुस्से' ઈત્યાદિ

વળી ગૌતમે પુછ્યુ -(छउमत्थे ण भते! मणुस्से) હે ભદન્ત! શું છદ્મસ્થ મનુષ્ય, (तेसिं घाणपोग्गलाण) તે સુગંધિત પુદ્ગલોને વર્ણથી તેમજ ગંધ સ્પર્શ આદિથી જરા પણ (जाणइ पासइ) જાણી શકે છે? જોઈ શકે છે? પ્રભુએ કહ્યુ કે (गोयमा!) હે ગૌતમ! (णो इणट्ठे समट्ठे) આ અર્થ સમર્થ નથી (સૂ ७७)

'से तेणट्ठेण' ઈત્યાદિ

(से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ) હે ગૌતમ! છદ્મસ્થ, તે નિર્જરા-પુદ્ગલોને ગંધ આદિ-ગુણો દ્વારા જરા પણ જાણી શકતો નથી એમ જે

णं मणुस्से तेसिं निज्जरापोग्गलाणं णो किंचि वण्णेणं वण्णं जाव जाणइ पासइ ॥ सू० ७८ ॥

मूलम्—एए सुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता, समणा-

तेनाऽर्थेन हे गौतम ! एवमुच्यते—'छउमत्थे ण मणुस्से' छद्मस्थ खलु मनुष्य 'तेसिं णिज्जरापोग्गलाण' तेषा निर्जरापुद्गलाना 'न किंचि वण्णेण' न किंचिद् वर्णेन 'वण्ण' वर्ण 'जाव जाणइ पासइ' यावज्जानाति पश्यति। तस्य छद्मस्थस्य सातिशयज्ञानाभावात् यथावस्थितस्वरूपेण वर्णादिक न जानातीत्यर्थ ॥ सू ७८ ॥

टीका—'एए सुहुमा' इत्यादि। 'एए' एते वर्णादयस्तथा 'सुहुमा' सूक्ष्मा सन्ति यत् तान् यथावस्थितस्वरूपेण छद्मस्थो न जानाति, तथा 'ते पोग्गला' ते पुद्गला =निर्जरापुद्गला अतिसूक्ष्मा 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्ता । 'समणाउसो' हे श्रमण ! हे आयुष्मन् ! अथवा—श्रमणश्चासावायुष्मांश्चेति समासस्तस्यामन्त्रण हे श्रमणायुष्मन् ! हे गौतम !

कही गई है कि (छउमत्थे ण मणुस्से) उस छद्मस्थ के सातिशय ज्ञान का अभाव है, अत वह यथावस्थित रूप से (तेसिं णिज्जरापोग्गलाण) उन निर्जरित पुद्गलों के (णो किंचि वण्णेण वण्ण जाव जाणइ पासइ) वर्णादिक को थोडा भी नहीं जान सकता है, न देख सकता है ॥ सू ७८ ॥

'एए सुहुमा ण' इत्यादि।

(एए सुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता) उन निर्जरापुद्गलों को छद्मस्थ यथा-वस्थित रूपसे इस कारण से भी नहा जान सकता है कि उन पुद्गलों के वर्णादिक गुण सूक्ष्म है, अत (समणाउसो! सव्वलोय पि य ण ते फुसित्ता ण चिट्ठति) हे आयु-

વાત કહી છે તે એ માટે કહેલી છે કે (छउमत्थे ण मणुस्से) તે છદ્મસ્થને સાતિશય જ્ઞાનનો અભાવ છે તેથી તે યથાવસ્થિતરૂપથી (तेसिं णिज्जरापो-ग्गलाण) તે નિર્જરિત પુદ્ગલોના (णो किंचि वण्णेण वण्ण जाव जाणइ पासइ) વર્ણ આદિકને જરા પણ જાણી શકતો નથી, જોઈ પણ શકતો નથી (સૂ ૭૮)

'एए सुहुमा ण' ઈત્યાદિ

(एए सुहुमा ण ते पोग्गला पण्णत्ता) તે નિર્જરાપુદ્ગલોને છદ્મસ્થ યથાવસ્થિતરૂપથી એ કારણથી પણ જાણી શકતો નથી કે તે પુદ્ગલોના વર્ણ આદિક ગુણ સૂક્ષ્મ છે તેથી (समणाउसो! सव्वलोय पि य ण फुसित्ता ण चिट्ठति) હે આયુષ્મન્ શ્રમણ! જેવી રીતે છદ્મસ્થ ગંધ આદિક ગુણો દ્વારા

उसो ! सव्वलोयं पि य णं ते फुसित्ता णं चिट्ठंति ॥ सू० ७९ ॥

मूलम्—कम्हा णं भंते ! केवली समोहणंति ? कम्हा णं केवली समुग्घायं गच्छंति ? गोयमा ! केवलीण चत्तारि कम्मंसा

यथाऽतिसूक्ष्मत्वाद् गन्धपुद्गलान्न जानातीत्येव निर्जरापुद्गलानपीति दृष्टान्तप्रदर्शनम्। 'सव्वलोयं पि य णं' सर्वलोकमपि च खलु ते=निर्जरापुद्गलाः 'फुसित्ता णं' स्पृष्ट्वा खलु 'चिट्ठंति' तिष्ठन्ति ॥ सू. ७९ ॥

टीका—गौतम पृच्छति—'कम्हा णं भंते !' इत्यादि। 'कम्हा णं भंते !' कस्मात्खलु भदन्त !=हे भदन्त ! कस्मात् खलु 'केवली' केवलिनः 'समोहणंति' समुद्घ्नन्ति=कस्मै प्रयोजनाय केवलिनः समुद्घातं कुर्वन्तीत्यर्थः, उक्तमर्थं—पुनः सुगमबोधार्थमाह—'कम्हा णं केवली' कस्मात् खलु केवलिनः, 'समुग्घायं' समुद्घातम्=आत्मप्रदेशप्रसारकृतां गच्छन्ति=प्राप्नुवन्ति, भगवानुत्तरमाह—'गोयमा !' गौतम ! 'केवलीण चत्तारि कम्मंसा' केवलिनां चत्वार

ष्मन् श्रमण ! जिस प्रकार छद्मस्थ गंधादिक गुणों द्वारा अत्यंत सूक्ष्म रूप से परिणत गंध पुद्गलों को यथावस्थित रूपसे नहीं जान सकता है उसी प्रकार वह अत्यंत सूक्ष्मरूप से परिणत होने के कारण उन निर्जरापुद्गलों को भी गंधादिक गुणद्वारा न जान सकता है, न देख सकता है। इस दृष्टान्त से यह बात स्फुट हो जाती है ॥ सू. ७९ ॥

'कम्हा णं भंते !' इत्यादि।

गौतम ने पुनः प्रश्न किया—(भंते !) हे भदन्त ! (कम्हा णं) किस कारण से (केवली) केवली भगवान् (समोहणंति) समुद्घात करते हैं ? अर्थात्—केवलियों को समुद्घात किस प्रयोजन के लिये करना पडता है ? उत्तर—(गोयमा !) हे गौतम ! (केवलीण चत्तारि कम्मंसा अपलिक्खीणा भवंति) केवलियों के चार कर्म अवशिष्ट रहते

અત્યંત સૂક્ષ્મરૂપમાં પરિણામ પામેલા ગંધપુદ્ગલોને યથાવસ્થિતરૂપથી જાણી શકતા નથી, તેવીજ રીતે અત્યંત સૂક્ષ્મરૂપમાં પરિણામ પામેલા હોવાને કારણે તે નિર્જરાપુદ્ગલોને પણ ગંધ આદિક ગુણ દ્વારા જાણી શકતા નથી, તેમ જોઈ શકતા નથી આ દૃષ્ટાંતથી એ વાત સ્પષ્ટ થઈ જાય છે (સૂ. ૭૯)

'कम्हा णं भंते ! केवली समोहणंति' ઇત્યાદિ

ગૌતમે વળી પાછો પ્રશ્ન કર્યો— (भंते !) હે ભદન્ત ! (कम्हा णं) કયા કારણથી (केवली) કેવલી ભગવાન્ (समोहणंति) સમુદ્ઘાત કરે છે, અર્થાત્— કેવલીઓને સમુદ્ઘાત કયા પ્રયોજનને માટે કરવો પડે છે ? ઉત્તર—(गोयमा !) હે ગૌતમ ! (केवलीण चत्तारि कम्मंसा अपलिक्खीणा भवंति) કેવલીઓના ચાર

अपलिक्खीणा भवंति, तंजहा-(१) वेयणिज्जं (२) आउयं ३ णामं गोत्तं सव्वबहुए से वेयणिज्जे कम्मे भवइ, सव्वत्थोवे से आउए कम्मे भवइ। विसमं समं करेइ बंधणेहिं ठिईहि य, विसम-समकरणयाए बंधणेहिं ठिईहि य। एवं खलु केवली समोहणंति, एवं खलु केवली समुग्घायं गच्छंति॥ सू० ८०॥

कर्मांशा 'अपलिक्खीणा' अपरिक्षीणा=अवशिष्टा 'भवंति' भवन्ति=सन्ति, 'त जहा' तद्यथा-'वेयणिज्ज' वेदनीयम्, 'आउय' आयु, 'णाम' नाम, 'गोत्तं' गोत्रम्, 'सव्वबहुए से वेयणिज्जे कम्मे भवइ' सर्वबहुल तद् वेदनीयं कर्म भवति, 'सव्वत्थोवे से आउए कम्मे भवइ' सर्वस्तोक तद् आयु कर्म भवति, 'विसमं सम करेइ बधणेहिं ठिईहि य' विषम सम करोति बन्धनै -प्रदेशबन्धानुभागबन्धावाश्रित्येति भाव, स्थितिभिश्च= स्थितिबन्धविशेषैश्च, 'विसमसमकरणयाए बधणेहिं ठिईहि य एवं खलु केवली समोहणंति' अत्रैव पदयोजना-एव खलु विषमसमकरणाय=विषमकर्मणा समीकरणार्थं बन्धनै स्थितिभिश्च केवलिन 'समोहणति' समुद्घ्नन्ति-समुद्घात कुर्वन्ति 'एवं खलु केवली समुग्घाय गच्छति' एव खलु केवलिन समुद्घात गच्छन्ति ॥ सू ८० ॥

है, (त जहा) वे ये है-(वेयणिज्ज आउय णाम गोत्त) वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र। (सव्वबहुए से वेयणिज्जे कम्मे भवइ) केवली में सबसे अधिक स्थितिवाला उस समय वेदनीय कर्म रहता है। (सव्वत्थोवे से आउए कम्मे भवइ) तथा सबसे स्तोक आयुकर्म रहता है। (विसम सम करेइ बधणेहिं ठिईहि य विसमसमकरणयाए बधणेहिं ठिईहि य) इस विषमता को सम करने के लिये अर्थात् आयुकर्म की स्थिति के समान वेदनीयादिक कर्मों की स्थिति करने के लिये केवली भगवान् समुद्घात करते है। अन्य

કર્મ બાકી રહે છે, (त जहा) તે આ છે (वेयणिज्ज आउय णाम गोत्त) વેદનીય, આયુ, નામ અને ગોત્ર (सव्वबहुए से वेयणिज्जे कम्मे भवइ) કેવળીમાં સર્વથી વધારે સ્થિતિવાળા તે સમય વેદનીય કર્મ રહે છે (सव्व-त्थोवे से आउए कम्मे भवइ) તથા સર્વથી સ્તોક આયુકર્મ રહે છે (विसम सम करेइ बधणेहिं ठिईहि य, विसमसमकरणयाए बधणेहिं ठिईहि य) આ વિષમતાને સમ કરવા માટે અર્થાત્ આયુકર્મની સ્થિતિ બરાબર વેદનીય

मूलम्—सव्वे वि णं भंते ! केवली समुग्घायं गच्छंति ? णो इणट्ठे समट्ठे।

अकित्ताणं समुग्घायं, अणंता केवली जिणा।
जरामरणविप्पमुक्का, सिद्धिं वरगइं गया ॥ सू० ८१ ॥

टीका—गौतम पृच्छति-'सव्वे वि ण' इत्यादि। 'सव्वे वि ण भंते !' सर्वेऽपि खलु भदन्त !=हे भदन्त ! सर्वेऽपि खलु 'केवली' केवलिन 'समुग्घाय' समुद्घात 'गच्छंति' गच्छन्ति किम् ? भगवानाह 'णो इणट्ठे समट्ठे' नाऽयमर्थ समर्थ ।

"अकित्ता ण समुग्घाय, अणता केवली जिणा।
जरामरणविप्पमुक्का, सिद्धिं वरगइं गया ॥ १ ॥"

कर्मों का स्थितिबध, अनुभागबध एव प्रदेशबध, समुद्घात करने से आयुकर्म के स्थितिबध, अनुभागबध एव प्रदेशबध के बराबर हो जाते है। (एवं खलु केवली समोहणंति, एव खलु केवली समुग्घाय गच्छति) इस प्रकार केवलियों के समुद्घात करने का यह प्रयोजन है। इस प्रकार वे केवली समुद्घात करते है ॥ सू ८० ॥

'सव्वे वि ण भंते ! इत्यादि।

प्रश्न-(भंते !) हे भदन्त ! क्या (सव्वे वि णं केवली) समस्त केवली भगवान् (समुग्घाय गच्छति) समुद्घात करते है। (णो इणट्ठे समट्ठे) हे गौतम ! यह अर्थ समर्थित नहीं है, अर्थात्-समस्त केवली भगवान् समुद्घात करें ऐसा कोई नियम

આદિક કર્મોની સ્થિતિ કરવા માટે કેવલી ભગવાન સમુદ્ઘાત કરે છે બીજા કર્મોના સ્થિતિબંધ, અનુભાગબંધ તેમજ પ્રદેશબંધ, સમુદ્ઘાત કરવાથી આયુકર્મના સ્થિતિબંધ, અનુભાગબંધ તેમજ પ્રદેશબંધના બરાબર થઈ જાય છે (एव खलु केवली समोहणति एव खलु केवली समुग्घाय गच्छति) આ પ્રકારે કેવલીઓને સમુદ્ઘાત કરવાનું આ પ્રયોજન છે આ પ્રકારે તે કેવલી સમુદ્ઘાત કરે છે (સૂ ૮૦)

'सव्वे वि ण भते ! केवली ' ઈત્યાદિ

પ્રશ્ન—(भंते !) હે ભદન્ત ! શું (सव्वेवि ण केवली) બધા કેવલી ભગવાન (समुग्घाय गच्छति) સમુદ્ઘાત કરે છે? (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ગૌતમ ! આ અર્થ સમર્થિત નથી, અર્થાત્ સમસ્ત કેવલી ભગવાન સમુદ્ઘાત

अपलिक्खीणा भवंति, तंजहा-(१) वेयणिज्जं (२) आउयं ३ णामं गोत्तं सव्वबहुए से वेयणिज्जे कम्मे भवइ, सव्वत्थोवे से आउए कम्मे भवइ। विसमं समं करेइ बंधणेहिं ठिईहि य, विसमसमकरणयाए बंधणेहिं ठिईहि य। एवं खलु केवली समोहणंति, एवं खलु केवली समुग्घायं गच्छंति॥ सू० ८०॥

कर्मांशा 'अपलिक्खीणा' अपरिक्षीणा=अवशिष्टा 'भवंति' भवन्ति=सन्ति, 'त जहा' तद्यथा-'वेयणिज्ज' वेदनीयम्, 'आउय' आयु, 'णाम' नाम, 'गोत्त' गोत्रम्, 'सव्वबहुए से वेयणिज्जे कम्मे भवइ' सर्वबहुल तद् वेदनीयं कर्म भवति, 'सव्वत्थोवे से आउए कम्मे भवइ' सर्वस्तोक तद् आयु कर्म भवति, 'विसमं सम करेइ बधणेहिं ठिईहि य' विषम सम करोति बन्धनै -प्रदेशबन्धानुभागबन्धावाश्रित्येति भाव, स्थितिभिश्च= स्थितिबन्धविशेषैश्च, 'विसमसमकरणयाए बधणेहिं ठिईहि य एव खलु केवली समोहणति' अत्रैव पदयोजना-एव खलु विषमसमकरणाय=विषमकर्मणा समीकरणार्थं बन्धनै स्थितिभिश्च केवलिन 'समोहणति' समुद्घ्नन्ति-समुद्घात कुर्वन्ति 'एवं खलु केवली समुग्घाय गच्छंति' एव खलु केवलिन समुद्घात गच्छन्ति ॥ सू ८० ॥

है, (त जहा) वे ये है-(वेयणिज्ज आउय णाम गोत्त) वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र। (सव्वबहुए से वेयणिज्जे कम्मे भवइ) केवली मे सबसे अधिक स्थितिवाला उस समय वेदनीय कर्म रहता है। (सव्वत्थोवे से आउए कम्मे भवइ) तथा सबसे स्तोक आयुकर्म रहता है। (विसम सम करेइ बधणेहिं ठिईहि य विसमसमकरणयाए बधणेहिं ठिईहि य) इस विषमता को सम करने के लिये अर्थात् आयुकर्म की स्थिति के समान वेदनीयादिक कर्मों की स्थिति करने के लिये केवली भगवान् समुद्घात करते है। अन्य

કર્મ બાકી રહે છે, (त जहा) તે આ છે (वेयणिज्ज आउय णाम गोत्त) વેદનીય, આયુ, નામ અને ગોત્ર (सव्वबहुए से वेयणिज्जे कम्मे भवइ) કેવળીમા સર્વથી વધારે સ્થિતિવાળા તે સમય વેદનીય કર્મ રહે છે (सव्व-त्थोवे से आउए कम्मे भवइ) તથા સર્વથી સ્તોક આયુકર્મ રહે છે (विसम सम करेइ बधणेहिं ठिईहि य, विसमसमकरणयाए बधणेहिं ठिईहि य) આ વિષમતાને સમ કરવા માટે અર્થાત્ આયુકર્મની સ્થિતિ બરાબર વેદનીય

मूलम्—केवलिसमुग्घाए णं भंते! कइसमइए पण्णत्ते? गोयमा! अट्ठसमइए पण्णत्ते; तं जहा—पढमे समए दंडं करेइ.

माण यत् मोक्ष प्रयाग मनोऽभिमुखीकरण तत्, तच्च उदयावलिकाया कर्मपुद्गलप्रक्षेपव्यापाररूप उदीरणाविशेष। केवलिसमुद्घात कुर्वन् केवली प्रथममेवाऽऽवर्जीकरण करोति। भगवानाह—'गोयमा!' हे गौतम! 'असंखेज्जसमइए अंतोमुहुत्तिए पण्णत्ते' असंख्येयसमयिकम् आन्तर्मौहूर्तिक प्रज्ञप्तम् ॥ सू० ८२ ॥

टीका—गौतम पृच्छति—'केवलिसमुग्घाए ण' इत्यादि। 'केवलिसमुग्घाए ण भंते!' केवलिसमुद्घात खलु भदन्त!=हे भदन्त! केवलिसमुद्घात 'कइसमइए पण्णत्ते' कतिसमयिक प्रज्ञप्त?, भगवानाह—'गोयमा' हे गौतम! 'अट्ठसमइए पण्णत्ते' अष्टसमयिक प्रज्ञप्त। अन्तर्मुहूर्तभाविपरमपदे केवलिनि य समुद्घातो भवति स केवलिसमुद्घात, स चाष्टसु समयेषु भवतीत्यर्थ। तदेवाह—'तजहा' तद्यथा 'पढमे समए

अभिमुख किया जाता है उसका नाम आवर्जीकरण है। यह केवलिसमुद्घात के पहिले होता है। उदयावलिका में कर्मपुद्गल का प्रक्षेप करने—रूप व्यापार का यह नामान्तर है॥ सू. ८२ ॥

'केवलिसमुग्घाए णं भंते!' इत्यादि।

प्रश्न—(भंते!) हे भगवन्! (केवलिसमुग्घाए णं कइसमइए पण्णत्ते) केवलिसमुद्घात कितना समय का कहा गया है? उत्तर—(गोयमा) हे गौतम! (अट्ठसमइए पण्णत्ते) इसका काल ८ समय का कहा गया है। अन्तर्मुहूर्त में परमपद का लाभ जिनको होने वाला है ऐसे केवलियों द्वारा जो समुद्घात किया जाता है उसका नाम केवलिसमुद्घात है। इसका काल ८ समय का है। (तजहा) वह समुद्घात इस प्रकार से होता है—(पढमे समए दंड करेइ) प्रथम समय में केवली के

કરાય મોક્ષની સામે કરવામા આવે છે તેનુ નામ આવર્જીકરણ છે તે કેવલિસમુદ્ઘાતની પહેલા થાય છે ઉદયાવલિકામા કર્મપુદ્ગલોને પ્રક્ષેપ કરવા રૂપ વ્યાપારનુ આ નામાંતર છે (સૂ. ८२)

'केवलिसमुग्घाए ण भंते!' ઇત્યાદિ

પ્રશ્ન—(भंते!) હે ભગવાન્! (केवलिसमुग्घाए ण कइसमइए पण्णत्ते) કેવલિસમુદ્ઘાતના કેટલા સમય કહેલા છે? ઉત્તર—(गोयमा!) હે ગૌતમ! (अट्ठसमइए पण्णत्ते) તેનો કાળ ૮ સમયનો કહેલો છે અંતર્મુહૂર્તમા પરમપદનો લાભ જેમને થવાનો હોય છે એવા કેવળીઓ દ્વારા જે સમુદ્ઘાત કરવામા આવે છે તેનુ નામ કેવલિસમુદ્ઘાત છે તેનો કાલ ૮ સમયનો છે (तजहा)

मूलम्—कइसमए णं भंते! आउज्जीकरणे पण्णत्ते? गोयमा! असंखेज्जसमइए अंतोमुहुत्तिए पण्णत्ते ॥ सू० ८२॥

अकृत्वा खलु समुद्घातम्, अनन्ता केवलिनो जिना। जरामरणविप्रमुक्ताः, सिद्धिं वरगतिं गताः ॥ १ ॥ अयमाव-षण्मासायुषि अवशिष्टे सति येषां केवलज्ञानमुत्पन्नं ते नियमतः समुद्घातं कुर्वन्ति, अन्ये तु समुद्घातं कुर्वन्ति न वा कुर्वन्तीति ॥ सू० ८१ ॥

टीका—गौतमः पृच्छति-'कइसमए णं' इत्यादि। 'कइसमए णं भंते!' कति-समयं खलु भदन्त! 'आउज्जीकरणे पण्णत्ते' आवर्जीकरणं प्रज्ञप्तम्। आवर्ज्यतेऽभिमुखी-क्रियते मोक्षोऽनेनेति-आवर्जस्तस्य करणविवक्षायां च्विप्रत्ययः। केवलिसमुद्घातात् पूर्वं क्रिय-

नहीं है। क्यों कि (समुग्घायं अकित्ता) समुद्घात को नहीं भी करके (अणंता केवली) अनंत केवली (जिणा) जिन (जरामरणविप्पमुक्का) जन्म, जरा एवं मरण से रहित होकर (वरगइ) सिद्धिस्वरूप सर्वोत्कृष्ट गति को प्राप्त हुए हैं। भावार्थ-जिनकी आयु ६ मास की बाकी बची है और अब उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हुआ है तो ऐसी स्थिति में वे नियम से केवलिसमुद्घात करते हैं। बाकी के लिये ऐसा कोई नियम नहीं है कि समुद्घात करें ही॥ सू० ८१ ॥

'कइसमए णं भंते!' इत्यादि।

प्रश्न-(भंते!) हे भदंत! (कइसमए णं आउज्जीकरणे पण्णत्ते) मोक्ष-प्राप्ति का आवर्जीकरण कितने समय का होता है? उत्तर-(असंखेज्जसमए अंतोमुहुत्तिए पण्णत्ते) असंख्यात समय का अंतर्मुहूर्त कहा है। जिसके द्वारा जीव मोक्ष के

કરે એવો કોઈ નિયમ નથી, કેમકે (समुग्घायं अकित्ता) સમુદ્ઘાત ન પણ કરીને (अणंता केवली) અનંત કેવલી (जिणा) જિન (जरामरणविप्पमुक्का) જન્મ, જરા તેમજ મરણથી રહિત થઈ ને (वरगइ) સિદ્ધિસ્વરૂપ સર્વોત્કૃષ્ટ ગતિને પ્રાપ્ત થયા છે ભાવાર્થ-જેમની આયુ છ માસ બાકી રહે છે અને હવે તેમને કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્ત થયું છે, તો એવી સ્થિતિમાં તેઓ નિયમથી કેવલિસમુદ્ઘાત કરે છે બાકીને માટે એવો કોઈ નિયમ નથી કે સમુદ્ઘાત કરે જ. (સૂ ૮૧)

'कइसमए णं भंते!' ઈત્યાદિ

પ્રશ્ન—(भंते!) હે ભદન્ત! (कइसमए णं आउज्जीकरणे पण्णत्ते) મોક્ષ પ્રાપ્તિનું આવર્જીકરણ કેટલા સમયમાં થાય છે ઉત્તર-(असंखेज्जसमए अंतोमुहुत्तिए पण्णत्ते) અસંખ્યાત સમયનું અંતર્મુહૂર્ત કહેલું છે જેના દ્વારા

समए लोयं पूरेइ, पंचमे समए लोयं पडिसाहरइ, छट्ठे समये मंथं पडिसाहरइ, सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरइ, अट्ठमे समए दंडं पडिसाहरइ, पच्छा सरीरत्थे भवइ ॥ सू० ८३ ॥

मूलम्---से णं भंते! तहा समुग्घायं गए किं मणजोगं

द्घातेन प्रसारितान् आत्मप्रदेशान् संहरति, तदाह--' पचमे समये ' इत्यादि। 'पचमे समए लोयं पडिसाहरइ' पञ्चमे समये लोक प्रतिसंहरति=चतुर्भि समयैर्जगत्पूरण कृत्वा पञ्चमे समये आत्मप्रदेशान् अन्तरालावस्थितान् उपसंहरति। 'छट्ठे समए मथ पडिसाहरइ' षष्ठे समये मन्थान प्रतिसंहरति। 'सत्तमे समए कवाड पडिसाहरइ' सप्तमे समये कपाट प्रतिसंहरति। 'अट्ठमे समए दड पडिसाहरइ' अष्टमे समये दण्ड प्रतिसंहरति। 'तओ पच्छा सरीरत्थे भवइ' तत पश्चात् शरीरस्थो भवति ॥ सू. ८३ ॥

टीका---'से ण भते!' इत्यादि। 'से ण भते!' अथ खलु भदन्त! 'तहा

४ चार समय लगते है। सो ये सर्वप्रथम (पचमे समए लोयं पडिसाहरइ) पचम समय में अन्तराल मे स्थित उन आत्मप्रदेशों को उपसहृत करते है। (छट्ठे समए मथ पडिसाहरइ) छठे समय में मथाकाररूप से स्थित उन आत्मप्रदेशों को सकोचते है। (सत्तमे समए कवाड पडिसाहरइ) ७ वे समय मे कपाटाकारता को और (अट्ठमे समए दड पडिसाहरइ) आठवें समय मे दडाकारता को सकुचित करते है। (तओ पच्छा सरीरत्थे भवइ) उसके बाद आत्मस्थ हो जाते है॥ सू० ८३ ॥

'से ण भते!' इत्यादि।

(से णं भंते! तहा समुग्घाय गए किं मणजोग जुजइ) हे भदत! इस

સહુથી પહેલા (पचमे समए लोय पडिसाहरइ) પાચમ સમયમા, અ તરાલમા રહેલા તે આત્મપ્રદેશોનો ઉપસહાર કરે છે (छट्ठे समए मथ पडिसाहरइ) છઠ્ઠા સમયમા મથાકારરૂપથી स्थित (રહેલા) તે આત્મપ્રદેશોને સ કોચે છે (सत्तमे समए कवाड पडिसाहरइ) સાતમા સમયમા કપાટાકારતાને, અને (अट्ठमे समए दड पडिसाहरइ) આઠમા સમયમા દડાકારતાને સ કુચિત કરે છે (तओ पच्छा सरीरत्थे भवइ) ત્યારપછી આત્મસ્થ થઇ જાય છે (સૂ. ૮૩)

'से ण भते!' ઇત્યાદિ

(से णं भते! तहा समुग्घाय गए किं मणजोग जुजइ?) હે ભદન્ત!

विईए समए कवाडं करेइ, तइए समए मंथं करेइ, चउत्थे

दडं करेइ' प्रथमे समये दण्ड करोति=प्रथमे समये ऊर्ध्वाधोलोकान्त यावत्प्रसारितैरात्मप्रदेशैर्दण्डाकारता कुरुते। 'विईए समए कवाड करेइ' द्वितीये समये कपाट करोति=द्वितीये समये पूर्वपश्चिमयोर्दिशोर्विस्तृतैरात्मप्रदेशैरेव कपाटाकारता कुरुते। 'तइए समए मथ करेइ' तृतीये समये मन्थान करोति=तृतीये समये दक्षिणोत्तरयोर्दिशोरप्यात्मप्रदेशैः कपाटाकारविस्तृतैर्मन्थानाकारता कुरुते। 'चउत्थे समए लोय पूरेइ' चतुर्थे समये लोकं पूरयति=चतुर्थे समये तदन्तरालपूरणेन सर्वलोकस्य पूरण कुरुते। एव समुद्घात कुर्वन् केवली चतुर्भि समयैर्विश्वव्यापी भवति।

एव केवली स्वात्मप्रदेशाना विस्तारणेन कर्मलेशान् समीकृत्य विपरीतक्रमेण समु-

आत्मप्रदेश दण्डाकार होते है, अर्थात् प्रथम समय मे उर्ध्वलोक एव अधोलोक के अन्त तक प्रसारित होकर आत्मप्रदेश दडाकारता को धारण करते है। (विईए समए कवाड करेइ) द्वितीय समय में वे ही आत्मप्रदेश पूर्व और पश्चिम दिशा में विस्तृत होकर कपाटाकारता को धारण करते है। (तइए समए मथ करेइ) तृतीय समय मे दक्षिण और उत्तरदिशा में विस्तृत होकर मन्थान के आकार हो जाते हैं। (चउत्थे समए लोय करेइ) चतुर्थ समय में इनके अन्तराल की पूर्ति करते हुए वे समस्त लोक को पूरण कर देते है, अर्थात् समस्त लोक मे फैल जाते हे। इसका नाम लोकपूरणसमुद्घात है। इस प्रकार आत्मप्रदेशों को फैलाने-रूप समुद्घात करते हुए वे केवली ४ चार समयों में विश्वव्यापी बन जाते है, पश्चात प्रसारित उन आत्मप्रदेशों को संकुचित करते है। इस क्रिया में भी उन्हे

તે સમુદ્ઘાત આ પ્રકારે થાય છે, (पढमे समए दड करेइ) પ્રથમ સમયમા કેવળીના આત્મપ્રદેશ દડાકાર હોય છે, અર્થાત્ પ્રથમ સમયમા ઉર્ધ્વલોક તેમજ અધોલોકના અત સુધી ફેલાઈ જઈને આત્મપ્રદેશ દડાકારતાને ધારણ કરે છે (विईए समए कवाड करेइ) બીજા સમયમા તે જ આત્મપ્રદેશ પૂર્વ અને પશ્ચિમ દિશામા વિસ્તાર પામીને કપાટના આકારને ધારણ કરે છે (तइए समए मथ करेइ) ત્રીજા સમયમા દક્ષિણ તથા ઉત્તર દિશામા વિસ્તાર પામીને મન્થાનનો આકાર ધારણ કરે છે (चउत्थे समए लोय पूरेइ) ચોથા સમયમા તેના અતરાલની પૂર્તિ કરતા કરતા તે સમસ્ત લોકને પૂરણ કરી દીએ છે, અર્થાત્ સમસ્ત લોકમા ફેલાઈ જાય છે આનુ નામ લોકપૂરણ-સમુદ્ઘાત છે આ પ્રકારે આત્મપ્રદેશોના ફેલાવા રૂપ સમુદ્ઘાત કરતા કરતા તે કેવલી ૪ સમયોમા વિશ્વવ્યાપી બની જાય છે, પછી પ્રસારેલા તે આત્મપ્રદેશોને સકુચિત કરે છે આ ક્રિયામા પણ તેને ૪ સમય લાગે છે માટે તે

कायजोगं जुंजइ ?, ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ?, वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ ?, वेउव्वियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ?, आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ ?, आहारगमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ?, कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ ?। गोयमा !

'ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ?' औदारिकमिश्रशरीरकाययोगं युङ्क्ते ?, 'वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ' वैक्रियशरीरकाययोगं युङ्क्ते ?, 'वेउव्वियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ?' वैक्रियमिश्रशरीरकाययोगं युङ्क्ते ? 'आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ ?' आहारकशरीरकाययोगं युङ्क्ते ? 'आहारगमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ' आहारकमिश्रशरीरकाययोगं युङ्क्ते ? 'कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ' कार्मणशरीरकाययोगं युङ्क्ते ?, भगवानाह—'गोयमा !' गौतम ! 'ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ' औदारिक-

---

रिकशरीररूपी काययोग को काममे लाते हैं ? अथवा (ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ) औदारिकमिश्रशरीरकाययोग को काम मे लाते हैं ? (वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ ? वेउव्वियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ? आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ ? आहारगमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ? कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ ?) या वैक्रियिकशरीरकाययोगरूपी काययोग को काम मे लाते है ? या वैक्रियिकमिश्रशरीर को काम में लाते है ? अथवा आहारकशरीररूपी काययोग को काम मे लाते हे ?, या आहारकमिश्रशरीरकाययोग को काम में लाते हैं ?, या कार्मणशरीरकाययोग को काम मे लाते हे ?। भगवान कहते है—(गोयमा !) हे गौतम ! (ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ)

શું ઔદારિકશરીરરૂપી કાયયોગને કામમા લીએ છે ?, અથવા (ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ?) ઔદારિકમિશ્રશરીરકાયયોગને કામમા લીએ છે ? (वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ ? वेउव्वियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ? आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ ? आहारगमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ? कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ ?) અથવા વૈક્રિયશરીરરૂપી કાયયોગને કામમા લાવે છે ? અથવા વૈક્રિયમિશ્રશરીરકાયયોગને કામમા લાવે છે ? અથવા આહારકશરીરરૂપી કાયયોગને કામમા લાવે છે ? અથવા આહારકમિશ્રશરીરકાયયોગને કામમા લાવે છે ? અથવા કાર્મણશરીરકાયયોગને કામમા લાવે છે ? ભગવાન કહે છે–(गोयमा !) હે ગૌતમ ! (ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ ओरालियमिस्सकायजोगं जुंजइ) કેવલી

जुंजइ ?, वयजोगं जुंजइ ?, कायजोगं जुंजइ ?। **गोयमा** ! णो मणजोगं जुंजइ, णो वयजोगं जुंजइ, कायजोगं जुंजइ ॥ सू० ८४॥

मूलम्—कायजोगं जुंजमाणे किं ओरालियसरीर-

समुग्घायं गए ' तथा समुद्घात गत केवली '**किं मणजोग जुजइ ?**' किं मनोयोग युनक्ति ' '**वयजोग जुजइ ?**' वाग्योग युनक्ति किम् ' '**कायजोग जुजइ**' काययोग युनक्ति किम् ', भगवानाह—'**गोयमा !**' हे गौतम ! '**णो मणजोग जुजइ**' नो मनोयोग युनक्ति, '**णो वयजोग जुजइ**' नो वाग्योग युनक्ति, '**कायजोग जुजइ**' काययोग युनक्ति ॥ सू ८४ ॥

टीका—गौतम पृच्छति—'कायजोग' इत्यादि । '**कायजोग जुजमाणे किं ओरालियसरीरकायजोग जुजइ ?**' काययोग युञ्जान किमौदारिकशरीरकाययोग युङ्क्ते '

प्रकार समुद्घात अवस्था में रहनेवाला वह आत्मा कितने योगों को प्रयुक्त करता है ', क्या मनोयोग को प्रयुक्त करता है ? (**वयजोग जुजइ**) क्या वचनयोग को प्रयुक्त करता है ? (**कायजोग जुजइ**) क्या काययोग को प्रयुक्त करता है ? भगवान् ने कहा (**गोयमा !**) हे गौतम ! (**णो मणजोगं जुजइ, णो वयजोग जुजइ, कायजोग जुजइ**) वह न मनोयोग को प्रयुक्त करता है और न वचनयोग को प्रयुक्त करता है, किन्तु एक काययोग को ही प्रयुक्त करता है ॥ सू० ८४ ॥

'**कायजोग जुजमाणे**' इत्यादि ।

गौतम ने पुन प्रभु से पूछा कि हे प्रभु ! (**कायजोग जुंजमाणे**) केवली काययोग को योजित करते हुए (**किं ओरालियसरीरकायजोग जुजइ ?**) क्या औदा-

આ પ્રકારે સમુદ્ઘાત અવસ્થામા રહેવાવાળા તે આત્મા કેટલા યોગોને પ્રયુક્ત કરે છે ? શુ મનોયોગને પ્રયુકત કરે છે ? (वयजोग जुजइ) શુ વચન-યોગને પ્રયુકત કરે છે ? (कायजोग जुजइ) શુ કાયયોગને પ્રયુકત કરે છે ? ભગવાને કહ્યુ–(गोयमा !) હે ગૌતમ ! (णो मणजोग जुजइ, णो वयजोग जुजइ, कायजोग जुजइ) તે નથી મનોયોગને પ્રયુકત કરતા, તથા નથી વચન-યોગને પ્રયુકત કરતા, પરતુ એક કાયયોગને જ પ્રયુકત કરે છે (સૂ ૮૪)

'कायजोग जुजमाणे' ઇત્યાદિ

ગૌતમે વળી પાછુ પ્રભુને પૂછયુ કે હે પ્રભુ ! (कायजोग जुजमाणे) કેવલી કાયયોગને યોજિત કરતા કરતા (किं ओरालियसरीरकायजोग जुजइ ?)

कायजोगं जुंजइ ?, ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ?, वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ ?, वेउव्वियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ?, आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ ?, आहारगमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ?, कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ ?। गोयमा !

'ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ?' औदारिकमिश्रशरीरकाययोगं युङ्क्ते ? 'वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ' वैक्रियशरीरकाययोगं युङ्क्ते ?, 'वेउव्वियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ?' वैक्रियमिश्रशरीरकाययोगं युङ्क्ते ? 'आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ ?' आहारकशरीरकाययोगं युङ्क्ते ? 'आहारगमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ' आहारकमिश्रशरीरकाययोगं युङ्क्ते ? 'कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ' कार्मणशरीरकाययोगं युङ्क्ते ?, भगवानाह—'गोयमा !' गौतम ! 'ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ' औदारिक-

रिकशरीररूपी काययोग को काममें लाते हैं ? अथवा (ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ) औदारिकमिश्रशरीरकाययोग को काम में लाते हैं ? (वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ ? वेउव्वियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ? आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ ? आहारगमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ? कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ ?) या वैक्रियिकशरीरकाययोगरूपी काययोग को काम में लाते हैं ? या वैक्रियिकमिश्रशरीर को काम में लाते हैं ? अथवा आहारकशरीररूपी काययोग को काम में लाते हैं ?, या आहारकमिश्रशरीरकाययोग को काम में लाते हैं ?, या कार्मणशरीरकाययोग को काम में लाते हैं ?। भगवान कहते हैं—(गोयमा !) हे गौतम ! (ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ)

શું ઔદારિકશરીરરૂપી કાયયોગને કામમા લીએ છે ?, અથવા (ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ?) ઔદારિકમિશ્રશરીરકાયયોગને કામમા લીએ છે ? (वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ ? वेउव्वियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ? आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ ? आहारगमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ ? कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ ?) અથવા વૈક્રિયશરીરરૂપી કાયયોગને કામમા લાવે છે ? અથવા વૈક્રિયમિશ્રશરીરકાયયોગને કામમા લાવે છે ? અથવા આહારકશરીરરૂપી કાયયોગને કામમા લાવે છે ? અથવા આહારકમિશ્રશરીરકાયયોગને કામમા લાવે છે ? અથવા કાર્મણશરીરકાયયોગને કામમા લાવે છે ? ભગવાન કહે છે–(गोयमा !) હે ગૌતમ ! (ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ ओरालियमिस्सकायजोगं जुंजइ) કેવલી

ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ, ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं पि जुंजइ, णो वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ, णो वेउव्वियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ, णो आहारगमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ, कम्मसरीरकायजोगंपि जुंजइ। पढमट्ठमेसु समएसु

शरीरकाययोग युङ्क्ते, 'ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ, औदारिकमिश्रशरीर-काययोगमपि युङ्क्ते, 'णो वेउव्वियसरीरकायजोगं जुजइ' 'नो वैक्रियशरीरकाययोग युङ्क्ते, 'णो वेउव्वियमिस्ससरीरकायजोग जुंजइ' नो वैक्रियमिश्रशरीरकाययोग युङ्क्ते, 'णो आहारगसरीरकायजोग जुंजइ' नो आहारकशरीरकाययोग युङ्क्ते, 'णो आहारगमिस्ससरीरकायजोग जुजइ' नो आहारकमिश्रशरीरकाययोग युङ्क्ते, 'कम्मसरीरकायजोग जुजइ' कार्मणशरीरकाययोगमपि युङ्क्ते। 'पढमट्ठमेसु समएसु ओरालियसरीरकायजोगपि जुजइ' प्रथमाऽष्टमयो समययोरौदारिकशरीरकाययोगमपि युङ्क्ते, 'बिइयछट्ठसत्तमेसु

केवली भगवान् औदारिकशरीरकाययोग को काम में लाते है, तथा औदारिकमिश्रशरीरकाययोग को भी काम मे लाते है। (णो वेउव्वियसरीरकायजोगं जुजइ, णो वेउव्वियमिस्ससरीर-कायजोग जुजइ, णो आहारगसरीरकायजोग जुजइ, णो आहारगमिस्ससरीर-कायजोग जुजइ, कम्मसरीरकायजोगपि जुजइ) वैक्रियशरीरकाययोग, वैक्रियमिश्रशरीर-काययोग, आहारकशरीरकाययोग, आहारकमिश्रशरीरकाययोग इनको काम में नहीं लाते। परन्तु कार्मणशरीरकाययोग को वे काम मे लाते है। (पढमट्ठमेसु समएसु ओरालियसरीरकाय-जोग जुजइ बिइयछट्ठसत्तमेसु समएसु ओरालियमिस्ससरीरकायजोग जुजइ, तइयचउत्थपचमेहिं कम्मसरीरकायजोग जुजइ) प्रथम और आठवें समय मे तो

ભગવાન ઔદારિકશરીરકાયયોગને કામમા લાવે છે તથા ઔદારિકમિશ્રશરીરકાય-યોગને પણ કામમા લાવે છે (णो वेउव्वियसरीरकायजोग जुजइ, णो वेउव्वियमिस्ससरीरकायजोग जुजइ, णो आहारगसरीरकायजोग जुजइ, णो आहारगमिस्ससरीरकायजोग जुजइ, कम्मसरीरकायजोगपि जुजइ) વૈક્રિયશરીરકાયયોગને, વૈક્રિયમિશ્રશરીરકાયયોગને, આહારકશરીરકાયયોગને, આહારકમિશ્રશરીરકાય યોગને કામમા લાવતા નથી, પરતુ કાર્મણશરીરકાયયોગને તેઓ કામમા લાવે છે (पढमट्ठमेसु समएसु ओरालियसरीरकायजोग जुजइ, बिइयछट्ठसत्तमेसु समएसु ओरालियमिस्ससरीरकायजोग जुजइ, तइयचउत्थपचमेहिं कम्मसरीरकायजोग जुजइ)

ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ, विइयछट्ठसत्तमेसु समएसु ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ, तइयचउत्थपंचमेहिं कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ ॥ सू० ८५ ॥

मूलम्—से णं भंते! तहा समुग्घायगए सिज्झइ

ओरालियमिस्ससरीरकायजोगं जुंजइ' द्वितीयषष्ठसप्तमेषु समयेषु औदारिकमिश्रशरीरकाययोग युङ्क्ते, मिश्रत्व चात्र कार्मणेनैव सहौदारिकस्यावस्थानात्। 'तइयचउत्थपंचमेहिं कम्मसरीरकायजोग जुंजइ' तृतीयचतुर्थपञ्चमेषु समयेषु कार्मणशरीरकाययोग युङ्क्ते ॥ सू ८५ ॥

टीका—'से णं भते' इत्यादि। 'से णं भंते' 'तहा समुग्घायगए' स खलु भदन्त!

औदारिकशरीररूपी काययोग को वे काम म लाते है, दूसरे, छठे एव सातवे समय में औदारिकमिश्रशरीरकाययोग को काम में लाते है, एव तीसरे, चौथे एव पचम समय में कार्मणशरीररूपी काययोग को काम में लाते है ॥

भावार्थ—काययोग ७ प्रकार का है। इनमें औदारिकशरीरकाययोग, औदारिकमिश्रशरीरकाययोग एव कार्मणशरीरकाययोग ये ३ तीन योग केवली के होते है। बाकी के ४ काययोग केवली के नहीं होते है। प्रथम और आठवें समय में औदारिकशरीरकाययोग होता है, द्वितीय, छठवें और सातवे समय में औदारिकमिश्रशरीरकाययोग होता है और तीसरे, चौथे एव पाचवे समय में उनके समुद्घात अवस्था मे कार्मणशरीररूपी काययोग होता है ॥ सू० ८५ ॥

પ્રથમ તથા આઠમા સમયમા તો ઔદારિકશરીરરૂપી કાયયોગને તેઓ કામમા લાવે છે બીજા, છઠ્ઠા તેમજ સાતમા સમયમા ઔદારિકમિશ્રશરીરકાયયોગને કામમા લાવે છે, તેમજ ત્રીજા, ચોથા અને પાચમા સમયમા કાર્મણશરીરરૂપી કાયયોગને કામમા લાવે છે

ભાવાર્થ—કાયયોગ ૭ પ્રકારના છે, તેમા ઔદારિકશરીરકાયયોગ, ઔદારિકમિશ્રશરીરકાયયોગ, તેમજ કાર્મણશરીરકાયયોગ, આ ત્રણ યોગ કેવલીના હોય છે બાકીના ૪ કાયયોગ કેવલીના હોતા નથી પ્રથમ અને આઠમા સમયમા ઔદારિકકાયયોગ હોય છે બીજા, છઠ્ઠા અને સાતમા સમયમા ઔદારિકમિશ્રશરીરકાયયોગ હોય છે, અને ત્રીજા, ચોથા તેમજ પાચમા સમયમા તેમની સમુદ્ઘાત-અવસ્થામા કાર્મણશરીરરૂપી કાયયોગ હોય છે (સૂ ૮૫)

वुज्झइ मुच्चइ परिणिव्वाइ सव्वदुक्खाणं अंतं करेइ ? णो इणट्ठे समट्ठे। से णं तओ पडिणियत्तइ, पडिणियत्तित्ता इहमागच्छइ, तओ पच्छा मणजोगंपि जुंजइ, वयजोगंपि जुंजइ, कायजोगंपि जुंजइ ॥ सू० ८६ ॥

तथा समुद्घातगत –हे भदन्त ! स खलु तथा समुद्घातगत =कृतसमुद्घात केवली **'सिज्झइ वुज्झइ मुच्चइ परिणिव्वाइ सव्वदुक्खाणमतं करेइ ?'** सिध्यति, बुध्यते, मुच्यते, परिनिर्वाति, सर्वदु खानामन्त करोति किम् ?, भगवानाह–**' णो इणट्ठे समट्ठे'** नाऽयमर्थ समर्थ । **'से णं'** स खलु **'तओ'** तत =समुद्घातात् **'पडिणियत्तइ'** प्रतिनिवर्तते, **'पडिणियत्तित्ता'** प्रतिनिवर्त्य **'इहमागच्छइ'** इहाऽऽगच्छति=शरीरस्थो भवति । **'तओ पच्छा'** तत पश्चात्, **'मणजोगं पि जुजइ'** मनोयोगमपि युङ्क्ते, **'वयजोगपि जुजइ'** वाग्योगमपि युङ्क्ते **'कायजोगं पि जुजइ'** काययोगमपि युङ्क्ते ॥ सू० ८६ ॥

'से ण भते !' इत्यादि ।

(भते !) हे भदत ! (से ण तहा समुग्घायगए) समुद्घात अवस्था में केवली भगवान् (सिज्झइ वुज्झइ मुच्चइ परिणिव्वाइ) सिद्ध, बुद्ध, मुक्त एव परिनिर्वाण हो (सव्वदुक्खाण अत करेइ) क्या समस्त दु खों का अत करते है ? प्रभु ने उत्तर दिया कि (गोयमा !) हे गौतम ! (णो इणट्ठे समट्ठे) यह अर्थ समर्थित नहीं है। (से ण तओ पडिणियत्तइ, पडिणियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता तओ पच्छा मणजोग पि जुंजइ, वयजोग पि जुजइ, कायजोग पि जुजइ) किन्तु जब वे समुद्घात कर चुकते है

'से ण भते !' ઈત્યાદિ

(भते !) હે ભદત ! (से ण समुग्घायगए) સમુદ્ઘાત અવસ્થામા કેવલી ભગવાન્ (सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिणिव्वाइ) સિદ્ધ, બુદ્ધ, મુક્ત તેમજ પરિનિર્વાણ થઈને (सव्वदुक्खाण अंत करेइ) શુ સમસ્ત દુ ખોનો અત કરે છે ? પ્રભુએ ઉત્તર આપ્યો કે (गोयमा !) હે ગૌતમ ! (णो इणट्ठे समट्ठे) આ અર્થ સમર્થિત નથી (से ण तओ पडिणियत्तइ, पडिणियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता तओ पच्छा मणजोग पि जुजइ, वयजोगंपि जुजइ, कायजोग पि जुजइ) પરતુ જ્યારે સમુદ્ઘાત કરી ચુકે છે અર્થાત્ તે ક્રિયાથી નિવૃત્ત થઈ જાય છે અને પૂર્વ પ્રમાણે શરીરમા સ્થિત થઇ જાય છે ત્યારે

मूलम्—मणजोगं जुंजमाणे किं सच्चमणजोगं जुंजइ ? मोसमणजोगं जुंजइ ?, सच्चामोसमणजोगं जुंजइ ?, असच्चामो-

टीका—गौतम पृच्छति—"मणजोग" इत्यादि। 'मणजोग जुजमाणे किं सच्चमणजोग जुंजइ' मनोयोग युञ्जान किं सत्यमनोयोग युङ्क्ते ? 'मोसमणजोग जुजइ ?' मृपामनोयोग युङ्क्ते ? 'सच्चामोसमणजोगं जुजइ' सत्यमृपामनोयोग युङ्क्ते किम् ?, भगवा-

अर्थात् उस क्रिया से निवृत्त हो चुकते हैं और पूर्ववत् शरीर में स्थित हो जाते हैं तब मनोयोग को भी प्रयुक्त करते हैं, वचनयोग को भी प्रयुक्त करते हैं तथा काययोग को भी प्रयुक्त करते हैं। समुद्घात–अवस्था में मरण नहीं होता। अत मुक्ति की प्राप्ति उस समय नहीं होती ॥ सू० ८६ ॥

'मणजोग जुजमाणे' इत्यादि।

प्रश्न—हे भदन्त! आपने जो अभी यह बात कही है कि समुद्घात से निवृत्त होने पर केवली भगवान् मनोयोग को प्रयुक्त करते हैं सो इस विषय में यह पूछता हूं कि वे भगवान् (मणजोग जुजमाणे) मनोयोग को प्रयुक्त करते हुए चार मनोयोगों में से कौन से मनोयोग को प्रयुक्त करते हैं ? (किं सच्चमणजोग जुजइ, मोसमणजोग जुजइ, सच्चामोसमणजोग जुजइ, असच्चामोसमणजोग जुजइ ?) सत्यमनोयोग को प्रयुक्त करते हैं, या असत्यमनोयोग को प्रयुक्त करते हैं, अथवा मिश्रमनोयोग को प्रयुक्त करते हैं, असत्यमृपामनोयोग को प्रयुक्त करते हैं ? अर्थात् व्यवहारमनोयोग को प्रयुक्त करते हैं ?। (गोयमा!) हे गौतम! (सच्च-

મનોયોગને પણ પ્રયુક્ત કરે છે, વચનયોગને પણ પ્રયુક્ત કરે છે તથા કાયયોગને પણ પ્રયુક્ત કરે છે સમુદ્ઘાત અવસ્થામા મરણ થતુ નથી તેથી મુક્તિની પ્રાપ્તિ તે સમયે થતી નથી (સૂ ૮૬)

'मणजोगं जुंजमाणे' ઈત્યાદિ

પ્રશ્ન—હે ભદન્ત! આપે જે હમણા એ વાત કહી છે, કે સમુદ્ઘાતથી નિવૃત્ત થતા કેવલી ભગવાન મનોયોગને પ્રયુક્ત કરે છે માટે એ વિષયમા એ પૂછુ છુ કે તે ભગવાન (मणजोग जुजमाणे) મનોયોગને પ્રયુક્ત કરતા ચાર મનોયોગમાંથી કયા મનોયોગને પ્રયુક્ત કરે છે? (किं सच्चमणजोग जुजइ ? मोसमणजोगं जुजइ ? सच्चामोसमणजोग जुजइ ? असच्चामोसमणजोग जुंजइ ?) શુ સત્ય મનોયોગને પ્રયુક્ત કરે છે? અથવા અસત્યમનોયોગને પ્રયુક્ત કરે છે? અથવા મિશ્રમનોયોગને પ્રયુક્ત કરે છે? કે અસત્યમૃષામનોયોગને પ્રયુક્ત કરે છે અર્થાત્ વ્યવહારમનોયોગને પ્રયુક્ત કરે છે? ઉત્તર—(गोयमा!) હે

समणजोगं जुंजइ ? गोयमा! सच्चमणजोगं जुंजइ, णो मोसमण-
जोगं जुंजइ, णो सच्चामोसमणजोगं जुंजइ, असच्चामोसमणजोगं
पि जुंजइ ॥ सू० ८७ ॥

मूलम्—वयजोगं जुंजमाणे किं सच्चवइजोगं जुंजइ ?

नाह—'गोयमा! सच्चमणजोग जुजइ' गौतम ! सत्यमनोयोग युङ्क्ते, 'णो मोसमणजोग जुंजइ' नो मृषामनोयोग युङ्क्ते 'णो सच्चामोसमणजोग जुजइ' नो सत्यमृषामनोयोग युङ्क्ते, 'असच्चामोसमणजोगपि जुजइ' असत्याऽमृषामनोयोगमपि युङ्क्ते ॥ सू० ८७ ॥

टीका—गौतम पृच्छति—'वयजोग' इत्यादि। 'वयजोग जुंजमाणे किं सच्चवइजोग जुजइ' वाग्योग युञ्जान किं सत्यवाग्योग युङ्क्ते ? 'मोसवइजोग जुजइ' मृषावा

मणजोग जुजइ) वे केवली सत्यमनोयोग को प्रयुक्त करते हैं, (णो मोसमणजोग जुजइ णो सच्चामोसमणजोग जुजइ, असच्चामोसमणजोगं जुजइ) असत्यमनोयोग एव मिश्रमनोयोग को प्रयुक्त नहीं करते है, किन्तु असत्यामृषामनोयोग को प्रयुक्त करते हैं, अर्थात् व्यवहार मनोयोग को प्रयुक्त करते है। सत्यमनोयोग एव व्यवहारमनोयोग को वे केवली प्रयुक्त करते है, अन्य दो को नहीं ॥ सू० ८७ ॥

'वयजोग जुजमाणे' इत्यादि।

प्रश्न—हे भगवन्! वे केवली जो (वयजोग जुजमाणे किं) वचनयोग को प्रयुक्त करते है सो क्या (सच्चवइजोग जुजइ, मोसवइजोग जुजइ, सच्चामोसवइजोग जुजइ, असच्चामोसवइजोग जुजइ) सत्यवचन योग को प्रयुक्त करते हैं, या असत्यवचन-

ગૌતમ! (सच्चमणजोग जुजइ) તે કેવળી સત્યમનોયોગને પ્રયુક્ત કરે છે (णो मोसमणजोग जुजइ, णो सच्चामोसमणजोग जुजइ, असच्चामोसमणजोग जुजइ) અસત્યમનોયોગ તેમજ મિશ્રમનોયોગને પ્રયુક્ત કરતા નથી, પરંતુ અસત્યામૃષામનોયોગને પ્રયુક્ત કરે છે અર્થાત્ વ્યવહારમનોયોગને પ્રયુક્ત કરે છે સત્યમનોયોગ તેમજ વ્યવહારમનોયોગને તે કેવલી પ્રયુક્ત કરે છે બીજા બેને નહિ (સૂ ૮૭)

'वयजोग जुजमाणे' ઇત્યાદિ

પ્રશ્ન—હે ભગવન્! તે કેવલી કે જે (वयजोग जुजमाणे) વચનયોગને પ્રયુક્ત કરે છે, તે શું (सच्चवइजोग जुजइ, मोसवइजोग जुंजइ, सच्चामो-

मोसवइजोगं जुंजइ ? सच्चामोसवइजोगं जुंजइ ? असच्चामोस-वइजोगं जुंजइ ? सच्चवइजोगं जुंजइ, णो मोसवइजोगं जुंजइ, णो सच्चामोसवइजोगं जुंजइ, असच्चामोसवइजोगं पि जुंजइ ॥सू० ८८॥

मूलम्— कायजोगं जुंजमाणे आगच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज

ग्योग युङ्क्ते' 'सच्चामोसवइजोगं जुंजइ' सत्यमृषावाग्योगं युङ्क्ते 'असच्चामोसवइजोगं जुंजइ' असत्याऽमृषावाग्योगं युङ्क्ते किम् ? भगवानाह—'गोयमा ! सच्चवइजोगं जुंजइ ?' गौतम ! सत्यवाग्योगं युङ्क्ते, 'णो मोसवइजोगं जुंजइ' नो मृषावाग्योगं युङ्क्ते, णो सच्चामोसवइ-जोगं जुंजइ' नो सत्यमृषावाग्योगं युङ्क्ते, 'असच्चामोसवइजोगं पि जुंजइ' असत्याऽमृषा-वाग्योगमपि युङ्क्ते ॥ सू० ८८ ॥

टीका—'कायजोगं' इत्यादि । 'कायजोगं जुंजमाणे आगच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा' काययोगं युञ्जान आगच्छति वा तिष्ठति वा, 'णिसीएज्ज वा' निषीदति=उपविशति वा,

योग को प्रयुक्त करते हैं, अथवा मिश्रवचनयोग को प्रयुक्त करते हैं, या असत्यामृषावचनयोग को प्रयुक्त करते हैं ? उत्तर—(गोयमा !) हे गौतम ! (सच्चवइजोगं जुंजइ) वे केवली सत्यवचनयोग को प्रयुक्त करते हैं, (णो मोसवइजोगं जुंजइ णो सच्चामोसवइजोगं जुंजइ) असत्यवचनयोग को एवं मिश्रवचनयोग को प्रयुक्त नहीं करते हैं । (असच्चामोस-वइजोगंपि जुंजइ) परन्तु असत्यामृषावचनयोग को प्रयुक्त करते हैं । चार वचनयोगों में से केवली के सत्यवचनयोग एवं असत्यामृषावचनयोग दो ही वचनयोग होते हैं, बाकी के दो नहीं ॥ सू० ८८ ॥

सवइजोगं जुंजइ, असच्चामोसवइजोगं जुंजइ) सत्यवचनयोगने प्रयुक्त करे छे, अथवा असत्यवचनयोगने प्रयुक्त करे छे, अथवा मिश्रवचनयोगने प्रयुक्त करे छे, अथवा असत्यामृषावचनयोगने प्रयुक्त करे छे ? उत्तर—(गोयमा !) हे गौतम ! (सच्चवइजोगं जुंजइ) ते केवली सत्यवचनयोगने प्रयुक्त करे छे (णो मोसवइजोगं जुंजइ णो सच्चामोसवइजोगं जुंजइ) असत्यवचनयोगने तेमज मिश्रवचनयोगने प्रयुक्त करता नथी, (असच्चामोसवइजोगंपि जुंजइ) परन्तु असत्यामृषावचनयोगने प्रयुक्त करे छे चार वचनयोगोमांथी केवलीना सत्य-वचनयोग तेमज असत्यामृषावचनयोग बे ज मात्र वचनयोग होय छे बाकीना बे नहि (सू. ८८)

वा णिसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा उल्लंघेज्ज वा पल्लंघेज्ज वा उक्खेवणं वा पक्खेवणं वा तिरियक्खेवणं वा करेज्जा, पाडिहारियं वा, पीढफलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणेज्जा ॥ सू० ८९ ॥

'तुयट्टेज्ज वा' त्वग्वर्तयति=शयन करोति वा 'उल्लघेज्ज वा' उल्लङ्घयति–गर्तादिक वा, 'पल्लघेज्ज वा' प्रोल्लङ्घयति वा, उक्खेवणं वा' उत्क्षेपणम्=ऊर्ध्वगमन वा, 'पक्खेवणं वा' प्रक्षेपण=नीचैर्गमन वा, 'तिरियक्खेवण वा' तिर्यक्क्षेपण=तिर्यग्गमन वा 'करेज्जा' करोति, 'पाडिहारिय वा पीढ–फलग–सेज्जा–सथारग पच्चप्पिणेज्जा' प्रतिहार्य वा पीठफलकशय्यासस्तारक प्रत्यर्पयति ॥ सू० ८९ ॥

'कायजोग जुजमाणे' इत्यादि ।

हे गौतम (कायजोग जुजमाणे आगच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा णिसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा उल्लघेज्ज वा पल्लघेज्ज वा) इस काययोग को प्रयुक्त करते हुए वे आते है, जाते हैं, ठहरते है, उठते है, बैठते हें, सोते हे, करवट बदलते है, उल्लघन करते हैं, प्रलघन करते हैं, (उक्खेवणं वा पक्खेवण वा तिरियक्खेवण वा करेज्जा) उत्क्षेपण करते है, प्रक्षेपण–हाथपैर को ऊपर–नीचे करते है, तिरछे गमन करते है, (पाडिहारिय वा पीढफलगसेज्जासथारग पच्चप्पिणेज्जा) काम निकल जाने के बाद प्रातिहार्यक पीठ, फलक, शय्या, एव सथारे को पीछे देते है ॥ सू० ८९ ॥

" कायजोग जुजमाणे " ઈત્યાદિ

હે ભદન્ત ! કાયયોગ પ્રયુક્ત કરતા કેવળી ભગવાન્ શુ શુ કામ કરે છે ? હે ગૌતમ ! ((कायजोग जुंजमाणे आगच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा णिसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा उल्लघेज्ज वा पल्लघेज्ज वा) એ કાયયોગને પ્રયુક્ત કરતા તેઓ આવે છે, જાય છે, રોકાય છે, ઉઠે છે, બેસે છે, સુવે છે, કરવટ બદલે છે, ઉલ્લઘન કરે છે, પ્રલઘન કરે છે (उक्खेवण वा पक्खेवण वा तिरियक्खेवण वा करेज्जा) ઉત્ક્ષેપણ કરે છે, પ્રક્ષેપણ–હાથપગ ઉંચા–નીચા કરે છે, તિરછા (આડુ–અવળુ) ગમન કરે છે, (पाडिहारिय वा पीढ–फलग–सेज्जा–सथारग पच्चप्पिणेज्जा) કામ થઈ ગયા પછી પ્રાતિહાર્યક પીઠ, ફલક,શય્યા, તેમજ સથારાને પાછા મુકી દે છે (સૂ ૮૯)

मूलम्—से णं भंते ! तहा सजोगी सिज्झइ जाव अंतं करेइ ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ सू० ९० ॥

मूलम्— से णं पुव्वामेव सण्णिस्स पंचिंदियस्स पज्ज-

टीका—गौतम पृच्छति-'से णं भंते !' इत्यादि। 'से णं भंते ! तहा सजोगी' स खलु भदन्त ! तथा सयोगी 'सिज्झइ' सिध्यति किम् 'जाव' यावत् 'सव्वदुक्खाणमंतं करेइ' सर्वदुःखानामन्तं करोति किम् ? । भगवानाह-'णो इणट्ठे समट्ठे' नाऽयमर्थः समर्थः ॥ सू० ९० ॥

टीका—'से णं पुव्वामेव' इत्यादि। 'से णं' स केवली खलु 'पुव्वामेव' पूर्वमेव= योगनिरोधावस्थाया आदावेव 'संण्णिस्स पंचिंदियस्स' संज्ञिनः पञ्चेन्द्रियस्य, अत्र पञ्चेन्द्रियस्येति विशेषणं संज्ञित्वस्वरूपप्रदर्शनार्थं, पञ्चेन्द्रियस्यैव संज्ञित्वात्, 'पज्जत्तगस्स' पर्याप्तकस्य= मनःपर्याप्त्या पर्याप्तस्येत्यर्थः, अन्यपर्याप्तस्य मनसोऽभावात्। स च मध्यमादिमनोयोगोऽपि

'से णं भंते !' इत्यादि।

(भंते !) हे भदन्त ! (से तहा सजोगी) वे केवली ऐसी सयोगी अवस्था में रहते हुए (सिज्झइ जाव अंतं करेइ) सिद्ध, बुद्ध, मुक्त एवं परिनिर्वाण हो समस्त दुःखों का अन्त करते हैं क्या ? उत्तर-हे गौतम ! (णो इणट्ठे समट्ठे) यह अर्थ समर्थित नहीं है। अर्थात् सयोगिकेवली कर्मों का अन्त नहीं करते। ॥ सू० ९० ॥

'से णं पुव्वामेव' इत्यादि।

(से णं) वे सयोगी केवली भगवान् (पुव्वामेव) पहिले (सण्णिस्स पंचिंदियस्स पज्जत्तगस्स) संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक के (जहण्णजोगस्स हेट्ठा) जघन्यमनोयोग से भी नीचे

'से णं भंते !' ઇત્યાદિ

(भंते !) હે ભદન્ત ! (से तहा सजोगी) તે કેવલી એવી સયોગી-અવસ્થામાં રહેતા (सिज्झइ जाव अंतं करेइ) સિદ્ધ, બુદ્ધ, મુક્ત, તેમજ પરિનિર્વાણ થઇ સમસ્ત દુઃખનો શું અંત કરે છે ? ઉત્તર—હે ગૌતમ ! (णो इणट्ठे समट्ठे) આ અર્થ સમર્થિત નથી, અર્થાત્ સયોગી કેવલી કર્મોનો અંત કરતા નથી (સૂ. ૯૦)

"से णं पुव्वामेव" ઇત્યાદિ

(से णं) તે સયોગી કેવલી ભગવાન્ (पुव्वामेव) પહેલા (सण्णिस्स पंचिंदियस्स पज्जत्तगस्स) સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય પર્યાપ્તકના (जहण्णजोगस्स हेट्ठा)

वा णिसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा उल्लंघेज्ज वा पल्लंघेज्ज वा उक्खेवणं वा पक्खेवणं वा तिरियक्खेवणं वा करेज्जा, पाडिहारियं वा, पीढफलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणेज्जा ॥ सू० ८९ ॥

'तुयट्टेज्ज वा' त्वग्वर्तयति=शयन करोति वा 'उल्लघेज्ज वा' उल्लङ्घयति—गर्तादिकं वा, 'पल्लंघेज्ज वा' प्रोल्लङ्घयति वा, उक्खेवण वा' उत्क्षेपणम्=ऊर्ध्वगमन वा, 'पक्खेवण वा' प्रक्षेपण=नीचैर्गमन वा, 'तिरियक्खेवण वा' तिर्यक्क्षेपणं=तिर्यग्गमन वा 'करेज्जा' करोति, 'पाडिहारिय वा पीढ–फलग–सेज्जा–सथारग पच्चप्पिणेज्जा' प्रतिहार्यं वा पीठफलकशय्यासस्तारक प्रत्यर्पयति ॥ सू० ८९ ॥

'कायजोग जुजमाणे' इत्यादि ।

हे गौतम (कायजोग जुजमाणे आगच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा णिसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा उल्लघेज्ज वा पल्लघेज्ज वा) इस काययोग को प्रयुक्त करते हुए वे आते हैं, जाते है, ठहरते है, उठते है, बैठते है, सोते है, करवट बदलते हैं, उल्लघन करते हे, प्रल्घन करते हैं, (उक्खेवणं वा पक्खेवण वा तिरियक्खेवण वा करेज्जा) उत्क्षेपण करते है, प्रक्षेपण—हाथ-पैर को ऊपर–नीचे करते हैं, तिरछे गमन करते है, (पाडिहारिय वा पीढफलगसेज्जा-सथारग पच्चप्पिणेज्जा) काम निकल जाने के बाद प्रातिहार्यक पीठ, फलक, शय्या, एव सथारे को पीछे देते है ॥ सू० ८९ ॥

"कायजोगं जुजमाणे" ઈત્યાદિ

હે ભદન્ત ! કાયયોગ પ્રયુક્ત કરતા કેવળી ભગવાન્ શુ શુ કામ કરે છે? હે ગૌતમ! ((कायजोग जुजमाणे आगच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा णिसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा उल्लघेज्ज वा पल्लघेज्ज वा) એ કાયયોગને પ્રયુક્ત કરતા તેઓ આવે છે, જાય છે, રોકાય છે, ઉઠે છે, બેસે છે, સુવે છે, કરવટ બદલે છે, ઉલ્લઘન કરે છે, પ્રલઘન કરે છે (उक्खेवण वा पक्खेवण वा तिरियक्खेवण वा करेज्जा) ઉત્ક્ષેપણુ કરે છે, પ્રક્ષેપણુ–હાથપગ ઊચા–નીચા કરે છે, તિરછા (આડુ–અવળુ) ગમન કરે છે, (पाडिहारिय वा पीढ–फलग–सेज्जा–सथारग पच्चप्पिणेज्जा) કામ થઈ ગયા પછી પ્રાતિહાર્યક પીઠ, ફલક,શય્યા, તેમજ સથારાને પાછા મુકી દે છે (સૂ ૮૯)

मूलम्—से णं भंते ! तहा सजोगी सिज्झइ जाव अंतं करेइ ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ सू० ९० ॥

मूलम्— से णं पुव्वामेव सण्णिस्स पंचिंदियस्स पज्ज-

टीका—गौतम पृच्छति–'से ण भंते'' इत्यादि। 'से ण भंते ! तहा सजोगी' स खलु भदन्त! तथा सयोगी 'सिज्झइ' सिध्यति किम् 'जाव' यावत् 'सव्वदुक्खाणमंतं करेइ' सर्वदुःखानामन्तं करोति किम्? । भगवानाह–'णो इणट्ठे समट्ठे' नाऽयमर्थः समर्थः ॥ सू० ९० ॥

टीका—'से ण पुव्वामेव' इत्यादि। 'से ण' स केवली खलु 'पुव्वामेव' पूर्वमेव= योगनिरोधावस्थाया आदावेव 'सण्णिस्स पंचिंदियस्स' संज्ञिनः पञ्चेन्द्रियस्य, अत्र पञ्चेन्द्रियस्येति विशेषणं संज्ञिस्वरूपप्रदर्शनार्थं, पञ्चेन्द्रियस्यैव संज्ञित्वात्, 'पज्जत्तगस्स' पर्याप्तकस्य= मनःपर्याप्त्या पर्याप्तस्येत्यर्थः, अन्यपर्याप्तस्य मनसोऽभावात्। स च मध्यमादिमनोयोगोऽपि

'से ण भंते !' इत्यादि।

(भंते !) हे भदंत ! (से तहा सजोगी) वे केवली ऐसी सयोगी अवस्था में रहते हुए (सिज्झइ जाव अंतं करेइ) सिद्ध, बुद्ध, मुक्त एवं परिनिर्वाण हो समस्त दुःखों का अन्त करते हैं क्या? उत्तर–हे गौतम ! (णो इणट्ठे समट्ठे) यह अर्थ समर्थित नहीं है। अर्थात् सयोगिकेवली कर्मों का अन्त नहीं करते ॥ सू० ९० ॥

'से ण पुव्वामेव' इत्यादि।

(से ण) वे सयोगी केवली भगवान् (पुव्वामेव) पहिले (सण्णिस्स पंचिंदियस्स पज्जत्तगस्स) संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक के (जहण्णजोगस्स हेट्ठा) जघन्यमनोयोग से भी नीचे

'से ण भंते !' ઈત્યાદિ

(भंते !) હે ભદન્ત ! (से तहा सजोगी) તે કેવલી એવી સયોગી–અવસ્થામાં રહેતા (सिज्झइ जाव अंतं करेइ) સિદ્ધ, બુદ્ધ, મુક્ત, તેમજ પરિનિર્વાણ થઈ સમસ્ત દુઃખનો શું અંત કરે છે? ઉત્તર—હે ગૌતમ ! (णो इणट्ठे समट्ठे) આ અર્થ સમર્થિત નથી, અર્થાત્ સયોગી કેવલી કર્મોનો અંત કરતા નથી (સૂ. ૯૦)

"से ण पुव्वामेव" ઈત્યાદિ

(से ण) તે સયોગી કેવલી ભગવાન્ (पुव्वामेव) પહેલાં (सण्णिस्स पंचिंदियस्स पज्जत्तगस्स) સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય પર્યાપ્તકના (जहण्णजोगस्स हेट्ठा)

हस्सपंचक्खरुच्चारणद्धाए असंखेज्जसमइयं अंतोमुहुत्तियं सेलेसिं पडिवज्जइ, पुव्वरइयगुणसेढीयं च णं कम्मं तीसे सेलेसिमद्धाए

अयोगत्व प्राप्नोति, 'अयोगत्तं पाउणित्ता' अयोगत्वं प्राप्य, 'ईसिंहस्सपंचक्खरुच्चारणद्धाए' ईषद्ध्रस्वपञ्चाऽक्षरोच्चारणाऽद्धायाम्—ईषत्=अल्पानि, यानि ह्रस्वानि पञ्चाक्षराणि तेषां यदुच्चारण तस्य याऽद्धा=काल, सा तथा तस्याम्, इदमुच्चारणं न द्रुत न विलम्बित किन्तु मध्यममेव गृह्यते, 'असखेज्जसमइय' असख्येयसमयिकाम, 'अतोमुहुत्तिय' आन्तर्मौहूर्तिकी 'सेलेसिं' शैलेशी—शैलानामीश शैलेशो मेरु, तस्येव या स्थिरता=साऽवस्था सा शैलेशी ताम्, अथवा—शीलेश =सर्वसंवररूपचारित्रवान्, तस्येयमवस्था योगनिरोधरूपा शैलेशी ता, शैलेश्यवस्थाया केवली वेदनीयादिकर्मचतुष्टय क्षपयति, तत्प्रकारमाह-'पुव्वरइय' इत्यादि । 'पुव्वरइयगुणसेढीयं च णं कम्म' पूर्वरचितगुणश्रेणिकं च कर्म, पूर्व=शैलेश्यवस्थाया प्राग् रचिता गुणश्रेणी यस्य तत्तथा, का नाम गुणश्रेणी? उच्यते—

णइ)अयोगि—अवस्था को प्राप्त हो जाते हैं, (पाउणित्ता ईसिं—हस्स—पचक्खर—चारणद्धाए असखेज्जसमइय अंतोमुहुत्तिय) अयोगी—अवस्था को प्राप्त हो जाने के बाद ह्रस्व पाच अक्षर के उच्चारण काल—प्रमाण समय में, अर्थात् असख्यात समय के अतर्मुहूर्त जैसे काल म (सेलेसिं पडिवज्जइ) वे शैलेशी—अवस्था को प्राप्त करते हैं, अथवा सर्व कर्मों के स्वरूप चारित्र वाले की अवस्था को—योगनिरोधरूप अवस्था को प्राप्त करते है। इस शैलेशी—अवस्था मे केवली किस प्रकार से वेदनीय आदि चार अघातिया कर्मो को क्षय करते है, इस बात को प्रगट करते हुए सूत्रकार कहते है कि (पुव्वरइयगुणसेढीय च ण कम्म तीसे सेलेसिमद्धाए असखेज्जाहिं गुणसेढीहिं अणते कम्मसे खवयते) शैलेशी—अवस्था के पहिले जिन कर्मों की गुणश्रेणी रची जाय वे गुणश्रेणिक कर्म है। गुण-

છે (पाउणित्ता ईसिंहस्सपचक्खरुच्चारणद्धाए असखेज्जसमइय अतोमुहुत्तिय) અયોગી—અવસ્થાને પ્રાપ્ત થઈ ગયા પછી હ્રસ્વ પાચ અક્ષરના ઉચ્ચારણકાલ—પ્રમાણ સમયમા, અર્થાત્ અસખ્યાત સમયના અતર્મુહૂર્ત જેવા કાલમા (सेलेसिं पडिवज्जइ) તેઓ શૈલેશી અવસ્થાને પ્રાપ્ત કરે છે, અથવા સર્વ કર્મોના સવરરૂપ ચારિત્રવાળાની અવસ્થાને—યોગનિરોધરૂપ અવસ્થાને પ્રાપ્ત કરે છે આ શૈલેશી અવસ્થામા કેવલી કેવા પ્રકારથી વેદનીય આદિ ચાર અઘાતિયા કર્મોનો ક્ષય કરે છે? એ વાતને પ્રકટ કરતા સૂત્રકાર કહે છે કે (पुव्वरइयगुणसेढीय च ण कम्म तीसे सेलेसिमद्धाए असखेज्जाहिं गुणसेढीहिं अणते कम्मसे खवयते) શૈલેશી અવસ્થાની પહેલા જે કર્મોની ગુણશ્રેણી રચી

यत् केवलिनो वेदनीयादिक चतुर्विध कर्म कालान्तरवेद्य स्थित वर्तते, तस्य शीघ्रतरक्षपणार्थं तस्यैव कर्मणो दलिक क्रमेण प्रतिसमय पूर्वपूर्वापेक्षया उत्तरोत्तरमसख्यातगुणवृद्धया गुणीकृत्य स्वल्प, बहु, बहुतर, बहुतमम्-इति श्रेणीरूपेण स्थितिखण्ड रचयति। इदमत्र स्पष्टीकरणम्-गुणश्रेणीरचनाया प्रथमसमये कर्मदलिक स्वल्प गृह्यते, द्वितीयसमये पूर्वापेक्षया असख्यातगुणित दलिक गृह्यते, तृतीयसमये ततोऽप्यसख्यातगुणित कर्मदलिक गृह्यते, एवमुत्तरोत्तरमसख्यातगुणवृद्धया कर्मदलिक रचयति। एव कर्मदलिकरचन तावद्वाच्य, यावदन्तर्मुहर्तं चरमसमयम्। तच्चान्तर्मुहूर्तमपूर्वकरणानिवृत्तिकरणकालाभ्या स्तोकाभ्यधिक वक्तव्यम। अय कर्मपुद्गलाना रचनाविशेषो "गुणश्रेणी"-त्युच्यते। 'तीसे

श्रेणी किसे कहते है' इस बात को प्रकट किया जाता है-कालान्तर में वेदन करने योग्य जो वेदनीयादिक चार कर्म अभी अवशिष्ट है उन्हे शीघ्रतर क्षपण करने के निमित्त उनके दलियो को क्रम से प्रतिसमय पूर्व पूर्व की अपेक्षा उत्तरोत्तर असख्यात गुणवृद्धि से गुणित कर स्वल्प, बहु, बहुतर एव बहुतम-इस श्रेणीरूप मे विभाजित करते हुए स्थिति का खडन करना सो गुणश्रेणी है। मतलब इसका यह है कि गुणश्रेणीरचना के प्रथम समय मे कर्मदलिक स्वल्प ग्रहण किये जाते है, द्वितीय समय मे पूर्व की अपेक्षा असख्यातगुणित दलिक ग्रहण किये जाते है, तृतीय समय मे इससे भी असख्यातगुणे कर्मदलिये ग्रहण किये जाते है। इस प्रकार उत्तरोत्तर असख्यातगुणित कर्मदलियो का वहातक ग्रहण किया जाता है कि जबतक अन्तर्मुहूर्तका अन्तिमसमय पूर्ण नहीं हो जाता। अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण के काल से यह अन्तर्मुहूर्त कुछ अधिक समझना चाहिये। इस प्रकार कर्मपुद्ग-

શ્રકાય તે ગુણશ્રેણિકકર્મ છે ગુણશ્રેણી કોને કહેવાય? એ વાત પ્રગટ કરાય છે-કાલાન્તરમા વેદન કરવા યોગ્ય જે વેદનીય આદિક ચાર કર્મ હજુ બાકી છે તેમને જલદી ખપાવવા-ક્ષપણ કરવા-નિમિત્ત તેમના દલિઓમા ધીમે-ધીમે ક્રમપૂર્વક પ્રતિસમય પૂર્વપૂર્વની અપેક્ષા ઉત્તરોત્તર અસખ્યાત ગુણવૃદ્ધિથી ગુણિત કરીને સ્વલ્પ, બહુ, બહુતર તેમજ બહુતમ આમ શ્રેણીરૂપમા વિભાજિત કરતા કરતા સ્થિતિનુ ખડન કરવુ એને ગુણશ્રેણી કહે છે એની મતલબ એ છે કે ગુણશ્રેણીરચનાના પ્રથમ સમયમા કર્મદલિક સ્વલ્પ ગ્રહણ કરવામા આવે છે, બીજા સમયમા પ્રથમની અપેક્ષા અસખ્યાતગુણિત દલિક ગ્રહણ કરવામા આવે છે ત્રીજા સમયમા તેનાથી પણ અસખ્યાતગુણા કર્મ-દલિક ગ્રહણ કરાય છે આ પ્રકારે ઉત્તરોત્તર અસખ્યાતગુણિત કર્મદલિઓને ત્યા સુધી ગ્રહણ કરવામા આવે છે કે જ્યાસુધી અન્તર્મુહૂર્તનો અતિમ સમય પૂરો થઈ ન જાય અપૂર્વકરણ અને અનિવૃત્તિકરણના કાળથી આ અન્તર્મુહૂર્ત કૈંક અધિક સમજવુ જોઈએ આ પ્રકારે કર્મપુદ્ગલોની રચનાની

हस्सपंचक्खरुच्चारणद्धाए असंखेज्जसमइयं अंतोमुहुत्तियं सेलेसिं पडिवज्जइ, पुव्वरइयगुणसेढीयं च णं कम्मं तीसे सेलेसिमद्धाए

अयोगत्वं प्राप्नोति, 'अयोगत्तं पाउणित्ता' अयोगत्वं प्राप्य, 'ईसिंहस्सपंचक्खरुच्चारणद्धाए' ईषद्ध्रस्वपञ्चाऽक्षरोच्चारणाऽद्धायाम्–ईषत्=अल्पानि यानि ह्रस्वानि पञ्चाक्षराणि तेषां यदुच्चारणं तस्य याऽद्धा=कालः सा तथा तस्याम्, इदमुच्चारणं न द्रुतं न विलम्बितं किन्तु मध्यममेव गृह्यते, 'असंखेज्जसमइयं' असंख्येयसमयिकाम्, 'अंतोमुहुत्तियं' आन्तर्मौहूर्तिकीं 'सेलेसिं' शैलेशीं–शैलानामीशः शैलेशो मेरुः, तस्येव या स्थिरता=साम्यावस्था सा शैलेशी ताम्, अथवा–शीलेशः=सर्वसंवररूपचारित्रवान्, तस्येयमवस्था योगनिरोधरूपा शैलेशी ताम्, शैलेश्यवस्थायां केवली वेदनीयादिकर्मचतुष्टयं क्षपयति, तत्प्रकारमाह 'पुव्वरइय' इत्यादि। 'पुव्वरइयगुणसेढीयं च णं कम्मं' पूर्वरचितगुणश्रेणिकं च कर्म, पूर्व=शैलेश्यवस्थायाः प्राग् रचिता गुणश्रेणी यस्य तत्तथा, का नाम गुणश्रेणी? उच्यते–

णइ) अयोगि–अवस्था को प्राप्त हो जाते हैं, (पाउणित्ता ईसिं–हस्स–पंचक्खर–च्चारणद्धाए असंखेज्जसमइयं अंतोमुहुत्तियं) अयोगी–अवस्था को प्राप्त हो जाने के बाद ह्रस्व पांच अक्षर के उच्चारण काल–प्रमाण समय में, अर्थात् असंख्यात समय के अंतर्मुहूर्त जैसे काल में (सेलेसिं पडिवज्जइ) वे शैलेशी–अवस्था को प्राप्त करते हैं, अथवा सर्व कर्मों के संवररूप चारित्र वाले की अवस्था को–योगनिरोधरूप अवस्था को प्राप्त करते हैं। इस शैलेशी–अवस्था में केवली किस प्रकार से वेदनीय आदि चार अघातिया कर्मों को क्षय करते हैं, इस बात को प्रगट करते हुए सूत्रकार कहते हैं कि (पुव्वरइयगुणसेढीयं च णं कम्मं तीसे सेलेसिमद्धाए असंखेज्जाहिं गुणसेढीहिं अणंते कम्मंसे खवयंते) शैलेशी–अवस्था के पहिले जिन कर्मों की गुणश्रेणी रची जाय वे गुणश्रेणिक कर्म हैं। गुण-

છે (पाउणित्ता ईसिंहस्सपंचक्खरुच्चारणद्धाए असंखेज्जसमइयं अंतोमुहुत्तियं) અયોગી–અવસ્થાને પ્રાપ્ત થઈ ગયા પછી હ્રસ્વ પાંચ અક્ષરના ઉચ્ચારણકાલ–પ્રમાણ સમયમાં, અર્થાત્ અસંખ્યાત સમયના અંતર્મુહૂર્ત જેવા કાલમાં (सेलेसिं पडिवज्जइ) તેઓ શૈલેશી અવસ્થાને પ્રાપ્ત કરે છે, અથવા સર્વ-કર્મોના સંવરરૂપ ચારિત્રવાળાની અવસ્થાને–યોગનિરોધરૂપ અવસ્થાને પ્રાપ્ત કરે છે આ શૈલેશી અવસ્થામાં કેવલી કેવા પ્રકારથી વેદનીય આદિ ચાર અઘાતિયા કર્મોનો ક્ષય કરે છે? એ વાતને પ્રકટ કરતા સૂત્રકાર કહે છે કે (पुव्वरइयगुणसेढीयं च णं कम्मं तीसे सेलेसिमद्धाए असंखेज्जाहिं गुणसेढीहिं अणंते कम्मंसे खवयंते) શૈલેશી અવસ્થાની પહેલાં જે કર્મોની ગુણશ્રેણી રચી

यतेयकम्माइं सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता उज्जुसेढीपडिवण्णे अफुसमाणगई उड्ढं एक्कसमएण अविग्गहेण गंता सागारोवउत्ते सिज्झइ ॥ सू० ९२ ॥

युगपत् क्षपयतीति । '**खवित्ता**' क्षपयित्वा '**ओरालियतेयकम्माइं**' औदारिकतैजसकर्माणि '**सव्वाहिं**' सर्वाभि =अशेषाभि , '**विप्पजहणाहिं**' विप्रहाणिभि –विशेषेण=प्रकर्षतो हानय =त्यागास्ताभि , अत्र व्यक्त्यपेक्षया बहुवचनम्, '**विप्पजहइ**' विप्रजहाति=सर्वथा परिशाटयति, '**विप्पजहित्ता**' विप्रहाय=परित्यज्य, '**उज्जुसेढीपडिवण्णे**' ऋजुश्रेणिप्रतिपन्न –ऋजु = अवक्रा, श्रेणि =आकाशप्रदेशपङ्क्तिस्तामाश्रित '**अफुसमाणगई**' अस्पृशद्गति –अस्पृशन्ती सिद्धयन्तरालप्रदेशान् गतिर्यस्य स तथा, '**एक्कसमएणं**' एकसमयेन, अन्तरालप्रदेशस्पर्शने हि नैकेन समयेन सिद्धि स्यात्, इष्यते तु तत्रैक एव समय , य एव चायुष्कादिकर्मणा क्षयसमय स एव निर्वाणसमय । अतोऽन्तराले समयान्तरस्यासद्भावादन्तरालप्रदेशानामस्पर्शन भवति । भावनोऽय सूक्ष्मोऽर्थ केवलिगम्य । '**अविग्गहेण**' अविग्रहेण=अवक्रेण–वक्र एव हि समयान्तर लगति प्रदेशान्तर च स्पृशति । '**उड्ढं**' ऊर्ध्वं '**गता**' गत्वा '**सागारोवउत्ते**' साकारोपयुक्त =ज्ञानोपयोगवान्, '**सिज्झइ**' सिद्धयति=सिद्धो भवति ॥ सू० ९२ ॥

णाहिं विप्पजहइ) क्षपण करने के बाद औदारिक, तैजस एव कार्मण इन शरीरोंको विशिष्टरूप से समस्त हानियों द्वारा सर्वथा छोड देते है। (**विप्पजहित्ता उज्जुसेढी-पडिवण्णे अफुसमाणगई ऊड्ढ एक्कसमएण अविग्गहेण गता सागारोवउत्ते सिज्झइ**) छोडने के बाद ऋजु–अवक्र आकाशक प्रदेशोंकी पक्तिस्वरूप श्रेणीको आश्रित करते हुए, अर्थात् श्रेणीके अनुसार सिद्धिके अन्तराल के प्रदेशोंको नहीं स्पर्शते व केवली भगवान् एक समय में विग्रहरहित गति से–सीधी गति से होकर सिद्धगति में विराजमान हो जाते हैं। यहा उनका उपयोग साकार होता है, अर्थात् ज्ञानोपयोग से वे विशिष्ट रहते हैं।

કર્યા પછી ઔદારિક, તૈજસ તેમજ કાર્મણ એ શરીરોને વિશિષ્ટરૂપથી સકળ હાનિઓ દ્વારા સર્વથા છોડી દીએ છે (विप्पजहित्ता उज्जुसेढीपडिवण्णे अफुसमाणगई उड्ढ एक्कसमएण अविग्गहेण गता सागारोवउत्ते सिज्झइ) છોડી દીધા પછી ઋજુ–અવક્ર આકાશના પ્રદેશોની પંક્તિસ્વરૂપ શ્રેણીને આશ્રિત કરતા, અર્થાત્ શ્રેણીને અનુસાર સિદ્ધિના અંતરાલપ્રદેશોને સ્પર્શ ન કરતા તે કેવલી ભગવાન એક સમયમા વિગ્રહરહિત ગતિથી–સીધી ગતિથી થઈને સિદ્ધિગતિમા વિરાજમાન થઈ જાય છે. અહીં તેમનો ઉપયોગ સાકાર હોય

असंखेज्जाहिं गुणसेढीहिं अणंते कम्मंसे खवयंते वेयणिज्जाउय-
णामगोए इच्चेते चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ, खवित्ता ओरालि-

सेलेरिमद्धाए' तस्या शैलेश्यद्धायाम् "क्षपयन्"—इति पदमध्याहृत्य योजना करणीया, 'असखेज्जाहिं गुणसेढीहिं' असख्येयाभिर्गुणश्रेणिभि, 'अणते कम्मंसे खवयते' अनन्तान् कर्मांशान् क्षपयन्, 'वेयणिज्जाउयणामगोए' वेदनीयायुर्नामगोत्राणि, 'इच्चेते चत्तारि कम्मंसे' इत्येताश्चतुर. कर्मांशान् 'जुगव खवेइ' युगपत् क्षपयति। अयमत्र समुदायार्थ —एव पूर्वं गुणश्रेणीं कृत्वा विशुद्धपरिणामवशादसख्यातसमयवत्यामान्तर्मौहूर्तिक्या शैलेश्यवस्थाया कर्म क्षपयन् केवली स्वरचिताभिरसख्यातगुणश्रेणीभि शीघ्रतरक्षपणक्रियाया साधनभूताभिरनन्तपुद्गलरूपत्वादनन्तान् कर्मांशान् क्षपयन् २ वेदनीयादिकाश्चतुर कर्मांशान्

लोंकी रचना की विशेषताका नाम गुणश्रेणी है। इस प्रकार वे केवली भगवान् प्रथम–रचित गुणश्रेणिककर्मको उस शैलेशी के काल में नष्ट करते हुए असख्यात गुणश्रेणियों द्वारा अनन्त कर्मांशोंका क्षय कर देते हैं। (वेयणिज्जा–उय–णाम–गोए इच्चेते चत्तारि कम्मसे जुगव खवेइ) वेदनीय, आयु, नाम एव गोत्र इन चार कर्मांशोंको एक साथ क्षय करते है। मतलब इसका यह है—इस प्रकार गुणश्रेणी करके विशुद्ध हुए परिणामों के वश से असख्यातसमयप्रमाण अन्तर्मुहूर्त कालकी इस शैलेशी अवस्था में वे केवली प्रभु, कर्मको क्षपित करते हुए, कर्मों की शीघ्रतर क्षपण क्रिया में साधनभूत असख्यात गुणश्रेणियों द्वारा अनन्तपुद्गलस्वरूप कर्मांशोंका क्षय करते २ वेदनीयादिक चार अघातिया कर्मांशोंका एक ही साथ क्षय कर देते हैं। (खवेत्ता उरालिय–तेय–कम्माइ सव्वाहिं विप्पजह-

વિશેષતાનુ નામ ગુણશ્રેણી છે, આવી રીતે તે કેવલી ભગવાન પ્રથમ રચેલ ગુણશ્રેણિક કર્મને તે શૈલેશીના કાળમા નષ્ટ કરતા કરતા અસખ્યાત ગુણ-શ્રેણિઓ દ્વારા અનત કર્મના અશોનો ક્ષય કરી દે છે (वेयणिज्जाउयणामगोए इच्चेते चत्तारि कम्मसे जुगव खवेइ) વેદનીય, આયુ, નામ તેમજ ગોત્ર એ ચાર કર્માશોનો એક સાથે ક્ષય કરે છે એની મતલબ એ છે કે–આ પ્રકારે ગુણશ્રેણી કરીને વિશુદ્ધ થયેલા પરિણામને વશ થઈ અસખ્યાત–સમય–પ્રમાણ અન્તર્મુહૂર્ત કાળની આ શૈલેશી અવસ્થામા તે કેવલી પ્રભુ કર્મને ક્ષપિત કરતા કરતા કર્મોની બહુજ ઉતાવળી ક્રિયામા સાધનભૂત અસખ્યાત ગુણશ્રેણીઓ દ્વારા અનતપુદ્ગલસ્વરૂપ કર્માશોનો ક્ષય કરતા કરતા વેદનીય આદિક ચાર (૪) અઘાતિયા કર્માશોનો એકસાથે જ ક્ષય કરી નાખે છે (खवेत्ता उरालिय–तेय–कम्माइं सव्वाहिं विप्पजहणाहिं) ક્ષપણ

यतेयकम्माइं सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता उज्जुसेढीपडिवण्णे अफुसमाणगई उड्ढं एक्कसमएणं अविग्गहेण गंता सागारोवउत्ते सिज्झइ ॥ सू० ९२ ॥

युगपत् क्षपयतीति । 'खवित्ता' क्षपयित्वा 'ओरालियतेयकम्माइं' औदारिकतैजसकर्माणि 'सव्वाहिं' सर्वाभि =अशेषाभि, 'विप्पजहणाहिं' विप्रहाणिभि -निशेषेण=प्रकर्षतो हानय =यागास्ताभि, अत्र व्यक्त्यपेक्षया बहुवचनम्, 'विप्पजहइ' विप्रजहाति=सर्वथा परिशाटयति, 'विप्पजहित्ता' विप्रहाय=परित्यज्य, 'उज्जुसेढीपडिवण्णे' ऋजुश्रेणिप्रतिपन्न -ऋजु = अवक्रा, श्रेणि =आकाशप्रदेशपङ्क्तिस्तामाश्रित 'अफुसमाणगई' अस्पृशद्गति -अस्पृशन्ती सिद्ध्यन्तरालप्रदेशान् गतिर्यस्य स तथा, 'एक्कसमएणं' एकसमयेन, अन्तरालप्रदेशस्पर्शने हि नैकेन समयेन सिद्धि स्यात्, इष्यते तु तत्रैक एव समय, य एव चायुष्कादिकर्मणा क्षयसमय स एव निर्वाणसमय । अतोऽन्तराले समयान्तरस्यासद्भावादन्तरालप्रदेशानामसम्स्पर्शन भवति । भावनोऽस्य सूक्ष्मोऽर्थ केवलिगम्य । 'अविग्गहेण' अविग्रहेण=अवक्रेण-वक्र एव हि समयान्तर लगति प्रदेशान्तर च स्पृशति । 'उड्ढं' ऊर्ध्वं 'गंता' गत्वा 'सागारोवउत्ते' साकारोपयुक्त =ज्ञानोपयोगवान्, 'सिज्झइ' सिद्ध्यति=सिद्धो भवति ॥ सू० ९२ ॥

णाहिं विप्पजहइ) क्षपण करने के बाद औदारिक, तैजस एव कार्मण इन शरीरोको विशिष्टरूप से समस्त हानियों द्वारा सर्वथा छोड़ देते है। (विप्पजहित्ता उज्जुसेढीपडिवण्णे अफुसमाणगई उड्ढ एक्कसमएण अविग्गहेण गता सागारोवउत्ते सिज्झइ) छोडने के बाद ऋजु-अवक्र आकाशके प्रदेशोकी पंक्तिस्वरूप श्रेणीको आश्रित करते हुए, अर्थात् श्रेणीके अनुसार सिद्धिके अन्तराल के प्रदेशोको नहीं स्पर्शते वे केवली भगवान एक समय मे विग्रहरहित गति से-सीधी गति से होकर सिद्धगति में विराजमान हो जाते है। यहा उनका उपयोग साकार होता है, अर्थात् ज्ञानोपयोग से वे विशिष्ट रहते है।

કર્યા પછી ઔદારિક, તૈજસ તેમજ કાર્મણ એ શરીરોને વિશિષ્ટરૂપથી સકળ હાનિઓ દ્વારા સર્વથા છોડી દીએ છે. (विप्पजहित्ता उज्जुसेढीपडिवण्णे अफुसमाणगई उड्ढ एक्कसमएण अविग्गहेण गता सागारोवउत्ते सिज्झइ) છોડી દીધા પછી ઋજુ-અવક્ર આકાશના પ્રદેશોની પંક્તિસ્વરૂપ શ્રેણીને આશ્રિત કરતા, અર્થાત્ શ્રેણીને અનુસાર સિદ્ધિના અંતરાલપ્રદેશોને સ્પર્શ ન કરતા તે કેવલી ભગવાન એક સમયમા વિગ્રહરહિત ગતિથી-સીધી ગતિથી થઈને સિદ્ધિગતિમા વિરાજમાન થઈ જાય છે. અહી તેમનો ઉપયોગ સાકાર હોય

मूलम्—ते णं तत्थ सिद्धा हवंति, साइया अपज्जवसिया

टीका—अत्रोत्तरार्द्धे एकोनसप्ततितमे सूत्रे यदवोचत् 'से जे इमे गामागरजाव सन्निवेसेसु मणुया हवंति सव्वकामविरया ' इत्यारभ्य 'अट्ठकम्मपयडीओ खवइत्ता उप्पिं लोयग्ग-

भावार्थ—इस उपाय से योगोंका निरोध करते समय प्रथम मनोयोगका निरोध करते है, फिर वचनयोगका और फिर बाद मे काययोगका। योगोके निरोध हो जाने से वे अयोगी—अवस्थाको प्राप्त कर ह्रस्व अकारादि के, अर्थात् अ, इ, उ, ऋ, लृ—इन पाच अक्षरों के उच्चारण करने म जितना काल लगता है उतने काल तक उस अयोगी—अवस्था मे रहते हुए शैलेशी—अवस्थाको प्राप्त करने के पश्चात् असख्यातगुणश्रेणी से अनत कर्मांशोंका क्षय कर देते है। फिर वेदनीय, आयु, नाम एव गोत्र इन चार अघातिया कर्मोको युगपत् विनष्ट कर वे भगवान्, औदारिक, तैजस एव कार्मण शरीरको क्षपित करते है। इस प्रकार कर्मों और शरीरों से सर्वथा रहित बने हुए वे प्रभु आकाशकी प्रदेशपक्ति के अनुसार १ समय प्रमाणवाली अविग्रहगति से गमन कर सिद्धिगति में जाकर विराजमान हो जाते हे। यहा वे साकार—उपयोगविशिष्ट रहा करते है ॥ सू. ९२ ॥

'ते ण तत्थ' इत्यादि।

इसी आगम के उत्तरार्धका ६९ वाँ सूत्र जो (से जे इमे गामागर जाव सन्निवे-

છે જ્ઞાનોપયોગથી તેઓ વિશિષ્ટ રહે છે

ભાવાર્થ—આ ઉપાયથી યોગોનો નિરોધ કરતી વખતે પ્રથમ મનોયોગનો તે કેવલી નિરોધ કરે છે પછી વચનયોગના અને ત્યાર પછી કાયયોગના નિરોધ થઈ ગયા પછી તેઓ અયોગી—અવસ્થા પ્રાપ્ત કરીને હ્રસ્વ અકાર આદિનુ, અર્થાત્—અ, इ, उ, ऋ, लृ—આ પાચે અક્ષરોનુ ઉચ્ચારણ કરવામા જેટલો કાળ લાગે એટલા કાલ સુધી તેઓ તે અયોગી—અવસ્થામા રહેતા શૈલેશી—અવસ્થાને પ્રાપ્ત કરીને પછી અસખ્યાત ગુણશ્રેણીથી અનત ~~કર્માંશોનો ક્ષય કરી દે છે. પછી વેદનીય, આયુ, નામ તેમજ ગોત્ર એ ચાર~~ અઘાતિયા કર્મોને યુગપત નાશ કરીને તે ભગવાન્ ઔદારિક, તૈજસ તેમજ કાર્મણ શરીરને ક્ષપિત કરે છે આ પ્રકારે કર્મો અને શરીરોથી સર્વથા રહિત બનેલા તે પ્રભુ આકાશની પ્રદેશપકિત અનુસાર ૧ સમયપ્રમાણવાળી અવિગ્રહગતિથી ગમન કરીને સિદ્ધિગતિમા જઇ વિરાજમાન થઈ જાયા છે અહીં તેઓ સાકાર—ઉપયોગ—વિશિષ્ટ રહ્યા કરે છે, (સૂ ૯૨)

'ते ण तत्थ' ઈત્યાદિ

એ જ આગમના ઉત્તરાર્ધનુ ઓગણસિત્તેરમુ સૂત્ર જે (से जे इमे गामागर जाव

असरीरा जीवघणा दंसणनाणोवउत्ता निट्ठियट्ठा निरेयणा

पइट्ठाणा हवंति ' इति, तत्र ते लोकाग्रप्रतिष्ठिता सन्तः कीदृशा भवन्तीति जिज्ञासायामाह— ' ते णं ' इत्यादि । ' ते णं ' ते=पूर्वनिर्दिष्टा मनुष्याः खलु ' तत्थ ' तत्र लोकाग्रे प्रतिष्ठानप्राप्ताः सन्तः, 'सिद्धा हवंति' सिद्धा भवन्ति । ते कीदृशा भवन्तीत्याह—'साइया' सादिकाः= आदिसहिताः, ' अपज्जवसिया ' अपर्यवसिताः=अन्तरहिताः—अविनाशिन इत्यर्थः 'असरीरा' अशरीराः=पञ्चविधशरीररहिताः, अन्ये वदन्ति—सशरीरोऽपि सिद्धो भवतीति तन्मतनिराकरणार्थ-

सेसु मणुया हवंति सव्वकामविरया) यहाँ से लेकर (अट्ठ कम्मपगडीओ खवइत्ता उप्पिं लोयग्गपइट्ठाणा हवंति) यहाँ तक है। इस सूत्र मे यह जो कहा गया है कि वे सिद्ध भगवान लोक के अग्रभाग में प्रतिष्ठित हो जाते हैं, उसी विषय मे अब इस सूत्र द्वारा यह बताया जाता है कि वे सिद्ध भगवान लोक के अग्रभाग म रहते हुए कैसे होते हैं। वह इस प्रकार है—(ते णं तत्थ सिद्धा हवंति) वे पूर्वनिर्दिष्ट मनुष्य, लोक के अग्रभाग में प्रतिष्ठित होते हुए सिद्ध कहे जाते हैं, वे (साइया अपज्जवसिया) सादि और पर्यवसानरहित होते हैं, अथात्—वहा से फिर उन्हे ससार में पीछे जन्म धारण नहीं करना पडता है, एतदर्थ उन्हें अपर्यवसित कहा है। अनादिकाल से लगे हुए कर्मों का क्षय करके वे सिद्ध हुए हैं, अत इस अपेक्षा वे सादि कहे गये हैं। (असरीरा) औदारिक आदि पाच शरीरों से वे सर्वथा रहित होते हैं। कितनेक एसा कहते है कि सशरीर भी प्राणी सिद्ध होता है, उनके इस सिद्धान्त को दूर करते हुए भगवान ने सिद्धों का (असरीरा) यह विशेषण दिया है।

सन्निवेसेसु मणुया हवंति सव्वकामविरया) અહીં થી લઈને (अट्ठ कम्मपगडीओ खवइत्ता उप्पिं लोयग्गपइट्ठाणा हवंति) અહીં સુધી છે આ સૂત્રમા જે આ કહેવામા આવ્યુ છે કે તે સિદ્ધ ભગવતો લોકના અગ્રભાગમા પ્રતિષ્ઠિત થઈ જાય છે, તે જ વિષયમા આ સૂત્ર દ્વારા એમ બતાવવામા આવે છે કે તેઓ સિદ્ધ ભગવતો લોકના અગ્રભાગમા રહેતા કેવા થાય છે તે આ પ્રકારે છે—(ते णं तत्थ सिद्धा हवंति) તેઓ પૂર્વે બતાવેલા મનુષ્ય, લોકના અગ્રભાગમા પ્રતિષ્ઠિત થઈ જતા સિદ્ધ કહેવાય છે તેઓ (साइया अपज्जवसिया) સાદિ અને અત (જન્મ—મરણ)—રહિત થાય છે ત્યાથી પાછા તેઓને સસારમા જન્મ ધારણ કરવો પડતો નથી, તે અર્થમા તેમને અપર્યવસિત કહેવામા આવે છે અનાદિકાળથી લાગેલા કર્મોનો ક્ષય કરીને તેઓ સિદ્ધ થયા છે, આથી એ અપેક્ષાએ તેમને સાદિ કહે છે (असरीरा) ઔદારિક આદિ પાચ શરીરોથી તેઓ સર્વથા રહિત થાય છે કેટલાક એમ કહે છે કે સશરીર પણ પ્રાણી સિદ્ધ હોય છે, તેઓના આ સિદ્ધાતને દૂર કરવા ભગવાને સિદ્ધોને ' असरीरा ' એ વિશે-

नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सासयमणागयद्धं काल चिट्ठंति ॥ ९३ ॥

मिद विशेषणम्, 'जीवघणा' जीवघना –जीवाश्च ते घना जीवघना –अन्तररहितत्वेन जीवप्रदेशमया, योगनिरोधकाले रन्ध्रपूरणेन त्रिभागोनावगाहनाया सद्भावादित्यर्थ, 'दंसणनाणोवउत्ता' दर्शनज्ञानोपयुक्ता– दर्शनम्=अनाकार, ज्ञानं=साकार, तयोरुपयुक्ता, 'णिट्ठियट्ठा' निष्ठितार्था =कृतकृत्या –समाप्तसर्वप्रयोजना इत्यर्थ । 'णिरेयणा' निरेजना =निश्चला –स्थिरा इत्यर्थ, 'नीरया' नीरजस =बध्यमानकर्मरहिता इत्यर्थ, यद्वा–नीरया इतिच्छाया, रयो, वेगस्त द्रहिता =निरुद्वेगा –निरौत्सुक्या इत्यर्थ । 'णिम्मला' निर्मला =पूर्वबद्धकर्म– निर्मुक्ता, 'वितिमिरा' वितिमिराः=विगताज्ञाना, 'विसुद्धा' विशुद्धा =कर्मविशुद्धप्रकर्षमुपगता,

इससे भगवान का यह अभिप्राय प्रगट होता है कि शरीरसहित जीव कभी भी मुक्त नहीं होता है। (जीवघणा) अन्तररहित होने से वे भगवान जीवप्रदेशमय रहते हैं। अ त के शरीर की अवगाहना से उनकी सिद्ध–अवस्था में अवगाहना कुछ कम रहती है। योगनिरोधकाल मे शरीर के छेदों के पूरण हो जाने से त्रिभाग–ऊन उनकी अवगाहना बतलाई गई है। (दंसणणाणोवउत्ता) दर्शन एव ज्ञान से वे उपयुक्त रहा करते हैं। अनाकार ज्ञान का नाम दर्शन एव साकार ज्ञान का नाम ज्ञान कहा गया है। (निट्ठियट्ठा) समस्त मनोरथ सिद्ध हो जाने से एव कुछ भी कार्य करने के लिये बाकी नहीं रहने से वे भगवान् कृतकृत्य कहे जाते है। तथा (निरेयणा) ये निश्चल, (नीरया) बध्यमान कर्मों से रहित, अथवा निरुद्वेग, (णिम्मला) निर्मल–पूर्वबद्धकर्मों से निर्मुक्त, (वितिमिरा) अज्ञानरूप तिमिर से अतीत,

પણ આપ્યુ છે આથી ભગવાનનો આ અભિપ્રાય પ્રગટ થાય છે કે શરીર–સહિત જીવ કદી પણ મુક્ત થતો નથી (जीवघणा) અ તરરહિત હોવાથી તે ભગવાન જીવપ્રદેશમય રહે છે અ તના શરીરની અવગાહનાથી તેમની સિદ્ધ–અવસ્થામા અવગાહના જરા ઓછી રહે છે યોગ–નિરોધ કાળમા શરીરના છેદોના પૂરણ થઈ જવાથી ત્રિભાગન્યૂન તેમની અવગાહના બતાવેલી છે (दसणणाणोवउत्ता) દર્શન તેમજ જ્ઞાનથી તેઓ ઉપયુક્ત રહ્યા કરે છે અનાકાર જ્ઞાનનુ નામ દર્શન તેમજ સાકાર જ્ઞાનનુ નામ જ્ઞાન કહેવાય છે (निट्ठियट्ठा) સમસ્ત મનોરથ સિદ્ધ થઈ જવાથી તેમજ કાઈ પણ કાર્ય કરવાનુ બાકી ન રહેવાથી તે ભગવાન કૃત–કૃત્ય કહેવાય છે તથા (निरेयणा) તઓ નિશ્ચળ, (नीरया) બધ્યમાન કર્મોથી રહિત, અથવા નિરુદ્વેગ, (णिम्मला) નિર્મળ–પૂર્વબદ્ધ કર્મોથી નિર્મુક્ત, (वितिमिरा) અજ્ઞાનરૂપ તિમિર–અ ધકારથી અતીત, (विसुद्धा) કર્મોના વિનાશથી થતી

मूलम्—से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—ते णं तत्थ सिद्धा भवंति सादीया अपज्जवसिया जाव चिट्ठंति? गोयमा! से जहा णामए बीयाणं अग्गिदड्ढाणं पुणरवि अंकुरुप्पत्ती ण भवइ,

---

'सासयमणागयद्धं कालं चिट्ठति' शाश्वतम् अनागताद्धं कालं=भविष्य कालं 'चिट्ठति' तिष्ठन्ति ॥ सू० ९३ ॥

टीका—गौतम पृच्छति—'से केणट्ठेण भंते'! इत्यादि। 'भंते'! हे भदन्त! 'से केणट्ठेण' अथ केनाऽर्थेन=केन कारणेन 'एव वुच्चइ' एवमुच्यते 'ते ण तत्थ सिद्धा भवति' ते खलु तत्र सिद्धा भवन्ति, 'सादीया' सादिकाः 'अपज्जवसिया' अपर्यवसिताः 'जाव चिट्ठति' यावत् तिष्ठन्ति?, भगवानाह—'गोयमा'! हे गौतम! 'से जहा णामए' तद् यथा नाम 'बीयाण अग्गिदड्ढाण' बीजानामग्निदग्धानां 'पुणरवि' पुनरपि 'अकुरुप्पत्ती ण भवइ' अङ्कुरोत्पत्तिर्न भवति, 'एवामेव सिद्धाण कम्मबीए

(विमुद्धा) कर्मों के विनाश से उद्भूत आत्मविशुद्धि से युक्त हो कर (सासयमणागयद्धं कालं चिट्ठंति) भविष्यत्काल में शाश्वतरूप से सिद्धावस्था से संपन्न रहा करते हैं। अर्थात्—सिद्ध भगवान् सादि—अनंत रहा करते हैं, एवं शुद्ध आत्मगुणों के पूर्ण विकास से वे सिद्ध—अवस्था में अनन्तकालतक विराजित रहते हैं ॥ सू० ९३ ॥

'से केणट्ठेणं' इत्यादि।

प्रश्न—(भंते!) हे भदन्त! (से केणट्ठेण एव वुच्चइ) 'वे सादि अपर्यवसित होते हैं' यह आप किस कारण से कहते हैं? उत्तर—(गोयमा!) हे गौतम! सुनो! (से जहा णामए बीयाण अग्गिदड्ढाण पुणरवि अंकुरुप्पत्ती ण भवइ) जिस प्रकार अग्नि

આત્મવિશુદ્ધિથી યુક્ત થઈને (सासयमणागयद्धं कालं चिट्ठंति) ભવિષ્યકાળમાં શાશ્વત-રૂપથી સિદ્ધાવસ્થાથી યુક્ત રહ્યા કરે છે અર્થાત્-સિદ્ધ ભગવાન સાદિ અનંત રહ્યા કરે છે, તેમજ શુદ્ધ આત્મગુણોના પૂર્ણ વિકાસથી તેઓ સિદ્ધ અવસ્થામાં અનંતકાળ સુધી વિરાજમાન રહે છે (સૂ ૯૩)

'से केणट्ठेण' ઈત્યાદિ

પ્રશ્ન-(भंते!) હે ભદંત! (से केणट्ठेण एवं वुच्चइ) "તેઓ સાદિ અપર્યવસિત હોય છે" એમ આપ શું કારણથી કહો છો? ઉત્તર—(गोयमा!) હે ગૌતમ! સાંભળો (से जहा णामए बीयाण अग्गिदड्ढाण पुणरवि अंकुरुप्पत्ती ण भवइ) જે પ્રકારે અગ્નિથી બળેલાં બીજાં ફરીને અંકુર ઉત્પન્ન કરવાની

एवामेव सिद्धाणं कम्मवीए दड्ढे पुणरवि जम्मुप्पत्ती न भवइ, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–ते णं तत्थ सिद्धा भवंति सादीया अपज्जवसिया जाव चिट्ठंति ॥ सू० ९४ ॥

मूलम्—जीवा णं भंते! सिज्झमाणा कयरंमि संघयणे

दड्ढे' एवमेव सिद्धाना कर्मबीजे दग्धे सति 'पुणरवि' पुनरपि 'जम्मुप्पत्ती न भवइ' जन्मोत्पत्तिर्न भवति=जन्मन प्रादुर्भावो न भवति, 'से तेणट्ठेण' तत्तेनाऽर्थेन, 'गोयमा' हे गौतम! 'एवं वुच्चइ' एवमुच्यते–'ते णं सिद्धा भवति सादीया अपज्जवसिया' ते खलु सिद्धा भवन्ति सादिका अपर्यवसिता 'जाव चिट्ठंति' यावत्तिष्ठन्ति ॥सू० ९४॥

टीका—गौतम पृच्छति–'जीवा ण भते" इत्यादि। 'भते! ' हे भदन्त! 'जीवा ण' जीवा खलु 'सिज्झमाणा' सिद्धयन्त 'कयरंमि' कतरस्मिन्=षट्सु सहननेषु कस्मिन् 'सघयणे' सहनने 'सिज्झति' सिध्यन्ति। भगवानाह–'गोयमा'

से दग्ध बीजों में पुन अकुर को उत्पन्न करनेकी शक्ति नहीं रहती है, (एवामेव सिद्धाण कम्मवीए दड्ढे पुणरवि जम्मुप्पत्ती ण भवइ) उसी तरह सिद्ध भगवान् के भी कर्म-रूपी ससारका बीज नष्ट हो जाने पर पुन जन्मकी उत्पत्ति नहीं होती है। (से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ) इसलिये हे गौतम! ऐसा कहा है कि (ते ण सिद्धा भवति सादीया अपज्जवसिया) वे सिद्ध सादि अपर्यवसित होते हैं॥ सू ९४ ॥

'जीवा ण भते!' इत्यादि।

प्रश्न—(भते!) हे भदत! (जीवा ण सिज्झमाणा) जीव सिद्ध होते हुए (कयरमि सघयणे सिज्झति) छह सहननों में से कौन से सहनन में सिद्ध होते हैं?

શક્તિ રહેલી નથી, (एवामेव सिद्धाण कम्मवीए दड्ढे पुणरवि जम्मुप्पत्ती ण भवइ) તેવીજ રીતે સિદ્ધ ભગવાનને પણ કર્મરૂપી સસારના બીજ નષ્ટ થઈ જવાથી ફરીને જન્મની ઉત્પત્તિ થતી નથી. (से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ) એટલા માટે હે ગૌતમ! એમ કહ્યુ છે કે (ते ण सिद्धा भवति सादिया अपज्जवसिया) તે સિદ્ધો સાદિ–અપર્યવસિત હોય છે (સૂ ૯૪)

'जीवा ण भते! सिज्झमाणा' ઇત્યાદિ

પ્રશ્ન–(भते!) હે ભદન્ત! (जीवा ण सिज्झमाणा) જીવ સિદ્ધ થઈ (कयरमि सघयणे सिज्झति?) છ સંહનનોમાંથી કયા સહનનમાં સિદ્ધ

सिज्झंति? गोयमा! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति ॥ सू० ९५ ॥

मूलम्—जीवा णं भंते! सिज्झमाणा कयरंमि संठाणे सिज्झंति? गोयमा! छण्हं संठाणाणं अण्णयरे संठाणे सिज्झंति ॥ ९६ ॥

हे गौतम! 'वइरोसभणारायसंघयणे' वज्रर्षभनाराचसहनने 'सिज्झति' सिद्ध्यन्ति ॥ सू० ९५ ॥

टीका—गौतम पृच्छति- 'जीवा ण भंते!' इत्यादि। 'भंते!' हे भदन्त = हे भगवन्! "जीवा णं सिज्झमाणा कयरम्मि संठाणे सिज्झति?" जीवा खलु सिध्यन्त कतरस्मिन् संस्थाने सिध्यन्ति? भगवानाह—'गोयमा' हे गौतम! 'छण्ह संठाणाण अण्णयरे संठाणे सिज्झति' षण्णा संस्थानानामन्यतरस्मिन् कस्मिंश्चिदेकस्मिन् संस्थाने सिध्यन्ति ॥ सू० ९६ ॥

उत्तर—(गोयमा!) हे गौतम! (वइरोसभणारायसघयणे सिज्झति) वज्रऋषभनाराच-संहनन से वे सिद्ध होते है। वज्रऋषभनाराचसहननवाला जीव ही मुक्ति को पाता है ॥ सू० ९५ ॥

'जीवा ण भते!' इत्यादि।

प्रश्न—(भंते!) हे भदत! (जीवा ण सिज्झमाणा) जो जीव सिद्ध होते है वे (कयरंसि संठाणे सिज्झति) कौन से संस्थान से सिद्ध होते है? उत्तर—(गोयमा!) हे गौतम! (छण्ह संठाणाण अण्णयरे सठाणे सिज्झति) छह सस्थानों मे से किसी भी एक सस्थान से जीव सिद्धिगतिका लाभकर सकते है ॥ सू ९६ ॥

થાય છે? ઉત્તર—(गोयमा!) હે ગૌતમ! (वइरोसभणारायसघयणे सिज्झति) વજ્રઋષભનારાચસંહનનથી તેઓ સિદ્ધ થાય છે વજ્રઋષભનારાચ-સંહનનવાળા જીવજ મુક્તિને મેળવે છે (સૂ. ૯૫)

'जीवा ण भते!' ઈત્યાદિ

પ્રશ્ન—(भते!) હે ભદન્ત! (जीवा ण सिज्झमाणा) જે જીવો સિદ્ધ થાય છે તેઓ (कयरंमि सठाणे सिज्झति?) કયા સંસ્થાનથી સિદ્ધ થાય છે? ઉત્તર—(गोयमा!, छण्ह सठाणाण अण्णयरे सठाणे, सिज्झति) હે ગૌતમ! છ સંસ્થાનોમાંથી કોઈ પણ એક સંસ્થાનથી જીવ સિદ્ધિગતિનો લાભ કરી શકે છે (સૂ ૯૬)

मूलम्—जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि उच्चत्ते सिज्झंति ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीए, उक्कोसेणं पंचधणुसइए सिज्झंति ॥सू० ९७॥

टीका–गौतम पृच्छति-'जीवा णं भंते !' इत्यादि । 'भंते !' हे भदन्त ! 'जीवा णं सिज्झमाणा कयरम्मि उच्चत्ते सिज्झंति ?' जीवाः खलु सिध्यन्तः कतरस्मिन्=कियति उच्चत्वेऽवगाहनेन सिध्यन्ति ? भगवानाह–'गोयमा !' हे गौतम ! 'जहण्णेणं' जघन्येन 'सत्तरयणीए' सप्तरत्निके=सप्तहस्तपरिमिते 'उक्कोसेणं' उत्कर्षेण 'पंचधणुसइए' पञ्चधनुःशतिके=पञ्चशतधनुःपरिमिते उच्चत्वे, 'सिज्झंति' सिध्यन्ति । चतुर्हस्तपरिमाणविशेषो धनुरित्युच्यते । इदं जघन्यं तीर्थंकरापेक्षया कथितम् । अतो द्विहस्तप्रमाणेन कूर्मापुत्रेण न विरोधः । ॥ सू० ९७ ॥

'जीवा णं भंते !' इत्यादि ।

प्रश्न—(जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि उच्चत्ते सिज्झंति ?) हे भदंत ! जो जीव सिद्ध होते है वे कितनी अवगाहना से सिद्ध होते हैं ? उत्तर–(गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीए उक्कोसेणं पंचधणुसइए सिज्झंति) हे गौतम ! कम से कम ७ हाथ प्रमाणवाली अवगाहना से और उत्कृष्ट से ५०० धनुषकी अवगाहना से सिद्ध होते है। ४ हाथका एक धनुष होता है। जघन्य कथन तीर्थंकर की अपेक्षा से जानना चाहिये। अतः दो हाथकी अवगाहना वाले कूर्मापुत्र से इसमे कोई विरोध नही आता है ॥सू. ९७॥

'जीवा णं भंते !' ईत्यादि

प्रश्न—(जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि उच्चत्ते सिज्झंति ?) हे ભદંત ! જે જીવ સિદ્ધ થાય છે તે કેટલી અવગાહનાથી સિદ્ધ થાય છે ? ઉત્તર—(गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीए उक्कोसेणं पंचधणुसइए सिज्झंति) હે ગૌતમ ! ઓછામાં ઓછી ૭ હાથ-પ્રમાણવાળી અવગાહનાથી અને ઉત્કૃષ્ટથી (વધારેમાં વધારે) ૫૦૦ ધનુષની અવગાહનાથી સિદ્ધ થાય છે ૪ હાથનું એક ધનુષ થાય છે જઘન્ય કથન તીર્થંકરની અપેક્ષાએ જાણવું જોઈએ આથી બે હાથની અવગાહનાવાળા કૂર્માપુત્રથી આમાં કોઈ વિરોધ આવતો નથી. (સૂ. ૯૭)

मूलम्—जीवा ण भंते! सिज्झमाणा कयरम्मि आउए सिज्झंति? गोयमा! जहण्णेणं साइरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेणं पुव्वकोडियाउए सिज्झंति ॥ सू० ९८ ॥

टीका—गौतम पृच्छति-'जीवा णं भंते!' इत्यादि। 'भंते!' हे भदन्त! 'जीवा ण सिज्झमाणा कयरम्मि आउए सिज्झंति?' जीवा खलु सिध्यन्त कतरस्मिन् आयुषि सिध्यन्ति? भगवानाह-'गोयमा!' हे गौतम! 'जहण्णेण साइरेगट्ठवासाउए' जघन्येन सातिरेकाऽष्टवर्षायुषि, 'उक्कोसेण' उत्कर्षेण 'पुव्वकोडियाउए' पूर्वकोट्यायुषि 'सिज्झति' सिध्यन्ति। पूर्व इति चतुरशीतिलक्षाणा चतुरशीतिलक्षैर्गुणने कृते या सख्योपलभ्यते तावत्सख्यकवर्षपरिमित काल उच्यते॥ सू० ९८ ॥

'जीवा ण भंते' इत्यादि।

प्रश्न—(जीवा ण भंते! सिज्झमाणा कयरम्मि आउए सिज्झति?) हे भदन्त! जो जीव सिद्ध होते हैं वे कितनी आयुवाले सिद्ध होते हैं? अर्थात् कितनी आयु-तक के जीव सिद्धिगतिका लाभ कर सकते हैं? उत्तर—(गोयमा! जहण्णेणं साइरेगट्ठवा-साउए उक्कोसेण पुव्वकोडियाउए सिज्झति) कम से कम आठ वर्ष से कुछ अधिक आयु वाले जीव सिद्ध हो सकते हैं और ज्यादा से ज्यादा एक पूर्वकोटि आयुवाले जीव सिद्ध हो सकते हैं। ८४००००० चौरासी लाख वर्षका पूर्वाङ्ग होता है और ८४००००० चौरासी लाख पूर्वाङ्गका एक पूर्व होता है॥ सू ९८॥

'जीवा ण भंते!' ઇત્યાદિ.

પ્રશ્ન—(जीवा ण भंते! सिज्झमाणा कयरम्मि आउए सिज्झति?) હે ભદન્ત! જે જીવ સિદ્ધ થાય છે તે કેટલી આયુષ્યવાળા સિદ્ધ થાય છે? અર્થાત્ કેટલી આયુષ્ય સુધીના જીવ સિદ્ધિગતિનો લાભ કરી શકે છે? ઉત્તર—(गोयमा! जहण्णेण साइरेगट्ठवासाउए उक्कोसेण पुव्वकोडियाउए सिज्झति) ઓછામા ઓછા ૮ વરસથી થોડી વધારે આયુ (ઉમર) વાળા જીવ સિદ્ધ થઈ શકે છે, અને વધારેમા વધારે ૧ પૂર્વકોટી આયુ-ષ્યવાળા જીવ સિદ્ધ થઈ શકે છે ૮૪૦૦૦૦૦ ચોર્યાસી લાખ વર્ષનુ એક પૂર્વાંગ થાય છે, અને ૮૪૦૦૦૦૦ ચોર્યાસી લાખ પૂર્વાંગનુ એક પૂર્વ થાય છે (સૂ. ૯૮)

मूलम्—जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि उच्चत्ते सिज्झंति ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीए, उक्कोसेणं पंचधणुसइए सिज्झंति ॥सू० ९७॥

टीका—गौतम पृच्छति-'जीवा णं भंते !' इत्यादि। 'भंते !' हे भदन्त ! 'जीवा णं सिज्झमाणा कयरम्मि उच्चत्ते सिज्झंति ?' जीवा खलु सिध्यन्तः कतरस्मिन्=कियति उच्चत्वेऽवगाहनेन सिध्यन्ति ? भगवानाह—'गोयमा !' हे गौतम ! 'जहण्णेणं' जघन्येन 'सत्तरयणीए' सप्तरत्निके=सप्तहस्तपरिमिते 'उक्कोसेणं' उत्कर्षेण 'पंचधणुसइए' पञ्चधनुःशतिके=पञ्चशतधनुःपरिमिते उच्चत्वे, 'सिज्झंति' सिध्यन्ति। चतुर्हस्तपरिमाणविशेषो धनुरित्युच्यते। इद जघन्य तीर्थंकरापेक्षया कथितम्। अतो द्विहस्तप्रमाणेन कूर्मापुत्रेण न विरोधः। ॥ सू० ९७ ॥

'जीवा णं भंते !' इत्यादि।

प्रश्न—(जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि उच्चत्ते सिज्झंति ?) हे भदन्त ! जो जीव सिद्ध होते हैं वे कितनी अवगाहना से सिद्ध होते हैं ? उत्तर—(गोयमा ! जहण्णेण सत्तरयणीए उक्कोसेण पंचधणुसइए सिज्झंति) हे गौतम ! कम से कम ७ हाथ प्रमाणवाली अवगाहना से और उत्कृष्ट से ५०० धनुषकी अवगाहना से सिद्ध होते हैं। ४ हाथका एक धनुष होता है। जघन्य कथन तीर्थंकर की अपेक्षा से जानना चाहिये। अतः दो हाथकी अवगाहना वाले कूर्मापुत्र से इसमें कोई विरोध नहीं आता है ॥सू. ९७॥

'जीवा णं भंते !' ईत्यादि

प्रश्न—(जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि उच्चत्ते सिज्झंति ?) हे भदंत ! જે જીવ સિદ્ધ થાય છે તે કેટલી અવગાહનાથી સિદ્ધ થાય છે ? ઉત્તર—(गोयमा ! जहण्णेण सत्तरयणीए उक्कोसेण पंचधणुसइए सिज्झंति) હે ગૌતમ ! ઓછામા ઓછી ૭ હાથ-પ્રમાણવાળી અવગાહનાથી અને ઉત્કૃષ્ટથી (વધારેમા વધારે) ૫૦૦ ધનુષની અવગાહનાથી સિદ્ધ થાય છે ૪ હાથનુ એક ધનુષ થાય છે જઘન્ય કથન તીર્થંકરની અપેક્ષાએ જાણવુ જોઈએ આથી બે હાથની અવગાહનાવાળા કૂર્માપુત્રથી આમા કોઈ વિરોધ આવતો નથી. (સૂ. ૯૭)

भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियग्गहगणणक्खत्तताराभवणा-ओ बहूइं जोयणाइं, बहूइं जोयणसयाइं, बहूइं जोयणसहस्साइं, बहूइं जोयणसयसहस्साइं, बहूओ जोयणकोडीओ, बहूओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढतरं उप्पइत्ता सोहम्मी-साण-सणंकुमार-

अस्या रत्नप्रभाया पृथिव्या 'बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ' बहुसमरमणीयाद् भूमिभागात् 'उड्ढं' ऊर्ध्वं 'चंदिम-सूरिय-ग्गहगण-णक्खत्त-ताराभवणाओ' चन्द्र-सूर्य-ग्रहगण-नक्षत्र-तारामवनात् 'बहूइं जोयणाइं' बहूनि योजनानि, 'बहूइं जोयणसयाइं' बहूनि योजनशतानि, 'बहूइं जोयणसहस्साइं' बहूनि योजनसहस्राणि, 'बहूइं जोयणसय-सहस्साइं' बहूनि योजनशतसहस्राणि, 'बहूओ जोयणकोडीओ' बह्व्यो योजनकोट्य 'बहूओ जोयणकोडीकोडीओ' बह्व्यो योजनकोटिकोट्य 'उड्ढतर उप्पइत्ता' ऊर्ध्वतरमुत्पत्य 'सोहम्मी-साण-सणकुमार-माहिंद-बंभ-लतग-महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण-अच्चुए' सौधर्मे-शान-सनत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्म-लान्तक-महाशुक्र-

के (बहुसमरणिज्जाओ भूमिभागाओ) बहुसमरमणीय भूमिभाग से (उड्ढ) ऊँचे-ऊपर (चंदिम-सूरिय-ग्गहगण-णक्खत्त-ताराभवणाओ) चन्द्रमा, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र एव ताराओं के भवनों से (बहूइ जोयणाइ बहूइं जोयणसयाइ बहूइ जोयणसहस्साइ बहूइं जोयणसयसहस्साइ बहूओ जोयणकोडीओ बहूओ जोयणकोडीकोडीओ) बहुत योजन, बहुत सैकडों योजन, बहुत हजारों योजन, बहुत लाखों योजन, बहुत करोडों योजन एव अनेक कोटाकोटी योजन (उड्ढतरं उप्पइत्ता) ऊपर जाने पर (सोहम्मी-साण-सणकुमार-माहिंद-बंभ-लतग-महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण अच्चुए तिण्णि य अट्ठारे गेविज्ज-

रयणप्पहाए पुढवीए) આ રત્નપ્રભા પૃથિવીના (बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ) બહુસમરમણીય ભૂમિભાગથી (उड्ढं) ઉંચે-ઉપર (चंदिमसूरियगह-गणणक्खत्तताराभवणाओ) ચન્દ્રમા, સૂર્ય, ગ્રહ, નક્ષત્ર તેમજ તારાઓના ભવનોથી (बहूइ जोयणसयाइ बहूइ जोयणसहस्साइ बहूइ जोयणसयसहस्साइ बहूओ जोयणकोडीओ बहूओ जोयणकोडीकोडीओ) ઘણા લાખો યોજન, ઘણા સેંકડો યોજન, હજારો યોજન, ઘણા લાખો યોજન, ઘણા કરોડો યોજન તેમજ અનેક કોટાકોટી યોજન (उड्ढतर उप्पइत्ता) ઉપર જતાં (सोहम्मी-साण-सणकुमार-माहिंद-बंभ-लंतग-महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण-अच्चुए

मूलम्—से कहिं खाइ णं भंते ! सिद्धा परिवसंति ?।
गोयमा ! इमीसे रयणप्पहाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ

भदन्त ! 'ईसीपब्भाराए' ईपत्प्राग्भाराया —ईपत्=अल्प प्राग्भारो=महत्त्व यस्या सा तथा तस्या —सिद्धशिलाया 'पुढवीए' पृथिव्या 'अहे' अध 'सिद्धा परिवसंति ?' सिद्धा परिवसन्ति किम् ?, भगवानाह—'णो इणट्ठे समट्ठे' नाऽयमर्थ समर्थ ॥ सू० १०१ ॥

टीका—'से कहिं' इत्यादि। गौतम पृच्छति—'से कहिं खाइ ण भते ! सिद्धा परिवसति ?' अथ कस्मिन् पुन खलु भदन्त ! सिद्धा परिवसन्ति ? 'खाइं' इतिदेशीय शब्द पुनरर्थवाचक । भगवानाह—'गोयमा !' हे गौतम ! 'इमीसे रयणप्पहाए पुढवीए'

'अत्थि ण भते !' इत्यादि।

प्रश्न—(भते !) हे भदत ! (अत्थि ण ईसीपब्भाराए पुढवीए अहे सिद्धा परिवसति ?) क्या सिद्ध भगवान ईपत्प्राग्भारा—सिद्धशिला के नीचे रहते हैं ? उत्तर—हे गौतम ! (णो इणट्ठे समट्ठे) यह अर्थ समर्थ नहीं है ॥ सू० १०१ ॥

'से कहिं खाइ णं' इत्यादि।

गौतम ने पुन प्रभु से पूछा—(भंते !) हे भदत ! (से कहिं खाइ[1] णं सिद्धा परिवसति) सिद्ध लोग इन पूर्वोक्त स्थानों में नहीं रहते तो फिर वे कहाँ रहते हे ? तब प्रभु ने कहा—(गोयमा !) हे गौतम ! (इमीसे रयणप्पहाए पुढवीए) इस रत्नप्रभापृथिवी

१—'खाइ' यह देशीय शब्द है, यह 'पुन' शब्द के अर्थ का द्योतक है। 'ण' शब्द वाक्यालकार में प्रयुक्त हुआ है।

'अत्थि ण भते !' ઇત્યાદિ

પ્રશ્ન—(भते !) હે ભદંત ! (अत्थि ण ईसीपब्भाराए पुढवीए अहे सिद्धा परिवसति) શુ સિદ્ધ ભગવાન્ ઇષત્પ્રાગ્ભારા–સિદ્ધશિલાની નીચે રહે છે ? ઉત્તર—હે ગૌતમ ! (णो इणट्ठे समट्ठे) આ અર્થ સમર્થ નથી (સૂ० ૧૦૧)

'से कहिं खाइ ण' ઇત્યાદિ

ગૌતમે ફરીને પ્રભુને પૂછ્યુ—(भते !) હે ભદંત ! (से कहिं खाइ[1] ण सिद्धा परिवसति) સિદ્ધ લોક આ પૂર્વોક્ત સ્થાનોમા નથી રહેતા તો પછી તેઓ કયા રહે છે ? ત્યારે પ્રભુએ કહ્યુ—(गोयमा !) હે ગૌતમ ! (इमीसे

૧—'खाइ' એ શબ્દ દેશી શબ્દ છે, આ શબ્દ 'पुन' શબ્દના અર્થનો સૂચક છે 'ण' શબ્દ વાકયાલકારમા છે

यसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिरएणं ॥ सू० १०२ ॥

मूलम्---ईसीपब्भाराए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभाए

जोयणाइं' द्वादश योजनानि 'अबाहाए' अबाधया=अन्तरेण-दूरेण ततोऽप्युपरीत्यर्थः, 'एत्थ णं' अत्र खलु 'ईसीपब्भारा णाम' ईषत्प्राग्भारा=सिद्धशिला नाम 'पुढवी पण्णत्ता' पृथिवी प्रज्ञप्ता, 'पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं' पञ्चचत्वारिंशत् योजनशतसहस्राणि आयामविष्कम्भेण--आयामेन विष्कम्भेण च, 'एगा जोयणकोडी' एका योजनकोटि 'बायालीसं च' द्वाचत्वारिंशच्च 'सयसहस्साइं' शतसहस्राणि 'तीसं च सहस्साइं' त्रिंशच्च सहस्राणि, 'दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसए' द्वे चैकोनपञ्चाशे योजनशते, 'किंचि विसेसाहिए' किञ्चिद्विशेषाधिके 'परिरयेण' परिरयेण=परिधिना ॥ सू० १०२ ॥

टीका---'ईसीपब्भाराए' इत्यादि। 'ईसीपब्भाराए णं पुढवीए' ईषत्प्राग्भारायाः खलु पृथिव्याः 'बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं'

भाग से (दुवालस जोयणाइं अबाहाए) बारह योजन दूर जाने पर, अर्थात् इन पांच अनुत्तर विमानोंके शिखरों के अग्रभाग से १२ योजन ऊपर (एत्थ णं ईसीपब्भारा णाम पुढवी पण्णत्ता) ईषत्प्राग्भारा पृथिवी अर्थात् सिद्धशिला है। (पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसए किंचि विसेसाहिए पडिरएणं) यह पैंतालीस लाख योजनकी लंबी-चौडी और एक करोड बयालीस लाख, तीन हजार, दो सौ उन्चास योजन से कुछ अधिक परिधिवाली है ॥ सू० १०२ ॥

અર્થાત એ પાંચ અનુત્તરવિમાનોના અગ્રભાગથી ૧૨ યોજન ઉપર (एत्थ णं ईसीपब्भारा णाम पुढवी पण्णत्ता) ઈષત્પ્રાગ્ભારા પૃથિવી-અર્થાત્ સિદ્ધશિલા છે (पणयालीसं च जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं, तीसं च सहस्साइं, दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसए किंचि विसेसाहिए पडिरएणं) આ પીસ્તાલીસ લાખ યોજનની લાંબી-પહોળી અને એક કરોડ બેતાલીસ લાખ ત્રીસ હજાર બસો ઓગણપચાસ યોજનથી જરા વધારે પરિધિવાળી છે (સૂ૦ ૧૦૨)

माहिंद–बंभ–लंतग-महासुक्क-सहस्सार–आणय–पाणय–आरण–अच्चुए तिण्णि य अट्ठारे गेविज्जविमाणावाससए वीईवइत्ता विजय–वेजयंत–जयंत–अपराजिय–सव्वट्टसिद्धस्स य महाविमाणस्स सव्वउवरिल्लाओ थूभियग्गाओ दुवालसजोयणाइं अबाहाए एत्थ णं ईसीपब्भारा णाम पुढवी पण्णत्ता, पणयालीसं जो-

सहस्रार-ऽऽनत-प्राणताऽऽ-रणाऽच्युतानि, 'तिण्णि य अट्ठारे गेविज्जविमाणावाससए' त्रीणि च अष्टादश ग्रैवेयविमानावासशतानि–ग्रैवेयकविमानावासानाम् अष्टादशाधिकशतत्रय 'वीईवइत्ता' व्यतिव्रज्य=व्यतीत्य–उल्लङ्घ्य, तत्र– प्रथमत्रिकस्य एकादशाधिकशत (१११), द्वितीय–त्रिकस्य सप्तोत्तरशत (१०७), तृतीयत्रिकस्य शत (१००) ग्रैवेयकविमानावासान् व्यतिक्रम्येत्यर्थः । 'विजय–वेजयत–जयत–अपराजिय–सव्वट्ठसिद्धस्स य महाविमाणस्स' विजय–वैजयन्त–जयन्ताऽ–पराजित–सर्वार्थसिद्धस्य च महाविमानस्य 'सव्व–उवरिल्लाओ' सर्वोपरितनात्, 'थूभियग्गाओ' स्तूपिकाग्रात=शिखराग्रभागात् 'दुवालस

विमाणावाससए) सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, लान्तक, महाशुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण, अच्युत ये १२ देवलोक, एव प्रथमत्रिक के १११, दूसरे त्रिकके १०७, एव तीसरे त्रिकके १०० इस प्रकार तीनसौ अठारह ग्रैवेयक विमानों को (वीईवइत्ता) पार करने के बाद जो (विजय-वेजयंत–जयंत–अपराजिय-सव्वट्ठसिद्धस्स य महाविमाणस्स सव्वउवरिल्लाओ थूभियग्गाओ) विजय, वैजयन्त, जयत, अपराजित एव सर्वार्थसिद्ध ये पाच अनुत्तर विमान आते है, इन महाविमानों के शिखर के अग्र-

तिण्णि य अट्ठारे गेविज्जविमाणावाससए) સૌધર્મ, ઈશાન, સનત્કુમાર, માહેન્દ્ર, બ્રહ્મ, લાંતક, મહાશુક્ર, સહસ્રાર, આનત, પ્રાણત, આરણ, અચ્યુત આ ૧૨ દેવલોક, તેમજ પ્રથમ ત્રિકના ૧૧૧, બીજા ત્રિકના ૧૦૭, તેમજ ત્રીજા ત્રિકના ૧૦૦, એ રીતે ત્રણસો અઢાર (૩૧૮) ગ્રૈવેયક વિમાનોને (वीईवइत्ता) પાર કર્યા પછી જે (विजय–वेजयत–जयत–अपराजिय–सव्वट्ठसिद्धस्स य महाविमाणस्स सव्वउवरिल्लाओ थूभियग्गाओ) વિજય, વૈજયન્ત, જયંત, અપરાજિત, તેમજ સર્વાર્થસિદ્ધ એ પાંચ અનુત્તર વિમાન આવે છે, એ મહાવિમાનના શિખરના અગ્રભાગથી (दुवालसजोयणाइं अबाहाए) ૧૨ યોજન દૂર જતાં

य...साइं आयामविक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बाया-
ली...यसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य अउणापण्णे
जोयणे...ए किंचिविसेसाहिए परिरएणं ॥ सू० १०२ ॥

मूलम्—ईसीपब्भाराए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभाए

जोयणाइ' द्वादश योजनानि 'अवाहाए' अबाधया=अन्तरेण-दूरेण ततोऽप्युपरीत्यर्थ, 'एत्थ णं' अत्र खलु 'ईसीपब्भारा णाम' ईषत्प्राग्भारा=सिद्धशिला नाम 'पुढवी पण्णत्ता' पृथिवी प्रज्ञप्ता, 'पणयालीस जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेण' पञ्चचत्वारिंशत् योजनशतसहस्राणि आयामविष्कम्भेण-आयामेन विष्कम्भेण च, 'एगा जोयणकोडी' एका योजनकोटि 'बायालीस च' द्वाचत्वारिंशच्च 'सयसहस्साइ' शतसहस्राणि 'तीस च सहस्साइ' त्रिंशच्च सहस्राणि, 'दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसए' द्वे चैकोनपञ्चाशे योजनशते, 'किंचि विसेसाहिए' किञ्चिद्विशेषाधिके 'परिरयेण' परिरयेण=परिधिना ॥ सू० १०२ ॥

टीका—'ईसीपब्भाराए' इत्यादि। 'ईसीपब्भाराए णं पुढवीए' ईषत्प्राग्भारायाः खलु पृथिव्या 'बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठ जोयणाइ' बाहल्लेण'

भाग से (दुवालस जोयणाइ अबाहाए) बारह योजन दूर जाने पर, अर्थात् इन पांच अनुत्तर विमानोंकि शिखरों के अग्रभाग से १२ योजन ऊपर (एत्थ ण ईसीपब्भारा णाम पुढवी पण्णत्ता) ईषत्प्राग्भारा पृथिवी अर्थात् सिद्धशिला है। (पणयालीसं जोयणसयसहस्साइ आयामविक्खंभेण, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइ तीस च सहस्साइ दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसए किंचि विसेसाहिए पडिरएण) यह पैंतालीस लाख योजनकी लम्बी-चौडी और एक करोड बयालीस लाख, तीन हजार, दो सौ उचास योजन से कुछ अधिक परिधिवाली है ॥ सू १०२ ॥

અર્થાત એ પાંચ અનુત્તરવિમાનોના અગ્રભાગથી ૧૨ યોજન ઉપર (एत्थ ण ईसीपब्भारा णाम पुढवी पण्णत्ता) ઈષત્પ્રાગ્ભારા પૃથિવી-અર્થાત્ સિદ્ધશિલા છે (पणयालीस च जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेण, एगा जोयणकोडी बायालीस च सयसहस्साइ, तीस च सहस्साइ, दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसए किंचि विसेसाहिए पडिरएण) આ પીસ્તાલીસ લાખ યોજનની લાંબી-પહોળી અને એક કરોડ બેતાલીસ લાખ ત્રીસ હજાર બસો ઓગણપચાસ યોજનથી જરા વધારે પરિધિવાળી છે (સૂ૦ ૧૦૨)

अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठ जोयणाइं वाहल्लेणं, तयाणतरं च णं मायाए२ परिहायमाणी २ सव्वेसु चरिमपेरंतेसु मच्छियपत्ताओ तणुयतरा अंगुलस्स असंखेज्जइभागं वाहल्लेणं पण्णत्ता ॥ सू० १०३ ॥

बहुमध्यदेशभागेऽष्टयोजनिकं क्षेत्रम् अष्ट योजनानि बाहल्येन, **'तयाणतर च ण'** तदनन्तरञ्च खलु **'मायाए'** २ मात्रया २ **'परिहायमाणी'** २ परिहीयमाना २ **'सव्वेसु चरिमपेरंतेसु'** सर्वेषु चरमप्रान्तेषु **'मच्छियपत्ताओ तणुयतरा'** मक्षिकापक्षात्तनुकतरा **'अंगुलस्स असंखेज्जइभाग'** अङ्गुलस्याऽसंख्येयभाग **'वाहल्लेणं'** बाहल्येन **'पण्णत्ता'** प्रज्ञप्ता ॥ सू० १०३ ॥

'इसीपब्भाराए ण पुढवीए' इत्यादि।

इस **(इसीपब्भाराए ण पुढवीए)** ईषत्प्राग्भारा पृथिवीका अर्थात् सिद्धशिलाका **(बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिए खेत्ते)** जो बहुमध्यदेशभागस्थित आठ योजनका क्षेत्र है, उसका **(अट्ठजोयणाइ वाहल्लेण)** आठ योजन बाहल्य है, अर्थात् सिद्धशिला बीच मे आठ योजन जाडी है। **(तयाणतर च ण मायाए २ परिहायमाणी २)** उस मध्यभाग से क्रमश कम होती हुई यह **(सव्वेसु चरिमपेरंतेसु)** सभी चरम प्रदेशों मे **(मच्छियपत्ताओ तणुयतरा)** मक्खी के पाख से भी अधिक पतली है, **(अगुलस्स असखेज्जइभाग वाहल्लेण पण्णत्ता)** अत यह बारीकी मे अगुल के असख्यातवें भाग जाननी चाहिये ॥ सू. १०३ ॥

'ईसीपब्भाराए ण पुढवीए' ઈત્યાદિ

આ (ईसीपब्भाराए ण पुढवीए) ઈષત્પ્રાગ્ભારા પૃથિવીના, અર્થાત્ સિદ્ધશિલાના (बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिए खेत्ते) બહુ-મધ્યદેશ-ભાગમા રહેલુ જે આઠ યોજન પ્રમાણુવાળુ ક્ષેત્ર છે, તેના (अट्ठजोयणाइ वाहल्लेण) આઠ યોજન બાહલ્ય છે, અર્થાત્ સિદ્ધશિલા વચમા આઠ યોજન જાડી છે (तयाणतर च ण मायाए २ परिहायमाणी २) તે મધ્યભાગથી ક્રમશ ધીમે-ધીમે ઓછી થતા થતા આ, (सव्वेसु चरिमपेरंतेसु) બધા ચરમ પ્રદેશોમા (मच्छियपत्ताओ तणुयतरा) માખીની પાખથી પણ વધારે પાતળી છે (अगुलस्स असखेज्जइभाग वाहल्लेण पण्णत्ता) આમ તે બારીકાઈમા આગળીના અસખ્યાતમા ભાગની જાણવી જોઈએ (સૂ० १०३)

मूलम्—ईसीपब्भाराए णं पुढवीए दुवालस णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—ईसीइ वा ईसीपब्भाराइ वा तणूइ वा तणुतणूइ वा सिद्धीइ वा सिद्धालएइ वा मुत्तीइ वा मुत्तालएइ वा लोयग्गेइ वा लोयग्गथूभिगाइ वा लोयग्गपडिवुज्झणाइ वा सव्व–पाण–भूय–जीव–सत्त–सुहावहाइ वा ॥ सू० १०४ ॥

टीका—'ईसीपब्भाराए' इत्यादि। 'ईसीपब्भाराए ण पुढवीए दुवालस णामधेज्जा पण्णत्ता' ईषत्प्राग्भाराया खलु पृथिव्या द्वादश नामधेयानि प्रज्ञप्तानि, 'त जहा' तद्यथा—'ईसीइ वा' ईषत् इति वा१, 'ईसीपब्भाराइ वा' ईषत्प्राग्भारा इति वा२, 'तणूइ वा' तनुरिति वा३, 'तणुतणूइ वा' तनुतनुरिति वा४, 'सिद्धीइ वा' सिद्धिरिति वा५, 'सिद्धालएइ वा' सिद्धालय इति वा ६, 'मुत्तीइ वा' मुक्तिरिति वा ७, 'मुत्तालएइ वा' मुक्तालय इति वा ८, 'लोयग्गेइ वा' लोकाग्रमिति वा ९, 'लोयग्गथूभिगाइ वा' लोकाग्रस्तूपिकेति वा १०, 'लोयग्गपडिवुज्झणाइ वा' लोकाग्रप्रतिबोधनेति वा ११, 'सव्व–पाण–भूय–जीव–सत्त–सुहावहाइ वा' सर्व–प्राण–भूत–जीव–सत्त्व–सुखावहेति वा १२ ॥सू० १०४॥

'ईसीपब्भाराए ण पुढवीए' इत्यादि।

(ईसीपब्भाराए ण पुढवीए दुवालस णामधेज्जा भवति) ईषत्प्रागभारा पृथिवी के १२ नाम हैं, (तं जहा) जैसे-१–(ईसीइ वा) ईषत्, २–(ईसीपब्भाराइ वा) ईषत्प्राग्भारा, ३–(तणूइ वा) तनु, ४–(तणुतणू इ वा) तनुतनु, ५–(सिद्धी इ वा) सिद्धि, ६–(सिद्धालए इ वा) सिद्धालय, ७–(मुत्ती इ वा) मुक्ति, ८–(मुत्तालए इ वा) मुक्तालय, ९–(लोयग्गे इ वा) लोकाग्र, १०–(लोयग्गथूभिगा इ वा) लोकाग्रस्तूपिका, ११–(लोयग्गपडिवुज्झणा

'ईसीपब्भाराए ण पुढवीए' ઇત્યાદિ

(ईसीपब्भाराए ण पुढवीए दुवालस णामधेज्जा पण्णत्ता) આ ઈષત્પ્રાગ્ભારા પૃથિવીના ૧૨ નામો છે, (त जहा) જેમકે ૧–(ईसी इ वा) ઈષત્, ૨–(ईसीपब्भारा इ वा) ઈષત્પ્રાગ્ભારા, ૩–(तणू इ वा) તનુ, ૪–(तणुतणू इ वा) તનુતનુ, ૫–(सिद्धी इ वा) સિદ્ધિ, ૬–(सिद्धालए इ वा) સિદ્ધાલય, ૭–(मुत्ती इ वा) મુક્તિ, ૮–(मुत्तालए इ वा) મુક્તાલય, ૯–(लोयग्गे इ वा) લોકાગ્ર, ૧૦–(लोयग्गथूभिगा इ वा) લોકાગ્રસ્તૂપિકા, ૧૧–(लोयग्गपडिवुज्झणा इ वा) લોકાગ્રપ્રતિબોધના, ૧૨–(सव्व–पाण

मूलम्—ईसीपब्भारा णं पुढवी सेया संखतल–विमल–सोल्लिय–मुणाल–दगरय–तुसार–गोक्खीर–हार–वण्णा उत्ताणय–छत्त–संठाण–संठिया सव्वज्जुणसुव्वण्णयमई अच्छा सण्हा

टीका—'ईसीपब्भारा' इत्यादि। 'ईसीपब्भारा ण पुढवी' ईषत्प्राग्भारा खलु पृथिवी 'सेया' श्वेता 'सखतल–विमल–सोल्लिय–मुणाल–दगरय–तुसार–गोक्खीर–हार–वण्णा' शङ्खतल-विमल-शौल्य मृणाल-दकरज-स्तुषार-गोक्षीर-हार-वर्णा—तत्र—शङ्खतल= शङ्खस्याधस्तनो भाग, विमल=निर्मल शौल्यं=श्वेतकुसुमविशेष, मृणाल=कमलस्य कन्द, तुषार=हिम–'बर्फ' इति प्रसिद्धम्, हार=मुक्ताहार, शङ्खादिहारान्ताना वर्ण इव वर्णो यस्या सा तथा, 'उत्ताणय–छत्त–सठाण–सठिया' उत्तानकच्छत्र–सस्थान–सस्थिता—उत्तानकम्= ऊर्ध्वमुख–विस्फारित यत् छत्र तस्य सस्थानमिव सस्थान तेन सस्थिता=युक्ता, 'सव्वज्जुण–

इ वा) लोकप्रतिबोधना, १२–(सव्व–पाण–भूय–जीव–सत्त–सुहावहा इ वा) सर्व-प्राणभूतजीवसत्त्वसुखावहा॥ सू० १४॥

'ईसीपब्भारा ण पुढवी' इत्यादि।

(ईसीपब्भारा ण पुढवी) यह ईषत्प्राग्भारा नामकी पृथिवी (सेया) सफेद है। इसकी उज्ज्वलता (सखतल-विमल सोल्लिय मुणाल दगरय–तुसार गोक्खीर-हार–वण्णा) शख के तलभागके समान, शुभ्रपुष्पके समान, मृणालके समान, कमलके समान, पानीकी बिन्दुओं के समान, बर्फ के समान, दुग्ध के समान, एव मुक्ताहार के समान है। ये सब चीजें जिस प्रकार शुभ्र होती है उसी प्रकार यह भी शुभ्र है। (उत्ताणय–छत्त–सठाण–सठिया) शिर पर ताने हुए छत्र के समान इसका आकार है। (सव्वज्जुण–सुवण्णयमई

–भूय–जीव–सत्त–सुहावहा इ वा) सर्व-પ્રાણ-ભૂત-જીવ-સત્ત્વ-સુખાવહા (સૂ० १०४)

'ईसीपब्भारा ण पुढवी' ઇત્યાદિ

(ईसीपब्भारा ण पुढवी) આ ઈષત્પ્રાગ્ભારા પૃથિવી (सेया) સફેદ છે તેની ઉજ્જવળતા (सखतल–विमल–सोल्लिय–मुणाल–दगरय–तुसार–गोक्खीर-हार–वण्णा) શખના તળીયાના ભાગ જેવી ઉજ્જવળ, શુભ્ર પુષ્પ સમાન, કમળના મૃણાલ જેવી, પાણીના બિંદુઓના જેવી, બરફના જેવી, દૂધના જેવી, તેમજ મોતીના હાર જેવી ઉજ્જવળ છે આ બધી ચીજો જેવી શુભ્ર (ધોળી) હોય છે તેવીજ રીતે આ પણ શુભ્ર છે (उत्ताणय–छत्त–सठाण–संठिया) શિર ઉપર ઓઢેલા છત્ર સમાન તેનો આકાર છે (सव्वज्जुण–

लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पंका णिक्कंकडच्छाया समरीचिया सुप्पभा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ सू० १०५ ॥

सुवण्णायमई' सर्वार्जुनसुवर्णकमयी-सर्वेण=सर्वावयवावच्छेदेन अर्जुनसुवर्णकमयी=श्वेत-काञ्चनमयी, तथा-'अच्छा' अच्छा आकाशस्फटिकवत्, 'सण्हा' श्लक्ष्णा=शुभपरमाणुस्कन्ध-रचिततया श्लक्ष्णा-सूक्ष्मतन्तुनिर्मितवस्त्रवत् सूक्ष्मा, 'लण्हा' श्लक्ष्णा-घुण्टितवस्त्रवन्मसृणा, 'लट्ठा' लष्टा=सुन्दराकृतिका, 'घट्ठा' घृष्टा=घृष्टेव-खरशाणया शोधितपाषाणवत्, 'मट्ठा' मृष्टा=मृष्टेव-कोमलशाणया शोधितपाषाणवत्, 'णीरया' नीरजा, 'णिम्मला' निर्मला, 'णिप्पंका' निष्पङ्का=कर्दमरहिता 'णिक्कंकडच्छाया' निष्कङ्कटच्छाया=आवरणरहिता 'समरीचिया' समरीचिका=किरणसमूहयुक्ता, 'सुप्पभा' सुप्रभा=शोभासम्पन्ना, 'पासाईया' प्रासादीया-प्रसादः=प्रमोदः स एव प्रासादः, स प्रयोजनं यस्याः सा तथा, 'दरिसणिज्जा' दर्शनीया-दर्शनाय हिता, तां पश्यच्चक्षुर्न श्राम्यतीत्यर्थः, 'अभिरूवा' अभिरूपा=

अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पंका णिक्कंकडच्छाया समरीचिया सुप्पभा पासादीया, दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा) तथा-यह संपूर्ण श्वेतकाञ्चनमय है, आकाश एवं स्फटिक के समान स्वच्छ है, शुद्धपरमाणुस्कन्धों से रचित होने के कारण सूक्ष्मतन्तुओं से निर्मित वस्त्र के समान सूक्ष्म है, घुटे हुए वस्त्र के समान चिकनी है, घृष्ट है-खर शाण से घिसे हुए पत्थर के जैसी है, मृष्ट है, अर्थात्-कोमलशाण से घिसे हुए पत्थर के समान चिकनी है। नीरज-निर्मल है। कर्दमरहित है। आवरणरहित है। किरणों के समुदाय से सुरम्य है। शोभासे संपन्न है। प्रमोद प्रदान करने वाली है। दर्शनीय है।

सुवण्णयमई अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पंका णिक्कंकडच्छाया समरीचिया सुप्पभा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा) तथा એ સંપૂર્ણ શ્વેત કાંચનમય છે, આકાશ તેમજ સ્ફટિકના સમાન સ્વચ્છ છે શુદ્ધ પરમાણુસ્કંધોથી નિર્મિત હોવાને કારણે સૂક્ષ્મતંતુઓથી નિર્મિત વસ્ત્ર સમાન સૂક્ષ્મ છે, ઘુંટિત-માંડ વિગેરેથી ઘસાયેલા વસ્ત્રની માફક ચીકણી છે, ઘૃષ્ટ છે-ખરશાણથી ઘસાયેલા પત્થરના જેવી છે, મૃષ્ટ છે—અર્થાત્ કોમળશાણથી ઘસેલા પત્થરના જેવી ચીકણી છે, નીરજ-નિર્મળ છે, કર્દમ (કાદવ) થી રહિત છે, શોભા-સંપન્ન છે, પ્રમોદ (આનંદ) આપવા વાળી છે, દર્શનીય છે, એને જોવાવાળાના નેત્ર એને જોતા જોતા ધરાતાજ નથી, એ

मूलम्—ईसीपब्भाराए णं पुढवीए सेयाए जोयणंमि लोगंते। तस्स जोयणस्स जे से उवरिल्ले गाउए, तस्स णं गाउयस्स जे से उवरिल्ले छब्भागे, तत्थ णं सिद्धा भगवंतो सादिया

कमनीया, 'पडिरूवा' प्रतिरूपा—द्रष्टेने प्रतिक्षण नव नवमिव प्रतिभासमान रूप यस्या सा तथा ॥ सू० १०५ ॥

टीका—'ईसीपब्भाराए' इत्यादि। 'ईसीपब्भाराए ण' ईषत्प्राग्भाराया =सिद्धशिलाया खलु 'पुढवीए सेयाए' पृथिव्या श्वेताया 'जोयणंमि लोगंते' योजने लोकान्त = योजनपरिमित क्षेत्रमुपरि गत्वा लोकान्तो वर्तते। अत्र योजनम्—उत्सेधाङ्गुलयोजन ग्राह्यम्, तदीयस्यैव हि क्रोशषड्भागस्य सत्रिभागत्रयस्त्रिंशदधिकधनु शतत्रयीप्रमाणत्वादिति। 'तस्स जोयणस्स' तस्य योजनस्य, 'जे से' य स 'उवरिल्ले' उपरितन 'गाउए' देशीयोऽय शब्द क्रोशार्थे, स च द्विसहस्रधनु प्रमाणक्षेत्रम्, उक्त च—" चउहत्थ पुण धनुह दुन्नि सहस्साइ गाउय तेसिं " ॥ इति। 'तस्स ण' तस्य खलु 'गाउयस्स' क्रोशस्य, 'जे से उवरिल्ले' य स उपरितन 'छब्भाए' षड्भाग =षष्ठो भाग, 'तत्थ ण सिद्धा भगवतो

इसे देखने वालों के नेत्र इसे देखते २ थकते नहीं है। यह बड़ी ही कमनीय है। इसे ज्यों ज्यों देखा जाता है त्यों २ यह नवीन२ जैसी प्रतीत होती है ॥ सू० १०५ ॥

'ईसीपब्भाराए ण पुढवीए' इत्यादि।

इस (ईसीपब्भाराए ण पुढवीए सेयाए) शुभ्र ईषत्प्राग्भारा पृथिवी से (जोयणमि) ऊपर १ योजन मे (लोगते) लोक का अत है। (तस्स जोयणस्स जे से उवरिल्ले गाउए, तस्स ण गाउयस्स जे से उवरिल्ले छब्भागे, तत्थ ण सिद्धा भगवतो सादिया अपज्जवसिया) उस योजनपरिमित लोक के अत में ३३३ धनुष और ३२ अगुल जितनी जगह रही है, उसमें अर्थात् उस योजन के ऊपर के कोस के छठवें भाग मे सिद्ध भगवान्

ખરુ જ કમનીય છે, તેને જેમ જેમ જોવાય તેમ તેમ તે નવીન નવીન જેવી પ્રતીત થાય છે (સૂ૦ ૧૦૫)

'ईसीपब्भाराए ण पुढवीए' ઈત્યાદિ

આ (ईसीपब्भाराए ण पुढवीए सेयाए) શુભ્ર ઈષત્પ્રાગ્ભારા પૃથિવીથી (जोयणमि) ઉપર ૧ યોજનમા (लोगते) લોકનો અત છે (तस्स जोयणस्स जे से उवरिल्ले गाउए, तस्स ण गाउयस्स जे से उवरिल्ले छब्भागे, तत्थ ण सिद्धा भगवतो सादिया अपज्जवसिया चिट्ठति) તે યોજનપરિમિત લોકના અતમા ૩૩૩ ધનુષ અને ૩૨ આગળ જેટલી જગા રહી છે, તેમા અર્થાત્

अपज्जवसिया अणेगजाइ–जरा–मरण–जोणि–वेयणं संसार–कलंकलीभाव–पुणब्भव–गब्भवास–वसही–पवंचं अइक्कंता सासयमणागयद्धं चिट्ठंति ॥ सू० १०६ ॥

मूलम्—कहिं पडिहया सिद्धा ?, कहिं सिद्धा पडिट्ठिया ? कहिं बोंदि चइत्ता णं, कत्थ गंतूण सिज्झइ ? ॥ सू० १०७ ॥

सादिया अपज्जवसिया' तत्र खलु सिद्धाभगवन्त सादिका अपर्यवसिता 'अणेग–जाइ–जरा–मरण–जोणि–वेयण' अनेक–जाति–जरा–मरण–योनि–वेदनम्–अनेकजातिजरा-मरणप्रधानयोनिषु वेदना यत्र स तथा त, 'ससार–कलंकलीभाव–पुणब्भव–गब्भवास–वसही–पवचं ससार–कलङ्कलीभाव–पुनर्भव–गर्भवास–वसति–प्रपञ्च –ससारे कलङ्कलीभावेन =असमञ्जसत्वेन ये पुनर्भवा =पौन पुन्येन उत्पादा , गर्भवासवसतय =गर्भाश्रयनिवासाश्च तासा य प्रपञ्चो=विस्तर स तथा तम् 'अइक्कता' अतिक्रान्ता =निस्तीर्णा , 'सासय' शाश्वतम् 'अणागयद्धं' अनागताद्धा=भविष्यत्काल 'चिट्ठति' तिष्ठन्ति ॥ सू० १०६ ॥

टीका—'कहिं पडिहया' इति। गौतम पृच्छति–'कहिं पडिहया सिद्धा' क्व प्रतिहता सिद्धा =सिद्धा पुन प्रतिरुद्धा , तथा 'कहिं सिद्धा पडिट्ठिया' क्व सिद्धा प्रति-

---

सादि–अपर्यवसित स्थिति मे विराजमान हैं। (अणेग–जाइ–जरा–मरण–जोणि–वेयण संसार–कलकलीभाव–पुणब्भव–गब्भवास–वसही-पवचमइक्कता) ये सिद्ध भगवान् अनेक जाति, जरा एव मरण की वेदना से, तथा असमजसपूर्ण जो वार वार जन्म लेना, गर्भ में वास करना आदि दु ख है उनसे युक्त सासारिक प्रपचों से रहित होकर (सासयमणागयद्ध चिट्ठति) सदा शाश्वतिकरूप से वहाँ पर विराजते रहते हैं ॥ सू० १०६ ॥

ते योजननी उपरना कोसना छठ्ठा भागमा सिद्ध भगवान सादि–अपर्यवसित स्थितिमा विराजमान छे (अणेग–जाइ–जरा–मरण–जोणि–वेयण ससार–कलंक-लीभाव–पुणब्भव–गब्भवास–वसही–पवचमइक्कता) ए सिद्ध भगवान अनेक जन्मो, जरा तेमज मरणनी वेदनाथी तथा असमजसपूर्ण जे वारवार जन्म लेवो, गर्भमा वास करवो–आदि दुःख छे तेनाथी युक्त सासारिक प्रपचोथी रहित थईने (सासयमणागयद्ध चिट्ठति) सदा शाश्वतिकरूपथी त्याज विराजता रहे छे (सू० १०६)

मूलम्---ईसीपब्भाराए णं पुढवीए सेयाए जोयणंमि लोगंते । तस्स जोयणस्स जे से उवरिल्ले गाउए, तस्स णं गाउयस्स जे से उवरिल्ले छब्भागे, तत्थ णं सिद्धा भगवंतो सादिया

कमनीया, 'पडिरूवा' प्रतिरूपा--दर्शने प्रतिक्षण नव नवमिव प्रतिभासमान रूप यस्या सा तथा ॥ सू० १०५ ॥

टीका---'ईसीपब्भाराए' इत्यादि । 'ईसीपब्भराए णं' ईषत्प्राग्भाराया =सिद्धशिलाया खलु 'पुढवीए सेयाए' पृथिव्या श्वेताया 'जोयणंमि लोगते' योजने लोकान्त = योजनपरिमित क्षेत्रमुपरि गत्वा लोकान्तो वर्त्तते । अत्र योजनम्--उत्सेधाङ्गुलयोजन ग्राह्यम्, तदीयस्यैव हि क्रोशषड्भागस्य सत्रिभागत्रयस्त्रिंशदधिकधनु शतत्रयीप्रमाणत्वादिति । 'तस्स जोयणस्स' तस्य योजनस्य, 'जे से' य स 'उवरिल्ले' उपरितन 'गाउए' देशीयोऽयशब्द क्रोशार्थे, स च द्विसहस्रधनु प्रमाण क्षेत्रम्, उक्त च--" चउहत्थ पुण धनुह दुन्नि सहस्साइ गाउय तेसिं " ॥ इति । 'तस्स ण' तस्य खलु 'गाउयस्स' क्रोशस्य, 'जे से उवरिल्ले' य स उपरितन 'छब्भाए' षड्भाग =षष्ठो भाग , 'तत्थ ण सिद्धा भगवतो

इसे देखने वालों के नेत्र इसे देखते २ थकते नहीं है । यह बडी ही कमनीय है । इसे ज्यों ज्यों देखा जाता है त्यों २ यह नवीन२ जैसी प्रतीत होती है ॥ सू० १०५ ॥

'ईसीपब्भाराए ण पुढवीए' इत्यादि ।

इस (ईसीपब्भाराए ण पुढवीए सेयाए)शुभ्र ईषत्प्राग्भारा पृथिवी से (जोयणमि) ऊपर १ योजन मे (लोगते) लोक का अत है । (तस्स जोयणस्स जे से उवरिल्ले गाउए, तस्स ण गाउयस्स जे से उवरिल्ले छब्भागे, तत्थ ण सिद्धा भगवतो सादिया अपज्जवसिया) उस योजनपरिमित लोक के अत में ३३३ धनुष और ३२ अगुल जितनी जगह रही है, उसमे अर्थात उस योजन के ऊपर के क्रोस के छठवे भाग में सिद्ध भगवान्

બહુ જ કમનીય છે, તેને જેમ જેમ જોવાય તેમ તેમ તે નવીન નવીન જેવી પ્રતીત થાય છે (સૂ૦ ૧૦૫)

'ईसीपब्भाराए ण पुढवीए' ઇત્યાદિ

આ (ईसीपब्भाराए ण पुढवीए सेयाए) શુભ્ર ઇષત્પ્રાગ્ભારા પૃથિવીથી (जोयणमि) ઉપર ૧ યોજનમા (लोगते) લોકનો અત છે (तस्स जोयणस्स जे से उवरिल्ले गाउए, तस्स ण गाउयस्स जे से उवरिल्ले छब्भागे, तत्थ ण सिद्धा भगवतो सादिया अपज्जवसिया चिट्ठति) તે યોજનપરિમિત લોકના અતમા ૩૩૩ ધનુષ અને ૩૨ આગળ જેટલી જગા રહી છે, તેમા અર્થાત્

अपज्जवसिया अणेगजाइ–जरा–मरण–जोणि–वेयणं संसार–कलंकलीभाव–पुणब्भव–गब्भवास–वसही–पवंचं अइक्कंता सासयमणागयद्धं चिट्ठंति ॥ सू० १०६ ॥

मूलम्—कहिं पडिहया सिद्धा ?, कहिं सिद्धा पडिट्ठिया ? कहिं बोदिं चइत्ता णं, कत्थ गंतूण सिज्झइ ? ॥ सू० १०७ ॥

सादिया अपज्जवसिया' तत्र खलु सिद्धा भगवन्त सादिका अपर्यवसिता **'अणेग–जाइ–जरा–मरण–जोणि–वेयणं'** अनेक–जाति–जरा–मरण–योनि–वेदनम्–अनेकजातिजरा-मरणप्रधानयोनिषु वेदना यत्र स तथा त, **'संसार–कलंकलीभाव–पुणब्भव–गब्भवास–वसही–पवच'** ससार–कलङ्कलीभाव–पुनर्भव–गर्भवास–वसति–प्रपञ्चं —ससारे कलङ्कलीभावेन =असमञ्जसत्वेन ये पुनर्भवा =पौन पुन्येन उत्पादा , गर्भवासवसतय =गर्भाश्रयनिवासाश्च तासा य प्रपञ्चो=विस्तर स तथा तम् **'अइक्कता'** अतिक्रान्ता =निस्तीर्णा, **'सासय'** शाश्वतम् **'अणागयद्ध'** अनागताद्धा=भविष्यत्काल **'चिट्ठति'** तिष्ठन्ति ॥ सू० १०६ ॥

टीका—**'कहिं पडिहया'** इति । गौतम पृच्छति–**'कहिं पडिहया सिद्धा'** क्व प्रतिहता सिद्धा =सिद्धा कुत्र प्रतिरुद्धा , तथा **'कहिं सिद्धा पडिट्ठिया'** क्व सिद्धा प्रति-

---

सादि–अपर्यवसित स्थिति मे विराजमान है। **(अणेग–जाइ–जरा–मरण–जोणि–वेयणं ससार–कलकलीभाव–पुणब्भव–गब्भवास–वसही पवंचमइक्कता)** ये सिद्ध भगवान् अनेक जाति, जरा एव मरण की वेदना से, तथा असमजसपूर्ण जो बार बार जन्म लेना, गर्भ में वास करना आदि दु ख है उनसे युक्त सासारिक प्रपचों से रहित होकर **(सासयमणागयद्ध चिट्ठति)** सदा शाश्वतिकरूप से वहाँ पर विराजते रहते है ॥ सू० १०६ ॥

ते योजननी उपरना કોसना छठ्ठा ભાગમા સિદ્ધ ભગવાન સાદિ–અપર્યવસિત સ્થિતિમા વિરાજમાન છે (अणेग–जाइ–जरा–मरण–जोणि–वेयण ससार–कलक लीभाव–पुणब्भव–गब्भवास–वसही–पवचमइक्कता) એ સિદ્ધ ભગવાન અનેક જન્મો, જરા તેમજ મરણની વેદનાથી તથા અસમજસપૂર્ણ જે વારવાર જન્મ લેવો, ગર્ભમા વાસ કરવો–આદિ દુ ખ છે તેનાથી યુક્ત સાસારિક પ્રપચોથી રહિત થઈને (सासयमणागयद्ध चिट्ठति) સદા શાશ્વતિકરૂપથી ત્યાજ વિરાજતા રહે છે (સૂ० ૧૦૬)

मूलम्—अलोगे पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पडिट्ठिया।
इह वोंदिं चइत्ता णं, तत्थ गंतूण सिज्झइ ॥ सू० १०८ ॥

ष्ठिता=व्यवस्थिता ?, तथा–'कहिं वोंदिं चइत्ता णं' क्व शरीरं त्यक्त्वा खलु 'कत्थ गतूण' क्व गत्वा 'सिज्झइ' सिध्यन्ति ?। 'वोंदी' इति शरीरार्थको देशीशब्द । 'सिज्झइ' इत्यत्रार्षत्वाद् बहुत्वे एकवचनम् ॥ सू० १०७ ॥

टीका—'अलोगे' इत्यादि । 'अलोगे' अलोके=अलोकाकाशास्तिकाये 'सिद्धा' सिद्धा 'पडिहया' प्रतिहता=प्रतिरुद्धाः, तथा 'लोयग्गे य' लोकाग्रे=पञ्चास्तिकायलक्षण-लोकशिरोभागे च 'पडिट्ठिया' प्रतिष्ठिता=अपुनरावृत्तिरूपेण व्यवस्थिता, तथा 'इह' इह

'कहिं पडिहया सिद्धा' इत्यादि ।

गौतम पूछते हे कि हे भदत ! (कहिं पडिहया सिद्धा) सिद्ध भगवान किस स्थान पर अटके है ?, (कहिं सिद्धा पडिट्ठिया) वे कहा प्रतिष्ठित है ?, (कहिं वोंदिं चइत्ता ण) इस शरीर को छोडकर (कत्थ गतूण सिज्झइ) वे कहा जा कर सिद्ध होते है ? ॥ सू० १०७ ॥

'अलोगे पडिहया' इत्यादि ।

उत्तर—हे गौतम ! (अलोगे पडिहया सिद्धा लोयग्गे य पडिट्ठिया) सिद्ध भगवान् लोक के अग्रभाग में रहते हैं, इसलिये वे अलोक में जाने से अटके हुए हैं । लोक के अग्रभाग में उनकी स्थिति है । (इह वोंदिं चइत्ता णं) इस मनुष्यलोक में वे शरीर का

'कहिं पडिहया सिद्धा ?' ઈત્યાદિ.

ગૌતમ પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! (कहिं पडिहया सिद्धा) સિદ્ધ ભગવાન કયા સ્થાને અટક્યા છે ?, (कहिं सिद्धा पडिट्ठिया) તેઓ કયા પ્રતિષ્ઠિત છે ?, (कहिं वोंदिं चइत्ता ण, कत्थ गतूण सिज्झइ) આ શરીરને છોડીને તેઓ કયા જઈને સિદ્ધ થાય છે ? (સૂ૦ ૧૦૭)

'अलोगे पडिहया' ઈત્યાદિ

ઉત્તર–હે ગૌતમ ! (अलोगे पडिहया सिद्धा) સિદ્ધ ભગવાન લોકના અગ્રભાગમા રહે છે તેથી તેઓ અલોકમા જવાથી અટકેલા હોય છે (लोयग्गे य पडिट्ठिया) લોકના અગ્રભાગમા તેમની સ્થિતિ છે (इह वोंदिं चइत्ता ण) આ મનુષ્યલોકમા તેઓ શરીરનો પરિત્યાગ કરીને (तत्थ गतूण ...

मूलम्—जं संठाणं भवं, चयंतस्स चरिमसमयंमि ।
आसीय पएसघणं, तं संठाणं तहिं तस्स ॥ सू० १०९ ॥
मूलम्—दीहं वा हस्सं वा, जं चरिमभवे हवेज्ज संठाणं ।
तत्तो तिभागहीणं, सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥ सू० ११० ॥

मनुष्यक्षेत्रे 'बोदिं' शरीर 'चइत्ता णं' त्यक्त्वा खलु 'तत्थ' तत्र=लोकाग्रे 'गतूण' गत्वा 'सिज्झइ' सिध्यन्ति ॥ सू १०८ ॥

टीका—'ज सठाण' इत्यादि । 'भवं' भव=ससार 'चयतस्स' त्यजत सिद्धस्य 'चरिमसमयमि' चरमसमये=मोक्षगमनसमये 'इह तु' इह तु=मनुष्यक्षेत्रे तु 'जं सठाणं' यत् सस्थानम् 'आसीय' आसीत्, 'त सठाण' तत् सस्थान 'तस्स' तस्य सिद्धस्य 'तहिं' तत्र सिद्धक्षेत्रे 'पएसघण' प्रदेशघन तृतीयभागेन रन्ध्रपूरणाद् भवति ॥ सू १०९ ॥

टीका—'दीह वा' इत्यादि । 'दीहं वा' दीर्घ=पञ्चशतधनु शतमान वा, 'हस्स वा'

परित्याग करके (तत्थ गतूण सिज्झइ) सिद्धस्थान मे जाकर सिद्ध होते है ॥ सू १०८ ॥

'ज सठाण' इत्यादि ।

(भव चयंतस्स) ससार का परित्याग करते हुए सिद्ध का (चरिमसमयमि) मोक्षगमन समय में (इहं तु) इस मनुष्यक्षेत्र मे (जं सठाण) जो सस्थान था, (तस्स) उस सिद्धका (त संठाण) वह सस्थान (तहिं) उस सिद्ध क्षेत्र मे (पएसघण) कान, चक्षु आदि इन्द्रियों के रिक्त स्थान भर जाने के कारण प्रदेशघनरूप होता है ॥ सू १०९ ॥

'दीह वा हस्स वा' इत्यादि ।

(दीह वा) चाहे सस्थान दीर्घ—५०० धनुष का हो, (हस्स वा) चाहे ह्रस्व—२हाथ

સિદ્ધ સ્થાનમા જઈને તેઓ સિદ્ધ થાય છે (સૂ ૧૦૮)

'ज सठाण' ઇત્યાદિ

(भव चयतस्स) સસારનો પરિત્યાગ કરતી વખતે સિદ્ધનુ (चरिमसमयसि) મોક્ષગમન સમયમા (इह तु) આ મનુષ્ય-ક્ષેત્રમા (ज सठाण) જે સસ્થાન હતુ, (तस्स) તે સિદ્ધનુ (त सठाण) તે સસ્થાન (तहिं) તે સિદ્ધક્ષેત્રમા (पएसत्रणं) કાન, આખ આદિ ઇંદ્રિયોના રિક્ત સ્થાનો પરિપૂર્ણ થવાને કારણે પ્રદેશઘનરૂપ થાય છે (સૂ ૧૦૯)

'दीह वा हस्स वा' ઇત્યાદિ

(दीह वा) ચાહે સસ્થાન દીર્ઘ (લાબુ)–૫૦૦ ધનુષનુ હોય, (हस्सं वा)

मूलम्–तिण्णि सया तेत्तीसा, धणुत्तिभागो य होइ बोद्धव्वो।
एसा खलु सिद्धाणं, उक्कोसोगाहणा भणिया॥ सू० १११ ॥

ह्रस्व वा=हस्तद्वयमान वा, वा-शब्दान्मध्यमं चापि मात्र 'ज चरिमभवे सठाणं हवेज्ज' यच्चरमभवे सस्थान भवेत् 'तत्तो' तत =तस्मात्, 'तिभागहीण' त्रिभागहीन=त्रिभागेन—तृतीयभागेन रन्ध्रपूरणात् त्रिभागहीन यथा स्यात्तथा 'सिद्धाणोगाहणा' सिद्धानामवगाहना 'भणिया' भणिता=कथिता जिनैरिति शेष ॥ सू १११० ॥

टीका—'तिण्णि' इत्यादि । 'तिण्णि सया तेत्तीसा' त्रीणि शतानि त्रयस्त्रिंशदनूंषि, तथा 'धणुत्तिभागो य' धनुस्त्रिभागश्च—धनुष =एकस्य धनुपस्त्रिभाग =तृतीयो भाग - द्वात्रिंशदङ्गुलानि, तेन त्रयस्त्रिंशदधिकशतत्रय-३३३-धनूंषि द्वात्रिंशदङ्गुलानि चेत्यर्थ, अय सिद्धानामुत्कर्षतोऽवगाहनाप्रमाणो 'बोद्धव्वो' बोद्धव्यो=ज्ञातव्यो भवति । अमुमेवार्थमाह-'एसा खलु सिद्धाण उक्कोसोगाहणा भणिया' एषा खलु सिद्धानाम् उत्कर्षाऽवगाहना भणितेति। इयमवगाहना पञ्चधनुश्शतप्रमाणशरीराणा भवतीति बोध्यम् ॥ सू० १११ ॥

का हो,अथवा मध्य—अवगाहना के विकल्पों वाला हो, (**ज चरिमभवे हवेज्ज संठाण**) अन्तिम भव—समय में जैसी अवगाहनावाला शरीर होगा, (**तत्तो तिभागहीण सिद्धाणोगाहणा भणिया**) उससे तृतीय भाग—हीन अवगाहना सिद्धों की सिद्धिगति में होती है ॥सू ११० ॥

'तिण्णि सया तेत्तीसा' इत्यादि ।

(**तिण्णि सया तेत्तीसा**) तीन सौ तेंतीस धनुष, तथा (**धणुत्तिभागो य होइ बोद्धव्वो**) एक धनुष का तीसरा भाग, अर्थात् ३२ अगुल, (**एसा खलु सिद्धाण उक्कोसोगाहणा भणिया**) इतनी उत्कृष्ट अवगाहना सिद्ध भगवान् की जानना चाहिये । यह अवगाहना, जिनका शरीर ५०० धनुष का होता है उनकी अपेक्षा कही गई है ॥ सू १११ ॥

ચાહે હ્રસ્વ—દુ કુ—૨ હાથનુ હોય, અથવા મધ્ય અવગાહનાના વિકલ્પોવાળુ હોય, (ज चरिमभवे हवेज्ज सठाण) અંતિમ ભવ—સમયમા જેવી અવગાહનાવાળુ શરીર હશે (तत्तो तिभागहीण सिद्धाणोगाहणा भणिया) તેનાથી ત્રીજા ભાગની ઓછી અવગાહના સિદ્ધોની સિદ્ધિગતિમા હોય છે (સૂ ૧૧૦)

'तिण्णिसया तेत्तीसा' ઈત્યાદિ

(तिण्णि सया तेत्तीसा) ત્રણસો તેત્રીસ ધનુષ, તથા (धणुत्तिभागो य होइ बोद्धव्वो) એક ધનુષનો ત્રીજો ભાગ, અર્થાત્ ૩૨ આંગળ, (एसा खलु सिद्धाण उक्कोसोगाहणा भणिया) એટલી ઉત્કૃષ્ટ અવગાહના સિદ્ધ ભગવાનની જાણવી

मूलम्--चत्तारि य रयणीओ, रयणितिभागूणिया य बोद्धव्वा ।
एसा खलु सिद्धाणं, मज्झिमओगाहणा भणिया॥ सू० ११२॥

मूलम्--एक्का य होइ रयणी, साहीया अंगुलाइ अट्ठ भवे ।
एसा खलु सिद्धाणं, जहण्णओगाहणा भणिया॥ सू० ११३ ॥

टीका—'चत्तारि' इत्यादि । 'चत्तारि य रयणीओ' चतस्रश्च रत्नय, 'रयणितिभागूणिया य' रत्नित्रिभागोनिका च सिद्धाना मध्यमाऽवगाहना 'बोद्धव्वा' बोद्धव्या । अमुमेवार्थमाह- 'एसा खलु सिद्धाण मज्झिमओगाहणा भणिया' एषा खलु सिद्धाना मध्यमाऽवगाहना भणिता । षोडशाङ्गुलाधिकचतुर्हस्तप्रमाणा सिद्धाना मध्यमावगाहनेत्यर्थ । इय सप्तहस्तप्रमाणशरीरधारिणा सिद्धानाम् ॥ सू० ११२ ॥

टीका—'एक्का' इत्यादि । सिद्धाना जघन्याऽवगाहनायाम् 'एक्का य होइ

'चत्तारि य रयणीओ' इत्यादि ।

(चत्तारि य रयणीओ) चार हाथ और (रयणितिभागूणिया य बोद्धव्वा) एक हाथ का तीसरा भाग, अर्थात् १६ अगुल की मध्यम अवगाहना होती है । (एसा खलु सिद्धाण मज्झिमओगाहणा भणिया) सिद्धों की यह मध्यम अवगाहना ७ हाथ शरीरवालों की अपेक्षा से जाननी चाहिये ॥ सू ११२ ॥

'एक्का च होइ रयणी' इत्यादि ।

(एक्का च होइ रयणी साहीया अगुलाइ अट्ठ भवे) कुछ अधिक एक हाथ,

આ અવગાહના, જેનું શરીર ૫૦૦ ધનુષનું હોય છે તેની અપેક્ષાએ કહેલી છે (સૂ ૧૧૧)

'चत्तारि य रयणीओ' ઇત્યાદિ

(चत्तारि य रयणीओ) ચાર હાથ અને (रयणितिभागूणिया य बोद्धव्वा) ૧ હાથનો ત્રીજો ભાગ, અર્થાત્ ૧૬ આંગળની મધ્યમ અવગાહના હોય છે (एसा खलु सिद्धाण मज्झिम-ओगाहणा भणिया) સિદ્ધોની આ મધ્યમ અવગાહના ૭ હાથ શરીરવાળાની અપેક્ષાથી જાણવી જોઈએ (સૂ૦ ૧૧૨)

'एक्का च होइ रयणी' ઇત્યાદિ

(एक्का च होइ रयणी साहीया अगुलाइ अट्ठ भवे) એક હાથથી થોડી

रयणी साहीया' एका च भवति रत्निः साधिका । कियता प्रमाणेनाधिका भवतीत्याह- 'अंगुलाइं' इत्यादि। 'अंगुलाइं अट्ठ भवे' अङ्गुलानि अष्ट भवन्ति । अष्टाङ्गुलाधिकैक-हस्तप्रमाणा सिद्धाना जघन्यावगाहना भवतीत्यर्थः । अमुमेवार्थमाह--'एसा खलु सिद्धाण जहण्णओगाहणा भणिया' एषा खलु सिद्धाना जघन्यावगाहना भणितेति । इयं द्विहस्तप्रमाणशरीराणाम् । इयं त्रिविधाऽप्यवगाहना शरीरोर्ध्वमानमाश्रित्य गृह्यते, अन्यथोपविष्टाना सिध्यतां मानं विसदृशमपि भवेत । नन्वेवमूर्ध्वमानाङ्गीकारे नाभिकुलकरस्य भार्याया मरुदेव्याः कथं सिद्धिस्थानप्राप्तिः, नाभिकुलकरो हि पञ्चविंशत्यधिक-पञ्चशतधनुःप्रमाण आसीत्, तद्भार्याऽपि मरुदेवी तत्प्रमाणैव, तथाचोक्तम्--"संघयणं संठाणं उच्चत्तं चेव कुलगरेहिं समं" इति। अतस्तदवगाहना उत्कृष्टावगाहनातोऽधिकतरा ?,

अर्थात् एक हाथ ८ अंगुल, (एसा खलु सिद्धाण जहण्णओगाहणा भणिया) यह जघन्य अवगाहना सिद्ध भगवान् की जाननी चाहिये । यह अवगाहना २ हाथ की अवगाहनावाले जीवों की अपेक्षा कही गई समझना चाहिये । यह तीनों प्रकार की अवगाहना शरीर की ऊँचाई की अपेक्षा कही गई है। बैठकर सिद्ध होने वालों का मान तो विसदृश भी होना चाहिये । **प्रश्न**--इस तरह ऊर्ध्वमान को आश्रित करने पर नाभिकुलकर की भार्या मरुदेवा को सिद्धिस्थान की प्राप्ति कैसे हो सकती है, क्यों कि नाभिकुलकर ५२५ धनुष प्रमाण अवगाहनावाले थे तो उनकी धर्मपत्नी भी उतनी ही अवगाहनावाली होगी । क्यों कि ऐसा कहा है कि संहनन और संस्थान कुलकरों की महिलाओं का कुलकरों के समान होता है । इसलिये उनकी अवगाहना उत्कृष्ट अवगाहना से अधिकतर हो जाती है ?। **उत्तर**--प्रश्न ठीक है, परंतु इसका समाधान इस प्रकार है, यद्यपि कुलकर जैसी उच्चता उनकी पत्नियों में

વધારે, અર્થાત્ એક હાથ ૮ આંગળ, (एसा खलु सिद्धाण जहण्णओगाहणा भणिया) સિદ્ધ ભગવાનની આ જઘન્ય અવગાહના જાણવી આ અવગાહના ૨ હાથની અવગાહનાવાળા જીવોની અપેક્ષાએ કહેલી છે એમ સમજવું એ ત્રણેય પ્રકારની અવગાહના શરીરની ઊંચાઈની અપેક્ષાએ કહેલી છે નહિ તો બેસીને સિદ્ધ થવાવાળાઓનું માન (પ્રમાણ) વિસદૃશ (જુદું) પણ હોવું જોઈએ પ્રશ્ન--આ રીતે ઉર્ધ્વ (ઉંચા) માનને આશ્રિત કરવાથી નાભિકુલકરના ધર્મપત્ની મરુદેવીને સિદ્ધિસ્થાનની પ્રાપ્તિ કેવી રીતે થઈ શકે ?, કેમ કે નાભિકુલકર ૫૨૫ ધનુષ્યપ્રમાણ અવગાહનાવાળા હતા તો, તેમના ધર્મપત્ની પણ એટલી જ અવગાહનાવાળી હશે કેમકે એમ કહ્યું છે કે કુલકરોની મહિલાઓનું સંહનન અને સંસ્થાન કુલકરોના સમાન હોય છે આથી તેમની અવગાહના, ઉત્કૃષ્ટ અવગાહનાથી વધારે થઇ જાય છે ઉત્તર--પ્રશ્ન ઠીક છે, પરંતુ તેનું સમાધાન આ પ્રકારે છે, જોકે કુલકર જેવી ઉચ્ચતા તેમની પત્ની

मूलम्--ओगाहणाए सिद्धा, भवत्तिभागेण होंति परिहीणा ।
संठाणमणित्थत्थ, जरामरणविप्पमुक्काणं ॥ सू० ११४ ॥
जत्थ य एगो सिद्धो, तत्थ अणता भवक्खयविमुक्का ।

अत्रोच्यते--यद्यपि कुलकरतुल्यमुच्चत्व तपनानामित्युक्त, तथापि पञ्चशतधनुमानता तस्या वार्द्धक्येन शरीरसङ्कोचात् सञ्जातेति नास्ति विरोध ॥ सू० ११३ ॥

टीका--'ओगाहणाए' इत्यादि । 'ओगाहणाए' अवगाहनया=स्वावगाहनया 'सिद्धा' सिद्धा, 'भवत्तिभागेण' भवत्रिभागेन--भवस्य=चरमभवशरीरस्य--चरमशरीरसम्बन्धिन्या अवगाहनाया, त्रिभागेन=तृतीयभागेन 'परिहीणा' परिहीना 'होंति' भवन्ति। तेषा 'जरामरणविप्पमुक्काण' जरामरणविप्रमुक्ताना सिद्धानाम् 'अणित्थत्थं' अनित्थस्थम्--अमुना प्रकारेणेती थम्, तत्र तिष्ठतीति--इत्थस्थम्, न इत्थस्थम्--अनित्थस्थम्--न केनचित्परिमण्डलादिलौकिकसस्थानेन स्थित 'सठाण' सस्थान भवति ॥ सू० ११४ ॥

टीका--तत्र सिद्धक्षेत्रे सिद्धा देशभेदेन उतैकस्मिन् देशे तिष्ठन्तीत्याशङ्कायामाह--'जत्थ' इति । 'जत्थ य' यत्र च=यत्रैव देशे, 'एगो सिद्धो' एक सिद्धस्तिष्ठति,

होती है तो भी उनमें ५०० धनुष--प्रमाणता उनके वृद्ध अवस्था में शरीर के सकोच से घटित हो जाती है । अत कोई विरोध नहीं है ॥ सू ११३ ॥

'ओगाहणाए सिद्धा' इत्यादि ।

(ओगाहणाए सिद्धा भवत्तिभागेण होंति परीहीणा) सिद्ध अपने अन्तिम-शरीर--सबधी अवगाहना के तृतीय भाग से हीन अवगाहनावाले होते हे । (सठाणमणित्थत्थ जरामरणविप्पमुक्काण) उनका आकार किसी परिमडल आदि लौकिक आकार से स्थित नहीं है, वे जन्म, जरा एव मरण से सदा के लिये रहित हो जाते है ॥ सू ११४ ॥

ઓમા હોય છે તો પણ તેઓમા ૫૦૦ ધનુષપ્રમાણતા તેમની વૃદ્ધાવસ્થામા શરીરના સ કોચાવાથી ઘટીને થઈ જાય છે તેથી કોઈ વિરોધ નથી (સૂ૦ ૧૧૩)

' ओगाहणाए सिद्धा ' ઇત્યાદિ

(ओगाहणाए सिद्धा भवत्तिभागेण होंति परिहीणा) સિદ્ધ પોતાની અવગાહનાથી અન્તિમશરીરસબધી અવગાહનાના ત્રીજા ભાગથી ઓછા થાય છે (सठाणमणित्थत्थ जरामरणविप्पमुक्काण) તેમનો આકાર કોઈ પરિમ ડલ આદિ લૌકિક આકારથી સ્થિત નથી તેઓ જન્મ, જરા તેમજ મરણથી સદાયને માટે રહિત થઈ જાય છે (સૂ૦ ૧૧૪)

अण्णोण्णसमोगाढा, पुट्ठा सव्वे य लोगंते ॥ सू० १५१ ॥

मूलम्—फुसइ अणते सिद्धे, सव्वपएसेहि णियमसा सिद्धो।

'तत्थ' तत्र देशे 'अणता' अनन्ता—अविद्यमानोऽन्तो येषां तेऽनन्ता, 'भवक्खयविमुक्का' भवक्षयविमुक्ता—भवक्षये सति विप्रमुक्ता, अनेन स्वेच्छयाऽवतरणशक्तिमत्सिद्धव्यवच्छेदमाह। 'अण्णोण्णसमोगाढा' अन्योऽन्यसमवगाढा'=परस्परं सम्यक् अवगाढा—धर्मास्तिकायादिवत् ममिलिता, 'सव्वे य' सर्वे च 'लोगंते' लोकान्ते =लोकाग्रभागे अलोकेन 'पुट्ठा' स्पृष्टा=संलग्ना, प्रतिरुद्धत्वात्, तत्र धर्मास्तिकायाभावादिति। अत एव—'लोकाग्रे च प्रतिष्ठिता' इत्युक्तम् ॥ सू० ११५ ॥

टीका—'फुसइ' इत्यादि। 'सिद्धे' सिद्ध=एक सिद्ध 'णियमसा' नियमेन

'जत्थ य एगो सिद्धो' इत्यादि।

(जत्थ य एगो सिद्धो) जिस सिद्धक्षेत्र मे एक सिद्ध भगवान विराजते है, (तत्थ अणता) उसी सिद्धक्षेत्र मे अनंत सिद्ध विराजमान रहते है। (भवक्खयविमुक्का) उनके भवका क्षय सर्वथा हो चुका है। (अण्णोण्णसमोगाढा पुट्ठा) जिस प्रकार एक ही स्थान पर धर्मादिक द्रव्य परस्पर अवगाढरूप मे स्थित होकर रहते है उसी प्रकार ये सिद्ध आत्मा भी एक ही स्थान पर परस्पर मे अवगाढरूप से रहते है। फिर भी अपने २ चैतन्यस्वरूप का परित्याग नहीं करते है। (सव्वे य लोगते) धर्मास्तिकायका अभाव होने से ये लोक के अग्रभाग मे स्पृष्ट रहते है ॥ सू ११५ ॥

'फुसइ अणते सिद्धे' इत्यादि।

(फुसइ अणते सिद्धे सव्वपएसेहि णियमसा सिद्धो) एक सिद्ध

'जत्थ य एगो सिद्धो' ઇત્યાદિ

(जत्थ य एगो सिद्धो) જે સિદ્ધક્ષેત્રમા એક સિદ્ધ ભગવાન બિરાજે છે, (तत्थ अणता) તેજ સિદ્ધક્ષેત્રમા અનંત સિદ્ધ વિરાજમાન હોય છે (भवक्खयविमुक्का) તેમના ભવનો ક્ષય સર્વથા થઇ ચૂક્યો છે (अण्णोण्ण समोगाढा पुट्ठा) જે પ્રકારે એક જ સ્થાન પર ધર્માદિક દ્રવ્ય પરસ્પર અવગાઢરૂપમા સ્થિત થઈ રહે છે તેજ પ્રકારે તે સિદ્ધ આત્મા પણ એકજ સ્થાન પર પરસ્પરમા અવગાઢરૂપથી રહે છે છતા પણ પોતપોતાના ચૈતન્યસ્વરૂપનો પરિત્યાગ કરતા નથી ધર્માસ્તિકાયનો અભાવ હોવાથી તેઓ લોકના અગ્રભાગમા સ્પૃષ્ટ (લાગી) રહે છે (સૂ ૧૧૫)

'फुसइ अणते सिद्धे' ઇત્યાદિ

(फुसइ अणते सिद्धे सव्वपएसेहि णियमसा सिद्धो) એક સિદ્ધ ભગવાન

ते वि असंखेज्जगुणा, देसपएसेहिं जे पुट्ठा ॥सू०॥ ११६ ॥

'सव्वपएसेहिं' सर्वप्रदेशैः=आत्मनोऽसंख्यातप्रदेशैः, 'अणते सिद्धे' अनन्तान् सिद्धान् 'फुसइ' स्पृशति । तथा 'ते वि' तेऽपि=ते सर्वे सिद्धा अपि 'असंखेज्जगुणा' असंख्येयगुणा वर्तन्ते, 'जे' ये सिद्धा 'देसपएसेहिं' देशप्रदेशैः-देशैः=असंख्यातदेशैः प्रदेशैः=असंख्यातप्रदेशैश्च 'पुट्ठा' स्पृष्टाः । तेषां सर्वेषां सिद्धानां प्रत्येकं स्वस्वव्यतिरिक्तसिद्धैरसंख्यातदेशप्रदेशवद्भिः समिलित्वेन गुणितं प्रमङ्गीकृत्य "असंख्येयगुणा" इत्युक्तम् । अयं भावः—सर्वात्मप्रदेशैस्तावदनन्ता सिद्धाः स्पृष्टाः, एकसिद्धाऽवगाहनायामनन्तानामवगाढत्वात् । तथैकैकदेशेनाऽप्यनन्ताः, एवमेकैकप्रदेशेनाप्यनन्ता एव । तत्र देशो-द्व्यादिप्रदेशसमुदायः, प्रदेशस्तु-निर्विभागोऽशः इति । एकैकसिद्धश्चाऽसंख्येयदेशप्रदेशात्मकः, ततश्च मूलाऽनन्तकेऽसंख्येयैर्देशाऽनन्तकैरसंख्येयैश्च च प्रदेशाऽनन्तकैर्गुणिते यावती संख्या भवेत् सा केवलिगम्यैवेति ॥ सू० ११६ ॥

भगवान् नियम से आत्मा के असंख्यातप्रदेशों द्वारा अनंत सिद्धों का स्पर्श करते हैं और (ते वि असंखेज्जगुणा) वे सब सिद्ध असंख्यातप्रदेशों से स्थित है। (देसपएसेहिं जे पुट्ठा) देश से एवं प्रदेशों से भी वे सिद्ध असंख्यातगुणित हे । मतलब इसका यह है कि समस्त आत्मप्रदेशों से वे अनंत सिद्ध स्पृष्ट हे । एक सिद्ध की आत्मा में अनंत सिद्धों की अवगाहना होने से, तथा एक एक देश से, एवं प्रदेश से वे सिद्ध अनंत हैं । द्व्यादिक प्रदेश के समुदाय का नाम देश, एवं अविभागी अंश का नाम प्रदेश है । एक एक सिद्ध असंख्यात देश और प्रदेशात्मक हैं । इसलिये मूल अनंत को असंख्यात एवं अनंत देश और प्रदेशों से गुणा करने पर कितनी राशि होगी यह बात सिर्फ केवली भगवान् द्वारा ही जानी जा सकती है ॥ सू० ११६ ॥

નિયમથી આત્માના અસંખ્યાત પ્રદેશો દ્વારા અનંત સિદ્ધોનો સ્પર્શ કરે છે, અને (ते वि असंखेज्जगुणा) તે બધા સિદ્ધ અસંખ્યાત પ્રદેશોથી સંસ્થિત છે (देसपएसेहिं जे पुट्ठा) દેશથી તેમજ પ્રદેશોથી પણ તે સિદ્ધો અસંખ્યાત ગણો છે એની મતલબ એવી છે કે સમસ્ત આત્મપ્રદેશોથી તે અનંત સિદ્ધો સ્પર્શાયેલા છે એક સિદ્ધના આત્મામાં અનંત સિદ્ધોની અવગાહના હોવાથી, તથા એક એક દેશથી, તેમજ પ્રદેશથી તે સિદ્ધો અનંત છે દ્વિ-આદિક પ્રદેશના સમુદાયનું નામ દેશ, તેમજ અવિભાગી અંશનું નામ પ્રદેશ છે એક એક સિદ્ધ અસંખ્યાત દેશ અને પ્રદેશાત્મક છે તે માટે મૂલ અનંતને અસંખ્યાત તેમજ અનંત દેશ તથા પ્રદેશોથી ગુણાકાર કરવાથી કેટલી રાશિ (જથ્થા) થશે તે વાત તો માત્ર કેવળી ભગવાન દ્વારાજ જાણી શકાય છે (સૂ૦ ૧૧૬)

मूलम्—असरीरा जीवघणा, उवउत्ता दंसणे य णाणे य।
सागारमणागारं, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥ सू० ११७ ॥
मूलम्—केवलणाणुवउत्ता, जाणंति सव्वभावगुणभावे ।
पासंति सव्वओ खलु, केवलदिट्ठीहिं णंताहिं ॥ सू० ११८ ॥

टीका—'असरीरा' इत्यादि। अशरीरा जीवघना उपयुक्ता दर्शने च ज्ञाने च। साकारमनाकार लक्षणमेतत्तु सिद्धानाम्॥ एतेषा पदाना व्याख्याऽस्यैवागमस्य उत्तरार्द्धे त्रिसप्ततितमसख्याके सूत्रे पूर्वमुक्ता ॥ सू० ११७ ॥

टीका—यदुक्तम्—'उवउत्ता दसणे य णाणे य' इति, तत्र ज्ञानदर्शनयो सर्वविषयतामुपदर्शयन्नाह—'केवलणाणुवउत्ता' इत्यादि। 'केवलणाणुवउत्ता' केवल—

'असरीरा जीवघणा' इत्यादि।

(असरीरा जीवघणा उवउत्ता दसणे य णाणे य) सिद्धों का लक्षणनिर्देश इस सूत्र मे कहा गया है। औदारिक आदि शरीर से रहित एव घनरूप आत्मप्रदेशवाले वे सिद्ध भगवान् केवलज्ञान एव केवलदर्शन से सदा उपयुक्त हे। (सागारमणागार) केवल ज्ञान की अपेक्षा वे साकार उपयोग से युक्त है, एव केवल दर्शन की अपेक्षा निराकारस्वरूप दर्शन से युक्त हैं। (लक्खणमेय तु सिद्धाण) यही सिद्धों का लक्षण है॥ सू० ११७॥

'केवलणाणुवउत्ता' इत्यादि।

(केवलणाणुवउत्ता जाणति सव्वभावगुणभावे) केवलज्ञानरूप उपयोग से युक्त वे सिद्ध भगवान् समस्त वस्तुओं के अनतगुण, एव उनकी अनतपर्यायों को युगपत् जानते

'असरीरा जीवघणा' ઇત્યાદિ

(असरीरा जीवघणा उवउत्ता दसणे य णाणे य) સિદ્ધોના લક્ષણનો નિર્દેશ આ સૂત્રમા કહેવામા આવ્યો છે. ઔદારિક આદિ શરીરથી રહિત તેમજ, ઘનરૂપ આત્મપ્રદેશવાળા તે સિદ્ધ ભગવાન્ કેવળજ્ઞાન તેમજ કેવળદર્શનથી સદા ઉપયુક્ત છે (सागारमणागार) કેવળજ્ઞાનની અપેક્ષાએ તેઓ સાકાર ઉપયોગથી યુક્ત છે, તેમજ કેવળદર્શનની અપેક્ષાએ નિરાકારસ્વરૂપ દર્શનથી યુક્ત છે (लक्खणमेय तु सिद्धाण) આ જ સિદ્ધોના લક્ષણ છે (સૂ ૧૧૭)

'केवलणाणुवउत्ता' ઇત્યાદિ

(केवलणाणुवउत्ता जाणति सव्वभावगुणभावे) કેવળજ્ઞાનરૂપ ઉપયોગથી

मूलम्---ण वि अत्थि माणुसाणं,तं सोक्खं ण वि य सव्वदेवाणं।
जं सिद्धाणं सोक्खं, अव्वावाहं उवगयाणं ॥सू० ११९ ॥

ज्ञानोपयुक्ता सन्तस्ते सिद्धा 'सव्वभावगुणभावे' सर्वभावगुणभावान्=समस्तवस्तुगुणपर्यायान 'जाणंति' जानन्ति, तत्र-गुणा -सहवर्तिन , पर्यायास्तु-क्रमवर्तिन इति । तथा 'णताहिं' अनन्ताभि 'केवलदिट्ठीहिं' केवलदृष्टिभि , अनन्तै केवलदर्शनैरित्यर्थ , 'सव्वओ' सर्वत सर्वभावान् खलु=निश्चयेन 'पासति' पश्यन्ति ॥ सू० ११७ ॥

टीका--सिद्धाना सुख वर्णयति--'ण वि' इत्यादि । 'अव्वाबाह' अव्याबाध=सकल दु खवर्जित मोक्षस्थानम् 'उवगयाण' उपगताना=प्राप्ताना, 'सिद्धाणं' सिद्धानाम् 'ज' यत 'सोक्ख' सौख्यम 'अत्थि' अस्ति, 'त' तत 'सोक्ख' सौख्य 'ण वि माणुसाण' नापि मनुष्याणामस्ति, 'ण वि य सव्वदेवाण' नापि च सर्वदेवानाम् ॥ सू० ११९ ॥

है। (पासति सव्वओ खलु केवलदिट्ठीहिं णताहिं) अनतकेवलदृष्टिस्वरूप अनतदर्शन से युक्त वे सिद्ध भगवान् , युगपत् समस्त भावों को उनकी गुणपर्यायासहित देखते हे । वस्तु मे त्रिकाल उसके साथ रहने वाले गुण होते हैं । एव क्रमवर्ती पर्याय होती हे ॥ सू ११७ ॥

'णवि अत्थि' इत्यादि ।

(ज सिद्धाण सोक्ख अव्वाबाह उवगयाण) सकल दु खो स वर्जित एसे मोक्षस्थान म प्राप्त हुए सिद्धों को जो सुख है, (ण वि अत्थि माणुसाण त सोक्खं ण वि य सव्वदेवाण) वह सुख त्रैलोक्य म न तो मनुष्य को है, और न सर्व देवों को है ॥ सू ११९ ॥

युक्त ते सिद्ध भगवान समस्त वस्तुओना अनतगुण, तेमज तेमनी अनत पर्यायोने એકીસાથે જાણે છે (पासति सव्वओ खलु केवलदिट्ठीहिं णताहिं) अनत કેવળદૃષ્टिस्वરૂપ અનતદર્શનથી યુક્ત તે સિદ્ધ ભગવાન એકીસાથે સમસ્ત ભાવોને તેમની ગુણ-પર્યાયો-સહિત જુએ છે વસ્તુમા ત્રિકાળ તેની સાથે રહેવાવાળા ગુણ હોય છે, તેમજ ક્રમવર્તી પર્યાય હોય છે (સૂ ११८)
' णवि अत्थि ' ઈત્યાદિ

(ज सिद्धाण सोक्ख अव्वाबाह उवगयाण) સકલ દુ ખોથી વર્જિત એવા મોક્ષસ્થાન પ્રાપ્ત કરેલા સિદ્ધોને જે સુખ છે, (ण वि अत्थि माणुसाण त सोक्ख ण वि य सव्वदेवाण) તે સુખ ત્રણ લોકમાય નથી કોઈ મનુષ્યને કે નથી સર્વ દેવોને હોતુ (સૂ ११९)

मूलम्—जं देवाणं सोक्खं, सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं।
ण य पावइ मुत्तिसुहं, णंतेहिं वग्गवग्गेहिं ॥ सू० १२० ॥

टीका—कस्मादेव सुखं भवतीत्यत आह–'जं देवाणं' इत्यादि। 'जं' यत् 'देवाणं' देवानाम्=अनुत्तरसुरान्तानां 'सोक्खं' सौख्यं=त्रैकालिकसुखं, तदपि 'सव्वद्धापिंडियं' सर्वाद्धापिण्डितम्–सर्वाऽद्धया=अतीताऽनागतवर्तमानकालेन पिण्डितम्=गुणितं, तथा 'अणंतगुणं' अनन्तगुणमिति, तदेव प्रमाणं किंचाऽसत्कल्पनया एकैकाऽऽकाशप्रदेशे स्थाप्यते, इत्येवं सकललोकाकाशानन्तप्रदेशपूरणेनाऽनन्तं भवति, एवंभूतं देवसुखं 'ण य पावइ मुत्तिसुहं' न च प्राप्नोति मुक्तिसुखं=नैव मुक्तिसुखसमानतां लभते, अनन्ताऽनन्तत्वात् सिद्धसुखस्य। किंविधं देवसुखमित्याह–'णंतेहिं वग्गवग्गेहिं' अनन्तैर्वर्ग-

'जं देवाणं सोक्खं' इत्यादि।

(जं देवाणं सोक्खं सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं) जो सर्व देवों का त्रैकालिक सुख है उसे अनन्तगुणा किया जाय तो भी वह (ण य पावइ मुत्तिसुहं णंतेहिं वग्गवग्गेहिं) सिद्ध भगवान् के एक क्षणोद्भव सुख की बराबरी नहीं कर सकता है। इसे यों समझना चाहिये कि सर्वदेवों का त्रैकालिक सुख एक २ आकाश के-प्रदेश पर स्थापित करते २ आकाश के अनंत प्रदेश उस सुख से जब भर जाये तब उन समस्त–प्रदेशस्थ सुखों का परस्पर में गुणा करो। इस प्रकार यह देवसुख अनंतगुणित हो जाता है। यह अनंतगुणित सुख भी सिद्धों के एक क्षण में होनेवाले सुख की समता नहीं कर सकता। कारण कि उनका सुख अनंतानंत है। देवों का सुख अनंतवर्गों से वर्गित बतलाया गया है। वर्ग

'जं देवाणं सोक्खं' ઈત્યાદિ

(जं देवाणं सोक्खं सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं) જે સર્વ દેવોનું ત્રણ કાળનું સુખ છે તેને અનંતગણું કરવામાં આવે તો પણ તે, (ण य पावइ मुत्तिसुहं णंतेहिं वग्गवग्गेहिं) સિદ્ધ ભગવાનના એક ક્ષણથી ઉત્પન્ન થતા સુખની બરાબરી કરી શકતું નથી આથી એમ સમજવું જોઈએ કે સર્વદેવોનું ત્રણ કાળનું સુખ એક એક આકાશના પ્રદેશ ઉપર સ્થાપિત કરો એ રીતે સ્થાપિત કરતાં કરતાં આકાશના અનંત પ્રદેશ તે સુખથી જ્યારે ભરાઈ જાય ત્યારે તે સમસ્ત પ્રદેશમાં રહેલા સુખોનો પરસ્પરમાં ગુણાકાર કરો એ પ્રકારે તે દેવસુખ અનંતગણું થઈ જાય છે આ અનંતગણું સુખ પણ સિદ્ધોના એકક્ષણમાં થવાવાળા સુખની બરાબરી કરી શકતા નથી કારણ કે તેમના સુખ અનંતાનંત છે દેવોના સુખ અનંત વર્ગોથી વર્ગિત બતાવ્યા

**मूलम्—सिद्धस्स सुहो रासी, सव्वद्धापिंडिओ जइ हवेज्जा।
सोऽणंतवग्गभइओ, सव्वागासे ण माएज्जा ॥ सू० १२१ ॥**

वर्गे =अनन्तैरपि वर्गवर्गे, तत्र तद्गुणो वर्गो, यथा द्वयोर्वर्गश्चत्वार, तस्यापि वर्गो वर्गवर्गो, यथा षोडश, एवमनन्तशो वर्गितमपी यर्थ ॥ सू १२० ॥

टीका—'सिद्धस्स' इत्यादि। 'सिद्धस्स' सिद्धस्य 'सुहो' सुख=सुख सम्बन्धी 'रासी' राशि =समूह, स च—'सव्वद्धापिंडिओ' सर्वाद्धापिण्डित —सर्वाद्धाभि = सर्वकालसमयै पिण्डितो=गुणितो 'जइ हवेज्जा' यदि भवेत्, 'सो' स पुन· 'अणतवग्गभइओ' अनन्तवर्गभक्त =अनन्तवर्गैर्विभागीकृत, 'सव्वागासे' सर्वाऽऽकाशे=लोकाऽलोकरूपे 'ण माएज्जा' न मायात्—न स्यातु शक्नुयात। अय भाव —इह किल निरुपम सुख गृह्यते, तनश्च यत आरभ्य लोक सुखशब्दप्रवृत्ति, तदवधीकृत्य एकैकगुणवृद्धितारतम्येन तावत् तत् सुख

के वर्ग करने का नाम वर्गवर्ग है। जिस प्रकार दो का वर्ग ४, और चार का वर्ग १६ होता है। १६ वर्गवर्ग है ॥ सू १२० ॥

'सिद्धस्स सुहो रासी' इत्यादि।

(**सिद्धस्स सुहो रासी सव्वद्धापिंडिओ जइ हवेज्जा**) सिद्ध भगवान के सुख की जो राशि है वह सर्वकाल के समयो से यदि गुणित की जाय, और (**सोऽणतवग्ग-भइओ**) उस उत्पन्न महाराशि मे अनन्त वर्गो मे भाग दिया जाय, तो भी (**सव्वागासे ण माएज्जा**) वह सिद्धो के सुखो की विभक्त सुखराशि समस्त आकाश मे नहीं समा सकती है। मतलब इसका यह है कि लोक मे जो सुख—शब्द से कहा जाता है उस सुख में एक-एक गुण की क्रमिक वृद्धि से जब वह सुख अनन्तगुण वृद्धि पाकर अपनी अन्तिम अवधि

છે વર્ગનો વર્ગ કરે તેનુ નામ વર્ગવર્ગ છે જે પ્રકારે ૨ નો વર્ગ ૪, અને ચારનો વર્ગ ૧૬ થાય છે ૧૬ વર્ગ—વર્ગ છે (સૂ ૧૨૦)

'सिद्धस्स सुहो रासो' ઇત્યાદિ

(सिद्धस्स सुहो रासी सव्वद्धापिंडिओ जइ हवेज्जा) સિદ્ધ ભગવાનના સુખની જે રાશિ છે તેને સર્વકાળના સમયોથી જો ગુણવામા આવે અને (सोऽणतवग्गभइओ) તેનાથી ઉત્પન્ન થયેલી તે મહારાશિને અનત વર્ગથી ભાગી દેવામા આવે તો પણ (सव्वागासे ण माएज्जा) તે સિદ્ધોના સુખોની ભાગલબ્ધ સુખરાશિ સમસ્ત આકાશમા સમાઇ શકતી નથી આનો અભિપ્રાય એ છે કે લોકમા જે સુખ—શબ્દથી કહેવાય (મનાય) છે તે સુખમા એક એક ગુણની ક્રમિક વૃદ્ધિથી જ્યારે તે સુખ અનન્તગુણ વૃદ્ધિ

मूलम्—जह णाम कोइ मिच्छो, नगरगुणे बहुविहे वियाणंते। न चएइ परिकहेउं, उवमाए तहिं असंतीए॥ सू० १२२॥

विशिष्यत यावदनन्तगुणवृद्ध्या चरमावधिं प्राप्त भवति। ततश्च तदत्यन्तनिरुपममौत्सुक्य-वृत्तिनिरहित प्रशान्तमहोदधितुल्य चरमाह्लादस्वरूपम्। तस्माच्चरमाह्लादात् पूर्वं प्रथमाद्यानन्त-रमपान्तरालवर्त्तिनो ये तारतम्येनाह्लादविशेषास्ते सर्वाकाशप्रदेशराशेरपि भूयांसो भवन्तीत्यत किलोक्तम्–'सव्वागासे ण माएज्जा' इति, अन्यथा प्रतिनियतदेशावस्थिति कथं तेषामिति सूरयोऽभिदधतीति॥ सू १२१॥

टीका—'जह णाम' इत्यादि। 'जह णाम' यथानाम=यथादृष्टान्तम्–दृष्टान्त-मनुसृत्य कथयामीत्यर्थः, 'कोइ मिच्छो' कश्चिन्म्लेच्छो 'बहुविहे' बहुविधान् **'नगरगुणे'** नगरगुणान् **'वियाणते'** विजानन्नपि **'परिकहेउ'** परिकथयितु=वर्णयितु **'न चएइ'** न शक्नोति, कथं न शक्नोति? इत्याह–**'उवमाए'** इत्यादि। **'उवमाए तहिं**

को प्राप्त होता है, तब वह अत्यन्त अनुपम, उत्कण्ठा की वृत्ति से रहित, और प्रशान्त समुद्र के समान गम्भीर चरमसुखस्वरूप हो जाता है। उस चरम सुख से पहले और प्रथम सुख के बाद के जो मध्यवर्त्ती तरतमता से युक्त सुखविशेष है, वे सभी सर्वाकाशप्रदेशों से भी अधिक है। इसीलिये कहा गया है– **'सव्वागासे ण माएज्जा'** अर्थात् सिद्धों का अनन्तवर्ग–विभक्त भी सुख, समस्त आकाश मे नही समा पाता है॥ सू १२१॥

'जह णाम कोइ मिच्छो' इत्यादि।

दृष्टान्त देकर इसी विषय को स्पष्ट करते है–(**जह णाम कोइ मिच्छो नगरगुणे बहुविहे वियाणंते**) जैसे कोई म्लेच्छ बहुत प्रकार के नगरगुणों को जानता हुआ भी (न

પામીને પોતાની અંતિમ અવધિને પ્રાપ્ત થાય છે, ત્યારે તે અત્યન્ત અનુપમ, ઉત્કંઠાની વૃત્તિથી રહિત અને પ્રશાન્ત સમુદ્ર સમાન ગંભીર ચરમસુખરૂપ થાય છે તે ચરમ સુખથી પૂર્વ અને પ્રથમ સુખના પછી મધ્યવર્તી, તારતમ્યથી યુક્ત જે સુખવિશેષ છે, તે સુખો સઘળા આકાશ પ્રદેશોની અપેક્ષાએ પણ અધિક છે એ માટે જ કહેવામાં આવ્યું છે કે 'सव्वागासे ण माएज्जा' એટલે સિદ્ધોના અનંતવર્ગવિભક્ત સુખ પણ સઘળા આકાશ પ્રદેશોમાં સમાઈ શકતું નહિ (સૂ ૧૨૧)

'जह णाम कोइ मिच्छो' ઇત્યાદિ

દૃષ્ટાન્ત દઈને એજ વિષય સ્પષ્ટ કરે છે (जह णाम कोइ मिच्छो नगर-गुणे बहुविहे वियाणते) જેમ કોઈ એક મ્લેચ્છ બહુ પ્રકારના નગરગુણોને

अमतीए' उपमाया =सादृश्यस्य तत्र वने असत्त्वात्=अमद्भावादिति। एवमत्र कथानकम्—कश्चिन्नृपतिर्दुष्टाऽश्वारूढ सन् पवनसेवनार्थं वनं जगाम, तत्र चाश्वस्य दुर्जानित्वेन परिश्रान्तो वनेऽश्वादवतीर्णः। तत्रैकेन वनवासिना म्लेच्छेन भूपतिः सत्कृत। ततोऽसौ नृपतिस्तं म्लेच्छं निजराजधानीमानीय विशिष्टभोगभूतिभाजनं कृतवान्। एकदाऽसौ म्लेच्छः प्रावृषि प्राप्तायां मनोहरं मेघध्वनिं श्रुत्वा वनं गन्तुमुत्कण्ठितोऽभवत्। राजा सम्मानपूर्वकं विसर्जितः सन्नसौ वनं

य चएइ परिकहेउ) उसका वर्णन वन में नहीं कर सकता है, क्योंकि (उवमाए तहिं असतीए) उपमा का वहां अभाव है।

यहाँ इस प्रकारकी एक कथा है।

कोई एक राजा वायु सेवन के लिये घोडे पर सवार हुआ। वह घोडा महादुर्दान्त था। इसलिये चलते २ उसे यह भय लग रहा था कि कहीं यह मुझे पटक न दे, अतः उसे रोकते २ वह थक गया और किसी जंगल में जाकर वह उससे नीचे उतर पडा। इतने में एक भील ने उसे देखा और सहसा पास आकर उसने थके हुए राजा की सेवा-शुश्रूषा से थकावट दूर की। राजा बडा खुश हुआ, और उसे अपने साथ लेकर वह अपनी राजधानी को वापिस लौट आया। वहां राजा ने राजसी ठाट-बाट के अनुसार उसे खूब आनन्द से रखा। खाने-पान के लिये उसे ऐसे २ भोज्य पदार्थ दिये कि जो उसने अपने जीवन में कभी देखे तक भी नहीं थे। रहते २ जब कुछ समय व्यतीत हो गया तब वर्षाकाल के आने पर उसे अपने स्थान पर जाने की उत्कंठा जगी।

જાણતો થકો પણ (न य चएइ परिकहेउ) તેનું વર્ણન વનમાં કરી શકતો નથી, કેમકે (उवमाए तहिं असतीए) ઉપમાનો ત્યાં અભાવ છે

અહીં આ પ્રકારની એક વાર્તા છે

કોઈ એક રાજા વાયુસેવન (ફરવા) માટે ઘોડા ઉપર સવાર થઈને મહેલમાંથી બહાર નીકળ્યો. જે ઘોડા ઉપર તે સવાર થયો હતો તે મહા દુર્દાન્ત (મુશ્કેલીથી વશ થાય તેવો) હતો. તેથી ચાલતા ચાલતા તેને એ ભય લાગતો હતો કે કયાંક આ મને પાડી તો નહિ દે ?, આથી તેને રોકતા રોકતા તે થાકી ગયો, અને કોઈ જંગલમાં જઈને તેના ઉપરથી તે નીચે ઉતર્યો એટલામાં એક ભીલે તેને જોયો અને તરત જ પાસે આવીને તેણે થાકેલા રાજાની સેવા-શુશ્રૂષા કરી થાક ઉતાર્યો રાજા બહુ ખુશી થયો અને તેને પોતાની સાથે લઈ ને તે પોતાની રાજધાનીએ પાછો આવ્યો ત્યાં રાજાએ પોતાના રાજસી ઠાઠમાઠપૂર્વક તેને ખૂબ આનંદથી રાખ્યો ખાવા-પીવાને માટે તેને એવા એવા તો ભોજ્ય પદાર્થ આપ્યા કે જે તેણે તેની જીંદગીમાં કદીએ જોયા પણ નહોતા આમ રહેતા રહેતા કેટલોક સમય વીતી ગયો અને વરસાદનો સમય આવ્યો ત્યારે તેને પોતાના સ્થાન પર જવાની ઉત્કંઠા

मूलम्—इय सिद्धाणं सोक्खं, अणोवम णत्थि तस्स ओवम्मं।

स्वावासस्थानमागत । अथ स्वपरिवारस्तं पृच्छति स्म–हे तात ! कीदृशम् तद् भूपनगरम् ? इति । स म्लेच्छस्तस्य भूपनगरस्य सर्वान् बहुविधान् नगरगुणान् विजानन्नपि तान् वक्तु कृतोद्यमोऽपि तत्र वने नगरसादृश्यस्याभावाद् वर्णयितु नाशक्नोदिति ॥ सू० १२२ ॥

टीका—'इय' इत्यादि । इय' इति=एवम्–अनेन प्रकारेण' सिद्धाण' सिद्धाना 'सोक्ख' सौख्यम्, 'अणोवम' अनुपम वर्तते, कुत ? यतस्तस्य 'ओवम्मं णत्थि' औपम्य

राजा को जब यह ज्ञात हुआ तब उसने उसको खूब आदर–सत्कार के साथ बिदा किया। चलते २ वह अपने घर पर आ गया। सब कुटुम्बी जन इससे मिलने को आने लगे। लोगों ने पूछा, कहो भाई! राजा के निकट कैसे रहे ?, राजा का वह नगर कैसा है ?। भील ने जो कि उस राजा के नगर की सब प्रकार की श्री से परिचित हो चुका था, राजधानी का वर्णन करने का उद्यम तो किया, परन्तु वह अपने उन भील–भाइयों के समक्ष यथावत् उसका वर्णन नहा कर सका। कारण कि उस वन में नगर के वर्णन से मिलनेवाली उपमेय वस्तुओं का अभाव था। इस दृष्टान्त का भाव इस प्रकार समझना चाहिये कि वह भील नगर मे अनुभवित आनन्दका अपने अन्य भाइयों के समक्ष उस जगल में उस प्रकार की वस्तु के अभाव से वर्णन नहीं कर सका। उस सुख की कुछ भी उपमा नहीं बता सका ॥ सू १२२ ॥

જાગૃત થઇ જ્યારે આ વાત રાજાના જાણવામા આવી ત્યારે તેણે તેને ખૂબ આદર–સત્કારની સાથે વિદાયગિરી આપી ચાલતા ચાલતા તે પોતાને ઘેર પહોચ્યો બધા કુટુબી માણસો તેને મળવાને આવવા લાગ્યા લોકોએ પૂછયુ કે, કહો ભાઈ, રાજાની પાસે તમે કેવી રીતે રહ્યા હતા?, રાજાનુ તે નગર કેવુ છે? ભીલ જો કે તે રાજાના નગરની બધી જાતની શ્રી (વૈભવ શોભા) થી પરિચિત થઇ ગયો હતો, અને રાજધાનીનુ વર્ણન કરવાનો તેણે ઉદ્યમ (પ્રયત્ન) તો કર્યો, પરતુ તે પોતાના ભીલ ભાઇઓની સમક્ષ યથાવત્ (જોઇએ તેવુ) તેનુ વર્ણન કરી શકયો નહિ, કારણ કે તે વનમા નગરના વર્ણન સાથે મેળખાય જેવી ઉપમા આપવા યોગ્ય વસ્તુઓનો અભાવ હતો આ દૃષ્ટાતનો ભાવ એવી રીતે સમજવો જોઈએ કે તે ભીલ જે પ્રકારે અનુભવેલ આનદને પોતાના બીજા ભાઈઓની સમક્ષ વર્ણન કરવા જતા પણ તે જગલમા એવા પ્રકારની વસ્તુઓના અભાવથી પોતે ભોગવેલા આનદનો અનુભવ કરાવી શકયો નહિ તે સુખની કોઈ પણ ઉપમા બતાવી શકયો નહિ. (સૂ ૧૨૨)

किंचि विसेसेणेत्तो, ओवम्ममिणं सुणह वोच्छं ॥ सू० १२३ ॥

मूलम्—जह सव्वकामगुणियं, पुरिसो भोत्तूण भोयणं कोई।
तण्हाछुहाविमुक्को, अच्छेज्ज जहा अमियतित्तो ॥ सू० १२४ ॥

नास्ति, तथापि बालाना बोधार्थमाह—'किंचि' इत्यादि। 'किंचि विसेसेण' किञ्चिद्विशेषेण 'एत्तो' इत =अत परम् 'ओवम्म' औपम्यम्=उपमानम् 'इण' इदं=वक्ष्यमाण 'सुणह' शृणुत, 'वोच्छं' वक्ष्ये—अहं कथयिष्यामीत्यर्थ ॥ सू १२३ ॥

टीका—'जह' इत्यादि। 'जह' यथा 'कोई पुरिसो' कोऽपि पुरुष, 'सव्वकामगुणिय' सर्वकामगुणित=सर्वाभिलषणीयरसादिसम्पन्न, 'भोयण' भोजनम्=अशनादिरूपम्, 'भोत्तूण' भुक्त्वा, 'तण्हाछुहाविमुक्को' तृष्णाक्षुधाविमुक्त =पिपासाबुभुक्षारहित 'अमि-

'इय सिद्धाण सोक्ख' इत्यादि।

(इय सिद्धाणं सोक्ख) इसी प्रकार सिद्धों का सुख यद्यपि (अणोवम) अनुपम है, अत (णत्थि तस्स ओवम्म) उसकी किसी भी सासारिक पदार्थ के साथ उपमा नहीं दी जा सकती है, तो भी (किंचि विसेसेणेत्तो ओवम्ममिण सुणह वोच्छ) बालजीवों को बोधन करने के लिये कुछ विशेषरीति से सिद्धों के इस सुख को उपमा देकर समझाया जाता है ॥ सू १२३ ॥

'जह सव्वकामगुणियं' इत्यादि।

(जह सव्वकामगुणिय पुरिसो भोत्तूण भोयणं कोई) कोई पुरुष पाचों इन्द्रियों को तृप्त करनेवाले काम—शब्द, रूप, और भोग—गंध, रस, स्पर्श आदि विषयों को यथेच्छरीति से भोगकर (तण्हाछुहाविमुक्को) पिपासा एव बुभुक्षा से रहित (अमियतित्तो

'इय सिद्धाण सोक्ख' ઇત્યાદિ

(इय सिद्धाण सोक्ख) આ પ્રકારે સિદ્ધોનુ સુખ જો કે (अणोवम) અનુપમ છે, તેથી (णत्थि तस्स ओवम्म) તેની ઉપમા કોઈ પણ સાંસારિક પદાર્થના સુખની સાથે આપી શકાતી નથી તો પણ (किंचि विसेसेणेत्तो ओवम्ममिण सुणह वोच्छ) બાલજીવોને બોધન કરવા માટે કંઈક વિશેષ રીતથી સિદ્ધોના આ સુખની ઉપમા દઈ ને સમજાવવામા આવે છે (સૂ.૧૨૩)

'जह सव्वकामगुणिय' ઇત્યાદિ

(जह सव्वकामगुणिय पुरिसो भोत्तूण भोयण कोई) જેમ કોઈ પુરુષ પાંચેય ઇન્દ્રિયોને તૃપ્ત કરવા વાળા કામ—શબ્દ, રૂપ, અને ભોગ—ગંધ, રસ, સ્પર્શ

मूलम्—इय सव्वकालतित्ता, अउलं निव्वाणमुवगया सिद्धा।
सासयमव्वाबाहं, चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ॥ सू० ॥ १२५
मूलम्—सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य, पारगयत्ति य परंपरगयत्ति।

यतित्तो' अमृततृप्तो 'जहा' यथा=इव, 'अच्छेज्ज' आसीत=तिष्ठेत् ॥ सू. १२४ ॥

टीका—'इय' इत्यादि। 'इय' इति=एवं 'सव्वकालतित्ता' सर्वकालतृप्ताः—अपुनरावृत्तिस्थान प्राप्तत्वात्, 'निव्वाण' निर्वाण=मोक्षम् 'उवगया' उपगता 'सिद्धा' सिद्धाः, 'अउल' अतुलम्=अनुपमम् 'सासय' शाश्वत=सार्वकालिकम्, 'अव्वाबाह' अव्याबाध=सर्वदुःखविवर्जित 'सुह' सुख 'पत्ता' प्राप्ताः, अत 'सुही चिट्ठति' सुखिनस्तिष्ठन्ति, ननु 'सुख प्राप्ता' इत्युक्ते 'सुखिन' इति किमर्थम्?, अत्रोच्यते—केचिन्मन्यन्ते दुःखाभावमात्र मुक्तिरिति, तन्मतनिराकरणार्थं मोक्षस्य वास्तविकसुखस्वरूपताप्रतिबोधनार्थं च 'सुख प्राप्ता सुखिनस्तिष्ठन्ती'-त्युक्तम् ॥ सू. १२५ ॥

टीका—साम्प्रत वस्तुत सिद्धपर्यायशब्दान् प्रतिबोधयन्नाह—'सिद्धत्ति' इत्यादि।

जहा) अमृतपान से तृप्त के समान (अच्छेज्ज) रहता है ॥ सू. १२४ ॥

'इय सव्वकालतित्ता' इत्यादि।

(इय सव्वकालतित्ता) अपुनरावृत्तिस्वरूप मुक्तिस्थान को प्राप्त होने के कारण सर्वकाल तृप्त हुए (निव्वाणमुवगया सिद्धा) वे सिद्ध भगवान्, शारीरिक एव मानसिक दुःखो से सर्वथा रहित होकर (अउल अव्वाबाह चिट्ठति सुही सुह पत्ता) अनुपम, शाश्वत एव अव्याबाध सुख को भोगते हुए उस मुक्तिस्थान मे सदाकाल—अनन्तकाल तक सुखी ही सुखी रहते हैं ॥ सू. १२५ ॥

આદિ વિષયોને યથેચ્છરૂપે ભોગવીને (तण्हाछुहाविमुक्को) પિપાસા તેમજ બુભુક્ષા (ભૂખ-તરસ) થી રહિત (अमियतित्तो जहा) અમૃતપાનથી તૃપ્તની જેમ (अच्छेज्ज) રહે છે (સૂ. ૧૨૪)

'इय सव्वकालतित्ता' ઇત્યાદિ

(इय सव्वकालतित्ता) અપુનરાવૃત્તિસ્વરૂપ મુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત થવાના કારણે સર્વકાલ તૃપ્ત થયેલા (निव्वाणमुवगया सिद्धा) તે સિદ્ધ ભગવાન શારીરિક તેમજ માનસિક દુઃખોથી સર્વથા રહિત થઇને (अउल अव्वाबाह चिट्ठति सुही सुह पत्ता) અનુપમ, શાશ્વત તેમજ અવ્યાબાધ સુખને ભોગવતા તે મુક્તિ સ્થાનમા સદાકાલ-અનંતકાલ સુધી સુખી રહે છે (સૂ. ૧૨૫)

मूलम्—णिच्छिण्णसव्वदुक्खा, जाइजरामरणबंधणविमुक्का ।
उमुक्ककम्मकवया, अजरा अमरा असंगा य ॥सू० १२६ ॥

'सिद्धत्ति य' सिद्धा इति च–तेषां नाम, कृतकृत्यत्वात्, 'बुद्धत्ति य' बुद्धा इति च–केवलज्ञानेन निखिलावबोधात्, 'पारगयत्ति य' पारगता इति च–भवसागरपारगमनात्, 'परपरगयत्ति य' परंपरगता=मिथ्यात्वादिचतुर्दशगुणस्थानकानां मनुष्यादिसुगतीनां च पारम्पर्येण भवसिन्धुपारं प्राप्ता इति, 'उम्मुक्ककम्मकवया' उन्मुक्तकर्मकवचा=कर्मकवचवर्जिता 'अजरा' अजरा–वयसोऽभावात्, 'अमरा' अमरा–आयुषोऽभावात्, 'असंगा य' असङ्गाश्च सकलक्लेशरहितत्वात् ॥ सू. १२६ ॥

टीका—'णिच्छिण्ण' इत्यादि । 'णिच्छिण्णसव्वदुक्खा' निस्तीर्णसर्वदुःखा–

'सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य' इत्यादि ।

(सिद्धत्ति य) कृतकृत्य होने से वे सिद्ध कहे जाते हैं । (बुद्धत्ति य) केवलज्ञान से सकल लोकालोक के ज्ञाता होने से वे बुद्ध कहे जाते हैं । (पारगयत्ति य) भवरूप समुद्र से पारगत हो जाने के कारण वे पारगत कहे जाते हैं । (परपरगयत्ति य) मिथ्यात्व–आदि चौदह गुणस्थानकों और मनुष्य–आदि सुगतियों की परम्परा से भवसिन्धु को पार करने के कारण वे परंपरगत कहे जाते हैं । (उम्मुक्ककम्मकवया अजरा अमरा असगा य) कर्मरूप कवच से वर्जित होने के कारण, एव आयु कर्म का सर्वथा प्रक्षय हो जाने के कारण वे अमर कहे जाते हैं । तथा सकलक्लेशों से रहित होने के कारण वे असग कहे जाते हैं । ये सिद्ध, बुद्ध, आदि सब शब्द, पर्यायवाची शब्द हैं ॥ सू १२६ ॥

'सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य' ઇત્યાદિ

(सिद्धत्ति य) કૃતકૃત્ય હોવાથી તેમને સિદ્ધ કહેવામા આવે છે (बुद्धत्ति य) કેવળજ્ઞાનથી સકલ લોકાલોકના જ્ઞાતા હોવાના કારણે બુદ્ધ કહેવામા આવે છે (पारगयत्ति य) ભવરૂપ સમુદ્રથી પારગત થઈ જવાના કારણે તેમને પારગત કહેવામા આવે છે (परपरगयत्ति य) મિથ્યાત્વ–આદિ ચૌદ ગુણસ્થાનકો અને મનુષ્ય આદિ સુગતિઓની પરંપરાથી ભવસિંધુને પાર કરવાને કારણે તે પરંપરગત કહેવાય છે (उम्मुक्ककम्मकवया अजरा अमरा असगा य) કર્મરૂપ કવચથી વર્જિત હોવાના કારણે તેમજ આયુકર્મનો સર્વથા ક્ષય થઈ જવાના કારણે તેઓને અમર કહેવામા આવે છે, તથા સકલ ક્લેશોથી રહિત હોવાના કારણે અસંગ કહેવામા આવે છે આ સિદ્ધ બુદ્ધ આદિ બધા શબ્દો પર્યાયવાચી શબ્દ છે (સૂ ૧૨૬)

अव्वाबाहं सुक्खं, अणुहोंती सासयं सिद्धा ॥ सू० १२७॥

मूलम्——अतुलसुखसागरगया, अव्वाबाहं अणोवमं पत्ता ।
सव्वमणागयमद्धं, चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ॥ सू० १२८ ॥

॥ ओवाइय समत्त ॥

निस्तीर्णानि सर्वदु खानि यैस्ते तथा—शारीरमानससकलदु खान्यतिक्रान्ता , पुन —'जाइजरामरणबंधणविमुक्का' जातिजरामरणबन्धनविमुक्ता =जन्मवार्धक्यमृत्युकर्मबन्धनरहिता 'सिद्धा' सिद्धा 'अव्वाबाह' अव्याबाध=व्याघातवर्जित 'सासयं' शाश्वत=सार्वकालिक 'सोक्खं' सौख्यम् 'अणुहोंती' अनुभवन्ति ॥ सू १२७ ॥

टीका—'अतुलसुख'—इत्यादि । 'अतुलसुखसागरगया' अतुलसुखसागरगता — अतुल =अनुपमो य सुखसागर =सुखसमुद्रस्त गता =प्राप्ता , पुन 'अव्वाबाह' अव्या-

'णिच्छिण्णसव्वदुक्खा' इत्यादि ।

(सिद्धा) ये सिद्ध भगवान् (णिच्छिण्णसव्वदुक्खा) समस्त दु खों के अतिक्रमण, तथा (जाइजरामरणबधणविमुक्का) जन्म, जरा एव मरण के बन्धनों से निर्मुक्त हो जाने के कारण, (सासय अव्वाबाह सुक्ख अणुहोंती) शाश्वत एवं अव्याबाध सुख का अनन्त काल तक अनुभव करते रहते है ॥ सू १२७ ॥

'अतुलसुखसागरगया' इत्यादि ।

(अतुलसुखसागरगया) अनुपम सुख सागर मे मग्न वे सिद्ध भगवान्,

'णिच्छिण्णसव्वदुक्खा' ઇત્યાદિ

(सिद्धा) એ સિદ્ધ ભગવાન (णिच्छिण्णसव्वदुक्खा) સઘળા દુ ખોના અતિક્રમણ, તથા (जाइजरामरणबधणविमुक्का) જન્મ, જરા તેમજ મરણના બ ધનોથી નિર્મુ ક્ત થઈ જવાના કારણે (सासय अव्वाबाह सुक्ख अणुहोंती) શાશ્વત તેમજ અવ્યાબાધ સુખનો અન ત કાલ સુધી અનુભવ કરતા રહે છે (સૂ ૧૨૭)

'अतुलसुखसागरगया' ઇત્યાદિ

(अतुलसुखसागरगया) અનુપમ સુખના સાગરમા મગ્ન તે સિદ્ધ ભગવાન, (अव्वाबाह अणोवम पत्ता) તે પ્રાપ્ત કરેલા મુક્તિસ્થાનમા (सव्वमणा-

बाध=व्याघातवर्जितम् 'अणोवमं' अनुपमम्=सादृश्यवर्जित सिद्धिस्थान 'पत्ता' प्राप्ता =अधिष्ठिता सिद्धा, 'सुह पत्ता' सुखं प्राप्ता =सुखमधिगता, अतएव 'सुही' सुखिन सन्त 'सव्वमणागयमद्धं' सर्वमनागताद्धं=सर्वं भविष्यत्काल 'चिट्ठंति' तिष्ठन्तीति ॥ सू. १२८ ॥

॥ औपपातिक समाप्तम् ॥

॥ इति श्रीविश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचक–पञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक–प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक – वादिमानमर्दक – श्रीशाहूछत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त–'जैनशास्त्राचार्य'-पदभूषित–कोल्हापुरराजगुरु–बालब्रह्मचारि–जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकर–पूज्य–श्रीघासीलालव्रतिविरचिता औपपातिक–सूत्रस्य पीयूषवर्षिण्याख्या व्याख्या सम्पूर्णा ॥

(अव्वाबाह अणोवम पत्ता) प्राप्त हुए उस मुक्ति स्थान में (सव्वमणागयमद्धं चिट्ठति सुही सुह पत्ता) अनन्तकाल तक सदा सुखी ही रहते हैं। ॥ सू. १२८ ॥

॥ इति औपपातिकसूत्र का हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण ॥

गयमद्ध चिट्ठति सुही सुह पत्ता) અનંતકાળ સુધી સુખીજ રહે છે (સૂ ૧૨૮)

ઈતિ ઔપપાતિક સૂત્રનો ગુજરાતી અનુવાદ સંપૂર્ણ

દાનવીરોની નામાવલી

*

શ્રી અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી
જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ.

*

ગરેડીયા કુવા રોડ-ગ્રીન લોજ પાસે,

રા જ કો ટ

*

શરૂઆત તા. ૧૮-૧૦-૪૪ થી તા ૧૦-૧૨-૫૮ સુધીમાં
દાખલ થયેલ મેમ્બરોનાં મુબારક નામો

*

ગામવાર કક્કાવારી લિસ્ટ.

*

(રૂા. ૨૫૦ થી ઓછી રકમ ભરનારનુ નામ આ યાદીમાં
સામેલ કરેલ નથી.)

આદ્યસુરબ્બીશ્રીઓ–૫

(ઓછામા ઓછી રૂા ૫૦૦૦ ની રકમ આપનાર)

નબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શેઠ ચાન્તીલાલ મંગળદાસભાઇ જાણીતા મીલમાલીક	અમદાવાદ	૧૦૦૦૦
૨	શેઠ હરખચદ કાલીદાસભાઈ વારીયા હા શેઠ લાલચદભાઈ જેચદભાઈ, નગીનભાઈ, વૃજલાલભાઈ તથા વલ્લભદાસભાઈ	ભાણુવડ	૬૦૦૦
૩	કોઠારી જેચદભાઈ અજરામર હા. હરગોવિદભાઈ જેચદભાઈ	રાજકોટ	૫૨૫૧
૪	શેઠ ધારશીભાઈ જીવનલાઈ	સોલાપુર	૫૦૦૧
૫	સ્વ પિતાશ્રી છગનલાલ શામળદાસના સ્મરણાર્થે હ ભોગીલાલ છગનલાલભાઇ ભાવસાર	અમદાવાદ	૫૨૫૧

સુરબ્બીશ્રીઓ–૨૧

(ઓછામા ઓછી રૂા ૧૦૦૦ ની રકમ આપનાર)

નબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	વકીલ જીવરાજભાઈ વર્ધમાન કોઠારી હ કહાનદાસભાઇ તથા વેણીલાલભાઇ	જેતપુર	૩૬૦૫
૨	દોશી પ્રભુદાસ મૂળજીભાઈ	રાજકોટ	૩૬૦૪
૩	મ્હેતા ગુલાબચદ પાનાચદ	રાજકોટ	૩૨૮૯ાાા=ાા
૪	મ્હેતા માણેકલાલ અમુલખરાય	ઘાટકોપર	૩૨૫૦
૫	સઘવી પીતામ્બરદાસ ગુલાબચદ	જામનગર	૩૧૦૧
૬	શેઠ શામજીભાઈ વેલજીભાઈ વીરાણી	રાજકોટ	૨૫૦૦
૭	નામદાર ઠાકોર સાહેબ લખધીરસિહજી બહાદુર	મોરબી	૨૦૦૦
૮	શેઠ ટહેરચદ કુવરજી હા શેઠ ન્યાલચદ ટહેરચદ	સિદ્ધપુર	૨૦૦૦
૯	શાહ છગનલાલ હેમચદ વસા હા મોહનલાલભાઈ તથા મોતીલાલભાઈ	મુબઈ	૨૦૦૦
૧૦	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સઘ	મોરબી	૧૯૬૩
૧૧	મ્હેતા સોમચદ તુલસીદાસ તથા તેમના ધર્મપત્ની અ સૌ મણીગૌરી મગનલાલ	રતલામ	૧૫૦૦
૧૨	મ્હેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ	જામજોધપુર	૧૩૦૧
૧૩	દોશી કપુરચદ અમરશી હા દલપતરામભાઈ	જામજોધપુર	૧૦૦૨
૧૪	બગડીઆ જગજીવનદાસ રતનશી	દામનગર	૧૦૦૨
૧૫	શેઠ આત્મારામ માણેકલાલ	અમદાવાદ	૧૦૦૧
૧૬	શેઠ માણેકલાલ ભાણજીભાઈ	પોરબદર	૧૦૦૧
૧૭	શ્રીમાન ચદ્રસિહજી સાહેબ મ્હેતા (રેલ્વે મેનેજર)	કલકત્તા	૧૦૦૧
૧૮	મ્હેતા સોમચદ નેણસીભાઇ (કરાચીવાળા)	મોરબી	૧૦૦૧

૧૯	શાહ હરીલાલ અનોપચંદભાઈ	ખંભાત	૧૦૦૧
૨૦	કોઠારી છબીલદાસ હરખચંદભાઈ	મુંબઈ	૧૦૦૦
૨૧	કોઠારી રંગીલદાસ હરખચંદભાઈ	શિહોર	૧૦૦૦

સહાયક મેમ્બરો-૪૯

(ઓછામાં ઓછી રૂા ૫૦૦ ની રકમ આપનાર)

૧	શાહ રંગજીભાઈ મોહનલાલ	અમદાવાદ	૭૫૧
૨	મોદી કેશવલાલ હરીચંદભાઈ	સાબરમતી	૭૫૦
૩	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈનસંઘ હા શેઠ ઝુંઝાભાઈ વેલસીભાઈ	વઢવાણ શહેર	૭૫૦
૪	શેઠ નરોત્તમદાસ ઓઘડભાઈ	ગીવ	૭૦૦
૫	શેઠ રતનશી હરજીભાઈ હા ગોરધનદાસભાઈ	જામજોધપુર	૫૫૫
૬	બાટવીયા ગીરધર પરમાનંદ હા અમીચંદભાઈ	ખાખીજાળીઆ	૫૨૭
૭	મોરબીવાળા સંઘવી દેવચંદ નેણશીભાઈ તથા તેમના ધર્મપત્નિ અ સૌ મણીબાઈ તરફથી હ મુલચંદ દેવચંદ (કરાચીવાલા)	મલાડ	૫૧૧
૮	વોરા મણીલાલ પોપટલાલ	અમદાવાદ	૫૦૨
૯	ગોસલીયા હરીલાલ લાલચંદ તથા ચંપાબેન ગોસલીયા	અમદાવાદ	૫૦૨
૧૦	શાહ પ્રેમચંદ માણેકચંદ તથા અ સૌ સમરતબેન રાજમીતાપુર	અમદાવાદ	૫૦૨
૧૧	શેઠ ઇશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૨	શેઠ ચંદુલાલ છગનલાલ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૩	શાહ શાન્તીલાલ માણેકલાલ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૪	શેઠ શીવલાલ ડમરભાઈ (કરાચીવાલા)	લીંબડી	૫૦૧
૧૫	કામદાર તારાચંદ પોપટલાલ ધોરાજીવાળા	રાજકોટ	૫૦૧
૧૬	મહેતા મોહનલાલ કપુરચંદ	રાજકોટ	૫૦૧
૧૭	શેઠ ગોવિંદજીભાઈ પોપટભાઈ	રાજકોટ	૫૦૦
૧૮	શેઠ રામજી શામજી વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૧
૧૯	સ્વ પિતાશ્રી નંદાજીના સ્મરણાર્થે હા વેણીચંદ શાન્તીલાલ (જાણુઆવાળા)	મેઘનગર	૫૦૧
૨૦	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈનસંઘ હા શેઠ ઠાકરશી કરસનજી	થાનગઢ	૫૦૦
૨૧	શેઠ તારાચંદ પુખરાજજી	ઔરંગાબાદ	૫૦૦
૨૨	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈનસંઘ	ઔરંગાબાદ	૫૦૦

૧૫૦ શેઠ શેષમલજી જીવરાજજી
૧૨૫ શેઠ અનરાજજી લાલચંદજી
૧૨૫ ધુંકડચંદજી રૂપચંદજી

२९ સંઘવી જીવણલાલ છગનલાલ (સ્થાં જૈન) ૨૫૧
૩૦ શાહ શાંતિલાલ મોહનલાલ પ્રાગપ્રાવાળા ૨૫૨
૩૧ અ સૌ બેન રતનબાઈ નાદેચા હા ફુલજીભાઇ ચંપાલાલજી ૨૫૧
૩૨ શાહ હરિલાલ જેઠાલાલ ભાડલાવાલા ૨૫૧
૩૩ શ્રી સરસપુર દરીયાપુરી આઠકોટી સ્થા જૈન ઉપાશ્રય
હા ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ ૨૫૧
૩૪ શેઠ પુખરાજજી સમતીરામજી સાદડીવાળા ૨૫૧
૩૫ સ્વ પિતાશ્રી જવાહીરલાલજી તથા પૂજ્ય ચાચાજી હજારીમલજી
બરડીયાના સ્મરણાર્થે હા મૂળચંદજી જવાહીરલાલજી ૨૫૧
૩૬ સ્વ. ભાવસાર બબાભાઇ (મંગળદાસ) પાનાચંદના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્નિ દુર્ગાબેન ૨૫૧
૩૭ સ્વ પિતાશ્રી રવજીભાઇ તથા સ્વ માતુશ્રી મૂળીબાઇના સ્મરણાર્થે
હા કકલભાઈ કોઠારી ૩૦૧
૩૮ ભાવસાર કેશવલાલભાઈ મગનલાલભાઇ ૨૫૧
૩૯ શાહ કેશવલાલ નાનચંદ જાખડાવાળા હા પાર્વતીબેન ૨૫૧
૪૦ શાહ જીતેન્દ્રકુમાર વાડીલાલ માણેકચંદ રાજસીતાપુરવાળા (સાબરમતી) ૨૫૧
૪૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ (સાબરમતી) ૨૫૦
૪૨ શ્રી બીપિનચંદ્ર તથા ઉમાકાંત ચુનીલાલ ગોપાણી (રાણપુરવાળા) ૩૦૧
૪૩ ભાવસાર છોટાલાલભાઈ છગનલાલભાઈ ૨૫૧
૪૪ ભાવસાર શકરાભાઈ છગનલાલભાઇ ૨૫૧
૪૫ અ સૌ જીવીબેન રતીલાલ હા ભાવસાર રતીલાલ હરગોવિંદદાસ ૨૫૧
૪૬ સંઘવી બાલુભાઈ કમળશી તથા તેમના ધર્મપત્નિઓ
અ સૌ ચંપાબેન તથા વસંતબેન તરફથી ૨૫૧
૪૭ અ સૌ વિદ્યાબેન વનેચંદ દેશાઈ હા ભૂપેન્દ્રકુમાર વનેચંદ દેશાઈ ૨૫૧
૪૮ સ્વ પારેખ નાનચંદ ગોવિંદજી મોરબીવાળાના સ્મરણાર્થે
હા રતીલાલ નાનચંદ પારેખ ૩૦૧
૪૯ શાહ નટવરલાલ ગોકળદાસ ૨૫૧
૫૦ શાહ શામળભાઈ અમરશીભાઈ ૨૫૧
૫૧ શાહ ત્રીભોવનદાસ મગનલાલના સ્મરણાર્થે
તેમના ધર્મપત્નિ શીવકુંવરબેન તરફથી હા રતીલાલ ત્રીભોવનદાસ ૪૦૨
૫૨ અ સૌ કંકુબેન (ભાવસાર ભોગીલાલભાઇ છગનલાલભાઈના ધર્મપત્નિ) ૩૦૯

૫૩	અ. સૌ. સવિતાબેન (જયંતીલાલ ભોગીલાલના ધર્મપત્નિ)	૨૫૧
૫૪	અ સૌ શાતાબેન (દીનુભાઈ ભોગીલાલના ધર્મપત્નિ)	૨૫૧
૫૫	અ. સૌ સુનદાબેન (રમણભાઈ ભોગીલાલના ધર્મપત્નિ)	૨૫૧
૫૬	શેઠ હીરાજી રૂગનાથજીના સ્મરણાર્થે હા. વાગમલજી રૂગનાથજી	૩૦૧
૫૭	શેઠ મણીલાલ ઓઘાભાઈ	૨૫૧
૫૮	પટવા સુમેરમલજી અનોપચદજી જોધપુરવાળા	૩૦૧
૫૯	સ્વ માણેકલાલ વનમાળીદાસ શાહના સ્મરણાર્થે હા રમણલાલ માણેકલાલ	૨૫૧
૬૦	સ્વ શાહ ધનરાજજી ખેમરાજજીના સ્મરણાર્થે હા કનૈયાલાલજી ધનરાજજી	૩૦૧
૬૧	શ્રી સારગપુર દ આ કો સ્થા. જૈન સંઘ હા શાહ રમણલાલ ભગુભાઈ	૨૫૧
૬૨	દોશી હરજીવનદાસ જીવરાજ તથા લક્ષ્મ બાઈ લહેરચદના સ્મરણાર્થે હા દોશી મનહરલાલ કરસનદાસ મુળીવાળા	૨૫૧
૬૩	શાહ પૂનમચદ ફતેહચદ	૨૫૧
૬૪	શ્રી ચતુરભાઇ નદલાલ	૨૫૧
૬૫	શ્રીયુત અમૃતલાલ ઈશ્વરલાલ	૨૫૧
૬૬	શાહ જાદવજી મોહનલાલ તથા શાહ ચીમનલાલ અમુલખભાઈ	૨૫૧
૬૭	અ, સૌ. લાભુબેન મગનલાલ હા શાહ અમૃતલાલ ધનજીભાઇ વઢવાણ શહેરવાળા	૩૦૧
૬૮	અ સૌ બહેન કાન્તાબેન ગોરધનદાસ	૨૫૧
૬૯	દોશી કુલચદ સુખલાલભાઈ બોટાદવાળાના સ્મરણાર્થે હ. દોશી છબીલદાસ કુલચદભાઇ	૨૫૧
૭૦	લાલાજી રામકુમારજી જૈન	૨૫૧
૭૧	શેઠ છોટાલાલ ગુમાનચદ પાલનપુરવાળા	૨૫૧
૭૨	શાહ ધીરજલાલ મોતીલાલ	૨૫૧
૭૩	સઘવી સૂર્યકાત ચુનીલાલના સ્મરણાર્થે હ સઘવી જીવણલાલ ચુનીલાલ	૨૫૧
૭૪	ભાવસાર મોહનલાલ અમુલખરાય	૨૫૧
૭૫	શાહ કુલચદ મુલચદભાઈ હ હસમુખભાઈ કુલચદભાઇ	૨૫૧
૭૬	લલ્લુભાઈ મગનભાઈ ચૂડાવાલાના સ્મરણાર્થે હ જયતલાલ લલ્લુભાઈ	૩૦૧
૭૭	શ્રીમાન મીશ્રીલાલજી જવાહીરલાલજી બરડીયા અલ્વરવાળા	૨૫૧
૭૮	મ્હેતા મુળચદ મગનલાલ	૨૫૧
૭૯	વૈદ્ય નરસીદાસ સાકરચદના ધર્મપત્નિ ગેવાબાઈના સ્મરણાર્થે હ હરીલાલભાઇ	૨૫૧

અમરેલી

૧ માસ્તર હકમીચંદ દીપચંદ શેઠ ૨૫૧

અમલનેર

૧ શાહ નાગરદાસ વાઘજીભાઈ ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈનસંઘ હા શાહ ગાંડાલાલ ભીખાલાલ ૨૫૧

આણંદ

૧ શેઠ રમણીકલાલ એ કપાસી હા. મનસુખલાલભાઇ ૨૫૧

આસનસોલ

૧ બાવીસી મણીલાલ ચત્રભુજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ મણીબાઇ તરફથી હા. રસિકલાલ, અનિલકાંત, વિનોદરાય ૨૫૧

આટકોટ

૧ શાહ ચુનીલાલ નારણજી ૩૦૧

ઉદયપુર

૧ શ્રીયુત સાહેબલાલજી મહેતા ૩૦૧
૨ શેઠ મોતીલાલજી રણજીતલાલજી હીંગડ ૨૫૧
૩ શેઠ મગનલાલજી બાગરેચા ૨૫૧
૪ અ સૌ બ્હેન ચંદ્રાવતી તે શ્રીમાન બહોતલાલજી નાહરના ધર્મપત્નિ હા શેઠ રણજીતલાલજી હીંગડ ૨૫૧
૫ સ્વ શેઠ કાળુલાલજી લોઢાના સ્મરણાર્થે હા શેઠ દોલતસિંહજી લોઢા ૨૫૧
૬ સ્વ શેઠ પ્રતાપમલજી સાખલાના સ્મરણાર્થે હા પ્રાણુલાલ હીરાલાલ સાખલા ૨૫૧
૭ પૂજ્ય પિતાશ્રી મોતીલાલજી મ્હેતાના સ્મરણાર્થે હા રણજીતલાલજી મોતીલાલજી મ્હેતા ૨૫૧
૮ શેઠ છગનલાલ બાગરેચા ૨૫૧
૯ શેઠ ભીમરાજ થાવરચંદ બાફણા ૨૫૧

ઉમરગાંવરોડ

૧ શાહ મોહનલાલ પોપટલાલ પાનેલીવાળા ૨૫૧

ઉપલેટા

૧ શેઠ જેઠાલાલ ગોરધનદાસ ૨૫૧
૨ સ્વ બેન સંતોકબેન કચરા હા ઓગમચંદભાઈ, છોટાલાલભાઈ તથા અમૃતલાલભાઈ વાલજી (કલ્યાણવાળા) ૨૫૧

૩ શેઠ ખુશાલચંદ કાનજીભાઈ હા. શેઠ પ્રતાપભાઈ ૨૫૧

૪ સંઘાણી મૂળશંકર હરજીવનભાઈના સ્મરણાર્થે હા તેમના પુત્રો જયંતીલાલભાઈ તથા રમણીકલાલ ૨૫૧

૫ દોશી વિઠ્ઠલજી હરખચંદ (આગળના રૂા ૧૫૧ મળીને) ૨૫૧

એડન કેમ્પ

૧ શાહ ગોકળદાસ શામજી ઉદાણી ૨૫૧

૨ શાહ જગમોહનદાસ પરસોતમદાસ ૨૫૧

કલકત્તા

૧ શ્રી કલકત્તા જૈન શ્વે સ્થા (ગુજરાતી) સંઘ હા શાહ જયસુખલાલ પ્રભુલાલ ૨૫૧

કલોલ

૧ શેઠ મોહનલાલ જેઠાભાઈના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ આત્મારામ મોહનલાલ ૨૫૧

૨ ડો મયાચંદ મગનલાલ શેઠ હા ડો રતનચંદ મયાચંદ ૨૫૧

૩ સ્વ નાથાલાલ ઉમેદચંદના સ્મરણાર્થે હા શાહ રતીલાલ નાથાલાલ ૨૫૧

૪ શાહ મણીલાલ તલકચંદના સ્મરણાર્થે હા મારફતીયા ચંદુલાલ મણીલાલ ૭૫૧

૫ સ્વર્ગસ્થ શ્રીયુત વાડીલાલ પરશોત્તમદાસના સ્મરણાર્થે હા ઘેલાભાઈ તથા આત્મારામભાઈ ૨૫૧

૬ શેઠ નાગરદાસ કેશવલાલ ૨૫૧

૭ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ હ શેઠ આત્મારામભાઈ મોહનલાલભાઈ ૨૫૧

કડી

૧ શ્રી સ્થા દરીયાપુરી જૈન સંઘ હા ભાવસાર દામોદરદાસભાઈ ઈશ્વરભાઈ હ ૨૫૧

કાનપુર

૧ શાહ રમણીકલાલ પ્રેમચંદભાઈ (આગળના રૂા ૧૫૦ મળીને) ૩૦૦

૨ શાહ હરકીશનદાસ ફૂલચંદભાઈ ૨૫૧

કેદણી—(આટકોટ)

૧ દોશી રતીલાલ ટોકરશીભાઈ ૨૫૧

કોલકી

૧ પટેલ ગોવિંદલાલ ભગવાનજી ૨૫૧

૨ પટેલ ખીમજી જેઠાભાઈ વાઘાણી (તેમના સ્વ સુપુત્ર રામજીભાઈના સ્મરણાર્થે) ૩૦૨

ખાખીજાળીયા

૧ બાટવીયા ગુલાબચંદ લીલાધર (આગળના રૂા ૧૫૧ મળીને) ૨૫૧

ખીચન

૧ શેઠ કીશનલાલ પૃથ્વીરાજ

ડોંડાઇચા

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સઘ હા. શેઠ ચ પાલાલજી મારવે	૨૫૦

દસા (વાયાપીળા)

૧ શ્રી દસાગામ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હ એક સદ્ગૃહસ્થ તરફથી	૨૫૧

થાનગઢ

૧ શાહ ઠાકરશીભાઈ ક્રશનજી	૨૫૧
૨ શેઠ જેઠાલાલ ત્રીભોવનદાસ	૨૫૧
૩ શાહ ધારશીભાઈ પાશવીરભાઈ હા સુખલાલભાઇ	૨૫૧

દહાણુ રોડ (થાણા)

૧ શાહ હરજીવનદાસ ઓધડ ખ ધાર (કરાચીવાળા)	૨૫૧

દિલ્હી

૧ લાલા પૂર્ણચ દજી જૈન (સેન્ટ્રલ બે કવાળા)	૩૫૧
૨ શ્રીયુત મ્હેતાબચ દ જૈન	૨૫૧
૩ લાલાજી મીઠ્ઠનલાલજી જૈન એન્ડ સન્સ	૩૦૧
૪ લાલાજી ગુલશનરાયજી જૈન એન્ડ સન્સ	૩૦૧
૫ અ સૌ સજ્જનબેન ઇંદરમલજી પારેખ	૨૫૧

ધાર (મધ્યપ્રાંત)

૧ શેઠ સાગરમલજી પનાલાલજી	૨૫૧

ધ્રાંગધ્રા

૧ શ્રી સ્થા જૈન મોટા સઘ હા શેઠ મ ગળજીભાઈ જીવરાજ	૨૫૧
૨ સ ઘવી નરસીદાસ વખતચ દ	૩૦૧
૩ ઠક્કર નારણદાસ હરગોવીંદદાસ	૨૫૧
૪ કોઠારી કપૂરચ દ મ ગળજી	૨૫૧

ધોરાજી

૧ મ્હેતા પ્રભુદાસ મૂળજીભાઇ	૩૫૧
૨ પિતાશ્રી ભગવાનજી ડચરાભાઈના સ્મરણાર્થે હા પટેલ દલીચ દ ભગવાનજી	૨૫૧
૩ અ સૌ બચીબેન બાબુભાઇ	૨૫૧
૪ ધી નવ સૌરાષ્ટ્ર ઓઈલ મીલ પ્રા લીમીટેડ	૨૫૧
૪ સ્વ રાયચ દ પાનાચ દ શાહના સ્મરણાર્થે હા ચીમનલાલ રાયચ દ	૩૦૧
૬ ગાંધી પોપટલાલ જેચ દ	૨૫૦
૭ દેશાઈ છગનલાલ દાદાભાઈ લાઠવાળાના ધર્મપત્નિ દિવાળીબેન તરફથી હા કુમારી હસુમતી	૨૫૧

ધંધુકા

૧ ભાવસાર ખોડીદાસ ગણેશભાઈ ૨૫૧

૨ શેઠ પોપટલાલ ધારશી ૨૫૧

૩ સ્વ ગુલાબચંદભાઈના સ્મરણાર્થે હા પોપટલાલ નાનચંદ ૨૫૧

૪ વસાણી ચત્રભુજ વાઘજીભાઈ ૨૫૧

નંદુરબાર

૧ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ હા શેઠ પ્રેમચંદ ભગવાનલાલ ૨૫૦

પાણસણા

૧ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ ૨૫૧

પાલણપુર

૧ લક્ષ્મીબેન હા મ્હેતા હરીલાલ પીતામ્બરદાસ ૨૫૧

૨ શ્રી લોકાગચ્છ સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તકાલય ૨૫૧

૩ મહેતા મણીલાલ ભાઈચંદભાઈ ૨૫૧

૪ મહેતા સુરજમલ ભાઈચંદભાઈ ૨૫૧

પાલેજ

૧ સ્વ મનસુખલાલ મોહનલાલ સંઘવીના સ્મરણાર્થે
હા ભાઈ ધીરજલાલ મનસુખલાલ ૩૦૧

પુના

૧ શેઠ ઉતમચંદજી કેવળચંદજી ધોકા ૨૫૧

પ્રાંતિજ

૧ શ્રી પ્રાંતિજ સ્થા જૈનસંઘ હ શ્રીયુત અંબાલાલ મહાસુખરામ ૨૫૧

બરવાળા (ઘેલાશા)

૧ સ્વ મોહનલાલ નરસીદાસના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્નિ સુરજબેન મોરારજી ૨૫૧

બગસરા (ભાયાણી)

૧ શેઠ પોપટલાલ રાઘવજી રાયડીવાળા હા. શેઠ માનસંગ પ્રેમચંદ ૨૫૧

બેરાજા (કચ્છ)

૧ શેઠ ગાગજી કેશવજી (જ્ઞાનભંડાર માટે) ૨૫૧

બેંગલોર

૧ બાટવીયા વનેચંદ અમીચંદ મહાવીર ટેક્ષટાઈલ સ્ટોર તરફથી
ભાઈ ચંદ્રકાંતના લગ્નની ખુશાલીમાં ૨૫૨

બોટાદ

૧ સ્વ વસાણી હરગોવિંદદાસ છગનલાલના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્નિ છબલબેન ૨૫૧

બીકાનેર

૧ શેઠ ભૈરૂદાનજી શેઠીયા ૨૫૪

બોડેલી

૧ શાહ પ્રવિણચંદ્ર નરસીદાસ (સાણંદવાળા) ૨૫૧
૨ શાહ ગીરધરલાલ સાકરચંદ ૨૫૧

ભાણવડ

૧ શેઠ જેચંદભાઈ માણેકચંદ ૩૫૨
૨ સંઘવી માણેકચંદ માધવજી ૨૫૧
૩ શેઠ લાલજીભાઇ માણેકચંદ (લાલપુરવાળા) ૨૫૧
૪ શેઠ રામજી જીણાભાઇ ૨૫૧
૫ શેઠ પદમશી ભીમજી ફોફરીઆ ૨૫૧
૬ ફોફરીઆ ગાડાલાલ કાનજીભાઈ હા અ સૌ શાંતાબેન વમનજી ૨૫૧
૭ વકીલ મણીલાલ ખેગારભાઈ પૂનાતર ૨૫૧

ભીલવાડા

૧ શ્રી શાંતિ જૈન પુસ્તકાલય હ ચાંદમલજી માનમલજી સંઘવી ૨૫૧
૨ શેઠ ભીમરાજ મીશ્રીલાલજી ૨૫૧

ભોજાય (કચ્છ)

૧ જ્ઞાન મંદિરના સેક્રેટરી શાહ કુંવરજી જીવરાજ ૨૫૧

ભાવનગર

૧ સ્વ કુંવરજી બાવાભાઇના સ્મરણાર્થે હ શાહ લહેરચંદ કુંવરજી ૩૦૧

મદ્રાસ

૧ શેઠ મેઘરાજજી દેવીચંદજી ૨૫૧

મનોર (થાણા)

૧ શાહ શેરમલજી દેવીચંદજી જસવંતગઢવાળા
હા પૂનમચંદજી શેરમલજી બોલ્યા ૨૫૧

માનકુવા (કચ્છ)

૧ સ્વ મહેતા કુંવરજી નાથાલાલના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્નિ કુંવરબાઈ હરખચંદ ૨૫૧
(માનકુવા સ્થાનકવાસી જૈનસંઘ માટે)

મુંબઇ તથા પરાંઓ

૧ શેઠ છગનલાલ નાનજીભાઈ ૨૫૧
૨ શાહ હરજીવન કેશવજી ૨૫૧
૩ ઘેલાણી પ્રભુલાલ ત્રીકમજીભાઈ (બોરીવલી) ૨૫૨
૪ શેઠ છોટુભાઈ હરગોવિંદદાસ કટોરીવાલા ૨૫૧

૫ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન સંઘ
હા કેશરીમલજી અનોપચંદજી ગુગળીયા (મલાડ) ૨૫૧

૬ શેઠ ડુંગરશી હંશરાજ વીસરીયા ૨૫૧

૭ શાહ રમણીકલાલ કાળીદાસ તથા અ સૌ કાન્તાબેન રમણીકલાલ ૨૫૧

૮ શાહ હિંમતલાલ હરજીવનદાસ ૨૫૧

૯ શાહ રતનશી મોણશીની કંપની ૨૫૧

૧૦ શાહ શીવજી માણેક (કચ્છ બેરાજાવાળા) ૨૫૧

૧૧ વોરા પાનાચંદ સંઘજીના સ્મરણાર્થે
હા ત્રંબકલાલ પાનાચંદ એન્ડ બ્રધર્સ ૨૫૧

૧૨ સ્વ પૂ પિતાશ્રી વીરચંદ જેમીગભાઈ લખતરવાળાના સ્મરણાર્થે
હા કેશવલાલ વીરચંદ શેઠ ૨૫૧

૧૩ શા કુંવરજી હંસરાજ ૨૫૧

૧૪ સ્વ માતુશ્રી માણેકબેનના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ વલભદાસ નાનજી (પોરબંદરવાળા) ૩૦૧

૧૫ એક સદ્ગૃહસ્થ હા શેઠ સુંદરલાલ માણેકચંદ ૨૫૧

૧૬ અ સૌ પાનબાઈ હા શેઠ પદમશી નરસિંહભાઈ (મલાડ) ૨૫૧

૧૭ શ્રીયુત અમૃતલાલ વર્ધમાન બાપોદરાવાળા હા વલીચંદ અમૃતલાલ ૨૫૧

૧૮ સ્વ શાહ નાગશી સોજપાળ ગુંદાળાવાળાના સ્મરણાર્થે
હા રામજી નાગશી (મલાડ) ૨૫૧

૧૯ શાહ રામજી ડરગનજી થાનગઢવાળા ૨૫૧

૨૦ શાહ નગીનદાસ કલ્યાણજી વેરાવળવાળા ૨૫૧

૨૧ શીવલાલ ગુલાબચંદ શેઠ મેવાવાળા ૨૫૧

૨૨ સ્વ જટાશંકર દેવજી દોશીના સ્મરણાર્થે
હા રણછોડદાસ (બાબુલાલ) જટાશંકર દોશી ૩૦૧

૨૩ સ્વ ગોડા વણારશી ત્રીભોવન મરસઈવાળા સ્મરણાર્થે
હા જગજીવન વણારશી ગોડા (મલાડ) ૨૫૧

૨૪ સ્વ ત્રીભોવનદાસ સજપાળ વીંછીયાવાળાના સ્મરણાર્થે
હા હરગોવિંદદાસ ત્રીભોવનદાસ અજમેરા ૨૫૧

૨૫ સ્વ કાનજી મૂળજીના સ્મરણાર્થે તથા માતુશ્રી દિવાળીબાઈના ૧૬ ઉપવાસના પારણા પ્રસંગે હા જયંતીલાલ કાનજી કાળાવડવાળા(મલાડ) ૨૫૧

૨૬ શેઠ ખુશાલભાઈ ખેંગારભાઈ ૨૫૦

૨૭ શાહ પ્રેમજી માલશી ગંગર (મલાડ) ૨૫૧

૭૬ શેઠ મનુભાઈ માણેકચંદ હા ગાટકીયા નરભેરામ મોરારજી (ઘાટકોપર) ૨૫૧
૭૭ ખેતાણી મણીલાલ કેશવજી (વડીયાવાળા) ઘાટકોપર ૨૫૧
૭૮ સ્વ કસ્તુરચંદ અમરશીના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્નિ
ઝવેરબેન મગનલાલની વતી—જયતીલાલ કસ્તુરચંદ મરકારીયા
(ચુડાવાળા) ૨૫૧
૭૯ સ્વ પૂજ્ય માતુશ્રી જકલબાઇના સ્મરણાર્થે
હા દેશાઈ મજલાલ કાળીદાસ (મલાડ) ૨૫૧
૮૦ શાહ નટવરલાલ દીપચંદ તરફથી તેમના ધર્મપત્નિ
અ સૌ સુશીલાબેનના વર્ષીતપની ખુશાલીમા ૨૫૧
૮૧ શેઠ રસીકલાલ પ્રભાશંકર મોરબીવાળા તરફથી તેમના માતુશ્રી
મણીબેનના સ્મરણાર્થે ૩૦૧
૮૨ કોટીચા જયતીલાલ રણછોડદાસ સૌભાગ્યચંદ જુનાગઢવાળા ૨૫૧
૮૩ મોદી અભેચંદ સુરચંદ રાજકોટવાળા હા ડોસાલાલ અભેચંદ ૨૫૧
૮૪ સ્વ શાહ રાયશી કચરાભાઇના સ્મરણાર્થે તેમના
ધર્મપત્નિ નેણબાઈ વતી હ શાહ જેઠાલાલ રાયશી ૨૫૧
૮૫ શ્રીયુત જે સી વોરા ૨૫૦
૮૬ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સંઘ હ સંઘવી ચીમનલાલ અમરચંદ(દાદર) ૨૫૧
૮૭ સ્વ આશારામ ગીરધરલાલના સ્મરણાર્થે હ શાંતિલાલ
આશારામની વતી જસવંતલાલ આશારામ લખતરવાળા ૨૫૧

માંડવી (કચ્છ)

૧ શ્રી સ્થા ૭ કોટી જૈન સંઘ હા મહેતા ચુનીલાલ વેલજી ૨૭૭

માંડવા (ધોળાજંકશન)

૧ શ્રી માંડવા સ્થા જૈન સંઘ હ અ સૌ કંચનગૌરી રતિલાલ
ગોસલીયા ગઢડાવાળા ૨૫૧

મેસાણા

૧ શાહ પદમશી સુરચંદના સ્મરણાર્થે હા શીવલાલ પદમશી વીરમગામવાળા ૨૫૧

મોમ્બાસા

૧ શાહ દેવરાજ પેથરાજ ૨૫૦
૨ શ્રીયુત નાથાલાલ ડી મહેતા ૨૫૧

યાદગીરી

૧ શેઠ બાદરમલજી સૂરજમલજી બેન્કર્સ ૨૫૦

રાણપુર (ઝાલાવાડ)

૧ શ્રીમતિ માતુશ્રી અમરતબાઈના સ્મરણાર્થે
હા. ડો. નરોત્તમદાસ ચુનીલાલ કાપડીયા ૨૫૧

રાણાવાસ (મારવાડ)

૧ શેઠ જવાનમલજી નેમીચંદજી હા બાબુ રીખબચંદજી ૩૦૧

રાજકોટ

૧ ધી વાડીલાલ ડાઈંગ એન્ડ પ્રિન્ટીંગ વર્કસ ૪૦૦
૨ શેઠ રતીલાલ ન્યાલચંદ ૨૫૧
૩ બાબુ પરશુરામ છગનલાલ શેઠ (ઉદેપુરવાળા) ૨૫૦
૪ શેઠ મનુભાઈ મુળચંદ (એન્જીનીઅર સાહેબ) ૨૫૧
૫ શેઠ શાન્તીલાલ પ્રેમચંદ તેમના ધર્મપત્નિના વરસીતપ પ્રસંગે ૨૫૧
૬ ઉદાણી ન્યાલચંદ હાકેમચંદ વકીલ ૨૫૧
૭ શેઠ પ્રજારામ વીઠલજી ૨૫૧
૮ બહેન મધુબાળા નૌત્તમલાલ જસાણી (વરસીતપની ખુશાલી) ૨૫૧
૯ મોદી સૌભાગ્યચંદ મોતીચંદ ૨૫૧
૧૦ બહાણી ભીમજી વેલજી તરફથી તેમના ધર્મપત્નિ
અ સૌ સમરતબેનના વરસીતપની ખુશાલી ૨૫૧
૧૧ દોશી મોતીચંદ ધારશીભાઈ (રીટાયર્ડ એન્જીનીઅર સાહેબ) ૨૫૧
૧૨ કામદાર ચંદુલાલ જીવરાજ ૨૫૦
૧૩ હેમાણી ઘેલુભાઈ સવચંદ ૨૫૧
૧૪ પ્રભુલાલ ન્યાલચંદ દફતરી ૨૫૧
૧૫ સ્વ મહેતા દેવચંદ પુરૂષોત્તમદાસના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ
હેમકુવરબાઈ તરફથી હા જયતીલાલ દેવચંદ મહેતા ૨૫૧

રાજાજીકાકેરડા (ભીલવાડા)

૧ શ્રીમાન ભેગવત્મલજી ધર્મચંદજી ડુંગરવાલ [મુનીશ્રી માગીલાલજીના
ઉપદેશથી] ૨૫૧

રાયચુર

૧ સ્વ માતુશ્રી મોઘીબાઈના સ્મરણાર્થે હ શાહ શીવલાલ
ગુલાબચંદ વઢવાણવાળા ૨૫૧

રંગુન

૧ કામદાર ગોરધનદાસ મગનલાલના ધર્મપત્નિ અ સૌ કમળાબેન ૨૫૧

રાપર (કચ્છ)

૧ પુજ્ય વાલજીભાઈ ન્યાલચંદ ૨૫૧

૧૦ પારેખ મણીલાલ ટોકરશી લાંતીવાળા તરફથી (મોટીબેનના સ્મરણાર્થે) ૨૫૧
૧૧ શાહ નારણદાસ નાનજીભાઇના સુપુત્ર વાડીલાલભાઇના ધર્મપત્નિ અ સૌ. નારંગીબેનના વરસીતપ નિમીત્તે હા શાન્તીભાઇ ૨૫૧
૧૨ સ્વ છબીલદાસ ગોકળદાસના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ કમળાબેન તરફથી હા મંજુલાકુમારી ૨૫૧
૧૩ શ્રી સ્થા જૈન શ્રાવિકા સંઘ હા પ્રમુખ અ સૌ રંભાબેન વાડીલાલ ૨૫૧
૧૪ સ્વ ત્રીભોવનદાસ દેવચંદ તથા સ્વ અ સૌ ચંચળબેનના સ્મરણાર્થે હા ડૉ હિંમતલાલ સુખલાલ ૨૫૧
૧૫ શાહ મૂળચંદ કાનજીભાઇ તરફથી હા નાગરદાસ ઓધડભાઈ, ૨૫૧
૧૬ શેઠ મોહનલાલ પીતાંબરદાસ હા ભાઈ કેશવલાલ તથા મનસુખભાઇ ૨૫૧
૧૭ શ્રીમતી હીરાબેન નથુભાઈના વરસીતપ નિમિત્તે હા નથુભાઈ નાનચંદ શાહ ૩૦૧
૧૮ સ્વ મણીયાર પરસોતમદાસ સુંદરજીના સ્મરણાર્થે હા શેઠ સાકરચંદ પરસોતમદાસ ૨૫૧
૧૯ શેઠ મણીલાલ શીવલાલ ૨૫૧

વેરાવલ

૧ શાહ કેશવલાલ જેચંદભાઈ ૨૫૧
૨ શાહ ખીમચંદ સૌભાગ્યચંદ વસનજી ૨૫૧
૩ સ્વ. શેઠ મદનજી જેચંદભાઈ માંગરોળવાળાના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ લાડકુંવરબાઈ તરફથી હા ધીરજલાલ મદનજી ૨૫૧

સરખેજ

૧ સ્વ પિતાશ્રી શાહ ફકીરચંદ પુંજાભાઈના સ્મરણાર્થે હા શાહ રમણલાલ ફકીરચંદ ૨૫૧

સતારા

૧ સ્વ. મદનલાલજી કુંદનમલજી કોઠારીના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્નિ રાજકુવરબાઇ મદનલાલજી ૨૫૧

સાદડી

૧ શેઠ દેવરાજજી જીતમલજી પૂનમીયા ૨૫૧

સાલબની (બંગાળ)

૧ દોશી ચુનીલાલ કુલચંદ મોરબીવાળા ૨૫૦

સાણંદ

૧ શાહ હીરાચંદ છગનલાલ હા શાહ ચીમનલાલ હીરાચંદ ૩૦૧
૨ અ સૌ ચંપાબેન હા દોશી જીવરાજ લાલચંદ ૨૫૧
૩ પટેલ મહાસુખલાલ ડોસાભાઈ ૨૫૧
૪ શાહ સાકરચંદ કાનજીભાઇ ૨૫૧

૫ પુરીબેન ચીમનલાલ કલ્યાણજી સંઘવી લીમડીવાળાના સ્મરણાર્થે
હા. વાડીલાલ મોહનલાલ કોઠારી ૨૫૧

૬ પારેખ નેમચંદ મોતીચંદ મુળીવાળાના સ્મરણાર્થે
હા. પારેખ ભીખાલાલ નેમચંદ ૨૫૧

૭ સંઘવી નારણદાસ ધરમશીના સ્મરણાર્થે હા. ભાઇ જયંતિલાલ નારણદાસ ૨૫૧

સુરત

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શાહ છોટુભાઈ અભેચંદ ૨૫૧

૨ શ્રીયુત કલ્યાણચંદ માણેકચંદ હડાલાવાળા ૨૫૧

સુવઇ (કચ્છ)

૧ સાવળા શામજી હીરજી તરફથી સદાનંદી જૈન મુનિશ્રી છોટાલાલ મહારાજના ઉપદેશથી સુવઇ સ્થા. જૈન સંઘ જ્ઞાનભંડારને ભેટ ૨૫૧

સુરેન્દ્રનગર

૧ શેઠ ચાપશીભાઇ સુખલાલ ૨૫૧

૨ ભાવસાર ચુનીલાલ પ્રેમચંદ ૨૫૧

૩ સ્વ. કેશવલાલ મૂળજીભાઇના ધર્મપત્નિ અમૃતબાઇના સ્મરણાર્થે
હા. શાહ કેશવલાલ (થાનગઢવાળા) ૨૫૧

૪ શાહ ન્યાલચંદ હરખચંદ ૨૫૧

૫ શાહ વાડીલાલ હરખચંદ ૨૫૧

મંજેલી (પંચમહાલ)

૧ શાહ હુણાજી ગુલાબચંદ ૨૫૧

૨ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ પ્રેમચંદ દલીચંદ ૨૫૧

હાટીનામાળીયા

૧ શેઠ ગોપાલજી મીઠાભાઈ ૨૫૦

હારીજ

૧ અમુલખભાઈ મુળજી હા. પ્રકાશચંદ અમુલખ ૩૦૧

૨ સ્વ. બેન ચંદ્રકાન્તાના સ્મરણાર્થે હા. અમુલખ મુળજીભાઈ ૩૦૧

હુબલી

૧ હીરાચંદ વનેચંદજી કટારીઆ ૨૫૧

તા. ૧૦-૧૨-૫૮ સુધી મેમ્બરોની સંખ્યા

૫ આદ્ય સુરબ્બીશ્રીઓ
૨૧ સુરબ્બીશ્રીઓ
૪૯ સહાયક મેમ્બરો
૪૧૨ લાઇફ મેમ્બરો
૬૯ બીજા કલાસના મેમ્બરો

કુલ મેમ્બરો ૫૫૬

રાજકોટ તા. ૧૦-૧૨-૫૮

સાકરચંદ ભાઇચંદ શેઠ
મંત્રી

શ્રી અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિની

અગત્યની અપીલ

સ્થાનકવાસી જૈન ભાઇઓ અને બહેનો:—

સ્થાનકવાસી સમાજને બે અવલબન છે તેમા પહેલુ મુનિવર્ગ અને બીજુ શાસ્ત્રશ્રવણ છે. જ્યા જ્યા મુનિમહારાજોની ગેરહાજરી હોય છે (અને ભવિષ્યમા રહેવાની છે) તે સ્થળે આ શાસ્ત્રો સ્થાનકવાસી કોમને ટકાવી રાખવા મોટામા મોટુ સાધન છે

ઓછામા ઓછા રૂા ૫૦૦૦) આપી આદ્ય મુરબ્બીપદ આપ દિપાવી શકો છો

ઓછામા ઓછા રૂા ૧૦૦૦) આપી મુરબ્બીપદ મેળવી શકો છો

ઓછામા ઓછા રૂા ૫૦૦) આપી 'સહાયક' મેમ્બર બની શકો છો

અને ઓછામા ઓછા રૂા ૨૫૦) આપી લાઇફ મેમ્બર તરીકે દરેક ભાઇ બેન દાખલ થઇ શકે છે,

ઉપુરના દરેક મેમ્બરોને ૩૨ સૂત્રો તથા તેના તમામ ભાગો મળી લગભગ ૭૦ ગ્રથો જેની કિંમત લગભગ ૮૦૦ ઉપર થાય છે તે ભેટ તરીકે મળી શકે છે અને દરેક શાસ્ત્રમા તેમનુ નામ પ્રસિદ્ધ કરવામા આવે છે

દરેક શાસ્ત્ર ૪ ભાષામા તૈયાર થાય છે એટલે દરેક પાનામા ૪ ભાષા જોવામા આવશે ઉપરમા અર્ધમાગધી, તેની નીચે સસ્કૃત છાયા–ટીકા ત્યાર બાદ હીન્દી રાષ્ટ્રભાષા અને છેવટે ગુજરાતીમા અનુવાદ જોવામા આવશે

શ્રમણ વર્ગ, શ્રાવક વર્ગને દરેક પ્રદેશમા વસતા સમાજના દરેક અગને એક સરખી રીતે ઉપયોગી થાય તેવી રીતે ખ્યાલ કરીને શાસ્ત્રની રચના કરવામા આવે છે

બહાર દેશાવરમા વસતા આપણા ભાઈઓને તેમજ ગામડામા વસતા શ્રાવકોને તેમજ ફુરસદે વાચન કરનાર બ્હેનો તેમજ વિદ્યાર્થીઓને એક સરખુ ઉપયોગી થઈ શકે તેવુ સાહિત્ય બીજી કોઈ જગ્યાએ મળી શકે તેમ નથી

શ્રી અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિની

અગત્યની અપીલ

સ્થાનકવાસી જૈન ભાઇઓ અને બહેનો :—

સ્થાનકવાસી સમાજને બે અવલબન છે તેમા પહેલુ મુનિવર્ગ અને બીજુ શાસ્ત્રશ્રવણ છે જ્યા જ્યા મુનિમહારાજોની ગેરહાજરી હોય છે (અને ભવિષ્યમા રહેવાની છે) તે સ્થળે આ શાસ્ત્રો સ્થાનકવાસી કોમને ટકાવી રાખવા મોટામા મોટુ સાધન છે

ઓછામા ઓછા રૂા ૫૦૦૦) આપી આદ્ય મુરબ્બીપદ આપ દિપાવી શકો છો

ઓછામા ઓછા રૂા ૧૦૦૦) આપી મુરબ્બીપદ મેળવી શકો છો

ઓછામા ઓછા રૂા ૫૦૦) આપી સહાયક મેમ્બર બની શકો છો.

અને ઓછામા ઓછા રૂા ૨૫૦) આપી લાઇફ મેમ્બર તરીકે દરેક ભાઈ બેન દાખલ થઇ શકે છે,

ઉપુરના દરેક મેમ્બરોને ૩૨ સૂત્રો તથા તેના તમામ ભાગો મળી લગભગ ૭૦ ગ્રથો જેની કિંમત લગભગ ૮૦૦ ઉપર થાય છે તે ભેટ તરીકે મળી શકે છે અને દરેક શાસ્ત્રમા તેમનુ નામ પ્રસિદ્ધ કરવામા આવે છે

દરેક શાસ્ત્ર ૪ ભાષામા તયાર થાય છે એટલે દરેક પાનામા ૪ ભાષા જોવામા આવશે ઉપરમા અર્ધમાગધી, તેની નીચે સસ્કૃત છાયા–ટીકા ત્યાર બાદ હીન્દી રાષ્ટ્રભાષા અને છેવટે ગુજરાતીમા અનુવાદ જોવામા આવશે

શ્રમણ વર્ગ, શ્રાવક વર્ગને દરેક પ્રદેશમા વસતા સમાજના દરેક અગને એક સરખી રીતે ઉપયોગી થાય તેવી રીતે ખ્યાલ કરીને શાસ્ત્રની રચના કરવામા આવે છે ,,

બહાર દેશાવરમા વસતા આપણા ભાઈઓને તેમજ ગામડામા વસતા શ્રાવકોને તેમજ ફુરસદે વાચન કરનાર બ્હેનો તેમજ વિદ્યાર્થીઓને એક સરખુ ઉપયોગી થઈ શકે તેવુ સાહિત્ય બીજી કોઈ જગ્યાએ મળી શકે તેમ નથી